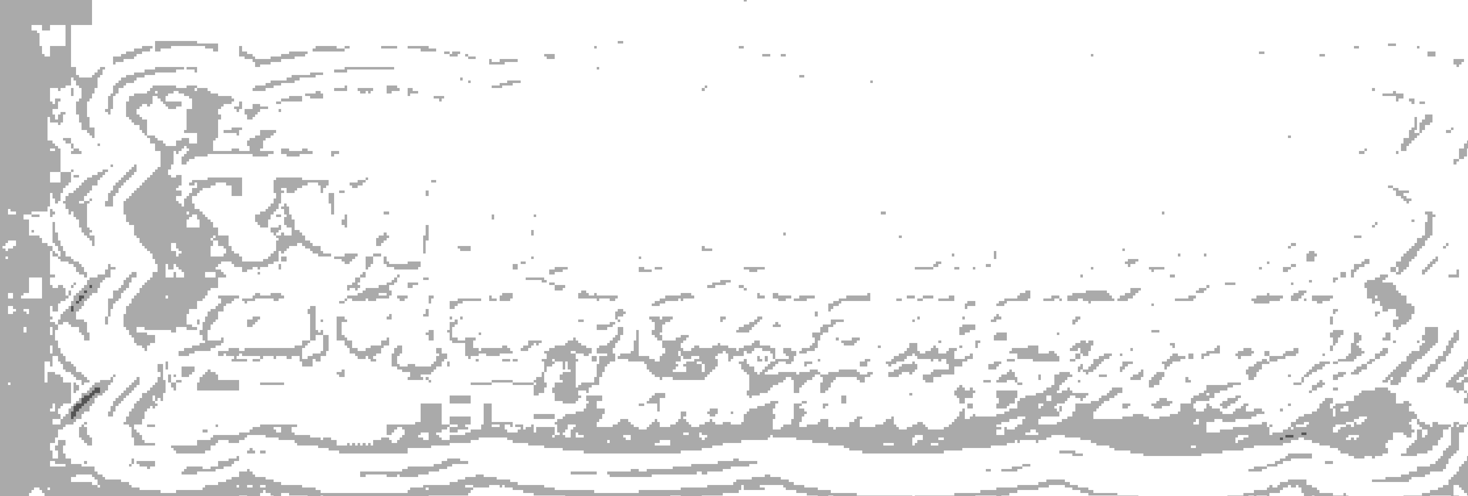
आयाते कुरआनिया, अहादीस सहीहा और

... मुश्तमिल

तज़्किरतुल अंबिया

अल्लामा ...



مُحَمَّد · اَحْمَد · حَامِد · مَحْمُود · قَاسِم · عَاقِب · فَاتِح · خَاتِم · حَاشِر · مَاح

دَاع · سِرَاج · رَشِيد · مُنِير · بَشِير · نَذِير · هَاد · مَهْد · رَسُول

نَبِي · طٰه · يٰس · مُزَّمِّل · مُدَّثِّر · شَفِيع · خَلِيل · كَلِيم · حَبِيب · مُصْطَفٰى

مُرْتَضٰى · مُجْتَبٰى · مُخْتَار · نَاصِر · مَنْصُور · قَائِم · حَافِظ · شَهِيد · عَادِل

حَكِيم · نُور · حُجَّة · بُرْهَان · اَبْطَحِي · مُؤْمِن · مُطِيع · وَاعِظ · اَمِين · صَادِق

مُصَدِّق · نَاطِق · صَاحِب · مَكِّي

مَدَنِي · هَاشِمِي · قُرَيْشِي

اُمِّي · عَزِيز

حَرِيص · رَحِيم · يَتِيم

غَنِي · جَوَاد · فَتَّاح · عَالِم · طَيِّب · طَاهِر · مُطَهَّر · خَطِيب · فَصِيح

سَيِّد · مُتَّقِي · اِمَام · شَاف · مُتَوَسِّط · سَابِق · مُقْتَصِد · مَهْدِي · حَق · مُبِين

اَوَّل · آخِر · ظَاهِر · بَاطِن · رَحْمَة · مُحَلِّل · مُحَرِّم · آمِر · نَاه

شَكُور · قَرِيب · مُنِيب · بَار · مُبَلِّغ · طٰس · حٰم · حَسِيب · مُذَكِّر · مُصْطَفٰى



RAZAVI KITAB GHAR
423, Matia Mahal, Jama Masjid,
Delhi-6 , Ph.: 011-23264524

رضوی کتاب گھر دہلی



Designed & Printed by : RAZAVI KITAB GHAR DELHI-6 Ph.: 011-23264524, E-mail ID : razavikita

الله · الرحمن · الرحیم · الملک · القدوس · السلام · المؤمن · المھیمن · الغفار · المصور

الباری · الخالق · المتکبر · الجبار · العزیز · القابض · الباسط · الخافض · العلیم

الفتاح · الرزاق · الوھاب · القھار · العدل · الحکم · البصیر · السمیع · المذل · المعز

الرافع · اللطیف · الخبیر · الحلیم · العظیم · الغفور · الشکور · العلی · الکبیر

الحفیظ · المقیت · الحسیب · الجلیل · الرقیب · المجیب · الکریم · الوکیل · الحق · الشھید

الحکیم · الودود · المجید · الباعث

الواسع · القوی · الولی · الحمید

المتین · المحصی

المبدی · المعید · المحیی · الممیت

الحی · الماجد · الواحد · القیوم · الواجد · الاحد · الاٰخر · الاول · المؤخر

المقدم · المقتدر · القادر · الظاھر · الصمد · الباطن · الوالی · المتعالی · البر · التواب

المنتقم · العفو · النور · النافع · الضار · المانع · المعطی · المغنی · الرؤف

الرشید · الصبور · الوارث · الباقی · البدیع · الھادی · ذوالاکرام · الجامع · الغنی · المقسط

RAZAVI KITAB GHAR
423, Matia Mahal, Jama Masjid,
Delhi-6 , Ph.: 011-23264524
رضوی کتاب گھر دہلی

r@gmail.com

फ़ेहरिस्त मज़ामीन

पेशे लफ़्ज़

तमाम तारीफ़ें अल्लाह अज़्ज़ व जल्ल के लिए जिसने इंसान को अशरफुल मख़लूक़ात बनाया और इसंान की रहनुमाई के लिये अंबियाए किराम को मबऊस फ़रमाया, और बेशुमार दुरूद व सलाम हों हबीबे किबरिया की ज़ाते अक़दस पर कि :

वह जो न थे तो कुछ न था, वह जो न हों तो कुछ न हो
जान हैं वह जहान की जान है तो जहान है

अल्लाह तआला ने अपने महबूब रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के क़ल्बे अतहर पर अपना मुक़द्दस कलाम नाज़िल फ़रमायाः

जो क़ुरआने अज़ीम है किताबे मजीद है फ़ुरक़ाने हमीद है बुरहाने रशीद है, नूरे मुबीन है, महवरे दीन है, ज़िक्रे हकीम है, सिराते मुस्तक़ीम है, मम्बए ईमान है, सर चश्मए ईमान है, मर्कज़े जूद व सख़ा है, बहरे लुत्फ़ व अता है, मम्बए रुश्द व हिदायत है, बहरे उलूम व हिकमत है, हर चीज़ का रौशन ब्यान है, ख़ज़ानए इल्म व इरफ़ान है, वअज़ व नसीहत की किताब है, मारफ़त का आफ़ताबे जहां ताब है, इसके अजायब का शुमार नहीं, इसके फ़ज़ायल की इंतेहा नहीं, यह रब्बुल आलमीन का कलाम है, फ़लाहे हक़ीक़ी का पैग़ाम है, इसमें हर मर्ज़ की शिफ़ा है, यह हर फ़र्द का राहनुमा है, यह सामाने नजात है, दिलों के जंग का इलाज है, कामिल तरीन फ़लसफ़ए हयात है, और इसकी तिलावत बायसे अज्र व सवाब है।

कुरआन हकीम के उलूम को तीन हिस्सों में तक़सीम किया जाता है

एक : इल्मुल अक़ायद, दो : उलूमुल अहकाम, तीन : उलूमुल तज़कीर

गोया कुरआन हकीम इंसानों के अक़ायद की इस्लाह करता है और इन्हें सही अक़ायद के मुताबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारने के अहकाम देता है, नीज़, इस्लाहे फ़िक्र व अमल की तरफ़ राग़िब करने के लिये, पिछली उम्मतों के अहवाल ब्यान फ़रमाता है, जैसा कि कई सूरतों में मुतअद्दिद अंबियाए किराम के हालात, सूरः अल मोमिन में आले फ़िरऔन में से एक मुसलमान का वाक़िया, सूरः यासीन में एक मर्दे मोमिन का ज़िक्र, सूरः क़लम में बाग़ वालों का वाक़िया, सूरः बुरूज में खाई वालों का तज़किरा और सूरः कहफ़ में अस्हाबे कहफ़ का वाक़िया ब्यान फ़रमाया गया है।

इन अहवाल व वाक़यात के ब्यान करने में अल्लाह तआला की बेशुमार हिकमतें पिनहां हैं अपनी कम इल्मी का ऐतराफ़ करते हुए चंद निकात अर्ज़ करता हूं।

1. अल्लाह तआला को अपने महबूब बंदों का ज़िक्र महबूब है इसलिये अल्लाह अज़्ज़ व जल्ल ने कुरआने अज़ीम में जा बजा अपने प्यारे बंदों का ज़िक्र करते हुए उन पर अपनी नेमतों के नज़ूल का तज़किरा फ़रमायाः इरशाद बारी तआला हुआ।

"और यह हमारी दलील है जो हमने इब्राहीम को उसकी क़ौम पर अता फ़रमाई, हम जिसे चाहें (इल्म व हिकमत व नबुव्वत के साथ) दर्जों बुलंद करें, बेशक तुम्हारा रब इल्म व हिकमत वाला है। और हम ने उन्हें इस्हाक़ और याक़ूब अता किये, उन सब को हमने राह दिखाई और उनसे पहले नूह को राह दिखाई और उसकी औलाद में से दाऊद और सुलेमान और अय्यूब और यूसुफ़ और मूसा और हारुन को, और हम ऐसा ही बदला देते हैं नेको कारों को। और ज़करिया

और यहया और ईसा और इलयास को, यह सब हमारे कुर्ब के लायक़ हैं और इस्माईल और यसआ और यूनुस और लूत को, और हमने हर एक को उसके वक़्त में सब पर फ़ज़ीलत दी। और कुछ उनके बाप दादा और भाईयों में से बाज़ को (भी फ़ज़ीलत दी) और हमने उन्हें चुन लिया और सीधी राह दिखाई।" सूरः अनआम ८३ से ८७)

(कंज़ुल ईमान अज़ आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा मुहद्दिस बरेलवी)।

2. अल्लाह अज़्ज़ व जल्ल ने अपने हबीब को भी अंबियाए किराम अलैहिमुस्सलाम का ज़िक्र फ़रमाने का हुक्म दिया ताकि अंबियाए किराम अलैहिमुस्सलाम का ज़िक्र हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सुन्नत हो जाए और यह ज़िक्र सुनकर लोग उन नुफ़ूसे कुदसिया की पाक ख़सलतों से नेकियों का ज़ौक व शौक़ हासिल करें।

हदीस शरीफ़ में है कि सालेहीन के ज़िक्र से रहमते इलाही नाज़िल होती है। हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के क़िस्से के हवाले से सदरुल अफ़ाज़िल मौलाना सैयद नईमुद्दीन मुरादाबादी कुद्दैस सिर्रहु फ़रमाते हैं:

यह बहुत से अजायब व ग़रायब और हिकमतों और इबरतों पर मुश्तमिल है और इसमें दीन व दुनिया के बहुत फ़ायदे और सलातीन व रियाया और उलेमा के अहवाल और औरतों के ख़सायस और दुश्मनों की ईज़ाओं पर सब्र और उन पर क़ाबू पाने के बाद उनसे तजावुज़ न करने का नफ़ीस ब्यान है जिस से सुनने वाले में नेक सीरती और पाकीज़ा ख़सायल पैदा होते हैं।

अंबियाए किराम अलैहिमुस्सलाम का ज़िक्र करने के मुताल्लिक़ चंद आयात करीमा का तर्जमा मुलाहज़ा फ़रमायें।

और इन्हें नूह की खबर पढ़कर सुनाओ। (यूनुस : 71)

और इन पर पढ़ो ख़बर इब्राहीम की। (अश्शुअरा : 69)

और हमारे बंदे दाऊद नेमतों वाले को याद करो। (साद : 17)

और याद करो हमारे बंदे अय्यूब को। (साद : 41)

और याद करो हमारे बंदों इब्राहीम और इस्हाक़ और याकूब, कुदरत और इल्म वालों को। (साद : 45)

और याद करो इस्माईल और यसआ और ज़ुलकिफ़्ल को (सादः 48)

और इनसे निशानियां ब्यान करो उस शहर वालों की जब उनके पास रसूल आये। (यासीनः 13)

और याद करो जब तुम्हारे रब ने फ़रिश्तों से फ़रमाया, मैं ज़मीन में अपना नायब बनाने वाला हूं। (बक़राः 30)

3. अंबियाए साबिक़ीन अलैहिमुस्सलाम के अहवाल ब्यान करने में एक हिकमत यह थी कि हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के लिये काफ़िरों की तरफ़ से डाले गये मसायब व तकलीफ़ों पर सब्र करना आसान हो जाये। इरशाद हुआ:

और सब कुछ हम तुम्हें रसूलों की खबरें सुनाते हैं जिससे तुम्हारा दिल ठहरायें। (हूदः१२)

दूसरी जगह फ़रमाया गया :

और तुम से पहले रसूल झुटलाये गये तो उन्होंने सब्र किया इस झुटलाने और ईज़ायें पाने पर, यहां तक कि उन्हें हमारी मदद आई और अल्लाह की बातें बदलने वाला कोई नहीं। (अनआम : ३४)

मज़ीद फ़रमाया गया :

और ज़रूर ऐ महबूब! तुम से पहले रसूलों के साथ भी मज़ाक़ किया गया (काफ़िर) उनसे हंसते थे उनकी हंसी उनको ले बैठी तुम फ़रमा दो, ज़मीन में सैर करो फिर देखो कि झुटलाने वालों का कैसा अंजाम हुआ? (अनआम : ३४)

4. अहले किताब ने आक़ा व मौला सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की आज़माइश के लिये मुख़्तलिफ़ सवालात किये जिन के जवाब में रब तआला ने बाज़ वाक़ियात वही (कुरआन) फ़रमाये जैसा कि इरशादे बारी तआला हैः

और तुम से ज़ुल करनैन को पूछते हैं तुम फ़रमाओ मैं तुम्हें इस का मज़कूर पढ़कर सुनाता हूं, बेशक हमने उसे ज़मीन में क़ाबू दिया और हर चीज़ का एक सामान अता फ़रमाया। (कहफ़ ८३–८४)

5. गुज़श्ता उम्मतों के हालात व वाक़ियात ब्यान करने में काफ़िरों के एतेराज़ात का जवाब देना और उन्हें लाजवाब करना भी मक़सूद था। इरशाद हुआः

और मुश्रिक बोले, अल्लाह चाहता तो उसके सिवा कुछ न पूजते, न हम और न हमारे बाप दादा और न उससे जुदा होकर हम कोई चीज़ हराम ठहराते, ऐसा ही इनसे अगलों ने किया। (अन्नहल : ३५)

दूसरी जगह फ़रमाया :

और हमने तुम से पहले जितने रसूल भेजे सब मर्द ही थे जिन्हें हम वही (कुरआन) करते और सब शहर के साकिन थे तो क्या यह लोग ज़मीन पर चले नहीं तो देखते हैं इनसे पहलों का क्या अंजाम हुआ और बेशक आख़रत का घर परहेज़गारों के लिये बेहतर है तो क्या तुम्हें अक़्ल नहीं? (यूसुफ़ : ३६)

मज़ीद इरशाद फ़रमायाः

जैसे वह जो तुम से पहले थे तुम से ज़ोर में बढ़कर थे और उनके माल और औलाद तुम से ज़्यादा, तो वह अपना हिस्सा बरत गये तो तुमने अपना हिस्सा बरता जैसे अगले अपना हिस्सा बरत गये, और तुम बेहूदगी में पड़े जैसे वह पड़े थे, उनके अमल अकारत गये दुनिया और आख़रत में और वही लोग घाटे में हैं। क्या उन्हें अपने से अगलों की ख़बर न आई, नूह की क़ौम और आद और समूद और इब्राहीम की क़ौम और मदयन वाले और वह बस्तियां कि उलट दी गई, उनके रसूल रौशन दलीलें उनके पास लाये थे तो अल्लाह की शान न थी कि उन पर ज़ुल्म करता बल्कि वह ख़ुद ही अपनी जानों पर ज़ालिम थे। (सूरः तौबा : ६९–७०)

सूरः आराफ़ में क़ौमे नूह, क़ौमे हूद, क़ौमे सालेह और क़ौमे शोएब के अंजाम का ज़िक्र करके फ़रमायाः

और अगर बस्तियों वाले ईमान लाते और डरते तो ज़रूर हम उन पर आसमान और ज़मीन

से बरकतें खोल देते हैं मगर उन्होंने झुटलाया तो हमने उन्हें उनके किये पर अज़ाब में गिरफ़्तार किया। (आयत : ९६)

यह भी इरशाद हुआ:

यह बस्तियां हैं जिनके अहवाल हम तुम्हें सुनाते हैं और बेशक उनके पास उनके रसूल रौशन दलीलें लेकर आए तो वह इस क़ाबिल न हुए कि वह उस पर ईमान लाते जिसे पहले झुटला चुके थे। (आयत : ३१)

6. इन वाक़यात व अहवाल में रब तआला की कुदरत की निशानियां ज़ाहिर होती हैं जो बायसे इबरत भी हैं और नसीहत का ज़रिया भी और इरशादे रब्बे करीम है।

यह बस्तियों की ख़बरें हैं कि हम तुम्हें सुनाते हैं उनमें कोई खड़ी है (कि उसके खंडरात बाक़ी हैं) और कोई कट गई (कि उसका निशान भी बाक़ी नहीं) (हूद : ३०)

फिर फ़रमाया:

बेशक इसमें निशानी है उसके लिये जो आख़रत के अज़ाब से डरते हैं। (हूद : ३३)

मज़ीद इरशाद हुआ:

और आद और समूद को हलाक फ़रमाया और तुम्हें उनकी बस्तियां मालूम हो चुकी हैं और शैतान ने उनके कोतक (यानी बुरे काम) उनकी निगाह में भले कर दिखाए और उन्हें राहे हक़ से रोका, और उन्हें सूझता था (यानी वह अक़्ल वाले थे) (अम्बकूत : ३८)

बनी इस्राईल के नाफ़रमानों को बंदरों की शक्ल में मस्ख़ करने का हाल ब्यान करके इरशाद फ़रमाया:

तो हमने यह वाक़िया उसके आगे और पीछे वालों के लिये इबरत कर दिया और परहेज़गारों के लिये नसीहत। (बकरा : ६६)

हज़रत लूत अलैहिस्सलाम की क़ौम पर अज़ाब का ज़िक्र करके फ़रमाया:

बेशक हमने इससे रौशन निशानी बाक़ी रखी अक़्ल वालों के लिये। (अम्बकूत : ५३)

सैय्यदना इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा ने फ़रमाया:

वह रौशन निशानी लूत अलैहिस्सलाम की क़ौम के वीरान मकान हैं जिन के खंडरात अब भी मौजूद हैं। (ख़ज़ाइनुल इरफ़ान)

इसी तरह एक गुमराह पर अज़ाब नाज़िल किये जाने का ज़िक्र करके फ़रमाया गया, यह हाल है उनका जिन्होंने हमारी आयतें झुटलायीं तो तुम नसीहत सुनाओ कि कहीं वह ध्यान करें। (अअ्राफ़ : १७६)

सुरतुश शअरा में कई अंबियाए किराम अलैहिमुस्सलाम के हालात ब्यान फ़रमाकर मुतअद्दिद बार इस आयते करीमा की तकरार की गई। बेशक इसमें ज़रूर निशानी है।"

सूरः यूसुफ़ आयत 111 में इरशाद हुआ:

बेशक उनकी ख़बरों से अक़्लमंदों की आंखें खुलती हैं यह कोई बनावट की बात नहीं अपनों से अगले कामों की तसदीक़ है और हर चीज़ का मुफ़स्सल ब्यान है और मुसलमानों के लिये हिदायत और रहमत। (कंज़ुल ईमान)

7. कुरआने हकीम में अंबियाए किराम अलैहिमुस्सलाम और उनकी उम्मतों के सालेहीन को पेश आने वाले मसायब और तकालीफ़ का भी ज़िक्र मौजूद है इसमें एक हिकमत यह है कि इन ईमान अफ़रोज़ वाक़यात को पढ़कर मोमिन अपने ईमान को मज़ीद मज़बूत कर लें और राहे हक़ में हर तरह की आज़माईशों के लिये तैयार रहें। इरशादे बारी तआला हुआ।

क्या इस गुमान में हो कि जन्नत में चले जाओगे और अभी तुम पर वह हालात नहीं गुज़रे जो तुम से पहले लोगों पर गुज़रे हैं उन्हें सख़्ती और मुसीबत पहुंची और वह लरज़ उठे यहां तक कि कह उठा रसूल और उसके साथ ईमान वाले, कब आयेगी अल्लाह की मदद? सुन लो बेशक अल्लाह की मदद क़रीब है। (अल बक़रा : २१४)

दूसरी जगह फ़रमाया गया:

क्या लोग इस घमंड में हैं कि इतनी बात पर छोड़ दिये जायेंगे कि कहें: हम अल्लाह पर ईमान लाये और उनकी आज़माईश न होगी? और बेशक हमने उनसे अगलों को जांचा तो ज़रूर अल्लाह सच्चों को देखेगा और ज़रूर झूटों को देखेगा। (अम्बकूत : २,३)

8. कुरआने करीम में अंबियाए किराम अलैहिमुस्सलाम के तसर्रुफ़ व इख़्तेयार और मोज्ज़ात व कमालात का भी ब्यान है जिससे कुफ़्फ़ार के बातिल नज़रियात का रद्द होता है नीज़ साबित होता है कि अंबियाए किराम अलैहिमुस्सलाम बे मिस्ल बशर हैं उनकी ताक़त व कुदरत और शान व अज़मत आम इंसानों से कहीं बुलंद व बाला है।

इरशादे बारी तआला है:

और रसूल होगा बनी इस्राईल की तरफ़, यह फ़रमाता हुआ कि मैं तुम्हारे पास एक निशानी लाया हूं तुम्हारे रब की तरफ़ से कि मैं तुम्हारे लिये मिट्टी से परिन्दे की मूरत बनाता हूं फिर उसमें फूंक मारता हूं तो वह फ़ौरन परिन्दा हो जाती है अल्लाह के हुक्म से, और मैं शिफ़ा देता हूं मादर ज़ाद अंधे और सफ़ेद दाग़ वाले को, और मैं मुर्दे ज़िन्दा करता हूं अल्लाह के हुक्म से, और तुम्हें बताता हूं जो तुम खाते हो और जो अपने घरों में जमा करके रखते हो। बेशक इन बातों में तुम्हारे लिए बड़ी निशानी है अगर तुम ईमान रखते हो। (आले इमरान : ४६)

अंबियाए किराम अलैहिमुस्सलाम के तबर्रुकात की फ़ज़ीलत के बारे में इरशाद हुआ।

और उनसे उनके नबी ने फ़रमाया, उसकी बादशाही की निशानी यह है कि आये तुम्हारे पास एक ताबूत, जिस में तुम्हारे रब की तरफ़ से चैन है और कुछ बची हुई चीज़ें मुअज़्ज़ज़ मूसा और मुअज़्ज़ज़ हारुन के तर्का की उठा लायेंगे उसे फ़रिश्ते, बेशक इसमें बड़ी निशानी है तुम्हारे लिये अगर ईमान रखते हो। (अल–बक़रा : २२८)

सूरः नमल 19 में आयात हज़रत सुलेमान अलैहिस्सलाम का चूंटी की गुफ़्तगू सुनना, सूरः यूसुफ़ आयत 94 में हज़रत याकूब अलैहिस्सलाम का मीलों दूर से हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम की खुशबू पा लेना और सूरः ताहा आयत 97 में हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की पेशनगोई का पूरा होना और सुरः कहफ़ आयतः 65 में हज़रत ख़िज़्र अलैहिस्सलाम को इल्म लदुन्नी अता किया जाना मज़कूर है। जब कि आक़ा व मौला सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की आला शान यूं ब्यान हुई है।

और वह कोई बात अपनी ख़्वाहिश से नहीं करते, वह गुफ़्तगू तो नहीं करते मगर वही (कुरआन) जो उन्हें की जाती है। (अन्नज्म ३–४)

9. कुरआने अज़ीम में अंबियाए किराम अलैहिमुस्सलाम के कमालात व मोजज़ात के अलावा बाज़ महबूबाने खुदा की करामात और तसर्रुफ़ात भी ब्यान हुए हैं। हज़रत मरयम अलैहस्सलाम के वाक़ियात इसकी वाज़ेह मिसाल हैं जैसा कि सूरः आले इमरान में है :

जब ज़करिया (अलैहिस्सलाम) उसके पास जाते तो उसके पास नया रिज़्क़ पाते, कहा ऐ मरयम, यह तेरे पास कहां से आया? बोलीं, वह अल्लाह के पास से है, बेशक अल्लाह जिसे चाहे बे गिनती दे, यहां पुकारा ज़करिया (अलैहिस्सलाम) ने अपने रब को बोला, ऐ मेरे रब मुझे दे अपने पास से सुथरी औलाद, बेशक तू ही है दुआ सुनने वाला। (आले इमरान ३७–३८)

पस उनकी दुआ क़बूल हुई।

सुरह नमल में हज़रत सुलेमान अलैहिस्सलाम के एक वज़ीर की करामत ब्यान हुई है जिन्होंने वादी सबा (यमन) से तख़्ते बिलक़ीस पलक झपकने से पहले बैतुल मुक़द्दस में हाज़िर कर दिया था। सूरतुल बुरूज में खाई वालों के वाक़िया से भी वली की करामत साबित होती है। जिसे सहीह मुस्लिम में तफ़सील से ब्यान किया गया है।

10. अंबियाए किराम अलैहिमुस्सलाम और उनकी उम्मतों के अहवाल व वाक़ियात का ब्यान नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की नबुव्वत व रिसालत पर वाज़ेह दलील है इरशादे बारी तआला हुआ :

और (काफ़िर) बोले अगलों की कहानियां हैं जो इन्होंने (यानी हुज़ूर अलैहिस्सलाम ने) लिख ली हैं तो वह उन पर सुबह व शाम पढ़ी जाती हैं तुम फ़रमाओ इसे तो उस अल्लाह ने उतारा है जो आसमानों और ज़मीन की हर बात जानता है। (फुरक़ान : ५–६)

दूसरी जगह फ़रमाया गया:

यह ग़ैब की ख़बरें हम तुम्हारी तरफ़ वही (कुरआन) करते हैं इन्हें न तुम जानते थे न तुम्हारी क़ौम इससे पहले। (हूद : ४६)

मज़ीद इरशाद फ़रमाया :

यह कुछ ग़ैब की ख़बरें हैं जो हम तुम्हारी तरफ़ वही (कुरआन) करते हैं। (यूसुफ़ : ३२)

हज़रत मरयम के तज़किरे में इरशाद फ़रमाया:

यह ग़ैब की ख़बरें हैं कि हम खुफ़िया तौर पर तुम्हें बताते हैं और तुम उनके पास न थे जब वह अपने क़लमों से कुरआ डालते थे कि मरयम किस की परवरिश में रहें और तुम उनके पास न थे जब वह झगड़ रहे थे। (आले इमरान : ४४)

यानी बावजूद उनके पास न होने के उन तमाम वाक़ियात को तफ़सील से ब्यान कर देना आक़ाए दो जहां सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का मोजिज़ा है और आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के सच्चे रसूल होने का रौशन सबूत है।

तारीख़ से दिलचस्पी रखने वाले क़ारेईन अर्सादराज़ से ऐसी किताब की शदीद कमी महसूस कर रहे थे जो अंबियाए किराम अलैहिमुस्सलाम के अहवाल पर मुश्तमिल हो और जामेअ व

मुस्तनद हो मौजूदा दौर के अवाम व ख़वास को उस्ताज़ुल उलेमा हज़रत अल्लामा मौलाना मुफ़्ती अब्दुल रज़्ज़ाक़ भतरावली का शुक्र गुज़ार होना चाहिये कि उन्होंने अपनी गिरांक़द्र तदरीसी मसरूफ़ियात में से वक़्त निकाल कर अंबियाए किराम अलैहिमुस्सलाम के तज़किरे पर मबनी यह किताब तहरीर फ़रमाई।

हज़रत मुसन्निफ़ मद्दे ज़िल्लहुल आली की शख़्सियत अहले इल्म तबक़े में किसी तार्रुफ़ की मोहताज नहीं। आप जामिया रज़विया ज़ियाउल उलूम रावलपिंडी में बसूरते तदरीस और जामा मस्जिद ग़ौसिया F-6-1इस्लामाबाद में बसूरते वअज़ व तक़रीर तिश्नगाने इल्म को सैराब फ़रमाते हैं नीज़ मुतअद्दिद दरसी कुतुब पर हवाशी के अलावा आप ने कई किताब तसनीफ़ फ़रमाई हैं। जिनमें तस्कीनुल जिनान फ़ी महासिने कंजुल ईमान, शमा हिदायत और मौत का मंज़र मअ अहवाले हश्र व नशर ख़ास तौर पर क़ाबिले ज़िक्र हैं।

ज़ेरे नज़र किताब की सबसे बड़ी खुसूसियत यह है कि इसे मोतबर तफ़ासीर और कुतुबे अहादीस की रौशनी में तहरीर किया गया है। इमाम राज़ी की तफ़सीरे कबीर और अल्लामा महमूद अहमद आलूसी की तफ़सीर रूहुल मआनी को इस किताब का अहम माख़ज़ क़रार दिया जाये तो बेजा न होगा।

हज़रत मुसन्निफ़ मद्दे ज़िल्लहू ने बातिल अदयान और गुमराह फ़िरक़ों में जा बजा दलायल क़ायम किये हैं और मज़हबे हक़ अहले सुन्नत व जमाअत का भरपूर दिफ़ाअ किया है। नीज़ अंबियाए किराम अलैहिमुस्सलाम की तरफ़ मंसूब ग़ैर मोतबर व ग़लत क़िस्से कहानियों का भी ख़ूब रद् किया है।

यह किताब हज़रत अल्लामा मद्दे ज़िल्लहू की तदरीसी महारत की भी आइनादार है उम्मीद है कि इस से अवाम, दीनी मदारिस के तलबा और उलेमा व खुत्बा हज़रात भी यकसां इस्तिफ़ादा करेंगे। इस किताब की एक और नुमायां ख़सूसियत यह है कि हज़रत मुसन्निफ़ मद्दे ज़िल्लहू ने अक्सर मक़ामात पर दीगर उर्दू तराजिम के मुक़ाबले में मुजद्दिदे दीन व मिल्लत आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा मुहद्दिस बरेलवी के तर्जमए कुरआन कंजुल ईमान की फ़ौक़ियत भी अहसन अंदाज़ में साबित की है।

मुख़्तसर यह कि उस्ताज़िल मुकर्रम मुफ़क्किरे कुरआन व हदीस हज़रत अल्लामा अब्दुल रज़्ज़ाक़ साहब भतरावली मद्दे ज़िल्लहू ने तफ़ासीर व अहादीस में बिखरे हुए मोतियों को अंबियाए किराम अलैहिमुस्सलाम की ताज़ीम व मुहब्बत के खूबसूरत हार में पिरोकर आपकी ख़िदमत में पेश कर दिया है।

दुआ है अल्लाह तआला उस्ताज़िल मुकर्रम मद्दे ज़िल्लहू को सेहत व तंदुरुस्ती अता फ़रमाये, आपका साया अहले सुन्नत के सिरों पर दराज़ फ़रमाये, आपकी औलाद को भी आपके नक़्शे क़दम पर चलाए और इस किताब को नाफ़ेअ ख़लाईक़ व तोशए आख़रत बनाये।

ख़ाक पाए उलेमाए हक़

मुहम्मद आसिफ़ क़ादरी

20 जमादियुल ऊला 1417 हि०



मुक़द्दमा

और बेशक हमने तुमसे पहले कितने ही रसूल भेजे कि जिनमें किसी के अहवाल तुम से ब्यान फ़रमाये और किसी के अहवाल ब्यान नहीं फ़रमाये।

कुरआन पाक में बाज़ अंबियाए किराम अलैहिमुस्सलाम के अस्माए गिरामी (नाम) मज़कूर हैं और उनके हालात को भी ज़िक्र किया गया है और बाज़ अंबियाए किराम अलैहिमुस्सलाम के नाम तो हैं लेकिन उनके हालात ज़िक्र नहीं किये गये जैसे हज़रत यसआ़ और हज़रत ज़ुलकिफ़्ल और बाज़ के वाक़यात ज़िक्र हैं लेकिन नाम नहीं, जैसे हज़रत हज़क़ैल और हज़रत शमूईल और बाज़ के नाम भी नहीं और हालात भी नहीं जैसे हज़रत दानयाल अलैहिस्लसाम।

कुरआन पाक में अंबियाए किराम के इस्मे गिरामी:

हज़रत आदम, हज़रत नूह, हज़रत इब्राहीम, हज़रत इस्माईल, हज़रत इसहाक़, हज़रत याक़ूब, हज़रत यूसुफ़, हज़रत हूद, हज़रत सालेह, हज़रत लूत, हज़रत मूसा, हज़रत हारुन, हज़रत शोएब, हज़रत दाऊद, हज़रत सुलेमान, हज़रत ज़करिया, हज़रत यहया, हज़रत इल्यास, हज़रत यसआ़, हज़रत इदरीस, हज़रत ज़ुलकिफ़्ल, हज़रत यूनुस, हज़रत अय्यूब, हज़रत ईसा अलैहिमुस्लसातु वस्सलाम और हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम।

अंबियाए किराम अलैहिमुस्सलाम की तादाद :

अगरचे मशहूर रिवायत है कि अंबियाए किराम अलैहिमुस्सलाम की तादाद एक लाख चौबीस हज़ार है लेकिन एक रिवायत में दो लख चौबीस हज़ार का भी ज़िक्र है। एक रिवायत में आठ हज़ार का भी ज़िक्र है। इसलिये बेहतर यह है कि अक़ीदा यह हो कि जितने अंबियाए किराम अलैहिमुस्सलाम रब तआला की तरफ़ से आये हैं सब बरहक़ हैं उन तमाम पर हमारा ईमान है ख़ास तादाद ज़िक्र न की जाये, क्योंकि ऐसा न हो कि यह कम तादाद पर ईमान लाये और वाक़ई में ज़ायद हों, या ऐसा न हो कि यह ज़ायद तादाद पर ईमान लाये और वाक़ई में कम हों।

पहली सूरत में कई अंबियाए किराम अलैहिमुस्सलाम पर ईमान नहीं होगा और दूसरी सूरत में जो नबी नहीं होंगे उन को नबी मानना लाज़िम आयेगा इसलिये दोनों सूरतों में ख़राबी आती है लिहाज़ा यही बेहतर सूरत है कि यह ईमान रखे। ऐ अल्लाह तेरी तरफ़ से भेजे हुए तमाम अंबियाए किराम अलैहिमुस्सलाम पर मेरा ईमान है और वह बरहक़ हैं।

तंबीह : अंबियाए किराम अलैहिमुस्सलाम की तादाद का हमें यक़ीनी इल्म नहीं क्योंकि रिवायात मुख़्तलिफ़ हैं इस से यह लाज़िम नहीं आता कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को भी इल्म नहीं था इसी तरह तफ़सीलन अंबियाए किराम अलैहिमुस्सलाम के वाक़ियात को न ज़िक्र करने का भी यह मतलब नहीं है कि आप पर बज़रिये वही (कुरआन) कई अंबियाए किराम अलैहिमुस्सलाम के हालात ज़ाहिर नहीं किये गये अगर बज़रिये वही (कुरआन) आप को ख़बर दी जाती तो हमें भी इल्म होसिल होता। यह दुरुस्त नहीं क्योंकि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अपने इल्म का यह आलम है।

बेशक नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उस वक़्त तक दुनिया से तशरीफ़ नहीं ले गये यहां तक कि अल्लाह तआला ने आपको दुनिया व आख़िरत के तमाम ग़ैबी उलूम अता फ़रमा दिये, अलबत्ता बाज़ चीज़ों के छुपाने का आप को हुक्म दिया गया था।

रसूलों और आसमानी किताबों की तादाद :

तमाम अंबियाए किराम अलैहिमुस्सलाम में से बाज़ ज़्यादा मर्तबा वाले नबी हुए हैं जिन को रसूल कहा जाता है उन रसूलों की तादाद तीन सौ तेरह है और आसमानी किताबों की तादाद कुल एक सौ चार है। चार के मुस्तक़िल नाम हैं, तौरेत, इंजील, ज़बूर, कुरआन पाक और एक सौ के मुस्तक़िल नाम नहीं बल्कि उनको सहीफ़े कहा जाता है।

नबी किसे कहा जाता है?

नबी का लफ़्ज़ या तो "नबावह" से बना है जिसका मतलब होता है बुलंदी मर्तबा और या यह लफ़्ज़ बना है "नबा" (बा—साकिन) से जिस का मतलब होता है ख़बर देना ज़ाहिर करना। और या यह लफ़्ज़ बना है 'नबाह' (बा—साकिन और ता ज़ायद) से जिसका मतलब होता है मख़्फ़ी आवाज़।

पहले मायने के लिहाज़ से नबी को "नबी" इसलिये कहते हैं कि तमाम मख़लूक़ से बुलंद मर्तबा रखता है। दूसरे मायने के लिहाज़ से कि वह हक़ बात को ज़ाहिर करता है और ग़ैबी ख़बरें देता है और तीसरे मायने के लिहाज़ से वह वही (कुरआन) को सुनता है जो आवाज़ दूसरों पर मख़्फ़ी होती है।

इसी तरह एक एहतेमाल यह भी है कि यह लफ़्ज़ असल में नबीया हो तो उस वक़्त मायने होता है रास्ता, इस सूरत में नबी को नबी कहने की वजह यह होगी कि वह अल्लाह तआला और मख़लूक़ के दर्मियान वास्ता होता है जिस तरह रास्ता मंज़िले मक़सूद तक पहुंचने का ज़रिया होता है इसी तरह अंबियाए किराम अलैहिमुस्सलाम रब तआला का कुर्ब हासिल करने और मंज़िले मुराद को पाने का ज़रिया और वास्ता होते हैं।

यह तो लफ़्ज़ "नबी" के लग़वी मायने थे जो सब के सब नबी में बेयक वक़्त जमा होते हैं। इस्तेलाही तौर पर नबी की तारीफ़ यह है कि:

"बनीए आदम से हो, यानी इंसान हो, मुज़क्कर हो, आज़ाद हो, उसकी तरफ़ वही (कुरआन) आए और लोगों तक अल्लाह के अहकाम पहुंचाए, नेक लोगों को जन्नत की बशारत दे और कुफ़्फ़ार को जहन्नम से डराये और मोजज़ात के ज़रिये उसकी नबुव्वत को ताईद हासिल होती है।

रसूल का मायने पैग़ाम पहुंचाने वाला, भेजा हुआ। लेकिन इस्तेलाह में रसूल उसे कहते हैं जिसे किताब भी अता हो या पहली शरीअत पर अमल करना ख़त्म हो चुका हो तो फिर से पहली शरीअत की तजदीद का हुक्म दिया जाये। हर रसूल नबी ज़रूर होता है लेकिन हर नबी का रसूल होना ज़रूरी नहीं।

तमाम रसूलों और अंबियाए किराम अलैहिमुस्सलाम को मोजज़ात से तक़वियत पहुंचाई जाती है अब देखना यह है कि मोजिज़ा किसे कहते हैं?

मोजिज़ा : आदत के ख़िलाफ़ आलात के वासता के बग़ैर मुद्दई नबुव्वत से बाद अज़ ऐलाने नबुव्वत किसी काम का ख़िलाफ़े आदत सर ज़द होना, मोजिज़ा कहलाता है। आदत के मुताबिक़ काम करने का नाम मोजिज़ा नहीं, जिसे तेज़ दौड़कर दूसरों से आगे निकल जाना, तेज़ नज़र वाले शख़्स का किसी चीज़ को इतने दूर से देख लेना कि आम आमदी को नज़र न आ सके। इस तरह के काम मोजिज़ा नहीं कहलाते।

आलात के वास्ता से आदत के ख़िलाफ़ काम करने का नाम भी मोजिज़ा नहीं। टेलीफ़ोन के ज़रिये दूर दराज़ बात कर लेना टेलीविज़न के ज़रिये किसी की शक्ल देख लेना वग़ैरह इस तरह के काम मोजिज़ात नहीं।

मोजिज़ाः सिर्फ़ नबी से आदत के ख़िलाफ़ होने वाले काम का नाम है। ग़ैर नबी ने कोई काम हैरत अंगेज़ कर दिया हो तो उसे मोजिज़ा कहना जहालत व दीवानगी है, जैसे आज के दौर में आम कामों को मोजिज़ा कहना अक्सर पढ़े लिखे बेवकूफ़ों में रिवाज पा चुका है जो सरासर बातिल है।

अरहास : ऐलाने नबुव्वत से पहले नबी से आदत के ख़िलाफ़ कोई काम सर ज़द हो तो उसे मोजिज़ा नहीं कहा जायेगा बल्कि उसको अरहास कहा जायेगा जैसे हुज़ूर नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को ऐलाने नबुव्वत से पहले ही पत्थर सलाम किया करते थे और हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम ने बचपन में कलाम फ़रमाया।

करामत : अल्लाह के वली से कोई काम आदत के ख़िलाफ़ वाक़ेय हो तो उसे करामत कहा जायेगा।

मऊनत : आम मोमिन जो वली नहीं और फ़ासिक़ भी नहीं तो उससे कोई काम आदत के ख़िलाफ़ हो तो उसे मऊनत कहा जायेगा।

इस्तिदराज : काफ़िर या फ़ासिक़ के हाथों शोबदा बाज़ी का मुज़ाहरा आदत के ख़िलाफ़ काम करने को इस्तिदराज कहते हैं क्योंकि वह इसकी वजह से जहन्नम की आग में पहुंच जाता है। इस्तिदराज का मतलब होगा आग की तरफ़ पहुंचाना। यह उस वक़्त है जब यह कलाम उसकी ग़र्ज़ के मुताबिक़ वाक़ेय हों।

इहानत : काफ़िर से कोई काम आदत के ख़िलाफ़ सर ज़द हो लेकिन उसकी ग़र्ज़ के ख़िलाफ़ हो तो उसे इहानत कहते हैं जैसे मुसैलमा कज़्ज़ाब ने अपना कमाल ज़ाहिर करना चाहा तो कुल्ली करके पानी कुंए में डाला तो वह नमकीन और कड़वा हो गया। एक शख़्स की एक आंख बेकार थी उस पर हाथ फेर कर दुरुस्त करना चाहा तो दूसरी आंख भी बेकार हो गई।

सहर : (जादूगरी) शरीर लोग अपने ख़ास आमाल के ज़रिये शयातीन की इमदाद से कई काम आदत के ख़िलाफ़ वाक़ेय करते हैं यह सहर यानी जादूगरी है।

तंबीह : मुख़ालफ़ीन के चैलेंज और मुतालबा पर और नबी के दावा पर मोजिज़ा का वक़ूअ ज़रूरी हो जाता है लेकिन करामत का वक़ूअ ज़रूरी नहीं।

कौन नबी नहीं हो सकते?

मोअन्नस को नबी नहीं बनाया गया क्योंकि तबलीग़े दीन उनसे मुमकिन नहीं। नबी को घर से बाहर मर्दों के हुजूम और मजालिस में अहकाम इलाहिय पहुंचाने होते हैं यह काम मोअन्नस से नहीं हो सकते।

'गुलाम' नबी नहीं हो सकता क्योंकि गुलाम दूसरे लोगों की नज़र में हक़ीर होता है और मालिक की इजाज़त के बग़ैर कोई काम नहीं कर सकता इसलिये उससे तबलीग़े अहकाम दीन मुमकिन नहीं।

जिन्न और फ़रिश्ते नबी नहीं बनाए गये। जिन्स का जिन्स से फ़ायदा हासिल करना तो मुमकिन होता है लेकिन दूसरी जिन्स से फ़ायदा हासिल करना मुश्किल होता है इस लिये इंसानों को फ़ायदा पहुंचाने के लिये नबी का इंसान होना ज़रूरी है इसलिये अल्लाह तआला ने इरशाद फ़रमायाः

अगर हम नबी को फ़रिश्ता बनाते जब भी उसे मर्द ही बनाते। (अनआम ६)

यह उन कुफ़्फ़ार को बताया गया है जो अंबियाए किराम अलैहिमुस्सलाम को अपने जैसा बशर कह कर ईमान से महरूम होते थे कि हम उस पर ईमान क्यों लायें तो अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि नबी की तालीम से फ़ैज़ हासिल करने का यही तरीक़ा है कि नबी को इंसानी शक्ल में भेजा जाये ताकि वह लोग फ़ायदा हासिल कर सकें। अगर फ़रिश्ता को नबी बनाते तो उसे असली शक्ल में देखने की इंसानों में ताक़त ही न होती। अगर फ़रिश्ता को नबी बनाया भी होता तो इंसानी शक्ल में ही आता ताकि लोग उससे फ़ैज़ हासिल कर सकते।

नबी गुनाहों से पाक होते हैं :

इमाम काज़ी अयाज़ रहमतुल्लाहि अलैहि फ़रमाते हैं:

फ़ुक़हाए किराम और मुतकल्लिमीन में से मुहक़्क़ेक़ीन की एक जमाअत का मज़हब यही है कि अंबियाए किराम अलैहिमुस्सलाम जिस तरह क़ब्ल अज़ नबुव्वत और बाद अज़ नबुव्वत कबीरा गुनाहों से पाक हैं उसी तरह सग़ीरा गुनाहों से भी पाक हैं।

अंबियाए किराम अख़लाक़े अज़ीमा के मालिक होते हैं:

अंबियाए किराम अलैहिमुस्सलाम को अल्लाह तआला ने ऐलाने नबुव्वत से पहले भी ऐसे आला और पाकीज़ा अख़लाक़ अता किये होते हैं ताकि लोग उनके माज़ी हाल मुस्तक़बिल पर कोई ऐतराज़ न कर सकें, यानी यह पाकीज़ा अख़लाक़ उनको तमाम औक़ात में हासिल रहते हैं शुजाअत, बुर्दबारी, करीमाना गुफ़्तगू वग़ैरह हर तरह के अच्छे अख़लाक़ के मालिक होते हैं और रज़ील व घटिया कामों से पाक होते हैं।

नफ़्से नबुव्वत में तमाम अंबिया अलैहिमुस्सलाम बराबर हैं:

तमाम अंबिया किराम अलैहिमुस्सलाम नफ़्से नबुव्वत में यानी बहैसियत नबी होने के बराबर हैं। ऐसा नहीं कहा जा सकता कि किसी नबी की नबुव्वत असली हो और किसी नबी की नबुव्वत आरज़ी हो, बल्कि तमाम अंबियाए किराम अलैहिमुस्सलाम की नबुव्वत असली है। किसी नबी की नुबूवत आरजी नहीं हां अलबत्ता दर्जात के लिहाज़ से बाज़ अंबियाए किराम अलैहिमुस्सलाम को बाज़ पर फ़ज़ीलत हासिल है और तमाम अंबियाए किराम अलैहिमुस्सलाम से अफ़ज़ल हमारे नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हैं।

दुनिया में तशरीफ़ लाने के लिहाज़ से सबसे पहले आने वाले ॱबी हज़रत आदम अलैहिस्सलाम हैं और सब से आख़िर में तशरीफ़ लाने वाले हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हैं।

हज़रत आदम सफ़ीउल्लाह अलैहिस्सलाम

अल्लाह तआला का फ़रिश्तों से मश्वरा :

अल्लाह तआला ने हज़रत आदम अलैहिस्सलाम की तख़लीक़ से पहले फ़रिश्तों से मश्वरा किया।

और याद कीजिए! जब आपके रब ने फ़रिश्तों से फ़रमाया बेशक मैं बनाने वाला हूं ज़मीन में (अपना) नायब। (बक़रा ३०)

मश्वरा करने की हिकमत :

अल्लाह तआला का फ़रिश्तों से फ़रमाना कि मैं ज़मीन में ख़लीफ़ा बनाने वाला हूं माज़ल्लाह उनसे इजाज़त तलब करना मक़सूद नहीं था बल्कि सिर्फ़ मश्वरा तलब करना था और वह भी एहतेयाजी या ला इल्मी की वजह से नहीं, क्योंकि अल्लाह तआला किसी अम्र में किसी का मोहताज नहीं बल्कि मश्वरा तलब करने में हिकमत यह थी कि इसमें फ़रिश्तों और ख़लीफ़ा का इकराम पाया जाये, क्योंकि रब तआला का फ़रिश्तों से मश्वरा तलब करने में फ़रिश्तों की अज़मते शान वाज़ेह होती है और ख़लीफ़ा के मुताल्लिक़ मश्वरा करने में ख़लीफ़ा की अज़मत भी वाज़ेह होती है कि उसकी तख़लीक़ से पहले ही उसका नूरानी मख़लूक़ में ज़िक्र हो रहा है।

हदीस मरफ़ूअ :

बेशक मेरे रब ने मेरी उम्मत के बारे में मुझसे मश्वरा तलब फ़रमाया।

यह मश्वरा तलब करना भी उसी हिकमत के पेशे नज़र था कि इसमें हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और आपकी उम्मत की इज़्ज़त अफ़ज़ाई हो। अल्लाह तआला ने अपनी ला इल्मी या एहतेयाजी के तौर पर माज़ल्लाह नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से मश्वरा नहीं किया। इसी तरह अल्लाह तआला ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को हुक्म फ़रमायाः

आप इनसे, उमूर में मश्वरा करें।

यहां सहाबा किराम से मश्वरा करने का हुक्म इस लिये नहीं दिया गया कि आप सहाबा किराम के मश्वरा के मुहताज थे बल्कि सहाबा किराम की इज़्ज़त अफ़ज़ाई के लिये मश्वरा का हुक्म दिया गया।

और इस वजह से भी अल्लाह तआला ने फ़रिश्तों से मश्वरा किया और नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को सहाबा किराम से मश्वरा करने का हुक्म दिया गया कि लोग इससे सबक़ हासिल करें और अपने मामलात में एक दूसरे से मश्वरा किया करें।

एतेराज़ : ख़लीफ़ा का मतलब है पीछे आने वाला और नायबे ख़लीफ़ा की ज़रूरत उस वक़्त दरपेश आती है जब असल खुद अपने काम करने से आजिज़ हो, असल का आजिज़ होना या उसकी मौत की वजह से होता है, या उसके ग़ायब होने की वजह से होता है, या मर्ज़, थकान वग़ैरह की वजह से। इन तमाम मायनी के लिहाज़ से अल्लाह तआला का ख़लीफ़ा बनाना दुरुस्त नहीं। वह हय्य ला–यमूत है। हमेशा हमेशा के लिये ज़िन्दा है उस पर मौत के वक़ूअ का तसव्वुर करना भी मुहाल है, वह शहे रग से भी ज़्यादा क़रीब है, वह कहीं दूर चला जाये, ग़ायब हो जाये,

यह होना भी मुमकिन नहीं कि वह मरीज़ हो जाये, थक जाये, आजिज़ हो जाये, यह भी नामुमकिन है तो अल्लाह तआला के ख़लीफ़ा बनाने का क्या मतलब है?

जवाब : यहां ख़लीफ़ा का मायने पीछे आने वाला नहीं बल्कि नायब है। यानी अल्लाह का नायब होकर ज़मीन व आसमान की अशिया में तसर्रुफ़ करने वाला हो। नायब बनाने की ज़रूरत भी अल्लाह तआला को नहीं थी, वह मोहताज नहीं बल्कि जिन की तरफ़ ख़लीफ़ा बनाना था उन्हें मोहताजी थी इसलिये कि इंसान बहुत ज़्यादा कदूरतें और जुल्माते जिस्मानिया रखते हैं और अल्लाह तआला बहुत मुक़द्दस है, फ़ैज़ लेने वाले और फ़ैज़ देने वाले में कोई मुनासबत होनी चाहिये जब मख़लूक़ में और अल्लाह तआला में कोई मुनासबत नहीं, मख़लूक़ को वजूद में लाना भी रब तआला की मशीयत थी, तो अल्लाह तआला ने मख़लूक़ के पैदा फ़रमाने से पहले ही उनके फ़ैज़ लेने का यह एहतेमाम किया कि अंबियाए किराम अलैहिमुस्सलाम को वास्ता बनाया जो अपनी नूरानियत की वजह से अल्लाह तआला से फ़ैज़ लेकर अपनी बशरियत के वस्फ़ की वजह से इंसानों तक वह फ़ैज़ पहुंचा दें।

जिस तरह इंसानों और हैवानों के जिस्मों में हड्डियां और गोश्त है हड्डिया सख़्त हैं और गोश्त नरम है हड्डी अपनी सख़्ती की वजह से गोश्त से गिज़ा हासिल नहीं कर सकती थी तो अल्लाह तआला ने अपनी हिकमते कामिला से हड्डियों और गोश्त के दर्मियान पट्ठे बतौर वास्ता रखे पट्ठे अपने नर्म हिस्से से गोश्त से गिज़ा हासिल करते हैं और अपने सख़्त हिस्से से हड्डी को गिज़ा पहुंचाते हैं।

नुक्ता : अल्लाह तआला ने हज़रत आदम अलैहिस्सलाम को ख़लीफ़ा बनाने के मुताल्लिक़ जो मशवरा किया इससे मुराद सिर्फ़ आदम अलैहिस्सलाम नहीं और आप की तमाम औलाद भी मुराद नहीं बल्कि आदम अलैहिस्सलाम और आपकी औलद से बाज़ हज़रात जो इस ख़िलाफ़त के मनसब के अहल होंगे यह सब मुराद हैं और वह अफ़राद आदम अलैहिस्सलाम की औलाद में हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तक पैदा होने वाले तमाम अंबिया व रसूल हैं।

अंबियाए किराम अलैहिमुस्सलाम तमाम के तमाम फ़रदन फ़रदन मासूम हैं लेकिन सिद्दीक़ीन, औलिया, सालेहीन फ़रदन फ़रदन मासूम नहीं, अलबत्ता इज्तिमाई तौर पर ख़ता से महफ़ूज़ हैं। यही वजह है कि उन हज़रात का इज्तेमाई फ़ैसला उम्मत को क़बूल करना लाज़िम हो जाता है।

जब यह साबित हुआ कि ख़िलाफ़त का हक़दार वह है जिसमें यह इस्तेदाद पाई जाये तो खुद वाज़ेह हुआ कि औरत की फ़ितरते सलीमा और तबीयत मुस्तक़ीमा इस क़ाबिल नहीं कि जुमा या बाक़ी नमाज़ों की इमामत या ख़िलाफ़त यानी हाकमियत उस के सुपुर्द की जाये। औरत अपनी फ़ितरती और तबई कमज़ोरी की वजह से यह काम सर अंजाम नहीं दे सकती।

ख़लीफ़ा बनाने का मक़सद :

ख़लीफ़ा बनाने का मक़सद ही था कि वह अल्लाह के अहकाम मख़लूक़ तक पहुंचाए और रब तआला के अवामिर व नवाही का निज़ाम जारी करे, मुसलमानों की अक्सरियत जब इस निज़ाम को चाहने वाली हो तो उम्मते मुस्लेमा का कुफ़्फ़ार पर ग़ल्बा रहता है लेकिन यह उसी वक़्त होता है जब मुसलमान अपने ईमान व आमाल में कामिल हों, कामिल ईमान का मैयार यह है कि

अल्लाह तआला और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मुहब्बत तमाम मुहब्बतों पर ग़ालिब हो और अल्लाह की राह में मौत की तमन्ना कामिल और ग़ालिब हो।

मुसलमानों की ज़ुबूं हाली की वजह :

ख़िलाफ़ते राशिदा अदलिया के बाद मुसलमानों पर दुनिया की मुहब्बत ग़ालिब आ गई। अल्लाह और उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मुहब्बत उन के दिलों में रासिख़ न रही, दुनिया की मुहब्बत की वजह से मौत से उनके दिलों में कराहत पैदा हो गई और अल्लाह की राह में जान देने का जज़्बा कामिल न रहा, जिसकी वजह से उम्मते मुस्लेमा बदहाली का शिकार हो गई, ग़ैरों पर उस को ग़ालिब रहने की नेमत से महरूम कर दिया गया।

सुनन अबू दाऊद और बैहक़ी की हदीस में उम्मते मुस्लेमा की इस बदहाली का ज़िक्र निहायत ही अलमनाक सूरत में वारिद है। हज़रत सूबान से रिवायत है रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया:

ऐ मुसलमानो! क़रीब है कि काफ़िरों की जमाअतें तुम पर हमला आवर होने के लिये इस तरह एक दूसरे को बुलायेंगी जैसे किसी प्याले में खाना रखा हो और उसे खाने के लिये हर तरफ़ से लोगों को बुलाया जाये, सहाबा किराम ने अर्ज़ किया कि हुज़ूर! क्या उस वक़्त हम क़लील होंगे? फ़रमाया, नहीं तुम उस वक़्त बहुत कसीर तादाद में होगे लेकिन तुम उस वक़्त सैलाब के झाग और उसके खस व ख़ाशाक की तरह होगे। (यानी ईमानी कुव्वत व शुजाअत तुम में बाक़ी न रहेगी) अल्लाह तआला तुम्हारी हैबत और तुम्हारा रोब दुश्मन के दिल से निकाल देगा और तुम्हारे दिलों में बुज़दिली और कमज़ोरी पैदा कर देगा सहाबा किराम ने अर्ज़ किया हुज़ूर बुज़दिली और कमज़ोरी का सबब क्या होगा? फ़रमाया:

दुनिया की मुहब्बत और मौत की कराहत।

ज़ाहिर है कि जो शख़्स दुनिया से मुहब्बत करेगा मौत उसे नापसंद होगी। अर्सा दराज़ से मुसलमान इसी बदहाली में मुब्तला हैं और मौजूदा दौर में यह बदहाली ऐसी ख़ौफ़नाक सूरत इख़्तेयार कर गई है कि इसके नताईज के तसव्वुर से भी दिल लरज़ जाता है।

ख़्याल रहे कि हर दौर में नेक लोग, असहाबे इल्म व तक़वा रहे हैं, इन्हीं के दम क़दम से निज़ामे दुनिया चल रहा है और दुनिया की बक़ा है लेकिन अक्सरियत जब गुनाहों में मुब्तला हो जाती है तो कम तादाद में नेक लोग भी हलाकत की ज़द में आ जाते हैं अगरचे वह हलाकत उनके लिये अज़ाब नहीं होती, जैसा कि हदीस शरीफ़ में वारिद है:

यानी जब अल्लाह तआला किसी क़ौम पर अज़ाब भेजता है तो नेक व बद सभी उसमें हलाक हो जाते हैं फिर जब वह उठाये जायेंगे तो हर एक का उठाया जाना उसके अच्छे या बुरे आमाल के मुताबिक़ होगा। (बुख़ारी जिल्द २ सफ़ा १०५३)

मुसलमान अगर अपनी अज़मते रफ़्ता को हासिल करना चाहते हैं और उनकी तमन्ना यह है कि वह काफ़िरों पर ग़ालिब आ जायें तो उसका वाहिद हल यह है कि तमाम मुसलमान मजमूई तौर पर कामिल ईमान रखें, अल्लाह तआला और उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मुहब्बत पर किसी और चीज़ को तरजीह न दें, इसी मुहब्बत और कामिल ईमान की वजह से

जज़्बए जिहाद और शौके शहादत पैदा करें तो कोई वजह नहीं कि मुसलमान अपनी इस अज़मते दूर रफ़्ता को हासिल न कर लें जो सहाबा किराम के दौर में कुफ़्फ़ार पर मुसलमानों को हासिल थी कि मुसलमानों की हैबत से कुफ़्फ़ार के आज़ा पर कपकपी तारी होती।

अल्लाह तआला के मश्वरा तलब करने पर फ़रिश्तों का ताज्जुब से सवाल :

जब अल्लाह तआला ने फ़रिश्तों से ख़लीफ़ा बनाने का मश्वरा तलब किया तो फ़रिश्तों ने ताज्जुब करते हुए रब तआला से सवाल किया:

क्या ऐसे को (नायब) करेगा जो उसमें फ़साद फैलाये और ख़ून रेज़ियां करे? और हम तुझे सराहते हुए तेरी तस्बीह करते और तेरी पाकी बोलते हैं।

फ़रिश्तों ने रब तआला पर कोई ऐतराज़ नहीं किया और न ही कोई मुख़ालफ़त की बल्कि उनको अल्लाह तआला ने पहले ही यह इल्म दे रखा था कि जो ख़लीफ़ा मैं बनाने वाला हूं उसमें और उसकी औलाद में अनासिर अरबा की आमेज़िश होगी जो एक दूसरे के मुख़ालिफ़ होंगे यानी आग, मिट्टी, पानी, हवा का मजमूआ होगा। यह इल्म फ़रिश्तों को रब तआला के बताने से हासिल हुआ था या उन पर लौहे महफ़ूज़ को मुनकशिफ़ करने से हासिल हुआ था। उन्होंने समझा कि मुख़ालिफ़ और ज़िद की चीज़ें मिलने से तो फ़साद ही फ़साद होगा, ख़लीफ़ा तो इसलिये बनाया जाता है कि ज़मीन में भलाई क़ायम हो और लोगों को भलाई की राह पर क़ायम किया जाये और उनके नफ़्सों की तकमील की जाये और उनमें अल्लाह तआला के अहकाम जारी किये जायें तो जिस की बिना ही फ़साद पर होगी उस से यह काम कैसे हो सकेंगे?

यह सवाल उनका मख़फ़ी हिकमत के पता चलाने के लिये था या इस सवाल पर ताज्जुब करते हुए था कि जो फ़साद फैलाने वाले होंगे उनसे ज़मीन को आबाद करना और उसमें सलाहियत पैदा करना क्योंकर मुमकिन होगा?

ख़्याल रहे कि यह फ़रिश्तों की इज्तेहादी ख़ता थी कि उन्होंने समझा शायद तमाम इंसान ऐसे होंगे हालांकि अंबियाए किराम अलैहिमुस्सलाम मासूम होने की वजह से नेक और पारसा, सालेह व मुत्तक़ी लोग अल्लाह की हिफ़ाज़त में होने की वजह से फ़साद बरपा करने से पाक हैं।

फ़रिश्तों के ख़्याल के मुताबिक़ उनकी तस्बीह व तक़दीस और इस्मत के पेशे नज़र वह ख़िलाफ़ते इलाहया के ज़्यादा मुस्तहिक़ थे, उनके इस तरह के क़सूरे इल्म को ज़ाहिर करने के लिये अल्लाह तआला ने फ़रमाया:

यानी ऐ मेरे फ़रिश्तो! मैं वह सब कुछ जानता हूं जो तुम नहीं जानते। महज़ तस्बीह व तक़दीस मैयारे ख़िलाफ़त नहीं और न ही मुख़्तलिफ़ और एक दूसरे की ज़िद अनासिर से मुरक्कब होना मनसबे ख़िलाफ़त के मनाफ़ी है। बल्कि ख़िलाफ़त का मैयार यह है कि अल्लाह का ख़लीफ़ा जिन चीज़ों का ग़ैरों को हुक्म दे उन पर ख़ुद भी अमल करे, इसलिये सारे इंसान फ़साद और नाहक़ ख़ूनरेज़ी करने के गुनाहों में मुब्तला नहीं होंगे, उनमें कुछ मासूम होंगे जो अल्लाह तआला के ख़लीफ़ा बनने के हक़दार होंगे।

आदम अलैहिस्सलाम के उलूम :

और अल्लाह तआला ने आदम को तमाम अशिया के नाम सिखाए फिर सब अशिया मलायका

पर पेश करके फ़रमाया सच्चे हो तो इनके नाम बताओ।

हज़रत इब्ने अब्बास, अकरमा, क़तादा, मुजाहिद और इब्ने ज़ुबैर रज़ियल्लाहु अन्हुम का इरशाद है।

अल्लाह तआला ने आप को तमाम चीज़ो के नामों का इल्म अता किया यहां तक कि बड़े और छोटे प्याले के नाम भी बताये।

बाज़ हज़रात ने हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा की तरफ़ क़ौल मंसूब करते हुए कहा कि आप ने फ़रमाया कि हज़रत आदम अलैहिस्सलाम को अल्लाह तआला ने जो कुछ हो चुका है और जो कुछ होना है का इल्म अता फ़रमाया।

पहले मायने और इस मायने के लिहाज़ से मक़सद एक ही है कि अल्लाह तआला ने आप को तमाम चीज़ों और उनके नामों का इल्म अता कर दिया ख़्वाह वह पहले पाई जा चुकी हैं या बाद में पाई जाने वाली हैं।

इमाम राज़ी अलैहिर्रहमा ने फ़रमाया कि आप को तमाम चीज़ों की सिफ़ात और नेमतें और ख़्वास तक का इल्म अता फ़रमा दिया गया था।

अल्लाह तआला ने आपको तमाम चीज़ों के अहवाल और उनसे दीनी या दुनियावी मुनाफ़ा जो मुताल्लिक़ हैं उन तमाम का इल्म अता फ़रमा दिया था।

एक क़ौल के मुताबिक़ आप अलैहिस्सलाम को तमाम ज़बानें सिखा दी गई और एक क़ौल के मुताबिक़ आप को तमाम मलायका के नामों से आगाह कर दिया गया, और एक क़ौल के मुताबिक़ आप को तमाम सितारों के नामों पर मुत्तला फ़रमा दिय गया था।

अल्लामा आलूसी रहमतुल्लाहि अलैहि ने मुख़्तलिफ़ अक़्वाल नक़्ल करने के बाद हकीम तिर्मिज़ी का क़ौल नक़्ल किया।

कि इस आयते करीमा में अस्मा (नाम) से मुराद असमाए इलाहया हैं। इस के बाद आपने फ़रमाया मेरे नज़दीक हक़ यह है और तमाम अल्लाह वाले भी इसे ही हक़ मानते हैं और मनसबे ख़िलाफ़त का तक़ाज़ा भी यही है कि आप को तमाम अशिया के नाम का इल्म अता किया गया है।

वह अशिया ख़्वाह अलवी हों या सिफ़ली जौहरी हों या अर्ज़ी, इन तमाम के नामों को अल्लाह तआला के अस्मा ही कहा जाता है। क्योंकि तमाम चीज़ें अल्लाह तआला की ज़ात पर दलालत करती हैं, और अल्लाह तआला की ज़ात के जलवे तमाम अशिया से ज़ाहिर होते हैं अगरचे अल्लाह तआला उनमें मुक़य्यद नहीं होता।

आदम अलैहिस्सलाम को नाम सिखाए, फ़रिश्तों को नहीं, क्या वजह?

अलफ़ाज़ के ज़रिये मानी का इल्म हासिल होता है जिसके पढ़ाने वाले को मोल्लिम कहते हैं और पढ़ने वाले को मुतअल्लिम। सिर्फ़ मुअल्लिम के पढ़ाने से मुतअल्लिम को इल्म हासिल होना ज़रूरी नहीं बल्कि मुतअल्लिम में इस्तेदाद का पाया जाना ज़रूरी है यानी मुतअल्लिम में समझने की सलाहियत हो तो मुअल्लिम की तालीम का उस पर असर होगा, यह रोज़ मर्रा हम मुशाहदा करते हैं। एक ही क्लास के लड़कों को उस्ताद पढ़ाता है सब को यकसां पढ़ा रहा होता है लेकिन फिर कोई लायक़ होता है और कोई नालायक़, अल्लाह तआला को भी जब आदम

अलैहिस्सलाम को मंसबे ख़िलाफ़त अता करना था तो आप को पहले तमाम अशिया और उनकी कैफ़ियात और उनके नामों को समझने की इस्तेदाद भी अता फ़रमाई लेकिन फ़रिश्तों को हर चीज़ के हालात की तफ़ासील को समझने की इस्तेदाद अता नहीं हुई थी क्योंकि उनको मनसबे ख़िलाफ़त पर फ़ायज़ करना मक़सूद ही नहीं था।

आदम अलैहिस्सलाम को इल्म कैसे अता किया गया था?

आप को तमाम चीज़ों का इल्म दिया गया यानी अल्लाह तआला ने अपनी तमाम मख़लूक़ात में से एक एक जिन्सं आपको दिखा दी और उसका नाम बताया, मसलन घोड़ा दिखाकर बता दिया गया कि इसे घोड़ा कहते हैं और ऊंट दिखाकर बता दिया गया कि इसे ऊंट कहते हैं इसी तरह एक एक चीज़ दिखा कर उसके नाम बता दिये गये।

आदम अलैहिस्सलाम को यह ख़सूसियत हासिल थी कि आपको तमाम चीज़ों के नाम हर ज़बान में बता दिये गये थे और वही ज़बानें आपकी औलाद में मुतफ़र्रिक़ तौर पर पाई जाती हैं यानी एक चीज़ का नाम आपने हर हर ज़बान में बताया जो ज़बानें भी ईजाद होनी थीं आपको उनका इल्म पहले से ही अता कर दिया गया था।

फ़ायदा : जब आदम अलैहिस्सलाम को तमाम चीज़ों का इल्म दिया गया हर चीज़ के नाम हर ज़बान में सिखाये गये तो सय्यदुल अंबिया सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के इल्म का मक़ाम क्या होगा? आला हज़रत मौलाना अहमद रज़ा बरेलवी रहमतुल्लाहि अलैहि ने इस तरह तहरीर फ़रमाया:

रहमान ने अपने महबूब को क़ुरआन सिखाया इंसानियत की जान मुहम्मद को पैदा किया माकाना व मायकून का ब्यान उन्हें सिखाया।

आला हज़रत ने नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को इंसानियत की जान कहा। हज़रत अल्लामा आलूसी ने तफ़सीर में तहरीर फ़रमाया:

तमाम जहान एक जिस्म है और नबी करीम उसकी रूह हैं जिस्म का क़याम बग़ैर रूह के मुमकिन नहीं इससे पता चला कि हुज़ूर नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम कायनात की जान हैं।

और आला हज़रत के तर्जमा से यह वाज़ेह हुआ कि इल्मुल ब्यान का मतलब यह है कि हबीबे पाक को इल्म अता किया गया, इस पर अल्लामा करतबी की अलजामियउल अहकामिल ब्यान की तफ़सीर मुलाहज़ा हो।

यानी इल्मुल ब्यान में ज़मीर मंसूब का मरजअ इंसान है और इससे मुराद नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हैं।

और इल्मुल ब्यान में ब्यान से मुराद या तो हलाल व हराम का इल्म और गुमराही से हिदायत देना और या जिस तरह ब्यान किया गया है कि ब्यान से मुराद माकाना व मायकून का इल्म है क्योंकि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अव्वलीन व आख़रीन और क़यामत का ज़िक्र फ़रमा दिया है यानी आपने सभी गुज़रे हुए और आने वाले और वाक़याते क़यामत से मुत्तला फ़रमा दिया तो आपको माकाना व मायकून का इल्म हासिल है।

Scanned by CamScanner

मैंने उर्दू तराजिमे कुरआनी का तकाबुली जायज़ा पेश करते हुए अपनी किताब में बहुत सी तफ़ासीर की इबारात नक़ल करके वाज़ेह किया कि सारे तराजिम में से यहां आला हज़रत का तर्जमा ही बाकमाल है।

इल्म के फ़ज़ायले अक़लिया व नक़लिया :

तफ़सीर कबीर और अज़ीज़ी के हवाले से इल्म के फ़ज़ायल पर मुख़्तसर बहस पेशे ख़िदमत है।

फ़क़ीह अबुल लैस समर कंदी रहमुतल्लाहि अलैहि ने फ़रमाया कि आलिम कि सोहबत में हाज़िर होने में सात फ़ायदे हैं ख़्वाह उससे इल्म हासिल करे या न करे।

1. वह शख़्स तालिबे इल्मों के ज़ुमरे में शुमार किया जाता है और उनका सवाब पाता है।

2. जब तक उस मजलिस में बैठा रहेगा गुनाहों से बचता रहेगा।

3. जिस वक़्त यह अपने घर से तलबे इल्म की नीयत से निकलता है हर क़दम पर नेकी पाता है।

4. इल्म के हल्क़े में रहमते इलाही नाज़िल होती है जिस में यह भी शरीक हो जाता है।

5. इल्म का ज़िक्र सुनता है जो कि इबादत है।

6. वहां जब कोई मुश्किल मसला सुनता है जो उसकी समझ में नहीं आता और उसका दिल तंग होता है तो हक़ तआला के नज़दीक मुनकसिरुल क़ुलूब (दिल टूटा हुआ जो। रहमत का मुस्तहिक़ होता है) में शुमार किया जाता है।

7. उसके दिल में इल्म की इज़्ज़त और जहालत से नफ़रत पैदा हो जाती है।

हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि इल्मे दीन माल पर सात वजह से अफ़ज़ल है:

1. इल्म पैग़म्बरों की मीरास और माल फ़िरऔन हामान शद्दाद और नमरूद की।

2. माल ख़र्च करने से कम होता है मगर इल्म बढ़ता है।

3. माल की हिफ़ाज़त इंसान को करनी पड़ती है लेकिन इल्म ख़ुद इंसान की हिफ़ाज़त करता है।

4. मरने के बाद माल तो दुनिया में रह जाता है और इल्मे दीन क़ब्र में साथ होता है।

5. माल मोमिन और काफ़िर सब को मिल जाता है लेकिन दीन का नफ़अ (यानी क़ब्र व हश्र में कामयाबी) सिर्फ़ ईमानदार को ही हासिल होता है।

6. कोई शख़्स भी आलिम से बे परवा नहीं लेकिन बहुत से लोगों को मालदारों की ज़रूरत नहीं।

7. इल्म से पुल सिरात पर गुज़रने की कुव्वत हासिल होगी और माल से कमज़ोरी।

सात पैग़म्बरों को इल्म की वजह से बहुत बड़े फ़ायदे हासिल हुए :

1. हज़रत आदम अलैहिस्सलाम को इल्म की वजह से फ़रिश्तों पर बुज़ुर्गी दी गई और फ़रिश्तों को उनके सामने सज्दा करने का हुक्म दिया गया।

2. हज़रत ख़िज्र अलैहिस्सलाम उनके मुताल्लिक़ अहले इल्म का इख़्तेलाफ़ है कि यह नबी हैं या वली............के इल्म की वजह से उनकी और मूसा अलैहिस्सलाम की मुलाक़ात हुई और कुछ

Scanned by CamScanner

अशिया के ज़ाहिर व बातिन का फ़र्क़ वाज़ेह हुआ।

3. यूसुफ़ अलैहिस्सलाम इल्म की वजह से ख़्वाब की ताबीर ब्यान करने पर क़ैदख़ाने से निकल कर शाही दरबार में पहुंच कर वज़ीर ख़ज़ाना और तमाम बादशाही कामों के मुदार मुक़र्रर हो गये।

4. हज़रत सुलेमान अलैहिस्सलाम को इल्म की वजह से बिलक़ीस जैसी मल्का बहैसियत ज़ौजा मिली, और उसे भी आपके इल्म की वजह से ईमान नसीब हुआ।

5. हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम को इल्म की वजह से मनसबे नबुव्वत के साथ सा बादशाही भी हासिल रही।

6. ईसा अलैहिस्सलाम ने अपनी वालदा हज़रत मरयम की तोहमत को इल्म की वजह से फ़रमाया।

7. हुज़ूर नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को तमाम कायनात से ज़्यादा उलूम अता फ़रमाकर ख़िलाफ़ते इलाहया और शफ़ाअते कुबरा के दर्जा रफ़ीया पर मुतमक्किन फ़रमाया।

कुरआन पाक में सात चीज़ों के मुताल्लिक़ ज़िक्र है कि वह एक दूसरे के बराबर नहीं:

1. आलिम! और जाहिल बराबर नहीं।

2. ख़बीस और तैय्यब यानी नापाक और पाक बराबर नहीं।

3. दोज़ख़ी और जन्नती बराबर नहीं।

4. अंधा और आंख वाला यानी इल्म और ईमान वाला और उनसे ख़ाली बराबर नहीं।

5. ज़ुलमत और नूर यानी इल्म और ईमान की नूरानियत और उनसे खाली होने की वजह से हासिल होने वाली तारीकी बराबर नहीं।

6. सर्दी और गर्मी बराबर नहीं।

7. ज़िन्दे और मुर्दे बराबर नहीं।

हज़रत अली मुर्तज़ा रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया कि दुनिया चार शख़्सों से क़ायम है:

1. आलिम बा अमल से – यानी इल्मे दीन के हासिल करने के बाद उसके आमाल अहकामे दीनिया के मुताबिक हों।

2. ऐसे जाहिल लोगों से जो उलेमा से मुहब्बत रखते हों यक़ीनन उलेमा की सोहबत की वजह से उन्हें नेकी के कामों की रग़बत हासिल होगी और उलूमे दीनिया के मसायल से कुछ कुछ ज़रूर हासिल होंगे।

3. सख़ावत करने वाले मालदारों से यानी मालदार जो अल्लाह तआला की राह में माल ख़र्च करता है वह भी बुलंद मर्तबा रखता है जो निज़ामे दुनिया के क़ायम रहने का सबब है।

4. और ग़रीब लोग जिन के पास माल तो नहीं लेकिन वह थोड़े माल और मेहनत व मशक़्क़त पर सब्र करने वाले हों यानी साबिर फ़क़ीर के दम से भी दुनिया क़ायम है।

अल्लाह तआला ने इरशाद फ़रमाया:

बेशक अल्लाह के बंदों में से अल्लाह तआला से डरने वाले उलेमा ही हैं।

इस आयत में जब लफ़्ज़ अल्लाह पर पेश (यानी उर्दू का एराब जिसे लगाने से ऊ की आवाज़

निकलती है) हो और लफ़्ज़ उलेमा पर ज़बर हो तो मायने होगा कि अल्लाह तआला अपने बंदों में से उलेमा को इज़्ज़त व वक़ार अता फ़रमाता है।

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया : जब इल्मे दीन पढ़ाने वाला शख़्स फ़ौत होता है तो उस पर फ़िज़ा से परिन्दे ज़मीन के तमाम जानवर, दरियाओं में रहने वाली मछलियां रोती हैं।

हज़रत आमिर जहनी रज़ियल्लाहु अन्हु एक हदीस ब्यान फ़रमाते हैं कि :

क़यामत के दिन इल्मे दीन पढ़ने वाले तालिबे इल्म की स्याही और शहीद के ख़ून को लाया जायेगा। किसी एक को दूसरे पर फ़ज़ीलत हासिल नहीं होगी।

हज़रत मुसअब बिन ज़ुबैर रज़ियल्लाहु अन्हु ने अपने बेटे को कहा:

ऐ बेटे इल्म हासिल करो अगर तुम्हारे पास माल भी हुआ तो इल्म तुम्हारा जमाल होगा और अगर तुम्हारे पास कोई माल न हुआ तो इल्म ही तुम्हारा माल होगा।

नोट : अल्लामा इमाम राज़ी रहमतुल्लाहि अलैहि ने फ़ज़ीलते इल्म में इस मक़ाम पर बहुत तवील बहस की है मुख़्तसर तौर पर कुछ ज़िक्र किया गया है।

हज़रत आदम अलैहिस्सलाम की पैदाईश:

अल्लाह तआला ने फ़रमाया बेशक हम ने तुम्हारे असल आदम को मिट्टी से पैदा किया।

मज़ीद इरशाद फ़रमाया:

याद करो उस वक़्त को जब आप के रब ने फ़रिश्तों से कहा बेशक मैं एक बशर कीचड़ से बनाने वाला हूं इससे मुराद आदम अलैहिस्सलाम हैं।

इस मक़ाम पर बशर से मुराद ऐसा इंसान जो ज़ाहिर चमड़े वाला होगा। उस पर भेड़ों की तरह ऊन नहीं होगी बकरियों की तरह बाल नहीं होंगे, ऊंटों की मकसी (ऊन) की तरह भी ऊन नहीं होगी परिन्दों के परों की तरह पर नहीं होंगे और फलों की तरह उस पर कोई छिलका नहीं होगा।

बेशक हम ने इंसानों को चिपकती हुई मिट्टी से पैदा किया,

यहां भी मुराद इंसानों से उनके असल आदम अलैहिस्सलाम ही हैं।

बेशक हमने इंसान यानी आदम को स्याह ख़ुश्क मुतग़य्यर कीचड़ से पैदा किया। सलसाल उस कीचड़ को कहते हैं जो ख़ुश्क हो जाये खटकाने पर उससे आवाज़ आये स्याह कीचड़ को, हमा कहते हैं। जिसकी बू में तग़य्युर आ जाये उसे मस्नून कहते हैं।

इंसान यानी आदम को ख़ुश्क बजने वाली ठीकरी की तरह के कीचड़ से पैदा किया।

इन आयात से आदम अलैहिस्सलाम की पैदाईश के मुख़्तलिफ़ मराहिल का ज़िक्र किया गया है कि आपके जिस्मे अतहर के लिये पहले ख़ुश्क मिट्टी को लाया गया फिर उसे गूंध कर कीचड़ बनाया गया फिर चिपकने वाली मिट्टी बनाया गया फिर उसे उसी तरह रहने दिया गया यहां तक कि वह ख़ुश्क हो गई और बजने लगी और उसकी बू में भी तग़य्युर आ गया फिर और ज़्यादा रखने पर ठीकरी की तरह हो गई।

Scanned by CamScanner

जिस्मे आदम अलैहिस्सलाम के लिये मिट्टी ली गई :

आदम अलैहिस्सलाम के जिस्मे अतहर की तख़लीक़ के लिये मिट्टी लाने के लिये हज़रत जिब्राईल को ज़मीन पर भेजा गया। आप जब तशरीफ़ लाये तो ज़मीन से मिट्टी लेने का इरादा किया तो ज़मीन ने बड़ी आजिज़ी व इंकसारी और गिरया वुज़ारी से अर्ज़ किया कि मेरी मिट्टी से बनने वाले शख़्सों ने अगर ख़ूंरेज़ियां कीं या वह जुर्म की वजह से जहन्नम में गये तो तकलीफ़ होगी।

हज़रत जिब्राईल ज़मीन की आजिज़ी को देखकर वापस चले गये और अल्लाह तआला के हुज़ूर तमाम माजरा ब्यान कर दिया इसी तरह इस्राफ़ील भी आकर वापस चले गये और मिकाईल भी आकर वापस चले गये। इन तमाम के बाद इज़्राईल आये। उनकी ख़िदमत में भी ज़मीन ने वही आजिज़ाना गुफ़्तगू की लेकिन आपने कहा कि मैं तेरी बात तस्लीम करूं या अल्लाह तआला के हुक्म पर अमल करूं? मुझे अल्लाह तआला का हुक्म है इसलिये मुझे तो मिट्टी ज़रूर ही लेकर जाना है, आपने ज़मीन की इंकिसारी की तरफ़ कोई तवज्जोह नहीं दी बल्कि इरशादे बारी तआला के मुताबिक़ ज़मीन से मिट्टी लेकर रब तआला के हुज़ूर हाज़िर हो गये, इसी वजह से अल्लाह तआला ने रूह क़ब्ज़ करना भी उनके सुपुर्द किया कि ऐसा न हो कि जिब्राईल, मिकाईल, इस्राफ़ील में से किसी के ज़िम्मे लगाया तो रूह क़ब्ज़ करने के लिये जायें तो उसके अक़रबा को रोते हुए पाकर इसी तरह छोड़ कर न आ जायें।

कैसी मिट्टी ली गई?

हज़रत अबू मूसा अशअरी से मरफ़ूअ हदीस मरवी है:

बेशक अल्लाह तआला ने हुक्म दिया कि तमाम ज़मीन से एक मुट्ठी भर मिट्टी ले आओ। उस मिट्टी में हर क़िस्म के ज़र्रात शामिल किये गये सुर्ख़ रंग, सफ़ेद रंग, स्याह रंग और उनके दर्मियान रंग वाली मिट्टी ली गई। इसी तरह कुछ मिट्टी नर्म ज़मीन से ली गई और कुछ सख़्त ज़मीन से, ऐसे ही तैय्यब व ख़बीस मिट्टी को शामिल किया गया, जितने क़िस्म के रंगों वाली मिट्टी आपके जिस्म में लगाई गई आपकी औलाद में उतने ही रंग पाये जाते हैं इसी तरह कोई नर्म और कोई सख़्त दिल कोई नेक और कोई बुरे।

बाज़ हज़रात ने ब्यान किया कि हज़रत आदम अलैहिस्सलाम की मिट्टी में साठ क़िस्म के रंग शामिल थे वह तमाम आपकी औलाद में पाये जाते हैं।

ज़मीन में चश्मे क्यों जारी हैं?

अल्लाह तआला ने जब हज़रत आदम अलैहिस्सलाम को पैदा करने का इरादा फ़रमाया तो ज़मीन को बताया कि मैं तुझसे एक मख़लूक़ पैदा करने वाला हूं जो मेरे मुतीअ होंगे उनको मैं जन्नत में दाख़िल करूंगा और जो मेरे नाफ़रमान होंगे उनको मैं जहन्नम की आग में डाल दूंगा, यह सुनकर ज़मीन ने फिर पूछा ऐ अल्लाह मुझसे पैदा होने वाली मख़्लूक़ जहन्नम की आग में जायेगी? रब तआला ने फ़रमाया हां तो ज़मीन इतना रोई कि उसके रोने से चश्मे जारी हो गये जो क़यामत तक जारी रहेंगे।

इंसान को खुशी कम और ग़म ज़्यादा क्यों?

हज़रत इज़्राईल अलैहिस्सलाम जब मिट्टी को लाये तो उन्हें अल्लाह तआला ने हुक्म दिया कि इसे सफ़ा मरवा पहाड़ियों के पास रख दो यानी वहां रख दो जहां आज कल काबा शरीफ़ है फिर फ़रिश्तों को हुक्म दिया कि इसे मुख़्तलिफ़ पानियों से गारा बनायें फिर उस पर चालीस रोज़ बारिश हुई उन्तालीस दिन तो ग़म व रंज का पानी बरसा और एक दिन ख़ुशी का। इसलिये इंसान को रंज व ग़म ज़्यादा रहते हैं और ख़ुशी कम। फिर उसे मुख़्तलिफ़ हवाओं से ख़ुश्क करके खटकने वाली मिट्टी बनाकर अल्लाह तआला ने ख़ुद अपनी कुदरते कामिला से आप के कालिब को तैयार किया।

आदम अलैहिस्सलाम की सूरत देखकर फ़रिश्ते हैरान हो गये:

फ़रिश्तों ने कभी ऐसी सूरत नहीं देखी थी वह हैरान होकर उसके ईद गिर्द फिरते थे और उसकी ख़ूबसूरती पर ताज्जुब करते थे इबलीस को भी इसकी ख़बर हो चुकी थी, अभी तक वह मरदूद नहीं हुआ था, वह भी इस कालिब को देखने आया और इसके गिर्द फिर कर बोला, तुम इस पर ताज्जुब करते हो यह तो अंदर से एक ख़ाली जिस्म है जिस में जगह जगह सुराख़ हैं और इसकी कमज़ोरी का यह हाल है कि अगर भूका हो तो गिर पड़े और अगर ख़ूब सैर हो जाये तो चल न सके, इस ख़ाली कालिब से कुछ न हो सकेगा, फिर कहने लगा हां इसके सीने की बायीं तरफ़ एक बंद कोठरी है यह ख़बर नहीं कि इसमें क्या है? शायद यही लतीफ़ए रब्बानी की जगह हो जिसकी वजह से यह ख़िलाफ़त का हक़दार हुआ हो।

आदम अलैहिस्सलाम के कालिब में रूह का दख़ूल :

अल्लाह तआला ने रूह को हुक्म दिया कि इस कालिब में दाख़िल हो जा और तमाम हिस्सों में फैल जा। जब रूह कालिब के पास पहुंची तो जिस्म को तंग व तारीक पाया अंदर जाने से रुक गई। बाज़ रिवायात में आता है कि तब नूरे मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से वह कालिब जगमगा दिया गया यानी वह नूर आदम अलैहिस्सलाम की पेशानी में अमानत रखा गया। अब रूह आहिस्ता आहिस्ता दाख़िल होने लगी अभी सर में थी कि आपको छींक आई और ज़बान में पहुंची तो आपने अलहम्दोलिल्लाह पढ़ा और अल्लाह तआला ने उसके जवाब में यरहमकुल्लाह कहा और अल्लाह तआला ने फ़रमाया ऐ अबू मुहम्मद (यह और अबुल बशर आप अलैहिस्सलाम की कुन्नियत है) मैंने तुम्हें अपनी हम्द के लिये ही पैदा किया है। जब रूह कमर तक पहुंची तो आपने उठना चाहा लेकिन आप गिर पड़े क्योंकि रूह अभी नीचे वाले हिस्से में नहीं पहुंची थी अल्लाह तआला ने फ़रमाया:

इंसान जल्द बाज़ पैदा किया गया।

फिर रूह तमाम जिस्म में फैल गई तो आप को हुक्म हुआ कि फ़रिश्तों को सलाम करो। आपने कहा अस्सलामु अलैकुम फ़रिश्तों ने जवाब दिया व अलैकुम अस्सलाम। अल्लाह तआला ने फ़रमाया यही आपके लिये और आपकी औलाद के लिये सलाम का तरीक़ा होगा। आप ने अर्ज़ किया मेरी औलाद कौन सी होगी? तो आप की तमाम औलाद को आपके सामने कर दिया गया।

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया:

Scanned by CamScanner

बेशक अल्लाह तआला ने आदम अलैहिस्सलाम को पैदा फ़रमाया फिर उनकी पीठ पर अपना दस्ते कुदरत फेरा और आपकी औलाद को निकाल ज़ाहिर किया फिर फ़रमाया मैंने उनको जन्नत के लिये पैदा किया और यह जन्नत वालों का अमल करेंगे फिर अल्लाह तआला ने अपना दस्त कुदरत आपकी पीठ पर फेरा और आप की बाक़ी औलाद को ज़ाहिर फ़रमाया और रब ने कहा कि इन लोगों को मैंने जहन्नम के लिये पैदा किया है यह जहन्नमियों वाले अमल करेंगे।

फ़रिश्तों को आदम अलैहिस्सलाम के सामने सज्दा का हुक्मः

आदम अलैहिस्सलाम की तख़लीक़ से पहले ही अल्लाह तआला ने फ़रिश्तों को हुक्म दे रखा था कि तुम्हें मेरे ख़लीफ़ा के सामने सज्दा करना है। आदम अलैहिस्सलाम की तख़लीक़ के बाद फ़रिश्तों पर तमाम चीज़ों को पेश करके उनके नाम पूछे, जब फ़रिश्तों ने अपनी आजिज़ी का इज़हार कर दिया तो फिर आदम अलैहिस्सलाम से पूछा आप ने तमाम चीज़ों के नाम बता दिये तो फिर हुक्म दिया। इरशादे बारी तआला हैः

और याद करो जब हमने फ़रिश्तों को कहा आदम को सज्दा करो सब ने सज्दा किया सिवाए शैतान के उसने इंकार किया और तकब्बुर किया वह काफ़िरों से हो गया।

फ़रिश्तों को सज्दए ताज़ीमी का हुक्म दिया गया जैसे हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के सामने आप के भाईयों ने ताज़ीमन सज्दा किया। हमारे नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की शरीअत में सज्दए ताज़ीमी हराम क़रार दिया गया। इबादत की ग़र्ज़ से सज्दा सिवाए अल्लाह तआला के किसी शरीअत में जायज़ नहीं रहा। अल्लामा आलूसी रहमतुल्लाहि अलैहि फ़रमाते हैः

ताहम फिर भी सबसे पहले सज्दा हज़रत जिब्राईल ने किया फिर मिकाईल, फिर इस्राफ़ील फिर इज़्राईल अलैहिमुस्सलाम ने फिर तमाम फ़रिश्तों ने इसलिये हज़रत जिब्राईल अलैहिस्सलाम को सबसे बड़ा दर्जा अता किया गया यानी अंबियाए किराम अलैहिमुस्सलाम की ख़िदमत में उनके पास वही (कुरआन) लाने का अज़ीम काम उनके सुपुर्द हुआ।

बाज़ हज़रात ने कहा कि सब से पहले सज्दा हज़रत इस्राफ़ील अलैहिस्सलाम ने किया इसी लिये उनकी पेशनी पर सारा कुरआन लिख दिया गया।

आदम अलैहिस्सलाम को ख़लीफ़ए हक़ीक़ी का मज़हर बनाया गयाः

अगरचे ज़ाहिर तौर पर सबसे पहले ख़लीफ़ा हज़रत आदम अलैहिस्सलाम हैं लेकिन दरहक़ीक़त सबसे पहले ख़लीफ़ा हमारे नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ही हैं क्योंकि आपका अपना इरशादे गिरामी यह हैः

मैं उस वक़्त भी नबी था जब आदम अलैहिस्सलाम रूह और जिस्म के दर्मियान थे।

हज़रत जिब्राईल अलैहिस्सलाम अल्लाह तआला के हुक्म से नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की क़ब्र अनवर की जगह से मिट्टी ले गये। आबे तस्नीम से उसे गूंधा गया जन्नत की नहरों में ग़ोते दिये गये ज़मीनों आसमानों में फिराया गया इसी वजह से हज़रत आदम अलैहिस्सलाम से पहले ही फ़रिश्तों ने नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को पहचान लिया था। फिर उस मिट्टी को आदम अलैहिस्सलाम के जिस्म से मिला दिया गया और नूरे मुहम्मदी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से आदम अलैहिस्सलाम की पेशानी को चमकाया गया।

यही नूरे मुहम्मदी दर असल फ़रिश्तों से सज्दा कराने का सबब बना था।

इमाम राज़ी ने तफ़सीर कबीर में फ़रमाया:

बेशक फ़रिश्तों को आदम अलैहिस्सलाम को सज्दा करने का हुक्म इसलिये दिया गया कि आपकी पेशानी में मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का नूर रखा गया था।

अल्लामा आलूसी रहमतुल्लाहि अलैहि फ़रमाते हैं:

यानी दरहक़ीक़त हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ही अल्लाह की मख़लूक़ में अल्लाह तआला के ख़लीफ़ए आज़म हैं और ज़मीनों और बुलंद आसमानों में सब से मुक़द्दम इमाम हुज़ूर ही हैं अगरचे हुज़ूर अलैहिस्सलाम न होते तो न आदम अलैहिस्सलाम पैदा होते न उनके अलावा कोई और चीज़।

अल्लामा राज़ी और अल्लामा आलूसी रहमतुल्लाहि अलैहुमा की इन इबारात से वाज़ेह हुआ कि ख़लीफ़ए आज़म हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ही हैं आदम अलैहिस्सलाम की ख़िलाफ़त आपकी ख़िलाफ़त का ज़हूर है।

फ़रिश्तों की तादाद कितनी है?

फ़रिश्तों की तादाद को सिर्फ़ अल्लाह तआला ही जानता है या नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को तमाम ज़मीनों आसमानों का इल्म दिया गया तो आप जानते हैं, लेकिन आपने भी तादाद को ज़िक्र नहीं फ़रमाया, अलबत्ता अल्लामा राज़ी रहमुतल्लाहि अलैहि ने इस तरह ज़िक्र फ़रमाया कि फ़रिश्तों की तादाद बहुत ज़्यादा है क्योंकि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया:

आसमान में चरचराहट पैदा हुई और हक़ भी यही है कि उनमें चरचराहट पाई जाये क्योंकि आसमानों में एक क़दम की जगह भी नहीं कि वहां कोई फ़रिश्ता सज्दा या रुकू न कर रहा हो। तमाम इंसान, जिन्न, हैवानात, परिन्दे, आबी जानवर सिर्फ़ रूए ज़मीन के मकीन फ़रिश्तों का दसवा हिस्सा हैं, फिर यह भी उन तमाम के साथ मिलाकर पहले आसमान के फ़रिश्तों का दसवा हिस्सा हैं फिर यही सिलसिला सात आसमानों तक फिर अर्श के परदों के साथ और हामिलीने अर्श फ़रिश्तों की तादाद के मुक़ाबले में यह ऐसे हैं जैसे समुन्द्र के मुक़ाबिल एक क़तरा हो।

इबलीस की असल क्या है?

कुछ हज़रात इस तरफ़ हैं कि इबलीस फ़रिश्तों से एलाहदा है क्योंकि फ़रिश्ते नूर से पैदा किये गये हैं और यह नार (आग) से। अल्लाह तआला ने फ़रमाया:

इबलीस जिन्नों से था उसने अपने रब के हुक्म की नाफ़रमानी की।

सवाल यह होता है कि उसे सज्दा का हुक्म कैसे था? हालांकि ज़ाहिर तौर पर तो हुक्म सिर्फ़ फ़रिश्तों को है। तो इसका जवाब उन हज़रात की तरफ़ से यह दिया जाता है कि यह कसरते इबादत की वजह से फ़रिश्तों ही में दाख़िल था और मलायका वाले अहकाम ही उस पर जारी होते थे। यानी तग़लीबन उस पर हुक्म जारी हुआ जैसे सरदारों को हुक्म दिया जाये तो उनके मातेहत भी इस हुक्म में दाख़िल होते हैं। लेकिन कुछ मुहक़्क़ेक़ीन यानी अल्लामा बेग़वी वाहिदी, क़ाज़ी बैज़ावी, अल्लामा आलूसी और अल्लामा राज़ी इस तरफ़ हैं कि यह फ़रिश्तों से ही था। अल्लामा आलूसी फ़रमाते हैं:

इबलीस को अगरचे रब तआला ने जिन्न कहा। हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा की रिवायत में भी उसे जिन्न कहा गया लेकिन जिन्न कहने से उसके फ़रिश्ता होने में कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता। उनमें कोई मनाफ़ात नहीं इसलिये कि जिन्न कभी तो फ़रिश्तों के मद्दे मुक़ाबिल एक मख़लूक़ को भी कहते हैं और कभी फ़रिश्तों की एक क़िस्म को भी जिन्न कहा जाता है।

फ़रिश्तों को जिन्न क्यों कहा गया है?

अल्लामा आलूसी रहमतुल्लाहि अलैहि फ़रमाते हैं:

इसलिये कि वह लोगों की नज़रों से पोशीदा होते हैं छुपी हुई चीज़ों को जिन्न कहा जाता है इसलिये फ़रिश्तों को भी जिन्न कह दिया।

इबलीस के आग से पैदा होने और फ़रिश्तों के नूर से पैदा होने में भी कोई ज़रर नहीं और उसके फ़रिश्ते होने में इससे कोई ऐब साबित नहीं हो सकता, क्योंकि आग और नूर का माद्दा एक ही है। एक ही जिन्स से हैं अलबत्ता अवारिज़ के लिहाज़ पर मुख़्तलिफ़ हैं यानी जिसके साथ धुएं की आमेज़िश है वह आग है और जो साफ़ व शफ़्फ़ाफ़ है वह नूर है।

जिस तरह मिट्टी, रेत, पत्थर, सुरमा वग़ैरह का माद्दा और जिन्स एक है अवारिज़ात के लिहाज़ से मुख़्तलिफ़ हैं।

इबलीस तकब्बुर की वजह से मरदूद हो गया:

अल्लाह तआला के हुक्म से इंकार की वजह इबलीस का तकब्बुर था। जब रब तआला ने उससे पूछा कि तूने सज्दा क्यों नहीं किया हालांकि मेरा हुक्म था? तो उसने जवाब देते हुए कहा:

मैं इससे बेहतर हूं क्योंकि तूने मुझे आग से पैदा किया और इसे मिट्टी से।

यानी जो शान के लिहाज़ से बड़ा हो वह घटिया के सामने (मअज़ल्लाह) सज्दा नहीं करता। इबलीस हक़ीक़त में आदम अलैहिस्सलाम की शान को समझने से क़ासिर रहा। उसे यह मालूम न हो सका कि अल्लाह के नबी की शान फ़रिश्तों से बुलंद होती है। रब तआला ने इरशाद फ़रमाया:

तू जन्नत से निकल जा! तू मरदूद है और बेशक क़यामत तक तुझ पर लानत है।

सालहा साल तक इबादत करने वाला, रब का मुक़र्रब, नबी की शान में गुस्ताख़ी करने से एक पल भर में मरदूद हो गया। जन्नत से निकाल दिया गया। क़यामत तक लानत का मुस्तहिक़ ठहरा दिया गया।

शैतान की दरख़्वास्त की मंजूरी :

बोला मुझे फ़ुरसत दे उस दिन तक कि लोग उठाये जायें फ़रमाया: तुझे मोहलत है, बोला तो क़सम उसकी कि तूने मुझे गुमराह किया मैं ज़रूर तेरे सीधे रास्ते पर उनकी ताक में बैठूंगा फिर ज़रूर मैं उनके पास आऊंगा उनके आगे और उनके पीछे और उनके दाहिने और उनके बायें से और तू उनमें से अक्सर को शुक्रगुज़ार नहीं पायेगा।

शैतान यह मोहलत लोगों के उठाये जाने तक तलब करना चाहता था ताकि मौत की सख़्ती से बच जाये लेकिन शैतान की यह बात तो न मानी गई अलबत्ता पहली मर्तबा सूर फूंकने तक

उसको मोहलत दे दी गई सूरः नहल में फ़रमाया:

बेशक तुझे एक मुक़र्ररा वक़्त तक यानी पहले नफ़ख़ा तक मोहलत है, यानी पहली मर्तबा सूर फूंकने पर शैतान भी मर जायेगा। अलबत्ता उस वक़्त तक उसे मोहलत है कि वह चारों तरफ़ से घेरा डाल कर इंसानों के दिलों में वसवसे डालता रहे और उन्हें बातिल राह की तरफ़ मायल करता रहे और कुछ लोगों को इताअत से रोक सके और गुमराही में डाल सके।

अगरचे शैतान इंसानों को शुबहात और बुराइयों में वाक़ेय करने का पक्का इरादा कर चुका था और उसे उम्मीद भी थी कि वह अपने मक़सद में कामयाब होगा लेकिन फिर भी उसने कहा कि तू उनमें से अक्सर को शुक्रगुज़ार नहीं पायेगा। दूसरे मक़ाम पर शैतान ने नेक लोगों पर अपना दाव चलाने से आजिज़ होने का यूं ज़िक्र किया।

बोला ऐ रब मेरे! क़सम उसकी कि तूने मुझे गुमराह किया मैं उन्हें ज़मीन में भुलावे दूंगा और ज़रूर मैं उन सब को बे राह करूंगा मगर जो उनमें तेरे चुने हुए बंदे हैं।

शैतान ने कहा कि मैं लोगों पर बुरे आमाल अच्छे और मुज़य्यन करके पेश करूंगा इस तरह वह मेरे बहकाने से सीधी राह से हट जायेंगे अलबत्ता ऐ अल्लाह तेरे नेक, मुख़लिस और बरगुज़ीदा बंदों पर मेरे वरग़लाने का कोई असर नहीं होगा।

अल्लाह तआला ने भी शैतान को बता दिया था।

बेशक जो मेरे बंदे हैं उन पर तेरा कुछ क़ाबू नहीं।

शैतानी वसवसे के असर होने या न होने के लिहाज़ से पांच क़िस्में:

इंसान जिस्म और रूह का मजमूआ है रूह आलमे कुद्स की एक लतीफ़ मख़लूक़ है जिसमें आलमे बाला के हक़ायक़ व कमालात और तमाम मनाफ़े पाये जाते हैं और जिस्म की तख़लीक़ मिट्टी से हुई इस लिये इसमें माद्दी असरात और खुसूसियात और ज़मीन की मख़लूक़ात वाले कमालात पाये जाते हैं।

अल्लाह तआला का ख़लीफ़ा बनने की इस्तेदाद हर इंसान को जिस्म और रूह के ज़िम्न में अता हुई लेकिन शैतान ने इंसान को जो इस नेमत से महरूम करने की कोशिश की है उसके नतीजे में इंसानों के पांच गरोह बन गये।

पहला गरोह : वह है जो पूरी तरह शैतान के क़ब्ज़े में आकर ख़िलाफ़ते इलाहया से बग़ावत कर बैठा उसने ख़िलाफ़त की इस्तेदाद बिल्कुल ज़ाया कर दी। अल्लाह तआला की तौहीद और उसकी मारफ़त से उसका कोई ताल्लुक़ न रहा दोनों जहानों की नेक बख़्ती और हमेशा की नजात की राहों से दूर जा पड़ा, कोई रूहानी कमाल हासिल करने की उसमें ताक़त न रही यहां तक कि माद्दी फवायद जानने और उन्हें हासिल करने से भी यह महरूम रहा, यह वह लोग हैं जो अक्ल व ख़िरद से ख़ाली हैं जाहिल काफ़िर और मुश्रिक हैं।

दूसरा गरोह : वह जिस में जिस्मानी इस्तेदाद तो बाक़ी रही मगर शैतान के भटकाने से भटक गया और रूहानी इस्तेदाद को ज़ाया कर दिया, इसलिये रूहानी तक़ाज़ों को बरुए कार लाने से वह महरूम हो गया। मारफ़ते इलाहया तो दरकिनार अल्लाह तआला की हस्ती से भी मुनकिर हो गया, उसने सिर्फ़ जिस्म और माद्दा को अपना मक़सद समझ लिया और अपनी बक़िया इस्तेदाद

Scanned by CamScanner

का रुख़ माद्दियात ही की तरफ़ मोड़ दिया, वह अक़ली पेचीदगियों में गुम होकर रह गये, बाज़ ने ज़दीद इंकिशाफ़ात और माद्दी ईजादात में बहुत बड़ी कामयाबी हासिल कर ली, बेशुमार मुफ़ीद चीज़ें ईजाद कीं, फ़िज़ा में उड़ने वाले तैयारे, ख़ला में नूर व सय्यारों के ज़रिये ज़मीन व आसमान तक राब्ते क़ायम कर लिये। हैरत अंगेज़ आलात ईजाद कर लिये अब उनकी तरक़्क़ी का आख़री मरहला है कि उन्होंने बनी नूअ इंसान की हलाकत के लिये हज़ारों मील तक मार करने वाले मिज़ाईल तैयार कर लिये। एटम बम, नीपाम बम बनाये, आवाज़ से ज़्यादा तेज़ रफ़्तार हवाई जहाज़ तैयार किये जिनके ज़रिये चंद सैकेंडों में रूए ज़मीन को हलाकत खेज़ मंज़र में तबदील किया जा सकता है और एटम बमों के ज़रिये कुर्रए अर्ज़ को आंख झपकने की मिक़दार में उड़ाकर तबाह व बर्बाद कर देना आसान है। ख़िलाफ़ते इलाहया की वह इस्तेदाद जो बनी नूअ इंसान की जिस्मानी, रूहानी, दुनियावी, उख़वरी फ़वायद के लिये थी उसे इंसानों के हलाक कर देने वाले आलात के लिये वक़्फ़ कर दिया गया।

अब मामला यहां तक पहुंच चुका है कि इन हथियारों को ईजाद करने वाले खुद अपने आपको उन की ज़द में महसूस कर रहे हैं उन्हें हर वक़्त यह ख़तरा लाहिक़ है कि हमारे ही ईजाद किये हुए आलात न मालूम किस वक़्त हम पर फट पड़ें और कुर्रए अर्ज़ के साथ हम भी लुक़्मए अजल बन कर न रह जायें।

तीसरा गरोह: वह है जिन में ख़िलाफ़ते इलाहया की इस्तेदाद तो मौजूद थी मगर शैतान के वरग़लाने का इतना असर उन पर ज़रूर हुआ कि वह ग़फ़लत और सुस्ती का शिकार हो गये कि अपनी इस्तेदाद को पूरी तरह बरुए कार ना लाये, यह वह आम मुसलमान लोग हैं जिन्होंने क़द्रे क़लील जिस्मानी और रूहानी मुनाफ़ा हासिल किये मगर अपनी सलाहियतों को पूरी तरह काम में न लाने की वजह से रूहानियात या माद्दियात पर कामिल तसर्रुफ़ हासिल न कर सके, बेशक वह मनसबे ख़िलाफ़त पर फ़ायज़ नहीं हुए मगर उन्होंने ख़िलाफ़ते इलाहया से बग़ावत भी नहीं की, यानी ईमान से हाथ नहीं धोए।

लेकिन यह ख़्याल रहे कि इस गरोह में फिर दो क़िस्में हैं एक वह जिन पर शैतान का असर कम होता है और दूसरे वह जिन पर शैतान का बहुत ज़्यादा असर होता है अगरचे ईमान से दूर तो नहीं होते लेकिन बहुत ही ज़्यादा गुनाहों में मुब्तला हो जाते हैं।

चौथा गरोह : अल्लाह के उन ख़ास बंदों का है जिन में अल्लाह तआला की अता फ़रमाई हुई जिस्मानी रूहानी, इल्मी, अमली पूरी इस्तेदाद मौजूद थी और शैतान के भटकाने का उनकी इस्तेदाद को कोई नुक़्सान न पहुंच सका। अल्लाह तआला ने शैतान को मुख़ातिब फ़रमा कर पहले ही फ़रमा दिया था।

बेशक मेरे ख़ास बंदों पर तुझे कोई ग़ल्बा हासिल न होगा।

यह मुक़द्दस गरोह अंबियाए किराम और उनके मानने वाले कामिलीन पर मुश्तमिल है जिन्होंने अल्लाह तआला की अता फ़रमाई हुई इस्तेदाद को पूरी तरह काम में लाकर ख़िलाफ़ते इलाहया के मनसब को पाया, हिकमत व मसलेहत के मुताबिक़ रूहानियत व माद्दियत पर मुतसर्रिफ़ होने और ख़िलाफ़ते इलाहया के तक़ाज़ों को उन्होंने सही मायनों में पाए तकमील तक पहुंचाया।

पांचवा गरोह : वह है जिस ने अपने ख़्याल में सिर्फ़ रूह और उसके तक़ाज़ों को पेशे नज़र रखा और जिस्मानियात और माद्दियात को नज़र अंदाज़ कर दिया यह वह लोग हैं जो अपने अपने ख़्याल के मुताबिक़ रियाज़त व मुजाहिदा में मशगूल रहे उन में कुछ वह होते हैं जिन का अल्लाह तआला की वहदानियत पर ईमान होता है वह शैतान के भटकाने से महफ़ूज़ रहते हैं और कुछ वह होते हैं जो अल्लाह तआला की वहदानियत पर ईमान नहीं रखते उनको शैतान नजात की राह से मुकम्मल तौर पर हटा देता है अपनी रियाज़त और मुजाहिदा से किसी ने फ़ायदा उठाकर रूहानियत को हासिल कर लिया अलबत्ता दुनियावी और माद्दी मुनाफ़ा से महरूम रहे और किसी को अपने ख़्याल के मुताबिक़ अपनी की हुई रियाज़त व मुजाहिदा से रूहानियत मिली और न ही दुनियावी और माद्दी मुनाफ़ा हासिल हुए।

शैतान ने अपनी बख़्शिश का मौक़ा गंवायाः

शैतान ने इब्तेदाई तौर पर आदम अलैहिस्सलाम को सज्दा करने से इंकार कर दिया और पीठ फेर कर खड़ा हो गया फ़रिश्तों ने एक सज्दा पहले किया और फिर उसे खड़ा देखकर दूसरा सज्दा बतौर शुक्र किया।

हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के ज़माने में शैतान ने मूसा अलैहिस्सलाम को कहा कि तुम अल्लाह तआला से कलाम करते वक़्त मेरी सिफ़ारिश भी कर देना। आपने जब रब तआला के हुज़ूर अर्ज़ किया तो अल्लाह तआला ने कहा इबलीस को जाकर कह दो कि आदम अलैहिस्सलाम की क़ब्र को जाकर सज्दा कर लो तो मैं तुम्हारे गुनाह माफ़ कर दूंगा, यह कहने लगा ज़िन्दा आदम को सज्दा नहीं किया तो अब मुर्दा आदम को सज्दा कैसे करूं? इस तरह उसने इंकार किया।

बाज़ रिवायात में है कि एक लाख साल के बाद इबलीस को जहन्नम से निकाल कर और आदम अलैहिस्सलाम को जन्नत से निकाल कर फिर उसे कहा जायेगा कि आदम अलैहिस्सलाम को सज्दा कर लेकिन यह इंकार कर देगा उसे फिर जहन्नम की आग में डाल दिया जायेगा।

फ़ायदा : नबी को इस दुनिया से रुख़सत होने के बाद क़ब्र की ज़िन्दगी में सबसे पहले मुर्दा कहने वाला शैतान है अब भी उसके चेले, चमचे अंबियाए किराम को मुर्दा कह रहे हैं, और जो काम बाप करे उसकी औलाद वही काम करे तो कोई ख़ास ताज्जुब की बात नहीं ख़्वाह हक़ीक़ी औलाद हो या मानवी औलाद हो।

इबलीस का नाम इबलीस या शैतान क्यों?

इबलीस का मरदूद होने से पहले सुरयानी ज़बान में नाम अज़ाज़ील और अरबी ज़बान में हारिस था। जब अल्लाह तआला के हुक्म का इंकार किया तो इबलीस नाम हुआ जिसका मायने है ख़ैर से दूर होना और अल्लाह की रहमत से ना उम्मीद होना, उसे शैतान भी कहा गया है अगर उसका माद्दा शतन हो तो मायने होगा हक़ से दूर होने वाला, अगर वह शैताह से माख़ूज़ है तो मायने होगा हलाक होने वाला और जल जाने वाला।

हज़रत हव्वा की पैदाईश :

जब हज़रत आदम अलैहिस्सलाम को फ़रिश्तों ने सज्दा किया और इबलीस इंकार व तकब्बुर

की वजह से मरदूद हो गया तो आदम अलैहिस्सलाम जो ख़ाक से पैदा हुए थे आपका जन्नत में कोई हम जिन्स न था क्योंकि फ़रिश्ते अलग जिन्स थे इसलिये अल्लाह तआला ने आप पर नींद को मुसल्लत किया फिर आपकी बायें पसली से हज़रत हव्वा को पैदा किया और उसकी जगह गोश्त रख दिया गया। जब आप बेदार हुए तो आपने अपने सर के पास हज़रत हव्वा को बैठे हुए पाया। पूछा कि कौन हो? उन्होंने कहा कि मैं औरत हूं, फिर आपने कहा तुम्हें क्यों पैदा किया गया? तो उन्होंने अर्ज़ किया ताकि मुझसे सकून हासिल करो।

फ़रिश्तों ने हज़रत आदम अलैहिस्सलाम के इल्म का इम्तेहान लेने के लिये पूछा कि यह कौन है? तो आपने फ़रमाया यह औरत है फिर उन्होंने पूछा इसे औरत क्यों कहा गया है? तो आपने फ़रमाया चूंकि यह मर्द से बनी है, फिर उन्होंने सवाल किया कि इसका नाम क्या है? आपने फ़रमाया हव्वा, फिर उन्होंने कहा इसका नाम हव्वा क्यों रखा गया?

आपने फ़रमाया कि ज़िन्दा चीज़ को हय्य कहा जाता है यह भी ज़िन्दा से पैदा हुई इसलिये इसका नाम हव्वा रखा गया।

एक रिवायत के मुताबिक़ हज़रत हव्वा की पैदाईश फ़रिशतों के सज्दे के बाद जन्नत में हुई और दूसरी रिवायत के मुताबिक़ हज़रत आदम अलैहिस्सलाम का जिस्म ज़मीन में तैयार किया गया और इसमें रूह को दाख़िल भी ज़मीन में ही किया गया और हज़रत हव्वा की पैदाईश भी ज़मीन पर ही हुई फिर दोनों को जन्नत में ले जाया गया।

हज़रत आदम अलैहिस्सलाम की शादी और महर :

जब हज़रत हव्वा को पैदा किया गया तो हज़रत आदम अलैहिस्सलाम ने उनकी तरफ़ मीलान करना चाहा और इरादा फ़रमाया कि दस्ते मुहब्बत बढ़ायें तो फ़रिश्तों ने कहा ऐ आदम ठहर जाओ पहले महर अदा कर दो आपने फ़रमायाः

वह महर क्या है? फ़रिश्तों ने कहा महर यह है कि तुम नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर दुरूद पढ़ो।

एक रिवायत में तीन दफ़ा और एक में सत्तर मर्तबा दुरूद पाक पढ़ने का हुक्म दिया गया यानी इस मसले में इत्तेफ़ाक़ है कि आदम अलैहिस्सलाम का महर यही था कि वह नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर दुरूद पाक पढ़ें आप ने दुरूद पढ़ा और फ़रिश्तों की गवाही से निकाह हुआ।

इससे यह भी पता चला कि बेशक नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हर मौजूद चीज़ के लिये वसीला हैं यहां तक कि आप अपने बाप हज़रत आदम अलैहिस्सलाम का भी वसीला हैं।

दूसरी रिवायत के मुताबिक़ आप को और हज़रत हव्वा को शादी के बाद फ़रिश्ते सोने के तख़्त पर बैठा कर इस तरह जन्नत में ले गये जिस तरह बादशाहों को इज़्ज़त की ख़ातिर उठाकर ले जाते हैं गोया कि बारात की वापसी पर फ़रिश्ते सुनहरी डोली में दोनों मियां–बीवी को उठाकर ला रहे हैं।

क़ानूने कुदरत और क़ानूने आदत में फ़र्क़ :

अल्लाह तआला की आदत शरीफ़ा यह है कि आम तौर पर कामों के अस्बाब बना दिये हैं इसी

तरह इंसानों की पैदाईश में भी कानूने आदत अस्बाब के मातेहत कर दिया गया कि मां और बाप से औलाद की पैदाईश होती है लेकिन वह कानूने कुदरत नहीं।

कानूने कुदरत की अल्लाह तआला ने एक मिसाल कायम कर दी है कि मैं इस तरह भी कर सकता हूं अस्बाब की मुझे कोई मोहताजी नहीं, मर्द और औरत के बग़ैर अपने दस्ते कुदरत से मिट्टी का कालिब बनाकर उसमें रूह फूंक कर हज़रत आदम अलैहिस्सलाम को पैदा फरमाया और औरत के बग़ैर मर्द की पसली पाक करके आम आदत के खिलाफ हज़रत हव्वा को पैदा फरमा कर यह वाज़ेह कर दिया कि मैं बग़ैर औरतों के मर्दों से औलाद पैदा करने पर भी कादिर हूं और औरत से बग़ैर उसके खाविन्द के बेटा पैदा करके भी वाज़ेह कर दिया कि मेरी कुदरत से यह भी कोई बईद बात नहीं। यानी हज़रत मरयम से हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की पैदाईश तो एक आम तरीका के मुताबिक ही हुई लेकिन इसमें मर्द का कोई वास्ता नहीं, सिर्फ जिब्राईल अमीन की फूंक का असर है क्योंकि ईसा अलैहिस्सलाम का कोई बाप नहीं।

हज़रत आदम व हव्वा अलैहिमस्सलाम को दरख़्त से मना करने में हिक्मतः

अगर हजरत आदम अलैहिस्सलाम जन्नत में न होते बल्कि पहले ही ज़मीन पर होते तो—

और तुम दोनों उस दरख़्त के करीब न जाओ।

कहने की न ज़रूरत दरपेश आती और न ही आप से भूल वाकेय होती। लेकिन आप तो जन्नत में थे और आपका ज़मीन में रहना और ज़मीन में ही अल्लाह का ख़लीफ़ा बनना ख़ुद रब तआला की मुराद थी आप की तख़लीक़ से पहले ही अल्लाह तआला ने फ़रमा दिया था।

बेशक मैं ज़मीन में ख़लीफ़ा बनाने वाला हूं।

इससे मालूम हुआ कि आदम अलैहिस्सलाम अपने महबूब और महबूब की मुराद को नहीं भूले यानी अल्लाह तआला और उसकी मुराद जो थी कि आप ज़मीन में मेरे ख़लीफ़ा होंगे उससे हज़रत आदम अलैहिस्सलाम से भूल नहीं वाकेय हुई बल्कि अल्लाह तआला की मर्ज़ी के मुताबिक काम हुआ, अलबत्ता भूल उनके मासिवा चीज़ में हुई जो अल्लाह तआला की हिकमत का तकाज़ा था कि एक दरख़्त के करीब जाने से रोका उसमें भूल वाकेय हुई जो ज़मीन में आने का सबब बनी।

इस मुकाम पर यह शुबह सही न होगा कि अल्लाह तआला हज़रत आदम अलैहिस्सलाम को इस भूल के बग़ैर ज़मीन पर लाने पर कादिर था बेशक उसकी कुदरत हक है लेकिन उसने इज़हारे कुदरत को खुद ही हकीमाना अस्बाब के साथ मरबूत फरमाया है। आदम अलैहिस्सलाम का निसयान उन ही अस्बाब में शामिल है, अल्लाह तआला के कादिर होने के साथ साथ उसका हकीम होना भी बरहक है और हकीम की शान नहीं कि हिकमत के ख़िलाफ कोई काम करे, हिकमत की रियायत से कुदरत की नफी नहीं होती। आदम अलैहिस्सलाम की उस ज़ाहिरी लग़ज़िश को हकीकतन मासियत न समझा जाये और इस बात पर ग़ौर किया जाये कि अल्लाह तआला ने हज़रत आदम अलैहिस्सलाम को जन्नत में ठहराकर एक ख़ास दरख़्त के करीब जाने से मना फ़रमा दिया और शैतान को इख़्तेयार दे दिया कि वह इस मुमानेअत की ख़िलाफ़ वर्ज़ी में आदम अलैहिस्सलाम की लग़ज़िश का सबब बन जाये और लग़ज़िश के सादिर होने के बाद आदम अलैहिस्सलाम का ज़मीन में ख़लीफ़तुल्लाह होना जो मंशाए इयज़दी था हकीमाना तौर पर

Scanned by CamScanner

पूरा हो जाये, अदना तआम्मुल से यह बात समझ में आ सकती है कि अल्लाह तआला ने अपने मंशा और मुराद को मुतहक्किक फ़रमाने के लिये यह सब हकीमाना अस्बाब पैदा फ़रमाये।

आदम अलैहिस्सलाम से भूल हुई:

और उस दरख़्त के क़रीब न जाना कि हद से बढ़ने वालों में से हो जाओगे।

आदम व हव्वा अलैहिमस्सलाम दोनों उस दरख़्त के क़रीब गये और अल्लाह तआला की मुमानेअत के बावजूद उन्होंने उसे खा लिया ऐसी सूरत में आयते करीमा का बज़ाहिर मफ़ाद यही होगा कि आदम व हव्वा अलैहिमस्सलाम (मआज़ल्लाह) दोनों ज़ालिम हो गये मगर याद रहे कि आदम अलैहिस्सलाम अल्लाह की ज़मीन पर अल्लाह तआला के पहले ख़लीफ़ा और उसके नबी हुए। अल्लाह का नबी और अल्लाह का ख़लीफ़ा कभी ज़ालिम नहीं हो सकता। अगर कोई बंदा हज़रत आदम अलैहिस्सलाम को ज़ालिम कहेगा तो वह ख़ुद ज़ालिम व काफ़िर क़रार पायेगा।

जुल्म के मायने : यानी किसी चीज़ को उस की असल जगह की बजाए किसी दूसरी जगह रख देना।

कुरआन करीम में शिर्क के लिये भी लफ़्ज़ जुल्म वारिद है, हक़ तलफ़ी और हाकिम के फ़रमाने हक़ की नाफ़रमानी को भी जुल्म कहते हैं। बल्कि हर मासियत व गुनाह जुल्म है। अल्लाह तआला बंदे को जिस काम का हुक्म दे उसकी ख़िलाफ़ वर्ज़ी यक़ीनन गुनाह है लेकिन उसका क़ानून यह है कि वह बंदों को उसी काम का हुक्म देता है जो बंदे के इख़्तेयार में हो देखिये कुरआन करीम ने फ़रमाया:

यानी अल्लाह तआला किसी की ताक़त व इख़्तेयार से बाहर उसे कोई हुक्म नहीं देता।

ज़ाहिर है कि भूल कर किसी काम का करना या न करना बंदे के इख़्तेयार में नहीं, ऐसी सूरत में व ला तक़ रबा हाज़िहिश श ज र त की नही के यह मायने नहीं हो सकते कि तुम भूल कर भी उस दरख़्त के क़रीब न जाना वरना तुम दोनों ज़ालिमों में से हो जाओगे।

अब इस बात का फ़ैसला कि हज़रत आदम अलैहिस्सलाम क़सदन उस दरख़्त के क़रीब गये या भूल कर बिला क़सद? ख़ुद कुरआन मजीद से ही सुन लीजिये अल्लाह तआला ने फ़रमाया:

और बेशक हमने उससे पहले आदम अलैहिस्सलाम से दरख़्त के क़रीब न जाने का अहद लिया तो वह भूल गये और हमने उनका कोई क़सद न पाया।

साबित हुआ कि आदम अलैहिस्सलाम से किसी क़िस्म का कोई जुल्म सर ज़द नहीं हुआ न उन्होंने कोई शिर्क किया, न उनसे कोई हक़ तलफ़ी हुई न उनसे किसी मासियत और गुनाह का सुदूर हुआ। जैसे रोज़ेदार का रोज़े की हालत में भूल कर खाना पीना गुनाह नहीं उसी तरह आदम अलैहिस्सलाम का उस दरख़्त से भूल कर खा लेना भी गुनाह नहीं। यक़ीनन वह गुनाहों से पाक और नबी होने की वजह से मासूम हैं। शैतान उनसे जिस ज़ाहिरी लग़ज़िश के सादिर होने का सबब बना वह हक़ीक़तन मासियत नहीं बल्कि उसके साथ अल्लाह तआला की हिकमतें मुताल्लिक़ हैं इस तरह हज़रत आदम अलैहिस्सलाम रब्बाना ज़लमना अनफ़ुसना कहना भी उनके ज़ालिम होने की दलील नहीं बल्कि उनके कमाले अबदियत और रब्बे करीम की बारगाह में इंतेहाई तवाज़ुअ और इंकिसारी पर मबनी है।

शैतान के फिसलाने का क्या मतलब?

तो शैतान ने उन्हें उस दरख़्त के ज़रिये फुसलाया और जहां वह रहते थे वहां से उन्हें अलग कर दिया।

आदम व हव्वा अलैहिमस्सलाम के लिये फ़रमान था कि उस दरख़्त के क़रीब न जाना, शैतान ने उनसे इस फ़रमाने इलाही की नाफ़रमानी कराना चाही इस लिये वसवसे की ज़बान में दोनों से कहा कि मैं तुम्हें ऐसा दरख़्त न दिखाऊं जिसके खाने से तुम हमेशा जन्नत में रहो और तुम्हें ऐसी बादशाही नसीब हो जाये जिसमें कभी किसी क़िस्म की कमज़ोरी पैदा न हो। शैतान ने उनके दिलों में बार बार वसवसा पैदा किया और वसवसा की ज़बान में क़सम खा कर उनको कहा कि मैं तुम्हारा ख़ैर ख़्वाह हूं उस दरख़्त के खाने से तुम्हारे रब ने सिर्फ़ इसलिये तुम्हें रोका है कि तुम फ़रिश्ते न हो जाओ हमेशा तुम्हें जन्नत में रहना नसीब न हो जाये। बिल आख़िर धोके से उन्हें इस दरख़्त के खाने पर आमादा कर लिया और आदम व हव्वा अलैहिमस्सलाम ने दरख़्त से खा लिया और खाते ही उनका जन्नती लिबास उनसे उतर गया और जन्नती दरख़्तों के पत्तों से अपने अपने जिस्मों को ढांपा और वह जन्नत से ज़मीन की तरफ़ उतार दिये गये यहां तक तो शैतान की ख़्वाहिश पूरी हो गई।

लेकिन असल मक़सद में वह कामयाब न हुआ उसकी असल ख़्वाहिश यह थी कि आदम अलैहिस्सलाम अल्लाह की मुमानेअत को याद रखते हुए क़सदन उस दरख़्त से खायें और इस तरह आसी और नाफ़रमान होकर जन्नत से निकाले जायें इसलिये उसने वसवसा की ज़बान में मा नहा कुमा रब्बु कुमा अन हाज़िहिश श ज र त कहकर अल्लाह तआला की नही भी उन्हें याद दिला दी, लेकिन इस्मते इलाहया ने उन्हें मासियत से बचा लिया और उस दरख़्त के खाने से पहले मुमानेअते इलाही का उन्हें निसयान हो गया जैसा कि अल्लाह तआला ने फ़रमाया:

आदम भूल गये हमने उनका क़सद न पाया।

और आदम अलैहिस्सलाम क़सदन फ़रमाने इलाही की ख़िलाफ़ वर्ज़ी से बच गये और शैतान अपने असल मक़सद में नाकाम हो गया यही वजह है कि अल्लाह तआला ने अज़ल (जाल के साथ) के बजाए अज़ल नहीं फ़रमाया यानी यह फ़रमाया कि शैतान ने उनको फुसला दिया यह नहीं फ़रमाया कि उन्हें गुमराह कर दिया।

शैतान ने वसवसा क्यों डाला?

आदम अलैहिस्सलाम को जब फ़रिश्तों ने सज्दा कर लिया तो आपको और आपकी ज़ौजा को जन्नत में रहने का हुक्म हुआ और इरशाद हुआ कि आप यहां जो चाहें बा फ़रागत खायें लेकिन उस दरख़्त के क़रीब न जायें तो उस मना किये हुए दरख़्त की वजह से शैतान ने दोनों को फुसला दिया और उन्हें खुशहाली, बे फ़िक्री और ऐश व इशरत के माहौल यानी जन्नत से दूर कर दिया, वजह उसकी यह भी थी कि जब हज़रत आदम अलैहिस्सलाम को सज्दा करने से शैतान ने इंकार कर दिया और तकब्बुर किया तो अल्लाह तआला ने फ़रमाया:

तू मरदूद है यहां से निकल जा।

तो शैतान के दिल में बुग्ज़ व हसद की आग भड़कने लगी और कहने लगा कि जिस तरह

मैं ज़लील व ख़्वार कर के निकाला गया हूं आदम व हव्वा और उनकी नस्ल को इसी तरह जन्नत से निकालूंगा और उन्हें इसी तरह गुमराह करूंगा जिस तरह मुझे गुमराह किया गया यानी मैं उनसे अपना पूरा बदला लूंगा।

शैतान फुसलाने पर कैसे क़ादिर हुआ?

शैतान ने जब सज्दा से इंकार किया उसे जन्नत से निकल जाने का हुक्म दिया गया उसी वक़्त उसने अल्लाह तआला से मुहलत ले ली अगरचे अल्लाह तआला ने फ़रमा दिया था कि तेरा दाव मेरे मुख़लिस बंदों पर नहीं चलेगा इसलिये शैतान आपसे क़सदन गुनाह न करा सका बल्कि सिर्फ़ उस मुहलत का फ़ायदा उठाते हुए आपके दिल में वसवसा डालकर आप को भुला दिया।

शैतान इंसानों को कैसे वसवसे में डालता है?

अल्लाह तआला ने इरशाद फ़रमाया:

बेशक वह और उसका क़बीला तुम्हें देखता है जहां से तुम उसे नहीं देख सकते।

यानी शैतान और उसके ज़ेरे असर दूसरे छोटे छोटे शैतान जहां कहीं भी हों इंसानों को देख सकते हैं और उन्हें वसवसे में डाल सकते हैं हालांकि इंसान उन्हें नहीं देख रहे होते।

बेशक शैतान इंसान के अंदर अपने असरात इस तरह जारी व सारी कर सकता है जैसे आदम की रगों में ख़ून जारी होता है।

शैतान ने कहां से वसवसा वाली गुफ़्तगू की?

शैतान ने आदम व हव्वा अलैहिमस्सलाम से जो गुफ़्तगू की वह क़वी वसवसों के ज़रिये की।

उसने ज़मीन से ही वसवसे की ज़बान में वह कुछ कह दिया जो कहना चाहता था जब से उसे जन्नत से निकाल दिया गया फिर उसे आसमानों पर चढ़ने की न इजाज़त थी न ही वह चढ़ सका। कुरआन मजीद या किसी हदीस में वारिद नहीं हुआ कि शैतान आदम व हव्वा के पास जन्नत में पहुंचा हो कुरआन पाक में तो सिर्फ़ यही अल्फ़ाज़ वारिद हैं।

उन दोनों को शैतान ने वसवसे में डाल दिया।

और सूरत ताहा आयात १२० में है शैतान ने उन (आदम) को वसवसे में डाल दिया, शैतान को वसवसे में डालने के लिये जिस्मानी तौर पर किसी के पास जाना ज़रूरी नहीं और न ही यह ज़रूरी है कि वह जिसे वसवसे में डाले व उसे देखे भी।

तंबीह : जिन अक़्वाल में शैतान का सांप के ज़रिये जन्नत में जाना साबित है या शैतान का जन्नत के दरवाज़े पर बैठकर वसवसे में डालने का ज़िक्र है वह बनी इस्राईल के मन घड़त अक़्वाल हैं। इब्ने कसीर ने कहा:

यहां मुफ़स्सेरीन ने कई इस्राईली ख़बरें नक़्ल कर दी हैं और इमाम राज़ी फ़रमाते हैं:

ज़रूरी है कि ऐसी रिवायात की तरफ़ बिल्कुल इल्तिफ़ात न किया जाये।

फ़ायदा : शैतान को अल्लाह तआला ने इतने तसर्रुफ़ात की ताक़त दे दी है कि वह कहीं भी लोगों के दिलों में वसवसे डाल लेता है और हज़रत इज़्राईल मल्कुल मौत फ़रिश्ते को इतनी ताक़त हासिल है कि वह एक लम्हे में तमाम रुए ज़मीन के कोने कोने में रूह क़ब्ज़ कर सकता

है और सैय्यदना मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को अल्लाह तआला ने उनसे ज़्यादा तसर्रुफ़ात की ताक़त दी है तो इसमें दूसरे किसी का क्या नुक़्सान? आप अपने उम्मती की हालते ज़ार को देखें उसकी हाजत को पूरा करें वह कहीं भी हो? इसमें न तो कोई शिर्क है और न ही अक़्लन मुहाल है।

एतेराज़ : अल्लाह तआला ने इरशाद फ़रमाया:

व असा आ दमु रब बहु फ ग़ वा

यहां पर कई मुतरज्जेमीन ने असा का माना "हुक्म टाला" नाफ़रमानी की, आप से क़सूर हुआ, किया है और ग़वा का मायने राह से बहका, गुमराह हुए, ग़लती में पड़ गये राहे रास्त से भटक गया, किया है। तो किस तरह कहा जा सकता है कि आदम अलैहिस्सलाम से सिर्फ़ भूल वाक़ेय हुई आप ने कोई जुर्म और गुनाह नहीं किया?

जवाब : आम मुतरज्जेमीन ने यहां तर्जमा सही नहीं किया देखिये आला हज़रत मौलाना अहमद रज़ा खां बरेलवी रहमतुल्लाहि अलैहि ने यह तर्जमा किया है:

आदम अलैहिस्सलाम से अपने रब के हुक्म में लग़ज़िश वाक़ेय हुई जो मतलब चाहा था उसकी राह न पाई।

इस तर्जमे से वाज़ेह हो रहा है कि यह लग़ज़िश भूल कर थी इसमें कोई गुनाह या भटकने वाली बात नहीं थी। इस मक़ाम पर अल्लामा राज़ी रहमतुल्लाहि अलैहि ने तफ़सीर कबीर में ज़िक्र फ़रमाया:

यानी बेशक ज़ाहिर कुरआन पाक अगरचे दलालत करता है कि हज़रत आदम अलैहिस्सलाम से इस्यान व ग़वायत वाक़ेय हुए लेकिन किसी को यह कहने का कोई हक़ नहीं कि वह यह कहे कि हज़रत आदम ने हुक्म टाला वह गुमराह हुए भटक गये यानी मक़सद यह है कि यह अल्फ़ाज़ अल्लाह तआला ने इस्तेमाल फ़रमाये उसको हक़ पहुंचता है वह अपने बंदे के हक़ में जो अल्फ़ाज़ चाहे इस्तेमाल करे लेकिन वही हक़ीक़तन उनके मायने से भी आगाह है।

इस मक़ाम पर अल्लामा आलूसी रहमतुल्लाहि अलैहि रूहुल मआनी में तहरीर फ़रमाते हैं:

क़ाज़ी अबू बकर बिन अरबी ने वाज़ेह तौर पर बयान फ़रमाया कि इस्यान यानी नाफ़रमानी, भटक जाना, बहक जाना, गुमराह हो जाना, इस क़िस्म के अल्फ़ाज़ की निस्बत जब हम अपने वालदैन आबा व अजदाद की तरफ़ नहीं कर सकते जो इंसानियत में हमारे ममासिल हैं और अंबियाए किराम से घटिया हैं ऐसे अल्फ़ाज़ की निस्बत अंबिया किराम और ख़ुसूसन हज़रत आदम अलैहिस्सलाम की तरफ़ कैसे हो सकती है? जो बर गुज़ीदा मुकर्रम और हर तरह ताज़ीम व तकरीम के लिहाज़ से मुक़द्दम हैं।

मआलिमुल तंजील में है:

यह यक़ीनी बात है कि आदम अलैहिस्सलाम पर आसी वग़ैरह (नाफ़रमान हुआ, बहक गया, गुमराह हुआ) के अल्फ़ाज़ का इतलाक़ जायज़ नहीं।

अंबियाए किराम गुनाहों से पाक हैं:

अंबियाए किराम तमाम सग़ायर और कबायर गुनाहों से पाक होते हैं मअज़ल्लाह अंबियाए

किराम से गुनाह सर ज़द हों यह हो नहीं सकता अल्लामा राज़ी रहमतुल्लाहि अलैहि ने इस पर कई दलीलें कायम की हैं आप फ़रमाते हैं:

१. अगर अंबियाए किराम से गुनाह सर ज़द हों तो उनका मर्तबा अपनी उम्मतों के नाफ़रमान, गुनाहगार लोगों से भी कम होगा और यह जायज़ नहीं, वजह यह है कि अंबियाए किराम के मरातिब बहुत बुलंद होते हैं उन्हें आला दर्जा की बुज़ुर्गी और शराफ़त हासिल होती है जो आला दर्जा रखते हों उनसे गुनाह सर ज़द हों तो वह बहुत ज़्यादा बुरे समझे जाते हैं अल्लाह तआला ने फ़रमाया:

ऐ नबी की बीवियों! जो तुममें सरीह हया के ख़िलाफ़ कोई जुर्रत करे उस पर औरों से दुगना अज़ाब होगा।

इससे मुराद शौहर की इताअत में क़ोताही करना और उसके साथ बद अख़लाकी से पेश आना है क्योंकि बदकारी से अल्लाह तआला अंबिया की बीवियों को पाक रखता है। बहरहाल जिस शख़्स की ख़ुसूसियत और फ़ज़ीलत ज़्यादा होती है उससे अगर क़सूर वाक़ेय हो तो वह क़सूर भी दूसरों के क़सूर से ज़्यादा सख़्त क़रार दिया जाता है।

इसी तरह महसन से बदकारी सर ज़द होने में रज्म किया जाता है और ग़ैर महसन को एक सौ कोड़े लगाये जाते हैं क्योंकि महसन की शान ग़ैर महसन से इसलिये ज़ायद है कि वह शादी शुदा है उससे बदकरी सर ज़द होना अज़ीम जुर्म समझा जायेगा। जबकि इस पर भी इजमाअ है कि नबी का मक़ाम उम्मत के किसी फ़र्द से भी कम नहीं हो सकता तो गुनाहगारों से कम दर्जा कैसे हो सकता है?

२. गुनाहगार फ़ासिक़ होता है और अगर नबी से गुनाह सर ज़द हों तो वह माज़ल्लाह फ़ासिक़ होंगे और फ़ासिक़ की शहादत कबूल नहीं क्योंकि अल्लाह तआला ने फ़रमाया:

अगर कोई फ़ासिक़ तुम्हारे पास ख़बर लाये तो तहक़ीक़ कर लो।

३. अंबियाए किराम से अगर गुनाहे कबीरा सर ज़द होना जायज़ हो सके तो उनको ज़ज्र करना और सख़्ती से रोकना ज़रूरी हो जायेगा इस तरह अंबियाए किराम का ईज़ा पहुंचाना हराम नहीं होगा हालांकि अंबियाए किराम को ईज़ा पहुंचाना हराम है। अल्लाह तआला ने इरशाद फ़रमाया:

बेशक जो लोग ईज़ा देते हैं अल्लाह उसके रसूल को उन पर अल्लाह की लानत है दुनिया और आख़रत में।

४. हर नबी की उम्मत पर लाज़िम होता है कि वह अपने नबी की ताबेदारी करें जैसे हमें हुक्म दिया गया है।

अल्लाह तआला ने नबी करीम की ज़बाने मुबारक से कहलाया 'मेरी ताबेदारी करो' अगर मअज़ल्लाह आप से गुनाह सर ज़द होने जायज़ हो सकें तो आप की उम्मत को आपके गुनाहों की ताबेदारी करना वाजिब होगा इस तरह गुनाह करने हराम भी हों और गुनाहों में नबी की ताबेदारी वाजिब भी हो, एक ही वक़्त में एक काम हराम भी हो और वाजिब भी हो, यह कैसे मुमकिन हो सकता है?

Scanned by CamScanner

५. हमारी अक़्ल वाज़ेह तौर पर यह काम करती है कि नबी का मुकाम बहुत बुलंद होता है नबी अल्लाह तआला की वही (कुरआन) का अमीन होता है और नबी अल्लाह के बंदों और उसकी ज़मीन में अल्लाह का ख़लीफ़ा होता है। यह कैसे हो सकता है कि वह अल्लाह के फ़रमान को सुनते हुए कि "यह काम न करो" फिर वह अपनी लज़्ज़ात को तरजीह दे कर वह काम करे? अल्लाह के रोकने और उसके अज़ाब के ख़ौफ़ की तरफ़ तवज्जोह न दे। यह बहुत बुरा और नामुमकिन है।

६. जो लोग गुनाहों का इर्तकाब करते हैं वह अज़ाब के मुस्तहिक़ होते हैं अल्लाह तआला ने फ़रमाया:

और जो अल्लाह और उसके रसूल की नाफ़रमानी करें तो बेशक उनके लिये जहन्नम की आग है जिसमें हमेशा रहेंगे। उसी तरह गुनाहों के मुरतकिब लानत के मुस्तहिक़ होते हैं।

अल्लाह तआला ने इरशाद फ़रमाया:

ख़बरदार ज़ालिमों पर अल्लाह की लानत है।

अगर अंबियाए किराम गुनाह करें तो वह अज़ाब और लानत के मुस्तहिक़ होंगे हालांकि इजमाओ उम्मत है कि अंबियाए किराम अज़ाब या लानत के मुस्तहिक़ नहीं हो सकते।

७. अंबियाए किराम लोगों को अल्लाह तआला की इताअत का हुक्म देते हैं अगर खुद उस पर अमल न करें तो उनपर सादिक़ आयेगा।

लोगों को भलाई का हुक्म देते हो और अपनी जानों को भूलते हो हालांकि तुम किताब पढ़ते हो तो क्या तुम्हें अक़्ल नहीं?

जब एक आम नसीहत करने वाले की इस से मज़म्मत की जा सकती है तो अंबियाए किराम जो अज़ीम मरातिब के मालिक होते हैं उनसे यह कैसे मुमकिन है कि वह और लोगों को नसीहत करें और खुद अमल न करें।

हज़रत शोएब अलैहिस्सलाम ने अपनी क़ौम को कहा:

और मैं नहीं चाहता हूं कि जिस बात से तुम्हें मना करता हूं आप उसके ख़िलाफ़ करने लगूं, मैं तो जहां तक हो सके संवारना ही चाहता हूं।

८. अल्लाह तआला ने अंबियाए किराम की शान में ज़िक्र फ़रमाया:

बेशक वह भले कामों में जल्दी करते हैं।

ख़ैरात का मतलब यह होता है कि हर अच्छा काम करना और हर बुरे काम से बचना, इससे वाज़ेह हुआ कि अंबियाए किराम करते ही अच्छे काम हैं और बुरे कामों से बचते हैं लिहाज़ा उनसे गुनाह सर ज़द नहीं हो सकते।

९. अल्लाह तआला ने अंबियाए किराम की शान में ज़िक्र फ़रमाया:

बेशक वह हमारे नज़दीक चुने हुए पसंदीदा हैं।

जब इस को मुतलक़ ज़िक्र किया उनकी किसी ख़सलत और आदत को अलग नहीं किया तो पता चला कि उन के तमाम काम ही अच्छे हैं कोई बुरा काम पाया जाये तो इस तरह कहा जाता है।

फ़लां शख़्स है तो बरगुज़ीदा और चुने हुए लोगों में से लेकिन अलबत्ता सिवाए फ़लां काम के कि वह इस काम में अच्छा नहीं।

जब अंबियाए किराम के मुताल्लिक़ ऐसा कोई जुमला ज़िक्र नहीं किया गया तो इससे वाज़ेह होता है कि अंबियाए किराम के सब काम अच्छे ही अच्छे होते हैं उनसे कोई गुनाह नहीं होता और भी कई आयात उस पर दलालत कर रही हैं।

१०. अल्लाह तआला ने शैतान के क़ौल को ज़िक्र फ़रमाते हुए इरशाद फ़रमायाः

तेरी इज़्ज़त की क़सम ज़रूर मैं उन सब को गुमराह कर दूंगा मगर जो उनमें तेरे मुख़लिस बंदे हैं।

शैतान ने अपनी आजिज़ी का ज़िक्र कर दिया कि ऐ अल्लाह तेरे मुख़लिस बंदों पर मेरा दाव नहीं चलेगा।

अल्लाह तआला ने इब्राहीम, इस्हाक़ और याक़ूब अलैहिमुस्सलाम को अपना मुख़लिस बंदा कहा, इरशाद बारी तआला है:

बेशक हमने उन्हें एक खरी बात से इम्तेयाज़ बख़्शा उस घर की याद है यानी हमने उन्हें अपना मुख़लिस बनाया।

हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के मुताल्लिक़ रब तआला ने फ़रमायाः

बेशक वह हमारे मुख़लिस बंदों से हैं।

जब बाज़ अंबियाए किराम का मुख़लिस होना वाज़ेह हो गया और शैतान के अपने क़ौल के मुताबिक़ वह मुख़लिस बंदों को गुमराह करने से आजिज़ है तो तमाम अंबियाए किराम का हुक्म एक ही है क्योंकि इसका कोई भी क़ायल नहीं कि बाज़ अंबियाए किराम मआज़ल्लाह गुनाहगार हैं और बाज़ नहीं।

११. और बेशक इबलीस ने उन्हें अपना गुमान सच कर दिखाया तो वह उसके पीछे हुए मगर एक गिरोह कि मुसलमान था।

इस आयत करीमा से वाज़ेह हुआ कि ईमान वाले लोगों के एक गिरोह ने शैतान की ताबेदारी नहीं की जिन्होंने शैतान की ताबेदारी नहीं की वह गुनाहगार भी नहीं।

अब देखना यह है कि यह गिरोह अंबियाए किराम का है या दूसरे लोग हैं? अगर अंबियाए किराम हैं तो यक़ीनन तमाम अंबियाए किराम का हुक्म एक ही है और अगर यह लोग अंबिया नहीं तो फिर भी वाज़ेह है कि अंबियाए किराम गुनाहगार नहीं हो सकते, क्योंकि अगर अंबियाए किराम गुनाहगार हों और दूसरे लोग गुनाहगार न हों तो जो नबी नहीं वह नबी से शान के लिहाज़ से बढ़ जायेगा, यह नहीं हो सकता क्योंकि तमाम उम्मत का इत्तिफ़ाक़ है कि नबी के दर्जे को कोई दूसरा नहीं पा सकता।

१२. अल्लाह तआला ने अपनी मख़लूक़ की दो क़िस्में ब्यान की हैं एक के मुताल्लिक़ फ़रमायाः

वह शैतान के गिरोह हैं ख़बरदार बेशक शैतान ही का गिरोह ख़सारे में है।

दूसरी क़िस्म के मुताल्लिक़ फ़रमायाः

वह अल्लाह का गिरोह है ख़बरदार बेशक अल्लाह का गिरोह ही कामयाब है।

इसमें तो किसी किस्म का कोई शक नहीं कि शैतानी गिरोह तो वही होगा जो ऐसे अमल करेगा जिनको शैतान पसंद करता होगा, और शैतान के पसंदीदा गुनाह हैं। हर वह शख़्स जो अल्लाह तआला का नाफ़रमान होगा, गुनाहगार होगा वही शैतानी गिरोह में होगा। अगर मआज़ल्लाह अंबियाए किराम से भी गुनाह सर ज़द हों तो वह शैतानी गरोह में दाख़िल होंगे और ख़सारे में होंगे।

क्या कोई मुसलमान यह कह सकता है कि उम्मत के नेक व परहेज़गार लोग तो अल्लाह का गिरोह हों और कामयाब होने वाले हों और अंबियाए किराम शैतानी गिरोह में दाख़िल होकर ख़सारे में हों? ऐसा कभी नहीं हो सकता किसी मुसलमान का ऐसा सोचना भी अपनी दुनिया और दीन को बर्बाद करना है।

१३. अंबियाए किराम फ़रिश्तों से अफ़ज़ल हैं इसलिये ज़रूरी है कि उनसे कोई गुनाह सर ज़द न हो सके क्योंकि फ़रिश्तों के मुताल्लिक़ अल्लाह तआला ने फ़रमाया:

बात में उससे सबक़त नहीं करते और उस के हुक्म पर कारबंद होते हैं।

इसी तरह फ़रिश्तों के मुताल्लिक़ और यह फ़रमाया:

और यह अल्लाह का हुक्म नहीं टालते और जो उन्हें हुक्म हो वही करते हैं।

जब फ़रिश्ते अल्लाह के हुक्म के मुताबिक़ अमल करते हैं तो अल्लाह के हुक्म की ख़िलाफ़ वर्ज़ी नहीं करते तो यह कैसे हो सकता है कि अंबियाए किराम जो उनसे अफ़ज़ल हैं वह अल्लाह तआला के हुक्म के मुताबिक़ अमल न करें? और अल्लाह के हुक्म की ख़िलाफ़ वर्ज़ी करें? गुनाहगार तो नेकों के बराबर भी नहीं हो सकते, अफ़ज़ल होना तो दूर की बात है। अल्लाह तआला ने फ़रमाया:

क्या हम उन्हें जो ईमान लाये और अच्छे काम किये उन जैसा कर दें जो ज़मीन में फ़साद फैलाते हैं या हम परहेज़गारों को शरीर बे हुक्मों के बराबर ठहरा दें।

१५. नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने एक आराबी से ऊंटनी ख़रीदी और आपने उसे क़ीमत अदा कर दी उसने फिर आपसे क़ीमत का मुतालबा किया आपने फ़रमाया कि क़ीमत तो मैंने अदा कर दी उसने आपसे गवाह तलब किया आपने ख़्याल किया मेरी गवाही कौन देगा उस वक़्त तो कोई मौजूद ही नहीं था। हज़रत ख़ुज़ैमा ने कहा या रसूलल्लाह! मैं गवाही देता हूं कि आपने आराबी को ऊंटनी की क़ीमत अदा कर दी है। आपने जब उनसे पूछा तुम ने कैसे गवाही दे दी थी हालांकि तुम तो उस वक़्त मौजूद ही नहीं थे? उन्होंने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह! आप हमें आसमानों की ख़बर बताते हैं तो हम आपकी तसदीक़ करते हैं, तो क्या इस ऊंटनी की क़ीमत अदा करने पर आपकी तसदीक़ न करें? यह कैसे हो सकता है? नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया आइंदा ख़ुज़ैमा जहां अकेले ही गवाही देंगे उनकी गवाही दो शख़्सों के बराबर समझी जायेगी।

अगर मआज़ल्लाह अंबियाए किराम से गुनाह होते तो हज़रत ख़ुज़ैमा कभी गवाही न देते बल्कि यह ख़्याल करते कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम भी (मआज़ल्लाह) हमारी तरह झूट बोल सकते हैं। (ख़्याल रहे कि बाज़ रिवायात में घोड़ा ख़रीदने का ज़िक्र है।)

१६. बेशक मैं तुम्हें लोगों का इमाम बनाने वाला हूं।

यह अल्लाह तआला ने इब्राहीम अलैहिस्सलाम को फ़रमाया, इमाम वह है जिस की लोग इक़्तेदा करें और ताबेदारी करें अगर नबी से गुनाह वाक़ेय हों तो उन गुनाहों की इक़्तेदा और ताबेदारी भी लाज़िम होगी यह मुमकिन नहीं कि नबी गुनाहों से मना भी करें और गुनाह करके लोगों को अपने गुनाहों की इक़्तेदा का भी हुक्म दें।

१७. अल्लाह तआला ने इरशाद फ़रमायाः

यानी नबुव्वत और इमामत का वादा नेक और अल्लाह के कुर्ब के मुस्तहिक़ लोगों के लिये है ज़ालिमों के लिये नहीं, गुनाहगार कभी नबी नहीं बन सकेंगे, वाज़ेह तौर पर मालूम हुआ कि अंबियाए किराम गुनाह नहीं करते क्योंकि गुनाहगारों को मनसबे नबुव्वत मिलता ही नहीं।

हज़रत आदम व हव्वा अलैहिमस्सलाम का ज़मीन में तशरीफ़ लाना

और जहां रहते थे वहां से उन्हें अलग कर दिया।

यानी जन्नत में हज़रत आदम व हव्वा दोनों को रहने की इजाज़त दी गई और हर क़िस्म के जन्नत के फल और नेमतें खाने की इजाज़त दी गई अलबत्ता एक दरख़्त से मना किया गया जब शैतान ख़ैर ख़्वाह बनकर क़समें उठाकर नसीहत देने वाले की शक्ल में आप को वसवसे में डालने में कामयाब हो गया तो आपको जन्नत और जन्नत की नेमतों से अलग होना पड़ा। और अल्लाह तआला ने हुक्म दे दियाः

और हमने कहा तुम तमाम उतर जाओ बाज़ तुम्हारे बाज़ के दुश्मन हैं और दूसरे मक़ाम पर फ़रमायाः

रब ने फ़रमाया तुम दोनों मिल कर जन्नत से उतरो।

दोनों आयतों का मक़सद यह है कि हज़रत आदम व हव्वा को बमअ उनकी औलाद के जो ता क़यामत वजूद में आनी थी ज़मीन पर उतरने का हुक्म दिया और फ़रमाया तुम्हारी औलाद बाज़ दूसरे बाज़ की दुश्मन होगी।

ख़्याल रहे कि शैतान को उन दोनों के उतारने से पहले ही मरदूद करके रूए ज़मीन पर भेज दिया गया था यहां उसके उतरने का ज़िक्र नहीं। हज़रत आदम अलैहिस्सलाम सरांदीप में उतारे गये और हज़रत हव्वा को जद्दा में और शैतान को पहले ही ईला में उतार दिया गया था।

हज़रत आदम अलैहिस्सलाम जब ज़मीन पर तशरीफ़ लाये तो आपका जन्नती लिबास उतार लिया गया था और जन्नत के दरख़्तों के पत्ते अपने जिस्म पर ढांप कर तशरीफ़ लाये।

हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते है कि हिन्दुस्तान की ज़मीन इसलिये उम्दा और हरी भरी है और ऊदे करनफ़ल वग़ैरह ख़ुश्बूयें इसलिये वहां पर पैदा होती हैं कि आदम अलैहिस्सलाम जब उस ज़मीन पर आये तो उनके जिस्म पर जन्नती दरख़्त के पत्ते थे वह पत्ते हवा से उड़कर जिस दरख़्त पर पहुंचे वह हमेशा के लिये ख़ुश्बूदार हो गया।

हज़रत आदम अलैहिस्सलाम जन्नत से क्या लाये?

हज़रत आदम अलैहिस्सलाम जन्नत से मुख़्तलिफ़ क़िस्म के बीज और तीन क़िस्म के फल और हजरे असवद (स्याह पत्थर जो ख़ाना काबा में लगा हुआ है) और वह असा (डंडा) जो बाद

में मूसा अलैहिस्सलाम के हाथ आया जिस की लंबाई दस गज़ थी अपने साथ लेकर आये थे और कुछ सोना चांदी और कुछ खेती बाड़ी वग़ैरह के औज़ार भी साथ लाये।

आदम अलैहिस्सलाम इस क़दर गिरया व ज़ारी में मश्गूल हुए कि उन तुख़्मों से बेख़बर हो गये शैतान ने मौक़ा पाकर उनको अपना हाथ लगाया जिस तुख़्म पर उसका हाथ लगा वह ज़हरीला हो गया और जो उसके हाथ से महफ़ूज़ रहा उसका नफ़ा बरक़रार रहा।

सैय्यदना आदम अलैहिस्सलाम के साथ तीन क़िस्म के जन्नती मेवे आये, एक वह जो पूरे खा लिये जाते हैं, दूसरे वह जिनका ऊपरी हिस्सा खा लिया जाता है और घुटली फेंक दी जाती है जैसे खजूर, आम वग़ैरह तीसरे वह जिन का ऊपरी छिलका फेंक दिया जाता है और अंदरूनी हिस्सा खा लिया जाता है।

सही रिवायत है कि उनके साथ लोहे के औज़ार भी थे एक सड़सी जिससे लोहा पकड़ते, दूसरा हथौड़ा, तीसरा ईरन, नीज़ हजरे असवद।

सही रिवायत में आता है कि हजरे असवद जब जन्नत से आया तो उसकी रौशनी कई मील तक जाती थी जहां उसकी किरणें पहुंचती थीं उसी हद तक हरम की हदें क़ायम हुईं।

हज़रत आदम अलैहिस्सलाम को दुनिया में आकर बहुत वहशत और घबराहट हुई। हज़रत जिब्राईल अलैहिस्सलाम बहुक्मे इलाही ज़मीन पर आये और बुलंद आवाज़ से अज़ान कही जब आदम अलैहिस्सलाम ने अज़ान में हुज़ूर का नाम सुना तब उनकी वह वहशत दूर हुई।

यह तमाम वाक़यात सही अहादीस से साबित हैं जिनको शाह अब्दुल अज़ीज़ मुहद्दिसे देहलवी ने तफ़सीर अज़ीज़ी में इसी मक़ाम पर जमा फ़रमाया है।

हज़रत आदम अलैहिस्सलाम का ज़रिया मआशः

इसी तफ़सीर अज़ीज़ी में है कि सबसे अव्वल कपड़ा बुनने का काम आदम अलैहिस्सलाम ने किया और बाद में आप खेती बाड़ी के काम में मश्गूल रहे, नूह अलैहिस्सलाम का ज़रिया मआश लकड़ी का काम था, इदरीस अलैहिस्सलाम दर्ज़ीगरी, हज़रत हूद अलैहिस्सलाम और हज़रत सालेह अलैहिस्सलाम तिजारत, हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम खेती बाड़ी किया करते थे, हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने कुछ मुद्दत बकरियां चराईं, हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम ज़िरह बनाते थे हज़रत सुलेमान अलैहिस्सलाम इतने बड़े बादशाह होकर भी दरख़्तों के पत्तों से पंखे और वग़ैरह ज़ंबीलें बनाकर गुज़र करते थे, हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम ने कोई पेशा इख़्तेयार न फ़रमाया बल्कि हमेशा सैर करते रहते थे और फ़रमाते थे कि जिसने मुझे सुबह को खाना दिया है वह शाम का खाना भी देगा।

फ़ायदा : तफ़सीर अज़ीज़ी में उसी मक़ाम पर हज़रत आदम अलैहिस्सलाम ने कुंए का पानी कभी नहीं पिया बल्कि आप हमेशा बारिश का पानी पिया करते थे सबसे पहले आदम अलैहिस्सलाम ने चांदी से रुपये और सोने से अशरफ़ियां बनाईं।

आदम अलैहिस्सलाम की तौबा :

फिर सीख लिये आदम ने अपने रब से कुछ कलिमे तो अल्लाह तआला का उन पर रुजू बरहमत हुआ बेशक वही बहुत तौबा कबूल करने वाला बेहद रहम फ़रमाने वाला है।

तलक़्क़ा का मायने है कि आगे बढ़कर मुलाक़ात करना यानी इस्तिक़बाल करना अब मायने यह होगा कि आदम अलैहिस्सलाम ने आने वाले बा–वक़ार मेहमानों और मोअज़्ज़म अहबाब की तरह मुहब्बत व इकराम के साथ अल्लाह तआला के कलिमात का इस्तिक़बाल किया। वह कलिमात क्या थे अल्लामा अबू हय्यान ने फ़रमाया:

यानी अल्लाह तआला ने वाज़ेह तौर पर वह कलिमात नहीं बताये बल्कि फ़तलक़्क़ा आ द मु मिर रब्बिही कलिमातिन फ़रमाकर हमें सिर्फ़ कलिमात मुबहेमा की ख़बर दी इसलिये उनकी तअय्युन में अहले इल्म से चंद अक़वाल मंक़ूल हैं।

१. इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु तअला अन्हुमा और बाज़ दीगर उलेमा ने कहा कि वह कलिमात यह हैं।

रब्बना ज़लमना अनफुसना व इल्लम तग़फ़िर लना व तर हमना ल न कुनन्ना मिनल ख़ासिरीन।।

२. अब्दुल्लाह बिन मसूद रज़ियल्लाहु अन्हु से मंक़ूल है कि वह कलिमात यह हैं।

सुब्हान क अल्लाहुम्मा व बिहम्दिक व तबा र कस्मुक व तआला जद्दुक व ला इलाहा ग़ैरु क।।

३. वहब और मुहम्मद बिन कअब से मंक़ूल है वह कलिमात यह हैं।

सुब्हा न क अल्लाहुम्मा बिहम्दि क अमिलतु सू अ व ज़लम्तु नफ़सी फ़ग़ फ़िरली इन न क ख़ैरुल ग़ाफ़िरीन।।

यह क़ौल अब्दुल्लाह बिन अब्बास की तरफ़ भी मंसूब है।

४. एक क़ौल यह है कि आदम अलैहिस्सलाम ने साके अर्श पर मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम लिखा हुआ देखा तो उन्होंने उसी इस्मे मुबारक को अपनी शफ़ाअत का ज़रिया बनाया यह आख़री क़ौल हज़रत अब्दुल अज़ीज़ मुहद्दिस देहलवी रहमतुल्लाह अलैहि ने भी बरिवायत तिबरानी बैहक़ी हाकिम हज़रत फ़ारूक़ आज़म रज़ियल्लाहु अन्हु तफ़सीर अज़ीज़ी में नक़्ल किया।

ऐ अल्लाह मैं तुझे हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का वास्ता देकर माफ़ी चाहता हूं इसी तफ़सीर अज़ीज़ी में हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु से भी बरिवायत इब्नुल मंज़र मंक़ूल है।

अल्लामा सय्यद महमूद आलूसी हनफ़ी बग़दादी ने फ़रमाया:

यानी एक क़ौल यह है कि आदम अलैहिस्सलाम ने साके अर्श पर "मुहम्मद रसूलुल्लाह लिखा देखा तो हज़रत को उन्होंने अपनी शफ़ाअत का ज़रिया बनाया यानी वह कलिमात "मुंहम्मद रसूलुल्लाह" हैं अल्लामा आलूसी फ़रमाते जब कुरआन मजीद में ईसा अलैहिस्सलाम को कलिमतुल्लाह कहा गया तो रूहे आज़म हबीबे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर "कलिमतुल्लाह" का बोला जाना तो ज़रूर ही साबित हो जायेगा, न ईसा हैं न मूसा, बल्कि आलमे इमकान में कोई नहीं और वाक़ई कोई नहीं लेकिन सब हुज़ूर अलैहिस्सलाम के हज़ूर अनवार के जलवे और आप ही के गुलज़ार हुस्न के महकते हुए फूल हैं।

Scanned by CamScanner

अगर आदम अलैहिस्सलाम नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के इस्म गिरामी को बतौर वसीला न पेश करते और इसी तरह नूह अलैहिस्सलाम आप के इस्मे गिरामी का वसीला न लाते तो न आदम की तौबा क़बूल होती और न नूह अलैहिस्सलाम ग़र्क होने से नजात हासिल करते।

आदम अलैहिस्सलाम की तौबा कब कबूल हुई?

हज़रत आदम अलैहिस्सलाम ने जब इन कलिमात के ज़रिये तौबा की, अल्लाह तआला ने उसी वक़्त आपकी तरफ़ रहमत की तवज्जोह करते हुए तौबा को क़बूल फ़रमा लिया।

बाज़ उलेमा के नज़दीक आदम अलैहिस्सलाम का अल्लाह तआला से कलिमात लेना और उनके ज़रिये तौबा करना और उनका क़बूल होना जन्नत से उतरने के बाद हुआ और तौबा भी कई सौ साल बाद कुबूल हुई दो सौ बल्कि तीन सौ साल आह व बुका गिरया व ज़ारी और नदामत के हाल में उन पर गुज़रे। शाह अब्दुल अज़ीज़ रहमतुल्लाह अलैहि ने तफ़सीर अज़ीज़ी में यही फ़रमाया है।

लेकिन हक़ यह है कि जन्नत से बाहर आने से पहले ही अल्लाह तआला ने आदम अलैहिस्सलाम को वह कलिमात अता फ़रमा दिये थे और उसी वक़्त उन्होंने तौबा की जो क़बूल हो गई और उसी वक़्त अल्लाह तआला ने उनकी ख़ता माफ़ फ़रमा दी अलबत्ता यह मुमकिन है कि माफ़ी के बावजूद आदम अलैहिस्सलाम अपनी लग़िज़श को याद करके नदामत के तौर पर सालहा साल तक गिरया व ज़ारी में मशग़ूल रहे हों जो ख़ौफ़ व ख़शियत का तक़ाज़ा और कमाल अबदियत की दलील है।

फ़ायदा : अल्लाह तआला ने फ़ताबा अलैहिमा नहीं फ़रमाया यानी अल्लाह तआला ने दोनों की तौबा को क़बूल कर लिया इसलिये कि औरतें मर्दों के ताबे हैं। मर्द के ज़िक्र से औरत का ज़िक्र खुद बखुद हो जाता है।

तंबीह : अल्लामा अहमद सईद काज़मी रहमतुल्लाह अलैहि ने रूहुल बयान के इस क़ौल को तरजीह दी है जिसमें ज़मीन पर आने से पहले आपकी तौबा क़बूल हो चुकी थी, ज़मीन पर रोना आजिज़ी के लिये था ताहम मुफ़्ती अहमद यार ख़ां रहमतुल्लाह अलैहि ने तफ़सीर नईमी सफ़ह २८६ पर ब्यान किया। यह क़ौल ज़ईफ़ है जब तौबा क़बूल हो चुकने के बाद ज़मीन पर तशरीफ़ लाये तो फिर बीवी से अलाहदगी कैसी? और परेशानियां कहां? यानी रब तआला किसी को माफ़ी देकर बिला वजह परेशानी में नहीं डालता।

हज़रत आदम अलैहिस्सलाम की तौबा किस दिन क़बूल हुई?

हज़रत आदम अलैहिस्सलाम की तौबा जुमा को क़बूल हुई। आप की पैदाईश और जन्नत से बाहर तशरीफ़ लाना भी जुमा के दिन ही था, और वह आशूरा यानी दस मुहर्रम का दिन था।

ख़्याल रहे कि आशूरा जुमा को बड़े अहम वाक़यात हुए, आदम अलैहिस्सलाम की तौबा, नूह अलैहिस्सलाम की कश्ती का ज़मीन पर आना, यूनुस अलैहिस्सलाम का मछली के पेट से बाहर आना, अय्यूब अलैहिस्सलाम की शिफ़ा, मूसा अलैहिस्सलाम का फ़िरऔन से नजात पाना और फ़िरऔन का ग़र्क होना, याक़ूब अलैहिस्सलाम का युसूफ़ अलैहिस्सलाम से मिलना, हज़रत इमाम हुसैन का करबला में शहीद होना, सब दसवीं मुहर्रम को वाक़ेअ हुए। इन बुज़ुर्गों ने ग्यारहवीं शब राहत की गुज़ारी।

अहले सुन्नत ग्यारहवीं रात को हज़रत गौसे पाक के ईसाले सवाब का एहतेमाम करते हैं वह दर हक़ीक़त उन तमाम बुजुर्गों को हासिल होने वाले इनामात पर इज़हारे ख़ुशी भी होता है।

हज़रत आदम और हज़रत हव्वा अलैहिमस्सलाम की मुलाक़ात

जब ज़मीन पर तशरीफ़ लाये तो हज़रत आदम अलैहिस्सलाम हिन्दुस्तान के इलाक़ा सरांदीप के पहाड़ पर उतरे और हज़रत हव्वा जद्दा में, तौबा कबूल होने के बाद दोनों की मुलाक़ात अरफ़ात के मक़ाम पर हुई दोनों ने एक दूसरे को पहचाना इसी लिये उस मैदान को अरफ़ात कहते हैं यानी पहचानने की जगह।

जब हज़रत आदम अलैहिस्सलाम जन्नत से आये थे तो उनसे अरबी ज़बान भी ले ली गई थी यानी भुला दी गई थी इतने रोज़ तक सुरयानी ज़बान में कलाम फ़रमाया। तौबा कुबूल होने के बाद अरबी ज़बान फिर अता हुई फिर हज़रत जिब्राईल अलैहिस्सलाम ने तमाम आलम के जानवरों को आवाज़ दी कि ऐ जानवरो हक़ तआला ने तुम पर अपना ख़लीफ़ा भेजा है इसकी इताअत और फ़रमाबर्दारी करो दरियाई जानवरों ने सर उठाकर इताअत ज़ाहिर की और ख़ुशकी के जानवर आपके आस पास जमा हो गये आदम अलैहिस्सलाम उन पर हाथ फेरने लगे जिस पर उनका हाथ पहुंच गया वह अहली और ख़ानगी बन गये जैसे घोड़ा, ऊंट, बकरी, कुत्ता, बिल्ली वग़ैरह और जिस पर आपका हाथ न पहुंचा वह जंगली व वहशी रहा जैसे हिरन वग़ैरह।

हज़रत आदम अलैहिस्सलाम की औलाद के हक़ में दुआः

इस वाक़िया के बाद आदम अलैहिस्सलाम ने अर्ज़ किया कि मौला मेरी औलाद बहुत कमज़ोर है और इबलीस का फ़रेब बहुत सख़्त, अगर तू उनकी इमदाद न करे तो वह इबलीस से कैसे बच सकेंगे, हुक्मे इलाही आया ऐ आदम तुम्हारे और अहकाम थे आपकी औलाद के लिये और अहकाम होंगे हम हर इंसान के साथ एक फ़रिश्ता रखेंगे तब आपने खुश होकर शुक्र किया।

आदम अलैहिस्सलाम की औलाद :

हज़रत हव्वा बीस या चालीस मर्तबा हज़रत आदम अलैहिस्सलाम से हामिला हुई हर हमल में दो दो बच्चे पैदा हुए एक मुज़क्कर एक मुअन्नस। एक हमल के बच्चों का दूसरे हमल के बच्चों का ऐसा हुक्म था जैसा कि मुख़्तलिफ़ मां–बाप के बच्चों का होता है यानी पहले हमल के बच्चे का दूसरे की बच्ची से निकाह होता इसी तरह दूसरे हमल के लड़के का पहले हमल की लड़की से निकाह होता।

तंबीह : हज़रत आदम अलैहिस्सलाम के दो बच्चे हर हमल से हुए सिवाए हज़रत शीस अलैहिस्सलाम के।

हज़रत हव्वा ने हज़रत शीस को सिर्फ़ अकेला ही पेश किया उनके साथ जुड़वां कोई बच्ची नहीं थी। यह सिर्फ़ नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की इज़्ज़त व तकरीम के लिये मालिकुल मुल्क ने एक बच्चे से ही हामला किया क्योंकि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का नूर आदम अलैहिस्सलाम से मुन्तक़िल होकर हज़रत शीस अलैहिस्सलाम के पास आ गया।

हज़रत आदम अलैहिस्सलाम ने उन्हें वसीयत की कि यह नूरे मुबारक, पाक औरत की तरफ़ मुन्तक़िल करना है। फिर हज़रत शीस अलैहिस्सलाम ने अपने बेटे को यही वसीयत की यह

Scanned by CamScanner

सिलसिला हज़रत अब्दुल मुत्तलिब तक चलता रहा कि हर शख़्स ने अपने बेटे को इस नूर के पाक बतन की तरफ़ मुन्तक़िल करने की वसीयत की।

हज़रत आदम अलैहिस्सलाम की वफ़ात के वक़्त आपकी औलाद और औलाद की औलाद वग़ैरह चालीस हज़ार से ज़्यादा हो गई थी। तफ़सीर सावी और जुमल वग़ैरह में एक लाख पहुंच जाने का ज़िक्र मिलता है।

हज़रत आदम अलैहिस्सलाम के दो बेटों का झगड़ा:

हज़रत आदम अलैहिस्सलाम की सुल्बी औलाद से क़ाबील और हाबील थे। क़ाबील बड़ा था हाबील छोटा था। क़ाबील खेती बाड़ी करता था और हाबील बकरियां चराता था। क़ाबील के साथ पैदा होने वाली लड़की का नाम अक़लीमा था जो बहुत ज़्यादा हसीन व जमील थी और हाबिल के साथ पैदा होने वाली लड़की लिबवा ख़ूबसूरती में कुछ कम थी हज़रत आदम अलैहिस्सलाम की शरीयत के क़ानून के मुताबिक़ क़ाबील के साथ पैदा होने वाली लड़की का निकाह हाबील से और हाबील के साथ पैदा होने वाली लड़की का निकाह क़ाबील से होना था, लेकिन क़ाबील ने ऐसा करने से इंकार कर दिया उसने कहा कि मेरे साथ पैदा होने वाली लड़की का निकाह ही मेरे साथ होगा।

हज़रत आदम अलैहिस्सलाम ने दोनों को न्याज़ का मश्वरा दिया :

जब क़ाबील ने ज़िद और हटधर्मी शुरू कर दी तो हज़रत आदम अलैहिस्सलाम ने कहा कि तुम दोनों अल्लाह की राह में कोई न कोई चीज़ पेश करो, जो सच्चा होगा उसकी न्याज़ व सदक़ा क़बूल हो जायेगा और जो झूटा होगा उसकी तरफ़ से पेश किया गया सदक़ा क़बूल नहीं होगा उस वक़्त क़बूलियत की यह अलामत थी कि जिसका सदक़ा क़बूल हो जाता उसे क़ुदरती तौर पर आने वाली आग खा जाती और जो क़बूल नहीं होता था उसे आग नहीं खाती थी।

क़ाबील ने एक अंबार गंदुम और हाबील ने एक बकरी या एक दुम्बा रब तआला की राह में पेश किया दोनों ने यह कह कर न्याज़ पेश की कि ऐ अल्लाह जो अक़लीमा का ज़्यादा हक़दार है उसकी क़ुरबानी क़बूल फ़रमा।

आसमानी आग ने हाबील के सदक़े को खाकर क़बूलियत बख़्श दी और क़ाबील के सदक़ा को आग ने न खाकर रद्द कर दिया। क़ाबील के दिल में हसद बुग़्ज़ एनाद भड़क उठा उसने हाबील को क़त्ल करने की धमकी दे दी। अल्लाह तआला ने इस वाक़िये को इस तरह ज़िक्र फ़रमाया:

और इन्हें पढ़कर सुनाओ आदम के बेटों की सच्ची ख़बर जब दोनों ने एक एक न्याज़ पेश की तो एक की क़बूल हुई, बोला क़सम है मैं तुझे क़त्ल कर दूंगा। हाबील ने कहा अल्लाह उसी से क़बूल करता है जिसे डर है बेशक अगर तू अपना हाथ मुझ पर बढ़ायेगा कि मुझे क़त्ल करे तो मैं अपना हाथ तुझ पर न बढ़ाऊंगा कि तुझे क़त्ल करूं। मैं अल्लाह से डरता हूं जो मालिक है सारे जहान का, मैं तो यह चाहता हूं कि मेरा और तेरा गुनाह दोनों तेरे ही पल्ले पड़ें तू दोज़ख़ी हो जाए और बे इंसाफ़ों की यही सज़ा है।

इस वाक़िये को ज़िक्र करने का यह मतलब था कि हसद की बुराई मालूम हो और नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से हसद करने वालों को सबक़ हासिल हो और क़यामत तक लोग

हसद को बुरा समझें।

हाबील हक़ पर थे उनके तक़्वा के पेशे नज़र उनका सदक़ा कबूल हो गया उन्होंने कहा मैं चाहता हूं मेरा और तुम्हारा गुनाह तुम्हारे ही पल्ले पड़े, इसका मक़सद यह था कि तुम ने अपने बाप की नाफ़रमानी की वह गुनाह भी तुम्हारे ज़िम्मे है और अगर मुझे क़त्ल करना चाहो तो कर लो, मेरे क़त्ल का गुनाह भी तुम्हारे ज़िम्मे ही होगा।

आख़िरकार क़ाबील ने हाबील को क़त्ल कर दियाः

तो उसके नफ़्स ने उसे भाई के क़त्ल का चाव दिलाया तो उसे क़त्ल कर दिया तो रह गया नुक़सान में।

आदम अलैहिस्सलाम मक्का गये हुए थे उसने उनके पीछे अपने भाई को क़त्ल कर दिया यह रुए ज़मीन पर पहला क़त्ल था इसलिये क़ाबील जानता नहीं था कि वह अपने भाई को कैसे क़त्ल करे तो शैतान ने उसके सामने एक परिन्दे का सर पत्थर पर रखकर दूसरे पत्थर से फोड़ दिया। क़ाबील को पता चल गया कि इस तरह क़त्ल करना है हाबील चूंकि बकरियां चराता थे एक दरख़्त के नीचे सोया हुआ था उसके सर पर पत्थर मारकर उन्हें क़त्ल कर दिया उस वक़्त हाबील की उम्र बीस साल थी।

क़त्ल के बाद काबील की दुनिया में ज़िल्लतः

अब्दुर्रहमान बिन फ़ज़ाला से मरवी है कि जब क़ाबील ने हाबील को क़त्ल कर दिया तो उस की अक़्ल ज़ायल हो गई, दिल में समझने की सलाहियत ख़त्म हो गई इसी तरह पागल ही रहा यहां तक कि मर गया। क़त्ल करने से पहले रंग उसका सफ़ेद था और क़त्ल के बाद उसका तमाम जिस्म काला हो गया, हज़रत आदम अलैहिस्सलाम ने मक्का मुकर्रमा की सर ज़मीन से वापस होने पर क़ाबील से पूछा तुम्हारा भाई कहां है? उसने कहा मैं कोई उसका ज़िम्मेदार तो नहीं था आपने फ़रमाया तूने उसे क़त्ल कर दिया है इसी लिये तेरा जिस्म स्याह हो चुका है।

क़ाबील का उख़रवी अज़ाब :

हज़रत इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु से मरवी है रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया जो शख़्स भी ज़ुल्मन क़त्ल होगा उसके क़त्ल का अज़ाब आदम अलैहिस्सलाम के बेटे पर भी होगा क्योंकि सब से पहले उसी ने क़त्ल की शुरूआत की। यानी जिस तरह क़त्ल करने वाले को क़त्ल का अज़ाब होगा उसी तरह क़त्ल की इब्तेदा करने वाले को भी अज़ाब होता रहेगा।

बेटे के क़त्ल पर हज़रत आदम अलैहिस्सलाम का ग़म :

हज़रत आदम अलैहिस्सलाम बेटे के क़त्ल पर इतने ज़्यादा ग़मज़दा हुए कि एक सौ साल आप मुस्कुराए नहीं। एक सौ साल के बाद आप को एक बेटे की बशारत दी गई यानी आप को कहा गयाः

"अल्लाह आपको ज़िन्दा रखे अल्लाह तआला आपको एक और बेटा अता फ़रमाने वाला है तो आप मुस्कुराए।"

अलबत्ता हज़रत अल्लामा मुहीउस सुन्ना रहमतुल्लाह अलैहि ने ज़िक्र फ़रमाया कि हज़रत आदम अलैहिस्सलाम को हाबील के क़त्ल होने के पचास साल बाद हज़रत शीस अलैहिस्सलाम

अता हुए और आदम अलैहिस्सलाम के वली अहद बने।

ख़्याल रहे तफ़सीर कशाफ़ में यह ज़िक्र है कि हज़रत आदम अलैहिस्सलाम ने अपने बेटे के क़त्ल होने के बाद बतौर मरसिया अशआर कहे लेकिन तफ़सीर कबीर में अल्लामा राज़ी रहमतुल्लाह अलैहि ने और रूहुल मआनी में अल्लामा आलूसी रहमतुल्लाह अलैहि ने उसे रद्द किया कि यह ग़लत और झूट है तमाम अंबियाए किराम ने अशआर नहीं कहे।

क़त्ल के बाद क़ाबील की परेशानी :

क़ाबील ने जब हाबील को क़त्ल कर दिया तो अब यह नहीं जानता था कि क्या करे? इसी तरह छोड़ देने पर उसे यह ख़तरा था कि दरिन्दे खा जायेंगे तो वह अपने भाई की लाश को बोरी में डालकर फिरता रहा यहां तक कि लाश बदबूदार हो गयी उसे छुपाने का कोई तरीक़ा मालूम नहीं हो रहा था कि मैं क्या करूं? बहुत ही परेशान था। ख़्याल रहे कुरआन पाक में इस मक़ाम पर लाश के लिये लफ़्ज़ "सवात" इस्तेमाल हुआ जिसका असली मायने नंगेज़ है यानी जिस्म का वह हिस्सा जो ज़ाहिर न किया जाये क्योंकि वह भी क़त्ल के बाद लाश छुपाये फिरता था इसलिये उसे सवात कहा गया है।

लाश छुपाने में कव्वे की मुआवनत :

इरशाद ख़ुदावंदी है:

तो अल्लाह ने एक कव्वा भेजा जो ज़मीन कुरेदने लगा कि उसे दिखाये क्योंकर अपने भाई की लाश छुपाये बोला, हाए ख़राबी मैं इस कव्वे जैसा भी न हो सका कि मैं अपने भाई की लाश छिपाता, तो पछताता रह गया।

अल्लाह तआला कितना करीम है कि क़ाबील मुजरिम होने के बावजूद जब उस परेशानी में फंसा हुआ था कि अपने भाई की लाश से क्या करे? दुनिया में पहली मौत थी क़ब्र खोदने दफ़न करने से वह बे ख़बर था तो अल्लाह तआला ने उसकी मुश्किल हल करने के लिये उसका मददगार कव्वे को बनाकर भेजा।

कव्वे ने कैसे मुआवनत की?

अल्लामा राज़ी रहमतुल्लाह अलैहि ने इस मक़ाम पर तीन वजह ब्यान की हैं अगरचे मशहूर पहली बात ही है।

१. अल्लाह तआला ने दो कव्वे भेजे वह दोनों लड़े एक ने दूसरे को क़त्ल कर दिया और अपनी चोंच और पंजों से ज़मीन को कुरेदा और मुर्दा कव्वे की लाश को उस गड्ढे में डालकर ऊपर मिट्टी डाल दी इससे क़ाबील को भी पता चल गया कि मुझे ऐसा ही करना है और बहुत पशेमान हुआ कि मैं उस कव्वे से भी ज़्यादा आजिज़ हो गया इतना काम भी न कर सका।

२. क़ाबील ने तंग आकर हाबील की लाश को इसी तरह फेंक दिया अल्लाह तआला ने कव्वे भेजे जिन्होंने मिट्टी खोद खोदकर उस लाश पर डाली और उसे छिपा दिया यह देखकर क़ाबील को बहुत अफ़सोस हुआ कि हाबील को अल्लाह ने कितनी इज़्ज़त बख़्शी है और मैं कितना ज़लील हो गया।

३. कव्वे की आम आदत यह है कि कोई खाने की चीज़ उसके पास हो तो उसे दूसरे वक़्त के लिये ज़मीन में दबा देता है। उसने जब किसी चीज़ को ज़मीन में छुपा दिया तो क़ाबील को

पता चल गया कि मुझे अपने भाई की लाश को ऐसे छिपाना है और साथ साथ कव्वे से कम इल्म रखने की वजह से बहुत पशेमान भी हुआ कि मुझ से तो कव्वा ही अच्छा है जिसे चीज़ों को छुपाना आता है।

तंबीह : क़ाबील को नेदामत अल्लाह तआला के ख़ौफ़ की वजह से नहीं थी और न ही वह तायब हो रहा था बल्कि उसे नेदामत इस पर हुई कि वह भाई की लाश को उठाये फिरता रहा और कव्वे से भी कम अक़्ल रहा उसे दफ़न न कर सका और इस वजह से नादिम हो रहा था कि वह भाई को क़त्ल करने के बावजूद अपने मक़ासिद में कामयाब नहीं हुआ था क्योंकि उससे मां–बाप बहन भाई सब नाराज़ हो गये थे।

और एक वजह यह भी थी कि जब उसने देखा कि एक कव्वे ने बड़ी मेहरबानी से दूसरे की लाश को दफ़न किया तो यह उस पर नादिम हुआ था कि मुझे तो अपने भाई पर इतना रहम भी नहीं आ सका जितना कव्वे को है वाज़ेह हुआ कि उसने कोई तौबा नहीं की, और नेदामत उसे सिर्फ़ अपनी हिमाक़त पर थी।

हज़रत आदम अलैहिस्सलाम की वफ़ात :

जब आदम अलैहिस्सलाम का आख़री वक़्त आया तो आप को जन्नती मेवे खाने की ख़्वाहिश हुई अपने फ़रज़ंदों से कहा कि काबा मोअज़्ज़मा जाओ और वहां दुआ करो कि अल्लाह तआला मेरी यह तमन्ना पूरी करे आदम अलैहिस्सलाम के फ़रज़ंद यह हुक्म पाकर वहां पहुंचे उन्हें हज़रत जिब्राईल और दूसरे फ़रिश्ते मिले जिन से उन्होंने आदम अलैहिस्सलाम की फ़रमाईश का ज़िक्र किया, फ़रिश्तों ने कहा हमारे साथ आओ हम जन्नत के मेवे अपने साथ लाये हैं।

चुनांचे यह सब आदम अलैहिस्सलाम के पास पहुंचे, हज़रत हव्वा उन फ़रिश्तों को देखकर डरने लगीं और चाहा कि आदम अलैहिस्सलाम के दामन में छुप जायें उन्होंने फ़रमाया कि हव्वा अब तुम मुझसे अलग रहो मेरे और रब के क़ासिदों के दर्मियान आड़ न बनो इस तरह फ़रिश्तों ने आदम अलैहिस्सलाम की रूह क़ब्ज़ कर ली।

हज़रत आदम अलैहिस्सलाम की तजहीज़ व तकफ़ीन फ़रिश्तों ने की:

फ़रिश्तों ने आदम अलैहिस्सलाम के बेटों को कहा जिस तरह हम तुम्हारे बाप का कफ़न व दफ़न करेंगे इसी तरह तुम फ़ौत होने वाले लोगों का कफ़न दफ़न करना।

जिब्राईल अलैहिस्सलाम जन्नत की मुरक्कब ख़ुशबू और जन्नती जोड़े का कफ़न और जन्नती बेरी के कुछ पत्ते अपने साथ लाये थे उनको ख़ुद गुस्ल दिया और कफ़न पहनाया और ख़ुशबू मिली और मलायका उनका जिस्म मुबारक काबा में लाये और उन पर सारे फ़रिश्तों ने नमाज़ जनाज़ा अदा की जिसमें हज़रत जिब्राईल अलैहिस्सलाम इमाम थे और सारे फ़रिश्ते मुक़्तदी। उस नमाज़ में चार तकबीरें कहीं जैसे कि आज होती हैं फिर मक्का मोअज़्ज़मा से तीन मील के फ़ासले पर मक़ाम मेना में ले गये जहां कि हाजी कुरबानी करते हैं और उसी जगह हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने हज़रत इस्माईल की कुरबानी की, यहां मस्जिद ख़ैफ़ के करीब बग़ली क़ब्र खोदकर उनको दफ़न करके उन की क़ब्र को ऊंट के कोहान की ढलवान बनाया।

हज़रत हव्वा की क़ब्र जद्दा में है बाज़ रिवायात के मुताबिक़ दोनों की क़बरें हरम में तवाफ़ की जगह में हैं।

हज़रत इदरीस अलैहिस्सलाम

हज़रत इदरीस अलैहिस्सलाम और हज़रत नूह अलैहिस्सलाम के दर्मियान एक हज़ार साल का फ़ासला है यह हज़रत नूह अलैहिस्सलाम के बाप के दादा हैं।

हज़रत इदरीस अलैहिस्सलाम का नस्ब :

अख़नूख़ बिन युरिद बिन महलाबील बिन अनूश बिन क़ैतान बिन शीस बिन आदम अलैहिस्सलाम।

हज़रत नूह अलैहिस्सलाम का नस्ब :

नूह बिन लमक बिन मतू शलख़ बिन अख़नूख़ (इदरीस अलैहिस्सलाम)

हज़रत इदरीस अलैहिस्सलाम की ईजादात :

सब से पहले सितारों में नज़र करना और हिसाब करना आपसे ही साबित है लेकिन यह ख़्याल रहे कि आपका सितारों में नज़र करना अल्लाह की मर्ज़ी के मुताबिक़ था आप के हिसाब में तख़मीने की कोई बात नहीं होती थी बल्कि आप के दिल में जो इलक़ा करता आप वही ब्यान करते यानी सितारों का हिसाब आप को बतौर मोजिज़ा अता किया गया था। आज के दौर में सितारों का हिसाब और आने वाले वाक़यात की ख़बर देना हराम है उन पर यक़ीनी ऐतबार करना कुफ़्र है। क़लम के ज़रिये लिखने को सब से पहले आपने रिवाज दिया, सबसे पहले कपड़े आप ने ही पहने इससे पहले लोग चमड़े का लिबास इस्तेमाल करते थे। सबसे पहले चीज़ों के वज़न करने और कपड़े वग़ैरह को नापने को आपने ही रिवाज दिया। सबसे पहले अस्लहा की ईजाद भी आपने ही फ़रमाई। हज़रत आदम अलैहिस्सलाम के बाद पहले रसूल आप ही हैं और आप पर तीस सहीफ़े नाज़िल हुए।

इदरीस अलैहिस्सलाम का आसमानों पर उठाया जाना :

अल्लाह तआला ने इरशाद फ़रमाया :

और किताब में इदरीस को याद करो वह सिद्दीक़ था ग़ैब की खबरें देता और हम ने उसे बुलंद मक़ाम की तरफ़ उठाया।

इस आयत करीमा में बुलंद मक़ाम की तरफ़ उठाने का एक मतलब यह है:

आपको नबुव्वत के मनसब से मुशर्रफ़ फ़रमाकर और अल्लाह ताअला ने अपना ख़ास क़ुर्ब अता फ़रमा कर आप को रिफ़अत व बुलंदी अता फ़रमाई।

दूसरा मायने :

दूसरा मायने बुलंदी का यह है कि आप को बुलंद मकान की तरफ़ उठाया गया यह मायने लेना ज़्यादा मुनासिब है क्योंकि अल्लाह तआला ने व र फ़अ्ना म कान अलय्या ज़िक्र फ़रमाया जहां मकान का ज़िक्र हो इस से मुराद मकान की बुलंदी ही होती है दर्जात की बुलंदी मुराद नहीं होती।

बुलंदी मकान की तफ़सील यह है कि आपको आसमान पर उठा लिया और यही सही तर है। बुख़ारी व मुस्लिम की हदीस में है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मेराज की रात हज़रत इदरीस अलैहिस्सलाम को आसामने चिहारुम पर देखा।

हज़रत कअब अहबार वग़ैरा से मरवी है कि हज़रत इदरीस अलैहिस्सलाम ने मल्कुल मौत यानी हज़रत इज़्राईल अलैहिस्सलाम से फ़रमाया कि मैं मौत का मज़ा चखना चाहता हूं कैसा होता है? तुम मेरी रूह कब्ज़ कर के दिखाओ उन्होंने आप के हुक्म की तामील की, रूह कब्ज़ करके फिर उसी वक़्त लौटा दी आप ज़िन्दा हो गये।

फिर आपने फ़रमाया मुझे जहन्नम दिखा दो ताकि ख़ौफ़े इलाही ज़्यादा हो आप के इरशाद की तामील करते हुए आप को जहन्नम के दरवाज़े पर ले जाया गया। आपने मालिक नामी फ़रिश्ता............ जो जहन्नम का दरोग़ा है............से फ़रमाया खोलो मैं इससे गुज़रना चाहता हूं चुनांचे ऐसा ही किया गया और आप उस पर से गुज़रे। फिर आप ने मल्कुल मौत से फ़रमाया मुझे जन्नत दिखाओ वह आपके हुक्म के मुताबिक़ आपको जन्नत के पास ले गये आप ने जन्नत के दरवाज़े खोलने को इरशाद फ़रमाया तो आपके लिये जन्नत के दरवाज़े खोल दिये गये आप जन्नत में तशरीफ़ ले गये।

मल्कुल मौत ने कुछ देर इंतज़ार करने के बाद फ़रमाया, कि अब आप चलें ज़मीन में अपने मक़ाम पर तशरीफ़ ले चलें आप ने फ़रमाया कि मैं तो यहां से कहीं नहीं जाऊंगा क्योंकि अल्लाह तआला ने फ़रमायाः

कुल्लो नफ़सिन ज़ाइक़तुल मौत,

हर नफ़्स को मौत का मज़ा चखना है मैं मौत का ज़ायक़ा चख चुका हूं फिर अल्लाह तआला ने जन्नत में दाख़िल होने की यह शर्त लगाई है कि हर शख़्स को जहन्नम पर गुज़रना है मैं जहन्नम से भी गुज़र कर आ चुका हूं। अब मैं जन्नत में दाख़िल हो चुका हूं जो लोग जन्नत में दाख़िल हो जाते हैं उन्हें वहां से निकाला नहीं जा सकता क्योंकि अल्लाह तआला का अपना इरशाद गिरामी है जन्नत वालों को जन्नत से नहीं निकाला जायेगा। अल्लाह तआला के अपने इरशादात के मुताबिक़ मुझे यहीं रहना है यहां से मुझे नहीं निकाला जा सकता।

हज़रत इदरीस अलैहिस्सलाम के इस कलाम के बाद अल्लाह तआला ने मल्कुल मौत को फ़रमायाः ऐ इज़्राईल मेरे बंदे इदरीस ने सब काम मेरी मर्ज़ी से किये इन्हें यहां ही रहने दो। आप अलैहिस्सलाम अभी तक आसमानों में ज़िन्दा हैं।

तंबीह : हज़रत इदरीस अलैहिस्सलाम के दलायल में कुरआन पाक के अल्फ़ाज़ मुबारका ज़िक्र हैं जो उस वक़्त नाज़िल अगरचे नहीं हुआ था लेकिन अल्लाह का कलाम क़दीम है लौहे महफ़ूज़ पर उस वक़्त भी तहरीर था, नबी चूंकि ग़ैब का इल्म अल्लाह तआला की अता से रखते हैं इसलिये हज़रत इदरीस अलैहिस्सलाम की नज़र लौहे महफ़ूज़ पर थी लिहाज़ा कुरआन पाक से आप का इस्तिदलाल दुरुस्त है।

हज़रत नूह अलैहिस्सलाम

हज़रत नूह अलैहिस्सलाम के बाप का नाम लमक बिन मतू शल्ख़ बिन अख़नूख़ (यह इदरीस अलैहिस्सलाम का नाम)

आप अलैहिस्सलाम को चालीस साल के बाद ऐलान नबुव्वत का हुक्म दिया गया और साढ़े नौ सौ साल आप अपनी कौम में ठहरे और अपनी कौम को तबलीग़ फ़रमाई। अल्लाह तआला ने फ़रमाया:

तो वह उनमें पचास साल कम हज़ार बरस रहे।

तूफ़ान के बाद आप दो सौ पचास साल ज़िन्दा रहे आपकी कुल उम्र एक हज़ार दो सौ चालीस साल है अगरचे इसमें और क़ौल भी हैं लेकिन ज़्यादा तौर पर इसी क़ौल को सही कहा गया है।

नूह अलैहिस्सलाम ने कौम को क्या तबलीग़ की?

हज़रत नूह अलैहिस्सलाम ने साढ़े नौ सौ साल अपनी कौम को अल्लाह की वहदानियत, गुनाहों से बाज़ रहने की तबलीग़ फ़रमाई और साथ साथ अल्लाह तआला के अज़ाब से डराते रहे।

आपने फ़रमाया : ऐ मेरी कौम! मैं तुम्हारे लिये ज़ाहिर तौर पर डर सुनाने वाला हूं कि अल्लाह की बंदगी करो और उससे डरो और मेरा हुक्म मानो वह तुम्हारे कुछ गुनाह बख़्श देगा और एक मुक़र्रर मियाद तक तुम्हें मोहलत देगा, बेशक अल्लाह का वादा जब आता है हटाया नहीं जाता, काश तुम जानते।

आप ने अपनी कौम को और यह फ़रमाया:

अगर तुमने अल्लाह के बग़ैर किसी और की इबादत की तो मैं क़यामत के दिन के बहुत बड़े अज़ाब का तुम्हें ख़ौफ़ दिलाता हूं।

आपने तबलीग़ फ़रमाते हुए मज़ीद इरशाद फ़रमाया:

अगर तुमने अल्लाह के बग़ैर और किसी की इबादत की तो मैं तुम्हें दुनिया और आख़रत के दर्दनाक अज़ाब से डराता हूं।

इस आयत करीमा में अपनी क़ौम को उख़रवी अज़ाब के साथ साथ दुनिया में तबाही व बर्बादी से भी वाज़ेह तौर पर डरा दिया गया कि शायद कौम पर कुछ असर हो जाये।

और आपने फ़रमाया:

और मैं इस पर तुम से कुछ उजरत नहीं मांगता मेरा अज्र तो उस पर है जो सारे जहानों का रब है।

यानी मैं जो तुम्हें अल्लाह तआला की वहदानियत और सिर्फ़ उसी की इबादत करने और सिर्फ़ उसी से डरने और उसके बग़ैर और किसी की इबादत करने पर दीन व दुनिया की तबाही से डराने पर कोई उजरत माल व दौलत का मुतालबा तो नहीं कर रहा अगर तुम ने इस राह का तअय्युन कर लिया जो मैं बता रहा हूं तो तुम्हारी कामयाबी है वरना तुम ज़लील हो जाओगे

तबाह व बर्बाद हो जाओगे दीन व दुनिया में खसारे में पड़ जाओगे। अल्लाह तआला के अहकाम तुम तक पहुंचाने में मुझे तुम से कोई ग़र्ज़ नहीं किसी मनसब माल व दौलत के हुसूल का कोई लालच नहीं सिर्फ अल्लाह के हुक्म से अल्लाह की रज़ामंदी के लिये तुम्हें तबलीग़ कर रहा हूं। मेरे अल्लाह तआला को ही मुझे अज्र व सवाब अता करना है उसकी बे हिसाब रहमत के होते हुए मुझे तुमसे कुछ ग़र्ज़ नहीं।

नूह अलैहिस्सलाम की तबलीग़ का कौम पर क्या असर हुआ?

आप अलैहिस्सलाम ने साढ़े नौ सौ साल दिन रात तबलीग़ की लेकिन कौम करीब आने के बजाए दूर होती चली गई आपकी तक़रीर को न सुनने की ग़र्ज़ से अपने कानों में उंगलियां ठूंस लेते। (मआज़ल्लाह) आप से नफ़रत करते हुए अपने चेहरों को ढांप लेते। अल्लाह तआला ने फ़रमाया :

अर्ज़ की ऐ मेरे रब मैंने अपनी कौम को रात दिन बुलाया तो मेरे बुलाने से उनका भागना बढ़ा ही है और मैंने जितनी बार उन्हें बुलाया कि तू उनको बख़्शे उन्होंने अपने कानों में उंगलियां दे दीं और अपने कपड़े ओढ़ लिये और हट धर्मी की और बड़ा गुरूर किया।

यानी नूह अलैहिस्सलाम ने अल्लाह तआला के हुज़ूर अर्ज़ किया ऐ अल्लाह! मैंने तेरे अहकाम पहुंचाने में कोई कोताही सुस्ती नहीं की, लेकिन मेरी कौम मानने और करीब आने के बजाए दूर होती चली गई।

जैसे जैसे आप तबलीग़ फ़रमाते रहे कौम के दूर होने में कमी आने के बजाए ज़्यादती होती रही अल्लाह के नबी की कौम पर शफ़कत का यह आलम है कि आप उनको उस राह पर चलाना चाहते जिस पर चलने से उनको नजात हासिल हो। अल्लाह उनकी मग़िफ़रत करे अल्लाह उनसे राज़ी हो जाये और वह अल्लाह के करीब हो जायें। लेकिन कौम की बद बख़्ती का यह आलम है कि आप से इतनी ज़्यादा नफ़रत करती है कि आप की बात सुनने के लिये तैयार नहीं और आप को देखना उन्हें गवारा नहीं, वह कानों में इसलिये उंगलियां ठूंस रखते ताकि आप का कलाम और आपके पेश कर्दा दलायल को न सुन सकें अपने चेहरों को ढांप कर रखते कि मआज़ल्लाह हमें नूह (अलैहिस्सलाम) की शक्ल भी नज़र न आये। अल्लाह का जिन पर फ़ज़्ल हो वह अल्लाह वालों की बातें सुन कर ईमान लाते हैं गुनाहों से बाज़ रहते हैं नेकी व तक़वा इख़्तेयार करते जो शैतान की गिरफ़्त में होते हैं वह हिदायत देने वालों को मलायत, फ़िरस्ताइयत, कदामत पसंद के नाम देकर दीन के बाग़ी हो जाते हैं।

नूह अलैहिस्सलाम ने तबलीग़ का हर तरीक़ा आज़माया :

आप अलैहिस्सलाम ने हर वक़्त तबलीग़ की, यानी दिन रात तबलीग़ की फिर आपने हर शख़्स को आहिस्ता आहिस्ता नरम लहजा में समझाया कि अल्लाह की इबादत करो, रब से डरो लेकिन कौम ने कानों में उंगलियां ठूंस कर सुनने से इंकार किया अपने चेहरों पर कपड़ा डाल कर आप को देखने से बेज़ारी ज़ाहिर की अपने कुफ़्रिया एतिकादात पर हटधर्मी से कायम रहे तकब्बुर की वजह से अहकामे बारी तआला से इंकार किया।

फिर आप ने ज़ाहिरन आम मजालिस में उनको ख़िताबात किये और राहे हक़ का सबक़ दिया

Scanned by CamScanner

लेकिन उन पर कुछ असर न हुआ फिर आप ने एलानिया तौर पर और आहिस्ता आहिस्ता दोनों तरह से तबलीग़ की, लेकिन यह तरीक़ा भी क़ौम को राहे रास्त पर न ला सका। इसी मज़मून को अल्लाह तआला ने यूं पेश फ़रमाया:

नूह अलैहिस्सलाम ने कहा फिर मैंने उन्हें ऐलानिया बुलाया फिर मैंने उन से बा ऐलान भी कहा और आहिस्ता खुफ़िया भी कहा।

क़ौम के कितने लोग ईमान लाए?

इतना अर्सा तबलीग़ करने के बावजूद ईमान लाने वालों का मुख़्तसर गिरोह नज़र आता है तीन आपके बेटे साम, हाम, याफ़स और तीन उनकी बीवियां और एक नूह अलैहिस्सलाम की ज़ौजा और सत्तर मर्द औरतें। यही ईमानदार लोग कश्ती पर भी सवार थे यानी बमअ नूह अलैहिस्सलाम के कुल अठत्तर आदमी कश्ती में सवार थे जिन में मर्द और औरतें बराबर बराबर तादाद में थे।

नूह अलैहिस्सलाम की क़ौम के ईमान न लाने की वजह :

तो आप की क़ौम के सरदार जो काफ़िर हुए थे बोले हम तो तुम्हें अपने ही जैसा आदमी देखते हैं।

यानी एक वजह क़ौम के ईमान न लाने की यह थी कि नूह अलैहिस्सलाम को अपने जैसा बशर समझने लगे कि हमारे ही जैसा बशर कभी नबी नहीं बन सकता वह इससे बे ख़बर थे कि नबी को दो हालतें हासिल होती है। एक बशरी और दूसरी नूरानी। वह कहने लगे नबी तो फ़रिश्ता होना चाहिये।

तो आपकी क़ौम के जिन सरदारों ने कुफ़्र किया बोले, यह तो नहीं मगर तुम जैसा आदमी, चाहता है कि तुम्हारा बड़ा बने और अल्लाह चाहता तो फ़रिश्ते उतारता। हम ने तो यह अगले बाप दादाओं में न सुना।

यानी उन्होंने यह कहा है कि हम नूह अलैहिस्सलाम पर क्यों ईमान लायें यह तो हमारे जैसा है यह नबुव्वत का दावा करके हम से बड़ा बनना चाहता है हमने तो अपने किसी बाप दादा से यह नहीं सुना कि बशर भी नबी होता है अगर रब को नबी बनाना ही होता तो किसी फ़रिश्ते को नबी बनाकर भेज देता।

२. दूसरी वजह क़ौम के ईमान न लाने की यह थी कि हम आला लोग और घटिया लोग एक ही मज़हब पर नहीं हो सकते, क़ौम ने कहा :

और हम नहीं देखते कि तुम्हारी पैरवी किसी ने की हो मगर हमारे कमीनों ने सरसरी नज़र से।

यानी क़ौम के सरदार कहने लगे कि तुम पर ईमान ग़रीब, घटिया शान वाले लाये हैं और उन्होंने भी बग़ैर सोच व समझ के सरसरी नज़र से ईमान क़बूल किया है वह भी सोचते तो ईमान न लाते, या यह कि उनमें सोचने की ताक़त ही नहीं थी। ऐसे घटिया लोगों के साथ हम भी ईमान लाकर उन जैसे हो जायें यह कैसे हो सकता है? गोया तकब्बुर की वजह से वह ईमान न लाये।

बोले : क्या हम तुम पर ईमान ले आयें और तुम्हारे साथ (ईमान लाने वाले) कमीने लोग हैं?

३. तीसरी वजह उन के ईमान न लाने की यह थी कि तुम और तुम्हारे साथ ईमान लाने वाले हम पर कोई ज़्यादा फज़ीलत तो नहीं रखते। यानी नबी की शान को समझने से कासिर रहे। नबी की अज़मत को न समझ सके और यह बात उन्हें न समझ में आई कि रब तआला के नज़दीक किसी के माल व दौलत की ज़्यादती अफ़ज़ल होने का सबब नहीं, बल्कि ईमान और तक़वा अफ़ज़लियत का सबब है। यही रब तआला की कुर्बत का सबब है। उनके ईमान न लाने की इस वजह का रब तआला ने ज़िक्र फरमाया:

और हम तुम में अपने ऊपर कोई बड़ाई नहीं पाते।

हज़रत नूह अलैहिस्सलाम का जवाब :

क्या तुम ताज्जुब करते हो इस पर कि कोई तुम्हारे पास नसीहत तुम्हारे रब की तरफ़ से एक आदमी के ज़रिये जो तुम से है ताकि वह डराए तुम्हें (ग़ज्बे इलाही से) और ताकि तुम परहेज़गार बन जाओ और ताकि तुम पर रहम किया जाये।

यानी आपने उनके शुबह का इज़ाला फ़रमाया वह यह नहीं समझ सकते थे कि कोई इंसान भी नबुव्वत व रिसालत के मर्तबा पर फ़ायज़ हो सकता है और ज़ाते रब्बानी से बराहे रास्त फ़ैज़ हासिल करके लोगों तक पहुंचा सकता है उनका ख़्याल था कि यह काम कोई फ़रिश्ता ही कर सकता है इसलिये फ़रमाया कि तुम्हारी हैरत व परेशानी बे महल है अल्लाह तआला अगर अपने किसी कामिल और बरगुज़ीदा बंदे को नेमते नबुव्वत से सरफ़राज़ करना चाहे तो इसमें कोई इस्तेहाला नहीं।

हज़रत नूह अलैहिस्सलाम ने उनके ईमान से इंकार की इस वजह का दो टूक अलफ़ाज़ में जवाब दिया।

और मैं उन को निकालने वाला नहीं जो ईमान ले आये हैं बेशक वह अपने रब से मुलाक़ात करने वाले हैं अलबत्ता मैं तुम्हें देखता हूं कि तुम ऐसी कौम हो जो (हक़ीक़त से) नावाक़िफ़ है।

यानी उन्होंने नूह अलैहिस्सलाम से कहा कि हर वक़्त आप के इर्द गिर्द ख़स्ता हाल लोग हल्क़ा बांधे बैठे होते हैं हमारा तो जी नहीं चाहता कि ऐसी जगह जायें जहां इस क़िस्म के गंदे ग़लीज़ और कमीने लोगों का जमघटा हो आप उनको अपने हां से निकल जाने का हुक्म दें तब हम आप के पास आयेंगे। इस क़िस्म का मुतालबा आपको याद होगा कुफ़्फ़ार ने हुज़ूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम से भी किया था। हज़रत नूह अलैहिस्सलाम ने साफ़ जवाब दिया यह नामुमकिन है कि मैं उन हक़ परस्तों को तुम्हारी ख़ातिर अपने हां से निकल जाने का हुक्म दूं। तुम अपनी जगह बड़े लोग हो लेकिन मेरी नज़र में जो क़दर मंज़िलत शमा नूर के उन दिल सोख़्ता परवानों की है वह गिद्धों की नहीं हो सकती जो दुनिया की मुतअफ़्फ़न लाश पर टूट पड़ती है। यहां क़दर व मंज़िलत का मैयार अख़्लास व तक़्वा है दौलत व सरवत नहीं। हज़रत नूह अलैहिस्सलाम ने उन्हें यह भी कहा कि तुम्हें तो अपनी अक़्ल व दानिश पर बड़ा नाज़ होगा लेकिन मेरे नज़दीक तो तुम अंजान और नावाक़िफ़ लोग हो जिन्हें अब तक यह भी मालूम नहीं कि शर्फ़े इंसानियत का राज़ कसरते माल में मुज़मिर नहीं बल्कि दिल की पाकी, किरदार की बुलंदी और अख़लाक़ की पुख़्तगी में है।

Scanned by CamScanner

नूह अलैहिस्सलाम की क़ौम पर इज्तेमाई अज़ाब :

नूह अलैहिस्सलाम ने अपनी क़ौम को बार बार तब्लीग़ की लेकिन क़ौम से सिवाए तक्लीफ़ के कुछ हासिल न हुआ उन्होंने जब अल्लाह तआला के अहकाम मानने से इंकार कर दिये तो इज्तेमाई तौर पर अल्लाह तआला ने उन्हें झिंझोड़ देने के लिये इस तरह गिरफ़्त में लिया कि उन पर बारिशें बरसनी ख़त्म हो गई और उनकी औरतें बांझ हो गई उनकी औलाद पैदा होनी ख़त्म हो गई।

अल्लाह के नबी की शफ़क़त :

क़ौम बार बार इंकार कर रही थी लेकिन नूह अलैहिस्सलाम सब्र व तहम्मुल से उन्हें जहन्नम की आग से निकालने और दुनियावी मुश्किलात से निकालने की तदबीर फ़रमाते हुए उन्हें वह तरीक़े बता रहे थे जिन से वह अपने आप को मसायब व आलाम से निकाल सकें। नूह अलैहिस्सलाम ने क़ौम को मुश्किलात से निकलने का जो तरीक़ा बताया उसका ज़िक्र अल्लाह तआला के हुज़ूर करते हैं।

तो मैं ने कहा अपने रब से माफ़ी मांगो वह बड़ा माफ़ फ़रमाने वाला है तुम पर सराटे का (मूसलाधार) मीना भेजेगा और माल और बेटों से तुम्हारी मदद करेगा और तुम्हारे लिये बाग़ बना देगा और तुम्हारे लिय नहरें बनायेगा तुम्हें क्या हुआ अल्लाह से इज़्ज़त हासिल करने की उम्मीद नहीं करते?

यानी आपने अपनी क़ौम को बताया कि तुम्हारी मुश्किलात का हल सिर्फ़ अल्लाह तआला पर ईमान लाने उसकी याद करने उससे डरने और उससे माफ़ी तलब करने में है। लेकिन क़ौम अपनी हटधर्मी पर उसी तरह क़ायम थी तकब्बुर इतना हद से बढ़ चुका था कि वह एक दूसरे को यही कह रहे थे।

और बोले हरगिज़ न छोड़ना अपने ख़ुदाओं को और हरगिज़ न छोड़ना और सुवाअ और यग़ूस और यऊक़ और नसर को (यह सब उनके बुतों के नाम हैं) और बेशक उन्होंने बहुतों को बहकाया।

फ़ायदा : हज़रत रबीअ बिन सबीह से मरवी है कि एक शख़्स हज़रत हसन के पास आये उन्होंने क़हत साली की शिकायत की, आपने फ़रमाया अल्लाह से इस्तिग़फ़ार करो। एक और शख़्स ने आप से अपनी ग़ुरबत का ज़िक्र किया आपने उसे भी फ़रमाया कि तुम अपने रब से इस्तिग़फ़ार करो। एक और शख़्स ने अर्ज़ किया आप अपने रब से मेरे लिये दुआ करो कि मुझे अल्लाह तआला बेटा दे आप ने उसे भी फ़रमाया अपने अल्लाह तआला से इस्तिग़फ़ार करो। एक और शख़्स ने बाग़ात के ख़ुश्क होने, फल कम देने, ज़मीन की पैदावार कम होने का ज़िक्र किया और दुआ की दरख़्वास्त की आपने उसे भी फ़रमाया कि तुम अल्लाह तआला से इस्तिग़फ़ार करो।

हाज़िरीन ने अर्ज़ किया कि शिकायात लोगों की मुख़्तलिफ़ थीं लेकिन आप ने सब को अमल एक ही बताया तो आपने जवाब दिया कि हज़रत नूह अलैहिस्सलाम ने अपनी क़ौम को सब मुश्किलात के हल के लिये इस्तिग़फ़ार का ही हुक्म दिया था यानी यह अमल क़ुरआन पाक से साबित है।

कौम ने नूह अलैहिस्सलाम को क्या अलकाब दिये?

नूह अलैहिस्सलाम अल्लाह तआला के वह नबी जिन्होंने दिन रात कौम को दुनियावी और उखरवी अज़ाब से बचाने के लिये और उन्हें राहे रास्त पर लाने के लिये एक कर रखे थे लेकिन कौम ने आप को गुमराह झूटा मजनून (दीवाना) वग़ैरह अलकाब दे रखे थे।

सरदार बोले कि हम तुम्हें खुली गुमराही में देखते हैं।

हज़रत नूह अलैहिस्सलाम ने कौम को जवाब देते हुए फ़रमायाः

ऐ मेरी कौम मुझ में गुमराही कुछ नहीं मैं तो रब तआला का रसूल हूं तुम्हें अपने रब के पैग़ामात पहुंचाता हूं और तुम्हारा भला चाहता हूं और मैं अल्लाह की तरफ़ से वह इल्म रखता हूं जो तुम नहीं रखते।

बल्कि हम तुम्हें झूटा ख़्याल करते हैं।

यानी तुम और तुम्हारे साथ ईमान लाने वाले सब झूटे हो क्योंकि तुम सब एक ही दावा रखते हो या यह कि तुम अपने दावए नबुव्वत में झूटे हो और वह तुम्हारी तस्दीक़ करने में झूटे हैं।

वह तो नहीं मगर एक दीवाना मर्द, तो कुछ ज़माने तक इसका इंतज़ार किये रहो।

यानी इंतज़ार करो हो सकता है कि अपनी दीवानगी से कुछ इफ़ाक़ा हो जाये और अपना दावए नबुव्वत छोड़ दे या उस पर मौत आ जाये तो हमारी जान ही उससे छूट जाये। कुछ संजीदा लोग यह भी कहते थे कि इंतज़ार करो अगरचे सच्चा नबी है तो अल्लाह उसकी इमदाद करेगा और अगर झूटा है तो अल्लाह उसे रुसवा करेगा और हमारी जान उससे छूट जायेगी। लेकिन ऐसा सोचने वाले ईमान न ला सके जब अल्लाह तआला की इमदाद नूह अलैहिस्सलाम के लिये आ गई तो यह भी ग़र्क़ हो गये।

उनसे पहले नूह अलैहिस्सलाम की कौम ने झुटलाया तो हमारे बंदे को झूटा कहा और बोले वह मजनून है और उसे झिड़का गया।

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को तसल्ली देते हुए कहा, कि इन कुरैश से पहले नूह अलैहिस्सलाम की कौम ने भी तकज़ीब की आप अलैहिस्सलाम को झूटा कहा और आप को मजनून कहा, और धमकियां दीं कि अगर तुम अपने दावए नबुव्वत से बाज़ नहीं आये तो हम तुम्हें गालियां देंगे और तुम्हें संगसार कर देंगे।

नूह अलैहिस्सलाम को कौम की धमकियां और सख़्तियां :

बोले ऐ नूह अगर तुम बाज़ न आये तो ज़रूर संगसार किये जाओगे। तफ़सीर जलालैन में मर्जूमीन के दो मायने बयान किये गये हैं एक यह कि तुम्हें गालियां दी जायेंगी और दूसरा यह कि तुम्हें संगसार किया जायेगा।

इब्न असाकर ने हज़रत इब्न अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत की कि हज़रत नूह अलैहिस्सलाम की कौम ने आप को मार मार कर शदीद ज़ख़्मी कर दिया आपको ऊनी कपड़े में लपेट कर आपके घर फेंक दिया और यह ख़्याल किया कि आप अलैहिस्सलाम फौत हो चुके हैं लेकिन आप उसी हालत में निकल कर फिर उन्हें दावते हक़ देने लगे।

एक दफ़ा एक बूढ़ा शख़्स जो लाठी के सहारे चल रहा था उसने अपने बच्चे को उठाया हुआ

था हज़रत नूह अलैहिस्सलाम को देखकर अपने बेटे को कहने लगा कि ऐ मेरे बेटे देखना इस बूढ़े शख़्स के जाल में न फ़ंसना यह तुम्हें कहीं धोके में न डाले। बाप की बात सुनकर बेटे ने कहा ऐ मेरे अब्बा मुझे उतार दो और अपना डंडा मुझे दे दो बाप ने बेटे को उतार कर डंडा उसके हाथ में थमा दिया उस छोटे से लड़के ने नूह अलैहिस्सलाम के करीब आकर आपको डंडा दे मारा जो आपके सर पर लगा आप ज़ख़्मी हो गये ख़ून जारी हो गया।

यह माजरा देखकर नूह अलैहिस्सलाम ने रब के हुज़ूर इल्तेजा की ऐ अल्लाह तेरे बंदे जो मेरे साथ सलूक कर रहे हैं इसे तू देख रहा है ऐ अल्लाह अगर तू अपने बंदों को ज़िन्दा रखना ही चाहता है तो इन्हें हिदायत दे या अपना कोई फ़ैसला करने तक मुझे सब्र दे तू बेहतर फ़ैसला फ़रमाने वाला है। रब तआला ने फ़रमाया:

और नूह को वही (कुरआन) हुई कि तुम्हारी कौम से मुसलमान न होंगे मगर जितने ईमान ला चुके, तू ग़म न खा उस पर जो वह करते हैं।

हज़रत नूह अलैहिस्सलाम की दुआ :

नूह अलैहिस्सलाम ने अर्ज़ की ऐ मेरे रब मेरी इमदाद फ़रमा, उस पर कि उन्होंने मेरी तकज़ीब की।

इस दुआ में भी इशारा मिलता है कि आपने अपनी कौम को तबाह व बर्बाद करने की दरख़्वास्त रब के हुज़ूर पेश कर दी।

अर्ज़ की ऐ मेरे रब मेरी कौम ने मुझे झुटलाया तू मुझ में और उनमें पूरा फ़ैसला कर दे और मुझे और मेरे साथ वाले मुसलमानों को नजात दे।

तो आपने अपने रब से दुआ की कि मैं मग़लूब हूं तू मेरा बदला ले।

और नूह अलैहिस्सलाम ने अर्ज़ की ऐ मेरे रब ज़मीन पर काफ़िरों में से कोई बसने वाला न छोड़ बेशक अगर तू इन्हें रहने देगा तो तेरे बंदों को गुमराह कर देंगे और उनकी औलाद भी होगी तो वह न होगी मगर बदकार बड़ी ना शुक्र।

कौम की हलाकत की दुआ आपने क्यों की?

नूह अलैहिस्सलाम ने कौम को बर्बाद करने के लिये दुआ इसलिये नहीं की कि आप को गालियां देने की धमकी दी गई थी या आपको संगसार करने के लिये उन्होंने कहा था बल्कि सिर्फ़ वजह यह थी कि ऐ अल्लाह जिसे तूने खुद बता दिया है कि जो ईमान ला चुके हैं उन के बग़ैर और कोई ईमान लाने वाले नहीं तो इनसे ईमान की उम्मीद जब नहीं और उन की औलाद से भी सिवाए बदकारी और नाशुक्री के उम्मीद नहीं तो इनको ज़िंदा रखने का क्या फ़ायदा इनको तबाह व बर्बाद कर दे।

ऐ अल्लाह मैं तो आजिज़ व मग़लूब हो चुका हूं तू अपने दीन और अपने ईमान लाने वाले बंदों की ख़ातिर मेरी इमदाद फ़रमा।

रब तआला ने कश्ती बनाने का हुक्म दे दिया:

नूह अलैहिस्सलाम की दुआ के बाद रब तआला ने फ़रमा दिया कि तुम्हारी कौम को ग़र्क़ कर दिया जायेगा तुम अपने और ईमान वाले लोगों के बचाव के लिये कश्ती तैयार कर लो। अल्लाह

तआला ने फ़रमायाः

और कश्ती बनाओ हमारी मदद और हमारे हुक्म से और ज़ालिमों के बारे में मुझसे बात न करना ज़रूर डुबोए जायेंगे।

यानी काफ़िरों के अज़ाब की ताख़ीर की कहीं दुआ न कर देना क्योंकि उनके ग़र्क़ होने का यक़ीनी फ़ैसला हो चुका है। उनके ग़र्क़ होने का वक़्त भी मुअय्यन हो चुका है इसलिये जल्दी का मुतालबा भी न करना, क्योंकि वक़्ते मुक़र्रर से पहले उन पर अज़ाब नहीं आयेगा।

आपकी एक बीवी और एक बेटा भी काफ़िर हैं वह भी ग़र्क़ हो जायेंगे उनके बचाने की दुआ भी न करना क्योंकि तमाम काफ़िरों के डुबोने के फ़ैसला में कोई तर्मीम नहीं होगी।

कश्ती का डिज़ाईन अल्लाह तआला की वही और जिब्राईल की मुआवनत से तैयार हुआः

इब्ने असाकर ने हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाह अन्हु से रिवायत की है कि नूह अलैहिस्सलाम को मालूम नहीं था कि कैसे कश्ती बनायें तो अल्लाह तआला ने आपकी तरफ़ वही की कश्ती का अगला हिस्सा मुर्ग़ के सर की तरह बनाना और उसके दर्मियान का हिस्सा परिन्दों के पोटे की तरह बनायें और पिछला हिस्सा मुर्ग़ की दुम की तरह बनायें और उसके अतराफ़ में दरवाज़े बनायें मीख़ों से मज़बूत करें और सिवाए नीचे वाली तरफ़ के, हर तरफ़ में तारकोल की लिपाई कर दो। कश्ती बनाने में जिब्राईल और कुछ दूसरे फ़रिश्तों ने भी मुआवनत की।

कश्ती कैसी थी?

कश्ती की लंबाई तीन सौ ज़राअ (साढ़े चार सौ फ़िट) चौड़ाई पचास ज़राअ (पछत्तर फ़िट) और ऊंचाई तीस ज़राअ (पैंतालीस फ़िट) थी। सागवान की लकड़ी से तैयार की गई थी जिसके तैयार करने में दो साल सर्फ़ हुए। कश्ती तीन मंज़िला थी, पहली मंज़िल में वहशी जानवर, दरिन्दे और हशरातुल अर्ज़ (कीड़े मकोड़े) थे और दर्मियानी हिस्से में पालतू जानवर चौपाए वग़ैरह थे और सबसे ऊपर वाली मंज़िल में हज़रत नूह अलैहिस्सलाम और उनके साथ ईमान लाने वाले हज़रात थे और अपने खाने पीने की चीज़ें रखी गई थीं।

कश्ती में सवार होने वालों की तादाद :

कश्ती में वही लोग सवार थे जो आपके साथ ईमान लाये थे जिनका ज़िक्र पहले किया जा चुका था, आपके तीन बेटे और हर एक की ज़ौजा और नूह अलैहिस्सलाम खुद और आप की एक ज़ौजा घर के यह आठ अफ़राद थे और सत्तर अफ़राद और थे जिन्होंने ईमान क़बूल किया था, इस तरह कश्ती में सवार होने वालों की कुल तादाद अटहत्तर थी। अल्लामा आलूसी ने आप के बग़ैर उन्नासी आदमी यानी बहत्तर और सात आप के क़बीले के और एक आप खुद इस तहर कुल अस्सी आदमी थे, इस रिवायत को ज़्यादा सहीह क़रार दिया।

ख़्याल रहे कि नूह अलैहिस्सलाम की एक ज़ौजा और एक बेटा कनआन काफ़िर थे जो ग़र्क़ हो गये थे उनका ज़िक्र इंशाअल्लाह आगे आयेगा।

कश्ती को देखकर क़ौम का मज़ाक़ करना :

हज़रत नूह अलैहिस्सलाम अल्लाह तआला के हुक्म से कश्ती बना रहे थे तो क़ौम आपसे पूछती थी कि इसे क्या करोगे तो आप फ़रमाते यह सैलाब में काम आयेगी। यह सुनकर क़ौम

Scanned by CamScanner

मज़ाक उड़ाते कि इस इलाक़े में पानी का कोई दरिया नहीं तो इतनी बड़ी कश्ती बनाना कि यह पानी में काम आयेगी यह तो सरासर हिमाक़त है।

कभी कहते पहले तो तुम नबुव्वत का दावा कर रहे थे अब बढ़ई बन गये हो इस तरह मज़ाक उड़ा रहे थे कि अल्लाह तआला ने उनके इस तरीक़े को ज़िक्र फ़रमाया।

और नूह कश्ती बनाते हैं और जब इस क़ौम के सरदार उस पर गुज़रते हैं उस पर हंसते बोले अगर तुम हम पर हंसते हो तो एक वक़्त हम तुम पर हंसेंगे जैसा कि तुम हसंते हो।

यानी आज अगर तुम हमारे कश्ती बनाने पर ऐतराज़ करते हो मज़ाह करते हो तो तुम जब हलाक हो जाओगे तो हम भी अल्लाह के दुश्मनों के हलाक होने पर खुश होंगे।

तूफ़ान का आग़ाज़ तन्नूर से हुआः

अल्लाह तआला ने हज़रत नूह अलैहिस्सलाम को बता दिया था कि जब तन्नूर से पानी निकलना शुरू हो जाये तो समझो कि अब तूफ़ान आ रहा है उस वक़्त तुम कश्ती पर सवार हो जाना तमाम जानवरों का एक एक जोड़ा और ईमान वालों को भी साथ कश्ती में सवार कर लेना। यह तन्नूर कूफ़ा में था सही यही है कि आम तन्नूर था जिसमें आपकी ज़ौजा रोटियां पकाती थी उसी से तूफ़ान की इब्तेदा हुई अल्लाह तआला ने फ़रमायाः

और यहां तक कि जब हमारा हुक्म आया तो तन्नूर ने जोश मारा।

यानी जिस तरह हंडिया उबलती है उसी तरह तन्नूर उबलना शुरू हुआ तो आप अलैहिस्सलाम को मालूम हो गया कि अब तूफ़ान आने ही वाला है।

कश्ती पर सवार होने और दुआ पढ़ने का हुक्मः

जब तन्नूर से पानी निकलना शुरू हुआ तो हज़रत नूह अलैहिस्सलाम ने तमाम ईमान वालों को हुक्म दे दिया कि अब कश्ती पर सवार हो जाओ और सवार होते वक़्त अल्लाह के नाम से इब्तेदा करो।

और आपने कहा इसमें सवार हो अल्लाह के नाम पर उस का चलना और उसका ठहरना बेशक मेरा रब ज़रूर बख़्शने वाला मेहरबान है।

हज़रत नूह अलैहिस्सलाम ने अपनी क़ौम को कश्ती पर सवार होकर अल्लाह का नाम लेने का हुक्म दे कर यह वाज़ेह किया कि कश्ती हक़ीक़त में इतने बड़े तूफ़ान से नजात का ज़रिया नहीं बल्कि अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से ही इसे चलना है और उसी के फ़ज़्ल से इसका लंगर अंदाज़ होना है। आप अलैहिस्सलाम का मक़सद यह था कि कश्ती पर ऐतमाद न करो बल्कि सिर्फ़ अल्लाह तआला की ज़ात पर ऐतमाद करो, यह कश्ती सिर्फ़ एक सबब है।

कितना अज़ीम तूफ़ान था?

जब तूफ़ान की इब्तेदा तन्नूर से हो चुकी तो आसमानों को पानी बरसाने का और ज़मीन को चश्मों से पानी निकालने का हुक्म दे दिया गया, आसमानों और ज़मीन के पानी ने मिलकर एक अज़ीम हौलनाक मंज़र पेश किया अल्लाह तआला ने फ़रमायाः

हमने आसमानों के दरवाज़े खोल दिये ज़ोर के बहते पनी से और ज़मीन के चश्में करके बहा दिये (यानी ज़मीन से चश्मे जारी करके ज़ोर से पनी बहा दिया) तो दोनों पानी मिल गये इस मिक़दार पर जो मुक़द्दर थी।

ज़मीन व आसमान के पानियों ने मिलकर इतनी शदीद तुग़यानी बरपा कर दी कि मौजें जब उठती तो बहुत बड़े बुलंद पहाड़ों की तरह नज़र आतीं। रब तआला ने फ़रमाया:

और वह (कश्ती) उन्हें लिये जा रही थी ऐसी मौजों में जैसे पहाड़।

इस आयत की तफ़सीर में अल्लामा राज़ी रहमतुल्लाह अलैहि फ़रमाते हैं कि मौजों की बुलंदी उस वक़्त होती है जब हवा भी तेज़ और शदीद हो इससे पता चलता है कि शदीद बारिशों और ज़मीन के पानी छोड़ने के साथ शदीद आंधियां भी चल रही थीं जिनसे उठने वाली मौजें पहाड़ों की चोटियों से बातें कर रही थीं।

कश्ती का चलना और मंज़िल पर पहुंचना :

हज़रत नूह अलैहिस्सलाम की कश्ती दस रजब को चली और दस मुहर्रम को जूदी पहाड़ पर लंगर अंदाज़ हो गई कश्ती छः माह मुसलसल तूफ़ान में रही दस मुहर्रम को तूफ़ान से नजात मिलने पर हज़रत नूह अलैहिस्सलाम और आपकी क़ौम ने रोज़ा रखा।

नूह अलैहिस्सलाम ने खुद भी रोज़ा रखा और अपने साथ तमाम लोगों और वहशी जानवरों और दूसरे जानवरों को भी हुक्म दिया सब ने अल्लाह का शुक्रिया अदा करते हुए रोज़ा रखा।

सुबहानल्लाह! नबी की अज़मत को जानवर तो जानते हैं बेवक़ूफ़ लोग न जानें तो अपनी बदबख़्ती का मातम करें।

फ़ायदा : मुसनदे अहमद वग़ैरह में हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से मरवी है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का एक मर्तबा यहूदी लोगों से गुज़र हुआ जिन्होंने आशूरा के दिन रोज़ा रखा हुआ था आपने फ़रमाया यह रोज़ा क्यों रखा हुआ है? तो आपको बताया गया कि इस दिन अल्लाह तआला ने मूसा अलैहिस्सलाम और बनी इस्राईल को नजात दी और फ़िरऔन को ग़र्क़ किया और इसी दिन नूह अलैहिस्सलाम की कश्ती जूदी पहाड़ पर लंगर अंदाज़ हुई, हज़रत नूह अलैहिस्सलाम और हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने अल्लाह का शुक्र अदा करने के लिये रोज़ा रखा, तो नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि मैं मूसा अलैहिस्सलाम से ज़्यादा हक़ रखता हूं कि इस दिन रोज़ा रखूं। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने खुद भी रोज़ा रखा और सहाबा किराम को भी हुक्म दिया। ख़्याल रहे कि ईसा अलैहिस्सलाम की पैदाईश भी आशूरा के दिन ही हुई।

नूह अलैहिस्सलाम का एक बेटा ग़र्क़ हो गया :

हज़रत नूह अलैहिस्सलाम के चार बेटे थे। उनमें से तीन मोमिन थे जो आपके साथ कश्ती में सवार हुए थे, जिनके नाम साम, हाम और याफ़िस थे और एक आपका बेटा मुनाफ़िक़ था जिसका नाम कनआन था वह कश्ती में सवार नहीं हुआ था जो ग़र्क़ हो गया चूंकि यह मुनाफ़िक़ था यानी ज़ाहिर तौर पर मोमिन था और दरहक़ीक़त काफ़िर था और काफ़िरों से मिला हुआ था। उसके ग़र्क़ होने के वाक़िये को अल्लाह तआला ने ज़िक्र फ़रमाया:

और नूह अलैहिस्सलाम ने अपने बेटे को पुकारा और वह उससे किनारे पर था ऐ मेरे बच्चे हमारे साथ सवार हो जा और काफ़िरों के साथ न हो बोला अब मैं किसी पहाड़ की पनाह लेता हूं वह मुझे पानी से बचायेगा। (नूह अलैहिस्सलाम ने कहा) आज अल्लाह के अज़ाब से बचाने वाला कोई नहीं मगर जिस पर वह रहम करे और उनके दर्मियान मौज हायल हो गई तो वह डूबने

Scanned by CamScanner

वालों में रह गया।

नूह अलैहिस्सलाम का यह यह बेटा घोड़े पर सवार था, इतरा रहा था कि मैं पहाड़ पर चढ़कर अपने आपको बचा लूंगा, नूह अलैहिस्सलाम उसे कह रहे थे कि आज अल्लाह के अज़ाब से उसके रहम करने के बग़ैर कोई बच नहीं सकेगा। यही मुकामला उन दोनों के दर्मियान चल रहा था कि तूफ़ान से उठने वाली मौजें उन दोनों के दर्मियान हायल हो गईं और कनआन ग़र्क़ हो गया।

नूह अलैहिस्सलाम की बेटे के हक़ में इल्तेजा :

नूह ने अपने रब को पुकारा अर्ज़ की ऐ मेरे रब मेरा बेटा भी तो मेरा घर वाला है और बेशक तेरा वादा सच्चा है और तू सबसे बढ़कर हुक्म वाला है। (अल्लाह तआला ने) फ़रमाया ऐ नूह वह तेरे घर वालों में से नहीं बेशक इसके काम बड़े नालायक़ हैं तू मुझसे वह बात न मांग जिसका तुझे इल्म नहीं मैं तुझे नसीहत फ़रमाता हूं कि नादान न बन अर्ज़ की ऐ मेरे रब मैं तेरी पनाह चाहता हूं कि तुझसे वह चीज़ मांगू जिसका मुझे इल्म नहीं और अगर तू मुझे न बख़्शे और रहम न करे तो मैं ज़ियांकार हो जाऊंगा।

शैख़ अबू मंसूर मातुरीदी रहमतुल्लाह अलैहि ने फ़रमाया कि नूह अलैहिस्सलाम का बेटा कनआन मुनाफ़िक़ था आपके सामने अपने आपको मोमिन ज़ाहिर करता था अगर वह अपना कुफ़्र ज़ाहिर कर देता तो आप अल्लाह तआला से उसकी नजात की इल्तेजा न करते।

अल्लाह तआला ने नूह अलैहिस्सलाम से वादा फ़रमाया कि आपके घर वालों को नजात हासिल होगी तो इसी लिये आपने अपने बेटे के मुताल्लिक़ अर्ज़ किया और वह भी उसकी मुनाफ़क़त की वजह से। रब तआला ने फ़रमाया इसके अमल अच्छे नहीं यानी वह काफ़िर है पहले, मर्तबा कुरबते दीनी का है अगर यह हासिल हो तो रिश्ता की कुरबत का भी फ़ायदा होगा वरना कोई फ़ायदा नहीं होगा।

तंबीह : हज़रत मुहम्मद अली बाक़र और हज़रत हसन बसरी रज़ियल्लाहु अन्हुमा का क़ौल है कि कनआन नूह की ज़ौजा का बेटा किसी और ख़ाविन्द से था आप का अपना बेटा नहीं था हज़रत अली मुर्तज़ा से मरवी है कि आप पढ़ते थे (व नादा नुहुब नहा) नूह अलैहिस्सलाम ने अपनी ज़ौज़ा के बेटे को आवाज़ दी कि किश्ती में सवार हो जाओ।

हज़रत क़तादा ने हज़रत हसन रज़ियल्लाहु अन्हु से सवाल किया तो आपने फ़रमाया क़सम है अल्लाह की आपका बेटा नहीं था। तो वह कहते हैं मैंने कहा यह कैसे? जब कि अल्लाह तआला ने नूह अलैहिस्सलाम के कलाम की हिकायत ब्यान करते हुए फ़रमाया बेशक मेरा बेटा मेरे घर वालों से है।

हज़रत हसन बसरी ने जवाब दिया कि यह तो मेरे क़ौल की ताईद है कि नूह अलैहिस्सलाम ने कहा मेरा बेटा मेरी अहल से है आपने यह तो नहीं कहा कि मेरा बेटा जो मेरा ही है।

नूह अलैहिस्सलाम की एक ज़ौजा भी ग़र्क़ हो गई :

हज़रत नूह अलैहिस्सलाम की एक ज़ौजा उसका नाम वालिहा था यह काफ़िरा थी और लोगों को भी कहा करती था (मआज़ल्लाह) नूह मजनून (दीवाना) है इसकी बात न माना करो। वह भी ग़र्क़ हो गयी।

Scanned by CamScanner

तफ़सीर जलालैन के क़ौल के मातेहत आपके बेटे कनआन और आपकी ज़ौजा दोनों का ज़िक्र है यानी यह दोनों काफ़िर थे और ग़र्क़ हो गये।

तंबीह : हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा से कई हज़रात ने रिवायत बयान की। किसी नबी की कोई औरत कभी ज़ानिया नहीं थी।

अशरस ने इसी हदीस की सनद को नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तक पहुंचा कर मरफ़ूअ करार दिया। तफ़सीर कश्शाफ़ में है कि अंबियाए किराम की औरतें ज़ानिया तो नहीं थीं अलबत्ता किसी से कुफ़्र सर ज़द होने में कोई हर्ज नहीं क्योंकि बदकारी को हर ज़माने में बुरा समझा जाता रहा और लोगों की तबीअत इससे मुतनफ़्फ़िर रही। इसलिये नबी की बीवी में ऐसा फ़ेअल पाया जाये तो नबी में नक़्स और ऐब होगा। अल्लाह तआला ने अंबियाए किराम को ऐबों और नक़ायस से पाक पैदा फ़रमाया लेकिन कुफ़्र को काफ़िर लोग अपना हक़ मज़हब समझते थे इसलिये कुफ़्र उनके नज़दीक ऐब की बजाए कमाल समझा जाता था लिहाज़ा कुफ़्र अंबियाए किराम की बीवियों में भी पाया जा सकता है।

तूफ़ान की इन्तेहा :

और हुक्म फ़रमाया गया ऐ ज़मीन अपना पानी निगल ले और ऐ आसमान थम जा और पानी खुश्क कर दिया गया और काम तमाम हुआ और कश्ती कूहे जूदी पर ठहरी और फ़रमाया गया कि दूर हों बे इंसाफ़ लोग।

यानी जब काफ़िरों के गर्क़ होने का काम मुकम्मल हो गया तो तूफ़ान को ख़त्म कर दिया गया बारिश रोक दी ज़मीन को हुक्म दिया गया कि अब जो पानी तेरे ऊपर है उसे अपने अंदर जज़्ब कर ले।

सिर्फ़ वही लोग या जानवर बचे जो कश्ती में सवार थे बाक़ी तमाम इंसान चौपाए परिन्दे और दूसरे वहशी जानवर ग़र्क़ हो गये और ग़र्क़ होना आक़िल बालिग़ काफ़िरों के लिये अज़ाब था और उनके अलावा दूसरे ग़र्क़ होने वालों के लिये अज़ाब नहीं था।

हदीस शरीफ़ में आया है:

जब अल्लाह तआला किसी क़ौम पर अज़ाब नाज़िल करता है तो सब अच्छे और बुरे इस अज़ाब में मुब्तला हो जाते हैं फिर जब उठाये जायेंगे तो हर एक को अपने अपने आमाल के मुताबिक़ उठाया जायेगा।

यानी नेक लोगों को दुनिया में अज़ाब ज़िल्लत के लिये नहीं होगा इसी लिये वह अपने अच्छे आमाल के मुताबिक़ ही क़यामत के दिन उठाये जायेंगे

कश्ती जूदी पहाड़ पर क्यों रुकी?

तमाम पहाड़ अपनी अपनी बुलंदियों पर तकब्बुर कर रहे थे और इतरा रहे थे लेकिन जूदी पहाड़ अल्लाह के हुज़ूर अपनी आजिज़ी ही करता रहा तो अल्लाह तआला ने उसे यह तकरीम अता फ़रमाई कि नूह अलैहिस्सलाम की कश्ती उस पर आकर ठहरी।

जिसने आजिज़ी की अल्लाह तआला ने उसे रिफ़अत अता की।

ख़्याल रहे जूदी पहाड़ मोसल या शाम के इलाक़े में है। यह भी ख़्याल रहे कि पानी हरम शरीफ़ में दाख़िल नहीं हुआ था।

Scanned by CamScanner

हज़रत इब्राहीम व इस्माईल व इस्हाक़ अलैहिमस्सलाम

हज़रत इस्माईल और हज़रत इस्हाक़ अलैहिमस्सलाम दोनों हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम के बेटे हैं हज़रत इस्हाक़ अलैहिस्सलाम की वालदा का नाम हज़रत सारा रज़ियल्लाहु अन्हा और हज़रत इस्माईल की वालदा का नाम हज़रत हाजरा रज़ियल्लाहु अन्हा है।

हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम का नसब :

आप तारख़ इब्ने नाख़ूर के फ़रज़ंद हैं आपका नाम इब्राहीम और आपका लक़ब अबुल ज़ैफ़ान (बहुत बड़े मेहमान नवाज़) है आप का नसब यह है।

इब्राहीम इब्ने तारख़ इब्ने नाख़ूर इब्ने सारूअ़ इब्ने रऊ इब्ने तातेअ़ इब्ने आबर इब्ने सालेह इब्ने अरफ़ह शज़ इब्ने साम इब्ने नहू।

आपकी पैदाईश तूफ़ान के सतरह सौ नौ साल बाद और ईसा अलैहिस्सलाम से तक़रीबन दो हज़ार तीन सौ साल पहले शहर बाबुल के क़रीब क़स्बा 'कौनी' में हुई।

तफ़सीर ख़ज़ाइनुल इरफ़ान में है कि आपकी पैदाईश अमवाज़ के इलाक़े में सूस के मक़ाम पर हुई।

तंबीह : आज़र इब्राहीम अलैहिस्सलाम के चचा का नाम है आपके बाप का नाम तारख़ है अल्लामा महमूद अहमद आलूसी रहमतुल्लाह अलैहि फ़रमाते हैं:

अहले सुन्नत के कसीर अहले इल्म का इसी पर एतेमाद है कि बेशक आज़र इब्राहीम अलैहिस्सलाम का बाप नहीं था अहले सुन्नत के जम्मे गफ़ीर की दलील यही है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के आबा व अजदाद में कोई भी काफ़िर नहीं था। नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का इरशाद गिरामी है कि मैं हमेशा पाक पुश्तों से पाक रहमों की तरफ़ मुन्तक़िल होता रहा।

और यह भी वाज़ेह है कि कुफ़्फ़ार व मुशरिकीन तो पाक कभी नहीं हो सकते। अल्लाह तआला ने फ़रमाया:

बेशक मुश्रिक तो नापाक लोग हैं।

बाज़ लोगों ने कहा था कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के इरशाद में ताहिर का मतलब यह है कि आप के आबा व अजदाद बदकारी से पाक थे। अल्लामा आलूसी रहमतुल्लाह अलैहि इसका रद्द करते हुए फ़रमाते हैं।

तहारत को ज़िना से पाक होने के साथ ख़ास करना दावा बग़ैर दलील के है इस पर कोई ऐसी दलील नहीं जो क़ाबिले एतेमाद हो, लिहाज़ उमूम अल्फ़ाज़ का होता है न कि अस्बाब की ख़ुसूसियत का।

अल्फ़ाज़ की उमूमियत इस पर दलालत कर रही है कि मुरादे मुतलक़ हर तरह की पाकीज़गी है कुफ़्र और बदकारी हर तरह से पाक पुश्तों और पाक रहमों में ही हुज़ूर सल्लल्लाहु

Scanned by CamScanner

अलैहि वसल्लम मुत्तफ़िक़ होते रहे।

इमाम राज़ी रहमतुल्लाह अलैहि ने तफ़सीर कबीर में नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के वालदैन के ईमान के क़ौल को शीआ की तरफ़ मंसूब किया था इसका भी रद्द पेश करते हुए अल्लामा आलूसी रहमतुल्लाह अलैहि फ़रमाते हैं:

इस क़ौल को शीआ की तरफ़ मंसूब करना जैसे इमाम राज़ी रहमतुल्लाह अलैहि ने भी मंसूब कर दिया है यह हक़ीक़त में ग़ौर व फ़िक्र करने की वजह से ऐसा हुआ है अगर तवज्जोह की जाती तो ऐसा न होता।

ख़्याल रहे कि अल्लामा स्यूती रहमतुल्लाह अलैहि की तस्नीफ़ अलहावी में एक रिसाला के हवाले से अल्लामा फ़ख़रुद्दीन राज़ी रहमतुल्लाह अलैहि का क़ौल भी जम्हूर के साथ ईमान के मुताल्लिक़ ही मज़कूर है।

हज़रत अल्लामा मौलाना मुहम्मद अशरफ़ स्यालवी मद्दे ज़िल्लहु फ़रमाते हैं कि तफ़सीर कबीर के बाद की तस्नीफ़ अल्लामा राज़ी की है इसलिये अल्लामा का पहले क़ौल से रुजू साबित होता है।

अक्सर अहले इल्म का यही क़ौल है कि आज़र इब्राहीम अलैहिस्सलाम के चचा का नाम है।

कुरआन पाक में दादा चचा और बाप सब पर लफ़्ज़ बाप बोला गया है। इरशादे बारी तआला है:

क्या तुम मौजूद थे जब याकूब पर मौत का वक़्त हाज़िर हुआ उस वक़्त उन्होंने अपने बेटों से कहा तुम मेरे बाद किस की इबादत करोगे? बोले हम इबादत करेंगे तुम्हारे माबूद और तुम्हारे आबा इब्राहीम, इस्माईल और इस्हाक़ के माबूद की।

इस आयते करीमा में याकूब अलैहिस्सलाम के वालिद इस्हाक़ अलैहिस्सलाम और चचा (ताया) इस्माईल अलैहिस्सलाम और दादा इब्राहीम अलैहिस्सलाम सब पर आबा का इतलाक़ है जो 'अ ब' की जमा है।

मुहम्मद बिन कअब क़रज़ी ने इस आयत को बतौर दलील पेश किया और कहा:

हदीस शरीफ़ में नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का क़ौले मुबारक मौजूद है जिसमें आपने अपने चचा हज़रत अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु को 'अबी' मेरा बाप कहा है।

मेरे बाप अब्बास को मुझ पर पेश करो।

जिस मुहक़्क़ेक़ीन ने यह दावा किया है कि इब्राहीम अलैहिस्सलाम का हक़ीक़ी वालिद काफ़िर नहीं था बल्कि आपका चचा आज़र काफ़िर था उन्होंने बतौर दलील इब्ने मंज़र का क़ौल भी पेश किया है जो उसने अपनी तफ़सीर में सनदे सहीह से सुलेमान बिन सरद का क़ौल पेश किया है कि जब नमरूद और उसकी क़ौम ने इब्राहीम अलैहिस्सलाम को आग में डालने का इरादा किया और उन्होंने लकड़ियां जमा करनी शुरू कीं तो एक बूढ़ी औरत भी लकड़ियां जमा कर रही थी इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने जब सारी क़ौम को मुख़ालिफ़ पाया तो कहा :

हसबियल्लाहु व नेअमल वकील

जब उनको इन लोगों ने आग में डाल दिया तो अल्लाह तआला ने आग को हुक्म दिया।

ऐ आग इब्राहीम पर ठंडी और सलामती वाली हो जा जब आप पर आग गुलज़ार बन गई।

तो आपका चचा कहने लगा कि यह आग मेरी वजह से ही इब्राहीम से दूर हुई है तो अल्लाह तआला ने आग के एक चिंगारे को उसकी तरफ़ भेजा जो उसके क़दमों पर गिरा और उसे जला कर रख दिया।

इस रिवायत में वाज़ेह तौर पर "अमह" के अल्फ़ाज़ मौजूद हैं जिनसे वाज़ेह हो रहा है कि आपका चचा था।

इब्राहीम अलैहिस्सलाम का मुख़्तसर वाक़िया और आज़र के चचा होने पर शानदार दलील:

मुहम्मद बिन कअब, क़तादा, मुजाहिद और हसन वग़ैरह से मरवी है कि बेशक इब्राहीम अलैहिस्सलाम अपने चचा आज़र के लिये दुआए मग़्फ़िरत करते रहे यहां तक कि वह मर गया उसके मर जाने के बाद आप पर वाज़ेह हो गया कि वह तो हालते कुफ़्र में मर गया है काफ़िर तो अल्लाह का दुश्मन है उसके लिये तो दुआ करने का कोई मक़सद नहीं तो आपने उसके लिये दुआए मग़्फ़िरत छोड़ दी और उससे बेज़ारी इख़्तेयार की। अल्लाह तआला ने इरशाद फ़रमाया:

और इब्राहीम का अपने बाप (चचा आज़र) की बख़्शिश चाहना वह तो न था मगर एक वादा के सबब जो उससे कर चुका था जब इब्राहीम पर वाज़ेह हो गया कि वह अल्लाह का दुश्मन है तो उससे ताल्लुक़ तोड़ दिया।

इस आयत में 'अबियह' से मुराद आज़र है, इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने एक वादा के पेशे नज़र उसके लिये दुआए मग़्फ़िरत की क्योंकि आप ने एक मर्तबा आज़र को कहा था कि मैं अपने रब से तेरी मग़्फ़िरत की दुआ करूंगा, दूसरी वजह यह थी कि एक मर्तबा आज़र ने भी हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम से ईमान लाने का वादा किया था।

आयते करीमा का शाने नुजूल यह है हज़रत अली मुर्तज़ा रज़ियल्लाहु अन्हु से मरवी है कि जब यह आयत नाज़िल हुई "मैं तुम्हारे लिये अपने रब से मग़्फ़िरत तलब करूंगा" तो मैंने सुना कि एक शख़्स अपने वालदैन के लिए मग़्फ़िरत कर रहा है बावजूद यह कि वह दोनों मुश्रिक थे तो मैंने कहा तू मुश्रिकों के लिये दुआए मग़्फ़िरत करता है? तो उसने कहा, क्या हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने आज़र के लिये दुआ न की थी वह भी तो मुश्रिक था। यह वाक़िया मैंने सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से अर्ज़ किया तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम का इस्तिग़फ़ार करना उसके इस्लाम लाने की उम्मीद पर था, जिसका आज़र ने आपसे वादा किया था और आपने आज़र से इस्तिग़फ़ार करने का वादा किया था। जब वह उम्मीद ख़त्म हो गई तो आपने उससे ताल्लुक़ तोड़ लिया और उसके लिये दुआए मग़्फ़िरत करना भी छोड़ दिया।

आज़र आग के चिंगारे से मर गया और हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने उस के बाद उसके लिये कोई दुआ नहीं की। आग के वाक़िये के बाद इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने शाम की तरफ़ हिजरत की फिर मिस्र में दाख़िल हुए और एक जाबिर बादशाह का वाक़िया दरपेश आया और हज़रत हाजरा आपको मिलीं फिर आपको अल्लाह तआला ने हुक्म दिया कि हाजरा और उसके बेटे इस्माईल को काबा के पास छोड़ दो। आपने जब अपने बेटे और ज़ौजा को वहां छोड़ा जहां आज मक्का मुकर्रमा आबाद है तो वहां आपने कुछ दुआयें फ़रमाई जिनमें से एक दुआ में यह

Scanned by CamScanner

अल्फ़ाज़ मुबारका भी हैं:

ऐ हमारे रब मेरी और मेरे वालदैन की मग़्फ़िरत फ़रमा।

अब इससे बात रोज़े रौशन की तरह वाज़ेह हो गई कि आप ने अल्लाह के जिस दुश्मन के लिये दुआ करना छोड़ दिया था वह आपका चचा आज़र है जिसे बाप से ताबीर किया गया। और इस दुआ के छोड़ने के कितने अर्से बाद आप अपने बाप और मां के लिये मग़्फ़िरत की दुआ कर रहे हैं वह आपका हक़ीक़ी बाप है। अगर आज़र जो काफ़िर और अल्लाह का दुश्मन है वही आपका हक़ीक़ी बाप है तो उससे बेज़ारी के बाद फिर उसके लिये दुआ करने का क्या मतलब है?

इब्राहीम अलैहिस्सलाम को ज़मीन व आसमान की मलकूत का मुशाहिदा कराया गया:

अल्लाह तआला ने इरशाद फ़रमाया:

और इसी तरह हम इब्राहीम को दिखाते हैं सारी बादशाही आसामनों और ज़मीन की और इसलिये कि वह ऐनुल यक़ीन वालों में से हो जाये।

मलकूत का मायने अज़ीम बादशाही और सल्तनत क़ाहेरा यानी आपको ज़मीन व आसमान की तमाम अशिया का मुशाहिदा करा दिया गया यहां तक कि चांद, सूरज, पहाड़, दरख़्त और दरिया तमाम चीज़ों के हक़ायक़ को आपने देखा और तमाम रुए ज़मीन व आसमानों का मुशाहिदा किया।

आप अलैहिस्सलाम को तमाम निशानियां और तमाम अजायबात दिखाये गये बेशक आप पर सात आसमान मुनकशिफ़ कर दिये गये तो आप अलैहिस्सलाम ने आसमानों की जमीअ अशिया को देखा यहां तक कि आपकी नज़र अर्शे इलाही तक पहुंची इसी तरह आप पर सात ज़मीनें मुनकशिफ़ कर दी गईं तो आपने ज़मीनों की हर चीज़ को देखा।

इब्ने मरदूविया रहमतुल्लाह अलैहि ने हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत ब्यान की रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया जब हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने ज़मीन व आसमान की बादशाहियों का मुशाहिदा कर लिया तो आपने एक शख़्स को गुनाह करते हुए देखा यानी जो कहीं दूर दराज़ छुपकर मासियत में मुब्तला था लेकिन आपने उसका मुशाहिदा कर लिया तो आपने उसके ख़िलाफ़ दुआ फ़रमाई। रब तआला ने उसे हलाक कर दिया। फिर आप एक और शख़्स के गुनाह पर बा–ख़बर हुए तो उसके ख़िलाफ़ भी दुआ करने का इरादा किया ही था कि अल्लाह तआला ने आपको मना फ़रमा दिया कि ऐ इब्राहीम! आप मुस्तजाबुद दावात हैं मेरे बंदों की हलाकत की दुआ न करें क्योंकि मेरे बंदे तीन क़िस्म के हैं या तो गुनाहगार होंगे लेकिन तौबा क़बूल करूंगा या वह ख़ुद तो गुनाहगार रहेंगे लेकिन उनकी औलाद में ऐसे नेक लोग होंगे जो ज़मीन को तस्बीहात से भर देंगे यानी अल्लाह तआला की हम्द व सना व तहलील इतनी ज़्यादा करेंगे कि उनके फ़ैज़ान से और लोग भी अल्लाह के ज़िक्र में मश्गूल हो जायेंगे या वह लोग गुनाहों के हाल में ही मर जायेंगे और मेरे क़ब्ज़ए कुदरत में होंगे इसके बाद मेरी मर्ज़ी की बात है कि मैं उनको माफ़ कर दूं या सज़ा दूं।

सुबहानल्लाह! जब हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम के इल्म का यह मक़ाम है तो सैय्यदुल अंबिया हबीब किबरिया मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के इल्म का क्या आलम होगा? जब

Scanned by CamScanner

कि जमीअ अंबियाए किराम का मजमूई इल्म नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के इल्म के मुक़ाबिल एक कतरा की मिसाल है और आप का इल्म समुंद्र की मिसाल।

इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने बुत परस्तों का रद्द फ़रमायाः

और याद करो जब इब्राहीम ने अपने बाप आज़र से कहा क्या तुम बुतों को खुदा बनाते हो? बेशक मैं तुम्हें और तुम्हारी कौम को खुली गुमराही में देखता हूं।

इस आयत करीमा से अरब के मुश्रेकीन पर हुज्जत क़ायम की गई क्योंकि उनमें से कई हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम को मोअज़्ज़म जानते थे और उनकी फ़ज़ीलत के मुतरिफ़ थे उन्हें बताया जा रहा है कि हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम बुत परस्ती से मना फ़रमाते थे और बुत परस्ती को बहुत बड़ा ऐब और गुमराही समझते थे अगर तुम उनकी अज़मत को मानते हो तो बुत परस्ती छोड़ दो।

इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने जब अपने बाप से कहा ऐ मेरे बाप क्यों ऐसे को पूजता है जो न सुने न देखे और कुछ तेरे काम न आये। ऐ मेरे बाप बेशक मेरे पास वह हुक्म आया जो तेरे पास नहीं आया तू मेरी ताबेदारी कर मैं तुझे सीधी राह दिखाऊं ऐ मेरे बाप शैतान का बंदा न बन बेशक शैतान रहमान का नाफ़रमान है।

इन तमाम आयात में बाप से मुराद आपका चचा आज़र ही है आपने उसे नसीहत करते हुए कहा कि जिन बुतों की तू पूजा कर रहा है वह तेरी इबादत को नहीं देख सकते तेरी सना को नहीं सुन सकते और कभी किसी क़िस्म का कलाम सुनना उनकी ताक़त में नहीं और तुम्हारी या किसी और की इमदाद करना और किसी क़िस्म की मुसीबत से नजात देना और तुम्हें बे परवाह करना जब उन्हें हासिल नहीं तो वह इबादत के लायक़ कभी नहीं हो सकते बल्कि उनकी इबादत करना दर हक़ीक़त शैतान की इबादत है क्योंकि इससे वह खुश होता है और बुतों की इबादत करना उसी के धोके और फ़रेब का नतीजा है इसलिये तुम शैतान की इबादत छोड़ दो क्योंकि शैतान अल्लाह तआला का नाफ़रमान है वह ख़ुद तो मरदूद हो चुका है और दूसरों को भी भटकाने में हर वक़्त कोशिश में लगा रहता है वह तो चाहता है कि कोई न कोई मेरे दामे फ़रेब में फंस कर रब तआला से दूर हो जाये और उसके अज़ाब का मुस्तहिक़ बन सके।

और उन पर इब्राहीम की ख़बर पढ़ो जब उसने अपने बाप और अपनी कौम से फ़रमाया तुम क्या पूजते हो? बोले बुतों को पूजते हैं फिर उनकी पूजा में मुनहमिक रहते हैं फिर फ़रमाया क्या वह तुम्हारी सुनते हैं जब तुम पुकारो या तुम्हारा कुछ भला बुरा करते हैं बोले बल्कि हमने अपने बाप दादा को ऐसा ही करते पाया फ़रमाया तो क्या तुम देखते हो जिन्हें पूज रहे हो तुम और तुम्हारे अगले बाप दादा बेशक वह सब मेरे दुश्मन हैं मगर परवर्दिगारे आलम वह जिसने मुझे पैदा किया तो वही मुझे हिदायत देगा और वही मुझे खिलाता और पिलाता है और जब मैं बीमार होता हूं तो वही मुझे शिफ़ा देता है और वही मुझे वफ़ात देगा फिर मुझे ज़िन्दा करेगा।

इन आयाते करीमा में हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम का ज़िक्रे ख़ैर किया जा रहा है क्योंकि आप कुरैश के जद्दे आला और काबा के बानी थे कुरैश को उनकी नस्ल होने पर बड़ा नाज़ था इसलिये उनके सामने आपके अक़ायद ब्यान फ़रमाये जा रहे हैं ताकि हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम

को अपना जद्दे आला कहने वाले और इस निसबत पर फख़्र करने वाले हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम के रब्बे अकबर पर भी ईमान लायें, जिस तरह आप का दामन कुफ़्र व शिर्क की आलाइशों से बिल्कुल पाक था उसी तरह यह भी अपने दाग़ों को दूर करके तौहीदे ख़ालिस इख़्तेयार करें।

अल्लामा क़ाज़ी सनाउल्लाह तफ़सीरे मज़हरी में फ़रमाते हैं "लिअबीह" से मुराद आज़र है जो आपका चचा था क्योंकि उसी ने आपकी परवरिश की थी इसलिये बाप कहा गया।

हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम के समझाने का कितना प्यारा अंदाज़ है? उनसे ही उनके माबूदों की बेबसी का एतेराफ़ कराया जा रहा है जब वह इन बातों का इंकार न कर सके क्योंकि उनके बुत सुनने नफ़ा व नुक़्सान पहुंचाने से क़ासिर थे तो यह कह कर अपना दिफ़ाअ करने लगे कि हमारे बाप दादा ऐसा ही करते थे इसलिये हम तो उनके तरीक़े से हटने के लिये किसी वक़्त भी तैयार नहीं।

आप अलैहिस्सलाम मुहब्बत भरे तरीक़े से उन्हें समझाते हैं कि नादान न बनो, बेजा ज़िद अच्छी नहीं, अंधी तक़लीद के नताइज बड़े ख़तरनाक होते हैं, तुम दुनियावी मामलात में जब अक़्ल व फ़हम को इस्तेमाल करते रहते हो तो ज़िन्दगी के इस बुनियादी मसला पर सोचने का वक़्त आये तो तुम अपनी सोच का चिराग़ गुम कर दो, यह तो अच्छी बात नहीं।

फिर आप अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया : इन अंधे बहरे बुतों के मुताल्लिक़ तुम जो चाहो कहते रहो, मैं इन्हें अपना दुश्मन और बद–ख़्वाह समझ रहा हूं, मेरी बंदगी का ताल्लुक़ सिर्फ़ उस माबूदे बरहक़ के साथ है जो कायनात की हर चीज़ को उसके मर्तबए कमाल तक पहुंचाता है इसकी सारी ज़रूरयात भी मुहय्या करता है, उनकी नश्व व नुमा के लिये जो वसायल ज़रूरी होते हैं उनको बहम पहुंचाता है।

इन अंधे बहरे माबूदों के मुक़ाबले में रब्बुल आलमीन (हर चीज़ को मर्तबए कमाल तक पहुंचाने वाला) की सिफ़त से अल्लाह तआला का तार्रुफ़ कितना मायने खेज़ है? आयत में फिर से ग़ौर फ़रमाईये, आपने यह नहीं फ़रमाया कि यह बुत तुम्हारे दुश्मन हैं बल्कि फ़रमाया कि मेरे दुश्मन हैं। नासेह करीम का अंदाज़े नसीहत ऐसा ही होता है। वह बराहे रास्त दूसरों पर हम्ला नहीं करता बल्कि अपनी ज़ात से आग़ाज़ करता है। इसी तरह इशारतन कलाम करना ज़ाहिर कलाम करने से बदर जहा मुअस्सिर है।

हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम का बुतों को तोड़ना :

जब इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने अपने चचा और अपनी क़ौम को कहा तुम किस की पूजा करते हो, क्या बोहतान से अल्लाह के बग़ैर और खुदा चाहते हो? तो तुम्हारा क्या गुमान है रब्बुल आलमीन पर यानी तुम उसके सिवा दूसरे को पूजोगे तो क्या वह तुम्हें बे अज़ाब छोड़ देगा। बावजूद यह कि तुम जानते हो कि वही मनइमे हक़ीक़ी मुस्तहिक़े इबादत है।

इस क़ौम का सालाना एक मेला लगता था। जंगल में जाते थे और शाम तक वहां खेल तमाशा में मश्गूल रहते थे वापसी के वक़्त बुत ख़ाने में आते थे और बुतों की पूजा करते थे इसके बाद अपने कामों को वापस जाते थे। जब हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने उनके बुतों की

मज़म्मत ब्यान की तो उन्होंने कहा कल हमारी ईद है। जंगल में मेला लगेगा। हम नफ़ीस खाने पकाकर बुतों के पास रख जायेंगे और मेला से वापस होकर तबर्रुक के तौर पर खायेंगे। आप भी हमारे साथ चलें देखें कि हमारे दीन और तरीक़े में क्या बहार है और कैसे लुत्फ़ उठाते हैं जब वह मेले का दिन आया तो आपको चलने के लिये कहा गया तो आपके जवाब को क़ुरआन मजीद में इन अल्फ़ाज़ में फ़रमाया गया।

उसने एक निगाह सितारों को देखा फिर कहा मैं बीमार होने वाला हूं।

आपने सितारों को ऐसे देखा जैसे सितारों का हिसाब लगाने वाले देखते हैं। क़ौम चूंकि सितारों के हिसाब की बहुत मुअतक़िद थी उन्होंने यह समझा कि शायद आपने सितारों से हिसाब लगाकर यह समझा है कि आप बीमार होने वाले हैं। इस तरह क़ौम आपको छोड़कर अपने मेला पर चली गई।

आप अलैहिस्सलाम ने कई लोगों के सामने यह वाज़ेह तौर पर कह दिया था:

और मुझे अल्लाह की क़सम है। मैं तुम्हारे बुतों का बुरा चाहूंगा इसके बाद तुम पीठ फेर जाओगे।

जब क़ौम अपने मेले पर चली गई तो आपने मौक़ा को ग़नीमत समझा कि अब अपने इरादे को अमली जामा पहनाने का सुनहरा वक़्त आ गया है आपने चुपके से बुतख़ाने का रुख़ किया। वहां जाकर देखा कि क़ौम उनके पास तरह तरह के खाने रखकर गई है कि वापस आकर खायेंगे और बुतों की पूजा करेंगे। तो आपने बुतों के क़रीब जाकर कहा तुम खाते क्यों नहीं? आप अलैहिस्सलाम के इस इरशाद पर जब बुतों की तरफ़ से कोई जवाब न आया फिर तो आपने उन्हें कहा तुम्हें क्या हुआ तुम बोलते क्यों नहीं?

वह बेजान पत्थर की मूर्तियां उनकी तरफ़ से क्या जवाब आना था। जब आपने देखा कि यह बुत खाने के क़ाबिल नहीं, बोलने की इनमें ताक़त नहीं, अपने ही हाथों से तराशे हुए पत्थरों के बेजान बुत हैं। तो आपने उनको मारना शुरू कर दिया।

आपने उनके टुकड़ु टुकड़े करके चूरा कर दिया। सिवाए एक के जो उन सब से बड़ा था कि शायद वह उससे कुछ पूछें।

क़ौम को वहां ही पता चल गया था कि हमारे बुतों को तोड़ दिया गया है। तो वह जल्दी से उसकी तरफ़ मुतावज्जेह हुए।

उन्होंने कहा कि किसने हमारे ख़ुदाओं के साथ यह काम किया बेशक वह ज़ालिम है उनमें से कुछ बोले हमने एक जवान को इन्हें बुरा कहते सुना है जिसे इब्राहीम कहते हैं वह कहने लगे। तो उसे लोगों के सामने लाओ शायद वह गवाही दें, उन्होंने कहा क्या तुमने हमारे ख़ुदाओं के साथ यह काम किया ऐ इब्राहीम! आपने फ़रमाया, बल्कि उनके इस बड़े ने किया होगा, तो इनसे पूछो अगर बोलते हैं, तो उन्होनें अपने नफ़्सों की तरफ़ रुजू किया और बोले बेशक तुम ही ज़ालिम हो फिर अपने सरों के बल औंधे गिरे कि तुम्हें ख़ूब मालूम है यह बोलते नहीं तो आपने फ़रमाया कि अल्लाह के सिवा ऐसे को पूजते हो जो न तुम्हें नफ़ा दे और न नुक़सान पहुंचाए तुफ़ है तुम पर और इन बुतों पर, जिनको अल्लाह के सिवा पूजते हो, तो क्या तुम्हें अक़्ल नहीं?

हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने तमाम बुतों को तोड़ फोड़ कर चकना चूर कर दिया सिवाए बड़े बुत के। आपने बसूला उसके कंधे पर रख दिया जब क़ौम के लोग वापस आये तो कहने लगे हमारे खुदाओं को किसी ने तोड़ दिया है कैसे बे अक़्ल लोग थे जिनको अभी तक यह समझ नहीं आ रहा था कि जो बुत अपने आपको नहीं बचा सके वह हमारी क्या इमदाद करेंगे?

उनके इस सवाल पर कि हमारे खुदाओं से यह सलूक किसने किया उन लोगों ने बताया जिनके सामने इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने कहा था कि मैं तुम्हारे खुदाओं से कुछ न कुछ बुरा सलूक ज़रूर करूंगा, कि यह काम इब्राहीम ने ही किया होगा क्योंकि वह हमारे खुदाओं की बुराईयां ब्यान करता था।

अब वह कहने लगे कि इब्राहीम को सामने लाओ ताकि उस पर गवाहियां क़ायम करके मुक़द्दमा किया जा सके जब इब्राहीम अलैहिस्सलाम को लाया गया तो आपसे पूछा गया कि यह काम तुमने क्या है? तो आपने फ़रमाया कि बसूला तुम्हारे बड़े बुत के कंधे पर है इसी ने यह काम किया होगा अपने इन खुदाओं से ही पूछ लो अगर यह बोलते हैं तो बतायेंगे।

आपके इस हकीमाना जवाब पर कुछ देर के लिये तो वह सोचने लगे कि इब्राहीम हक़ पर हैं और हम ही बेवकूफ़ हैं कि ऐसे खुदाओं की पूजा कर रहे हैं जो अपने आपको भी नहीं बचा सके यह हक़ीक़त है कि हम इस मामले में अपने आप पर ज़ुल्म कर रहे है। लेकिन कुछ देर बाद उन पर फिर बद बख़्ती सवार हो गई कहने लगे हम इनसे पूछें यह तो बोलते ही नहीं इस तरह यह अपनी गुमराही पर क़ायम रहे।

एतेराज़ : क़ौम जब मेले पर जाने लगी तो उन्होंने इब्राहीम अलैहिस्सलाम को भी दावत दी तो आपने फ़रमाया मैं बीमार हूं। हालांकि आप बीमार नहीं थे। यह तो (मआज़ल्लाह) झूठ है, हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने उनके बुत तोड़ दिये क़ौम ने पूछा तो आपने फ़रमाया यह काम तो इनके बड़े ने किया है हालांकि बड़े बुत ने छोटे बुतों को नहीं तोड़ा था तो आपने यह कैसे कह दिया? यह भी मआज़ल्लाह झूट नज़र आता है और हदीस शरीफ़ में भी आपके तीन झूटों का ज़िक्र मिलता है इन तीन में से दो यही हैं जिनका ज़िक्र किया गया।

जवाब : झूट बोलने वाला नबी नहीं हो सकता झूठ गुनाहे कबीरा है अंबियाए किराम क़ब्ल अज नबुव्वत और बाद अज़ नबुव्वत सग़ीरा और कबीरा गुनाहों से पाक हैं।

वह हदीस जिससे बाज़ ग़ैर इस्लामी लोगों ने समझा कि हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने मआज़ल्लाह तीन झूठ बोले इसकी वज़ाहत की जाती है ताकि यह समझ आ सके कि हदीस पाक का असल मतलब क्या है अगर हदीस पाक का तर्जमा ही सही कर दिया जाये तो समझ आ सकता है कि मतलब क्या है वह हदीस पाक यह है:

हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से मरवी है आपने कहा नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने सिवाए तीन बातों के कोई ऐसी बात नहीं की जिसको लोगों ने झूठ समझा हो इन तीन में से दो का ताल्लुक अल्लाह तआला की ज़ात से है।

एक आपका क़ौल "मैं" बीमार होने वाला हूं।

दूसरा आपका क़ौल "उनके इस बड़े ने क्या होगा।"

और इनमें से तीसरा क़ौल (जब आप फ़िलीस्तीन की तरफ़ हिजरत करके जा रहे थे तो उस दौरान) एक दिन आप और आपकी ज़ौजा का ऐसी जगह से गुज़र हुआ जहां एक जाबिर ज़ालिम शख़्स मुसल्लत था उसको लोगों ने बताया यहां एक शख़्स आया हुआ है जिसके साथ एक औरत है जो तमाम लोगों से ज़्यादा हसीन है। उस ज़ालिम ने हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम की तरफ़ अपना क़ासिद भेजा कि वह उनसे पूछे यह तुम्हारे साथ औरत कौन है? उसके सवाल पर आपने फ़रमाया, यह मेरी बहन है, फिर आप हज़रत सारा के पास आये उनको कहा अगर उस ज़ालिम को पता चल गया कि तुम मेरी ज़ौजा हो तो वह जबरन तुम्हें मुझसे छीन लेगा। अगर वह तुम से सवाल करे तो तुम उसको ख़बर देना कि तुम मेरी बहन हो, इसलिये कि इस्लाम में तुम मेरी बहन हो, क्योंकि रुए ज़मीन पर मेरे और तुम्हारे बग़ैर कोई मोमिन नहीं। उस ज़ालिम ने हज़रत सारा के पास क़ासिद भेजकर उनको अपने पास बुला लिया हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने खड़े होकर नमाज़ अदा करनी शुरू फ़रमा दी हज़रत सारा जब उस ज़ालिम के पास पहुंची उसने आपकी तरफ़ अपना हाथ बढ़ाना चाहा लेकनि वह अल्लाह की गिरफ़्त में आ गया। पागलों की तरह हो गया उसका गला घुंट गया, मुंह से झाग बहने लगे, ऐड़ियां रगड़ने लगा, उसने हज़रत सारा को कहा तुम मेरे लिए दुआ करो मैं तुम्हें तकलीफ़ न पहुंचाऊंगा। आपने अल्लाह से दुआ की वह ठीक हो गया उसने दोबारा हाथ बढ़ाने की कोशिश की लेकिन वह पहले की तरह रब तआला की गिरफ़्त में आ गया बल्कि उससे भी ज़्यादा। उसने फिर हज़रत सारा से दुआ करने की दरख़्वास्त की, आपने फिर दुआ की जब वह ठीक हो गया फिर उसने दरबान को बुलाया और कहा तुम मेरे पास किसी इंसान को नहीं लाए बल्कि किसी जिन्न को लाये हो, उस ज़ालिम ने आपको हज़रत हाजरा बतौर ख़ादमा देकर वापस लौटा दिया।

(मुफ़्ती अहमद यार ख़ां रहमतुल्लाह अलैहि ने तफ़सीर नईमी में तहरीर किया है हज़रत हाजरा रूम के बादशाह की बेटी थीं उनसे भी उस ज़ालिम का अंजाम ऐसा ही हुआ था इसलिये उसने कहा इन दोनों को यहां से निकाल दो यह दोनों इंसान नहीं बल्कि जिन्न हैं।)

हज़रत सारा जब हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम के पास वापस आईं तो आप नमाज़ अदा फ़रमा रहे थे आपने अपने हाथ के इशारे से पूछा कैसा हाल है? आपने कहा अल्लाह तआला ने काफ़िर के मक्र को उसी के सीने पर लौटा दिया यानी वह ज़लील हुआ उसने मुझे हाजरा बतौर ख़ादमा दी।

हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा ऐ अहले अरब यह (हाजरा) तुम्हारी मां है।

क़ारी अय्याज़ रहमतुल्लाह अलैहि ने फ़रमाया अंबियाए किराम से मुतलक़न झूठ साबित नहीं हो सकता लेकिन यह झूठ जिनका ज़िक्र किया गया है यह सुनने वाले की तरफ़ मंसूब हैं जिनको सुनने वाले ने झूठ समझा इसलिये कि बज़ाहिर झूठ नज़र आते हैं हालांकि हक़ीक़त में झूठ नहीं थे लिहाज़ा नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के इरशाद गिरामी का मतलब यह है कि इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने तीन मर्तबा इस तरह कलाम फ़रमाया कि लोगों ने उसे झूठ समझा इन तीन मर्तबा के अलावा आपने कोई ऐसा कलाम नहीं फ़रमाया जिसको लोगों ने भी झूठ समझा हो।

पहला इरशादे गिरामी : "मैं बीमार होने वाला हूं"

Scanned by CamScanner

आपके इस इरशादे गिरामी का मतलब पहले तफ़सीलन ब्यान हो गया कि कौम ने आपको मेला में शिरकत की दावत दी तो आपने सितारों को देखकर फ़रमाया यानी मैं बीमार होने वाला हूं, आपने यह नहीं फ़रमाया कि मैं कल ही बीमार होने वाला हूं बल्कि आपने सिर्फ़ यह फ़रमाया कि मैं बीमार होने वाला हूं इंसान ज़िन्दगी में कभी न कभी तो ज़रूर बीमार होता है आपने मायने दूर वाला लिया और लोगों ने क़रीब वाला समझा यह "तौरियह" कहलाता है जो जायज़ है:

दूसरी वजह मुल्ला अली क़ारी रहमतुल्लाह अलैहि ब्यान फ़रमाते हैं:'

आपने फ़रमाया मेरा दिल बीमार है इसलिये कि मुझे बहुत गुस्सा है कि तुमने सितारों को खुदा बना रखा है या इसलिये मुझे गुस्सा है कि तुमने बुतों को अपना माबूद बनाया हुआ है इस गुस्से की वजह से ज़ेहनी परेशानी मेरे दिल के बीमार होने का सबब है। यानी आपकी बात सदाक़त पर मबनी थी कि मैं क़लबी तौर पर बीमार हूं लेकिन लोग इस को न समझ सके।

दूसरा इरशाद : "इनके इस बड़े ने किया होगा।"

कौम जब मेले पर चली गई तो हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने तमाम बुतों को तोड़ दिया और कुल्हाड़ा या बसूला उनके बड़े बुत, यानी जिसको बड़ा खुदा समझते थे उसके कंधे पर रख दिया। जब वह कौम वापस आई तो एक दूसरे को देखकर कहने लगे हमारे खुदाओं से यह ज़्यादती किसने की है? जब बाज़ लोगों ने कहा यह इब्राहीम ने किया होगा। आपसे बुलाकर पूछा गया तो आपने फ़रमाया: "'यह इस बड़े बुत ने किया है" जिसका आम मायने ज़ेहनों में यह आता है कि आपने कहा यह इस बड़े बुत ने किया है यानी इसने तोड़ा है और लोगों ने अपनी समझ के मुताबिक़ झूठ समझा हालांकि इसका मतलब ही यह नहीं, अल्लामा राज़ी रहमतुल्लाह अलैहि ने इस के मुख़्तलिफ़ मतालिब ब्यान किये हैं इसका असल मतलब क्या है?

पहली वजह : पहली वजह यह है कि आपने यह नहीं फ़रमाया कि यह काम इस बुत ने किया है बल्कि आपने इससे मुराद अपनी ज़ात ली आपका यह कलाम तअरीज़ पर मबनी था यानी कलाम करने वाला और मुराद ले रहा हो सुनने वाला और समझे। यह कलाम इस तरह है जिस तरह एक शख़्स लिखने का माहिर हो वह एक अच्छा ख़त लिखे दूसरा शख़्स जो लिखना नहीं जानता वह माहिरे ख़त से पूछे क्या यह तुमने लिखा है? और वह उसके जवाब में कहे बल्कि तुमने लिखा है यह इल्ज़ामन उसको ख़ामोश करना है। यानी इस जुम्ला से उस शख़्स की नफ़ी की जा रही है जो क़ादिर नहीं और जो शख़्स क़ादिर है उसके लिये साबित करना है इसी तरह हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने बुत की तरफ़ मंसूब करके वाज़ेह किया कि यह काम उसी ने किया है जो यह काम करने पर क़ादिर है वह कैसे कर सकता है जो यह काम करने पर क़ादिर ही नहीं?

दूसरी वजह : जब हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने देखा कि बुतों को मुज़य्यन किया हुआ है और इनको कौम ने बड़ा बरगुज़ीदा समझा हुआ है आपको गुस्सा आया और यह देखकर गुस्सा और ज़्यादा शदीद हो गया कि लोगों ने बड़े बुत को ज़्यादा मुज़य्यन किया हुआ है और इसकी ज़्यादा ताज़ीम करते हैं जब इस बड़े बुत को देखकर गुस्सा ज़्यादा हुआ तो सब बुतों को तोड़ दिया।

Scanned by CamScanner

हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने अपने फ़ेअल को बुत की तरफ़ इसलिये मंसूब किया कि वह इनको तोड़ने और ज़िल्लत का सबब बना क्योंकि इस को देखकर आपको ज़्यादा गुस्सा आया था जिस तरह काम करने वाले की तरफ़ फ़ेअल मंसूब होता है उसी तरह काम पर उभारने वाले की तरफ़ भी मंसूब होता है।

तीसरी वजह : आपने उनके मज़हब के मुताबिक़ कलाम किया कि तुम जब इसको खुदा समझते हो तो फिर यह काम इसने किया होगा।

यानी जिसको तुम इबादत का मुस्तहिक़ समझते हो कि यह हमारा माबूद है वह यह काम करने पर क़ादिर होना चाहिये बल्कि इससे भी ज़्यादा कुदरत इसे होनी चाहिये। मक़सद उनको समझाना था कि जब तुम यह नहीं मानते कि इसने बुतों को तोड़ा है क्योंकि यह तोड़ने की ताक़त नहीं रखता तो यह माबूद कैसे बन सकता है।

चौथी वजह : यहां कुछ इबारत गै़र मज़कूर है असल इबारत इस तरह है।

जिसको करना था उसने कर दिया यह उनका बड़ा है इससे पूछ लो।

गोया इस ब्यान का मक़सद ही यह था कि मैंने यह काम कर दिया है अपने बड़े खुदा से पूछो अगर यह बोलने की ताक़त रखता है इसमें भी उनको तबलीग़ थी कि यह तुम्हारा खुदा तो यह भी नहीं बता सकता कि यह काम किसने किया है?

पांचवी वजह : 'कबीरहुम' पर वक़्फ़ है और 'हाज़ा' से फिर कलाम की इब्तेदा है मायने यह है कि काम उनके बड़े ने किया है यह तुम्हारा खुदा है इससे पूछ लो अगर बोलता है।

इससे मुराद आपने अपनी ज़ात ली है क्योंकि इंसान तमाम बुतों से बड़ा है मक़सद यह था कि यह काम उनके बड़े ने किया है वह बड़ा मैं ही हूं क्योंकि मैं इंसान हूं और तुम्हारे खुदाओं से बड़ा हूं इंसान के मुक़ाबिल इन बुतों की क्या हैसियत है।

छठी वजहः कलाम में तक़दीम व ताख़ीर है गोया कि असल मानवी लिहाज़ पर इस तरह है।

आपने फ़रमाया इनके इस बड़े ने किया है अगर यह बोलते हैं तो इनसे पूछ लो।

फ़ेअल की इज़ाफ़त इन के बड़े बुत की तरफ़ मशरूत तौर पर है अगर यह बोलते हैं तो इनके बड़े ने किया है जब वह बोलते ही नहीं तो यह काम इनके बड़े बुत ने नहीं किया।

सातवीं वजह : एक क़राअत 'फ़अलहु कबीरहुम' आया है इसके मुताबिक़ मायने यह होगा शायद यह काम करने वाला इनका बड़ा होगा।

इन ब्यान कर्दा वजूह से वाज़ेह हुआ कि हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम का कलाम सदाक़त पर मबनी था अगरचे सुनने वाले न समझ सकें और उन्होंने अपने बातिल गुमान में झूठ समझा।

अंबियाए किराम को झूठा कहने से रावियों को झूठा कहना बेहतर है:

अल्लामा राज़ी रहमतुल्लाह अलैहि इसी मक़ाम पर तहरीर फ़रमाते हैं:

अगर ऐसी कोई रिवायत हो जिस से अंबियाए किराम का झूठा होना साबित हो रहा हो और इस रिवायत की कोई तावील न हो सके जिस से अंबियाए किराम की सदाक़त साबित हो सके तो इस सूरत में रावियों को झूठा कहा जा सकता है लेकिन अंबियाए किराम को झूठा कहना

मुहाल होगा। ऐसी सूरत में रिवायत को रद्द कर दिया जायेगा लेकिन अंबियाए किराम की शान में कोई फ़र्क़ नहीं आने दिया जायेगा।

आपका तीसरा इरशाद : हज़रत सारा के मुताल्लिक़ आपने फ़रमाया यह मेरी बहन है इसकी वजह हदीस पाक में खुद ही वाज़ेह है कि आपने यह मुराद नहीं लिया कि यह मेरी नसबी बहन है बल्कि आपने हज़रत सारा को कहा तुम इस्लाम में मेरी बहन हो इसलिये कि अखुव्वते इस्लामी के लिहाज़ पर बाप बेटा भी भाई भाई हैं। मां बेटा भी भाई बहन हैं इसी तरह ख़ाविन्द बीवी भी एक दूसरे के भाई बहन हैं।

बुतों को तोड़ने पर इब्राहीम अलैहिस्सलाम को सज़ा : इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने जब कुफ़्फ़ार के बनावटी खुदाओं को तबाह कर दिया और दलायल में भी उन पर ग़ल्बा हासिल कर लिया तो उन्होंने आपसे इंतेक़ाम का फ़ैसला कर लिया और सब सज़ाओं से सख़्त सज़ा तजवीज़ की यानी यह कि आपको आग में जला दिया जाये हालांकि आग का अज़ाब सिर्फ़ अल्लाह तआला दे सकता है बंदे के लिये यह जायज़ नहीं कि किसी को आग का अज़ाब दे लेकिन नमरूद और उसकी क़ौम ने आपको जलाने की सज़ा दी अल्लाह तआला ने इसका ज़िक्र फ़रमाया:

वह कहने लगे इसके लिये एक इमारत बनाओ फिर इसे भड़कती आग में डाल दो।

यानी इर्द गिर्द बहुत बड़ी दीवार बनाकर इसके दर्मियान आग जलाकर इब्राहीम अलैहिस्सलाम को इस में डाल दो।

बोले इसको जला दो और अपने खुदाओं की मदद करो अगर तुम्हें करना है।

ज़रा ग़ौर करें क़ितने बेवक़ूफ़ लोग थे कि यह भी नहीं समझ रहे थे कि जिन बुतों की हम इमदाद कर रहे हैं और वह खुद अपनी इमदाद कुछ न कर सके वह खुदा बनने के क़ाबिल कैसे?

इब्राहीम अलैहिस्सलाम का आग में डाले जाने का वाक़िया : इब्राहीम अलैहिस्सलाम को आग में जलाने के लिये जो चार दीवारी बनाई गई इसकी मिक़दार हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु ने ब्यान फ़रमाई कि इसकी बुलंदी तीस ज़राअ (पैंतालीस फ़िट) और चौड़ाई बीस ज़राअ (तीस फ़िट) और तूल तीस ज़राअ (पैंतालीस फ़िट)।

आग में डालने का मश्वरा देने वाला : हज़रत मुजाहिद कहते हैं कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु ने फ़रमाया, ऐ मुजाहिद क्या तुम्हें मालूम है कि इब्राहीम अलैहिस्सलाम को जलाने का सबसे पहले मश्वरा देने वाला कौन था? मैंने कहा मुझे तो इल्म नहीं आप रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया वह फ़ारस के देहात में रहने वाला शख़्स था, जिसका नाम इकराद था बाज़ जगह उसका नाम इकराद बिन अतिया मुकम्मल तौर पर ज़िक्र है नाम के मुतालिक़ दो क़ौल और भी हैं। एक क़ौल के मुताबिक़ नाम हयून है और दूसरे के मुताबिक़ हदेर है। उस शख़्स को अल्लाह तआला ने ज़मीन में धंसा दिया और क़यामत तक धंसता चला जायेगा।

आपको जलाने से पहले क़ैद कर दिया गया। उन्होंने फिर आग जलाने के लिये चार दीवारी बाड़ा की तरह बनानी शुरू कर दी जब बाड़ा तैयार हो गया तो फिर लकड़ियां जमा करनी शुरू कर दीं हर क़िस्म की लकड़ियां चालीस दिन तक वह सब लोग जमा करते रहे यहां तक कि अगर कोई बूढ़ी औरत बीमार हो जाती तो वह भी कहती अगर मुझे इस बीमारी से शिफ़ा हासिल

हो गई तो मैं भी इब्राहीम को जलाने के लिये लकड़ियां लाऊंगी।

वह कैसी आग थी? जब तमाम लोगों ने मिलकर चालीस दिन तक मेहनत करके कसीर मिक़दार में लकड़ियां जमा कर लीं तो आग जला दी गई आग के शोले आसमानों से बातें करने लगे इतनी अज़ीम और शदीद आग थी कि इसके ऊपर से फ़िज़ा में भी कोई परिन्दा नहीं उड़ सकता था।

आग में डालने के लिये शैतान की राहनुमाई : जब आग बहुत ज़्यादा शोला ज़न गई उसकी हरारत इतने दूर दूर तक फैल गई कि आग के क़रीब जाना किसी इंसान की ताक़त में न रहा तो वह कुफ्फ़ार हैरान व परेशान हो गये कि सब मेहनत ज़ाया जाती है क्योंकि उन्हें समझ में नहीं आ रहा था कि इब्राहीम अलैहिस्सलाम को आग में कैसे डाला जाये तो शैतान ने आकर उनकी रहनुमाई की कि एक मुनजनीक़ तैयार की जाये और इब्राहीम अलैहिस्सलाम को रस्सियों से जकड़ कर मुनजनीक़ में रखकर आग में फेंक दिया जाये ख़्याल रहे सबसे पहले दुनिया में यही मुनजनीक़ तैयार हुई बाद में उसी को जंगों में इस्तेमाल किया जाता रहा और मुनजनीक़ के ज़रिये पत्थरों को गोलों की तरह फेंका जाता था।

ज़मीन व आसमान की मख़लूक़ की फ़रियाद : हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम को जब रस्सियों से बांधकर मुनजनीक़ में रखा गया तो सिवाए जिन्नो और इंसानों के अल्लाह तआला की ज़मीन व आसमान की सारी मख़लूक़ चिल्ला उठी और अल्लाह तआला के हुज़ूर फ़रियाद करने लगी ऐ मौलाए कायनात ज़मीन में सिवाए इब्राहीम अलैहिस्सलाम के कोई और नहीं जो तेरी इबादत करे ऐ अल्लाह आज वह तेरा नाम लेने की वजह से जलाया जा रहा है।

ज़मीन व आसमान के फ़रिश्ते, जानवर, वहूश व तयूर सभी यह माजरा देखकर हैरान व परेशान हैं। रब तआला की हिकमत से बेख़बर थे, सोच रहे थे अब क्या होगा? अल्लाह का नाम लेने वाला तो आज जल जायेगा अब ज़मीन में अल्लाह तआला की इबादत करने वाला कौन होगा?

फ़रिश्तों ने आपकी इमदाद करने की अल्लाह तआला से इजाज़त तलब की: ज़मीन व आसमान के फ़रिश्तों ने अल्लाह तआला के हुज़ूर अर्ज़ की ऐ अल्लाह हमें इजाज़त फ़रमा कि हम इब्राहीम अलैहिस्सलाम की इमदाद करें। अल्लाह तआला ने उन्हें इजाज़त अता फ़रमा दी कि अगर वह तुम से इमदाद हासिल करना चाहते हैं तो तुम उनकी इमदाद करो और अगर वह मेरे बग़ैर किसी और से इमदाद नहीं हासिल करते तो मैं उन्हें ज़्यादा जानता हूं मैं ही उनका वली हूं उनका मामला मुझ पर ही छोड़ दो बेशक वह मेरे ख़लील हैं। इस वक़्त तमाम रुए ज़मीन पर उनके बग़ैर और मेरा कोई ख़लील नहीं और मैं ही उनका माबूद हूं मेरे बग़ैर इनका कोई माबूद नहीं।

इब्राहीम अलैहिस्सलाम का अल्लाह तआला पर तवक्कुल : इब्राहीम अलैहिस्सलाम के पास हवाओं पर मुक़र्रर फ़रिश्ता आया और वह फ़रिश्ता भी हाज़िर हुआ जो पानियों पर मुक़र्रर था इन दोनों ने अर्ज़ किया आप हमें इजाज़त फ़रमायें कि हम आग को ख़त्म कर दें आपने फ़रमाया मुझे तुम्हारी इमदाद की ज़रूरत नहीं।

मेरा अल्लाह मुझे काफ़ी और वही बेहतर कारसाज़ है।

आपके पास जिब्राईल अलैहिस्सलाम आये और अर्ज़ किया कि आप को मेरी इमदाद की

ज़रूरत हो तो मैं आपकी इमदाद करूं आपने फ़रमाया मुझे तुम्हारी इमदाद की कोई ज़रूरत नहीं। जिब्राईल ने कहा अच्छा तो फिर अपने रब तआला से ही सवाल कर लो तो आपने फ़रमाया:

वह मेरे हाल को जानता है सवाल के बग़ैर ही मुझे काफ़ी है।

हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम को अल्लाह तआला पर कितना भरोसा है? यह तो कह दिया जाता है कि ग़ैर अल्लाह से इमदाद तलब करना जायज़ नहीं, अगर जायज़ होता तो इब्राहीम अलैहिस्सलाम फ़रिश्तों से इमदाद तलब करते। काश! इन लोगों को यह समझ आ जाये कि अंबियाए किराम का मक़ाम मलायका से बुलंद है उन्हें क्या ज़रूरत है कि वह अपने से कम मरातिब वालों से इमदाद तलब करें। फिर इब्राहीम अलैहिस्सलाम की तरह आम इंसान तवक्कुल कैसे कर सकता है? वह तो अल्लाह तआला से भी सवाल नहीं करते कि वह ख़ुद ही जानता है मुझे सवाल करने की क्या ज़रूरत है?

छिपकली का आग को फूंके देना : बुख़ारी मुस्लिम की रिवायत में आया है कि छिपकली आग में फूंके देती थी। मुस्लिम शरीफ़ में हज़रत सअद रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से मरवी है कि बेशक रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने क़त्ल करने का हुक्म दिया और उसको बुरी चीज़ के नाम से ताबीर फ़रमाया और एक रिवायत में है कि छिपकली को पहली ही ज़र्ब से क़त्ल करने में ज़्यादा सवाब है और दूसरी ज़र्ब में क़त्ल करने में इससे कम सवाब है और तीसरी ज़र्ब में क़त्ल करने का इससे कम सवाब है।

इब्राहीम अलैहिस्सलाम का आग में अजीब मंज़र : इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने फ़रिश्तों से इमदाद लेने से इंकार कर दिया अल्लाह तआला से भी सवाल न किया कि आग में जाने से पहले ही मुझे बचा ले बस सिर्फ़ एक बात मद्दे नज़र थी कि रब तआला जिस पर राज़ी है मैं भी उसी पर राज़ी हूं।

काफ़िरों ने जब आपको बांधकर मुनजनीक़ में रखकर आग में डालना चाहा तो आपने यह अल्फ़ाज़ मुबारका पढ़े:

तेरे बग़ैर कोई माबूद नहीं तेरी ज़ात पाक है सब तारीफ़ें तेरे लिये ही हैं सब चीज़ें तेरी ही मिल्क में हैं तेरा कोई शरीक नहीं।

काफ़िरों ने आपको आग में फेंक दिया अल्लाह तआला ने आग को फ़रमाया:

ऐ आग इब्राहीम पर ठंडी और सलामती हो जा।

अल्लाह तआला ने आग को ठंडी हो जाने के साथ साथ सलामती का हुक्म भी दिया ताकि इब्राहीम अलैहिस्सलाम को किसी क़िस्म का भी नुक़्सान न हो।

मुस्नद अहमद में हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु का इरशाद मज़कूर है कि अगर अल्लाह तआला आग को सलामा का हुक्म न देता तो आग इतनी ठंडी हो जाती कि आप सर्दी से वफ़ात पा जाते।

रिवायात में आता है कि जब इब्राहीम अलैहिस्सलाम को आग में डाला गया तो आग बाहर बाहर जलती रही लेकिन उसकी हरारत इब्राहीम अलैहिस्सलाम तक न पहुंच सकी बल्कि आग के अंदर एक बाग़ बना दिया गया।

यानी जब आप को आग में डाला गया तो फ़रिश्तों ने आपको पहलुओं से पकड़कर एक जगह ज़मीन में बिठा दिया जहां एक मीठे पानी का चश्मा था और इर्द गिर्द गुलाब नरगिस और चमेली के पौधे और फूल अपना हसीन व जमील मंज़र पेश कर रहे थे। आग ने सिर्फ़ उन रस्सियों को जलाया जिनसे आप को बांधा गया और उनके जलने से भी आपको किसी क़िस्म का कोई ज़रर नहीं हुआ।

ख़्याल रहे कि जब इब्राहीम अलैहिस्सलाम की आग को ठंडी होने का हुक्म दिया गया उस वक़्त दुनिया में ऐसी आग नहीं थी जो बुझ न गई हो यानी दुनिया की तमाम आगें एक मर्तबा बुझ गई थीं।

इब्राहीम अलैहिस्सलाम आग में कितने दिन रहे? : मिनहाल बिन अम्र से मरवी है वह कहते हैं मुझे यह ख़बर दी गई कि हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम आग में चालीस या पचास दिन रहे, हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं आग में रहने के दिनों मैं जितना खुश रहा और मैंने ऐश व इशरत की अपनी पूरी ज़िन्दगी में मुझे ऐश हासिल न हो सका।

अल्लाह तआला ने साया पर मुक़र्रर फ़रिश्ते को इब्राहीम अलैहिस्सलाम की ही शक्ल में उन पर भेजा कि वह आपके पास बैठे ताकि वह उससे उन्स हासिल करें अकेले होने की वजह से आपको कोई परेशानी न हो आप के पास जिब्राईल जन्नत में से एक रेशमी क़मीज़ लाये और कहा ऐ इब्राहीम अलैहिस्सलाम बेशक आप को रब कहता है क्या आपको मालूम नहीं कि मेरे महबूबों को आग नुक़्सान नहीं पहुंचा सकती।

नमरूद का इब्राहीम अलैहिस्सलाम को बाग़ में देखना : नमरूद ने अपने महल की बुलंदी से देखा तो इब्राहीम अलैहिस्सलाम को एक बाग़ में बैठे हुए पाया और एक शख़्स (फ़रिश्ते) को भी आपके पास बैठे हुए देखा और आपके इर्द गिर्द लकड़ियों को जलते हुए आग के शोले भड़कते हुए देखकर आपको पुकारने लगा ऐ इब्राहीम अलैहिस्सलाम क्या तुम इस आग से निकल सकते हो? आपने फ़रमाया हां निकल सकता हूं उसने कहा, उठो और निकल आओ। (मुमकिन है उसने यह समझा हो कि जब निकलेंगे तो बाहर जलती हुई आग से गुज़रेंगे तो जल जायेंगे) इब्राहीम अलैहिस्सलाम उठे और चलते चलते आग से निकल आये। आप अलैहिस्सलाम से नमरूद ने पूछा कि तुम्हारे पास तुम्हारी ही शक्ल का दूसरा आदमी कौन था? आपने फ़रमाया कि वह साया पर मुक़र्रर फ़रिश्ता था जिसे अल्लाह तआला ने मेरे पास इसलिये भेजा था कि मुझे अकेले होने से किसी क़िस्म की कोई घबराहट न हो बल्कि मैं उससे उन्स हासिल कर सकूं।

नमरूद रब की कुदरत का इक़रार करने के बावजूद गुमराह रहा : नमरूद ने कहा जब मैंने तुम्हारे रब की इज़्ज़त व कुदरत को देखा तो मैंने नज़र मानी की मैं तुम्हारे रब का कुर्ब हासिल करने के लिये कुरबानी पेश करूंगा इसलिये मैं तुम्हारे रब के हुज़ूर चार हज़ार गाए की कुरबानी कर रहा हूं इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया जब तक तुम अपने दीन पर क़ायम हो उस वक़्त तक अल्लाह तआला तुम्हारी कुरबानी को क़बूल नहीं करेगा।

उसने कहा मैं अपनी बादशाही को तो नहीं छोड़ सकता अलबत्ता कुरबानी ज़रूर करूंगा उसने अपनी नज़र के मुताबिक़ चार हज़ार गाए ज़िबह कर दी और आइंदा हज़रत इब्राहीम

Scanned by CamScanner

अलैहिस्सलाम को सज़ा न देने का इरादा कर लिया अलबत्ता वह अपने कुफ़्र पर ही क़ायम रहा ईमान उसको नसीब न हो सका।

बाज़ रिवायात में है कि जब कुफ़्फ़ार ने देखा कि इब्राहीम अलैहिस्सलाम को आग ने नहीं जलाया तो उन्होंने कहा कि इब्राहीम ने आग पर जादू कर दिया है उन्होंने तजर्बा करने के लिये एक बूढ़े को आग में डाला तो आग ने उसे झुलस कर रख दिया।

इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने तमाम बातिल माबूदों का रद्द किया : इब्राहीम अलैहिस्सलाम जिस क़ौम में तशरीफ़ लाये उस में कुछ लोग बुत परस्त थे और कुछ सितारा परस्त और कुछ चांद परस्त और कुछ सूरज परस्त बल्कि नमरूद की परस्तिश भी होती थी। आपने बुतों के माबूद होने को दलायल से बातिल किया। क़ौम ने जब दलायल से कोई फ़ायदा न हासिल किया तो आपने बुतों को तोड़कर अपनी परेशानी को दूर करके अपने दिल को तसल्ली दी।

सितारा परस्त आपको भी सितारों की पूजा की दावत देने लगे आपने उनका भी रद्द फ़रमाया कि यह सितारे माबूद बनने के क़ाबिल नहीं।

फिर जब उन पर रात का अंधेरा आया एक तारा देखा बोले इसे मेरा रब ठहराते हो फिर जब वह डूब गया बोले मुझे खुश नहीं आते डूबने वाले।

यानी यह तो खुद किसी निज़ामे कुदरत के पाबंद हैं उनमें माबूद बनने की सलाहियत नहीं। मेरी तवज्जोह और मुहब्बत का मरकज़ तो सिर्फ़ मालिकुल मुल्क ख़ालिके काइनात वहदहु ला शरीक लहु है मैं तो इन सितारों से मुहब्बत नहीं करता और न ही उनको किसी मामला में मुअस्सिरे हक़ीक़ी मानता हूं जब उनसे मुहब्बत ही नहीं तो उनकी इबादत को कैसे मैं अच्छा समझा सकता हूं?

चांद परस्तों ने आपको चांद की इबादत की दावत दी आपने उनका भी रद्द कर दिया कि तुम तो गुमराह हो। हक़ तो यह है कि तुम खुद सीधी राह पर आ जाओ। क्या तुम मुझे राहे रास्त से भटकाना चाहते हो यह नामुमकिन है।

फिर जब चांद चमकता देखा बोले इसे मेरा रब बताते हो? जब वह भी डूब गया कहा अगर मेरा रब हिदायत न करता तो मैं इन्हीं गुमराहों में होता।

यानी यह चांद भी किसी के हुक्म का ताबेअ है इसकी चमक दमक भी कभी एक इलाक़ा पर कभी दूसरे पर यानी एक वक़्त में एक इलाक़ा को चमका रहा है तो दूसरा इसकी रौशनी से महरूम है तो ऐसी चीज़ जो खुद ही एक हाल पर न रह सके वह कैसे माबूद बन सकती है।

यह तो मुझ पर अल्लाह का फ़ैज़ान है जिसने मुझे सीधी राह पर चलाकर इस पर क़ायम रहने की तौफ़ीक़ फ़रमा दी वरना जिस क़ौम में हर तरफ़ बातिल राह पर चलने वाले ही नज़र आते हों वहां एक फ़र्द का हक़ पर क़ायम रहना कैसे मुमकिन है?

सूरज परस्तों ने आपको सूरज की इबादत की दावत दी कि यह तो बहुत ही रौशन है यह तो यक़ीनन बड़ा खुदा बनने के क़ाबिल है आपने उनका भी रद्द किया कि मैं शिर्क पर क़ायम रहने की किसी को जब इजाज़त नहीं देता तो मुझसे शिर्क की उम्मीद रखना तुम्हारी हिमाक़त है।

Scanned by CamScanner

फिर जब सूरज जगमगाता देखा बोले इसे मेरा रब कहते हो? यह तो इन सब से बड़ा है. फिर जब वह डूब गया कहा ऐ कौम मैं बेज़ार हूं उन चीज़ों से जिन्हें तुम शरीक ठहराते हो।

आपने जब सूरज को जगमगाते हुए देखा तो कौम को कहा कि इसे मेरा रब कहते हो सब से बड़ा समझकर इसे बड़ा खुदा मानते हो यह भी तो कभी एक इलाक़ा को जगमगा रहा है और दूसरे को अंधेरे में रखता है जब दूसरे इलाक़ा को रौशन करता है तो पहले इलाक़े को तारीकी में डुबा देता है। भला वह चीज़ जो खुद अपने महवर में घूमने के लिये किसी के हुक्म की पाबंद हो खुदा बन सकती है? नहीं नहीं, यह खुदा कभी भी नहीं बन सकती। ऐ मेरी कौम अल्लाह तआला से शरीक ठहराना छोड़ दो, मैं तो पहले ही बेज़ार हूं मुझसे तुम्हारी यह उम्मीद कि मैं भी तुम्हारे साथ माबूदाने बातिला को मानने में शरीक हो जाऊंगा बेसूद है।

आप अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि मेरी तवज्जोह का मर्कज़ तो सिर्फ़ ज़मीन व आसमान का ख़ालिक़ है मैं उसके साथ और कोई शरीक ठहराउं यह कैसे हो सकता है मैं कोई मुश्रिक तो नहीं।

कौम ने आपको बातिल माबूदों की मुख़ालफ़त से डराने की कोशिश की कि यह तुम्हें नुक़सान पहुंचायेंगे उनकी मुख़ालफ़त से बाज़ आ जाओ आप ने दो टूक अल्फ़ाज़ में जवाब दिया।

जिनको तुम (अल्लाह के साथ) शरीक ठहराते हो मुझे उनसे कोई डर नहीं।

इब्राहीम अलैहिस्सलाम का नमरूद से मुनाज़िरा : ऐ महबूब क्या तुमने न देखा था उसे जो इब्राहीम से झगड़ा उसके रब के बारे में इस पर कि अल्लाह ने उसे बादशाही दी।

इससे मुराद उस वक़्त का बादशाह है जिसका नाम नमरूद बिन कनआन इब्ने संजारेब है यही पहला बादशाह है जिसने ताज पहना और रियाया पर ज़ुल्म व सितम किया खुदाई का दावा किया सारे जहान की बादशाहत उसको मिली उसकी कुल उम्र आठ सौ बरस थी चार सौ साल अपनी बदशाही के रोब व दबदबा में गुज़ारे और चार सौ बरस मच्छर ने उसे काटा जो नाक के रास्ते उसके दिमाग़ में घुस गया था वह अपने सर पर जूते लगवाता रहा उसने अल्लाह तआला का मुक़ाबला करने के लिये बुलंद क़िला बनवाया था उसका दारुल ख़िलाफ़ा बाबुल में है।

तमाम रुए ज़मीन के चार बादशाह : जिनको कुल दुनिया की बादशाही हासिल रही हो वह सिर्फ़ चार शख़्स हैं दो मुसलमान और दो काफ़िर।

एक हज़रत सुलेमान अलैहिस्सलाम

दूसरे हज़रत सिकंदर ज़ुलकरनैन अलैहिस्सलाम

तीसरा नमरूद और चाथा शद्दाद बिन आद जिसका नाम बख़्तनसर था।

शद्दाद ने ही रब तआला के मुक़ाबिल अपनी खुदाई का दावा करते हुए अदन के जंगलात में अपनी जन्नत बनवाई थी। जन्नत जब तैयार हुई तो देखने के लिये गया, अभी उसके घोड़े ने अपने दोनों पावं को उसकी मसनूई जन्नत में रखा ही था कि इज़्राईल को हुक्म हुआ कि इसकी रूह कब्ज़ कर लो।

इब्राहीम अलैहिस्सलाम का नमरूद से मुनाज़िरा कब हुआ : कबीर और रूहुल मआनी में दो कौल नक़्ल किये गये हैं एक यह कि बुतों के तोड़ने के बाद और आग में डालने से पहले और

दूसरा क़ौल यह है कि आप जब आग से बाहर तशरीफ़ लाये तो उस वक़्त यह मुनाज़िरा हुआ। मुनाज़रा करने की वजह यह थी कि नमरूद ने इब्राहीम अलैहिस्सलाम से पूछा था कि तुम्हारा रब कौन सा है जिसकी मैं इबादत करूं?

इब्राहीम अलैहिस्सलाम की रब के मुताल्लिक़ दलील : जब कि इब्राहीम ने कहा कि मेरा रब वह है कि ज़िन्दा करता और मारता है।

यानी अजसाम में मौत व हयात को पैदा करता है एक ख़ुदा को न पहचानने वाले के लिये यह बेहतरीन हिदायत थी और उसमें बताया गया था कि ख़ुद तेरी ज़िन्दगी रब के वजूद की शहादत दे रही है कि तू एक बेजान नुत्फ़ा था जिसने इस नुत्फ़ा को इंसानी सूरत दी और हयात अता फ़रमाई वह रब है और ज़िन्दगी के बाद फिर अजसाम को जो मौत देता है वह परवर्दिगार है उसकी कुदरत की शहादत ख़ुद तेरी अपनी मौत व हयात में मौजूद है उसके वजूद से बेख़बर रहना कमाले जेहालत व सफ़ाहत और इंतेहाई बद नसीबी है।

यह दलील ऐसी ज़रबदस्त थी कि इसका जवाब नमरूद से न बन पड़ा और इस ख़्याल से कि मजमा के सामने उसको ला जवाब और शर्मिन्दा होना पड़ रहा है तो उसने कज बहसी (टेढ़ी बहस) इख़्तेयार की।

बोला मैं ज़िन्दा करता और मारता हूं।

नमरूद ने दो शख़्सों को बुलाया उनमें से एक को क़त्ल किया और एक को छोड़ दिया और कहने लगा कि मैं भी ज़िन्दा करता हूं और मारता हूं यानी किसी को गिरफ़्तार करके छोड़ देता हूं इसे ज़िन्दा करता हूं और किसी को क़त्ल करके मार देता हूं। यह उसकी निहायत अहमक़ाना बात थी, कहां क़त्ल करना और छोड़ना? और कहां मौत व हयात पैदा करना? क़त्ल किये हुए शख़्स को ज़िन्दा करने से आजिज़ रहना और बजाए उसके ज़िन्दा के छोड़ने को यह कहना कि मैं ज़िन्दा करता हूं उसकी ज़िल्लत के लिये काफ़ी था। अक्लमंदों पर तो ज़ाहिर हो गया था कि हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम की दलील क़वी और क़तई है। इसका जवाब मुमकिन नहीं।

नमरूद ने जो दलील क़ायम की थी उसमें दावा भी पाया गया था तो इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने उस पर मुनाज़राना गिरफ़्त फ़रमाई कि ऐ झूटे मुद्दइए अलूहियत मौत व हयात पैदा करना तेरी कुदरत में कहां बल्कि इसका तसव्वुर भी नहीं कर सकता इससे आसान काम करके दिखा।

इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया बेशक अल्लाह सूरज को मश्रिक़ से लाता है तू इसको मग़्रिब से ले आ तो होश उड़ गये काफ़िर के। वह अल्लाह राह नहीं दिखाता ज़ालिमों को।

वह काफ़िर रब की तरफ़ से हैरान कर दिया गया वरना इसमें भी वह कज बहसी (टेढ़ी बहस) इस तरह कर सकता था कि सूरज को मश्रिक़ से तो मैं लाता हूं तुम अपने ख़ुदा से कहो कि वह मग़्रिब से लाये। लेकिन अल्लाह तआला ने उसे मबहूत करके ला जवाब कर दिया, वह इस तरह ज़लील हुआ।

जब उससे कोई जवाब न बन सका तो कहने लगा मेरे पास तुम्हारे लिये कोई ग़ल्ला नहीं तुम अपने रब से मांगो वही तुम्हें ग़ल्ला दे जिसकी तुम इबादत करते हो।

रेत ग़ल्ला बन गई : इब्राहीम अलैहिस्सलाम उससे वापस लौटते हुए रास्ते में रेत के टीले

Scanned by CamScanner

पर रुके वहां से एक थैले में रेत भरकर मकान पर पहुंचे थैला रखकर सो गये आपकी ज़ौजा हज़रत सारा ने उसे खोला तो उसमें निहायत नफ़ीस गंदुम था आपने उसे पीसकर रोटियां तैयार कीं जब हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम जागे तो आपकी ख़िदमत में खाना पेश किया गया आपने पूछा कि यह गंदुम कहां से आई है तो आपकी ज़ौजा ने अर्ज़ किया वही जो आप थैला भरकर लाये हैं तो आप समझ गये कि रब तआला ने मुझे रिज़्क़ दिया है।

नमरूद एक मर्तबा फिर ईमान लाने से महरूम : अल्लाह तआला ने ज़ालिम नमरूद के पास इंसानी शक्ल में एक फ़रिश्ता भेजा जिसने आकर कहा तेरा रब कहता है तू मुझ पर ईमान ला, हम तेरी सल्तनत बर क़रार रखेंगे। वह बोला रब तो मैं ही हूं मेरा रब कौन है? तीन दफ़ा यह वाक़िया दरपेश आया लेकिन वह ईमान लाने से महरूम रहा।

नमरूद और उसकी कौम का अंजाम : नमरूद की कौम पर मच्छरों का अज़ाब भेजा गया, मच्छरों की ज़्यादती का यह हाल था कि उनसे सूरज छुप गया था, ज़मीन पर धूप न आती थी, मच्छरों ने उनके ख़ून चूस लिये, गोश्त चाट लिये, सिवाए नमरूद की बाक़ी सब के हड्डियां ही बाक़ी रह गईं। नमरूद देखता था मगर कुछ न कर सकता था, फिर एक मच्छर उसकी नाक के ज़रिये दिमाग़ में घुस गया और चार सौ साल तक मग़्ज़ चाटता रहा, जब ऊपर से धमक पहुंचती तो काटना छोड़ देता वरना काटता। चुनांचे दिन रात उसके सर पर जूते और थप्पड़ पड़ते रहते थे। अब उसके दरबार का अदब यह था कि जो आए उसके सर पर जूता रसीद करे। इससे पहले चार सौ साल बहुत आराम से सल्तनत की और चार सौ बरस पिटता रहा फिर ज़िल्लत से मरा, उसकी उम्र आठ सौ बरस से कुछ ही ज़्यादा हुई।

इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने मुर्दों को ज़िन्दा होते देखना चाहा : और जब अर्ज़ की इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने ऐ मेरे रब मुझे दिखा दे तू क्यों कर मुर्दा ज़िन्दा करेगा फ़रमाया क्या तुझे यक़ीन नहीं। अर्ज़ किया यक़ीन क्यों नहीं मगर मैं यह चाहता हूं कि मेरे दिल को क़रार आ जाये।

इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने मुर्दों को ज़िन्दा करने का सवाल क्यों किया? : इमाम राज़ी रहमतुल्लाह अलैहि ने इसकी सतरहा वजूह ब्यान फ़रमाई हैं लेकिन अल्लामा नूवी रहमतुल्लाह अलैहि ने चार के मुताल्लिक़ ब्यान फ़रमाया कि यह ज़ाहिर और वाज़ेह हैं और बाक़ी वजूह ग़ैर ज़ाहिर हैं।

पहली वजह : आपको पहले इल्म इस्तिदलाली हासिल था अब आप मुर्दों को ज़िन्दा करने की कैफ़ियत का मुशाहिदा करना चाहते थे ताकि इल्म ज़रूरी बदीही भी हासिल हो जाये। इसलिये कि इमाम अबू मंसूर रहमतुल्लाह अलैहि का मज़हब यह है कि इल्म इस्तिदलाली में कभी शकूक वाक़ेय होते हैं लेकिन इल्म ज़रूरी शकूक से पाक होता है जो इल्म मुशाहिदा से अयानन हासिल हो वह ज़रूरी होता है।

ख़्याल रहे कि ख़ुद नबी के लिये इल्म इस्तिदलाली या ज़रूरी में फ़र्क़ नहीं होता क्योंकि नबी का इल्म शक से पाक होता है अलबत्ता सवाल करने की वजह यह थी कि किसी को भी यह कहने का हक़ न हो कि तुमने तो मुर्दों को ज़िन्दा होते देखा नहीं तुम्हारे इल्म पर कैसे यक़ीन किया जाये।

दूसरी वजह : आप यह जानना चाहते थे कि मेरा मर्तबा अल्लाह के नज़दीक क्या है और मेरी दुआ की कबूलियत का क्या मकाम है इस सूरत में मतलब यह होगा क्या तुम्हें यक़ीन नहीं तुम्हारा मर्तबा मेरे नज़दीक अज़ीम है तुम मेरे पसंदीदा हो और तुम मेरे ख़लील हो।

तीसरी वजह : आपको पहले भी शक नहीं था आपने सवाल इसलिये किया ताकि इल्मुल यक़ीन की तरफ़ तरक़्क़ी हो जाये क्योंकि इन दोनों में बहुत बड़ा फ़र्क़ है इसलिये कि ऐनुल यक़ीन मुशाहिदा के बाद हासिल होता है लेकिन इल्मुल यक़ीन में मुशाहिदा की ज़रूरत नहीं।

चौथी वजह : जब आपने मुश्रीकीन पर यह दलील क़ायम फ़रमाई मेरा रब वह है जो ज़िन्दा करता है और मारता है। फिर आपने अल्लाह तआला से अर्ज़ किया ऐ अल्लाह तू किस तरह मुर्दे को ज़िन्दा करता है? यानी उनको मेरे सामने ज़िन्दा कर मैं देखूं ताकि मेरी दलील काफ़िरों पर ज़ाहिर हो जाये।

एतेराज़ : हदीस शरीफ़ में तो आता है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया हम इब्राहीम अलैहिस्सलाम से शक करने में ज़्यादा हक़ रखते हैं। इससे तो पता चलता है कि आपने मुर्दों को ज़िन्दा करने का सवाल शक की वजह से किया था यानी आपको यक़ीन नहीं था।

जवाब : हदीस पाक के तर्जमा और समझने में लोग ग़लती करते हैं हदीस पाक का यह मतलब नहीं जो एतेराज़ करने वाले पेश करते हैं हदीस पाक के तर्जमा और वज़ाहत की तरफ़ तवज्जोह करें मतलब खुद वाज़ेह हो जायेगा।

हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से मरवी है बेशक नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया अगर इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने शक किया होता तो हम बनिसबत इब्राहीम अलैहिस्सलाम के शक करने का ज़्यादा हक़ रखते। जब अर्ज़ की इब्राहीम ने ऐ मेरे रब मुझे दिखा दे तू मुर्दे किस तरह ज़िन्दा फ़रमायेगा क्या तुझे यक़ीन नहीं अर्ज़ कि क्यों नहीं मगर यह चाहता हूं कि मेरे दिल को क़रार आ जाये।

इस हदीस पाक का यह मतलब नहीं कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने यह फ़रमाया कि हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने अल्लाह तआला के मुर्दों को ज़िन्दा करने में शक किया था और हमें उनकी निसबत ज़्यादा शक है बल्कि इस हदीस पाक का तर्जमा जो ब्यान किया है इसी से मतलब वाज़ेह हो रहा है ताहम ज़्यादती वज़ाहत के लिये अल्लामा नूवी रहमतुल्लाह अलैहि ने इस हदीस पाक की शरह ब्यान की है इससे एक क़ौल ब्यान किया जा रहा है, आप फ़रमाते हैं नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के इस इरशाद : "अगर इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने शक किया होता तो हम बनिस्बत इब्राहीम अलैहिस्सलाम के शक करने का ज़्यादा हक़ रखते के मायने ब्यान करने में उलेमा के बहुत अक़्वाल हैं लेकिन सबसे हसीन और सहीह क़ौल वह है जो इमाम अबू इब्राहीम मज़नी और उलेमा की कई जमाअतों ने ब्यान फ़रमाया है वह यह है।

इस हदीस पाक का मतलब यह है कि इब्राहीम अलैहिस्सलाम का शक करना महाल है अगर अल्लाह तआला के मुर्दों को ज़िन्दा करने में अंबियाए किराम अलैहिमुस्सलाम से शक वाक़ेय हो

सकता तो ब-निसबत इब्राहीम अलैहिस्सलाम के शक करने में मैं ज़्यादा हक़ रखता और तहक़ीक़ तुम्हें यक़ीनन मालूम है कि मुझे मुर्दों को ज़िन्दा करने में कोई शक नहीं तुम्हें यक़ीनन इस अम्र का भी इल्म होना चाहिये कि बेशक इब्राहीम अलैहिस्सलाम को इस में कोई शक नहीं था।

ख़्याल रहे कि इस हदीस पाक में नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम की फ़ज़ीलत ब्यान की और इज्ज़ व इंकिसारी से अपने आपको उनसे कम मर्तबा ब्यान किया वरना दूसरे मक़ाम पर हक़ीक़त ब्यान करते हुए तमाम कायनात पर अपनी फ़ज़ीलत भी ब्यान की है।

मुर्दे ज़िन्दा होते हुए इब्राहीम अलैहिस्सलाम को दिखा दिये: फ़रमाया अच्छा परिन्दे लेकर अपने साथ मानूस कर लो फिर उनका एक एक टुकड़ा हर पहाड़ पर रख दो फिर उन्हें बुलाओ तुम्हारे पास चलते आयेंगे पावं से दौड़ते और जान लो कि अल्लाह ग़ालिब हिकमत वाला है।

हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने चार परिन्दे यानी मोर, गिद्ध, (एक रिवायत में गिद्ध की जगह कबूतर का ज़िक्र है) कौआ और मुर्ग़ अपने साथ पहले मानूस किये फिर अल्लाह तआला के हुक्म के मुताबिक़ उनके टुकड़े किये और उनके गोश्त और हड्डियां वग़ैरह को मिला करके चार पहाड़ों पर उनको रख दिया।

फिर आपने उन्हें पुकारा:

ऐ जुदा जुदा हड्डियो! ऐ अलग अलग गोश्त के टुकड़ो, ऐ काटी हुई रगो, एक दूसरे से मिल जाओ, ताकि अल्लाह तआला तुम्हारी रूहों को तुम में लौटा दे।

यह सुनकर हड्डियां अपनी दूसरी हड्डियों की तरफ चलीं यानी हर परिन्दे की अपनी अपनी हड्डियां एक दूसरी से मिल गई। पर दूसरे परों से जा मिले। गोश्त के टुकड़े दूसरे टुकड़ों से मिलने लगे यहां तक कि ख़ून से ख़ून मिल गया।

इस तरह आप देख रहे थे कि आपके सामने मुर्दों को जिन्दा करके आपको ऐनुल यक़ीन का मर्तबा अता कर दिया गया। फिर अल्लाह तआला ने आपकी तरफ़ वही की कि इब्राहीम तुमने मुझसे सवाल किया था कि तू मुर्दों को कैसे ज़िन्दा करता है? बेशक मैंने ज़मीन को पैदा किया है इसमें चार क़िस्म की हवायें क़ायम की हैं।

१. शिमाल जानिब से चलने वाली हवा।

२. जुनूबी जानिब से चलने वाली हवा।

३. बादे सबा।

४. बादे बोर।

यहां तक कि जब क़यामत का दिन होगा तमाम मुर्दे और मक़तूल सूर फूंकने पर जमा हो जायेंगे, जैसे उन चार परिन्दों को तुम्हारे सामने पहाड़ों से जमा कर दिया गया है। मेरे सामने तुम तमाम का पैदा करना और फिर मौत के बाद ज़िन्दा करना ऐसे ही है जिस तरह किसी एक शख़्स को पैदा करना या ज़िन्दा करना है।

तंबीह : बाज़ अहले इल्म ने ब्यान किया है कि चार परिन्दों के सभी अजज़ा मिलाकर पहाड़ों पर रखे गये थे, आपने जब अल्लाह के इज़्न से उनको बुलाया तो वह ज़िन्दा होकर आपके पास

दौड़ते हुए आ गये। मानूस करने में हिकमत भी यही थी कि आप उनके आने पर पहचान लें कि यह वही परिन्दे हैं जो मैंने अपने साथ हिला मिला लिये थे।

और बाज़ ने कहा कि आपने उनके सिरों को अपने पास रख लिया था आपके बुलाने पर उनके तमाम अज्ज़ा अपने अपने अज्ज़ा से मिल कर अपने अपने सिरों से आकर मिल गये। अल्लाह तआला की कुदरत से कोई सूरत भी बईद नहीं जो सूरत भी हो कुदरत की अजीब निशाणी का ज़हूर है।

तमाम जानवरों से परिन्दों का इंतेख़ाब क्यों: हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम को चार परिन्दे मानूस करने का हुक्म दिया और हैवानों का हुक्म नहीं दिया इसकी क्या वजह है? इसकी दो वजहें हैं। एक यह कि परिन्दों को अल्लाह तआला ने फ़िज़ा में उड़ने और हवा में बुलंद होने की ताक़त अता फ़रमाई है और हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम को भी ऊंचा मक़ाम यानी मरातिब की बुलंदी और मलकूत तक पहुंचने की हिम्मत अता फ़रमाई है इसलिये परिन्दों को ज़िबह करने और गोश्त को मिला जुला कर रखने का हुक्म दिया ताकि आपका मोजिज़ा आपके मरातिब के मुशाबेह हो जाये।

दूसरी वजह यह है कि हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने जब परिन्दों को ज़िबह कर दिया और उनको टुकड़े टुकड़े कर दिया और मिला जुलाकर पहाड़ों की चोटियों पर रख दिया। फिर उनको बुलाया तो तमाम टुकड़े मिले जुले गोश्त से जुदा होकर अपने अपने टुकड़ों से मिल गये। क़यामत के दिन भी इसी तरह तमाम बिखरे हुए ज़र्रात जमा हो जायेंगे और उनसे बदन मअरिज़े वजूद में आयेंगे, उनकी रूहें उनसे मिल जायेंगी। अल्लाह तआला का इरशादे गिरामी इसकी ताईद कर रहा है।

नीची आंखें किये हुए क़ब्रों से निकलेंगे गोया वह टिड्डी हैं फैली हुई।

चार का हुक्म देने की वजह : इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने सिर्फ़ मुर्दा को ज़िन्दा होते हुए देखने की दरख़्वास्त की लेकिन मालिकुल मुल्क ने कहा: ऐ मेरे ख़लील तुमने तो अपनी उबूदियत के पेशे नज़र एक मुर्दा को ज़िन्दा होते देखना चाहा लेकिन मैं अपनी रबूबियत की वजह से तुम्हें चार मुर्दा को ज़िन्दा करके दिखाता हूं।

दूसरी वजह यह थी कि हैवानात वग़ैरह अनासिर अरबअ़ यानी आग, मिट्टी, पानी हवा से मुरक्कब हैं। इसलिये चार को ज़िबह करने का हुक्म दिया कि मैं जिस तरह इन चार को ज़िन्दा कर रहा हूं ऐसे ही तमाम अनासिर अरबअ के मुरक्कबात को ज़िन्दा करूगा।

सब परिन्दों में से चार को ख़ास करने की वजह : तमाम परिन्दों में से मोर, गिद्ध, मुर्ग़ और कौओ को मुन्तख़ब करने की वजह यह है कि इंसान को ज़ीनत, मर्तबा, बुलंद मरातिब से मुहब्बत है और यह औसाफ़ मोर में भी पाये जाते हैं। अल्लाह तआला ने फ़रमाया:

ख़्वाहिशात की मुहब्बत को लोगों के लिये मुज़य्यन कर दिया गया है।

इंसान जिस तरह ज़्यादा खाने से शग़फ़ रखता है उसी तरह गिद्ध को भी खाने से ही ज़्यादा काम होता है। इसी तरह इंसान को फ़ुर्ज की ख़्वाहिशात पूरी करने से जिस तरह काम होता है उसी तरह मुर्ग़ में भी यह वस्फ़ पाया जाता है इंसान माल तलब करने और जमा करने का ज़्यादा

Scanned by CamScanner

हरीस होता है उसी तरह कौआ भी माल की तलब और जमा करने का हरीस होता है। क्योंकि सिवाए कौए के रात को उड़ने वाला कोई परिन्दा नहीं है और सख़्त सर्दी में दिन को सिर्फ़ कौआ ही निकलता है।

इन चार को मुन्तख़ब करने में इस हिकमत की तरफ़ इशारा है कि इंसान जब तक ख़्वाहिशाते नफ़सानिया और ख़्वाहिशाते फ़ुर्ज और माल की हिर्स और ज़ेब व ज़ीनत को ख़त्म नहीं करेगा उस वक़्त तक उसके दिल पर रूहानियत का असर नहीं होगा और न ही उसे अल्लाह तआला के जलाल के नूर से राहत हासिल होगी।

हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम का हिजरत करना : और इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने कहा मैं जा रहा हूं जहां मेरे रब ने हुक्म दिया है वही मेरी रहनुमाई फ़रमायेगा।

रब तआला के इरशाद 'इला रब्बी' का मतलब ब्यान करते हुए अल्लामा आलूसी रहमतुल्लाह अलैहि फ़रमाते हैं।

यानी जहां मेरे रब ने हुक्म दिया है मैं वहां जा रहा हूं कि मैं वहां अपनी इबादत को बेहतर तरीक़े से अदा कर सकूंगा। क्योंकि जो क़ौम मेरी निशानियां देखकर भी ईमान न लाई वहां ठहरना अब बे मक़सद है और जब अल्लाह तआला ने भी हुक्म दे दिया है तो अब यहां से हिजरत करना ज़रूरी हो चुका है।

इब्तेदाई तौर पर आप नमरूदी क़ौम से हिजरत करके अपने चचा हारान के पास हिरान में आ गये। हारान ने इब्राहीम अलैहिस्सलाम की नेक बख़्ती देखकर अपनी बेटी सारा का निकाह आपसे कर दिया।

हज़रत सारा बहुत ही ख़ूबसूरत औरत थीं, मर्दों में हज़रत यूसुफ़ और औरतों में हज़रत सारा बहुत हसीन हुए, बल्कि हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम को अपनी दादी हज़रत सारा के हुस्न से ही हुस्न मिला था।

हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने वहां भी अपना सिलसिलए तबलीग़ जारी रखा इसलिये आपके चचा हारान ने भी आप को घर से निकाल दिया। दौराने हिजरत रास्ते में मिस्र के ज़ालिम बादशाह का वाक़िया दरपेश आया और हज़रत सारा को हज़रत हाजरा अता की गई। यह वाक़िया एक हदीस पाक की वज़ाहत के ज़िम्न में पहले ब्यान किया जा चुका है।

हिजरत करने वाला क़ाफ़िला जब हिरान से चला था सिर्फ़ तीन आदमियों पर मुश्तमिल था, हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम, हज़रत सारा और हज़रत लूत अलैहिस्सलाम, इस क़ाफ़िला के अफ़राद, अल्लाह तआला की वहदानियत को मानने वाले उस वक़्त सिर्फ़ यही थे। चलते वक़्त हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम और हज़रत सारा का मुआहिदा हुआ था कि एक दूसरे की बात को माना जायेगा। रास्ते में जब हज़रत हाजरा भी मिल गई तो अब क़ाफ़िला के चार फ़र्द हो गये जो तमाम ही अल्लाह को मानने वाले थे।

फ़िलिस्तीन में ख़ुशहाली : मिस्र से जब यह चार अफ़राद रवाना होकर फ़िलिस्तीन पहुंचे तो वहां के लोगों ने उनकी क़दर व मंज़िलत को समझा और उनके आने को बाइसे बर्कत समझा और बहुत सी ज़मीन आपकी ख़िदमत में बतौर नज़्र पेश की। इस ज़मीन में खेती बाड़ी से अल्लाह

तआला ने बहुत बर्कत अता फ़रमाई, आपके पास गल्ला और जानवर काफ़ी मिक़दार में हो गये, आपने मुसाफ़िरों और गुरबा को रहने और खाने की सहूलियात अता कीं। इस तरह मेहमान नवाज़ी में आपको एक मुनफ़रिद मक़ाम हासिल हो गया।

हज़रत सारा के मश्वरे से हज़रत हाजरा से निकाह : एक दिन हज़रत सारा ने अर्ज़ किया कि हमारे पास अल्लाह तआला के फ़ज़्ल व करम से ज़रूरयाते दुनिया में यानी खाने पीने की अशिया और रहने के मकानात की तो कोई कमी नहीं। अलबत्ता औलाद की कमी है, इसलिये आप हाजरा से निकाह कर लें हो सकता है कि अल्लाह ताला हमें औलाद से नवाज़ दे यानी हाजरा के बतन से पैदा होने वाला बच्चा हमारे लिये तस्कीन व राहत का सबब बन जाये इस तरह हज़रत सारा के कहने पर हज़रत हाजरा से निकाह हो गया।

इब्राहीम अलैहिस्सलाम की औलाद के लिये दुआ : इलाही मुझे लायक़ औलाद दे।

अल्लाह तआला ने आपकी इस दुआ को शर्फ़ क़बूलियत बख़्शते हुए इरशाद फ़रमाया:

तो हमने उसे खुशख़बरी सुनाई एक बुर्दबार लड़के की।

इस बशारत से मुराद हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम की विलादत की बशारत है क्योंकि अल्लामा आलूसी, हलीम, की तफ़सीर करते हुए फ़रमाते हैं:

यानी आपको बशारत दी गई कि आप को एक बेटा अता किया जायेगा जो हलीम होगा इससे बढ़कर हिल्म की और क्या मिसाल मिलेगी जब आप बलूग़ के क़रीब थे तो आपके वालिद ने आपको कहा कि मैं तुम्हें ख़्वाब में ज़िबह करते हुए अपने आपको देख रहा हूं इस में तुम्हारी क्या राए है? तो आपने अर्ज़ किया कि आप मुझे इंशाअल्लाह साबिरों में से पायेंगे।

इस्माईल अलैहिस्सलाम के बाद इस्हाक़ अलैहिस्सलाम की बशारत : तो हम ने उसे (हज़रत सारा) को इस्हाक़ की खुशख़बरी दी और इस्हाक़ के पीछे याकूब की।

हज़रत सारा को बशारत देने की वजह यह थी कि औलाद की खुशी औरतों को बनिस्बत मर्दों के ज़्यादा होती है। और दूसरी वजह यह थी:

कि हज़रत सारा की औलाद नहीं थी इसलिये ज़्यादा खुशी उनको ही हासिल हुई थी क्योंकि हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम के फ़रज़न्द इस्माईल पहले पैदा हो चुके थे।

हज़रत याकूब अलैहिस्सलाम की बशारत देने से इस तरफ़ इशारा था कि सारा की उम्र इतनी बड़ी होगी कि यह अपने इसहाक़ के बेटे याकूब को भी देखेंगी।

हज़रत सारा रज़ियल्लाहु अन्हा की उम्र उस वक़्त नब्बे साल थी, तफ़सीर जलालैन में ९९ साल मज़कूर है और हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम की एक सौ बीस साल थी, इसी लिये हज़रत सारा रज़ियल्लाहु अन्हा ने ताज्जुब करते हुए कहा था:

अजीब बात है कि मेरा बच्चा पैदा होगा, जब कि मैं बूढ़ी हूं और मेरे शौहर बूढ़े हैं बेशक यह तो बहुत ही ताज्जुबनाक बात है।

इस्हाक़ अलैहिस्सलाम छोटे और इस्माईल अलैहिस्सलाम बड़े : इस्हाक़ अलैहिस्सलाम की बशारत देने के एक साल बाद अल्लाह तआला ने उन्हें पैदा फ़रमा दिया और इस्माईल अलैहिस्सलाम की पैदाईश के चौदह साल बाद इस्हाक़ अलैहिस्सलाम की पैदाईश हुई यानी इनकी

Scanned by CamScanner

पैदाइश के तेरह साल बाद इस्हाक़ अलैहिस्सलाम की विलादत हो गई।

हज़रत इस्माईल, इस्हाक़, याकूब अलैहिमुस्सलाम नबी हुए : और हमने उसे (इब्राहीम अलैहिस्सलाम को) इस्हाक़ और याकूब अता किये और हर एक को ग़ैब की ख़बरें बताने वाला (नबी) किया।

और हमने उन्हें अपनी रहमत अता की और उनके लिये सच्ची बुलंदी नामवरी रखी।

इसमें इशारा है कि हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम की उम्र शरीफ़ इतनी लंबी हुई कि आप ने अपने पोते हज़रत याकूब अलैहिस्सलाम को देखा और इस आयत से यह भी समझ आता है कि अल्लाह तआला के लिये हिजरत करने और अपने घर बार को छोड़ने की यह जज़ा मिली कि अल्लाह तआला ने आपको बेटे, पोते और माल व दौलत से नवाज़ा।

और किताब में इस्माईल को याद करो बेशक वह वादा का सच्चा था ग़ैब की ख़बरें बताता और अपने घर वालों को नमाज़ और ज़कात का हुक्म देता और अपने रब को पसंद था।

हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम ने जो वादा भी किया उसे ज़रूर पूरा किया फ़रमाया एक मर्तबा आप और आपका एक साथी कहीं जा रहे थे तो शहर के क़रीब पहुंच कर आपके साथी ने कहा यहां मैं बैठता हूं और तुम शहर जाकर खाना ख़रीद कर लाओ या तुम बैठो मैं खाना ख़रीद कर लाता हूं आपने फ़रमाया मैं तुम्हारा यहां इंतेज़ार करूंगा और तुम ही चले जाओ खाना ख़रीद लाओ वह गया और भूल गया तीन दिनों के बाद उसे याद आया, या बाज़ रिवायात में है कि एक साल के बाद वहां लौटा तो हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम वहां ही मौजूद थे। उसने ताज्जुब से पूछा तुम अभी यहां ही हो, आपने फ़रमाया हां वादा के मुताबिक़ मुन्तज़िर तो रहना ही था।

हज़रत हाजरा और इस्माईल अलैहिमस्सलाम को हरम की ज़मीन में छोड़ना : हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम का अल्लाह तआला ने इम्तेहान लिया कि आपको हुक्म दिया कि आप अपनी ज़ौजा और अपने बेटे इस्माईल को हरम की सर ज़मीन में छोड़ आओ, उस वक़्त वहां कोई शहर और आबादी नहीं थी बल्कि ब्याबान जंगल था, आप को वहां छोड़ने का हुक्म देने में एक तो इम्तेहान लेना मक़सूद था फिर काबा शरीफ़ की तामीर और मक्का मुकर्रमा को आबाद करना मक़सूद था। और हज़रत सारा से हिजरत के वक़्त जो वादा किया था कि तुम्हारी बात मानी जायेगी उस वादा का पास कराना भी मक़सूद था, क्योंकि आपने पहले तो हाजरा से निकाह करने का मश्वरा दिया लेकिन हज़रत इस्माईल की पैदाईश के बाद अपनी औलाद न होने पर ग़ैरत भी खाई और अल्लाह के हुज़ूर दरख़्वास्त की कि इब्राहीम को हुक्म दो कि वह अपने इस बेटे और अपनी ज़ौजा हाजरा को मुझसे दूर छोड़ दें, अल्लाह तआला ने उनकी दुआ कबूल करते हुए आपको हुक्म दिया कि आप उनको हरम की सर ज़मीन में छोड़ आओ।

जहां आज ज़मज़म है वहां एक दरख़्त था उस वक़्त न मक्का था और न ही किसी इंसान का वहां बसेरा था और वहां पानी भी नहीं था आपने एक थैले में कुछ खजूरें और एक मश्कीज़ा में कुछ पानी मां–बेटे के हवाले करते हुए और उनको ज़मज़म की जगह एक दरख़्त के नीचे छोड़ते हुए वापस लौटे तो हज़रत हाजरा ने आपका पीछा करते हुए पूछा: ऐ इब्राहीम! आप हमें यहां छोड़ कर कहां जा रहे हैं? यहां कोई हमारा ग़मख़्वार, मोनिस व हमदम नहीं और न ही यहां

कोई आबादी है कि खाने पीने की चीज़ मिल जाये कई मर्तबा हाजरा के पूछने पर भी आपने कोई जवाब न दिया तो फिर हज़रत हाजरा ने पूछा क्या अल्लाह तआला ने आपको यह हुक्म दिया है? आपने फ़रमाया हां तो हज़रत हाजरा ने कहा:

अच्छा हमें अल्लाह तआला ज़ाया नहीं करेगा, यह कहते हुए वापस अपनी जगह पर लौट आईं।

हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम एक घाटी के पास पहुंचे जहां से आपको अपनी जौजा और बेटा नज़र नहीं आ रहे थे आप ने बैतुल्लाह शरीफ़ की तरफ़ तवज्जोह की उस वक़्त सिर्फ़ बैतुल्लाह की बुनियादें एक टीला की मानिंद नज़र आती थीं और दुआ की।

ऐ हमारे रब मैं ने बसा दिया है अपनी कुछ औलाद को इस वादी में जिसमें खेती बाड़ी नहीं तेरे हुरमत वाले घर के पड़ोस में ऐ हमारे रब यह इसलिये ताकि वह नमाज़ क़ायम करें पस कर दे लोगों के दिलों को कि वह शौक़ व मुहब्बत से उनकी तरफ़ माइल हों और उन्हें रिज़्क़ दे फलों से ताकि वह तेरा शुक्र अदा करें।

हज़रत हाजरा अपने बच्चे हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम को दूध पिलाती रहीं यहां तक कि मश्कीज़ा में जो पानी था वह ख़त्म हो गया और खजूरें भी ख़त्म हो गईं हज़रत हाजरा भी भूकी प्यासी हो गईं दूध का बनना भी ख़त्म हो गया बच्चा भी भूख प्यास से परेशान हाल था अपने होंटों पर ज़बान फेरने लगा बच्चा का यह हाल मां से बर्दाश्त न हो सका आप क़रीब एक पहाड़ी सफ़ा पर चढ़ती हैं कि कहीं से पानी का पता चल जाये या कोई इंसान नज़र आये फिर इसी ख़्याल से मरवा पर आती हैं दर्मियान में नशेबी जगह जब पहुंती हैं जहां से बच्चा नज़र नहीं आता वहां दौड़ती हैं जब नशेबी जगह को उबूर कर लेती हैं और ऐसी जगह पहुंचती हैं जहां से बच्चा नज़र आने लगता है तो वहां आहिस्ता हो जाती हैं। मरवा पर पहुंचकर भी पानी या कोई इंसान नज़र नहीं आता आप बेक़रारी के आलम में फिर सफ़ा पर फिर मरवा पर सात चक्कर ऐसे ही लगा देती हैं आख़िरी मर्तबा मरवा पर आपने एक आवाज़ सुनी, अपने आपको कहने लगीं ख़ामोश ख़्याल किया शायद मेरे औसान ख़ता हो गये, यहां कौन है? यह मुझे वैसे ही आवाज़ आ रही है। फिर दोबारा आवाज़ सुनने पर कहा कि अगर यहां कोई फ़रियाद को सुनकर पहुंचने वाला हो सकता है तो फ़रिश्ता ही हो सकता है देखा तो बच्चे के क़रीब एक फ़रिश्ता खड़ा है, इस्माईल की ऐड़ी के पास उसने अपनी ऐड़ी या पर मारा, या हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम के ऐड़ी रगड़ने से पानी का एक चश्मा जारी हो गया, हज़रत हाजरा ने पानी के इर्द गिर्द बंद बांधकर एक हौज़ की शक्ल दे दी वह पानी जोश मार रहा था, आपने खुद भी पिया बच्चे को भी पिलाया और पानी को कहा। "ज़म ज़म" रुक जा। रुक जा नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया:

अल्लाह तआला इस्माईल अलैहिस्सलाम की वालदा पर रहम करे अगर आप ज़मज़म को इसी तरह रहने देतीं या आप ने फ़रमाया अगर आप इससे जल्दी से चुल्लू न भरतीं तो ज़मज़म जारी चश्मा होता।

इसी तरह आप रज़ियल्लाहु अन्हु ने जब चश्मा से पानी पिया तो आपका दूध भी जारी हो

Scanned by CamScanner

गया जो बच्चा को पिलाया, फ़रिश्ते ने आपको कहा।

तुम कोई ख़ौफ़ न करो कि तुम ज़ाया हो जाओगी बेशक यहां बैतुल्लाह है इस की तामीर यह बच्चा और इसका बाप करेंगे बेशक अल्लाह तआला अपने मुक़र्रबीन के अज्र को ज़ाया नहीं करता।

कुछ देर के बाद वहां से जरहम क़बीला का गुज़र हुआ जिन्होंने देखा कि परिन्दे उड़ रहे हैं उन्होंने ख़्याल किया कि परिन्दे वहां ही होते हैं जहां पानी हो यक़ीनन यहां कहीं पानी होगा, उन्होंने अपने एक शख़्स को भेजा जिसने देखा कि एक पानी का चश्मा हैं और उसके क़रीब एक औरत बैठी हुई है उन्होंने कहा तुम हमें पानी में शरीक करो तो हम तुम्हें अपने जानवरों के दूध में शरीक करेंगे हज़रत हाजरा ने उनसे इस शर्त पर मुआहिदा कर लिया। इसी जरहम क़बीला ने एक लड़की का निकाह इस्माईल अलैहिस्सलाम से कर दिया।

फ़ायदा : हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम की दुआ के असरात आज भी वाज़ेह तौर पर नज़र आ रहे हैं कि मक्का की सर ज़मीन पहाड़ी और रेतीली है लेकिन फल हर क़िस्म के आला से आला वहां मौजूद रहते हैं लोग हर तरफ़ से इस मक़ाम पर खिंचे चले आते हैं हर मुसलमान के दिल में एक तड़प पाई जाती है कि वह बैतुल्लाह की ज़ियारत कर ले।

हज़रत हाजरा रज़ियल्लाहु अन्हा तो बच्चा की प्यास को देखकर बे क़रार होकर सफ़ा व मरवा के चक्कर लगा रही थीं लेकिन अल्लाह तआला को अपने ख़लील की ज़ौजा और इस्माईल की वालदा की अदा ऐसी पसंद आई कि ता क़यामत हाजी इस याद को ताज़ा करने के लिये वहां चक्कर लगाते रहेंगे।

हक़ीक़त यह है कि हज अल्लाह के मक़बूल बंदों की अदा के बग़ैर कुछ नहीं। नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और सहाबा किराम की याद को ताज़ा करने के लिये तवाफ़ में पहलवानों की तरह अकड़ कर चलना, हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम की याद को ताज़ा करने के लिये मिना में जमरात को कंकरियां मारना इस क़िस्म के काम ही हज हैं।

हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम की क़ुरबानी : हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने हिजरत के बाद बेटे के लिये दुआ की कि ऐ अल्लाह मुझे नेक औलाद अता फ़रमा।

इलाही मुझे नेक लायक़ औलद दे तो हमने उसे ख़ुशख़बरी सुनाई एक बुर्दबार लड़के की।

आपकी दुआ में तीन मुतालबे थे ऐ अल्लाह औलादे नरीना यानी मुज़क्कर अता फ़रमा, और वह बुर्दबारी की उम्र तक पहुंचे और बुर्दबार ही रहे। इब्राहीम अलैहिस्सलाम भी हलीम हैं आपकी शान में अल्लाह तआला ने फ़रमाया:

बेशक इब्राहीम बहुत आहें करने वाले मुतहम्मिल बुर्दबार हैं।

आपको बेटा भी हलीम अता किया ताकि बेटा भी बाप की तरह शर्फ़ व फ़ज़ीलत वाला हो और जलीलुल क़द्र नबी हो। सलाह यानी नेकी और अल्लाह तआला का क़ुर्ब बहुत ही अच्छी सिफ़त है इसलिये इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने बेटे के लिये भी यही दुआ की और अपनी ज़ात के लिये भी दुआ करते हुए अर्ज़ किया:

ऐ मेरे रब मुझे हुक्म अता फ़रमा और मेरे रब मुझे उनसे मिला जो तेरे क़ुर्ब के लायक़ हैं।

फिर जब वह उसके साथ काम के काबिल हो गया कहा ऐ मेरे बेटे मैंने ख़्वाब देखा, मैं तुझे ज़िबह करता हूं अब तू देख तेरी क्या राय है? कहा ऐ मेरे बाप! कीजिये जिस बात का आपको हुक्म होता है, खुदा ने चाहा तो क़रीब है कि आप मुझे साबिर पायेंगे।

कुरबानी के वक़्त इस्माईल अलैहिस्सलाम की उम्र : बाज़ अहले इल्म का क़ौल यह है कि ज़िबह का वाक़िया दरपेश आने के वक़्त हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम की उम्र तेरह साल थी।

इम्तेहान की वजह : चूंकि पहली आयत करीमा में यह ज़िक्र हुआ कि अल्लाह तआला ने हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम को हलीम बेटे की बशारत दी, अब इम्तेहान लेकर उसे वाज़ेह कर दिया कि कितना अज़ीम साबिर और बुर्दबार बेटा आपको रब तआला ने अता किया जिस ने इतने बड़े इम्तेहान को सब्र और खंदा पेशानी से पास किया।

तीन दिन इब्राहीम अलैहिस्सलाम का ख़्वाब देखना : ज़िल हिज्जा के सात दिन गुज़र जाने पर रात को ख़्वाब देखा कि कोई कहने वाला कह रहा है बेशक अल्लाह तआला तुम्हें बेटा ज़िबह करने का हुक्म देता है, आपने सुबह इस पर तफ़क्कुर किया और कुछ तरद्दुद में रहे कि क्या यह अल्लाह का ही हुक्म है? या ख़्वाब फक़्त ख़्याल तो नहीं। इसी वजह से आठ ज़िल हिज्जा का नाम यौमुल तरविया (सोच विचार का दिन) रखा गया। आठ तारीख़ का दिन गुज़र जाने पर रात फिर ख़्वाब देखा सुबह यक़ीन कर लिया कि यह अल्लाह तआला की तरफ़ से ही हुक्म है इसी लिए नौ ज़िल हिज्जा को यौमे अरफ़ा (पहचानने का दिन) कहा जाता है इसके बाद आने वाली रात को फिर ख़्वाब देखने पर सुबह उस पर अमल करने का पक्का इरादा कर लेने पर ही दस ज़िल हिज्जा को यौमुल नहर (ज़िबह का दिन) कहा जाता है।

सिर्फ़ ख़्वाब देखने से ज़िबह पर अमल क्यों? बेशक अल्लाह तआला ने अंबियाए किराम के ख़्वाबों को हक़ बनाया यानी उनके ख़्वाबात सच होते हैं इनको अपने ख़्वाबों पर अमल करना लाज़िम है।

अंबियाए किराम के ख़्वाब की तीन क़िस्म: १. जो ख़्वाब देखा जाये वह उसी तरह वाक़ेय हो जैसे हमारे नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मदीना तैयबा में ख़्वाब देखा कि आप बमअ अपने अस्हाब के मक्का मुकर्रमा तशरीफ़ ले गये और अस्हाब ने सर मुंडवाए और बाज़ ने बाल कटवाए आपका यह ख़्वाब एक साल बाद इसी तरह सच्चा हुआ जैसे देखा था।

बेशक अल्लाह ने सच कर दिखाया अपने रसूल का सच्चा ख़्वाब बेशक तुम ज़रूर मस्जिद हराम में दाख़िल होगे अगर अल्लाह चाहे अमन व अमान से अपने सरों के बाल मुंडवाए या तरशवाए बे ख़ौफ़।

२. ख़्वाब में सिर्फ़ इम्तेहान हो इसका वक़ूअ मक़सूद न हो जैसे हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने ख़्वाब में बेटे को ज़िबह करते हुए देखा, यह सिर्फ़ इम्तेहान था आपने अपने इम्तेहान पर अमल कर लिया लेकिन अल्लाह ने इस्माईल अलैहिस्सलाम को बचा लिया और फ़िदया दे दिया।

३. ख़्वाब में बाज़ चीज़ों से तश्बीह दी जाये जिस चीज़ को ख़्वाब में दिखाया गया हो उसी का वक़ूअ न हो बल्कि उसकी कोई न कोई तावील हो और वक़ूअ मुशाबेह हो जैसे यूसुफ़ अलैहिस्सलाम का ख़्वाब।

याद करो जब यूसुफ़ ने अपने बाप से कहा ऐ मेरे बाप मैंने ग्यारह सितारे और सूरज और चांद देखे उन्हें अपने लिये सज्दा करते देखा।

ख़्वाब में आपने चांद और सूरज और ग्यारह सितारे सज्दा करते हुए देखे लेकिन वाक़ेय में इन चीज़ों ने आपको सज्दा नहीं किया बल्कि आपके ख़्वाब को इस तरह सच्चा करके दिखाया।

उसके लिये सज्दे में गिरे और यूसुफ़ ने कहा ऐ मेरे बाप यह मेरे पहले ख़्वाब की ताबीर है बेशक इसे मेरे रब ने सच्चा किया।

मां–बाप ख़्वाब में चांद, सूरज की शक्ल में दिखाए गये और गयारह भाई ग्यारह सितारों की सूरत में, ख़्वाब सच्चा हुआ कि सबने आपको सज्दए ताज़ीमी किया, जो पिछली शरीयतों में जायज़ था। हमारी शरीअत में हराम है। याद रहे कि इबादत का सज्दा हर शरीअत में अल्लाह तआला के बग़ैर किसी और के लिये जायज़ नहीं।

बेटे से मश्वरा करने की वजह : अल्लाह तआला ने आपको बेटे से मश्वरा करने का हुक्म दिया कि आप पर यह ज़ाहिर हो जाये कि आपका बेटा अल्लाह तआला के हुक्म की फ़रमा बर्दारी में कितना साबिर है? इस तरह आपकी आंखों को ठंडक हासिल होगी। जब आप देखेंगे कि आप का बेटा हिल्म (बुर्दबारी) के आला मैयार पर फ़ायज़ हो चुका है और इस तरह बेटे को भी सख़्त मुश्किलात में अज़ीम सब्र करने पर आला दर्जा हासिल हो जाये, आख़रत में सवाब हासिल हो और दुनिया में भी आपकी तारीफ़ हो।

हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम ने अपने सब्र करने के पुख़्ता इरादे को इंशाअल्लाह से मिलाकर बर्कत हासिल की और इस मसले की तरफ़ इशारा किया कि जो काम मुस्तक़बिल में करना हो उसके साथ इंशाअल्लाह ज़िक्र किया जाये क्योंकि नेकी की तौफ़ीक़ अल्लाह तआला ही अता फ़रमाता है इसी तरह गुनाहों से बचाना भी उसी के फ़ज़्ल से नसीब होता है।

इब्राहीम अलैहिस्सलाम से शैतान की नाकामी : हज़रत क़तादा रज़ियल्लाहु अन्हु से मरवी है कि शैतान ने हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम और आपके बेटे पर कामयाब होने का इरादा किया तो एक दोस्त की शक्ल में आपको रोकने के लिये आया लेकिन आप पर कामयाब न हो सका फिर आपके बेटे हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम को उस राह से हटाने की कोशिश की लेकिन उन पर भी उसका दाव न चल सका तो उसने बहुत बड़ा मोटा ताज़ा बनकर वादी को भर दिया ताक्रि आप उस से आगे न जा सकें, हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम के साथ एक फ़रिश्ता था जिसने आपको कहा इसे मारें आपने उसे सात कंकरियां मारीं ता वह रास्ते से हट गया, दोबारा फिर आगे आने की कोशिश की आपने फिर कंकरियां मारकर रास्ते से हटा दिया, तीसरी बार फिर इसी तरह आगे आकर रास्ता बंद कर दिया तो आपने फिर इस तरह सात कंकरियां मारकर रास्ता से हटा दिया।

आज हाजियों पर इस सुन्नत इब्राहीमी पर अमल करना वाजिब कर दिया गया, सुब्हानल्लाह अपने महबूबों की अदायें रब तआला को कैसी पसंद आई कि उनको अज़ीम इबादत का हिस्सा बना दिया गया।

इस्माईल अलैहिस्सलाम का इब्राहीम अलैहिस्सलाम को मश्वरा देना : इस्माईल अलैहिस्सलाम ने अपने बाप से कहा, ऐ मेरे अब्बा जान! ज़िबह से पहले मुझे बांध देना ताकि मैं तड़पूं नहीं, अपने कपड़ों को मुझ से बचाकर रखना ताकि आपके कपड़े मेरे ख़ून से आलूदा न हो जायें और मेरी वालदा उन्हें देखकर परेशान न हों, मेरे हलक पर छुरी जल्दी जल्दी चलाना ताकि मुझ पर मौत आसानी से वाकेय हो जाये जब मेरी वालदा के पास जाना तो मेरा सलाम उनको देना।

इन बातों के बाद बाप बेटे ने एक दूसरे को देखा बाप ने बेटे का बोसा लिया मुहब्बत के आंसू छलक पड़े लेकिन अल्लाह तआला के हुक्म की बजा आवरी में कोई कोताही नहीं की।

तो जब इन दोनों ने हमारे हुक्म पर गर्दन रखी और बाप ने बेटे को माथे के बल लिटाया।

माथे के बल लिटाने में भी इस्माईल अलैहिस्सलाम का ही मश्वरा था कि कहीं आप मुहब्बते पेदरी की वजह से छुरी चलाने में मामूली सी कोताही न कर दें।

और हमने उसे निदा फ़रमाई ऐ इब्राहीम! बेशक तूने ख़्वाब सच कर दिखाया हम ऐसा ही सिला देते हैं नेकों को, बेशक यह वाज़ेह इम्तेहान था और हम ने एक बड़ा ज़बीहा देकर उसे बचा लिया और हमने पिछलों में उसकी तारीफ़ बाक़ी रखी। छुरी चलाने से पहले ही आपको कह दिया गया कि आपने अपने ख़्वाब को सच कर दिखाया कि आपने छुरी चला दी थी तो जिब्राईल अमीन ने आकर उसका रुख़ बदल दिया था।

अल्लाह तआला की तरफ़ से एक मोटा ताज़ा सींगों वाला सफ़ेद स्याही माइल दुंबा हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम का फ़िदया दे दिया गया और आपको ज़िबह से बचाकर भी ज़िबह हो जाने का अज्र व सवाब अता किया और क़यामत तक आपको ज़बीहुल्लाह (अल्लाह की रज़ा के लिये ज़िबह होने वाला) के लक़ब से मुत्तसिफ़ कर दिया गया।

जिब्राईल अमीन अलैहिस्सलाम जब फ़िदया लेकर आये तो ख़्याल किया कि इब्राहीम अलैहिस्सलाम कहीं जल्दी न कर दें तो आपने पढ़ा अल्लाहु अक्बर अल्लाहु अक्बर। हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने जब आसमानों की तरफ़ सर उठाया तो देखा कि जिब्राईल फ़िदया ला रहे हैं तो पढ़ा ला इलाहा इल्लल्लाहु वल्लाहु अक्बर। जब हज़रत इस्माईल ज़बीहुल्लाह अलैहिस्सलाम ने सुना तो आपने पढ़ा अल्लाहु अक्बर वलिल्लाहिल हम्द।

इन तीनों हज़रात के मजमूई कलाम को तक्बीराते तशरीक़ की सूरत में ताक़यामत नमाज़ियों पर ज़िल हिज्जा की नौ तारीख़ की नमाज़ फ़ज्र से लेकर तेरह तारीख़ की नमाज़ अस्र तक वाजिब कर दिया गया ताकि यह यादगार क़ायम रहे।

ख़्याल रहे कि मदारिक में दूसरा कलाम हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम और तीसरा कलाम हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम का मज़कूर है।

हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम के दो बेटों में से कुर्बानी किस की? : अगरचे इख़्तेलाफ़ है इस मसले में कि कुरबानी हज़रत इस्हाक़ अलैहिस्सलाम की हुई या हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम की हुई ताहम क़वी दलाइल से यही वाज़ेह है कि कुरबानी हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम की ही की गई अल्लामा राज़ी रहमतुल्लाह अलैहि ने इस पर मुख़्तलिफ़ दलायल ज़िक्र किये हैं।

१. रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया : मैं दो ज़बीहों का बेटा हूं। इसी तरह एक आराबी ने आपको या इब्नुल ज़बीहैन कहकर पुकारा तो आपने तबस्सुम फ़रमाया। जब आपसे पूछा गया कि आप दो ज़बीहों के बेटे किस तरह हैं? तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: कि अब्दुल मुत्तलिब ने जब ज़मज़म का कुंआ खोदना शुरू किया तो अल्लाह तआला के लिये नज़र मानी कि अगर अल्लाह तआला ने मेरे लिये यह काम आसान किया तो मैं अपने बेटों में से एक की कुरबानी करूंगा। कुरआ हज़रत अब्दुल्लाह के हक़ में निकला, आपके ननिहाल और कुछ अहले इल्म ने एक सौ ऊंट बतौर फ़िदया देने का फ़ैसला किया इस तरह हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बाप को ज़बीह होने का शर्फ़ हासिल हुआ। और यह भी वाज़ेह है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम की औलाद से हैं। हज़रत इस्हाक़ अलैहिस्सलाम की औलाद से नहीं। तो यक़ीनन दूसरे ज़बीह हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम हैं।

२. हज़रत अस्मई कहते हैं कि मैंने अबू अम्र इब्ने उला से सवाल किया कि ज़बीह कौन थे? उन्होंने फ़रमाया ऐ असमई! तुम्हारी अक़्ल कहां गई? क्या तुम्हें नहीं मालूम कि इस्हाक़ अलैहिस्सलाम मक्का में नहीं थे बल्कि वह तो शाम में थे मक्का में तो हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम ही थे वही अपने बाप के साथ मिलकर काबा की तामीर में मशगूल थे और कुर्बानी का वाक़िया भी मक्का मुकर्रमा के क़रीब मिना में पेश आया तो यक़ीनन ज़िबह होने का वाक़िया भी हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम से ही दरपेश आया।

३. अल्लाह तआला ने इस्माईल अलैहिस्सलाम को साबिर कहा इस्हाक़ अलैहिस्सलाम को नहीं, रब तआला ने इरशाद फ़रमाया:

इस्माईल, इदरीस और ज़ुलकिफ़्ल अलैहिमुस्सलाम को याद करो वह सब सब्र वाले थे।

और अल्लाह ताअला ने हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम के मुताल्लिक़ फ़रमाया बेशक आप वादा के सच्चे थे ज़िबह होने वाले ने ही अपने बाप से वादा किया।

आप अनक़रीब मुझे इंशाअल्लाह साबरीन से पायेंगे।

जब यह वाज़ेह हो गया कि ज़िबह होने वाले ने अपने बाप से सब्र का वादा किया और वादा सच कर दिखाया अल्लाह तआला ने इस्माईल अलैहिस्सलाम को सब्र करने वाला और वादा का सच्चा कहा है तो यक़ीनन ज़बीह इस्माईल अलैहिस्सलाम हैं।

४. इस्हाक़ अलैहिस्सलाम की पैदाईश से पहले आपकी वालदा को बशारत रब तआला ने इन अल्फ़ाज़ में दी।

हमने उसे (सारा को) बशारत दी इस्हाक़ की और इस्हाक़ के पीछे याकूब की।

अगर यह कहा जाये कि ज़िबह करने का हुक्म इस्हाक़ अलैहिस्सलाम के मुताल्लिक़ था तो अब यह देखना होगा कि याकूब अलैहिस्सलाम की पैदाईश से पहले आपके ज़िबह करने का हुक्म दिया गया है या बाद में? अगर आपकी पैदाईश से पहले हुक्म दिया गया है तो इसमें हज़रत इब्राहीम का इम्तेहान नहीं हो सकता क्योंकि आपको बता दिया गया था कि सारा का बेटा इस्हाक़

और इस्हाक़ का बेटा याकूब होगा, जब इब्राहीम अलैहिस्सलाम को मालूम है कि इस्हाक़ का बेटा याकूब तो अभी पैदा होना है यह तो ज़िबह हो ही नहीं सकता, तो इम्तेहान कैसे? और रब तआला अपने ही हुक्म के ख़िलाफ़ कैसे हुक्म दे सकता है? अगर याकूब अलैहिस्सलाम की पैदाईश के बाद हुक्म हो तो यह भी साबित नहीं हो सकता क्योंकि अल्लाह तआला ने फ़रमाया:

जब वह आपके साथ हाथ बटाने के क़ाबिल हो गया।

ज़िबह के वक़्त इब्राहीम अलैहिस्सलाम के बेटे की उम्र तेरह साल या बाज़ रिवायात में सात साल भी है तो इस उम्र में याकूब अलैहिस्सलाम का पैदा हो जाना और इस्हाक़ अलैहिस्सलाम के ज़िबह का हुक्म देना भी अक्ल के ख़िलाफ़ है।

५. अल्लाह तआला ने इब्राहीम अलैहिस्सलाम की हिजरत का ज़िक्र करते हुए फ़रमाया:

मैं अपने रब की तरफ़ जाने वाला हूं जो मुझे हिदायत देगा।

यानी जहां मेरे रब का हुक्म है उस सर ज़मीन में जाने वाला हूं हिजरत करने के बाद इब्राहीम दुआ करते हैं इलाही मुझे लायक़ औलाद दे अल्लाह तआला ने आपकी इस दुआ की कबूलियत को ज़िक्र किया।

तो हमने उसे एक हलीम बेटे की ख़ुशख़बरी सुनाई।

फिर उसी बेटे का ज़िक्र करते हुए फ़रमाया:

फिर जब वह उसके साथ काम के क़ाबिल हो गया कहा ऐ मेरे बेटे मैंने ख़्वाब देखा मैं तुझे ज़िबह करता हूं अब तू देख तेरी क्या राय है? कहा ऐ मेरे बाप कीजिये! जिस बात का आपको हुक्म होता है ख़ुदा ने चाहा तो क़रीब है कि आप मुझे साबिर पायेंगे।

अब इस सारे वाक़िये के बाद यह वाज़ेह हो जाता है कि यह इस्माईल अलैहिस्सलाम ही है क्योंकि हज़रत इस्हाक़ अलैहिस्सलाम की बशारत हज़रत सारा को दी ही इसलिये गई थी कि इब्राहीम अलैहिस्सलाम को तो एक बेटे की बशारत दी जा चुकी है और बेटा भी अता कर दिया गया था।

अगर ज़िबह के वक़्त इस्माईल अलैहिस्सलाम की उम्र तेरह साल है तो उसी साल इस्हाक़ अलैहिस्सलाम की बशारत दी गई और एक साल बाद आप पैदा हुए और अगर उस वक़्त इस्माईल अलैहिस्सलाम की उम्र सात साल थी तो ज़िब्ह के वाक़िये के सात साल बाद हज़रत इस्हाक़ की पैदाईश है।

६. कसीर अख़बार में यह ज़िक्र भी मौजूद है कि ज़िबह के वक़्त जो दुंबा बतौर फ़िदया दिया गया उस के सींग काबा शरीफ़ की दीवार पर बहुत अर्सा तक नस्ब रहे। इससे भी वाज़ेह हुआ कि ज़िबह का वाक़िया मक्का मुकर्रमा में पेश आया और मक्का मुकर्रमा में हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम थे। अगर ज़िबह का वाक़िया इस्हाक़ अलैहिस्सलाम से मुताल्लिक़ होता तो मुल्क शाम में दरपेश आता, न कि मक्का मुकर्रमा में।

हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम की कुरबानी का फ़ेअल भी रब तआला को कैसा पसंद आया कि ता क़यामत अस्हाबे निसाब, अहले सरवते इस पर अमल करते रहेंगे।

ख़ाना काबा की तारीख़

आदम अलैहिस्सलाम का काबा की तामीर : इब्ने असाकर वग़ैरह से तफ़सीर अज़ीज़ी में नक़्ल किया गया है हज़रत आदम अलैहिस्सलाम जब जन्नत से ज़मीन पर तश्रीफ़ लाये तो बारगाहे इलाही में अर्ज़ कियाः

ख़ुदाया मैं यहां न तो मलायका की तस्बीह व तकबीर सुनता हूं और न कोई इबादतगाह देखता हूं जैसे कि आसमान में बैतुल मामूर देखता था जिसके इर्द गिर्द मलायका तवाफ़ करते थे।

अल्लाह तआला ने इरशाद फ़रमायाः

जाओ जहां हम निशान बताते हैं वहां काबा बनाकर उसके इर्द गिर्द तवाफ़ भी कर लो और उसकी तरफ़ नमाज़ भी अदा करो।

हज़रत जिब्राईल अलैहिस्सलाम, आदम अलैहिस्सलाम की रहबरी के लिये उनके साथ चले और उन्हें वहां लाए जहां से ज़मीन बनी थी, यानी काबा की जगह से ही सबसे पहले पानी पर झाग, फिर झाग से ज़मीन की इब्तेदा हुई। जिब्राईल अलैहिस्सलाम ने वहां अपना पर मारकर सातवीं ज़मीन तक बुनियाद डाल दी, जिसको मलायका ने पांच पहाड़ों के पत्थरों से भरा कोहे लिबनान, कोहे तूर, जूदी, हिरा और तूरे सीना से बुनियाद भर कर निशान के लिये हर चिहार तरफ़ को दीवार उठा दी। उस तरफ़ मुंह करके आदम अलैहिस्सलाम नमाज़ पढ़ते रहे और उसका तवाफ़ भी करते रहे।

बाज़ रिवायात में आया है कि बैतुल मामूर को उस बुनियाद पर रख दिया गया तूफ़ाने नूह में बैतुल मामूर को उठा लिया गया और काबा की जगह ऊंचे टीले की तरह रह गई, लोग यहां आते रहे और बर्कत की दुआ मांगते रहे।

इब्राहीम अलैहिस्सलाम का तामीर करना : इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने जब हज़रत हाजरा रज़ियल्लाहु अन्हा और अपने बेटे इस्माईल अलैहिस्सलाम को यहां छोड़ा और यहां आबादी हो गई तो इब्राहीम अलैहिस्सलाम को हुक्म दिया गया कि इस्माईल अलैहिस्सलाम को साथ लेकर काबा तामीर करो, एक बादल का टुकड़ा भेज कर काबा की हद को वाज़ेह किया गया और जिब्राईल अलैहिस्सलाम ने ख़त (हद) खींच दिया हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने आदम अलैहिस्सलाम के ज़माना की बुनियादों पर ही इमारत तामीर फ़रमाई।

काबा शरीफ़ की बुलंदी नौ हाथ, रुक्न असवद से रुक्न शामी तक 33 हाथ, रुक्न ग़रबी से रुक्न यमानी तक 31 हाथ, रुक्न यमानी से रुक्न असवद तक 20 हाथ, रुक्न शामी से रुक्न ग़रबी तक 22 हाथ।

यानी काबा उस वक़्त मुस्ततील (जिसके आमने सामने की दोनों दीवारें बराबर हों बिल्कुल चौकोर न हों) था लेकिन तूल और अर्ज़ की एक एक दीवार मामूली छोटी थी दरवाज़े दो बनाए गये थे जो ज़मीन के साथ मिले हुए थे किवाड़ ज़ंजीर वग़ैरह नहीं थे बाद में तबअ हमीरी के ज़माने में किवाड़ ज़ंजीर वग़ैरह लगाए गये। हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने तामीर फ़रमाया और हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम पत्थर गारा वग़ैरह देते थे। सुबहानल्लाह! किस शान से अल्लाह का घर तामीर हुआ? अल्लाह का नबी ही मेअमार और अल्लाह की नबी की मददगार।

इब्राहीम अलैहिस्सलाम की तामीर के बाद : आपकी तामीर के बाद जुज़वी तौर पर मुख़्तलिफ़ औक़ात में तामीर हुई एक मर्तबा अमालक़ा और जरहम नें इसे तामीर किया इसके बाद कुसई बिन कलाब ने इसकी तामीर की जिसमें छत दरख़्त मक़ल की लकड़ी की बनाई जिस पर बजाए तख़्तों के खुरमे की लकड़ी डाली।

कुरैश की तामीर : एक औरत काबा शरीफ़ में खुश्बू सुलगाती थी, एक बार अचानक उससे शोला उठा और छत जल गई और दीवारें पहले ही बोसीदा हो चुकी थी, इसलिये कुरैश ने फ़ैसला किया कि मुकम्मल तौर पर नई तामीर की जाये। वलीद बिन मुग़ीरा को इमारत का अमीर मुक़र्रर किया गया और यह तै हुआ कि इसमें हलाल माल ख़र्च होगा उस वक़्त के अमीर लोगों के पास ज़्यादा सूद से हासिल करदा माल होता था इसलिये हलाल माल कम मिक़दार में जमा हुआ तो कुरैश ने माल की कमी और कुछ अपने मक़ासिद के पेशे नज़र चंद फ़र्क़ कर दिये।

१. काबा की कुछ ज़मीन बाहर निकाल दी यानी इमारत को छोटा कर दिया, काबा से बाहर निकाली हुई ज़मीन को हतीम कहा जाता है इसी में मीज़ाबे रहमत (परनाला) गिरता है, छोटी छोटी दीवार से आज भी इसे अलग नुमायां किया हुआ है तवाफ़ इसके बाहर से ही होता है।

२. कुरैश ने दो दरवाज़ों के बजाए एक कर दिया वह भी बुलंद ताकि जिसे चाहें अंदर जाने दें और जिसे चाहें न जान दें अब भी इसी पर अमल हो रहा है बादशाहों के लिये दरवाज़ा खुलता है ख़्वाह वह कितने ही बदकार क्यों न हों सुलहा व अतक़िया के लिये कभी दरवाज़ा खुलने की ख़बर नहीं सुनी गई।

३. ख़ाना काबा के अंदर लकड़ी के सतूनों की दो सफ़ें बनाई गई और हर सफ़ में तीन सतून बनाए गये।

४. काबा शरीफ़ की बुलंदी पहले से दुगुनी कर दी गई पहले बुलंदी नौ हाथ थी उन्होंने अट्ठारह हाथ कर दी।

५. ख़ाना काबा के अंदर रुक्न शामी के करीब एक ज़ीना बनाया गया जिससे छत पर चढ़ सकें।

हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने ज़ुबैर रज़ियल्लाहु अन्हु की तामीरः हज़रत आयशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं:

एक मर्तबा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने काबा के मुत्तसिल (यानी हतीम) बुनियादे इब्राहीमी के पत्थर मुझे दिखाए और फ़रमाया कि कुरैश ने इसमें कमी कर दी थी लोग अगर नये नये मुसलमान न होते और उनके जज़्बात भड़कने का अंदेशा न होता तो मैं इब्राहीमी बुनियादों पर काबा दोबारा तामीर कर देता।

इसी रिवायत की बुनियाद पर हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर ने काबा शरीफ़ को मुंहदिम करके दोबारा तामीर किया, हतीम को काबा में दाख़िल किया, दरवाज़े दो बनाए जो ज़मीन के मुत्तसिल थे खुश्बूदार मिट्टी चूना में मिलाकर लगाया गया दरवाज़ों पर अंदर बाहर अंबर लगाकर खुश्बूदार किया गया। निहायत क़ीमती रेशमी ग़िलाफ़ चढ़ाया गया।

ख़्याल रहे कि सबसे पहले काबा शरीफ़ को ग़िलाफ़ चढ़ाने वाले का नाम असद है जो शाह यमन था और तबअ के लक़ब से मशहूर था मदीना तैयबा की शहरी बुनियाद रखने वाला यह शख़्स था।

अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर की तामीर 27 रजब 64 हि. को मुकम्मल हुई फिर हज्जाज बिन यूसुफ़ (जो

Scanned by CamScanner

अब्दुल मालिक बिन मरवान का नाइब था) ने 74 हि० में इमारत को मुंहदिम करके फिर उसी तरह बना दिया जैसे कुरैश ने बनाया था।

फिर हारून रशीद ने चाहा कि काबा उस तरह बना दिया जाये जैसे अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर रज़ियल्लाहु अन्हु ने तामीर किया था, यानी दर असल वही इब्राहीमी तामीर भी थी लेकिन उस वक़्त के अहले इल्म ने इसलिये मना किया कि कोई तुम्हारा मुख़ालिफ़ आयेगा वह फिर तब्दील करेगा इस तरह गिराना और बनाना एक खेल बन जायेगा। इसके बाद मरम्मत तो होती रही लेकिन मुकम्मल तौर पर पूरी इमारत को दोबारा नहीं बनाया गया।

काबा की मौजूदा तामीर : 1040 हि० में सुल्तान मुराद बिन अहमद ख़ां शाहे कुस्तुनतुनिया ने जब देखा कि इस की इमारत बहुत पुरानी हो गई है तो उसने सिवाए रुक्न हजरे असवद (वह कोना जिसमें हजरे असवद नस्ब है) की तमाम इमारत मुंहदिम करके नई तामीर कराई लेकिन इन्हीं बुनियादों और इसी तर्ज़ पर जो हज्जाज बिन यूसुफ़ ने बनाई थी, अंदर संगे मरमर का फ़र्श बिछाया और अंदर छत पर निहायत नफ़ीस मख़मली छत गीरी लगाई गई और बाहर की दीवारें संगे ख़ारा से चूना में चुनीं, निहायत नफ़ीस रेशमी स्याह पर्दा तमाम ख़ाना काबा पर डाला, जिस पर कलिमा तैयबा ला–इलाहा इल्लल्लाह मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम लिखा हुआ था और सुनहरे हाशिया पर सुल्तान का नाम था।

मौजूदा काबा शरीफ़ सुल्तान मुराद का बनाया हुआ है यानी मुकम्मल इमारत को मुंहदिम करके इसके बाद नये सिरे से तामीर नहीं किया गया।

ग़िलाफ़े काबा हर साल मिस्र से बड़ी धूम धाम से आता रहा एक मर्तबा पाकिस्तान के शहर लाहौर से भी बन कर गया, पहले यह तरीक़ा था कि पुराना ग़िलाफ़े काबा ख़ुद्दाम को दे दिया जाता लोग तबर्रुक के तौर पर इसे ख़रीद लेते थे लेकिन अब ग़िलाफ़ काबा सऊदिया में ही बनता है इस पर शाह सऊद का नाम होता है।

मक़ाम इब्राहीम व हजरे असवद : यह दोनों जन्नती याक़ूत हैं, बहुत नूरानी थे अल्लाह तआला ने इनका नूर महव कर दिया अगर ऐसा न होता तो यह मश्रिक़ व मग़्रिब को चमकाते।

मक़ामे इब्राहीम वह पत्थर है जिस पर खड़े होकर इब्राहीम अलैहिस्सलाम काबा शरीफ़ की तामीर करते, जिस क़दर इमारत बुलंद होती जाती थी यह पत्थर भी ऊंचा होता जाता था, यह पत्थर आप के खड़े होने से नर्म भी हो जाता था कि सख़्ती की वजह से आपके क़दमों को तकलीफ़ न हो, इसी लिये आपके क़दमों के निशान इस में पड़ गये थे। इसी पत्थर को जबले अबू क़बीस पर रखकर उसके ऊपर खड़े होकर हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने आवाज़ दी, ऐ अल्लाह के बंदो हज के लिये आओ, अल्लाह तआला ने फ़रमाया:

और लोगों में हज का आम ऐलान कर दे वह तेरे पास हाज़िर होंगे, प्यादा और हर दुबली ऊंटनी पर कि हर दूर की राह से आती हैं।

आपके इस ऐलान के बाद उन तमाम लोगों ने लब्बैक कहा जिन्हें भी हज करना था। जिसको जितनी मर्तबा हज करना था उतनी मर्तबा ही लब्बैक कह दिया, माओं के रहमों में और आबा की पुश्तों में से ता–क़यामत आने वालों ने लब्बैक कहा।

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने जब मकामे इब्राहीम की अज़मत को ब्यान किया तो हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने अर्ज़ किया कि हम इसके पीछे नमाज़ न अदा कर लिया करें? तो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने वही के इंतेज़ार में ख़ामोशी इख़्तेयार की, लेकिन उसी दिन अल्लाह तआला की तरफ़ से आयते करीमा का नुजूल हो गया इरशाद हुआ:

और (हुक्म दिया कि) मकामे इब्राहीम को नमाज़ पढ़ने की जगह बना लो।

मक़ामे इब्राहीम से वह पत्थर मुराद है जिस पर खड़े होकर इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने काबा मोअज़्ज़मा की तामीर फ़रमाई इब्राहीम के क़दमीने मुतह्हरीन के निशानात उस पर सब्त हैं। तवाफ़े काबा के बाद तवाफ़ की रकअतें इसी मक़ामे इब्राहीम के पीछे पढ़ती जाती हैं इसमें भी इत्तिबाए मिल्लते इब्राहीमी की झलक पाई जाती है। अल्लाह तआला ने अपने ख़लील हज़रत इब्राहीम के क़दमीन मुतह्हरीन के निशानात को वह अज़मत अता फ़रमाई कि क़यामत तक तवाफ़ करने वालों को हुक्म दिया कि मक़ामे इब्राहीम के पीछे (दो रकअत) नमाज़ पढ़ो, तवाफ़े काबा के सात चक्कर मुकम्मल करने के बाद तवाफ़ की दो रकअत मस्जिदे हराम में पढ़ना वाजिब है लेकिन मुस्तहब यह है कि इन्हें मक़ामे इब्राहीम के पीछे पढ़ा जाये।

मक़ामे इब्राहीम पर हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम तीन मर्तबा खड़े हुए:

१. इब्राहीम अलैहिस्सलाम जब कई साल गुज़रने के बाद इस्माईल अलैहिस्सलाम को मिलने के लिये आये तो अल्लाह तआला की मंशा के मुताबिक़ हज़रत सारा रज़ियल्लाहु अन्हा से वादा करके आये कि अपने बेटे को देखकर और मुलाक़ात करके वापस आ जाऊंगा। सवारी से नहीं उतरूंगा, आप अलैहिस्सलाम जब मक्का में आए तो हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम तो शिकार करने के लिये गये हुए थे, बहू से मुलाक़ात हुई उससे गुज़र औक़ात के मुताल्लिक़ पूछा, उसने कहा अच्छा गुज़ारा नहीं, तंगदस्ती है, सिर्फ़ शिकार पर गुज़र औक़ात हो रही है।

आप अलैहिस्सलाम ने वापस चलते हुए कहा:

अपने ख़ाविन्द को मेरा सलाम कहना और कहना कि तुम्हारे घर की चौखट अच्छी नहीं इसे बदल लो।

हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम जब घर आये तो ख़ुद ही पूछा कि आज कोई बुज़ुर्ग तो नहीं आये थे? तो आपकी ज़ौजा ने कहा कि आए थे और सलाम कहकर गये हैं और एक पैग़ाम देकर गये हैं जब पैग़ाम की उसने तफ़सील बयान की तो आपने अपनी ज़ौजा को फ़ारिग़ कर दिया, कि वह तुम्हें फ़ारिग़ कर देने का हुक्म दे गये हैं।

वजह यह थी कि उसने रब तआला की नाशुक्री की थी, नबी की ज़ौजा की शान के यह लायक़ नहीं कि वह कम रोज़ी पर शिकायत करे, बल्कि साबिर रहे।

हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम दोबारा फिर इस्माईल अलैहिस्सलाम को मिलने के लिये आये उस वक़्त भी इस्माईल अलैहिस्सलाम घर पर मौजूद न थे आप अलैहिस्सलाम की मुलाक़ात बहू से हुई, (यह हज़रत इस्माईल की दूसरी शादी थी) उससे घर के हालत पूछे उसने कहा:

अल्लाह तआला का शुक्र है कि अच्छा वक़्त गुज़र रहा है ज़मज़म के पानी पर हमारा क़ब्ज़ा है मेरे ख़ाविन्द शिकार करके ले आते हैं बहुत अच्छा वक़्त पास हो रहा है।

Scanned by CamScanner

हज़रत इब्राहीम जब वापस जाने लगे तो आपकी बहू ने इसरार किया कि आप हमारे घर रुकें, लेकिन आपने कहा, मुझे सवारी से उतरकर ज़मीन पर आने की इजाज़त नहीं, तो आपकी बहू ने कहा कि आप अपने पांव इस पत्थर पर रखें ताकि मैं इनको धो लूं, आप अलैहिस्सलाम ने जिस पत्थर पर पांव रखे वह मक़ामे इब्राहीम ही था।

आप अलैहिस्सलाम ने वापस चलते हुए हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम के लिये सलाम कहा और पैग़ाम दिया कि:

घर की चौखट अच्छी है इसे मज़बूत रखना।

(२) तामीरे काबा के वक़्त आप उस पर खड़े हुए थे वह नर्म हो जाता था, ताकि आप अलैहिस्सलाम के पांव मुबारक को सख़्ती की वजह से तकलीफ़ न हो, इसी वजह से आप अलैहिस्सलाम के क़दमों के निशानात इसमें पड़ गये। आप जब बुलंद होना चाहते थे तो वह पत्थर खुद बखुद ऊपर उठ जाता था, जब नीचे आना चाहते तो नीचे हो जाता था। आम मिस्त्रियों की तरह आप अलैहिस्सलाम को फट्टे बांधने की ज़रूरत पेश न आती थी।

(३) काबा शरीफ़ की तामीर के बाद आप अलैहिस्सलाम ने इसी पत्थर पर खड़े होकर जबल अबू क़बीस पर से लोगों को हज की दावत दी।

हज़रत लूत अलैहिस्सलाम

इरशादे बारी तआला है:

हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम की तमाम बातों की आप अलैहिस्सलाम ने तसदीक़ फ़रमाई और आपके दावए नबुव्वत की तसदीक़ फ़रमाई।

तमाम अंबियाए किराम नबुव्वत से पहले और नबुव्वत के बाद गुनाहों से पाक होते हैं इसलिये यहां यह मायने नहीं लिया जा सकता कि हज़रत लूत अलैहिस्सलाम (मआज़ल्लाह) कुफ़्र से ईमान लाए और हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने तौहीद की तबलीग़ फ़रमाई तो आप तौहीद पर ईमान लाये।

यह मायने नबी की शान के मनाफ़ी हैं:

लूत अलैहिस्सलाम इब्राहीम अलैहिस्सलाम पर ईमान लाए इसका मतलब यह हुआ कि आप ने इब्राहीम अलैहिस्सलाम को हर दावा में सच्चा तस्लीम किया। लूत अलैहिस्सलाम हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम के भाई हारान बिन तारख़ के बेटे हैं अगरचे कश्शाफ़ में यह है कि आप कि बहन के बेटे हैं लेकिन कमालैन में इस क़ौल को रद्द किया गया है।

ख़्याल रहे कि हारान हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम के चचा का नाम भी है जो हज़रत सारा का बाप था पहले ज़माने में घर के कई अफ़राद का एक ही नाम होता था बल्कि बाज़ औक़ात बाप बेटे का एक नाम और कभी बहन भाई का एक नाम भी होता था।

तंबीह : बाज़ हज़रात ने ब्यान किया कि जब हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम को आग ने कुछ तकलीफ़ न दी तो यह मोजिज़ा देखकर हज़रत लूत अलैहिस्सलाम ईमान लाये, इससे बज़ाहिर यह तास्सुर मिलता है कि आप मआज़ल्लाह कुफ़्र के बाद ईमान लाये लेकिन इसको अल्लामा आलूसी रहमतुल्लाह अलैहि ने रद्द करते हुए फ़रमाया:

बाज़ हज़रात ने जो यह कहा कि लूत अलैहिस्सलाम ने जब यह देखा कि इब्राहीम अलैहिस्सलाम को आग ने नहीं जलाया तो आप ईमान लाए, यह अक़्ल व नक़्ल के मुख़ालिफ़ है, क्योंकि इससे बज़ाहिर पता यह चलता है कि आपका पहले ईमान नहीं था, यह नबी की शान के लायक़ ही नहीं।

लूत अलैहिस्सलाम के ईमान लाने से मुराद : या तो ईमान का वही मायने है जो पहले ब्यान किया जा चुका है और या यह मतलब भी हो सकता है कि:

आप अलैहिस्सलाम मरातिब की उस बुलंदी पर फ़ायज़ हुए जहां आम इंसान उस मक़ाम को नहीं पा सकता।

हज़रत लूत अलैहिस्सलाम की हिजरत : हज़रत लूत अलैहिस्सलाम ने इब्राहीम अलैहिस्सलाम के साथ बाबुल से हेरान की तरफ़ हिजरत की, फिर वहां से मिस्र में। अब उन दोनों के साथ हज़रत सारा भी थीं, मिस्र से फिलिस्तीन में आ गये। अब इन तीनों के साथ हज़रत हाजरा भी थीं।

फिर लूत अलैहिस्सलाम हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम के शहर से तक़रीबन अट्ठारह मील दूर तक एक शहर में तबलीग़े दीन के लिये आ गये उस शहर का नाम सन्दूम था। कुरआन पाक में इसी को अलमुतफ़िक़ा से ताबीर किया गया।

लूत अलैहिस्सलाम ने कौम को इबादत की दावत नहीं दी: हज़रत लूत अलैहिस्सलाम ने कौम को सिर्फ़ बुराईयों से बाज़ रहने की तबलीग़ की, लेकिन उन को इबादत करने का हुक्म इस तरह नहीं दिया जैसे हज़रत इब्राहीम ने दिया, इसकी वजह यह थी कि इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने कौम को अल्लाह तआला की वहदानियत और इबादत की तबलीग़ फ़रमा दी थी और यह बहुत मश्हूर हो चुकी थी।

लूत अलैहिस्सलाम जब हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम के ज़माने में ही थे और इलाक़ा भी क़रीब क़रीब था और आपकी कौम यानी ख़ानदान में से थे तो आपने दोबारा मश्हूर उमूर की तरफ़ तवज्जोह देने के बजाए अपनी कौम को सिर्फ़ उनकी ख़ुसूसी बुराईयों से ही रोका, ताकि यह कौम दुनियावी और उख़रवी अज़ाब से बच जाये, लेकिन कौम बाज़ न आई आख़िरकार उन पर अज़ाब मुसल्लत कर दिया गया।

आपने कौम को कहा : और लूत को नजात दी जब उसने अपने कौम को कहा तुम बेशक बे हयाई का काम करते हो कि तुमसे पहले दुनिया भर में किसी ने न किया, क्या तुम मर्दों से बद फ़ेअली करते हो? और राह मारते हो और अपनी मजलिस में बुरी बात करते हो? उसकी कौम का कुछ जवाब न हुआ मगर यह कि बोले हम पर अल्लाह का अज़ाब लाओ अगर तुम सच्चे हो।

आप अलैहिस्सलाम कौम को अज़ाब से बचाने की फ़िक्र में हैं लेकिन कौम कभी कहती है तुम अज़ाब ले आओ और कभी कहती:

बोले ऐ लूत अगर तुम बाज़ न आये तो ज़रूर निकाल दिये जाओगे यानी हम तुम्हें अपने शहर से निकाल देंगे और हम तुम्हें यहां रहने नहीं देंगे।

लूत अलैहिस्सलाम की कौम की ख़राबियां : सबसे बड़ी बुराई उनमें लिवातत थी (मर्दों से बुराई करने की आदत उनमें कसरत से पाई जाती थी) और मुसाफ़िरों और गुज़रने वालों के रास्ते में बैठ जाना उनका रास्ता रोकना और ज़बरदस्ती उनसे बुराई का मुरतकिब होना, रास्ता में बैठ कर डाका ज़नी, लोगों को क़त्ल करना और उनका माल लूटना, उनकी बुरी आदत में शामिल था।

★ क़ौमे लूत की यह बुराईयां अभी तक लोगों में मौजूद हैं जो शरीअत मुतह्हरा से बग़ावत है।

★ मर्दों की महफ़िलों में सिर्फ़ इसीलिये आना कि उनको ताड़ना यानी बाज़ का बाज़ को देखना और बुराई के लिये इन्तेख़ाब करना। कबूतर बाज़ी यानी पूरा पूरा दिन उनको उड़ाने और शर्त पर बाज़ी लगाने में गुज़ार देना, आज भी लोग इस बुराई के मुरतकिब हो रहे हैं।

★ औरतों की तरह उंगलियों के पोरे मेंहदी से रंगना। ख़्याल रहे कि मर्द का बतौर दवा मेंहदी लगाना ज़ायज़ है लेकिन ज़ेब व ज़ीनत के लिये मना है लेकिन आज के दौर में लड़कों को लड़कियों का लिबास और चाल ढब पसंद है जो हराम है।

★ हाथों से कंकरियां इधर उधर फेंकना, गुज़रने वालों को तंग करना, इसी तरह बंदूक़ों से कंकरियां फेंककर लोगों को सताना, यह फ़ेअल आज के दौर में औबाश लोगों में कौमे लूत से ज़्यादा पाया जाता है।

★ एक दूसरे को थप्पड़ मारना उधर से एक आया उसने दूसरे को थप्पड़ मार दिया और इधर से दूसरा आया उसने थप्पड़ मार दिया, यह बेहूदा फ़ेअल उनका मज़ाह हुआ करता जो दरहक़ीक़त उनके औबाश होने की अलामत थी।

★ महफ़िल में लोगों के सामने बुलंद आवाज़ से हवा ख़ारिज करना वह अपनी शान समझते थे हालांकि शुर्फ़ा के लिये यह फ़ेअल बाइस शर्म होता है। बे–इख़्तेयार का बुलंद आवाज़ से हवा ख़ारिज होना या गैस वग़ैरह की बीमारी में मुब्तला होने की वजह से न रोक सकना, या रोकने की सूरत में बीमारी बढ़ जाने का ख़तरा होना, सब उज़्र हैं उज़्र की सूरतों में कई अफ़आल माफ़ होते हैं उनके अहकाम अलग होते हैं।

★ मज़ाह करते हुए लोगों के सामने नंगा होना यानी चादर शलवार वग़ैरह उतार देना। नंगा होना बे हया बनना भी क़ौमे लूत का फ़ेअल है जिसको आज नाम नहाद मुसलमानों ने सक़ाफ़त का नाम दिया हुआ है।

★ मज़ाह मज़ाह में फ़हश कलामी और एक दूसरे को गाली देना, यह बुराई भी आज के औबाश लड़कों में आम तौर पर पाई जाती है, वह अपने ख़्याल में अपने आपको मार्ड़न और तरक़्क़ी याफ़ता समझते हैं। अगर कोई शरीफ़ आदमी उन्हें रोके तो उसे मलाइयत फ़िस्ताइयत क़दामत पसंदी के अलक़ाब देते हैं और कहते हैं दुनिया तो (बेहयाई में) बहुत आगे जा चुकी है लेकिन यह अभी चौदह सौ साल पीछे हैं। साइंसी उलूम पढ़कर तरक़्क़ी तो ज़रूर करें मुल्क व मिल्लत को उरूज बख़्शें लेकिन बे हया बन कर अल्लाह तआला के अज़ाब को दावत न दें।

अलग़र्ज़ हर क़िस्म की बे याई उस क़ौम में मौजूद थी हया के ख़िलाफ़ हर फ़ेअल उनके नज़दीक पसंदीदा समझा जाता।

आम लोगों के सामने आम महाफ़िल में मुसतगी का चबाना और मिस्वाक का चबाना भी क़ौमे लूत का बुरा फ़ेअल था, यह ऐसा फ़ेअल है जिस से दूसरे देखने वाले का दिल ख़राब होता है दिल में मतलापन पैदा होता है, जो बाज़ औक़ात ज़्यादा हिस्सास तबियत के शख़्स के क़ै आने का सबब बन जाता है।

आज के दौर में चोइंगम (बबलगम) चबाना, मुंह से बार बार निकालना फिर मुंह के अंदर ले जाना और कभी गुब्बारा बनाना, क़ौमे लूत के फ़ेअल का ही अक्स है और दर हक़ीक़त यह बेवक़ूफ़ी की अलामत है।

आम तौर पर बेवकूफ़ को ऊंट से तश्बीह दी जाती है क्योंकि वह पेशाब अपनी रानों पर करता है जो पेशाब से अपने आप को न बचा सके उसे बेवकूफ़ समझा जाता है। बेवकूफ़ को ऊंट कह देते हैं और कई मस्त ऊंट अपने मुंह से इसी तरह गुब्बारा बनाते हैं फिर मुंह में दाख़िल कर लेते हैं मुंह में झाग पैदा होती है। इसे पंजाबी में कहते हैं "बू के निकालने वाला ऊंट" कभी ऊंट का नज़ारा भी देखें और तरक़्क़ी याफ़ता चोइंगम खाने वालों को भी देखें तो आपको कोई फ़र्क़ नज़र नहीं आयेगा इसलिये उनको ऊंट कहना और बेवकूफ़ समझना अक़्ल की अलामत है।

कुछ लोग हर वक़्त मुंह में मिस्वाक लिये फिरते हैं आम महाफ़िल में बस में वैगन में हालांकि इस तरह मिस्वाक मुंह में लेना फिर निकालना फिर मुंह में डालना कुल्ली न करना यह तरीक़ा दूसरों का दिल ख़राब करने के मुतरादिफ़ है।

मिस्वाक कौन से मवाक़े में मस्तहब है: मिस्वाक के मुताल्लिक़ नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के क्या इरशादात हैं? उनको समझने से वाज़ेह हो जायेगा कि हर वक़्त मिस्वाक चबाते रहना, कभी मुंह में लेना कभी बाहर निकालना मायूब है। जिस फ़ेअल से दूसरे लोगों की तबीयत ख़राब हो वह काम अंबियाए किराम ने नहीं किये।

मिस्वाक के मुताल्लिक़ इरशादे मुस्तफ़ा : हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से मरवी है रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः

अगर मैं उम्मत पर शाक़ न समझता तो हर वुज़ू के वक़्त मिस्वाक का हुक्म देता, यानी हर वुज़ू के साथ मिस्वाक को वजिब क़रार दे देता।

हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः

अगर मैं अपनी उम्मत पर शाक़ न समझता तो ईशा की ताख़ीर और हर नमाज़ के वक़्त मिस्वाक का हुक्म देता यानी ईशा की नमाज़ को देर से अदा करता और हर नमाज़ के वक़्त मिस्वाक करने को वाजिब कर देता।

ख़्याल रहे कि यह दोनों हुक्म इस्तहबाबी अब भी मौजूद हैं सिर्फ़ वजूब की नफ़ी है ताकि उम्मत पर मुश्किल दरपेश न आये।

हज़रत शुरैह बिन हानी रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा से सवाल किया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जब घर तशरीफ़ लाते तो किस चीज़ से इब्तेदा करते? आप रज़ियल्लाहु अन्हा ने फ़रमाया मिस्वाक से।

यानी मस्जिद से वापस घर आकर या सफ़र से वापस आकर मिस्वाक फ़रमाते थे आप नज़ाफ़त का ख़ुसूसी ख़्याल फ़रमाते थे और दांतों की सफ़ाई में मुबालग़ा फ़रमाते।

मिस्वाक के मुस्तहब औक़ात : पांच मौक़ों में मिस्वाक करना मुस्तहब है।

१. दांत ज़र्द रंग के हो जायें। २. मुंह में बू आने लगे। ३. सोने के बाद। ४. नमाज़ के लिये जब तैयार हो। ५. वुज़ू जब भी करे, ख़्वाह नमाज़ के लिये या कुरआन पाक को छूने के लिये।

इस बहस से मिस्वाक के मवाज़े वाज़ेह हो गये गाड़ी में, बस में चलते फिरते हर महफ़िल में मिस्वाक को चबाते रहना, कभी मुंह में लेना, कभी निकालना, कभी थूकना फिर मिस्वाक को मुंह में लेना, कुल्ली न करना, यह तरीक़ा राक़िम को कहीं से नहीं मिला कि ऐसा करना मुस्तहब है या दूसरों को मुतनफ़्फ़िर करना है।

लूत अलैहिस्सलाम की ज़ौजा : हज़रत लूत अलैहिस्सलाम की ज़ौजा का नाम वाहेला था यह काफ़िरा थी। उसके दिल में निफ़ाक़ था वादा का पास नहीं करती थी। लूत अलैहिस्सलाम के पास आने वाले मेहमानों के मुताल्लिक़ कौम को ख़बर करती इस तरह लूत अलैहिस्सलाम की ख़्यानत की मुरतकिब होती। कौम की बुराई पर खुश होती थी इस लिये कौम के साथ अज़ाब में यह भी गिरफ़्तार हुई।

अज़ाब वाले फ़रिश्तों का लूत अलैहिस्सलाम के पास आना : जो फ़रिश्ते हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम के पास आये थे हज़रत सारा को इस्हाक़ अलैहिस्सलाम और उनके बाद याकूब अलैहिस्सलाम की बशारत देने के लिये वही लूत अलैहिस्सलाम की कौम को अज़ाब देने के लिये भी आये। वह फ़रिश्ते इंसानी शक्ल में आये थे। इब्राहीम अलैहिस्सलाम बहुत मेहमान नवाज़ थे पंद्रह दिनों से कोई मेहमान न आया था, इसलिये आप ने जल्दी से उनके पास भुना हुआ बछड़ा पेश किया। आपने जब देखा कि यह अजनबी लोग हैं उनके हाथ खाने तक नहीं पहुंच रहे हैं तो समझ गये कि यह तो फ़रिश्ते हैं।

एतेराज़ : रब तआला ने फ़रमाया और दिल दिल में उनसे डरने लगे।

इससे तो पता चलता है कि आप को फ़रिश्तों का पता ही न चल सका और उनको अजनबी समझ कर डर गये कि मालूम नहीं यह कौन लोग हैं कहां से आ गये हैं।

जवाब : तावीलाते नजमिया में यह ब्यान किया गया है कि इब्राहीम अलैहिस्सलाम को बतक़ ज़ाए बशरीयत कोई ख़ौफ़ नहीं हुआ कि आपको अपनी जान का ख़ौफ़ होता तो आपको जब मुनजनीक़ के ज़रिये आग में डाला जा रहा था उस वक़्त आपको अपनी जान का काई ख़ौफ़ नहीं हुआ बल्कि आपने कहा: मैं अपने आप को रब्बुल आलमीन के सुपुर्द कर रहा हूं आपको सिर्फ़ ख़ौफ़ अपनी उम्मत का था उम्मत पर रहमत व शफ़क़त करते हुए आप ख़ौफ़ कर रहे थे कि कहीं मेरी उम्मत किसी अज़ाब में मुब्तला न हो जाये फ़रिश्तों का जवाब इस मज़मून को वाज़ेह कर रहा है क्योंकि उन्होंने कहा आप ख़ौफ़ न करें बेशक हम तो लूत अलैहिस्सलाम की तरफ़ भेजे गये हैं।

इब्राहीम अलैहिस्सलाम का फ़रिश्तों से मुजादला : फिर जब इब्राहीम का ख़ौफ़ ज़ायल हुआ और उसे खुशख़बरी मिली हमसे कौमे लूत के बारे में झगड़ने लगा।

यानी इब्राहीम अलैहिस्सलाम को जब मालूम हो गया कि मेरी कौम को अज़ाब तो नहीं हो रहा है तो आपको लूत अलैहिस्सलाम और उनकी अहल की फ़िक्र दामनगीर हुई। अल्लामा आलूसी रहमतुल्लाह अलैहि ने भी यही कौल पसंद किया है कि आप को अपनी कौम की फ़िक्र थी आप फ़रिश्तों को पहचान रहे थे। अल्लामा फ़रमाते हैं:

मेरी रुझान इसी तरफ़ है कि आपने फ़रिश्तों को पहले ही पहचान लिया था ख़ौफ़ सिर्फ़ इसलिये हो रहा था कि यह मालूम न हो सका कि यह क्यों नाज़िल हुए हैं? कहीं कौम को अज़ाब देने के लिये तो नहीं आ गये।

इब्राहीम अलैहिस्सलाम का फ़रिश्तों से सवाल व जवाब करना अगरचे हक़ीक़तन कोई मुजादला नहीं अलबत्ता सूरतन मुजादला था आप अलैहिस्सलाम ने उन्हें कहा, क्या तुम इस बस्ती को हलाक कर दोगे जिसमें तीन सौ मोमिन होंगे? उन्होंने कहा नहीं ऐसा कभी नहीं करेंगे। फिर आपने कहा, क्या तुम इस बस्ती को हलाक करोगे जिसमें दो सौ ईमान वाले रहते हों? उन्होंने कहा नहीं उसे तो हलाक

नहीं करेंगे? फिर आपने कहा क्या तुम इस आबादी को बर्बाद करोगे जहां चालीस ईमानदार लोग मौजूद हैं? उन्होंने कहा नहीं इसे तो कभी बर्बाद नहीं करेंगे। फिर आपने फ़रमाया तुम इस शहर को बर्बाद करोगे जहां दस मोमिन रहते हों? उन्होंने कहा नहीं। फिर आपने फ़रमाया कि अगर एक मोमिन वहां रहता हो तो उसे तुम बर्बाद करोगे? उन्होंने कहा नहीं।

तो आप अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया इस में तो लूत मौजूद हैं? फ़रिश्तों ने कहा हमें मालूम है वहां कौन लोग हैं? लूत अलैहिस्सलाम और उनकी अहल को हम नजात देंगे सिवाए उनकी औरत के, वह कौम के साथ अज़ाब में मुब्तला हो जायेगी।

फ़रिश्तों का लूत अलैहिस्सलाम के पास आना : जब लूत के पास हमारे फ़रिश्ते आये उसे उनका ग़म हुआ और उनके सबब दिल तंग हुआ और बोला यह बड़ी सख़्ती का दिन है और उसके पास उसकी क़ौम दौड़ती हुई आई और उन्हें पहले ही बुरे कामों की आदत पड़ी थी कहा ऐ क़ौम यह मेरी क़ौम की बेटियां हैं यह तुम्हारे लिये सुथरी हैं तो अल्लाह से डरो और मुझे मेरे मेहमानों में रुस्वा न करो क्या तुममें से एक आदमी भी नेक चलन नहीं बोले तुम्हें मालूम है कि तुम्हारी क़ौम की बेटियों में हमारा कोई हक़ नहीं और तुम ज़रूर जानते हो जो हमारी ख़्वाहिश है बोले ऐ काश मुझे तुम्हारे मुक़ाबिल ज़ोर होता या किसी मज़बूत पाए की पनाह लेता।

यानी क़ौम को जब पता चला कि लूत अलैहिस्सलाम के पास ख़ूबसूरत नौजवान बतौर मेहमान आये हुए हैं तो वह अपने बुरे इरादे और शदीद जज़्बात लिये भागते हुए आ गये उनको ख़बर देने वाली भी लूत अलैहिस्सलाम की ज़ौजा वाहेला ही थी।

यह भी ख़्याल रहे कि वह क़ौम इस बदफ़ेअली यानी लिवातत का इर्तकाब कोई छुप कर न करती बल्कि वह लोग ज़ाहिर तौर पर इस बुराई के मुरतकिब होते, इसलिये लूत अलैहिस्सलाम ने कहा क्या तुम में से कोई भी नेक चलन नहीं? आपने इनको बड़े प्यारे अंदाज़ पर नसीहत फ़रमाई यह मेरी क़ौम की बेटियां हैं जो तुम्हारी बीवियां हैं तुम उनके हुक़ूक़ पायमाल कर रहे हो, हुक़ूक़े ज़ौजियत अदा नहीं कर रहे, नौजवानों की तरफ़ तुम्हारा मीलान, बदफ़ेअली का इर्तकाब तुम्हारी बद चलनी का ज़रिया है। अपनी बीवियों की तरफ़ मीलान करो ताकि उनके हुक़ूक़ भी अदा हो सकें और तुम भी नेक हो जाओ। यह मेरे मेहमान हैं इनसे कोई बुराई के मुरतकिब होकर मुझे रुसवा न करो। अगर मेरे पास कोई ताक़त होती तो मैं तुम्हें मार मारकर भगा देता अगर मेरे पास कोई मज़बूत क़िला या पनाह होती तो मेहमान को वहां ले जाता।

पनाह तलब करने का मतलब : लूत अलैहिस्सलाम ने कहा (या किसी मज़बूत पाए की पनाह लेता)

नबी क़रीम रहमते आलमत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः

अल्लाह तआला लूत पर रहम फ़रमाये आप किसी मज़बूत पाए की पनाह लेना चाहते थे।

बज़ाहिर यहां वहम होता है कि लूत अलैहिस्सलाम ने यह क्यों कहा? (मआज़ल्लाह) आपने बेसब्री का मुज़ाहिरा किया इसका जवाब ज़िक्र करते हुए मुल्ला अली क़ारी रहमतुल्लाह अलैहि ने फ़रमाया

इंसान की जबिल्लते बशरी का तक़ाज़ा है कि वह बाज़ उमूरे ज़रूरिया अपने क़वी क़बीला से इमदाद तलब करता है यह अंबियाए किराम की शान के मुख़ालिफ़ नहीं बल्कि हज़रत लूत अलैहिस्सलाम के बाद आने वाले तमाम अंबियाए किराम ने भी अपने क़बाइल के कई अफ़राद से मदद तलब की, इसमें अल्लाह की तरफ़ से कोई मनाही नहीं पाई गई।

फ़रिश्तों का जवाब और कौमे लूत पर अज़ाब : फ़रिश्ते बोले ऐ लूत! हम तुम्हारे रब के भेजे हुए हैं वह तुम तक नहीं पहुंच सकते तो अपने घर वालों को रातों रात ले जाओ और तुम में कोई पीठ फेर कर न देखे सिवाए तुम्हारी औरत के, उसे भी वही पहुंचना है जो इन्हें पहुंचेगा। बेशक उनका वादा सुबह के वक़्त है क्या सुबह क़रीब नहीं? फिर जब हमारा हुक्म आया हमने इस बस्ती के ऊपर को इसका नीचा कर दिया और उस पर कंकर के पत्थर लगातार बरसाए जो निशान किये हुए तेरे रब के पास हैं और वह पत्थर कुछ ज़ालिमों से दूर नहीं।

फ़रिश्ते अब तक यह मंज़र ख़ामोशी से देख रहे थे जब इन औबाशों की गुस्ताख़ी और हज़रत लूत अलैहिस्सलाम की परेशानी और बेबसी की इंतेहा हो गई तो फ़रिश्ते गोया हुए ऐ लूत! घबराओ नहीं दरवाज़ा खोल दो और इन मसख़रों को आगे आने दो। हम लौंडे थोड़े हैं कि यह आगे बढ़कर हमको दबोच लेंगे हम अल्लाह के भेजे हुए फ़रिश्ते हैं और हमें इस लिये भेजा गया है कि हम इन बस्तियों को तह व बाला करके रख दें। आप ऐसा करें कि रात का जब कुछ हिस्सा गुज़र जाये तो अपने घर वालों को हमराह लेकर यहां से चले जायें। लेकिन आपकी बीवी आपके साथ नहीं जा सकती। इसका अंजाम वही होगा जो दूसरे मुजरिमों का। अब इन ज़ालिमों की मोहलत की घड़ियां ख़त्म हो गई सिर्फ़ सुबह होने की देर है और सुबह के तुलू होने में अब ज़्यादा वक़्त नहीं।

जब अज़ाब आया तो उनकी बस्तियों को ज़ेर व ज़बर करके रख दिया गया उनकी फ़लक बोस इमारतें ज़मीन पर औंधी गिरा दी गई उन पर सख़्त पत्थरों की ऐसी मूसलाधार बारिश की गई कि वह सब ख़ाक स्याह बन कर रह गये। सअदून, उमूराह, औमा और ज़बूईम उनकी चारों बस्तियां उस जगह आबाद थी जहां आज कल बहरे मुराद या बहरे लूत है अब भी बहर लूत से धुएं के बादल उठते रहते हैं और कसरत से ज़लज़ले आते रहते हैं।

लूत अलैहिस्सलाम का रात को निकल जाना : लूत अलैहिस्सलाम अपने साथ सिवाए ज़ौजा के बाक़ी घर के अफ़राद को रात को लेकर निकल गये। अल्लाह तआला ने ज़मीन को लपेट दिया इस तरह आप इब्राहीम अलैहिस्सलाम के पास पहुंच गये। फिर जिब्राईल अलैहिस्सलाम ने उनकी तमाम बस्तियों को अपने पर से उठाया और इतना बुलंद किया कि आसमान वाले उनकी बस्तियों में रहने वाले मुर्ग़ों की आवाज़ और कुत्तों के भोंक सुन रहे थे फिर उनको पलटकर नीचे गिराकर ऊपर से पत्थरों की बारिश बरसा कर तबाह व बर्बाद कर दिया गया।

ख़्याल रहे कि चार बस्तियों का पहले ज़िक्र हो चुका है। पांचवी बस्ती जो सबसे बड़ी थी उसका नाम सदूम था जिसे कुरआन पाक में मोतफ़िकात से ताबीर किया गया है।

तंबीह : जो पत्थर उन पर बरसाए गये थे उन पर निशानात थे जिनकी वजह से वह दूसरे पत्थरों से मुमताज़ थे उन पर ख़ुतूत थे या मुहरें थीं या उन पर हर शख़्स का नाम लिखा गया था जिस जिस का नाम था उसी पर वह पत्थर गिरा और वह मरा।

लूत अलैहिस्सलाम की क़ौम को जब पता चला कि आपके पास नौजवान मेहमान आये हुए हैं तो वह दौड़ते हुए अपने बुरे इरादे से आए। आपने उन्हें समझाया कि मुझे मेहमानों के बारे में रुस्वा न करो और आपने फ़रमायाः

आला हज़रत मौलाना अहमद रज़ा ख़ां बरेलवी रहमतुल्लाह अलैहि लिखते हैं:

बोले ऐ मेरी कौम यह मेरी कौम की बेटियां हैं यह तुम्हारे लिये सुथरी हैं।

दीगर हज़रात ने तर्जमा में मेरी बेटियां ज़िक्र किया है।

आला हज़रत का तुर्जमा तफ़ासीर के मुताबिक़ और अल्लाह के नबी की शान के लायक़ है जब कि दीगर तराजिम से यह पता चलता है कि लूत अलैहिस्सलाम ने अपनी बेटियों के मुताल्लिक़ कहा। अगरचे एक कौल यह मिलता है कि आप ने बेटियों के मुताल्लिक़ कहा कि तुम इनसे निकाह कर लो लेकिन यह कौल मुख़्तलिफ़ बहसों से मरदूद है। आपकी दो बेटियां थीं। बनात जमा है नीज़ दो बेटियां पूरी कौम के लिये कैसे? क्या सिर्फ़ उस कौम के दो सरदार मुराद थे या कि पूरी कौम? क्या काफ़िरों से निकाह जायज़ था?

अबू शैख़ ने इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु से ब्यान किया है कि इब्न अबी हातिम ने इब्ने ज़ुबैर से मुजाहिद इब्न उबियुद्दुनिया और इब्ने असाकर ने सिद्दी से ब्यान किया है कि यहां लूत अलैहिस्सलाम ने जो बनात का ज़िक्र किया है इससे मुराद आपने अपनी कौम की औरतें ली हैं, "हा–उला" से इशारा को बमंज़िल हाज़िर के समझ कर किया और उनकी इज़ाफ़त अपनी तरफ़ की और 'बनाती' कहा इससे मुराद यह है कि हर नबी अपनी उम्मत में बाप की हैसियत रखता है क्योंकि हज़रत इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु की क़राअत में है।

नबी मोमिनों के उनकी जान से ज़्यादा मालिक हैं क्योंकि वह उनके बाप हैं और उनकी बीवियां उनकी मायें। हज़रत अबी रज़ियल्लाहु अन्हु की क़िरात में भी ऐसे ही है लेकिन इसमें व अज़्वाजिहि उम्माहातिहिम पहले और 'वहुव अब लहुम' बाद में है।

आला हज़रत मौलाना अहमद रज़ा ख़ां बरेलवी रहमतुल्लाह अलैहि ने जो तर्जमा किया है अल्लामा राज़ी रहमतुल्लाह अलैहि ने भी इसे ही पसंद किया है और अपने मुख़्तार पर दलायल क़ायम किये हैं। तफ़सीर कबीर की इबारत मुलाहज़ा हो।

हज़रत लूत अलैहिस्सलाम के इस कलाम में दो कौल हैं हज़रत क़तादा ने कहा इससे मुराद आपकी अपनी हक़ीक़ी बेटियां हैं लेकिन हज़रत मुजाहिद और सईद बिन जुबैर ने कहा है कि इससे मुराद आप की उम्मत की औरतें हैं इसलिये कि वह आपकी बेटियां ही थीं उनकी तरफ़ क़बूले दावत और मुताबेअत की वजह से मनसूब किया इसलिये कि नहवियों का ज़ाब्ता यह है कि हुस्ने इज़ाफ़त में अदना मुनासबत काफ़ी है इसलिये कि आप उनके नबी थे और नबी अपनी उम्मत का बाप होता है क्योंकि कुरआन पाक में आता है नबी की बीवियां उनकी मायें हैं लिहाज़ा नबी उनके बाप हुए। अल्लामा राज़ी फ़रमाते हैं कि यही कौल मेरे नज़दीक मुख़्तार है इसके मुख़्तार होने पर कई वजूह दाल हैं।

पहली वजह यह है : कि इंसान का अपनी बेटियों का औबाशों और फ़ासिक़ों फ़ाजिरों पर पेश करना बहुत बईद है अहले मुरव्वत के लायक़ नहीं अकाबिर अंबिया यह काम कैसे कर सकते हैं।

दूसरी वजह : आपने फ़रमाया हा ऊलाए बनाती हन अतहर लकुम आपकी अपनी हक़ीक़ी बेटियां इतनी अज़ीम जमाअत को काफ़ी नहीं हो सकती थीं उम्मत की औरतें उन तमाम को काफ़ी हो सकती थीं।

तीसरी वजह : सहीह रिवायत है कि आपकी दो बेटियां थीं एक का नाम ज़नता और दूसरी का नाम ज़ऊरा था लफ़्ज़ बनात का इतलाक़ (बिलहक़ीक़त) दो बेटियों पर सहीह नहीं, क्योंकि जमा के कम से कम तीन फ़र्द होते हैं।

हज़रत याकूब व हज़रत यूसुफ़ अलैहिमस्सलाम :

हज़रत याकूब अलैहिस्सलाम इस्हाक़ अलैहिस्सलाम के बेटे और हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम के पोते हैं और हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम हज़रत याकूब अलैहिस्सलाम के बेटे हैं।

हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा से मरवी है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः

करीम इब्ने करीम इब्ने करीम बिन करीम यूसुफ़ बिन याकूब बिन इस्हाक़ बिन इब्राहीम हैं।

याकूब अलैहिस्सलाम के बेटे : याकूब अलैहिस्सलाम के बारह बेटे हैं यानी यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के ग्यारह भाई हैं। उनके नाम यह हैंः यहूदा, रुबील, शमऊन, लादी, रियालून, यशजर, दीनह यह तमाम लड़के आपकी ज़ौजा लिया बिन्त लियान बिन फ़ाहिर के बतन से हैं यह ज़ौजा हज़रत याकूब अलैहिस्सलाम की ख़ाला की लड़की थी।

दान, यफ़्ताली, जाद, आशरिया लड़के ज़लक़ह और बलहतह के बतन से थे। हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम और बुनियामिन राहील के बतन से थे। राहील की वफ़ात बुनयामीन की पैदाईश के बाद जल्द ही हो गई थी। लिया की वफ़ात के बाद राहील से निकाह हुआ था। रूहील, लिया की बहन थी।

ख़्याल रहे कि जो नाम ज़िक्र किये गये हैं यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के अलावा वह बारह हैं और मशहूर यह है कि हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के ग्यारह भाई थे इसी वजह से अक्सर हज़रात ने दीनह नाम को शामिल नहीं किया।

कुछ हज़रात ने शामिल तो किया है लेकिन कहा है कि यह मुअन्नस का नाम है यानी यूसुफ़ की एक बहन का नाम दीनह था।

यूसुफ़ अलैहिस्सलाम का ख़्वाब देखना : हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम ने अपने बाप को बताया कि ऐ मेरे बाप!

बेशक मैंने ग्यारह तारे और सूरज और चांद देखे उन्हें अपने लिये सज्दा करते हुए देखा। यूसुफ़ ने जो तारे देखे थे उनके नाम यह हैंः

जिरबान, तारिक़, ज़ियाल, क़ालबिस, ऊमूदान, फ़ीलक़, फ़ज़अ, विसाब, जुलकफ़तैन, ज़रूज, मिस्बह।

एक रिवायत में मिस्बह की जगह नतह ज़िक्र है लेकिन पहली रिवायत पर कसीर अहले इल्म हज़रात हैं सनान नामी यहूदी हुज़ूर सरवरे कायनात सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और कहने लगा आप मुझे इन सितारों के मुताल्लिक़ बतायें जो यूसुफ़ ने देखे थे, आप ख़ामोश थे कि जिब्राईल अलैहिस्सलाम आ गये उन्होंने हुज़ूर को सितारों के नाम बता दिये, आपने यहूदी को कहा अगर मैं तुम्हें उन तारों के नाम बता दूं तो क्या तुम ईमान ले आओगे? उसने कहा, हां। आपने उसे नाम बता दिये वह कहने लगा क़सम है अल्लाह तआला की बेशक यही उनके नाम हैं।

आपके ख़्वाब की ताबीर : ग्यारह तारों से मुराद आपके भाई और चांद सूरज से मुराद आपके मां—बाप हैं। लेकिन ख़्याल रहे कि ख़्वाब देखने से पहले ही आपकी वालदा का इंतेक़ाल हो चुका था। सज्दा से मुराद सजदए ताज़ीमी है जो पहले उम्मतों में जायज़ था हमारी शरीअत में जायज़ नहीं।

फ़ायदा : ख़्वाब में सूरज देखने से बादशाहत, सोना, ख़ूबसूरत औरत मिलने की तरफ़ इशारा पाया जाता है चांद को ख़्वाब में देखने से बादशाहत, वज़ारत, बादशाह का कुर्ब, रियासत, शराफ़त गुलाम, मनसब, हाकीमियत बड़े आदमी की ज़ियारत, वालिद वालदा ज़ौजा ख़ाविंद अज़मत की तरफ़ इशारा होता हैं हां कभी कभी फ़साद और बातिल उमूर की तरफ़ भी इशारा होता है यह सब देखने वाले पर मुनहसिर है।

ख़्याल रहे ख़्वाब देखने वाला जब कोई अच्छा ख़्वाब देखे तो वह अल्लाह तआला की तरफ़ से (इलका़) होता है उस पर अल्लाह तआला की हम्द व सना पढ़े और लोगों के सामने ब्यान करना चाहे तो ब्यान भी कर दे लेकिन अगर बुरा ख़्वाब देखे वह तो शैतान की तरफ़ से होता है ख़्वाब देखने पर बायें तरफ़ तीन मर्तबा थूके और पढ़े आऊज़ूबिल्लाह मिनश शैतानिर्रजीम व शर्रिर रूया और किसी के सामने वह ख़्वाब ब्यान न करे उसे कोई नुक़्सान नहीं होगा।

याकूब अलैहिस्सलाम का ख़्वाब ब्यान करने से मना करना : कहा ऐ मेरे प्यारे बेटे! अपना ख़्वाब अपने भाईयों को न बताना कि वह तेरे साथ कोई चाल चलेंगे बेशक शैतान आदमी का खुला दुश्मन है।

हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम ने यह ख़्वाब बारह साल की उम्र में देखा, हज़रत याकूब अलैहिस्सलाम को मालूम था कि यूसुफ़ अलैहिस्सलाम मनसबे नबुव्वत पर फ़ायज़ होंगे तो भाई उनसे हसद करेंगे।

क्योंकि याकूब अलैहिस्सलाम को यूसुफ़ अलैहिस्सलाम से बहुत ज़्यादा मुहब्बत थी आपके भाई आपसे इस पर हसद करते थे यह भी याकूब अलैहिस्सलाम के इल्म में था, इसी लिये आपने मना फ़रमाया कि यह ख़्वाब भाईयों से ब्यान न करना। वरना उनका हसद और बढ़ जायेगा वह तुम्हें नुक़्सान पहुंचाने में शैतान के दामे फ़रेब में आ जायेंगे।

यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के भाईयों का हसद : जब उन्होंने कहा कि ज़रूर यूसुफ़ अलैहिस्सलाम और उसका भाई हमारे बाप को हम से ज़्यादा प्यारे हैं और हम एक जमाअत हैं बेशक हमारे बाप सराहतन उनकी मुहब्बत में डूबे हुए हैं।

हज़रत याकूब अलैहिस्सलाम चूंकि हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम से सबसे ज़्यादा मुहब्बत करते थे और उनके बाद हज़रत बुनयामीन से, तो दूसरे भाईयों को इस पर हसद आया वह कहने लगे हम तो एक जमाअत हैं बाप की ख़िदमत ज़्यादा कर सकते हैं और उनको ज़्यादा नफ़ा पहुंचा सकते हैं यह दो हैं और छोटे भी हैं यह अपने बाप की ख़िदमत हमारी तरह नहीं कर सकते फिर उनसे प्यार व मुहब्बत हमसे ज़्यादा क्यों?

एतेराज : सवाल यह होता है कि याकूब अलैहिस्सलाम के लड़कों ने अपने बाप को ज़लाल मुबीन की तरफ़ कैसे मंसूब किया? यह तो मज़म्मत और तअना में मुबालग़ा है और जो शख़्स अल्लाह के रसूल पर तअना में मुबालग़ा करे वह काफ़िर है। (हालांकि वह मोमिन थे) औलाद किस तरह तअना ज़न हो सकती है?

जवाब : इसका जवाब यह है कि राहे रास्त और हक़ से दूरी को ज़लाल से ताबीर नहीं किया बल्कि उनके कहने का मतलब यह था कि हमारे बाप दुनिया की मसलेहत को नहीं देख रहे कि हम एक जमाअत हैं हम इन्हें ज़्यादा नफ़ा पहुंचा सकते हैं और हम इनकी ख़िदमत ज़्यादा कर सकते हैं लेकिन मुहब्बत वह इनसे ज़्यादा करते हैं।

याकूब अलैहिस्सलाम की मुहब्बत दो बेटों से ज़्यादा क्यों? : मुहब्बत दिल का काम है जिस पर इंसान क़ादिर नहीं इसी लिये नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अपनी अज़वाजे मुतह्हरात में इंसाफ़ करने में बहुत ज़्यादा एहतेयात फ़रमाने के बावजूद दुआ फ़रमाते थे।

ऐ अल्लाह! जिसका मैं मालिक हूं उस पर तो मैंने अमल कर दिया लेकिन जिस पर मैं मालिक नहीं उस पर मुझे मवाख़ज़ा न करना।

यानी दिली मुहब्बत किसी से ज़्यादा होना इंसान के दायरए कुदरत से बाहर है। यह दोनों भाई छोटे छोटे थे छोटी औलाद से मुहब्बत ज़्यादा होना भी फ़ितरतन और कुदरती अमल है।

यूसुफ़ अलैहिस्सलाम से मुहब्बत सबसे ज़्यादा होने की असल वजह यह थी कि आपको मालूम हो चुका था कि आप की तमाम औलाद में से अगर किसी को मनसबे नबुव्वत हासिल होना है तो वह यही आपका बेटा है इसीलिये आप इनसे ज़्यादा मुहब्वत करते थे इनके बाद बुनयामीन से क्योंकि वह सबसे छोटे थे।

यूसुफ़ अलैहिस्सलाम से ज़्यादा मुहव्वत करने की वजह से ही उनके भाई ज़्यादा मुख़ालिफ़ उनके ही थे बुनयामीन के इस तरह मुख़ालिफ़ नहीं थे क्योंकि ख़्वाब दखेने का मामला उन तक भी किसी तरह पहुंच चुका था।

भाईयों ने यूसुफ़ अलैहिस्सलाम को राह से हटाने की ठान ली : यूसुफ़ को मार डालो या कहीं ज़मीन पर फेंक आओ कि तुम्हारे बाप का मुंह सिर्फ़ तुम्हारी ही तरफ़ रहे और इसके बाद फिर नेक हो जाना।

यानी उन्होंने मश्वरा किया कि अगर तुम चाहते हो कि वाप सिर्फ़ तुम्हारे साथ ही ख़ालिस मुहब्बत करें तो यूसुफ़ को रास्ते से हटाना ज़रूरी है इसके बग़ैर वाप की कामिल मुहब्बत मयस्सर नहीं हो सकती। वह मुसलमान थे काफ़िर नहीं थे, समझ रहे थे कि यह अज़ीम जुर्म भी होगा, लेकिन हसद की आग ने उन्हें अंधा कर दिया था। वह अपने इरादे को अमली जामा पहनाने का पक्का इरादा कर चुके थे। अलबत्ता यह सोच रहे थे कि बाद में तौबा कर लेंगे और नेक हो जायेंगे।

सिर्फ़ एक भाई क़त्ल करने से मना करता था : उनमें से एक कहने वाला बोला, यूसुफ़ को क़त्ल न करो और इसे अंधे कुंए में डाल दो कि कोई चलता इसे आकर ले जाये अगर तुम्हें करना है तो:

यह रोकने वाला आपका सबसे बड़ा भाई था जिसका नाम यहूदा था उसने कहा क़त्ल एक अज़ीम जुर्म है तुम्हारा यह इरादा दुरुस्त नहीं अलबत्ता जंगल में किसी कुंए में डाल दो, शायद वहां से कोई गुज़रे तो इसे निकाल कर साथ ले जाये इस तरह तुम्हारा मतलब भी पूरा होगा और यूसुफ़ भी क़त्ल से बच जायेगा अगर तुम्हें अपने इरादे पर अमल करना ही है तो यही करो।

यूसुफ़ अलैहिस्सलाम को जंगल में ले जाने के लिये भाईयों का हीला : उन्होंने कहा ऐ हमारे बाप! आपको क्या हुआ कि यूसुफ़ के मामले में हमारा एतेबार नहीं करते हो हम तो इसके ख़ैर ख़्वाह हैं। कल इसको हमारे साथ भेज दीजिये कि मेवे खाए और खेले और बेशक हम इसके निगहबान हैं आपने कहा बेशक तुम्हारा इसको साथ ले जाना मुझे रंज पहुंचाएगा और डरता हूं कि इसे भेड़िया खा जायेगा और तुम इससे बेख़बर रहो। उन्होंने कहा अगर इसे भेड़िया खा जाये और हम एक जमाअत हैं जब तो हम किसी मसरफ़ के नहीं।

उनका शहर से बाहर जाने और खेल की इजाज़त तलब करने का मक़सद यह था कि हम दुश्मन

से जंग करने के लिये तैयारी करेंगे दौड़ में मुक़ाबला करेंगे तीर अंदाज़ी में महारत हासिल करेंगे।

अगर वह सिर्फ़ तमाशा के लिए खेल कूद की इजाज़त तलब करते तो याकूब अलैहिस्सलाम उन्हें कभी इजाज़त नहीं देते। युसूफ़ अलैहिस्सलाम चूंकि छोटे थे इसलिये उन्होंने कहा ऐ हमारे अब्बा जान हमारे छोटे भाई को भी हमारे साथ जाने की इजाज़त दो, यह हमारी जंगी तदाबीर देखकर ख़ुश होगा और जंगी मेवे फल हम इसे तोड़ कर देंगे, यह खायेगा क्योंकि हम ऊंटों को चराने और उन्हें चारा खिलाने की मशक़ें भी करेंगे इनमें जंगली दरख़्तों से फल भी हासिल करेंगे।

याकूब अलैहिस्सलाम चूंकि पहले ही ख़्वाब देख चुके थे कि यूसुफ़ अलैहिस्सलाम पर भेड़िये ने हमला कर दिया है और वह ज़मीन भी भेड़ियों वाली थी इसलिये आपने कहा मुझे डर है कि इसे कोई भेड़िया न खा जाये और तुम बेख़बर ही रहो। शायद याकूब अलैहिस्सलाम ने ख़्वाब को इसी तरह समझा हो और इशारा दुश्मन की तरफ़ हो यानी भेड़िये से मुराद दुश्मन हो। आप अलैहिस्सलाम के बेटों को वापस आकर यही उज़्र पेश करना है अपने बाप के क़ौल से ही समझ आया वरना पहले उनके ज़ेहन में यह बात नहीं थी।

हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हु से मरवी है कि रसूलुल्लाह सल्ललाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि किसी शख़्स के सामने ऐसा कलाम न करो जिससे उसे झूठ की रहनुमाई मिले, जैसे याकूब अलैहिस्सलाम के बेटों को मालूम नहीं था कि इंसानों को भेड़िया भी खा जाता है जब उनके बाप ने यह कहा तो उन्हें भी झूठ बोलने का मौक़ा मिल गया। उन्होंने कहा कि यह कैसे हो सकता है कि भाईयों की एक जमाअत, वह जो बहुत ताक़तवर हो, कि सामने एक भाई को भेड़िया खा जाये। अगर ऐसा हो जाये तो हम किसी काम के नहीं होंगे हमारे होते हुए भेड़िये की क्या मजाल है कि हमारे भाई को खा जाये?

भाईयों का यूसुफ़ अलैहिस्सलाम को तैयार करना : जब हज़रत याकूब अलैहिस्सलाम किसी तरह उनके साथ यूसुफ़ अलैहिस्सलाम को भेजने के लिये तैयार न हुए तो उन्होंने यूसुफ़ अलैहिस्सलाम को कहा, क्या तुम हमारे साथ बाहर जंगल में चलोगे? जहां हम दौड़ में मुक़ाबला करेंगे और ऊंट वग़ैरह दौड़ाने और दूसरी जंगली तदाबीर में मुक़ाबला करेंगे? हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम ने कहाः हां ज़रूर जाऊंगा, उन्होंने कहा कि तुम बाप को कहो, आपने सब भाईयों को साथ लिया और बाप के पास आ गये। भाईयों ने उनकी मौजूदगी में अपने बाप की ख़िदमत में अर्ज़ की। यूसुफ़ हमारे साथ जाना पसंद करता है। आप इसे इजाज़त दें। आपने यूसुफ़ अलैहिस्सलाम की तरफ़ तवज्जोह करते हुए पूछा, तुम्हारा क्या ख़्याल है? उन्होंने कहा भाई मुझे प्यार व मुहब्बत से साथ ले जाना चाहते हैं इस लिये मैं उनके साथ ज़रूर जाऊंगा। इस तरह याकूब अलैहिस्सलाम बावजूद इसके कि नहीं चाहते थे कि यूसुफ़ अलैहिस्सलाम को भाईयों के साथ भेजा जाए लेकिन तक़दीर के सामने कोई तदबीर कारगर न हुई, यूसुफ़ अलैहिस्सलाम की मर्ज़ी और कहने पर भाईयों के साथ भेजने पर आमदगी ज़ाहिर फ़रमा दी।

भाईयों के मज़ालिम : जब वह यूसुफ़ अलैहिस्सलाम को साथ ले चले तो जब याकूब अलैहिस्सलाम सामने थे उस वक़्त तक वह कंधे पर उठाकर चले। याकूब अलैहिस्सलाम उस वक़्त तक खड़े देखते रहे जब तक वह सामने रहे। जब वह जंगल में पहुंच गये और अपने बाप की नज़रों से ओझल हो गये तो यूसुफ़ अलैहिस्सलाम को ज़मीन पर फेंक दिया और अपनी अदावत ज़ाहिर करने लगे, कभी बद

कलामी करते और कभी मारते। आप एक भाई से भागकर दूसरे भाई के पास आते कि शायद वह मेरे साथ हमदर्दी करेगा और मेरी फ़रियाद सुनेगा, लेकिन वही आपको मारना शुरू कर देता, आपने इनके इरादों को जब समझ लिया कि यह क्या चाहते हैं तो वहां से पुकारकर कहा:

ऐ मेरे अब्बाजान! काश आप यूसुफ़ को देखते कि भाई इस पर कितना जुल्म कर रहे हैं? तो आप कितने ग़मज़दा होते और मेरे भाईयों के मुझ पर मज़ालिम को आप देखते तो यक़ीनन रोते। ऐ मेरे अब्बाजान! यह कितनी जल्दी आपके वादा को भूल गये कितनी जल्दी आप की नसीहतों को भूल गये।

यह कहते हुए यूसुफ़ अलैहिस्सलाम शदीद रोए इसी हाल में रूबील ने आपको ज़मीन पर गिरा दिया और सीने पर बैठ गया आपको क़त्ल करने का इरादा किया हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम ने कहा ऐ मेरे भाई ठहर जा मुझे क़त्ल न कर, क़त्ल करना अज़ीम जुर्म है।

सुबहानल्लाह! नबी का मक़ाम कितना बुलंद है? नबुव्वत के ऐलान से पहले ही अपने भाईयों को नसीहत करके क़त्ल जैसे अज़ीम जुर्म से बचा रहे हैं। रूबील कहने लगा तुझे तो बड़े ख़्वाब आते थे अब तू अपने ख़्वाबों को बुला जो तुझे मेरे हाथों से छुड़ायें। उसने आपकी गर्दन को मरोड़ा। आपको क़त्ल करना ही चाहता था कि आपने बड़े भाई यहूदा को कहा ऐ मेरे भाई! ख़ुदा से डर, मेरे और मुझे क़त्ल करने वाले के दर्मियान हायल हो जा, आपके कहने पर उसे कुछ भाई होने का ख़्याल आया और दिल नर्म हुआ उसने कहा ऐ मेरे भाईयो! क्या तुमने मेरे साथ वादा नहीं किया था कि क़त्ल नहीं करोगे? अब भी आसान काम करो, क़त्ल न करो, वह गुस्सा में पहले किये हुए वादा को भूल चुके थे, पूछने लगे क्या करें?

यहूदा ने कहा क़रीब ही कुंआ है इसमें फेंक दो, या तो ख़ुद ही मर जायेगा या कोई क़ाफ़िले वाले गुज़रें तो इसे निकालकर साथ ले जायेंगे वहां एक कुंआ था जो नीचे से खुला और ऊपर से तंग था उसमें जब उन्होंने आप को फेंकना चाहा तो आप कुंए के किनारे से लिपट गये, उन्होंने आपके हाथ पांव बांध दिये, क़मीस को उतार लिया क्योंकि वह क़मीस को ख़ून से रंगकर अपने बाप के सामने उज़्र पेश करना चाहते थे। यूसुफ़ अलैहिस्सलाम उनको कह रहे थे मेरे भाईयो! मेरी क़मीस वापस कर दो ताकि मैं कुंए में नंगा न रहूं लेकिन भाईयों ने आपकी बात को तस्लीम न किया। आपको कुंए में डालने लगे तो आपने उन्हें कहा ऐ मेरे भाईयो! मुझे अकेले छोड़ जाओगे? उन्होंने कहा अब तो चांद सूरज और तारों को बुलाओ वही तुम्हारी इमदाद करेंगे।

आपको एक डोल में डालकर कुंए में लटका दिया गया जब आधे फ़ासला तक डोल पहुंचा तो ऊपर से छोड़ दिया गया इस ख़्याल से कि ज़ोर से गिरने पर मर जायेगा, लेकिन आप अलैहिस्सलाम पानी में गिरे और एक तरफ़ पत्थर था उस पर बैठ गये।

यूसुफ़ अलैहिस्सलाम का कुंए में हाल : जब आपको कुंएं में डाला गया तो आप रो रहे थे उन्होंने आपको ऊपर से आवाज़ दी आपने ख़्याल किया शायद भाईयों को मेरे हाल पर रहम आ गया आपने उनको जवाब दिया उन्होंने आप को ज़िन्दा समझ कर पत्थर गिराकर क़त्ल करना चाहा लेकिन यहूदा ने फिर मना कर दिया।

हज़रत याकूब अलैहिस्सलाम के पास वह क़मीस थी जो आपके दादा जान हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम को जन्नत से लाकर पहनाई गई थी जब आपको आग में डाला गया था।

याकूब अलैहिस्सलाम ने जब यूसुफ़ अलैहिस्सलाम को भाईयों के साथ रवाना किया तो वह क़मीस आपने उनके गले में बतौर तावीज़ डाल दी, भाईयों ने जब यूसुफ़ अलैहिस्सलाम को कुएं में डाला तो उनकी क़मीस उतार ली थी लेकिन फ़रिश्ते ने आकर उनके गले से वह तावीज़ उताकर उससे क़मीस निकालकर उनको पहना दी जिससे कुंआ जगमगाने लगा। हज़रत हसन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से मरवी है कि जब आपको कुंए में डाला गया तो कुंए का पानी मीठा हो गया (हालांकि पहले नमकीन था) इसमें ग़ज़ाईयत की तासीर आ गई। यानी खाने और पीने का काम देने लगा। जिब्राईल उनके पास कुंए में आ गये ताकि वह उनसे उन्स पकड़ सकें, जब शाम हुई तो जिब्राईल अलैहिस्सलाम जाने के लिये उठे तो आपने कहा कि अब मुझे अकेला रहने से वहशत होगी। जिब्राईल अलैहिस्सलाम ने कहा अगर तुम्हें ऐसी कोई हाजत दरपेश आए तो तुम दुआ पढ़नाः

इसके पढ़ने पर तुम मुझे अपनी जगह देख लोगे मेरे हाल को जान लोगे मेरा मामला तुम पर कुछ छुपा नहीं रहेगा। हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम ने जब यह दुआ पढ़ी तो फ़रिश्ते आपके पास आ गये। आप उनसे उन्स पकड़ने लगे, अकेला होने का आपको कोई एहसास न हुआ।

हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा से मरवी है रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया जब यूसुफ़ अलैहिस्सलाम को कुंए में डाला गया आपके पास जिब्राईल अलैहिस्सलाम आये और कहने लगे ऐ लड़के आपको कुंए में किसने डाला? आपने कहा मेरे भाईयों ने। उन्होंने पूछा भाईयों ने क्यों डाला? आपने कहा मेरे बाप मुझ से मुहब्बत करते हैं उन्होंने मुझ पर हसद किया। जिब्राईल अलैहिस्सलाम ने कहा क्या तुम यहां से निकलना चाहते हो? आपने फ़रमाया यह इल्तेजा सिर्फ़ याकूब अलैहिस्सलाम के ख़ुदा की तरफ़ है, जिब्राईल अलैहिस्सलाम ने कहा फिर तुम ख़ुदा से दुआ करोः

आपने जब यह दुआ पढ़ी तो अल्लाह ने आपके मामलात आसान कर दिये कुंए से निकाल कर मिस्र की बादशाही अता फ़रमा दी जो आपके वहम व गुमान में भी न थी।

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः यह दुआ करते रहा करो क्योंकि यह अल्लाह तआला के नेक बरगुज़ीदा बंदों की दुआ है।

याकूब अलैहिस्सलाम के बेटे रोते हुए वापस लौटे : और रात हुए अपने बाप के पास रोते हुए आए ऐ हमारे बाप हम दौड़ते हुए आगे निकल गये और यूसुफ़ को अपने सामान के पास छोड़ा तो उसे भेड़िया खा गया और किसी तरह हमारा यक़ीन न करेंगे अगरचे हम सच्चे हों और उनकी क़मीस पर झूटा ख़ून लगा लाए। (याकूब अलैहिस्सलाम ने कहा) बल्कि तुम्हारे दिलों ने एक बात तुम्हारे लिये बना ली है तो सब्र अच्छा और अल्लाह ही से मदद चाहता हूं उन बातों पर जो तुम बता रहे हो।

उन्होंने एक हिरन को ज़िबह किया उसके ख़ून से हज़रत यूसूफ़ अलैहिस्सलाम की क़मीस को रंग कर बाप के पास लाए और ज़ाहिर यह किया कि भेड़िये के खाने की वजह से यह ख़ून आलूदा हो गई।

हज़रत याकूब अलैहिस्सलाम ने क़मीस को लेकर अपने चेहरा पर डाला और रोने लगे यहां तक कि क़मीस के ख़ून से आपका चेहरा ख़ून आलूदा हो गया आप कह रहे थे कि मैंने आज तक इतना हकीम भेड़िया कोई नहीं देखा जिसने मेरे बेटे को खा लिया हो लेकिन क़मीस को न फाड़ा हो। यह कहते कहते आपने फिर रोना शुरू कर दिया। यहां तक कि आप पर बेहोशी

तारी हो गई। आपके बेटों ने आप पर पानी छिड़का। आपको होश न आया और न ही आपके जिस्म में कोई हरकत पैदा हुई वह आप को पुकार रहे थे लेकिन आप जवाब नहीं दे रहे थे, यहूदा, ने अपना हाथ आपके नाक और मुंह पर रखा लेकिन उसे सांस का चलना महसूस नहीं हो रहा था और न ही आपकी कोई नब्ज़ चल रही थी।

यहूदा ने कहा हमें क़यामत के दिन जज़ा देने वाले मालिकुल मुल्क से अज़ाब ही हासिल होगा। हमने अपने भाई को भी ज़ाया कर दिया और बाप को भी क़त्ल कर दिया। ग़र्ज़ कि वह तमाम रात आप अलैहिस्सलाम ने बेहोशी में गुज़ार दी सहरी के वक़्त होश आया।

फ़ायदा : यूसुफ़ अलैहिस्सलाम की क़मीस में तीन निशानियां पाई गई, पहली यह कि याकूब अलैहिस्सलाम ने क़मीस को देखकर कहा कि यूसुफ़ अलैहिस्सलाम को भेड़िये ने नहीं खाया। फिर याकूब अलैहिस्सलाम की गई हुई नज़र क़मीस से ही वापस लौटी। जब मिस्र से यूसुफ़ अलैहिस्सलाम ने क़मीस भेजी। इसी तरह ज़ुलेख़ा के इल्ज़ाम से क़मीस को देखकर ही बरी किया गया।

हज़रत याकूब अलैहिस्सलाम को मालूम था कि आप ज़िन्दा सही सलामत हैं क्योंकि आपने यूसुफ़ अलैहिस्सलाम को बताया था कि तुम्हारा रब तुम्हें बरगुज़ीदा पैगम्बर बनायेगा और तुम्हें बातों का अंजाम निकालना सिखायेग। और ज़ाहिर बात यही है कि आपने यह कलाम वही से फ़रमाया और जब आपको मालूम था कि आप ज़िन्दा सही सलामत हैं तो आप पर वाजिब था कि यूसुफ़ अलैहिस्सलाम को तलाश करते।

यानी यह आप को बज़रिये वही मालूम था कि यूसुफ़ अलैहिस्सलाम को अल्लाह तआला बाक़ी लोगों से चुन कर मक़ामे नबुव्वत अता करेगा। आप ऐलाने नबुव्वत फरमायेंगे इससे पहले आप पर मौत नहीं आयेगी। क्योंकि अल्लाह तआला अपने वादे की ख़िलाफ़ वर्ज़ी नहीं करता तो इतना मालूम होने के बावजूद आपने तलाश नहीं किया? बल्कि इतना वक़्त रोते हुए गुज़ार दिया इसकी क्या वजह है?

जवाब : बेशक अल्लाह तआला ने आप को तलब करने से मना फ़रमाया था ताकि वह उस पर शदीद मशक़्क़त उठायें और यह मामला उन पर सख़्त हो।

आपको सब्र का सवाब मिले। और यूसुफ़ अलैहिस्सलाम को मिस्र की बादशाही।

और वजह यह भी थी कि ज़्यादा तलाश करने में ख़तरा था कि कहीं भाई जाकर क़त्ल न कर आयें। हज़रत याकूब अलैहिस्सलाम का रोना सिर्फ़ फ़िराक़ की वजह से था बे ख़बरी की वजह से नहीं।

और वजह यह थी कि आप अल्लाह तआला के फ़ैसले पर साबिर व शाकिर थे लेकिन बेटों के फ़ेअल पर परेशान थे कि नबी की औलाद होकर यह कितने हासिद निकले इस पर आपको रोना ही था।

तंबीह : हज़रत आमश रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा कि याकूब अलैहिस्सलाम के बेटों के झूटा रोने के बाद किसी के रोने से इसे सच्चा नहीं समझा जा सकता। इब्ने मंज़र ने रिवायत की है कि क़ाज़ी शुरैह के पास एक औरत अपना मुक़द्दमा लेकर आई और रो रही थी लोगों ने क़ाजी शुरैह को कहा ऐ अबू उमय्या क्या आप इसे रोती हुई नहीं देख रहे आपने फ़रमाया यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के भाई भी रात के वक़्त रोते हुए अपने बाप के पास आये थे हालांकि वह ज़ालिम और झूटे थे इस लिये किसी इंसान को यह हक़ नहीं पहुंचता कि वह बग़ैर तहक़ीक़ के नाहक़ फ़ैसला कर दे।

यूसुफ़ अलैहिस्सलाम का कुंए से बाहर आना : हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु तआला अन्हु

फ़रमाते हैं कि एक क़ाफ़िला मदियन से मिस्र की जानिब रवाना हुआ वह क़ाफ़िला वाले रास्ता भटक गये वह इधर उधर फिरने लगे कि रास्ता मिल जाये उसी दौरान उन्हें वह कुंआ नज़र आया जिसमें हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम थे, हालांकि वह कुंआ ऐसे ब्याबान जंगल में था जहां चरवाहों के बग़ैर कोई शख़्स न आता, क़ाफ़िला वालों ने कुंआ देखकर अपने एक शख़्स मालिक बिन ज़अर ख़ज़ाई को भेजा ताकि वहां से पानी ले आये उसने जब कुएं में डोल डाला तो हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम उस से लिपट गये इस तरह आप बाहर तशरीफ़ लाये मालिक बिन ज़अर ख़ज़ाई ने आप के हुस्न व जमाल को देखकर खुशी से कहाः

कितनी ख़ुशी की बात है, यह तो लड़का है।

यानी कितना ख़ूबसूरत लड़का हमारे हाथ में आ गया जो हमारे लिये बहुत बड़ा सरमाया बनेगा।

हुस्ने यूसुफ़ : यूसुफ़ अलैहिस्सलाम का चेहरा बहुत हसीन था बाल घुंघरियाले, आंखें मोटी व ख़ूबसूरत, तमाम आज़ा में अजीब क़िस्म का एतेदाल पाया जाता था, रंग सफ़ेद गंदुम गूं सुर्ख़ी मायल, कलाईयां और पिंडलियां मोटी, पेट छोटा, नाफ़ छोटी थी और जब आप मुस्कुराते थे तो आपके दांतों से नूर की शुआयें नज़र आतीं और किसी शख़्स में उस वक़्त यह औसाफ़ नहीं पाए जाते थे आप का हुस्न ऐसे जल्वागर था जैसे दिन की रौशनी।

इतने हसीन लड़के को देखकर निकालने वाले ताज्जुब क्यों न होता कि आपके हुस्न और ख़ैर व बर्कत से महरूमी पर तो कुंए की दीवारें और पत्थर भी रोए।

भाईयों का यूसुफ़ अलैहिस्सलाम को खोटे सिक्कों से बेचना : अगरचे आप को कुंए से निकालने वालों ने क़ीमती सरमाया समझकर छुपा कर रखा था कि मिस्र में जाकर इसे फ़रोख़्त करके बहुत बड़ा माल हासिल करेंगे लेकिन आपके भाई तीन दिनों के बाद आपके हाल का पता चलाने के लिये आये कि यूसुफ़ ज़िन्दा है या मर चुका है? कुंए पर आए तो देखा कि यूसुफ़ कुंए में तो नहीं इधर उधर देखा तो एक क़ाफ़िला नज़र आया उनसे पूछने पर पता चला कि उन्होंने एक लड़के को निकाला है, आपके भाईयों ने कहा यह हमारा गुलाम है जो भागकर आ गया है, अगर तुम ख़रीदना चाहते हो तो हम तुम्हें सस्ता बेच देते हैं और तुम इसे किसी दूर इलाक़ा में ले जाओ ताकि इसे भागने का मज़ा आये।

यूसुफ़ अलैहिस्सलाम भी भाईयों के डर से ख़ामोश थे आपने भी न बताया कि मैं इनका भाई हूं गुलाम नहीं, आख़िरकार आपको बीस या बाईस खोटे दिरहमों से बेच दिया गया अल्लाह तआला ने फ़रमायाः

और भाईयों ने उसे खोटे दामों गिनती के रुपयों पर बेच डाला।

यूसुफ़ अलैहिस्सलाम का भाईयों को अलविदाई सलाम : जब आपके भाईयों ने आपको खोटे दिरहमों से बेच दिया तो ताजिर को कहा कि यह चोर है और भाग भी जाता है तो उस ताजिर ने आप को क़ैद कर लिया और आप की निगहबानी के लिये एक हब्शी गुलाम को आप पर मुक़र्रर कर दिया जब वहां से कूच करने लगे तो आप रोने लगे, ताजिर ने आप अलैहिस्सलाम से पूछा आप क्यों रो रहे हैं? आप अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया जिन लोगों ने मुझे बेचा है मैं उनको अलविदाई सलाम करना चहाता हूं यानी ऐसा सलाम करना चाहता हूं जो कभी न लौटने वाला करता है।

ताजिर ने अपने गुलाम को कहा इसको अपने मालिकों के पास ले जाओ ताकि यह उन्हें अलविदाई सलाम कर आये फिर क़ाफ़िला से मिल जाना मैंने आज तक इतना फ़रमा बर्दार गुलाम नहीं देखा जो

अपने मालिकों से इतनी मुहब्बत रखता हो और इतने ज़ालिम कोई मालिक नहीं देखे जितने ज़ालिम इसके मालिक हैं।

वह गुलाम आपको आपके भाईयों के पास ले आया और सब सोए हुए थे एक उनमें से भेड़ बकरियों की हिफ़ाज़त कर रहा था जो जाग रहा था। यूसुफ़ अलैहिस्सलाम अपने मुहाफ़िज़ गुलाम के साथ पांव में बेड़ियां लगे लड़खड़ाते उसके पास पहुंचे, रोने लगे उसने पूछा तुम क्यों आए हो? आप अलैहिस्सलाम ने कहा मैं तुम्हें अलविदाई सलाम करने आया हूं जिसे तुम कभी न देख सकोगे, हाए अफ़सोस हाए बरबादी। यह कैसा अलविदाई सलाम है! (मुमकिन है यह यहूदा हो, वह कुछ आप अलैहिस्सलाम से नर्म गोशा रखता था) सब जाग पड़े यूसुफ़ अलैहिस्सलाम एक एक भाई पर मुहब्बत से सर झुका कर बोसे लेते हुए गले मिल रहे थे।

सुबहानल्लाह उनके जुल्म को देखिए और यूसुफ़ अलैहिस्सलाम की मुहब्बत को देखिये। आप चलते हुए कह रहे थे:

अल्लाह तुम्हारी हिफ़ाज़त करे अगरचे तुमने मुझे ज़ाया कर दिया, अल्लाह तआला तुम्हें अपने घरों में क़ायम व दायम रखे अगरचे तुमने मुझे घर से निकाल दिया, अल्लाह तआला तुम पर रहम करे अगरचे तुमने मुझ पर रहम नहीं किया।

आपके अलविदाई सलाम, रिक़्क़त आमेज़ कलिमात, दुख भरी फ़रयाद का असर भेड़ बकरियों पर इतना शदीद हुआ कि उनके इस हौलनाक मंज़र से हमल गिर गये।

यूसुफ़ अलैहिस्सलाम का वालदा की क़ब्र पर रोना : भाईयों को आपने अलविदाई सलाम कर दिया तो आपको गुलाम ने पकड़ कर अपने साथ चला लिया ताकि क़ाफ़िला से मिल जायें आपको बेड़ियां लगाकर एक सवारी पर सवार करके साथ ले जाया जा रहा था, कनआन के क़ब्रस्तान से जब आपका गुज़र हुआ तो अपनी वालदा राहील की क़ब्र को देखकर आप अपने जज़्बात पर क़ाबू न रख सके सवारी से उतर कर क़ब्र से लिपट कर रोते हुए अर्ज़ करने लगे:

ऐ मेरी मां! क़ब्र से सर उठाकर ज़रा अपने बेटे को बेड़ियों में जकड़ा हुआ तो देखो। ऐ मेरी मां भाईयों ने मुझे कुंए में फेंक दिया, बाप से मुझे जुदा कर दिया, खोटे सिक्कों से मुझे बेच डाला, मेरी छोटी सी उम्र पर भी उनका दिल न पसीजा, उन्हें मुझ पर कुछ रहम न आया, अल्लाह तआला से सवाल करता हूं कि मुझे और मेरे वालिद को मक़ामे रहमत में जमा करे, वही रहमान व रहीम है।

गुलाम के यूसुफ़ अलैहिस्सलाम को थप्पड़ मारने पर क़हरे ख़ुदावंदी: गुलाम ने पीछे देखा तो यूसुफ़ को न पाया वापस आया तो देखा कि आप एक क़ब्र के पास रो रहे हैं उसने कहा तुम्हें बेचने वालों ने सच कहा था कि तुम एक भगोड़े हो, यह कहते हुए उसने आप को एक ज़ोरदार थप्पड़ मारा दिया, जिससे आप बेहोश होकर गिर गये, फिर जब आपको होश आया तो आपने कहा मुझे कुछ न कहिए यह तो मेरी मां की क़ब्र है, मैं अपनी मां को अलविदाई सलाम करने के लिये सवारी से उतर गया था। आइंदा ऐसा कोई काम नहीं करूंगा जो तुम्हें नापसंद हो। आपका चेहरा ख़ून आलूदा था और गिरने की वजह से मिट्टी लगी हुई थी। कांपते हुए रब के हुजूर अर्ज़ करने लगे ऐ अल्लाह अगर मेरी कोई ग़लती हो तो मुझे मेरे आबा इब्राहीम व इस्हाक़ और याक़ूब अलैहिमुस्सलाम की हुरमत के वसीले से माफ़ कर दे।

आपकी इस हालत को देखकर आसमानों के फ़रिश्ते भी चिल्ला उठे और अल्लाह तआला के हुजूर

आपके लिये फ़रयाद करने लगे रब ने फ़रमायाः ऐ मेरे फ़रिश्तो! यह मेरा नबी है और मेरे अंबिया का बेटा है जो मुझसे फ़रयाद कर रहा है और मुझसे ही इमदाद का तालिब है। मैं ही इसका फ़रयाद रस हूं सब फ़रयाद करने वालों की फ़रयाद को ही पहुंचता हूं।

रब तआला ने कहाः ऐ जिब्राईल जाओ मेरे बंदे की इमदाद करो, जिब्राईल अलैहिस्सलाम ने आकर कहा ऐ अल्लाह तआला के दोस्त तुम्हारा रब तुम्हें सलाम कहता है और तुम्हें यह कहता है, रोने से रुक जाओ, तुमने सात आसमानों के फ़रिश्तों को रुला दिया है क्या तुम यह चाहते हो ज़मीन व आसमान एक हो जायें? आपने फ़रमाया नहीं नहीं, मुझे अल्लाह तआला ने अपनी सिफ़ते हिल्म (बुर्दबारी) अता की है वह जल्दबाज़ी नहीं करता तो मैं भी जल्दी से काम नहीं लेता। जिब्राईल ने अपना पर मारा ज़मीन से सुर्ख़ रंग की हवा चलने लगी, सूरज की रौशनी ख़त्म हो गई, सुर्ख़ आंधी से तारीकी छा गई, क़ाफ़िले वाले एक दूसरे को देख नहीं सकते थे।

ताजिर ने कहाः ऐ क़ाफ़िले वालो! अपनी अपनी सवारियों से उतरकर अपने आपको हलाकत से बचाओ, मुझे कई साल हो चुके हैं इस रास्ते से गुज़रते हुए मैंने आज के दिन की तरह कोई दिन नहीं देखा, सब अपने अपने गुनाहों की माफ़ी मांगो। आज की मुसीबत यक़ीनन हमारे किसी गुनाह का नतीजा है। उस वक़्त हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के मुहाफ़िज़ हब्शी गुलाम ने बताया कि मैंने यूसुफ़ अलैहिस्सलाम को मारा था जब मारा तो उसने अपना सर आसमानों की तरफ़ उठाया था और अपने होटों को भी हरकत दी थी।

ताजिर ने कहाः अफ़सोस तुम्हारी बर्बादी, तुमने हमें भी और अपने आपको हलाक कर दिया। ताजिर आपके पास आया और कहने लगा ऐ लड़के हमने तुम्हें मारकर तुम पर जुल्म किया है ऐ लड़के अगर तुम बदला लेना चाहते हो तो बदला ले लो हम हाज़िर हैं आप अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया :

हम ज़ालिमों से बदला नहीं लिया करते, मैं तो उस घराने से ताल्लुक़ रखता हूं जो जुल्म करने वालों को माफ़ कर देते हैं, उनके लिये मग़्फ़िरत की दुआ करते हैं, मैं तुम्हें माफ़ कर रहा हूं अल्लाह भी तुम्हें माफ़ करे।

आपके माफ़ करने के साथ ही तारीकी ख़त्म हो गई, आंधी रुक गई, सूरज रौशन हो गया, मश्रिक़ व मग़्रिब तक रौशनी फैल गई इस तरह क़ाफ़िला मिस्र में अमन से आ गया।

सुबहानल्लाह! नबी की क्या शान है? नबी पर जुल्म करने वाले कैसे गिरफ़्त में आए? और नबी कितना साबिर? कि ज़ालिमों के लिये दुआ कर रहा है।

यूसुफ़ अलैहिस्सलाम का बाज़ारे मिस्र में सौदा : यूसुफ़ अलैहिस्सलाम को मिस्र में लाया गया आपको बाज़ार में बहैसियत ग़ुलाम बेचा जाने लगा तो आपके हुस्न व जमाल की वजह से क़ीमत बढ़ती चली गई, यहां तक कि आप की क़ीमत इतनी पहुंच गई कि आपके वज़न के बराबर कस्तूरी, चांदी और रेशम दिया जाए। इतनी बड़ी रक़म अदा करने की आम लोगों में ताक़त न थी। इसलिये आपको मिस्र के वज़ीरे ख़ज़ाना ने इतनी क़ीमत अदा करके ख़रीद लिया। उसका नाम क़तफ़ीर या अतफ़ीर और लक़ब अजीज़े मिस्र था उस वक़्त मिस्र का बादशाह अल–रियान बिन अल–वलीद था जो अमालक़ा क़बीले का था। वह यूसुफ़ अलैहिस्सलाम पर ईमान लाया था और उसी ने हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम को वज़ीरे ख़ज़ाना बना दिया था। इसके बाद क़ाबूस बिन मुसअब बादशाह बना था जिसको आपने दावते ईमान दी लेकिन उसने इंकार कर दिया था।

ख़्याल रहे कि मिस्र के बादशाहों का लक़ब फ़िरऔन हुआ करता था यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के ज़माने के बादशाह को भी फ़िरऔन कहा जाता लेकिन मशहूर फ़िरऔन जो हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के ज़माने में था यह बहुत बाद का है।

अज़ीज़े मिस्र ने जब आपको ख़रीदा था उस वक़्त आपकी उम्र सतरह साल थी, तेरह साल आप उसके घर में रहे। रियान बिन वलीद ने जब आपको वज़ीर बनाया आपकी उम्र तीस साल थी, आपको तैंतीस साल की उम्र में अल्लाह ने मुल्क व हिकमत से नवाज़ा और आप एक सौ बीस बरस की उम्र में दुनिया से रुख़सत हुए।

यूसूफ़ अलैहिस्सलाम नाज़ व नेमत में : और कहा उस शख़्स ने जिसने यूसुफ़ को ख़रीदा था अहले मिस्र से अपनी बीवी को, इज़्ज़त व इकराम से इसे ठहराओ, शायद यह हमें नफ़ा पहुंचाए या बना लें हम इसे अपना फ़रज़न्द। और यूं (अपनी हिकमते कामिला से) हमने क़रार बख़्शा यूसुफ़ (अलैहिस्सलाम) को (मिस्र की) सर ज़मीन में। और ताकि हम सिखा दें उसे ख़्वाबों की ताबीर। अल्लाह ग़ालिब है अपने हर काम पर लेकिन अक्सर लोग नहीं जानते।

अज़ीज़े मिस्र ने आपकी लौहे जबीं पर सआदत व निजाबत के नकूश देख लिये थे बड़ी मुहब्बत से घर लाया और अपनी बीवी से कहा कि बड़ा प्यारा बच्चा मिल गया है इसके आराम व आसाईश का हर वक़्त ख़्याल रखना इसकी किसी तरह दिल आज़ारी न हो। इसकी शक्ल व सूरत किसी शानदार मुस्तक़बिल की ग़म्माज़ी कर रही है। हो सकता है किसी दिन हमारे लिये यह मुफ़ीद साबित हो, या इसे अपना बेटा ही बना लें। उस औरत का नाम राईल था या ज़ुलैख़ा। यही दूसरा नाम ज़्यादा मशहूर है।

ऐसे मुल्क में जहां किसी को यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के अज़ीम ख़ानवादे का इल्म तक न था जिसे गुलामी की ज़ंजीरों में जकड़ कर मिस्र लाया गया था जिसे बेचने वाले भी एक भगोड़ा गुलाम तसव्वुर करते थे, फिर वह आम गुलामों की तरह मंडी में लाया गया और फ़रोख़्त हुआ उसके लिये इतनी इज़्ज़त व आसाईश के सामान मुहय्या फ़रमा देना, मिस्री ममलिकत के एक अज़ीम रईस के दिल में उसके लिये पेदराना शफ़क़त बल्कि फ़िदवियाना जज़्बा पैदा कर देना अल्लाह तआला की ही हिकमते कामिला हो सकती है।

तीन शख़्सियात की फ़िरासत : तीन मुहतरम शख़्सियात ने अज़ीम फ़िरासत से काम लिया। एक "अज़ीज़े मिस्र" जब उसने हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के मुताल्लिक़ अपनी ज़ौजा को कहा कि इसे इज़्ज़त व इकराम से ठहराओ।

दूसरी हज़रत शोएब अलैहिस्सलाम की लड़की जिसने अपनी फ़िरासत से मूसा अलैहिस्सलाम को ताक़तवर अमीन समझते हुए अपने बाप को मशवरा दिया कि ऐ मेरे बाप इनको नौकर रख लो बेशक बेहतर नौकर वह है जो ताक़तवर और अमानतदार हो।

तीसरे अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु जिन्होंने अपनी फ़िरासत से अपना ख़लीफ़ा हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को मुन्तख़ब किया।

यूसुफ़ अलैहिस्सलाम एक मर्तबा फिर इम्तेहान में: बहलाने फुसलाने लगी उन्हें वह औरत जिसके घर में आप थे कि इनसे मतलब बरारी करे और (एक दिन) उसने तमाम दरवाज़े बंद कर दिये और (बसद नाज़) कहने लगी : बस आ भी जा। यूसुफ़ (पाकबाज़) अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया: ख़ुदा की पनाह (यूं नहीं हो सकता) वह (तेरा ख़ाविन्द) मेरा मुहसिन है, उसने मुझे बड़ी इज़्ज़त से ठहराया है बेशक

ज़ालिम फ़लाह नहीं पाते और उसने तो क़सद कर लिया था उनका और वह भी क़सद करते उसका अगर न देख लेते अपने रब की रौशन दलील, यूं हुआ ताकि हम दूर कर दें यूसुफ़ से बुराई और बे हयाई को, बेशक वह हमारे उन बंदों में से था जो चुन लिये गये हैं।

जुलैख़ा ने अगरचे चाहा कि आप को गुनाहों में मुब्तला कर दे लेकिन अल्लाह के नबी क़ब्ल अज़ नबुव्वतव नबुव्वत के बाद हर छोटे बड़े गुनाहों से पाक होते हैं इसलिये अल्लाह तआला ने आप अलैहिस्सलाम को वाज़ेह और रौशन दलील दिखाकर पाक व साफ़ रखा।

आप अलैहिस्सलाम ने दलील क्या देखी थी? एक तो यह देखा कि वह औरत दरवाज़ा बंद करके अपने एक बुत को ढांप रही है, वह जो उसने अपना माबूद बना रखा था और मोती और याक़ूत से उसे सजा रखा था।

आप अलैहिस्सलाम ने उससे पूछा तुम इसे क्यों ढांप रही हो? उसने कहा मुझे अपने माबूद से शर्म आती है कि वह मुझे बुराई में मुब्तला देखे, आप अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया तेरा माबूद तो कुछ ताक़त नहीं रखता, तुझे इससे शर्म आ रही है, क्या मुझे उस माबूदे हक़ीक़ी से शर्म नहीं आती जो हर इंसान के हर अमल को देख रहा है? मुझसे अपनी उम्मीद वाबस्ता न कर, तू कभी भी मुझसे अपनी हाजत में कामयाब नहीं हो सकती।

सबसे बड़ी रौशन दलील यह थी।

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु से मरवी है बेशक हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम को हज़रत याक़ूब अलैहिस्सलाम की सूरत दिखाई गई जिन्होंने आप के सीना पर हाथ मारा।

हज़रत क़तादा रज़ियल्लाहु अन्हु से मरवी है आप फ़रमाते हैं कि हमें बताया गया है कि हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम को हज़रत याकूब अलैहिस्सलाम दिखाई दिये आप अपनी उंगलियों को दांतों से काट रहे हैं और फ़रमा रहे हैं ऐ यूसुफ़! ख़्याल रखना ऐसा काम तो बेवकूफ़ करते हैं तुम्हारा नाम तो अंबियाए किराम में लिखा जा चुका है।

सुबहानल्लाह! कैसी ताक़त अल्लाह तआला ने अपने अंबियाए किराम को अता फ़रमाई किस तरह वह अपने अक़रबा और मुतवस्सिलीन यानी अपनी उम्मत के अफ़राद की इमदाद करते हैं। यूसुफ़ अलैहिस्सलाम की बरअत (नजात) और याक़ूब अलैहिस्सलाम की इमदाद के इल्म के बाद भी अगर कोई शख़्स ज़िद व एनाद की वजह से अंबियाए किराम की इमदाद का इंकार करता फिरे तो उसकी अपनी बद क़िस्मती।

खुदारा अपनी आक़बत बर्बाद न कीजिये : इस मक़ाम पर बाज़ तराजिम को देखकर इंसान गुमराह न हो और शाने नबी में गुस्ताख़ी का मुरतकिब न हो किसी ने लिखा 'आप ने क़स्द किया' किसी ने लिखा 'उनको भी उस औरत का कुछ कुछ ख़्याल हो चला था' किसी ने लिखा 'और उन्हें भी उस (औरत) का ख़्याल हो चला था'।

ऐसे तराजिम से सिवाए गुमराही के कुछ हुसूल नहीं, ऐसे तराजिम देखें जिनसे ईमान हासिल हो मैंने जो तर्जमा नक़्ल किया वह ज़ियाउल कुरआन से पीर करम शाह साहब का तर्जमा है।

और आला हज़रत मौलाना अहमद रज़ा ख़ां बरेलवी रहमतुल्लाह अलैहि का तर्जमा है:

बेशक औरत ने उसका इरादा किया और वह भी औरत का इरादा करता अगर अपने रब की दलील न देख लेता।

यही तराजिम सही हैं मैंने इसकी तफ़सील अपनी किताब तस्कीनुल जिनान फ़ी महासिने कंज़ुल ईमान में ब्यान की हैं जिसमें तफ़ासीर की अरबी इबारात भी लिखी हैं यहां तफ़सीर कबीर से मुख़्तसर ख़ुलासा उर्दू में तहरीर किया जा रहा है।

अल्लामा राज़ी फ़रमाते हैं ऐसी मासियत (यानी ज़िना का इरादा करना) को अगर अल्लाह की मख़्लूक़ में किसी बहुत बड़े फ़ासिक़ की तरफ़ मंसूब किया जाए और इसी तरह ऐसे शख़्स की तरफ़ मंसूब किया जाए जो हर क़िस्म के नेक काम से दूर रहे तो वह भी शर्म महसूस करे तो एक जलीलुल क़द्र रसूल जिन को अज़ीमुश्शान मोजिज़ात अता किये गये हों उनकी तरफ़ इस क़िस्म के गुनाह को कैसे मंसूब किया जा सकता है?

इसके बाद और तफ़सील ब्यान करते हुए फ़रमाते हैं जिनका इस वाक़िया से ताल्लुक़ है वह यह हज़रात हैं यूसुफ़ अलैहिस्सलाम अज़ीज़े मिस्र की जौज़ा, ख़ुद अज़ीज़े मिस्र, मिस्र की औरतें, गवाही देने वाला और अल्लाह रब्बुल आलमीन। उन तमाम ने आपके मुताल्लिक़ शहादत दी कि आप गुनाहों से बरी हैं। यहां तक कि शैतान ने भी आपकी बराअत की शहादत दी है। जब आप की बराअत पर इतनी गवाहियां मौजूद हैं तो मुसलमान को इसमें तवक़्क़ुफ़ करने का कोई हासिल नहीं? यूसुफ़ अलैहिस्सलाम ने अपनी पाकदामनी गुनाहों से बरी होने का ज़िक्र फ़रमाया:

उस (औरत) ने ख़्वाहिश की कि मैं अपनी हिफ़ाज़त न करूं? इसी तरह आपने कहा:

ऐ मेरे रब मुझे क़ैदख़ाना ज़्यादा पसंद है इस काम (बुराई) से जिसकी तरफ़ मुझे यह बुलाती है।

यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के यह इरशादात आपकी पाकदामनी को वाज़ेह कर रहे हैं।

औरत की गवाही : तोहमत लगाने वाली औरत (ज़ुलैख़ा) ने ख़ुद भी हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के बरी होने का एतेराफ़ किया, मिस्र की औरतों के समाने उसने एतेराफ़ करते हुए कहा:

मैंने इसे अपने तरफ़ माईल करना चाहा लेकिन इसने अपने आपको बचा लिया।

इसी तरह उसने और यह कहा:

अब बात खुल गई कि मैंने उनको अपनी तरफ़ माइल करना चाहा लेकिन बेशक वह सच्चे हैं।

औरत की इस गवाही के बाद वाज़ेह हुआ कि उसने भी हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम को बरिउज़ ज़िम्मा क़रार दिया।

उस औरत के ख़ाविन्द यानी अजीज़े मिस्र ने कहा:

यह तुम औरतों का मक्र है बेशक औरतों का मक्र बहुत बड़ा होता है ऐ यूसुफ़ तुम इसका ख़्याल न करो और ऐ औरत तू अपने गुनाहों की माफ़ी मांग।

यह यूसुफ़ अलैहिस्सलाम की पाकदामनी पर उस औरत के ख़ाविन्द की गवाही है।

गवाह की गवाही : हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के बातिल अमल और हराम काम के इरादे से बरी होने पर गवाह की गवाही साबित है क्योंकि शीर ख़्वार बच्चे की यह शहादत है:

और औरत के घर वालों में से एक गवाह ने गवाही दी कि अगर यूसुफ़ की क़मीस आगे से फटी है तो औरत सच्ची है और वह ग़लती पर हैं और अगर क़मीस पीछे से फटी है तो आप सच्चे हैं और औरत झूटी है।

आपकी क़मीस तो पीछे से फटी थी लिहाज़ा आप की बराअत पर गवाही साबित हो गई गवाह भी

वह जो उस औरत के ख़ानदान से है और अभी शीर ख़्वार भी है इसी वजह से उस औरत के ख़ाविन्द ने औरत को मक्कार कहा।

अल्लाह की गवाही : यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के बरी होने की शहादत अल्लाह तआला ने दी इरशाद फ़रमायाः

हम इस तरह फेरते हैं उनसे बुराई और बेहयाई को, बेशक वह हमारे मुख़लिस बंदों में से है। अल्लाह तआला ने यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के पास होने की जो शहादत इस आयत में दी है वह चार मर्तबा है।

पहली वजह : उनमें से यह है कि अल्लाह तआला ने फ़रमाया यहां लाम ताकीद और मुबालग़ा के लिये आया हुआ है आपसे बुराई का दूर रहना यक़ीनी हो गया।

दूसरी वजह : यह है कि अल्लाह तआला ने बल–फ़हशा ज़िक्र किया है यानी जब अल्लाह तआला ने आपसे बेहयाई को दूर रखना अपने ज़िम्मे करम पर लगा लिया है तो अब बुराई का इर्तकाब या उसका ख़्याल नामुमकिन हो गया।

तीसरी वजह : यह है कि अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि वह मेरे मुख़लिस बंदों से है और अल्लाह तआला ने अपने ख़ास बंदों की तारीफ़ इस तरह फ़रमाई।

अल्लाह के बंदे वह हैं जो ज़मीन पर आराम से चलते हैं जब उनसे कोई जाहिल बात करते हैं तो वह कहते हैं पस सलाम, इससे पता चला जिसको रब ने अपना मुख़लिस बन्दा कहा है वह बुराईयों का इर्तकाब नहीं कर सकता।

चौथी वजह : यह है कि अल्लाह तआला ने फ़रमाया मुख़्लेसीन इसमें दो क़रातें हैं इस्मे फ़ाइल या इस्मे मफ़ऊल अगर इस्मे फ़ाइल हो तो मायने यह होगा कि आप ताआत व कुरबात पर खुलूस से अमल करने वाले हैं और अगर इस्मे मफ़ऊल हो तो मतलब यह होगा कि आपको अल्लाह तआला ने अपनी ज़ात के लिये ख़ालिस बनाया और अपने हुजूर पसंदीदा किया दोनों वजह से आपका गुनाह के इरादे से पाक होना वाज़ेह है।

इबलीस का इक़रार : हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम की पाकबाज़ी का इक़रार इबलीस ने भी किया इसलिये कि अल्लाह तआला से जब उसने मोहलत मांगी उसको क़यामत तक के लिये मोहलत दे दी गई उसने कहाः

ऐ अल्लाह! मुझे तेरी इज्ज़त की क़सम, मैं सिवाए तेरे मुख़लिस बंदों के तमाम को गुमराह करता रहूंगा।

उसका यह इक़रार इस बात को वाज़ेह करता है कि अल्लाह के मुख़लिस बंदों को राहे रास्त से भटकाना शैतान के लिये मुमकिन नहीं और यूसुफ़ अलैहिस्सलाम का मुख़लेसीन से होना भी यक़ीनी तौर पर है क्योंकि अल्लाह तआला ने आपके मुख़लिस बंदों से होने की शहादत दी है। रब की शहादत पर यक़ीन न आए तो और किस पर आयेगा?

अल्लामा राज़ी की फ़ैसला कुन बात : जो जाहिल यूसुफ़ अलैहिस्सलाम को बुराई (या इरादा बुराई) की तरफ़ मंसूब करते हैं अगर वह अल्लाह के दीन के मुत्तबेअ हैं तो वह अल्लाह की शहादत क़बूल कर लें,जो अल्लाह तआला ने आप अलैहिस्सलाम की पाकदामनी पर दी है और अगर वह शैतान या उसके लश्कर के ताबेदार हैं तो वह शैतान की शहादत क़बूल कर लें जो उसने आप अलैहिस्सलाम की पाकदामनी पर दी है।

यूसुफ़ अलैहिस्सलाम पर औरत का इल्ज़ाम

और दोनों दरवाज़े की तरफ़ दौड़े और औरत ने उनकी क़मीस पीछे से फाड़ दी और दोनों को औरत का ख़ाविन्द दरवाज़े के पास मिला। बोली क्या इसकी सज़ा जिसने तेरी घरवाली से बदी चाही? मगर यह कि क़ैद किया जाए या दुख की मार।

जब औरत ने आपको अंदर बंद कर लिया तो आप अलैहिस्सलाम ने अपने आपको गुनाहों से बचाने के लिये दरवाज़े की तरफ़ भागना शुरू किया ताकि दरवाज़ा खोलकर बाहर निकल जायें औरत ने पीछे भागना शुरू किया ताकि आपको पकड़ ले आपको पकड़ने में तो कामयाब न हो सकी अलबत्ता आपकी क़मीस पीछे से उसने पकड़ ली चूंकि आप दौड़ रहे थे दौड़ते हुए क़मीस पकड़ने की वजह से पीछे से फट गई।

उसी दौरान औरत का ख़ाविन्द दरवाज़े पर पहुंच गया वह तोहमत के डर से जल्दी से अपने ऐब को यूसुफ़ अलैहिस्सलाम की तरफ़ मंसूब करने लगी कि यह तुम्हारी जौज़ा से बुराई का इरादा रखता था इसलिये क़ैदख़ाने में भेज दो या सख़्त सज़ा दो।

औरत को यूसुफ़ अलैहिस्सलाम से चूंकि शदीद मुहब्बत थी अगरचे उसने ख़ुद बचने के लिये ऐब यूसुफ़ अलैहिस्सलाम की तरफ़ मंसूब कर दिया लेकिन फिर भी आपकी रियायत रखी क़ैदख़ाना पहले ज़िक्र किया सख़्त सज़ा बाद में, इसलिये कि मुहिब अपने महबूब को दर्द पहुंचाने की कोशिश नहीं करता। इसलिये यह भी ज़िक्र नहीं किया कि इन दोनों में से जिस पर चाहो अमल करो बल्कि उसने मुमकिन तौर पर आपको बचाने की फ़िक्र की, कि क़ैदख़ाना भेज दो, हां अगर कोई चारा कार न हो सिवाए सज़ा देने के तो सज़ा दो।

फ़िर कोई ऐसे अल्फ़ाज़ नहीं ज़िक्र किये जिनसे पता चले कि उसने कहा हो कि इनको उम्र भर क़ैद रखो या बहुत लंबा अर्सा क़ैद में रखो, बल्कि सिर्फ़ यह कहा कि क़ैदख़ाना में भेज दो। यानी मतलब यह था कि एक दो दिनों के बाद निकाल लेना।

औरत ने ज़ाहिर तौर पर बुराई को आपकी तरफ़ मंसूब नहीं किया: औरत ने यह तो कहा है कि जो शख़्स तुम्हारी जौज़ा से बुराई का इरादा करे यह नहीं कहा इसने मेरी तरफ़ बुराई का इरादा किया है और यह भी नहीं कहा इसने मेरे साथ दस्त दराज़ी की या बुराई का मुरतकिब हुआ है इसलिये कि उसने जान लिया था कि जो शख़्स जवानी की उम्र में ताक़त व शहवत का ग़लबा रखने के बावजूद पाकदामन है उसे कैसे बुरा भला कहा जाए उस औरत के दिल में आपकी पाकदामनी रासिख़ हो चुकी थी वह आपको ज़ाहिरी तौर पर बुराई का मुरतकिब क़रार देने में हया महसूस कर रही थी।

अल्लामा राज़ी फ़रमाते हैं उस औरत को तो हया महसूस हुई कि आप को बुराई का मुरतकिब कैसे क़रार दिया जाए लेकिन हज़ारों साल बाद में आने वालों को हया नहीं आती जो यह कहते हैं कि आपने बुराई का इरादा किया या आपके दिल में थोड़ा थोड़ा क़स्द हो चला था यूसुफ़ अलैहिस्सलाम ने इब्तेदाई तौर पर ख़ामोशी इख़्तेयार की लेकिन जब यह देखा कि बुराई को मेरी तरफ़ मंसूब किया जा रहा है तो फिर आपने फ़रमाया:

इसने ख़ुद मुझे अपनी तरफ़ माईल करना चाहा।

यूसुफ़ अलैहिस्सलाम की पाकदामनी पर दलालत करने वाली अलामात :

१. आप ज़ाहिर तौर पर उनके गुलाम थे गुलाम कभी इस क़िस्म की जुर्रत नहीं कर सकता कि पने मालिक की जौज़ा से ज़बरदस्ती बुराई का मुरतकिब हो।

२. अज़ीज़े मिस्र और उसके घर के दूसरे लोगों ने जब यह देख लिया था कि यूसुफ़ अलैहिस्सलाम दरवाज़े से निकलने के लिये शदीद तौर पर दौड़ रहे थे तो उन्होंने भी समझ लिया था कि बुराई को चाहने वाला ख़ुद दौड़कर कभी नहीं निकला करता।

३. उन लोगों ने यह भी देख लिया था कि इस औरत ने अपने आपको ख़ुद आरास्ता किया हुआ है लेकिन युसुफ़ अलैहिस्सलाम आम लिबास में हैं उन्होंने समझ लिया था कि कौन किसे अपनी तरफ़ माईल कर रहा था।

४. वह लोग यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के हालात का एक तवील मुद्दत से मुशाहदा कर रहे थे आपकी आदात आपके अतवार उन से पोशीदा नहीं थे वह ख़ुद ही समझ रहे थे कि यूसुफ़ (अलैहिस्सलाम) कभी बुराई का इरादा नहीं कर सकता।

५. औरत ने आपकी तरफ़ ज़ाहिर तौर पर बुराई को मंसूब नहीं किया बल्कि कहा अगर कोई ऐसा करे लेकिन हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम ने वाज़ेह तौर पर इसकी तरफ़ मंसूब किया इससे वाज़ेह हुआ कि आप सच्चे थे क्योंकि झूठा शख़्स किसी दूसरे की तरफ़ इस क़िस्म की तोहमत मंसूब करने में ख़ाइफ़ रहता है।

६. अज़ीज़े मिस्र नामर्द था औरत की जिंसी ख़्वाहिशात उससे पूरी होना तो दरकिनार हासिल ही नहीं हो रही थी इन हालात के पेशे नज़र भी वाज़ेह हो रहा था कि मीलान उसकी जानिब से था।

यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के बरी होने पर गवाही : आपने कहा इसने मुझे अपनी तरफ़ मीलान करना चाहा कि मैं अपनी हिफ़ाज़त न करूं और औरत के घर वालों में से एक गवाह ने गवाही दी कि अगर इनकी क़मीस आगे से फटी है तो औरत सच्ची और इन्होंने ग़लत किया और अगर क़मीस पीछे से फटी है तो औरत झूटी और यह सच्चे हैं। फिर जब अज़ीज़ ने आपकी क़मीस पीछे से फटी हुई देखी तो उसने कहा बेशक यह तुम औरतों का मक्र है बेशक तुम्हारा मक्र बड़ा है ऐ यूसुफ़ तुम इसका ख़्याल न करो (ग़म न करो) और ऐ औरत अपने गुनाहों की माफ़ी मांग बेशक तू ख़तावारों में से है।

गवाही देने वाला उस औरत का रिश्तेदार का लड़का था जो अभी शीर ख़्वार बच्चा था उसकी उम्र तीन माह थी अल्लाह तआला ने उसे बोलने की ताक़त दी उससे गवाही दिलाकर हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम को इल्ज़ाम से बरी क़रार दिया अगरचे इतनी उम्र में बच्चा का बोलना ही आपकी पाकदामनी को साबित करने के लिये काफ़ी था लेकिन अल्लाह ने उससे ऐसा हकीमाना जवाब दिलाया जो बहुत बड़ी क़वी दलील भी बन गया।

आगे से क़मीस के फटने का मतलब यह होता कि आपने इसका इरादा किया उसने मज़ाहमत की गिरेबान पकड़कर पीछे किया तो क़मीस आगे से फट गई अगर ऐसी सूरत होती तो औरत का सच्चा होना साबित होता लेकिन पीछे से क़मीस फटने से वाज़ेह हो रहा था कि आप को ज़बरदस्ती कमरा में बंद किया गया आप जान छुड़ाने के लिये भागे आप को पीछे से पकड़ने की कोशिश की गई तो क़मीस पीछे से फट गई इसी जवाब और दलील पर ही अज़ीजे मिस्र ने आपको कहा आप सच्चे हैं कुछ ग़म

दिल में न लायें और अपनी जौ़जा को कहा यह तुम्हारा मक्र है तुम अपने गुनाहों की माफ़ी मांगो।

अज़ीजे़ मिस्र की औरत पर मिस्र की औरतों की तानाज़नी : और शहर में कुछ औरतें बोलीं कि अज़ीज़ की बीवी अपने नौजवान को अपनी तरफ़ माइल करती है बेशक इसकी मुहब्बत उसके दिल में सरायत कर गई हम तो इसे वाज़ेह तौर पर मुहब्बत में गुम और ग़लती पर पाती हैं।

यह वाक़िया पूरे शहर में मश्हूर हो गया था कई औरतें कहने लगीं कि अज़ीज़ की बीवी कितनी ग़लती पर है जो अपने घर रखे हुए नौजवान से इतनी शदीद मुहब्बत करती है कि उसे कुछ और नज़र ही नहीं आता।

उसके दिल पर मुहब्बत ने इस तरह घेरा डाल दिया है जिस तरह किसी चीज़ का ग़िलाफ़ उसे अपनी लपेट में ले लेता है और वह मुहब्बत उसके दिल और बाक़ी चीज़ों में हिजाब इख़्तेयार कर चुकी है कि सिवाए उस नौजवान के और किसी चीज़ का पता ही नहीं। हम तो उसे इस नौजवान से शदीद मुहब्बत करने में राहे रास्त से भटकी हुई पाती हैं।

अज़ीज़ की जौ़जा का उज़्र अजीव अंदाज़ में : तो जब उस (जुलैख़ा) ने इसका चर्चा सुना तो उन औरतों को बुला भेजा और उनके लिये मसनदें तैयार कीं और उनमें से हर एक को एक छुरी दी और यूसुफ़ (अलैहिस्सलाम) से कहा उन पर निकल आओ जब औरतों ने यूसुफ़ (अलैहिस्सलाम) को देखा उसकी बड़ाई बोलने लगीं और अपने हाथ काट लिये और बोलीं अल्लाह की पाकी है यह तो जिन्से बशर से नहीं मगर कोई फ़रिश्ता है उसने कहा तो यह हैं वह जिन पर मुझे ताना देती थीं और बेशक मैंने उनको अपनी तरफ़ माईल करना चाहा तो इन्होंने अपने आपको बचाया और बेशक अगर वह यह काम न करेंगे जो मैं इनसे कहतीं हूं तो ज़रूर क़ैद में पड़ेंगे और वह ज़रूर ज़िल्लत उठायेंगे।

जब अज़ीज़ की ज़ौजा ने मिस्र की औरतों के मक्र को सुना इनके कलाम को मक्र से ताबीर करने की तीन वजह है औरतों ने जब यह वाक़िया सुना तो वह भी दिल में ख़्वाहिश रखने लगीं कि यूसुफ़ अलैहिस्सलाम को देखें और वह यह भी समझतीं थीं कि जब वह जुलैख़ा का तज़किरा करेंगी तो यक़ीनन वह यूसुफ़ अलैहिस्सलाम को हम पर पेश करके अपना उज़्र पेश करेगी तो उन्होंने इसलिये उसके ख़िलाफ़ काम करके यूसुफ़ अलैहिस्सलाम को देखने का एक हीला किया जिसे मक्र से ताबीर किया गया।

दूसरी वजह : यह है कि अज़ीज़ की जौ़जा ने उन औरतों से अपनी मुहब्बत का ज़िक्र किया था और साथ साथ उन्हें इस भेद के छुपाने के लिये कहा था लेकिन जब औरतों ने ज़ाहिर कर दिया तो उनकी धोका बाज़ी को मक्र कह दिया।

तीसरी वजह : यह है कि उन्होंने उसकी ग़ीबत की, ग़ीबत भी हक़ीक़त में मक्र के मुशाबेह है।

यूसुफ़ अलैहिस्सलाम को देखकर औरतों ने अपने हाथ काट लिये : अज़ीज़ की जौ़जा ने उन औरतों की दावत की जो उसके मुताल्लिक़ कलाम करती थीं वह बड़े बड़े सरदारों की बीवियां थीं जिनकी तादाद चालीस थी, उनमें पांच औरतें यह भी थीं जो बहुत बातें करती थीं।

१. अज़ीज़ को पानी पिलाने वाले की जौ़जा।

२. रोटियां पकाने वाली औरत, जिसने इतने अर्से में यूसुफ़ अलैहिस्सलाम को नहीं देखा था।

३. वज़ीर जेल की जौ़जा।

४. अज़ीज़ के जानवरों के मुहाफ़िज़ की जौ़जा।

५. और दरबान की जौ़जा।

दावत की मजलिस में हर एक के लिये नशिस्त मुक़र्रर थी तकिये लगा दिये गये दस्तरख़्वान पर तरह तरह के खाने चुन दिये गये फल भी रख दिये गये फलों या गोश्त ख़सूसन लीमूं कांटने के लिये छुरियां भी रख दी गई हर नशिस्त के सामने एक एक छुरी रखी गई थी।

जब औरतें आ गई अपनी अपनी नशिस्त पर बिराजमान हो गई तो अज़ीज़ की जौ़जा ने आपको हुक्म दिया कि आप अपने कमरे से बाहर निकलो और इन औरतों की महफ़िल के सामने से गुज़र जाओ ताकि यह आपकी एक झलक देख लें।

यूसुफ़ अलैहिस्सलाम पहले ही उस औरत की एक साज़िश का शिकार हो चुके थे अल्लाह तआला ने आपको बरी कर दिया था अब यही ख़ौफ़ दिल में आ रहा था कि इसका हुक्म न मानने पर कोई नई मुसीबत न खड़ी हो जाये। आप को मजबूरन निकल कर औरतों के सामने से गुज़रना पड़ा।

जब यूसुफ़ अलैहिस्सलाम उनके सामने से गुज़रे।

तो वह आपको देखकर इतनी दहशत में आई कि फल लेकर उनको छुरियों से काटने लगीं थी लेकिन उन्हें यहां तक मालूम न हो सका कि हम फल काट रहे है या अपने हाथों पर ही छुरिया चला रहे हैं उन्होंने अपने हाथ काटकर ज़ख़्मी कर लिये।

या उन्होंने अपने हाथ इस वजह से काट लिये कि आपको देखकर इसी तरह मदहोश हुईं कि उन्हें यह पता न चल सका कि वह छुरियां सीधी पकड़ रही हैं या उल्टी, सीधी जानिब्र अपने हाथों की तरफ़ कर दी और उल्टी जानिब फलों की तरफ़ करके फलों को काटने की ग़र्ज़ से छुरियों को जैसे चलाया तो हाथ कट गये।

यह भी मुमकिन है कुछ औरतों ने छुरियां उल्टी चलाकर अपने हाथ काट लिये हों और कुछ ने फल काट कर हाथों तक छुरियां चला दी हों।

हाथ काटने की वजह जमाल यूसुफ़ पर फ़रैफ़ता होना : इसमें अक्सर अहले इल्म का इत्तेफ़ाक़ है कि उन औरतों ने हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम को उम्दा जमाल और कामिल हुस्न की वजह से अज़ीम सझमा था यही वजह थी उनके हाथ काटने की। हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम को हुस्न व जमाल में बाक़ी लोगों पर इस तरह फ़ज़ीलत हासिल थी जिस तरह चौधवीं के चांद को सितारों पर फ़ज़ीलत हासिल होती है।

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फ़रमाते हैं जब मेराज की रात मुझे आसमानों पर ले जाया गया तो मेरा गुज़र यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के क़रीब से हुआ तो मैंने पूछा यह कौन हैं? जिब्राईल अलैहिस्सलाम ने बताया यह यूसुफ़ अलैहिस्सलाम हैं।

आपसे पूछा गया या रसूलल्लाह! आपने उन्हें कैसे पाया तो आपने फ़रमाया ऐसे ही जैसे चौधवीं का चांद।

यूसुफ़ अलैहिस्सलाम जब मिस्र की गलियों में चलते तो आपके चेहरे की नूरानियत की वजह से दीवारें इस तरह रौशन हो जाती जिस तरह सूरज की शुआयों से रौशनी फैल जाती है।

आदम अलैहिस्सलाम को जिस दिन क़ब्ज़ए कुदरत से तख़लीक़ किया गया उस दिन आपको जो जमाल अता किया गया था उसी के मुशाबेह यूसुफ़ अलैहिस्सलाम को भी हुस्न व जमाल अता किया गया।

सबसे बड़ी वजह यह थी कि उन आरतों ने आपको नूरे नबुव्वत व रिसालत और ख़ुजूअ व ख़ुशूअ के आसार को देखा और नबुव्वत के रोब व जलाल का मुशाहदा किया और जब यह देखा कि यह शख़्स तो फ़रिश्ता सीरत है उसने तआम को नहीं देखा हम नौजवान औरतों को नहीं देखा इसे हमारी ज़रा परवाह तक नहीं हुई।

ज़ाहिरी सूरत भी अज़ीम और सीरत भी अज़ीम बस यही देखकर उन्होंने ताज्जुब किया फ़रैफ़ता हो गई अपने होश व हवास क़ायम न रख सकीं और इतना समझ लिया कि यह कोई आम इंसान नहीं यह तो कोई मुक़र्रब फ़रिश्ता है हां यह क्यों न होता जबकि नबी का मक़ाम फ़रिश्तों से बुलंद तरीन होता है।

हमारे नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम चांद से भी ज़्यादा हसीन : हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं मैंने चांदनी रात में नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को देखाः

तो मैं कभी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को देखता और कभी चांद की तरफ़ जब कि आपने सुर्ख़ धारियों वाला लिबास ज़ेब तन कर रखा था आप मुझे चांद से भी ज़्यादा हसीन नज़र आ रहे थे।

यूसुफ़ अलैहिस्सलाम का क़ैदख़ाना की दुआ करना और इसका क़बूल होना : यूसुफ़ अलैहिस्सलाम ने अर्ज़ की ऐ मेरे रब मुझे क़ैदख़ाना ज़्यादा पसंद है इस काम से जिसकी तरफ़ मुझे बुलाती हैं और अगर तू मुझसे इनका मक्र न फेरेगा तो मैं इनकी तरफ़ माईल हूंगा और नादान बनूंगा तो उसके रब ने उसकी सुन ली और उससे औरतों का मक्र फेर दिया बेशक वही सुनता जानता है फिर तमाम पहली निशानियां देखने के बाद उन पर यही ज़ाहिर हुआ कि ज़रूर एक मुद्दत तक इसे क़ैदख़ाना में रखा जाये।

जब अज़ीज़े मिस्र की जौज़ा ने मिस्र की औरतों के सामने कहा कि अगर इसने मेरी बात को न माना तो इसे क़ैदख़ाना में जाना पड़ेगा और ज़लील होना पड़ेगा तो दावत पर बुलाई हुई तमाम औरतों ने इज्तेमाई तौर पर यूसुफ़ अलैहिस्सलाम को समझाना शुरू किया कहने लगीं तुम्हारे लिये यह बेहतर नहीं कि तुम इसके हुक्म की मुख़ालफ़त करो क्योंकि मुख़ालफ़त की सूरत में तुम्हें क़ैदख़ाना में जाना पड़ेगा और ज़िल्लत उठानी पड़ेगी।

अब यूसुफ़ अलैहिस्सलाम को चंद मुश्किलात का सामना था।

एक अज़ीज़ की जौज़ा का बहुत ज़्यादा हसीन व जमील होना।

दूसरा उसका माल व दौलत का मालिक होना और यह अज़्म करना कि यूसुफ़ (अलैहिस्सलाम) से अपना मतलूब हासिल करने में तमाम माल व दौलत कुर्बान करना पड़ा तो कुरबान कर दूंगी।

तीसरा तमाम औरतें इज्तेमाई तौर पर आपको रग़बत भी दिला रही थीं और साथ साथ ख़ौफ़ भी दिला रही थीं ऐसे हालात में औरतों का मक्र भी बहुत बड़ा मक्र होता है।

चौथा आपको यह भी डर था कि उसकी मुख़ालफ़त करने में उसके शर से बचना बहुत मुश्किल है हो सकता है कि वह आपको क़त्ल ही करा दे। इन हालात के पेशे नज़र आपने यही बेहतर समझा कि मुझे क़ैदख़ाना में भेज दें तो मेरे लिये बेहतर होगा।

इंसान अपनी बशरी कुव्वत और इंसानी ताक़त के पेशे नज़र ऐसे हालात में अपने आपको बचा सके, यह बहुत मुश्किल मामला है इसी लिये आपने दुआ की ऐ अल्लाह तू ही मुझे इन औरतों के मक्र

से बचा सकता है अगर तेरा फ़ज़्ल न हो तो इंसान ऐसे गुनाहों में मुब्तला होकर जाहिल बन जाता है।

ऐ अल्लाह मुझे जिस काम की यह दावत दे रही हैं इससे बेहतर मेरे लिये क़ैदख़ाना ही है।

ख़्याल रहे कि हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम ने अपने लिये मुश्किल राह का इन्तेख़ाब किया क्योंकि अल्लाह तआला ने आपकी तरफ़ वही की।

ऐ यूसुफ़ तुमने अपने लिये मुश्किल रास्ता इख़्तेयार किया अगर तुम यह कहते मुझे आफ़ियत ज़्यादा संद है (उससे जिसकी तरफ़ मुझे यह बुलाती हैं) तो तुम्हें उनसे आफ़ियत दिला दी जाती।

इसी वजह से नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उस शख़्स का रद किया जो मसाइब र सब्र की दुआ कर रहा था। तिर्मिज़ी में हज़रत मअज़ बिन जबल रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत ब्यान ी गई है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने एक शख़्स को यह कहते हुए सुना ऐ अल्लाह मैं तुझसे सब्र का सवाल करता हूं यानी मुझे मसाइब व आलाम पर सब्र करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमा तो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः

तुमने अल्लाह तआला से मुसीबत का सवाल किया, तुम अल्लाह तआला से आफ़ियत का सवाल करो।

अज़ीज़े मिस्र और दूसरे तमाम सरकर्दा लोग यूसुफ़ अलैहिस्सलाम की पाक दामनी का यक़ीन कर चुके थे।

आप के उयूब से बरी होने और पाक दामनी पर दलालत करने वाले शवाहिदा लोग देख चुके थे।

लेकिन आपको सिर्फ़ ज़ाहिरी मसलेहत के पेशे नज़र उन्होंने क़ैदख़ाना भेजने का फ़ैसला किया था क्योंकि अज़ीज़े मिस्र की ज़ौजा के अलावा अब दूसरी औरतें भी आप पर आशिक़ हो चुकी थीं घर घर यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के हुस्न व जमाल का चर्चा हो रहा था वह लोग अपनी औरतों को रोकने में नाकाम हो गये अलबत्ता आप को क़ैदख़ाने में भेजने का उन्होंने एक हल समझा था असल में आपकी अपनी दुआ का असर ही था।

हज़रत अली इब्ने हुसैन यानी हज़रत ज़ैनुल आबेदीन रज़ियल्लाहु अन्हुमा से मरवी है कि बेशक हर औरत ने उन औरतों में से जो दावत पर मदूअ थीं आपकी तरफ़ पोशीदगी में यह पैग़ाम भेजे थे जो आपसे ज़ियारत करने का मुतालबा कर रही थीं।

इसी तरह अज़ीज़ की ज़ौजा ने अपने खाविन्द को कहा कि यह इबरानी गुलाम मुझे बदनाम कर रहा है कि मैंने इसे अपनी तरफ़ माइल करना चाहा लेकिन वह बच गया वह चूंकि बाहर निकल सकता है और मैं घर में महबूस हूं या मुझे भी बाहर बाज़ारों में जाकर इसका जवाब देने की इजाज़त दी जाये या इसे भी क़ैद कर लिया जाये तो इस तरह अज़ीज़ और दूसरे वज़ीरों ने आपको क़ैद में भिजवा दिया।

दो क़ैदियों का यूसुफ़ अलैहिस्सलाम से ख़्वाब की ताबीर पूछना :

इनके साथ क़ैदख़ाने में दो जवान दाख़िल हुए उनमें एक बोला मैंने ख़्वाब देखा कि शराब निचोड़ता हूं और दूसरा बोला, मैंने ख़्वाब देखा कि मेरे सर पर कुछ रोटियां हैं जिनमें से परिन्दे खाते हैं हमें इसकी ताबीर बतायें बेशक हम आपको नेकोकार देखते हैं।

ख़्वाब देखने वाले दो नौजवान बादशाह रियान बिन वलीद के गुलाम थे एक उसको मशरूबात पिलाने पर मुक़र्रर था और दूसरा रोटियां पकाने पर। इन दोनों पर इल्ज़ाम यह था कि यह बादशाह को ज़हर

खिलाना चाहते हैं मशरूबात पिलाने वाले का नाम अबरूहा या यूना था और रोटियां पकाने वाले का नाम ग़ालिब या मख़लिब था इन दोनों को इस इल्ज़ाम की वजह से कैदख़ाना में भेज दिया गया था।

एक ने अपना ख़्वाब ब्यान किया कि मैंने अंगूर की एक बहुत ख़ूबसूरत बेल देखी है जिसकी तीन शाख़ें हैं और उन पर अंगूर के गुच्छे लगे हुए हैं मैं उन्हें निचोड़कर पिला रहा हूं।

ख़्याल रहे कि शराब भी अंगूर के निचोड़ से ही बनता है इसलिये उस शख़्स ने अंगूर निचोड़ने को शराब निचोड़ने से ताबीर कर दिया।

दूसरे ने अपना ख़्वाब ब्यान किया कि मैंने देखा कि मैं बादशाह के बावरची ख़ाने से निकल रहा हूं और मेरे सर पर तीन टोकरियां रोटियों की हैं जिनके ऊपर से परिन्दे खा रहे हैं।

हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम जब कैदख़ाना में आये थे आपने बताया कि मैं ख़्वाबों की ताबीर ब्यान करता हूं कई लोगों को आप पहले भी ख़्वाबों की ताबीरें बता चुके थे जो सच्ची साबित हुई थीं इसलिये उन दो शख़्सों ने भी आपसे ताबीर पूछी कि आप सच्ची ताबीर बताते हैं आप साहबे इल्म हैं आप बहुत अच्छे शख़्स हैं तमाम कैदी हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के अच्छे अफ़आल पर मुत्तला थे आप नमाज़, रोज़ा के पाबंद थे हर क़िस्म के नेकी के काम करना आपकी आदते शरीफ़ा थी आपके अच्छे अख़्लाक़ किसी पर मख़फ़ी न थे आप मरीज़ों की अयादत करते ग़मनाक लोगों के दिलों की ढारस बांधते।

जब यूसुफ़ अलैहिस्सलाम कैदख़ाने में गये तो वहां कैदियों को देखा कि वह अपनी उम्मीदें ख़त्म किये हुए हैं शदीद मसाइब और तवील ग़मों में मुब्तला हैं आपने उनको तसल्ली देते हुए कहा ख़ुश हो जाओ सब्र करो अल्लाह तआला सब्र का अज्र ज़रूर अता फ़रमाता है क़ौम ने कहा ऐ जवान आपका चेहरा कितना हसीन है? आपकी सूरत कितनी ही ख़ूबसूरत है? आपके कितनी अच्छे अख़लाक़ हैं? जब से तुमने हमें बताया सब्र पर अज्र मुसीबत गुनाहों का कफ़्फ़ारा है और मसाइब व आलाम गुनाहों से पाकीज़गी का ज़रिया हैं तो हमें तुम्हारे कुर्ब और नसाइह से बर्कत हासिल हो गई है।

उन्होंने पूछा ऐ जवान तुम कौन हो? आपने बताया कि मैं यूसुफ़ इब्ने याक़ूब इब्ने इब्राहीम हूं कैदख़ाना के नाज़िम आला ने कहा ऐ नौजवान अगर मेरे इख़्तेयार में होता तो मैं तुम्हें आज़ाद कर देता यह तो मेरे इख़्तेयार में नहीं अलबत्ता तुम्हारे पड़ोस में रहने वाले कैदियों पर अच्छा सलूक करूंगा।

आपके इन फ़ज़ाइल व कमालात को देखकर उन दोनों कैदियों ने आपसे हक़ीक़तन देखे हुए ख़्वाबों की ताबीर पूछी या सिर्फ़ हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम को आज़माने के लिये मन घड़त ख़्वाब ब्यान किये।

एक क़ौल यह है कि कैदख़ाना में जब हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम ने बताया कि मैं ख़्वाब की ताबीरें जानता हूं तो उन दोनों जवानों ने एक दूसरे को कहा कि इस इबरानी गुलाम की आज़माईश करनी चाहिये हम अपनी तरफ़ से ख़ुद ही ख़्वाब बनाकर उस पर पेश करें उन्होंने ऐसा ही किया अगरचे उन्होंने कोई ख़्वाब नहीं देखा था ख़ुद ही ख़्वाब बना करके सवाल किया।

हज़रत इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया उन्होंने कोई ख़्वाब नहीं देखे थे बल्कि हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के इल्म को आज़माने के लिये ख़ुद ही ख़्वाब घढ़े थे।

युसूफ़ अलैहिस्सलाम का ताबीर ब्यान करना : ऐ कैदख़ाने के दोनों साथियों! तुम में से एक तो अपने बादशाह को शराब पिलायेगा रहा दूसरा सूली दिया जायेगा तो परिन्दे उसका सर खायेंगे। हुक्म हो चुका है इस बात को जिस का तुम सवाल करते थे।

आपने जब यह ताबीर ब्यान की तो वह कहने लगे, हमने तो कोई ख़्वाब न देखा था आपने फ़रमाया हुक्म हो चुका है इस बात का जो तुम सवाल करते थे।

बेशक जो ताबीर आपने ब्यान फ़रमाई उसको यक़ीनन वाक़ेय होना ही था।

क्योंकि आपने ताबीर करने से पहले ही फ़रमा दिया था मैं तुम्हें तुम्हारा खाना आने से पहले ख़्वाब की ताबीर बता दूंगा क्योंकि मेरे रब ने मुझे इल्म दिया है यानी आप ने बहुत वाज़ेह तौर पर बता दिया कि मैं ख़्वाबों की ताबीर कोई ज़न या तख़मीना से ब्यान नहीं करता यह तो मेरे रब का दिया हुआ इल्म है जिसकी वजह से मैं ब्यान करता हूं।

आपने उन्हें बताया कि अल्लाह तआला ने मुझे कसीर उलूम अता फ़रमाये हैं यह जो तुमने सुना है यह तो बारिश का एक क़तरा है बाग़ के फूलों में से एक कली है।

हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम का बादशाह के पास ज़िक्र करने के मुताल्लिक़ कहनाः और यूसुफ़ (अलैहिस्सलाम) ने उन दोनों में से जिसे बच्चा समझा उससे कहा अपने बादशाह के पास मेरा ज़िक्र करना तो शैतान ने उसे भुला दिया कि अपने बादशाह के सामने यूसुफ़ (अलैहिस्सलाम) का ज़िक्र करे तो यूसुफ़ (अलैहिस्सलाम) कई बरस और क़ैदख़ाने में रहे।

आला हज़रत मौलाना अहमद रज़ा बरेलवी रहमतुल्लाह अलैहि ने इस मक़ाम पर लफ़्ज़ ज़न का मायने "समझा" किया है "गुमान किया" तर्जमा नहीं किया क्योंकि अहले इल्म का इसमें एक क़ौल यही है कि इसके फ़ाइल यूसुफ़ अलैहिस्सलाम हैं नबी का इल्म ज़न्नी नहीं होता बल्कि यक़ीनी होता है। अल्लामा राज़ी रहमतुल्लाह अलैहि फ़रमाते हैं कि अहले इल्म का एक क़ौल यह है :

कि यहां लफ़्ज़ ज़न को इल्म और यक़ीन के मायने में लिया जाये क्योंकि यूसुफ़ अलैहिस्सलाम ने ख़्वाब की ताबीर वही से ब्यान फ़रमाई और कुरआन पाक में बहुत मक़ामात पर ज़न के मायने यक़ीन इस्तेमाल हुआ है जिस तरह ज़िक्र कर्दा आयतों में युज़न्न और ज़न्नत यक़ीन के मायने में इस्तेमाल हैं।

मुक़र्रेबीन के लिये क़वानीन ही और हैंः अहले इल्म ने ज़ाब्ता ब्यान किया हैः

आम नेक लोगों की नेकियां भी बाज़ औक़ात ख़ास मुक़र्रब लोगों के लिये उन पर अमल करना अच्छा नहीं होता बल्कि उनके लिये इस मर्तबा से बुलंद मर्तबा होता है लिहाज़ा उनके आमाल भी बुलंद मर्तबा के होने चाहियें।

अल्लामा आलूसी रहमतुल्लाह अलैहि फ़रमाते हैं कि इस मसले में कोई अशकाल नहीं।

कि अल्लाह के बंदों से मुश्किलात में इमदाद तलब करने में कोई हर्ज नहीं क्योंकि ख़ुद रब्बे कुद्दूस ने ब्यान फ़रमायाः

नेकी और परहेज़गारी पर एक दूसरे की मदद करो।

आम लोगों के लिये यह भी नेकी का काम है कि वह अल्लाह के बंदों से अपनी मुश्किलात में इमदाद तलब करें, लेकिन अंबियाए किराम का मक़ाम ही कुछ और है। यही वजह है कि हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने आग से नजात के लिये अल्लाह तआला से भी सवाल नहीं किया कि जब वह मेरे हाल से बाख़बर है तो मुझे सवाल करने की क्या ज़रूरत है।

हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम ने जब क़ैद से नजात पाने वाले को कहा कि मेरा ज़िक्र बादशाह के सामने करना तो अल्लाह तआला ने उस पर प्यार व मुहब्बत से आपको तंबीह फ़रमाई ऐ मेरे प्यारे ज़रा

गौर तो करो तुम्हें भाईयों के हाथों क़त्ल होने से किसने बचाया तुम्हें कुंए से किसने निकाला तुम्हें औरतों के बोहतान से किसने बचाया? अर्ज़ किया मौलाए कायनात यह तेरे ही फ़ैज़ान थे रब तआला ने फ़रमाया फिर इंसान के सामने ज़िक्र करने का क्या फ़ायदा था? यूसुफ़ अलैहिस्सलाम ने उज़्र पेश करते हुए अर्ज़ किया ऐ मेरे मौला! बस वैसे ही ज़बान पर आ गया था।

यूसुफ़ अलैहिस्सलाम ने बादशाह के दो गुलामों को ख़्वाब की ताबीर ब्यान करने से पहले पांच साल क़ैदख़ाना में गुज़ार लिये थे और मज़ीद सात साल आपने और गुज़ारे यानी बारह साल अल्लाह के नबी ने अपनी पाक दामनी के लिये क़ैदख़ाना में गुज़ार दिये। अंबियाए किराम से बहुत मुश्किल इम्तेहान लिये गये।

बादशाह को ख़्वाब आना : और बादशाह ने कहा मैंने ख़्वाब में देखीं सात मोटी गायें कि उन्हें सात दुबली गायें खा रहीं हैं। और सात बालियां (सटे) हरी और दूसरी सात सूखी। ऐ दरबारियो! मेरे ख़्वाब का जवाब दो अगर तुम्हें ख़्वाब की ताबीर आती हो बोले, परेशान ख़्वाबें हैं और हम ख़्वाब की ताबीर नहीं जानते।

रब ताअला का क़ानूने कुदरत यह है कि जब किसी चीज़ का इरादा फ़रमाता है तो उसके लिये अस्बाब पैदा फ़रमाता है। यूसुफ़ अलैहिस्सलाम को भी जब क़ैद से निकालने का इरादा फ़रमाया तो इसका सबब यह पैदा फ़रमाया कि मिस्र के बादशाह रियान ने ख़्वाब देखा कि:

सात मोटी ताज़ी गायें एक ख़ुश्क नहर से निकलीं और सात ही लाग़र गायें, मोटी गाये को खा गईं। और उसने देखा कि सात बालियां जो दानों से भरपूर और सब्ज़ हैं और सात दूसरी ख़ुश्क को देखा जो सब्ज़ पर लिपट कर उन पर ग़ालिब आ गईं।

बादशाह ने अपने दरबारी, काहिनों, नजूमियों को जमा करके उनसे ख़्वाब की ताबीर पूछी उन्होंने कहा अगर ख़्वाब में कोई तर्तीब होती जो वाक़ियात की निशानदही करती तो हम ताबीर बताते। यह ख़्वाब तो बिला तर्तीब हैं इनमें इख़्तेलात व इज़्तेराब पाया गया है इसलिये यह परागंदा ख़्यालात हैं इनकी ताबीर कुछ भी ब्यान नहीं हो सकती। लेकिन बादशाह बहुत ज़्यादा परेशान था कि कमज़ोर का ताक़तवर पर ग़ालिब आ जाना और ख़ुश्क का सब्ज़ पर ग़ालिब आ जाना यक़ीनन किसी ख़तरा की अलामत है।

बादशाह की परेशानी को देखकर उस साबिक़ क़ैदी को याद आया जिसे हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया था कि तू नजात पायेगा। उसने कहा मुझे क़ैदख़ाने में भेजो। वहां एक आलिम शख़्स है वह इस ख़्वाब की ताबीर ब्यान करेगा तो मैं वापस आकर तुम्हें बता दूंगा। वह शख़्स आप अलैहिस्सलाम के पास आकर बादशाह के ख़्वाब की ताबीर पूछने लगा।

एक दूसरी रिवायत के मुताबिक़ यह एक और शख़्स था जिसने यूसुफ़ अलैहिस्सलाम का चर्चा सुन रखा था। बादशाह के ख़्वाब ब्यान करने और परेशानी को देखकर कुछ वक़्त बाद उसे याद आया कि क़ैदख़ाना में उस शख़्स के पास जाकर पूछूं जिसके मुताल्लिक़ मशहूर है कि वह ख़्वाबों की ताबीर सही ब्यान करता है।

सुबहानल्लाह! मक़ामे नबी कितना बुलंद है? जब साइल ने ताबीर पूछी तो उसे यह न कहा कि सात साल बाद मेरी कैसी याद आ गई? और यह भी न कहा कि पहले बादशाह को कहो कि मुझे बेगुनाह क़ैद में डाला हुआ है आख़िर इसकी वजह क्या है? मुझे पहले क़ैदख़ाने से निकालो तो ताबीर बताऊंगा?

नहीं नहीं, साबिर शाकिर नबी ने कोई शर्त न लगाई और न ही उस शख़्स को ताना दिया।

बादशाह के ख़्वाब की ताबीर हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम ब्यान करते हैं: आपने फ़रमाया कि तुम काश्त करोगे सात साल तक लगातार तो जो तुम काटोगे उसे रहने दो ख़ोशों (बालियों) में, मगर थोड़ा सा (ज़रूरत के लिये निकाल लो) जिसे तुम खा लो। फिर आयेंगे इस (ख़ुशहाली) के बाद सात साल बहुत सख़्त, खा जायेंगे जो ज़ख़ीरा तुमने पहले जमा कर रखा होगा उनके लिये थोड़ा सा जो तुम महफ़ूज़ कर लोगे। फिर आयेगा इस अर्सा बाद एक साल जिसमें बारिश बरसाई जायेगी लोगों के लिये और उस साल वह (फ़लों का) रस निकालेंगे।

यूसुफ़ अलैहिस्सलाम ने ख़्वाब की ताबीर भी ब्यान की कि सात साल ग़ल्ला तुम्हें आम दस्तूर के मुताबिक़ हासिल होगा फिर सात साल क़हत होगा बारिश नहीं होगी यह क़हत वाले साल पहले सालों के जमा शुदा ग़ल्ला को ख़त्म कर देंगे इसके बाद फिर एक साल ख़ुशहाली का दौर दौरा होगा बारिशें कसीर होंगे जिनकी वजह से अंगूर ज़ैतून गन्ने और तिल वग़ैरह की कसीर पैदावार होगी जिनसे तुम रस निकालोगे और बाज़ से तेल निकालोगे।

यूसुफ अलैहिस्सलाम ने ख़्वाब की ताबीर ब्यान की और साथ साथ उसके लिये एहतियाती तदाबीर भी ब्यान कीं, कि पहले सात सालों के पैदा होने वाले ग़ल्ला को बे दरेग़ इस्तेमाल न करना सिर्फ़ इतना ग़ल्ला साफ़ करना यानी भूसा और दानों को इतनी मिक़दार में अलग करना जिससे तुम्हारी ज़रूरयात पूरी हो सकें बाक़ी ग़ल्ला बालियों में ही रहने देना, इससे ख़र्च में एहतियात होगी और दाने कीड़े मकोड़े से भी महफ़ूज़ रहेंगे।

बादशाह को यूसुफ़ अलैहिस्सलाम को बुलाना और आपका इंकार : और बादशाह ने कहा उन्हे मेरे पास ले आओ तो जब क़ासिद इनके पास आया आपने कहा अपने बादशाह के पास वापस जा फिर उससे पूछ क्या हाल है उन औरतों का जिन्होंने अपने हाथ काटे थे बेशक मेरा रब उनका फ़रेब जानता है बादशाह ने कहा ऐ औरतों! तुम्हारा क्या मामला हुआ जब तुमने यूसुफ़ अलैहिस्सलाम को अपनी तरफ़ माइल करना चाहा था? उन्होंने कहा अल्लाह की पाकी है हमने उनमें कोई बदी नहीं पाई। अज़ीज़ की बीवी बोली! अब असली बात खुल गई। मैंने उनको अपनी तरफ़ माइल करना चाहा था और बेशक वह सच्चे हैं। यूसुफ़ अलैहिस्सलाम ने कहा यह मैंने इसलिये किया कि अज़ीज़ को मालूम हो जाये कि मैंने पीठ पीछे उसकी ख़्यानत नहीं की अल्लाह दग़ाबाज़ों का मक्र नहीं चलने देता।

हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम का सब्र देखिये! कि बारह साल क़ैद रहने के बावजूद जब क़ैदख़ाना से निकलने का पैग़ाम मिलता है तो आप ख़ुशी से जल्दी निकलने के बजाए इंकार करते हुए यह कहते हैं कि पहले मामला की छानबीन कर लें फिर मैं क़ैदख़ाना से बाहर आऊंगा। अगर आप जल्दी से बाहर आ जाते तो ऐन मुमकिन था कि बादशाह के दिल में इस तोहमत के हक़ होने का वसवसा बाक़ी रहता। वाक़िया की तहक़ीक़ के बाद बादशाह को यक़ीन हो गया औरतों ने आपकी पाकदामनी का वाज़ेह ऐलान फ़रमा दिया। अज़ीज़ की ज़ौजा जिसने अभी तक इक़बाले जुर्म नहीं किया था अब वह भी अपनी ग़लती एतेराफ़ करते हुए आपको पाक दामन और सच्चा कहने लगी। इस तरह बादशाह पर यह हक़ीक़त खुलकर सामने आ गई कि आप सच्चे हैं। नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया:

अगर मैं यूसुफ़ अलैहिस्सलाम की तरह ज़्यादा देर क़ैदख़ाना में रहता तो दावत देने वाले की दावत

क़बूल कर लेता।

याद रहे कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज़रत यूसुफ अलैहिस्सलाम की तारीफ़ फ़रमाई लेकिन इससे यह नहीं साबित हो सकता कि अगर नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उस मकान पर होते तो मआज़ल्लाह सब्र न करते बल्कि फ़ौरन बाहर आ जाते। यह एक बा मुहावरा कलाम है। आजिज़ाना कलाम में हक़ीक़त का ब्यान नहीं होता।

हज़रत मुल्ला अली क़ारी रहमतुल्लाह अलैहि तहरीर फ़रमाते हैं:

इब्ने मलिक ने कहा जान लो बेशक इस हदीस पाक में नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपनी परेशानी और सब्र की कमी का ज़िक्र नहीं किया बल्कि इसमें हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम की मदह की गई है कि आपने जल्दी निकलना पसंद न फ़रमाया ताकि बादशाह के दिल से यह बात निकल जाये जो आप पर बुराई की तोहमत लगाई गई थी यानी बादशाह को पता चल जाये कि आप पर ग़लत तोहमत लगाई गई थी और वह आपको शक की निगाह से न देखे।

बादशाह ने कहा उनको मेरे पास ले आओ और इसकी वजह यह थी कि उसे जब मालूम हुआ कि आप बड़े साहबे इल्म हैं तो उसने कहा ऐसा साहबे इल्म क़ैद में रहे यह कैसे हो सकता है उससे इल्म की फ़ज़ीलत हासिल हुई कि अल्लाह तआला ने आपके इल्म को दुनिया में मसाइब से छुटकारा हासिल करने का ज़रिया बनाया तो यह कैसे हो सकता है? कि दीनी उलूम आख़रत की मुश्किलात से छुटकारा दिलाने का ज़रिया बन सकें?

क़ैदख़ाना से निकल कर वज़ीरे ख़ज़ाना और वज़ीरे आज़म: और बादशाह ने कहा उन्हें मेरे पास ले आओ कि मैं उन्हें ख़ास अपने लिये चुन लूं फिर जब उनसे बात की कहा बेशक आज आप हमारे हां मुअज़्ज़ज़ मुअतमिद हैं यूसुफ़ अलैहिस्सलाम ने कहा मुझे ज़मीन के ख़ज़ानों पर कर दे, बेशक मैं हिफ़ाज़त वाला इल्म वाला हूं। और यूं ही हमने यूसुफ़ अलैहिस्सलाम को इस मुल्क पर कुदरत बख़्शी इसमें जहां चाहे रहे हम अपनी रहमत जिसे चाहें पहुंचायें और नेकों की नेकियां ज़ाया नहीं करते और बेशक आख़रत का सवाब उनके लिये बेहतर जो ईमान लाये और परहेज़गार रहे।

बादशाह ने मोअज़्ज़ेज़ीन की एक जमाअत बेहतरीन सवारियां और शाहाना साज़ व सामान और नफ़ीस लिबास देकर क़ैदख़ाना भेजी ताकि हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम को निहायत ताज़ीम व तकरीम के साथ ऐवाने शाही में लायें उन लोगों ने हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम की ख़िदमत में हाज़िर होकर बादशाह का पैग़ाम अर्ज़ किया आपने क़बूल फ़रमाया क़ैदख़ाना से निकलते वक़्त क़ैदियों के लिये दुआ फ़रमाई। जब क़ैदख़ाना से बाहर तशरीफ़ लाये तो उसके दरवाज़े पर लिखा।

यह मुसीबतों का घर है ज़िन्दा लोगों के लिये क़ब्र है और दुश्मनों की बदगोई बल्कि उनके लिये ख़ुश होने का मक़ाम है और सच्चों के इम्तेहान की जगह है।

फिर गुस्ल किया, आला लिबास पहना और शाही महल्लात की तरफ़ रवाना हुए। जब क़िला के पास पहुंचे तो फ़रमाया:

मेरा रब ही काफ़ी है उसकी पनाह बड़ी और उसकी सना बरतर और उसके सिवा कोई माबूद नहीं।

फिर क़िला में दाख़िल हुए बादशाह के सामने पहुंचे तो यह दुआ की:

ऐ मेरे रब तेरे फ़ज़्ल से उसकी भलाई तलब करता हूं और उसकी और दूसरों की बुराई से तेरी

पनाह चाहता हूं।

जब बादशाह से नज़र मिली तो आपने अरबी में सलाम फ़रमाया बादशाह ने पूछा यह कौन सी ज़बान है? तो आपने फ़रमाया यह मेरे चचा हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम की ज़बान है। फिर आपने इबरानी ज़बान में दुआ की उसने फिर पूछा यह कौन सी ज़बान है? आपने फ़रमाया यह मेरे अब्बा जान हज़रत याकूब अलैहिस्सलाम की ज़बान हैं बादशाह दोनों ज़बानें नहीं समझ सका बावजूद यह कि वह सत्तर ज़बानें जानता था। फिर उसने जिस ज़बान में हज़रत से गुफ़्तगू की आपने उसी ज़बान में उसे जवाब दिया। उस वक़्त आपकी उम्र तीस साल थी इस उम्र में यह वुसअते उलूम देखकर बादशाह को बहुत हैरत हुई और उसने आपको अपने बराबर जगह दी।

बादशाह ने दरख़्वास्त की कि हज़रत उसके ख़्वाब की ताबीर अपनी ज़बाने मुबारक से सुना दें। हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम ने उसके ख़्वाब की पूरी तफ़सील भी सुना दी। जिस शान से उसने ख़्वाब देखा था हालांकि पहले इजमाली तौर पर ख़्वाब ब्यान किया गया था। उस पर बादशाह को बहुत ताज्जुब हुआ कहने लगा आपने मेरा ख़्वाब हू बहु फ़रमा दिया, ख़्वाब तो अजीब था ही मगर आपका इस तरह ब्यान फ़रमा देना ज़्यादा अजीब है। अब आप ताबीर भी ब्यान फ़रमा दें।

आपने ताबीर फ़रमाने के बाद फ़रमाया कि अब लाज़िम यह है कि ग़ल्ले जमा किये जायें और उन फ़राख़ी के सालों में कसरत से काश्त कराई जाये और ग़ल्ले उनके ख़ोशों में जमा कर लिये जायें और रियाया की पैदावार से पांचवा हिस्सा लिया जाये उससे जो जमा होगा व मिस्र और मिस्र के अतराफ़ के लोगों के लिये काफ़ी होगा। और फिर अल्लाह की मख़लूक़ हर तरफ़ से तेरे पास ग़ल्ला ख़रीदने आयेगी और तेरे यहां इतने ख़ज़ाइन व अमवाल जमा होंगे जो तुझसे पहलों के लिये जमा न हुए। बादशाह ने कहा इसका इंतेज़ाम कौन करेगा? आपने फ़रमाया ज़मीन के ख़ज़ाने मेरे हवाले कर दे मैं उनकी हिफ़ाज़त भी करूंगा और अल्लाह तआला के दिये हुए इल्म से उनका बेहतर इंतेज़ाम करूंगा।

बादशाह ने समझ लिया था कि आपसे ज़्यादा इस मनसब के लाइक़ और कोई नहीं हो सकता इसलिये उसने आप के इरशाद के मुताबिक़ आपको तमाम ख़ज़ाइन का वज़ीर मुक़र्रर कर दिया।

मसाइल : अहादीस में "तलबे इमारह" की मुमानेअत आई है लेकिन इसका मतलब है कि जब मुल्क में इस मनसब के अहल कई लोग मौजूद हों और अहकामे इलाही को क़ाइम करना किसी एक शख़्स के साथ कायम न हो उस वक़्त हुकूमत तलब करना मकरूह है। लेकिन जब एक ही शख़्स अहल हो तो उसको अल्लाह तआला के अहकाम क़ाइम करने के लिय हुकूमत तलब करना जायज़ है बल्कि वाजिब है, हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम उसी हाल में थे आप रसूल थे क़ौम की मसलेहतों को जानते थे आपको मालूम था कि शदीद क़हत होने वाला है जिस में अल्लाह की मख़लूक़ को आराम और आसाईश पहुंचाने का यही तरीक़ा है कि हुकूमत को अपने हाथ में ले लिया जाये इसलिये आपने हुकूमत तलब की।

मसला : ज़ालिम बादशाह की तरफ़ से अगर इसलिये उहदा तलब किये जायें ताकि इंसाफ़ किया जायेगा तो यह जायज़ है अगर क़ौमी ख़ज़ाना लूटने के लिये उहदा क़बूल किया या किसी पर ज़ुल्म करने के लिय या इंतेक़ामी कार्रवाई करने के लिये तो यह हराम है इसको रहमान का फ़ज़्ल समझा जाये बल्कि शैतान का जाल समझा जाये।

मसला : अगर काफ़िर या फ़ासिक़ बादशाह के हुकूमत में शरीक करने के बग़ैर दीन के अहकाम को जारी न किया जा सके तो काफ़िर व फ़ासिक़ की हुकूमत में शरीक होना जायज़ है और इससे सिर्फ़ दीनी अहकाम की तरवीज के लिये इमदाद लेना जायज़ है ज़ालिमों के साथ शरीक होकर ज़ालिम बन जाना दीने इस्लाम से बग़ावत है।

मसला : अपनी ख़ूबियां फ़ख़ और तकब्बुर की वजह से ब्यान करना जायज़ नहीं अलबत्ता दूसरों को नफ़ा पहुंचाने और मख़लूक़ के हुकूक़ की हिफ़ाज़त करने क लिये अगर ज़रूरत दरपेश आये तो अपनी ख़ूबियां और अपने कमालात ब्यान करना जायज़ है इसी वजह से यूसुफ़ अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि मैं साहबे इल्म और हिफ़ाज़त करने वाला हूं।

यूसुफ़ अलैहिस्सलाम की ताजपोशी : एक साल बाद बादशाह ने हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम को बुलाकर आपकी ताजपोशी की और तलवार और महर आपके सामने पेश की और आप को तलाई तख़्त पर तख़्तनशीन किया जो जवाहेरात से मरस्सा था और अपना मुल्क आपके सुपुर्द कर दिया। लेकिन ताज आपने यह कहकर वापस कर दिया कि यह मेरा और मेरे आबा का लिसाब नहीं अलबत्ता अंगूठी जो बतौर मुहर इस्तेमाल होती थी उसे और तख़्त को आपने क़बूल कर लिया कि तख़्त के ज़रिये तुम्हारी सल्तनत को मज़बूत करूंगा और मुहर के ज़रिये तुम्हारे उमूर की तदबीरें सर अंजाम दूंगा।

अज़ीज़े मिस्र को माजूल करके आपको उसकी जगह वाली बनाया और तमाम ख़ज़ाइन आपके सुपुर्द कर दिये और सल्तनत के तमाम उमूर आपके हाथ में दे दिये और ख़ुद एक ताबेअ की हैसियत में हो गया। आपकी राय में दख़ल नहीं देता था और आपके हुक्म को मानता था इस तरह आप वज़ीरे आज़म बन गये तमाम इख़्तेयारात के मालिक बन गये।

आपकी हुकूमत के असरात : आपने अद्ल व इंसाफ़ की बुनियादों पर अपनी हुकूतम को क़ायम किया इसी लिये आपकी हुकूमत दिन–ब–दिन मज़बूत तर होती चली गई तमाम मर्दों और औरतों के दिलों में आपकी मुहब्बत पैदा हुई और आपने क़हत साली के आने वाले दिनों के लिये ग़ल्लों के ज़ख़ीरे जमा करने की ताबीर फ़रमाई इसके लिये बहुत वसीअ और आलीशान अंबारख़ाने (स्टोर) तामीर कराये और बहुत कसीर ज़ख़ाइर जमा किये।

जब फ़राख़ी के साल गुज़र गये और क़हत का ज़माना आया तो आपने बादशाह और उसके ख़ुद्दाम के लिये रोज़ाना सिर्फ़ एक एक वक़्त का खाना मुक़र्रर फ़रमाया। एक रोज़ दोपहर के वक़्त बादशाह ने हज़रत से भूख की शिकायत की आपने फ़रमाया क़हत साली की इब्तेदा का वक़्त है क्योंकि पहले साल में लोगों के पास ज़ख़ीरे थे सब ख़त्म हो गये बाज़ार ख़ाली हो गये चूंकि क़हत के सारे ज़माना में आपने ख़ुद भी कभी सैर होकर खाना नहीं खाया था। वाक़िफ़ हाल लोगों ने आपकी ख़िदमत में अर्ज़ किया कि इतने कसीर ख़ज़ानों के मालिक होकर भी आप भूके रहते हैं? आप अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया इस अंदेशा से कि सैर हो जाऊं तो कहीं भूक को न भूल जाऊं। सुबहानल्लाह क्या पाकीज़ा अख़लाक़ हैं आपके। इन पाकीज़ा अख़लाक़ की वजह से ही बादशाह भी एक वक़्त के खाने पर किफ़ायत कर रहा था। उसने भी आपके जवाब पर कोई मज़ाहमत नहीं की।

तमाम अहले मिस्र हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम से ग़ल्ले ख़रीदने लगे तमाम दराहिम व दीनार यानी उनका नक़्दी माल व दौलत हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के पास जमा हो गया। दूसरे साल उन्होंने

अपने ज़ेवरात और जवाहर से ग़ल्ला ख़रीदा। इस तरह उन तमाम लोगों के तमाम ज़ेवरात व जवाहर आपके पास आ गये। तीसरे साल अपने जानवर देकर ग़ल्ला ख़रीदा यहां तक कि मिस्र में कोई शख़्स किसी जानवर का मालिक न रहा। तमाम जानवर भी आपकी मिलकियत में आ गये। चौथे साल अपने गुलाम और लौंडियां देकर ग़ल्ला हासिल हुआ। पांचवे साल तमाम जागीरें और आराज़ी देकर आपसे ग़ल्ला ख़रीदा। उस साल मिस्र के लोगों के पास सिवाए अपनी जान और औलाद के कुछ भी बाक़ी न रहा था तमाम मिलकियत हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के पास आ चुकी थी। छटे साल जब उनके पास और कुछ न बचा तो उन्होंने अपनी औलाद आपके पास गुलाम के तौर पर देकर ग़ल्ला हासिल किया। और सातवें साल तो वह लोग खुद ग़ल्ला हासिल करने के लिये आपकी गुलामियत में आ गये। मिस्र में मर्दो और औरतों में से कोई शख़्स भी ऐसा न था जो आपकी गुलामियत में न आया हो तमाम लोगों की ज़बान पर था कि हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम जैसी अज़मत व जलालत किसी बादशाह को मैयस्सर नहीं आ सकी।

हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम ने बादशाह को कहा कि तुमने देख लिया अल्लाह तआला का मुझ पर कैसा करम है? उसने मुझ पर ऐसा एहसाने अज़ीम फ़रमाया अब उनके हक़ में तेरी क्या राए है? बादशाह ने कहा जो आपकी राय है हम तो आपके ताबेअ हैं आपने फ़रमाया मैं अल्लाह तआला को गवाह बनाकर और तुम्हें गवाह बनाकर यह ऐलान करता हूं कि मैं तमाम अहले मिस्र को आज़ाद कर रहा हूं और उनकी तमाम मिलकियत और जागीरें उन्हें वापस कर रहा हूं।

तमाम लोगों को गुलाम और कनीज़ें बनाने में अल्लाह तआला की हिकमत यह थी कि किसी को यह कहने का मौक़ा न हो कि हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम गुलाम की शान में आये थे और मिस्र के एक शख़्स के ख़रीदे हुए थे क्योंकि अब तो मिस्र के तमाम मिस्री आपके ख़रीदे हुए और आज़ाद किये हुए थे उन पर ज़ाहिर करना था कि आज़ाद शख़्स किसी मजबूरी से गुलामियत में आने से दर हक़ीक़त गुलाम नहीं बनता जैसे वह लोग हक़ीक़त में गुलाम नहीं बने थे सिर्फ़ उन पर गुलाम होने की एक हैसियत क़ायम की गई थी कि आपकी शान में कोई हर्फ़ न कह सकें।

अजीज़े मिस्र की जौज़ा की मुराद का पूरा होना : बादशाह ने पहले वज़ीरे आज़म यानी अज़ीज़े मिस्र (जिसका नाम क़तफ़ीर था) को मअजूल कर दिया था बाद में वह जल्द ही फ़ौत हो गया था उसकी जौज़ा जिसने आप अलैहिस्सलाम को अपनी तरफ़ माइल करने की कोशिश की थी लेकिन वह नाकाम रही और आप पाकदामन रहे पहले बच्चा की गवाही से आप बरिउज़ ज़िम्मा हो चुके थे लेकिन क़ैदख़ाना से निकलने पर उसने भी खुले दिल से अपनी ग़लती का एतेराफ़ कर लिया था आप को सच्चा कहने लगी थी। अज़ीजे मिस्र की मौत के बाद...

बादशाह ने उस औरत का निकाह हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम से कर दिया आपने मुलाक़ात पर उसे यह कहा क्या यह बेहतर नहीं उससे जो तू मुतालबा कर रही थी?

याद रहे अज़ीजे मिस्र चूंकि ना मर्द था इसलिये वह अभी तक बाकेरा थी मुहब्बत उसे सिर्फ़ यूसुफ़ अलैहिस्सलाम से थी वह कोई बदकार नहीं थी उस औरत से हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के दो बेटे पैदा हुए एक का नाम इफ़राईम और दूसरे का नाम मईशा था।

अज़ीज़ की ज़ौजा का नाम ज़ुलेख़ा था नाम को सराहतन नहीं ज़िक्र किया गया क्योंकि औरत का

आम तौर पर बिला मक़सद नाम लेना बेहतर नहीं। पर्दा ज़्यादा मुनासिब होता है और इसमें अदब की तालीम भी दी गई है गोया कि अल्लाह तआला फ़रमाता है अदब का तरीक़ा यह है कि कोई शख़्स अपनी ज़ौजा का नाम लेकर न पुकारे बल्कि ऐसे अल्फ़ाज़ से पुकारे जिनमें वाज़ेह तौर पर नाम ज़िक्र न हो। क़ुरआन पाक में किसी औरत का नाम ज़िक्र नहीं किया गया सिवाए हज़रत मरयम के। उनका नाम भी सिर्फ़ इस वजह से ज़िक्र हुआ कि लोग उन्हें (मआज़ल्लाह) अल्लाह तआला की ज़ौजा कहते थे तो उनका नाम रब तआला ने ज़िक्र करके उनका रद किया अगर मेरी ज़ौजा होती तो मैं उसका नाम ज़िक्र न करता।

पहले हमने अपने इलाक़ा में यह देखा कि कोई शख़्स भी अपनी ज़ौजा का नाम नहीं लिया करता था बच्चे का नाम लेकर उसकी वालदा या भाई का नाम लेकर उसकी बहन कहता वग़ैरह। लेकिन आजकल ज़ौजा का नाम लेना भी फ़ैशन का हिस्सा बन गया है। औरत का कितना अदब कितना एहतेराम शरीअत ने बताया? मैंने औरतों के हुक़ूक़ पर तफ़सीली बहस अपनी किताब "इस्लाम में औरत का मक़ाम" में ब्यान किया है। माडर्न औरत किसी और मज़हब में इन हुक़ूक़ का तसव्वुर भी नहीं कर सकती जो शरीअते मुतह्हरा ने दिये हैं।

ग़ल्ला लेने के लिये आपके भाईयों का जाना : और एक रोज़ आ निकले बिरादराने यूसुफ़ (अलैहिस्सलाम) और उनकी ख़िदमत में हाज़िर हुए सो आपने उन्हें पहचान लिया लेकिन वह आपको न पहचान सके सो जब मुहय्या कर दिया उनके लिये उनकी (रसद व ख़ुराक) का सामान तो फ़रमाया (दोबारा आओ) तो ले आना मेरे पास अपने पेदरी भाई को क्या नहीं देखते कि मैं किस तरह पैमाना पूरा भरकर देता हूं और मैं कितना बेहतर मेहमान नवाज़ हूं और अगर तुम उसे न ले आये मेरे पास तो सुन लो कोई पैमाना तुम्हारे लिये मेरे पास नहीं होगा और न तुम मेरे क़रीब आ सकोगे वह बोले हम ज़रूर मुतालबा करेंगे उसके भेजने के मुताल्लिक़ उसके बाप से और हम ज़रूर ऐसा करेंगे।

कनआन का इलाक़ा भी उस क़हत की ज़द में था और लोगों की तरह हज़रत याकूब अलैहिस्सलाम के फ़रज़ंदों ने भी बार बरदारी के मवेशी लिये और मिस्र का रुख़ किया क्योंकि ग़ल्ला की तक़सीम का यह काम हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम की निगरानी में हो रहा था इसलिये वह आप की ख़िदमत में हाज़िर हुए और अपनी मजबूरियों का इज़हार करके ग़ल्ला के लिये दरख़्वास्त की। हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम से उनकी मुलाक़ात अगरचे बहुत सालों बाद हुई थी लेकिन आपने देखते ही अपने भाईयों को पहचान लिया मगर वह आप को न पहचान सके और बेचारे पहचानते भी तो आख़िर क्यों? उनके वहम व गुमान में भी यह नहीं आ सकता था कि शाहाना लिबास में मलबूस ज़र निगार कुर्सी पर बैठा हुआ जिसके हुक्म की तामील के लिये सैंकड़ों हज़ारों मुलाज़िम दस्तबस्ता खड़े हैं यह वह यूसुफ़ है जिसको उन्होंने एक तारीक कुंए में फैंका था। और फिर सिर्फ़ बीस खोटे दिरहमों के बदले में क़ाफ़िला के हाथ फ़रोख़्त कर दिया था।

हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम ने अपने जज़्बात को बेक़ाबू न होने दिया, एक अजनबी की हैसियत से उनके घर के हालात दर्याफ़्त किये और उन्हीं की ज़बानी यह भी पता चल गया कि उनका एक और भाई है जिसे वह घर छोड़ आये हैं। (अगरचे आप ख़ुद भी अपने भाई को जानते थे।) आपको ख़ुद तो अपने आपको अभी ज़ाहिर नहीं करना था जब अल्लाह तआला को हुक्म देना था

उसी वक़्त ज़ाहिर करना था इसलिये अभी अजनबी की सूरत में तमाम कलाम हो रहा था। उन्होंने अपने वालिद और भाई का हिस्सा भी तलब किया था क्योंकि हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम एक शख़्स को एक ऊंट का बोझ ग़ल्ला ही देते थे। आपने उनसे पूछा कि तुम्हारे वालिद और भाई के न आने की क्या वजह है? तो उन्होंने बताया कि हमारे बाप बूढ़े हैं वह तो आने की ताक़त ही नहीं रखते अलबत्ता हमारा छोटा भाई बाप की खिदमत गुज़ारी के लिये घर रह गया है।

आपने फ़रमायाः इस मर्तबा तो मैं उनका ग़ल्ला भी तुम्हें दे रहा हूं लेकिन आइंदा तुम अपने भाई को भी साथ लाना, क्या तुम देखते नहीं हो मैं कितना शफ़ीक़ और मेहरबान आदिल हूं? कि पैमाने भर भर कर देता हूं और कितना बड़ा मेहमान नवाज़ हूं लेकिन यह भी ख़्याल रखना कि अगर आइंदा तुम अपने भाई को साथ न लाये तो तुम्हें ग़ल्ला नहीं मिलेगा।

यूसुफ़ अलैहिस्सलाम ने भाईयों की रक़म वापस कर दी : और आपने फ़रमाया अपने गुलामों को कि चुपके से रख दो इनकी पूंजी इनकी खुरजियों में शायद कि वह उसे पहचानें जब अपने घर की तरफ़ लौट कर जायें शायद वह वापस आयें।

हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम ने भाईयों को पूंजी लौटा दी थी उसकी एक वजह यह थीः
कि जब सामान खोलेंगे तो पूंजी उसमें देखकर वापस आयेंगे क्योंकि वह नबी के बेटे हैं ईमान वाले हैं और वह वापस लौटाना अपनी ज़िम्मेदारी समझते हुए फिर आयेंगें।

फ़ुरा ने कहा कि पूंजी वापस करने की वजह यह थी कि जब वह अपनी पूंजी को अपने सामान में मुशाहेदा करेंगे तो उनके दिल में यह आयेगा कि शायद उन्होंने भूलकर न रख दिया हो वह हक़ीक़ते हाल का पता लगाने के लिये वापस आयेंगे या वह माल वापस लौटाने के लिये आयेंगे क्योंकि वह अंबिया की औलाद हैं।

दूसरी वजह यह थी कि आप को घर के हालात का पता चल गया था तो आपकी शान के लायक़ नहीं था कि आप अपने भाईयों और वालिद मुकर्रम से रक़म लेकर ग़ल्ला दें।

इसलिये कि आप आदिल बादशाह थे और आपके भाई ईमान वाले थे और ख़ानदाने नबुव्वत से थे। आप पर वाजिब हो चुका था कि आप अपने अक़रबा से सिला रहम करें और मुश्किल हालात में उनका हाथ बटायें।

छोटे भाई को साथ ले जाने की बाप के हुजरू दरख़्वास्तः और जब उन्होंने अपना सामान खोला अपनी पूंजी पाई कि उनको लौटा दी गई है बोले ऐ हमारे बाप अब हम और क्या चाहें यह है हमारी पूंजी कि हमें वापस कर दी गई है और हम अपने घर के लिये ग़ल्ला लायें और अपने भाई की हिफ़ाज़त करें और एक ऊंट का बोझ और ज़्यादा पायें यह देना बादशाह के सामने कुछ नहीं। कहा मैं हरगिज़ इसे तुम्हारे साथ नहीं भेजूंगा जब तक तुम मुझे अल्लाह का यह अहद न दे दो कि ज़रूर इसे लेकर आओगे मगर यह कि तुम घेरे में आ जाओ फिर जब उन्होंने याकूब अलैहिस्सलाम को अहद दिया अल्लाह का ज़िम्मा है इन बातों पर जो हम कह रहे हैं।

याकूब अलैहिस्सलाम के बेटों ने आपकी ख़िदमत में अर्ज़ किया कि मिस्र के बादशाह ने हमारे साथ बहुत अच्छा सलूक किया है। हमारी पूंजी वापस कर दी गई है उम्मीद है कि वापस नहीं लेगा अगरचे हमें जाकर पता करना है कि वापस करने का सबब क्या है? लेकिन अगर हम छोटे भाई बुनियामीन

साथ न ले गये तो हमें ग़ल्ला नहीं मिलेगा इसलिये हमारे साथ भाई को भेज दो हम इसकी फ़ाज़त करेंगे।

आप अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि तुमने तो पहले यूसुफ़ की ज़िम्मेदारी भी उठाई थी तवज्जोह तलब मक़ाम यह है कि आपने बेटों का हाल देखा हुआ था फिर बुनियामीन को साथ भेजने का फ़ैसला क्यों किया? इसकी वजह यह थी कि अब वह बड़ी उम्रों के हो चुके थे नेकी की तरफ़ माइल हो चुके थे और हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम की तरह बुनियामीन से हसद कीना भी नहीं रखते थे। क़हत की वजह से ग़ल्ला लाने की मुहताजी भी थी और यूसुफ़ अलैहिस्सलाम ने बुनियामीन के बग़ैर ग़ल्ला देने से भी इंकार कर दिया था इसलिये आपने साथ भेजने का फ़ैसला किया लेकिन सबसे बड़ी वजह यह थी।

किं अल्लाह तआला ने वही के ज़रिये आपको बता दिया था कि आप साथ भेज दें मैं इसकी हिफ़ाज़त करूंगा और आप तक इसे वापस पहुंचा दूंगा। इसी वजह से आपने फ़रमाथाः

तो अल्लाह सबसे बेहतर निगहबान और वह हर मेहरबान से बढ़कर निगहबान है।

बाज़ हज़रात ने कहा कि आपके इस इरशाद का मतलब यह थाः

कि मैंने पहले तुम्हारे कौल पर भरोसा किया था कि तुम यूसुफ़ अलैहिस्सलाम की हिफ़ाज़त करोगे उसमें जो हुआ सो हुआ अब मैं तुम्हारी बातों का तो कोई एतेबार नहीं करता कि तुम बुनियामीन की हिफ़ाज़त करोगे अलबत्ता मैं अल्लाह तआला की हिफ़ाज़त में दे कर तुम्हारे साथ भेज देता हूं।

मक़सद यही था कि अल्लाह तआला की तरफ़ से बज़रिये वही आप अलैहिस्सलाम को वसूक़ दिलाया गया था कि मैं इसका मुहाफ़िज़ हूं।

बेटों को भेजते वक़्त याकूब अलैहिस्सलाम की एहतेयाती तदाबीर : और कहा ऐ मेरे बेटो! एक दरवाज़े से न दाख़िल होना और जुदा जुदा दरवाज़ों से जाना और मैं तुम्हें अल्लाह की तक़दीर से नहीं बचा सकता। हुक्म तो सब अल्लाह ही का है मैंने उसी पर भरोसा किया और भरोसा करने वालों को उसी पर भरोसा करना चाहिये। और जब वह दाख़िल हुए जहां से उनके बाप ने हुक्म दिया था और वह कुछ उन्हें अल्लाह की तक़दीर से न बचा सके हां याकूब के नफ़्स में यह एक ख़्वाहिश थी जो उसने पूरी कर ली और बेशक वह साहबे इल्म है हमारे सिखाए से मगर अक्सर लोग नहीं जानते।

हज़रत याकूब अलैहिस्सलाम ने नज़रे बद से बचने के लिये एहतेयाती तदाबीर के तौर पर उन्हें फ़रमाया कि एक दरवाज़े से दाख़िल न होना बल्कि शहर के मुख़्तलिफ़ दरवाज़ों से दाख़िल होना ताकि तुम्हें नज़र न लग जाये क्योंकि तमाम बड़े क़द आवर बहादुर और ख़ूबसूरत थे और तादाद भी ख़ासी यानी ग्यारह भाई थे तमाम मुतक़द्देमीन मुफ़स्सेरीन का इस पर इत्तेफ़ाक़ है कि आयते करीमा से मुराद यही है।

फ़ायदा : नज़र के असरात का हक़ होना और उनसे बचाव के लिये दुआइया कलिमात अहादीसे मुबारका से साबित हैं।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हज़रत इमाम हसन व इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हुमा को इन अल्फ़ाज़े मुबारका से दम फ़रमाया करते थे।

उइज़ु कुमा बि कलिमातिल्ला हित ताम माति मिन कुल्लि शैतिनिंव व हाम मतिंव व मिन कुल्लि

ऐनिन लाम मतिन।

इन कलिमात से ही हज़रत इब्राहीम हज़रत इस्हाक़ और हज़रत याकूब अलैहिस्सलाम भी दम किया करते थे।

हज़रत उबादा बिन सामित रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं मैं नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में सुबह हाज़िर हुआ आपको शदीद तकलीफ़ थी फिर मैं पिछले पहर हाज़िर हुआ तो मैंने देखा कि आपको आराम है। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया मेरे पास जिब्राईल आए थे उन्होंने अल्फ़ाज़ तैय्यबा से मुझे दम किया।

तो मुझे अल्लाह तआला ने शिफ़ा अता फ़रमा दी।

हज़रत जाफ़र बिन अबी तालिब रज़ियल्लाहु अन्हु के बच्चे ख़ूबसूरत सफ़ेद रंग के थे, हज़रत असमा रज़ियल्लाहु अन्हु ने अर्ज़ किया, या रसूलल्लाह इन बच्चों को जल्दी नज़र लग जाती है अगर आप इजाज़त फ़रमायें तो मैं इन्हें नज़र का दम कर दिया करूं? तो आपने फ़रमाया हां यानी ठीक है तुम इनको दम कर दिया करो।

हज़रत उम्मे सलमा रज़ियल्लाहु अन्हा के घर नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तशरीफ़ ले गये देखा कि एक बच्चा को बहुत तकलीफ़ है उन्होंने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह! इसे नज़र लग गई है तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि तुम इसे दम क्यों नहीं कराते?

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः

नज़र हक़ है अगर कोई चीज़ तक़दीर से सबक़त ले जा सकती तो नज़र का असर सबक़त ले जाता।

हज़रत आईशा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उस शख़्स को वुज़ू करने का हुक्म फ़रमाते जिसकी नज़र लगी हो फिर वह पानी जो उसके इंदाम से गिरता उसे उस शख़्स पर डालने का हुक्म देते जिसको नज़र लगी होती।

जिस शख़्स को अपने मुताल्लिक़ यह ख़्याल हो कि उसकी नज़र लगती हो तो वह किसी चीज़ को देखे और वह उसे अच्छी लगे तो यह पढ़े।

तबा रकल्लाहु अहसनुल ख़ालिक़ी न अल्लाहुम म बारिक फ़ीहि।

नज़र का लगना या इससे बचाव की तदाबीर, यह सब ज़ाहिरी अस्बाब हैं हक़ीक़ी मुअस्सिर अल्लाह की ज़ाते गिरामी है।

हज़रत याकूब अलैहिस्सलाम ने बेटों को अलग अलग दरवाज़ों से दाख़िल होने का हुक्म दिया, इसकी हिकमत ब्यान करते हुए इब्राहीम नख़ई रहमतुल्लाह अलैहि फ़रमाते हैं कि वजह यह थी कि बुनियामीन की यूसुफ़ अलैहिस्सलाम से इलाहदगी में मुलाक़ात हो जाये, क्योंकि :

हज़रत याकूब अलैहिस्सलाम जानते थे कि मिस्र का बादशाह आप का बेटा यूसुफ़ है लेकिन आप को अल्लाह तआला ने उसके इज़हार की इजाज़त नहीं फ़रमाई थी।

बेशक इंसान के लियें ज़रूरी है कि वह इस आलम में ज़ाहिरी अस्बाब को हासिल करे लेकिन इंसान को यह हुक्म भी दिया गया है कि वह यही अक़ीदा रखे कि अस्बाब भी उसी वक़्त मुअस्सर होते हैं जब अल्लाह तआला की मर्ज़ी हो।

इंसान यह भी अक़ीदा रखे कि किसी नुक़्सान देह चीज़ से बचना और दूर रहना तक़दीर से नजात नहीं दे सकता लेकिन फिर भी इंसान के लिये हुक्म यही है कि वह हलाक करने वाली चीज़ों और नुक़्सान देने वाली चीज़ों से बचे मुनाफ़ा हासिल करने में जितना मुमकिन हो सके कोशिश करे और नुक़्सानदेह अशिया से दूर रहे।

यही वजह थी कि हज़रत यकूब अलैहिस्सलाम ने यह जानने के बावजूद कि तमाम चीज़ों में मुअस्सिरे हक़ीक़ी अल्लाह तआला ही है लेकिन अल्लाह तआला की मर्ज़ी से ही ज़ाहिरी अस्बाब पर अमल किया।

हक़ मज़हब यही है कि इंसान मुनाफ़ा व मक़ासिद के हासिल करने में और नुक़्सान देने वाली चीज़ों से बचने की तदाबीर में बहुत ज़्यादा कोशिश करे जितनी उसे ताक़त हासिल है इसमें कोताही न करे, लेकिन अपनी तरफ़ से बहुत बड़ी कोशिश करने के बाद यक़ीन यही रखे कि मुनाफ़ा का हासिल होना न होना ज़रर अंदाज़ चीज़ों का मुअस्सिर होना या न होना सब अल्लाह तआला की तक़दीर और उसकी मर्ज़ी पर मौक़ूफ़ हैं अल्लाह तआला के हुक्म और उसकी हिकमत के मुताबिक़ हैं।

बुनियामीन की यूसुफ अलैहिस्सलाम से मुलाक़ात : और जब पहुंचे यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के पास तो युसुफ़ अलैहिस्सलाम ने जगह दी अपने पास अपने भाई को उसे फ़रमाया मैं तुम्हारा भाई हूं न ग़मज़दा हो जो यह क्या करते थे।

हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम को जब मालूम हुआ कि तमाम भाई फिर मिस्र में आये हैं अब अपने साथ बुनियामीन को भी लाये हैं तो..

आपने उनकी बड़ी इज़्ज़त व तकरीम की, उन को शाही मेहमानख़ानों में रहने की जगह का हुक्म दिया और उनकी मेहमान नवाज़ी बहुत अच्छी तरह की।

हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के भाईयों ने आप से मुलाक़ात के दौरान बताया यह वह हमारा भाई है जिसे आपने लाने का हुक्म दिया था हम साथ लिये आये हैं आप अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया तुमने अच्छा किया है। अब मेरे पास भी जो ग़ल्ला है वह देने में कोई कसर नहीं होगी। भाईयों ने आपको अपने बाप का पैग़ाम भी दिया क्योंकि याकूब अलैहिस्सलाम ने बेटों को आलविदा करते हुए फ़रमाया था कि बादशाह को मेरा सलाम कहना और यह कहनाः कि हमारे बाप आपके लिये दुआ कर रहे थे आप पर रहमतें निछावर कर रहे थे और आप ने जो हमारे साथ सलूक किया है वह इसका शुक्रिया अदा करते हैं।

और साथ ही इसी मज़मून का एक ख़त भी दिया ख़त को पढ़ते हुए यूसुफ़ अलैहिस्सलाम आबदीदा हो गये लेकिन अपने जज़्बात को क़ाबू में रखा ताकि भाईयों पर कुछ बात ज़ाहिर न हो। रब तआला की तरफ़ से अभी ज़ाहिर करने का हुक्म नहीं था। आपने अपने भाईयों की दावत की, गुलामों को हुक्म दिया कि दस्तख़्वान को इस तरह तर्तीब दिया जाये कि दो दो भाई एक साथ बैठें। इस तर्तीब से बिठाने पर बुनियामीन अकेले रह गये रोने लगे और कहने लगे कि काश! आज मेरा यूसुफ ज़िन्दा होता तो मुझे साथ बिठाता। हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम ने भाईयों की तरफ़ तवज्जोह करते हुए फ़रमायाः तुम्हारा यह भाई अकेला रह गया है उन्होंने कहा इसका सगा भाई हलाक हो गया है, आप अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया अच्छा मैं ही इसे अपने साथ बिठा लेता हूं आपने बुनियामीन को दस्तरख़्वान पर अपने साथ बैठा कर खाना खिलाया।

फिर आप अलैहिस्सलाम ने अपने गुलामों को हुक्म दिया कि रात को सोने के लिये दो दो भाईयों को एक कमरा दे दो आराम के वक़्त आप अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया आप का यह भाई अकेला है इसे मेरे पास ही छोड़ जाओ मैं इसे अपने कमरे में सुला लेता हूं। जब हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम ने देखा कि यह अपने भाई पर बहुत अफ़सोस करता है तो आप अलैहिस्सलाम ने फ़रमायाः

क्या तुम यह पसंद नहीं करते कि तुम्हारे फ़ौत शुदा भाई के बदले में ही तुम्हारा भाई बन जाऊं?

बुनियामीन ने रोते हुए कहाः

तुम्हारे जैसा भाई किसे मिलेगा? यानी इतने शफ़ीक़ और मेहरबान हो, वह शख़्स कितना ही ख़ुशबख़्त होगा जिसे तुम्हारे जैसा भाई मिल जाये लेकिन तुम राहील और याकूब अलैहिस्सलाम के बेटे तो नहीं हो। मैं तो उसके लिये रो रहा हूं जो मेरे बाप और मेरी मां का बेटा था। आप अलैहिस्सलाम के रिक़्क़त आमेज़ मनाज़िर को देखकर यूसुफ अलैहिस्सलाम भी रोने लगे। उठे और भाई को गले लगा लिया। अब पहचान कराने का वक़्त आ चुका था इसलिये अपने भाई को बतायाः

बेशक मैं ही तुम्हारा भाई यूसुफ़ हूं।

दोनों भाईयों ने एक दूसरे को अपने हालात से बा–ख़बर किया। यूसुफ़ अलैहिस्सलाम ने अपने भाई को तसल्ली देते हुए कहा :

न ग़मज़दा हो जो यह क्या करते थे।

असल में यूसुफ़ अलैहिस्सलाम चाहते थे कि भाई के दिल में दूसरे भाईयों के ख़िलाफ़ ज़ेहन में कोई बात न रहे, क्योंकि आपके दिल में भाईयों के ख़िलाफ़ कोई अदावत बाक़ी नहीं थी, आप अलैहिस्सलाम का दिल भाईयों के हक़ में मुकम्मल साफ़ हो चुका था। दर असल अब भाई भी वह जवानी की उम्र वाले हासिद या ज़ालिम नहीं थे बल्कि वह भी काफ़ी हद तक नेक हो चुके थे। हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम तो शुरू से ही भाईयों के हक़ में दुआ गो थे।

बुनियामीन को पास रखने का हीला : फिर जब उनको सामान मुहय्या कर दिया प्याला अपने भाई की ख़ोरजी में रख दिया फिर एक निदा देने वाले ने निदा दी ऐ काफ़िला वाले बे शक तुम चोर हो उनकी तरफ़ तवज्जोह करके उन्होंने कहा तुम्हारी कौन सी चीज़ गुम हो गई है? बोले बादशाह का प्याला नहीं मिलता और जो उसे लायेगा उसके लिये एक ऊंट का बोझ है और मैं उसका ज़ामिन हूं। उन्होंने कहा, ख़ुदा की क़सम तुम्हें खूब मालूम है क़ि हम ज़मीन में फ़साद करने नहीं आये और न ही हम चोर हैं, बोले फिर क्या सज़ा है इसकी अगर तुम झूटे हो? उन्होंने कहा इसकी सज़ा यह है कि जिसके अस्बाब में मिले वही उसके बदले गुलाम बने। हमारे यहां ज़ालिमों की यही सज़ा है। पस तलाशी लेनी शुरू की उनके सामानों की यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के भाई की तलाशी से पहले फिर उसे अपने भाई की ख़ोरजी से निकाल लिया। हमने यूसुफ़ अलैहिस्सलाम को यही तदबीर बताई। बादशाही क़ानून के मुताबिक़ उन्हें कोई हक़ नहीं था कि वह उसे अपने पास रखें मगर यह कि अल्लाह तआला चाहे हम जिसे चाहें दर्जो बुलंद करें और हर इल्म वाले से ऊपर एक इल्म वाला है।

जो प्याला बुनियामीन के सामान में रखा गया था वह बादशाह के या जानवरों के पानी पीने में इस्तेमाल होता था और इससे ग़ल्ला नापने का काम भी लिया जाता था इतना क़ीमती था जिससे चोरी की ख़ुसूसी हद नाफ़िज़ हो सकती थी।

वह प्याला हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के हुक्म से रखा गया आप ही उस वक़्त हुक्मरां थे वह प्याला आपके ज़ेरे तसर्रुफ़ ही था।

बेशक हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम ने वह प्याला ख़ुद नहीं रखा था बल्कि आपने किसी ख़ादिम को हुक्म दिया था जिसने वह रखा था।

आपके हुक्म देने की वजह से आपकी तरफ़ मंसूब हुआ। यह प्याला बुनियामीन को बता कर उनकी मर्ज़ी से रखा गया था इसलिये कि जब हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम ने उन्हें कहा भी कि वालिद मुकर्रम पहले मेरी जुदाई से परेशान हैं तो अब तुम्हारी जुदाई से और ज़्यादा परेशान होंगे लेकिन वह फिर भी वहां रहने पर बज़िद थे हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम ने बुनियामीन को बताया कि अगर तुम यहां रहना चाहते हो तो एक ही हीला है कि तुम्हारे सामान में प्याला रख कर उसके बदले तुम्हें यहां रखा जाये।

तो बुनियामीन ने रज़ामंदी का इज़हार किया कि मेरे मुताल्लिक़ जो भी कहा जाये मुझे मंजूर है लेकिन मैं यहां ही रहूंगा।

जिस तरह हमारी शरीअत में चोरी की हद हाथ काटना है इस तरह याकूब अलैहिस्सलाम की शरीअत में उस शख़्स को माल के बदले गुलाम रखा जाता। मिस्र के बादशाही क़ानून में चोर को मारा जाता था और माल के बदले दो गुना वसूल किया जाता था।

हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम ने यह हीला हज़रत याकूब अलैहिस्सलाम की शरीअत के मुताबिक़ किया और वह भी अल्लाह तआला की मशीयत से क्योंकि रब ने ख़ुद फ़रमायाः

यह हीला हमने यूसुफ़ अलैहिस्सलाम को सिखाया।

और जिस शख़्स ने आवाज़ देकर यह कहा था कि अगर कोई शख़्स वह प्याल ढूंढकर लायेगा तो उसे बतौर इनाम एक ऊंट का बोझ दिया जायेगा उसने भी आपके हुक्म से ही यह ऐलान किया था।

उसका यह आवाज़ देना हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के हुक्म से था।

अहले मिस्र जानते थे कि यह क़ानून मिस्र का नहीं, हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम का मंशा भी यह नहीं था कि भाईयों को चोरी के इल्ज़ाम में मुत्तहिम किया जाये इसलिये आपने अपने ख़ादिम को सब कुछ बताया हुआ था तमाम काम आपके हुक्म से हो रहा था।

जब यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के भाई ग़ल्ला लेकर निकले तो पीछे से उनको पुकारकर कहा गया ऐ क़ाफ़िले वालो!

बेशक तुम चोर हो इस कलाम का मतलब भी ज़ाहिर पर मबनी नहीं।

आवाज़ देने वाले ने यह कलाम बतौर इस्तिफ़हाम किया?

कुरआन पाक में कई मक़ाम पर ऐसा कलाम मज़कूर है जहां सिर्फ़ इस्तिफ़हाम पोशीदा होता है। कहने वाले का मतलब यह था कि ऐ क़ाफ़िला वालो क्या तुम चोर तो नहीं हो? यह कोई इल्ज़ाम नहीं था बल्कि सवाल था। अगर क़ाफ़िला वालों पर वह अपनी तरफ़ से ही आकर उन पर इल्ज़ाम आइद करते तो उनसे पूछने का उन्हें क्या इख़्तेयार था? कि अगर तुम चोर निकले तो तुम्हारी सज़ा क्या है? सज़ा तो उनको मिस्री क़ानून के मुताबिक़ देनी चाहिये थी।

बुनियामीन के सामान से पहले दूसरे भाईयों के सामान को खोलना भी इत्तेफ़ाक़ी नहीं था बल्कि इरादतन था अल्लामा आलूसी रहमतुल्लाह अलैहि फ़रमाते हैंः

तफ़तीश करने वाले हक़ीक़त में हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के अस्हाब यानी ख़ुद्दाम थे जो आपके हुक्म से ही सब काम कर रहे थे दूसरे भाईयों के सामान की तफ़तीश पहले ही की गई थी कि अगर सब से पहले बुनियामीन का सामान खोला गया तो तोहमत हम पर आयेगी और तमाम हीला बेकार चला जायेगा।

जब यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के भाईयों से पूछा गया क्या तुम चोर तो नहीं? तो उन्होंने जवाब दिया: ख़ुदा की क़सम तुम्हें खूब मालूम है कि हम ज़मीन में फ़साद करने नहीं आए और न ही हम चोर हैं।

आपके भाई क़सम उठाकर क्यों यह न कहते जब कि अब वह नेक थे यूसुफ़ अलैहिस्सलाम को कुंए में फेंकने वाले ज़माना की तरह नहीं थे वह भी हसद की वजह से हुआ, वरना उस वक़्त भी वह किसी का माल नहीं खाते थे। और तमाम आमाल उनके अच्छे थे, सिर्फ़ यूसुफ़ अलैहिस्सलाम को हसद की वजह से कुंए में फेंकने वाला जुर्म सर ज़द हुआ था। अब तो उनके अहवाल से वाज़ेह था कि यह किसी के माल में तसर्रुफ़ नहीं करते न किसी का माल खाते हैं और न ही लोगों की खेतियों में अपने जानवर छोड़ते हैं।

यहां तक कि अगर उनका किसी काश्त शुदा खेती से गुज़र होता तो अपने जानवरों के मुंह बांध देते थे ताकि वह किसी की खेती को बर्बाद न करें और हमेशा नेकी के कामों में मशगूल रहते जिन लोगों की यह सिफ़ात हों वह कैसे ज़मीन में फ़साद फैला सकते हैं ख़ासकर दूसरे मुल्क में, जहां उन्हें अपनी इज़्ज़त के पास करने की ज़्यादा ज़रूरत थी जब कि वह यह बता भी चुके थे कि हम अल्लाह तआला के नबी हज़रत या'क़ूब अलैहिस्सलाम के बेटे हैं पहली दफ़ा जब उनकी पूंजी उनके सामान में रख कर वापस लौटा दी गई थी तो वह उसे वापस ले आये थे भला चोर भी ऐसा काम कर सकता है?

परेशानी में भाईयों का कलाम : भाई बोले! अगर यह चोरी करे तो बेशक इससे पहले इसका भाई चोरी कर चुका है तो यूसुफ़ अलैहिस्सलाम ने यह बात अपने दिल में रखी और उन पर ज़ाहिर न की, जी में कहा तुम बदतर जगह हो और अल्लाह ख़ूब जानता है जो बातें बनाते हो।

भाईयों को पूरे मामला का कोई इल्म नहीं था कि यूसुफ़ अलैहिस्सलाम यही हैं जो मिस्र के बादशाह हैं और बुनियामीन को बता चुके हैं और इनको अपने पास रखने का सिर्फ़ यह हीला और बहाना है।

बुनियामीन के सामान से जब प्याला निकला तो नबी के बेटों पर दूसरे मुल्क में इस क़िस्म की बदनामी का कितना गहरा असर हुआ होगा? यह मोहताजे ब्यान नहीं। हर इंसान की अक़्ल काम कर सकती है कि ऐसे वक़्त कितनी परेशानी लाहक़ होती है। इंसान को ज़मीन व आसमान एक नज़र आते हैं। मुत्तक़ी इंसान का सिर्फ़ तोहमत की ज़द में आना ही परेशानकुन होता है। चे जाए कि दयारे ग़ैर में जहां लोग उन्हें फ़रिश्ता सीरत समझते हों वहां ऐसी मुसीबत आ जाये।

यह हक़ीक़त है कि इंसान बहुत ख़ुशी में और बहुत परेशानी में जो कलाम करता है उसमें एतेदाल नहीं होता सिर्फ़ नबी का यह मक़ाम है कि उसका कलाम हर वक़्त एतेदाल पर रहता है।

भाईयों ने समझा कि बुनियामीन ने वाक़ई चोरी कर ली है इस पर परेशान होकर एतेदाल से दूर कलाम करते हुए कहा कि इसने चोरी करली है तो इसके भाई ने भी एक मर्तबा चोरी कर ली थी।

यूसुफ़ अलैहिस्सलाम पर चोरी का इल्ज़ाम कैसे? : यूसुफ़ अलैहिस्सलाम का नाना बुत परस्त था

आप एक मर्तबा अपने नाना का एक सोने का बना हुआ बुत जो लअल व जवाहर से मुज़य्यन था उठा लाये और उसे तोड़ दिया नाना के बुत को लाने में आपकी वालदा का मश्वरा कार गर था कि वह बुत परस्ती छोड़ दें। आपका बुत को चुपके से लाना और उसे तोड़ देना इबादत था, कोई चोरी का काम नहीं था, लेकिन बज़ाहिर आपकी तरफ़ चोरी को मंसूब कर दिया गया था।

दूसरी वजह यह ब्यान की गई थी कि हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम अपने फूफी के ज़ेरे कफ़ालत थे जो हज़रत इस्हाक़ अलैहिस्सलाम की औलाद में सबसे बड़ी थीं, वह आपसे बहुत ज़्यादा मुहब्बत करती थीं इतनी मुहब्बत उन्हें ख़ानदान में किसी और से नहीं थी। हज़रत याकूब अलैहिस्सलाम ने जब उनसे मुतालबा किया कि अब यूसुफ़ अलैहिस्सलाम को मेरे हवाले कर दो तो उन्होंने कहा क़सम है अल्लाह तआला की, मैं इसे अपने आपसे जुदा नहीं कर सकती, मेरे पास कुछ दिन रहने दो मैं आहिस्ता आहिस्ता कोशिश करूंगी कि मुझे इसके बग़ैर तसल्ली हासिल हो जाये। फिर मैं इनको तुम्हारे हवाले करूंगी। जब हज़रत याकूब अलैहिस्सलाम चले गये तो उन्होंने एक कमर बंद हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के कपड़ों के नीचे आपसे बांध दिया कमरबंद हज़रत इस्हाक़ अलैहिस्सलाम का था जो आपको बड़ी होने की वजह से बतौर विरासत मिला था।

आपने फ़रमाया मेरे बाप का कमरबंद गुम हो गया है ज़रा तलाश करो कौन ले गया फिर आपने कहा घर में ही तलाश करो मुमकिन है घर के किसी फ़र्द ने ही न ले लिया हो। दौराने तफ़तीश वह हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम से मिल गया जो आपके कपड़ों के नीच आपसे बांध दिया गया था।

फिर उन्होंने हज़रत याकूब अलैहिस्सलाम को कहा कि यूसुफ़ अलैहिस्सलाम ने मेरे बाप का कमरबंद ले लिया था इसलिये अब इसे मेरे पास ही रहना होगा इस तरह वह अपनी पूरी ज़िन्दगी हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम को अपने पास रखने में कामयाब हो गई थीं। ऐन मुमकिन है कि याकूब अलैहिस्सलाम भी जानते हों कि मेरी बड़ी बहन ने यूसुफ़ अलैहिस्सलाम को अपने पास रखने का हीला किया है लिहाज़ा उनके पास ही रहने दिया जाये।

हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम ने भी इस बात को पर्दे में ही रखा किसी के सामने ज़ाहिर न किया इसी तरह भाईयों के इस कहने को इसके भाई ने भी चोरी की थी अभी किसी को न बताया दिल में ही बात को रखा अभी तक यह वाज़ेह न किया कि मैं यूसुफ़ अलैहिस्सलाम हूं और बुनियामीन को अपने पास रखने का एक हीला कर रहा हूं। तमाम बातों को आपने दिल में ही रखकर भाईयों को इज़्ज़त व तकरीम से मअ सामान लौटाने का हुक्म फ़रमाया।

बुनियामीन को बाज़याबी की दरख़्वास्त मुस्तरद : उन्होंने कहा ऐ अज़ीज इसके बाप बहुत बूढ़े हैं तो हम में से किसी को इसकी जगह ले लो बेशक हम तुम्हारे एहसान देख रहे हैं यूसुफ़ अलैहिस्सलाम ने कहा अल्लाह की पनाह हम तो सिर्फ़ इसी को लेंगे जिस के पास हमारा सामान मिला। (अगर हम किसी और को लें) तो हम ज़ालिम होंगे।

अगरचे भाई पहले बता चुके थे कि अगर किसी से प्याला बर आमद हो जाये तो गुलाम बन जायेगा लेकिन उनकी शरीअत में माफ़ करना और फ़िदया देना भी जायज़ था इसलिये उन्होंने कहा, कि इसके बाप बड़ी उम्र के और अज़ीम मर्तबा के मालिक हैं, इसलिये यह माफ़ करने के क़ाबिल है या इसका फ़िदया ले लिया जाये और हम में से किसी एक को अपने पास बतौर रहन रख लिया जाये, जब हम

फ़िदया दे देंगे तो अपने पास रेहन रखे हुए भाई को छुड़ा लेंगे। या इसे माफ़ कर दिया जाये और हम में से किसी एक को गुलाम बना लिया जाये। आप का माफ़ फ़रमा देना हम पर बहुत बड़ा एहसान होगा। हम आपके पहले भी एहसान देख चुके हैं क्योंकि आपने पहले हमारी पूंजी भी वापस लौटा दी ग़ल्ला भी दिया, इज्ज़त व तकरीम से अपने पास बुलाया मेहमान नवाज़ी की, शाहाना मकानों में रहने की जगह दी, कितने ही एहसान आपके हमारे सामने हैं।

आप अलैहिस्सलाम ने दो टूक अल्फ़ाज़ में मुख़्तसर जवाब दिया, हम तो सिर्फ़ इसे अपने पास रखेंगे जिससे हमारा सामान मिला है, दूसरे को अपने पास रखकर ज़ालिम नहीं बन सकते।

और हक़ीक़तन सारा मामला अल्लह तआला के हुक्म से चल रहा था, अभी याकूब अलैहिस्सलाम को और इम्तेहान में मुब्तला करना मक़सूद था इसलिये माफ़ नहीं किया। माफ़ तो तब किया जाता जब कोई जुर्म होता, जब जुर्म ही नहीं था तो माफ़ करने का मक़सद ही कुछ नहीं था।

अल्लाह तआला ने आपको हुक्म दिया था कि अभी माफ़ नहीं करना दर गुज़र नहीं करना और कोई बदला नहीं लेना क्योंकि याकूब अलैहिस्सलाम को अभी और शदीद मेहनत में मुब्तला करना है।

बड़े भाई का मिस्र में रहना और दूसरों को वापस भेजना : फिर जब इससे ना उम्मीद हुए अलग जाकर सर गोशियां करने लगे उनका बड़ा भाई बोला क्या तुम्हें ख़बर नहीं कि तुम्हारे बाप ने तुम से अल्लाह का अहद ले लिया था? और इससे पहले यूसुफ़ (अलैहिस्सलाम) के हक़ में हमने कैसी तक़सीर की? तो मैं यहां से न हटूंगा यहां तक कि मेरे बाप इजाज़त दें या अल्लाह मुझे हुक्म फ़रमाये। और उसका हुक्म सबसे बेहतर है। अपने बाप के पास लौटकर जाओ फिर अर्ज़ करो, ऐ हमारे बाप बेशक आप के बेटे ने चोरी की और हम तो इतनी ही बात के गवाह होते थे जितनी हमारे इल्म में थी और हम ग़ैब के निगहबान न थे और इससे पूछ देखिये जिस में हम थे और उस क़ाफ़िला से जिसमें हम आये और हम बेशक सच्चे हैं।

इब्तेदाई तौर पर जब भाईयों की अपील यूसुफ़ अलैहिस्सलाम ने रद फ़रमा दी तो यहूदा गुस्सा में आ गया और यह जब गुस्सा में आता था तो उसके जिस्म के बाल खड़े हो जाते थे अगर गुस्सा के हाल में यह चीख़ मारता तो हामिला औरतों के हमल गिर जाते। उस वक़्त तक उसका गुस्सा ठंडा नहीं होता था जब तक हज़रत याकूब अलैहिस्सलाम की औलाद में से ही कोई शख़्स उसके जिस्म को हाथ न लगाता। उसने अपने दूसरे भाईयों को कहा तुम बाज़ार के लोगों से मुक़ाबला करो, इन्हें मेरे क़रीब न आने दो मैं अज़ीज़े मिस्र से मुक़ाबला करता हूं। मैं उसे आपके क़रीब नहीं आने दूंगा। यूसुफ़ अलैहिस्सलाम ने अपने छोटे बेटे को कहा कि जाकर उसके जिस्म को छू दो जब उसने यहूदा के जिस्म को हाथ लगाया तो उसका गुस्सा ठंडा हो गया।

जब यह लोग बुनियामीन को छुड़ाने में नाकाम हो गये तो लोगों से अलग होकर एक दूसरे से मश्वरा करने लगे कि अब क्या किया जाये? क्योंकि अपने वालिद मुकर्रम से बहुत पुख़्ता वादा करके और बड़ा वसूक़ दिलाकर बुनियामीन को ले गये थे और पहले भी हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के मामला में उन पर तोहमत आईद हो चुकी थी कि तुम झूटे हो, अब बहुत परेशान थे कि अगर अब इसी तरह वापस जाते हैं तो बाप बहुत ज़्यादा परेशान होंगे और यह बात भी मद्दे नज़र थी कि घर वाले ग़ल्ला के लिये मोहताज हैं वापस जाना भी ज़रूरी है और अगर सब नहीं जाते तो बाप ख़्याल करेंगे कि कहीं सब फ़ौत

तो नहीं हो गये और अगर बुनियामीन के बग़ैर सब वापस लौटते हैं तो अपने बाप को कैसे मुंह दिखायेंगे? आख़िरकार सब से बड़े ने कहा तुम चले जाओ मैं नहीं जाता या तो मुझे बाप इजाज़त दें तो वापस जाऊंगा या अल्लाह कोई फ़ैसला फ़रमा दे। सबसे बड़े से मुराद या तो शमऊन है जो अक़्ल व दानिश में सबसे बड़ा था।

ज़्यादा मशहूर यही है कि यह यहूदा ही था जिसने हज़रत यूसूफ़ अलैहिस्सलाम को क़त्ल करने से भी बचाया था उसने कहा तुम जाकर बाप को बताओ तुम्हारे बेटे ने चोरी करली है यानी उसकी तरफ़ चोरी को मंसूब कर दिया गया है, आप बस्ती से पूछ लें या क़ाफ़िला वालों से पूछ लो हम सच्चे हैं। हमारे सामने तो जो बात आई है वही ब्यान कर रहे हैं बस्ती से पूछने का मक़सद या तो यह है कि लफ़्ज़ अहल महज़ूफ़ है यानी बस्ती वालों से पूछ लो। और या मक़सद यह हो सकता है।

आप (अलैहिस्सलाम) जानवरों दीवारों वग़ैरह से पूछिये यक़ीनन आपको जवाब देंगे और बतायेंगे कि हम सच कह रहे हैं बेशक आप तो अकाबिर अंबियाए किराम से हैं जमादात को अल्लाह आपसे कलाम करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमा दे कोई बईद नहीं और आपका यह मोजिज़ा होगा यक़ीनन यह जमादात भी हमारे सच्चे होने के मुताल्लिक़ आपको बतायेंगे।

हज़रत याकूब अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया : याकूब (अलैहिस्सलाम) ने कहा तुम्हारे नफ़्स ने तुम्हें कुछ हीला बता दिया, पस सब्र अच्छा है, क़रीब है कि अल्लाह उन सब को मुझसे मिलाए बेशक वही इल्म व हिकमत वाला है और (आपने) उनसे मुंह फेरा और कहा हाए अफ़सोस! यूसुफ़ की जुदाई पर और उनकी आंखें ग़म में सफ़ेद हो गईं और वह गुस्सा खाते रहे।

हज़रत याकूब अलैहिस्सलाम ने बेटों के कलाम को रद कर दिया और फ़रमाया कि तुम यह हीला बना रहे हो यह कैसे हो सकता है मिस्र का बादशाह मेरे बेटे को चोरी के इल्ज़ाम में अपने पास गुलाम बना ले? जब कि उसके क़ानून में यह है ही नहीं कि किसी को चोरी के इल्ज़ाम में गुलाम बनाया जाये।

आप अलैहिस्सलाम हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम की जुदाई पर ग़म खा रहे थे हालांकि ताज़ा ग़म बुनियामीन का है। इसकी एक वजह पहले ज़िक्र हो चुकी है कि अल्लाह तआला ने आपको इल्म अता फ़रमा दिया था कि मिस्र का अज़ीज़ यूसुफ़ अलैहिस्सलाम है लेकिन अभी ज़ाहिर करने का वक़्त नहीं था।

दूसरी वजह अल्लाम आलूसी ने ब्यान फ़रमाई कि असल मुसीबत व ग़म यूसुफ़ अलैहिस्सलाम का ही था बाक़ी ग़म उसके ऊपर मुरत्तब हो रहे थे। मतलब यह था कि यूसुफ़ अलैहिस्सलाम की जुदाई का ग़म ही काफ़ी था अभी तो वही ताज़ा है यह और ग़म उस पर मुरत्तब हो गया।

तीसरी वजह यह थी कि बुनियामीन और यहूदा के मुताल्लिक़ तो ज़ाहिर तौर पर मालूम था कि वह ज़िन्दा व सलामत मिस्र में हैं लेकिन हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के मिस्र के बादशाह होने को ज़ाहिर नहीं करना था, लेकिन मालूम था इसलिये कहा यूसुफ़ पर अफ़सोस है ख़ुद भी जुदा है और बुनियामीन और यहूदा को भी जुदा करने का सबब बन गया।

आप अलैहिस्सलाम इसी ग़म में बिल्कुल ख़ामोश रहने लगे जिस तरह गुस्सा से भरा हुआ शख़्स अपने मुंह पर ख़ामोशी की मोहर लगा लेता है किसी से गुफ़्तगू करना पसंद नहीं करता।

याकूब अलैहिस्सलाम के रोने की अजीब हिकमत : बज़ाहिर हज़रत याकूब अलैहिस्सलाम जैसे जलीलुल मरतबत पैग़म्बर का अपने फ़रज़ंद की मुहब्बत में इतना वारफ़्ता हो जाना और उसके हिज्र

व फ़िराक़ में रो रोकर आंखें सफ़ेद कर देना आपके शायाने शान मालूम नहीं होता। अल्लामा आलूसी फ़रमाते हैं कि अहले मारफ़त ने इस ख़लिश को यह कह कर दूर किया है कि हुस्ने यूसुफ़ को आपके लिए जमाले इलाही का आईना बना दिया गया था वह इस तलअत ज़ेबा के आईना में तजल्लियाते इलहया का मुशाहिदा फ़रमाया करते थे जब हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम आपकी निगाहों से ओझल हो गये तो अनवारे ख़ुदा वंदी की लज़्ज़ते दीद से महरूम हो जाने के बाईस आप बेचैन और बेक़रार हो गये।

इसके बाद अल्लामा मज़कूर तहरीर फ़रमाते हैं:

यानी मुझे अपनी ज़िन्दगी की क़सम! अगर हज़रत याकूब अलैहिस्सलाम अल्लाह तआला की इस तजल्ली का मुशाहदा करते जो फख़रे मौजूदात मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के हुस्न व जमाल में दरख़्शां है तो उन्हें हुस्ने यूसुफ़ याद ही न रहता और उनके हिज्र व फ़िराक़ में आपका यह हाल न होता।

हज़रत मौलाना सनाउल्लाह पानी पती ने यह शुबहा और इसका जवाब बड़ी शरह व बस्त के साथ लिखा और बड़े आरिफ़ाना अंदाज़ में इस हक़ीक़त को ब्यान फ़रमाया कि हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम का हुस्न अनवारे इलाहिया की जल्वागाह था इसके बाद मुजद्दिद अल्फ़े सानी के कलाम का एक तवील इक़्तेबास नक़्ल किया है जिसमें हज़रत मुजद्दिद फ़रमाते हैं कि ख़ातिमुल अंबिया सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ज़ाते अक़दस मुरब्बी और मबदाए तअईईन, अल्लाह तआला की सिफ़त इल्म है जो तमाम सिफ़ात से क़रीब तर और महबूब तर है और इल्म का हुस्न व जमाल इतना लतीफ़ और बुलंद मरतबत होता है कि उसे निगाहें पा नहीं सकतीं इसीलिये हुज़ूर नबी रहमत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के कमाले हुस्न को हमारी नज़रें सहीह तौर पर नहीं देख सकतीं। हुज़ूर का हुस्न व जमाल क़यामत में बे नक़ाब होगा उस दिन दुनिया को पता चलेगा कि हुस्न "हुस्न मुहम्मदी ही है और जमाल जमाले अहमदी ही है।

इसके बाद हज़रत मुजद्दिद रहमतुल्लाह अलैहि रक़म तराज़ हैं कि यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के हुस्न पर तो सिर्फ़ हज़रत याकूब अलैहिस्सलाम और दूसरे लोग फ़रैफ़ता थे लेकिन हुज़ूर नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के हुस्न व जमाल से ख़ालिक़े कायनात मुहब्बत फ़रमाता है।

हज़रत मुजद्दिद ने तसव्वुफ़ की मख़सूस ज़बान में इस मसले पर गुफ़्तगू की है जो आम लोगों के इल्म व फ़हम से वालातर है। मैनें आम फ़हम अंदाज़ में आप रहमतुल्लाह अलैहि का मुद्दुआ और ख़ुलासा पेश किया है ताकि अवाम भी लुत्फ़ अंदोज़ हो सकें।

याकूब अलैहिस्सलाम के बेटों ने आपकी परेशानी को देखकर कहा: कहा अल्लाह की क़सम! आप हमेशा यूसुफ़ अलैहिस्सलाम को याद करते हैं यहां तक कि गोर किनारे जा लगें या जान से गुज़र जायें। आप (अलैहिस्सलाम) ने कहा मैं तो अपनी परेशानी और ग़म की फ़रयाद उस अल्लाह ही से करता हूं और मैं जानता हूं जो तुम नहीं जानते।

बेटों ने आपसे कहा कि आप यूसुफ़ अलैहिस्सलाम की याद में इतना ग़म करते हैं और रोते हैं इससे मरीज़ हो जायेंगे या इसी ग़म में फ़ौत हो जायेंगे। पहले ही आप इतनी मशक़्क़त और परेशानी में मुब्तला हैं हमें डर है कि आपकी तकलीफ़ बढ़ जायेगी इसलिये आप बहुत ग़म न करें और न रोयें आपने फ़रमाया मैं उसका ज़िक्र तुम्हारे सामने तो नहीं कर रहा मुझे तो जिस से ज़िक्र करना है उससे कर रहा हूं यानी मेरी फ़रियाद अल्लाह तआला से है इंसान जब अल्लाह तआला से फ़रियाद करता है तो वह

मुहक़्क़ेक़ीन के ज़ुमरा में आता है हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम रब के हुज़ूर अर्ज़ करते:

ऐ अल्लाह तेरी रज़ा की पनाह तेरी नाराज़गी से हो और तेरी माफ़ी की पनाह तेरे ग़ज़ब से और तेरी ही पनाह तुझ से।

आप अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया अल्लाह तआला की रहमत और उसके एहसानात को जो मैं जानता तुम नहीं जानते।

क्योंकि अल्लाह तआला को ही ख़ुशी अता फ़रमानी है उसी को ग़मों को दूर करना है जो हमारे वहम व गुमान में भी नहीं। इससे वाज़ेह इशारा इस तरफ़ था कि यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के मिलने की बड़ी क़वी उम्मीद है। रब ने जो इल्म मुझे दिया है वह तुम्हें नहीं दिया।

हज़रत यूसुफ़ और बुनियामीन की तलाश के लिए बेटों का भेजना : ऐ बेटो! जाओ यूसुफ़ अलैहिस्सलाम और उसके भाई का सुराग़ लगाओ और अल्लाह की रहमत से नाउम्मीद न हो बेशक अल्लाह की रहमत से नाउम्मीद नहीं होते सिवाए काफ़िरों के। फिर जब वह यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के पास पहुंचे बोले ऐ अज़ीज़! हमें और हमारे घर वालों को मुसीबत पहुंची और हम बे क़दर पूंजी लेकर आयें हैं और आप हमें पूरा नाप दीजिये और हम पर ख़ैरात कीजिये बेशक अल्लाह ख़ैरात करने वालों को सिला देता है।

जब हज़रत याकूब अलैहिस्सलाम ने बताया कि अल्लाह तआला से जो मैं जानता हूं तुम नहीं जानते हो तो इसके बाद बेटों से फ़रमाया जाओ यूसुफ़ अलैहिस्सलाम और उसके भाई को तलाश करो तीसरे का ज़िक्र नहीं किया हालांकि यहूदा भी रह गया था इसलिये कि उसका वहां रहना इख़्तेयारी था उसके वापस लाने में कोई मुश्किल नहीं थी लेकिन यूसुफ़ अलैहिस्सलाम का वहां रहना अल्लाह तआला के हुक्म से था इसमें रब की मर्ज़ी का इंतेज़ार था।

इससे पहले आज तक यूसुफ़ अलैहिस्सलाम को तलाश करने के मुताल्लिक़ बाप ने बेटों को नहीं कहा आज क्यों कहा? बुनियामीन के मुताल्लिक़ मालूम है कि वह अज़ीज़े मिस्र के पास चोरी के इल्ज़ाम में गुलाम होने की हैसियत से पाबंद है फिर यह कहने का क्या मतलब है? कि यूसुफ़ अलैहिस्सलाम को और उसके भाई को तलाश करो, उनका सुराग़ लगाओ पस बात एक ही है कि अल्लाह तआला की तरफ़ से जो याकूब अलैहिस्सलाम जानते थे वह और कोई नहीं जानता था अब आप को मालूम था कि इस मर्तबा बुनियामीन के साथ यूसुफ़ अलैहिस्सलाम का पता भी चल जायेगा अल्लाह तआला की तरफ़ से आज़माईश का वक़्त ख़त्म होने वाला ही है।

आप अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया अल्लाह तआला की रहमत से ना उम्मीद न हो इससे भी वाज़ेह हो रहा था कि अब अल्लाह तआला की रहमत का वक़्त आ चुका था अब यूसुफ़ अलैहिस्सलाम की मुलाक़ात से राहत होगी।

ख़्याल रहे रूह का असल मायने है ऐसी राहत जो सांस लेने से होती है या सुबह की हवा से "जो सकून हासिल होता है बाद में हर क़िस्म की राहत व रहमत पर इसका इतलाक़ होने लगा।

आप अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया अल्लाह तआला की रहमत से सिर्फ़ काफ़िर ही ना उम्मीद होते हैं क्योंकि अल्लाह तआला की रहमत से ना उम्मीद इंसान उस वक़्त होता है जब उसका अक़ीदा हो कि अल्लाह तआला कमाल पर क़ादिर नहीं या वह यह समझे कि अल्लाह तआला को तमाम चीज़ों

का इल्म नहीं या वह यह ख़्याल करे कि अल्लाह तआला करीम नहीं बल्कि बख़ील है यह तामम वजूह काफ़िरों में ही पाई जाती हैं।

भाईयों ने कहा हम बे क़दर यानी थोड़ी मिक़दार में और जो ज़्यादा खरी भी नहीं, पूंजी लेकर आये हैं आप हमारी पूंजी को न देखें बल्कि अपनी मेहरबानी को देखें, हमें पूरा पूरा नाप कर ग़ल्ला दें, क्योंकि हमारा ख़ानदान बहुत मुसीबत में है।

यूसुफ़ अलैहिस्सलाम ने भाईयों की ज़बानी घर के हालात सुने तो आप पर रिक़्क़त तारी हो गई आंखें डबडबा गई, ख़्याल रहे कि यहां भाईयों ने जो यह कहा इसका मतलब सदक़ा का मुतालबा नहीं, क्योंकि जमीअ अंबियाए किराम और उनकी औलाद पर सदक़ा हराम था, ताकि उनकी नज़र मख़लूक़ की तरफ़ न उठे और उनसे कम तर नज़र न आयें, इस लिये यहां इसके मायने है हम पर भलाई करो।

इसका एक मतलब यह भी हो सकता है कि अब तो वह ग़ल्ला लेने नहीं गये थे बल्कि हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम और बुनियामीन को तलाश करने गये थे लिहाज़ा उनका यह कहना कि हम पर मेहरबानी करो हमारे भाई को हमारे साथ वापस भेज दो अलबत्ता पहले उन्होंने बात ग़ल्ला से छेड़ी ताकि अज़ीज़े मिस्र को मालूम हो जाये कि इसके एहसानों को फ़रामोश नहीं कर सके बावजूद कि हमारे भाई को अपने पास रख लिया है, लेकिन फिर भी हमारे बाप ने हमें आपके पास भेजा है।

यूसुफ़ अलैहिस्सलाम ने अपने आपको ज़ाहिर कर दिया : यूसूफ़ (अलैहिस्सलाम) ने कहा कि कुछ ख़बर है तुमने यूसुफ़ और उसके भाई के साथ क्या किया था? जब तुम नादान थे उन्होंने कहा क्या सचमुच आप ही यूसुफ़ (अलैहिस्सलाम) हैं? आप अलैहिस्सलाम ने कहा मैं यूसुफ़ हूं और यह मेरा भाई है। बेशक अल्लाह ने हम पर एहसान किया। बेशक जो परहेज़गारी और सब्र करे तो अल्लाह नेकों के अज्र को ज़ाया नहीं करता।

जब भाईयों ने आकर ग़ल्ला का मुतालबा किया और इशारा से कहा कि हम पर रहम करें, मक़सद कुछ यह भी था कि बुनियामीन को छोड़ दो। लेकिन ज़ाहिर तौर पर यह नहीं कह रहे थे तो अल्लाह ने यूसुफ़ अलैहिस्सलाम को वही या इल्हाम के ज़रिये ख़बर कर दिया कि इनको इनके बाप ने इसलिये भेजा है कि यूसुफ़ और उसके भाई को तलाश करो, तो आपने जब यह देखा कि यह अपने माजरा को ज़ाहिर नहीं कर रहे हैं तो आपने खुद ही कलाम का आग़ाज़ कर दिया। आप अलैहिस्सलाम ने खुद भाईयों से कहा वह ख़त जो तुम्हें बाप ने मेरे लिये दिया है वह मुझे दे दो। उन्होंने जब ख़त दिया जिस में तहरीर था कि :

हमारा ख़ानदान शुरू से ही मसाइब व आलाम की आज़माईशों से गुज़र रहा है मैं उस दादा इब्राहीम ख़लीलुल्लाह अलैहिस्सलाम का पोता हूं जिसके हाथ पांव बांधकर आग में डाल दिया गया था अल्लाह तआला ने उन्हें नजात दी मेरा एक प्यारा बेटा यूसुफ़ था जिसे उसके भाई साथ ले गये लेकिन वापस आकर उसकी खून आलूदा क़मीस पेश कर दी कि उसे भेड़िया खा गया है। रो रोकर मेरी आंखों की बीनाई ज़ाया हो गई। फिर उसके दूसरे भाई बुनियामीन को ग़ल्ला लेने के लिये यह साथ ले गये। चोरी के इल्ज़ाम में तुमने उसे अपने पास रख लिया है हमारे ख़ानदान का शेवा चोरी करना नहीं और न ही हमारा ख़ानदान चोरी करने के लिये पैदा किया गया है। तुम मेरे बेटे को वापस करो वरना मैं तुम्हारे ख़िलाफ़ रब के हुज़ूर दुआ करूंगा यह ख़त पढ़ते ही यूसुफ़ अलैहिस्सलाम पर ज़्यादा रिक़्क़त तारी हो गई।

जब यूसुफ अलैहिस्सलाम को भाई कुंए में फेंक रहे थे तो अल्लाह तआला ने यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के दिल में इल्क़ा किया था तुम ज़रूर बिल ज़रूर इनको इन मामलात की ख़बर दोगे। उस वक़्त तो यूसुफ़ अलैहिस्सलाम को भी मालूम नहीं था कि मैं कैसे और किस वक़्त और किस हाल में भाईयों को बताऊंगा? कि तुमने मेरे साथ क्या सलूक किया था।

जब यूसुफ़ अलैहिस्सलाम को कुंए में डाला जा रहा था उस वक़्त आप बचपन की वजह से आजिज़ व नातवां थे और भाई बड़े क़द आवर जसीम और ताक़तवर थे लेकिन आज यूसुफ़ शाही तख़्त पर जलवागर थे और आप के भाई बड़े अदब व एहतेराम से आपसे ग़ल्ला का मुतालबा कर रहे थे। यूं कहें कि कल के ताक़तवर आज सरापा इज्ज़ बनकर बैठे हैं और कल का आजिज़ व नातवां आज शाही तख़्त का मालिक, अज़ीम ताक़तवर है।

यूसुफ़ अलैहिस्सलाम अपने ख़ानदान के रिक़्क़त आमेज़ मनाज़िर को देखकर अपने बाप की परेशान-हाली और रिक़्क़त आमेज़ ख़त को देखने के बाद अल्लाहतआला के इस हुक्म के मुताबिक़ कि एक दिन तुमको अपने भाईयों के कारनामों की ख़बर देनी है। आज यूसुफ़ अलैहिस्सलाम इन अल्फ़ाज़ में भाईयों के सामने अपने आप को ज़ाहिर करने के लिये कलाम शुरू फ़रमा रहे हैं क्या तुम्हें मालूम है कि तुमने युसुफ़ अलैहिस्सलाम और उसके भाई के साथ क्या सलूक किया है? जब तुम जाहिल थे कलाम की इब्तेदा ही ऐसे अंदाज़ से की कि भाईयों को जब पता चले कि मैं यूसुफ़ हूं तो वह डरें नहीं लिहाज़ा कहा यह बस कुछ तुमने नादानी और जहालत की वजह से किया था और नबी कभी उन लोगों की कार्रवाईयों का इंतेक़ाम नहीं लिया करता जो उन्होंने बे इल्मी की वजह से की हों।

जब आप अलैहिस्सलाम ने भाईयों से पूछा तो उन्होंने आपके अंदाज़े कलाम से या आपके मुस्कराने की वजह से दांतों की चमक से पहचानते हुए पूछा क्या आप यूसुफ़ तो नहीं? आपने कहा हां मैं यूसुफ़ हूं और यह मेरा भाई है। यानी मेरी मां का बेटा है अल्लाह तआला ने हम पर एहसान किया है यानी इम्तेहान लेने के बाद हमें यह मनसब अता किया है जो तुम देख रहे हो। साथ साथ भाईयों को कहा कि अल्लाह तआला तक़वा और सब्र करने वाले नेक लोगों के अज्र को ज़ाया नहीं करता। इशारा था कि अगर तुमने भी तक़वा हासिल किया तो अल्लाह तआला का करम तुम पर हो जायेगा।

भाईयों की माज़रत और आपका माफ़ करना : यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के भाईयों ने कहा और बेशक अल्लाह ने हम पर आपको फ़ज़ीलत दी और बेशक हम ख़तावार थे। आप अलैहिस्सलाम ने कहा आज तुम पर कुछ मलामत नहीं अल्लाह तुम्हें माफ़ करे और वह सब मेहरबानों से बढ़कर मेहरबान है।

ज्यूं ही यूसुफ़ अलैहिस्सलाम ने अपने भाईयों के सामने ज़िक्र किया कि मैं यूसुफ़ हूं और अल्लाह तआला ने हम पर एहसान किया है और जो शख़्स भी गुनाहों से बचता है और लोगों की अज़ीयत पर सब्र करता है अल्लाह तआला उसे ज़ाया नहीं करता तो यह सुनकर आप के भाईयों ने आपके कमालात का एतेराफ़ करते हुए कहा:

अल्लाह ने आपको हम पर इल्म, हौसलामंदी, अक़्ल, कमाल, फ़ज़्ल व हुस्न और बादशाहत में फ़ज़ीलत अता की।

और भाईयों ने अपनी ग़लती का एतेराफ़ करते हुए कहा और बेशक़ हम ख़तावार थे।

अक्सर मुफ़स्सेरीन इस पर मुत्तफ़िक़ हैं कि उन्होंने उज़्र पेश किया कि हमने आपको जो कुंए में

डाला और आपको बेचा, घर से निकाला और आप को वालिद से दूर किया यह सब हमारी ख़तायें हैं। भाईयों की माज़रत पर यूसुफ़ अलैहिस्सलाम ने फ़रमायाः

आज तुम पर कुछ मलामात नहीं यानी न तुम पर कोई आर है और न कुछ तौबीख़ है यानी यह ऐलान आज से मैं हमेशा के लिये कर रहा हूं कभी भी तुम्हें माज़ी के वाक़यात पर आर नहीं दिलाई जायेगी। अल्लाह तुम्हें माफ़ करे और वह सब मेहरबानों से बढ़कर मेहरबान है।

भाईयों के लिये दुआ करके उनके दिल को मज़ीद तसल्ली दी कि मैंने तो मुकम्मल दिल से माफ़ कर दिया है और दुआ है अल्लाह तआला तुम्हें माफ़ करे और वह सब मेहरबानों से बढ़कर मेहरबान है।

यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के भाई जब बहुत ज़्यादा नादिम हो रहे थे और अर्ज़ कर रहे थे कि तुम तो हमें सुबह व शाम अपने दस्तरख़्वान पर बिठाकर खाना खिलाते रहे लेकिन हमने आपसे जो कार गुज़ारियां कीं हमें तो उनसे बहुत बड़ी नदामत हो रही है तो आपने फ़य्याज़ी का मुज़ाहिरा करते हुए कहा मेरे भाईयो! तुम नादिम क्यों होते हो? मुझे तो तुम्हारे आने से बहुत बड़ी ख़ुशी हुई है? क्योंकि मैं मिस्र का हुक्मरान भी बन गया हूं और मिस्री लोग मेरे गुलाम बनकर आज़ाद हुए। लेकिन फिर भी उनके ज़ेहनों में यह बात ज़रूर होगी कि बीस दिरहम का ख़रीदा हुआ गुलाम मिस्र का हाकिम बन गया है। लेकिन आज उनके सामने यह वाज़ेह हो चुका है कि तुम मेरे भाई हो, मैं इब्राहीम अलैहिस्सलाम का पर पोता हूं, कोई गुलाम नहीं था, तक़दीर और रब की तरफ़ से आज़माईश की वजह से गुलामियत से मुत्तसिफ़ हुआ, आज तुम्हारे आने और मेरे ज़ाहिर करने से सब लोगों की नज़रों में मुझे अज़मत मिली है और मेरी शराफ़त और ख़ानदाने नबुव्वत का एक फ़र्द होने की हैसियत से मेरा बोल बाला हुआ।

फ़ायदा : नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़तहे मक्का के दिन काबा शरीफ़ के दरवाज़े पर खड़े होकर कुरैश के लोगों की तरफ़ मुतवज्जेह होकर पूछा जिन्होंने सहाबा किराम पर तरह तरह के मज़ालिम ढाए थे बल्कि ख़ुद नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को ईज़ा रसानियों में कोई कसर बाक़ी न छोड़ी थी।

तुम्हारा मेरे मुताल्लिक़ क्या ख़्याल है? कि मैं आज तुम्हारे साथ कैसा सलूक करूंगा?

तो सब कुरैश ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में अर्ज़ कियाः

हम आपके मुताल्लिक़ भलाई का गुमान ही करते हैं, क्योंकि आप करीम भाई और करीम भाई के बेटे है।

यानी हमारे ख़ानदान में आपकी रहमत और आपका करम मश्हूर व मारूफ़ है आप तो मौरूसी तौर पर ही करीम चले आ रहे हैं हमें उम्मीद है कि आप कभी भी हम से इंतेक़ाम नहीं लेंगे।

कुरैश की यह बात सुनकर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया आज मैं तुम्हारे लिये वही ऐलान कर रहा हूं जो मेरे भाई यूसुफ़ अलैहिस्सलाम ने अपने भाईयों के लिये किया था।

आज तुम पर कोई मलामत नहीं।

एक रिवायत में यह भी है कि जब अबू सुफ़यान रज़ियल्लाहु अन्हु ईमान लाने की ग़र्ज़ से आ तो हज़रत अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु ने उन्हें कहा जब नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर होना तो यह तिलावत करनाः

ला तसरी ब अलैकुमुल यौ–म

तो उन्होंने ऐसा ही किया नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः अल्लाह तुम्हारी मग़्फ़िरत फ़रमाये और उसकी भी जिसने तुम्हें सिखाया।

मिस्र से क़मीस की रवानगी और याकूब अलैहिस्सलाम को खुश्बू आना : (यूसुफ़ अलैहिस्सलाम ने कहा) यह मेरी क़मीस ले जाओ इसे मेरे बाप के मुंह पर डालो उनकी आंखें खुल जायेंगी और अपने सब घर वालों को मेरे पास ले आओ। जब क़ाफ़िला मिस्र से जुदा हुआ यहां उनके बाप ने कहा बेशक मैं यूसुफ़ (अलैहिस्सलाम) की खुश्बू पाता हूं अगर मुझे यह न कहो कि सीधी सोच से हट गया है।

हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम को कैसे पता चला? कि क़मीस को आंखों पर डालने से बाप की बीनाई दरुस्त आ जायेगी? आपको अल्लाह तआला की तरफ़ से वही के ज़रिये मालूम हुआ अगर वही न होती तो आपको इसका पता न चलता क्योंकि अक़्ल में आने वाली बात ही नहीं।

वह क़मीस कौन सी थी? यह आम क़मीस थी जो आपने ज़ेब तन कर रखी थी या कि वह क़मीस थी जो हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम को आग में पहनाई गई थी और जन्नत से लाई गई थी बाद में वह हज़रत इस्हाक़ अलैहिस्सलाम और याकूब अलैहिस्सलाम के पास पहुंच गई, याकूब अलैहिस्सलाम ने यूसुफ़ अलैहिस्सलाम को भाईयों के साथ भेजते वक़्त आपके गले में बतौर तावीज़ डाली थी अब जिब्राईल अमीन ने आकर आप से फ़रमाया कि यह क़मीस अपने वालिद की तरफ़ भेज दो ताकि उन्हें इसके ज़रिये नज़र वापस मिल जाये।

यूसुफ़ अलैहिस्सलाम ने भाईयों को कहा कि तुम घर वालों को मेरे पास ले आओ, उस वक़्त याकूब अलैहिस्सलाम के घर के अफ़राद जिन में मर्द औरतें बच्चे यानी आपकी औलद या औलाद की औलाद वग़ैरह बहत्तर (७२) से छयानवे (९६) तक थे। (मुख़्तलिफ़ अक़वाल मिलते हैं) यह तादाद बढ़ते बढ़ते यहां तक पहुंच गई कि जब यह बनी इस्राईल मूसा अलैहिस्सलाम के साथ निकले तो सिर्फ़ जवान मर्दो की तादाद छः लाख थी। बूढ़े मर्द औरतें और बच्चे उनके अलावा थे।

जब मिस्र से क़मीस याकूब अलैहिस्सलाम के घर लाने के लिये निकाला गया तो याकूब अलैहिस्सलाम ने उसकी खुश्बू सूंघ ली। आपने बेटों के बग़ैर दूसरे अहले ख़ाना को कहा मुझे यूसुफ़ अलैहिस्सलाम की खुश्बू आ रही है अगर तुम मेरी राए को जईफ़ न समझो।

हज़रत याकूब अलैहिस्सलाम की यह गुफ़्तगू बेटों के साथ न हुई थी क्योंकि वह मौजूद न थे।

हज़रत याकूब अलैहिस्सलाम ने इतनी दूर से ख़ुश्बू कैसे सूंघ लिया? इसका जवाब वाज़ेह है कि अल्लाह तआला की कुदरत से कोई बअईद नहीं। और ख़ुसूसन जब आपको क़मीस से उठने वाली जन्नत की ख़ुश्बू आई तो आप अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि यह ख़ुश्बू उस जन्नती क़मीस के बग़ैर किसी और की नहीं हो सकती। तो अहले ख़ाना ने कहाः

उन्होंने कहाः ख़ुदा की क़सम आप उसी पुरानी ख़ुद रफ़्तगी में हैं फिर जब ख़ुशी सुनाने वाला आया उसने वह क़मीस याकूब अलैहिस्सलाम के चेहरे पर डाली तो आप अलैहिस्सलाम की आंखें फिर आयीं तो आप अलैहिस्सलाम ने कहा मैं नहीं कहता था कि मुझे अल्लाह की तरफ़ से वह मालूम है जो तुम नहीं जानते।

हज़रत क़तादा रज़ियल्लाहु अन्हु का क़ौल है कि हाज़िरीन ने जो यह कहा थाः इसका मायने यह हैः

तुम तो अभी यूसुफ़ की पुरानी मुहब्बत में ही वारफ़्ता हो, आप उनको भी भूल नहीं सकते और न आपके दिल से निकल सकते हैं। (हालांकि वह कबके मर चुके हैं।)

क़मीस लाने वाला और ख़ुशख़बरी देने वाला आपका बेटा यहूदा था। हज़रत मुजाहिद रज़ियल्लाहु अन्हु का क़ौल है कि यहूदा ने अपने भाईयों को कहा:

तुम्हें मालूम है कि बेशक मैं ही अपने बाप के पास ग़म दिलाने वाली क़मीस लेकर गया था (यानी आपको कुंए में डालकर ख़ून आलूदा क़मीस मैंने ही पेश की थी) इसलिए अब तुम तमाम मुझे इजाज़त दो कि ख़ुश करने वाली क़मीस भी मैं ही लेकर जाऊं, सब भाईयों ने उनको इजाज़त दे दी।

हज़रत याकूब अलैहिस्सलाम के पास क़मीस लाने वाले ने आप की आंखों पर क़मीस को डाल दिया या आप अलैहिस्सलाम को क़मीस दे दी गई और आप ने ख़ुद ही क़मीस को अपनी आंखों पर लगाया।

इंसानी फ़ितरत की यह आदत जारी है कि जब किसी चीज़ में उसका यह एतेक़ाद हो कि इसमें बरकत पाई जाती है तो वह उसे अपने चेहरे पर मलता है।

क़मीस को आंखों पर लगाने से बीनाई वापस अपनी असली हालत पर आ गई आप ने ख़ुशख़बरी लाने वाले शख़्स से पूछा तुम ने यूसुफ़ (अलैहिस्सलाम) को कैसे हाल में छोड़ा है? तो उसने कहा वह तो मिस्र के बादशाह हैं। आप अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया:

मुझे बादशाहत से क्या ग़र्ज़? यह बताओ तुमने उसे किस दीन पर छोड़ा? तो उसने कहा इस्लाम पर, तो आपने फ़रमाया कि अब नेमत की तकमील हुई कि ख़ुशख़बरी कामिल हासिल हो गई।

अब आपने तमाम अहले ख़ाना को और आने वाल तमाम बेटों को कहा:

जब मैंने तुम्हें मिस्र भेजा था और तुम्हें हुक्म दिया था कि यूसुफ़ को तलाश करो और मैंने तुम्हें अल्लाह तआला की रहमत से ना उम्मीद होने से मना किया था, तो मैंने उस वक़्त तुम्हें क्या न कहा था कि अल्लाह तआला से जो मैं जानता हूं वह तुम नहीं जानते। यानी मुझे यह मालूम था कि यूसुफ़ अलैहिस्सलाम ज़िन्दा हैं।

यह भी ख़्याल करें कि बुनियामीन के मुताल्लिक़ मालूम था कि वह मिस्र में है तो फिर यह कहना कि यूसुफ़ और उसके भाई को तलाश करो इसमें बहुत वाज़ेह इशारा था कि दोनों एक जगह ही हैं।

याकूब अलैहिस्सलाम के बेटों का आपसे माफ़ी तलब करना : (आपके बेटों ने) कहा ऐ हमारे बाप हमारे गुनाहों की माफ़ी मांगिये ! बेशक हम ख़तावार हैं आप अलैहिस्सलाम ने कहा जल्दी मैं तुम्हारी बख़्शिश अपने रब से चाहूंगा बेशक वही बख़्शने वाला है।

बेटों ने "ऐ हमारे बाप" कह कर आप अलैहिस्सलाम से अपने गुनाहों की मग़्फ़िरत तलब करने की दरख़्वास्त की कि आप हमारे बाप हैं शफ़ीक़ हैं हम ख़तावार हैं आप दरगुज़र करते हुए हमारे लिये अल्लाह तआला से हमारी ग़लतियों की माफ़ी तलब करें। अगर आपने हमारे लिये दुआ न की तो हम अपनी ग़लतियों की वजह से अल्लाह तआला की गिरफ़्त में आकर हलाक हो जायेंगे। आप अगर रहम नहीं करेंगे तो हम पर और कौन रहम करेगा? आप अलैहिस्सलाम ने वादा फ़रमाया कि मैं जल्दी ही तुम्हारी बख़्शिश अपने रब से तलब करूंगा और हमेशा तलब करता रहूंगा उसी वक़्त बख़्शिश तलब नहीं फ़रमाई कि आप सहर के वक़्त के मुन्तज़िर थे कि उस वक़्त दुआ जल्दी क़बूल होती है या उसकी वजह यह थी:

बेशक आपने ज़ुमा की रात तक मुअख़्ख़र किया था कि वह वक़्त ज़्यादा क़बूलियत का होता है।

इससे उन लोगों के लिये लम्हए फ़िक्रिया है जो जुमेरात की शाम यानी जुमा की रात अपने फ़ौत शुदा हज़रात के लिये दुआए मग़्फ़िरत करने वालों को बिदअत का मुरतकिब क़रार देते हैं। काश उन जुहला को यह पता चल जाता कि जुमा की रात दुआ की क़बूलियत का ज़्यादा यक़ीन होना पहले अंबियाए किराम से आ रहा है।

याक़ूब अलैहिस्सलाम और आपके ख़ानदान की मिस्र में आमद : फिर जब वह सब यूसुफ़ (अलैहिस्सलाम) के पास पहुंचे उसने अपने बाप को अपने पास जगह दी और कहा मिस्र में दाख़िल हो अल्लाह चाहे तो अमान के साथ। और अपने मां–बाप को तख़्त पर बिठाया और सब उसके लिये सज्दा में गिरे। और यूसुफ़ (अलैहिस्सलाम) ने कहा ऐ मेरे बाप यह मेरे पहले ख़्वाब की ताबीर है, बेशक इसे मेरे रब ने सच्चा किया और बेशक उसने मुझ पर एहसान किया कि मुझे क़ैद से निकाला और आप सब को गांव से ले आया बाद इसके कि शैतान ने मुझ में और मेरे भाईयों में ना चाक़ी करा दी थी। बेशक मेरा रब जिस बात को चाहे आसान कर दे, बेशक वही इल्म व हिकमत वाला है।

हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम ने अपने वालिद माजिद को उनके अहल व औलाद के बुलाने के लिये अपने भाईयों के साथ दो सौ सवारियां और कसीर सामान भेजा था, हज़रत याक़ूब अलैहिस्सलाम ने मिस्र का इरादा फ़रमाया और अपने अहल को जमा किया मश्हूर क़ौल के मुताबिक़ ७२ या ७३ मर्द और औरतों की तादाद थी।

हज़रत याक़ूब अलैहिस्सलाम मिस्र के क़रीब पहुंचे तो हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम ने मिस्र के बादशाहे आज़म को अपने वालिद माजिद की तशरीफ़ आवरी की इत्तेला दी और चार हज़ार लश्करी और बहुत से मिस्री सवारों को हमराह लेकर आप अपने वालिद मुकर्रम के इस्तिक़बाल के लिये सदहा रेशमी फरेरे उड़ाते हुए क़तारें बांधे हुए रवाना हुए। हज़रत याक़ूब अलैहिस्सलाम अपने बेटे यहूदा का सहारा लिये तशरीफ़ ला रहे थे। जब आपकी नज़र लश्कर पर पड़ी और आपने देखा कि बड़े ज़र्क़ बर्क़ सवारों से सहरा पर हो रहा है तो आप अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया ऐ यहूदा क्या यह फ़िरऔन मिस्र है (मिस्र के बादशाह का लक़ब फ़िरऔन था) जिसका लश्कर इस शान व शौकत से आ रहा है? अर्ज़ किया नहीं यह तो आपके फ़रज़ंद यूसुफ़ अलैहिस्सलाम आपके इस्तिक़बाल के लिये आ रहे हैं।

ख़्याल रहे कि यूसुफ़ अलैहिस्सलाम उस वक़्त अज़ीज़े मिस्र यानी वज़ीरे आज़म थे। मुफ़स्सेरीन किराम ने आपके लिये लफ़्ज मलिक इस्तेमाल किया है जिसका मायने बादशाह है लेकिन फ़र्क़ इस तरह कर लिया जाये आप बादशाह थे और वलीद बिन रियान बादशाहे आज़म था। हज़रत जिब्राईल अलैहिस्सलाम ने याक़ूब अलैहिस्सलाम को मुताज्जिब देखकर अर्ज़ किया। हवा की तरफ़ नज़र फ़रमाइये। आपके सुरूर में शौकत के लिये मलाइका हाज़िर हुए हैं जो मुद्दतों आपके ग़म के सबब रोते रहे हैं। मलाइका की तस्बीह से और घोड़ों के हिनहिनाने से अजीब कैफ़ियत पैदा हुई थी। यह मुहर्रम की दस तारीख़ थी। जब दोनों हज़रात अलैहिमुस्सलाम एक दूसरे के क़रीब हुए तो हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम ने सलाम अर्ज़ करने का इरादा ज़ाहिर किया तो हज़रत जिब्राईल अलैहिस्सलाम ने अर्ज़ किया आप तवक़्क़ुफ़ कीजिये वालिद मुकर्रम को पहले सलाम करने का मौक़ा दें चुनांचे हज़रत याक़ूब अलैहिस्सलाम ने फ़रमायाः

ऐ ग़म व अंदोह के दूर करने वाले तुम पर सलाम।

याकूब अलैहिस्सलाम के पहले सलाम करने में हिकमत यह थी कि वाज़ेह हो जाए।

कि हज़रत याकूब अलैहिस्सलाम अल्लाह तआला के हुजूर बनिस्बत हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम से ज़्यादा मुकर्रम हैं।

एक दूसरे से मुलाक़ात हुई तो ख़ुशी का यह आलम था कि हज़रत याकूब अलैहिस्सलाम ने हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम को गले से लगाया और उनका बोसा लिया।

फ़ायदा : "मुआनक़ा" ख़ुशी के मौक़े पर गले लगाकर मिलना और अपने अज़ीज़ का बोसा लेना सुन्नते अंबिया है ईद के मौक़े पर गले लगाकर मिलने को बिदअत व गुमराही से ताबीर करने वाले दीन से बेख़बर हैं कुरआन पाक और अहादीसे मुबारका में ज़वाबित ब्यान हैं जब किसी एक मौक़ा पर ख़ुशी की हालत में मुआनक़ा जायज़ होना साबित हो जाये तो तमाम ख़ुशी के मवाक़े पर जवाज़ ख़ुद बख़ुद साबित हो जायेगा।

हज़रत असियद बिन हुज़ैर से मरवी है कि एक शख़्स अंसार से थे जो लोगों से कलाम कर रहे थे, वह मज़ाह करते थे और लोगों को हंसा रहे थे। नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने एक छड़ी से उनके पहलू पर ज़र्ब लगाई। (यानी आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने भी अज़रुए मज़ाह ही उन्हें छड़ी मारी) उन्होंने अर्ज़ किया आप मुझे क़िसास लेने की कुदरत दें ताकि आप से क़िसास ले सकूं हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इजाज़त फ़रमा दी तो उन्होंने अर्ज़ किया आपके जिस्म पर क़मीस है और मेरे जिस्म पर क़मीस नहीं थी। नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने क़मीस को उठा दिया।

उन्होंने मुआनक़ा करते हुए हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को बग़लों में ले लिया और आपके पहूल को चूमने लगे और अर्ज़ करने लगे मेरा मक़सद यही था या रसूलल्लाह!

अंसारी सहाबी ने नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के मज़ाह से मारने पर खुश होकर आपको गले लगाया, बग़लों में लिया और आपके पहलू को चूमा, आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सहाबी को मना नहीं फ़रमाया कि यह काम तुमने नाजायज़ किया है। अगर नाजायज़ होता तो आप ज़रूर सहाबी को मना फ़रमाते। आप के मना न करने से ख़ुद बख़ुद जवाज़ साबित हो गया।

हज़रत शअबई से मरवी है बेशक नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जाफ़र बिन अबी तालिब से मिले तो उन्हें गले लगाया और उनकी आंखों के दर्मियान बोसा लिया।

जब हज़रत जाफ़र रज़ियल्लाहु अन्हु हब्शा से वापस आए तो नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने ख़ुशी से उन्हें गले लगाया और उनकी आंखों के दर्मियान बोसा लिया, हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का फ़ेअल उम्मत के हक़ में इस्तेहबाब से ख़ाली नहीं ख़्याल रहे कि दूसरी हदीस में रावी हज़रत जाफ़र रज़ियल्लाहु अन्हु ख़ुद हैं आप रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते है:

मुझे यह मालूम नहीं कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उस वक़्त ख़ैबर के फ़तह होने की वजह से बहुत ज़्यादा ख़ुश थे या जाफ़र के आने की वजह से?

इस पर मुल्ला अली क़ारी रहमतुल्लाह अलैहि फ़रमाते हैं:

एक मुस्तक़िल तौर पर ख़ुशी का सबब था ख़ुशी का एक सबब दूसरे सबब से जमा नहीं होता। इससे वाज़ेह हुआ कि हज़रत जाफ़र रज़ियल्लाहु अन्हु से मुलाक़ात पर मुआनक़ा और चूमना और उनकी आमद पर ख़ुशी थी।

हज़रत ज़ारअ रज़ियल्लाहु अन्हु वफ़्द अब्दुल क़ैस में थे यह कहते हैं कि जब हम मदीना तैय्यबा

में आए तो हम जल्दी जल्दी अपनी सवारियों से उतरने लगे।

फ़िर हम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के हाथ और पांव को चूमने लगे।

इस हदीस पाक से भी वाज़ेह हो रहा है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने नहीं रोका लिहाज़ा बुज़ुर्ग हस्ती के हाथ पांव चूमना जायज़ हैं अगर जायज़ न होता तो आप पर रोकना वाजिब होता।

हज़रत आईशा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं कि मैंने हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा से बढ़कर किसी को नहीं देखा जो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के मुशाबेह हो, अहले ख़ैर के तरीक़ा में यानी वक़ार से चलने में आप सबसे बढ़कर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के मुशाबेह थीं और तमाम उमूर में नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की तरह हुस्ने सीरत आप को हासिल थी और आपको हुस्न व अख़लाक़ हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के मशाबेह हासिल थे। एक रिवायत में है कि आप रज़ियल्लाहु अन्हा कलाम करने और बात चीत में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के मुशाबेह थीं। हज़रत फ़ातिमा जब नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर होतीं तो हुज़ूर अलैहिस्सलाम उनके लिये खड़े हो जाते। और उनके हाथ को पकड़कर उनको चूमते और अपनी जगह बिठाते। और जब नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उनके घर तशरीफ़ ले जाते तो वह आप के लिये खड़ी हो जातीं। और आपके हाथ को पकड़ कर आपका बोसा लेतीं और अपनी जगह बिठातीं।

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का बोसा अज़ीज़ा के तौर पर होता और हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा का बोसा लेना बुज़ुर्ग समझ कर होता।

मुल्ला अली क़ारी रहमतुल्लाह अलैहि ने मिरक़ात में तहरीर फ़रमाया :

इस हदीस पाक से वाज़ेह हुआ कि किसी अज़ीज़ या अज़ीज़ा का बोसा लेना जायज़ है इसी तरह अपने बुज़ुर्ग बाप का बोसा लेना भी जायज़ है।

हज़रत बरा रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु के साथ दाख़िल हुआ (जब वह ग़ज़वा से लौटकर) पहले पहले मदीना तैय्यबा में पहुंचे तो आपकी बेटी आईशा रज़ियल्लाहु अन्हा लेटी हुई थीं उनको बुख़ार था हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु उनके पास आये और कहा:

ऐ मेरी प्यारी बेटी तुम्हारा क्या हाल है और आप ने अपनी बेटी के रुख़सार को चूमा।

आप रज़ियल्लाहु अन्हु का बेटी के रुख़सारों को चूमना इस वजह से था।

कि आपने बतौर रहमत और मुहब्बत के चूमा या सुन्नत समझकर चूमा ताकि सुन्नत पर अमल हो जाये।

हज़रत अय्यूब बिन बशीर ग़न्ज़ा क़बीला के एक शख़्स से रिवायत करते हैं उन्होंने कहा मैंने हज़रत अबू ज़र रज़ियल्लाहु अन्हु से पूछा जब तुम नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से मुलाक़ात करते थे तो आप तुम्हारे साथ मुसाफ़ह करते थे? आपने फ़रमाया मैंने जब भी हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से मुलाक़ात की तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मेरे साथ मुसाफ़ह ज़रूर किया है। एक दिन आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मेरी तरफ़ पैग़ाम भेजा मैं घर नहीं था जब मैं घर आया तो मुझे ख़बर दी गई तो मैं आपकी ख़िदमत में हाज़िर हुआ, आप अपनी चारपाई पर तशरीफ़ फ़रमा थे।

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मुझे गले लगाया (अबू ज़र कहते हैं) यह गले लगाना ज़्यादा अच्छा है।

यानी मुसाफ़ह या हर चीज़ से ज़्यादा अच्छा है क्योंकि इसमें इज़हारे मुहब्बत राहत व सकून ज़्यादा है।

हज़रत अबू हुरैरा से मरवी है:

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हसन बिन अली रज़ियल्लाहु अन्हुमा को चूमा तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास अक़रअ बिन हाबस मौजूद थे। अक़रअ ने कहा मेरे दस बच्चे हैं मैंने कभी किसी को नहीं चूमा, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उसकी तरफ़ देखा और इरशाद फ़रमाया:

जो किसी पर रहम नहीं करता उस पर रहम नहीं किया जाता।

यानी जो लोगों पर रहम नहीं करता अल्लाह तआला उस पर रहम नहीं फ़रमाता यानी लोगों पर रहम करना अल्लाह तआला की रहमत का अपने आप को मुस्तहक़ बनाना है।

इसी हदीस की शरह में मुल्ला अली क़ारी रहमतुल्लाह अलैहि तहरीर फ़रमाते हैं:

अल्लामा आलूसी रहमतुल्लाह अलैहि ने फ़रमाया कि अपने छोटे बच्चे के रुख़सारों को चूमना, वाजिब है इसी तरह रुख़सारों के अलावा जिस्म के और हिस्सों यानी हाथ सर पेशनी को भी चूमना शफ़क़त रहमत मेहरबानी और कराबत की मुहब्बत की वजह से सुन्नत है। ख़्वाह औलाद मुज़क्कर हो या मुअन्नस। इसी तरह अपने दोस्त और ताल्लुक़ दार के छोटे बच्चों के रुख़सारों या दूसरे आज़ा को भी चूमने का यही हुक्म है। अलबत्ता शहवत के तौर पर चूमना हराम है। इसमें वालिद और दूसरे लोगों का हुक्म एक ही है इसी में अहले इल्म का इत्तेफ़ाक़ है।

मुल्ला अली क़ारी रहमतुल्लाह अलैहि के वजूब के क़ौल पर एतेराज़ किया गया है कि वजूब सिर्फ़ उस वक़्त साबित हो सकता है जब हदीसे सरीह या क़यास सहीह से साबित हो।

ताहम वजूब न भी साबित हो तो सुन्नत व इस्तिहबाब तो यक़ीनन साबित है, क्योंकि रुख़सारों के बग़ैर अतराफ़ को शफ़क़त के तौर पर चूमना सुन्नत है और इस पर कोई एतेराज़ नहीं किया गया है।

अल्लामा नूवी रहमतुल्लाह अलैहि ने फ़रमाया किसी के हाथों को उस के इल्म ज़ोहद व तक़्वा दीनदारी और हर तरह के दीनी कामों पर अमल की वजह से चूमा जाये तो यह मकरूह नहीं बल्कि मुस्तहब है, अगर किसी के हाथों को इसलिये चूमा जाता हो कि यह ग़नी है या दुनियावी तौर पर उसको जाह व जलाल हासिल है तो यह मकरूह है बल्कि बाज़ ने तो इसे हराम कहा है। अलबत्ता बाज़ हज़रात ने दुनियादार के हाथ चूमना हराम उस वक़्त कहा है जब चापलूसी के इरादे से चूमे या उसकी ताज़ीम के लिये चूमे, अगर ऐसी सूरत न हो तो जायज़ है। किसी को अलविदा करते वक़्त या सफ़र से वापस आते वक़्त या किसी दोस्त से देर से मुलाक़ात होते वक़्त या किसी शख़्स से सिर्फ़ अल्लाह तआला की रज़ा की ख़ातिर मुहब्बत हो तो उसके हाथ चूमने की इजाज़त है इन तमाम सूरतों में शर्त यह है कि नफ़्स अमन में हो शहवत का इरादा न हो।

अल्लामा नूवी रहमतुल्लाह अलैहि ने फ़रमाया कि शहवत की ग़र्ज़ से ऐसे लड़के जिसकी दाढ़ी न हो और ख़ूबसूरत चेहरा वाला हो उससे मुसाफ़ह करने से इज्तेनाब किया जाये। शहवत की ग़र्ज़ से उसे देखना भी हराम है हमारे अस्हाब ने कहा है जिसे देखना हराम है उसे छूना भी हराम है बल्कि छूना ज़्यादा जुर्म है क्योंकि किसी अजनबी औरत से अगर निकाह का इरादा हो तो उसे देखना जायज़ है लेकिन हाथ लगाना हराम है।

यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के ख़्वाब का पूरा होना : आपने बचपन में जो ख़्वाब देखा कि मुझे चांद सूरज और ग्यारह सितारे सज्दा कर रहे हैं वह ख़्वाब आपका पूरा हो गया कि हज़रत याकूब अलैहिस्सलाम जब अपने अहल व अयाल के साथ मिस्र में आये तो यूसुफ़ अलैहिस्सलाम ने उन्हें अपने तख़्त पर जलवा गर किया तो यूसुफ़ अलैहिस्सलाम को आपके मां–बाप और ग्यारह भाईयों ने सज्दा किया इसी वजह से यूसुफ़ अलैहिस्सलाम ने कहा यह मेरे पहले ख़्वाब की ताबीर है। ख़्याल रहे कि बाज़ हज़रात ने यह फ़रमाया है:

बेशक अल्लाह तआला ने आपकी वालदा को ज़िन्दा करके क़ब्र से निकाला ताकि यह भी यूसुफ़ अलैहिस्सलाम को सज्दा कर लें कि उनका ख़्वाब सच्चा जो जाये।

एतेराज़ : हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम अगरचे नबी हैं लेकिन याकूब अलैहिस्सलाम उनसे ज़्यादा जलीलुल क़द्र हैं।

और यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के दादा हज़रत इस्हाक़ अलैहिस्सलाम से याकूब अलैहिस्सलाम के दादा हज़रत इब्राहीम ख़लीलुल्लाह अलैहिस्सलाम ज़्यादा शान वाले हैं।

और याकूब अलैहिस्सलाम बाप हैं जब कि यूसुफ़ अलैहिस्सलाम बेटे हैं।

इन वजूह के पेशे नज़र अक़्ल का तक़ाज़ा यह है कि बेटा बाप को सज्दा करे, बाप का बेटे को सज्दा करने का क्या मतलब?

जवाब : हज़रत अता की रिवायत से हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु का क़ौल ब्यान किया गया है कि आयत करीमा का मायने यह है:

यूसुफ़ अलैहिस्सलाम से मुलाक़ात होने की वजह से अल्लाह तआला को सबने सज्दा किया।

यानी यह सज्दा दर हक़ीक़त अल्लाह तआला को था, रब का शुक्रिया अदा किया गया कि यूसुफ़ अलैहिस्सलाम मिल गये हैं क्योंकि यह सज्दा तख़्त पर बैठने के बाद किया गया। अगर यूसुफ़ अलैहिस्सलाम को सज्दा किया जाता तो तख़्त पर बैठने से पहले सज्दा किया जाता, या यह कहा जायेगा कि हज़रत याकूब अलैहिस्सलाम ने सज्दा तो यूसुफ़ अलैहिस्सलाम को ही किया हो लेकिन इसलिये कि हो सकता है कि भाई सज्दा न करें, आप के सज्दा करने पर सब भाईयों ने सज्दा कर लिया। या यह कि सज्दा करने में यूसुफ़ अलैहिस्सलाम तो रज़ामंद नहीं थे कि मुझे मेरे बाप सज्दा करें लेकिन अल्लाह तआला का हुक्म था उसके हुक्म में जो हिकमतें होती हैं वह ख़ुद ही उन्हें जानता है जैसे उसने फ़रिश्तों को हुक्म दिया कि आदम अलैहिस्सलाम को सज्दा करो इसमें जो हिकमतें पाई जाती हैं हक़ीक़त में वह ख़ुद ही जानता है।

यूसुफ़ अलैहिस्सलाम ने भाईयों का कितना ख्याल रखा : यूसुफ़ अलैहिस्सलाम ने यह नहीं फ़रमाया कि भाईयों ने मुझ पर ज़ुल्म किया था, ज़्यादतियां की थीं बल्कि यह कहा मेरे और मेरे भाईयों के दर्मियान जो नाचाक़ी हुई वह शैतन की तरफ़ से पैदा करदा इख़्तेलाफ़ात थे, दिल में ज़रा भर कदूरत नहीं रखी, भाईयों से कोई इख़्तेलाफ़ न रखा बल्कि भाईयों से मुलाक़ात मुहब्बत व उल्फ़त को अल्लाह तआला का एहसान क़रार दिया।

सुबहानल्लाह यह अज़मत किसी नबी को ही हासिल हो सकती है हमारे जैसा गुनाहगार इंसान इस क़िस्म की फ़राख़ दिली और दर गुज़र करने का तसव्वुर भी नहीं कर सकता।

यूसुफ़ अलैहिस्सलाम ने अपने वालिद मुकर्रम को शाही मक़ामात दिखाए : हज़रत यूसुफ़

अलैहिस्सलाम ने अपने वालिद मुकर्रम का हाथ पकड़ा और तमाम ख़ज़ानों के मक़ामात दिखाए सोने के ख़ज़ाने चांदी के ख़ज़ाने, ज़ेवरात के ख़ज़ाने, कपड़ों के ख़ज़ाने, और हथियारों के मक़ामात दिखाये। आख़िर में जब आपने अपने बाप को काग़ज़ात वाला मक़ाम दिखाया तो याकूब अलैहिस्सलाम ने कहा ऐ मेरे प्यारे बेटे! इतने काग़ज़ात तुम्हारे पास मौजूद थे तुमने इतने फ़ासले से मुझे ख़त भी नहीं लिखा। आप अलैहिस्सलाम ने अर्ज़ किया मुझे जिब्राईल अलैहिस्सलाम ने मना किया था। याकूब अलैहिस्सलाम ने कहा इससे पूछिये कि उसने तुम्हें क्यों मना किया था? यूसुफ़ अलैहिस्सलाम ने कहा आपका ताल्लुक़ जिब्राईल से ज़्यादा है आप ख़ुद ही पूछ लीजिये जब आप अलैहिस्सलाम ने पूछा कि तुम ने क्यों मना किया था? तो जिब्राईल ने अर्ज़ किया कि आपने ख़ुद ही तो कहा था:

मुझे ख़ौफ़ है उसे भेड़िया खा जायेगा।

यानी आपकी ज़बान से निकले हुए अल्फ़ाज़ को ही आपके बेटों ने इस्तेमाल किया और सब से बड़ी वजह तो इम्तेहान था, चूंकि अंबियाए किराम की शान बहुत बुलंद व बाला होती है इसलिये उन पर इम्तेहान भी इसी तरह के बहुत बड़े आते हैं जैसी उनकी शान होती है।

याकूब अलैहिस्सलाम की वफ़ात और क़ब्र : मिस्र में जाकर याकूब अलैहिस्सलाम चौबीस साल मुक़ीम रहे, जब आपकी वफ़ात का वक़्त क़रीब आ गया तो आपने अपने बेटों को वसीयत की कि मुझे शाम में अपने बाप हज़रत इस्हाक़ अलैहिस्सलाम के पहलू में दफ़न करना, आप पर जब वफ़ात तारी हुई तो हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम ख़ुद अपने वालिद मुकर्रम का जिस्मे अतहर लेकर शाम में गये और अपने दादा इस्हाक़ अलैहिस्सलाम के पहलू में अपने बाप याकूब अलैहिस्सलाम को दफ़न करके वापस मिस्र में आ गये।

ख़्याल रहे कि याकूब अलैहिस्सलाम के एक भाई का नाम अइस था यह दोनों भाई एक साथ पैदा हुए थे और उसी दिन उनकी भी वफ़ात हुई, दोनों भाईयों की उम्रें १४५ साल थीं। दोनों ही अपने बाप इस्हाक़ अलैहिस्सलाम के पहलू में एक साथ दफ़न किये गये याकूब अलैहिस्सलाम का ताबूत ख़ास क़िस्म की लकड़ी का बनावाया गया था जिसमें मिस्र से शाम आपको लेकर गये थे।

यूसुफ़ अलैहिस्सलाम की वफ़ात : हज़रत याकूब अलैहिस्सलाम के बाद २३ साल आप ज़ाहिरी हयात में रहे जब आपकी वफ़ात का वक़्त क़रीब आ गया तो आप आख़रत की तरफ़ ज़्यादा मुतावज्जेह रहने लगे दाइमी मुल्क की तरफ़ जाने का इश्तेयाक़ ज़्यादा होने लगा रब के हुज़ूर अर्ज़ किया:

ऐ मेरे रब तूने मुझे एक सल्तनत दी और मुझे कुछ बातों का अंजाम निकालना सिखाया। ऐ आसमानों और ज़मीन के बनाने वाले तू मेरा काम बनाने वाला है दुनिया और आख़रत में मुझे मुसलमान उठा और उनसे मिला जो तेरे कुर्बे ख़ास के लायक़ हैं।

बज़ाहिर यह मालूम होता है कि आपने मौत की तमन्ना की हालांकि मौत की तमन्ना जायज़ नहीं तो इसका मतलब असल में यह है कि जब आप को बज़रिये वही मालूम हो गया कि अब आपके जाने का वक़्त क़रीब आ चुका है तो आप अलैहिस्सलाम ने यह दुआ की कि ऐ अल्लाह मुझे अपने ख़ास कुर्ब वाले लोगों के साथ मिला इस दुआ का ताल्लुक़ मौत के बाद अल्लाह तआला के मुक़र्रबीन से लाहक़ होने के साथ है, दर हक़ीक़त मौत की दुआ नहीं।

यूसुफ़ अलैहिस्सलाम की क़ब्र : आपकी वफ़ात के बाद मिस्री लोगों में तनाज़ा हो गया हर एक की

ख़्वाहिश थी कि आप हमारे मुहल्ले में दफ़न किये जायें ताकि आपसे बर्कत हासिल कर सकें।

करीब था कि उनके दर्मियान लड़ाई भड़क उठे, आख़िरकार कुछ लोगों ने मिलकर फ़ैसला किया कि आप को संगे मर मर के संदूक़ में बंद करके दरियाए नील में दफ़न किया जाये ताकि इस पानी से तमाम शहर वाले एक जैसी बर्कत हासिल करें।

हज़रत अकरमा रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं पहले आप को दरियाए नील की दायें जानिब दफ़न किया गया तो उस तरफ़ का इलाक़ा सर सब्ज़ व शादाब रहने लगा और दूसरी जानिब ख़ुश्क, फिर आपके संदूक़ को निकालकर नील की बायें जानिब दफ़न कर दिया गया अब उस तरफ़ ख़ुशहाली का दौर आ गया और दूसरी जानिब ख़ुश्की रहने लगी। फिर आपको दरियाए नील के दर्मियान दफ़न किया गया यहां तक कि दोनों जानिबें सर सब्ज़ व शादाब हो गई। आपका जिस्म अतहर इसी तरह दरियाए नील के दर्मियान में रहा, चार सौ साल बाद जब मूसा अलैहिस्सलाम ने बनी इस्राईल को साथ लेकर मिस्र से रवानगी इख़्तेयार की तो आपके जिस्म अतहर को भी साथ ले गये यहां तक कि शाम में अपने आबा के साथ दफ़न कर दिया गया।

सुबहानल्लाह उन लोगों के कैसे पाकीज़ा अक़ीदे थे? कि उन्हें मालूम था कि नबी की ज़ाहिर हयात में जिस तरह नबी से बर्कत हासिल की जाती है उसी तरह दुनिया से रुख़सत होने के बाद भी उससे बर्कत हासिल होती है। यूसुफ़ अलैहिस्सलाम की क़ब्र की बर्कत से ख़ुशहाली हासिल होती रही।

हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम की औलाद : आपकी वफ़ात के वक़्त आप के पसमांदगान में दो बेटे और एक बेटी थी एक बेटे का नाम अफ़राईम और दूसरे का नाम मीशा था। अफ़राईम के बेटे का नाम नून और नून के बेटे का नाम यूशअ था जो मूसा अलैहिस्सलाम के ज़माने तक ज़िन्दा रहे और दरियाई सफ़र में उनके साथ रहे। यानी हज़रत ख़िज़्र अलैहिस्सलाम की मुलाक़ात के लिये जाते हुए मूसा अलैहिस्सलाम ने अपने साथ यूशअ बिन नून को रखा था। आप अलैहिस्सलाम की बेटी का नाम रहमा था जो हज़रत अय्यूब के निकाह में आई थीं।

यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के दुनिया से तशरीफ़ ले जाने के बाद मिस्र की हुकूमत बनी अमालक़ा के हाथ में आ गई मूसा अलैहिस्सलाम के ज़माने तक बनी इस्राईल उनके ज़ेरे तसल्लुत रहे हैं। हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने आकर उन्हें नजात दिलाई।

यह वह ग़ैबी ख़बरें थीं जो अल्लाह ने हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को अता कीं और इरशाद फ़रमाया:

यह कुछ ग़ैब की ख़बरें हैं जो हम तुम्हारी तरफ़ वही़ करते हैं।

ज़िद और अनाद ने लोगों को समझने से यकसर आरी कर दिया है अल्लाह तआला ने तो वाज़ेह तौर पर कह दिया है कि यह ग़ैबी खबरें हैं जो हम तुम्हारी तरफ़ वही़ करते हैं लेकिन यार लोगों ने कहा नहीं जो अल्लाह वही़ के ज़रिये बता दे वह ग़ैब नहीं रहता ख़ुदारा इंसाफ़ करें कि बात रब तआला की मानें या उसकी मख़लूक़ में से ज़िद्दी जुहला की मानें। किसी एक बड़े ने कह दिया कि जब वही़ आ जाये तो वह ग़ैब नहीं रहता तो उसके चेले भी यही राग अलापने लगे ख़ुद सोचने और समझने की तकलीफ़ बर्दाश्त न की कि यहां हमारे बड़े साहब से ग़लती हो गई है।

हज़रत हूद अलैहिस्सलाम

हज़रत हूद अलैहिस्सलाम आद क़बीला से हैं। इसी क़बीला को आद औला कहा गया है और आदे सानिया हज़रत सालेह अलैहिस्सलाम की कौम को कहा जाता है जो कौमे समूद के नाम से ज़्यादा मश्हूर है। हज़रत नूह अलैहिस्सलाम की औलाद में से एक शख़्स का नाम आद था उसकी तरफ़ मंसूब होने वाली कौम को आद कहा गया है।

आद का नसब यह है : आद बिन औस बिन इरम बिन साम बिन नूह।

हज़रत हूद अलैहिस्सलाम का नस्ब है।

हूद बिन अब्दुल्लाह बिन रिबाह बिन खुलूद बिन आद है।

इसी वजह से अल्लाह तआला का फ़रमाया:

हमने कौम आद की तरफ़ उनके हम कौम हूद को भेजा।

यहां कई तर्जमा करने वालों ने अख़ाहिम का तर्जमा उनका भाई किया है। जो सरासर ग़लत है। पूरी कौम के अफ़राद आपके हक़ीक़ी भाई भी नहीं थे और अल्लाह तआला का नबी कुफ़्फ़ार का दीनी भाई भी नहीं हो सकता। आप अलैहिस्सलाम सिर्फ़ उनकी कौम के एक फ़र्द थे इसी वजह से आला हज़रत मौलाना अहमद रज़ा ख़ां बरेलवी ने तर्जमा हम कौम किया है। और यही अल्लामा राज़ी रहमतुल्लाह अलैहि की तहक़ीक़ है।

हज़रत हूद अलैहिस्सलाम को आद का हम कौम और सालेह अलैहिस्सलाम को समूद का हम कौम कहकर कुफ़्फ़ारे मक्का का रद्द किया जो यह कहते थे कि मुहम्मद हमारी ही कौम से होकर नबी कैसे बन गये? रब तआला ने फ़रमाया कौम आद से हूद अलैहिस्सलाम थे लेकिन उनके नबी थे, समूद की कौम से सालेह अलैहिस्सलाम थे लेकिन उनके नबी थे।

हज़रत हूद अलैहिस्सलाम की आमद व रफ़्त : हज़रत हूद अलैहिस्सलाम नूह अलैहिस्सलाम से आठ सौ साल बाद तशरीफ़ लाए और चार सौ चौंसठ साल इस दुनिया में ज़ाहिरी हयात में रहे और फिर इस दुनियाए फ़ानी से रहलत फ़रमाई और हयाते जाविदानी हासिल की।

हज़रत हूद अलैहिस्सलाम ने कौम को क्या तबलीग़ फ़रमाई? कहा ऐ मेरी कौम अल्लाह की बंदगी करो उसके सिवा तुम्हारा कोई माबूद नहीं तो क्या तुम्हें डर नहीं।

आप अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया: क्या-तुम्हें डर नहीं, यानी आपने उनके डरने को बईद समझा और गोया यह कहा कि तुम डरते ही नहीं हो। हज़रत नूह अलैहिस्सलाम की कौम को अज़ाब दिया जा चुका है, जिसका तुम्हें इल्म है अगर तुम्हें कुछ अल्लाह तआला के अज़ाब का डर और ख़ौफ़ होता तो ज़रूर तुम अल्लाह तआला पर ईमान ले आते, बुत परस्ती की हिमाक़त न करते।

कहा ऐ मेरी कौम! अल्लाह की इबादत करो उसके सिवा कोई माबूद नहीं सिर्फ़ इफ़तरा बांधने वाले हो। ऐ कौम मैं इस पर तुम से कोई उजरत नहीं मांगता मेरा अज्र तो उसी के ज़िम्मे है जिसने मुझे पैदा किया है तो क्या तुम्हें अक़्ल नहीं और मेरी कौम अपने रब से माफ़ी चाहो फिर उसकी तरफ़ रुजू करो तुम पर ज़ोर की बारिश बरसाएगा इससे ज़्यादा देगा और जुर्म करते हुए रू गरदानी न करो।

हज़रत हूद अलैहिस्सलाम की कौम बुत परस्त थी खुसूसन उनके तीन बड़े बुत थे जिनको वह

अपने बड़े माबूद समझते थे उन बुतों के नाम सदा, समूद और हवा थे हज़रत हूद अलैहिस्सलाम की क़ौम अमान और हिज़्र मौत के दर्मियान फैली हुई थी यह एक रेगिस्तानी वादी थी जिसका ज़िक्र कुरआन पाक में इस तरह ब्यान किया गया है।

और याद करो आद के हम क़ौम को जब उसने इनको सर ज़मीने एहक़ाफ़ में डराया।

हूद अलैहिस्सलाम ने जब उनको अक्सर शिर्क से बाज़ हरने बुत परस्ती को छोड़ने और अल्लाह तआला की वहदानियत पर ईमान लाने की दावत दी तो क़ौम ने आपकी तकज़ीब की तो अल्लाह तआला ने उनसे तीन साल तक बारिश रोक ली, क़हत साली पड़ गई, उनकी औरतों को भी तीन साल तक बांझ कर दिया उनके बच्चों की पैदाईश मोअत्तल हो गई।

हूद अलैहिस्सलाम ने तीन शख़्सों को अपनी क़ौम के पास भेजा कि तुम उन्हें समझाओ वह तीन शख़्स यह थे क़ील बिन अश्र, नुऐम बिन हज़ाल और मुदस्सिर बिन सअद। यह दरहक़ीक़त आप पर ईमान लाये हुए थे लेकिन अपनी क़ौम से ईमान को छुपाया हुआ था, इन तीनों को भेजने का मक़सद यही था कि क़ौम उन्हें अपना समझकर उनकी बात को मानेगी और सोचेंगे कि यह हमारे अपने ही लोग हमें नसीहत कर रहे हैं तो यक़ीनन इसमें भलाई होगी लेकिन क़ौम सोचने और मोनने से आरी ही रही।

आपने क़ौम को इन तीनों के ज़रिये कहलाया कि अल्लाह तआला पर ईमान लाओ रब तआला से मग़्फ़िरत तलब करो और अल्लाह तआला की तरफ़ ख़ुशू व ख़ुजू से रुजू करो, तो अल्लाह तआला तुम्हें ज़ोर की बारिश अता करेगा और तुम्हें कसीर माल अता करेगा और तुम्हें बेटे अता करेगा और तुम्हारे लिये बारिश से नहरें और बाग़ात बनायेगा और तुम्हें पहले से ज़्यादा ताक़तवर बनायेगा।

अल्लाह तआला ईमान वालों को दीनी और दुनियावी नेमतें अता फ़रमाता है अगरचे दुनियावी नेमतों की कोई हैसियत नहीं लेकिन इंसानी फ़ितरत है कि वह दुनिया में रहने और दुनियावी नेमतों को देखने की वजह से उनकी तरफ़ ज़्यादा रग़बत करता है और चूंकि वह लोग खेती बाड़ी और बाग़बानी के काम करते थे इसलिये उनके लिये इसी क़िस्म की नेमतों का ज़िक्र करना ही मुनासिब था। हूद अलैहिस्सलाम ने क़ौम को इन अल्फ़ाज़ में राहे रास्त पर लाने की कोशिश की।

अल्लाह से डरो और मेरा हुक्म मानो और उससे डरो जिसने तुम्हारी मदद की उन चीज़ों से कि तुम्हें मालूम हैं, तुम्हारी मदद की चौपाओं और बेटों और बाग़ों और चश्मों से, मैं तुम्हें अल्लाह के रास्ते की दावत देता हूं और यह कहता हूं बेहूदा कामों को छोड़ दो, दुनिया से दिल न लगाओ तुम को यहां हमेशा ज़िन्दा नहीं रहना, ऐसे काम करो जिनसे तुम्हें नफ़ा हो।

क़ौम आद की ताक़त और उनके काम : क़ौम आद को अपनी ताक़त पर बड़ा नाज़ था वह यह कहते थे कि हम से बढ़कर कोई ताक़तवर नहीं हो सकता।

वह जो आद थे उन्होंने ज़मीन में नाहक़ तकब्बुर किया और बोले हम से ज़्यादा किस का ज़ोर है और क्या उन्होंने न जाना कि अल्लाह जिस ने उन्हें बनाया उनसे ज़्यादा क़वी है और हमारी आयतों का इंकार करते थे।

क़ौम आद ने छोटे क़द साठ ज़राअ (नव्वे फ़िट) और बड़े क़द सौ ज़राअ (एक सौ पचास फ़िट) थे, इसी वजह से अपने जिस्मों और ताक़त के घमंड में यह कहते थे कि हम से कोई ताक़तवर नहीं। हम पहाड़ से बड़े बड़े पत्थर, चट्टानें उठाकर एक जगह से दूसरी जगह ले जाते हैं, अगर अज़ाब हमारे

सामने आ गया तो हम उसे अपने हाथों से रोक लेंगे। अल्लाह तआला ने फ़रमाया तुम अपनी ताक़त पर नाज़ करते हो कभी मेरी ताक़त को भी तसव्वुर में लाया करो, मेरी ताक़त के मुक़ाबिल किसी को कोई मजाल नहीं।

लोगों के साथ तमस्खुर के लिये बुलंद निशान बनाते : क्या हर बुलंदी पर एक निशान बनाते हो राहगीरों से हंसने को।

इस आयते करीमा की तफ़सीर में मुख़्तलिफ़ अक़वाल हैं।

एक यह है कि वह बुलंदी पर बुलंद महल बनाते ताकि गुज़रने वाले लोग उनकी शान से वाक़िफ़ हों, यह काम चूंकि बे फ़ायदा था इसलिये ता बिसून कहा गया है और हमारी शरीअत में भी बग़ैर ग़र्ज़े शरई के बुलंद तामीरात की मज़म्मत ब्यान की गई है और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने नापसंद फ़रमाया।

दूसरा क़ौल यह है कि वह बुलंद इमारतें इसलिये तामीर करते थे ताकि गुज़रने वाले उनसे रहनुमाई हासिल करें, हालांकि उनका यह काम भी बे मक़सद और बे फ़ायदा था क्योंकि सितारों सूरज वग़ैरह से रहनुमाई हासिल की जाती है। बादल वग़ैरह का छा जाना कभी कभी होता है और ख़ुसूसन अरब के शहरों में तो बहुत ही कम वाक़ेय होता है।

तीसरा क़ौल यह है कि वह बुलंद ब्रिज बनाते ताकि कबूतरों के साथ खेल में मश्गूल हो सकें; यानी वह कबूतर बाज़ी के लिये अबस तौर पर बुलंद ब्रिज तामीर करते।

चौथा क़ौल यह है कि वह पहाड़ में रास्ता पर मकान तामीर करते थे ताकि चूंगी हासिल कर सकें।

पांचवा क़ौल यह है कि वह बुलंद मक़ामात पर बुलंद इमारतें तामीर करते थे ताकि वह रास्ते से गुज़रने वालों से मज़ाह कर सकें, उनका तमसखुर उड़ा सकें इसी आख़िरी क़ौल के मुताबिक़ आला हज़रत मौलाना इमाम अहमद रज़ा ख़ां ने तर्जमा किया है।

रहने के लिये मज़बूत महल बनाते : हज़रत हूद अलैहिस्सलाम ने क़ौम को समझाया कि तुम्हारे तौर तरीक़े ऐसे हैं कि तुम यह समझते हो तुम को हमेशा दुनिया में रहना है हालांकि दुनिया फ़ानी है इसमें हमेशा के लिये दिल न लगाओ।

और मज़बूत महल चुनते हो इस उम्मीद पर कि तुम हमेशा रहोगे।

एक मायने इसका यह भी है और तुम ज़मीन में जमा करने के लिये हौज़ बनाते हो यह सारे काम इसी ख़्याल से करते थे कि हम को दुनिया में हमेशा रहना है।

दूसरे लोगों पर ज़ुल्म करते : और जब किसी पर गिरफ़्त करते हो तो बड़ी बे दर्दी से गिरफ़्त करते हो।

वह जब किसी पर गिरफ़्त करते तो उसे कोड़े मारते और तलवार से ज़र्ब लगाते या ज़ालिमों को इन पर मुसल्लत करते, जिन्हें कुछ रहम न आता और अदब सिखाने का इरादा भी नहीं होता था और अच्छे अंजाम की तरफ़ भी नज़र नहीं होती थी। इन अफ़आले क़बीहा पर हज़रत हूद अलैहिस्सलाम ने क़ौम की मज़म्मत की।

फ़ायदा : अदब सिखाने के लिये, अच्छे अंजाम के लिये उस्ताद का शागिर्द को मामूली मारना, सरज़निश करना जायज़ है, शैख़ सअदी फ़रमाते हैं उस्ताद की मार मां–बाप के प्यार से बेहतर है।

लेकिन कौम के बच्चों को अपने बच्चों जैसा समझे। यह ख़्याल करे कि मैं अपने बच्चों को कितनी सरज़निश करता हूं। कई कई घंटे तलबा को कान पकड़कर मुर्ग़ बना देना, इतना शदीद मारना कि ज़ख़्मी कर देना, सोटियों से शदीद ज़र्ब लगाना, कई कई घंटे क्लास में खड़ा कर देना, बेहूदा गाली निकालना उस्ताद की शान के लायक़ नहीं। ऐसे अफ़आल सिर्फ़ तलबा को मदारिस से भगाने और दीन से मुतनफ़्फ़िर करने और उस्ताद के अदब व एहतेराम से दूर करने के लिये किये जाते हैं। ऐसे असातज़ा को तलबा क़साब, कमीना जैसे अलक़ाब देते हैं जिनको राक़िम ने अपने कानों से सुना। ऐसा बेहूदा उस्ताद हज़ार में से एक होता है। लेकिन वह तमाम असातज़ा की बदनामी का सबब बनता है और दीन के बाग़ी उस एक शख़्स की वजह से दीनी मदारिस को ख़रकार कैम्प कहते हैं हालांकि इस क़िस्म का उस्ताद स्कूलों में भी कोई न कोई पाया जाता है बल्कि बनिस्बत दीनी मदारिस के स्कूलों में इस क़िस्म के ज़ालिम ज़्यादा होते हैं।

डंडे से मारना नाजायज़ है: बच्चे जब दस साल के हो जायें तो नमाज़ न पढ़ने की सूरत में उनको हाथ से मारना ज़रूरी है लेकिन डंडे या कोड़े से मारना नाजायज़ है नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया जब तुम्हारे बच्चे सात साल के हो जायें तो उन्हें नमाज़ का हुक्म दो और जब दस साल के हो जायें तो उन्हें मारो। (यानी अगर वह नमाज़ न पढ़ें)

हज़रत अल्लामा शामी रहमतुल्लाह अलैहि कहते हैं यह मारना भी हाथ से मुराद है और वह भी दो तीन थप्पड़ से ज़्यादा न हों उस्ताद के लिये भी यही हुक्म है नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने बच्चों को पढ़ाने वाले एक उस्ताद मर्द से कहा कि तुम तीन ज़रबों (थप्पड़) से ज़्यादा मारने से अपने आपको दूर रखो अगर तुमने तीन मर्तबा से ज़्यादा मारा तो अल्लाह तआला तुम से बदला लेगा।

शैख़ सअदी फ़रमाते हैं:

सख़्ती और नर्मी दोनों को साथ साथ रखना ही बेहतर है पिछुवा लगाने वाला ज़ख़्म भी करता है और मरहम भी लगाता है अक़्लमंद बहुत ज़्यादा सख़्ती भी नहीं करता और इतनी नर्मी भी नहीं करता कि उसकी क़द्र व मंज़िलत ही कम हो जाये। अपने आपको बहुत ज़्यादा आदमख़ोर भी नहीं बनाना चाहिये और बहुत ज़्यादा नर्म होकर अपने आपको ज़लील भी न करो। उस्ताज़ के लिये यही एक आला सबक़ है कि डराए धमकाए सरज़निश करे एहसास दिलाए और शफ़क़त भी करे। अपना रोब जमाने के ज़ोअमे बातिल में तलबा की नज़रों से न गिर जाये और उनकी दर परदा गालियों का मुस्तहिक़ न बन जाये।

हूद अलैहिस्सलाम की कौम के जवाबात : उनकी कौम के काफ़िर सरदार बोले बेशक हम तुम्हें बेवक़ूफ़ समझते हैं और बेशक हम तुम्हें झूठों में गुमान करते हैं।

नुक्ता : नूह अलैहिस्सलाम की कौम का ज़िक्र करते हुए फ़रमायाः

उसकी कौम के सरदार बोले बेशक हम तुम्हें खुली गुमराही में देखते हैं।

नूह अलैहिस्सलाम की कौम के तमाम सरदार ही काफ़िर थे इसलिये यहां लफ़्ज़ 'कफ़रू' इस्तेमाल नहीं हुआ लेकिन हूद अलैहिस्सलाम की कौम में बाज़ सरदार दरपर्दा ईमान भी लाये हुए थे। इसलिये 'कफ़रू' इस्तेमाल हुआ है यानी आपकी कौम के काफ़िर सरदारों ने कहा इसी तरह नूह अलैहिस्सलाम की कौम ने जब देखा कि यह कश्ती बना रहे हैं तो कौम ने आपको ज़लालिम मुबीन से ताबीर किया

कि कोई पानी नहीं कोई कीचड़ नहीं यहां कश्ती बनाना खुली गुमराही है। लेकिन हूद अलैहिस्सलाम ने उनकी बुत परस्ती को सफ़ाहत व हिमाक़त से ताबीर किया था तो क़ौम ने भी कहाः

हम तुम्हें बेवक़ूफ़ समझते हैं।

हूद अलैहिस्सलाम ने क़ौम का रद करते हुए फ़रमायाः

ऐ मेरी क़ौम मुझे बेवक़ूफ़ी से क्या इलाक़ा मैं तो परवर्दिगारे आलम का रसूल हूं।

मैं तुम्हें अपने रब के पैग़ामात पहुंचाता हूं और तुम्हारा मुतमिद ख़ैर ख़्वाह हूं।

अंबियाए किराम को उनकी क़ौमों ने (मआज़ल्लाह) गुमराह और बेवक़ूफ़ कहा लेकिन उन्होंने उनका जवाब इस तरह नहीं दिया बल्कि तहम्मुल मिज़ाजी से और हुस्ने अख़लाक़ से उन्हें राहे रास्त पर लाने की कोशिश की क्योंकि अंबियाए किराम की शान के लायक़ ही यह है कि वह बेहूदा बातों का जवाब उसी तरह न दें, हालांकि जितनी गाली किसी शख़्स को दी जाये उतना जवाब देना जायज़ होता है। लेकिन अंबियाए किराम की शान बहुत बुलंद होती है उनका हर कलाम उनकी शान के लायक़ होता है। हज़रत हूद अलैहिस्सलाम ने क़ौम को सीधी राह पर लाने की हर तरह कोशिश की लेकिन क़ौम ने हमेशा कज रवी की।

क़ौम ने कहा ऐ हूद अलैहिस्सलाम तुम कोई दलील लेकर हमारे पास न आये और हम ख़ाली तुम्हारे कहने से अपने ख़ुदाओं को छोड़ने वाले नहीं न तुम्हारी बात पर यक़ीन लाने वाले हैं हम तो यही कहते हैं कि हमारे किसी ख़ुदा की तुम्हें बुरी झपट पहुंची है।

क़ौम ने किज़्ब ब्यानी करते हुए कहा तुम हमारे पास मोजिज़ात और दलाइल नहीं लाए जिससे हक़ व बातिल में तमीज़ हो सके।

यह बात यक़ीनन मालूम है कि हूद अलैहिस्सलाम ने मोजिज़ात ज़ाहिर फ़रमाए मगर क़ौम ने अपनी जहालत के पेशे नज़र उनका इंकार किया और गुमान किया कि आप कोई मोजिज़ात नहीं लाये।

क़ौम ने कहा कि हम तुम्हारे कहने पर अपने माबूदों को छोड़ने वाले नहीं यह उनका कहना इसलिये बातिल था कि वह इसका इक़रार भी करते थे कि नफ़ा व नुक़्सान सिर्फ़ अल्लाह तआला ही के क़ब्ज़ए क़ुदरत में है यह बुत नफ़ा व नुक़्सान के मालिक नहीं, इस पर तो अक़्ल का तक़ाज़ा यह था कि बुत परस्ती को छोड़ देते, उनका बुत परस्ती को न छोड़ना अक़्ल के ख़िलाफ़ था, जो ख़ुद ही उनकी हिमाक़त को वाज़ेह कर रहा था उनका यह कहना कि हम तुम पर ईमान लाने वाले नहीं, यह सिर्फ़ ज़िद और हसद व अनाद था। वरना बज़ाहिर इंकार की कोई वजह न थी। क़ौम का यह कहना कि हमारे माबूदों की बुराई तुम ब्यान करत हो उन्होंने तुम्हें (मआज़ल्लाह) दीवाना बना दिया है तुम्हारी अक़्ल को ज़ाया कर दिया है, यह भी उनकी हिमाक़त को वाज़ेह कर रहा था कि इधर यह कहते कि बुत नफ़ा व नुक़्सान के मालिक नहीं और उधर कहते हमारे बुतों ने तुम्हें मुसीबत पहुंचा दी है।

हूद अलैहिस्सलाम का क़ौल को चैलेंज : आपने कहा मैं अल्लाह को गवाह करता हूं और तुम सब गवाह हो जाओ कि मैं बेज़ार हूं उन सबसे जिन्हें तुम अल्लाह के सिवा शरीक ठहराते हो तुम सब मिलकर मेरा बुरा चाहो फिर मुझे मोहलत न दो मैंने अल्लाह पर भरोसा किया जो मेरा रब है और तुम्हारा

रब, कोई चलने वाला नहीं जिसकी चोटी उसके क़ब्ज़ए कुदरत में न हो, बेशक मेरा रब सीधे रास्ते पर मिलता है।

हज़रत हूद अलैहिस्सलाम का यह बहुत बड़ा मोजिज़ा है कि एक शख़्स बहुत बड़ी क़ौम का मुक़ाबला कर रहा है उन्हें कह रहा है कि तुम तमाम मिलकर मेरी अदावत में कोई कसर बाक़ी न छोड़ो, मुझे नुक़्सान पहुंचाने में अपनी पूरी कोशिश कर लो, मुझे कोई मोहलत न दो, मुझे तुम्हारा कोई ख़ौफ़ व ख़तरा नहीं, मुझे तो अपने रब पर पूरा भरोसा है वही मेरा मुहाफ़िज़ है वही मुझे बचाने वाला है। सारी मख़लूक़ उसी के क़ब्ज़ए कुदरत में है किसी को ज़ात बारी से मुक़ाबला करने की कोई ताक़त नहीं।

हूद अलैहिस्सललाम ने कौम को अज़ाब से डराया : जब हूद अलैहिस्सलाम ने अपनी क़ौम को सीधी राह पर लाने की पूरी कोशिश सर्फ़ कर दी लेकिन क़ौम ने बुत परस्ती को न छोड़ा तो आप ने कहा ऐ मेरी क़ौम अब अल्लाह तआला के अज़ाब का इंतज़ार करो।

फिर अगर तुम मुंह फेरो तो मैं तुम्हें पहुंचा चुका जो तुम्हारी तरफ़ देकर भेजा गया और मेरा रब तुम्हारी जगह औरों को ले आएगा और तुम उसका कुछ न बिगाड़ सकोगे, बेशक मेरा रब हर शय पर निगहबान है।

आप अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया मैंने अल्लाह तआला के पैग़ामात तुम तक पहुंचा दिये हैं तुम्हें कामयाबी का रास्ता बता दिया है लेकिन तुमने अपनी ज़िद न छोड़ी बुत परस्ती पर क़ायम रहे अब रब का अज़ाब आने वाला है जो तुम्हें तबाह व बर्बाद कर देगा अगर तुम चाहो कि उसके अज़ाब का मुक़ाबला करो तो तुम ऐसा कभी नहीं कर सकोगे वह तो तुम्हें बरबाद कर देगा लेकिन तुम उसका कुछ न बिगाड़ सकोगे और तुम्हें बर्बाद करने से उसकी बादशाहत में कोई फ़र्क़ नहीं आयेगा इसलिये कि वह कुदरत का मालिक है तुम्हारी जगह वह नई मख़लूक़ पैदा फ़रमा देगा जो उसकी इताअत करेंगे उसके हुक्म की बजा आवरी में कोई कमी नहीं होने देंगे।

बेशक मुझे तुम पर डर है एक बड़े दिन के अज़ाब का।

यानी दुनिया में भी तुम पर शदीद अज़ाब आयेगा और आख़ेरत में तुम शदीद अज़ाब में गिरफ़्तार होगे, इसलिये कि जिस तरह रब की नेमतों का शुक्रिया अदा करना नेमतों की ज़्यादती का सबब बनता है उसी तरह अल्लाह तआला की नेमतों का कुफ़रान शदीद अज़ाब का ज़रिया है।

रब तआला ने इरशाद फ़रमायाः

अगर तुमने शुक्रिया अदा किया तो मैं तुम्हें और (नेमतें) दूंगा और अगर ना शुक्री करोगे तो मेरा अज़ाब सख़्त है।

अज़ाब का ख़ौफ़ दिलाने पर क़ौम का जवाब : उन्होंने कहा हमें बराबर चाहे तुम नसीहत करो या नसीहत करने वालो में न हो, यह तो नहीं मगर वह अगलों की रीत (तौर तरीक़ा) और हमें अज़ाब होना ही नहीं।

क़ौम ने कहा हमें तुम्हारे अज़ाब के ख़ौफ़ दिलाने की कोई फ़िक्र नहीं हम तुम्हारे वअज़ से नसीहत हासिल करने वाले नहीं तुम भी पहले नबीयों की तरह ही हमें अज़ाब से डरा रहे हो यह तो साबिक़ा रस्म आ रही है हम बड़ी ताक़त के मालिक हैं हमें अज़ाब कुछ नुक़्सान नहीं पहुंचा सकता।

क़ौम ने अज़ाब को रहमत समझा : फिर जब उन्होंने अज़ाब को देखा बादल की तरह आसमान

के किनारे फैला हुआ उनकी वादियों की तरफ़ आता बोले यह बादल है कि हम पर बरसेगा बल्कि यह वह है जिसकी तुम जल्दी करते थे एक आंधी हैं जिसमें दर्दनाक अज़ाब हर चीज़ को तबाह कर डालती है अपने रब के हुक्म से तो सुबह रह गये कि नज़र न आते थे मगर उनके सोने के मकान, हम ऐसी ही सज़ा देते हैं मुजरिमों को।

जैसा कि पहले ज़िक्र किया जा चुका है कि कौम आद पर हूद अलैहिस्सलाम की तकज़ीब की वजह से तीन साल तक बारिश को रोक दिया गया था इसलिये जब कौम पर अज़ाब आने का वक़्त आ गया तो अल्लाह तआला ने स्याह बादलों को चलाया जो उनकी वादियों से ज़ाहिर हुए आम तौर पर ऐसे बादलों को मुग़ीस (बारिश बरसाने वाले) कहा जाता है वह लोग वादियों से उठते हुए बादलों को देखकर बड़े ख़ुश हुए कि बारिश बरसाने वाले बादल आ गये हैं अब तीन साला क़हत का दौर ख़त्म होने वाला है।

हज़रत हूद अलैहिस्सलाम ने उन्हें बताया यह तो वही है जिसकी तुम्हें जल्दी पड़ी हुई थी क्योंकि वह कौम कहती थी बेशक अज़ाब ले आओ। इससे पहली आयाते मुबारका में इसी मज़मून का ज़िक्र है।

और याद करो आद के हम कौम (हूद) को जब उसने उनको सर ज़मीन अहक़ाफ़ में डराया और बेशक इससे पहले डर सुनाने वाले (अंबियाए किराम और भी) गुज़र चुके थे और उसके बाद आए कि अल्लाह के सिवा किसी की इबादत न करो, बेशक मुझे तुम पर एक बड़े दिन के अज़ाब का अंदेशा है। उन्होंने कहा क्या तुम इसलिये आए कि हमें हमारे माबूदों से फेर दो? तो हम पर लाओ जिसका हमें वादा देते हो अगर तुम सच्चे हो।

यानी जब कौम ने मुतालबा किया कि तुम जिस अज़ाब के मुताल्लिक़ हमें डराते हो वह बेशक ले आओ अगर तुम अपने दावा में सच्चे हो। वह तो कहते थे अज़ाब आयेगा ही नहीं, अगर आ ही गया तो हम अपनी ताक़त से रोक लेंगे।

कौम आद पर अज़ाब क्या आया? : और आद में जब हम ने उन पर ख़ुश्क आंधी भेजी जिस चीज़ पर गुज़रती उसे गली हुई चीज़ की तरह कर छोड़ती।

लेकिन आद वह हलाक किये गये निहायत सख़्त गरजती आंधी से वह उन पर क़ुव्वत से लगा दी सात रातें और आठ दिन लगातार तो उन लोगों को उनमें गिरे हुए देखो गोया वह खजूर के ढुण्ड गिरे हुए तो तुम उनमें किसी को बचा हुआ देखते हो।

यानी उस कौम पर सात रातें और आठ दिन लगातार शदीद आंधी चली सिर्फ़ इसमें गरज थी बारिश नहीं थी वही लोग जो बादलों को देखकर ख़ुश हो रहे थे और यह कह रहे थे कि अज़ाब तो हम अपनी ताक़त से टाल देंगे जब उन्होंने देखा कि शदीद गरजने वाली आंधी फ़िज़ा में हैवानों और परिन्दों को उड़ा रही है तो यह अपने मकानों में दाख़िल हो गये ताकि उस आंधी की शिद्दत से बच सकें, लेकिन सारे दावे धरे के धरे रह गये। अल्लाह तआला ने उस फ़रिश्ते को हुक्म दिया जो हवायें चलाने पर मुक़र्रर है कि आद की कौम पर अपने हवाओं के ख़ज़ाने से इतनी मिक़दार में हवा खोल दे जितनी मिक़दार एक अंगूठी की होती है। रब तआला के ख़ज़ानों में से यह हवा बज़ाहिर मामूली थी लेकिन दुनिया में हौलनाक तूफ़ान था। तबाहकुन आंधी थी, सबसे पहले एक औरत ने देखा कि हवा में मुझे आग के शोले

नज़र आ रहे हैं, उस हवा ने मकानों के दरवाज़े गिरा दिये।

वह उनके नथुनों में दाख़िल होती और उनकी दुबर से निकल जाती वह हवा उन्हें गिरा रही थी उनकी गर्दनें टूट रही थीं कभी उन्हें ज़मीन से उठाया और फिर नीचे फेंक दिया।

रेत के टीलों में दब जाते, यह सिलसिला सात रातें आठ दिन मुसलसल रहा, किसी वक़्त भी आंधी न रुकी वह सब तबाह व बर्बाद हो गये बड़े बड़े क़दों वाले अपनी ताक़त पर नाज़ करने वाले रब तआला की गिरफ़्त में जब आये तो ऐसे बर्बाद हुए कि मरे हुए यूं नज़र आ रहे थे कि यह खजूरों के तने गिर हुए हैं।

रब की अज़ीम कुदरत का अंदाज़ा कीजिये जहां कुफ़्फ़ार को तबाह व बर्बाद कर दिया वहां हूद अलैहिस्सलाम और उनकी क़ौम को निजात दी। हूद अलैहिस्सलाम ने अपनी क़ौम के इर्द गिर्द ख़त खींच दिया वह शदीद आंधी उन्हें ख़ुशगवार मौसमे बहार की हल्की हल्की ठंडी ठंडी सुहानी हवा महसूस हो रही थी। कुफ़्फ़ार गिर गिर कर तबाह हो रहे थे। उनकी गर्दनें टूट रही थीं। रेत के टीलों में दब रहे थे लेकिन अल्लाह वाले, नबी पर ईमान लाने वाले, उसी आंधी से लुत्फ़ अंदोज़ हो रहे थे। सुबहानल्लाह मौलाए कायनात की कुदरत का इंसान कैसे अंदाज़ा कर सकता था? उसकी हिकमतों से वह ख़ुद ही वाकिफ़ है रब ने इरशाद फ़रमाया:

और जब हमारा हुक्म आया हमने हूद (अलैहिस्सलाम) और उसके साथ के मुसलमानों को अपनी रहमत फ़रमा कर बचा लिया और उन्हें सख़्त अज़ाब से निजात दी।

यानी कुफ़्फ़ार को दुनिया में भी सख़्त अज़ाब में मुब्तला किया और क़यामत में वह शदीद अज़ाब में मुब्तला होंगे मोमिनों को अल्लाह तआला ने दुनिया में भी महफ़ूज़ रखा और क़यामत में भी महफ़ूज़ रखेगा।

नबी की तकज़ीब नबी की गुस्ताख़ी तबाह कुन अज़ाब को दावत देने के मुतरादिफ़ है।

अल्लाह तआला ईमान पर क़ायम व दाइम रहने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाये और अंबियाए किराम की शान में गुस्ताख़ी से बचाए।

हज़रत सालेह अलैहिस्सलाम

हज़रत सालेह अलैहिस्सलाम क़ौमे समूद की तरफ़ आए आप अलैहिस्सलाम भी समूद क़ौम से ही हैं 'समूद' एक शख़्स का नाम था उसकी औलाद क़ौमे समूद कहलाई। समूद का नसब नूह अलैहिस्सलाम से मिलता है। यानी समूद बिन आबिर बिन इरम बिन साम बिन नहू और हज़रत सालेह अलैहिस्सलाम का नसब इस तरह ब्यान किया गया है। सालेह बिन उबैद बिन मासिख़ बिन अब्द बिन जाबर बिन समूद।

और समूद का नसब इस तरह भी ब्यान किया गया है। समूद बिन उबैद बिन औस बिन आद बिन इरम बिन साम बिन नूह यही ज़्यादा सहीह है।

हज़रत सालेह अलैहिस्सलाम और हज़रत हूद अलैहिस्सलाम के दर्मियान एक सौ साल का फ़ासला है यानी सालेह अलैहिस्सलाम हज़रत हूद अलैहिस्सलाम के एक सौ साल बाद तशरीफ़ लाए। हज़रत सालेह अलैहिस्सलाम की उम्र दो सौ अस्सी साल थी।

हज़रत सालेह अलैहिस्सलाम ने क़ौम को फ़रमाया : और समूद की तरफ़ उनके हम क़ौम सालेह को भेजा कहा ऐ क़ौम अल्लाह की इबादत करो उसके सिवा तुम्हारा कोई माबूद नहीं उसने तुम्हें ज़मीन से पैदा किया और उसने तुम्हें बसाया तो उससे माफ़ी चाहो फिर उसकी तरफ़ रुजू लाओ बेशक मेरा रब क़रीब है दुआ सुनने वाला।

जब कि उनके हम क़ौम सालेह ने फ़रमाया क्या डरते नहीं बेशक मैं तुम्हारे लिये अल्लाह का अमानत दार रसूल हूं तो अल्लाह से डरो और मेरा हुक्म मानो और मैं तुम से कुछ इस पर उजरत नहीं मांगता मेरा अज्र तो उसी पर है जो सारे जहान का रब है।

अंबियाए किराम की आदाते शरीफ़ा यह थीं कि जब नबुव्वत का दावा फ़रमाते तो सबसे पहले क़ौम को बुत परस्ती के छोड़ने के मुताल्लिक़ इरशाद फ़रमाते और अल्लाह तआला की इबादत करने का हुक्म देते कि उसके बग़ैर कोई माबूद नहीं फिर अपनी रिसालत का दावा करते ताकि क़ौम उनसे मोजिज़ात का मुतालबा करे तो उनको मोजिज़ात दिखाए जायें फिर उनके इंकार और बाज़ न आने पर अल्लाह तआला के अज़ाब से उनको डराते, फिर भी जब वह अपने कुफ़्र पर क़ायम रहते तो अल्लाह तआला की तरफ़ से उन पर अज़ाब आ जाता।

और आप अलैहिस्सलाम ने अपनी कौम को कहा कि अगर तुम चाहते हो कि अल्लाह तआला की रहमत तुम्हें हासिल हो तो अल्लाह तआला से अपने गुनाहों की माफ़ी मांगो उसी की तरफ़ रुजू करो तो अल्लाह तआला की रहमत तुम्हें हासिल होगी अल्लाह तआला की रहमत ईमान वालों के क़रीब है।

आपने क़ौम को कहा दुनिया में तुम को हमेशा नहीं रहना : क्या तुम यहां की नेमतों में चैन से छोड़ दिये जाओगे बाग़ों और चश्मों और खेतों और खजूरों में जिनका शगूफ़ा नर्म नाज़ुक होता है और पहाड़ों में घर तराशते हो उस्तादी से तो अल्लाह से डरो और मेरा हुक्म मानो और हद से बढ़ने वालों के कहने पर न चलो वह जो ज़मीन में फ़साद फैलाते हैं और इस्लाह का काम नहीं करते।

हज़रत सालेह अलैहिस्सलाम ने अपनी कौम को कहा तुम्हारा ख़्याल बातिल है कि तुम यहां दुनिया

में ही आराम से नेमतों में रहोगे, जिस रब ने अपनी कुदरत कामिला से तुम्हें बाग़ात चश्मे खेतियां और नर्म व नाजुक शगूफ़ों वाले खजूर के दरख़्त दे रखे हैं वह यह ले भी सकता है। तुम्हें दुनियावी नेमतों पर नाज़ नहीं करना चाहिये आख़िर दुनिया को छोड़कर भी जाना है तुम बड़ी महारत से पहाड़ों को तराश कर घर बनाते हो इस वजह से भी तुम सीधा यही समझते हो कि तुम को दुनिया में हमेशा रहना है लेकिन तुम्हारी यह सोच सरासर ग़लत है हद से तजावुज़ करने वाले फ़साद फैलाने वाले, कोई दुरुस्त अच्छा सीधा भलाई वाला काम नहीं करने वालों की तुम पैरवी कर रहे हो, तुम उनकी इताअत न करो तो कामयाब होगे। वरना तबाही का शिकार हो जाओगे। कामयाबी सिर्फ़ अल्लाह तआला की तरफ़ रुजू करने और मेरा हुक्म मानने में है।

आपकी तबलीग़ से दो फ़रीक़ बन गये : और बेशक हम ने समूद की तरफ़ उनके हम क़ौम सालेह को भेजा कि अल्लाह की इबादत करो तो जभी वह दो गिरोह हो गये झगड़ा करते सालेह अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया ऐ मेरी क़ौम क्यों बुराई की जल्दी करते हो भलाई से पहले अल्लाह की बख़्शिश क्यों नहीं मांगते शायद तुम पर रहम हो।

हज़रत सालेह अलैहिस्सलाम की तबलीग़ पर कुछ लोग ईमान ले आये और दूसरे लोग अपने कुफ़्र पर क़ायम रहे इस तरह दो गिरोह बन गये आपस में एक दूसरे से बहसों में उलझे रहते थे लेकिन ईमान वालों की तरफ़ से झगड़ा दीन के हक़ होने में होता यह जिदाल हक़ है। सालेह अलैहिस्सलाम की तबलीग़ पर क़ौम के इंकार और आपके अज़ाब से डराने पर क़ौम का यह कहना :

और बोले ऐ सालेह हम पर ले आओ जिस का तुम वादा दे रहे हो।

इसके जवाब में सालेह अलैहिस्सलाम ने कहा ऐ मेरी क़ौम तुम अच्छाई के बदले बुराई में जल्दी क्यों करते हो यानी यह दुनियावी नेमतों का आराम तुम्हें हासिल हैं लेकिन इसके बदले तुम अज़ाब और अपनी तबाही व बर्बादी तलब कर रहे हो यह कहां की अक़्ल है तुम्हें अल्लाह तआल से अपने गुनाहों की माफ़ी तलब करनी चाहिये ताकि वह तुम पर रहम करे।

क़ौम ने आपको क्या जवाब दिया? : सालेह अलैहिस्सलाम ने क़ौम को राहे रास्त पर लाने की कोशिश की लेकिन क़ौम ने आपकी तकज़ीब की और मुख़्तलिफ़ जवाब दिये।

बेशक हिज्र वालों ने रसूलों को झुठलाया।

हिज्र एक वादी है मदीना और शाम के दर्मियान जिसमें समूद की क़ौम के लोग रहते थे उन्होनें अपने पैग़म्बर सालेह अलैहिस्सलाम की तकज़ीब की चूंके एक नबी की तकज़ीब तमाम अंबियाए किराम की तकज़ीब है इसलिये कि तमाम अंबियाए किराम अल्लाह तआला की वहदानियत पर ईमान लाने और उसी की इबादत करने की दावत देते हैं और हर नबी दूसरे तमाम अंबियाए किराम पर ईमान लाने की दावत देता है इसलिये एक नबी की तकज़ीब से दूसरे तमाम अंबियाए किराम की तकज़ीब लाज़िम आती है। यही वजह है कि रब ने फ़रमाया हिज्र वालों ने रसूलों की तकज़ीब की, हालांकि बज़ाहिर एक नबी यानी हज़रत सालेह अलैहिस्सलाम की वह तकज़ीब कर रहे थे।

कभी क़ौम ने कहा :

ऐ सालेह अलैहिस्सलाम इससे पहले तो तुम हम में होनेहार मालूम होते थे क्या तुम हमें अपने बाप दादा के माबूदों की पूजा करने से मना करते हो? बेशक जिस बात की तरफ़ तुम हमें बुलाते हो हम

उस पर एक बहुत बड़े धोके में डालने वाले शक में हैं।

कौम कहने लगी हमने तो तुम्हें बड़ा अक़्लमंद बहुत बड़ा समझदार समझा हुआ था हमें तो तुम पर बड़ी उम्मीदें थीं कि तुम हमारे दीन की इमदाद करोगे। हमारे मज़हब की तक़वियत का सबब बनोगे हमारे तरीक़ा की ताईद करोगे।

यानी किसी कौम में जब भी कोई शख़्स इल्म व फ़ज़्ल में आला मक़ाम हासिल करता है तो कौम उससे अपने मक़सद के मुताबिक़ उम्मीदें वाबस्ता कर लेती है आपकी कौम ने भी यही समझा था कि हमारे बातिल दीन की इमदाद करेंगे।

इसी तरह आप ग़रीबों फ़क़ीरों पर बड़े मेहरबान थे ज़ईफ़ लोगों की इमदाद करते थे मरीज़ों की अयादत करते थे तो कौम ने कहा कि हमने तो आपके इन औसाफ़ को देखकर यह समझा था कि तुम हमारे अहबाब में से होगे। हमारी इमदाद करोगे तुम ने यह अदावत और बुग़्ज़ हमारे साथ कैसे शुरू कर लिया? हमें तो तुम पर बड़ा ताज्जुब है कि तुम हमें अपने बाप दादा के माबूदों की पूजा से रोक रहे हो हमें तो अब तुम पर शक होने लगा है कि तुम हमें किसी बहुत बड़े धोके में मुब्तला करना चाहते हो।

आपने कौम को जवाब दिया : आपने कहा ऐ मेरी कौम! भला बताओ तो अगर मैं अपने रब की तरफ़ से रौशन दलील पर हूं और उसने मुझे अपने पास से रहमत बख़्शी तो मुझे उससे कौन बचाएगा अगर मैं उसकी नाफ़रमानी करूं? तो तुम मुझे सिवाए नुक़सान के कुछ न बढ़ाओगे।

आपके इरशाद का मतलब यह था कि मुझे अल्लाह तआला ने रौशन दलाइल अता फ़रमाये हैं और उसने मुझे अपनी रहमत से नवाज़ा है इसीलिये मैं भी तुम पर मेहरबानी कर रहा हूं कि तुम्हें उस राह की हिदायत दे रहा हूं जिसमें तुम्हारी कामयाबी है तुम अपनी बे अक़्ली की वजह से जिस बातिल राह की मेरी मुआवनत चाहते हो उसमें तो अल्लाह तआला की नाफ़रमानी है और अल्लाह तआला की नाफ़रमानी ख़सारा है।

मज़ीद कौम ने यह कहा:

उन्होंने कहा हमने बुरा शगुन लिया तुमसे और तुम्हारे साथियों से।

हज़रत सालेह अलैहिस्सलाम जब मबऊस हुए और कौम ने तकज़ीब की इसके बाइस बारिश रुक गई क़हत हो गया लोग भूखे मरने लगे इसको उन्होंने हज़रत सालेह अलैहिस्सलाम की तशरीफ़ आवरी की तरफ़ मनसूब किया और आपकी आमद को बदशगुनी समझा आप ने कौम को जवाब दिया।

आपने कहा तुम्हारी बदशगुनी अल्लाह के पास है बल्कि तुम लोग फ़ित्ने में पड़े हो।

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं कि सालेह अलैहिस्सलाम के इरशाद का मतलब यह था कि बदशगुनी जो तुम्हारे पास आई यह तुम्हारे कुफ़्र की वजह से अल्लाह तआला की तरफ़ से आई है तुम फ़ित्ने में मुब्तला हो तुम्हारा अपने बातिल दीन को सही समझना बुत परस्ती पर क़ायम रहना यह सब हक़ीक़त तुम्हारे लिये फ़ित्ना है।

कौम ने आपको जादूगर कहा:

उन्होंने कहा कि तुम पर तो जादू हुआ है।

यानी तुम पर बार बार कसरत से जादू किया गया है इसी लिये तुम्हारी अक़्ल सलामत नहीं रही

तुम हमारे साथ बेवकूफ़ी की बातें कर रहे हो कि हम अपने आबा व अजदाद का दीन छोड़ दें।

कौम ने आपको मुतकब्बिर कहाः

उन्होंने कहा हम अपने में से एक आदमी की ताबेदारी करें जब तो हम ज़रूर गुमराह और दीवाने हैं क्या हम सब में से इस पर ज़िक्र उतारा गया? बल्कि यह सख़्त झूठा इतराने वाला (मुतकब्बिर) है।

कौम ने कहा हम इतनी तादाद में होकर एक आदमी की ताबेदारी करें वह भी ऐसा शख़्स हो जो हमारे जैसा बशर हो ऐसा काम तो दीवानों का है, हम तो अक़्लमंद हैं क्या इसी को नबुव्वत अता होनी थी? और इस मनसब के लायक़ कोई नहीं था? यह शख़्स (मआज़ल्लाह) अपने दावए नबुव्वत में झूटा है और यह दावा करके शोख़ियां मार रहा है इतरा रहा है यह तो बड़ा मुतकब्बिर है रब तआला ने उनको रद्द करते हुए फ़रमायाः

बहुत जल्द कल जान जायेंगे कौन था बड़ा झूठा इतराने वाला?

यानी यह कौम जब दुनिया और आख़ेरत में अज़ाब में मुब्तला होगी तो फिर उन्हें पता चलेगा कि कौन झूठा और बातिल राह पर ज़िद व अनाद की वजह से क़ायम रहकर कौन तकब्बुर कर रहा था?

कौम ने सालेह अलैहिस्सलाम से मोजिज़ा तलब किया : तुम तो हम ही जैसे आदमी हो तो कोई निशान लाओ अगर सच्चे हो, आपने कहा यह ऊंटनी है एक दिन उसके पीने की बारी है और दिन मुअय्यन तुम्हारी बारी और इसे बुराई के साथ न छुओ कि तुम्हें बड़े दिन का अज़ाब आयेगा।

मुख़्तसर वाक़िया कौमे समूद : कौमे आद के बाद अल्लाह तआला ने कौमे समूद को आबाद किया उनको लंबी उम्रें अता कीं वह पहाड़ों में बड़ी महारत कारीगरी से तराश तराश कर घर बनाते, रब तआला ने उन को ख़ुशहाल बनाया, माली वुसअत अता की, तो उन्होंने रब तआला की नाफ़रमानी शुरू कर दी और ज़मीन में फ़साद बरपा शुरू कर दिया, तो अल्लाह तआला ने उनकी तरफ़ सालेह अलैहिस्सलाम को भेजा जो उनके क़बीला के अशराफ़ यानी सरदार क़बीला से थे। आप अलैहिस्सलाम ने उन्हें डराया, उन्होंने आप अलैहिस्सलाम से निशानी तलब की, तो आपने फ़रमायाः

तुम कौन सी निशानी तलब करते हो? उन्होंने कहा तुम हमारे साथ हमारी ईद के प्रोग्रामों के लिये शहर से बाहर हमारे साथ चलना हम अपने माबूदों से दुआ करेंगे तुम अपने माबूदों से दुआ करना जिसकी दुआ क़बूल हो गयी दूसरे उसकी ताबेदारी करेंगे।

आप अलैहिस्सलाम उनके साथ शहर से बाहर तशरीफ़ ले गये उन्होंने अपने बुतों से दुआ की जो क़बूल न हो सकी, उनके एक सरदार जन्दा बिन अम्र ने एक अकेली चट्टान की तरफ़ इशारा किया जिसका नाम काफ़िया था उसने कहा इस चट्टान से एक ऊंटनी निकालो जो हामिला हो अगर तुमने ऐसा कर दिया तो हम तुम्हारी तस्दीक़ करेंगे हज़रत सालेह अलैहिस्सलाम ने उन्हें कहा अगर मैं ऐसा करूं तो क्या तुम ज़रूर ईमान लाओगे? उन्होंने कहा हां। तो आप अलैहिस्सलाम ने नवाफ़िल अदा किये और रब से दुआ की अल्लाह तआला ने आपकी दुआ को शर्फ़े क़बूलियत बख़्शा।

वह लोग देख रहे थे कि पहाड़ी चट्टान में बिल्कुल वही कैफ़ियत पैदा हुई जिस तरह क़िसी जानवर पर पैदाईश के वक़्त होती है दर्द की वजह से कराहना। इज़्तिराब वग़ैरह यहां तक कि उनके सामने वह चट्टान फटी उससे हामिला ऊंटनी पैदा हुई जिसके जिस्म पर ऊन थी पेट बड़ा था, आपका मोजिज़ा देखकर जन्दा बिन अम्र और उसके साथ चंद और लोगों ने ईमान कबूल कर लिया, बाक़ी लोगों को

ईमान लाने से ज़वाब बिन अम्र और अहबाब और रब्बाब बिन समअर ने मना कर दिया। यही दोनों शख़्स उनके बुतों पर मुक़र्रर थे यानी बुत ख़ाना के नाज़िम थे और तीसरा शख़्स यानी रब्बाब बिन समअर काहिन था उन लोगों के सामने ही ऊंटनी ने बच्चा जना जो अस्सी ऊंटनी जितना था।

चूंकि सालेह अलैहिस्सलाम ने रब के हुक्म से ब्यान कर दिया था कि एक दिन पानी पीने की बारी ऊंटनी की होगी और एक दिन तुम्हारी और तुम्हारे जानवरों और बाक़ी जंगली जानवरों और परिन्दों वग़ैरह की।

ऊंटनी अपने बच्चे के साथ जंगल में चरती थी अपने बारी के दिन ऊंटनी और उसका बच्चा सारा पानी पी जाते थे यानी कुंए में मुंह रखती और उठाती उस वक़्त जब पानी ख़त्म हो जाता वह दूध इतना ज़्यादा देती थी कि वह लोग पीते और अपने बर्तन भर लेते वह ऊंटनी गर्मियों में वादियों के ज़ाहिरी हिस्सा में चरती थी तो ऊंटनी को देखकर उनके जानवर वादियों के नशेबी अंदरूनी हिस्से में भाग कर चले जाते सरदियों में वह ऊंटनी नशेबी हिस्सा में चरती तो उनके जानवर भागकर वादियों के बालाई हिस्से में आ जाते, उन्हें इस सूरते हाल से बहुत मुश्किल दरपेश आ रही थी उन्होंने उस ऊंटनी को अपनी राह से हटाने का फ़ैसला कर लिया और इसे मार दिया जाए ताकि हमें इससे नजात हासिल हो जाये।

ऊंटनी की कोंचें काट दीं : तो उन्होंने आपकी तकज़ीब की फिर ऊंटनी की कोंचें काट दीं।

सालेह अलैहिस्सलाम ने उन्हें पहले ही बताया था कि इस ऊंटनी को बुराई में मस न करना वरना तुम अज़ाब में मुब्तला हो जाओगे लेकिन वह बाज़ न आए जब ऊंटनी की कोंचें काट दी तो आपने उन्हें कहा कि अब अज़ाब क़रीब आ चुका है।

तो उन्होंने उसकी कोंचें काटीं तो सालेह अलैहिस्सलाम ने कहा अपने घरों में तीन दिन और बरत लो (नफ़ा हासिल कर लो) यह वादा है कि झूठा न होगा।

अज़ाब से पहले तीन दिन : जब हज़रत सालेह अलैहिस्सलाम ने उन्हें डराया कि अब सिर्फ़ तीन दिन तुम्हें अपने घरों में रहना और नफ़ा हासिल करना है, फिर तुम अज़ाब में मुब्तला हो जाओगे तो कौम ने कहा कि वह तीन दिन हम पर कैसे गुज़रेंगे? आपने कहा पहले दिन तुम्हारे चेहरे ज़र्द रंग के हो जायेंगे दूसरे दिन उनका रंग सुर्ख़ हो जायेगा और तीसरे दिन स्याह हो जायेंगे। चौथे दिन तुम पर अज़ाब आ जायेगा।

अगरचे चेहरे स्याह हो जाने पर उन्हें अज़ाब का यक़ीन आ चुका था लेकिन जब तक अलामात पर यक़ीन नहीं आ रहा था उस वक़्त तक उन्हें इमान और तौबा की तौफ़ीक़ नसीब न हो सकी और जब उन्हें यक़ीन हुआ अब तौबा करते भी तो इसका कोई नफ़ा न होता क्योंकि ना उम्मीदी की हालत में तौबा और ईमान क़बूल नहीं होते।

सब की रज़ामंदी से एक शख़्स ने कोचें कांटी: जब इसका सबसे बदबख़्त खड़ा हुआ।

वह बदबख़्त कौन था?

वह शख़्स क़द्दार बिन सालिफ़ था जिसका रंग सुर्ख़ी ज़र्दी माइल था आंखें उसकी नीली थीं क़द उसका छोटा था।

अगरचे ऊंटनी की कोचें उस एक शख़्स ने काटी लेकिन सबके मश्वरे और सबकी रज़ामंदी से

उसने यह काम किया इसलिये कुरआन पाक में जमा का सिग़ा ज़िक्र किया गया है कि सबने उसकी कोंचें कांटी यही वजह थी कि सब ही अज़ाब के मुसतहिक़ हुए अगर सिर्फ़ एक का फ़ेअल होता दूसरे उसे रोकते इस पर खुश न होते तो उन पर अजाब न आता।

हज़रत सालेह अलैहिस्सलाम को शहीद करने का मंसूबा : और इस शहर में नौ शख़्स थे जो फ़ित्ना व फ़साद बरपा करते थे उस इलाक़ा में और इस्लाह की कोई कोशिश न करते उन्होंने कहा आओ अल्लाह की क़सम खाकर यह अहद कर लें कि शब ख़ून मारकर सालेह अलैहिस्सलाम और उसके अहलेख़ाना को हलाक कर देंगे फिर कह देंगे उसके वारिस से कि हम तो (सिरे से) मौजूद ही न थे जब उन्हें हलाक किया गया और (यक़ीन करो) हम बिल्कुल सच कह रहे हैं और उन्हेंने जब खुफ़िया साज़िश की, और हमने भी खुफ़िया तदबीर की वह (हमारी तदबीर को) समझ ही न सके।

अल्लामा क़रतबी रहमतुल्लाह अलैहि लिखते हैं उन्होंने यह साज़िश ऊंटनी की कोंचें काटने के बाद की थी जब हज़रत सालेह अलैहिस्सलाम ने उन्हें बताया कि तुम्हें तीन दिन की मोहलत है उसके बाद तुम पर अज़ाब आयेगा जो तुम्हें बर्बाद करके रख देगा, बजाए इसके कि वह इस आख़री साज़िश से चौकन्ने होते और अपने गुनाहों पर नादिम होकर गिड़ गिड़ाकर माफ़ी मांगते उन्होंने उलटा हज़रत सालेह अलैहिस्सलाम को क़त्ल करने की साज़िश शुरू कर दी, उन्होंने कहा हम पर अज़ाब आयेगा तो देखा जायेगा। उसके आने से पहले हम सालेह अलैहिस्सलाम और उसके मुरीदों का ख़ात्मा तो कर दें।

जिस रात उन्होंने हज़रत सालेह अलैहिस्सलाम के मकान पर शबख़ून मारने का प्रोग्राम बनाया था उस रात अल्लाह तआला ने फ़रिश्तों को अपने रसूल की हिफ़ाज़त के लिये भेज दिया, जब यह अपनी बे नयाम तलवारें लहराते हुए आप पर हमला करने के लिये लपके तो फ़रिश्तों न उन पर पथराव शुरू कर दिया। उन्हें पत्थर तो नज़र आते थे लेकिन मारने वाले दिखाई नहीं देते थे, चुनांचे उन सबको इस तरह हलाक कर दिया गया और यह मोहलत की आख़री रात थी चुनांचे क़ौम के बाक़ी अफ़राद भी तबाह व बर्बाद कर दिये गये। इंशाअल्लाह क़रीब ही ज़िक्र आ रहा है।

रब तआला ने फ़रमाया तीन से लेकर दस तक या सात से लेकर दस तक का गिरोह। इस क़बीला के नौ सरदार थे उनके लड़के हज़रत सालेह अलैहिस्सलाम की मुख़ालफ़त में हमेशा सरगर्म रहा करते थे हर रईसज़ादा के साथ उसके मददगारों की भी एक टोली हुआ करती थी। इसलिये उन्हें तुसअतह रहत से ताबीर किया गया है यानी नौ क़बीले (अगरचे नौ शख़्स थे)।

जब उन्होंने यह देखा कि हमारी ईज़ा रसानियों के बावजूद हज़रत सालेह अलैहिस्सलाम और उनके साथी बाज़ नहीं आये तो उन्होंने एक जगह बैठकर साज़िश की कि रात को बेख़बरी में सालेह अलैहिस्सलाम और उसके साथियों पर हमला करके उन्हें तह तेग़ कर दो, अगर उनके किसी वारिस ने हमसे दर्याफ़्त किया तो हम उन्हें यक़ीन दिला देंगे कि हमारा उनके क़त्ल के साथ दूर का भी वास्ता नहीं और न ही हमें उसके क़त्ल का कोई इल्म है। तो वह ख़ामोश हो जायेंगे।

हो सकता है कि हज़रत सालेह अलैहिस्सलाम के वारिस कमज़ोर और गुरबा लोग हों तो उन्होंने यह ख़्याल किया हो कि उन्हें क्या मजाल होगी कि हमसे वह ज़्यादा तकरार करें? इस तरह वह ख़ामोश हो जायेंगे। क़त्ल करने का मंसूबा बनाने वाले ख़ुद तबाह व बर्बाद हो गये। सुबहानल्लाह मौलाए कायनात तेरी क़ुदरत के कारनामे अजीब हैं।

कौमे समूद के कुफ़्फ़ार पर अज़ाबे इलाही : पस उन्होंने ऊंटनी की कोचें काट दीं और अपने रब के हुक्म से सरकशी की और बोले ऐ सालेह अलैहिस्सलाम हम पर ले आओ जिसका तुम वादा दे रहे हो अगर तुम रसूल हो तो उन्हें ज़लज़ला ने आ लिया तो सुबह अपने घरों में औंधे पड़े रह गये।

कौमे समूद पर ज़मीन का अज़ाब शदीद ज़लज़ला था और आसमानों का अज़ाब सख़्त बिजली की कड़क या जिब्राईल की शदीद हौलनाक आवाज़ थी जिसकी वजह से उन्हें तबाह व बर्बाद कर दिया गया।

ख़्याल रहे कुरआन पाक में कौमे समूद के अज़ाब के लिए तीन लफ़्ज़ इस्तेमाल हुए हैं।

तो उन्हें ज़लज़ला ने आ लिया।

और ज़ालिमों को चिंघाड़ ने आ लिया।

इन दोनों का मतलब तो वही है जो ब्यान किया जा चुका है कि ज़मीन में ज़लज़ला और आसमानों से गरजदार आवाज़ थी। उनके अज़ाब के लिये तीसरा लफ़्ज़ इस्तेमाल हुआ।

आला हज़रत मौलाना अहमद रज़ा ख़ां बरेलवी ने इस का तर्जमा किया "समूद तो हलाक हो गये हद से गुज़री हुई चिंघाड़ से" इससे पता चला कि "अल सैहता" और "अलतागि़या" से मुराद एक ही है।

ताहम बाज़ मुफ़स्सेरीन ने यह मायने भी किया है कि तागी़यह से मुराद उनके जराइम व फ़सादात का हद से गुज़रना है। मतलब यह होगा कि वह अपने हद से बढ़ने वाले जराइम की वजह से हलाक किये गये इस मायने के लिहाज़ से अज़ाब नहीं बल्कि अज़ाब का सबब है।

सालेह अलैहिस्सलाम और आपके साथ ईमान लाने वालों को नजात : फिर जब हमारा हुक्म आया (यानी अज़ाब आया) हमने सालेह अलैहिस्सलाम और उसके साथ मुसलमानों को अपनी रहमत फ़रमाकर बचा लिया और उस दिन की रुसवाई से बेशक तुम्हारा रब क़वी इज़्ज़त वाला है।

यह रब तआला की अज़ीम कुदरत है कि एक ही मुल्क में एक ही इलाक़ा में कुफ़्फ़ार को ज़लज़ला हौलनाक कड़क से तबाह व बर्बाद कर दिया लेकिन अपने नबी और उनके साथ उनके ईमान लाने वालों को ज़रा तकलीफ़ न होने दी कुफ़्फ़ार को ज़लील व ख़्वार कर दिया उनको रुसवा होना पड़ा लेकिन ईमान वालों को इस हौलनाक तबाही और इसकी रुसवाई से बचा लिया। मुसलमानों को चाहिये कि इस वाक़िये से इबरत पकड़ें और अल्लाह तआला के अज़ाब से डरते रहें और रब तआला की अज़ीम कुदरत पर कामिल ईमान रखें।

हज़रत अय्यूब अलैहिस्सलाम

और अय्यूब (अलैहिस्सलाम) (को याद करो) जब उसने अपने रब को पुकारा कि मुझे तकलीफ़ पहुंची और तू सब रहम करने वालों से बढ़कर रहम करने वाला है। तो हमने उसकी दुआ सुन ली। तो हमने दूर कर दी जो तकलीफ़ उसे थी और हमने उसे घर वाले और इतने ही उनके साथ और अता किये अपने पास से रहमत फ़रमाकर और बंदगी वालों के लिये नसीहत है।

हज़रत अय्यूब अलैहिस्सलाम के बाप का नाम अनूस आप हज़रत इस्हाक़ अलैहिस्सलाम के बेटे ईस की औलाद से हैं। आप अलैहिस्सलाम की वालदा हज़रत लूत अलैहिस्सलाम की औलाद से हैं आप की ज़ौजा का नाम रहमत है जो हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के बेटे अफ़राईम की बेटी थीं।

हुलिया मुबारक : हज़रत अय्यूब अलैहिस्सलाम के बाल घुंघरियाले, आंखें मोटी, ख़ूबसूरत शक्ल व सूरत बहुत ख़ूबसूरत, गर्दन छोटी सीना चौड़ा पिंडलियां और कलाईयां मोटी थी और आपका क़द लंबा था।

आपके औसाफ़ : आप मिस्कीनों पर रहम करते थे यतीमों की कफ़ालत फ़रमाते थे बेवा औरतों की नुआवनत (इमदाद) करते मेहमानों के साथ इज़्ज़त व तकरीम और ख़ंदा पेशानी से पेश आते।

माल व दौलत की फ़रावानी : अल्लाह तआला ने आज़ामईश से पहले आप को कसीर माल व दौलत दे रखा था, खेती बाड़ी, बाग़ ग़र्ज़ कि हर क़िस्म के माल व दौलत से नवाज़ा। हर क़िस्म के जानवर यानी भेड़ बकरियां गाए भैंस, ऊंट वग़ैरह की कसरत थी। पांच सौ जोड़ियां बैलों की हल चलाने वाली थीं पांच सौ गुलाम ख़िदमत गुज़ारी के लिये फिर हर गुलाम की जौज़ा और औलाद भी बतौर ख़ुद्दाम आपके पास रहते थे।

आज़माईश से पहले औलाद : आपके सात बेटे और सात बेटियां थीं।

फ़रिश्तों में आपकी बुलंदीए शान का चर्चा : हज़रत जिब्राईल अलैहिस्सलाम को अल्लाह तआला से जो कुर्ब हासिल है वह दूसरे फ़रिश्तों को हासिल नहीं, अल्लाह तआला उनसे बराहे रास्त कलाम फ़रमाता है। अल्लाह तआला अपने बंदों में से जब किसी को पसंद फ़रमाता है तो उसका ज़िक्र जिब्राईल अमीन से करता है, वह मीकाईल अलैहिस्सलाम से ज़िक्र करते हैं, वह दूसरे मुक़र्रब फ़रिश्तों से ज़िक्र करते हैं। जब उन मुक़र्रब फ़रिश्तों में अल्लाह तआला के उस ख़ास बंदे के ज़िक्र का चार्च हो जाता है तो तमाम फ़रिश्ते उस पर रहमतें निछावर करते हैं। फिर आसमानों के तमाम फ़रिश्ते रहमतें भेजते हैं फिर ज़मीनों के फ़रिश्ते उस बंदे पर रहमतें भेजते हैं। हज़रत अय्यूब अलैहिस्सलाम का भी इसी तरह तमाम फ़रिश्तों में ज़िक्रे ख़ैर का चर्चा होता रहता था।

आज़माईश की घड़ियां : अल्लाह तआला कभी अपने मुक़र्रब बंदों को शदीद मुश्किलात में मुब्तला करके आज़माता है कि वह मेरा बंदा कितना सब्र करता है, मसाइब व आलाम में कोई शिकवा तो ज़बान पर नहीं लाता। और कभी अल्लाह तआला बहुत माल व दौलत अता करके आज़माता है कि मेरा बंदा कितना शुक्रिया अदा करता है?

हज़रत अय्यूब अलैहिस्सलाम को पहले आराम व सेहत, माल व दौलत औलाद और हर तरह की ख़ुशियां अता करके आज़माया। इसमें भी आपने अज़ीम कामयाबी हासिल की। आप अलैहिस्सलाम ने शुक्रिया अदा करके बे मिसाल नमूना पेश किया। इसके बाद आज़माईश का दूसरा दौर शुरू हुआ कि ज़मीन के नीचे से कुदरती आग ने आपके बाग़ात खेतियां ऊंट बकरियां चरवाहे जलाकर राख दिये। जब आपको पता चला तो आपने कहा:

यह सब माल व दौलत अल्लाह ने ही अता किया था वही इसका मालिक हक़ीक़ी है जब वही इसका हक़दार है तो उसे हक़ पहुंचता है जब चाहे ले ले मुझे इसमें कुछ कहने की कोई मजाल नहीं।

आपकी औलाद एक मकान में थी वहां ज़लज़ला आया मकान गिर गया आपकी औलाद फ़ौत हो गई, मकान की छत और दीवारें गिरने से आपके बच्चों पर क्या हाल गुज़रा होगा? जिस्म चकना चूर हुए होंगे, हड्डियां टूटी होंगी, सर फटे होंगे, ख़ून के फ़व्वारे चले होंगे, लेकिन यह हाल सुनकर भी अल्लाह के नबी ने सब्र का कमाल मुज़ाहिरा किया वही अलफ़ाज़ ज़बान पर कि सब कुछ रब तआला का है जो चाहे करे।

आपके जिस्म में शदीद हरारत से ऐसा असर हुआ यूं महसूस होता कि आपके जिस्म में आग के शोले भड़क उठे हैं सर से लेकर क़दम तक आबले पड़ गये, शदीद ख़ारिश होने लगी, नाख़ूनों से जिस्म को खुजलाते रहे यहां तक कि नाख़ून गिर गये फिर ठिकरियों या पत्थरों से अपने जिस्म को खुजलाते जिस्म शदीद ज़ख़्मी हो गया ज़ख़्मों में बू आने लगी, उनमें कीड़े पड़ गये सारे जिस्म में सिर्फ़ आंखें दिल और ज़बान महफ़ूज़ थे। इब्ने असाकिर ने ब्यान किया:

हज़रत अय्यूब अलैहिस्सलाम के जिस्म से अगर कोई कीड़ा नीचे गिर जाता तो आप फिर उसे अपनी जगह लौटा देते और कहते अल्लाह तआला ने जो रिज़्क़ तुम्हें दिया है वह खाओ।

मुश्किल का साथी : आपकी बीमारी ने जब शिद्दत इख़्तेयार कर ली तो तमाम अक़रबा ने आपको छोड़ दिया। बल्कि शहर से बाहर आपको एक झोंपड़ी बनाकर दे दी गई कि यह मर्ज़ कहीं दूसरों तक न पहुंच जाये, जब वह सारे साथ छोड़ गये तो उस वक़्त आपकी ज़ौजा जिसका नाम रहमत बिन्त अफ़राइम बिन यूसुफ़ था वह ब–दस्तूर आपके साथ रहीं। आपकी ख़िदमत गुज़ारी में रही आप अलैहिस्सलाम की देखभाल करती, आपको खाना फ़राहम करती आपकी ज़रूरयात का हर तरह ख़्याल करती। सुबहानल्लाह अल्लाह के नबी यूसुफ़ अलैहिस्सलाम की पोती कितनी नेक और साबरा थी।

अय्यूब अलैहिस्सलाम का बेमिसाल सब्र : एक दिन आपकी ख़िदमतगुज़ार, वफ़ादार, नेक शआर, बा–मुराद नेक ज़ौजा ने अर्ज़ किया:

काश तुम अल्लाह तआला से दुआ करते अल्लाह तआला तुम्हारी तकलीफ़ दूर फ़रमा देता यह सुनकर आपने फ़रमाया:

ऐश व इशरत, राहत व सकून, माल व दौलत की फ़रावानी में कितना वक़्त गुज़रा? आपकी ज़ौजा ने अर्ज़ किया बहुत वक़्त गुज़रा एक रिवायत में है कि आपकी ज़ौजा ने कहा 80 साल गुज़रे हैं।

तो आप अलैहिस्सलाम ने इरशाद फ़रमाया:

मुझे अल्लाह तआला से शर्म आती है कि मैं उससे दुआ करूं जब कि मेरी आज़माईश का वक़्त इतना भी नहीं हुआ जितना मेरी आसाईश का वक़्त था।

ज़ौजा की ग़लती पर नाराज़गी का इज़हार : एक मर्तबा आपने ज़ौजा को तलब किया तो देर से हाज़िर होने पर आप नाराज़ हो गये मुमकिन है बीमारी की वजह से तबीयत में सख़्त मिज़ाजी आ गई हो, ज़्यादा मुनासिब यह बात मालूम होती है कि इतनी बड़ी नाराज़गी की वजह भी यक़ीनन कोई बड़ी होगी, जैसे मुफ़स्सेरीन ने एक वजह यह ब्यान किया है शैतान आपकी ज़ौजा के पास तबीब की सूरत में आया और कहने लगा कि तुम्हारे ख़ाविंद बहुत बड़ी तकलीफ़ में मुब्तला हैं अगर तुम चाहती हो तो मैं उन्हें दवा देता हूं जिससे वह ठीक हो जायेंगे जब वह सेहतयाब हो जायें तो वह इसके बदले में मेरा शुक्रिया सिर्फ़ इन अलफ़ाज़ में अदा करें।

तूने मुझे शिफ़ा दी।

आपकी ज़ौजा ने यह बात मामूली समझी और उनका ख़्याल बन गया कि इस पर अमल करना तो आसान है।

जब हज़रत अय्यूब अलैहिस्सलाम के सामने आकर उसने पूरा माजरा ब्यान किया तो आप अलैहिस्सलाम ने समझ लिया कि शैतान मेरे इम्तेहान में मुझे नाकाम करना चाहता है, आप अलैहिस्सलाम अपनी ज़ौजा से नाराज़ हो गये आपने फ़रमाया अगर मैं ठीक हो गया तो तुम्हें सौ कोड़े मारूंगा अभी तुम्हारे हाथों से मैं कोई चीज़ नहीं खाऊंगा।

इसी वजह से हज़रत अय्यूब अलैहिस्सलाम ने रब के हुज़ूर अर्ज़ किया:

मुझे शैतान नें तकलीफ़ और ईज़ा लगा दी।

आज़माईश का वक़्त ख़त्म होता है : और अय्यूब (अलैहिस्सलाम) को याद करो जब उसने अपने रब को पुकारा कि मुझे तकलीफ़ पहुंची और तू सब रहम करने वालों से ज़्यादा रहम करने वाला है तो हमने उसकी दुआ सुन ली तो हमने दूर कर दी जो तकलीफ़ उसे थी और हमने उसके घर वाले और उनके साथ इतने ही अता किये अपने पास से रहमत अता करके और बंदगी वालों के लिये नसीहत है।

हज़रत अय्यूब अलैहिस्सलाम ने बहुत ही प्यारे लतीफ़ अंदाज़ में अपनी परेशान हाली तकालीफ़ का तज़किरा किया। रब की बे हिसाब रहमत का ज़िक्र किया गया लेकिन यह अर्ज़ नहीं किया कि ऐ मौलाए कायनात मेरी तकलीफ़ को दूर फरमा कैसा सब्र है? और रब के हुज़ूर इल्तेजा करने का कैसा हसीन अंदाज़ है।

चश्मए शिफ़ा : रब तआला ने फ़रमाया ज़मीन पर अपना पांव मारो यह है ठंडा चश्मा नहाने और पीने को।

आपको हुक्म हुआ कि आप अपना पावं ज़मीन पर मारो तो इससे चश्मा जारी होगा, इससे पानी पिया और नहाओ तुम्हें शिफ़ा हासिल होगी। आपको नहाने से ज़ाहिरी जिस्म की तमाम बीमारियों से शिफ़ा हासिल हो गई और पानी पीने से अंदरूनी तमाम बीमारियों से शिफ़ा मिल गई। अल्लाह तआला

ने आपको जन्नती लिबास अता फ़रमाया। आप अलैहिस्सलाम लिबास ज़ेब तन करके एक तरफ़ होकर बैठ गये आपकी ज़ौजा आई तो उसने आपको न पहचाना वह आप ही से पूछने लगीं ऐ अल्लाह के बंदे यहां एक बीमार शख़्स था वह कहां गया? परेशान होकर पूछा कहीं भेड़िये तो नहीं ले गये। बार बार परेशानी से जब पूछ रही थीं तो आप अलैहिस्सलाम ने कहा अल्लाह तआला तुम पर रहम करे मैं ही अय्यूब हूं अल्लाह तआला ने मुझे शिफ़ा अता कर दी है।

माल व औलाद वापस मिल गये : जम्हूर हज़रात का यह क़ौल है कि अल्लाह तआला ने आपकी तमाम फ़ौत शुदा औलाद को ज़िन्दा कर दिया और मरीज़ों को आफ़ियत दे दी और तमाम बिखरे हुओं को जमा कर दिया।

एक क़ौल यह भी है कि आप को दोबारा शबाब (जवानी) अता फ़रमाई और फिर पहली औलाद की तरह और औलाद अता फ़रमा दी। इसी तरह आपको कसीर माल व दौलत अता फ़रमाया।

एक रिवायत में यह भी है कि आप पर अल्लाह तआला ने सोने की मकड़ियों की बारिश की। आप अलैहिस्सलाम पकड़ पकड़ कर एक कपड़े में डालते रहे, यहां तक कि आपने एक चादर बिछा कर उसमें जमा करना शुरू किया तो अल्लाह तआला ने आपकी तरफ़ वही की कि ऐ अय्यूब तुम सैर (ख़ुश) नहीं होते? आपने अर्ज़ किया ऐ मौलाए कायनात तेरे फ़ज़्ल से कौन सैर (ख़ुश) हो सकता है? आप अलैहिस्सलाम ने १८ साल बीमारी और तकलीफ़ में गुज़ारे थे फिर रौनक़ें बहाल हो गईं।

आपकी ज़ौजा की मुश्किल रब ने आसान कर दी : चूंकि आपने शरई उज़्र और अल्लाह तआला की रज़ामंदी की ख़ातिर ज़ौजा से नाराज़ होकर क़सम उठा दी थी कि मैं दुरुस्त होकर तुम्हें एक सौ कोड़े मारूंगा। अब तंदुरुस्त होने पर क़सम को पूरा करना लाज़िम था अल्लाह तआला ने अपनी रहमत से अल्लाह तआला के नबी की ज़ौजा को कोड़ों से बचा लिया, क्योंकि अल्लाह तआला के बनी ने भी उसी की रज़ा के लिये क़सम उठाई थी लेकिन उनकी ज़ौजा ने भी रब की रज़ा की ख़ातिर ही अपने ख़ाविंद की उस वक़्त ख़िदमत की, जब सब लोग छोड़ चुके थे। इस तरह रब ने दोनों की अदा को पसंद किया न नबी को मना किया और न उनकी ज़ौजा को कोड़े लगाने दिये।

अल्लाह तआला ने इरशाद फ़रमाया:

फ़रमाया कि अपने हाथ में एक झाड़ू लेकर इसे मार दे और क़सम न तोड़ बेशक हमने इसे साबिर पाया क्या अच्छा बंदा है बेशक वह बहुत रुजु लाने वाला है।

आपको अल्लाह तआला ने हुक्म दिया कि आप सौ तीलियों (तिनकों) वाला एक झाड़ू लें अपनी ज़ौजा को मार दें। इस तरह आपकी क़सम पूरी हो जायेगी।

यह अल्लाह तआला की शाने करीमी है कि उसने ख़ुद अपने फ़ज़्ल व करम से हज़रत अय्यूब अलैहिस्सलाम को यह इजाज़त दी वरना कोई और इंसान ऐसी क़सम उठाए तो उसकी क़सम इस तरह झाड़ू मारने से पूरी नहीं होगी बल्कि उसके लिये यह लाज़िम होगा कि वह क़सम को तोड़ दे और कफ़्फ़ारा अदा करे।

ख़्याल रहे कि किसी शरई काम में अल्लाह तआला और उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम

की तरफ़ से रियायत मिले तो यह उनकी मेहरबानी है वह मालिक हैं, चाहें तो माफ़ करे दें और चाहें तो उसमें आसानी की राह पैदा कर दें, लेकिन इंसान ख़ुद कोई ऐसा हीला करे कि उसकी वजह से हुक्म शरई उससे टल जाये यह नाजायज़ है, इंसान किसी ऐस हीले को इख़्तेयार करे कि ज़कात अदा न करनी पड़ी या रोज़े गर्मियों में न रखने पड़ें, बल्कि सर्दियों में क़ज़ा करेंगे। इस तरह के हथकंडे वग़ैर उज़्र शरई के बातिल होंगे।

मेरे नज़दीक हर हीला जिसमें शरई अहकाम की हिकमत का बातिल होना लाज़िम आये वह क़बूल नहीं किया जायेगा। जिस तरह कोई हीला करे कि मुझ पर ज़कात लाज़िम न आये वग़ैरह।

अल्लाह तआला हर मुसलमान को आसाईश में उसकी नेमतों का शुक्र करने और आज़माईशों में सब्र करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाये, रिज़्क़ हलाल अता फ़रमाये और नेक वफ़ादार ज़ौजा अता फ़रमाये। आमीन सुम्मा आमीन।

तंबीह : हज़रत अल्लामा क़रतबी रहमतुल्लाह अलैहि ने इब्ने अरबी रहमतुल्लाह अलैहि का क़ौल नक़्ल किया है कि हज़रत अय्यूब अलैहिस्सलाम के जिस्म मुबारक में कीड़े पड़ने का वाक़िया सनद का मोहताज है। यानी सनद सहीह से साबित नहीं है लेकिन ख़्याल रहे कि इसे अल्लामा आलूसी रहमतुल्लाह अलैहि ने सहीह सनद के साथ साबित किया है आप रहमतुल्लाह अलैहि फ़रमाते हैं:

अहमद अबू नुऐम और इब्ने असाकर ने ब्यान किया है कि हज़रत हसन बसरी से रिवायत है कि हज़रत अय्यूब अलैहिस्सलाम के जिस्म मुबाकर में मा सिवाए आंखों, दिल और ज़बान के कोई जगह नहीं थी जहां कीड़े न पड़े हों जब कोई कीड़ा नीचे गिर जाता तो आप उसे उठाकर फिर अपनी जगह रख देते और फ़रमाते अल्लाह तआला के रिज़्क़ से खा जो उसने तुझे दिया है।

मुअतज़िला ने भी कीड़े पड़ने वाली रिवायत पर एतेराज़ किया है अलबत्ता इमाम राज़ी रहमतुल्लाह अलैहि ने इसे जायज़ क़रार दिया है क्योंकि अंबियाए किराम पर आज़माईश ज़्यादा होती है। कीड़े पड़ने का ज़िक्र तफ़सीर बैज़ावी, तफ़सीर बग़वी, तफ़सीर मज़हरी और तफ़सीर कबीर वग़ैरह में किया गया है।

हज़रत जुलकिफ़्ल और हज़रत यसअ अलैहिमस्सलाम

याद करो इस्माईल और यसअ और जुलकिफ़्ल (अलैहिमुस्सलाम) को और सब अच्छे हैं।

हज़रत जुलकिफ़्ल अलैहिस्सलाम : आपका नाम बशर है या शरफ़ है आप हज़रत अय्यूब अलैहिस्सलाम के बेटे हैं आपके मुताल्लिक़ और भी मुख़्तलिफ़ अक़वाल हैं ताहम इसी क़ौले मज़कूर की तरफ़ ज़्यादा रुझान है।

अल्लाह तआला ने उनको उनके बाप हज़रत अय्यूब अलैहिस्सलाम के बाद नबी बनाकर भेजा और हुक्म दिया कि आप लोगों को मेरी वहदानियत पर ईमान लाने की तरफ़ बुलायें, कि मेरे बग़ैर कोई माबूद नहीं।

आप उम्र भर शाम के इलाक़े में ही रहे अल्लाह तआला के अहकाम लोगों तक पहुंचाते रहे ७५ साल की उम्र में दुनिया से रुख़सत हुए।

आप अलैहिस्सलाम ने अपने बेटे अबदान को वसीयत की थी कि मेरी वफ़ात के बाद नेकी के अमल पर क़ायम रहना लोगों को भी ईमान और नेक आमाल की तर्ग़ीब देना।

आप अलैहिस्सलाम यतीमों मोहताजों ग़रीबों बेवा औरतों पर रहम फ़रमाते उनकी ज़रूरयात का ख़्याल रखते, उन्हीं मोहताज लोगों की कफ़ालत की वजह से आप का नाम जुलकिफ़्ल (किफ़ालत करने वाला) पड़ गया था।

हज़रत यसअ अलैहिस्सलाम : आपको अल्लाह तआला ने नबुव्वत अता फ़रमाई और इसके साथ ही आपको बादशाहत भी अता फ़रमाई आप दिन को रोज़ा रखा करते थे और रात को अल्लाह के हुज़ूर खड़े होकर नवाफ़िल अदा करते थे आपको किसी बात पर गुस्सा नहीं आता था ख़ुसूसन आप अपनी उम्मत के मामलात में बड़ी मतानत से फ़ैसला फ़रमाते, किसी क़िस्म की जल्दबाज़ी और गुस्सा से फ़ैसला नहीं फ़रमाते थे।

आप अलैहिस्सलाम की वफ़ात का वक़्त जब क़रीब आया तो बनी इस्राईल के कुछ बड़े आदमी मिलकर आपकी ख़िदमत में हाज़िर हुए कि आप बादशाहे में अपना जानशीन किसी को मुक़र्रर कर दें ताकि हम अपने मामलात में उसकी तरफ़ रुजू करें तो आप अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया मुल्क की बागडोर मैं उसके हवाले करूंगा जो मुझे तीन बातों की ज़मानत दे। किसी शख़्स ने भी इस ज़िम्मेदारी को क़बूल करने की ज़मानत देने के मुताल्लिक़ आपसे कोई बात न की सिवाए एक नौजवान के, उसने कहा मैं ज़मानत देता हूं आप ने उसे कहा बैठ जा। मक़सद यह था कि कोई और शख़्स बात करे लेकिन फिर आपके कहने पर वही नौजवान ही खड़ा हुआ उसने ज़िम्मेदारी क़बूल करने की यक़ीन दहानी कराई।

एक यह कि तमाम रात इबादत में गुज़ारनी है, सोना नहीं।

दूसरी बात यह है कि हर रोज़ दिन को रोज़ा रखना है।

तीसरी चीज़ यह है कि गुस्सा की हालत में कोई फ़ैसला नहीं करना।

जब उस नौजवान ने तीन चीज़ों की ज़िम्मेदारी क़बूल कर ली तो आपने बादशाही का निज़ाम उसके सुपुर्द कर दिया। ख़्याल रहे कि नबुव्वत में ख़लीफ़ा नहीं बनाया जा सकता अल्लाह तआला जिसे चाहे नबी बना दे।

अल्लाह तआला ख़ूब जानता है कि मनसबे रिसालत किसे अता करना है।

हज़रत इल्यास अलैहिस्सलाम

और बेशक इल्यास पैग़म्बरों से है जब उसने अपनी क़ौम से फ़रमाया क्या डरते नहीं क्या तुम बअल (बुत का नाम) को पूजते हो और छोड़ते हो सब से अच्छा पैदा करने वाला अल्लाह तआला को जो रब है तुम्हारा और तुम्हारे अगलों बाप दादा का फिर उन्होंने उसे झुटलाया तो वह ज़रूर पकड़े जायेंगे मगर अल्लाह तआला के चुने हुए बंदे और हम ने पिछलों में उसकी सना बाक़ी रखी सलाम हो इल्यास अलैहिस्सलाम और उनके साथ ईमान लाने वालों पर बेशक हम ऐसा ही सिला देते हैं नेकों को बेशक वह हमारे आला दर्जा के कामिल ईमान वाले बंदों से है।

हज़रत इल्यास अलैहिस्सलाम अल्लाह तआला के नबी हैं और मूसा अलैहिस्सलाम के भाई हज़रत हारून अलैहिस्सलाम की औलाद से हैं आपका नसब मशहूर क़ौल के मुताबिक़ यह है।

इल्यास अलैहिस्सलाम बिन यासीन बिन क़ह्हास बिन अल'ईज़ार बिन हारून।

हज़रत इल्यास और हज़रत ख़िज़्र अलैहिस्मसलाम की हर साल मुलाक़ात : हज़रत इल्यास अलैहिस्सलाम ख़ुश्की पर मुक़र्रर किये गये थे और हज़रत ख़िज़्र दरियाओं पर और जज़ीरों पर मुक़र्रर हैं हर साल हज के मौक़े पर इन दोनों की मुलाक़ात होती है।

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और इल्यास अलैहिस्सलाम की मुलाक़ात : एक सफ़र के दौरान उनकी मुलाक़ात नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से हुई, आसमानों से अल्लाह तआला ने खाना उतारा दोनों हज़रात ने वह खाना मिलकर खाया। उस खाने में रोटी मछली वग़ैरह नाज़िल की गई, फिर अस्र की नमाज़ दोनों हज़रात यानी नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और इल्यास अलैहिस्सलाम ने मिलकर अदा की।

आपने क़ौम को कहा : हज़रत इल्यास अलैहिस्सलाम ने क़ौम को कहा: तुम अल्लाह तआला से डरते क्यों नहीं हो? तुम्हें चाहिये अल्लाह तआला के अहकाम पर अमल करो और उसके नवाही (जिन कामों को रब ने मना किया है) से इज्तेनाब करो तुम बुत परस्ती करते हो? अल्लाह तआला को छोड़कर बुत से हाजात तलब कर रहे हो? और उस ज़ात को छोड़ रहे हो? यानी उस ज़ात की इबादत नहीं कर रहे हो और उससे तुम अपने मक़ासिद हासिल नहीं कर रहे हो जो सबसे अच्छा पैदा करने वाला है।

ख़्याल रहे कि ख़ालिक़ अल्लाह तआला की ज़ात है उसके बग़ैर कोई ख़ालिक़ नहीं यहां अल्लाह तआला को अहसनुल ख़ालेक़ीन कहा गया है क्योंकि उनके गुमान के मुताबिक़ रब के बग़ैर भी ख़ालिक़ थे तो कहा गया है जिन को तुम ख़ालिक़ मानते हो इन सबसे अच्छा ख़ालिक़ अल्लाह तआला है या मजाज़ी तौर पर दूसरे कामों के ईजद करने वालों को वह लोग ख़ालिक़ कह देते थे तो आपने भी उनके क़ौल के मुताबिक़ कलाम फ़रमाया हो।

क़ौम इल्यास का बुत : उनके बुत का नाम बअल था यमन की लुग़त में बअल का मायने रब है। वह कहते थे :

इस घर का मालिक कौन है?

इसी वजह से ख़ाविंद को भी बअल कहा गया है क़ुरआन पाक में हैः

और ज़िक्र किया गया है

इन दोनों मक़ामों में बअल का मायने ख़ाविंद है चूंकि वह उस बुत को अपना रब मानते थे उसका नाम ही उन्होंने बअल रखा हुआ था। उस बुत की लंबाई तीस फिट थी वह सोने का बना हुआ था उसके चार मुंह थे वह उसकी बहुत ज़्यादा ताज़ीम करते थे। उसकी ख़िदमत के लिये उन्होंने चार सौ ख़ादिम रखे हुए थे वह खुद्दाम चूंकि उनके माबूद के ख़िदमत गुज़ार रहते थे, इसलिये वह उनको अपने बेटों की तरह समझते थे बाज़ मुफ़स्सेरीन ने अबनाइहिम की जगह अंबिया तहरीर किया है कि वह उन ख़ादिमों को अपने ख़ुदा का नबी समझते थे।

शहर बअलबक : बअलबक शहर का नाम इसलिये बअलबक रखा गया है कि उस वक़्त के हाकिम का नाम बक था और उसके माबूद का नाम बअल था। उसने एक शहर आबाद किया जिसका नाम उसने अपने और अपने माबूद के नाम से मुरक्कब करके बअलबक रखा नह्व की तमाम किताब में ऐसा ही ज़िक्र किया गया है। तफ़सीर ख़ज़ाईनुल इरफ़ान में है कि बक उस जगह का नाम था जहां उन्होंने अपने बुत बअल को रखा हुआ था। इस तरह बुत और उसके मंदिर के नाम से शहर का नाम बअलबक रखा गया।

तंबीह : बाज़ हज़रात ने तहरीर किया है कि बअल बुत में शैतान बोलता था कि गुमराही की तरफ उनकी रहनुमाई करता था वह बुत कुछ अहकाम जारी करता उसके ख़ुद्दाम यानी जिनको वह अपने बुत के नबी समझते थे लोगों तक वह अहकाम पहुंचाते थे।

अल्लामा राज़ी रहमतुल्लाह अलैहि ने इसको रद्द करते हुए फ़रमायाः

बाज़ लोगों का जो यह क़ौल है कि बअल बुत के पेट में शैतान दाख़िल हो जाता और उनको गुमराही के रास्ते पर चलाने का काम करता था उसका तसलीम करना बहुत मुश्किल है अगर इसे मान लिया जाये तो बहुत से मोजिज़ात पर ऐब लाज़िम आयेगा और उन पर एतेबार ही ख़त्म हो जायेगा। नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के मोजिज़ात में उन मोजिज़ात को भी ब्यान किया गया है कि आपसे भेड़िये ने कलाम किया, आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से ऊंट ने कलाम किया, आपने जब मिम्बर बनवा लिया तो जिस सतून से आप पहले सहारा लगाकर ख़ुत्बा दिया करते थे वह रोने लगा, आपने उसे तसल्ली दी। अगर यह मान लिया जाये कि शैतान जिस्मों में दाख़िल होकर कलाम करता है तो यह एहतेमाल भेड़िये और ऊंट और खजूर के तने यानी उस रोने वाले सतून में भी क़ायम होगा (मआज़ल्लाह) इन में शैतान ने दाख़िल होकर कलाम किया होगा इस तरह तो मोजिज़ात पर से एतेबार ही उठ जायेगा।

अल्लामा राज़ी की इस बहस से वाज़ेह हो गया कि यह क़ौल ही बातिल है कि बअल के पेट में शैतान दाख़िल होकर कलाम करता था।

ख़्याल रहे कि यहां "तो उन्होंने उसकी तकज़ीब की पस बेशक वह पकड़े जायेंगे" में उख़रवी अज़ाब का ज़िक्र है। इसी तरह इसके बाद मगर अल्लाह तआला के चुने हुए बंदे में इस्तिसना भी इसी उख़रवी अज़ाब से है।

दुनिया में क़ौम इल्यास की तबाही और आप पर ईमान लाने वालों की नजात का ज़िक्र मुअतबर तफ़ासीर में नज़र नहीं आ सका। आला हज़रत मौलाना अहमद रज़ा ख़ान रहमतुल्लाह अलैहि का तर्जमा भी यही ज़ाहिर कर रहा है सलामुन आला इल्यासीन का तर्जुमा आला हज़रत ने किया है सलाम हो इल्यास अलैहिस्सलाम पर, इसमें एक क़ौल यह है कि आपके साथ ईमान लाने वालों पर सलाम हो। एक क़राअत में आल या सीन में चूंकि इल्यास अलैहिस्सलाम बिन या सीन हैं यानी सीन की आल पर सलाम हो इससे मुराद इल्यास अलैहिस्सलाम हैं।

हज़रत यूनुस अलैहिस्सलाम

पस क्यों ऐसा न हुआ कि कोई बस्ती ईमान लाती तो नफ़ा देता उसे उसका ईमान (किसी से ऐसा न हुआ) सिवाए क़ौम यूनुस के, जब वह ईमान ले आये तो हमने दूर कर दिया उनसे रुसवाई का अज़ाब दुनियावी ज़िन्दगी में और हमने लुत्फ़ अंदोज़ होने दिया उन्हें एक मुद्दत तक।

हज़रत यूनुस अलैहिस्सलाम की क़ौम के लोग नेनवा इलाक़ा मोसिल में रहते थे कुफ़्र व शिर्क बुत परस्ती में मुब्तला थे अल्लाह तआला ने हज़रत यूनुस अलैहिस्सलाम को उनके पास भेजा आपने उन्हें ईमान लाने और बुत परस्ती को छोड़ने के मुताल्लिक़ हुक्म दिया लेकिन क़ौम ने आपकी तकज़ीब की, आप अलैहिस्सलाम ने उन्हें अल्लाह तआला के फ़ैसला से आगाह किया कि अगर तुम ईमान नहीं लाओगे तो अल्लाह तआला के अज़ाब में मुब्तला हो जाओगे। आप ख़ुद उन लोगों से नाराज़ होकर शहर से बाहर चले गये, जब उन्होंने हज़रत यूनुस अलैहिस्सलाम को न पाया तो बहुत ख़ौफ़ में मुब्तला हो गये कहा अब अज़ाब ज़रूर आयेगा।

आप अलैहिस्सलाम ने उन को एक ख़ास मुद्दत तक दुनियावी माल व मुताअ से नफ़ा हासिल करनें की मोहलत दी थी कि अगर तुम ईमान नहीं लाओगे तो फ़लां वक़्त अज़ाब में मुब्तला हो जाओगे। मोहलत की मुद्दत में कई अक़वाल हैं:

वह मुद्दत चालीस दिन थी।

वह मुद्दत तीस दिन थी।

तफ़सीर कबीर के मुताबिक़ जब ३५ दिन गुज़र गये तो आसमान पर शदीद स्याह बादल छा गये जिनसे बहुत ज़्यादा धुआं निकलने लगा वह धुंआ शहर तक पहुंच गया और उसने मकानों को अपनी लपेट में ले लिया। अब वह लोग समझ गये कि यूनुस अलैहिस्सलाम ने जिस अज़ाब के आने के मुताल्लिक़ कहा था बस वह आने ही वाला है। वह इतने शदीद ख़ौफ़ में मुब्तला हो गये कि डर के मारे शहर को छोड़कर जंगल में चले गये।

उन्होंने अपनी औरतों और बच्चों को जुदा कर दिया यहां तक कि तमाम जानवरों और उनके बच्चों

को भी जुदा जुदा कर दिया जबकि वह एक दूसरे से जुदा होकर एक दूसरे की तरफ़ मुश्ताक़ होने की वजह से बेक़रार हो गये, वह अपनी आवाज़ें निकालने लगे। उन जानवरों की दर्दनाक आवाज़ें ज़बाने हाल से आह व ज़ारी का एक अजीब दर्दनाक मंज़र पेश कर रही थीं। वह सब इंसान मर्द औरतें बच्चे अल्लाह तआला के हुज़ूर अपनी आजिज़ी का इज़हार कर रहे थे रो रहे थे और अर्ज़ कर रहे थे कि:

अल्लाह तआला हम तुझ पर और तेरे नबी यूनुस अलैहिस्सलाम पर ईमान लाये हैं हम अपने गुनाहों की माफ़ी तलब कर रहे हैं ऐ मौलाए कायनात हमारे गुनाह माफ़ कर दे हमें आने वाले अज़ाब से महफ़ूज़ रख।

उन्होंने अगर कभी एक दूसरे पर मज़ालिम किये हुए थे तो उनको माफ़ कराया अगर किसी के हुकूक़ ग़सब किये हुए थे तो वह वापस किये तौबा का यह आलम था कि अगर किसी की इजाज़त के बग़ैर उन्होंने कोई पत्थर अपने मकानों की बुनियादों में लागया हुआ था तो बुनियादें खोदकर पत्थर निकाल कर वापस किया। जब उन्होंने ईमान क़बूल कर लिया, सच्चे दिल से तौबा कर ली तो अल्लाह तआला को उन पर रहम आ गया और उनसे अज़ाब दूर कर दिया।

कौ़म यूनुस की तौबा की क़बूलियत का दिन : वह दिन आशूरा का दिन था। यानी दस मुहर्रमुल हराम और जुमा का दिन था वह अपने एक बुजुर्ग आलिम के पास जाकर पूछ रहे थे कि हम पर अज़ाब आने वाला है हम क्या करें? उसने उन्हें मशवरा दिया था कि तुम अल्लाह तआला के हुज़ूर यह दुआयें करो।

ऐ उस वक़्त भी ज़िंदा रहने वाले जब कोई ज़िन्दा नहीं रहेगा ऐ हमेशा ज़िन्दा रहने वाले ऐ मुर्दों को ज़िंदा करने वाले ऐ हमेशा ज़िन्दा रहने वाले तेरे बग़ैर कोई माबूद नहीं। ऐ अल्लाह! बेशक हमारे गुनाह बहुत बड़े हैं हद से बढ़ चुके हैं तू अज़ीम है और जलीलुल क़द्र है हमारे साथ वह सलूक कर जो तेरी शान के लायक़ हो। (क्योंकि तू रहीम व करीम है लिहाज़ा शाने करीमी के मुताबिक़ हमारे साथ मामला फ़रमा) और हमारे साथ वह सलूक न फ़रमा जिसके हम हक़दार हैं।

एतेराज़ : फ़िरऔन अज़ाब को देखकर ईमान लाया और तौबा की लेकिन उसके ईमान लाने और तौबा करने को क़बूल नहीं किया गया और यूनुस अलैहिस्सलाम की कौ़म के ईमान और उनकी तौबा को क्यों क़बूल किया गया?

जवाब : फ़िरऔन ने अज़ाब को देखकर तौबा की थी क्योंकि जब वह ग़र्क़ होने लगा था तो उसने कहा था मैं ईमान लाता हूं लेकिन यूनुस अलैहिस्सलाम की कौ़म ने अज़ाब का मुशाहिदा करने से पहले सिर्फ़ अलामाते अज़ाब को देखकर ईमान क़बूल कर लिया था और तौबा कर ली थी कि अब अज़ाब आने ही वाला है। अब फ़र्क़ वाज़ेह हो गया कि फ़िरऔन का ईमान अज़ाब के मुशाहिदा करने पर और उनका ईमान अज़ाब का मुशाहिदा करने से पहले था।

यूनुस अलैहिस्सलाम मछली के पेट में : हज़रत यूनुस अलैहिस्सलाम जब कौ़म से नाराज़ होकर चले गये और कौ़म ने आपके पीछे तौबा कर ली लेकिन आप वापस लौटकर न आये, तो आप अपने सफ़र के दौरान दरिया को पार करने के लिये एक किश्ती पर सवार हुए लेकिन किश्ती भंवर में फंस गई उस वक़्त के दस्तूर और रिवाज के मुताबिक़ यह ख़्याल किया जाता था कि जब कोई गुलाम अपने

माल से भाग कर जा रहा हो और किश्ती में सवार हो तो वह किश्ती उस वक़्त तक किनारे पर नहीं पहुंचती जब तक उस गुलाम को किश्ती से उतार न लें। अब किश्ती के भंवर में फंसने पर उन लोगों ने कुरआ डाला जो हज़रत यूनुस अलैहिस्सलाम के नाम निकला। तीन दफ़ा कुरआ आपके नाम ही निकला तो आपने फ़रमाया मैं ही गुलाम हूं जो अपने आक़ा को छोड़ कर जा रहा हूं। आप अलैहिस्सलाम ने ख़ुद ही दरिया में छलांग लगा दी ताकि किश्ती के दूसरे लोग किनारे पर पहुंच जायें। अल्लाह तआला ने एक मछली के दिल में इलक़ा किया और हुक्म दिया कि हज़रत यूनुस अलैहिस्सलाम को निगल ले, लेकिन यह ख़्याल करना कि तुम्हारा पेट उनके लिये क़ैदख़ाना बनाया है इन्हें तुम्हारा लुक़मा नहीं बनाया, इसलिये इन्हें ख़राश तक न आने दी जाये इनको बाल बराबर भी नुक़सान न पहुंचे। इस तरह आप मछली के पेट में आ गये यह आप पर एक इम्तेहान था और यार का यार को अताब था।

चंद कुरआनी अलफ़ाज़े मुबारका की ज़रूरी तशरीह : हज़रत यूनुस अलैहिस्सलाम को मछली के पेट में जाने की वजह से जुन्नून और साहिबुल हौत कहा गया है। क्योंकि नून और हौत दोनों का मायने मछली है अल्लाह तआला ने इरशाद फ़रमायाः

और जुन्नून (को याद करो) जब चला गुस्सा में भरा तो गुमान किया कि हम उस पर तंगी न करेंगे।

यह तर्जमा आला हज़रत मौलाना अहमद रज़ा ख़ान रहमतुल्लाह अलैहि का है। और सही भी यही है कि कई और तराजिम "अन लन नक़्दि र अलैहि" में का तर्जमा हम उन पर क़ाबू न पा सकेंगे, हम उस पर गिरफ़्त न करेंगे, हम न पकड़ सकेंगे इस क़िस्म के तरजमे ग़लत और बातिल हैं। मैंने अपनी किताब में कई तराजिम ज़िक्र किये हैं।

अल्लामा राज़ी रहमतुल्लाह अलैहि फ़रमाते हैं कि जो लोग अंबियाए किराम को गुनाहगार ठहराते हैं कि उनसे ज़रूर गुनाह सर ज़द होते हैं वह इस आयत से अपनी दलील पेश करते हैं कि यूनुस अलैहिस्सलाम ने गुमान किया कि रब मुझे नहीं पकड़ सकेगा। यह कहना गुनाह है लिहाज़ा नबी गुनाहगार हो सकते हैं।

अल्लामा राज़ी रहमतुल्लाह अलैहि उन लोगों का रद्द करते हुए फ़रमाते हैं अगर यह मायने किया जाये कि आप ने रब के मुताल्लिक़ यह गुमान किया कि रब आजिज़ है मुझे पकड़ नहीं सकेगा तो यह कुफ़्र है ऐसी निस्बत तो एक मोमिन की तरफ़ नहीं कर सकते, तो अंबियाए किराम की तरफ़ कैसे कर सकते हैं? इसलिये इस बात की तौजीह ज़रूरी है, वह यह कि इसका मायने हो "आपने गुमान किया कि हम उन पर तंगी नहीं करेंगे" इसलिये कि कुरआन पाक में और मक़ामात पर भी इस मायने में इस लफ़्ज़ का इस्तेमाल है।

अल्लाह तआला जिसके लिये चाहे रिज़्क़ कुशादा करता है और तंग करता है और जिस पर वह रिज़्क़ तंग कर दे।

लेकिन वह जब इंसान को आज़माईश में मुब्तला करता है उस पर उसका रिज़्क तंग कर देता है।

एक दिन हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा हज़रत अमीर माविया रज़ियल्लाहु अन्हु के पास गये तो उन्होंने कहा गुज़श्ता रात कुरआन पाक की मौजों में मुस्तग़रक़ रहा लेकिन मुझे इससे ख़लासी

न मिल सकी, हो सकता है आप मेरी रहनुमाई कर दें आपने पूछा वह क्या है? हज़रत अमीर माविया रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहाः

क्या अल्लाह तआला का नबी भी यह गुमान कर सकता है-कि अल्लाह तआला उसे नहीं पकड़ सकेगा?

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा ने जवाब दियाः

यह लफ़्ज़ क़दर से लिया हुआ है कुदरत से नहीं। यानी इसका मायने तंगी न करना है कुदरत न रखना, नहीं।

अल्लामा राज़ी की इस तहक़ीक़ के बाद वाज़ेह हुआ कि हज़रत यूनुस अलैहिस्सलाम को शहर छोड़कर हिजरत कर जाने का हुक्म अल्लाह तआला ने नहीं दिया था। आप अलैहिस्सलाम अपने इजतेहाद से तशरीफ़ ले गये थे।

ख़्याल यह किया था कि अल्लाह तआला उस पर तंगी नहीं फ़रमायेगा न कोई बाज़ पुर्स करेगा।

और बेशक यूनुस पैग़म्बरों से है जब कि भरी किश्ती की तरफ़ निकल गया।

यहां भी कई तर्जमा करने वालों ने तर्जमा किया है वह भाग गया यह तर्जमा नबी की शान के लायक़ नहीं। भागने का मक़सद ही नहीं था सिर्फ़ क़ौम पर नाराज़गी की वजह से आप चले गये और ख़्याल यह था कि अब उन पर अज़ाब आने का वक़्त तो आ ही चुका लिहाज़ा यहां रहने की अब ज़रूरत नहीं। रब तआला की तरफ़ से आज़माईश में सिर्फ़ इसलिये डाला गया था कि आप को रब तआला के हुक्म तक ठहरना चाहिये था।

और हमने उसे लाख आदमियों बल्कि ज़्यादा की तरफ़ भेजा तो वह ईमान ले आये तो हम ने उन्हें एक वक़्त तक बरतने दिया।

असल वजह यार की तरफ़ से यार को अताब की सिर्फ़ यही थी कि ऐ मेरे प्यारे तुम्हें तो लाख आदमियों से ज़ायद की तरफ़ भेजा गया था अभी तो अज़ाब के आने में कुछ वक़्त बाक़ी था, तुम्हें वहां रहना चाहिये था, हो सकता था कि वह ईमान ले आयें जैसा कि हुआ भी यही कि वह ईमान ले आये।

दुआ न करते तो क़यामत तक मछली के पेट में रहते : तो कुरआ डाला धकेले हुओं में हुआ फिर उसे मछली ने निगल लिया, और वह अपने आपको मलामत करता था तो अगर वह तस्बीह करने वाला न होता तो ज़रूर उसके पेट में रहता जिस दिन लोग उठाये जायेंगे।

हज़रत यूनुस अलैहिस्सलाम मछली के पेट में जाने से पहले भी अल्लाह तआला का ज़िक्र कसरत से करते थे और मछली के पेट में भी अल्लाह तआला को याद करते रहे तो रब तआला ने आप पर रहम फ़रमायाः

बाज़ बुज़ुर्गों ने कहाः

तुम अल्लाह तआला को आसानी में याद करो ताकि वह तुम पर मसाइब व शदाइद में मेहरबानी फ़रमाये।

यह एक हदीस शरीफ़ का ही मायने है अगरचे अल्फ़ाज़ हदीस शरीफ़ के नहीं। हज़रत यूनुस अलैहिस्सलाम को भी आसाईश में अल्लाह तआला का याद करना कसीर नमाज़ें अदा करना और मछली के पेट में भी रब तआला को याद करना ही काम आया।

मछली के पेट में आपकी दुआः तो अंधेरों में पुकारा कोई माबूद नहीं सिवा तेरे पाकी है तुझको बेशक मुझसे बेजा हुआ।

जुल्मात, जमा ज़िक्र किया कई तारीकियां, इसलिये कि आप दरिया की तारीकी, रात की तारीकी और मछली के पेट की तारीकी में थे। उन अंधेरों में आपने रब तआला के हुज़ूर इल्तेजा की ऐ अल्लाह मैं जो तेरे हुक्म के इंतज़ार से पहले आ गया यह मुझसे बेजा हुआ तो इन कलिमात से आपकी दुआ को क़बूल कर लिया गया।

फ़ायदा : हदीस शरीफ़ में है जो कोई मुसीबत ज़दा बारगाहे इलाही में इन कलिमात से दुआ करे तो अल्लाह तआला उसकी दुआ क़बूल फ़रमाता है।

मछली के पेट से बाहर आना : तो हमने उसकी पुकार सुन ली, और उसे ग़म से नजात दी और ऐसी ही नजात देंगे मुसलमानों को।

यानी यूनुस अलैहिस्सलाम ने जब अल्लाह तआला का ज़िक्र किया और इज़हार उज़्र किया तो अल्लाह तआला ने आपको मछली के पेट में रहने के ग़म से नजात अता फ़रमाई, इसी तरह अगर मुसलमानों में से किसी ने भी अपनी परेशानियों की फ़रयाद रब से तलब की, सच्चे दिल से ताइब हुए तो अल्लाह तआला उनकी फ़रयाद को भी क़बूल करेगा।

मछली के पेट से बाहर आकर : हमने उसे मैदान में डाल दिया और वह बीमार था और हमने उस पर कद्दू का पेड़ लगाया।

हर बेल जिसमें तना न हो उसे यक़तीन कहा जाता है लेकिन यहां मुराद कद्दू है।

अल्लामा आलूसी ने तहरीर फ़रमायाः

कि यहां मुराद दवा (पेड़) है और वह मशहूर मारूफ़ है कि वह कद्दू है जिसे नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पसंद फ़रमाते थे।

अल्लाह तआला ने हज़रत यूनुस अलैहिस्सलाम पर उसको इसलिये उगाया कि आप पर साया करे और आपको ठंडक पहुंचाए और आपको इसके पत्ते मस करें और इसके बड़े पत्ते आप पर रहें ताकि आप पर मक्खियां न बैठें क्योंकि ब्यान किया जाता है कि कद्दू के पत्तों पर मक्खियां नहीं बैठतीं।

हज़रत यूनुस अलैहिस्सलाम मछली के पेट से बाहर आते वक़्त नौ मौलूद बच्चे या चूज़े वग़ैरह की तरह थे यानी आपका चमड़ा बहुत नर्म व नाजुक था। उस पर कोई बाल वग़ैरह नहीं था। आपके लिये मक्खियां बाइसे तकलीफ़ हो सकती थीं और सख़्त चीज़ का मस करना और सूरज की गर्मी आपके लिये तकलीफ़ का बाइस बन सकती थी इसलिये अल्लाह तआला ने अपनी मेहरबानी से आपको इसके साये से आराम पहुंचाया और कद्दू के पत्ते उतरे हुए चमड़े के लिये भी मुफ़ीद होते हैं इसलिये भी कद्दू को उगाया कि इसके पत्ते आप के चमड़े के लिये फ़ायदेमंद हो सकें।

ख़्याल रहे कि शजरत उसे कहते हैं जिसमें तना हो अगरचे कद्दू की बेल होती है लेकिन अल्लाह तआला ने उसे दरख़्त की तरह बड़ा तनावर बना दिया था अल्लाह तआला ने एक बकरी को आप पर मुक़र्रर कर दिया था जो आपको दूध पिलाती थी इस तरह आप को तवानाई जिस्म की पुख़्ता जिल्द और बाल अता कर दिये गये।

मछली के पेट में रहने की मुद्दत तीन दिन सात दिन, बीस दिन और एक माह मुख़्तलिफ़ अक़वाल में ब्यान की गई है लेकिन अल्लामा राज़ी रहमतुल्लाह अलैहि ने फ़रमायाः

मुझे मालूम नहीं कि किस दलील से यह मुद्दत मुक़र्रर हुई इस पर कोई दलील नहीं।

हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम, हज़रत सुलेमान अलैहिस्सलाम

हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम ने एक सौ साल उम्र पाई, आप मूसा अलैहिस्सलाम से ५६६ साल बाद तशरीफ़ लाये। (इसके दीगर अक़वाल भी मंकूल हैं) हज़रत सुलेमान अलैहिस्सलाम, हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम के बेटे हैं आपने ५६ साल उम्र पाई। यह नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से १७०० साल पहले तशरीफ़ लाये।

और हमारे बंदे दाऊद नेमतों वाले को याद करो बेशक वह बड़ा रुजू करने वाला है।

"ज़ाल अय्यादि" का मायने नेमतों वाला भी है और ताक़त व कुव्वत वाला भी है। यानी आप अलैहिस्सलाम को अल्लाह तआला ने इबादात के अदा करने और गुनाहों से बचने की ताक़त अता फ़रमाई। अल्लाह तआला ने जब आपकी ताक़त की तारीफ़ फ़रमाई तो इससे वही मुराद हो सकती है, जो काबिले तारीफ़ हो और क़ाबिले तारीफ़ वही ताक़त है जिसकी वजह से इंसान इबादात पर अमल कर सके और गुनाहों से बच सके। हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम अपने तमाम कामों में अल्लाह तआला की तरफ़ रुजू करने वाले थे।

दाऊद अलैहिस्सलाम की इबादत : आप एक दिन रोज़ा रखते और एक दिन इफ़्तार करते यह दरअसल आप अलैहिस्सलाम का नफ़्स के ख़िलाफ़ जिहाद था क्योंकि इंसान का नफ़्स बच्चे की तरह होता है। बच्चे को एक दिन दूध पिलाया जाये और दूसरे दिन न पिलाया जाये यह बहुत मुश्किल है इसी तरह दाऊद अलैहिस्सलाम ने अपने नफ़्स से ऐसा जिहाद किया जो आम आदमी के लिये बहुत मुश्किल था क्योंकि एक दिन नफ़्स को ख़्वाहिशात से रोकना और दूसरे दिन ख़्वाहिशात की इजाज़त देना अज़ीम काम था। आप अलैहिस्सलाम आधी रात अल्लाह तआला के हुजूर क़याम फ़रमाते, यानी नवाफ़िल अदा करते, फिर रात का तिहाई हिस्सा सोते, फिर रात का छटा हिस्सा जागकर इबादत में मशगूल रहते।

दाऊद अलैहिस्सलाम और सुलेमान अलैहिस्सलाम की नबुव्वत का ज़िक्र : और बेशक हमने दाऊद और सुलेमान (अलैहिमस्सलाम) को बड़ा इल्म अता किया था और दोनों ने कहा।

सब ख़ूबियां अल्लाह तआला को जिसने हमें अपने बहुत से ईमान वाले बंदों पर फ़ज़ीलत बख़्शी।

इल्म से मुराद लोगों के दर्मियान क़ज़ा (फ़ैसला) का इल्म, परिन्दों की बोलियां जानने का इल्म

वग़ैरह हमें फ़ज़ीलत दी इससे मुराद नबुव्वत और जिन्नों शैतानों को आपके ताबेअ बनाना है।

इल्म से इंसान को फ़ज़ीलत हासिल होती है इंसान को चाहिये कि नेमतों के हासिल होने पर उनका शुक्रिया अदा करे, किसी नेमत का इज़हार बतौर तकब्बुर नाजायज़ है बतौर शुक्र ज़िक्र करना मुस्तहब है सुन्नते अम्बियाए किराम है।

दाऊद अलैहिस्सलाम की बादशाहत का ज़िक्र : ऐ दाऊद (अलैहिस्सलाम) हमने तुझे ज़मीन में नायब किया तू लोगों में सच्चा हुक्म कर और ख़्वाहिश के पीछे न जाना कि तुझे अल्लाह तआला की राह से बहका देगी, बेशक वह जो अल्लाह तआला की राह से बहकते हैं उनके लिए सख़्त अज़ाब है इसलिये कि वह अज़ाब के दिन को भूल बैठे।

हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम को नबुव्वत और बादशाहत दोनों हासिल थीं।

आप अलैहिस्सलाम को रब ने जो फ़रमाया: ख़्वाहिश के पीछे न जाना, इसका मतलब यह है कि आप को ख़्वाहिश के पीछे चलने से उम्मत की तालीम के लिये रोका गया है, कि वह ग़ौर व फ़िक्र करें। और आप अलैहिस्सलाम को जो हुक्म दिये गये हैं वह उनकी ताबेदारी करें। जब यह ख़िताब मासूम को हो सकता है तो दूसरों को तो यक़ीनन यह हुक्म होना ही है।

रिवायत किया गया है कि बनी मरवान में से किसी ख़लीफ़ा ने हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ रज़ियल्लाहु अन्हु के सामने यह कहा कि क्या तुमने सुना है? जो हमें ख़बर दी गई है कि ख़लीफ़ा पर कोई क़लम नहीं चलेगा और उस पर मासीयत नहीं लिखी जायेगी। आप रज़ियल्लाहु अन्हु ने यही आयत तिलावत की। मक़सद यह था कि अल्लाह तआला ने अपने नबी को तालीमे उम्मत के लिये ख़्वाहिशात के पीछे चलने से मना किया है तो ख़लीफ़ा क्या चीज़ हो सकता है?

फ़ायदा : एक इंसान दुनिया में ज़िनदगी गुज़ारने की सभी ज़रूरयात पर अमल नहीं कर सकता, कोई खेती बाड़ी करता है तो कोई दाने पीसता है कोई रोटी पकाता है कोई कपड़ा बुनता है और कोई सिलाई करता है। हासिल कलाम यह है कि हर एक अपने अपने काम में मशग़ूल होता है तमाम काम मिलकर तमाम की ज़रूरयात पूरी होती हैं जब सब लोगों को एक ही इलाक़ा एक ही सर ज़मीन में जमा होकर रहना है और मुख़्तलिफ़ काम सर अंजाम देने हैं तो उनमें इख़्तेलाफ़ात, झगड़े होना भी कुदरती अम्र है। इसलिये उनमें कोई एक ऐसा शख़्स भी होना चाहिये जिसे ताक़त और दबदबा हासिल हो जो उनके इख़्तेलाफ़ात दूर करा सके, उनके झगड़ों में फ़ैसला करा सके यह वह बादशाह ही हो सकता है जिसका हुक्म कुल पर नाफ़िज़ होता है।

लिहाज़ा साबित हुआ कि मख़लूक़ की मसलेहत के लिये बादशाह सियासतदान का होना ज़रूरी है फिर अगर बादशाह अपनी ख़्वाहिश के मुताबिक़ अहकाम नाफ़िज़ करे, अपने दुनियावी मुनाफ़े हासिल करे मख़लूक़ को अज़ीम ज़रर (नुक़्सान) पहुंचाये, रईयत को अपनी ज़ात पर कुरबान कर दे, यानी अपनी बादशाहत को बचाने के लिये रईयत की तबाही का लिहाज़ न करे, रईयत के ज़रिये अपने मक़ासिद हासिल करे तो दुनिया तबाही व बर्बादी पर पहुंच जाती है मख़लूक़ में क़त्ल व ग़ारत का वक़ूअ आम होता है आख़िरकार इस बादशाह की तबाही का वक़्त भी आ जाता है इस तरह बादशाह के मज़ालिम से मुल्क की बर्बादी के साथ बादशाह की अपनी बर्बादी भी हो जाती है।

अगर बादशाह शरई अहकाम के मुताबिक़ फ़ैसले करे तो निज़ामे आलम दुरुस्त हो जाता है भलाई के दरवाज़े अच्छे तरीक़े से खुल जाते हैं इन मक़ासिद के पेशे नज़र कौम की तालीम व तर्बियत के लिये हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम को यह हुक्म दिया।

पहाड़ और परिन्दे हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम के ताबे : बेशक हमने उसके साथ पहाड़ को मुसख़्ख़र कर दिये कि तस्बीह करते शाम को और सूरज चमकते और परिन्दे ज़मा किये होते और सब उसके फ़रमा बर्दार थे।

अल्लाह तआला ने पहाड़ों को आपके साथ मुसख़्ख़र कर दिया यानी पहाड़ आपके ताबे थे आप जहां चलते पहाड़ आपके साथ चलते या आप जिस जगह पहाड़ों को ले जाने का इरादा फ़रमाते पहाड़ वहां चले जाते। आप अलैहिस्सलाम का मोजिज़ा अल्लाह तआला की कामिल हिकमत व कुदतर पर दलालत करता है आप अलैहिस्सलाम की आवाज़ बहुत हसीन थी, आवाज़ में रोब और दबदबा भी था। जब आप अच्छी आवाज़ से ज़बूर शरीफ़ पढ़ा करते तो पहाड़ों से भी तस्बीहात की हसीन व जमील गुनगुनाहट सुनाई देती।

इसमें अल्लाह तआला की कुदरत के कई कारनामे मौजूद हैं यानी पहाड़ों के जिस्म में ज़िन्दगी पैदा फ़रमाता है फिर उन्हें शऊर अता फ़रमाता है फिर उन्हें कुदरत से नवाज़ता है फिर उन्हें बोलने की ताक़त देता है कि वह अल्लाह तआला की तस्बीहात पढ़ते हैं, इसकी मिसाल कुरआन पाक में एक और भी है:

जब उस (मूसा) के रब ने अपनी तजल्लीयात का ज़हूर पहाड़ पर फ़रमाया।

यानी अल्लाह तआला ने पहाड़ में अक़्ल व फ़हम पैदा किये, फिर उसे अपने सिफ़ाती नूर के देखने के लिये ताक़त व समझ अता किये देखने पर वह पहाड़ बर्दाश्त न कर सका।

हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम के ख़ुश आवाज़ी से ज़बूर पढ़ने और तस्बीहात पढ़ने के साथ साथ परिन्दे भी तस्बीहात पढ़ते थे आप अलैहिस्सलाम के क़रीब आकर कान लगाकर सुनते थे इतने क़रीब हो जाते थे कि आप परिन्दों को गर्दन से पकड़कर उनसे प्यार करते।

बल्कि बाज़ हज़रात ने ब्यान किया है कि आप अलैहिस्सलाम की आवाज़ में रब ने ऐसा अजीब असर रखा था कि आप जब ज़बूर पढ़ते तो चलता पानी रुक जाता दरख़्तों पर यह असर होता कि गोया वह भी ज़बाने हाल से आपके साथ तस्बीहात पढ़ रहे हैं और उनके पत्ते झड़ने शुरू हो जाते।

फ़ायदा : अल्लामा राज़ी रहमतुल्लाह अलैहि फ़रमाते हैं जब यह पता चला कि पहाड़ आपके साथ चलते और तस्बीहात पढ़ते और परिन्दे आपके पास जमा हो जाते थे।

उन परिन्दों का आपके पास इज्तेमा वह हश्र है उनका हाशिर यानी जमा करने वाला अल्लाह तआला है।

इससे अल्लाह तआला की कुदरत का भी पता चलता है और यह भी वाज़ेह हो जाता है कि जिस ज़ात ने यहां ग़ैर ज़िलउक़ूल (वह जिनका अक़्ल वालों में शुमार नहीं होता) कौल को अक़्ल अता करके और ग़ैर ज़ी रूह को रूह अता करके आपके ताबे बना दिया वह ज़ात क़यामत में ज़ी रूह की रूह क्योंकर

नहीं लौटा सकता।

तंबीह : आम तौर पर अहले अरब लफ़्ज़ बोलते हैं सूरज तुलू हो गया और मायने लेते हैं सूरज रौशन हो गया आयत करीमा में लफ़्ज़ इशराक़ इस्तेमाल हुआ है इससे सलाते ज़ुहा पर दलील पकड़ी गई है।

हज़रत उम्मे हानी रज़ियल्लाहु अन्हा से मरवी है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हमारे घर तश्रीफ़ लाये आपने वुज़ू करके पानी तलब किया और वुज़ू करके चाश्त की नमाज़ अदा फ़रमाई और इरशाद फ़रमाया: ऐ उम्मे हानी

यह नमाज़ इशराक़ है

हज़रत ताऊस हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत करते हैं आपने पूछा कि क्या तुम चाश्त की नमाज़ का ज़िक्र कुरआन पाक में पाते हो? तो हाज़िरीन ने जवाब दिया नहीं, तो आपने यही आयत करीमा तिलावत की।

यानी यह नमाज़ हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम अदा फ़रमाते थे आप अलैहिस्सलाम ने कहा मेरे दिल में हमेशा सलाते ज़ुहा के मुताल्लिक़ ख़्याल आता रहता था कि इसका ज़िक्र कुरआन पाक में है या नहीं तो मैंने इसे पा लिया।

इससे ज़ाहिर होता है कि इशराक़ और ज़ुहा एक ही हैं यानी एक ही वक़्त है और एक ही नमाज़ है अव्वल वक़्त को इशराक़ कहा जाता है और आख़री को ज़ुहा कहा गया है आख़िर वक़्त ज़वाल से थोड़ा पहले तक है, जब बाज़ औक़ात यह नमाज़ अव्वल वक़्त में पढ़ी गई और बाज़ औक़ात में आख़िर में तो यह गुमान हुआ कि दो वक़्त अलग अलग हैं और अलग अलग नमाज़े हैं। (हालांकि नमाज़ एक ही है)

इशराक़ या चाश्त की रकआत : कम से कम दो रकअतें और कमाल का अदना दर्जा चार रकअतें हैं इससे ज़ायद जितनी चाहे पढ़े। और आठ रकअतें और इससे भी ज़ायद बारह रकअतें हैं तमाम तादाद की सूरतों पर अहादीस मुबारका दाल हैं।

बुख़ारी शरीफ़ में हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु की रिवायत रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से है

आपने दो रकअतें अदा करने और इनको न छोड़ने का हुक्म फ़रमाया।

मुस्लिम मुस्नद अहमद इब्ने माजा में हज़रत उम्मे हानी से मरवी है।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम सलाते ज़ुहा चार रकअत पढ़ते थे और ज़्यादा फ़रमाते जितना रब तआला चाहता।

इब्ने अब्दुल बर्र ने तमहीद में अकरमा रज़ियल्लाहु अन्हु से उम्मे हानी रज़ियल्लाहु अन्हा की रिवायत को बयान किया।

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मक्का मुकर्रमा तश्रीफ़ लाये तो आप सल्लल्लाहु अलैहि

वसल्लम ने आठ रकअतें अदा कीं मैंने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम यह कौन सी नमाज़ है? आपने फ़रमाया चाश्त की नमाज़ है।

एक ज़ईफ़ रिवायत में बारह रकअत का ज़िक्र भी मिलता है।

ख़्याल रहे कि राक़िम का मतलब सिर्फ़ मसला की तहक़ीक़ थी जिन बुज़ुर्गों को अल्लाह तआला ने तौफ़ीक़ अता की है वह इशराक़ के वक़्त अलग नवाफ़िल पढ़ते हैं और चाश्त के वक़्त अलग। उन्हें इस मुस्तहसन अमल से मना करना मक़सूद नहीं।

यह जाहिलाना तर्ज़े अमल है कि फ़लां वक़्त दुआ न करो, फ़र्ज़ के बाद दुआ साबित नहीं सुन्नतों और नवाफ़िल के बाद दुआ साबित नहीं, जनाज़ा के बाद दुआ नहीं, जुमेरात को दुआ नहीं, चालीसवें पर दुआ नहीं, न जाने क्यों ख़ुदा से मांगने में भी जाहिलों को शर्म आती है? ख़ुदा से न मांगने वाले मुतक्किबर जहन्नम का ईंधन हैं इस मसले पर मेरी किताब शमा हिदायत का मुताला किया जाये।

आपकी बादशाही का दबदबा और असर ख़िताब : और हमने उसको उसकी सल्तनत को मज़बूत किया और उसे हिकमत और क़ौल फ़ैसल दिया।

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा से मरवी है कि छत्तीस हज़ार आदमी रात को आपकी हिफ़ाज़त करने वाले होते सुबह होती तो आप उनको फ़रमाते कि तुम लौट जाओ तुम पर अल्लाह का नबी राज़ी है। बाज़ रिवायात में यह ज़िक्र है कि आपकी हिफ़ाज़त करने वाले चालीस हज़ार की तादाद में होते, इतनी तादाद में लोग अपने शौक़ व मुहब्बत की वजह से आपकी हिफ़ाज़त के लिये आते थे इसमें अपनी सआदत समझते और बाइसे बर्कत समझते।

अल्लामा आलूसी का यह कहना कि यह अक़लन बईद है क्योंकि इतने आदमियों की ज़रूरत नहीं थी। यह क़ौल मुझे दुरुस्त नज़र नहीं आ रहा है अगरचे अल्लाह तआला के नबी को ज़रूरत नहीं थी लेकिन आपके गुलामों को आपकी ख़िदमत की ज़रूरत थी।

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा से मरवी है कि बनी इस्राईल के एक शख़्स ने हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम के पास एक शख़्स पर गाये का दावा किया उसने इंकार किया, हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम ने मुद्दई से गवाह तलब किये उसके पास गवाह नहीं थे। आप अलैहिस्सलाम ने उन दोनों को कहा तुम दोनों जाओ मैं इस मामले मे ग़ौर व फ़िक्र करूंगा। वह दोनों आपकी महफ़िल से चले गये।

हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम को नींद आ गई थी आपको ख़्वाब में कहा गया कि मुद्दई को क़त्ल कर दो, आप अलैहिस्सलाम ने ख़्याल किया यह ख़्वाब है मुझे इस मामले में जल्दी नहीं करनी चाहिये, दूसरी रात फिर ख़्वाब में आपको यही कहा गया कि उस शख़्स को क़त्ल कर दो आपने फिर भी उस पर अमल न किया। तीसरी रात फिर आपको यह कहा गया कि उस शख़्स को क़त्ल कर दो या तुम पर अल्लाह तआला की तरफ़ से गिरफ़्त आयेगी। आप अलैहिस्सलाम ने उस शख़्स की तरफ़ पैग़ाम भेज कर उसे बुलवा लिया। आपने कहा मुझे अल्लाह तआला ने हुक्म दिया है कि मैं तुम्हें क़त्ल करा दूं उसने कहा कि आप मुझे बग़ैर गवाहों और बग़ैर किसी सबूत के क़त्ल करायेंगे? आपने फ़रमाया:

हां! क़सम है अल्लाह तआला की, मैं अल्लाह तआला का हुक्म तुम पर ज़रूर जारी करूंगा।

उस शख़्स ने कहा आप जल्दी न करें क्योंकि मैं आपको असल बात बताता हूं मैं इस (गाय के) जुर्म की वजह से इस गिरफ़्त में नहीं आया, बल्कि मैंने इस शख़्स के बाप को धोखे से क़त्ल कर दिया था और उसे ज़ाहिर नहीं होने दिया था। मैं इस गुनाह की वजह से अल्लाह तआला की गिरफ़्त में आ गया हूं। हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम ने उसे क़त्ल करने का हुक्म दे दिया। इस वाक़िये के बाद बनी इस्राईल पर आपकी बहुत बड़ी हैबत और अज़ीम रोब तारी हो गया। इस तरह आपकी बादशाहत का दबदबा हर शख़्स के दिल में बैठ गया।

अल्लाह तआला ने आपको हिकमत अता की। दूसरे मक़ाम पर फ़रमाया:

यानी इल्म और ऐसे आमाल जिसे हिकमत अता की जाये उसे ख़ैरे कसीर अता किया जाता है जो दीन व दुनिया में अच्छे और नेक हों और दुरुस्त एतेक़ादात का अता होना यह सब हिकमत में दाख़िल हैं।

पुर असर ख़िताबे फ़ैसल : अल्लाह तआला ने आपको ऐसे ख़िताबे फ़ैसल से नवाज़ा जिसकी वजह से आप लोगों को कामिल तौर पर अल्लाह तआला के अहकाम पहुंचाने की कुदरत रखते थे जो बहुत ज़्यादा असर अंदाज़ा होता था ख़्याल रहे कि जमादात यानी पत्थरों वग़ैरह को तो इदराक व शऊर ही हासिल नहीं और इंसान के बग़ैर दूसरे हैवानों को इदराक व शऊर हासिल है लेकिन वह किसी चीज़ को कुछ न कुछ समझ कर दूसरों को समझाने के क़ाबिल नहीं। अपने दिल की बात किसी तक पहुंचा सकें, यह उनसे नहीं हो सकता। सिर्फ़ इंसान ही है कि किसी चीज़ का इदराक करके दूसरे तक भी पहुंचा सकता है फिर बाज़ इंसान इस अंदाज़ से कलाम करते हैं कि इसमें मज़ामीन ख़ल्त मल्त होते हैं, दूसरों को समझने में दिक़्क़त पेश आती है और बाज़ अपनी बात को कामिल तौर पर समझाने की कुदरत रखते हैं।

हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम को अल्लाह तआला ने इल्म व अमल, अमले सालेह एतेक़ादे सालेह अता करके जिस तरह कुव्वते बातिनया को कमाल बख़्शा इसी तरह ख़िताबे फ़ैसल अता करके आपकी कुव्वते गोयाई (बोलने की कुव्वत) को कमाल अता किया।

लोहे का आपके हाथ में नर्म हो जाना : और हमने उसके लिये लोहा नर्म किया कि वसी ज़िरहें बना और बनाने में अंदाज़े का लिहाज़ रख।

आपके हाथ में लोहा मोम और गूंधे हुए आटे की तरह नर्म हो जाता था आग में नर्म करने और हथौड़े से कूटने की ज़रूरत पेश नहीं आती थी आप अलैहिस्सलाम जैसे चाहते उसी तरह लोहे को हाथ से इधर उधर फेर कर ज़िरह बना लेते थे। अल्लाह तआला के हुक्म के मुताबिक़ आप बहुत ख़ूबसूरत और मुअतदिल ज़िरह बनाते, न बहुत बड़ी न बहुत छोटी। इसमें कील भी एक ख़ास मिक़दार की लगाते, बहुत बड़े या छोटे नहीं होते थे। ताहम बाज़ मुफ़स्सेरीन किराम ने कहा आपको कील लगाने की ज़रूरत ही दरपेश नहीं आती थी लोहा नरम हो जाता जैसे चाहते उसको उसी तरह फेर लेते।

हज़रत मक़ातिल से मरवी है कि आप अलैहिस्सलाम जब से बनी इस्राईल के बादशाह बने तो आप

ने यह अमल शुरू किया कि रात को आम आदमी की हैसियत से बाहर तशरीफ़ ले जाते, जो शख़्स मिलता उससे पूछते दाऊद बादशाह कैसा है? एक मर्तबा आपकी मुलाक़ात एक फ़रिश्ता से हुई जो इंसानी शक्ल में था जब आपने उससे सवाल किया तो उसने कहा: आदमी तो बहुत अच्छा है सिर्फ़ एक बात उसमें न पाई जाये तो वह बहुत ही कामिल इंसान है, आपने पूछा वह कौन सी बात है? उसने कहा कि वह बैतुल माल से रिज़्क़ खाते हैं अपने हाथ की कमाई से खायें तो उनके फ़ज़ाइल में तकमील पाई जाये।

आप अलैहिस्सलाम ने अल्लाह तआला से दुआ की ऐ अल्लाह मुझे ज़िरह बनाने का इल्म अता फ़रमा दे और मुझ पर ज़िरह बनानी आसान फ़रमा दे अल्लाह तआला ने आपको ज़िरह बनाने का इल्म अता फ़रमा दिया और लोहे को आपके हाथ में नर्म फ़रमा दिया। आप उसकी आमदनी का तिहाई हिस्सा मुसलमानों की मसलेहत में ख़र्च फ़रमाते। एक ज़िरह हर रोज़ तैयार फ़रमाते थे एह हज़ार, चार हज़ार और छ: हज़ार दिरहम तक आपकी बनाई हुई ज़िरहें फ़रोख़्त हुईं। इसकी आमदनी में से आप अपनी ज़ात पर ख़र्च करते और अपने अहल व अयाल का ख़र्च इसी से पूरा फ़रमाते। फ़ुक़रा और मसाकीन को भी इसी माल से देते। ३६० ज़िरहें आपने तैयार फ़रमाई थीं उनको फ़रोख़्त करके आपने इतने दिरहम हासिल कर लिये थे कि आप बैतुल माल के मोहताज न रहे बल्कि इससे कसीर रक़म ग़ुरबा को भी दी।

अंबियाए किराम का मक़ाम बहुत बुलंद है : कुछ आयाते करीमा की तशरीह में हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम की तरफ़ ऐसे क़िस्से मंसूब कर दिये गये हैं जो सरासर बातिल हैं। मैनें जब उन आयाते करीमा की तफ़सीर अल्लामा राज़ी रहमतुल्लाह अलैहि की तफ़सीर कबीर में देखी तो इरादा हुआ कि आपके अज़ीम दलाइल को ज़िक्र किया जाये। इसके बाद तफ़सीर ज़ियाउल क़ुरआन को देखा तो ख़्याल हुआ कि अहले इल्म और अवाम दोनों के लिये यह तफ़सीर ही ज़्यादा बेहतर है कि इसी को बिल्कुल उसी तरह ज़िक्र कर दिया जाये। इसलिये ज़ियाउल क़ुरआन से ही नक़्ल कर रहा हूं। उलेमाए किराम की ख़िदमत में अर्ज़ है कि इस मक़ाम में तफ़सीर कबीर का ज़रूर मुताला फ़रमायें।

और क्या आई है आपके पास इत्तेला फ़रीक़ैन के मुक़द्दमे की? जब उन्होंने दीवार फ़ांदी इबादतगाह की और जब अचानक दाख़िल हुए दाऊद अलैहिस्सलाम पर पस आप घबरा गये उनसे, उन्होंने कहा डरिये नहीं हम तो मुक़द्दमे के दो फ़रीक़ हैं ज़्यादती की है हममें से एक ने दूसरे पर, आप हमारे दर्मियान इंसाफ़ से फ़ैसला फ़रमाइये, और बे इंसाफ़ी न कीजिये। और दिखाइये हमें सीधा रास्ता। (सूरत निज़ाअ यह है) यह मेरा भाई है और इसकी ९९ दुंबियां हैं और मेरे पास सिर्फ़ एक दुम्बी है अब यह कहता है कि वह भी मेरे हवाले कर दो और सख़्ती करता है मेरे साथ गुफ़्तगू में। आप अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया: बेशक इसने ज़ुल्म किया है तुम पर यह मुतालबा करके कि तेरी दुंबी को अपनी दुंबियों में मिला दे और अक्सर हिस्सादार ज़्यादती करते हैं एक दूसरे पर सिवाए उन हिस्सेदारों के जो ईमान लाये और नेक काम करते रहे और ऐसे लोग बहुत थोड़े हैं और फ़ौरन ख़्याल आ गया दाऊद अलैहिस्सलाम को कि हमने इसे आज़माया है। सो वह माफ़ी मांगने लग गये अपने रब से और गिर पड़े रुकू (सज्दे) में और (दिल व जान से) उसकी तरफ़ मुतावज्जेह हो गये पस हमने बख़्श दी

उनकी तक़सीर और बेशक उनके लिये हमारे हां बड़ा कुर्ब है।

इससे पहले कि इस क़िस्सा की तहक़ीक़ की जाये जो आम तौर पर यहां ब्यान किया जाता है। मैं मुनासिब समझता हूं कि पहले आयात की तश्रीह कर दी जाये और आख़िर में इस क़िस्से के मुताल्लिक़ मुहक़्क़ेक़ीन उलेमा की राए क़ारेईन की ख़िदमत में पेश की जाये।

जब किसी वाक़िये की तरफ़ मुख़ातिब को मुतावज्जेह करना होता है तो इसका आग़ाज़ इस क़िस्म के इस्तिफ़हाम से किया जाता है ताकि सुनने वाला हमा तन गोश होकर (बड़ी तवज्जोह से) इस वाक़िये को सुने और इससे इबरत हासिल करे।

यानी क्या आपको इस वाक़ेय की इत्तेला दी है कि जब मुद्दई और मुद्दआ अलैह दोनों फ़रीक़ दीवार फ़ांद कर हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम के इबादत ख़ाने में अचानक जा धमके। दीवार पर रेंग कर चढ़ना, महराब से मुराद आपकी इबादत का हुजरा है क्योंकि वहां आप अलैहिस्सलाम अपने नफ़्स से बरसरे पैकार रहते थे। इसलिये उसको महराब कहा गया। मस्जिद के महराब को भी इसलिये महराब कहा जाता है कि वहां भी जमाअत मुसलमान इमाम हवाए नफ़्स (नफ़्स की ख़्वाहिशात) (शैतान का भटकाना) और तरह तरह के ख़तरात और मुश्किलात के ख़िलाफ़ अपनी क़ौम को जिहाद करने की तलक़ीन करता है।

याद रहे कि मसाजिद में महराब की मौजूदा शक्ल अहदे रिसालत में न थी।

अल्लामा जलालुद्दीन सियूती ने वज़ाहत फ़रमाई है कि मसाजिद में महराबों की आज जो मशहूर व मारूफ़ शक्ल है नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के ज़माने में न थी।

हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम का मामूल था कि आप एक रोज़ हुकूमत के कारोबार सर अंजाम देते, मुक़द्देमात का फ़ैसला करते, दूसरे रोज़ अपने घर के फ़राइज़ अंजाम देते। तीस दिन उन्होंने सिर्फ़ इबादत के लिये मख़सूस किया हुआ था और उस दिन अपनी इबादतगाह पर पासबान मुक़र्रर कर देते ताकि लोग उनकी इबादत में मुख़ल न हों (ख़लल न डालें) उस रोज़ किसी की मजाल न होती कि अंदर आये। एक दफ़ा आप अलैहिस्सलाम अपने इबादत के हुजरे में इबादत में मसरूफ़ थे तो ऐसे वक़्त में उन अजनबियों का दीवार फांदकर बग़ैर इजाज़त तलब किये हुए अंदर घुस आना, बड़ा हैरत अंगेज़ वाक़िया था आप अलैहिस्सलाम को घबराहट सी लाहक़ हुई वह भी उस चीज़ को भांप गये और कहने लगे डरिये नहीं, हम तो दो फ़रीक़ हैं और अपने मुक़द्दमे का फ़ैसला कराने के लिये आपकी ख़िदमत में हाज़िर हुए थे। आप अज़राहे नवाज़िश हक़ व इंसाफ़ के साथ हमारा फ़ैसला फ़रमा दीजिये और हममें से किसी पर ज़ुल्म और ज़्यादती न हो जो फ़रीक़ भी ज़ुल्म और अदवान (गुमराही) की राह पर गामज़न है उसे अद्ल व इंसाफ़ की सीधी राह पर चलने की हिदायत फ़रमा दीजिये।

अब वह अपना तनाज़अ पेश करते हैं उनमें से एक कहने लगा कि यह शख़्स मेरा भाई है इसके पास ९९ दुंबियां हैं और मेरे पास सिर्फ़ एक दुंबी है। यह मुझको कहता है कि यह एक दुंबी भी मुझे दे दो मैं इसकी हिफ़ाज़त करूंगा इस तरह मेरी दुंबियों की तादाद पूरी (यानी सौ हो जायेगी और तू इस दुंबी की हिफ़ाज़त के झंझट से छूट जायेगा। यह जब बात करता है तो छा जाता है और सुनने वाला यूं महसूस करता है कि यह सच्चा और मेरी दादरसी करने के बजाए उल्टा मुझे ही मुजरिम क़रार दे

दिया जाता है इसका दूसरा मतलब यह है कि इस रोब से मुझसे बात करता है कि मैं जवाब देने की जुर्रत भी नहीं कर सकता।

आपने फ़रीक़ैन की बात सुनने के बाद फ़ैसला दिया कि यह इसकी सरासर ज़्यादती है यह इतना हरीस है कि ९९ दुंबियों से भी इसकी चश्मे आज़ (लालच वाली आखं) सैर नहीं होती बजाए इसके कि अपने भाई के पास सिर्फ़ एक दुंबी देखकर इसे रहम आए और दस बीस दुबियां अपने पास से दे दे ताकि इसकी हालत संभल जाये और बिरादराना ताल्लुक़ात की लाज भी रह जाये वह इसके पास एक दुंबी भी नहीं देख सकता है इसे भी छीन लेना चाहता है यह सरासर ज़्यादती है। यह सरीह जुल्म है।

आप अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया, अक्सर हिस्सादारों का यही दस्तूर है बड़े हिस्सा वाला अपने से कम हिस्से वाले और कमज़ोर को उसकी क़लील पूंजी से भी महरूम कर देता है अलबत्ता वह हिस्सेदार जो अल्लाह तआला पर ईमान रखते हैं और नेक आमाल के ख़ू गर हों (आदत बनाई हो) वह अपने दूसरे हिस्सेदारों पर जब्र नहीं करते, उनका हक़ नहीं छीनते, बल्कि हक़ व इंसाफ़ और मुरव्वत व इख़लास के तक़ाज़ों को हर क़ीमत पर पूरा करते हैं लेकिन ऐसे लोगों की तादाद बहुत थोड़ी है।

यह फ़ैसला सुनाने के साथ ही हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम को कोई अपनी बात याद आ गई और यह ख़्याल किया कि यह तो मेरी आज़माईश की जा रही है। फ़ौरन मग्फ़िरत तलब करने लगे और सज्दा में गिर गये। यहां राकेअ से मुराद साजिद है और रुकू व सज्दों के मायनो में अक्सर इस्तेमाल होता रहता है । जैसे इस शेअर में है:

वह सज्दा करते हुए मुंह के बल गिर पड़ा और बारगाहे इलाही में हर गुनाह से तौबा की।

इस शेअर में दाऊद अलैहिस्सलाम का ज़िक्र नहीं, शेअर से सिर्फ़ यह बात साबित की गई है कि रुकू का मयाने सज्दा आम तौर पर आता रहता है।

दाऊद अलैहिस्सलाम का असल वाक़िया : आयात की इस तशरीह के बाद हम इस वाक़िये की तहक़ीक़ करते हैं जिसकी तरफ़ इब्तेदा में इशारा किया गया है मुफ़क्किरे इस्लाम मुफ़स्सिरे कुरआन अल्लामा पीर मुहम्मद करम शाह अल अज़हरी रहमतुल्लाह अलैहि फ़रमाते हैं:

ज़ियाउल कुरआन में आप मुख़्तलिफ़ मक़ामात पर पढ़ आये हैं कि बनी इस्राईल अपने अंबियाए किराम पर फ़ुहश तोहमतें लगाने में कितने बेबाक थे? ऐसी चीज़ें जो एक आम शरीफ़ आदमी की तरफ़ मंसूब करते हुए इंसान हिचकिचाता है वह बे दरेग़ अपने नबियों, अपने मोहसिनों और अपने मशाहीर (मश्हूर हज़रात) की तरफ़ मंसूब कर देते थे। इन्हीं खुराफ़ात में से एक यह वाक़िया है जो बाईबिल में बड़ी तफ़सील से नमक मिर्च लगाकर लिखा गया है। जी तो नहीं चाहता कि क़ारेईन के ज़ौक़ को मजरूह किया जाये, लेकिन अर्ज़ हाल के लिये चंद सतूर लिखना ज़रूरी समझता हूं।

किताब २ स्मोएल बाब ११ में लिखा है:

और शाम के वक़्त दाऊद अपने पलंग से उठकर बादशाही महल की छत पर टहलने लगा और छत पर से उसने एक औरत को देखा जो नहा रही थी और वह औरत निहायत ख़ूबसूरत थी तब दाऊद ने लोग भेज कर उस औरत का हाल दर्याफ़्त किया और किसी ने कहा क्या वह अलआम की बेटी

बुत सबअ नहीं जो हत्ती औरियाह की बीवी है? दाऊद ने लोग भेजकर उसे बुला लिया। वह उसके पास आई और उसने उससे सुहबत की फिर वह चली गयी। और वह औरत हामिला हो गयी। सो उसने दाऊद के पास ख़बर भेजी कि मैं हामिला हूं।

इससे आगे चलकर वह लिखते हैं:

हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम ने यूआब जो फ़ौज का कमांडर था को लिखा कि जब दुश्मन से जंग शुरू हो तो हत्ती औरियाह को ऐसी जगह तैनात किया जाये कि उसका क़त्ल हो जाना यक़ीनी हो। मुलाहज़ा हो।

सुबह को दाऊद ने यूआब के लिये एक ख़त लिखा और उसे औरिया के हाथ भेजा और उसने ख़त में यह लिखा कि औरिया को घमसान में सबसे आगे रखना और तुम उसके पास से हट जाना ताकि वह मारा जाये और जान बहक़ हो और यूं हुआ कि जब यूआब ने उस शहर का मुलासरा कर लिया तो उसने औरियाह को ऐसी जगह रखा जहां वह जानता कि बहादुर मर्द हैं। और उस शहर के लोग निकले और यूआब से लड़े और वहां दाऊद के ख़ादिमों में से थोड़े से लोग काम आये और हत्ती औरयाह भी मर गया।

उलेमाए यहूद ने अपनी मुक़द्दस किताब में जो इल्ज़ाम हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम पर लगाया इसको फिर यूं उछाला कि ज़बान ज़द आम हो गया। हत्ता कि बाज़ मुफ़स्सेरीन ने इन आयात की तफ़सीर करते हुए इस वाक़िये को उसी तरह ज़िक्र कर दिया।

हज़रत इमाम फ़ख़रुद्दीन राज़ी रहमतुल्लाह अलैहि ने इस क़िस्से से मुताल्लिक़ ख़ूब तहक़ीक़ की है और तहक़ीक़ का हक़ अदा कर दिया है फ़रमाते हैं।

यहां एक अफ़साना ब्यान किया जाता है बाज़ लोगों ने तो इस अफ़साना को ऐसा रंग दिया है कि गुनाहे कबीरा की निस्बत अल्लाह तआला के जलीलुलक़द्र बंदे की तरफ़ होती है और बाज़ ने इस वाक़िये को इस तरह ज़िक्र किया है कि गुनाहे सग़ीरा का इर्तकाब लाज़िम आता है। इमाम राज़ी फ़रमाते हैं:

कि मेरा अक़ीदा और मेरी तहक़ीक़ है कि यह वाक़िया सरासर बातिल है।

फिर भी इसके बुतलान पर कई दलीलें पेश की हैं। फ़रमाते हैं अगर ऐसी हरकत फ़ासिक़ तरीन आदमी की तरफ़ भी मंसूब की जाये तो वह भी इसको बर्दाश्त नहीं करेगा, और जिस बद बख़्त ने ऐसी बात अल्लाह तआला के नबी की तरफ़ मंसूब की है अगर ख़ुद उस पर ऐसा इल्ज़ाम लगा दिया जाये तो वह अपनी कमीनगी और ख़बासते तबअ के बावजूद उसकी पुरज़ोर तर्दीद करेगा और बोहतान लगाने वाले पर लानत भेजेगा। ऐसा घिनावना जुर्म जिसे एक अदना दर्जा का उम्मती अपने लिये पसंद नहीं करता एक नबी का दामने इस्मत इससे कब आलूदा हो सकता है?

नीज़ अगर क़िस्से को सही तस्लीम कर लिया जाये तो हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम पर दो संगीन जुर्म साबित होंगे एक क़त्ल बे गुनाह और दूसरा फ़ेअल क़बीह।

क़ुरआन में यह आयत इसलिये नाज़िल की गई ताकि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की दिलजोई हो और हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम के उस्वए हस्ना को पेशे नज़र रखते हुए वह कुफ़्फ़ार

की दिल आज़ारी से कबीदा ख़ातिर न हों अगर हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम से यह हरकत सरज़द हुई होती तो अल्लाह तआला ऐसे शख़्स के ज़िक्र से अपने महबूब की दिलजोई न फ़रमाता जो अपनी ख़्वाहिशे नफ़्स के सामने बेबस है और क़त्ल बे गुनाह के इर्तकाब की जुर्रत करता है।

नीज़ साबिक़ा आयात में हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम को जिन सिफ़ाते आलिया से मौसूफ़ फ़रमाया गया है।

हमारा बंदा, इबादत व ताअ़त में बड़ा ताक़तवर, हर वक़्त रुजूअ़ करने वाला।

अगर आप अलैहिस्सलाम से ऐसी रज़ील हरकत सरज़द हुई होती तो आपको इन औसाफ़े जमीला से मुत्तसिफ़ करने का फिर कोई मक़सद न रहता। और आपको ख़ुशख़बरी हरगिज़ न दी जाती इसलिये आयात का सियाक़ और सबाक़ दोनों इस क़िस्सा की पुर ज़ोर तर्दीद करते हैं और इसे सरापा लग़्व और बेहूदा क़रार देते हैं।

हज़रत सईद बिन अल–मुसय्यब से मरवी है कि सैय्यदना अली मुर्तज़ा करमल्लाह तआला ने फ़रमायाः

यानी जो शख़्स हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम के मुताल्लिक़ ऐसी बात करे जिस तरह क़िस्सा गो किया करते हैं तो मैं एक सौ साठ दुर्रे (कोड़े) लगाऊंगा।

बाज़ हज़रात ने इन आयात का पस मंज़र इस तरह ब्यान किया है कि उस ज़माने में यह रिवाज आम था और उसमें कोई क़बाहत महसूस नहीं की जाती थी कि अगर किसी की ज़ौजा की तरफ़ किसी का मीलान हो जाता तो वह उससे कहता कि तुम अपनी बीवी को तलाक़ दे दो ताकि मैं उसके साथ निकाह करूं, चुनांचे बसा औक़ात वह शख़्स अपने दोस्त की यह दरख़्वास्त क़बूल कर लेता और वह शख़्स इद्दत गुज़ारने के बाद उस औरत से निकाह कर लेता। लेकिन नबी की शान बड़ी ऊंची है, इसलिये अल्लाह तआला ने आपको इस बात पर तंबीह फ़रमा दी।

(यानी दाऊद अलैहिस्सलाम ने किसी शख़्स की औरत की तरफ़ मीलान करके उसे तलाक़ देने के मुताल्लिक़ कहा था फिर उससे निकाह कर लिया था।)

इमाम अबू बकर जस्सास रहमतुल्लाहि अलैहि ने यह ख़्याल ज़ाहिर किया कि अभी उस औरत की शादी और यह कि साथ नहीं हुई थी, सिर्फ़ मंगनी तै पाई थी और हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम ने उस औरत के घर वालों से उसका रिश्ता तलब किया और उन्होंने वह रिश्ता आपको दे दिया। लेकिन यह सारी बातें क़यास आराईयों के बग़ैर और कुछ नहीं।

(अगर वाक़िया इस सूरते मज़कूरा में पेश किया जाये तो आप की तरफ़ गुनाहे सग़ीरा की निस्बत लाज़िम आयेगी, जिससे अंबियाए किराम पाक हैं।)

इन तमाम तौजीहात के बाद अल्लामा राज़ी रहमतुल्लाह अलैहि फ़रमाते हैं कि मुनासिब यह है कि आयात में मज़कूरा इस वाक़िये को इस तरह ब्यान किया जाये कि न गुनाह कबीरा की निस्बत आप की तरफ़ साबित हो न गुनाहे सग़ीरा की बल्कि आपकी मदह व सना का पहलू निकले।

बनी इस्राईल में एक गरोह आपका मुख़ालिफ़ हो गया था और उन्होंने आपको क़त्ल करने की तदबीरें सोचना शुरू कर दी थी आप हर तीसरे दिन ख़लवत नशीन होकर अल्लाह तआला के ज़िक्र और इबादत में मशग़ूल हो जाया करते थे, उन्होंने इस मौक़े को ग़नीमत जाना और दीवार फ़ांद कर अंदर आ गये ताकि तंहाई में आपका काम तमाम कर दें और पहरेदारों को भी इसका पता न चले। जब वह आपके हुजरे में पहुंचे तो वहां बहुत से आदमी मौजूद थे जिनकी वजह से वह अपने मंसूबे को अमली जामा न पहना सके और अपने आने की एक झूटी और मन घड़ंत वजह ब्यान कर दी कि :

हम आप से एक मुक़द्देमा का फ़ैसला कराने के लिये आये दरवाज़ा बंद पाया, पहरेदारों ने अंदर आने की इजाज़त न दी इसलिये मजबूरन हम दीवार फ़ांदकर अंदर आ गये आप उनकी बदनीयती पर आगाह हो गये पहले तो आपको बड़ा गुस्सा आया और उनसे इंतेक़ाम लेने का इरादा फ़रमाया लेकिन बाद में उफ़्व व दरगुज़र से काम लेते हुए उन्हें माफ़ कर दिया। और इस्तिग़फ़ार इसलिये मांगी कि उनके दिल में अपनी ज़ात के मुताल्लिक़ इंतेक़ाम लेने का ख़्याल ही क्यों पैदा हुआ। अल्लामा राज़ी आख़िर में फ़रमाते हैं:

यानी हमारी यह तौजीह सब अक़वाल से बेहतर है और इस ज़िम्न में हमारी यही तहक़ीक़ है अल्लाह तआला अपनी किताब के असरार और रमूज़ को बेहतर जानता है।

अल्लामा अबू हयान उन्दलुसी ने अपनी तफ़सीर अल–बहरुल मुहीत में अपनी तहक़ीक़ का खुलासा तहरीर फ़रमाया है इसका तर्जमा भी हदियए नाज़िरीन है।

हमारी तहक़ीक़ यह है कि दीवार फ़ांद कर महराब में आने वाले इंसान थे वह ऐसे रास्ते से दाख़िल हुए थे जो दाख़िल होने का रास्ता न था और ऐसे वक़्त आये थे जो आपकी अदालत का वक़्त न था आप अलैहिस्सलाम को अंदेशा हुआ कि कहीं वह मुझे क़त्ल न कर दें (क्योंकि एक गिरोह आपका मुख़ालिफ़ था) लेकिन जब वाज़ेह हो गया कि यह दोनों तो किसी मुक़द्दमा का फ़ैसला कराने के लिये आये थे जिस तरह अल्लाह तआला ने ब्यान फ़रमाया है तो हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम को पता चल गया कि यह सारा वाक़िया (यानी उन लोगों का बे वक़्त आ धमकना और ग़ैर मारूफ़ राह से आना और आपका उनके बारे में यह ख़्यला करना कि यह क़त्ल के इरादे से आये हैं और इस वजह से आप का घबरा जाना) आज़माईश है अल्लाह तआला ने उन्हें इससे आज़माना चाहा है और उनके बारे में सूए ज़न करना आपकी शाने नबुव्वत से फ़ुरू तर है (बहुत कम है) इसलिये आप मग़्फ़िरत तलब करने लगे। आख़िर में अल्लामा मज़कूर लिखते हैं :

हमारा पुख़्ता यक़ीन है कि अंबियाए किराम गुनाह और ख़ता से मासूम होते हैं उनसे ऐसे उमूर क़तअन सर ज़द नहीं हो सकते। अगर ऐसा होता तो शरई अहकाम पर एतेमाद बाक़ी नहीं रहता और अंबियाए किराम के फ़रमूदात (इरशादात) से एतेबार उठ जाता, क़िस्सा गो (क़िस्से कहानियां ब्यान करने वाले) लोगों ने मनसबे नबुव्वत के मनाफ़ी जो कहनियां घड़ ली हैं हम उनको रद्दी की टोकरी में फेंक दिया करते हैं हमारा मसलक तो वह है जो शायर ने इस शेअर में ब्यान किया है कहता है:

जिस बारे में शक व शुबह हो वहां हम अक़्ल का फ़ैसला मानते हैं जब कि क़िस्सा गौ के हमनशीन हिकायतों और कहानियों को तरजीह देते हैं।

शैख़ अकबर हज़रत इब्ने अरबी रहमतुल्लाह अलैहि ने यहां ख़ूब लिखा है:

वाइज़ों को चाहिये कि वह अपने वअज़ों में ग़लत क़िस्से और झूठी कहानियां ब्यान न किया करें हुज़ूर अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया है कि बंदा जब झूट बोलता है तो उसकी बदबू से फ़रिश्ते तीस मील दूर भाग जाते हैं और उस आदमी को बहुत बुरा जानते हैं जब वाइज़ यह जानता है कि फ़रिश्ते मजलिसे वअज़ में हाज़िर होते हैं तो उस पर लाज़िम है कि वह सच बोलने की पूरी कोशिश करे। फिर फ़रमाते हैं:

वाइज़ पर फ़र्ज़ है कि ऐसी बातों से बिल्कुल ही इज्तेनाब करे जो मुअर्रिख़ीन ने बिला तहक़ीक़ यहूदियों से नक़्ल की हैं जिनमें उन मुक़द्दस हस्तियों की लग़्ज़िश का ब्यान होता है जिनकी अल्लाह तआला ने सना व तौसीफ़ फ़रमाई है और उन्हें दूसरे लोगों से चुन लिया है और फिर उन लग़वियात के बारे में कहे कि वह कुरआन मजीद की तफ़सीर ब्यान कर रहा है।

नतीजा वाज़ेह हुआ : मुफ़क्किरे इस्लाम मुफ़स्सिरे कुरआन हज़रत पीर मुहम्मद करम शाह साहब कुद्देस सिर्रहु की इस ईमान अफ़रोज़ तफ़सीर जो तफ़सीरे कबीर और अलबहरुल मुहीत और फ़तूहाते मक्कीया के हवाला जात से मुज़य्यन है, से वाज़ेह हो गया कि हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम की तरफ़ मंसूब होने वाली कहानियां कि आपने (मआज़ल्लाह) एक औरत से बुराई का इर्तकाब किया और फिर उसके ख़ाविन्द को क़त्ल करा दिया, आपने किसी की मंगनी तुड़वाकर ख़ुद मंगनी कर ली या अपने दोस्त की बीवी पर आशिक़ होकर उसे तलाक़ देने पर मजबूर कर दिया। यह तमाम बेहूदा बातिल अफ़साने हैं। यहूद की मन घड़त कहानियां हैं अल्लाह तआला के नबी की शान के लायक़ हरगिज़ हरगिज़ ऐसे वाक़ियात नहीं हो सकते। सहीह वाक़िया वही है जो साहबे तफ़सीरे कबीर ने या साहबे अलबहरुल मुहीत ने तहरीर किया है और इसी को सही समझने की ताकीद शैख़ अकबर ने फ़रमाई है।

दाऊद अलैहिस्सलाम की ख़िलाफ़त और अद्ल व इंसाफ़ का हुक्म : ऐ दाऊद हमने मुक़र्रर किया है आपको अपना नायब ज़मीन में पस फ़ैसला करो लोगों के दर्मियान इंसाफ़ के साथ और न पैरवी किया करो हवाए नफ़्स की, वह बहका देगी तुम्हें राहे ख़ुदा से बेशक जो लोग भटक जाते हैं राहे ख़ुदा से उनके लिये सख़्त अज़ाब है इसलिये कि उन्होंने भुला दिया था यौमे हिसाब को और नहीं पैदा किया हमने आसमान और ज़मीन को और जो कुछ उनके दर्मियान है बेफ़ायदा यह तो कुफ़्फ़ार का गुमान है। पस बर्बादी है कुफ़्फ़ार के लिये आग (के अज़ाब) से, क्या हम बना देंगे उन्हें जो ईमान लाये और नेक अमल करते हैं उन लोगों की मानिंद जो फ़साद बरपा करते हैं ज़मीन में या हम बना देंगे परहेज़गारों को फ़ाजिरों की तरह। यह किताब है जो हमने उतारी है आपकी तरफ़ बड़ी बा–बर्क़त ताकि तदब्बुर करें उसकी आयतों में और ताकि नसीहत पकड़ें अक़्लमंद।

हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम को बताया जा रहा है कि तुम किसी शाही खानदान के फ़र्द नहीं हो कि तुम्हें यह हुकूमत और तख़्त वरसा में मिला हो। तुम एक ग़ैर मारूफ़ चरवाहे थे, हमने अपने फ़ज़्ल व करम से आपके लिये यह राह हमवार की और अपनी मेहरबानी से बनी इस्राईल का ताजदार बनाया। और वसी व अरीज़ सल्तनत मरहमत फ़रमा दी, और मसनदे ख़िलाफ़त पर मुतमक्किन कर दिया। इस एहसास का शुक्र अदा करने का यह तरीक़ा है कि हर फ़ैसला अद्ल व इंसाफ़ के मुताबिक़ करो,

और अपनी पसंद व नापसंद को किसी तरह असर अंदाज़ न होने दो। अगर तुमने अपनी ख़्वाहिशे नफ़्स पर इंसाफ़ को कुर्बान किया तो याद रखना अल्लाह तआला की राह से बहक जाओगे। उसकी तौफ़ीक़ का दामन तुम्हारे हाथ से छूट जायेगा।

और जो शख़्स राहे हक़ से बहक जाता है वह अल्लाह तआला के सख़्त अज़ाब में मुब्तला कर दिया जाता है।

अल्लामा क़ाज़ी सनाउल्लाह पानी पती रहमतुल्लाह अलैहि ने इस आयत के ज़िम्न में तहरीर फ़रमाया है जो पेशे ख़िदमत है:

एक रोज़ हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने हज़रत तलहा, जुबैर, कअब और सलमान रज़ियल्लाहु अन्हुम से पूछा ख़लीफ़ा और बादशाह में क्या फ़र्क़ है? हज़रत तलहा और जुबैर ने कहा हम नहीं जानते हज़रत सलमान ने अर्ज़ किया:

ख़लीफ़ा वह है जो रअईयत (अवाम) में अद्ल करता है उनमें माल मसावी तौर पर तक़सीम करता है और वह अपनी रियाया पर यूं मेहरबान और शफ़ीक़ होता है जिस तरह कोई शख़्स अपने अह्ल व अयाल पर शफ़ीक़ होता है और अल्लाह तआला की किताब के मुताबिक़ फ़ैसला करता है।

सुलेमान बिन ओजा रज़ियल्लाहु अन्हु से मरवी है कि एक रोज़ हज़रत फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु अन्हु ने हाज़रीन से कहा:

मुझे मालूम नहीं कि मैं ख़लीफ़ा हूं या बादशाह।

एक शख़्स कहने लगा ऐ अमीरुल मोमिनीन दोनों में बड़ा फ़र्क़ क्या है?

उसने कहा है ख़लीफ़ा वह है जो लेता है तो हक़ व इंसाफ़ से और ख़र्च करता है तो सही जगह पर और अल्लाह तआला के फ़ज़्ल व करम से आप ऐसा ही करते हैं और बादशाह वह होता है जो लोगों पर जोर व सितम करता है इससे लेता है इसको देता है यह सुनकर हज़रत उमर ख़ामोश हो गये।

सरबराहे ममलिकत के लिये इस्लाम ने बादशाह सुल्तान चैयरमेन वग़ैरह कलिमात पसंद नहीं किये क्योंकि उनमें ख़ुद सरी और अनानियत की बू आती है बल्कि ख़लीफ़ा का लफ़्ज़ तजवीज़ किया है। जिसका मायने ख़ुद सर और मुख़्तार का नहीं बल्कि नायब और क़ायम मक़ाम है। यह लफ़्ज ही बता रहा है कि ममलिकते इस्लामिया का सरबराह अपने रब का नायब होता है और नायब का काम अपने आक़ा के अहकाम की तामील करना है और उसके इरशादात के मुताबिक़ उसके दिये हुए इख़्तेयारात को इस्तेमाल करना है।

यह वह फ़र्क़ है जो दुनिया के दूसरों निज़ामों और इस्लाम के निज़ामे सियासत में बुनियादी अहमियत का मालिक है कुरआन पाक ने यहां ख़लीफ़ा की ज़िम्मेदारियों को बड़े मुअस्सिर अंदाज़ और पिराए में ब्यान कर दिया कि उसका फ़र्ज़े अव्वलीन यह है कि वह अद्ल व इंसाफ़ के तक़ाज़ों को पूरा करे, फ़ैसला करते वक़्त ख़ारजी चीज़, सिफ़ारिश, कोई तमअ कोई ख़ौफ़ हत्ता कि अपने ज़ाती मफ़ाद को भी उस पर असर अदांज़ न होने दे। जो हाकिम ऐसा नहीं करता गोया उसने रोज़े जज़ा को फ़रामोश कर दिया। क़यमात के दिन पर उसका ईमान न रहा। ज़बान से वह हज़ार दावे करे कि वह कयामत

पर ईमान रखता है अगर वह फ़ैसला करते वक़्त मीज़ाने अद्‌ल को बराबर नहीं रख सकता तो उसको यह दावा करने का क़तअन कोई हक़ नहीं। और जो लोग क़यामत पर यक़ीन नहीं रखते उसे फ़रामोश कर देते हैं उनके लिये अज़ाबे शदीद है।

कुफ़्फ़ार और मुलहिद लोग यह समझते हैं कि ज़िन्दगी बस यही दुनियावी ज़िन्दगी है इसमें ख़ूब ऐश व इशरत कर लो, ख़ूब मज़े उड़ाओ, दौलत कमाओ जितनी कमा सकते हो हलाल व हराम के चक्कर में न पड़ो, यह तो मुल्लाओं की मनघड़त बातें हैं। जाह व मनसब हासिल करने के लिये किसी की हक़ तलफ़ी होती है तो होने दो, मक्र व फ़रेब की ज़रूरत पड़े तो हरगिज़ न घबराओ। क़यामत किस ने देखी है। हज़ार हा साल से यह सूफ़ी लोग क़यामत की धमकियां देते चले आ रहे हैं उनकी बातों में आकर अपनी ज़िन्दगी का लुत्फ़ बर्बाद न करो।

अल्लाह तआला उनके इस मुग़ालते का रद फ़रमाता है कि अगर तुम्हारी बातें दुरुस्त हों तो इसका मतलब यह हुआ कि ज़मीन व आसमान का यह सारा निज़ाम अबस (बेकार) और बे मक़सद है एक नेक कार मोमिन और एक मुफ़सिद के दर्मियान कोई फ़र्क़ नहीं है। मुत्तक़ी और परहेज़गार और फ़ासिक़ व फ़ाजिर सब यकसां हैं सुन लो, इस कायनात के ख़ालिक़ हम हैं और हमने कोई चीज़ भी अबस (बेकार) और बेमक़सद पैदा नहीं की। हम अलीम भी हैं हकीम भी, हमारा कोई काम हिकमत से ख़ाली नहीं। क़यामत आयेगी और ज़रूर आयेगी। उस रोज़ मुत्तक़ी और परहेज़गार हमारे इनामात से मालामाल होंगे और फ़ासिक़ व फ़ाजिर ज़लील होंगे। हक़ का बोल बाला होगा और हर क़िस्म की ग़लत फ़हमियां दूर हो जायेंगी।

हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम के जालूत को क़त्ल करने का वाक़िया हज़रत तालूत के वाक़िया में इंशाअल्लाह तआला ज़िक्र किया जायेगा।

हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम के जानशीन

हज़रत सुलेमान अलैहिस्सलाम

आला हज़रत मौलाना अहमद रज़ा ख़ान रहमतुल्लाह अलैहि ने 'वरस' का मायने जानशीन किया है हज़रत सुलेमान अलैहिस्सलाम आप की बादशाहत और ख़िलाफ़त के जानशीन बने। माल व दौलत की विरासत यहां मुराद नहीं बल्कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के इरशाद के मुताबिक़ अंबियाए किराम के माल व दौलत का किसी को वारिस नहीं बनाया जाता है।

इसी तरह अबू दाऊद और तिर्मिज़ी ने हज़रत अबू अद्दरदा रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत किया कि आप ने कहा मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को इरशाद फ़रमाते हुए सुनाः

बेशक उलेमा अंबियाए किराम के वारिस होते हैं और बेशक अंबियाए किराम के वुरसा दराहिम व दनानीर के वारिस नहीं होते बल्कि उनके इल्म के वारिस होते हैं। जिस ने इस इल्म को हासिल कर लिया उसने अज़ीम हिस्सा हासिल कर लिया।

हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम के १६ बेटों में से सबसे छोटे हज़रत सुलेमान थे अगर यहां विरासत माल की मुराद होती तो सब बेटे वारिस होते। सिर्फ़ सुलेमान अलैहिस्सलाम न होते, नीज़ बादशाहत और नबुव्वत में भी विरासत लाज़िमी तौर पर जारी नहीं सिर्फ़ अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से हासिल होती है इसलिये वारिस का जानशीन मायने करना बहुत ही कामिल और हसीन है।

हज़रत सुलेमान अलैहिस्सलाम परिन्दों की बोलियां समझते : उन्होंने कहा ऐ लोगों हमें परिन्दों की बोली सिखाई गई और हर चीज़ में से हम को अता हुआ बेशक यही ज़ाहिर फज़्ल है।

यह तो हम रोज़ मर्रा मुशाहिदा करते हैं कि परिन्दे ज़रूर अपनी अपनी बोलियां बोलते हैं जिस तरह एक क़िस्म के परिन्दे दूसरी क़िस्म के परिन्दों से मुख़्तलिफ बोलियां बोलते हैं इसी तरह एक ही क़िस्म के परिन्दे मुख़्तलिफ़ औक़ात में मुख़्तलिफ़ क़िस्म की बोलियां बोलते हैं। एक दूसरे से लड़ते हुए उनके बोलने का अंदाज़ और होता है। एक दूसरे से मुहब्बत के वक़्त उनकी गुफ़्तगू का अंदाज़ मुख़्तलिफ़ होता है। जब उन पर कोई दरिन्दा या शिकारी हमला करना चाहे तो उनके कलाम की नोईयत और होती है। इससे पता चलता है कि उनकी बोलियां सिर्फ़ चीख़ व पुकार शोर व गुल में ही नहीं होतीं बल्कि उनमें मतालिब व मक़ासिद भी पाये जाते हैं जिन्हें वह ख़ुद अच्छी तरह समझते है। अगरचे हम उनकी बोलियों को समझने से क़ासिर होते हैं। सुलेमान अलैहिस्सलाम को अल्लाह तआला ने परिन्दों की बोलियां समझने की कुव्वत अता फ़रमाई थी आप अलैहिस्सलाम समझ लेते थे कि यह क्या कह रहे हैं।

याद रहे कि आप अलैहिस्सलाम का अपने आपको जमा (बहु वचन) के सेग़े से ताबीर करना सियासत के क़ानून के मुताबिक़ था कि बादशाह अपनी रियाया से इसी अंदाज़ से कलाम करते हैं इसमें तकब्बुर की नीयत नहीं थी।

बाज़ हज़रात ने कहा कि परिन्दों की बोलियां हज़रत सुलेमान अलैहिस्सलाम और उनके बाप हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम दोनों ही जानते थे इसलिये जमा का सीग़ा लाया गया। लेकिन यह क़ौल दुरुस्त

नहीं क्योंकि यह साबित नहीं कि हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम भी परिन्दों की बोलियां जानते थे।

हज़रत सुलेमान ने मोर की आवाज़ को सुनकर कहा कि यह कह रहा है कि जैसा करोगे वैसा भरोगे।

हुद हुद की आवाज़ को सुनकर कहा यह कह रहा है कि ऐ गुनाहगारो अल्लाह तआला से मग़्फ़िरत तलब करो।

ख़त्ताफ़ (लंबे बाज़ुओं वाला, छोटे पांव वाला, स्याह रंग का परिन्दा) की बोली सुनकर कहा यह कह रहा है नेकी के काम करो, ताकि आगे उनकी जज़ा पाओ।

कुम़री की आवाज़ को सुनकर कहा कि यह तस्बीह पढ़ रही है। सुबहा न रब्बियल आला।

चील को बोलते हुए सुनकर कहा यह कह रही है रब के बग़ैर हर चीज़ को फ़ना हो जाना है।

भट तीतर की आवाज़ को सुनकर कहा यह कह रहा है जो ख़ामोश रहा वह सलामती में रहा।

मुर्ग़ की आवाज़ सुनकर कहा यह कह रहा है ऐ ग़ाफ़िलो अल्लाह तआला को याद करो।

गिध की आवाज़ को सुनकर फ़रमाया यह कह रही है ऐ इंसान जितना चाहे तो ज़िन्दा रहे आख़िर तुझे मौत आनी है।

अक़ाब की आवाज़ को सुनकर कहा यह कह रहा है लोगों से दूर रहने में ही उन्स है।

मैढक की आवाज को सुनकर कहा यह तस्बीह पढ़ रहा है। सुब्हान रब्बियल कुद्दूस।

ख़्याल रहे कि इन परिन्दों की हमेशा यह बोली नहीं होती बल्कि बाज़ औक़ात यह बोली उन्होंने बोली। मुख़्तलिफ़ औक़ात में मुख़्तलिफ़ बोलियां बोलते हैं।

हज़रत सुलेमान अलैहिस्सलाम का यह कहना कि अल्लाह तआला ने हमें हर चीज़ अता की है यह बतौर शुक्र था बतौर फ़ख़्र नहीं। जैसे नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया मैं औलादे आदम का सरदार हूं मुझे इस पर कोई फ़ख़्र नहीं यानी मैं नेमत के इज़हार और शुक्र के तौर पर कह रहा हूं।

हवा हज़रत सुलेमान अलैहिस्सलाम के ताबेअ थी: और हमने हवा सुलेमान के ताबेअ कर दी उसकी सुबह की मंज़िल एक माह की और शाम की मंज़िल एक माह होती।

हवा को हज़रत सुलेमान अलैहिस्सलाम के ताबेअ इस तरह कर दिया गया था जिस तरह सवारी इंसान के ताबेअ होती है हज़रत क़तादा रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं ग़दू का मतलब सुबह से ज़वाल तक और रवाह का मतलब ज़वाल से शाम तक। यानी आप सुबह से ज़वाल तक इतना सफ़र कर लेते थे जितना सय्याह लोग एक माह में करते और ज़वाल से शाम तक इतना सफ़र कर लेते जितना एक माह में किया जाता। आप अलैहिस्सलाम सुबह बैतुल मुक़द्दस में हाते तो क़ैलूला के वक़्त अस्तग़र में पहुंच जाते। फिर अस्तग़र से शाम तक ख़ुरासान के क़िले तक पहुंच जाते। सय्याह लोग उस वक़्त तक एक फ़रसख़ यानी तीस मील सुबह से ज़वाल तक सफ़र करते थे तो आप तीस फ़रसख़ करते। इसी तरह शाम को भी।

ख़्याल रहे कि अल्लामा राज़ी के नज़दीक हज़रत सुलेमान अलैहिस्सलाम के ताबेअ यह आम हवायें नहीं थीं बल्कि ख़ास क़िस्म की हवा थी।

सुलेमान अलैहिस्सलाम के लिये तांबे का चश्मा : और हमने उनके लिये पिघले हुए तांबे का चश्मा बहाया।

इसका एक मक़सद तो यह था कि आपके लिये अल्लाह तआला ने तांबे को इस तरह नर्म कर दिया था जैसे आपके बाप हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम के लिये लोहा नर्म कर दिया था, तांबे की सनअत वाले लोग आपके पास ठंडा तांबा लाते आप बग़ैर आग और कूटने के जैसे उन्हें ज़रूरत होती उसी तरह बना देते। दूसरा मतलब यह है कि आप को अल्लाह तआला ने तांबे की धात एक चश्मा की सूरत में अता की थी जितना तावां ज़रूरी होता उतना उस चश्मे से ले लिया जाता।

सुलेमान अलैहिस्सलाम का लश्कर : और फ़राहम किये गये सुलेमान अलैहिस्सलाम के लिये लश्कर जिन्नो इंसानों और परिन्दों से पस वह नज़्म व ज़ब्त के पाबंद हैं।

हज़रत सुलेमान अलैहिस्सलाम के लश्कर का ज़िक्र हो रहा है कि वह तीन हिस्सों पर मुश्तमिल था जिन्न, इंसान और परिन्दे।

बाज़ लोग जो कुरआन करीम को अपने ख़्यालात और मज़ऊमात का लिबास पहनाना ही कुरआन दानी का कमाल समझते हैं उन्होंने इस आयत की तशरीह इस तरह की है:

कि जिन्न से मुराद जिन्नात नहीं बल्कि वह पहाड़ी क़वाइल हैं जो वदनी लिहाज़ से बड़े ताक़तवर थे और जिनको हज़रत सुलेमान अलैहिस्सलाम ने अपना वाज गुज़ार वना लिया था। और तुयूर (परिन्दे) से मुराद परिन्दे नहीं बल्कि तेज़ रफ़्तार घोड़ों पर सवार फ़ौजी दस्ते हैं।

काश वह इन्स का भी कोई ऐसा मायने घढ़ लेते जिससे यहां इसका इस्तेमाल दुरुस्त हो जाता, जब जिन्न से मुराद जंगली क़बाइल हैं जो इंसान हैं। और तुयूर से मुराद घुड़ सवार हैं और वह भी इंसान हैं। तो इन दोनों के दर्मियान अल–इन्स यानी इंसान ब्यान करने का क्या मक़सद हो सकता है?

अतफ़ तग़ायर व तख़ालुफ़ पर दलालत करता है और आयते करीमा से साफ़ मालूम होता है कि जिन्स और तुयूर इन्स की तरह दो अलग अलग नूअ हैं कोई लफ़्ज़ अगर बतौर मजाज़ किसी दूसरे मायने में इस्तेमाल हो तो इसका यह मतलब हरगिज़ नहीं होता कि जहां यह लफ़्ज़ इस्तेमाल होगा वहां इसका मजाज़ी मायने ही मुराद होगा, बल्कि मजाज़ी मायने लेने के लिये शर्त अव्वल यह है कि वहां इसका हक़ीक़ी मायने न लिया जाये नीज़ वहां कोई ऐसा क़रीना भी मौजूद हो जो इस मजाज़ी मायने का तअय्युन करे, जब यहां दोनों शर्तें मफकूद हैं तो इन अल्फ़ाज़ के हक़ीक़ी मायनों को नज़र अंदाज़ करके दूर की तावीलात करना यक़ीनन जाहिलाना जसारत है।

आयते करीमा में यू–ज़ऊन लफ़्ज आया हुआ है वज़अ कहते हैं रोकने और मना करने को।

इससे मुराद यह है कि अफ़वाज की कसरत के बावजूद वहां बद नज़्मी और इंतिशार का नाम व निशान तक न था। फ़ौज का हर हिस्सा लश्कर का हर दस्ता सफ़र व हिज़र में फ़ौजी नज़्म व ज़ब्त की सख़्ती से पाबंदी किया करता।

सुलेमान अलैहिस्सलाम के तख़्त के मुताल्लिक़ ग़ैर मोतबर क़िस्से : हज़रत सुलेमान अलैहिस्सलाम के तख़्त के मुताल्लिक़ कुछ क़िस्से इस क़िस्म के मशहूर कर दिये गये हैं जिन पर एतेबार करना दुरुस्त नहीं और न ही उनकी कोई हक़ीक़त है किसी मोतबर सनद से उनका कोई सबूत नहीं।

अल्लामा आलूसी रहमतुल्लाह अलैहि ने फ़रमाया कि अक्सर वाकियात ऐसे ब्यान किये जाते हैं जो ग़ैर मोतबर हैं उन पर एतेमाद न किया जाये। बल्कि सिर्फ़ उन वाक़यात पर ईमान लाया जाये, जो कुरआन पाक और अहादीस मुबारका से साबित हैं। ऐसे वाक़यात जो मुबालग़ा आमेज़ हैं जिन्हें क़िस्सा गो लोग और मुअर्रिख़ीन हज़रात ब्यान करते हैं उनसे इज्तेनाब ज़रूरी है ऐसे वाक़यात को सिर्फ़ यह ख़्याल कर के ब्यान करना कि अल्लाह तआला की कुदरत में हर चीज़ मुमकिन है इससे बे दीन लोगों के लिये दीन के साथ मज़ाक़ उड़ाने का दरवाज़ा अपने हाथों से खोलना लाज़िम आयेगा।

और यह भी कोई बईद नहीं कि अक्सर मुबालग़ा आमेज़ वाक़यात लोगों को दीन से मुतनफ़्फ़िर करने के लिये बेदीन लोगों ने घढ़ लिये हों।

अल्लामा आलूसी ने भी वह क़िस्से कुछ नक़्ल किये और मैं भी नक़्ल कर रहा हूं ताकि क़ारेईन के ज़ेहन में रहे कि यह वाक़यात ग़ैर मोतबर हैं किसी ब्यान करने वाले से सुनकर या किसी ग़ैर मोतबर किताब से पढ़कर उन पर यक़ीन न कर लें।

ग़ैर मोतबर क़िस्सा(१) : हज़रत सुलेमान अलैहिस्सलाम के लिये तीन लाख कुर्सियां रखी जाती थीं आपके क़रीब मोमिन लोग बैठते, फिर उनके पीछे मोमिन जिन्न बैठते, फिर आप परन्दों को हुक्म देते जो उन पर साया करते, फिर आप हवा को हुक्म देते जो उन्हें उठा लेती और उनका सुंबल से गुज़र होता और उसमें कोई हरकत न होती।

ग़ैर मोतबर क़िस्सा(२) : सुलेमान अलैहिस्सलाम का लश्कर एक सौ फ़रसख़ में फैला हुआ होता था। पच्चीस फ़रसख़ में इंसान होते, पच्चीस फ़रसख़ में जिन्न, पच्चीस फ़रसख़ में वहशी जानवर और पच्चीस में परिन्दे। और लकड़ी पर शीशे के बने हुए एक हज़ार आप के घर थे। तीन सौ आप की ज़ौजा थीं और सात सौ लौंडियां थीं, आप जहां जाते पहले तेज़ हवा को हुक्म देते वह उन घरों को बुलंद करती फिर आहिस्सा आहिस्ता चलने वाली हवा को हुक्म देते वह उनको वहां ले जाती जहां आप जाना चाहते।

ग़ैर मोतबर क़िस्सा(३) : आप हवा के ज़रिये ज़मीन व आसमान पर चल रहे थे कि आपके पास अल्लाह तआला की तरफ़ से वही आई कि मैं तुम्हारी बादशाही को और ज़्यादा कर रहा हूं कि तमाम मख़लूक़ में से कोई भी कलाम करेगा तो उसे आपके कानों में हवा के ज़रिये पहुंचा दिया जायेगा।

ग़ैर मोतबर क़िस्सा (४): जिन्नों ने आपके लिये सोने और रेशम से बुनकर एक क़ालीन बनाया जिसकी लंबाई और चौड़ाई एक एक फ़रसख़ थी और आप उसके दर्मियान अपना सोने का मिंबर रख कर बैठते, आपके इर्द गिर्द छः लाख सोने और चांदी की कुर्सियां बिछाई जाती सोने की कुर्सियों पर अंबियाए किराम बैठा करते और चांदी की कुर्सियों पर उलेमा और उनके इर्द गिर्द लोग बैठते, फिर उनके इर्द गिर्द जिन्न बैठते, परिन्दे अपने परों से उन पर साया करते, बादे सबा उस क़ालीन को उठाकर एक महीने की मसाफ़त तै करा देती।

इस क़िस्म के एक दो वाक़िये आपने और भी तहरीर किये हैं और उन पर अपनी राय जो आपेन क़ायम की है उसका ज़िक्र इस बहस की इब्तेदा में कर दिया गया है।

सुलेमान अलैहिस्सलाम का चूंटी का कलाम सुनकर मुस्कुराना : यहां तक कि जब चूंटियों के नाले पर आये एक चूंटी बोली: ऐ चूटियों अपने घरों में चली जाओ तुम्हें कुचल न डालें सुलेमान और उनके लश्कर बे ख़बरी में। तो सुलेमान अलैहिस्सलाम उसकी बात सुनकर मुस्कुराकर हंसे।

आम तौर पर सुलेमान अलैहिस्सलाम और आपका लश्कर हवा के ज़रिये सफ़र किया करते लेकिन उस सफ़र में आप आम लोगों की तरह सफ़र कर रहे थे आप अलैहिस्सलाम के लश्कर में कुछ लोग पैदल चल रहे थे और कुछ सवार थे चूंटियों की वह बस्ती ताइफ़ या शाम में थी। उनको हुक्म देने वाली उनकी मल्का थी। वह लंगड़ी थी उसका नाम ताख़िया या मंज़रह था।

सुलेमान अलैहिस्सलाम ने चूंटी की आवाज़ तीन मील दूर से सुनी थी आपने अपने लश्कर को आगे चलने से रोक दिया था कि चूटियां अपने घरों में दाख़िल हो सकें। यह अल्लाह तआला के नबी का मोजिज़ा है इसमें कोई ताज्जुब की बात नहीं।

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से गोह (एक क़िस्म का सांप) ने कलाम किया आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की रिसालत की शहादत दी। आपने गोह की आवाज़ और शहादत को सुन लिया, ख़ैबर में आपको बकरी का ज़हर आलूद पाया दिया गया था आपके मामूली तनावुल करने के साथ ही उस पाए ने कलाम किया और बताया कि मुझे ज़हर आलूद किया गया है। ज़िबह शुदा बकरी के गोश्त से आवाज़ सुनना अल्लाह तआला के हबीब का मोज़िजा ही तो है।

हज़रत सुलेमान अलैहिस्सलाम के मुस्कुराने की एक वजह चूंटी की एहतेयाती तदाबीर पर ताज्जुब करना था और दूसरी वजह यह थी कि आपको चूंटी की आवाज़ सुनने की रब ने जो तौफ़ीक़ अता फ़रमाई थी उस पर इज़हारे फ़रहत व सुरूर था।

फ़ायदा : हंसने की इब्तेदाई कैफ़ियत जिसमें आवाज़ नहीं होती उसे तबस्सुम कहा जाता है और दांतों के ज़ाहिर होने के साथ ही कुछ ख़फ़ीफ़ आवाज़ भी पैदा हो जो इंसान ख़ुद ही सुन सके उसे ज़िहक कहा जाता है और अगर आवाज़ इतनी बुलंद हो जो दूसरे भी सुन सकें उसे क़हक़हा कहा जाता है। नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से क़हक़हा लगाकर हंसना साबित नहीं। तबस्सुम आप अक्सर फ़रमाते थे और कभी आपसे ज़िहक यानी मामूली हंसना भी साबित होता था।

हज़रत आयशा फ़रमाती हैं : मैंने नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को कुल्ली तौर पर हंसते हुए कभी नहीं देखा।

यानी आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ज़्यादा तौर पर तबस्सुम फ़रमाते थे हमेशा ज़िहक यानी हंसना आप का मामूल नहीं था। कई अहादीस में आपका ज़िहक जिससे दाढ़ें ज़ाहिर हो जायें, भी साबित है लेकिन वह कभी कभी होता अलबत्ता ख़्याल रहे कि ज़िमख़शरी ने तो यह कहा है कि जिन अहादीस में यह ज़िक्र है :

बेशक आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हंसे यहां तक कि आपकी दाढ़ें ज़ाहिर हो गईं।

इसका हक़ीक़ी मायने मोतबर नहीं बल्कि सिर्फ़ इतना साबित है कि कभी कभी तबस्सुम से कुछ ज़्यादती हो जाती वरना नवाजिज़ आख़िरी दाढ़ों को कहा जाता है। इतना हंसना आप से साबित नहीं।

बेहूदा क़हक़हे लगाना, इंसान के दिल को मुर्दा बना देता है। हंसी की बात पर इंसान पूरी कोशिश करे कि आवाज़ को जितना कम कर सके उतना करे गली कूचों में ज़ोर ज़ोर से हंसना, इंसानियत का काम नहीं। दौराने असबाक़ इतना हंसना कि आवाज़ दूर दूर तक सुनाई दे यह क़िसी तरह भी मुस्तहसन नहीं।

चूंटी के कलाम में अजीब हिकमत : एक वजह तो वाज़ेह है कि उसने दूसरी चूंटियों को रौंदे जाने के डर से अपने मसाकिन में चले जाने का हुक्म दिया। दूसरी वजह अल्लामा राज़ी ने यह ब्यान फ़रमाई कि मैंने बाज़ किताबों में देखा कि उसने अपनी कौम को घरों में दाख़िल होने का हुक्म इसलिये दिया कि यह मेरी कौम हज़रत सुलेमान अलैहिस्सलाम और उनके लश्कर और उनके जलाले शान, कमाल और उनकी अज़मत को देखकर कहीं अल्लाह तआला की नेमतों का कुफ़रान (नाशुक्री) न कर दें कि हमें तो इतनी अज़ीम नेमतें हासिल नहीं, इसलिये उन्हें हुक्म दिया कि घरों में दाख़िल हो जाओ ताकि उन्हें हज़रत सुलेमान अलैहिस्सलाम की अज़ीम नेमतें नज़र न आयें और न ही अपनी नेमतों की नाशुक्री करें।

इससे यह सबक़ मिलता है कि इंसान दुनिया दारो की महाफ़िल में कम जाये उनके दुनियावी माल व मताअ (पूंजी) से उसका दिल न ललचाये।

इंसान चूंटी से कम अक़्ल क्यों ? चूंटियों की मलका ने जब उन्हें घरों में दाख़िल होने का हुक्म दिया तो कहा कि तुम्हें कुचल न डालें सुलेमान अलैहिस्सलाम और उनका लश्कर बेख़बरी में। ऐसे हाल में कि वह बे ख़बर हों कहकर उसने यह साबित कर दिया कि उसे यह मालूम है कि अल्लाह तआला के नबी मासूम होते हैं वह गुनाहों से पाक होते हैं यह उनसे कभी न होगा कि वह इन हैवानों को ज़ालिमाना तौर पर क़त्ल कर दें हां अलबत्ता भूल और बेख़बरी की वजह से उनसे ऐसा हो सकता है इस में अज़ीम तंबीह है कि इस्मते अंबिया पर यक़ीन रखना वाजिब है इसमें शक करना ईमान को ज़ाया करना है।

अल्लामा राज़ी की इस बहस से वाज़ेह हुआ कि वह इंसान जो अंबियाए किराम को मआज़ल्लाह गुनाहगार ठहराते हैं वह चूंटी से भी कम अक़्ल हैं कहां इंसान और कहां चूंटी? ख़ुदारा इंसान को हैवानों से ज़्यादा अक़्ल आनी चाहिये अंबियाए किराम की इस्मत पर कामिल ईमान होना लाज़िम है।

चूंटियों की समझदारी : चूंटियों के हालात में ग़ौर व फ़िक्र करने से यह वाज़ेह हो जाता है कि अल्लाह तआला ने उन्हें भी शउर व समझ दे रखी है यही वजह है कि यह गर्मियों में इतना तोशा जमा कर लेती हैं जो सर्दियों में उन्हें काफ़ी हो सके। और यह दानों के दो दो टुकड़े कर देती हैं। इस डर के पेशे नज़र के यह नमी (पानी की तरी) से कहीं उग न पड़े। अलबत्ता धनिया और मसूर के चार चार टुकड़े कर देती हैं क्योंकि उनके दो टुकड़े कर भी दिये जायें तो वह फिर भी उग पड़ते हैं जैसे टुकड़े न किये जायें तो उगते हैं इसके बाद अल्लामा आलूसी फ़रमाते हैं:

चूटियों के मुताल्लिक़ जो ब्यान किया है इससे और क़िस्म की मिसालों से पता चलता है कि उन्हें इल्म कुल्ली इस्तदलाली हासिल होता है शैख़ुल अशराफ़ ने इसी पर दलाइल क़ायम किये हैं कि तमाम

इन्सान को नुत्क़ नातिक़ा यानी कुल्लियात का इदराक हासिल होता है।

तंबीह : तफ़्सीर कबीर और मदारिक में ज़िक्र किया गया है कि हज़रत क़तादा कूफ़ा मे तश्रीफ़ लाये तो लोग आपकी तरफ़ मुतावज्जेह होना शुरू हुए। आप रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया जो चाहते हो तुम मुझसे सवाल पूछ सकते हो। वहां इमाम अबू हनीफ़ा रहमतुल्लाह अलैहि भी मौजूद थे जो उस वक़्त नौजवान बच्चे थे। आप रहमतुल्लाह अलैहि ने पूछा सुलेमान अलैहिस्सलाम वाली नमलता (चूंटी) मुज़क्कर थी या मुअन्नस? तो वह ला–जवाब हो गये। बाद आज़ां इमाम अबू हनीफ़ा रहमतुल्लाह अलैहि ने ख़ुद बताया कि वह मुअन्नस थी। उन्होंने पूछा तुम्हें यह बात कहां से पता चली? तो आप रहमतुल्लाह अलैहि ने जवाब दिया कि अल्लाह तआला ने फ़रमाया "क़ालत नमिल त" अगर मुज़क्कर होता तो "क़ाल नमिल त" होता। यानी क़ालत मुअन्नस हैं क़ाल मुज़क्कर हैं और चूंकि लफ़्ज़ की तरह मुज़क्कर और मुअन्नस दोनों के लिये इस्तेमाल होता है मुज़क्कर और मुअन्नस के दर्मियान फ़र्क़ के लिये लफ़्ज़ ज़कर और उनसा का इज़ाफ़ा करते हैं हमामता ज़कर (कबूतर) हमामता उनसा (कबूतरी) और इसी तरह शाता ज़कर (बकरा) और शाता उनसा (बकरी) कहा जाता है।

ताहम अल्लामा आलूसी ने फ़रमाया कि मुमकिन है कि लफ़्ज़ का एतेबार करके सेग़ा मुअन्नस ज़िक्र किया गया हो यानी जब ऐसा लफ़्ज़ हो जो बा–एतेबार लफ़्ज़ के मुअन्नस हो और बा–एतेबार मायने के मुज़क्कर हो उसके लिये फ़ेअल मुज़क्कर और मुअन्नस दोनों ला सकते हैं अलबत्ता लफ़्ज़ का एतेबार करना ज़्यादा फ़सीह है।

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः

एक चश्म जानवर, अंधे और बहुत लाग़र की कुरबानी न किया जाये।

यहां भी नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने लफ़्ज़ शाता और बक़रत वग़ैरह का एतेबार करके मुअन्नस सिफ़ात ज़िक्र की हैं हालांकि कुरबानी के लिये मुज़क्कर और मुअन्नस जानवरों का हुक्म एक ही हैं कोई मुअन्नस की तख़सीस नहीं लिहाज़ा मुमकिन है क़ालत नमिलता में लफ़्ज़ नमिलता मुअन्नस है इसका एतेबार करके मुअन्नस सेग़ा कालस इस्तेमाल कर लिया गया हो और मायने में मुज़क्कर और मुअन्नस दोनों का एहतेमाल हो।

इमाम आज़म अबू हनीफ़ा रहमतुल्लाह अलैहि ने कैसे यह सवाल किया? और कैसे अबू क़तादा वसीअ इल्म रखने के बावजूद ला जवाब हुए?

इब्ने मुनीर ने कहा कि अगर यह वाक़िया साबित हो जाये तो मुझे यह इल्म नहीं कि ताज्जुब अबू क़तादा के ला जवाब होने पर किया जाये या इमाम अबू हनीफ़ा रहमतुल्लाह अलैहि के सवाल करने पर किया जाये कि आपने ऐसा सवाल क्यों किया है? आख़िर में अल्लामा आलूसी ने तहरीर फ़रमायाः

ज़्यादा मुनासिब यही है कि यह वाक़िया उन दोनों बुज़ुर्गो की तरफ़ मंसूब करना ही सहीह नहीं।

हुद हुद का लश्कर से ग़ायब होना और तख़्त बिलक़ीस की ख़बर लाना : और परिन्दों का जायज़ा लिया तो बोले मुझे क्या हुआ मैं हुद हुद को नहीं देखता? या वह वाक़ई हाज़िर नहीं? ज़रूर मैं उसे सख़्त अज़ाब करूंगा या ज़िबह करूंगा या कोई रौशन सनद मेरे पास लाये तो हुद हुद कुछ ज़्यादा देर न

ठहरा और आकर अर्ज़ की कि मैं वह बात देख आया हूं जो हुजूर ने न देखी और मैं शहर सबा से हुजूर के पास एक यक़ीनी ख़बर लाया हूं मैंने एक औरत देखी कि उन पर बादशाही कर रही है और उसे हर चीज़ में से हिस्सा मिला है और उसका बड़ा तख़्त है। मैंने उसे और उसकी क़ौम को पाया कि अल्लाह तआला को छोड़कर सूरज को सज्दा करते हैं और शैतान ने उनके आमाल उनकी निगाह में संवार कर उनको सीधी राह से रोक दिया है तो वह राह नहीं पाते।

हज़रत सुलेमान अलैहिस्सलाम अपनी तमाम रियाया की देखभाल करते, लश्कर में तमाम परिन्दों को देखते कि कौन सा मौजूद है और कौन सा ग़ायब है। खुसूसन आप अपनी रियाया में से कमज़ोरों के हाल का ज़्यादा ख़्याल करते थे। आप अलैहिस्सलाम ने जब अपने लश्कर में तमाम परिन्दों का जायज़ा लिया तो हुद हुद परिन्दों का सरदार मौजूद नहीं था जिसका नाम याफूर था। तो आपने बिला इजाज़त उसके ग़ैर मौजूद होने पर गुस्से का इज़हार करते हुए फ़रमाया कि या तो वह आने पर कोई माकूल दलील पेश करे कि क्यों मौजूद नहीं वरना मैं उसे सख़्त सज़ा दूंगा यज़ीद बिन रूमान कहते हैं:

कि आपके सज़ा देने का मतलब यह था कि मैं उसके पर उखाड़ दूंगा।

जिस तरह हमारा मुहावरा है चमड़ी उधेड़ दूंगा या उसे ज़िबह कर दूंगा। हुद हुद का खुसूसी तौर पर जायज़ा लेने का मक़सद यह भी हो सकता था कि वह पानी की तलाश करता था। जहां वह अपनी चोंच रखता था वहां जिन्न उस ज़मीन को खोदते और पानी निकालते। इसी तरह हुद हुद खुसूसी तौर पर हज़रत सुलेमान अलैहिस्सलाम पर साया करने का फ़रीज़ा भी सर अंजाम देता था।

फ़ायदा : अल्लामा कुरतबी लिखते हैं कि इस आयत से मालूम हुआ कि हाकिम का फ़र्ज़ है कि वह अपनी रियाया के हालात का जायज़ा लेता रहे ऐसा न हो कि उसकी बेख़बरी की वजह से ताक़तवर क़मज़ोरों पर जुल्म ढाते रहें उनके हुकूक़ को पामाल करते रहें। हज़रत फ़ारूक़ आज़म रज़ियल्लाहु अन्हु पर अल्लाह तआला रहम फ़रमाये वह हमेशा अपनी रियाया के अहवाल से बा–ख़बर रहा करते। आपने एक दफ़ा फ़रमाया:

यानी अगर यहां से दूर दराज़ इलाक़ा में दरियाए फ़रात के किनारे पर किसी भेड़ के बच्चे को कोई भेड़िया पकड़ ले तो उसके लिये भी उमर को जवाबदेह होना पड़ेगा। इसके बाद अल्लामा मौसूफ़ हसरत व अफ़सोस का इज़हार करते हुए अपने ज़माना के हुक्काम की बे–ख़बरी और फ़र्ज़ शनासी पर गहरे रंज व ग़म का इज़हार करते थे।

हुद हुद की वापसी : ज़्यादा देर न गुज़री कि हुद हुद वापस आ गया, चूंकि उसे हज़रत सुलेमान अलैहिस्सलाम का ख़ौफ़ दामन गीर था चूंकि परिन्दे आपके बहुत ही ज़्यादा ताबेअ थे जिस तरह बाक़ी इंसान व जिन्न आपके ताबेअ थे। हुद हुद आपकी ख़िदमत में डर और आपके अदब व एहतेराम के पेशे नज़र अपनी दुम को ढीला किये हुए और अपने परों को ज़मीन से घसीटते हुए हाज़िर हुआ। आप ने गुस्सा से उसके सर को अपनी तरफ़ खींचा तो उसने कहा:

ऐ अल्लाह के नबी यह भी याद रखो कि एक दिन आप को और आपकी क़ौम को अल्लाह तआला के दरबार में खड़ा होना पड़ेगा। यह सुनकर सुलेमान अलैहिस्सलाम पर कपकपी तारी हो गई और उसे माफ़ कर दिया। हज़रत अकरमा रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि उसे इसलिये भी माफ़ कर दिया था।

वह अपने मां–बाप का फ़रमाबर्दार था, उनके पास तआम (खाना) लाकर उन्हें खिलाया करता था क्योंकि वह बूढ़े थे।

हुद हुद ताख़ीर की वजह ब्यान करता है: हुद हुद ने आपको बताया कि मेरी ताख़ीर की वजह यह थी कि मुल्क सबा चला गया था वहां से ऐसी ख़बर लाया हूं जिसका आप को पहले इल्म नहीं। वहां एक मल्का है जिसका नाम बिलक़ीस बिन्त शराहील है जिसके पास दुनिया का हर क़िस्म का माल व मताअ है और उसका तख़्त बहुत बड़ा है उसके तख़्त की लंबाई ८० ज़राअ और चौड़ाई ४० ज़राअ और बुलंदी तीस ज़राअ है और वह तख़्त सोने चांदी का बना हुआ है और मोतियों सुर्ख़ याकूत सब्ज़ ज़मुर्रद का उस पर श्रंगार किया हुआ है। उसके पाए भी याकूत और ज़मुर्रद के बने हुए हैं और वह सात कमरों में बंद है। एक कमरा दूसरे कमरे में इस तरह सात कमरे हैं। हर एक का दरवाज़ा बंद है!

सुलेमान अलैहिस्सलाम पर मख़फ़ी क्यों: सवाल यह होता है कि हज़रत सुलेमान अलैहिस्सलाम शाम में थे और सबा यमन का दारुल हुकूमत था सिर्फ़ तीन मरहले की मसाफ़त थी फिर आप पर बिलक़ीस का तख़्त मख़्फ़ी कैसे रहा? तो इसका जवाब यह है।

बेशक अल्लाह तआला ने मसलेहत और हिकमत के पेशे नज़र आप पर मख़्फ़ी रखा जैसे हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम का मकान हज़रत याकूब अलैहिस्सलाम पर मख़्फ़ी रखा। हिकमत इसमें यह थी कि आप अल्लाह तआला का शुक्र और हम्द करें और उससे दुआ करें क्योंकि जब आप को इल्म अता कर दिया गया तो यह आप पर एक ख़ुसूसी इनाम था हालांकि आपको हिकमत नबुव्वत और कसीर उलूम अता किये गये थे और इस मामूली बात को मख़्फ़ी रखकर अल्लाह तआला ने अपनी अज़ीम कुदरत को भी ज़ाहिर फ़रमा दिया।

सबा शहर के मुताल्लिक़ : इमाम याकूत हमवी मअजमुल बिलदान में सबा के मुताल्लिक़ लिखते हैं:

सबा यमन के एक इलाक़े का नाम है जिसका मर्कज़ी शहर मआरिब है जो सनआ (यमन का मौजूदा दारुल हुकूमत) से तीन दिन की मसाफ़त पर है।

यशहब बिन यारिब बिन क़हतान के बेटे सबा नामी की औलाद वहां आबाद हुई इसलिये यह इलाक़ा सबा कहलाया।

सबा एक शहर का नाम है जिसे सबा बिन यशहब बिन यारिब बिन क़हतान ने आबाद किया था यह शहर दिफ़ाई लिहाज़ से बहुत मुस्तहकम और गंजान आबाद था। इसकी हवा बड़ी पाकीज़ा और बहुत मीठी थी बाग़ात की कसरत थी जिनके फल बड़े लज़ीज थे। तरह तरह के हैवानात बकसरत पाये जाते थे सफ़ाई का यह हाल था कि मक्खी मच्छर का नाम व निशान तक न था। इर्द गिर्द पहाड़ों का सिलसिला था, बारिश होती तो पानी बह कर रेगिस्तानों में ज़ाया हो जाता। मक्का बिलक़ीस के अहदे हुकूमत में दो पहाड़ों के दर्मियान एक ज़बरदस्त बंद (Dam) तामीर किया गया जिसमें बारिश का पानी जमा हो जाता इस बंद के इख़राज के ऊपर नीचे कई सुराख़ थे। हस्बे ज़रूरत उन्हें खोल कर पानी ले लिया जाता। जो मुख़्तलिफ़ नहरों के ज़रिये तमाम इलाक़ा को सैराब करता। लोग बहुत ख़ुशहाल हो गये ख़ुशहाली अपने हमराह ऐश व इशरत और फ़िस्क़ व फजूर को ले आई। जब उनकी नाफ़रमानियां हद से बढ़ गई तो क़हरे इलाही सैलाब की सूरत में ज़ाहिर हुआ। बंद टूट गया सारा इलाक़ा बर्बाद हो गया। इसका ज़िक्र कुरआन पाक में कई मवाक़े पर आया है।

बिलक़ीस और उसकी कौम का मज़हब : वह सूरज की परसतिश करने वाले थे कुछ उनमें आग की पूजा करने वाले भी और कुछ ज़िन्दीक़ बे दीन यानी यह ज़मीन व आसमान के निज़ाम चलाने या पैदा करने के क़ायल नहीं थे बल्कि यह कहते कि यह निज़ाम बग़ैर किसी चलाने वाले के चल रहा है। शैतान ने उनके लिये सूरज की इबादत और तरह तरह के कुफ़्र और बुरे आमाल के रास्ते मुज़य्यन कर रखे थे। वही शैतान या उसका बातिल राह को मुज़य्यन करना हक़ राह से उनके रोकने का सबब बना जिसकी वजह से वह राहे रास्त पर न आ सके उन्होंने शैतानी राह को ही हसीन व जमील समझा।

फ़ायदा : जब यह कुरआन पाक और तफ़ासीर से वाज़ेह है कि वह कौम काफ़िर थी और यह भी वाज़ेह है कि काफ़िरों के तौर तरीक़े मुसलमानों के लिये कोई दलील नहीं तो अब मसला रोज़े रौशन की तरह निखरकर सामने आ गया कि बिलक़ीस का मलका होना, औरत की सरबराही के जवाज़ पर कोई दलील नहीं। काफ़िरों ने उसे सरबराह बनाया हुआ था। अब भी कोई काफ़िर यह कहे कि औरत सरबराहे ममलिकत बन सकती है तो उसे यह हक़ पहुंचता है क्योंकि जब वह इस्लाम से ही दूर है तो जो चाहे कहे। इस्लामी क़वानीन तो मुसलमानों के लिये हैं कुफ़्फ़ार के लिये नहीं। किसी इस्लामी मुल्क में भी अगर बे दीन लोग किसी औरत को हाकिम बना लें तो उनके इस क़बीह अमल से औरत की हाकमियत का जवाज़ साबित नहीं होगा बल्कि उनका यह अमल ख़ुदा और उसके रसूल के अहकाम से बग़ावत ही समझा जायेगा। उलेमा किराम ने अपना फ़रीज़ा अदा कर दिया है मुसलमानों को बता दिया है कि औरत को हाकिम बनाना जायज़ नहीं। अब इसके बाद इस बुराई के मुरतकिब होने वाले अल्लाह तआला और उसके रसूल के सामने ख़ुद जवाबदेह हैं। लुत्फ़ की बात यह है कि बिकाऊ मौलवी ज़िद्दी और हटधर्म मौलवी जो किसी वक़्त एक ही राग अलाप रहे थे। यह भी बुरी वह भी बुरा। उनमें से बाज़ की आखें खुल चुकी हैं कि मुल्क को तबाही के किनारे पर पहुंचाने वाला कौन है? वह तो अब किसी मर्द को अच्छा समझने लगे। बिकाऊ माल, पैसे को दीन समझने वाले से यह भी न हो सका कि वह औरत की सरबराही को जायज़ कह सके, बल्कि उसने भी अजीब मनतिक़ पेश की कि औरत की सरबराही को हम जायज़ नहीं समझते। बल्कि बर्दाश्त किये हुए हैं। यानी पैसा मिल रहा है। निगाहों की मुलाक़ातें हो रहीं हैं दिल ख़ुश हो रहा है इसलिये शराब पीना या पेशाब पीना नाजायज़ तो है लेकिन बर्दाश्त करके हड़प कर लेते हैं।

मुसलमानों के लिये तो बुख़ारी शरीफ़ की हदीस काफ़ी है जो हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा से मरवी है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को जब यह ख़बर मिली कि अहले फ़ारस ने बिन्ते किसरा को अपनी मलका बना लिया है तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः

हरगिज़ वह कौम कामयाब नहीं होगी जिन्होंने अपने उमूर औरत के सुपुर्द कर दिये।

यानी औरत को हाकिम बनाने वाले कभी कामयाब नहीं हो सकेंगे ज़िल्लत उनका मुक़द्दर होगी मुल्क को तबाह कर देंगे लूट मार से उधम मचा देंगे।

हुद हुद की बात की तहक़ीक़ : आपने फ़रमाया हम पूरी तहक़ीक़ करेंगे इस बात की कि तूने सच कहा है या तू भी ग़लत ब्यानी करने वालों से है।

हज़रत सुलेमान अलैहिस्सलाम ने कहा कि हम तेरी बात की पूरी तहक़ीक़ करेंगे इससे यह मालूम

हुआ कि हाकिम के सामने अगर कोई उज़्र पेश करे तो वह उसको ठुकरा न दे बल्कि उसे क़बूल करे और उसकी छानबीन करे और तहक़ीक़ करने के बाद उसके मुताल्लिक़ फ़ैसला करे। हुज़ूर अलैहिस्सलाम का इरशाद गिरामी है:

यानी अल्लाह तआला से ज़्यादा उज़्र को पसंद करने वाला कोई नहीं इसीलिये उसने कुरआन नाज़िल किया और रसूल मबऊस फ़रमाये।

बिलक़ीस की तरफ़ सुलेमान अलैहिस्सलाम का ख़त : सुलेमान अलैहिस्सलाम ने कहा मेरा यह ख़त जाकर उन पर डाल फिर उनसे अलग हटकर देख वह क्या जवाब देते हैं? वह औरत बोली ऐ सरदारो! बेशक मेरी तरफ़ एक इज़्ज़त वाला ख़त डाला गया बेशक सुलेमान अलैहिस्सलाम की तरफ़ से है और बेशक वह अल्लाह तआला के नाम से जो निहायत मेहरबान रहम वाला है कि मुझ पर बुलंदी न चाहो और इताअत करते हुए मेरे हुज़ूर हाज़िर हो।

हज़रत सुलेमान अलैहिस्सलाम ने ख़त तहरीर फ़रमाया उस पर कस्तूरी लगाई बंद करके उस पर मोहर लगा दी हुद हुद को दिया कि इसे ले जाओ और बिलक़ीस को पहुंचा दो।

हुद हुद ख़त लेकर गया तो उसे सोते हुए पाया वह अपने महल में सोई हुई थी वह जब सोती थी तमाम दरवाज़े बंद कर देती थी चाबियां अपने सर के नीचे रखती थी। उसका तख़्त अंदर सातवें कमरे में था। हुद हुद मकान के रौशनदान से दाख़िल हुआ और ख़त उसके सीने पर रख दिया जबकि वह लेटी हुई थी।

एक रिवायत में है कि जब हुद हुद उसके पास पहुंचा तो उसके दरबारी लश्करी उसके पास मौजूद थे हुद हुद कुछ देर और फड़फड़ाया लोग यह देख रहे थे यहां तक कि बिलक़ीस ने भी ऊपर निगाह उठाकर देखा तो हुद हुद ने ख़त उसकी गोद में डाल दिया जो उसने ख़त देखा तो कांप गई डरते हुए अपनी क़ौम के सरदारों को ख़त के मज़मून से ख़बर किया।

बिलक़ीस ने ख़त को इज़्ज़त वाला कहा: आपके ख़त को किताबे करीम कहने की तीन वजूहात थीं।

एक तो यह कि उस ख़त का मज़मून बहुत ही हसीन था।

दूसरी यह वजह थी कि एक करीम यानी इज़्ज़त वाले करम वाले बादशाह की तरफ़ से यह ख़त आया है लिहाज़ा यह ख़त भी इज़्ज़त वाला है।

तीसरी वजह यह थी कि ख़त सर बमुहर था और जिस ख़त पर मोहर लगी हुई होती थी उसे करीम ख़त कहा जाता था।

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने भी जब बादशाहों की तरफ़ खुतूत लिखने का इरादा फ़रमाया तो आपने मोहर बनवाई थी क्योंकि आपको बताया गया था कि बादशाह बग़ैर मोहर के ख़त क़बूल नहीं करते। मुमकिन है कि एक वजह यह भी हो कि बिलकीस बावजूद सूरज परस्त होने के अल्लाह तआला को भी किसी तरह मानती हो जैसे बुत परस्त लोगों के मुताल्लिक़ रब तआला ने फ़रमाया:

ऐ महबूब अगर आप इन मुश्रिकों से सवाल करें ज़मीन व आसमान का ख़ालिक़ कौन है तो ज़रूर ज़रूर कहेंगे अल्लाह। हो सकता है उसने ख़त को करीम इसलिये कहा कि यह सुलेमान की तरफ़ से है और इसे बिस्मिल्लाह से शुरू किया गया है।

अंबियाए किराम के खुतूत के मज़ामीन : बेशक अंबियाए किराम अपने ख़ुतूत व मवाएज़ को लम्बा नहीं करते बल्कि ब्याने मक़सद पर ही इक़्तेसार करते हैं हज़रत सुलेमान अलैहिस्सलाम का ख़त पूरे मज़मून को शामिल था अगरचे मुख़्तसर था लेकिन मक़सूद इसमें मुकम्मल था। इसलिये कि मख़लूक़ से दो चीज़ों का ही मक़सद तलब किया जाता है। एक यह कि तुम इल्म हासिल करो और दूसरा यह कि तुम अल्लाह तआला के अहकाम पर अमल करो। और इल्म अमल पर मुक़द्दम होता है।

आप अलैहिस्सलाम ने ख़त बिस्मिल्लाहिर्रामानिर्रहीम से शुरू फ़रमाया जिसमें अल्लाह के मुताल्लिक़ इल्म मौजूद है।

इसलिये कि बिस्मिल्लाह शरीफ़ से पता चलता है कि कायनात का ख़ालिक़ मौजूद है और वह ला महदूद इल्म का मालिक है वह हर चीज़ की कुदरत रखता है, हमेशा हमेशा के लिये ज़िन्दा है वह काम से पहले इरादा भी फ़रमाता है उसका हर काम हिकमत के तक़ाज़ा के मुताबिक़ होता है। वह अपनी मख़लूक़ पर रहीम है क्योंकि मेहरबान और रहम वाला उसी वक़्त हो सकता है जब यह तमाम सिफ़ात उसमें मौजूद हों।

अमल का दार व मदार अवामिर व नवाही पर है यानी जिन कामों का हुक्म दिया जाये उन पर अमल करे और जिन कामों से रोका जाये उन कामों से रुक जाये। आपके ख़त में यह कि मुझ पर बुलंदी न चाहो ख़्वाहिशाते नफ़सानिया की इताअत और तकब्बुर करने से नहीं है यानी उन कामों से रोका गया है और मुतीअ बनकर मेरे पास हाज़िर हो। यह अम्र है कि मेरी फ़रमाबर्दारी करो और अल्लाह तआला पर ईमान लाओ।

वाज़ेह हुआ कि आपका ख़त निहायत मुख़्तसर होने के बावजूद दीन व दुनिया के ज़रूरी अहकामात पर मुश्तमिल था।

एतेराज़ : हज़रत सुलेमान अलैहिस्सलाम ने अपने ख़त को बिस्मिल्लाह शरीफ़ से पहले अपने नाम से क्यों शुरू किया यानी इन्नुह मिन सुलेमान बिस्मिल्लाह से पहले है हालांकि अल्लाह तआला के इस्मे गिरामी को पहले ज़िक्र करना चाहिये था।

जवाब : हाशा व कला सुलेमान अलैहिस्सलाम ने ख़त को अपने नाम से शुरू नहीं फ़रमाया बल्कि आपने बिस्मिल्लाह हिर्रमानिर्रहीम से इब्तेदा की। लेकिन बिलक़ीस ने अपनी क़ौम के सरदारों को यह बताया कि यह ख़त सुलेमान अलैहिस्सलाम की तरफ़ से आया है गोया इन्नहु मिन सुलेमान यह अल्फ़ाज़ बिलक़ीस के हैं इस के बाद उसने ख़त को इब्तेदा से पढ़ा जो बिस्मिल्लाह से शुरू हो रहा था। अल्लाह तआला ने इसी अंदाज़ पर बिलक़ीस का क़ौल और आपके ख़त की हिकायत ब्यान फ़रमाई।

बिलक़ीस का ख़त के मुताल्लिक़ मश्वरा : बोली ऐ सरदारो! मेरे इस मामले में मुझे राय दो मैं किसी मामला में कोई क़तई फ़ैसला नहीं करती जब तक तुम मेरे पास हाज़िर न हो। वह बोले हम ज़ोर वाले और बड़ी सख़्त लड़ाई वाले हैं और इख़्तेयार तेरा है तू नज़र कर कि क्या हुक्म देती है।

फ़तवा का मतलब ही यह होता है कि कोई नया वाक़िया दर पेश आने पर किसी से कोई राय तलब की जाये। बिलक़ीस ने भी अपनी क़ौम के सरदारों के दिल को ख़ुश करने के लिये अपनी परेशानी को दूर करने के लिये उनसे राय तलब की कि मैं उस वक़्त तक कोई क़तई फ़ैसला नहीं करूंगी जब तक तुम मेरे पास मौजूद होकर मुझे अपनी राय नहीं दोगे।

क़ौम के सरदारों ने कहा कि हमारे पास जंगी साज़ व सामान तो काफ़ी मिक़दार में मौजूद है और हमें जिस्मानी कुव्वत हासिल है और लड़ाई में हम साबित क़दम रहना भी जानते हैं यानी लड़ाई का दारो मदार दो चीज़ों पर है कुव्वते जिस्मानिया और लड़ाई में साबित क़दमी यह भी हमें हासिल है और कुव्वते अर्ज़िया लड़ाई के हथियार जंगी साज़ व साामन का पाया जाना यह भी हमारे पास है इसलिये अगर जंग करनी हो तो हम इसके लिये तैयार हैं लेकिन हम तो तुम्हारे हुक्म के पाबंद हैं असल हुक्म तुम्हारा ही है तुम्हारी राय ही दरहक़ीक़त असल राय होगी लिहाज़ा जो हुक्म होगा हमें मंजूर होगा।

बिलक़ीस का जंग को नापसंद करना : बोली बेशक बादशाह जब किसी बस्ती में दाख़िल होते हैं तो उसे तबाह व बर्बाद कर देते हैं और उसके इज्ज़त वालों को ज़लील करते हैं और ऐसा ही करते हैं और मैं उनकी तरफ़ एक तोहफ़ा भेजने वाली हूं फिर देखूंगी कि ऐलची क्या जवाब लेकर पलटे।

बिलक़ीस ने कहा कि सुलेमान अलैहिस्सलाम बादशाह हैं बादशाह जब किसी मुल्क पर हमला आवर होते हैं वहां के लोगों को क़त्ल कर देते हैं कुछ को क़ैदी बना लेते हैं कुछ को जिला वतन कर देते हैं इज़्ज़त वाले लोगों को ज़लील करने में कोई कसर नहीं छोड़ते, बादशाहों का यही तरीक़ए कार है।

ख़्याल रहे कि रब ने "वह इज्ज़त वालों को ज़लील करते है" नहीं कहा हालांकि यह मुख़्तसर था और इसका मायने भी यही था कि वह इज़्ज़त वालों को ज़लील करते हैं इसलिये 'जअलू' से यह साबित किया कि वह ज़लील करने में पूरी कोशिश करते हैं इसमें कोई कमी नहीं रहने देते। बिलक़ीस ने कहा जब बादशाहों की यह शान है तो हमें सिर्फ़ अपनी तादाद अपनी ताक़त, जंगी साज़ व सामान और मुकम्मल तैयारी पर भरोसा नहीं करना चाहिये कि हम ज़रूर फ़तह हासिल कर लेंगे। शिकस्त भी हो सकती है इसलिये सुलह की राह इख़्तेयार करनी चाहिये।

हदिया भेजने की वजह : बिलक़ीस ने कहा देखते हैं कि सुलेमान अलैहिस्सलाम बादशाह है या अल्लाह का नबी। अगर बादशाह है तो हम उसे माल देकर ख़ुश कर लेंगे। वह हदिया क़बूल कर लेगा और अगर वह अल्लाह तआला का नबी हुआ तो हदिया क़बूल नहीं करेगा फिर हमें चाहिये कि हम उसके दीन को क़बूल कर लें।

बिलक़ीस ने हज़रत सुलेमान अलैहिस्सलाम को आज़माने के लिये कसीर तादाद में गुलाम कनीज़ें सोना चांदी कस्तूरी अम्बर और याक़ूत वग़ैरह भेजे कि हो सकता है कि माल से काम चल जाये। अगरचे हदिया की मिक़दार मुहक़्क़ेक़ीन के क़ौल के मुताबिक़ मुतअय्यन नहीं ताहम हदिया में तनवीन ताज़ीम की है जो हदिया के बहुत बड़े होने पर दलालत कर रही है। अल्लामा राज़ी फ़रमाते हैं: हदिया की तारीफ़ में लोगों ने बहुत कलाम किया है ताहम इसका ज़िक्र कुरआन पाक में नहीं यानी इतना ईमान रखना काफ़ी है कि वह हदिया बादशाही शान के मुताबिक़ बहुत बड़ा हदिया होगा, क्या था? कितनी मिक़दार में था? इस बहस में पड़ने से कोई फ़ायदा हासिल नहीं।

हदिया को देख कर सुलेमान अलैहिस्सलाम का जवाब : फिर जब वह सुलेमान अलैहिस्सलाम के

पास आया फ़रमाया क्या माल से मेरी मदद करते हो? तो जो अल्लाह तआला ने मुझे दिया है वह बेहतर है उससे जो तुम्हें दिया, बल्कि तुम ही अपने तोहफ़े पर ख़ुश होते हो, पलट जा उनकी तरफ़ तो ज़रूर हम उन पर वह लश्कर लायेंगे जिनकी उन्हें ताक़त न होगी और ज़रूर हम उनको शहर से ज़लील करके निकाल देंगे यूं कि वह पस्त होंगे।

आपने फ़रमाया अल्लाह तआला ने मुझे दीन, नवुव्वत उलूम अता फ़रमाये हैं जो सआदत उख़रविया सआदते अबदिया के अस्बाब हैं और अल्लाह तआला ने मुझे दुनिया का माल व दौलत भी इतना अता फ़रमा दिया है कि जिस पर ज़्यादती की कोई ज़रूरत नहीं।

मेरे जैसे शख़्स को इस क़िस्म के हदिये से कैसे अपनी तरफ़ मायल किया जा सकता है?

इस हदिया पर तुम ख़ुद ही ख़ुश होते रहो कि तुम्हें यह हदिया हासिल है। यह हदिया जो तुम मुझे दे रहे हो उसकी क़दर व मंज़िलत हमारे नज़दीक तो कुछ नहीं, तुम्हें ही उसकी कोई क़दर होगी, इसलिये तुम ख़ुद ही इस पर ख़ुश होते रहो। इस क़िस्म के हदिये कुबूल करना तुम्हारा ही हक़ है और तुम्हें ही ऐसे हदिये से ख़ुशी होती है हमें तो ऐसे हदिये की न ज़रूरत है और न ही हम ऐसे माल को देख कर ख़ुश होते हैं।

हदिया लाने वाले क़ासिद को आपने कहा : जाओ अपनी क़ौम के पास लौटकर चले जाओ और अपनी मलका को बता दो कि अगर तुमने कुफ़्रिया अक़ायद सूरज परस्ती वग़ैरह को न छोड़ा और मेरे लाये हुए दीन पर ईमान न लाये तो हम अपने लश्कर से तुम्हारी सरकोबी करेंगे, तुम्हें ज़लील व ख़्वार कर देंगे और तुम्हें शहरों से ज़लील करके निकाल देंगे तुम्हें मुक़ाबला करने की ताक़त हासिल नहीं होगी।

कुरआन पाक में जो लफ़्ज़ इस्तेमाल हुआ है उसका मायने यह है कि उन्हें मुक़ाबला करने की ताक़त हासिल नहीं होगी क्योंकि हक़ीक़तन क़ब्ल का मायने ही मुक़ाबला करना है।

सुलेमान अलैहिस्सलाम का बिलक़ीस का तख़्त मंगवाना : सुलेमान अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया ऐ दरबारियो! तुममें से कौन है कि वह उसका तख़्त मेरे पास ले आये इससे पहले कि वह मेरे पास मुतीअ होकर हाज़िर हों।

बिलक़ीस का क़ासिद जब हदिये वापस लेकर गया और सुलेमान अलैहिस्सलाम का पैग़ाम पहुंचाया तो वह समझ गई कि आप नबी हैं, आपसे जंग करना मुमकिन नहीं। उसने सुलेमान अलैहिस्सलाम के पास आने की तैयारी कर ली, चलने से पहले उसने अपने तख़्त के तमाम कमरों के दरवाज़े बंद किये क्योंकि वह सातवें कमरे में थी उसकी हिफ़ाज़त के लिये पहरेदार मुक़र्रर कर दिये। ख़ुद अपनी क़ौम के सरदारों को साथ लेकर आपकी तरफ़ मुतावज्जेह हुई और आप की तरफ़ पैग़ाम भेज दिया कि मैं अपनी क़ौम के बड़े बड़े सरकर्दा लोग साथ ला रही हूं, देखना चाहती हों कि तुम किस दीन की हमें दावत दे रहे हो? सुलेमान अलैहिस्सलाम से एक फ़रसख़ की दूरी पर वह पहुंच गई तो आपने अपने दरबारियों को कहा कि इसका तख़्त कौन लायेगा?

तख़्त की तलब में हिकमत : आपने बिलक़ीस के तख़्त को अपने पास मंगवाने का इरादा क्यों फ़रमाया? इसकी चंद वजहें हैं:

इसकी एक वजह यह थी कि जब बिलक़ीस आये तो उसके आने से पहले जब उसका अज़ीम तख़्त जो बंद कमरों में है और पहरेदारों की हिफ़ाज़त में है यहां होगा तो अल्लाह तआला की कुदरत और सुलेमान अलैहिस्सलाम की नबुव्वम का उसे पता चलेगा तो वह ईमान लाने की तरफ़ माइल होगी।

दूसरी वजह यह थी कि तख़्त की अज़मते बादशाही के वुसअत पर दलालत करती है इसलिये आप ने कहा कि उसके आने से पहले ही पता चल जाये कि उसकी बादशाही में कितनी वुसअत है?

तीसरी वजह यह थी कि काफ़िरों के माल को हासिल करना जायज़ था, अभी वह काफ़िरा थी आपने ख़्याल किया कि उसका तख़्त अभी मंगवा लिया जाये तो उसकी मिल्कियत हमें हासिल हो जायेगी। अगर उसने इस्लाम क़बूल कर लिया तो फिर उसके तख़्त पर क़ब्ज़ा करना जायज़ नहीं रहेगा।

चौथी वजह यह थी कि आप उसकी ज़ेहनी आज़माईश करना चाहते थे कि उसकी अक़्ल व फ़हम कितनी है क्योंकि आपने हुक्म दिया था ।

आपने हुक्म दिया शक्ल बदल दो उसके लिये उसके तख़्त की। हम देखते हैं कि वह हक़ीक़त पर आगाह होती है या हो जाती है उन लोगों में से जो हकीक़त को नहीं पहचानते।

यानी आपने तख़्त मगवाने के बाद उसकी शक्ल में तग़य्युर व तबद्दुल करने का हुक्म दिया था इसकी वजह यह थी कि आपने फ़रमाया हम देखते हैं कि वह अपनी तबदील शुदा तख़्त को पहचानती है या नहीं। आप उसकी समझ और दानाई का अंदाज़ा लगाना चाहते थे कि इसी से पता चल जायेगा कि वह अल्लाह तआला के दीन को भी समझ सकती है या नहीं।

अल्लाह तआला के वली की ताक़त जिन्न से ज़्यादा : सुलेमान अलैहिस्सलाम ने जब फ़रमाया तख़्त कौन लायेगा? तो एक बड़ा ख़बीस जिन्न बोला कि मैं वह तख़्त आपकी ख़िदमत में हाज़िर करूंगा। इससे पहले कि आप इजलास बर्ख़ास्त करें और बेशक मैं उस पर कुव्वत वाला अमानतदार हूं। उसने अर्ज़ की जिसके पास किताब का इल्म था कि मैं उसे आपकी ख़िदमत में हाज़िर करूंगा। एक पल मारने से पहले। फिर जब सुलेमान अलैहिस्सलाम ने तख़्त को अपने पास रखा देखा कहा यह मेरे रब के फ़ज़्ल से है ताकि मुझे आज़माए कि मैं शुक्र करता हूं या नाशुक्री और जो शुक्र करे वह अपने भले को शुक्र करता है और नाशुक्री करे तो मेरा रब बे परवाह है। सब ख़ूबियों वाला।

इफ़रीत सरकश व ख़बीस को कहा जाता है यानी ऐसा ख़बीस व मुन्किर जो अपने साथियों पर सरकशी और ख़बासत करे। यानी जिन्नों में से एक सरकश ख़बीस जिन्न जिसे अपनी ताक़त पर नाज़ था ने कहा मैं बिलक़ीस के तख़्त को आपके सामने आपके इजलास बर्ख़ास्त करने से पहले ले आऊंगा।

हज़रत क़तादा रज़ियल्लाहु अन्हु का क़ौल है कि सुलेमान अलैहिस्सलाम सुबह से लेकर जुहर तक मजलिसे अदालत क़ायम फ़रमाते थे जिसमें लोगों के दर्मियान फ़ैसले फ़रमाते थे गोया उस जिन्न का मतलब यह था कि मैं आधा दिन गुज़रने से पहले पहले आपके पास पहुंचा दूंगा, क्योंकि मुझे इतने बड़े अज़ीम तख़्त का उठाना कोई भारी महसूस नहीं होगा। मैं बड़ी बड़ी चीज़ों को उठाने की ताक़त रखता हूं यानी यहां क़वी का मायने क़ादिर लिया गया है और मैं वह तख़्त लाने में किसी क़िस्म की कोई ख़्यानत नहीं करूंगा। न इससे कुछ तोडूंगा और न ही इसमें कोई तग़य्युर व तबद्दुल करूंगा, बल्कि अमानत का पास करूंगा।

अल्लाह के वली ने कहा : चुनांचे एक और आदमी खड़ा हुआ उसने मोअद्देबाना इल्तेमास किया कि अगर मुझे इरशाद हो तो आंख झपकने से पहले तख़्त वहां से उठाकर आपके क़दमों में लाकर रख दूं। आपने इजाज़त मरहमत फ़रमाई और जब आपने आंख खोली तो तख़्त वहां मौजूद था। आप अलैहिस्सलाम ने अपने एक ख़ादिम की इस कुव्वत का मुशाहिदा किया तो दिल में गुरूर व नख़ूवत के जज़्बात पैदा नहीं हुए बल्कि फ़ौरन सरापा नियाज़ बनकर अपने मौला का शुक्र अदा करने लगे अर्ज़ किया यह मेरे रब का फ़ज़्ल व करम है जिसने मुझे इतनी इज्ज़त और सरफ़राज़ी बख़्शी है कि मेरे खुद्दाम ऐसा काम कर सकते हैं इसके बाद फ़रमाया फ़ज़्ल बहुत बड़ी आज़माईश है अल्लाह तआला मुझे आज़माना चाहता है मैं उसकी इनायाते जलीला पर उसका शुक्र अदा करता हूं या नाशुक्री का इज़्हार करता हूं।

इम्तेहान कभी मुसीबत से और कभी आसाईश से लिया जाता है: मुसीबत और तकलीफ़ को तो हम सब इम्तेहान और आज़माईश तसव्वुर करते हैं लेकिन जो फ़रहत व सुरूर का दौर आता है जब उसके इनामात की बे मुहाबा बारिश होने लगती है तो हम इस बात को भूल जाते हैं कि यह भी इम्तेहान है और पहली क़िस्म के इम्तेहान से बड़ा सख़्त इम्तेहान है इसमें कामयाब होना बड़े दिल गुर्दे का काम है। तकालीफ़ व मसाइब के इम्तेहान में कामयाब वह होता है जो सब्र का दामन मज़बूती से पकड़ ले और अराम व आसाईश की आज़माईश में कायमाबी का सेहरा उसके सर बांधा जाता है जो शुक्र गुज़ार हो और शुक्र का सिर्फ़ यह मतलब नहीं कि आप सिर्फ़ ज़बान से ही शुक्रिया अदा करते रहें बल्कि हक़ीक़ी शुक्र यह है कि उस नेमत को इस तरह इस्तेमाल किया जाये जिसमें अल्लाह तआला की रज़ा और खुशनूदी हो।

शुक्र करने में इंसान का अपना भला : हज़रत सुलेमान अलैहिस्सलाम ने कहा यानी और जिसने शुक्र किया तो वह शुक्र करता है अपने भले के लिये। यह कह कर बता दिया कि अल्लाह तआला का शुक्र अदा करके तुम उस पर कोई एहसान नहीं कर रहे हो बल्कि अपने लिये मज़ीद नेमतों का दरवाज़ा खोल रहे हो। और अगर तुमने नाशुक्री की तो मज़ीद इनायात का सिलसिला मुनक़तअ हो जायेगा बल्कि अपने पहले इनामात से भी हाथ धोना पड़ेगा। अल्लाह तआला ग़नी और करीम है अगर कोई उसका शुक्र गुज़ार बंदा बना रहे तो वह उसे और ज़्यादा देता जायेगा क्योंकि वह ग़नी है उसके ख़ज़ाने भरे पड़े हैं और वह करीम है उसका दस्ते जूद व अता सख़ावत करता ही रहता है।

तख़्त लाने वाला कौन था? : एक चीज़ अभी तहक़ीक़ तलब है कि वह कौन शख़्स था जिसने दम भर में बिलक़ीस का शाही तख़्त पंद्रह सौ मील की मसाफ़त सबा से बैतुल मुक़द्दस पहुंचा दिया? नीज़ वह तख़्त कहीं सेहन में तो पड़ा नहीं होगा बल्कि क़स्रे शाही की किसी महफ़ूज़ तरीन जगह रखा होगा, और उसकी निगहबानी के लिये ख़ुसूसी पहरेदारों का इंतेज़ाम भी होगा।

इसके मुताल्लिक़ किसी ने हज़रत ख़िज़्र अलैहिस्सलाम का नाम और किसी ने हज़रत जिब्राईल अलैहिस्सलाम का नाम और किसी ने आसिफ़ बिन बरख़या रहमतुल्लाह अलैहि का नाम लिया। और यह आख़री क़ौल ज़्यादा मशहूर है लेकिन कुरआन ने उसका नाम नहीं लिया बल्कि उसकी सिफ़त से उसका तार्रुफ करा दिया यानी उस शख़्स ने यह बात कही जिसके पास किताब का इल्म था। जिससे साफ़ पता चलता है कि उसकी यह सिफ़त ऐसी थी जिसका इस मुहय्यरुल उक़ूल (अक़्लों को हैरान

करने वाले) कारनामे की अंजाम देही के साथ ख़ुसूसी ताल्लुक़ था। इमाम राज़ी लिखते हैः

इमाम अब्दुल क़ाहिर जिरजानी ने लिखा है कि जब किसी फ़ाएल की तौसीफ़ सिला से की जाये तो उस फ़ेअल के सुदूर में इस सिला को ख़ुसूसी दख़ल होता है। इस तहक़ीक़ से मालूम हुआ कि उस शख़्स में यह कुव्वत और ताक़त पैदा होने की वजह यह थी कि उसके पास किताब का इल्म था।

इस आयते करीमा से करामाते औलिया का सबूत भी हो गया और यह बात भी वाज़ेह हो गई कि अगर सुलेमान अलैहिस्सलाम का एक उम्मती किताब के इल्म की बर्कत से ऐसा काम कर सकता है तो सैय्यिदुल अंबिया वल मुरसलीन सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की उम्मत का वली जो किताब का ही नहीं बल्कि किताबुल मुबीन का आलिम और इसके असरार व मारिफ़ पर आगाह है उससे ऐसे उमूर का सर ज़द होना क्या मुश्किल है? वह लोग जो हुज़ूर नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की उम्मत के औलियाए कामलीन की करामात का इंकार करते हैं उन्हें कुरआन करीम की इस आयत में बार बार ग़ौर करना चाहिये।

तंबीह : हमारे तजद्दुद पसंद मुफ़स्सेरीन लिखते हैं कि आप अलैहिस्सलाम ने जब बिलक़ीस की आमद की ख़बर सुनी तो अपने दरबारियों से कहा तुममें कोई ऐसा है जो बिलक़ीस के बैठने के लिये कोई तख़्त बना दे ताकि जब वह यहां आये तो उसे उस पर बैठा दिया जाये। उनकी इस तावील को देखकर बरमला यह कहना पड़ता है कि वह अरबी लुग़त के मुबादयात से भी नावाफ़िक़ हैं वरना वह कि तुम में से कौन मेरे पास उसका तख़्त ला सकता है? का यह तर्जमा हरगिज़ न करते और अगर उन्हें इतना इल्म है तो यह बावर करने में कोई शुबह नहीं रहता कि कुरआन की तसरीहात पर उनका दिल नहीं जमता, खुले बंदों इसका इंकार करने की भी जुर्रत नहीं कर सकते और बुज़दिली के बाइस अपनी क़लबी मुनाफ़क़त को तहरीफ़ के पर्दों में छिपाने की कोशिश कर रहे हैं।

बिलक़ीस, सुलेमान अलैहिस्सलाम के दरबार में : फिर वह जब आई उससे कहा गया कि तेरा तख़्त ऐसा ही है? बोली गोया यह वही है और हमको इस वाक़िये से पहले ख़बर मिल चुकी और हम फ़रमांबर्दार हुए।

जैसा कि पहले गुज़र चुका है कि हज़रत सुलेमान अलैहिस्सलाम ने बिलक़ीस के आने से पहले उसके तख़्त में तग़य्युर व तबद्दुल करा दिया था ताकि यह मालूम किया जा सके कि वह कितनी अक़्ल व समझ की माल्का है? उसके आने पर पूछा क्या तुम्हारा तख़्त ऐसा ही है? उसने जवाब दिया गोया यह वही है। हज़रत सुलेमान अलैहिस्सलाम ने उससे पूछते हुए यह नहीं कहा क्या यही तेरा तख़्त है? क्योंकि अगर आप यह सवाल करते तो आज़माने का मक़सद फ़ौत हो जाता। इससे तो उसे जवाब देने की तरफ़ इशारा मिल जाता। बिलक़ीस का जवाब भी निहायत अक़्लमंदी पर मौक़ूफ़ था। यानी उसने यह नहीं कहा यह वही है क्योंकि बिल्कुल वही नहीं था बल्कि उसमें तग़य्युर व तबद्दुल किया गया था और उसने यह भी नहीं कहा। यह वह तो नहीं, क्योंकि दरहक़ीक़त तख़्त तो वही था इसकी नफ़ी करनी भी दुरुस्त नहीं थी, इसलिये उसने बड़ी अक़्ल मंदी से जवाब दिया गोया कि यह वही है यानी है तो वही लेकिन इसमें कुछ तबदीलियां कर दी गई हैं।

उसने यह भी कहा कि हमें पहले ही आपकी नबुव्वत, इल्म, मोजिज़ात और अल्लाह तआला के

मुताल्लिक़ इल्म था। और दिल से तो पहले ही तस्लीम कर चुकी थी सिर्फ़ आपके पास आकर दिल को ज़्यादा तसल्ली देना मक़सूद था।

इतनी अक़्लमंद औरत सूरज परस्त क्यों रही? : और उसे रोका उस चीज़ ने जिसे अल्लाह तआला के सिवा पूजती थी बेशक वह काफ़िर लोगों में से थी।

वह चूंकि ऐसी क़ौम में थी जो कुफ़्र में रासिख़ थी इसी वजह से वह इस्लाम के इज़हार पर क़ादिर न हो सकी।

यानी सुलेमान अलैहिस्सलाम के ख़त के बाद उसे काफ़ी हद तक आप अलैहिस्सलाम की हक़्क़ानियत का इल्म हो चुका था लेकिन फिर वह इस्लाम को ज़ाहिर न कर सकी क्योंकि वह काफ़िर क़ौम में पैदा हुई थी काफ़िर क़ौम में रह रही थी।

बिलक़ीस का चमकदार फ़र्श को पानी समझना : उससे कहा गया सेहन में आ, फिर जब उसने उसे देखा गहरा पानी समझी और अपनी पिंडलियां खोलीं सुलेमान अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया यह एक चिकना सेहन है, शीशों जड़ा, औरत ने अर्ज़ की ऐ मेरे रब मैंने अपनी जान पर ज़ुल्म किया और अब ईमान लाती हूं सुलेमान अलैहिस्सलाम के साथ अल्लाह तआला पर जो सारे जहानों का परवर्दिगार है।

हज़रत सुलेमान अलैहिस्सलाम ने बिलक़ीस के आने से पहले सफ़ेद शीशे का एक महल तामीर कराया जो पानी की तरह नज़र आता था महल बनवाने की ग़र्ज़ यह थी कि बिलक़ीस मल्का है वह सिर्फ़ अपने इंतेज़ामात को ही न देखती रहे बल्कि उसे आपकी नबुव्वत और ख़िलाफ़त की अज़मत और आपकी मजलिस का रोब मालूम हो जाये। उस बल्लूरीन फ़र्श के नीचे पानी और मछलियां भी थीं। आपका तख़्त उसके दर्मियान था। जब उसे कहा गया कि इस महल में दाख़िल हो जाओ और तख़्त पर चल कर बैठ जाओ तो उसने फ़र्श को पानी समझ कर पिंडलियों से कपड़ा ऊपर चढ़ाया तो आपने फ़रमाया यह तो बल्लूर का बना हुआ फ़र्श है पानी नहीं। तो उसे जल्दी ही अपनी ग़लती का एहसास हुआ और सुलेमान अलैहिस्सलाम की अज़मत, नबुव्वत और नूरानियत ने ऐसा असर किया कि बरमला कहने लगी मैंने आज तक अपनी उम्र गंवा दी अपनी जान पर कुफ़्रिया अक़ाइद के मज़ालिम ढाती रही अब तो सुलेमान अलैहिस्सलाम के साथ अल्लाह तआला पर ईमान लाती हूं। इस तरह बिलक़ीस को दौलते ईमान नसीब हुई।

तंबीह : यह जो मशहूर है और बाज़ मुफ़स्सेरीन ने भी तहरीर किया है कि आप को ख़बर किया गया था कि बिलक़ीस वैसे तो ख़ूबसूरत है लेकिन उसकी पिंडलियां बदसूरत हैं, गधे की खुरों की तरह हैं। या बाज़ ने कहा कि आप अलैहिस्सलाम को बताया गया था कि उसकी पिंडलियों पर बाल हैं तो आप अलैहिस्सलाम ने उसकी पिंडलियों को देखने के लिये ऐसा फ़र्श बनवाया था। यह दुरुस्त नहीं। नबी की शाने अज़मत के सरासर ख़िलाफ़ है।

इसी के मुतल्लिक़ अल्लामा राज़ी फ़रमाते हैः

शीशे का महल चमकदार फ़र्श बिछाने का मक़सद फ़क़त मजलिस को बा रोब बनाना और इज़हारे अज़मत था। बिलक़ीस का पिंडलियों को नंगा करना, उसकी अपनी ग़लतफ़हमी की वजह से था। उसने चमकदार सेहन को पानी समझते हुए अपनी पिंडलियों से कपड़ा ऊपर किया था गोया कि वह पानी

से गुज़रना चाहती है।

यह वाक़िया बिल्कुल इसी क़िस्म का है जैसे हज़रत आमिर बिन सअद रज़ियल्लाहु अन्हु अपने बाप से रिवायत करते हैं बेशक नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उनके लिये अपने मां–बाप को जमा किया मुश्रिकों में से एक शख़्स ने मुसलमानों को जलाकर रख दिया (यानी उसके हाथों मुसलमान बहुत तंग आ चुके थे) तो नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया मेरे मां–बाप तुम पर कुरबान हों इसे तीर मारो (मां–बाप को जमा करने का यही मायने है) वह कहते हैं मैंने अपना तीर निकाला, हालांकि उसमें लोहे की नोक नहीं थी मैंने वही उसके पहलू पर गाड़ दिया वह गिरा उसका सतर खुल गया वह नंगा हो गया नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उसे देखकर हंसे यहां तक कि आपकी दाढ़ें मुझे नज़र आने लगीं।

इस हदीस के मातहत अल्लामा नूवी तहरीर फ़रमाते हैं:

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के हंसने की वजह हज़रत सअद का दुश्मन को क़त्ल करना है आप उसके नंगे नंगीज़ को देखकर नहीं हंसे थे।

किसी के नंगे नंगीज़ को देखकर हंसना नबी की शान के लायक़ नहीं न ही आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने ऐसा कभी किया। हज़रत सुलेमान अलैहिस्सलाम ने भी ऐसा कोई इरादा नहीं फ़रमाया कि आपने ग़ैर महरम औरत की नंगी पिंडलियां देखीं।

ग़ैर यक़ीनी वाक़यात : कुछ वाक़यात जो हज़रत सुलेमान अलैहिस्सलाम की तरफ़ मंसूब हैं उनको नक़्ल करने के बाद अल्लामा आलूसी रहमतुल्लाह अलैहि फ़रमाते हैं।

यह जितनी ख़बरें भी हैं उनके सहीह होने या झूटा होने में कुछ पता नहीं। मुमकिन है कि बाज़ वाक़ियात झूटे हों जिनकी तरफ़ दिल माइल होता है। अल्लाह तआला ही हक़ीक़ते हाल बेहतर जानता है।

वह वाक़यात जिन पर यक़ीन नहीं किया गया उन्हें रुहुल मआनी में इस तरह नक़्ल किया गया।

★ बिलक़ीस ने हज़रत सुलेमान अलैहिस्सलाम की तरफ़ गुलाम और लौंडियां भेजीं, गुलामों को ज़नाना लिबास पहनाया गया उनके हाथों में कंगन और कानों में बालियां पहनाई गईं। और लौंडियों को मर्दाना लिबास पहनाया गया और उन्हें हिदायत की कि गुलामों को औरतों की तरह कलाम करना है और लौंडियों को मर्दों की तरह। और साथ ही यह भी कहा कि सुलेमान अलैहिस्सलाम को कहना अगर तुम नबी हो तो गुलामों और लौंडियों में फ़र्क़ करके दिखाओ। और बताओ कौन से गुलाम हैं और कौन सी लौंडियां?

★ एक उसने मोती दिया जिसमें सुराख़ नहीं था इसके मुताल्लिक़ कहा कि सुलेमान अलैहिस्सलाम को कहना अगर तुम नबी हो तो इसमें सुराख़ करा दो। और यह काम इंसानों और जिन्नो से नहीं कराना।

★ और एक मोती दिया जिसमें सुराख़ टेढ़ा था इसके मुताल्लिक़ यह कहकर भेजा कि इसमें धागा डाल दो।

और भेजे हुए क़ासिद को कहा कि देखना अगर वह शख़्स तुम्हें जवाब सख़्त कलामी, तुन्द मिज़ाजी से दे तो वह बादशाह होगा। उससे डरना नहीं मैं उस पर ग़ालिब आ जाऊंगी। और अगर वह शख़्स

ख़ुश अख़्लाक़ी, नर्म मिज़ाजी लताफ़ते तबअ, नर्म गोई से जवाब दे तो समझना कि वह नबी है। फिर उसकी बात को ग़ौर से सुनना और समझना।

बिलक़ीस ने गुलाम और गुलामा बमअ सोने चांदी के ज़ेवरात सोने और चांदी की ईटें, मोती लअल व जवाहर, अम्बरे कस्तूरी, घोड़े वग़ैरह कसीर तादाद में बतौर हदिया भेजे। लेकिन सुलेमान अलैहिस्सलाम ने वह हदिया आने से पहले ही नौ फ़रसख़ तक सोने और चांदी के महल्लात जिन्नो से तामीर करा दिये। दरयाई जानवर मंगवा लिये जिनके परों के अजीब व ग़रीब रंग थे। घोड़े की तरह उनकी गर्दन और पेशानी के बाल थे। मुर्ग़ की तरह उनके सर पर कलग़ियां थीं। जिन्न, इंसान, जानवर, दरिन्दें, परिन्दे ग़र्ज़ यह कि हर क़िस्म की मख़्लूक़ को आपने अपने पास कई कई मीलों तक सफ़ों में खड़ा कर दिया। हदिया लाने वाले ने यह मंज़र देखकर अपने हदिया को हक़ीर समझा।

सुलेमान अलैहिस्सलाम ने ख़ुश तबई से उससे मुलाक़ात की। उसने बिलक़ीस का ख़त आपकी ख़िदमत में पेश किया। हज़रत सुलेमान अलैहिस्सलाम ने उससे डिबिया तलब की। उसने डिबिया देते हुए कहा कि इस को खोलने से पहले बताना इसमें क्या है? जिब्राईल अलैहिस्सलाम आये उन्होंने आपको बताया, तो आप अलैहिस्सलाम ने उस शख़्स को कहा कि इसमें एक मोती बग़ैर सुराख़ के है और एक टेढ़े सुराख़ वाला है उसने कहा आपने सच कहा।

उसने कहा कि बग़ैर सुराख़ मोती में सुराख़ कर दो और टेढ़े सुराख वाले मनके में धागा डाल दो। आप अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि मोती में सुराख़ कौन करेगा? दीमक (लकड़ी खाने वाला कीड़ा) ने कहा यह काम मैं करूंगा। उसने अपने मुंह में एक बाल लिया और मोती में एक सिरे से घूम कर दूसरे सिरे से निकल गया। आप अलैहिस्सलाम ने उस कीड़े पे पूछा तुम्हारी कोई हाजत हो? उसने कहा हां। ऐ अल्लाह के बनी मेरा रिज़्क़ दरख़्तों में कर दो। आप अलैहिस्सलाम ने उसे कहा ठीक है तुम्हारा रिज़्क़ दरख़्तों में ही होगा। फिर आप ने टेढ़े सुराख़ वाले मनके (मोती) को हाथ मे लिया और फ़रमाया इसमें धागा कौन डालेगा? एक सफ़ेद रंग का कीड़ा आया और उसने कहा यह काम मैं करूंगा। उसने धागा अपने मुंह में लिया और एक तरफ़ से दाख़िल हुआ और दूसरी तरफ़ से निकल गया। आप अलैहिस्सलाम ने उससे पूछा अगर तुम्हारी भी कोई हाजत हो तो बताओ। उसने कहा हां अल्लाह के नबी मेरा रिज़्क़ फलों में कर दो। आपने फ़रमाया ठीक है तुम्हें फलों से ही रिज़्क़ मिलेगा।

फिर हदिया लाने वाले ने कहा आप गुलामों और लौंडियों में तमीज़ करें। उनके हिजाब हटाने से पहले बताओ। आपने फ़रमाया सब हाथ धोओ, जब उन्होंने हाथ धोने शुरू किये तो जो दोनों हाथ एक साथ धोने लगे। आपने कहा यह गुलाम हैं और जिन्होंने पहले पानी एक हाथ में लिया और फिर दूसरे हाथ पर डाला आप ने फ़रमाया यह लौंडियां हैं।

गुज़श्ता से पेवस्ता : सुलेमान अलैहिस्सलाम ने हुद हुद को ग़ायब पाकर जो इरशाद फ़रमाया इसमें ला इज़्ब हनहु का ज़िक्र है जिसमें लाम के बाद अलिफ़ ज़ाइद लिखा गया है बज़ाहिर अलीफ़ के ज़ाइद करने की वजह नज़र नहीं आ रही है लेकिन एक शानदार नुक्ता तहरीर किया गया है।

कि इसमें इस बात पर मुतनब्बेह किया गया है कि वाक़िया में ज़िबह नहीं हुआ।

यानी आप अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया था कि मैं ज़िबह कर दूंगा या वह कोई दलील लेकर आये।

उसने दलील पेश कर दी थी इसलिये ज़िबह से महफ़ूज़ रहा।

रब की याद के लिये घोड़ों से मुहब्बत : जब कि उस पर पेश किये गये तीसरे पहर को कि रोकिये तो तीन पावं पर खड़े हों, चौथे सुम को किनारा ज़मीन पर लगाए हुए और चलाए तो हवा हो जायें तो सुलेमान अलैहिस्सलाम ने कहा मुझे उन घोड़ों की मुहब्बत पसंद आई अपने रब की याद के लिये, फिर उन्हें चलाने का हुक्म दिया यहां तक कि निगाह से पर्दे में छुप गये। (निगाह से ओझल हो गये) फिर हुक्म दिया कि उन्हें मेरे पास लाओ (जब वापस लाए गये) तो उनकी पिंडलियों और गर्दनों पर हाथ फेरने लगा।

हज़रत सुलेमान अलैहिस्सलाम ने हुक्म दिया कि उन पर घोड़े पेश किये जायें ताकि उन्हें देखें और उनके अहवाल की कैफ़ियत पर वाक़िफ़ हों तो आप के हुक्म के मुताबिक़ घोड़ों को अस्र से दिन के आख़िर तक पेश किया जाता रहा, घोड़ों की दो लफ़्ज़ों से सिफ़ात ब्यान की गई हैं साफ़नात और जियाद। साफ़न का एक मायने यह भी है कि दोनों क़दमों का एक क़तार में रखना। और घोड़ा जब तीन क़दमों पर ज़ोर डालकर खड़ा हो, चौथे क़दम का सुम सिर्फ़ ज़मीन पर मामूली सहारा लगाए हुए हो तो उसे भी साफ़न कहते हैं। भक़सदे ब्यान यह है कि वह ऐसे घोड़े थे जब उन्हें खड़ा किया जाता तो निहायत आराम सकून से खड़े हो जाते।

जियाद तेज़ घोड़ों को कहा जाता है यानी जब वह चलते हैं तो हवा की तरह तेज़ चलते हैं, लेकिन उनकी तेज़ रफ़्तारी ऐसी नहीं होती कि सवार को गिरा दें बल्कि तेज़ रफ़्तारी में भी सवार को सकून हासिल रहता है आपने कहा:

मुझे इन घोड़ों की मुहब्बत पसंद आई है अपने रब की याद के लिये।

अल्लामा राज़ी इस तफ़सीर में फ़रमाते हैं:

यानी मुझे उन घोड़ों की इतनी शदीद मुहब्बत दुनियावी ख़्वाहिशात व लज़्ज़ात की वजह से नहीं बल्कि सिर्फ़ अल्लाह तआला के हुक्म और उसकी याद की वजह से है।

जिस तरह कुरआन पाक में घोड़ों को जिहाद के लिये पालने का हुक्म और तारीफ़ को ज़िक्र किया गया है उसी तरह तौरात में भी ज़िक्र किया गया था। आप अलैहिस्सलाम घोड़ों को सिर्फ़ अल्लाह तआला की रज़ामंदी के लिये देख रहे थे कि इससे रब और उसके हुक्म की याद हासिल हो रही है जब एक मर्तबा घोड़ों को आपके सामने गुज़ार दिया गया और वह आपकी निगाह से ओझल हो गये तो आपने फिर उन्हें लौट आने का हुम दिया। जब भी आपके क़रीब से घोड़े गुज़ारे जाते तो आप उन से अज़रुए मुहब्बत उनकी पिंडलियों और गर्दनों पर हाथ फेरते और साथ साथ अपनी उम्मत को अपने इस फ़ेअल से यह तालीम दे रहे थे कि हाकिमे वक़्त को अक्सर काम अपने हाथ से भी सर अंजाम देने चाहियें। और वजह यह भी थी कि आप को घोड़ों के अमराज़ का इल्म भी हासिल था आप इस वजह से भी उन पर हाथ फेर रहे थे कि घोड़ों के अहवाल, अमराज़, उयूब देखें कि किसी में कोई नक़्स तो नहीं। अगर हो तो उसका इलाज किया जाये। अल्लामा राज़ी ने यह तफ़सीर ब्यान करने के बाद फ़रमाया:

यह तफ़सीर जो हमने ज़िक्र की है कुरआन पाक के अलफ़ाज़े मुबारका के मुताबिक़ यही है और हम पर यह लाज़िम नहीं कि ऐसे वाक़यात को ब्यान करें जो दुरुस्त नहीं।

एक मशहूर लेकिन ग़ैर मोतबर वाक़िया : इसी आयते करीमा की तफ़सीर में बाज़ हज़रात ने ब्यान किया कि हज़रत सुलेमान अलैहिस्सलाम पर घोड़े पेश किये जाते रहे यहां तक कि सूरज गुरूब हो गया। आपकी अस्र की नमाज़ फौत हो गई आपने हुक्म दिया कि घोड़ों को मुझ पर वापस लौटाया जाये। जब घोड़े आप पर वापिस लौटाए गये तो आपने उनकी टांगें कटवा दीं, गर्दनें उड़ा दीं कि यह मेरी नमाज़ के फौत होने का सबब बने हैं।

अल्लामा राज़ी इसे रद्द करते हुए फ़रमाते हैं कि अगर यह मान लिया जाये तो अल्लाह तआला के इस इरशाद, मुझे उन घोड़ों की मुहब्बत पसंद आई अपने रब की याद के लिये, के ख़िलाफ़ है। क्योंकि जब आपको घोड़ों से मुहब्बत अल्लाह तआला की याद के लिये थी तो नमाज़ आप को कभी नहीं भूल सकती थी और न ही आप अल्लाह तआला की याद को छोड़ सकते थे।

नीज़ इसमें कई ख़राबियां लाज़िम आती हैं:

मायने यह लिया जाये कि आपने तलवार से उनकी पिंडलियों और गर्दनों को काटा तो फिर वुज़ू के हुक्म में रब के इरशाद में भी मायने यह नहीं होगा कि तुम अपने सरों का मसह करो, बल्कि यह मायने करना पड़ेगा तुम अपने सरों को तलवारों से काटो, क्या यह मायने कोई अक़्लमंद तस्लीम कर सकता है? नहीं हरगिज़ नहीं। यक़ीनन जब यह मायने ग़लत है तो हज़रत सुलेमान अलैहिस्सलाम की तरफ़ भी इस क़िस्म का मतलब मंसूब करना भी ग़लत है। और इसमें कई ख़राबियां यह लाज़िम आयेंगी कि सुलेमान अलैहिस्सलाम ने नमाज़ छोड़ दी और आप पर दुनिया की मुहब्बत ग़ालिब आ गई थी कि आप घोड़ों को देखते रहे नमाज़ के तारिक (छोड़ने वाले) बन गये हांलाकि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया:

दुनिया की मुहब्बत हर क़िस्म के गुनाहों की असल है।

अल्लाह तआला के मुताल्लिक़ ऐसा गुमान करना कैसे सही हो सकता है? फिर आपसे (मआज़ल्लाह) अगर नमाज़ छोड़ने का अज़ीम गुनाह सर ज़द हुआ था तो आपको तौबा करनी चाहिये थी। जिहाद वाले घोड़ों की गर्दनें उड़ाने का क्या मक़सद था? फिर अगर मान यह लिया जाये कि आपने रब को कहा कि मुझ पर सूरज को वापस लौटाया जाये तो यह और ही बहुत बड़ी ख़राबी का बाइस बनेगा इधर नमाज़ छोड़ने का गुनाह उधर तौबा के बजाए रब को हुक्म देना, यह दरहक़ीक़त रब की शान में गुस्ताख़ी है और इसका सीग़ा भी इस मायने को रद्द कर रहा है और अल्लाह तआला ने नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को फ़रमाया:

हमारे बंदे दाऊद को याद करो, इसके बाद आपके बेटे सुलेमान अलैहिस्सलाम का ज़िक्र फ़रमाया गोया कि रब तआला ने यूं इरशाद फ़रमाया ऐ मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) यह कुफ़्फ़ार जो आपसे कहते हैं इस पर सब्र कीजिये और हमारे बंदे सुलेमान को याद करो।

अब इसके बाद अगर वाक़िया इस तरह ब्यान किया जाये जिससे पता चले कि सुलेमान अलैहिस्सलाम अच्छे आमाल, अच्छे अख़लाक़ के मालिक थे और अल्लाह तआला की इताअत करने वाले थे, दुनिया की ख़्वाहिशात व लज़्ज़ात से दूर थे तो कलाम का कोई मक़सद निकल सकता है कि रब ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को आपकी यह सिफ़ात बताकर तसल्ली दी। और अगर यह ब्यान किया जाये कि आप दुनिया की मुहब्बत की वजह से नमाज़ छोड़ कर अज़ीम गुनाहों के मुरतकिब हो जाते थे तो कलाम का मक़सद ही फ़ौत हो जायेगा। (मआज़ल्लाह) क्या हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि

वसल्लम को यह कहा गया कि आप भी ऐसा करें।

अल्लामा राज़ी ने इस मशहूर वाक़िया को बड़ी तफ़सील से रद्द किया और आख़िर में फ़रमाया:

मैं लोगों पर बहुत बड़ा ताज्जुब करते हुए यह कहता हूं कि उन्होंने यह कमज़ोर वजूह कैसे तस्लीम कर ली हैं? जिन को अक़्ल भी नहीं मानती और शरीअत के भी ख़िलाफ़ हैं।

सुलेमान अलैहिस्सलाम का "इंशाअल्लाह" कहना भूल जाना : और बेशक हमने सुलेमान अलैहिस्सलाम को जांचा और उसके तख़्त पर एक बेजान बदन डाल दिया फिर रुजू लाया।

इस आयते करीमा की तफ़सीर में मुहक़्क़ेक़ीन मुफ़स्सेरीन किराम ने इस वाक़िया को नक़्ल किया है जो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का इरशाद गिरामी बुख़ारी व मुस्लिम ने रिवायत किया है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया:

हज़रत सुलेमान अलैहिस्सलाम ने कहा मैं आज रात सत्तर औरतों से जिमाअ करूंगा (आपकी शरीअत में चार से ज़्यादा निकाह करना मना नहीं था) हर औरत से एक बच्चा पैदा होगा जो बहुत बड़ा शहसवार होगा, और अल्लाह तआला की राह में जिहाद करेगा। आप अलैहिस्सलाम ने इंशाअल्लाह न कहा। आपने सत्तर औरतों से जिमाअ किया लेकिन कोई भी औरत हामिला न हुई। सिवाए एक औरत के। उसका बच्चा भी ना मुकम्मल बेजान पैदा हुआ। ख़्याल रहे कि मुस्लिम में सत्तर औरतों का ज़िक्र है और बुख़ारी में चालीस औरतों का ज़िक्र है नीज़ यह भी रिवायात में आया कि आप को फ़रिश्तों ने कहा:

कहो लेकिन आपने न कहा आपका न कहना भूल कर था या क़सदन था किसी सूरत में भी गुनाह नहीं क्योंकि फ़रिश्ते का हुक्म मानना आप पर कोई फ़र्ज़ नहीं था।

फ़रिश्ते के कहने पर आपका इंशाअल्लाह न कहना ज़्यादा से ज़्यादा तर्क औला (बेहतर काम को छोड़ना) पाया गया है इसे गुनाह नहीं कहा जा सकता, अगरचे अंबियाए किराम के तर्क औला को भी ज़नब से ताबीर कर दिया जाता है।

जिस्म से मुराद वही ना मुकम्मल बे जान बच्चा है और कुर्सी पर डालने का मतलब यह है कि दाया ने वह बच्चा लाकर उसके तख़्त या कुर्सी पर एक बेजान जिस्म डाल दिया।

उस बेजान बच्चे को पहले कुर्सी पर रखा गया और कुर्सी पर उठाकर लाया गया वह आपकी गोद में रख दिया गया कि आप देखें। नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया:

क़सम है उस ज़ात की जिसके क़ब्ज़ए कुदरत में मुहम्मद की (मेरी) जान है। अगर सुलेमान अलैहिस्सलाम इंशाअल्लाह कह लेते तो तमाम औरतों से बच्चे पैदा होते और तमाम के तमाम बड़े शहसवार और अल्लाह तआला की राह में जिहाद करने वाले होते।

इस आयते करीमा की तफ़सीर में अल्लामा राज़ी ने एक और तौजीह भी ब्यान की है कि जिसे पीर करम शाह साहब हसीन व जमील अल्फ़ाज़ में तहरीर करते हुए फ़रमाते हैं:

आप अलैहिस्सलाम किसी बीमारी में मुब्तला हो गये बीमारी इतनी शदीद और इसका अर्सा इतना तवील था कि आपका कड़ियल जिस्म हड्डियों का ढांचा बनकर रह गया, वह अज़ीम शाही तख़्त जिस

पर आप जब बैठते थे तो आपके रोब व जलाल की वजह से जिन्न व इन्स पर लरज़ा तारी हो जाता था। अब ज़ुअफ़ व नक़ाहत के बाइस जिस्म बहुत लाग़र हो गया था। तख़्त पर जब तशरीफ़ रखते तो ऐसा मालूम होता कि एक बे रूह और बे जान जिस्म जो किसी ने उठाकर कुर्सी पर डाल दिया है आप अलैहिस्सलाम ने बारगाहे इलाही में बड़े इज्ज़ व नियाज़ से अपनी सेहत के लिये दुआ की जो क़बूल हुई। आप अलैहिस्सलाम बिल्कुल सेहत याब हो गये और जहांबानी के फ़राइज़ पहले की तरह बड़ी शान व शौकत से अंजाम देने लगे।

सुलेमान अलैहिस्सलाम के हक़ में यहूदी की गुस्ताख़ी : यहूदियों ने हज़रत सुलेमान अलैहिस्सलाम के मुताल्लिक़ मनघड़त वाक़िया पेश किया किसी नेक आदमी के मुताल्लिक़ ऐसा गुमान करना भी मुमकिन नहीं चे जाये कि अल्लाह तआला के नबी के मुताल्लिक़ ऐसी बनावटी कहानियां मंसूब की जायें यहूदियों ने कहा:

सुलेमान अलैहिस्सलाम को समुंद्र में एक शहर की ख़बर मिली कि वहां कोई शख़्स हुकूमत कर रहा है आपने अपना लश्कर साथ लिया और हवा को हुक्म दिया जिसने आप को और आपके लश्कर को वहां पहुंचा दिया। आप अलैहिस्सलाम ने उस शख़्स को जो वहां का हाकिम था क़त्ल करा दिया और उसकी एक बहुत ही ख़ूबसूरत बेटी थी जिसका नाम जरादह था उसे आपने अपने लिये पसंद कर लिया। वह इस्लाम ले आई आप भी उससे बहुत ज़्यादा मुहब्बत करते थे। वह हमेशा अपने बाप को याद करके रोती रहती थी सुलेमान अलैहिस्सलाम ने शैतान को हुक्म दिया कि इसे इसके बाप की तसवीर बनाकर दे दो ताकि उसे देखने से तसल्ली हासिल रहे। उसके बाप की शैतान ने तस्वीर बना दी उस औरत ने तस्वीर को अपने बाप के लिबास की तरह ही लिबास पहना दिया। सुबह व शाम अपनी लौंडियों को साथ ले जाकर उसे सज्दा करती थी। सुलेमान अलैहिस्सलाम को उनके वज़ीर आसिफ़ ने जब इस मामला की ख़बर दी तो आपने तस्वीर को तोड़ने का हुक्म दिया और उस औरत को सज़ा दी। फिर अकेले जंगल की तरफ़ निकल गये। ख़ाकिसतर पर बैठकर अल्लाह तआला से तौबा करने लगे।

सुलेमान अलैहिस्सलाम की एक लौंडी उम्मे वलद भी जिसे अमीना कहा जाता था जब आप तहारत के लिये तशरीफ़ ले जाते या अपनी अज़वाज से मजामेअत का इरादा फ़रमाते तो अपनी अंगूठी उतारकर अमीना को दे जाते आप की बादशाही अंगूठी में थी। आप अंगूठी पहन रखते तो इंसान व जिन्न आपके ताबे होते। आप उतार देते तो कोई भी आपके हुक्म को मानने के लिये तैयार न होता। एक दिन आपने अंगूठी अमीना के पास रखी। आप क़ज़ाए हाजत के लिये चले गये। दरियाओं पर मुतसर्रिफ़ शैतान सुलेमान अलैहिस्सलाम की शक्ल में अमीना के पास आया और कहा ऐ अमीना मेरी अंगूठी दे। अमीना ने अंगूठी उसे दे दी वह अंगूठी पहनकर आप के तख़्त पर बैठ गया। तमाम इंसान जिन्न परिन्दे वग़ैरह उसके इर्द गिर्द जमा हो गये उसी का हुक्म उन पर चल रह था और यह उसके ताबे थे।

सुलेमान अलैहिस्सलाम की शक्ल बदल दी गई थी जब आप क़ज़ाए हाजत से फ़ारिग़ होकर अमीना के पास आये कि मेरी अंगूठी दो तो उसने इंकार कर दिया। तुम सुलेमान अलैहिस्सलाम कब हो, जाओ अपना काम करो। सुलेमान अलैहिस्सलाम तो अपनी अंगूठी ले गये हैं।

आपको मालूम हो गया कि मेरी ख़ता की वजह से मुझे गिरफ़्त में ले लिया गया है आप लोगों के

घरों पर दस्तक देते उनके सामने खाने के लिय हाथ फैलाते कि मुझे खाने को कुछ मिल जाये। जब आप बताते कि मैं सुलेमान अलैहिस्सलाम हूं तो लोग आप पर मिट्टी डालते और आप को गालियां देते। आख़िरश आपने मछेरों की गुलामी इख़्तेयार कर ली। उनकी मछलियां एक जगह से उठाकर दूसरी जगह पहुंचाते। वह आपको दो मछलियां हर रोज़ दे देते। आप उसी से गुज़र औक़ात करते रहे।

चालीस दिन इसी हाल में गुज़र गये क्योंकि चालीस दिन आपके घर बुत परस्ती होती रही थी जब आप के चालीस दिन गुज़र गये उधर आसिफ़ और बनी इस्राईल के बड़े बड़े लीडरों ने शैतान का हुक्म मानने से इंकार कर दिया। शैतान आपके तख़्त को छोड़कर चला गया और अंगूठी को दरिया में डाल दिया, उसको मछली ने निगल लिया। मछली जब आपके हाथ में आई तो आपने उसके पेट को चाक किया तो अंगूठी मिल गई आपने अंगूठी पहन ली और आपको हुकूमत वापस मिल गई आप ने सज्दए शुक्र अदा किया

अल्लामा राज़ी ने इसे बहुत शिद्दत व तफ़सील से रद्द किया और फ़रमायाः

यक़ीनन यह जान लो कि यह मुहक़्क़ेक़ीन के नज़दीक लग्व और बातिल कलाम है।

इस क़िस्म का मामला शैतान उलेमा से भी नहीं कर सकता अंबियाए किराम से कैसे कर सकता है? नीज़ अल्लाह तआला की हिकमत के ख़िलाफ़ है कि वह शैतान को सुलेमान अलैहिस्सलाम की अज़वाज पर मुसल्लत करता और हज़रत सुलेमान अलैहिस्सलाम का सूरत बनवाकर देना वग़ैरह सब लग़्वियात हैं।

सुलेमान अलैहिस्सलाम की दुआ : फिर वह (हमारी तरफ़) मुतावज्जेह हुए अर्ज़ कि मेरे रब मुझे माफ़ फ़रमा दे और अता फ़रमा मुझे ऐसी हुकूमत जो किसी को मैयस्सर न हो मेरे बाद, बेशक तू ही बे अंदाज़ा अता करने वाला है।

पहले मग़्फ़िरत के लिये इल्तेजा की उसके बाद मुल्क व हुकूमत बख़्शे जाने का सवाल किया, हर शख़्स का सवाल अपने ज़र्फ़ के मुताबिक़ हुआ करता है नीज़ जिससे सवाल कर रहा है उसकी क़ुदरत व इख़्तेयार और जूद व अता को भी पेशे नज़र रखा जाता है यहां मांगने वाले हज़रत सुलेमान अलैहिस्सलाम हैं और जिससे मांग रहे हैं वह रब्बुल आलमीन है। वह अकरमुल अकरमीन है। उससे बड़ा साहबे क़ुदरत इख़्तेयार भी कोई नहीं और उस जैसा सख़ी और करीम भी कोई नहीं।

हज़रत अल्लामा पानी पती फ़रमाते हैं कि इससे कोई शख़्स यह न समझे कि हज़रत सुलेमान अलैहिस्सलाम का मर्तबा हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से बड़ा है हुज़ूर ने अपनी मर्ज़ी से नबीए मुल्क (बादशाहे नबी) बनने के बजाए नबीए अब्द बनना पसंद फ़रमाया।

यानी हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का हुक्म हर जिन्न व इन्स पर नाफ़िज़ है।

साहबे क़सीदा बुर्दा फ़रमाते हैं:

हुज़ूर जब दरख़्तों को इशारा करते हैं तो वह सज्दा करते हुए क़दमों के बग़ैर अपने तने के सहारे ख़िदमते अक़दस में हाज़िर होते हैं।

और यही हाल ख़ुलफ़ाए राशदीन का था जिन्होंने ख़िलाफ़त और फ़क़ीरी दोनों को जमा किया और तमाम फ़ज़ाईल के जामेअ बने।

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया आज रात को सरकश शैतान मेरी नमाज़ को फ़ासिद करने के लिये मेरे क़रीब मंडलाता रहा।

बेशक अल्लाह तआला ने मुझे उससे ज़्यादा कुव्वत दे रखी है तहक़ीक़ मैंने इरादा किया कि मैं इसे मस्जिद के सतूनों में से एक सतून से बांध दूं ताकि सुबह तुम तमाम लोग भी उसे देख सको।

लेकिन मुझे अपने भाई सुलेमान अलैहिस्सलाम की दुआ याद आई कि आपने रब के हुज़ूर अर्ज़ किया था।

ऐ मेरे रब मुझे माफ़ फ़रमा और मुझे ऐसी बादशाही अता फ़रमा जो मेरे बाद किसी को हासिल न हो।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का कितना वाज़ेह इशारा है कि मुझे जिन्नों पर भी हुकूमत हासिल है लेकिन मैं इसका इज़हार नहीं करता कि सुलेमान अलैहिस्सलाम का जिन्नो पर हुकूमत करना मशहूर है।

सुलेमान अलैहिस्सलाम के फ़ैसले : और याद करो दाऊद व सुलेमान अलैहिमस्सलाम को जब वह फ़ैसला कर रहे थे एक खेती के झगड़े का जब रात के वक़्त छूट गई इसमें एक कौम की बकरियां और हम उनके फ़ैसला का मुशाहिदा कर रहे थे।

एक आदमी की बकरियां रात के वक़्त छूट गई उनके साथ कोई आदमी न था वह दूसरे शख़्स की खेती खा गई। यह मुक़द्दमा हज़रत दाऊद के सामने पेश हुआ। आप अलैहिस्सलाम ने तजवीज़ किया कि बकरियां खेती वाले को दे दो चूंकि बकरियों की क़ीमत खेती के बराबर थी, हज़रत सुलेमान अलैहिस्सलाम ने जब फ़ैसला सुना तो आपने कहा कि एक सूरत इस से बेहतर और दोनों फ़रीक़ों के लिये नफ़ामंद हो सकती है। हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया अच्छा तुम बताओ कि वह क्या सूरत हो सकती है? आप अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि बकरियां खेती वाले को सिर्फ़ इसलिये दी जायें कि वह उनके दूध वग़ैरह से नफ़ा हासिल करता रहे और बकरियों वाले शख़्स को कहा जाये कि वह उस शख़्स के खेत में काम करें और मेहनत करके ज़ाया शुदा फ़सल के बराबर और फ़सल काश्त करके तैयार करे। जब खेती अपने हाल पर आ जाये तो खेती वाले को उसकी खेती दे दी जाये और बकरियों वाले को उसकी बकरियां दे दी जायें।

यह फ़ैसला हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम ने भी पसंद फ़रमाया उस वक़्त हज़रत सुलेमान अलैहिस्सलाम की उम्र ग्यारह साल थी यह दोनों फ़ैसले इज्तेहादी थे जो उस वक़्त की शरीअत के मुताबिक़ थे।

हज़रत मुजाहिद का क़ौल यह है कि दाऊद अलैहिस्सलाम का फ़ैसला क़ानून के मुताबिक़ था और सुलेमान अलैहिस्सलाम का फैसला उन दोनों के दर्मियान सुलह कराने की सूरत में था हमारी शरीअत में अगर जानवर ख़ुद से छूट जायें किसी की खेती को नुक़्सान पहुंचायें तो जानवरों के मालिक पर कोई ज़मान लाज़िम नहीं।

दो औरतों के झगड़े में फ़ैसला : हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से मरवी है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया:

एक वक़्त दो औरतें थीं उन दोनों के बच्चे उनके साथ थे, एक भेड़िया एक बच्चे को ले गया एक औरत ने दूसरी को कहा भेड़िया तुम्हारा बच्चा ले गया है दूसरी कहने लगी तुम्हारे बच्चे को ले गया। उन दोनों के दर्मियान झगड़े ने तूल पकड़ा तो वह अपना फ़ैसला कराने के लिये हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम के पास आ गईं। आपने बड़ी के हक़ में फ़ैसला कर दिया यानी उन औरतों में से एक उम्र में छोटी थी और एक बड़ी। जब वह दोनों (फ़ैसला के बाद) निकलीं तो हज़रत सुलेमान बिन दाऊद अलैहिमस्सलाम के सामने आईं तो उनको उन्होंने हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम के फ़ैसले की ख़बर दी तो आपने फ़रमाया:

छुरी लाओ मैं इसके दो टुकड़े करके तुम दोनों को तक़सीम कर दूं, तो छोटी ने कहा अल्लाह तआला आप पर रहम फ़रमाये ऐसा न करें वह इसी का बेटा है तो आपने फ़ैसला छोटी के हक़ में कर दिया।

वज़ाहते हदीस : हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम ने बड़ी के हक़ में फ़ैसला क्यों किया था? आप अलैहिस्सलाम ने बड़ी के हक़ में फ़ैसला इसलिये किया था कि या तो बच्चे में आपने बड़ी से कुछ मुशाहेबत देखी थी या हो सकता है कि आपकी शरीअत में बड़े को मुक़द्दम रखा जाता हो, या यह कि बच्चे पर क़ब्ज़ा बड़ी का था। और आपकी शरीअत में जिसका क़ब्ज़ा होता था उसके हक़ को तरजीह दी जाती थी।

हज़रत सुलेमान अलैहिस्सलाम ने छोटी के हक़ में फ़ैसला क्यों किया? इसलिये कि आपने देखा कि बच्चे से मुहब्बत किसे है जब आपने फ़रमाया कि छुरी लाओ कि मैं इसके टुकड़े करके तुम दोनों में तक़सीम कर दूं तो आपके इस इरशाद पर बड़ी ख़ामोशी थी क्योंकि हक़ीक़तन वह जानती थी कि मैं झूटी हूं, इस वजह से भी ख़ामोश थी कि मेरा बेटा तो ज़ाया हो चुका था यह भी क़त्ल हो जाये तो दूसरी औरत को भी मेरी तरह ग़म लाहक़ हो। लेकिन छोटी ने कहा हुज़ूर इसे क़त्ल न फ़रमायें बल्कि इसे ही दे दें, क्योंकि जब हक़ीक़त में बेटा ही उसी का था तो उसने अज़रुए मुहब्बत बेटे का क़त्ल होना पसंद नहीं किया। बल्कि उसकी ख़्वाहिश यह थी कि मुझे मिले न मिले लेकिन कम से कम ज़िन्दा तो रहे। छोटी के इस प्यार व मुहब्बत को देखकर हज़रत सुलेमान अलैहिस्सलाम ने समझ लिया कि यह लड़का इसी का बेटा है दूसरी का नहीं, लिहाज़ा आप अलैहिस्सलाम ने उसी के हक़ में फ़ैसला फ़रमा दिया।

हज़रत सुलेमान अलैहिस्सलाम ने हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम का फ़ैसला कैसे तोड़ा? क़ानून यह है कि एक मुजतहिद दूसरे मुजतहिद का फ़ैसला नहीं तोड़ सकता हालांकि दोनों हज़रात के फ़ैसले इज्तेहादी थे। वही के ज़रिये कोई एक फ़ैसला नहीं था। हज़रत सुलेमान अलैहिस्सलाम के फ़ैसले से हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम का फ़ैसला बज़ाहिर तोड़ना दुरुस्त नज़र नहीं आता लेकिन उसकी चंद वजहे हैं :

१. हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम ने हतमी फ़ैसला नहीं फ़रमाया था बल्कि बड़ी के क़ब्ज़े को देखकर बच्चा उसी के पास रहने की राए क़ायम की थी।

२. हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम ने फ़तवा जारी किया था फ़तवा में और क़ज़ा में फ़र्क़ है। क़ज़ा यानी फ़ैसला पर अमल लाज़िम होता है लेकिन फ़तवा पर अमल लाज़िम नहीं होता क्योंकि मुफ़्ती को

अमल कराने के इख़्तेयार हासिल नहीं होते।

३. मुमकिन है कि आप की शरीअत में एक मुजतहिद दूसरे मुजतहिद का फ़ैसला तोड़ सकता हो और यह जायज़ हो।

४. हज़रत सुलेमान अलैहिस्सलाम ने इज़हारे हक़ के लिये हीला किया उस पर छोटी का सच्चा होना जब वाज़ेह हो गया तो हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम ने ख़ुद ही अपना फ़ैसला वापस ले लिया हो।

देव आपके ताबे : और तमाम मेअमार और गोताख़ोर आपके ताबे कर दिये।

यानी कुछ वह जिन्न थे जो फ़न्ने तामीर में माहिर थे बड़ी बड़ी इमारात बहुत जल्दी तैयार करते और कुछ जिन्न दरियाओं समुंद्रों में ग़ोते लगाकर तरह तरह के मोती, हीरे लअल व जवाहर निकालते। दरियाओं में सबसे पहले मोती निकालने का काम हज़रत सुलेमान अलैहिस्सलाम ने ही शुरू किया।

और (आपके ताबे कर दिये) जिन्नो में से वह जो उसके आगे काम करते उसके रब के हुक्म से और जो उनमें से हमारे हुक्म से एराज़ करे हम उसे भड़कती आग का अज़ाब चखायेंगे, उसके लिये बनाते जो वह चाहता ऊंचे ऊंचे महल और तस्वीरें और बड़े हौज़ों के बराबर लगन और लंगरदार देगें।

महारीब जमा है महराब की और हरब से लिया हुआ है जिसका मायने लड़ाई करना है। यहां महारीब से मुराद वह महल्लात हैं जिनकी हिफ़ाज़त के पेशे नज़र उनका मालिक दूसरों से लड़ाई करे। अगर वह क़ब्ज़ा करने की कोशिश करें।

तमासील से मुराद पीतल, तांबा बल्लूर संग मर मर वग़ैरह से तस्वीरें बनाना। लेकिन यह ख़्याल रहे कि हज़रत सुलेमान अलैहिस्सलाम की शरीअत में तस्वीरें बनाना जायज़ था यही क़ौल हज़रत ज़ह्हाक और अबुल आलिया का है।

एक शरीअत के मसाइल को दूसरी शरीअत में उस वक़्त तक साबित नहीं किया जा सकता जब तक दोनों शरीअतों में उनका हुक्म एक न हो।

जफ़ान से मुराद वह बर्तन जिसमें तआम (खाना) डाला जाये। ऐसा बर्तन जिसमें इतना तआम आये कि जो एक शख़्स को सैर (पेट भर खाना) कर सके। इसे सहीफ़ता कहा जाता है और जो दो या तीन आदमियों को सैर कर सके उसको मइकला कहा जाता है और जो पांच आदमियों को सैर कर सके उसे सहफ़ा कहा जाता है और जो दस आदमियों को सैर कर सके उसे क़सआ कहा जाता है और जफ़ान मुतलक़ बर्तन को कहा जाता है ख़्वाह छोटा हो या बड़ा। लेकिन यहां कल्जवाब कह कर साबित कर दिया कि बड़े हौज़ों की तरह लगन बनाते थे जिसमें से एक हज़ार आदमी सैर होकर खाना खा लेते थे।

कुदूरे रासयात बड़ी बड़ी देगें बनाते थे जिनके नीचे पाए होते थे बहुत बड़ी होने की वजह से उन्हें उतारा नहीं जाता था।

सुलेमान अलैहिस्सलाम की वफ़ात : पस जब हमने सुलेमान अलैहिस्सलाम पर मौत का फ़ैसला नाफ़िज़ कर दिया पता न बताया जिन्नात को आपकी मौत का मगर ज़मीन के दीमक ने जो खाता रहा

आपके असा को पस जब आप ज़मीन पर आये तो जिन्नो पर यह बात खुल गई कि अगर वह गैब जानते होते तो (इतना अर्सा) न रहते इस रुसवा कुन अज़ाब में।

जिन्नात गैब दानी का दावा किया करते थे और इस वजह से इंसानों पर अपना रोब बैठाते और उन्हें तरह तरह की ऐसी बातें बताते जिनका ताल्लुक़ उमूरे ग़ैबिया से होता। अल्लाह तआला की गैरत ने उनका भांडा चौराहे में फोड़ दिया। हज़रत सुलेमान अलैहिस्सलाम को उस वक़्त मौत से हमकिनार किया जब वह असा पर टेक लगाये मसरूफ़े इबादत थे। आपकी रूह परवाज़ कर गई लेकिन आपका जिस्म मुबारक असा के सहारे ज्यूं का त्यूं खड़ा रहा। जिन्नात जो आप के हुक्म से बड़े कठिन और मशक़्क़त तलब कामों में जुते हुए थे और आपके ख़ौफ़ से सुस्ती न कर सकते थे वह आपको खड़ा हुआ देखते तो समझते कि आप ज़िन्दा व सलामत हैं। ज़रा ग़फ़लत बरती तो खाल उधेड़ लेंगे। इसी तरह पूरा साल गुज़र गया। हुक्मे इलाही से दीमक ने असा को चाटना शुरू कर दिया। नीचे से ऊपर तक उसे खोखला करने में एक साल का अर्सा बीत गया। जब वह बिल्कुल खोखला हो गया और आपका बोझ न सहार सका तो टूट गया और आप नीचे ज़मीन पर आ रहे, तब ज़िन्नात को पता चला कि जिसके ख़ौफ़ से उन्होंने अपने आपको मुसीबत में मुब्तला रखा वह तो अर्सा से वफ़ात पा चुका है। तो अब उनके दावा की हक़ीक़त फ़ाश हो गई। नीज़ वह लोग जो उन जिन्नात की गैब दानी के दावे को सच्चा समझ रहे थे उन्हें भी पता चल गया कि यह अपने दावा में सरासर झूटे हैं।

तबीनत का फ़ाअेल या तो जिन्न हैं यानी तमाम जिन्नो पर यह हक़ीक़त वाज़ेह हो गई कि उनके सरदार जो गैबदानी की लाफ़ें मारा करते थे वह बिल्कुल झूटे हैं। अगर इन्हें गैब का इल्म होता तो वह साल भर अपनी जान को इस मुसीबत में न डाले रखते । या इसका मफ़हूम यह है कि लोगों पर हक़ीक़त खुल गई कि जिन्नात को गैब का कोई इल्म नहीं।

जिन्नात के सरे गुरूर को ख़ाक में मिलाने के साथ साथ अल्लाह तआला ने शाने नबुव्वत का मुशाहिदा भी करा दिया। आम इंसान अगर असा पर टेक लगाकर खड़ा हो और वह ऊंघ जाये तो उसका तवाज़ुन बरक़रार नहीं रहता और फ़ौरन ज़मीन पर गिर पड़ता है। फिर मौत के बाद चेहरे की रंगत बदल जाती है। जिस्म में तरह तरह के तग़य्युरात रुनुमा होने लगते हैं। लेकिन यहां आप साल भर टेक लगाये खड़े रहे, चेहरा उसी तरह फूल की तरह शगुफ़ता रहा, बदन बिल्कुल तर व ताज़ा रहा, तअफ़्फ़ुन और बोसीदगी (जिस्म का बदबूदार होना और गल सड़ जाना) तो कुजा लिबास भी वैसे ही पाक साफ़ रहा न मौसमे गर्मा की हिद्दते लू और हब्स ने जस्दे अतहर को मुतास्सिर किया और न मौसमे सरमा का कोई असर ज़ाहिर हुआ। अल्लाह तआला ने बे बसीरत लोगों को ज़ाहिरी आंखों से मुशाहिदा करा दिया कि नबी की ज़ाहिरी ज़िन्दगी का जाह व जलाल तो तुम देखते रहे अब उसके इंतेक़ाल के बाद भी उसकी शान रफ़ीअ को देखो।

हज़रत हज़क़ील अलैहिस्सलाम

ऐ महबूब क्या तुमने न देखा था उन्हें, जो अपने घरों से निकले और वह हज़ारों थे मौत के डर से, तो अल्लाह तआला ने उनसे फ़रमाया, मर जाओ! फिर उन्हें ज़िन्दा फ़रमा दिया, बेशक अल्लाह तआला लोगों पर फ़ज़्ल करने वाला है मगर अक्सर लोग नाशुक्रे हैं।

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा से मरवी है कि बनी इस्राईल के बादशाहों में से एक बादशाह ने अपनी क़ौम को जिहाद करने के लिये कहा तो घरों से बाहर निकल कर वह कहने लगे हम तो उस ज़मीन में नहीं जायेंगे जहां तुम हमें ले जाना चाहते हो, क्योंकि वहां वबा फैली हुई है। जब वबा (ताऊन) वहां से ज़ायल हो जायेगी तो फिर हम जायेंगे। अल्लाह तआला ने उन तमाम पर जो हज़ारों की तादाद में थे अपने इलाक़ा में ही शहर से बाहर मौत को मुसल्लत कर दिया। वह ८ दिन तक उसी हाल में रहे, यहां तक कि उनके जिस्म फूल गये। दूसरे इलाक़ा के बनी इस्राईल को जब उनकी मौत का इल्म हुआ तो वह उनको दफ़न करने के लिये आये लेकिन उनकी बदबू की वजह से वह उन्हें दफ़न करने से आजिज़ आ गये। इसलिये उन्होंने उनके इर्द गिर्द एक दीवार बना दी।

एक और रिवायत में इसी तरह ज़िक्र है कि हज़रत हज़क़ील अलैहिस्सलाम ने अपनी क़ौम को दावते जिहाद दी लेकिन उन्होंने बुज़दिली का मुज़ाहिरा किया और जिहाद में शिर्कत को ना पसंद समझा तो अल्लाह तआला ने उन पर मौत मुसल्लत कर दिया जब उनमें से कसरत से मौतें होने लगीं तो उन्होंने अपने शहरों से मौत के डर की वजह से भागना शुरू कर दिया जब हज़ारों की तादाद में शहरों से बाहर निकले ही थे तो हज़क़ील अलैहिस्सलाम ने दुआ की।

ऐ अल्लाह! ऐ याक़ूब अलैहिस्सलाम के ख़ुदा और ऐ मूसा के ख़ुदा तू अपने बंदों की नाफ़रमानी देख रहा है तू इन्हें अपनी कोई निशानी दिखा जिससे इन्हें तेरी कुदरत का पता चल जाये कि वह तेरे क़ब्ज़ए कुदरत से नहीं निकल सकते, तो आपकी इसी दुआ के बाद अल्लाह तआला ने आपकी क़ौम पर मौत मुसल्लत कर दी वह हज़ारों की तादाद में शहर से निकले ही थे कि मर गये।

हज़रत हज़क़ील ने जब हज़ारों की तादाद में अपनी क़ौम के अफ़राद को मरा हुआ देखा तो आपको परेशानी लाहक़ हुई। ख़्याल हुआ कि यह दोबारा ज़िन्दा हो जायें तो अल्लाह तआला ने आपकी तरफ़ वही की कि ऐ हज़क़ील तुम हड्डियों को कहो ऐ हड्डियो तुम्हें अल्लाह तआला हुक्म देता है कि तुम जमा हो जाओ आपके कहने पर वह तमाम हड्डियां एक दूसरे से मिलकर जिस्मों के ढांचे में मुकम्मल हो गये, लेकिन अभी तक उनमें गोश्त और ख़ून नहीं था फिर अल्लाह तआला ने आपकी तरफ़ वही की कि अब तुम यह कहो ऐ जिस्मो! अल्लाह तआला तुम्हें हुक्म देता है कि तुम अपने गोश्त का लिबास पहन लो, इस तरह अल्लाह तआला ने उन पर गोश्त चढ़ा दिया, फिर अल्लाह तआला ने आपकी तरफ़ वही की अब तुम कहो ऐ जिस्मो! अल्लाह तआला तुम्हें हुक्म देता है कि तुम अब उठ खड़े हो इस तरह अल्लाह तआला ने उन लोगों को फिर से ज़िन्दा कर दिया जब वह ज़िन्दा होकर उठे तो कह रहे थे

ज़िन्दा होने के बाद भी उन पर असराते मौत बाक़ी रहे यहां तक कि जिस तरह मौत के वक़्त उनका रंग ज़र्द हुआ था उसी तरह ज़र्द ही रहा।

और उनके मरने की वजह से जो उनके जिस्मो में बदबू पैदा हुई थी वह उनके पैदा होने के बाद भी बाक़ी रही बल्कि आज तक उनकी औलाद में भी बू पाई जाती है।

ख़्याल रहे कि मौत के बाद इंसान मुकल्लफ़ नहीं रहता, उस पर अवामिर व नवाही ख़त्म हो जाते हैं लेकिन उन लोगों को ज़िन्दा करने के बाद भी मुकल्लफ़ बनाया गया क्योंकि या तो उन्हें मौत के वक़्त सकराते मौत और मौत की वजह से लाहक़ होने वाली हौलनाकियां नहीं हासिल हुई थीं या यह चीज़ें तो हासिल हुई थीं लेकिन अल्लाह तआला ने उनसे भुला दीं क्योंकि अल्लाह तआला जो ज़िन्दा करने पर क़ादिर है वह किसी चीज़ को ज़ेहनो से मिटाने पर भी क़ादिर है और या यह वजह है कि यह मौत उन पर बतौर सज़ा आदत के ख़िलाफ़ उन पर मुसल्लत की गई थी इसलिये उस पर अहकामे मौत जारी नहीं किये गये यही वजह है कि उन्हें ज़िन्दा करने के बाद भी मुकल्लफ़ बनाया गया।

और तहक़ीक़े रिवायत किया गया है कि मुर्दों को ज़िंदा करने का वाक़िया अल्लाह तआला के नबी हज़रत हज़क़ील अलैहिस्सलाम के ज़माने में पेश आया और यह मुर्दो को ज़िन्दा करना अल्लाह तआला के नबी का मोजिज़ा है।

हज़रत हज़क़ील अलैहिस्सलाम की कुन्नियत इब्नुल उजूज़ थी क्योंकि आपकी पैदाईश के वक़्त आपकी वालदा की उम्र ज़्यादा थी इसलिये आप बुढ़िया के बेटे के नाम से मशहूर हो गये। आप का लक़ब ज़ुलकिफ़्ल है क्योंकि आपने सत्तर नबियों की कफ़ालत की और उनको शहीद होने से बचाया यह भी ख़्याल किया जाता है कि एक अल्लाह तआला के नबी ज़ुलकिफ़्ल नाम के भी हैं जिनका ज़िक्र पहले हो चुका है वह अलग हैं।

फ़ायदा : इंसान मौत से भाग नहीं सकता इसलिये अल्लाह तआला ने फ़रमाया:

फ़रमा दीजिये हरगिज़ तुम्हें मौत से भागना नफ़ा नहीं दे सकता ख़्वाह मौत से भागो या क़त्ल से मौत अपने वक़्त में आकर रहती है।

इसमें देर या सवेर नहीं यह हमारे ख़्यालाते बातिला हैं कि फलां को मौत बे वक़्त आ गई फ़लां शख़्स काश सफ़र न करता तो यह हादसा पेश न आता मौत के वक़्त इंसान को मौत के मुंह में जाना ही होता है।

हज़रत अशमूईल अलैहिस्सलाम

ऐ महबूब क्या तुमने न देखा बनी इस्राईल के एक गरोह को जो मूसा अलैहिस्सलाम के बाद हुआ जब अपने एक नबी से बोले हमारे लिये एक बादशाह मुक़र्रर कर दो कि हम ख़ुदा की राह में लड़ें नबी ने फ़रमाया क्या तुम्हारे अंदाज़ ऐसे हैं कि तुम पर जिहाद फ़र्ज़ किया जाये तो फिर न करो? बोले हमें क्या हुआ है कि अल्लाह तआला की राह में न लड़ें हालांकि हम निकाले गये अपने वतन और अपनी औलाद से तो फिर जब उन पर जिहाद फ़र्ज़ किया गया मुंह फेर गये मगर उनमें के थोड़े और अल्लाह ख़ूब जानता है ज़ालिमों को।

अलमलाए कौम के बड़े सर कर्दा लोग उन के बड़े लोगों को मला कहने की वजह यह है:

कि उनका रोब दूसरे लोगों के सीनों को भर देता था या इसकी वजह यह थी कि वह दूसरों से तअव्वुन करते थे।

मूसा अलैहिस्सलाम के बाद यूशा अलैहिस्सलाम आये जो अल्लाह तआला के अहकामात उनमें क़ायम करते रहे और तौरेत के मुताबिक़ अमल करने की तबलीग़ फ़रमाते रहे। उनके बाद कालिब और उनके बाद हज़क़ील और उनके बाद इलियास और उनके बाद अल–यस्आ अलैहिमुस्सलाम आये। इन हज़रात के बाद बनी इस्राईल पर उनके दुश्मन जालूत की कौम अमालक़ा के लोग ग़ालिब आ गये। उस वक़्त बनी इस्राईल बहरे रूम यानी मिस्र और फ़िलिस्तीन के दर्मियान रहते थे। बनी अमालक़ा ने उनके कई शहरों पर क़ब्ज़ा कर लिया और उनके बड़े बड़े रईसों के बेटे चार सौ चालीस की तादाद में क़ैदी बना लिये। और उन पर जिज़या मुक़र्रर कर दिया। और उनकी तौरेत भी ले गये। उस वक़्त उनके कोई नबी नहीं थे, जो उनके मामलात की तदबीर करते। ख़ानदाने नबुव्वत के सब लोग वफ़ात पा चुके थे। सिर्फ़ एक औरत ख़ानदाने नबुव्वत से जिन्दा थी जो हामिला थी, दुआ करती रहती थी, अशमूईल (ऐ अल्लाह सुन) यानी ऐ अल्लाह दुआ क़बूल कर। इबरानी ज़बान में अशमू का मायने सुन ऐल का मायने अल्लाह।

बच्चा पैदा होने पर यही नाम रखा। जब बच्चा बड़ा हुआ तो उसकी मां ने उसको तौरेत दी और बैतुल मुक़द्दस की ख़िदमत पर मुक़र्रर कर दिया।

अल्लाह तआला ने उसे नबुव्वत अता फ़रमाई। जब वह नबी बनकर अपनी क़ौम में आये तो क़ौम ने कहा कि अगर तुम अपने दावे में सच्चे हो तो हमारे लिये एक बादशाह मुक़र्रर कर दो जिसके ज़ेरे क़यादत हम क़ौम अमालक़ा से जिहाद करें। लेकिन अल्लाह तआला के नबी ने कहा तुम वादा को पूरा नहीं कर सकोगे। उन्होंने कहा कि हम ज़रूर जिहाद करेंगे। हमें अपने घरों से निकाला गया है। हमारी औलाद को क़ैदी बनाया गया है। औलाद से मुराद उनके आबा की औलाद थी। या वह बड़ी उम्रों के थे और उनकी अपनी ही औलाद हो।

लेकिन जैसे अल्लाह तआला के नबी ने फ़रमाया था ऐसे ही हुआ कि वह सब लोग अपने वादा से फिर गये थे। सिर्फ़ तीन सौ तेरह थे जो साबित क़दम रहे।

ख़्याल रहे कि इस वाक़िया में जिस नबी का ज़िक्र है उनके नाम में इख़्तेलाफ़ अगरचे है लेकिन अल्लामा राज़ी ने फ़रमाया:

अल्लाह तआला के इस नबी का नाम अशमूईल था। इबरानी ज़बान में इस्माईल कहा जाता है यह हज़रत हारून अलैहिस्सलाम की औलाद में से थे यही अक्सर अहले इल्म का कौल है।

बादशाह के लिये तालूत का इंतेख़ाब : और उनसे उनके नबी ने फ़रमाया: बेशक अल्लाह तआला ने तालूत को तुम्हारा बादशाह बनाकर भेजा है बोले इसे हम पर बादशाही क्यों कर होगी और हम इससे ज़्यादा सल्तनत के मुस्तहिक़ हैं और इसे माल में भी वुसअत नहीं दी गई। फ़रमाया इसे अल्लाह तआला ने हम पर चुन लिया और इसे इल्म और जिस्म में कुशादगी ज़्यादा दी और अल्लाह तआला अपना मुल्क जिसे चाहे दे और अल्लाह तआला वुसअत वाला हिकमत वाला है।

पहले उन्होंने ख़ुद ही अल्लाह तआला के नबी से सवाल किया कि हमें कोई बादशाह अता करें। जब उन्हें बताया गया कि अल्लाह तआला ने तुम्हारे लिये तालूत को बादशाह मुन्तख़ब किया है अब उसका इंकार करने लगे कि यह कैसे हमारा बादशाह हो सकता है? उनका उसे बईद समझना दो वजह से था। एक यह कि बनी इस्राईल में नबुव्वत लादी बिन याकूब की औलाद में आ रही थी इस ख़ानदान से दाऊद और सुलेमान अलैहिस्सलाम थे चूंकि तालूत उन दोनों क़बीलों में से एक से भी नहीं थे। दूसरी वजह यह थी कि तालूत एक ग़रीब शख़्स थे रंग साज़ थे या माशकी थे लिहाज़ा उन्होंने कहा:

इसे तो माल की वुसअत भी नहीं दी गई।

वह हमारा बादशाह कैसे हो सकता है? अल्लाह तआला के नबी ने जवाब दिया तालूत बादशाहत का मुस्तहिक़ इसलिये है कि अल्लाह तआला ने इसे मख़्सूस कर दिया है और तुम से ज़्यादा उसे पसंद करके चुन लिया है और मुल्क अल्लाह तआला का है जिसे चाहे अता कर दे। और उसके इंतेख़ाब में एतेराज़ करना साहबे अक़्ल का काम नहीं।

और ज़ाहिर चीज़ जिसे तुम भी समझ सकते हो वह यह है कि बादशाह के लिये इल्म और जिस्मानी ताक़त ज़्यादा होनी चाहिये यह दोनों चीज़ें तालूत को तुमसे ज़्यादा हासिल हैं इसी वजह से वह बादशाहत का मुस्तहिक़ हुआ।

इल्म और ताक़त बादशाहत के अस्बाब क्यों? इल्म और ताक़त हक़ीक़ी कमालात हैं माल और मर्तबा ज़ाहिरी कमालात हैं यह वाज़ेह है कि हक़ीक़ी कमालात को बरतरी हासिल है। इसी तरह इल्म और कुदरत इंसान की ज़ात से मुताल्लिक़ होते हैं, लेकिन माल और मर्तबा आनी जानी चीज़ें हैं कभी हासिल हो गई और कभी ज़ाइल हो गई, इनका इंसान की ज़ात से कोई ताल्लुक़ नहीं बल्कि यह सिफ़ात आरिज़ा हैं इल्म और कुदरत इंसान से ज़ाइल होने वाली चीज़ें नहीं और माल व मर्तबा ज़ाइल होने वाली चीज़ें हैं, तो यक़ीनन इल्म और कुदरत को बरतरी हासिल है।

और सबसे बड़ी वजह यह है कि बादशाह का मक़सद यह होता है कि वह निज़ामे ममलिकत चलाने और जंगों के तरीक़एकार का इल्म रखता हो। जंगी तदाबीर को जानता हो कि किस तरह कामयाबी हासिल की जा सकती है और उसे यह कुदरत हासिल हो कि दुश्मनों के शर से क़ौम को बचा सके और शहरी हुदूद की हिफ़ाज़त कर सके। इन्ही तमाम वजह के पेशे नज़र बादशाहत का इस्तिहक़ाक़ इल्म व कुदरत पर है माल और मर्तबा पर नहीं।

औरत और बादशाहत: जब यह वाज़ेह हो चुका है कि हाकिम साहबे इल्म और बहादुर होना चाहिये

तो इससे ख़ुद बख़ुद यह बात समझ में आ जाती है कि कम अक़्ल कौम को हाकिम बनाना बेवकूफ़ी, नादानी, हिमाक़त है।

हज़रत अबू सअद खुदरी रज़ियल्लाहु अन्हु से मरवी है कि रसूलुल्लाह सल्ललाहु अलैहि वसल्लम ईदुल अज़्हा या ईदुल फ़ित्र को ईदगाह की तरफ़ तशरीफ़ ले जा रहे थे रास्ते में औरतों के पास से गुज़र हुआ तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः

ऐ औरतों की जमाअत! सदक़ा ज़्यादा किया करो, मैं बहुत सी औरतों को जहन्नमी देख रहा हूं औरतों ने अर्ज़ की या रसूलल्लाह! इसकी क्या वजह है? आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया तुम लानत ज़्यादा करती हो और अपने खाविंदों की नाशुक्री करती हो।

फिर आपने फ़रमायाः

मैंने तुम औरतों से बढ़कर किसी और को ऐसा नहीं देखा कि अक़्ल और दीन में भी कम हो लेकिन बड़े बड़े अक्लमंदों की अक़्लों को ज़ाया कर दे।

औरतों ने पूछा, या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! हमारे दीन और हमारी अक़्लों में क्या कमी है? आपने फ़रमायाः क्या एक औरत की शहादत मर्द की शहादत के निस्फ़ बराबर नहीं? औरतों ने अर्ज़ की हां। या रसूलल्लाह ऐसे ही है आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया यह अक़्ल की कमी है। फिर आपने फ़रमाया क्या ऐसा नहीं कि तुम हैज़ के दिनों में नमाज़ और रोज़ा अदा नहीं कर सकती? औरतों ने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह! ऐसा ही है। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, यह तुम्हारे दीन का नुक़सान है।

सुब्हानल्लाह! जिसको नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ये अक़्ल कह दें वह हुकूमत के मनसब पर फ़ायज़ होकर भी बेवकूफ़ ही रहेंगी। हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु से मरवी है कि जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को यह ख़बर मिली कि अहले फ़ारस ने बिन्ते किसरा को अपनी मलका बना लिया तो आपने फ़रमाया।

वह कौम हरगिज़ कामयाब नहीं होगी जिन्होंने औरतों को अपना हाकिम बना लिया।

हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से मरवी है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः जब तुम्हारे उमरा तुम से नेक हों और तुम्हारे अग़निया सख़ी हों और तुम्हारे मामलात मशावरत से तै हों तो तुम्हारे लिये ज़मीन का ऊपर के हिस्सा नीचे से बेहतर है (ज़िन्दा रहना बेहतर है) और अगर तुम्हारे उमरा (हुक्काम) शरीर हों और तुम्हारे ग़नी कंजूस हों।

और तुम्हारे मामलात औरतों के हाथ में हों तो तुम्हारे लिये ज़मीन का अंदरुनी हिस्सा ज़ाहिर से बेहतर है। (मर जाना बेहतर है) यानी मर जाना ज़िन्दा रहने से बेहतर है।

तालूत की बादशाहत पर ताबूत का बतौर निशानी आना : और कहा इन्हें इनके नबी ने कि इसकी बादशाही की यह निशानी है कि आयेगा तुम्हारे पास एक संदूक़ इसमें तसल्ली (का सामान) होगा, तुम्हारे रब की तरफ़ से और (इसमें) बची हुई चीज़ें होंगे जिन्हें छोड़ गई है औलादे मूसा और औलादे हारुन अलैहिमस्सलाम, उठा लायेंगे इस संदूक़ को फ़रिश्ते, बेशक इसमें बड़ी निशानी है तुम्हारे लिये अगर तुम ईमानदार हो।

जब अल्लाह तआला के नबी ने अपनी क़ौम को बताया कि हुकूमत के लिये तुम्हारा क़ायम कर्दा मैयार दुरुस्त नहीं बल्कि इसका सही मैयार तो इल्म व शुजाअत है और दोनों बातों में वह तुम सबसे मुमताज़ है।

बाईबिल में है कि यह तीस साला नौजवान अपने हुस्न व जमाल में बे नज़ीर था उसकी क़ामत की बुलंदी की यह हालत थी कि दूसरे लोग मुश्किल से उसके कंधों तक पहुचं सकते थे और यह बुनयामीन की नस्ल से था। अल्लाह तआला के नबी ने उन्हें बताया कि तालूत का इंतेख़ाब इंसानी इंतेख़ाब नहीं बल्कि रब्बुल इज्ज़त ने ख़ुद इसे तुम्हारी क़यादत के लिये मुन्तख़ब फ़रमाया है तुम्हें उसकी अता व बख़्शिश पर मुअतरिज़ नहीं होना चाहिये।

बनी इस्राईल भला कब आसानी से अपनी ज़िद से बाज़ आने वाले थे फ़ौरन मुतालबा किया कि आप दलील पेश कीजिये। कि तालूत का इंतेख़ाब वाक़ई अल्लाह तआला ने किया है। उस वक़्त उनके नबी ने फ़रमाया कि इसकी हुकूमत की निशानी यह है कि यह संदूक़ जिस में तुम्हारी तसकीन व तमानीयत का सामान है और जिसमें हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम और हज़रत हारून अलैहिस्सलाम के तबर्रुकात थे और जो अमालक़ा तुम से छीन कर ले गये थे वह तुम्हें फ़रिश्ते वापस कर देंगे। अगर तुम में ईमान है तो इससे बढ़कर तुम्हें किसी मज़ीद निशानी की ज़रूरत नहीं रहेगी।

जब फ़रिश्ते उस संदूक़ को उठाए हुए या उस बैलगाड़ी को हांकते हुए जिस पर ताबूत रखा था बनी इस्राईल के पास ले आये तो अब उन्हें तालूत के बादशाह बनने के मुताल्लिक़ इत्मीनान हो गया। नीज़ इन्हें ढारस बंध गई कि अब वह यक़ीनन फ़तहयाब होंगे, क्योंकि अंबिया किराम के तबर्रुकात वाला संदूक़ जिस में हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम का असा और पारचा जात और हज़रत हारून अलैहिस्सलाम का अमामा (पगड़ी) था उन्हें वापस मिल गया।

फ़ायदा : इस आयत से यह भी वाज़ेह हो गया कि वह अशिया जिनका ताल्लुक़ अल्लाह तआला के मक़बूल बंदों से होता है उनकी बर्कत से दुआयें क़बूल होती हैं और दुश्मनों पर ग़ल्बा नसीब होता है। सहाबा किराम रिज़वानुल्लाह तआला अलैहिम हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के नाख़ून और बाल मुबारक तबर्रुक के तौर पर पास रखते थे। हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ियल्लाहु अन्हु के सर पर एक कपड़े की टोपी थी जिसमें हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का एक बाल मुबारक रखा हुआ था। हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि जिस मारका में यह टोपी सर पर रख कर जाता हूं अल्लाह तआला उस बाल की बर्कत से मुझे कामयाब व कामरान करता है।

क़ौम की आज़माईश : फिर जब तालूत लश्करों को लेकर शहर से जुदा हुआ बोला बेशक अल्लाह तआला तुम्हें एक नहर से आज़माने वाला है तो जो इसका पानी पिये मेरा नहीं और जो इसका पानी न पिये वह मेरा है मगर वह जो एक चुल्लू हाथ से ले ले। तो सबने उससे पिया मगर थोड़ों ने और फिर जब तालूत और उसके साथ के मुसलमान नहर के पार गये बोले हममें आज ताक़त नहीं जालूत और उसके लश्करों (के साथ जंग) की, बोले वह जिन्हें अल्लाह तआला से मिलने का यक़ीन था कि बार बार कम जमाअत ग़ालिब आई है ज़्यादा गरोह पर अल्लाह तआला के हुक्म से और अल्लाह तआला साबिरों के साथ है।

जब तालूत की हाकमियत पर अल्लाह तआला की तरफ़ से निशानी आ गई तो बनी इस्राईल को यक़ीन हो गया वह उनके ज़ेरे क़यादत मैदान जंग में निकलने के लिये तैयार हो गये। तालूत ने ऐलान किया जो लोग अपने मकानों वग़ैरह की तामीर में मश्गूल हों अभी तक तामीर से फ़ारिग़ न हुए हों वह मेरे साथ न निकलें और ताजिर जो तिजारत में मश्गूल हों वह भी मेरे साथ न निकलें और जिन्होंने नई नई शादियां की हों और अभी जिमाअ न कर चुके हों वह भी मेरे साथ न चलें। मेरे साथ चलने वाले सिर्फ़ नौजवान, फुर्तीले और तमाम दुनियावी हाजात से फ़ारिग़ होने चाहियें। मक़सद यह था कि मैदाने जंग में आकर किसी को भी घर की याद न आये कि मुझे फ़लां काम करना था जो मुकम्मल नहीं हुआ था।

हज़रत तालूत जब बहुत बड़ा लश्कर लेकर शहरी हुदूद से बाहर हुए तो अल्लाह तआला के नबी अशमूइल अलैहिस्सलाम ने या हज़रत तालूत ने लश्कर को बताया कि अल्लाह तआला एक नहर से तुम्हारा इम्तेहान लेने वाला है। जिसने उससे पानी पी लिया वह मेरे दीन पर नहीं और जिसने उसका पानी न पिया वही मेरा मुतीअ होगा और मेरे दीन पर क़ायम होगा, हां सिर्फ़ चुल्लु भर पानी उससे लेने की इजाज़त होगी।

यह आज़माईश उनके लिये बहुत सख़्त थी क्योंकि उन पर प्यास की शिद्दत का ग़ल्बा था पानी को देखकर सब्र करना उनके लिये बहुत दुश्वार था। तमाम लश्कर वालों ने उससे पानी पी लिया, सिर्फ़ तीन सौ तेरह थे जो इस इम्तेहान में कामयाब हुए थे उन्होंने सिर्फ़ एक चुल्लु पानी पी लिया था। अल्लाह तआला ने इस चुल्लु भर पानी में इतनी बर्कत रख दी थी कि इन्हें भी काफ़ी हुआ और वही चुल्लु उनके ख़ादिमों और उनकी सवारियों को भी काफ़ी हो गया।

यह उस वक़्त के नबी का मोजिज़ा था जिस तरह अल्लाह तआला नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के ज़माने में थोड़े पानी से बहुत बड़ी मख़लूक़ को सैराब करता रहा यह कई मर्तबा हुआ।

जो लोग आज़माईश में नाकाम हो गये अल्लाह तआला और उसके नबी के अहकाम के नाफ़रमान हो गये वह बुज़दिल हो गये और कहने लगे हम तो आज जालूत और उसके लश्कर से जंग करने की ताक़त नहीं रखते। इससे यह वाज़ेह हो गया कि अल्लाह तआला और उसके रसूल के अहकाम को न तस्लीम करने की वजह से इंसान काफ़िरों से जंग करने की ताक़त नहीं रखता।

यही वजह है कि आज तमाम इस्लामी ममालिक कुफ़्फार से डरकर ज़िन्दगी गुज़ार रहे हैं। जो लोग इस इम्तेहान में कामयाब हो गये थे उन्हें अल्लाह तआला ने यह बर्कत अता की कि उन्होंने अपने आपको जिहाद के लिये तैयार कर लिया और उन्हें यह यक़ीन हो गया कि मौत तो एक दिन आनी ही है तो अल्लाह तआला की इताअत में जान देकर जाविदानी ज़िन्दगी क्यों न हासिल की जाये? जब कि एक दिन रब से मुलाक़ात भी करनी है तो कामयाबी की मुलाक़ात हो इससे सवाब मिले और उसकी रज़ा हासिल हो। वह मुलाक़ात क्या जिसमें अल्लाह तआला की नाराज़गी और अज़ाब हासिल हो? उन्हें यक़ीन का वह आला दर्जा हासिल हो गया कि कहने लगे कि कितनी थोड़ी जमाअतें बड़ी जमाअतों पर ग़ालिब आ जाती हैं। बेशक ज़्यादा लोग हमसे फिर चुके हैं हम थोड़े रह गये हैं लेकिन जब अल्लाह तआला की तरफ़ से हमें इमदाद हासिल होगी तो हम ज़रूर कामयाब हो जायेंगे।

क़ौम को आज़ामने की वजह : क़ौम बनी इस्राईल का यह तरीक़ा था कि वह अपने नबी की मुख़ालफ़त ही करते थे इसलिये उन्हें आज़माया गया कि सिद्दीक़ और ज़िंदीक़ मुतीअ और आसी में फ़र्क़ हो जाये। जो अल्लाह तआला को याद करने वाले हैं उनको साथ लिया जाये, मुख़ालफ़ीन को साथ न लिया जाये इसलिये कि दुश्मन के मुक़ाबले में जाने से पहले ही पीछे हट जाना दूसरे मुसलमानों के लिये ज़्यादा परेशानी का सबब नहीं था, लेकिन दुश्मन के मुक़ाबले में जाकर अगर वह भाग आते तो बहुत बड़ी परेशानी का सबब होता। और भागने वालों को भी ज़्यादा ज़िल्लत होती।

दाऊद अलैहिस्सलाम का जालूत को क़त्ल करना : और क़त्ल किया दाऊद ने जालूत को और अल्लाह तआला ने उसे सल्तनत और हिकमत अता फ़रमाई और उसे जो चाहा सिखाया।

हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम बकरियां चराते थे आप गुलाख़न (पत्थर फेंकने का आला) के ज़रिये भेड़ियों और शेरों को पत्थर मारते थे आपके सात भाई तालूत के साथ मैदाने जंग में थे। जब उनको ख़बर पहुंचने में कुछ देर हो गई कि किस हाल में हैं तो आपको आपके बाप ईशा ने भेजा कि जाओ और भाईयों की ख़बर लाओ। आप अलैहिस्सलाम आये तो देखा कि भाई जंग करने के लिये एक सफ़ में खड़े हैं और जालूत बनी इस्राईल को कह रहा है कि अगर तुम हक़ पर हो तो मेरे मुक़ाबले के लिये कोई न निकले।

दाऊद अलैहिस्सलाम ने अपने भाईयों को कहा कि तुम इस ग़ैर ख़त्नाशुदा (काफ़िर) को क़त्ल क्यों नहीं करते? लेकिन उसकी बहादुरी के पेशे नज़र कोई उसके मुक़ाबिल जाने के लिये तैयार नहीं था। आप अलैहिस्सलाम जब दूसरी सफ़ में गये तो देखा तालूत लोगों को जालूत के क़त्ल करने पर उभार रहे हैं आप अलैहिस्सलाम ने कहा जो इसे क़त्ल करे उससे तुम क्या सलूक करोगे? तालूत ने कहा उसे अपनी बेटी निकाह में दूंगा और आधी बादशाही दूंगा।

हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम को रास्ते में चलते हुए तीन पत्थरों ने आवाज़ देकर कहा था कि हमें उठा लो जालूत का क़त्ल हम में है। आपने वह पत्थर उठा लिये थे। एक पत्थर जालूत के सीने पर मारा वह क़त्ल हो गया आपने कई और लोगों को भी क़त्ल किया इस तरह जालूत और उसके लश्कर को शिकस्त हो गई। इस तरह अल्लाह तआला ने हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम को बादशाही और नबुव्वत अता कर दी।

हज़रत उज़ैर अलैहिस्सलाम

या (क्या आपने नहीं देखा) मिस्ल इसके जो गुज़रा ऊपर बस्ती के हालांकि वह गिरी हुई थी ऊपर छतों के? आपने कहा कि कैसे ज़िन्दा करेगा इसको अल्लाह तआला मरने के बाद? तो अल्लाह तआला ने उसे मौत दी (मुर्दा रखा) सौ बरस, फिर उठाया इसे कहा, कितना ठहरा? तो कहा ठहरा मैं एक दिन या कुछ हिस्सा दिन का। कहा बल्कि ठहरे हो तुम सौ बरस, पस देखो तुम अपने खाने और पीने की तरफ़ अब तक बू न लाया और अपने गध की तरफ़ देखो (जिसकी हड्डियां तक सलामत नहीं रहीं) और ताकि करें हम आपको निशानी वास्ते लोगों के और देखो गधे (की हड्डियों) की तरफ़ कैसे उठाते हैं हम इनको? फिर पहनाते हैं हम उनको गोश्त। पस जब उन पर मामला ज़ाहिर हुआ तो कहा मैं जानता बेशक अल्लाह तआला हर चीज़ पर क़ादिर है।

बनी इस्राईल बैतुल मुक़द्दस में आबाद थे जब वह अपने गुनाहों नाफ़रमानी फ़िस्क़ व फुजूर में हद से तजावुज़ कर गये और अपने नबी की इताअत न की तो बख़्ते नसर ने बैतुल मुक़द्दस पर सख़्त हमला किया और क़ब्ज़ा कर लिया। यह ईसा अलैहिस्साम से तक़रीबन छः सौ साल पहले का वाक़िया है। इसके साथ छः लाख अलमबर्दार (झंडे उठाने वाले) थे और हर झंडे के नीचे बे शुमार फ़ौज थी उसने बैतुल मुक़द्दस को वीरान कर डाला। तौरात शरीफ़ के तमाम नुस्ख़े जला दिये। बनी इस्राईल के तक़रीबन एक तिहाई लोगों को क़त्ल कर दिया। और एक तिहाई लोगों को शाम के इलाक़े में बहुत ज़िल्लत से रखा। और एक तिहाई को क़ैदी बना लिया। यानी बनी इस्राईल को तीन हिस्सों में तक़सीम कर लिया था। उन कैदियों में हज़रत उज़ैर और दानयाल भी थे जो उस वक़्त बचपन की उम्र में थे।

बहुत अर्सा के बाद जब कुछ लोग क़ैद से आज़ाद हुए तो उन आज़ाद होने वालों में उज़ैर भी थे उज़ैर अलैहिस्सलाम बैतुल मुक़द्दस से गुज़रे जो उस वक़्त बर्बाद हो चुका था अब इधर उधर फिरे लेकिन आप को कोई नज़र नहीं आया अलबत्ता बाग़ों में मुख़्तलिफ़ क़िस्म के दरख़्त फलों से भरे हुए थे फलों को खाने वाला कोई न था आपने कुछ इंजीर और अंगूर तोड़कर खाये और उनका रस निकालकर पिया और कुछ इंजीर और अंगूर तोशादान में रख लिये और कुछ रस भी अपने पास रख लिया। जब आपने वीरान आबादी को देखा तो बड़े ताज्जुब से अफ़सुर्दा हाल में कहने लगे। रब इसे फिर ज़िन्दा करेगा। उसकी कैसी अज़ीम कुदरत होगी? सवाल रब की कुदरत में शक के तौर पर नहीं था बल्कि अपने ताज्जुब का इज़हार था कि रब इसी बस्ती वालों को फिर ज़िन्दा कैसे करेगा?

अल्लाह तआला ने आपको अपनी कुदरते कामिला पर मुत्तला करना चाहा। हज़रत उज़ैर अलैहिस्सलाम जिस गधे पर सवार थे उसे बांधा और अपने खाने पीने के फल वग़ैरह और अंगूर का रस जो निचोड़कर आपने अपने पास रखा हुआ था इन्हें क़रीब ही रखकर आप सो गये। सोए हुए हाल में ही आप पर मौत को मुसल्लत कर दिया गया। आपका गधा भी मर गया यह वाक़िया तक़रीबन दोपहर से पहले का है।

जिस तरह नमरूद के नाक में मच्छर घुस गया ऐसे ही बख़्ते नसर यानी शद्दाद की नाक में भी मच्छर घुस गया था जिससे वह मर गया इसी तरह बनी इस्राईल को आज़ादी मिल गई तक़रीबन सत्तर

साल के बाद फ़ारस के बादशाहों में से एक बादशाह अपनी फ़ौजें लेकर बैतुल मुक़द्दस पहुंचा तो उसने बैतुल मुक़द्दस को पहले से भी बेहतर तौर पर आबाद कर दिया। बनी इस्राईल जो बख़्ते नसर के मज़ालिम की वजह से इधर उधर बिखर गये थे फिर बैतुल मुक़द्दस में आबाद हो गये। तीस साल तक यह लोग काफ़ी हद तक बेहतर हाल में आ गये और उनकी नस्ल में भी इज़ाफ़ा हो गया। सौ साल के बाद अल्लाह तआला ने उज़ैर अलैहिस्सलाम को ज़िन्दा फ़रमा दिया।

इतने अर्से में अल्लाह तआला ने आपको अपनी कुदरते कामिला से लोगों की निगाहों से मख़फ़ी रखा और आपको दरिन्दे, परिन्दे, चरिन्दे वग़ैरह भी इतना अर्सा न देख सके। आप पर वफ़ात सुबह के वक़्त दोपहर से पहले आई थी और आप ज़िन्दा शाम के वक़्त हुए। यही वजह थी कि जब रब ने आपसे पूछा कि कितनी देर यहां ठहरे हो? तो आपने अर्ज़ किया एक दिन या इससे भी कुछ कम। यानी आपका ख़्याल था कि मैं आज सुबह ही यहां लेटा हूं इसलिये पहले आपने एक दिन कहा फिर ख़्याल किया कि अभी तो एक दिन भी मुकम्मल नहीं हुआ बल्कि दिन का कुछ हिस्सा ठहरा हूं। अल्लाह तआला ने आपको बताया यहां सौ साल हो चुके हैं।

सुब्हानल्लाह मालिकुल मुल्क की कितनी अज़ीम कुदरत है? एक सौ साल उज़ैर अलैहिस्सलाम पर मौत तारी रही जिस्म मुकम्मल तौर पर महफ़ूज़ रहा, खाने पीने की अशिया ज्यूं की त्यूं रहीं, और आप के सामने रब ने गधे को ज़िन्दा करके अपनी कुदरत का मुशाहिदा करा दिया। गधे की हड्डियों को हुक्म हुआ जो आपस में आकर मिल गई आपके सामने उन हड्डियों पर गोश्त चढ़ाकर गधे को आवाज़ दी। अब तुम ज़िन्दा हो जाओ वह ज़िन्दा हो गया।

यह सब कुछ आनन फ़ानन हो गया। अब आप ज़िन्दा होकर शहर में आये तो देखा शहर तो पहले से ज़्यादा अच्छे तरीक़े से आबाद है। बनी इस्राईल के नये नये लोग भी हैं जो आपके बाद पैदा हुए थे आप पर जब मौत मुसल्लत हुई थी उस वक़्त आपकी उम्र चालीस बरस तक थी और अब भी वही चालीस बरस थी। शहर से बाहर जब आप गये थे आपके बेटे की उम्र अट्ठारह बरस थी अब उसकी उम्र एक सौ अट्ठारह बरस थी। बल्कि आपके पोते भी बूढ़े हो चुके थे आप जब अपने मकान में तशरीफ़ लाये तो वहां आपकी मुलाक़ात एक बुढ़िया से हुई जो आप की लौंडी थी अब उसकी उम्र एक सौ बीस साल हो चुकी थी बुढ़ापे की वजह से टांगें कमज़ोर हो चुकी थीं चलने से आजिज़ हो चुकी थी बीनाई ख़त्म हो चुकी थी।

एक सौ साल गुज़र जाने की वजह से मकानात के नक़्शे बदल चुके थे नई नई तामीरात की वजह से आपको अपने मकान का सही तअय्युन नहीं था यानी यह यक़ीन नहीं था कि यह हमारा ही मकान है अंदाज़े से गये थे जब आपने बुढ़िया से पूछा कि उज़ैर का यही मकान है? तो वह रोने लगी और कहने लगी इतने अर्से बाद उज़ैर का नाम लेने वाला कौन है? वह तो एक सौ साल से गुम हो चुका है आपने फ़रमाया मैं ही उज़ैर हूं अल्लाह तआला ने मुझे एक सौ साल मुर्दा रखकर ज़िन्दा फ़रमा दिया है। उस बुढ़िया ने कहा कि अगर तुम सच कह रहे हो तो अल्लाह तआला से दुआ करो मुझे नज़र अता करे कि मैं तुम्हें देखकर पहचान सकूं और इसलिये भी कि अल्लाह तआला उज़ैर की दुआ क़बूल फ़रमाता था। आपकी दुआ के क़बूल होने की वजह से भी यक़ीन आ जायेगा कि तुम ही उज़ैर हो।

आपने दुआ फ़रमाई तो उसे नज़र मिल गई और उसकी टांगें भी ठीक हो गई। वह चलने के क़ाबिल हो गई अब उसने आपको पहचान लिया आपके साथ आपके बेटे और दूसरे अह्ल खाना के पास लाई कि उज़ैर आ गये हैं सब लोग सुनकर ताज्जुब कर रहे थे कि यह कैसे हो सकता है कि उज़ैर सौ साल बाद आ गये हों, उस बुढ़िया ने बताया कि तुम मुझे नहीं देख रहे कि मुझे इनकी दुआ से अल्लाह तआला ने नज़र अता की। चलने फिरने के क़ाबिल बना दिया।

आपके बेटे ने कहा कि मेरे बाप के दोनों कंधों के दर्मियान स्याह बाल चांद की शक्ल में थे जब आपके कंधों को देखा गया तो उसी तरह बाल मौजूद थे।

बख़्ते नसर ने तौरेत के तमाम नुस्ख़े जला दिये थे तौरेत किसी को याद न थी बल्कि कुतुब सिर्फ़ अंबियाए किराम को ही याद हुआ करती थीं लोगों ने कहा कि अगर तुम उज़ैर हो तो तौरेत सुनाओ। आपने उन्हें तमाम तौरेत लफ़्ज़–ब–लफ़्ज़ लिखवा दी, किसी एक हर्फ़ का भी फ़र्क़ न आने दिया। उस वक़्त एक शख़्स बोला कि मैंने दादा से सुना था कि बख़्ते नसर के मज़ालिम की वजह से मेरे दादा ने तौरेत का एक नुस्ख़ा दफ़न कर दिया था हज़रत उज़ैर ने उस नुस्ख़े के दफ़न की जगह की निशानदेही भी फ़रमाई। जब वह नुस्ख़ा निकाला गया तो उसका मुक़ाबला इस नुस्ख़े से किया गया जो आपने तहरीर कराया तो किसी एक लफ़्ज़ का भी फ़र्क़ नहीं पाया गया। लोगों ने आपका यह मोजिज़ा देखकर आपको अल्लाह तआला का बेटा कहना शुरू कर दिया।

अल्लाह तआला ने इरशाद फ़रमाया:

यहूदियों ने कहा उज़ैर अल्लाह तआला का बेटा है।

हज़रत शोएब अलैहिस्सलाम

हज़रत शोएब अलैहिस्सलाम को दो क़ौमों की तरफ़ रसूल बनाकर भेजा गया एक मदयन और दूसरे अस्हाबे ईका, आप चूंकि मदयन क़बीला से थे इसलिये जब मदयन का ज़िक्र हुआ तो फ़रमाया:

और मदयन की बिरादरी से शोएब अलैहिस्सलाम को भेजा।

और अस्हाबे ईका के ज़िक्र में अख़ूहम नहीं कहा बल्कि सिर्फ़ कहा:

और जब उनको शोएब अलैहिस्सलाम ने कहा।

इस तरह दोनों क़ौमों पर अज़ाब भी मुख़्तलिफ़ क़िस्म के थे, जिनका ज़िक्र इंशाअल्लाह तआला बाद में आयेगा, अलबत्ता दोनों क़ौमों के लोग क़रीब क़रीब फ़ासला पर रहने की वजह से एक दूसरे के साथ रवाबित की वजह से एक जैसे अमल किया करते थे इस लिये दोनों को हज़रत शोएब अलैहिस्सलाम ने तबलीग़ एक जैसी फ़रमाई।

शोएब अलैहिस्सलाम की मदयन को तबलीग़ : और मदयन की तरफ़ उनकी बिरादरी से शोएब अलैहिस्सलाम को भेजा। कहा ऐ मेरी क़ौम अल्लाह तआला की इबादत करो उसके सिवा कोई तुम्हारा माबूद नहीं बेशक तुम्हारे पास तुम्हारे रब की तरफ़ से रौशन दलील आई तो नाप और तौल पूरी करो और लोगों की चीज़ें घटाकर न दो और ज़मीन में इंतेज़ाम के बाद फ़साद न फ़ैलाओ, यह तुम्हारा भला

है अगर ईमान लाओ। और हर रास्ता पर यूं न बैठो कि राहगीरों को डराओ और अल्लाह तआला की राह से उन्हें रोको जो उस पर ईमान लाये और इसमें कजी (टेढ़ापन) चाहो और याद करो जब तुम थोड़े थे उसने तुम्हें बढ़ा दिया और देखो फ़सादियों का क्या अंजाम हुआ?

मदयन असल में हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम के एक बेटे का नाम है उसकी औलाद पर भी मदयन ही बोला जाता रहा। यानी एक क़बीला का नाम मदयन हुआ तो फिर उसी क़बीले के लोगों ने एक शहर आबाद किया। उसका नाम भी मदयन रखा। हज़रत शोएब अलैहिस्सलाम उस क़बीले के फ़र्द थे।

आप अलैहिस्सलाम का नस्ब यूं ब्यान किया गया है।

शोएब बिन नुवैब बिन मदयन बिन इब्राहीम ख़लीलुल्लाह अलैहिस्सलाम।।

इन आयाते करीमा में ज़िक्र है कि शोएब अलैहिस्सलाम ने अपनी क़ौम को तीन चीज़ों का हुक्म दिया और एक यह कि उनको अल्लाह तआला की इबादत का हुक्म दिया और ग़ैर अल्लाह की इबादत से मना किया। तमाम अंबियाए किराम की शरीयतों में यह क़ानून मोतबर रहा शोएब अलैहिस्सलाम ने इस क़ानून के मुताबिक़ अपनी क़ौम को कहा:

ऐ मेरी क़ौम अल्लाह तआला की इबादत करो उसके बग़ैर तुम्हारा कोई माबूद नहीं।

दूसरी बात यह थी कि आपने अपनी नबुव्वत का दावा किया और फ़रमाया:

बेशक तुम्हारे पास तुम्हारे रब की तरफ़ से रौशन दलील आई।

यहां बय्यनतुन से मुराद मोजिज़ा है इसलिये कि हर मुद्दइए नबुव्वत के लिये ज़रूरी होता है कि वह अपना मोजिज़ा दिखाये। अगर उसके पास कोई मोजिज़ा न हो तो वह नबी नहीं होगा। बल्कि मुतनब्बी (झूटा नबुव्वत का दावेदार) होगा।

इस आयते करीमा से यह वाज़ेह हुआ कि आप अलैहिस्सलाम को मोजिज़ा हासिल था जो आपकी सदाक़त पर दलालत करता था अलबत्ता यह मोजिज़ा क्या था? उसका ज़िक्र कुरआन पाक और हदीस में वाज़ेह तौर पर नहीं अलवत्ता साहबे कश्शाफ़ ने ब्यान किया है कि आप अलैहिस्सलाम ने मूसा अलैहिस्सलाम को आसा दिया था। जिससे आप ने जादूगरों का मुक़ाबला किया था और उनके बड़े बड़े सांपों को निगल लिया था। यह आपका मोजिज़ा था।

इसी तरह आप ने मूसा अलैहिस्सलाम को वताया था कि उनकी बकरियों के बच्चे स्याह सफ़ेद रंग के होंगे तो ऐसा ही हुआ।

तीसरी बात जो आपने अपनी क़ौम से की वह यह थी कि उन्हें बुराईयों से रोका। तमाम अंबियाए किराम की यह आदते शरीफ़ा रही कि वह अपनी क़ौमों को बुराईयों से रोकते रहे। ख़ुसूसन सबसे बड़ी बुराई से रोकने में ज़्यादा तवज्जोह देते रहे और इसी से इब्तेदा करते। आपने भी अपनी क़ौम को सबसे पहले यह कहा:

नाप और तौल को पूरा करो।

चूंकि शोएब अलैहिस्सलाम की कौम के लोग ताजिर थे वह नाप तौल में कमी करते थे इस तरह लोगों का माल नाजायज़ तरीक़ा से हड़प करते थे इस बुराई पर फ़ित्ना फ़साद मुरत्तब होता था इसलिये सबसे पहले इसी चीज़ की तरफ़ आपने तवज्जोह फ़रमाई। नाप तौल को पूरा करने का हुक्म देने के बाद उमूमी तौर पर यह इरशाद फ़रमाया:

और लोगों की चीज़ें घटाकर न दो।

यह इरशाद तमाम क़िस्म की बुराईयों से रोकने को शामिल है यानी किसी का माल न छीनो, (ग़सब न करो) चोरी न करो रिश्वत न लो डाका न डालो, किसी तरह भी किसी हीला से भी लोगों का माल न बटोरो।

इसके बाद आप अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया :

और ज़मीन में इंतेक़ाम के बाद फ़साद न फ़ैलाओ।

ज़मीन में फ़साद फैलाना दीन व दुनिया को बर्बाद करना है अल्लाह तआला ने अपने नबी भेजकर जब ज़मीन में इस्लाह पैदा कर दी, एक ख़ास निज़ाम पर मुन्तज़िम कर दिया, तो अब तुम बुराईयों के इर्तेकाब से इसमें फ़साद न फ़ैलाओ। इसी तरह जब अल्लाह तआला ने तुम्हें कसीर माल और नेमतें अता करके ज़मीन में इंतेज़ाम पैदा कर दिया तो तुम इसमें हराम की आमेज़िश करके फ़साद क्यों फैलाते हो? इन तमाम उमूर का मक़सद यह है कि तुम अल्लाह तआला के अम्र की ताज़ीम बजा लाओ यानी अल्लाह तआला की वहदानियत और अपने नबी की नबुव्वत को तस्लीम करो। अल्लाह तआला की मख़लूक़ पर मेहरबानी करो। अगरचे तुम तमाम मख़लूक़ को नफ़ा तो नहीं पहुंचा सकते लेकिन कम से कम फ़साद को छोड़कर कम तौलने कम नापने को छोड़कर और हर किस्म के शर से दूर रह कर अल्लाह तआला की मख़लूक़ को ईज़ा (तकलीफ़) से तो बचा सकते हो, अगर तुम ईमान लाते हो तो तुम्हारे लिये अल्लाह तआला के अहकाम पर अमल करना ही बेहतर है।

शोएब अलैहिस्सलाम ने अपनी कौम को कहा : और हर रास्ता पर यूं न बैठो कि राहगीरों को डराओ अल्लाह तआला की राह से उन्हें रोको जो उस पर ईमान लाये और इसमें कजी चाहो।

सिरात का एक मायने यहां रास्ता लिया गया है शोएब अलैहिस्सलाम की कौम का यह तरीक़ा था कि वह लोग रास्ते पर बैठ जाते और शोएब अलैहिस्सलाम पर ईमान लाने वाला जो शख़्स भी वहां से गुज़रता उसे डराते धमकाते। दूसरा मायने दीन के तरीक़े। यानी अब मतलब होगा कि तुम शैतान के तरीक़े पर न चलो क्योंकि उसने कहा था:

मैं ज़रूर ज़रूर उनके रास्ते पर बैठूंगा।

यानी जिस तरह शैतान का काम है कि वह इंसान को दीनी राह पर चलने से रोकता है तुम भी वह तरीक़ा इख़्तेयार न करो।

शोएब अलैहिस्सलाम की कौम के लोग आप पर ईमान लाने वालों को तीन तरीक़े से रोकते थे। रब तआला ने इन्हें तीन तरीक़ों से मना किया कि ऐसा न करो, वह कभी डरा धमकाकर लोगों को सीधी राह से बरगश्ता करते और कभी वैसे ही उनको बातों में लगाकर नेकी के काम से रोकने की कोशिश

करते और कभी दीन में अपनी हिमाक़त की वजह से एतेराज़ करते और उसमें नक़्स निकालने की कोशिश करते।

इसके बाद अल्लाह तआला ने अपने नबी के ज़रिये उन्हें अपनी नेमत याद दिलाई और कहा:

और याद करो जब तुम थोड़े थे उसने तुम्हें बढ़ाया।

यानी जब अल्लाह तआला के तुम पर कसीर इनामात हैं तो तुम्हें चाहिये कि तुम अल्लाह तआला की इताअत करो, उसकी इबादत करो और उसकी नाफ़रमानी से दूर रहो।

कसरत के तीन मक़सद हो सकते हैं:

तुम तादाद में थोड़े थे अल्लाह तआला ने तुम्हें बढ़ा दिया। यानी अब तुम तादाद में बहुत ज़्यादा हो उसका तुम पर एहसाने अज़ीम है।

तुम ग़रीब थे तुम्हारे पास माल व दौलत नहीं थी अल्लाह तआला ने तुम्हारे माल व दौलत को बढ़ा दिया हक़ यह था कि तुम उसके इस अज़ीम एहसान का शुक्र अदा करते और हलाल तरीक़े से माल हासिल करते लेकिन तुमने तो हराम तरीक़े से माल बटोरना शुरू कर रखा है।

तुम कमज़ोर थे उसने तुम्हें ताक़तवर बना दिया। जिनकी ताक़त कम हो वह ख़्वाह कितनी तादाद में क्यों न हों वह क़लील ही नज़र आते हैं। उनको किसी भी क़िस्म का रोब और दबदबा हासिल नहीं होता, लेकिन जिन्हें अल्लाह तआला ताक़त दे दे वह कसीर तादाद वालों पर भारी होने की वजह से कसीर होते हैं।

फिर आपने अपनी क़ौम को इबरत हासिल करने का सबक़ देते हुए इरशाद फ़रमाया:

देखो! फ़सादियों का क्या अंजाम हुआ?

यीन तुमसे पहले जो सरकश और ज़ालिम अल्लाह तआला के नाफ़रमान हुए उन्हें सिवाए ज़िल्लत व रुसवाई और अज़ाबे इलाही के कुछ हासिल नहीं हुआ अगर तुम भी इस हाल पर रहे तो तुम्हारा भी यही अंजाम होगा।

हलाल माल में ही भलाई है: हज़रत शोएब अलैहिस्सलाम ने जब अपनी क़ौम को लोगों को चीज़ें घटाकर देने और ज़मीन में फ़साद फैलाने से मना किया तो साथ ही रिज़्क़े हलाल पर इक्तेफ़ा करने की तर्ग़ीब भी दी। इरशाद फ़रमाया:

अल्लाह का दिया जो बच रहे वह बच रहे वह तुम्हारे लिये बेहतर है अगर तुम्हें यक़ीन हो और मैं कोई तुम पर निगहबान नहीं।

आपके इरशाद का यह मक़सद था कि अगर तुमने नाप तौल में कमी न की, लोगों को उनके हुक़ूक़ पूरे करके दिये और किसी के माल में कमी न की तो जो माल तुम्हारे पास बचा रहेगा उसमें अल्लाह तआला ख़ैर व बर्कत अता फ़रमायेगा और रिज़्क़ का दरवाज़ा खोल देगा और रब की इताअत में जो अज़ीम सवाब हासिल होना है वह दुनिया के माल से क़दर व मंज़िलत के लिहाज़ पर अज़ीम दर्जा रखेगा।

यह बात समझ में उसे ही आ सकती है जिसे ईमान और यक़ीन हासिल हो, कि मौत भी आनी

है और इस जहां के बग़ैर एक और जहां भी है जहां हिसाब व किताब होना है और सवाब व अज़ाब भी हासिल होना है यक़ीन कामिल हो तो फिर यही इंसान बुराईयों से इज्तिनाब कर सकता है।

और आप अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि मेरा काम सिर्फ़ तुम्हें भलाई की नसीहत करना है मैं तुम्हें बुराईयों के इर्तेकाब से मना करने की ताक़त नहीं रखता। नीज़ अगर तुमने बुरे आमाल न छोड़े और उनकी नहूसत से तुम्हारी नेमतों का ज़वाल हो गया और माल व दौलत बर्बाद हो गया तो मैं तुम्हें नहीं बचा सकूंगा।

क़ौम का बतौर तंज़ जवाब : बोले ऐ शोएब क्या तुम्हारी नमाज़ तुम्हें यह हुक्म देती है कि हम अपने बाप दादा के ख़ुदाओं को छोड़ दें? या अपने माल में जो चाहें न करें। हां जी तुम बड़े अक़्लमंद नेक चलन हो।

शोएब अलैहिस्सलाम ने क़ौम को अल्लाह तआला की वहदानियत पर ईमान लाने और उसके बग़ैर किसी की इबादत न करने का हुक्म दिया तो क़ौम ने कहा कि हम तो अपने बाप दादा के तरीक़े को नहीं छोड़ सकते, वह कई माबूदों की इबादत करते थे, हम भी यही करेंगे। और आप अलैहिस्सलाम ने क़ौम को कम तौलने और कम नापने से मना किया और कहा कि लोगों को चीज़ें घटाकर न दो तो वह कहने लगे कि हम तो माल जमा करना चाहते हैं, माल जमा करने के मुख़्तलिफ़ हथकंडे हैं हम जिस तरह जमा करने का इरादा रखते हैं इसके ख़िलाफ़ कोई क़दम उठाने के लिये तैयार नहीं। तनज़न उन्होंने कहा कि तुम बड़े नमाज़ी, ईमानदार और दीनदार बने बैठे हो, यह तुम्हारी नमाज़ें तुम्हें कहती हैं कि तुम हमें अपने बाप दादा के दीन से फेर दो और हमें माल न जमा करने दो, हां जी तुम बड़े अक़्लमंद और नेक चलन समझते हो अपने आपको हम तो तुम्हें बेवकूफ़ समझते हैं हम तुम्हारी बातों में कैसे आयें?

आपने कहा मैं जो कहता हूं वही करता हूं : कहा ऐ मेरी क़ौम भला बताओ अगर मैं अपने रब की तरफ़ से रौशन दलील पर हूं और उसने मुझे अपने पास से अच्छी रोज़ी दी और मैं नहीं चाहता हूं कि जिस बात से तुम्हें मना करता हूं आप उसके ख़िलाफ़ करने लगूं मैं तो जहां तक बने संवारना ही चाहता हूं और मेरी तौफ़ीक़ अल्लाह तआला की ही तरफ़ से है मैंने उसी की तरफ़ भरोसा किया और उसी की तरफ़ रुजू करता हूं।

आप अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि अल्लाह तआला ने मुझे इल्मे हिदायते दीन और नबुव्वत अता की है और मुझे रिज़्क़े हलाल बहुत ज़्यादा अता किया है (याद रहे हज़रत शोएब अलैहिस्सलाम बहुत मालदार थे) जब अल्लाह तआला ने मुझे सआदते रूहानिया यानी नबुव्वत व मोजिज़ात और सआदते जिस्मानिया यानी माल व रिज़्क़े हलाल अता किया है तो यह कैसे हो सकता है कि इतने अज़ीम इनामात के होते हुए अल्लाह तआला की वही और उसके अवामिर व नवाही में ख़्यानत करूं? ख़्याल रहे कि "इन न क ल अन तल हलीमुर रशीद" का एक मतलब यह भी है कि उन्होंने आपके हौसला और अक़्लमंदी का एतेराफ़ करते हुए कहा कि तुम तो हौसलामंद और अक़्लमंद हो फिर भी हमें अपने आबा व अजदाद के दीन से क्यों रोकते हो? तो आप अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि जब तुम मेरी अक़्लमंदी के मुअतरिफ़ हो तो समझ लो कि मैं तुम्हें बेहतर राह पर चलाना चाहता हूं और ख़ुद भी इस पर क़ायम

हूं। ऐसा नहीं हो सकता कि मैं तुम्हें तो बुरे आमाल से मना करूं और ख़ुद उन पर अमल करूं। मुझे अल्लाह तआला पर भरोसा हासिल है और मुझे उसकी तरफ़ रुजू करना है।

नबी की मुख़ालफ़त अज़ाब का सबब : और मेरी क़ौम हरगिज़ न उकसाए तुम्हें मेरी अदावत (अल्लाह की नाफ़रमानी पर) मुबादा पहुंचे तुम्हें भी ऐसा अज़ाब जो पहुंचा था क़ौमे नूह या क़ौमे हूद या क़ौमे सालेह को और क़ौमे लूत तो तुम से कुछ दूर नहीं और मग़्फ़िरत तलब करो अपने रब से फिर (दिल व जान से) रुजू करो उसकी तरफ़ बेशक मेरा रब बड़ा मेहरबान (और) प्यार करने वाला है।

यानी आपने अपनी क़ौम को फ़रमाया : ऐ मेरी क़ौम मेरी मुख़ालफ़त और अदावत की वजह से तुम अल्लाह तआला के अज़ाब को हासिल न करो। अगर तुम इसी तरह मेरी अदावत पर क़ायम रहे तो तुम भी ऐसे तबाह व बर्बाद हो जाओगे जैसे नूह, हूद और लूत अलैहिमुस्सलाम की क़ौमें तबाह व बर्बाद हो गई, उनका कोई नाम व निशान न रहा। और लूत अलैहिस्सलाम की तबाह शुदा बस्तियां तुम्हारे इलाक़े से कोई दूर नहीं और उनका ज़माना भी तुम्हारे ज़माने से कोई दूर नहीं। तुम्हें चाहिये कि तुम अपने तमाम जराइम को छोड़कर अल्लाह तआला की तरफ़ रुजू करो उससे मग़्फ़िरत तलब करो। अल्लाह तआला बहुत करीम है रहीम है वह कभी अपनी तरफ़ झुकने वालों को अपनी रहमत से महरूम नहीं करता। तुम्हें चाहिये कि तुम उसकी रहमत से कभी मायूस न हो।

क़ौम के जवाबात : शोएब अलैहिस्सलाम ने क़ौम को राहे हक़ की तबलीग़ फ़रमाई उन्हें अज़ाब से बचने और अल्लाह तआला की रहमत हासिल करने की तर्ग़ीब दी लेकिन क़ौम ने आप को धमकियां देनी शुरू कर दीं।

उन्होंने कहा: कि ऐ शोएब! हमारी समझ में नहीं आतीं तुम्हारी बहुत सी बातें और बेशक हम तुम्हें अपने में बहुत कमज़ोर देखते हैं और अगर तुम्हारा कुंबा न होता तो हमने तुम्हें पथराव कर दिया होता और हमारी निगाह में तुम्हारी कुछ इज्ज़त नहीं।

हज़रत शोएब अलैहिस्सलाम उनके साथ उनकी ज़ाबन में कलाम फ़रमा रहे थे लेकिन वह फिर भी कहने लगे कि हमें तुम्हारी बातें समझ में नहीं आतीं क्योंकि वह आपकी बातों से बहुत ज़्यादा नफ़रत करने की वजह से तवज्जोह नहीं देते थे, गोया कि उनके कानों पर पर्दे छाए हुए थे और जो सुन लेते वह भी आपकी बातों को हक़ीर समझ कर ठुकरा देते थे। गोया कि उनका सुनना और न सुनना बराबर होता था, और आपने उन्हें तौहीद, नबुव्वत और क़यामत पर ईमान लाने और जुल्म लूट खसोट के छोड़ने पर जिन दलाइल से क़ाइल करने की कोशिश की उन्होंने कहा हमारे नज़दीक इन दलाईल की कोई हैसियत नहीं, हमें गोया दलाइल सुनाई ही नहीं देते।

क़ौम ने आपको कहा कि तुम हमारे क़बीला से हो। तुम्हारा ख़ानदान हमारे नज़दीक इज़्ज़त व एहतेराम वाला है अगर चे तुम्हारी इज़्ज़त हमारे नज़दीक कुछ नहीं और न ही कोई तुम इतने बहादुर हो। हम सिर्फ़ तुम्हें तुम्हारे ख़ानदान की वजह से छोड़ रहे हैं वरना तुम पर पथराव करके तुम्हें हलाक कर डालते।

क़ौम की हिमाक़त पर ताज्जुब : आप अलैहिस्सलाम ने कहा ऐ मेरी क़ौम! क्या तुम पर मेरे कुंबे का दबाव अल्लाह से ज़्यादा और उसे तुम ने अपनी पीठ के पीछे डाल रखा है बेशक जो तुम करते हो वह मेरे नज़दीक रब के इहात (कुदरत) में है।

आप अलैहिस्सलाम ने अपनी कौ़म की हिमाक़त पर ताज्जुब करते हुए फ़रमाया कि तुम मेरे ख़ानदान की इज्ज़त करते हो उनकी वजह से मुझे हलाक नहीं करते और अल्लाह तआला के अहकाम को पसे पुश्त डाल रहे हो, उसकी ताबेदारी नहीं करते, हालांकि हक़ यह था कि तुम्हें अगर मेरी हिफ़ाज़त करनी ही थी तो मुझे अल्लाह तआला का नबी समझकर मेरी हिफ़ाज़त करते इससे तुम्हें रब की ख़ुशनूदी हासिल होती। मुझे धमकियां देने वालो! यह भी ख़्याल करो कि मेरा रब तुम्हारे तमाम आमाल से बाख़बर है तुम कभी उसके इहातए कुदरत से बच नहीं सकते।

मुतकब्बिर सरदारों ने कहा : आपकी कौ़म के मुतकब्बिर सरदार बोलेः ऐ शोएब क़सम है कि तुम्हें और तुम्हारे साथ वाले मुसलमानों को अपनी बस्ती से निकाल देंगे या तुम हमारे दीन में आ जाओ।

आपकी कौ़म के रईस व सरदार लोग जो बहुत बड़े मुतकब्बिर थे आप अलैहिस्सलाम को धमकियां देने लगे कि तुम हमारे दीन में आ जाओ और तुम्हारे साथ जो मुसलमान हैं वह भी हमारे दीन में आ जायें। अगर तुमने हमारे दीन को क़बूल न किया तो हम तुम्हें अपनी बस्ती से निकाल देंगे।

नबी धमकियों से नहीं डरते : कहा क्या अगरचे हम बे ज़ार हैं ज़रूर हम अल्लाह तआला पर झूट बाधेंगे अगर तुम्हारे दीन में आ जायें बाद इसके कि अल्लाह तआला ने हमें इससे बचाया है।

आप अलैहिस्सलाम ने अपनी कौ़म की धमकियों की परवाह न करते हुए दो टूक अलफ़ाज़ में जवाब दिया कि क्या हम उस दीन में आ जायें जिससे हम बेज़ार हैं, जो हमें नापसंद है, यह कभी नहीं हो सकता। अल्लाह तआला का अज़ीम एहसान है हम पर जिसने हमें तुम्हारे बातिल दीन से महफ़ूज़ रखा हुआ है। अगर तुम्हारे कहने पर हम इस दीन में आ जायें तो यह अल्लाह तआला पर इफ़तरा (झूठ बांधना) लाज़िम आयेगा। क्या तुम यह ख़्याल करते हो कि अल्लाह तआला का नबी और उस पर ईमान लाने वाले अल्लाह तआला पर झूठ बांध सकते हैं? यह तसव्वुर करना भी नामुमकिन है यह ख़्याल भी मुहाल है।

फ़ैसला कुन बात : और ऐ कौ़म तुम अपनी जगह अपने काम किये जाओ मैं अपना काम करता हूं जल्द ही तुम्हें पता चल जायेगा किस पर आता है वह अज़ाब कि उसे रुसवा करेगा और कौन झूठा है? और इंतेज़ार करो मैं भी तुम्हारे साथ इंतेज़ार में हूं।

यानी आपने अपनी कौ़म को कहा कि तुम अपनी ताक़त के मुताबिक़ जो चाहो कर लो मुझे अगर तकलीफ़ पहुंचा सकते हो तो पहुंचा लो, लेकिन यह भी ख़्याल कर लो मैं भी कोई बेसहारा नहीं मेरा भी कोई है। मुझे भी उसने बड़ी कुदरतों से नवाज़ा है, बस अब तुम अपना काम करो मैं अपना काम करता हूं। कौ़म ने कहा फिर क्या होगा? आपने फ़रमाया कुछ देर तो नहीं तुम्हें अनक़रीब ही पता चल जायेगा कि रुसवा करने वाला अज़ाब किस पर आता है? और झूठा कौन है? वह कौ़में जिन्होंने अंबियाए किराम की तकज़ीब की अल्लाह तआला के अहकाम तस्लीम नहीं किये उनके लिये रब ने यही फ़ैसला फ़रमाया कि उनको तबाह व बर्बाद कर दिया जाये अब तुम्हारे लिये भी फ़ैसला की घड़ी आना ही चाहती है तुम भी इंतेज़ार करो और मैं भी इंतेज़ार करता हूं सब कुछ वाज़ेह हो जायेगा।

अल्लाह तआला के अज़ाब का आना और मदयन की तबाही : और जब हमारा हुक्म आया हमने

शोएब अलैहिस्सलाम और उसके साथ के मुसलमानों को अपनी रहमत फ़रमाकर बचा लिया और ज़ालिमों को गरजदार आवाज़ ने आ लिया तो सुबह अपने घरों में घुटनों के बल पड़े रह गये गोया कभी वहां बसे ही न थे। और दूर हों मदयन जैसे दूर हुए समूद।

रब तआला ने फ़रमायाः जब हमारे अज़ाब का अम्र आ गया तो हमने अपने एक फ़रिश्ते को भेजा जिसकी आवाज़ से सब मर गये।

वह आवाज़ जिब्राईल अलैहिस्सलाम की थीं जब आपने ज़ोरदार गरजदार आवाज़ से उन्हें कहा मर जाओ तो हर एक की रूह निकल गई और अपने अपने घरों में सब औंधे गिरे हुए पाये गये। इस तरह उनको तबाह व बर्बाद कर दिया गया जैसे कि वहां यह लोग कभी बस्ते ही नहीं थे।

क़ौमे मदयन को ऐसा ही अज़ाब दिया गया जैसे क़ौमे समूद को अज़ाब दिया गया। हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हमा ने फ़रमाया, अल्लाह तआला ने दो उम्मतों को एक जैसा अज़ाब नहीं दिया सिवाए शोएब अलैहिस्सलाम और हज़रत सालेह अलैहिस्सलाम की कौम के। उन दोनों क़ौमों को ज़ोरदार आवाज़ से हलाक किया गया। सालेह अलैहिस्सलाम की क़ौम के पास वह आवाज़ नीचे से आई और शोएब अलैहिस्सलाम की कौम के पास वह आवाज़ ऊपर से आई।

शोएब अलैहिस्सलाम और अस्हाबे ईका : झुठलाया अहले ईका ने भी रसूलों को जब फ़रमाया उन्हें शोएब अलैहिस्सलाम ने : क्या तुम (क़हरे इलाही) से नहीं डरते? बेशक मैं तुम्हारे लिये रसूल अमीन हूं पस डरो अल्लाह तआला से और मेरी पैरवी करो और मैं नहीं तलब करता तुम से इस पर कोई अज्र। मेरा अज्र तो उसके ज़िम्मे है जो जहानों को पालने वाला है। पूरा किया करो नाप और न हो जाओ कम नापने वालों से। और वज़न किया करो सही तराजू से। और न कम दिया करो लोगों को उनकी चीज़ें और न फिरा करो ज़मीन में फ़साद बरपा करते हुए। और डरो उससे जिसने पैदा फ़रमाया तुम्हें और (तुम से) पहली मख़लूक़ को। उन्होंने (झल्ला कर) कहा तुम उन लोगों में से हो जिन पर जादू कर दिया गया है। और नहीं हो तुम मगर एक बशर हमारी मानिंद। और हम तो तुम्हारे मुताल्लिक़ यह ख़्याल कर रहे हैं कि तुम झूटों में से हो। (हम तुम्हारी बात नहीं मानते) लो अब गिरा दो हम पर आसमान का कोई टुकड़ा, अगर तुम रास्त बाज़ों में से हो। आप अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया मेरा रब ख़ूब जानता है जो तुम कर रहे हो। सो उन्होंने झुठलाया शोएब अलैहिस्सलाम को तो पकड़ लिया उनको छतरी वाले दिन के अज़ाब ने। बेशक यह बड़े दिन का अज़ाब था। बेशक इसमें भी (इबरत की) निशानी है और नहीं थे उनमें से अक्सर लोग ईमान लाने वाले और यक़ीनन आपका रब ही सब पर ग़ालिब हमेशा रहम फ़रमाने वाला है।

बाज़ हज़रात ने यह ख़्याल फ़रमाया कि अहले मदयन और अस्हाबे इका एक ही क़ौम के दो नाम हैं लेकिन सही यह है कि यह दोनों अलग अलग क़ौमें थीं जो अलग अलग इलाक़ों में आबाद थीं लेकिन चूंकि उनके इलाक़े बिल्कुल नज़दीक थे और दोनों क़ौमें हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम की नस्ल से थीं इसलिये दोनों की हिदायत के लिये एक नबी हज़रत शोएब अलैहिस्सलाम को मुक़र्रर फ़रमाया गया। नीज़ यह दोनों क़ौमें बैनुल अक़वामी शाहराहों के क़ुर्ब व जवार में आबाद थीं और तिजारत पेशा थीं ताजिरों में जो अख़लाक़ी ख़राबियां आम तौर पर पाई जाती हैं वह उनमें बतौर क़दर मुश्तरक मौजूद

थीं तौहीद के अक़ीदा से दोनों बरगश्ता हो चुकी थीं और शिर्क की लानत में गिरफ़्तार थीं इसलिये हज़रत शोएब अलैहिस्सलाम के मवाइज़ एक ही तरह के थे।

वह जगह जहां घने और गंजान दरख़्तों का ज़ख़ीरा हो उसे अरबी में ईका कहते हैं मालूम होता है कि यह कौ़म जिस इलाक़े में आबाद थी वहां दरख़्तों के घने और गंजान झुंड पाए जाते थे इस लिये उन्हें अस्हाबुल ईका कहा गया और यह किसी ख़ास बस्ती का नाम न था लेकिन जिन्होंने लईका पढ़ा है उनका ख़्याल है कि लईका एक बस्ती का नाम था।

अल्लामा जौहरी की यह राय है कि लईका और ईका दोनों एक ही बस्ती के नाम हैं जिस तरह मक्का और बक्का।

मदयन की तरह अस्हाबे ईका की भी सारी मआशी ख़ुशहाली का इन्हेसार बे ईमानियों और धोका बाज़ियों पर था, वह इतने भले मानस कब थे कि हज़रत शोएब अलैहिस्सलाम की नसीहत सुनकर उन से बाज़ आ जाते शोएब अलैहिस्सलाम तो उनको यह कह रहे थे।

यानी उस रब से डरो जिस ने तुम्हें भी पैदा किया और तुम से पहले (बक़ौल अल्लामा मुजाहिद) जो मख़लूक़ गुज़र चुकी है उसका भी वही ख़ालिक़ है।

हक़ तो यह था कि वह लोग अपनी इस्लाह की तरफ़ तवज्जोह करते लेकिन उन्होंने उसकी तरफ़ तवज्जोह करना मुनासिब न समझा यहां तक कि अपनी ग़लती को ग़लती मानने से भी इंकार कर दिया। बल्कि उल्टा हज़रत शोएब अलैहिस्सलाम पर इल्ज़ाम लगा दिया कि तुम पर किसी ने जादू कर दिया है जभी तो तुम हमें ऐसे मश्वरे दे रहे हो, जिन पर हम अगर अमल करें तो यह तिजारत की गहमा गहमी या दौलत व सरवत की फ़रावानी सबकी सब एकदम ख़त्म हो जाये। कोई ज़ी शऊर आदमी अपनी कौ़म को ऐसा मश्वरा नहीं दे सकता जो उसकी इक़्तेसादी तबाही का सबब बने, ऐ शोएब! यक़ीनन तुम्हारा दिमाग़ काम नहीं कर रहा, पहले अपना इलाज कराओ फिर आकर हमें नसीहत करना, और तुम हमसे कोई बड़े भी तो नहीं हो हमारे जैसे ही एक बशर हो। हमें तो तुम्हारी बातें पर कोई यक़ीन नहीं आ रहा, बल्कि हम तो तुम्हें झूटों में से समझते हैं।

आप अलैहिस्सलाम ने कौ़म की तरह तरह की बेहूदगियों को ख़ातिर में न लाते हुए तबलीग़ का फ़रीज़ा जारी रखा। उनको धोका बाज़ियों से बाज़ आने के मुताल्लिक़ इसरार करते रहे, वह राहे रास्त पर आने के बजाए सीख़पा होकर और शर्म व हया की चादर को उतार कर कहने लगे कि लो हम तुम्हारी बात नहीं मानते अब जो आसमान तुम हम पर गिराना चाहते हो गिरा दो।

उनका ख़्याल यह था कि अज़ाब आयेगा नहीं, इस तरह शोएब अलैहिस्सलाम का झूटा होना साबित हो जायेगा। सुब्हानल्लाह! नबी का सब्र और कमाल कितना अज़ीम है। वह लोग आपको झूठा कह रहे हैं जादू के असरात से आफ़त ज़दा कह रहे हैं बल्कि खुद मुतालबा कर रहे हैं तुम्हें जो करना है कर लो। आसमान गिराना है गिरा लो। हम तो तुम्हारी बातों को मानने के लिये तैयार नहीं आप फिर भी यह कह रहे हैं:

तुम्हारे करतूतों को मेरा रब बेहतर जानता है।

यानी आपने इन हालात के बावजूद मामला रब के सुपुर्द कर दिया उनकी हलाकत की दुआ न की और यह नहीं अर्ज़ किया ऐ अल्लाह अब तू इन पर अज़ाब भेज ही दे, बल्कि कमाले सब्र का मुज़ाहिरा

हुए मसला अल्लाह तआला के सुपुर्द कर दिया।

जब उन्होंने बार बार शोऐब अलैहिस्सलाम की तकज़ीब की तो अल्लाह तआला ने उन पर अज़ाब नाज़िल कर दिया सात दिन तक अल्लाह तआला ने उन पर हवा को रोक लिया और रेत को मुसल्लत कर दिया, उनके दम घुटने लगे, न उन्हें कोई साया नफ़ा पहुंचा सकता और न ही पानी। यह परेशान होकर जंगल की तरफ़ निकले और उन पर एक बादल ने आकर साया कर दिया। जिससे उन्हें ख़ूब ठंडक महसूस हुई और बड़े नसीन के खुशगवार मज़े लूटने लगे। इस तरह उस बादल के साया में जमा हो गये तो यकायक उन पर आग की बारिश बरसने लगी जिससे सब जल कर राख हो गये ऐसे तबाह व बर्बाद हुए कि उनका नाम व निशान भी मिट गया। रब तआला ने उनकी बस्ती को सफ़हए हस्ती से ऐसे मिटा दिया कि गोया वहां कोई बस्ती थी ही नहीं।

हज़रत मूसा व हारून अलैहिमस्सलाम

बनी इस्राईल : हज़रत याकूब अलैहिस्सलाम की औलाद को बनी इस्राईल कहा जाता है क्योंकि इस्राईल आप अलैहिस्सलाम का लक़ब है या आपका दूसरा नाम है। लफ़्ज़ इस्राईल में एक क़ौल यह है कि यह अजमी लफ़्ज़ है, इस्रा और ईल से मुरक्कब है इस्रा के चार मायने ब्यान किये गये हैं अबद (बंदा) इबादत करने वाला, सफ़्वा (बर गुज़ीदा) इंसान और मुहाजिर (हिजरत करने वाला) और ईल के मायने है अल्लाह तआला। इस लिहाज़ से हज़रत याकूब अलैहिस्सलाम का यह नाम इसलिये हुआ कि अल्लाह तआला के इबादत गुज़ार और उसके बरगुज़ीदा और उसके पैदा कर्दा अज़ीमुल मर्तबत इंसान और अल्लाह तआला की तरफ़ रुजू करने वाले यानी हिजरत करने वाले भी थे।

बअज़ हज़रात ने कहा कि यह लफ़्ज़ अरबी से इस्रा का मायने है रात को ले जाना और ईल का मायने है अल्लाह तआला। अब इस लिहाज़ पर आपका नाम इसलिये रखा गया कि अल्लाह तआला ने आपको रात के वक़्त अपनी तरफ़ रुजू कराया कि आप की तरफ़ हिजरत करने वाले हुए।

मूसा अलैहिस्सलाम : हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के वालिद का नाम इमरान है जो अपने क़बीला के सरदार थे। लावी बिन याकूब की औलाद से थे। मूसा अलैहिस्सलाम की वालदा के नाम में इख़्तेलाफ़ है यानी. इयारख़ा, मैहानिज़, यूख़ानज़, लोखा, मरयम, यह तमाम नाम ज़िक्र करने के बाद हाशया जलालैन में ज़िक्र किया गया है।

सही क़ौल पहला ही है यानी यारख़ा जैसे रुहुल ब्यान में है। मुफ़्ती अहमद यार ख़ां रहमतुल्लाह अलैह ने तफ़्सीर नईमी में ज़ईफ़ लिखा है।

हज़रत हारून अलैहिस्सलाम : आप हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के सगे भाई हैं बहुत बड़े हौसलामंद और मुदब्बिर थे बनी इस्राईल आप से बहुत मुहब्बत करते थे।

आप मूसा अलैहिस्सलाम से तीन साल बड़े थे।

सामरी का नाम भी मूसा था: सामरी जिसने बनी इस्राईल को बछड़े की पूजा पर लगा दिया था। जिसका ज़िक्र आगे आयेगा। उसका नाम भी मूसा था। सामरी के नाम व नसब और जाए सकूनत के

बारे में अक़वाल मुख़्तलिफ़ हैं। सबसे ज़्यादा राजेह कौल यही है कि उसका नाम मूसा और उसके बाप का नाम ज़फ़र था। और बनी इस्राईल के एक क़बीला सामरा से था। उस क़बीला की मुनासबत से उसकी जाए सकूनत का नाम भी सामरा हुआ। इसलिये उसको सामरी कहते हैं। यह शख़्स ख़ुद और उसका सारा क़बीला बल्कि अतराफ़ व जवानिब के तमाम लोग गाए की परस्तिश किया करते थे। यह सामरी उस ज़माने में पैदा हुआ जबकि फ़िरऔन बनी इस्राईल में पैदा होने वाले हर लड़के को ज़िबह करा देता था। जब यह पैदा हुआ तो उसकी मां ने उसे पहाड़ के ग़ार में छुपा दिया। बनी इस्राईल के इस क़िस्म के बच्चों की तर्बियत के लिये हज़रत जिब्राईल अमीन को अल्लाह तआला ने मुक़र्रर फ़रमाया था। इस मूसा बिन ज़फ़र यानी सामरी की तर्बियत के लिये भी हज़रत जिब्राईल मुतअय्यन थे। वह उसके ग़ार में तशरीफ़ लाते और उसका अपना हाथ उसके मुंह में दे देते जिससे वह दूध और शहद चूसता रहता।

बाज़ उलेमा ने लिखा है कि जिब्राईल अमीन अलैहिस्सलाम ख़ुद अपनी उंगलियां उसके मुंह में दे देते थे जिससे वह दूध और शहर चूसता था साहबे रूहुल मआनी ने इस ज़िम्न में दो शेअर भी नक़ल किये हैं।

जब आदमी असल ख़िलक़त में सआदत से महरूम हो तो उसकी तर्बीयत करने वालों के दिमाग़ हैरत ज़दा और इससे बेहतरी की उम्मीद रखने वाले ख़ाईब व ख़ासिर होकर रह जाते हैं। वह मूसा जिसकी परवरिश जिब्राईल अमीन ने की काफ़िर हुआ और वह मूसा अलैहिस्सलाम जिनकी परवरिश फ़िरऔन ने की अल्लाह तआला का रसूल है।

सामरी हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम पर बज़ाहिर ईमान लाया मगर पक्का मुनाफ़िक़ था।

फ़िरऔन : मिस्र के बादशाहों का लक़ब फ़िरऔन हुआ करता था जिस तरह रोम के बादशाहों का "क़ैसर" फ़ारस के बादशाहों का "किसरा" यमन के बादशाहों का "तबअ" तुर्क के बादशाहों का "ख़ाक़ान" और हब्शा के बादशाहों का लक़ब "नजाशी" था।

मिस्र के जितने बादशाह भी गुज़रे हैं कोई भी मूसा अलैहिस्सलाम के ज़माने के फ़िरऔन से ज़्यादा बद ख़ुल्क़ सख़्त दिल और ज़ालिम नहीं था। मूसा अलैहिस्सलाम के ज़माने में पाया जाने वाला फ़िरऔन वलीद इब्ने मुसअब या मुसअब बिन रय्यान था। बाज़ ने उसका नाम क़ाबूस भी तहरीर किया है। क़बीला कुबतीया से था हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के ज़माने में पाए जाने वाले फ़िरऔनों के दर्मियान चार सौ साल से ज़ाइद अर्सा था।

हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की पैदाईश से पहले : बनी इस्राईल की हालत मूसा अलैहिस्सलाम की पैदाईश से पहले यह थी कि यह लोग फ़िरऔनियों के ख़ादिम थे। फ़िरऔनियों ने उनको मुख़्तलिफ़ क़िस्म के कामों पर मुक़र्रर किया हुआ था। कुछ लोगों को तामीर के कामों पर लगाया हुआ था। और कुछ लोगों से हल चलाने का काम लिया जाता, और कुछ लोगों से खेती बाड़ी के मुख़्तलिफ़ काम लिये जाते, फ़सल की काश्त और कटाई वग़ैरह के कामों पर मुक़र्रर थे। गंदे कामों पर भी उन्हें ही लगाया जाता, बैतुलख़ला की सफ़ाई उन्हीं लोगों के ज़िम्मे थी। कीचड़, स.फ़ाई वग़ैरह के कामों पर उनको ही मुक़र्रर किया जाता। पत्थर तराशना और पत्थरों को उठा उठाकर लाना उन्हीं के ज़िम्मे था। जो लोग

यह काम नहीं कर सकते थे उन पर जिज़्या मुक़र्रर कर दिया जाता था। और जो शख़्स सूरज के गुरूब होने से पहले जिज़्या न अदा करता उसके हाथ उसकी गर्दन से बांध दिये जाते और एक महीना उसके हाथ इसी तरह बंधे रहते। और बनी इस्राईल की औरतों से इस तरह काम लिये जाते जैसे लौंडियों से काम लिये जाते हैं यानी घरैलू तमाम काम उनके सुपुर्द होते, सूत कातना और सिलाई वग़ैरह के काम उन औरतों से ही लिये जाते थे।

बनी इस्राईल के बच्चों को ज़िबह करना : फ़िरऔन ने एक ख़्वाब देखा बैतुल मुक़द्दस की जानिब से एक आग निकली है जिसने मिस्र का इहाता कर लिया और तमाम क़ुब्तियों को जला दिया, लेकिन बनी इस्राईल को उसने कोई नुक़सान न पहुंचाया। इस ख़्वाब से फ़िरऔन बहुत परेशान हुआ, उसने ख़्वाब की ताबीर ब्यान करने के माहिरीन से पूछा कि इस ख़्वाब की ताबीर क्या हो सकती है? उन्होंने बताया कि इस ख़्वाब से तो यही समझ में आता है कि बनी इस्राईल में एक बच्चा पैदा होगा जो तुम्हारी बादशाही के ज़वाल का सबब बनेगा। यह सुनकर फिरऔन ने हुक्म दिया कि बनी इस्राईल में जो बच्चा भी पैदा हो उसे ज़िबह कर दिया जाये। इस तरह उसके हुक्म से हज़ारों की तादाद में उनके बच्चे ज़िबह कर दिये गये वह जो ज़िबह किये गये उनकी तादाद बारह हज़ार या सत्तर हज़ार थी। इतनी बात वाज़ेह है कि हज़ारों की तादाद थी।

रब तआला ने बनी इस्राईल को यही हालात याद कराने के लिये यानी नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के ज़माने के बनी इस्राईल को याद करने के लिये कहा कि तुम्हारे आबा व अजदाद पर हमारे बड़े इनाम थे वह भी शुक्र करने की बजाए रब तआला के अहकाम का इंकार ही करते रहे और ख़ाइब व ख़ासिर हुए, तुम्हें चाहिये कि तुम नसीहत हसिल करो।

जब हमने नजात दी तुम्हें फ़िरऔन की आल से, वह तुम्हें बड़ा अज़ाब देते थे, ज़िबह करते तुम्हारे बेटों और ज़िन्दा छोड़ते थे तुम्हारी लड़कियों को, और इसमें तुम्हारे रब तआला की तरफ़ से बड़ी आज़माईश थी।

और एक मायने यह भी है कि वह तुम्हारी औरतों की शर्मगाहें देखते थे कि यह हामिला हैं या नहीं, ज़िन्दा छोड़ने वाला मायने ज़्यादा मश्हूर है कि इन्हें लड़कियों से कोई ख़तरा न था इसलिये उनको ज़िन्दा छोड़ देते।

और इसमें तुम्हारे रब की तरफ़ से बड़ी आज़माईश थी।

इसके दो मतलब हैं एक यह कि तुम जिन मुसीबतों में गिरफ़्तार थे वह तुम्हारी बहुत बड़ी आज़माईश थी कि सब्र करते हो या नहीं। और दूसरा मतलब यह है कि तुम पर जो अल्लाह तआला ने इनाम किये कि तुम्हें फ़िरऔनियों से नजात दी यह तुम्हारी आज़माईश थी कि तुम नेमतों का शुक्र करते हो या नहीं?

मूसा अलैहिस्सलाम की पैदाईश : और हमने मूसा अलैहिस्सलाम की मां को इलहाम फ़रमाया कि इसे दूध पिला, फिर जब तुझे उससे अंदेशा हो तो इसे दरिया में डाल दे, और न डर और न ग़म कर, बेशक इसे हम तेरी तरफ़ फेर लायेंगे और इसे रसूल बनायेंगे।

आप अलैहिस्सलाम की पैदाईश से पहले ही आपकी वालदा के दिल में यह बात डालकर यक़ीन

करा दिया गया था कि पैदाईश के बाद तुम बच्चे को दूध पिलाती रहो, जब तुम्हें फ़िरऔन के जासूसों से ख़तरा लाहक़ हो या बच्चे के रोने वग़ैरह से पड़ोसियों से तुम्हें ख़तरा हो तो बच्चे को दरिया में डाल दो, हम इस बच्चे की हिफ़ाज़त करेंगे और तुम्हारी तरफ़ लौटा देंगे और इसे रसूल बनायेंगे।

आप अलैहिस्सलाम की वालदा ने आप को दरिया में फेंकने से पहले कितनी मुद्दत दूध पिलाया उसकी हद का ज़िक्र कुरआन पाक में तो नहीं अलबत्ता एक क़ौल इब्ने जुरैह का यह है:

कि बेशक आप चार माह बाद रोए तो पड़ोसियों वग़ैरह के ख़तरा के पेशे नज़र आपको दरियाए नील में डाल दिया गया।

मूसा अलैहिस्सलाम की वालदा पर जब विलादत का वक़्त क़रीब हुआ तो आपके पास एक दाया आई। उनमें से जो फ़िरऔन ने बनी इस्राईल की औरतों के लिये मुक़र्रर कर रखी थीं। जब मूसा अलैहिस्सलाम पैदा हुए ते आपकी दोनों आंखों के दर्मियान से नूर की किरणें ज़ाहिर हो रही थीं जिनको देखते ही दाया का हर जोड़ कांपने लगा। उसके दिल में मूसा अलैहिस्सलाम की मुहब्बत डाल दी गई। उसने कहा ऐ औरत (ऐ इस बच्चे की मां) मैं तो इसे क़त्ल करने के लिये आई थी लेकिन मुझे इससे शदीद मुहब्बत हो चुकी है, इसलिये तू अपने बच्चे को महफ़ूज़ कर ले वह दाया यह कहकर चली गई। इतने में फ़िरऔन के जासूस आपके दरवाज़े पर पहुंच गये। मूसा अलैहिस्सलाम की बहन ने जासूसों को आते हुए देखकर कहा ऐ मां फ़िरऔनी आ रहे हैं, आपकी मां को कुछ समझ नहीं आ रहा था कि क्या करे, होश व हवास जाते रहे, बच्चे को डर के मारे कपड़े में लपेट कर जलते तंदूर में डाल दिया। जब फ़िरऔनी आपके घर में दाख़िल हुए तो जलते हुए तंदूर की तरफ़ तो वह न गये और घर तमाम छान मारा कोई बच्चा नज़र न आया। मूसा अलैहिस्सलाम की वालदा को देखा तो उनके रंग में भी कोई तबदीली नज़र न आई। जो आम तौर पर औरतों का बच्चे की पैदाईश पर रंग ज़र्द पड़ जाता है और आपका दूध भी नज़र न आने पर पूछा कि वह दाया तुम्हारे घर क्यों आई थी? आपने कहा वह मेरी दोस्त थी जो मुझे मिलने आई थी यह कोई झूठ नहीं था वह आपकी दोस्त भी थी।

जब फ़िरऔनी आपके घर से निकल गये तो आपको होश आया और अपनी बेटी से पूछा बच्चा कहां गया यानी आपको यह भी मालूम न था कि बच्चे को कहां डाला था। बेटी ने जवाब दिया मुझे तो कुछ पता नहीं, इतने में तंदूर से आहिस्ता रोने की आवाज़ आई तो आपने देखा कि बच्चे पर आग ठंडी सलामत-हो चुकी है। उन्होंने बच्चे को तंदूर से निकाल लिया। वालदा को जब यह फ़िक्र दामन गीर हुई कि फ़िरऔन बच्चे की तलाश में पूरी जद्दो जेहद कर रहा है तो आपने बच्चे को संदूक़ में डालकर दरिया में डालने का फ़ैसला कर लिया, क्योंकि अल्लाह तआला ने उनके दिल में पुख़्ता बात डाल दी थी कि इस तरह बच्चा महफ़ूज़ रहेगा और एक दिन इन्हें वापस मिल जायेगा।

आपकी वालदा एक नज्जार (बढ़ई का काम करने वाला) के पास गई ताकि उससे संदूक़ हासिल करें उसने पूछा तुम को लकड़ी के संदूक़ का क्या करना है तो आपने सच सच बता दिया कि अपने बेटे को इस में डाल कर दरिया में डालना है हो सकता है कि फ़िरऔनियों से बच जाये। संदूक़ उसने आपको फ़रोख़्त कर दिया, लेकिन बढ़ई के दिल में बदनीयती पैदा हो गई वह फ़िरऔनी लोगों के पास गया जो बच्चों को ज़िबह करने पर मुक़र्रर थे कि उन्हें बता सके। जब वह उनके पास आया तो अल्लाह

तआला ने उसकी ज़बान को बंद कर दिया। वह हाथ से इशारे कर रहा था। उन लोगों ने उसे (पागल समझकर) मारा और भगा दिया जब वह वापस अपने घर पहुंचा तो अल्लाह तआला ने उसकी ज़बान को उस पर फिर लौटा दिया। फिर वह दूसरी मर्तबा उन लोगों के पास गया ताकि उन्हें बता सके फिर उसकी ज़बान बंद हो गई फिर हाथों से इशारे करने की वजह से उन्होंने उसे मारा और वह घर लौटा फिर उसकी ज़बान ठीक हो गई। फिर तीसरी मर्तबा उन्हें बताने के लिये गया तो उसकी ज़बान भी बंद हो गई और अंधा हो गया। फिर उसकी पिटाई हुई और उसे वापस भगा दिया गया। अब वह सच्चे दिल से तौबा करने लगा, ऐ अल्लाह तआला अगर तू मुझे मेरी नज़र और ज़बान दे दे तो मैं किसी को नहीं बताऊंगा, तो अल्लाह तआला ने उसकी तौबा को क़बूल फ़रमा लिया और उसे ज़बान और नज़र दे दी।

मूसा अलैहिस्सलाम की वालदा ने आपको संदूक़ में डालकर दरिया के हवाले कर दिया फ़िरऔन की सिर्फ़ एक बेटी थी और उसकी कोई औलाद न थी वह अपनी बेटी से बहुत ज़्यादा मुहब्बत किया करता था वह भी हर रोज़ अपने बाप के पास तीन हाजात पेश करती थी। वह बहुत ज़्यादा बर्स की बीमारी में मुब्तला थी। फ़िरऔन ने उसके बारे में तबीबों और जादूगरों से मश्वरा किया उन्होंने कहा ऐ बादशाह यह उस वक़्त तक ठीक नहीं हो सकती जब तक दरिया में से एक इंसान के मुशाबेह कोई चीज़ न पाई जाये और उसका लुआब लेकर उसके बर्स वाले मक़ाम पर मली जाये फिर यह ठीक हो जायेगी। और यह भी उस वक़्त होगा जब फ़लां दिन और फ़लां महीना हो और सूरज ख़ूब रौशन हो, जब वही दिन आ गया तो फ़िरऔन ने दरिया के किनारे पर महफ़िल सजाई उसके साथ उसकी ज़ौजा भी थी फिरऔन की बेटी भी अपनी लौंडियों के साथ दरिया के किनारे पर जाकर बैठ गई। दरियाए नील से एक नहर फ़िरऔन के महल्लात की तरफ़ आई हुई थी उसमें फ़िरऔन की बेटी और उसकी लौंडियां नहाने लगीं उन्होंने देखा कि ताबूत दरिया की मौजों में हिचकोले खा रहा है, जो एक दरख़्त के साथ आकर रुका है। फ़िरऔन ने हुक्म दिया जल्दी से वह ताबूत मेरे पास लाया जाये कश्ती वाले लोगों ने जल्दी से वह ताबूत फ़िरऔन के पास पेश कर दिया।

उन्होंने कोशिश की कि इसको खोलें लेकिन वह कामयाब न हो सके, फिर तोड़ना चाहा तोड़ने में भी कामयाब न हुए, फ़िरऔन की ज़ौजा आसिया को उस ताबूत के अंदर एक नूर चमकता हुआ नज़र आया जो दूसरों को दिखाई न दिया। जब आसिया ने ताबूत को खोलना चाहा तो खोल लिया जिसमें एक छोटा सा बच्चा था, जिसकी आंखों के दर्मियान एक नूर चमक रहा था। अल्लाह तआला ने लोगों के दिलों में उस बच्चे की मुहब्बत डाल दी फिरऔन की बेटी ने उस बच्चे का लुआब लेकर जब अपने बर्स वाले मक़ामात पर लगाया तो वह उसी वक़्त ठीक हो गई। उसने बच्चे को सीने से लगाया, फिरऔन को कुछ लोगों ने कहा कि यह वही बच्चा न हो जिससे हम बचना चाहते हैं। तुम्हारे डर की वजह से इसको दरिया में फेंक दिया गया होगा। फिरऔन ने यह सुनकर बच्चे को क़त्ल करने का इरादा किया, लेकिन फ़िरऔन की ज़ौजा आसिया ने बच्चे की बख़्शिश तलब की और उसे अपना बेटा बना लिया। इस तरह यह पहला मरहला मुकम्मल हो गया। जिसमें मूसा अलैहिस्सलाम के लुआब की ख़ैर व बर्कत का मुज़ाहिरा भी करा लिया गया आपको क़त्ल होने से बचा कर रब तआला ने अपनी क़ुदरत दिखा

दी कि जिस बच्चे को ख़त्म करने की ग़र्ज़ से तुमने हज़ारों बच्चे ज़िबह करा दिये उसे मैंने तुम्हारे पास पहुंचा दिया है लेकिन तुम उसे न ज़िबह कर सके और न ही कर सकोगे।

फ़िरऔन की ज़ौजा बहुत नेक औरत थी, अंबियाए किराम की नस्ल से थी, ग़रीबों और मिस्कीनों पर रहम करती थी, उसने फ़िरऔन को कहा कि यह बच्चा पता नहीं किस सर ज़मीन से आया है तुम्हारे लिये ख़तरा तो इसी मुल्क का बच्चा होगा यह बच्चा कितना प्यारा और ख़ूबसूरत है यह तो बच्चा बनाने के क़ाबिल है। इसे क़त्ल नहीं करना है हमारा कोई बच्चा नहीं है इसलिये हम इसे अपना बच्चा बना लेंगे। आसिया की यह बात फ़िरऔन और उसकी क़ौम के सर कर्दा लोगों ने तस्लीम कर ली। रब तआला ने मूसा अलैहिस्सलाम को क़त्ल होने से बचा लिया रब तआला ने इरशाद फ़रमायाः

तो उसे उठा लिया फ़िरऔन के घर वालों ने कि वह उनका दुश्मन और उन पर ग़म हो, बेशक फ़िरऔन और उनके लश्कर ख़ताकार थे और फ़िरऔन की ज़ौजा ने कहा यह बच्चा मेरी और तेरी आंखों की ठंडक है इसे क़त्ल न करो, शायद यह हमें नफ़ा दे या हम इसे बेटा बना लें और वह बेख़बर थे।

यानी फ़िरऔन और उसके वज़ीर हामान और उनके दूसरे सरकर्दा लोगों को अगर यह मालूम होता कि यही वह बच्चा है जिसको बड़े होकर हमारी बादशाही को तबाह करना है तो वह इस बच्चे को न उठाते और अगर उठा भी लिया था तो क़त्ल ज़रूर करते लेकिन कुदरते बारी का मुक़ाबला मुमकिन नहीं।

और मैंने तुझ पर अपनी तरफ़ से मुहब्बत डाली और इसलिये कि तू मेरी निगाहों के सामने तैयार हो।

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हमा ने फ़रमाया कि अल्लाह तआला ने उन्हें महबूब बनाया और मख़लूक़ का महबूब कर दिया और जिसको अल्लाह तआला अपनी महबूबियत से नवाज़ता है लोगों के दिलों में उसकी मुहब्बत पैदा हो जाती है।

हज़रत क़तादा रज़ियल्लाहु अन्हु का क़ौल है कि मूसा अलैहिस्सलाम की आंखों में ऐसी मलाहत, ख़ूबसूरती और नूरानियत रखी गई थी कि जो भी आपको देखता वही आपसे मुहब्बत करने लगता। जब अल्लाह तआला ने आपको अपना महबूब बना लिया तो कोई वजह न थी कि आसमान व ज़मीन वाले आपसे मुहब्बत न करते।

मूसा अलैहिस्सलाम की वालदा और बहन की बेक़रारी : और सुबह को मूसा अलैहिस्सलाम की मां का दिल बे सब्र हो गया ज़रूर क़रीब था कि वह उसका हाल खोल देती अगर हम ढारस न बंधाते उसके दिल को कि उसे हमारे वादा पर यक़ीन रहे और उसकी मां ने उसकी बहन को कहा इसके पीछे चली जाओ तो वह उसे दूर से देखती रही और उनको ख़बर न थी।

फ़ारेग़ा का एक मायने यह है कि दिल को ख़ौफ़ और डर लाहक़ होना।

यानी आपकी वालदा को जब यह ख़बर मिली कि बच्चा फ़िरऔन के हाथ आ गया तो आपको बहुत ज़्यादा ख़ौफ़ लाहक़ हुआ कि वह कहीं क़त्ल न कर दे। दूसरा मायने है ख़ाली होना। यानी आपका दिल और तमाम ग़मों से फ़ारिग़ हो गया सिर्फ़ मूसा अलैहिस्सलाम का ग़म दामनगीर हुआ। इस मायने के

लिहाज़ से एक मतलब यह भी है कि आपको जब यह ख़बर मिली कि फ़िरऔन के हाथ बच्चे का ताबूत आ गया है तो आपका दिल अक़्ल से ख़ाली हो गया, होश उड़ गये।

लेकिन अल्लाह तआला ने आपके दिल में फिर यह इलक़ा किया कि फ़िरऔन की बीवी ने मूसा अलैहिस्सलाम को अपना बेटा बना लिया है तो आपके दिल को तसल्ली हुई अगर अल्लाह तआला आपके दिल को ढारस न बंधाता तो हो सकता है कि आप दरिया में फेंकते वक़्त वावैला शुरू कर देतीं। हाए मेरे बच्चे! हाए मेरे बच्चे! की पुकार से लोग ख़बरदार हो जाते। या आपको जब यह ख़बर मिली कि फ़िरऔन की ज़ौजा आसिया बच्चे पर मेहरबान हो गई उस वक़्त आप ख़ुशी से ज़ाहिर कर देतीं कि मेरे बच्चे को अल्लाह तआला ने बचा लिया है। लेकिन अल्लाह तआला ने आपको ज़ाहिर करने से रोके रखा।

मूसा अलैहिस्सलाम की बहन का नाम मरयम था। ज़्यादा मशहूर यही नाम है अगरचे कुलसूम और कुलसुमा भी ब्यान किया गया है। आपकी वालदा ने मरयम को कहा कि जाओ देखो ताबूत किधर गया। क्या वाक़ई फ़िरऔन के हाथ आ गया है? उन्होंने बच्चे से क्या सलूक किया? मरयम दूर दूर से देखती रही, ताकि उन्हें पता न चल सके।

तंबीह : हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की वालदा का नाम मरयम था और मरयम के बाप का नाम इमरान था। मूसा अलैहिस्सलाम की सगी बहन का नाम भी मरयम है और आपके बाप का नाम भी इमरान है। बाज़ हज़रात ने वहम किया कि मूसा अलैहिस्सलाम की वालदा हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की बहन थी। यह ग़लत है इन दोनों अंबियाए किराम के दर्मियान ज़माने के एतेबार से बहुत बड़ा फ़ासला है।

मूसा अलैहिस्सलाम की परवरिश आपकी मां के ज़िम्मे : और हमने पहले ही सब दाईयां उस पर हराम कर दी थीं तो बोली क्या मैं तुम्हें बता दूं ऐसे घर वाले कि तुम्हारे इस बच्चे को पाल दें? और वह उसके ख़ैर ख़्वाह हैं। तो हमने उसे उसकी मां की तरफ़ फेरा कि मां की आंख ठंडी हो और ग़म न खाए। और जान ले कि अल्लाह तआला का वादा सच्चा है लेकिन अक्सर लोग नहीं जानते।

अल्लाह तआला ने मूसा अलैहिस्सलाम की तबीयत में अपनी मां के दूध के बग़ैर तमाम दूध पिलाने वाली औरतों से नफ़रत पैदा कर दी थी। फ़िरऔन ने बच्चे की परवरिश के लिये दाया बुलाने का हुक्म दिया। जो दाया भी आती आप उसका दूध न पीते, लेकिन भूख की वजह से बेक़रार हो रहे थे। फ़िरऔन भी अपनी ज़ौजा आसिया की वजह से बच्चे की हालत से फ़िक्रमंद था। बच्चे को गोद में लेकर तसल्लियां दे रहा था। और कह रहा था कि काश कोई ऐसी दाया मिल जाये जिसका दूध यह बच्चा पीना शुरू कर दे। इस मौक़ा को ग़नीमत समझते हुए आपकी बहन ने कहा कि मैं तुम्हें एक घर वालों का पता बताती हूं जो इस बच्चे की तर्बियत में कोई कमी वाक़ेय नहीं होने देंगे जो इसकी परवरिश की ज़मानत देंगे किसी क़िस्म की ख़्यानत के मुरतकिब नहीं होंगे। ख़ुलूस से सब काम करेंगे कोई नक़्स लाज़िम नहीं आने देंगे।

और वह उसके ख़ैर ख़्वाह हैं। जब मूसा अलैहिस्सलाम की बहन ने यह कहा कि वह इसके ख़ैर ख़्वाह हैं तो हामान ने कहा कि यह इस बच्चे के ख़ानदान को जानती है इसे पकड़ लो तो ख़ुद बच्चे के घराने का पता चल जायेगा। तो उस वक़्त मूसा अलैहिस्सलाम की बहन ने कहा, मेरा मतलब यह

है कि उस घर के लोग बादशाह के ख़ैर ख़्वाह हैं। इस बच्चे के ख़ैर ख़्वाह मैंने नहीं कहा। चूंकि वह ख़ानदाने नबुव्वत की लड़की थी उसकी ज़िहानत इसी क़ाबिल थी कि उसने निहायत हसीन जवाब देकर अपने आपको और अपने भाई को बचा लिया। उसके इस जवाब को सुनकर फ़िरऔन ने कहा अच्छा तुम उस औरत को ले आओ जिसके मुताल्लिक़ तुम कह रही हो। तो वह अपनी मां के पास आई और उन्हें ले गई। मूसा अलैहिस्सलाम फ़िरऔन के हाथों में थे और प्यास की वजह से बेक़रार थे वह आपको तसल्लियां दे रहा था जभी आपकी वालदा पहुंची तो मां की ख़ुश्बू सूंधकर फ़ौरन मां की तरफ़ लपके और दूध पीना शुरू कर दिया। फिरऔन ने बड़े ताज्जुब से पूछा तुम कौन औरत हो? कि इस बच्चे ने तुम्हारा दूध पसंद किया हालांकि कितनी ही दाया हमने तलब कीं किसी का दूध इसने नहीं पिया तो आपकी वालदा ने जवाब दिया।

कि बेशक मैं ऐसी औरत हूं कि मुझसे ख़ुश्बू आती है यानी मैं अपने आपको साफ़ सुथरा रखती हूं मेरा लिबास साफ़ सुथरा होता है अच्छी क़िस्म की ख़ुश्बू इस्तेमाल करती हूं और कुदरती ख़ुश्बू भी मेरी जिस्म से आती है मेरा दूध भी पाकीजा, ख़ुश ज़ायक़ा और ख़ुश्बूदार है आज तक मैंने जिस बच्चे को दूध पिलाया है उसने ज़रूर मेरा दूध पिया है।

फ़िरऔन ने मूसा अलैहिस्सलाम को आपकी वालदा के सुपुर्द कर दिया और उनका ख़र्च भी मुक़र्रर कर दिया। रब तआला ने आपके दिल में एक वादा डाला था कि तुम इस बच्चे को फेंक दो मैं तुम्हारे पास इसे वापस लौटा दूंगा। इस वादा को अल्लाह तआला ने पूरा फ़रमाया ताकि आपकी वालदा को यक़ीन हो जाए कि जब यह वादा पूरा हो गया है तो यह बच्चा रसूल भी ज़रूर बनेगा। अक्सर लोग अल्लाह तआला की कुदरत और उसकी हिकमत से बेख़बर हैं वह यह नहीं जानते कि उसकी कुदरत के मुक़ाबिल तमाम तदबीरें कुछ हैसियत नहीं रखतीं।

मूसा अलैहिस्सलाम का कुबती को घूंसा मारना : वह शहर में दाख़िल हुए उस वक़्त जब बेख़बर सो रहे थे उसके बाशिंदे। पस आपने पाया वहां दो आदमियों को आपस में लड़ते हुए यह एक उनकी जमाअत से था और यह दूसरा उनके दुश्मनों से, पस मदद के लिये पुकारा आपको उसने जो आपकी जमाअत से था उसके मुक़ाबले में जो आपके दुश्मन गरोह से ताल्लुक़ रखता था तो सीना में घूंसा मारा मूसा अलैहिस्सलाम ने उसको और उसका काम तमाम कर दिया। आप अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया यह काम शैतान की तरफ़ से हुआ, बेशक वह खुला दुश्मन बहका देने वाला है। आप अलैहिस्सलाम ने अर्ज़ की ऐ मेरे रब मैंने अपनी जान पर ज़्यादती की तू मुझे बख़्श दे तो रब तआला ने उसे बख़्श दिया। बेशक वही बख़शने वाला मेहरबान है। अर्ज़ कीः ऐ मेरे रब जैसे तूने मुझपर एहसान किया तो अब हरगिज़ मैं मुजरिमों का मददगार न हूंगा।

मूसा अलैहिस्सलाम के पोशीदा तौर पर शहर में दाख़िल होने की मुख़्तलिफ़ वजह ब्यान की गई हैं ताहम ज़्यादा सही वजह यह मालूम होती है कि मूसा अलैहिस्सलाम को शुरू से ही अपनी वालदा के पास रहने और उनकी बातें सुनने का मौक़ा मिल गया था। सारी सूरते हाल से आप अच्छी तरह आगाह हो गये। नीज़ आप को अपने जलीलुल क़द्र आबा व अजदाद के मनसबे नबुव्वत पर आगाही हो चुकी थी। आप अलैहिस्सलाम ने जब देखा कि फ़िरऔन ख़ुदा बना बैठा है और लोगों से अपनी परस्तिश

कराता है तो आपका मुवह्हिद ज़ेहन इस शिर्के सरीह को ज़्यादा अर्सा गवारा न कर सका और आपके पुर जलाल मिज़ाज ने फ़िरऔन को इस नाशाइस्ता हरकत पर टोका। और आपने फ़िरऔन और फ़िरऔनियों की गुमराही का रद्द शुरू कर दिया। बनी इस्राईल आपकी बात सुनते और आपकी इत्तिबा करते, आहिस्ता आहिस्ता इसका चर्चा हो गया। फिरऔन को भी बराहे रास्त ख़ुदाई दावा से टोक चुके थे। इसलिये क़तअ ताल्लुक़ तक नौबत जा पहुंची आपको मुजरिम और बाग़ी समझा जाने लगा, चुनांचे उसके शर से अपने आपको महफ़ूज़ करने के लिये रू पोश हो गये और अगर किसी ज़रूरी काम के लिये आप को शहर में आना पड़ता तो आप ऐसे वक़्त शहर में आते कि कानो कान किसी को ख़बर न हो यह वाक़िया भी उस वक़्त पेश आया जब आप ऐसे वक़्त शहर में आये जब कि लोग आराम कर रहे थे।

चुंनाचे अल्लामा क़रतबी और दीगर मुहक़्क़ेक़ीन ने इसी क़ौल को तरजीह दी।

और इससे पहले अल्लामा क़रतबी लिखते हैं।

आपके शहर में ख़ौफ़ से छुपकर दाख़िल होने की वजह यह है कि इब्ने इस्हाक़ ने कहा कि यह उस वक़्त की बात है जब आपने फ़िरऔन के साथ इख़्तेलाफ़ को ज़ाहिर फ़रमा और फ़िरऔनियों के बुतों और फ़िरऔन की इबादत की मज़म्मत की तो उनकी तरफ़ से शदीद रद्दे अमल हुआ जिसकी वजह से आपने अपने आपको महफ़ूज़ करने के लिये पोशीदा रहने की राह इख़्तेयार की। इन दोनों में ही आप शहर में पोशीदा तौर पर उस वक़्त दाख़िल हुए जब कि वह लोग गफ़लत में थे।

जब आप शहर में दाख़िल हुए तो आपने देखा कि दो आदमी आपस में दस्त व गिरेबान हैं एक इस्राईली और दूसरा कुब्ती। इस्राईली ने आपको मदद के लिये पुकारा। आप अगे बढ़े कि कुबती को दस्त दराज़ी से मना करें जब उसने बात न मानी तो आप ने उसे एक मुक्का रसीद किया, उसे क़त्ल करने का कोई इरादा न था लेकिन वह मुक्का जान लेवा साबित हुआ और उसका क़िस्सा तमाम हो गया।

हज़रत क़तादा ने उन दोनों के लड़ने की वजह यह ब्यान की है कि वह क़बती इस्राईली को लकड़ियों का भारी गट्ठा उठाने का हुक्म दे रहा था उसने उठाने से इंकार कर दिया, चुनांचे उस कुब्ती ने हाकिम का फ़र्द होते हुए उसे ज़द व कोब शुरू की, इतने में आप तशरीफ़ लाये और इस्राईली ने आपसे फ़रियाद की और हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम उसकी फ़रियाद रसी के लिये महज़ इसलिये नहीं गये कि फ़रियाद करने वाला इस्राईली था बल्कि इसकी वजह यह थी कि हर मज़लूम की मदद करना हर दीन में फ़र्ज़ है।

शैतान की तरफ़ क़त्ल को मंसूब करने की वजह : अल्लाह तआला ने काफ़िरों को क़त्ल करना मुबाह कर रखा है लेकिन एक वक़्त तक उनके क़त्ल को मुअख़्ख़र किया गया था कुछ अर्सा बाद क़त्ल करना मुस्तहब होता लेकिन वक़्त से पहले क़त्ल करने से मुस्तहब को तर्के लाज़िम आ गया इस वजह से आपने इस फ़ेअल को शैतान की तरफ़ मंसूब कर दिया, कि मेरा इक़दाम, तर्के मुस्तहब पर शैतान के अमल से है। दूसरी वजह यह है कि आप का इशारा मक़तूल के अमल की तरफ़ था अपने अमल की तरफ़ था ही नहीं आपका मतलब यह था।

यह शख़्स जो क़त्ल हो गया है इसके काम ही शैतानी थे क्योंकि अल्लाह तआला के अहकाम का मुख़ालिफ़ था इसलिये यह क़त्ल का मुस्तहिक़ था।

तीसरी वजह यह थी कि आपने अमल का मायने लश्कर और गरोह लिया।

आपके इरशाद का मक़सद यह था कि क़त्ल होने वाला शख़्स शैतानी लश्कर और शैतानी गरोह से है।

आम तौर पर अरबी मुहावरा फ़लां मिन अमलिश शैतान कहा जाता है जिसका मायने यह लिया ता है कि वह शख़्स शैतानी गरोह से है।

रब्बि इन्नी ज़लमतु नफ़सी फ़ग़फ़िरली कहने का एक मतलब तो यह भी हो सकता है कि ऐ अल्लाह ा मुस्तहब काम मुझसे छूट गया कि मैंने उसे जल्दी क़त्ल कर दिया अगरचे हक़ यह था कि ताख़ीर की जाती इसकी वजह से मैंने अपनी जान पर ज़्यादती की है और तू इस तर्के मुस्तहब को भी माफ़ फ़रमा।

दूसरा मतलब यह है:

ऐ मेरे रब मैंने इस मलऊन को क़त्ल करके अपनी जान के लिये वबाल बना लिया है क्योंकि अगर फ़िरऔन को यह पता चल गया तो वह मुझे क़त्ल कर देगा इसलिये ऐ अल्लाह मेरी पर्दा पोशी फ़रमा कि यह ख़बर फ़िरऔन तक न पहुंचे तो अल्लाह तआला ने फ़िरऔन तक इस ख़बर को पहुंचने से मख़फ़ी रखा।

क़त्ल का राज़ ज़ाहिर होना : तो सुबह की उस शहर में डरते हुए इस इंतेज़ार में कि क्या होता है? जभी देखा कि वह जिसने कल उनसे मदद चाही थी फ़रियाद कर रहा है मूसा अलैहिस्सलाम ने उससे फ़रमाया बेशक तू खुला गुमराह है तो जब मूसा अलैहिस्सलाम ने चाहा कि उस पर गिरफ़्त करे जो उन दोनों का दुश्मन है वह बोला ऐ मूसा अलैहिस्सलाम क्या तुम मुझे ऐसा ही क़त्ल करना चाहते हो जैसा तुम ने कल एक शख़्स को क़त्ल कर दिया तुम तो यही चाहते हो कि ज़मीन में सख़्त गीर बनो और इस्लाह नहीं करना चाहते हो।

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा ने फ़रमाया कि फ़िरऔन की क़ौम के लोगों ने फ़िरऔन को इत्तेला दी कि किसी बनी इस्राईल ने हमारे एक आदमी को मार डाला है उस पर फ़िरऔन ने कहा कि क़ातिल और गवाहों को तलाश करो, फ़िरऔनी गश्त करते फिरते थे और उन्हें कोई सबूत नहीं मिलता था। दूसरे रोज़ जब हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम को फिर ऐसा इत्तेफ़ाक़ पेश आया कि वही बनी इस्राईल जिसने एक रोज़ पहले उनसे मदद चाही थी आज फिर एक फ़िरऔनी से लड़ रहा था और हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम को देखकर उनसे फ़रियाद करने लगा तब हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने कहा बेशक तू खुला गुमराह है यानी हर रोज़ लोगों से लड़ता ही रहता है अपने आपको भी मुसीबत और परेशानी में डालता है और अपने मददगारों को भी। और तू एहतियात क्यों नहीं करता? हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने उसे ख़ूब रोब और डांट डपट के तौर पर इरशाद फ़रमाया।

फिर मूसा अलैहिस्सलाम को उस पर रहम भी आ गया कि फ़िरऔनी बड़े ज़ालिम हैं लिहाज़ा इसकी

इमदाद करनी ही चाहिये जब आप आगे बढ़े कि अपने और उस बनी इस्राईल के दुश्मन की गिरफ़्त करें तो उस बनी इस्राईल ने ग़लत फ़हमी में ख़ौफ़ करते हुए कि आज शायद मेरा काम तमाम करना चाहते हैं कहा कि ऐ मूसा अलैहिस्सलाम आज तुम मुझे क़त्ल करना चाहते हो जैसे कल एक शख़्स को तुम ने क़त्ल कर दिया था? उसका यह कहना ही था कि राज़ खुल गया-कि कल फ़िरऔनी को क़त्ल मूसा अलैहिस्सलाम ने किया है जब फ़िरऔनी को यह ख़बर मिली तो उसने मूसा अलैहिस्सलाम को क़त्ल करने का हुक्म नाफ़िज़ कर दिया लोग आपको ढूंढने लगे।

एक मुख़बर ने मूसा अलैहिस्सलाम को बता दिया : और शहर के परले किनारे से एक शख़्स दौड़ता हुआ आया कहा ऐ मूसा अलैहिस्सलाम बेशक दरबार वाले (फ़िरऔनी दरबारी) आपके क़त्ल का मश्वरा कर रहे हैं तो निकल जाइये मैं आपका ख़ैर ख़्वाह हूं। मूसा अलैहिस्सलाम को ख़बर देने वाला..... कि वह लोग तुम्हारे क़त्ल का मश्वरा कर रहे हैं और फ़िरऔन ने तुम्हें क़त्ल करने का फ़ैसला भी कर दिया है वह शख़्स आले फ़िरऔन से था, जो मोमिन था लेकिन ईमान को छुपाता था।

मूसा अलैहिस्सलाम का मदयन की तरफ़ हिजरत करना : तो उस शहर से निकले डरते हुए इस इंतेज़ार में कि अब क्या होता है अर्ज़ की ऐ मेरे रब मुझे सितम गारों (ज़ालिमों) से बचा ले और जब मदयन की तरफ़ मुतावज्जेह हुए कहा क़रीब है कि मेरा रब मुझे सीधी राह बताये।

मदयन से मुराद यह शहर है जहां हज़रत शोएब अलैहिस्सलाम तशरीफ़ फ़रमा थे। उस शहर को मदयन बिन इब्राहीम की तरफ़ मंसूब किया गया था। मिस्र और मदयन में आठ दिनों की मसाफ़त थी उस शहर पर फ़िरऔन की हुक्मरानी नहीं थी। इसी वजह से अल्लाह तआला ने आपको उस शहर की जानिब जाने की हिदायत दी। हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने न तो यह शहर इससे पहले कभी देखा था और न ही इसका रास्ता जानते थे। कोई सवारी पास नहीं थी रास्ते का कोई ख़र्च अपने पास नहीं था। सिर्फ़ दरख़्तों के पत्तों पर गुज़र करके आपने रास्ता की मुसाफ़त को तै किया। रास्ता दिखाने के लिये अल्लाह तआला ने आपकी मदद के लिये जिब्राईल अमीन अलैहिस्सलाम को मुक़र्रर फ़रमाया। फ़िरऔनी लोग आपको तलाश करते रहे लेकिन आपको तलाश न कर सके क्योंकि मदयन को जाने वाले तीन रास्ते थे आप ने दर्मियानी राह को इख़्तेयार किया और वह दूसरे रास्तों पर आपको तलाश करते रहे। जब रब तआला आपकी हिफ़ाज़त कर रहा था तो वह आपको तलाश कर भी कैसे सकते थे।

मूसा अलैहिस्सलाम मदयन के कुंए पर : और आप जब मदयन के पानी पर आये वहां लोगों के एक गरोह को देखा कि अपने जानवरों को पानी पिला रहे हैं और इनसे उस तरफ़ दो औरतें देखीं कि अपने जानवरों को रोक रही हैं मूसा अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया तुम दोनों का क्या हाल है? वह बोलीं हम पानी नहीं पिलाती। जब तक सब चरवाहे पिलाकर फेर न ले जायें। और हमारे बाप बूढ़े हैं। तो मूसा अलैहिस्सलाम ने इन दोनों को पानी पिला दिया। फिर साया की तरफ़ फिरा अर्ज़ की : ऐ मेरे रब मैं उस खाने का जो तू मेरे लिए उतारे मोहताज हूं।

जब आप मदयन के एक कुंए पर पहुंचे तो देखा कि लोग कसीर मिक़दार में कुंए पर जमा हैं जो अपने अपने जानवरों को पानी पिला रहे हैं, कोई ऊंटों को पानी पिला रहा है, कोई गाए भैंस को और कोई भेड़ बकरियों को,लेकिन देखा कि दो औरतें एक तरफ़ अपने जानवरों को रोक कर खड़ी हैं, वह

यह नहीं चाहतीं कि मज़ाहमत करके आगे बढ़ें, उनके नज़दीक लोगों से पानी हासिल करने में मज़ाहमत करना, जहां बुरी बात थी वहां औरतों को मर्दों से आज़ दाना मेल जोल और धक्का बाज़ी हराम थी। वह अपनी कमज़ोरी की वजह से भी दूर खड़ी थीं कि कुएं से पानी निकालना ज़ोर आवर मर्दों का काम है। इस पर इस्तेमाल होने वाले डोल को दस आदमी मिलकर निकालते थे। और कुंए के मुंह पर एक पत्थर रख दिया जाता था उसे ढकने के लिये और हटाने के लिये भी दस आदमी मिलकर हटाते, नीज़ वह यह भी न चाहती थीं कि उनके जानवर दूसरे लोगों के जानवरों से मिल जुल जायें कि इन्हें अलग करने में दुश्वारी हो। इन वजूह के पेशे नज़र वह अपने जानवर को अलग एक तरफ़ रोक कर खड़ी थीं, लोगों के फ़ारिग़ होकर चले जाने का इंतेज़ार कर रही थीं।

मूसा अलैहिस्सलाम ने उन दोनों औरतों से पूछा कि तुम एक तरफ़ अपने जानवरों को रोक कर क्यों खड़ी हो? तो उन्होंने बताया कि हमारे बाप बहुत बूढ़े हैं हम ख़ुद पानी निकाल नहीं सकते इसलिये एक तरफ़ खड़ी रहती हैं कि लोग अपने जानवरों को पानी पिलाकर चले जायें तो जो पानी हौज़ में बच जाये वह हम अपने जानवरों को पिला लें। मूसा अलैहिस्सलाम ने लोगों को उन पर रहम करने के लिये कहा लेकिन उन्होंने कहा कि अगर तुम इतने हमदर्द हो तो ख़ुद ही पिला दो। यह कहते हुए उन्होंने मिलकर भारी पत्थर कुएं के मुंह पर रख दिया आपने अकेले ही उस पत्थर को हटा दिया और दस आदमियों के निकालने वाले डोल को अकेले ही निकाल लिया।

और बरकत की दुआ की और उनकी बकरियों को पानी के क़रीब किया। वह एक ही डोल से पानी पीकर सैराब हो गईं।

फिर आप एक तरफ़ साए में बैठ गये और अल्लाह तआला के हुजूर अर्ज़ की कि ऐ अल्लाह मुझे खाना अता फ़रमा दे, क्योंकि आप सात दिनों से सिर्फ़ दरख़्तों के पत्ते ही खा रहे थे।

सुब्हानल्लाह! नबी की शाने अज़मत का अंदाज़ा कीजिये कि सात दिनों से भूखे लेकिन दस आदमियों से बढ़कर ज़ोर अभी मौजूद है सफर की थकान भी और सख़्त तपती धूप लेकिन कोई चीज़ भी रुकावट न बन सकी, हमदर्दी की एक अज़ीम मिसाल क़ायम कर दी।

शोएब अलैहिस्सलाम का मूसा अलैहिस्सलाम को तलब करना : वह दोनों लड़कियां शोएब अलैहिस्सलाम की बेटियां थीं जब आम मामूल से हटकर आज वह जल्दी घर लौटकर आ गईं तो उनसे उन के बाप ने पूछा कि आज तुम इतनी जल्दी कैसे आ गई हो? तो उन्होंने बताया कि आज कुंए पर एक नेक और बहादुर शख़्स था जिसने हमारी बकरियों को पानी पिला दिया इसलिये हम जल्दी वापस आ गये कि हमें तमाम लोगों के फ़ारिग़ होने और बाक़ी बच जाने वाले पानी का इंतेज़ार नहीं करना पड़ा।

शोएब अलैहिस्सलाम ने कहा कि जाओ उस शख़्स को बुलाकर लाओ। यह बात भी वाज़ेह हो रही है कि अल्लाह तआला ने अपने नबी को इल्म अता फ़रमा दिया होगा कि आने वाला शख़्स मूसा अलैहिस्सलाम है वह भी मेरा नबी है जिसको कुछ अर्सा बाद मुझे ऐलान नबुव्वत का हुक्म देना है उसे तुम अपने पास रखो।

तो उन दोनों में से एक उसके पास शर्म से चलती हुई आई बोली, मेरा बाप तुम्हें बुलाता है कि तुम्हें बदला दे इसका जो तुमने हमारे जानवरों को पानी पिलाया है। जब मूसा अलैहिस्सलाम उसके पास आये और उसे बातें कर सुनाई उसने कहा डरिये नहीं आप बच गये ज़ालिमों से।

अगरचे उस औरत ने तो यह कहा था कि तुम को मेरे बाप बुला रहे हैं ताकि तुम्हें उजरत अता करें जो तुमने हमारे जानवरों को पानी पिलाया है।

लेकिन मूसा अलैहिस्सलाम उजरत हासिल करने की ग़र्ज़ से नहीं गये थे बल्कि सिर्फ़ शोएब अलैहिस्सलाम की ज़्यारत करने की ग़र्ज़ से गये थे।

आपने इस बात को नापसंद किया था कि उजरत लेने के लिये मैं जाऊं यही वजह है कि जब आप शोएब अलैहिस्सलाम के घर पहुंचे तो आपने मूसा अलैहिस्सलाम को खाना पेश किया तो मूसा अलैहिस्सलाम ने कहा आऊज़ू बिल्लाह। अल्लाह की पनाह। शोएब अलैहिस्सलाम ने पूछा तुम ने यह क्यों कहा? तो आपने जवाब दिया।

बेशक हमारे घराने के लोग अपने दीन को दुनिया के बदले नहीं बेचते, और किसी भलाई की कोई क़ीमत नहीं लिया करते हैं। शोएब अलैहिस्सलाम ने कहाः

लेकिन वह मेरी और मेरे आबा व अजदाद की आदत है कि हम मेहमानों को खाना खिलाते हैं आपके इस इरशाद पर मूसा अलैहिस्सलाम बैठे और खाना खाया।

लेकिन फिर भी बार बार ख़्याल यही आ रहा था कि कहीं मेरी नेकी के अमल की यह उजरत न हो, जिससे मेरे अमल के ख़ुलूस में फ़र्क़ आये। बाद अज़ां शोएब अलैहिस्सलाम ने पूछा तुम कौन हो और कहां से आए हो? आप अलैहिस्सलाम ने बताया मैं मूसा बिन इमरान बिन क़ाहस बिन लादी बिन याक़ूब हूं। फिर आप अलैहिस्सलाम ने अपना पूरा वाक़िया ब्यान किया। बच्चों का क़त्ल किया जाना आपको दरिया में डाल देना और दाया का तलब करना। आपका अपनी वालदा के पास परवरिश पाना फिर क़ुबती का उनके हाथों क़त्ल होना और फ़िरऔनियों का आपको तलाश करना, तमाम वाक़िया सुनने के बाद शोएब अलैहिस्सलाम ने फ़रमायाः

ख़ौफ़ न करो ज़ालिमों से तुम्हें नजात मिल सकती है।

यानी हमारे इलाक़े पर फ़िरऔन और उसके लश्कर का इंशाअल्लाह तसल्लुत नहीं चलेगा यह भी दर हक़ीक़त अल्लाह तआला की अज़ीम कुदरत का एक करिश्मा है कि फ़िरऔन अपने लाखों लश्करियों के होते हुए मूसा अलैहिस्सलाम को तलाश करने के बावजूद सिर्फ़ आठ दिन की मुसाफ़त पर तलाश न कर सका।

शोएब अलैहिस्सलाम को बेटी का मश्वरा : उन दोनों में से एक ने कहा कि मेरे बाप इनको नौकर रख लो बेशक बेहतर नौकर वह है जो ताक़तवर और अमानतदार हो।

चूंकि शोएब की बेटी मूसा अलैहिस्सलाम की बहादुरी को देख चुकी थी कि दस आदमियों के निकालने वाले डोल को आपने अकेले ही निकाल लिया और भारी पत्थर को अकेले ही कुंए के मुंह से हटा दिया और आपके तक़्वा को भी देख चुकी थी क्योंकि उनसे सवाल करने में आपकी निगाहें नीची

थीं और उसके साथ चलते हुए भी यही कहा कि तुम पीछे पीछे चलो। मैं आगे चलता हूं तुम मुझे पीछे से राह बताती आना। इसकी वजह भी यही थी कि अगर मैं पीछे चला तो मेरी निगाह उस पर पड़ेगी। ख़्याल रहे कि यह सब कुछ अल्लाह तआला की तरफ़ से वही के ज़रिये हो रहा था यह कहना कि शोएब अलैहिस्सलाम ने अपनी जवान बेटी को अकेले ही एक अजनबी को बुलाने के लिये भेज दिया था, दुरुस्त नहीं अल्लामा राज़ी फ़रमाते हैं:

शोएब अलैहिस्सलाम को वही़ के ज़रिये अल्लाह तआला की तरफ़ से हुक्म हुआ कि आप अपनी बेटी को भेजकर उस शख़्स को बुलायें आपकी बेटी पाक दामन, तमाम उयूब से पाक और बा एतेमाद है और जिसको बुलाने के लिये जा रही है वह भी तो मरो प्यारा साहबे कमाल नबी है। शोएब अलैहिस्सलाम ने मूसा अलैहिस्सलाम के दो कमाल ज़िक्र किये। कुव्वत और अमानत। यानी आप क़वी (बहादुर) और अमीन (साहबे तक़्वा) हैं। हालांकि दो और वस्फ़ जब तक न पाए जायें उस वक़्त तक इंसान कामिल इंसान नहीं होता। वह हैं फ़तानत और ज़ीरक होना। लेकिन यह दोनों वस्फ़ अमानत में मौजूद हैं क्योंकि कामिल अमानत इंसान में फ़तानत और अक़्लमंदी के बग़ैर नहीं पाई जा सकती।

सुब्हानल्लाह शोएब अलैहिस्सलाम की बेटी का इंतेख़ाब क्या ख़ूब था? कि बहादुर होना जो काफ़िरों के साथ जंग भी कर सके और साहबे तक़्वा अक्लमंद और समझदार होना ही इंसान को इंसान बनाता है।

और फिर यह इंतेख़ाब भी मश्वरा की हद तक था। अर्ज़ बाप से ही किया क्योंकि आप जानती थीं कि हमारे बाप ने अपनी शरीअत के मुताबिक़ किसी शख़्स को अपने पास रख कर उससे बतौर महर ख़िदमत लेकर हमारा निकाह उससे करना है।

आज की लड़कियां इससे सबक़ हासिल करें जो वालदैन की मर्ज़ी के बग़ैर सब्ज़ बाग़ दिखाने वाले लड़कों को पसंद करके वालदैन को उम्र भर का रोग लगाकर अज़ ख़ुद ही उनके पास चली जाती हैं लेकिन ऐसी लड़कियां सौ फ़ीसद नाकाम रहती हैं, चंद दिनों के बाद उन्हें ज़िल्लत के बग़ैर कुछ भी हासिल नहीं होता।

शोएब अलैहिस्सलाम की मूसा अलैहिस्सलाम को शादी की पेशकश : कहा मैं चाहता हूं कि अपनी दोनों बेटियों में से एक तुम्हें ब्याह दूं इस महर पर कि तुम आठ बरस मेरी मुलाज़मत करो, फिर अगर पूरे दस बरस कर लो तो तुम्हारी तरफ़ से है। और मैं मशक़्क़त में डालना नहीं चाहता। क़रीब है इंशाअल्लाह तुम मुझे नेकों में पाओगे। मूसा अलैहिस्सलाम ने कहा यह मेरे और तुम्हारे दर्मियान इक़रार हो चुका है मैं इन दोनों में जो मेयाद पूरी कर दूं तो मुझ पर कोई मुतालबा नहीं हमारे इस क़ौल पर अल्लाह का ज़िम्मा है।

शोएब अलैहिस्सलाम का कोई बेटा नहीं था इसलिये आप मूसा अलैहिस्सलाम को अपने साथ रखना चाहते थे लिहाज़ा आपने मुनासिब समझा कि एक बेटी का निकाह इस नेक शख़्स से कर दिया जाये। आप अलैहिस्सलाम ने उनसे मश्वरा लिया कि अगर तुम्हारा निकाह इन दो बेटियों में से एक से कर दिया जाये तो क्या तुम महर के बदले आठ साल तक हमारी ख़िदमत कर सकोगे? यानी आठ साल तो तुम पर वाजिब होंगे मज़ीद दो साल ख़िदमत करना मुस्तहब होगा वह तुम्हारी मर्ज़ी पर मुनहसिर

होगा। मूसा अलैहिस्सलाम ने इसे कबूल कर लिया और अर्ज़ किया कि इन दो मुद्दतों में से जो भी मैं पूरी कर लूं मुझे यहां रहने पर मजबूर न किया जाये। इस तरह दोनों के दर्मियान मुआहिदा तय हो जाने के बाद निकाह हो गया और मूसा अलैहिस्सलाम ने महर अदा करने के लिये आपके घर बहैसियत दामाद ख़िदमत करनी शुरू कर दी। शोएब अलैहिस्सलाम ने मूसा अलैहिस्सलाम को बकरियां हांकने और उन्हें दरख़्तों के पत्तें झाड़कर खिलाने के लिये एक असा दिया जो सागवान के दरख़्त की लकड़ी का बना हुआ था जो आदम अलैहिस्सलाम साथ लाए थे और फिर अंबियाए किराम से मुन्तकिल होता हुआ हज़रत शोएब अलैहिस्सलाम तक पहुंचा था। अब मूसा अलैहिस्सलाम के पास आ गया यही असा बाद में आपका मोजिज़ा बन गया।

मुद्दत की तकमील के बाद मिस्र वापसी : फिर जब मूसा अलैहिस्सलाम ने अपनी मैयाद पूरी कर ली और अपनी बीबी को लेकर चले। तूर की तरफ़ से एक आग देखी अपने घर वाली से कहा। तुम ठहरो मुझे तूर की तरफ़ से एक आग नज़र पड़ी है शायद मैं वहां से कुछ खबर लाऊं या तुम्हारे लिये कोई आग की चिंगारी लाऊं कि तुम तापो। फिर जब आग के पास आए निदा की गई मैदान के दायें किनारे से बर्कत वाले मक़ाम में दरख़्त से कि ऐ मूसा अलैहिस्सलाम बेशक मैं ही अल्लाह रब हूं सारे जहान का।

हज़रत शोएब अलैहिस्सलाम ने आठ साल और दस साल ख़िदमत करने के मुताल्लिक़ कहा था मूसा अलैहिस्सलाम ने इन दोनों में से कौन सी मुद्दत पूरी की? इसके मुताल्लिक़ इमाम बुख़ारी और दूसरे कई हज़रात ने हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा का क़ौल ब्यान किया है कि आप से पूछा गया कि मूसा अलैहिस्सलाम ने कौन सी मुद्दत पूरी की थी तो आपने जवाब दिया:

कि मूसा अलैहिस्सलाम ने अक्सर मुद्दत यानी दस साल मुकम्मल ख़िदमत की थी (क्योंकि आठ साल तो वाजिब थे और ऊपर दो साल मुस्तहब थे जो पाकीज़ा और ज़्यादा सवाब का ज़रिया थे इसलिये आपने ज़्यादा सवाब वाली मुद्दत को भी यक़ीनन पूरा किया) और अल्लाह तआला का रसूल जो कहता है उस पर अमल करता है।

दस साल जब आपने ख़िदमत के मुकम्मल कर लिए तो आपने शोएब अलैहिस्सलाम से मिस्र जाने की इजाज़त तलब की ताकि अपनी वालदा और अपने भाई से मुलाक़ात करें और यह ख़्याल किया कि कुब्ती के क़त्ल को भी काफ़ी अर्सा गुज़र चुका है अब मामला कुछ ठंडा हो चुका होगा।

हज़रत शोएब अलैहिस्सलाम ने आपको इजाज़त दे दी। आपने अपनी अहलिया को साथ लिया एक सवारी और कुछ बकरियां भी साथ लीं। मुख़्तसर सामाने सफ़र ज़रूरयात के लिये साथ लिया और शाम के बादशाहें के ख़तरे के पेशे नज़र आपने आम रास्ता को छोड़कर एक और सहराई रास्ता इख़्तेयार किया, रास्ता भी भूल गये। आपकी बकरियां वग़ैरह भी इधर उधर हो गई। पानी वग़ैरह भी पास नहीं था। तूर की ग़रबी जानिब वादी तवा में जब आप पहुंचे तो जुमा की रात को जो बहुत ज़्यादा सर्द थी आपके बेटे की पैदाईश हुई। आपने तूर की बायें जानिब रास्ता में आग देखी तो अपनी अहलिया को कहा:

तुम यहां ही ठहरो मैं वहां से आग की चिंगारी ले आऊं या वहां से आग सुलगाकर लाऊं ताकि आग ताप सको, और सर्दी कम महसूस करो।

ख़्याल रहे कि कुरआन पाक में चिंगारी शोला और शहाब के लफ़्ज़ इस्तेमाल हुए हैं यानी मैं चिंगारी ले आऊं या शोला ले आऊं, यानी कोई ऐसी चीज़ वहां से सुलगाकर ले आऊं या वहां कोई आदमी मौजूद हो तो उससे यह राह मामूल कर लूं।

आप अलैहिस्सलाम जब आये तो देखा कि आग आहिस्ता आहिस्ता शोले मार रही है जब क़रीब आये तो आग ने शिद्दत इख़्तेयार कर ली। बहुत बड़ी शोले मारने वाली आग नज़र आई। अजीब मंज़र यह था कि आग एक दरख़्त से निकल रही थी आग जितनी ज़्यादा होती चली जाती है इसी तरह दरख़्त के पत्ते भी ज़्यादा सब्ज़ होते चले जाते हैं, आप इसी सोच में कुछ देर तक गुम रहे कि आग की शिद्दत कहां और दरख़्त के पत्तों का सब्ज़ होना कहां? काफ़ी देर सोचने के बाद अगरचे ज़ेहन ने कोई फ़ैसला न किया ताहम ख़्याल किया कि आग सुलगा कर ले जाऊं जब आप इरादा करते हैं कि आग सुलगाऊं तो आग दूर हो जाती है फिर सोच में गुम हो जाते हैं।

तंबीह : आग की चार क़िस्मे हैं।

एक वह जो खाती है पीती नहीं यह है दुनिया की आग।

दूसरी वह जो खाती भी है और पीती भी है वह है मेदा (पेट) की आग।

तीसरी वह जो खाती भी नहीं और पीती भी नहीं वह आग है जो मूसा अलैहिस्सलाम ने देखी।

चौथी वह आग है जो पीती है खाती नहीं यह वह आग है, जिसका ज़िक्र अल्लाह तआला ने इन अल्फ़ाज़ मुबारका से किया है।

जिसने तुम्हारे लिये हर दरख़्त से आग पैदा की जभी तुम इससे आग सुलगाते हो।

यानी अरब के इलाक़ों में दो दरख़्त होते हैं जो वहां जंगलों में कसरत से पाए जाते हैं एक का नाम मर्ख़ और दूसरे का नाम अफ़ार है इनकी ख़ासियत यह है कि जब इनकी सब्ज़ शाख़ें काटकर एक दूसरे पर रगड़ी जायें तो इनसे आग निकलती है बावजूद यह कि वह इतने तर होते हैं कि उनसे पानी टपकता है इसमें रब तआला की कुदरत की कितनी अज़ीम निशानियां हैं कि आग और पानी को एक जगह जमा कर दिया है।

एक और लिहाज़ पर भी आग की चार क़िस्में हैं।

एक वह आग जिसमें रौशनी तो थी लेकिन जलाने की तासीर नहीं थी यह वह आग है जो हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने देखी थी।

दूसरी वह जिसमें जलाने की ताक़त तो होगी लेकिन उसमें रौशनी नहीं होगी। यह जहन्नम की आग है।

तीसरी वह आग है जिसमें रौशनी भी पाई जाती है और जलाने की ताक़त भी उसे हासिल है यह दुनिया की आग है।

चौथी क़िस्म यह है कि इसमें रौशनी भी नहीं और जलाने की तासीर भी नहीं जो आग दरख़्त में रखी गई है जब उनकी शाख़ों को न रगड़ें उस वक़्त तक उनमें आग तो होती है लेकिन ज़ाहिर नहीं होती।

मूसा अलैहिस्सलाम आग के अजीब मंज़र से सोच में गुम थे कि आप को आवाज़ दी गई।

ऐ मूसा अलैहिस्सलाम बेशक मैं तेरा रब हूं तो तू अपने जूते उतार डाल बेशक तू पाक जंगल "तवा" में है।

अल्लाह तआला ने आप अलैहिस्सलाम को अपने फ़ज़्ल व करम से यह इल्म दे दिया कि आप ने आवाज़ को सुनकर समझ लिया यक़ीन कर लिया कि यह मेरे रब की आवाज़ है। यह आपका मोजिज़ा है रब तआला की आवाज़ किसी मकान से नहीं आ रही थी वह मकान से पाक है उसकी आवाज़ की कैफ़ियत को भी नहीं ब्यान किया जा सकता। मूसा अलैहिस्सलाम ने जब दरख़्त से आसमानों की तरफ़ उठने वाले नूर को देखा और उसमें फ़रिश्तों की तस्बीहात को सुना और आप को जब यह आवाज़ दी तो आपने अपनी आंखों पर हाथ रखकर अर्ज़ किया। लब्बैक मैं तेरी ख़िदमत में हाज़िर हूं मैं तेरी आवाज़ तो सुन रहा हूं तुझे देख नहीं रहा तू कहां है रब तआला की तरफ़ से आवाज़ आई।

मैं तुम्हारे पास हूं, तुम्हारे सामने हूं, तुम्हारे पीछे हूं, तुम्हारा इहाता किए हुए हूं और तुम से भी तुम्हारे ज़्यादा क़रीब हूं।

आपने तमाम वसवसात को बालाए ताक़ रखते हुए कहा मैं अल्लाह तआला की आवाज़ को अपने ऊपर से और अपने नीचे से और अपने पीछे से और अपने दायें तरफ़ से और अपनी बायें तरफ़ से ऐसे ही सुन रहा हूं जैसे सामने से सुन रहा हूं।

मुझे यक़ीन हो गया कि यह कलाम मख़लूक़ में से किसी का भी नहीं हो सकता।

आप अपने जूते उतार दो। एक तो इसका मश्हूर व मारूफ़ मतलब यह है कि आप पाकीज़ा जगह आ गये हैं जहां मेरी तजल्लियात का ज़हूर हो रहा है और मैं तुमसे हम कलाम हूं इसलिये अदब का तक़ाज़ा यह है कि तुम अपने जूते उतार दो। एक और वजह जूते उतारने की यह भी थी।

हज़रत हसन, सईद बिन जुबैर और मुजाहिद का क़ौल यह है कि आपको जूते उतारने का हुक्म इसलिये दिया गया था कि आपके क़दमों को इस सर ज़मीन की बर्कत हासिल हो जाये।

और वजह यह भी ब्यान की गई कि ख़्वाब में जूता देखने से मुराद ज़ौजा और औलाद लिया जाता है अब मायने यह होगा कि आप अपने दिल में ज़ौजा और बच्चे का ख़्याल न रखो, उनकी तरफ़ मश्गूल न हो बल्कि ख़ालिस तवज्जोह मेरी ज़ाते किब्रयाई की तरफ़ हो। और मतलब यह भी हो सकता है कि दुनिया और आख़रत को छोड़ दो गोया कि आप को हुक्म दिया गया कि आपका दिल अल्लाह तआला के सिवा किसी की तरफ़ तवज्जोह न करे बल्कि कुल्ली तौर पर तुम अल्लाह तआला की मारफ़त में अपने दिल को मुस्तग़रक़ कर दो।

रब तआला के मूसा अलैहिस्सलाम को इरशादात : और मैंने तुझे पसंद किया अब कान लगाकर सुन जो तुझे वही होती है बेशक मैं ही हूं अल्लाह तआला कि मेरे सिवा कोई माबूद नहीं तू मेरी बंदगी कर और मेरी याद के लिए नमाज़ क़ायम रख, बेशक क़यामत आने वाली है क़रीब था कि मैं उसे सब से छिपाऊं कि हर जान अपनी कोशिश का बदला पाए तो हरगिज़ तुझे उसके मानने से वह बाज़ न रखे, जो उस पर ईमान नहीं लाता और अपनी ख़्वाहिश के पीछे चला फिर तो हलाक हो जाये।

रब तआला ने फ़रमाया ऐ मूसा अलैहिस्सलाम मैंने अपनी रिसालत व नबुव्वत के लिये तुम्हें तमाम लोगों और तुम्हारी क़ौम से चुन लिया है इसलिये अब मैं तुम्हें वही करने लगा हूं तुम कामिल तवज्जोह से सुनना। रब तआला के इस हुक्म को सुनते ही आप एक पत्थर पर खड़े हो गये और एक पत्थर से सहारा लगा लिया। अपने दायें हाथ को दूसरे हाथ पर रखा अपनी ठोडी को अपने सीने से लगाया और कामिल तरीक़ा से अल्लाह तआला के कलाम को सुनने की तरफ़ मुतावज्जेह हो गये।

फ़ायदा : हज़रत वहब रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं:

सुनने के आदाब यह हैं कि इंसान अपने तमाम आज़ा को हरकत देने से बाज़ रखे नज़र नीचे रखे यानी इधर उधर न देखे बल्कि कलाम करने वाले की तरफ़ ही सिर्फ़ मुतावज्जेह हो और मुकम्मल तौर पर कान लगाकर सुने और अक़्ल को हाज़िर रखे और फिर काम करने का पक्का इरादा रखे बस यही वह सुनना है जो अल्लाह तआला को पसंद है।

फ़ायदा : इसी अदांज़ व आदाब पर सबक़ सुनने वाले तलबा और अल्लाह तआला की मेहरबानी से कामयाब हो जाते हैं वरना एक ही क्लास में बैठे हुए ज़ेहीन और ज़ीरक तलबा महरूम हो जाते हैं। कम ज़ेहन वाले बरतरी ले जाते हैं शरारती क़िस्म के तलबा असातज़ा के अदब से महरूम, चौधराहट के तलबगार हज़रात की क़िस्मत में महरूमियत के सिवा कुछ नहीं होता।

फिर अल्लाह तआला ने सबसे पहले अपनी वहदानियत का ज़िक्र फ़रमाया क्योंकि उसकी ज़ात व सिफ़ात पर ईमान लाना असलल उसूल (सब उसूलों की असल) है फिर अपनी इबादत करने का हुक्म दिया, फिर नमाज़ का हुक्म दिया कि यह मेरी याद का ज़रिया है फिर क़यामत का ज़िक्र फ़रमाया क्योंकि जिसे यह यक़ीन होगा कि क़यामत आनी है और नेकियों और बुराईयों का हिसाब भी होना है वही शख़्स ईमान लायेगा और इबादत भी करेगा और हर्रिमात से इज्तेनाब भी करेगा, फिर क़यामत को मख़फ़ी रखने का ज़िक्र फ़रमाया इसलिये कि अगर वक़्त बता दिया जाता तो लोग कहते अभी क़यामत दूर है, दूसरे मक़ाम के क़रीब होने का ज़िक्र किया कि उख़रवी ला–ज़वाल ज़िन्दगी के मुक़ाबिल यक़ीनन क़यामत क़रीब ही है।

मूसा अलैहिस्सलाम को मोजिज़ात अता होना : और यह तेरे दायें हाथ में क्या है ऐ मूसा मूसा अलैहिस्सलाम ने अर्ज़ की, यह मेरा असा है मैं इस पर सहारा लगाता हूं और इससे अपनी बकरियों के लिये पत्ते झाड़ता हूं और मेरे इस में और काम हैं। फ़रमायाः इसे डाल दे ऐ मूसा अलैहिस्सलाम! तो मूसा अलैहिस्सलाम ने डाल दिया तो वह जभी दौड़ता हुआ सांप हो गया फ़रमाया इसे उठा ले और डर नहीं। अब हम इसे फिर पहली तरह कर देंगे। और अपने हाथ अपने बाज़ू से मिला ख़ूब सफ़ेद निकले बग़ैर किसी मर्ज़ के। एक और निशानी कि हम तुम्हें बड़ी बड़ी निशानियां दिखायें।

तुम्हारे दायें हाथ में क्या है? इशारा है असा की तरफ़ और बिय मी न का से मुराद आपका हाथ। जब अल्लाह तआला ने इरशादा फ़रमाया दोनों की तरफ़ तो हर एक को ग़ालिब मोजिज़ा और रौशन दलील बना दिया। जमादियत (बे जान जिस्म) से मक़ामे करामत तक पहुंचा दिया। जब रब तआला की एक नज़र से जमाद हैवान बन गया और कसीफ़ जिस्म नूरानी और लतीफ़ बन गया, तो कौन सी ताज्जुब वाली बात है कि मुसलमानों के गुनाहों की वजह से मुर्दा दिलों को इबादत की सआदत और

नूरे मारफ़त हासिल हो जाये जब कि अल्लाह तआला अपने बंदों के दिलों को हर रोज़ तीन सौ साठ मर्तबा अपनी नज़रे रहमत से नवाज़ता है। मूसा अलैहिस्सलाम के दायें हाथ की बर्कत की वजह से जब असा अज़्दहा बन गया और आप अलैहिस्सलाम का अज़ीम मोजिज़ा बन गया तो कौन सा मक़ामे ताज्जुब है? कि मोमिन का दिल बुराईयों से निकल कर नूरे मारफ़त की तरफ़ मुनतक़िल हो जाये? जब कि वह अल्लाह तआला के क़ब्ज़ए कुदरत में होता है।

रब तआला ने आपसे पूछा तुम्हारे दायें हाथ में क्या है? ताकि आप जब जवाब देंगे कि यह असा है तो फिर अज़्दहा बनने पर आपको कोई ख़ौफ़ नहीं होगा कि यह तो वही असा है जो अभी मैंने फेंका है।

फ़ायदा : मूसा अलैहिस्सलाम से अल्लाह तआला के कलाम को आम लोगों के सामने ज़ाहिर कर दिया गया कि रब तआला ने आपसे क्या फ़रमाया और आपने क्या अर्ज़ किया? लेकिन नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से अल्लाह तआला ने जो कलाम फ़रमाया उसे यूं ज़िक्र किया।

वही फ़रमाई अपने बंदे को जो वही फ़रमाई, उसकी तफ़सील नहीं ब्यान फ़रमाई कि जो बातें हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से हुई वह आपके और अल्लाह तआला के दर्मियान राज़ की बातें थीं मख़लूक़ से कोई इसका अहल ही नहीं था कि उसे बताया जाता।

मूसा अलैहिस्सलाम को अल्लाह तआला ने दुनिया में अपने कलाम से मुशर्रफ़ फ़रमाया तो क़यामत नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की उम्मत को अल्लाह तआला अपने कलाम और सलाम से इज़्ज़त व तकरीम बख़्शेगा रब तआला का इरशाद गिरामी है।

उन पर सलाम होगा मेहरबान रब तआला का फ़रमाया हुआ।

मूसा अलैहिस्सलाम ने सवाल के जवाब में अर्ज़ किया यह मेरा असा है। आप अल्लाह तआला से कलाम भी कर रहे हैं लेकिन आप को अल्लाह तआला की मारफ़त में मुस्तग़रक होने का मक़ाम हासिल न हुआ क्योंकि आपको अपने असा का इल्म है कि यह मेरा असा है लेकिन नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जन्नत व दौज़ख़ का मुशाहिदा करने के बावजूद उनकी तरफ़ मुतावज्जेह नहीं बल्कि अल्लाह तआला की मारफ़त में मुस्तग़रक़ हैं।

आंख न किसी की तरफ़ फिरी और न हद से बढ़ी।

आप अनवारे तजल्लियाते बारी तआला में ऐसे महव थे कि किसी और तरफ़ आंख फिरती ही न थी बल्कि जब रब तआला की तरफ़ से आपको कहा गया है हमारी मदह कीजिये तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अर्ज़ किया, मैं तेरी तारीफ़ को शुमार नहीं कर सकता, इसके बाद आप रब तआला की सना और अपने आपको भी भूल गये और अर्ज़ किया।

ऐ अल्लाह तेरी वही तारीफ़ है जो तूने ख़ुद अपनी तारीफ़ की है।

तंबीह : मूसा अलैहिस्सलाम ने असा को जब ज़मीन पर डाला तो वह सांप बन गया क़ुरआन पाक में इसके लिये तीन लफ़्ज़ इस्तेमाल हुए हैं।

छोटा सांप हो या बड़ा, मुज़क्कर हो या मुअन्नस, सबको हीता कहा जाता है लेकिन सअबान बहुत

बड़े जिस्म वाले सांप को कहा जाता है और जआन बारीक सांप को कहते हैं। तीनों अलफ़ाज़ का एक ही सांप पर इस्तेमाल इस तरह है कि जब आप अलैहिस्सलाम असा को फेंकते तो इब्तेदाई तौर पर वह बारीक सांप बन जाता फिर आहिस्ता आहिस्ता फैलता जाता और बड़ा अज़दहा बन जाता। या सूरत यह थी कि वह जिस्म के लिहाज़ पर तो बहुत बड़ा सांप यानी अज़दहा बन जाता लेकिन दौड़ और फुरती में बारीक सांप की तरह होता।

मूसा अलैहिस्सलाम का जवाब सिर्फ़ इतना काफ़ी था कि यह मेरा असा है लेकिन आप ने अल्लाह तआला से सिलसिलए कलाम बढ़ाते हुए अज़रुए मुहब्बत के बात को लंबा किया और कहा मैं इस पर सहारा लगाता हूं इससे पत्ते झाड़ कर अपनी बकरियों को खिलाता हूं और भी इससे मैं मुनाफ़ा हासिल करता हूं।

मूसा अलैहिस्सलाम को एक मोजिज़ा यह अता हुआ कि आप अपने असा को ज़मीन पर डालते हैं तो वह अज़दहा बन जाता है और जब उसे पकड़ते हैं तो वह फिर अपनी असल हालत की तरफ़ लौट कर असा बन जाता है। दूसरा मोजिज़ा आपको यह अता हुआ कि आप अपने दायें हाथ को बग़ल के नीचे बाजू से लगाते हैं और फिर बाहर निकालते हैं तो वह सफ़ेद चमकदार हो जाता है जो नज़रों पर छा जाता हालांकि आपका रंग गंदुम था।

फ़िरऔन को तबलीग़ का हुक्म : फ़िरऔन के पास जाओ वह सरकश बन गया है।

रब तआला ने जब आपको रिसालत व नबुव्वत के मनसब पर फ़ायज़ कर दिया तो हुक्म दिया कि ऐ मूसा अलैहिस्सलाम फ़िरऔन के पास जाओ उसे मेरी वहदानियत पर ईमान लाने का हुक्म दो। वह दुनिया की नेमतों की वजह से मेरे हुक़ूक़ का इंकार कर चुका है। मेरी रबूबियत का मुनकिर है उसने यह समझ रखा है कि मैं उससे ग़ाफ़िल हूं क़सम है मुझे अपनी इज्ज़त की अगर मैंने बंदों को मोहलत न दे रखी होती तो वह मेरी गिरफ़्त में कब का आ चुका होता। और मेरे ग़ज़ब की वजह से ज़मीन व आसमान पहाड़ व दरिया वग़ैरह सब चीज़ें उस पर ग़ज़ब में होतीं। अब उस पर मेरी गिरफ़्त का वक़्त आ चुका है। तुम उसे बताओ कि अल्लाह एक है उसके बग़ैर कोई माबूद नहीं तो अपने रब होने से तौबा कर ले अगर वह राहे रास्त पर आ गया तो बेहतर वरना उसे तबाह व बर्बाद कर दिया जायेगा।

मूसा अलैहिस्सलाम की दुआ : अर्ज़ की ऐ मेरे रब! मेरे लिये मेरा सीना खोल दे। और मेरे लिये मेरा काम आसान कर दे और मेरी ज़बान की गिरह खोल दे कि वह मेरी बात समझें। और मेरे लिये मेरे घर वालों से एक वज़ीर कर दे। वह कौन? मेरा भाई हारुन अलैहिस्सलाम इससे मेरी कमर मज़बूत कर और उसे मेरे काम में शरीक कर, कि हम कसरत से तेरी पाकी ब्यान करें और कसरत से तेरा ज़िक्र करें। बेशक तू हमें देख रहा है रब तआला ने फ़रमायाः ऐ मूसा अलैहिस्सलाम तेरी मांग तुझे अता हुई।

जब मूसा अलैहिस्सलाम को हुक्म दिया कि तुम फ़िरऔन के पास जाओ उसे हक़ दिखाओ तो बज़ाहिर यह बहुत अज़ीम काम था इसलिये आप ने अपनी कामिल आजिज़ी का इज़हार करते हुए रब तआला से दुआ की कि ऐ अल्लाह जब तूने मुझ पर इतना बड़ा काम लाज़िम कर दिया है तो मेरा सीना

खोल दे, हो सकता है ज़बान में पैदाईशी तौर पर लुकनत हो जिसके ज़वाल की आपने दुआ की हो। लेकिन ज़्यादा मश्हूर यह है कि आपकी ज़बान बचपन में जल गई थी जिसकी वजह से बोलने में लुकनत आ गई थी।

वजह इसकी यह हुई थी कि फ़िरऔन ने आपको एक मर्तबा उठाया हुआ था आपने उसकी दाढ़ी को पकड़कर खींच लिया चूंकि वह अपनी दाढ़ी में लअल व जवाहर सजाकर रखता था हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के उसकी दाढ़ी को खींचने की वजह से गुस्से में उसने आपको थप्पड़ मार दिया और कहा कि यही मेरा दुश्मन है एक तलवार वाले शख़्स को बुलाकर आपको क़त्ल करना चाहा तो उसकी ज़ौजा आसिया जो मूसा अलैहिस्सलाम से मुहब्बत करती थी कहने लगी यह बच्चा है इसने तो तुम्हारे जवाहर देखकर खींच लिया है। इसे अभी याकूत और आग के अंगारों में तमीज़ करने की सलाहियत भी हासिल नहीं। फ़िरऔन ने कहा ठीक है देखते हैं कि यह समझदार है या नहीं। दहकती आग के अंगारे और याकूत आपके सामने रख दिये आपने अपना हाथ याकूत की तरफ़ बढ़ाना चाहा था कि जिब्राईल अलैहिस्सलाम ने आपके हाथ को आग के अंगारों की तरफ़ बढ़ा दिया। जब आपको आग गर्म लगी तो आपने वह चिंगारी मुंह में डाल ली जिसकी वजह से आपकी ज़बान कुछ जल गई और लुकनत पैदा हो गई। अब इसी ज़वाल की दुआ की ताकि लोग मेरी बात को आसानी से समझ सकें। इसी वजह से आपने अपने भाई की मुआवनत की दरख़्वास्त की कि वह मुझसे ज़्यादा फ़सीहलु लिसान हैं।

लेकिन ख़्याल रहे कि दुआ करते वक़्त यही हालत थी कि हारुन अलैहिस्सलाम की ज़बान में कोई लुकनत नहीं थी वह कलाम साफ़ करते थे और उनका इंदाज़े ब्यान फ़सीह हुआ करता उनकी बात को आसानी से समझ लेते लेकिन मूसा अलैहिस्सलाम की ज़बान को समझने में लोगों को मुश्किल दरपेश आती जब आपने दुआ की और रब तआला ने उसे क़बूल फ़रमाकर यह मुज़दा सुना दिया।

ऐ मूसा अलैहिस्सलाम तुम्हारी मांग तुम्हें दे दी गई।

तो आपकी ज़बान मुकम्मल सही हो गई। आप अलैहिस्सलाम को हारुन अलैहिस्सलाम से ज़्यादा फ़साहत हासिल हो गई। लेकिन आपने दुआ में हज़रत हारुन अलैहिस्सलाम की जो मुआवनत तलब की थी वह भी क़बूल हो गई। यानी रब तआला ने आपकी ज़बान को दुरुस्त फ़रमाकर मज़ीद एहसान फ़रमाते हुए आपको हारुन अलैहिस्सलाम की मुआवनत भी अता फ़रमा दी।

हासिल कलाम यह है कि यह दलाइल पेश करना कि आप अलैहिस्सलाम की ज़बान की गिरह को मुकम्मल नहीं खोला गया था गिरह बाक़ी रही जिसकी वजह से कुछ लुकनत बाक़ी रही दुरुस्त नहीं।

फ़ायदा : वज़ीर मुशतक़ है वज़्र से जिसका मायने है बोझ उठाना। वज़ीर का मायने हुआ बोझ उठाने वाला। लेकिन अफ़सोस कि हमारे ज़माने के वुज़रा क़ौम का बोझ उठाने की बजाए क़ौम पर बोझ बनकर बैठते हैं। क़ौमी ख़ज़ाना को लूटकर खा चुके हैं। खरबों रुपये मुल्क पर क़र्ज़, इन वुज़रा की शाह ख़र्चियों और लूट खसोट की वजह से लाज़िम आ रहा है। शरई उसूलों को छोड़कर मग़्रिबी जम्हूरियत की रट लगाना बेहूदगी है।

दोनों भाईयों को हुक्म दिया : और मैंने मख़सूस कर लिया है तुम्हें अपनी ज़ात के लिये अब जाइये आप और आपका भाई मेरी निशानियां लेकर और न सुस्ती करना मेरी याद में आप दोनों जायें फ़िरऔन के पास, वह सरकश बना बैठा है और गुफ़्तगू करें उसके साथ नर्म अंदाज़ से शायद कि वह नसीहत क़बूल करे या (मेरे ग़ज़ब से) डरने लगे।

दोनों भाईयों को फ़िरऔन से नर्म बात करने का हुक्म दिया कि वह तुम्हारी सख़्त गुफ़्तगू से तैश में आकर तुम्हारे लिये मुसीबत न बन जाये। और तुम्हारी वजह से जो दूसरों को तालीम हासिल होनी है इसका मक़सद भी न फ़ौत हो जाये। हर मुबल्लिग़ के लिये इसमें रहनुमाई है। मुबल्लिग़ को ऐसा शीरीं कलाम और नर्म ख़ू होना चाहिये कि जब बोले तो यूं मालूम हो कि उसके मुंह से फूल झड़ रहे हैं या शहद और दूध की नहरें बह रही हैं। अगर वह तुंद मिज़ाज और सख़्त कलाम होगा तो लोग उससे नफ़रत करेंगे और उससे दूर भाग जायेंगे।

मैं कहता हूं कि क़ौले लीन वह है कि इसमें नर्मी हो कोई सख़्ती न हो जब मूसा अलैहिस्सलाम को हुक्म दिया गया कि फ़िरऔन से नर्म कलाम करें तो दूसरों को ज़्यादा हक़ पहुंचता है कि वह भी नर्म कलाम करें।

लअला में लअला के मायने में जो उम्मीद व रिजा है इसका ताल्लुक़ ज़ाते बारी से नहीं बल्कि हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम व हारुन अलैहिस्सलाम से है। यानी तुम इस उम्मीद पर पूरी कोशिश करना कि शायद वह हिदायत क़बूल करे और अल्लाह तआला से डरने लगे।

फ़िरऔन का मूसा अलैहिस्सलाम से कलाम करना : फ़िरऔन ने कहा, क्या हमने तुम्हें अपने हां बचपन में नहीं पाला? और तुमने हमारे हां अपनी उम्र के कई बरस नहीं गुज़ारे? और तुम ने क्या अपना वह काम जो तुमने किया और तुम नाशुक्रे थे। मूसा अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया मैंने वह काम किया जब मुझे राह की ख़बर न थी तो मैं तुम्हारे हां से निकल गया जब कि तुम से डरा तो मेरे रब ने मुझे हुक्म अता फ़रमाया और मुझे पैग़म्बरों से किया। और यह क्या नेमत है जिसका तू मुझे एहसान जताता है हालांकि तूने गुलाम बनाकर रखे हैं बनी इस्राईल।

मूसा अलैहिस्सलाम ने बारह साल की उम्र में क़ुबती को मुक्का मारा था जिससे वह मर गया और आप मदयन चले गये या उस वक़्त आपकी उम्र तीस साल थी। ज़्यादा मुनासिब क़ौल यही नज़र आता है क्योंकि आप दस साल शोएब अलैहिस्सलाम के पास ठहरे इस तरह चालीस साल मुकम्मल होते हैं अंबियाए किराम का ऐलाने नबुव्वत चालीस साल की उम्र में ही होता रहा।

फ़िरऔन ने कहा हमने तुम्हें बचपन में पाला और इतनी उम्र तक हमारे पास रहे तो हमारी नेमतें खाते रहे लेकिन तुमने इन नेमतों की नाशुक्री की है और हमारे एक आदमी को भी मार डाला।

आप अलैहिस्सलाम ने कहा क़त्ल करने का मेरा कोई इरादा न था सिर्फ़ उस शख़्स को अदब सिखाना मक़सूद था लेकिन वह बे इरादा क़त्ल हो गया। उसकी नागहानी मौत पर मुझे मुजरिम भी नहीं ठहराया जा सकता था और न ही मुझे शहर को छोड़कर जाने की ज़रूरत थी लेकिन जब तुम ने ग़लत फ़ैसला कर दिया था कि मुझे क़त्ल करने का हुक्म दे दिया तो मैं अपनी जान के ख़ौफ़ से शहर छोड़ कर चला गया।

ज़ाल्लीन का मायने है ग़ाफ़िल होना। यानी मैंने यह काम ग़फ़लत में किया। यह बात मेरे इल्म में भी न थी कि वह एक मुक्के से ही मर जायेगा मैंने मुक्का उसे अदब सिखाने के लिये मारा था क़त्ल करने के लिये नहीं मारा था।

मूसा अलैहिस्सलाम ने कहा अब मैं तुम्हारे पास अल्लाह तआला का पैग़ाम लेकर आया हूं, क्योंकि उसने मुझे हुक्म अता फ़रमाया है जिसे हुक्म हासिल हो उसे इल्म भी हासिल होता है, जिसे इल्म हासिल हो उसकी अक़्ल और राए कामिल होती हैं। इल्म से मुराद दीन है जिसमें तौहीदे बारी तआला का इल्म सबसे असल है और आपने फ़रमाया कि अल्लाह तआला ने मुझे रसूल बनाकर भेजा है यक़ीनन मेरा मनसब वही होगा जो सब अंबियाए किराम को हासिल रहा। फिर आप अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि मुझे यह एहसान जतला रहा है कि तूने मेरी तर्बियत की हालांकि तूने सारे नबी इस्राईल को अपना गुलाम बना रखा था। मालिक पर लाज़िम होता था कि वह अपने गुलामों की परवरिश करे। मालिक को हक़ ही नहीं पहुंचता कि वह अपने गुलामों की तर्बियत का उन्हें एहसान जतलाये।

फिर यह कि तूने मुझे कौन सी नेमतें अपनी तरफ़ से दी हैं मुझ पर माल तो वही ख़र्च किया जो मेरी क़ौम से बहैसियत गुलाम वसूल किया जाता रहा। फिर तुझे यह ख़्याल क्यों नहीं आता कि तूने मेरे ख़ानदान के लाखों आदमियों से हर मुशकिल काम लिया और उन पर जिज़या मुक़र्रर किया। उस ख़ानदान के एक बच्चे की तर्बियत का एहसान जतलाना तुझे ज़ेब नहीं देता। मुझे पालने वाले भी तो मेरे अपने लोग ही थे। या मेरी मां ने मुझे पाला है। या मेरे ख़ानदान के लोगों ने। तुम तो मुझे क़त्ल करवाना चाहते थे मेरी वजह से तो तुमने मेरी क़ौम के हज़ारों बच्चे ज़िबह करा दिये। यह मेरी तर्बियत और मुझे ज़िबह होने से बचाना तो सिर्फ़ मेरे रब तआला का मुझ पर फ़ज़्ल है वरना तेरे एहसानों से तो तेरे जुल्म ज़्यादा हैं तेरे मज़ालिम ने तेरे एहसान तबाह व बर्बाद करके रख दिये हैं अब तू किस वजह से एहसान जतला रहा है?

मूसा अलैहिस्सलाम ने रब के हुक्म से कहा: पस भेज दे हमारे साथ बनी इस्राईल को और उन्हें (अब मज़ीद) अज़ाब ने दे। हम ले आये हैं तेरे पास एक निशानी तेरे रब के पास से। और सलामती हो उस पर जो हिदायत की पैरवी करे। बेशक वही की गई है हमारी तरफ़ कि अज़ाब (ख़ुदावंदी) उस पर आयेगा जो झुटलाता है (कलामे इलाही को) और रू गरदानी करता है। फ़िरऔन ने पूछा ऐ मूसा तुम दोनों का रब कौन है? फ़रमाया हमारा रब वह है जिसने अता की हर चीज़ को (मौज़ूं) सूरत, फिर मक़सदे तख़लीक़ की तरफ़ हर चीज़ की रहनुमाई की।

बनी इस्राईल पर मिस्र में बड़े मज़ालिम हो रहे थे उन्हें बेकार में पकड़ा जाता। बे ज़बान चौपायों की तरह उनसे दिन भर मशक़्क़त के काम लिये जाते और उनसे हर तरह का ज़िल्लत आमेज़ सलूक किया जाता अल्लाह तआला ने उनकी फ़रयाद सुनी और उनको गुलामी की ज़ंजीरों से आज़ाद कराने के लिये अपने दो बंदों को रवाना फ़रमाया।

मिस्री लोग सूरज देवता को (बड़ा ख़ुदा) यक़ीन करते थे और मिस्र के फ़राऐना (तमाम फ़िरऔन) अपने आपको इस सूरज देवता का औतार कहते थे। इसी तरह मिस्रियों के मज़हबी अक़ीदे का सहारा लेकर उन्होंने अपनी हुकूमत की बुनियादें मुस्तहकम कर रखी थीं। फ़िरऔने मूसा अलैहिस्सलाम भी

अपने आपको सूरज देवता का मज़हर समझता और अना रब्बुकुमुल आला होने की डींगे मारता।

जब हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम व हज़रत हारुन अलैहिस्सलाम ने फ़रमायाः

ऐ फ़िरऔन हम दोनों तेरे रब की तरफ़ से रसूल बनकर आये हैं तो वह चौंका और बड़बड़ाया, हें.... मेरा भी कोई रब है? सब मिस्रियों का रब हूं मेरा कोई रब नहीं हो सकता। मूसा अलैहिस्सलाम ग़लत कह रहा है।

उसने पूछा ज़रा उस रब की हक़ीक़त बताओ जिसने तुम्हें रसूल बनाकर भेजा है आप अलैहिस्सलाम ने जवाब दिया एक फ़ेक्रा कहा और कोज़े में दरया बंद करके रख दिया फ़रमायाः

मेरा परवर्दिगार वह है जिसने कायनात की हर चीज़ को इस तरह पैदा किया है कि वह अपना वज़ीफ़ए हयात और मक़सदे तख़लीक़ बहुस्न व ख़ूबी अदा कर सके, फिर उसे इतनी सूझ बूझ भी अता कर दी कि वह सही तौर पर उन कुव्वतों से काम ले सके, परिन्दों को पर बख़्शे और फिर उन्हें उड़ने का सलीक़ा भी ख़ुद ही सिखा दिया। मछली को ऐसा जिस्म दिया कि वह गहरे दरियाओं और तूफ़ानी समुंद्रों में तैर सके और साथ उसने तैरने का ढंग भी बताया, गोश्त ख़ोर दरिन्दों के पंजे और दांत ऐसे बनाये कि वह अपना शिकार पकड़ सकें, ऊंट की क़ामत को बुलंद किया तो उसकी गर्दन भी लंबी बना दी ताकि वह ऊंचे दरख़्तों के पत्ते भी खा सके और नीचे ज़मीन से गर्दन झुकाकर पानी पी सके। सहराओ में जहां पानी की सतह बहुत नीची होती है वहां जो दरख़्त उगाये उनकी जड़ें इतनी लंबी बना दीं कि वह ज़मीन की तह से अपनी ख़ुराक हासिल कर सकें, हर ख़ित्तए ज़मीन में पैदा होने वाले हैवानात को वहां के मख़सूस मौसमी तक़ाज़ों के मुताबिक़ लिबास भी दिया और रिज़्क़ भी, फिर इस गुलशने हस्ती के गुले सर सब्ज़ और बज़्मे हयात के सदर नशीन हज़रते इंसान की ज़ाहिरी साख़्त और बातिनी सलाहियतों पर निगाह डालिये, आपको हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के इरशादात की अज़मत का यक़ीन हो जायेगा।

अल्लामा ज़िमख़शरी इसका मफ़हूम ब्यान करते हुए लिखते हैं:

यानी हर चीज़ को ऐसी शक्ल व सूरत बख़्शी जो इन फ़वाइद और मुनाफ़ा के लिये मौज़ूं व मुनासिब है जिनके लिये उसकी तख़लीक़ हुई और एक और वज़ाहत करते हुए लिखते है:

यह भी सिखा दिया कि वह इन आज़ा और कुव्वतों से किस तरह काम ले और इन फ़ाइदों तक कैसे रसाई हासिल करे।

फ़िरऔन ने कहा और सारे जहान का रब क्या है?

यानी जिसने रब्बुल आलमीन का तुम अपने आपको रसूल कहते हो, वह क्या है? उसकी हक़ीक़त क्या है? जब अल्लाह तआला की हक़ीक़त ब्यान करना इंसानी ताक़त से मावरा है तो मूसा अलैहिस्सलाम ने ऐसा हिकमत भरा जवाब दिया जिसे वह भी समझने की कोशिश करता तो समझ जाता।

मूसा अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया वह आसमानों और ज़मीन के दर्मियान जो कुछ है उनका रब तआला है अगर तुम्हें यक़ीन हो।

यानी अगर तुम अशिया को दलील से जानने की सलाहियत रखते हो तो इन चीज़ों की पैदाईश

ही अल्लाह तआला के वजूद की काफ़ी दलील है। ख़्याल रहे कि ईक़ान उस इल्म को कहते हैं जो इस्तिदलाल से हासिल हो। इसलिये अल्लाह तआला की शान में मोक़न नहीं कहा जाता।

फ़िरऔन ने अपने आस पास वालों से कहा क्या तुम ग़ौर से सुनते नहीं?

उसके गिर्द उस वक़्त उसकी क़ौम के बड़े बड़े सरदार थे, वह लोग पाचं सौ की तादाद में ज़र्क़ बर्क़ लिबास से आरास्ता होकर बैठे हुए थे उनसे फ़िरऔन ने कहा क्या तुम ग़ौर से मूसा अलैहिस्सलाम की बात नहीं सुनते हो? यह कहता है ज़मीन व आसमान को भी पैदा करने वाला है हालांकि ज़मीन व आसमान क़दीम हैं इन्हें तो किसी ने पैदा ही नहीं किया इनके लिये रब तआला की क्या हाजत है? मूसा अलैहिस्सलाम ने इनकी बातें सुनकर दलील बदल दी। ऐसी चीज़ों का ज़िक्र किया जिन के हादिस होने यानी पहले न होने फिर फ़ना होने का वह भी इंकार नहीं कर सकते थे।

आपने कहा वह तुम्हारा रब तआला है और तुम्हारे अगले आबा व अजदाद (बाप दादों) का भी रब है।

फ़िरऔन ने कहा तुम्हारे यह रसूल जो वही तुम्हारी तरफ़ भेजे गये हैं ज़रूर अक़्ल नहीं रखते।

फ़िरऔन अपने सिवा किसी को माबूद नहीं समझता था। तन्ज़ के तौर पर कहा यह रसूल जो तुम्हारी तरफ़ भेजे गये यानी यह ख़ुद जो रसूल होने का दावा कर रहे हैं यह अक़्ल से दूर हैं क्योंकि फ़िरऔन उस शख़्स को अक़्ल से दूर समझता था जो उसे माबूद नहीं मानता था।

हक़ीक़त यह है कि ऐसी गुफ़्तगू इंसान उस वक़्त करता है जब दलाइल से आजिज़ आ जाये लेकिन नबी की अज़मत को देखिये आप अलैहिस्सलाम अपने दलाइल फिर भी जारी रखे हुए हैं वह आप को मजनू दीवाना कह रहा है लेकनि आप रब तआला की रबूबियत को अपने दलाइल से ब्यान फ़रमा रहे हैं।

आप अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया वह तो मश्रिक़ व मग़्रिब और जो कुछ उनके दर्मियान है उनका रब तआला है अगर तुम्हें अक़्ल हो।

मश्रिक़ से सूरज को हर रोज़ तुलू करना, मग़्रिब में गुरूब करना और साल में हर मौसम हर बहार का अपने वक़्त पर आना बारिशें बरसाना, हवाओं का चलाना, यह सब कुछ उस के निज़ामे कुदरत में है काश कि तुम्हें भी कुछ समझ आ जाये।

फ़िरऔन ने आपको (मआज़ल्लाह) सराहतन मजनू कहकर अपनी हिमाक़त का सबूत दिया लेकिन आपने हिकमत आमेज़ जुम्ला ज़िक्र फ़रमाया कि अगर तुम्हें अक़्ल हो यानी रब तआला की कुदरत उसकी रबूबियत और उसकी वहदानियत को तस्लीम न करना तुम्हारी हिमाक़त पर दलालत कर रहा है।

फ़िरऔन की धमकी : फ़िरऔन ने कहा अगर तुमने मेरे सिवा किसी और को ख़ुदा ठहराया तो मैं ज़रूर तुम्हें क़ैद करूंगा।

फ़िरऔन की क़ैद क़त्ल से भी बदतर थी उसका जेल ख़ाना तंग व तारीक अमीक़ (गहरा) गड्ढा था इसमें अकेला डाल देता था न वहां कोई आवाज़ सुनाई देती थी न कुछ नज़र आता था।

मूसा अलैहिस्सलाम ने कहा मैं मोजिज़ात लेकर आया हूं : कहा मैं अगरचे तुम्हारे पास कोई रौशन चीज़ लाऊं?

यानी अल्लाह ने मुझे मोजिज़ात अता फ़रमाये हैं जो मेरी नबुव्वत पर दलालत कर रहे हैं क्या तू मेरी हक़्क़ानियत के ज़ाहिर होने पर भी मुझे क़ैदख़ाने में भेजेगा?

फ़िरऔन ने कहा तो लाओ अगर सच्चे हो तो मूसा अलैहिस्सलाम ने अपना असा डाल दिया जभी वह सरीह (ज़ाहिर) अज़दहा बन गया और अपना हाथ निकाला तो जभी वह देखने वालों की निगाह में जगमाने लगा।

मूसा अलैहिस्सलाम ने जब अपना असा ज़मीन पर डाला तो वह बहुत बड़ा अज़दहा बन गया रंग उस का ज़र्द था उसके जिस्म पर बाल थे, मुंह खुला हुआ था, उसके दोनों जबड़ों के दर्मियान अस्सी ज़राअ (एक सौ बीस फ़िट) का फ़ासला था वह अपनी दुम पर खड़ा हो गया। और एक मील तक बुलंद हो गया। उसने अपना नीचे वाला जबड़ा ज़मीन पर रखा और ऊपर वाला फ़िरऔन के महल की दीवारों पर फ़िरऔन की तरफ़ मुतावज्जेह हुआ ताकि उसे पकड़े। फ़िरऔन ने तख़्त से नीचे छलांग लगाई और उसकी हवा ख़ारिज होने लगी।

बाज़ रिवायात में है कि उसकी चार सौ मर्तबा उस दिन हवा निकली और मरते दम तक इसी वजह से पेट की बीमारी में मुब्तला रहा, इसी हाल में ग़र्क़ हो गया।

जब अज़दहा ने लोगों की तरफ़ रुख़ किया तो लोग डर के मारे इधर उधर भागना शुरू हुए। उस भगदड़ की वजह से पच्चीस हज़ार आदमी एक दूसरे पर गिरकर मर गये। फ़िरऔन ने चिल्लाना शुरू किया और कहने लगा।

ऐ मूसा अलैहिस्सलाम इसको पकड़ो मैं तुम पर ईमान ले आऊंगा और बनी इस्राईल को तुम्हारे साथ भेज दूंगा। मूसा अलैहिस्सलाम ने जब पकड़ा तो वह अपने हाल पर लौट आया यानी असा बन गया।

मूसा अलैहिस्सलाम ने जब अपना एक मोजिज़ा दिखा दिया तो फ़िरऔन ने कहा क्या और भी तुम निशानी लाए हो तो आप अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया हां आपने अपने हाथ को बग़ल में लेकर बाहर निकाला तो वह सूरज की शुआओं की तरह चमकने लगा।

और अपना हाथ निकाला तो जभी वह देखने वालों की निगाह में जगमगाने लगा।

फ़िरऔन ने अपने गिर्द बैठे हुए सरदारों से कहा कि बेशक यह दाना जादूगर हैं।

फ़िरऔन ने जब अपने गिर्द बैठे हुए सरदारों को कहा कि यह तो जादूगर हैं तो उन्होंने भी फ़िरऔन की हां में हां मिलाते हुए बतौर मुशावरत के कहा हां ऐसा ही है।

फ़िरऔन की क़ौम के सरदार बोले यह तो एक इल्म वाला जादूगर है।

फ़िरऔन ने अपने क़ौम के सरदारों को कहा, चाहते हैं कि तुम्हें हमारे मुल्क से निकाल दे अपने जादू के ज़ोर से तब तुम्हारा क्या मश्वरा है? वह बोले इन्हें और इनके भाई को ठहराए रहो और शहरों में जमा करने वाले भेजो कि वह तेरे पास बड़े बड़े दाना जादूगरों को ले आयें।

फ़िरऔन ने मूसा अलैहिस्सलाम को मुक़ाबला के लिये कहा : फ़िरऔन ने कहा, क्या तुम हमारे पास इसलिये आये हो कि हमें अपने जादू के सबब हमारी ज़मीन से निकाल दो? ऐ मूसा अलैहिस्सलाम तो ज़रूर हम भी तेरे आगे ऐसा ही जादू लायेंगे तो हममें और अपने में एक वादा ठहरा दो जिससे न हम बदलेंगे न तुम। (जहां मुक़ाबला होगा वह) हमवार जगह हो। मूसा अलैहिस्सलाम ने कहा तुम्हारा वादा मेले का दिन है और यह लोग दिन चढ़े जमा किये जायें।

फ़िरऔन ने कहा तुम अपने जादू से हमें हमारी ज़मीन से निकालना चाहते हो? हम भी अपने जादूगर बुलाते हैं वह तुम्हारे साथ मुक़ाबला करेंगे लिहाज़ा तुम हमारे साथ एक दिन और एक जगह मुक़र्रर कर लो ताकि उस दिन मुक़ाबला हो, वादा पर दोनों फ़रीक़ क़ायम रहें कोई भी अपने वादे से न फिरे। ऐसी जगह का इंतेख़ाब करना जो हमवार मैदान हो इसमें नशेब व फ़राज़ न हों ताकि सब लोग यह मुक़ाबला देखें।

मूसा अलैहिस्सलाम ने कहा ठीक है तुम अपने मेले का दिन मुक़र्रर कर लो इसलिये कि तुम्हारे तमाम लोग उस दिन फ़ारिग़ होकर एक जगह ऐश व इशरत के लिये जमा होते हैं इस तरह तमाम लोग इस मुक़ाबला को आसानी से देख सकेंगे और तमाम लोगों को दिन चढ़े जमा होना चाहिये।

जादूगरों का आ जाना : तो जमा किये गये जादूगर एक मुक़र्रर दिन के वादा पर और लोगों से कहा गया कि तुम जमा होगे शायद हम उन जादूगरों की पैरवी करें अगर यह ग़ालिब आ जायें फिर जब जादूगर आये फ़िरऔन से बोले क्या हमें कुछ मज़दूरी मिलेगी अगर हम ग़ालिब आये उसने कहा हां उस वक़्त तुम मेरे मुक़र्रब हो जाओगे।

जादूगर मेले के दिन आ गये, लोगों को भी कह दिया गया कि सब लोग ज़रूर जमा होना क्योंकि हमें उम्मीद है कि हमारे जादूगर ही ग़ालिब आयेंगे हम उनके दीन पर क़ायम रहेंगे अगरचे वह मूसा अलैहिस्सलाम के दीन पर आना ही नहीं चाहते थे। लेकिन लोगों को माइल करने के लिये अंदाज़ ऐसा रखा कि जिस कलाम में शक हो कि शायद हम उन जादूगरों की ही ताबेदारी करेंगे अगर यह ग़ालिब आ गये।

जादूगर जब फ़िरऔन के दरबार में आये तो उन्होंने शाही दरबार से फ़ायदा उठाने की कोशिश की और कहा कि अगर हम ग़ालिब आ गये तो क्या हमें बहुत बड़ा मुआवज़ा मिलेगा जो बादशाह की शान के लायक़ हो? फ़िरऔन ने कहा हां मैं तुम्हें अपना मुक़र्रब बना लूंगा। बादशाह जिनको अपना क़रीबी बना लेते हैं उन पर क़ौमी ख़ज़ानों का तो मुंह खोल दिया जाता है वह इनाम का सुनकर मुक़ाबला के लिये आमादा हो गये।

मूसा अलैहिस्सलाम की जादूगरों को तबलीग़ : इनसे मूसा अलैहिस्सलाम ने कहा तुम्हें ख़राबी हो अल्लाह तआला पर झूठ न बांधो, कि वह तुम्हें अज़ाब से हलाक कर दे, और बेशक नामुराद रहा जिसने झूठ बांधा और वह अपने मामला में एक दूसरे से झगड़ने लगे और छुप कर मश्वरा करने लगे, बोले बेशक यह दोनों ज़रूर जादूगर हैं चाहते हैं कि तुम्हें तुम्हारी ज़मीन से अपने जादू के ज़ोर से निकाल दें और तुम्हारा अच्छा दीन ले जायें तो अपने दाव को पक्का कर लो (तमाम मेले में मिलकर जमा कर लो) फिर सब सफ़ बांधे आ जाओ आज वही कामियाब होगा जो इस मुक़ाबला में कामियाब रहा।

यहां से यह ब्यान किया जा रहा है कि फ़िरऔन ने जब जादूगरों को जमा कर लिया तो मूसा अलैहिस्सलाम ने उनके सामने होने पर क्या किया? तो इसका जवाब दिया जा रहा है।

आपने उन्हें नसीहत के तौर पर कहा।

कि मैं अल्लाह तआला की निशानियां दिखाता हूं जो अल्लाह तआला ने मुझे मोजिज़ात अता फ़रमाये हैं तुम यह कहते हो कि मैं जादू कर रहा हूं। यह तो अल्लाह तआला पर झूठ बांधना है इससे तो तुम्हारी बर्बादी है अल्लाह तआला तुम्हें अज़ाब से तबाह कर देगा। जिस अज़ाब को टालने की तुम्हें कोई कुदरत हासिल नहीं होगी मूसा अलैहिस्सलाम की इस नसीहत पर....।

यानी आपके कलाम को सुनकर जादूगर ग़ैज़ व ग़ज़ब में एक दूसरे से मश्वरा करने लगे और बहस करने लगे कि कैसे इसे जवाब दिया जाये? और मश्वरा उनका मूसा अलैहिस्सलाम और हारुन अलैहिस्सलाम से छुप कर था कि वह उस पर वाक़िफ़ न हो जायें। आख़िरकार उनको इसी पर इत्तेफ़ाक़ हुआ कि यह दोनों जादूगर हैं यह तो हमें इस ज़मीन से निकालना चाहते हैं। हमें इन से सर तोड़ मुक़ाबला करना चाहिये अपने अपने दावं इसके सामने लाकर इसे आजिज़ करना चाहिये कामयाबी पर हमें ग़ल्बा हासिल होगा।

मूसा अलैहिस्सलाम और जादूगरों का मुक़ाबला : उन्होंने कहा ऐ मूसा अलैहिस्सलाम या तो आप (अपना असा) डालें या हम (अपनी रस्सियां और लाठियां) डालने वाले हैं, आप अलैहिस्सलाम ने कहा, तुम डालो, जब उन्होंने डाला लोगों की निगाहों पर जादू कर दिया। और उन्हें डराया और बड़ा जादू लाए। हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने पहले उन्हें तबलीग़ की कि तुम ग़लत राह पर हो अपनी बर्बादी न तलाश करो, लेकिन जादूगर जब बाज़ न आये, मुक़ाबला पर ही उनका इत्तेफ़ाक़ हुआ और उन्होंने कहा मूसा अलैहिस्सलाम को कि अब ज़रा सामने आ जाओ या पहले तुम अपना असा डालो या हम अपनी रस्सियां और लाठियां डालते हैं। जब मूसा अलैहिस्सलाम ने देखा कि इन पर कोई असर नहीं हुआ तो आपने उन्हें कहा कि ठीक है पहले तुम ही डाल दो।

याद रहे कि जादूगरों को मूसा अलैहिस्सलाम का फ़रमानाः पहले तुम डालो, यह जादू की इजाज़त नहीं थी। बल्कि उनकी ज़िद पर उन्हें पहले अपनी रस्सियां और लाठियां डालने की इजाज़त दी। ज़िक्र कर्दा बहस से वह एतेराज़ ख़त्म हो गया कि मूसा अलैहिस्सलाम ने उन लोगों को जादू करने की इजाज़त दी, हालांकि जादू करना कुफ़्र है। कुफ़्र की इजाज़त देना भी कुफ़्र है तो आपने कैसे इजाज़त दी? इसका जवाब वाज़ेह हो चुका है कि आप अलैहिस्सलाम ने उन्हें जादू से रोका और यह बताया कि यह बाइसे अज़ाब है। लेकिन जब वह जादू करने पर बज़िद थे तो आपने कहा ठीक है अगर अपने कुफ़्र की वजह से मेरे मोजिज़े से मुक़ाबला करना चाहते हो तो कर लो, ताकि हक़ और बातिल में फ़र्क़ वाज़ेह हो जाए। जब उन्होंने अपनी रस्सियां और लाठियां डाल दीं तो लोगों की आंखों पर असर कर दिया कि वह सही देखने समझने के क़ाबिल न रहें इससे वाज़ेह हुआ कि जादू से किसी चीज़ की हक़ीक़त को नहीं बदला जा सकता यह सिर्फ़ एक बनावट होती है।

अगर जादू हक़ होता यानी इसकी कोई हक़ीक़त होती तो यह ज़िक्र किया जाता कि उनके दिलों पर जादू कर दिया यह न कहा जाता कि उन्होंने लोगों की आंखों पर जादू कर दिया।

बाज़ रिवायत में यह भी है कि उन्होंने रस्सियों और लाठियों पर पारह चढ़ा दिया था फिर धूप में रखने की वजह से उन में हरकत पैदा हो गई, लोगों ने समझा कि यह अपने इख़्तेयार से हरकत कर रही हैं, उनकी हरकत को देखकर लोग डर गये। वह एक दूसरे को डराने लगे कि बच जाओ यह तो सांप बन गये हैं। क्योंकि कसीर मिक़दार में तो ख़ुद जादूगर थे और फिर हर एक के हाथ में कितनी कितनी लाठियां और रस्सियां थीं। इस तरह उस मैदान में हर तरफ़ सांप ही सांप नज़र आने लग गये।

तो अपने नफ़्स में मूसा अलैहिस्सलाम ने ख़ौफ़ पाया हमने फ़रमाया डर नहीं बेशक तू ही ग़ालिब है।

मूसा अलैहिस्सलाम ने जब फ़िरऔन को बिला ख़ौफ़ व ख़तरा तबलीग़ फ़रमाई कि बेशक तुम अपने जादूगरों को बुला लो तो डरने का मतलब क्या हो सकता है जब कि.....

मूसा अलैहिस्सलाम को यक़ीनी तौर पर इल्म हासिल था कि यह जादूगर और इनके बनाए हुए सांप मेरा कुछ नहीं बिगाड़ सकते क्योंकि अल्लाह तआला मेरा नासिर है आपको डर इस चीज़ का महसूस हुआ।

कि लोग कहीं जादूगरों के जादू को देखकर यह न समझ बैठें कि यह लोग भी मूसा अलैहिस्सलाम के बराबर ही हैं लोगों पर कहीं जादू और मोजिज़ा में फ़र्क़ करना मुश्किल न हो जाये। जो असल मक़सद है कि लोगों पर मोजिज़ा का ग़लबा वाज़ेह हो जाये वह फ़ौत न हो जाये पस सिर्फ़ इसी बात का ख़ौफ़ था।

रब तआला ने फ़रमाया ऐ मूसा अलैहिस्सलाम डरिये नहीं बेशक आपको ही ग़ल्बा हासिल होगा यानी जादूगर ख़ुद ही अपनी शिकस्त का जब एतेराफ़ कर लेंगे और आपकी हक़्क़ानियत तस्लीम कर लेंगे तो मक़सद पूरा हो जायेगा।

और हमने मूसा अलैहिस्सलाम को वही फ़रमाई कि अपना असा डाल, तो नागाह उनकी बनावटों को निगलने लाग तो हक़ साबित हुआ और उनका काम बातिल हुआ तो यहां वह मग़लूब हुए और ज़लील होकर पलटे और जादूगर सज्दे में गिरा दिये गये बोले हम ईमान लाए जहान के रब पर जो रब है मूसा अलैहिस्सलाम और हारुन अलैहिस्सलाम का।

वही करने से मुराद हकीक़ी वही भी हो सकती है और इलहाम भी, यानी हो सकता है कि उस वक़्त आपके दिल में इलक़ा कर दिया गया हो कि आप अपना असा डाल दें वह उनके जादू से बनाए हुए सांपों को निगल जायेगा जब आपने अपना असा डाला तो वह बहुत बड़ा अज़दहा बन गया उसने अपना मुंह खोला तो उसके मुंह के दर्मियान अस्सी ज़राअ (एक सौ बीस फ़ीट) का फ़ासला था और उसने उनकी तमाम रस्सियों और लाठियों को निगल लिया, हालांकि वह तीन सौ ऊंटों पर लादकर लाये थे, मूसा अलैहिस्सलाम ने जब उसे पकड़ा तो पहले की तरह असा हो गया। जादूगरों की रस्सियां और लाठियां मादूम हो गई। यानी ऐसे बाक़ी न रहीं जैसे उनका कोई वजूद नहीं था।

बाज़ जादूगरों ने दूसरे जादूगरों को कहा कि यह जादू नहीं हो सकता क्योंकि जादू में एक चीज़ की हकीक़त नहीं बदलती सिर्फ़ दूसरे लोगों की आंखों पर असर होता है। अगर यह जादू होता तो हमारी रस्सियों और लाठियों को न निगल लेता।

इससे उन्होंने दलील पकड़ी कि हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम अल्लाह तआला के सच्चे नबी हैं।

फ़ायदा : वाज़ेह हुआ कि इल्म को बहुत बड़ी फ़ज़ीलत हासिल है क्योंकि वह लोग अपने जादू के इल्म में कामिल दर्जा रखते थे उन्हें मालूम था कि जादू की हकीक़त क्या है? और इसकी इंतेहा कहां है? जब वह अपने फ़न के आला दर्जे का इल्म रखते थे तो....

उन्हें मालूम हो गया कि मूसा अलैहिस्सलाम का मोजिज़ा जादू की हद से ख़ारिज है उन्हें यक़ीन हो गया कि यह अल्लाह तआला की तरफ़ से अता करदा मोजिज़ात से है इंसानी बनावट से इसका कोई ताल्लुक़ नहीं। अगर वे अपने जादू के इल्म में कामिल दर्जा न रखते होते तो वह मोजिज़ा और जादू में फ़र्क़ न कर पाते, बल्कि कहते कि वह शख़्स जादू के इल्म में हमसे ज़्यादा है इस लिये हम इससे आजिज़ आ गये हैं पता चला कि वह जादू के इल्म में आला दर्जा रखते थे इसी कामिल इल्म की वजह से वह कुफ़्र से ईमान की तरफ़ मुन्तक़िल हुए।

जब जादू के इल्म से उनको इतना फ़ायदा हासिल हो गया तो ऐ इंसान ज़रा ग़ौर कर कि अगर तुझे अल्लाह तआला की वहदानियत का इल्म हासिल हो तो इसमें कितना ही कमाल होगा।

जब जादूगरों पर मूसा अलैहिस्सलाम के मोजिज़ों की हक़ीक़त खुल गई तो वह अल्लाह तआला का शुक्र अदा करने के लिये बेइख़्तेयार सज्दा में गिर गये, कि अल्लाह तआला ने हमें तौफ़ीक़ अता की है कि हमें पता चल गया कि यह मोजिज़ा है जादू नहीं फिर उन्होंने कहा रब्बुल आलमीन पर हमारा ईमान है।

ख़्याल रहे कि सिर्फ़ रब तआला पर ईमान लाने से ईमान की तकमील नहीं होती बल्कि ईमान मुकम्मल उसी वक़्त होता है जब नबी पर ईमान लाए क्योंकि नबी पर ईमान लाने से तमाम ईमानियत पर ईमान लाना लाज़िम हो जाता है इसीलिये उन्होंने फिर कहा कि हमारा ईमान मूसा अलैहिस्सलाम और हारुन अलैहिस्सलाम के रब तआला पर है यानी इन्हें उसी ने नबी बनाकर भेजा है।

फ़ायदा जलीला : जादूगरों ने मूसा अलैहिस्सलाम के साथ मुक़ाबला शुरू करने से पहले कहा:

ऐ मूसा अलैहिस्सलाम या तो आप डालें और या हम डालने वाले हैं उन्होंने मूसा अलैहिस्सलाम का ज़िक्र पहले किया और अपना ज़िक्र बाद में किया।

बेशक जादूगर क़ौम ने मूसा अलैहिस्सलाम का ज़िक्र पहले करके आपके अदब व एहतेराम की अच्छे तरीक़े से पासदारी की। सूफ़ियाए किराम ने फ़रमाया है कि इसी अदब व एहतेराम की बर्कत की वजह से अल्लाह तआला ने उन्हें ईमान की नेमत से सरफ़राज़ किया।

सुबहानल्लाह! क्या शान है अंबियाए किराम की कि उनके अदब व एहतेराम से काफ़िरों को ईमान नसीब होता है और उनकी गुस्ताख़ी की वजह से कलिमा तौहीद पढ़ने वाले भी मरदूद हो जाते हैं।

तंबीह : इस वाक़िया से पता चला कि उस ज़माने में जादूगर कसीर तादाद में थे इसी वजह से हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम को ऐसा मोजिज़ा दिया गया जिससे आपने जादूगरों का मुक़ाबला किया और उनको आजिज़ कर दिया, तमाम अंबियाए किराम को उनके ज़माने के मुताबिक़ मोजिज़ात अता किये गये। हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के ज़माने में इल्मे तिब (हिकमत) का ज़ोर था आप अलैहिस्सलाम

को ऐसे मोजिज़ात अता हुए कि तमाम अतिब्बा (हुक्मा) उनसे आजिज़ रहे, क्योंकि आप का मुर्दो को ज़िन्दा करना, मादर ज़ाद अंधे को नज़र अता करना, बर्स वाले को दुरुस्त करने के मोजिज़ात अता हुए जो किसी तबीब की ताक़त में न था कि ऐसा कर सके, नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के ज़माने में फ़साहत का ज़ोर था, बड़े बड़े शाएर एक एक तरह व मिस्रा (छन्द व दोहे) पर क़साइद लिख देते थे, लेकिन आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने जब अल्लाह तआला का कलाम पेश किया जो आपका अज़ीम मोजिज़ा है तो वह तमाम आजिज़ आ गये, किसी एक को जुर्रत न हो सकी कि कुरआन पाक की एक छोटी सूरत का मुक़ाबला कर सके, जब कि कुरआन पाक ने उन्हें बार बार चैलेंज भी किया।

नतीजा हासिल हुआः फ़िरऔन जो ख़ुदाई का दावेदार था कहता था मैं तुम्हारा सबसे ऊंचा रब हूं उसके मुताल्लिक़ तमाम लोगों को पता चल गया कि वह ज़लील, आजिज़ घटिया इंसान है।

वरना वह मूसा अलैहिस्सलाम के दिफ़ाअ में जादूगरों से इमदाद तलब न करता।

अगर ख़ुदा होता तो ख़ुद ही सिर्फ़ कुन से काम तमाम कर देता और यह भी वाज़ेह हो गया कि जादूगर किसी चीज़ की हक़ीक़त को नहीं बदल सकते, अगर वह किसी चीज़ की हक़ीक़त को बदल सकते तो फ़िरऔन को यह न कहते कि अगर हम ग़ालिब आ गये तो क्या तू हमें उजरत देगा? बल्कि वह ख़ुद ही मिट्टी से सोना बना लेते। बल्कि वह अपने जादू के ज़रिये फ़िरऔन की बादशाही पर क़ब्ज़ा कर लेते या किसी और मुल्क की बादशाही हासिल करके बहुत बड़े रईस बन जाते। इंसानों को इन आयात से मुतनब्बेह किया गया कि तुम बातिल और झूटे अक़वाल और शोबदा बाज़ी के अफ़आल से फ़रेब न खा जाना, बल्कि अपने ईमान पर क़ायम रहना।

फ़िरऔन की जादूगरों को धमकी : फ़िरऔन ने कहा तुम इस पर ईमान ले आये हो इससे पहले कि मैं तुम्हें इजाज़त देता यह तो बड़ा मक्र है जो तुम सब ने शहर में फैलाया है कि शहर वालों को इससे निकाल दो, तो अब जान जाओगे क़सम है कि मैं तुम्हारे एक तरफ़ के हाथ और दूसरी तरफ़ के पांव काटूंगा फिर तुम सबको सूली दूंगा।

जब फ़िरऔन ने देखा कि जादूगरों ने तमाम मख़लूक़ के सामने मूसा अलैहिस्सलाम की नबुव्वत को तस्लीम कर लिया है उसे ख़ौफ़ हुआ कि तमाम लोग आप पर ईमान न ले आयें उसने दो क़िस्म के शुबहात डालकर क़ौम को ईमान लाने से मना करने की कोशिश की, एक तो उसने यह कहा कि इन लोगों का ईमान लाना इस वजह से नहीं कि उन्होंने मूसा अलैहिस्सलाम की हक़्क़ानियत को देखा है बल्कि उन्होंने पहले से मूसा अलैहिस्सलाम से साज़ बाज़ कर रखी थी कि हम तुम्हारी नुबूवत का इक़रार कर लेंगे और तुम पर ईमान ले आयेंगे। लोग हमें देखकर तुम पर ईमान लायेंगे।

दूसरी बात उसने यह कही कि मूसा अलैहिस्सलाम और जादूगरों का इत्तेफ़ाक़ी मश्वरा यह है कि तुम्हें तुम्हारे शहरों से बाहर निकाल दें और ख़ुद इस मुल्क पर क़ाबिज़ हो जायें। वतन से लोगों को बहुत ज़्यादा मुहब्बत होती है इसलिये वह उन लोगों को ईमान से दूर रखने में कामयाब हो गया अगरचे उसके दोनों शुबहात की कोई हैसियत नहीं थी लेकिन क़ौम भी तो बे समझ ही थी।

नौ मुस्लिमों का फ़िरऔन को जवाब : उन्होंने कहा हम हरगिज़ तुझे तरजीह नहीं देंगे इन रौशन दलीलों पर जो हमारे पास आई हमें अपने पैदा करने वाले की क़सम तू कर ले जो तुझे करना है, तू

इस दुनिया ही की ज़िन्दगी में तो करेगा। बेशक हम अपने रब तआला पर ईमान लायें कि वह हमारी ख़तायें बख़्श दे और वह जो तूने हमें मजबूर किया जादू पर। और अल्लाह तआला बेहतर है और सबसे ज़्यादा बाक़ी रहने वाला है। बेशक जो अपने रब तआला के हुज़ूर मुजरिम होकर आये तो ज़रूर उसके लिये जहन्नम है जिसमें न मरे और न जिये और जो उसके हुज़ूर ईमान के साथ आये कि अच्छे काम किये हों उन्हीं के दर्जे ऊंचे बसने के बाग़ जिन के नीचे जारी नहरें हैं। और वह हमेशा उनमें रहेंगे और यह सिला उसका है जो पाक हुआ।

फ़िरऔन की धमकी को उन्होंने दो टूक अल्फ़ाज़ में रद्द कर दिया और इसका उन पर कोई असर न हुआ क्योंकि उन्हें कामिल यक़ीन और मुकम्मल बसीरत हासिल हो चुकी थी कि मूसा अलैहिस्सलाम सच्चे नबी हैं उन्होंने फ़िरऔन को कहा कि तुम्हारे फ़ैसला का ताल्लुक़ दुनिया की ज़िन्दगी से है जो फ़ानी है और हमारा मतलूब उख़रवी ज़िन्दगी की सआदत हासिल करना है जो हमेशा के लिये बाक़ी है। और अक़्ल का तक़ाज़ा है कि इन फ़ानी नुक़सानात को बर्दाश्त कर लिया जाये जो बाक़ी रहने वाली सआदत तक पहुंचने का ज़रिया नहीं।

उन्होंने कहा कि हम अपने रब की तरफ़ फिरने वाले हैं और तुझे हमारा क्या बुरा लगा, यही न कि हम अपने रब की तरफ़ निशानियों पर ईमान लाये जब वह हमारे पास आयें ऐ रब हमारे! हम पर सब्र उंडेल दे (हमें सब्र अता कर) और हमें मुसलमान उठा।

उन्होंने फ़िरऔन को धमकियों का जवाब देते हुए कहा कि हम मरऊब होने वाले डरने वाले नहीं क्योंकि हम तो अपने रब तआला की तरफ़ फिरने वाले यानी उस पर ईमान लाने वाले हैं। ऐ बे अक़्ल ख़ुदाई के दावेदार तू किस चीज़ को बुरा समझ रहा है? हमारे पास अल्लाह तआला की निशानियां आ गईं हम उनको देखकर ईमान लाये बस यही चीज़ तुझे नापसंद आई।

फिर उन्होंने रब तआला से दुआ की कि ऐ अल्लाह तआला! अगरचे तूने हमें सीधी राह पर क़ायम कर दिया और फ़िरऔन की धमकियों के मुक़ाबिल सब्र अता कर दिया है। लेकिन यह नेमत हमारे पास क़ायम उसी वक़्त रह सकती है जब तेरा फ़ज़्ल हमें शामिले हाल रहे। उन्होंने अर्ज़ किया।

ऐ हमारे रब हमें कामिल सब्र अता कर।

उस वक़्त कहा जाता है जब बर्तन को उंडेल कर उसमें मौजूद चीज़ को कामिल तरीक़ा से बहा दिया जाये गोया उन्होंने कामिल सब्र तलब किया, कि अल्लाह सब्र हम पर उंडेल दे। और लफ़्ज़ सब्र नकरा ज़िक्र किया जिसमें तनवीन ताज़ीम पर दलालत कर रही है। इससे भी पता चलता है कि उन्हें अज़ीम सब्र की दुआ की उनकी दुआ को रब तआला ने क़बूल फ़रमा लिया और उन्होंने वह अज़ीम सब्र अता फ़रमाया जिसकी बदौलत उन्हें शहादत जैसा अज़ीम मर्तबा नसीब हुआ।

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा से मरवी है कि फ़िरऔन ने अपनी धमकी पर अमल कर दिखाया वह जादूगर जिन्होंने ईमान क़बूल कर लिया था उनके हाथ पांव कटवा दिये और उन्हें शहीद करवा दिया गया यही क़ौल ज़्यादा वाज़ेह है क्योंकि फ़िरऔन ने अपना रोब जमाने और क़ौम को मूसा अलैहिस्सलाम का दीन क़बूल करने से रोकने और डराने में मुबालग़ा साबित करने के लिये ऐसा किया।

फ़िरऔन को कौम के सरदारों का डराना : और फ़िरऔन की कौम के सरदारों ने कहा क्या तू मूसा अलैहिस्सलाम और उसकी कौम को इसलिये छोड़ता है कि वह ज़मीन में फ़साद फैलायें? और तुझे और तेरे ठहराए हुए मावूदों को छोड़ दें। फ़िरऔन ने कहा हम उनके बेटों को क़त्ल कर देंगे और उनकी बेटियां ज़िन्दा रखेंगे और बेशक उन पर ग़ालिब हैं।

मूसा अलैहिस्सलाम का जादूगरों से मुक़ाबला कराने के बाद फ़िरऔन ने आप अलैहिस्सलाम को कुछ न कहा न गिरफ़्तार किया और न ही किसी क़िस्म की सज़ा दी बल्कि आपको आज़ाद छोड़ दिया।

यक़ीन कीजिये बेशक फ़िरऔन ने जब भी मूसा अलैहिस्सलाम को देखा उस पर आप का शदीद रोब तारी हुआ वह आपसे बहुत ज़्यादा डरता था यही वजह थी कि उसने आप अलैहिस्सलाम का रास्ता खुला छोड़ दिया था।

फ़िरऔन की कौम के सरदारों को यह मालूम नहीं था कि फ़िरऔन तो मूसा अलैहिस्सलाम से डरते हुए आपको आज़ाद रखे हुए है। उन्होंने कहा कि अगर तुमने मूसा अलैहिस्सलाम और उसकी कौम को इसी तरह आज़ादी दिये रखी वह अपनी तबलीग़ करते रहे तो तुम्हें और तुम्हारे खुदाओं को लोग छोड़ देंगे।

एक कौल ज़िजाज यह भी है:

तुमने अगर मूसा अलैहिस्सलाम को इस तरह आज़ादी दिये रखी उसका रास्ता खुला छोड़े रखा तो मूसा अलैहिस्सलाम तुम से और तुम्हारे मावूदों से दूर रहेगा।

ख़्याल रहे कि फ़िरऔन अगरचे खुद भी खुदाई का दावेदार था लेकिन उसने लोगों को बुतों की इबादत की इजाज़त दे रखी थी यही मफ़हूम है "इलाहतिका" का कि तुम्हारे मावूदों को छोड़ देंगे।

कहा गया कि फ़िरऔन ने अपनी कौम के लिये छोटे छोटे बुत बना रखे थे वह उन्हें बुतों की इबादत का हुक्म देता था और कहता था कि मैं तुम्हारा सबसे बड़ा खुदा हूं और इन बुतों का भी मैं रब हूं हज़रत हसन का क़ौल है कि फ़िरऔन खुद भी बुतों की इबादत करता था कौम का मक़सद यह था कि मूसा अलैहिस्सलाम को क़ैद कर लिया जाये और सख़्त तरीन सज़ा दी जाये।

कौम के इस मुतालबा पर फ़िरऔन ने हक़ीक़ते हाल को उन पर वाज़ेह न किया कि मुझे मूसा अलैहिस्सलाम से शदीद ख़ौफ़ लाहक़ हो चुका है।

अलबत्ता यह कहने लगा कि हम बनी इस्राईल के बेटों को ज़िबह करा देंगे और उनकी लड़कियों को ज़िन्दा छोड़ देंगे, इस तरह मूसा अलैहिस्सलाम के मददगार मर्द नहीं रहेंगे और उनकी कौम की नस्ल ख़त्म हो जायेगी, यह काम करना हम पर कोई मुश्किल नहीं क्योंकि उन पर ग़ल्बा हासिल है।

बनी इस्राईल का डरना और मूसा अलैहिस्सलाम का तसल्ली देना : मूसा अलैहिस्सलाम ने अपनी कौम से फ़रमाया अल्लाह तआला की मदद चाहो और सब्र करो, बेशक ज़मीन का मालिक अल्लाह तआला है अपने बंदों में से जिसे चाहे वारिस बनाये। और आख़िर मैदान परहेज़गारों के हाथ में है। उन्होंने कहा कि हम सताए गये हैं आपके आने से पहले और आपके तशरीफ़ लाने के बाद। आप अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया क़रीब है कि तुम्हारा रब दुश्मन को हलाक कर दे और उसकी जगह ज़मीन

का मालिक तुम्हें बनाये। फिर देखें तुम कैसे काम करते हो।

क़ौम ने जब सुना कि फ़िरऔन ने हमारे बच्चों को जिबह करने का मंसूबा बना लिया है तो बहुत ज़्यादा परेशान हुए उन पर बहुत ज़्यादा घबराहट तारी हुई कहने लगे ऐ मूसा अलैहिस्सलाम हमें आपके तशरीफ़ लाने से पहले बहुत सताया गया जिज़या हम से वसूल किया गया और हर मुश्किल काम और हर हक़ीर काम हम से लिया जाता रहा किसी क़िस्म की नेमत आसाईश हम तक नहीं पहुंचने दी गई हमारे बच्चों को ज़िबह कराया गया हमारी लड़कियों को ज़िन्दा छोड़ा गया। ऐ मूसा अलैहिस्सलाम अब तो अल्लाह तआला ने आपको नबी बनाकर मबऊस फ़रमाया है क्या अब भी हमें पहले की तरह सताया जायेगा? याद रहे कि उनका यह सवाल हक़ीक़ते हाल जानने के लिये था, कोई एतेराज़ न था और न ही मूसा अलैहिस्सलाम की नबुव्वत पर नाराज़गी का इज़हार था। मूसा अलैहिस्सलाम ने अपनी क़ौम को जवाब देते हुए दो चीज़ों का हुक्म दिया और दो चीज़ों की बशारत दी। आप अलैहिस्सलाम ने एक हुक्म यह दिया ।

अल्लाह तआला से इमदाद तलब करो और दूसरा हुक्म आपने यह दिया, सब्र करो। पहले आप ने उन्हें अल्लाह तआला से इमदाद तलब करने का हुक्म दिया इसलिये कि जब इंसान को यह मालूम हो जाये कि अल्लाह तआला के बग़ैर कोई और जहान में मुदब्बिर (तमाम उमूर की तदबीर फ़रमाने वाला) नहीं तो उसका सीना अल्लाह तआला की मारफ़त से खुल जाता है और उस पर तमाम क़िस्म की मुसीबतों को बर्दाश्त करना आसान हो जाता है। इसलिये कि वह समझता है कि यह अल्लाह तआला की तक़दीर है अल्लाह तआला की तक़दीर का मुशाहिदा करने की उसमें सलाहियत पैदा हो जाती है तमाम क़िस्म की मुसीबतें उस पर आसान हो जाती हैं।

मूसा अलैहिस्सलाम ने अपनी क़ौम को जो दो बशारतें दीं उन में से एक यह है:

बेशक ज़मीन का मालिक अल्लाह तआला है अपने बंदों में से जिसे चाहे मालिक बनाये।

आप अलैहिस्सलाम ने अपनी क़ौम को यह तसल्ली देते हुए यह ख़ुशख़बरी दी कि फ़िरऔन और उसकी क़ौम को अल्लाह तआला हलाक कर देगा और तुम्हें इस ज़मीन का मालिक बना देगा। मक़सद यह था कि यह लोग अल्लाह तआला और उसके वादे पर ईमान रखते हुए ख़ुश हो जायें और फ़िरऔन की धमकियों के ख़तरों को दिल से निकाल दें।

दूसरी बशारत आप अलैहिस्सलाम ने यह दी:

और आख़िर मैदान परहेज़गारों के हाथ है।

आला हज़रत मौलाना अहमद रज़ा ख़ां बरेलवी ने कितना प्यारा तर्जमा फ़रमाया: इसकी तफ़सीर में अल्लामा राज़ी फ़रमाते हैं।

बाज़ हज़रात ने कहा इससे मुराद सिर्फ़ आख़रत की कामयाबी है यानी मुत्तक़ीन का आख़िर में अंजाम अच्छा होगा, बाज़ों ने कहा मुराद इससे सिर्फ़ दुनिया की कामयाबी व कामरानी और दुश्मन पर उनको इमदाद हासिल होना और बाज़ हज़रात ने कहा कि इससे मुराद दीन और दुनिया की कामयाबी है।

ज़्यादा बेहतर यह आख़री मायने है क्योंकि लिल–मुत्तक़ीन की तफ़सीर में अल्लामा राज़ी फ़रमाते हैं:

इसमें इशारा है उस तरफ़ कि जो शख़्स अल्लाह तआला से तक़वा और ख़ौफ़ रखता है अल्लाह तआला उसकी दुनिया और आख़रत में इमदाद फ़रमाता है।

यानी दुनिया और आख़रत में कामयाबी का मैदान परहेज़गार लोगों को ही हासिल रहेगा।

फ़िरऔन की कौम का मशवरा : फिर जब मूसा अलैहिस्सलाम लेकर आये उन लोगों के पास हक़ हमारे हां से तो उन्होंने कहा क़त्ल कर डालो इन लोगों के बच्चों को जो इनके साथ ईमान लाये और ज़िन्दा छोड़ दो इनकी लड़कियों को और नहीं है काफ़िरों का हर मक्र मगर राएगां।

फिर जब मूसा अलैहिस्सलाम दीने हक़ लेकर उनके पास आये और अपनी सदाक़त और अपने दीन की हक़्क़ानियत को बराहीन क़ातेआ से साबित कर दिया तो वह लोग दलाइल व बराहीन के मैदान में ज़च हो गये और झूठे इल्ज़ामात पर उतर आये और बुहतान तराशी का शेवा इख़्तेयार करते हुए आपको जादूगर और झूटा कहना शुरू कर दिया। इससे भी जब बात न बनी तो तशद्दुद पर उतर आये। यह फ़ैसला किया कि बनी इस्राईल की नस्ल कुशी की जाये बच्चे मार डाले जायें लड़कियां ज़िन्दा रहने दी जायें। इस तरह बनी इस्राईल की अददी कुव्वत ख़त्म हो जायेगी और वह किसी तरह हमारे लिए ख़तरा का बाइस न बनेगी लेकिन उनकी यह साज़िश नाकाम हो गई।

क्या प्यारे अल्फ़ाज़ हैं।

यानी उन्होंने यह मंसूबा मूसा अलैहिस्सलाम को कमज़ोर करने के लिये किये और आपकी दावत को बे असर बनाने के लिए सोचा था। अल्लाह तआला फ़रमाता है कि उनकी यह चाल सीधी राह से बहक गई इसलिये मक़सद हासिल करने में नाकाम रहे।

फ़िरऔन का शेख़ी मारना : और फ़िरऔन ने (झुंझलाकर) कहा मुझे छोड़ दो मैं मूसा अलैहिस्सलाम को क़त्ल कर दूं और वह बुलाए अपने रब को (अपनी मदद के लिए) मुझे अंदेशा है कि वह तुम्हारा दीन बदल न दे या फ़साद न फैला दे मुल्क में।

फ़िरऔन शेख़ी बघारते हुए कहता है कि ऐ ऐयाने ममलिकत! अगर मुझे कुछ न कहो मैं चश्मे ज़दन में मूसा अलैहिस्सलाम का काम तमाम कर दूं, मुझे तो तुम्हारी राय का पास है और मैं उसे कुछ नहीं कहता गोया मूसा अलैहिस्सलाम पर उमराए हुकूमत की पासदारी की वजह से अब तक हाथ नहीं उठाया गया, हालांकि फ़िरऔन दिल में डर रहा था कि अगर उसने ज़्यादती की तो कहीं मूसा अलैहिस्सलाम का डंडा अज़दहा बन कर उसे निगल न जाये अपनी रियाया को अपनी पालीसी के बारे में मुतमईन करने के लिये फ़िरऔन ने दो ख़तरों का ज़िक्र किया।

पहली बात तो यह बताई कि अगर तुमने मूसा अलैहिस्सलाम के ख़िलाफ़ कोई मुअस्सिर कार्रवाई न की तो यह तुम्हारे अक़ाइद की इमारत को मुंहदिम करके रख देगा।

दूसरी यह बात है कि अब तो तुमने बड़े अमन व सकून और ख़ैर व आफ़ियत से ज़िन्दगी बसर कर रहे हो न बैरूनी हमले का ख़तरा है और न अंदरूने मुल्क कोई शोर बरपा कर सकता है और अगर

बनी इस्राईल के मर्दों और औरतों को पज़ीराई हासिल हो गई तो याद रखो बग़ावत के शोले भड़क उठेंगे। पसमांदा और मफ़्लूकुल हाल लोग तुम्हारी बाला दस्ती के ख़िलाफ़ उठ खड़े होंगे और मुल्क भर में फ़ित्ना व फ़साद की आग भड़का देंगे अक़्लमंदी और दूर अंदेशी का तक़ाज़ा यह है कि इस उभरते हुए ख़तरा का आज ही मुकम्मल तौर पर इंसदाद कर दिया जाये।

हक़ीक़त में उसकी ज़ात और उसका तख़्त शाही ख़तरे से दो चार था वह सिर्फ़ मिस्रियों का बादशाह ही नहीं था बल्कि उनका ख़ुदा भी था उसने सोचा अगर मूसा अलैहिस्सलाम अपनी तबलीग़ में कामयाब हो जाते हैं तो लोग उसकी ख़ुदाई को मानने से इंकार कर देंगे वह सिर्फ़ अल्लाह तआला की बंदगी को क़बूल करेंगे नीज़ इस जुल्म व सितम की फिर इस हाकिम कौम को इजाज़त न होगी।

दर असल दावत मूसवी से उसकी ज़ात को ख़तरा लाहक़ था। असाए मूसवी की हैबत से उसका तख़्त कांप उठा था। वह मूसा अलैहिस्सलाम के क़त्ल पर अपनी कौम को रज़ामंद करना चाहता था ताकि उसकी ज़ात और उसका इक़्तेदार सलामत रहे लेकिन एक चालाक और शातिर सियासत दान की तरह ज़ाहिर यह करना चाहता था कि यह इक़दामात कौम के मज़हब की सलामती और मुल्क में अमन व अमान बरक़रार रखने के लिये ज़रूरी हैं।

सदहा साल पहले फ़िरऔन ने जो चाल चली, फ़िरऔनी सियासत के पैरोकार आज भी हर्फ़ बहर्फ़ उसकी तक़लीद कर रहे हैं जब भी कोई अल्लाह तआला का बंदा उनकी धांदलियों के ख़िलाफ़ आवाज़ बुलंद करता है और उस ज़ालिमाना निज़ाम को बदलने के लिये उठ खड़ा होता है तो इन अक़्ल के अंधों को यह तौफ़ीक़ तो नहीं होती है कि वह अपनी ख़ामियों की इस्लाह कर लें, जोरो सितम का जो बाज़ार उन्होंने गर्म कर रखा है उसकी जगह क़ानून की फ़रमाबर्दारी बहाल करें, उल्टा वह लठ लेकर उन नेक बंदों के पीछे पड़ जाते हैं, उनको फ़सादी, इक़्तेदार का भूका और मालूम नहीं किन किन इल्ज़ामात से बदनाम करना शुरू कर देते हैं।

मूसा अलैहिस्सलाम का जवाब : और मूसा अलैहिस्सलाम ने कहा कि मैं पनाह मांगता हूं अपने रब की और तुम्हारे परवर्दिगार की हर उस मुतकब्बिर के शर से जो रोज़ हिसाब पर ईमान नहीं रखता।

मूसा अलैहिस्सलाम को जब फ़िरऔन के इस मंसूबा का इल्म हुआ तो आप घबराए नहीं, परेशान नहीं हुए, बल्कि आपकी ज़बान से वही ज़ुम्ला निकला जो मूसा अलैहिस्सलाम जैसे बरगुज़ीदा रसूल क शायाने शान था। फरमाया मुझे अकेला न समझो! मुझे उस रब की पनाह और हिमायत हासिल है जो मेरा भी रब है और तुम्हारा भी रब है। तुम लाख उसकी बंदगी का रिश्ता तोड़ना चाहो, तुम फ़िरऔन को अपना ख़ुदा समझते हो, तुम हक़ीक़त को बदल नहीं सकते, बंदे फिर भी तुम उसी रब तआला के हो, जिसका मैं बंदा हूं, मैंने हर मुतकब्बिर और सरकश के शर से दामने रहमत में पनाह ली हुई है तुम मेरा बाल भी बाका नहीं कर सकते।

ईमान छुपाने वाले शख़्स ने कहा : और कहने लगा एक मर्दे मोमिन, जो फ़िरऔन के ख़ानदान से था और छुपाए हुए था अपने ईमान को, क्या तुम क़त्ल करना चाहते हो एक शख़्स को इस वजह से कि वह कहता है मेरा परवर्दिगार अल्लाह तआला है? हालांकि वह ले आया है तुम्हारे पास दलीलें तुम्हारे रब तआला की तरफ़ से (उसे अपने हाल पर छोड़ दो) अगर वह हक़ीक़तन झूठा है तो उसके

झूट की शामत उस पर होगी, और अगर वह सच्चा हुआ (और तुमने उसको गज़ंद पहुंचाई) तो ज़रूर पहुंचेगा तुम्हें वह अज़ाब जिसका उसने तुम से वादा किया है बेशक अल्लाह तआला हिदायत नहीं देता उसे जो हद से बढ़ने वाला बहुत झूठ बोलने वाला हो ऐ मेरी कौम! माना आज हुकूमत तुम्हारी है (नीज़ तुम्हें) ग़ल्बा हासिल है इस मुल्क में (लेकिन मुझे यह तो बताओ) कौन बचाएगा, हमें खुदा के अज़ाब से? अगर वह हम पर आ जायेगा (यह सुनकर फ़िरऔन) कहने लगा मैं तो तुम्हें वही मश्वरा देता हूं जिसको मैं दुरुस्त समझता हूं और नहीं रहनुमाई करता मैं तुम्हारी मगर सीधे रास्ता की तरफ़।

कुब्ती कौम का एक फ़र्द हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम पर ईमान ला चुका था, लेकिन उसने अपनी कौम को अपने ईमान से आगाह नहीं किया था उसने जब सुना कि फ़िरऔन अपने हवारियों से मिलकर मूसा कलीमुल्लाह अलैहिस्सलाम को क़त्ल करने का मंसूबा बना रहा है तो उसने उनको इस इरादा से बाज़ आने की तक़लीन शुरू की, पहले तो उन्हें झिड़का कि तुम मूसा अलैहिस्सलाम के दरपै आज़ार क्यों हो? उसने तुम्हारा क्या जुर्म किया है? उसने कौन सी क़ानून शिकनी की है? महज़ इसलिये तुम उसे क़त्ल करना चाहते हो कि वह कहता है कि मेरा परवर्दिगार अल्लाह तआला है? और उसने अपने अक़ीदों की हक़्क़ानियत दलाइल व मोजिज़ात से साबित कर दी है तुम्हारा मुआशरा तो बड़ा तरक़्क़ी याफ़्ता है तुम इसके ज़ाती अक़ीदा में क्यों दख़ल देते हो? इसको उसके हाल पर छोड़ दो। अगर बिलफर्ज़ वह ग़लत कह रहा है तो ख़ुद ही कैफ़रे किरदार को पहुंच जायेगा, हमें अपने हाथ इसके लहू से सुर्ख़ करने की क्या ज़रूरत है?

आजकल हम बड़ी इज्ज़त व आराम की ज़िन्दगी बसर कर रहे हैं हुकूमत हमारी है हमारे इशारए अबरू पर लोगों की क़िस्मतें बदलती हैं, किसी की मजाल नहीं कि हमारे फ़रमान से सरताबी करे। दौलत, सामाने ऐश व इशरत की फ़रावानी है हम इस हालत को बदलना नहीं चाहते, हमारी पूरी कोशिश होनी चाहिये कि यह हालात बरक़रार रहें।

अगर मूसा अलैहिस्सलाम (नऊज़ूबिल्लाह) झूटे हैं तो ख़ुदा "मुसरिफ़े क़ज़्ज़ाब" (हद से बढ़ने वाला) बहुत झूठ बोलने वाला से ख़ुद निपट लेगा और अगर वह सच्चा है और हमने उसे क़त्ल कर दिया तो याद रखो ख़ुदा का ग़ज़ब जोश में आयेगा और ऐश व इशरत की यह बिसात उलट कर रखी दी जायेगी। इसलिये मसलेहत का यही तक़ाज़ा है कि हम मूसा अलैहिस्सलाम को न छेड़ें उसको अपने हाल पर छोड़ दें और मफ़रुज़ा ख़तरात से हवास बाख़्ता होकर कोई ऐसी ग़लती न कर बैठें कि ख़ुदा के अज़ाब में यूं गिरफ़्तार हो जायें कि बच निकलने की फिर कोई सूरत न रहे।

इसके जवाब में फ़िरऔन ने अपनी कौम से कहा कि मैंने तुम्हें जो मश्वरा दिया है मेरे नज़दीक वह दुरुस्त है और मैं तुम्हें इस पुर गामज़न करना चाहता हूं जिसमें तुम्हारी भलाई है।

इससे पता चलता है कि फ़िरऔन मुतलकुल अनान फ़रमांरवा होने के बावजूद आजकल के फ़िरऔनों की तरह तंग मिज़ाज और कम ज़र्फ़ नहीं था कि इधर किसी ने मुख़ालिफ़ राए दी झट वह ग़द्दार और गर्दन ज़दनी क़रार दे दिया गया बल्कि वह इख़्तेलाफ़ राए को बड़े तहम्मुल से बर्दाश्त करता था।

और कहने लगा वही ईमान वाला ऐ मेरी कौम मैं डरता हूं कि तुम पर (भी कहीं) पहली कौमों की

तबाही के दिन जैसा दिन न जाये जैसा हाल हुआ था कौम नूह, आद और समूद का। और उन लोगों का जो उनके बाद आए। और अल्लाह तआला नहीं चाहता कि बंदों पर जुल्म करे।

उस मर्दे मोमिन ने जब देखा कि उसकी पंद व मोअेज़त असर अंगेज़ नहीं हो रही तो उसने मज़ीद खुल कर गुफ़्तगू शुरू की और गुज़श्ता ज़मानों में अपनी बद आमालियों के बाइस तबाह व बर्बाद होने वाली क़ौमों का ज़िक्र शुरू किया और फ़रमाया उन तबाह होने वाली कौमों के हालात से इबरत पकड़ो और इस ग़लत रविश को छोड़ दो।

और उसने कहा मुझे पुकार के दिन का तुम पर डर है यानी इससे मुराद क़यामत का दिन है और यह हक़ीक़त है कि ज़रा सा ज़लज़ला आ जाये या कोई नागहानी मुसीबत आ जाये तो इतना शोर व गुल मचता है कि कानों पड़ी आवाज़ सुनाई नहीं देती। जब लोग यकायक क़यामत की हौलनाकियों से दो चार होंगे क़दमों के नीचे ज़मीन अंगारे की तरह तप रही होगी ऊपर से सूरज की किरणें आग बरसा रही होंगी सामने दौज़ख़ के शोले भड़क रहे होंगे चारों तरफ़ से फ़रिश्तों ने घेर रखा होगा इस सरासीमगी के आलम में शोर व गुल का आप ख़ुद अंदाज़ा कर सकते हैं इसलिये उस दिन को यौमुल तनाद यानी एक दूसरे को पुकारने का दिन कह दिया।

मज़ीद उसने अपनी नसीहत जारी रखते हुए कहा कि उस दिन से डरो जिस रोज़ तुम भागोगे पीठ फेरते हुए, नहीं होगा तुम्हारे लिये अल्लाह तआला के अज़ाब से कोई बचाने वाला और जिसे गुमराह कर दे अल्लाह तआला उसे कोई हिदायत देने वाला नहीं।

उस मर्दे मोमिन ने उनको समझाने की हर मुमकिन कोशिश की और कहा:

ऐ मेरी क़ौम! बेशक आये तुम्हारे पास यूसुफ़ अलैहिस्सलाम मूसा अलैहिस्सलाम से पहले रौशन दलाइल लेकर पस तुम शक में गिरफ़्तार रहे इसमें वह जो ले कर आये थे यहां तक कि जब वह वफ़ात पा गये तो तुमने कहना शुरू कर दिया कि नहीं भेजेगा अल्लाह तआला उनके बाद कोई रसूल, यूं ही गुमराह कर देता है अल्लाह तआला उसे जो हद से बढ़ने वाला शक करने वाला होता है (यूं ही गुमराह करता है) उन्हें जो झगड़ते रहते हैं अल्लाह तआला की आयतों में बग़ैर किसी (माकूल) दलील के जो उनके पास आई हो (यह तरीक़ा) बड़ी नाराज़गी का बाइस अल्लाह तआला के नज़दीक और मोमिनों के नज़दीक इसी तरह मोहर लगा देता है अल्लाह तआला हर मग़रूर और सरकश के दिल पर।

पहले जिन क़ौमों का ज़िक्र हुआ वह दूर दराज़ इलाक़ों में बसने वाली थीं अब उस नबी और उसके मुनकरीन का ज़िक्र हो रहा है जो कुछ अर्सा पहले इसी मुल्क के बाशिंदे थे। यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के नाम से कौन ऐसा मिस्री था जो वाकिफ़ न था? उनका दौरे हुकूमते मिस्र की तारीख़ का वह दरख़्शां दौर था जबकि हर तरफ़ अद्ल व इंसाफ़ का नूर बरस रहा था। क़ानून की बालादस्ती क़ाइम थी। ग़रीबों और मफ़लूकुल हाल लोगों की इस तरह दिल दारी की जाती थी कि सुब्हानल्लाह! इस आम और शदीद क़हत की चीरा दस्तियों से इन्हें यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के हुसने इंतेज़ाम के बाइस पनाह मिली थी। उस नबी और आदिल फ़रमारवां के साथ उसकी क़ौम ने जो बर्ताव किया "मोमिन आले फ़िरऔन" इसका ज़िक्र फ़रमाकर उन्हें तंबीह कर रहा है कि बे दाग़ सीरत उनके बे अदील निज़ामे

हुकूमत उनकी अदल गुस्तरी और उनकी रियाया परवरी को अपनी आंखों से देख लेने के बावजूद उनको नबी मानने के लिए तैयार न हुए बल्कि उनकी सारी उम्र इसी उधेड़ बुन में गुज़र गई की यह नबी है कि नहीं? क़तई और यक़ीनी दलाइल के बावजूद वह तज़बज़ुब का ही शिकार रहे और शक की वादियों में भटकते भटकते उम्र गुज़ार दी। और जब वह नय्यरे ताबां ग़रूब हो गया तो फिर कफ़े अफ़सोस मलने लगे और कहने लगे ऐसी हस्ती अब दोबारा पैदा नहीं होगी। इनके बाद कोई नबी नहीं आयेगा।

पहले हिदायत से यूं महरूम रहे अब इमकान यह था कि कोई दूसरा नबी तश्रीफ़ लाए तो यह अपनी गुज़श्ता गफ़लत और कोताही की तलाफ़ी कर लें यह कह कर "अब और कोई ऐसा नहीं आयेगा" उन्होंने इस इमकान को भी कलअदम (ख़त्म) कर दिया।

रजल मोमिन ने अपने कलाम के आख़िर में एक उसूल ब्यान फ़रमाया है कि जिस फ़र्द या कौम में यह तीनों ऐब पैदा हो जायें उनके हिदायत पाने की कोई उम्मीद नहीं रहती कोई मोजिज़ा पंद व नसीहत उन्हें जाय ज़लालत से नहीं निकाल सकती वह अंधेरों से इतने मानूस हो जाते हैं कि नूर से उन्हें घबराहट होने लगती है वह तीन ऐब यह हैं:

१. मुसरिफ़ : हद से बढ़ने वाला जो अहकाम और अम्र अल्लाह तआला ने दिये हैं उनकी पाबंदी न करने वाला उसे हज़ार समझाया जाये वह अपनी हटधर्मी से बाज़ आ जाने का नाम ही नहीं लेता।

२. मुरताब : वह शख़्स जो शक की बीमारी का मरीज़ हो उसके सामने रौशन दलाइल के अम्बार लगा दो वह शक के जरासीम उसके ज़ेहन से निकलते ही नहीं।

३. मन युजादिल : जो अल्लाह तआला की आयत में बेजा तावील करता है उनमें ऐब निकालता है तज़ाद साबित करता है जिस फ़िरक़ा में यह तीन ऐब हों ख़ुदा उन्हें कभी हिदायत नहीं देता।

और फ़िरऔन ने कहा ऐ हामान बना मेरे लिये एक ऊंचा महल (उस पर चढ़कर) उन राहों तक पहुंच जाऊं आसमान की राहों तक फिर मैं झांक कर देखूं मूसा अलैहिस्सलाम के ख़ुदा को और मैं तो यक़ीन करता हूं कि वह झूटा है और यूं आरास्ता कर दिया गया फ़िरऔन के लिये उसका बुरा अमल और रोक दिया गया उसे राहे रास्त से और नहीं था फ़िरऔन का सारा फ़रेब मगर उसकी अपनी तबाही के लिये।

फ़िरऔन ने जब यह महसूस किया कि इस मर्दे मोमिन की गुफ़्तगू हाज़िरीन को मुतास्सिर कर रही है तो उसने फ़ौरन पैंतरा बदला और कहने लगा कि मूसा अलैहिस्सलाम की सदाक़त परखना कोई इतना मुश्किल काम नहीं है कि हम इसके बारे में परेशान रहें और किसी हतमी (यक़ीनी) फ़ैसला पर पहुंच सकें। अभी एक बुलंद मीनार तामीर करते हैं और उस पर चढ़कर मूसा अलैहिस्सलाम के ख़ुदा का सुराग़ लगायेंगे ज़मीन पर तो कहीं है नहीं अगर आसमान पर मिल गया तो हम भी मान लेंगे और अगर आसमान पर भी सुराग़ न मिला तो फिर सबको यक़ीन हो जायेगा कि मूसा अलैहिस्सलाम की बात ग़लत है।

फिर हामान की तरफ़ मुतावज्जेह होकर कहा हामान ऐ वज़ीर बा तदबीर! यह काम तुम करो। हमें एक ऊंचा बहुत ऊंचा मीनार तामीर कर दो उस पर चढ़कर हम आसमान पर चढ़ने का रास्ता दर्याफ़्त कर लेंगे और आसमान का कोना कोना छान मारेंगे।

ख़्याल रहे कि हर चीज़ जिसके ज़रिये किसी जगह तक रसाई हासिल की जाये उसे सबब कहते हैं यहां अस्बाब से मुराद वह रास्ते हैं जो आसमान की तरफ़ जाते हैं या उनसे मुराद आसमान के दरवाज़े जिनके ज़रिया आसमान में दाख़िल होते हैं।

फ़िरऔन ने साथ ही अपनी राए भी ज़ाहिर कर दी कि मेरा तो यह ख़्याल है कि मूसा अलैहिस्सलाम की बात में सच्चाई नाम को नहीं। ख़्याल रहे ज़न के मायने गुमान ग़ालिब भी लिया जा सकता है और बमायने यक़ीन भी। यानी फ़िरऔन ने कहा कि मेरा ख़्याल है कि मूसा अलैहिस्सलाम सच्चे नहीं या इसका मतलब होगा मेरा यक़ीन है कि मूसा अलैहिस्सलाम तो सच्चे नहीं।

फ़िरऔन का मक्र व फ़रेब उसकी तबाही का सबब बना यानी उसकी मक्कारी अय्यारी हीला साज़ी और दानिस्ता इंकारे हक़ के बाइस उसके बुरे आमाल उसे हसीन व ख़ुशनुमा नज़र आने लगे वह उन्हीं के पीछे पड़ा रहा और जो हीला साज़ियां उसने हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के ख़िलाफ़ की थी वह सब खुद उसकी क़यास और बर्बादी का सबब बनीं।

और कहने लगा वह जो ईमान लाया ऐ मेरी क़ौम मेरे पीछे चलो मैं दिखाऊंगा तुम्हें हिदायत की राह।

यानी भलाई और नजात का रास्ता वह नहीं जिस पर फ़िरऔन तुम्हें चलाना चाहता है बल्कि आओ मैं तुम्हें रुश्द व हिदायत का रास्ता दिखाता हूं जिस पर चल कर तुम अपनी मंज़िल तक पहुंच सकते हो।

ऐ मेरी क़ौम यह दुनियावी ज़िन्दगी तो (चंद रोज़ा) लुत्फ़ अंदोज़ी है और आख़रत ही हमेशा ठहरने की जगह है जो बुरे काम करता है उसे सज़ा दी जायेगी उसी क़द्र और जो नेक काम करता है ख़्वाह मर्द हो या औरत बशर्ते कि वह ईमानदार हो तो वह दाख़िल होंगे जन्नत में रिज़्क़ दिया जायेगा उन्हें वहां बे हिसाब।

मर्दे मोमिन का सिलसिलए वअज़ शुरू है अब उसने मसलेहत के सारे हिजाब तार तार कर दिये हैं और उसके नताइज और ख़तरात से बे नियाज़ होकर ऐलाने हक़ कर दिया और कहा:

ऐ मेरी क़ौम अभी अजीब हाल है कि मैं तो तुम्हें दावत देता हूं नजात की तरफ़ और तुम बुलाते हो मुझे आग की तरफ़ तुम मुझे दावत देते हो कि मैं अल्लाह तआला का इंकार कर दूं और मैं शरीक ठहराऊं उसके साथ उसको जिसका मुझे इल्म तक नहीं और मेरा हाल यह है कि जिसकी बंदगी की तरफ़ तुम मुझे बुलाते हो उसे कोई हक़ नहीं पहुंचता कि उसे पुकारा जाए इस दुनिया में और आख़रत में और यक़ीनन हम सब को लौटना है अल्लाह तआला की तरफ़ और यक़ीनन हद से गुज़रने वाले जहन्नमी हैं पस (ऐ मेरे हम वतनो) अनक़रीब तुम याद करोगे जो मैं (आज) तुम्हें कह रहा हूं और मैं अपना (सारा) काम अल्लाह तआला के सुपुर्द कर देता हूं बेशक अल्लाह तआला देखने वाला है (अपने) बंदों को।

उस मर्दे मोमिन ने कहा यानी मेरे साथ भी तुम लोगों का रवैया अजीब व ग़रीब है मैं तुम्हें नजात की तरफ़ बुलाता हूं और तुम मुझे आग में कूदने की दावत देते हो। मैं तुम्हें उस खुदाए वाहिद की बंदगी

की तलक़ीन करता हूं जो सबसे ज़बरदस्त भी है और इसके बावजूद बड़ा बख़्शने वाला है। उम्र भर ख़तायें करके भी अगर उसके दरे करम पर कोई आ जाये तो माफ़ कर देता है और तुम मुझे कहते हो कि मैं अल्लाह तआला का इंकार कर दूं और उसके साथ ऐसे शरीक बनाऊं जो बिल्कुल बेबस और बे इख़्तेयार हैं। और जिन की ख़ुदाई का मुझे कोई इल्म नहीं। मैं तो तुम्हारी ख़ैर ख़्वाही में सरगर्म हूं और तुम हो कि अपने साथ मुझ ग़रीब को भी डुबो देना चाहते हो तुम मेरे अजीब दोस्त हो मुझे तुम्हारी ऐसी दोस्ती की ज़रूरत नहीं। मेहरबानी फ़रमाकर मुझे इस क़िस्म की नसीहतें न किया करो और उसने कहा जिन माबूदाने बातिला की इबादत और बंदगी की तुम मुझे नसीहत कर रहे हो यह तो ऐसे हैं कि इन्हें यह हक़ नहीं पहुंचता कि दुनिया में या आख़रत में इन्हें ख़ुदा तस्लीम किया जाये और न उन्होंने ख़ुद कभी अपनी ख़ुदाई का दावा किया है और इसका यह मतलब भी ब्यान किया गया है कि वह इतने बेबस और बे इख़्तेयार हैं कि न दुनिया में उनको पुकारने का कोई फ़ायदा है और न क़यामत के दिन किसी की फ़रयाद सुनेंगे।

फ़िरऔन जो अपने आपको रब तआला कहलवाता था उसके रूबरू और भरे दरबार में इतनी हक़ गोई एक मर्दे मोमिन को ही ज़ेबा है लेकिन जब सामेईन को उसने मुतास्सिर होते न देखा तो उसने साफ़ कहा आज तो तुम मेरी बात नहीं मान रहे हो और मेरी तल्ख़ नवाई तुम्हें गिरां गुज़र रही है अनक़रीब वह वक़्त आयेगा जब अज़ाबे इलाही तुम पर नाज़िल होगा उस वक़्त तुम मेरी इन बातों को याद करोगे।

पस बचा लिया उसे अल्लाह तआला ने इन अज़ीयतों से जिनके पहुंचाने का हीला किया और हर तरफ़ से घेर लिया फ़िरऔनियों को सख़्त अज़ाब ने। दौज़ख़ की आग पर पेश किया जाता है इन्हें इस पर सुबह व शाम और जिस रोज़ क़यामत क़ायम होगी (हुक्म होगा) दाख़िल कर दो फ़िरऔनियों को सख़्त तर अज़ाब में।

चुनांचे फ़िरऔनियों ने उस मर्दे हक़ को क़त्ल करने की साज़िशें कीं लेकिन वह सब नाकाम रहे। अल्लाह तआला ने अपने बंदे की ख़ुद हिफ़ाज़त फ़रमाई और कोई इसका बाल बीका न कर सका। उल्टा फ़िरऔन अपने लाओ लश्कर और जाह व हशमत समेत ग़र्क़ कर दिया गया। (ग़र्क़ करने का वाक़िया तफ़सीली तौर पर इंशाअल्लाह बाद में ज़िक्र किया जायेगा)

फ़िरऔन और उसका ठाठें मारता हुआ लश्कर समुंद्र में ग़र्क़ हो गया और मूसा अलैहिस्सलाम अपनी क़ौम को लेकर सलामती के साथ किनारे पर पहंच गये दुनिया में ही हक़ का बोल बाला और बातिल का मुंह काला हो गया।

याद रहे कि इनका क़िस्सा यहीं ख़त्म नहीं हुआ बल्कि फ़िरऔन और उसके परिस्तारों को हर सुबह व शाम दौज़ख़ की आग पर पेश किया जाता है और उन्हें बताया जाता है कि जब आलमे बरज़ख़ की मैयाद ख़त्म हो जायेगी तो क़यामत क़ायम होगी इसके बाद उन्हें इसी भड़कती हुई आग में झोंक दिया जायेगा।

इस आयत से उलेमाए अहले सुन्नत ने अज़ाबे क़ब्र का इस्बात किया है। क़ब्र से मुराद सिर्फ़ वह गढ़ा नहीं जिसमें किसी को दफ़न किया जाता है क्योंकि यह क़ब्र तो किसी को नसीब होती है और किसी

को नसीब ही नहीं होती बल्कि इससे मुराद बरज़ख़ है मरने के बाद और क़यामत से पहले के वक़्त को आलमे बरज़ख़ कहते हैं आले फ़िरऔन को दिये जाने वाले दो अज़ाबों का यहां ज़िक्र हो रहा है एक वह जिसमें वह क़यामत से पहले मुब्तला हैं दूसरा वह जो क़यामत के बाद उन्हें दिया जायेगा।

फ़िरऔन और उसकी कौम क़हत साली में मुब्तला : और बेशक हमने फ़िरऔन वालों को बरसों के क़हत और फलों के घटाने से पहले पकड़ा कि कहीं वह नसीहत मानें।

अल्लाह तआला ने उन्हें तबाह व बर्बाद करने से पहले दुनिया में छोटे छोटे अज़ाब देकर सोचने समझने का मौक़ा दिया कि यह कुफ़्र व मअसियत से बाज़ आ जायें फ़िरऔन ने अपने चार सौ बरस की उम्र में से तीन सौ बीस साल तो इस आराम के साथ गुज़ारे थे कि उसकी मुद्दत में कभी दर्द या बुख़ार या भूक में मुब्तला नहीं हुआ था। अब क़हत साली की सख़्ती उन पर इसलिये डाली गई कि वह उस सख़्ती ही से ख़ुदा को याद करें और उसकी तरफ़ मुतावज्जेह हों लेकिन वह कुफ़्र में इस क़दर रासिख़ हो चुके थे कि इन तकलीफ़ों से भी उनकी सरकशी बढ़ती रही।

तो जब उन्हें भलाई मिलती कहते यह हमारे लिये है और जब बुराई पहुंचती तो मूसा अलैहिस्सलाम और उसके साथ वालों से बद शगूनी लेते सुन लो इनके नसीबा की शामत तो अल्लाह तआला के यहां है लेकिन उनमें अक्सर को ख़बर नहीं और बोले तुम कैसी भी निशानी लेकर हमारे पास आओ कि हम पर उससे जादू करो हम किसी तरह भी तुम पर ईमान लाने वाले नहीं।

जब उनको अरज़ानी फ़राख़ी ख़ुशहाली और अमन व आफ़ियत हासिल होती तो कहते कि यह तो हमारा हक़ है हम जब मुस्तहिक़ थे तो इसीलिये ही यह अमन व आफ़ियत की हालत हमें हासिल है वह इसे अल्लाह तआला का फ़ज़्ल व करम न समझते और न ही शुक्र बजा लाते और जब उन्हें तंगहाली क़हत साली और मसाइब व आलाम का सामना करना पड़ता तो कहते कि यह बलाएं तो मूसा अलैहिस्सलाम और उसके साथियों की वजह से पहुंची अगर यह न होते तो यह मुसीबतें भी न आतीं। रब तआला ने फ़रमाया कि यह शामत तुम्हारे अपने आमाल यानी कुफ़्र व ज़लालत की वजह से है जो उसने तुम्हारे लिऐ मुक़र्रर किया है वही तुम्हें हासिल होना है फिर असल शामत तो वह होगी जब तुम्हें जहन्नम की आग में झोंक दिया जायेगा।

हक़ तो यह है कि वह इस क़िस्म की तंबीहात की वजह से सोचते समझते कुफ़्र व ज़लालत को छोड़ते और ईमान ले आते लेकिन वह अपनी सरकशी में इतने ग़ालिब आ चुके थे कि ईमान लाने से सरासर इंकार कर दिया जब वह अपनी हटधर्मी में यहां तक पहुंचे तो हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने उनके ख़िलाफ़ दुआ कर दी।

ऐ रब हमारे! इनके माल बर्बाद कर दे और इनके दिल सख़्त कर दे। आपकी दुआ को क़बूल कर लिया गया फ़िरऔनियों के दरहम व दीनार पत्थर होकर रह गये यहां तक कि फल और खाने की चीज़ें भी बर्बाद हो गईं और तरह तरह की उन पर आज़माईशें आयीं।

मुख़्तलिफ़ क़िस्म के अज़ाब : तो भेजा हमने उन पर तूफ़ान और टिड्डी, घुन (या किलनी या जुयें) और मेढक और ख़ून जुदा जुदा निशानियां तो उन्होंने तकब्बुर किया और वह मुजरिम कौम थी। जब

जादूगरों के ईमान लाने के बाद भी फ़िरऔनी अपने कुफ़्र और सरकशी पर जमे रहे तो उन पर अल्लाह तआला की तरफ़ से पै दरपै निशानियां आने लगीं क्योंकि मूसा अलैहिस्सलाम ने रब तआला के हुजूर अर्ज़ कर दिया था कि ऐ अल्लाह फ़िरऔन इस दुनिया में बहुत सरकश हो चुका है और लोगों को गुमराह कर रहा है इसे और इसकी क़ौम को ऐसे अज़ाब में गिरफ़्तार कर जो उनके लिए सज़ा और मेरी क़ौम और बाद में आने वालों के लिये इबरत का सबब बने तो अल्लाह तआला ने तूफ़ान भेज़ा, अब्र आया अंधेरा हवा, कसरत से बारिश होने लगी। क़ुबतियों के घरों में पानी भर गया यहां तक कि उसमें खड़े रह गये और पानी उनकी गर्दनों की हंसलियों तक आ गया। उनमें से जो बैठा डूब गया। न हिल सकते और न कुछ काम कर सकते थे हफ़्ते के दिन से फिर हफ़्ता के दिन तक सात रोज़ उसी मुसीबत में मुब्तला रहे और बावजूद इसके कि बनी इस्राईल के घर उनके घरों से मुत्तसिल थे उनके घरों में पानी न आया। जब यह लोग आजिज़ हुए तो हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम से अर्ज़ करने लगे हमारे लिये दुआ फ़रमाइये कि यह मुसीबत दूर हो तो हम आप पर ईमान ले आयेंगे और बनी इस्राईल को आपके पास भेज देंगे हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने दुआ फ़रमाई तूफ़ान की मुसीबत दूर हुई ज़मीन में सर सब्ज़ी व शादाबी आई जो पहले न देखी थी खेतियां ख़ूब हुई दरख़्त ख़ूब फले तो फ़िरऔनी कहने लगे। यह पानी तो नेमत था और वह ईमान न लाये एक महीना इसी तरह उनका आफ़ियत में गुज़र गया।

इसके बाद अल्लाह तआला ने टिड्डी भेजी वह खेतियां और फल, दरख़्तों के पत्ते मकानों के दरवाज़े, छतें, तख़्तें, सामान यहां तक कि लोहे की कीलें तक खा गई। और क़ुबतियों के घरों में भर गई और बनी इस्राईल के घरों में न गई। अब क़ुबतियों ने परेशान होकर फिर हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम से दुआ की दरख़्वास्त की, ईमान लाने का वादा किया उस पर अहद व पैमान किया सात रोज़ तक टिड्डी की मुसीबत में गिरफ़्तार रहे। फिर हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की दुआ से नजात पाई खेतियां और फल जो कुछ बाक़ी रहे गये थे उन्हें देखकर कहने लगे यह हमें काफ़ी हैं हम अपना दीन नहीं छोड़ते। चुनांचे ईमान लाने का वादा उन्होंने पूरा न किया और अपने बुरे आमाल में मुब्तला रहे एक माह फिर उनका इस तरह आफ़ियत में गुज़र गया।

इसके बाद उन पर क़ुमल का अज़ाब आया क़ुमल से मुराद घुन या जूं या कोई और छोटा कीड़ा है उस कीड़े ने जो खेतियां और फल बाक़ी बचे थे वह खा लिये, कपड़ों में घुस जाता था और जिल्द को काटता था खाने में भर जाता था। अगर कोई दस बोरी गेहूं चक्की पर ले जाता तो तीन सेर वापस लाता बाक़ी सब कीड़े खा जाते। यह कीड़े फ़िरऔनियों के बाल भवें पलकें चाट गये जिस्म पर चेचक की तरह भर जाते। सोना दुश्वार कर दिया था इस मुसीबत से फ़िरऔनी चीख़ पड़े और उन्होंने हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम से अर्ज़ किया हम तौबा करते हैं आप इस बला के दफ़ा होने की दुआ फ़रमाइये आपकी दुआ से अल्लाह तआला ने उनकी इस मुसीबत को भी सात रोज़ बाद दूर फ़रमाया। लेकिन फ़िरऔनियों ने फिर वादा तोड़ दिया और ईमान न लाये बल्कि पहले से ज़्यादा बुरे आमाल शुरू कर दिये एक माह उनका फिर आराम से गुज़र गया।

फिर अल्लाह तआला ने उन पर मेढक भजे और यह हाल हुआ कि आदमी बैठता था तो उसकी मजलिस में मेढक भर जाते थे बात करने के लिये मुंह खोलता तो मेढक कूद कर मुंह में दाख़िल हो

जाता। हांडियों में मेढक खाने में मेढक और चुल्हों में मेढक भर जाते थे आग बुझ जाती थी मेढक ऊपर सवार हो जाते थे। इस मुसीबत से फ़िरऔनी रो पड़े और हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम से अर्ज़ किया इस दफ़ा हम पक्का वादा करते हैं कि तौबा करेंगे ईमान लायेंगे आप दुआ करें यह मुसीबत हम से टल जाये। हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने उनसे अहद व पैमान लेकर फिर दुआ फ़रमाई सात रोज़ यह अज़ाब भी उन पर रहा आख़िर हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की दुआ से यह भी दूर हुआ एक महीना उनका फिर अमन व आफ़ियत में गुज़र गया लेकिन उन्होंने फिर वादा तोड़ दिया और अपने कुफ़्र पर बरक़रार रहे।

फिर अल्लाह तआला ने उन पर ख़ून का अज़ाब नाज़िल किया उनके तमाम कुंओं का पानी नहरों और चश्मों का पानी दरियाए नील का पानी गर्ज़ कि हर पानी उनके लिये ताज़ा ख़ून बन गया, उन्होंने फ़िरऔन से इसकी शिकायत की तो कहने लगा कि मूसा अलैहिस्सलाम ने अपने जादू से तुम्हारी नज़र बंदी की है उन्होंने कहा नज़र बंदी कैसे हमारे बर्तनों में ख़ून के सिवा पानी का नाम व निशान ही नहीं तो उसने हुक्म दिया कि कुबती और बनी इस्राईल एक बर्तन से पानी लिया करें। लेकिन इसका भी उन्हें कोई फ़ायदा न हुआ। बनी इस्राईल जब निकालते तो पानी ही निकलता लेकिन जब उसी बर्तन से कुबती निकालते तो ख़ून निकलता। यहां तक कि फ़िरऔनी औरतें प्यास से आजिज़ होकर बनी इस्राईल की औरतों के पास आई और उनसे पानी मांगा तो वह पानी उनके बर्तन में आते ही ख़ून हो गया तो फ़िरऔनी औरतें कहने लगीं कि तू पानी अपने मुंह में लेकर मेरे मुंह में डाल दे जब तक वह पानी बनी इस्राईली औरत के मुंह में रहा पानी था जब फ़िरऔनी औरत के मुंह में आया तो ख़ून बन गया। फ़िरऔन का शिद्दते प्यास की वजह से बुरा हाल था दरख़्तों का रस चूस रहा था वह भी मुंह में पहुंचते ही ख़ून बन जाता। फिर इसी मुसीबत से तंग आकर मूसा अलैहिस्सलाम से दुआ की दरख़्वास्त की और ईमान लाने का वादा किया मूसा अलैहिस्सलाम के साथ बार बार ईमान लाने के वादे और मुसीबत उठ जाने पर वादे को तोड़ने का ज़िक्र अल्लाह तआला ने इन अल्फ़ाज़े मुबारका में इरशाद फ़रमाया:

और जब उनपर अज़ाब वाक़ेय होता कहते ऐ मूसा अलैहिस्सलाम हमारे लिये अपने रब तआला से दुआ करो इस अहद के सबब जो उसका तुम्हारे पास है बेशक अगर तुम हम पर से अज़ाब उठा दोगे तो हम ईमान लायेंगे और बनी इस्राईल को तुम्हारे साथ कर देंगे। फिर जब हम उनसे अज़ाब उठा लेते एक मुद्दत के लिये जिस तक इन्हें पहुंचना है जभी वह फिर जाते।

उन तमाम पर अज़ाब एक एक हफ़्ता रहे जब भी कोई अज़ाब आता मूसा अलैहिस्सलाम से ईमान लाने का वादा करते कि तुम दुआ करो कि अगर यह अज़ाब हम से उठा लिया जाये तो हम ईमान ले आयेंगे अज़ाब जब उठा लिया जाता फिर वादा तोड़ देते एक महीना उनका आराम से गुज़र जाता फिर दूसरे अज़ाब में मुब्तला हो जाते हर बार उन्होंने ईमान लाने का वादा किया लेकिन तोड़ दिया।

बनी इस्राईल को मिस्र से ले जाने का हुक्म : और बेशक हम ने मूसा अलैहिस्सलाम को वही की कि रातों रात मेरे बंदे को ले चल और उनके लिये दरिया में ख़ुश्क रास्ता निकाल दे तुझे डर न होगा फ़िरऔन आ ले और न ख़तरा।

मूसा अलैहिस्सलाम को रब तआला ने हुक्म दिया कि बनी इस्राईल को रात में मिस्र से निकाल कर ले जाओ यानी अब बनी इस्राईल की नजात और फ़िरऔन और उसकी क़ौम की तबाही का वक़्त आ चुका है।

रात को निकालने का हुक्म दिया ताकि बनी इस्राईल का इज्तेमा दुश्मन के सामने न हो और वह उनकी मुराद की तकमील में रोड़ा न बने रात को निकालने की दूसरी वजह यह भी थी कि फ़िरऔन और उसका लश्कर उनका पीछा करके उनको रोक न सके और फ़िरऔन के अज़ीम लश्कर को देखकर बनी इस्राईल ख़ौफ़ न करें। चांदनी रात में मूसा अलैहिस्सलाम अपनी कौम को साथ लेकर चले बनी इस्राईल के पास काफ़ी मिक्दार में सोने और चांदी के ज़ेवरात भी थे जो उन्होंने कुबतियों से मांग कर लिये हुए थे कि हम इन्हें अपनी ईद में इस्तेमाल करेंगे वह पहले भी उनसे ज़ेवरात लेते रहते थे।

यूसूफ़ अलैहिस्सलाम ने वसीयत फ़रमाई थी कि जब तुम मिस्र से निकलो तो मेरा ताबूत भी साथ लेकर जाना तो मूसा अलैहिस्सलाम ने आपकी वसीयत के मुताबिक़ एक बूढ़ी औरत की निशानदेही पर वह ताबूत निकाल कर खुद बनफ़्से नफ़ीस उठाया।

इब्ने अबी हातिम हज़रत अबू मूसा अशअरी से एक रिवायत नक़्ल फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम एक देहाती के पास एक मर्तबा ठहरे उसने हुजूर की मेहमान नवाज़ी की और बहुत ताज़ीम और तकरीम की आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि तुम कभी हमारे पास भी आना, तो वह देहाती एक मर्तबा आप की ख़िदमत में हाज़िर हुआ तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया बताओ तुम्हें किस चीज़ की ज़रूरत है? कि मैं तुम्हें अता करूं? उसने कहा एक ऊंटनी जिस पर कजावा पड़ा हुआ हो और एक दूध देने वाली बकरी जिसका दूध मेरे घर वाले पियें।

हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया तू तो बनी इस्राईल की बूढ़ी औरत से भी गया गुज़रा हुआ है (उसने तो जन्नत की तलब की थी) सहाबा किराम ने पूछा या रसूलल्लाह बनी इस्राईल की बूढ़ी औरत का वाक़िया क्या है?

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया जब मूसा अलैहिस्सलाम अपनी कौम को साथ लेकर चले तो रास्ता भूल गये इस पर हैरानगी से एक दूसरे से पूछने लगे यह क्या हुआ कुछ लोगों को हजरत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम की वसीयत का इल्म था तो उन्होंने कहा कि यूसुफ़ अलैहिस्सलाम ने अपनी वफ़ात के वक़्त हमारे आबा व अजदाद से पुख़्ता वादा लिया था कि मिस्र से निकलते वक़्त मेरा ताबूत ज़रूर साथ ले जाना हमारे भूलने की वजह यही हो सकती है हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया तुम में से कौन है जो यूसुफ़ अलैहिस्सलाम की क़ब्र को जानता है? उन्होंने बताया कि हम में से एक बूढ़ी औरत के बग़ैर कोई भी नहीं जानता कि यूसुफ़ अलैहिस्सलाम की क़ब्र कहां है? उसने कहा मैं उस वक़्त तक नहीं बताऊंगी जब तक मेरी एक शर्त न पूरी करो। आप ने पूछा वह क्या है? उसने कहा मेरी सिर्फ़ यह ख़्वाहिश है कि मैं जन्नत में आपके साथ रहूं। मूसा अलैहिस्सलाम कुछ सोच में पड़े तो अल्लाह तआला ने आपकी तरफ़ वही नाज़िल की कि ऐ मूसा अलैहिस्सलाम इससे वादा कर लो। आप ने कहा ठीक है तुम्हारी दरख़्वास्त मंजूर है मूसा अलैहिस्सलाम जब उस औरत के साथ चले तो उसने आपकी क़ब्र की निशानदेही की। जब यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के ताबूत को निकाला गया तो अंधेरी रात रौशन हो गई इस तरह उन्हें रास्ता मिल गया यह हदीस ग़रीब है। क़रीब है कि सहाबी तक मौक़ूफ़ हो।

सुबह होने पर फ़िरऔन और उसकी कौम की हलाकत की तरफ़ रवानगी : फ़िरऔन ने शहरों में जमा करने वाले भेजे कि यह लोग एक थोड़ी जमाअत हैं और बेशक हम सबका दिल जलाते हैं और

बेशक हम सब चौकन्ने हैं (अल्लाह तआला ने फ़रमाया) तो हमने उन्हें बाहर निकाला बाग़ों और चश्मों और ख़ज़ानों और उम्दा मकानों से हमने ऐसा ही किया और उनका वारिस कर दिया बनी इस्राईल को फ़िरऔन ने इनका ताक्कुब किया दिन निकले, फिर जब आमना सामना हुआ दोनों गरोहों का तो मूसा अलैहिस्सलाम वालों ने कहा, हम को उन्होंने आ लिया, मूसा अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया यूं नहीं बेशक मेरा रब तआला मेरे साथ है वह मुझे अभी राह देता है।

फ़िरऔन ने जब देखा कि बनी इस्राईल मौजूद नहीं हैं तो बहुत गुस्से में हुआ उसने हर तरफ़ अपने कारिंदे दौड़ाकर अपनी फ़ौजों, लश्करों और अपने तमाम हामियों को जमा कर लिया और कहने लगा कि बनी इस्राईल हमारे मुक़ाबले में एक छोटी सी जमाअत है वह हमेशा ग़ैज़ व ग़ज़ब को भड़काते रहते हैं मैं चाहता हूं कि इनको मुकम्मल तौर पर तबाह व बर्बाद कर दिया जाये।

अल्लाह तआला ने फ़िरऔन और उसको बर्बाद करने के लिए उनके दिलों में यह बात साबित कर दी कि सब लोग बनी इस्राईल का पीछा करके उनका मुकम्मल सफ़ाया कर दो इस तरह अल्लाह तआला ने अपनी हिकमते कामिला से उन तमाम फ़िरऔनियों को बर्बाद करके अपना वादा पूरा फ़रमा दिया। फ़िरऔन को मानने वाले तमाम उसके कहने पर अपनी नेमतों अपने आला क़िस्म के मकानात और फलदार दरख़्तों के बाग़ात और अपने सामाने तअय्युश ऐश व इशरत के सामान को छोड़कर बज़ाहिर बनी इस्राईल को तबाह करने के लिए चले जो दरहक़ीक़त अपनी ही बर्बादी की तरफ़ चल रहे थे।

फ़िरऔन के कहने पर सब लोग जमा होकर बनी इस्राईल के तआक़्क़ुब में चल पड़े, दरियाए क़ुलज़म के किनारे पर उनके सामने पहुंच गये बनी इस्राईल ने जब देखा तो कहने लगे कि अब तो हम पकड़ लिये जायेंगे उनके दिलों में पहले ही फ़िरऔन का रोब छाया हुआ था और वह तादाद में भी फ़िरऔनियों से बहुत कम थे और किसी क़िस्म का उनके पास कोई अस्लहा भी नहीं था इसलिए उन पर बहुत ज़्यादा ख़ौफ़ तारी हुआ तो मूसा अलैहिस्सलाम ने कहा कि मेरा रब तआला मेरे साथ है वह अभी मेरी रहनुमाई फ़रमायेगा।

मूसा अलैहिस्सलाम को दरिया में असा मारने का हुक्मः तो हमने मूसा अलैहिस्सलाम को वही फ़रमाई कि दरिया पर अपना असा मारो तो जब ही दरिया फट गया तो हर हिस्सा हो गया जैसा बड़ा पहाड़ और वहां क़रीब लाए हम दूसरों को और हमने बचा लिया मूसा अलैहिस्सलाम और उसके सब साथ वालों को फिर दूसरों को ग़र्क़ कर दिया बेशक इस में ज़रूर निशानी है और उनमें से अक्सर मुसलमान न थे और बेशक तुम्हारा रब तआला वही इज़्ज़त वाला मेहरबान है।

अल्लाह तआला ने मूसा अलैहिस्सलाम को हुक्म दिया कि आप अपना असा दरिया पर मारो आपने जब अपना असा दरिया पर मारा तो दरिया फट गया उसने रास्ता छोड़ दिया दर्मियान में ख़ुश्क रास्ता और इधर उधर पानी की बुलंदी इतनी अज़ीम थी जैसे बड़े पहाड़ हों। बनी इस्राईल चूंकि बारह क़बाइल थे एक ही रास्ते में एक दूसरे के साथ चलना मुनासिब नहीं समझते थे इसलिए हर क़बीला के लिए अलग रास्ता बनाया गया यानी दरिया में बारह रास्ते बनाए गये। हर रास्ता के दायें बायें पानी की बुलंदी अज़ीम पहाड़ों जैसे थे वह कहने लगे कि हमें क्या मालूम है कि हमारे दूसरे भाई ज़िन्दा हैं या पानी की तुग़यानी में ग़र्क़ हो चुके हैं। तो दर्मियान से रौशनदानों की तरह पानी को हटा दिया गया वह एक

दूसरे को देखते हुए दरिया उबूर कर गये। फ़िरऔन और उसके लश्कर ने भी दरिया में रास्ता देखकर अपने घोड़े दौड़ाए लेकिन वह बनी इस्राईल को न पा सके।

हज़रत साइब रज़ियल्लाहु अन्हु से मरवी है कि फ़िरऔनियों और बनी इस्राईल के दर्मियान जिब्राईल अमीन थे बनी इस्राईल के पिछले लोगों के दिलों में यह बात डाल रहे थे कि जल्दी चलो अगले लोगों से मिल जाओ। और फ़िरऔनियों के दिलों में यह बात डाल रहे थे कि आहिस्ता चलो पिछले लोगों को साथ मिलने दो बनी इस्राईल जब दरिया उबूर कर चुके और फ़िरऔनी अभी दर्मियान में ही पहुंचे थे तो पानी आपस में मिल गया और इस तरह फ़िरऔन और उसकी क़ौम के तमाम लोग, एक रिवायत के मुताबिक़ यह छः लाख की तादाद में थे, ग़र्क़ हो गये बनी इस्राईल यह तमाम माजरा अपनी आंखों से देख रहे थे।

फ़िरऔन का ग़र्क़ होने पर ईमान लाना और क़बूल न होना : और हम बनी इस्राईल को दरिया में पार ले गये तो फ़िरऔन और उसके लश्करों ने उनका पीछा किया सरकशी और जुल्म से यहां तक कि जब उसे डूबने ने आ लिया बोला मैं ईमान लाया कि कोई माबूद नहीं सिवा उसके जिस पर बनी इस्राईल ईमान लाए और मैं मुसलमान हूं क्या अब? और पहले से नाफ़रमान रहा और तू फ़सादी था, आज हम तेरी लाश को उतरा देंगे (तुंद मौजों से बाहर फेंक देंगे और बाक़ी रखेंगे) कि तू अपने पिछलों के लिए निशानी हो और बेशक लोग हमारी आयतों से ग़ाफ़िल हैं।

सुब्हनाल्लाह! मालिकुल मुल्क की कितनी अज़ीम कुदरत है? कि वह शख़्स जो कभी (मैं तुम्हारा बड़ा रब हूं) का दावा करता था आज उसकी गिरफ़्त में आता है दरिया की तुग़यानी में शदीद मौजों के थपेड़ों में आते ही एक मर्तबा नहीं बल्कि तीन मर्तबा ईमान लाता है एक मर्तबा कहा आमन्तु मैं ईमान लाया दूसरी मर्तबा कहा।

कोई सच्चा माबूद नहीं सिवा उसके जिस पर बनी इस्राईल ईमान लाये। तीसरी मर्तबा कहा: और मैं मुसलमान हूं।

लेकिन यह इसका ईमान क़बूल न हुआ क्योंकि रब तआला के अज़ाब को देखकर, फ़रिश्तों का सामना करते हुए ईमान लाना नफ़ा मंद नहीं हो सकता।

तो उनके ईमान ने उन्हें काम न दिया जब उन्होंने हमारा अज़ाब देख लिया।

रब तआला ने फ़रमाया अब तू ईमान लाता है पहले नाफ़रमानियां करता रहा और फ़साद फैलाता रहा यानी पहले तुम्हें ईमान लाने का कितना वक़्त दिया? कई मर्तबा तुझे आज़माईश में मुब्तला करके ईमान लाने की तरफ़ सोचने के मौक़े फ़राहम किये, लेकिन उस वक़्त तू ईमान न लाया, अब ग़र्क़ होने पर तेरे ईमान लाने को क़बूल नहीं किया जा सकता। अब तो तेरे जिस्म को दरिया की मौजों से बाहर फेंक कर लोगों के लिए निशानी बनाया जायेगा। सब को पता चल जाये कि आज खुदाई दावेदार ग़र्क़ होकर मुर्दा हालत में पड़ा है खुदाए हक़ीक़ी तो वह हो सकता है जो हमेशा के लिए क़ायम व दायम है।

बनी इस्राईल की नाशुक्री : और हमने बनी इस्राईल को दरिया पार उतारा तो उनका गुज़र एक ऐसी क़ौम पर हुआ कि अपने बुतों के आगे आसन मारे थे बोले ऐ मूसा अलैहिस्सलाम! हमें एक खुदा

बना दे जैसे उनके लिए इतने खुदा हैं आपने फ़रमाया तुम ज़रूर जाहिल लोग हो यह हाल तो बर्बादी का है जिसमें यह लोग हैं और जो कुछ कर रहे हैं वह सरासर बातिल है आपने कहा क्या अल्लाह तआला के सिवा तुम्हारा और कोई खुदा तलाश करूं हालांकि उसने तुम्हें ज़माने भर पर फ़ज़ीलत दी।

अल्लाह तआला ने जब बनी इस्राईल के दुश्मनों को हलाक कर दिया जिसका वह मुशाहिदा कर रहे थे उन्हें दरिया से सलामती से गुज़ार दिया हक़ तो यह था कि वह अल्लाह तआला का शुक्रिया अदा करते लेकिन रब तआला ने उनकी जहालत का तज़्किरा फ़रमाया कि वह कितने जाहिल और नाशुक्रे लोग थे कि वह बुत परस्तों को देखकर कहने लगे कि हमें भी ऐसा खुदा बना दो।

बनी इस्राईल ने जो बुत देखे थे वह गाए की शक्ल के थे (बुत परस्ती की तरफ़ इनके मीलान को देखकर ही सामरी ने इन्हें बछड़े की पूजा पर लगा दिया था)

मूसा अलैहिस्सलाम ने उन्हें कहा कि तुम तो जाहिल लोग हो क्या तुम्हें मालूम नहीं कि इबादत तो आला दर्जे की ताज़ीम का नाम है और आला दर्जे की ताज़ीम उसी ज़ात की हो सकती है जिसके अज़ीम इनामात हों और सबसे बड़े इनामात जिस्म की तख़्लीक़, ज़िन्दगी अता करना ख़्वाहिशात, कुदरत अता करना और नफ़ामंद अशिया का पैदा करना उन अशिया पर कादिर सिवाए अल्लाह तआला के और कोई नहीं और इबादत के लायक़ भी उसके सिवा कोई नहीं।

तौरात लेने के लिए मूसा अलैहिस्सलाम का तूर पर जाना: मूसा अलैहिस्सलाम ने अपनी क़ौम को पहले ही बता दिया था कि जब अल्लाह तआला हमें फ़िरऔनियों से नजात देगा तो मैं तुम्हें रब तआला से एक किताब लाकर दूंगा जिसमें हराम व हलाल अम्र व नही का ज़िक्र होगा इसी वादे के मुताबिक़ आप अल्लाह तआला के हुक्म से तौरात लेने तूर पर आये।

और हमने मूसा अलैहिस्सलाम से तीस रात का वादा फ़रमाया और उनमें दस और बढ़ाकर पूरी कीं तो उसके रब का वादा पूरी चालीस रात का हुआ और मूसा अलैहिस्सलाम ने अपने भाई हारुन अलैहिस्सलाम से कहा मेरी क़ौम पर मेरे नायब रहना और इस्लाह करना और फ़सादियों की राह को दख़ल न देना।

अल्लाह तआला ने मूसा अलैहिस्सलाम से वादा फ़रमाया कि तुम तूर पर आओ तुम्हें चालीस दिनो के बाद किताब दी जायेगी आप को हुक्म दिया गया कि तुम तीस दिन ऐसे नेक आमाल करना जो मेरे कुर्ब का ज़रिया बनें फिर दस दिनों में तुम्हें किताब अता कर दी जायेगी इस तरह तीस दिनों का वादा चालीस दिनों तक हुआ और यह भी ब्यान किया गया है कि मूसा अलैहिस्सलाम को ज़ीक़ादा के तीस रोज़े रखने का हुक्म दिया जब आपने तीस दिन के रोज़े मुकम्मल कर लिए तो मुंह में बू, नामुनासिब समझकर मिस्वाक की फ़रिश्तों ने कहा कि हम तो तुम्हारे मुंह से कस्तूरी की खुश्बू सूंघ रहे थे लेकिन तुमने मिस्वाक करके ज़ाया कर दी तो अल्लाह तआला ने आपको वही की।

क्या तुम्हें मालूम नहीं? कि रोज़ेदार के मुंह की बू मेरे नज़दीक कस्तूरी से भी ज़्यादा अच्छी है। आपको अल्लाह तआला ने हुक्म दिया कि ज़िल हिज्जा के दस रोज़े और रखें इस तरह दस दिन बढ़ा कर चालीस कर दिये गये। मूसा अलैहिस्सलाम ने जाते हुए अपने बड़े भाई हारुन अलैहिस्सलाम

को अपना नायब बनाया जो ख़ुद भी मुस्तक़िल नबी थे यह नयाबत नबुव्वत में नहीं थी बल्कि रिसालत में थी यानी हज़रत हारून अलैहिस्सलाम फ़क़त नबी थे और मूसा अलैहिस्सलाम रसूल भी थे इसलिए आपने उन्हें अपने मनसबे रिसालत का नायब और ख़लीफ़ा बनाया वह भी फ़क़्त तूर से वापसी तक।

दूसरी वजह है कि आपका इरशाद एक मुहावरा के मुताबिक़ है यानी जिस तरह दो शख़्सों के ज़िम्मे कोई काम लगाया जाये तो उनमें से एक को अगर कहीं जाना हो तो दूसरे से कहता है।

तुम मेरी जगह भी काम करना यानी बहुत ज़्यादा कोशिश से काम करना ऐसे पता चले कि तुम दो आदमियों की जगह काम कर रहे हो।

रब तआला के दीदार की तमन्ना : जब मूसा अलैहिस्सलाम हमारे वादे पर हाज़िर हुए और उनसे उनके रब ने कलाम फ़रमाया अर्ज़ की ऐ मेरे रब मुझे अपना दीदार करा कि तुझे देखूं। फ़रमाया तू मुझे हरगिज़ न देख सकेगा हां उस पहाड़ की तरफ़ देख यह अगर अपनी जगह पर ठहरा रहा तो अनक़रीब तू मुझे देख लेगा फिर जब उसके रब ने पहाड़ पर अपना नूर चमकाया उसे पाश पाश कर दिया और मूसा अलैहिस्सलाम बेहोश होकर गिर गये।

अल्लाह तआला ने हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम से कलाम फ़रमाया अलबत्ता इस कलाम की हक़ीक़त को ब्यान करना मुमकिन नहीं। जब मूसा अलैहिस्सलाम कलाम सुनने के लिए हाज़िर हुए तो आपने तहारत की और पाकीज़ा लिबसा पहना और रोज़ा रखकर तूर सीना में हाज़िर हुए अल्लाह तआला ने एक बादल नाज़िल फ़रमाया जिसने पहाड़ को हर तरफ़ बक़द्रे चार फ़रसंग के ढक लिया, शयातीन और ज़मीन के जानवर यहां तक कि साथ रहने वाले फ़रिश्ते तक वहां से अलग कर दिये गये और आपके लिए आसमान खोल दिया गया तो आपने फ़रिश्तों को देखा और आपने अर्शे मुअल्ला को देखा लौहे महफ़ूज़ को देखा अल्लाह तआला ने आपसे कलाम फ़रमाया आपने उसकी बारगाह में अपने मअरुज़ात पेश किये हज़रत जिब्राईल अलैहिस्सलाम अगरचे साथ थे लेकिन वह भी रब तआला की क़ुदरत से मूसा अलैहिस्सलाम और रब तआला के दर्मियान होने वाले कलाम को न सुन सके।

मूसा अलैहिस्सलाम ने रब तआला से कलाम को सुनकर ऐसी लज़्ज़त महसूस की कि आपके दिल में रब तआला को देंखने की ख़्वाहिश पैदा हो गई और अर्ज़ की ऐ अल्लाह तआला मैं तुझे देखना चाहता हूं तू मुझे अपने दीदार से मुशर्रफ़ फ़रमा। रब तआलां ने फ़रमाया तुम मुझे नहीं देख सकते, यह नहीं फ़रमाया मुझे नहीं देखा जा सकता यही वजह है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मेराज की रात रब का दीदार किया। नीज़ देखने की नफ़ी दुनिया से मुताल्लिक़ है जन्नत में मोमिनीन रब तआला का दीदार करेंगे।

मूसा अलैहिस्सलाम का सवाल करना ही इस चीज़ पर दलालत कर रहा है कि आपने मुमकिन चीज़ का सवाल किया अगर रब तआला को देखना मुहाल होता तो आप सवाल न करते।

रब तआला ने फ़रमाया कि मैं अपनी तजल्लियात का ज़हूर पहाड़ पर करता हूं पहाड़ को देखो अगर तुमने पहाड़ को देख लिया तो समझना कि मुझे भी देख लोगे लेकिन रब तआला की तजल्लियात की ताब पहाड़ न ला सका कि वह क़ायम रहता बल्कि वह भी पाश पाश हो गया और मूसा अलैहिस्सलाम भी होश बरक़रार न रख सके।

क़ौम ने बछड़े की पूजा शुरू की : रब तआला ने कहा हमने तेरे आने के बाद तेरी क़ौम को बला में डाला और उन्हें सामरी ने गुमराह कर दिया तो मूसा अलैहिस्सलाम अपनी क़ौम की तरफ़ पलटे गुस्से में भरे हुए अफ़सोस करते हुए आपने कहा ऐ मेरी क़ौम क्या तुमसे तुम्हारे रब ने अच्छा वादा न किया था कि तुम पर लंबी मुद्दत गुज़री या तुमने चाहा कि तुम पर तुम्हारे रब का अज़ाब उतरे तुम ने मेरे वादे के ख़िलाफ़ किया उन्होंने कहा हमने आपके वादे की ख़िलाफ़वर्ज़ी अपने इख़्तेयार से नहीं कि लेकिन हमसे कुछ बोझ उठवाए गये इस क़ौम के ज़ेवरात के तो हमनें उन्हें डाल दिया फिर इसी तरह सामरी ने डाला तो उनके लिए बछड़ा वनाया है जो बे जान जिस्म है गाए की तरह बोलता है तो बोले यह तुम्हारा माबूद और मूसा अलैहिस्सलाम का माबूद और मूसा अलैहिस्सलाम तो भूल गये तो क्या नहीं देखते कि वह इन्हें किसी बात का जवाब नहीं देता और इनके किसी बुरे भले का इख़्तेयार नहीं रखता।

मूसा अलैहिस्सलाम जव अपनी क़ौम के सत्तर सरकर्दा अफ़राद को लेकर तूर पर किताब लेने गये क़ौम से चालीस दिनों का वादा करके गये आप अपनी क़ौम के अफ़राद से ज़रा जल्दी ही आगे तूर पर पहुंच गये रब तआला ने पूछा तुम अपनी क़ौम के अफ़राद से पहले क्यों आ गये तो आपने अर्ज़ किया ऐ मौलाए कायनात वह भी मेरे पीछे ही आ रहे हैं सिर्फ़ तेरी ख़ुशनूदी हासिल करने के लिए जल्दी आ गया। तूर पर ही अल्लाह तआला ने आपको यह ख़बर दी थी कि तुम्हारी क़ौम गुमराह हो चुकी है आपको गए हुए जब बीस दिन मुकम्मल हो गये तो सामरी ने कहा कि मूसा अलैहिस्सलाम को गये बीस दिन और बीस रातें हो चुकी हैं चालीस की तकमील हो गई आप नहीं आए इसकी वजह सिर्फ़ यह है कि तुम्हारे पास फ़िरऔनियों के ज़ेवरात हैं वह तुम पर हराम हैं इसलिए वह ज़ेवरात तुम लोग मुझे दे दो कि मैं एक खुदा बना दूं क्योंकि पहले ही देख चुका था कि क़ौम ऐसा ख़ुदा चाहती है जो उन्हें नज़र आये। यह ख़ुद भी गाए की परस्तिश करता था इसलिए उसने तमाम ज़ेवरात जमा करके उन्हें एक बछ़ड़ा बना दिया।

बछड़े के बोलने की वजह : चूंकि फ़िरऔन के लश्कर ने अपने घोड़ों को दरिया में डालने से सोच व विचार शुरू कर दी थी तो जिब्राईल अलैहिस्सलाम एक घोड़ी पर सवार होकर आए वह जहां क़दम रखती थी वहां सब्ज़ घास पैदा हो जाती सामरी ने यह माजरा देख लिया था इसलिए उसने घोड़ी के सुम के नीचे से मिट्टी उठाकर महफ़ूज़ कर ली थी वही मिट्टी बछड़े के ढांचे में डाल दी थी जिसकी वजह से उसमें असरे हयात पैदा हो गया वह गाए की तरह डकारने लगा सामरी से जब मूसा अलैहिस्सलाम ने पूछा।

सामरी तूने ऐसा क्यों क्या? उसने कहा मैंने वह देखा जो लोगों न देखा। तो एक मुट्टी भर ली फ़रिश्ते के निशान से फिर उसे डाल दिया और मेरे जी को यही भला लगा।

घोड़ी के क़दमों के निशानात से मिट्टी लेना : अल्लामा क़ुरतबी ने भी यही ब्यान किया है कि सामरी ने जिब्राईल अलैहिस्सलाम की घोड़ी के क़दमों के निशान की जगह से एक मुट्ठी भर मिट्टी लेकर बछड़े के ढांचे में डाली।

ख़्याल रहे कि सबसे पहले इस क़ौल (घोड़ी के क़दमों के निशान से मिट्टी लेना) को अबू मुस्लिम असफ़हानी ने तसलीम नहीं किया जो बहुत बड़ा मुअतज़ली है। फिर इस क़ौल का सहारा लेते हुए

मौदूदी साहब ने तफ़हीमुल कुरआन में भी यही तहरीर कर दिया कि सामरी ने मूसा अलैहिस्सलाम से झूट मूट कह दिया था मौदूदी सहाब की यह सोच ग़लत है कुरआन पाक ने अगरचे वाज़ेह तौर पर इस क़ौल को नक़्ल भी नहीं किया लेकिन रद्द भी नहीं किया इसलिए मुतक़द्देमीन हज़रात की तफ़ासीर को छोड़कर एक मुअतज़ली की बात को तस्लीम करना भी कोई अक़्ल व दानिश का काम नहीं।

वापसी पर मूसा अलैहिस्सलाम ने हारुन अलैहिस्सलाम की सरज़निश की: और जब मूसा अलैहिस्सलाम अपनी क़ौम की तरफ़ पलटे गुस्से में भरे झुंझलाए हुए कहा तुमने मेरी जानशीनी की, मेरे बाद क्या तुमने अपने रब के हुक्म से जल्दी की और आपने तख़्तियां डाल दीं और अपने भाई के सर के बाल पकड़कर अपनी तरफ़ खींचने लगे। हारुन अलैहिस्सलाम ने कहा ऐ मेरे मां–जाए। क़ौम ने मुझे कमज़ोर समझा और क़रीब था कि मुझे मार डालें तो मुझ पर दुश्मनों को न हंसा और मुझे ज़ालिमों में न मिला। अर्ज़ की ऐ मेरे रब मुझे और मेरे भाई को बख़्श दे और हमें अपनी रहमत में ले ले और तू सबसे ज़्यादा रहम करने वाला है।

हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम कौम की गुमराही को देखकर हमीयते दीनी और सिर्फ़ अल्लाह तआला की रज़ा की ख़ातिर इतने शदीद गुस्से में आए कि आपसे बे इख़्तेयार तौरात की तख़्तियां गिर गईं और इसी बे इख़्तेयारी की सूरत में अपने बड़े भाई के सर और दाढी को पकड़कर खींचने लगे यही वजह है कि आप पर इसका कोई मआख़ज़ा नहीं हुआ बल्कि मदह के ज़िम्न में आया आख़िरकार भाई के उज़्र पेश करने पर उनकी दिलजोई के लिए रब तआला के हुज़ूर दुआ की ऐ अल्लाह तआला मुझसे गुस्से की हालत में कोई कोताही हुई हो या मेरे भाई से क़ौम से आजिज़ आने की वजह से कोई कोताही हुई तो माफ़ फ़रमा दे।

सामरी की सज़ा : मूसा अलैहिस्सलाम ने सामरी को कहा तू चलता बन कि दुनिया की ज़िन्दगी में तेरी सज़ा यह है कि कहीं छूना नहीं और बेशक तेरे लिए आख़रत में एक वादा का वक़्त है।

सामरी की दुनिया में सज़ा यह मुक़र्रर हुई कि जो शख़्स उसके क़रीब आकर उसे हाथ लगाता वह शख़्स और यह शदीद बुख़ार में मुब्तला हो जाते इस लिए यह दूर से आते हुए शख़्स को देखकर कहता मुझसे मुसाफ़ह न करना मुझे छूना नहीं इसका नतीजा यह निकला कि यह लोगों के दर्मियान वहशी जानवर की हैसियत में हो गया लोगों ने उससे मेल मुलाक़ात उसके साथ मिलकर खाना उसके साथ ख़रीद व फ़रोख़्त और उसके साथ कलाम करना छोड़ दिया यानी हर क़िस्म के मामलात जो लोगों के दर्मियान होते हैं वह उससे मुनक़तअ कर दिये गये और उख़रवी सज़ा जिसको ज़रूर वाक़ेय होना है जिसको माफ़ भी नहीं होना वही सज़ा होगी जो मुश्रिक की होगी बल्कि और लोगों को मुश्रिक व गुमराह बनाने की वजह से इस सज़ा में शिद्दत होगी अल्लाह तआला ने फ़रमाया:

अल्लाह तआला उसे नहीं बख़्शता कि उसका कोई शरीक ठहराया जाये और उससे नीचे जो कुछ है शिर्क के बग़ैर हर क़िस्म के गुनाह जिसे चाहे माफ़ फ़रमा देता है और जो अल्लाह तआला का शरीक ठहराए वह बहुत बड़ी गुमराही में मुब्तला है।

फ़ायदा : मूसा अलैहिस्सलाम को चालीस दिनों के बाद तौरात अता की गई कि आप चालीस दिन दुनिया वालों से अलग थलग होकर अल्लाह तआला की याद में मशगूल रहें इस तरह उसके ज़िक्र

व फ़िक्र से आपके क़ल्ब व रूह को एक ख़ास क़िस्म की कुव्वत हासिल हो जाये जो इस अज़ीम बोझ को उठाने के क़ाबिल हो जाये।

बेशक चालीस को एक ख़ुसूसियत हासिल है इसी वजह से अंबियाए किराम को चालीस साल की उम्र में नबुव्वत के ऐलान का हुक्म दिया जाता रहा उनसे रब तआला का कलाम बज़रिये वही इसी उम्र में हुआ फिर औलियाए एज़ाम का भी यही मामूल है कि वह चिल्ला कशी करते हैं यानी चालीस रोज़ तक दुनिया से अलग होकर फ़क़त रब तआला की याद में मश्गूल होते हैं तो उनके दिलों पर हिकमत के चश्मे फूट पड़ते हैं। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का इरशाद गिरामी है कि जो शख़्स चालीस सुबह ख़लूस से दुनिया से अलग थलग होकर अल्लाह तआला को याद करता है उसके दिल से उसकी ज़बान पर हिकमत के चश्मे नमूदार हो जाते हैं।

काश कि लोगों को यह समझ आ जाये कि चालीस दिन तक फ़ौत शुदा के लिए कुरआन ख़्वानी का एहतेमाम करते रहना फिर चालीस पर इसके लिए इज्तेमाई दुआ कितनी मक़बूलियत का सबब होगी। ख़ैर जिस बदक़िस्मत के लिए दुआ का एहतेमाम नहीं किया जाता हमें उन लोगों से झगड़ने की ज़रूरत नहीं।

बनी इस्राईल को तौबा का हुक्म : और जब मूसा अलैहिस्सलाम ने अपनी क़ौम से कहा ऐ मेरी क़ौम तुमने बछड़े को माबूद बनाकर अपनी जानों पर ज़ुल्म किया तो अपने पैदा करने वाले की तरफ़ रुजू लाओ तौबा करो तो आपस में एक दूसरे को क़त्ल करो यह तुम्हारे पैदा करने वाले के नज़दीक़ तुम्हारे लिए बेहतर है तो उसने तुम्हारी तौबा क़बूल की बेशक वही है बहुत तौबा क़बूल करने वाला मेहरबान।

अलग़र्ज़ मूसा अलैहिस्सलाम ने क़ौम को हुक्म दिया कि तुमने बछड़े की पूजा करके अपनी जानों पर ज़ुल्म किया अब तुम अपने रब तआला की तरफ़ तवज्जोह करो और तुम्हारी तौबा की सूरत यह है कि तुम आपस में एक दूसरे को क़त्ल करो चुनांचे तौबा करने वालों ने उसी तरह तौबा की कि हर एक के हाथ में तलवार थी बिला इम्तेयाज़ हर एक ने दूसरे को क़त्ल किया अल्लाह तआला ने उनकी तौबा क़बूल फ़रमाई और हर क़ातिल व मक़तूल ने शहादत का मर्तबा पाया।

मूसा अलैहिस्सलाम ने उस बछड़े को ज़िबह करके उसका ख़ून बहाया और हड्डियों का रेती से बुरादा करके जला दिया और खाकिस्तर पानी में बहा दिया। मूसा अलैहिस्सलाम का बछड़े को ज़िबह करके उसका ख़ून बहाना इस बात की दलील है कि सोने चांदी की धात से बना हुआ उसका जिस्म गोश्त और हड्डियों में तबदील हो गया इसमें हयात पैदा हो गई। बाज़ ने कहा कि रेती से उसका बुरादा करना इस बात की दलील है कि उसका जिस्म धात से गोश्त और हड्डियों में तबदील नहीं हुआ लेकिन यह दलील इसलिए ज़ईफ़ है कि धात का ही बुरादा नहीं किया जाता बल्कि रेती से हड्डी का बुरादा भी किया जाता है पहले के मुफ़स्सेरीन के मुताबिक़ सही यही है कि वह बछड़ा धात से गोश्त और हडडी में तबदील हो गया था कुरआन मजीद में हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम का यह मक़ूला।

अपने इस माबूद को देख जिसके सामने तू दिन भर आसन मारे रहा क़सम है हम ज़रूर इसे जलायेंगे फिर रेज़ा रेज़ा करके इसे दरिया में बहायेंगे।

अपने ज़ाहिर अल्फ़ाज़ के साथ पहले के मुफ़स्सेरीन के कौल की ताइद करता है।

बनी इस्राईल की पशेमानी के बाद भी कज रवी : बछड़े की पूजा करने और मूसा अलैहिस्सलाम की के गुस्सा करने के बाद वह लोग बहुत पशेमान हुए तो अल्लाह तआला ने हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम को हुक्म दिया कि आप अपनी क़ौम के बेहतरीन अफ़राद को साथ लेकर तूर पर आ जायें ताकि वह तमाम क़ौम की तरफ़ से बछड़े की पूजा के जुर्म की माफ़ी तलब करें आप उनको जब साथ ले गये तो उन्होंने कहा ऐ मूसा अलैहिस्सलाम तुम अपने रब तआला से सवाल करो यहां तक कि हम भी उसका कलाम सुनेंगे। मूसा अलैहिस्सलाम ने रब तआला के हुज़ूर अर्ज़ किया तो उसे क़बूल कर लिया गया।

जब आप पहाड़ के क़रीब पहुंचे तो सतून की शक्ल में बादल नमूदार हुआ जिसने तमाम पहाड़ को अपनी लपेट में ले लिया हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम उस बादल के क़रीब हुए यहां तक कि उसमें दाख़िल हो गये मूसा अलैहिस्सलाम ने जब अपने रब तआला से कलाम किया तो आपकी पेशानी से एक नूर चमकने लगा इंसानों से कोई उसे देखने की ताक़त नहीं रखता था क़ौम ने अल्लाह तआला के कलाम को सुना जो उसने मूसा अलैहिस्सलाम को कहा यह करो और यह न करो जब कलाम का सिलसिला ख़त्म हुआ तो बादल को उठा लिया गया।

क़ौम ने कहा हम हरगिज़ तुम्हारा यक़ीन नहीं करेंगे जब तक अल्लाह तआला को ज़ाहिर नहीं देख लेंगे तो उनको बिजली की कड़क ने अपनी गिरफ़्त में ले लिया और सब मर गये। हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम खड़े हुए आसामन की तरफ़ हाथ उठा कर दुआ करने लगे और अर्ज़ किया ऐ अल्लाह तआला बनी इस्राईल के सत्तर आदमियों को मुन्तख़ब करके लाया था ताकि उनकी तौबा के क़बूल होने पर मेरे गवाह बनें अब मैं उनकी तरफ़ वापस जाऊंगा तो मेरे साथ कोई एक भी जब नहीं होगा तो वह मेरे मुताल्लिक़ क्या ख़्याल करेंगे? मूसा अलैहिस्सलाम दुआ फ़रमाते रहे यहां तक कि अल्लाह तआला ने उनकी रूहों को लौटा दिया।

ख़्याल रहे कि एक मर्तबा मूसा अलैहिस्सलाम जब तौरात लेने के लिए तूर पर गये उस वक़्त सत्तर आदमियों को साथ लेकर गये फिर वापस लौटने पर क़ौम बछड़े की पूजा करने के बाद लेकर गये अलबत्ता इसमें इख़्तेलाफ़ है कि पहले उन आदमियों को लेकर गये फिर उन्होंने एक दूसरे को क़त्ल करके तौबा की या तौबा के वाक़िये के बाद लेकर गये।

रहा यह अम्र कि बाज़ आयाते कुरआनिया के ज़ाहिर अल्फ़ाज़ से मालूम होता है कि मौत के बाद दुनियावी हयात हासिल नहीं होती इन आयात में इसी आदते इलाहिया का क़ानूने आम का ब्यान है लेकिन ख़िर्क़े आदत भी किताब व सुन्नत से साबित है और बाज़ उमूर का क़ानून ख़ास के तहत होना कुरआन व हदीस से वाज़ेह है इस लिए यहां कोई अशकाल पैदा नहीं होता यह भी कहा जाता है कि जिन लोगों की दुनियावी मुद्दते उम्र इल्मे इलाही में बाक़ी थी और बतौर सज़ा मासियत या किसी दूसरी हिकमत की वजह से उन पर मौत तारी की गई उन लोगों को मरने के बाद दुनिया में दोबारा ज़िन्दगी अता की जाती है और जिन लोगों की दुनियावी मुद्दते उम्र इल्मे इलाही में पूरी हो चुकी उनको दुनिया में दोबारा ज़िन्दगी नहीं दी जाती है।

क़ौम का अहकामे ख़ुदावंदी मानने से इंकार : और (याद करो) जब हमने तुमसे पुख़्ता अहद लिया और तूर (पहाड़) को तुम्हारे ऊपर उठाया कि जो कुछ हमने तुम्हें दिया उसे मज़बूती से पकड़ो और जो इसमें है उसे याद करो ताकि तुम परहेज़गार बन जाओ।

इस आयते करीमा में बनी इस्राईल की एक और अशद तरीन बग़ावत व सरकशी का ज़िक्र फ़रमाया वह यह कि इस कौम ने मूसा अलैहिस्सलाम से ख़ुद ही मुतालबा किया कि हमारे पास अल्लाह तआला की कोई किताब आनी चाहिये जिसके अहकाम के मुताबिक़ हम अपनी ज़िन्दगी बसर करें और इन अहकाम की रौशनी में फ़लाह और भलाई की राह पायें। मूसा अलैहिस्सलाम जब उनके पास अल्लाह तआला की किताब तौरात लाए तो उसमें उनकी तबई सरकशी और तुग़ियान के लिहाज़ से कुछ भारी अहकाम भी थे, मगर ऐसे नहीं जो नाक़ाबिले अमल हों बल्कि उनकी हालत और हिकमते इलाहिया के ऐन मुताबिक़ थे बनी इस्राईल ने सिर्फ़ बग़ावत और सरकशी की वजह से उन्हें क़बूल करने से इंकार कर दिया अल्लाह तआला के हुक्म से जिब्राईल अलैहिस्सलाम ने पहाड़ का एक हिस्सा उन पर उठा लिया और इरशाद हुआ।

हमने तुम्हें जो कुछ दिया उसे मज़बूती के साथ पकड़ लो। उस पर उनसे पुख़्ता अहद लिया गया लेकिन उन्होंने इस अहद को भी तोड़ा। अल्लाह तआला ने उनके बातिनी फ़साद को ख़ूब अच्छी तरह ज़ाहिर करने और उन्हें रुसवा करने के लिए कुरआन मजीद में अल्फ़ाज़ र–फ़अना के साथ उन पर पहाड़ उठा लेने का ज़िक्र बार बार फ़रमाया।

ख्याल रहे कि बाज़ लोगों ने यहां से मुराद ज़लज़ला लिया है लेकिन यह दुरुस्त नहीं क्योंकि जब लफ्ज़ का हक़ीक़ी मायने मुराद लिया जा सकता है तो मजाज़ी लेना जायज़ नहीं।

कुरआन पाक में इसी वाक़िये को ब्यान करते हुए तीन मर्तबा रफ़अना और एक मर्तबा न–तक़ना ज़िक्र किया गया। अगर आयते करीमा में यही मशहूर व मायने मुराद न लिए जायें तो कुरआन पाक में इस वाक़िये में तीनों जगह लफ़्ज़ रफ़अना बे मायने होकर रह जायेगा क्योंकि सिर्फ़ पहाड़ का बुलंद होना मायने मुराद नहीं इसलिए कि पहाड़ तो पैदाईशी तौर पर बुलंद ही हैं यही हो सकता है कि पहाड़ उनके सिरों पर सायबान की तरह बुलंद किया गया यही मायने नतक़ना का भी सही हो सकता है यानी हमने पहाड़ को जड़ों से उखेड़ कर बुलंद कर दिया यही तफ़सीर मुतक़द्देमीन मुफ़स्सेरीन किराम की है ताज्जुब है उन लोगों पर जो उलेमा मुतक़द्देमीन उल्माए किरामे इस्लाम की तहक़ीक़ात को पसे पुश्त डालकर यहूद व नसारा की बे बुनियाद किताबों और जदीद नज़रयात पर एतेमाद करते हैं।

हक़ीक़त यह है कि जो लोग माद्दा परस्ती और ला दीनी अफ़कार से मुतास्सिर होकर महज़ अक़्ल ना तमाम और नाक़िस तजर्बात पर भरोसा कर बैठते हैं जिनकी नज़र में उलेमा मतक़द्देमीन और अस्लाफ़ की तहक़ीक़ात कोई वक़अत नहीं रखती वही लोग किताब व सुन्नत की नसूस में ग़लत तावीलें करके ख़ुद भी गुमराही का शिकार होते हैं और दूसरों को भी गुमराह करके (ख़ुद गुमराह हुए और दूसरों को गुमराह किया) का मिस्दाक़ बन जाते हैं।

वाज़ेह रहे कि पहाड़ को उस जगह से उखाड़ कर बुलंद करना इसलिए न था कि तौरेत के अहकाम उनसे जबरन मनवाये जायें बल्कि महज़ उनकी और तुग़ियान की वजह से था लिहाज़ा इस आयते करीमा का दीन में कोई जब्र नहीं से कोई तआरुज़ नहीं।

अमालक़ा से जिहाद का हुक्म और बनी इस्राईल की रूगरदानी : (मूसा अलैहिस्सलाम ने कहा) ऐ मेरी क़ौम दाख़िल हो जाओ इस पाक ज़मीन में जिसे लिख दिया है अल्लाह तआला ने तुम्हारे लिए

और न पीछे हटो पीठ फेरते हुए वरना तुम लौटोगे नुक़्सान उठाते हुए कहने लगे ऐ मूसा अलैहिस्सलाम इस ज़मीन में तो बड़ी जाबिर क़ौम (आबाद) है और हम हरगिज़ दाख़िल न होंगे इसमें जब तक वह निकल न जायें वहां से और अगर वह निकल जायें इससे तो फिर हम ज़रूर दाख़िल होंगे। (उस वक़्त) कहा दो आदमियों ने जो (अल्लाह से) डरने वालों से थे, इनाम फ़रमाया था अल्लाह तआला ने जिन-पर कि (बेधड़क) दाख़िल हो जाओ उन पर दरवाज़े से और जब तुम दाख़िल होगे दरवाज़े से तो यक़ीनन तुम ग़ालिब आ जाओगे और अल्लाह तआला पर भरोसा करो अगर हो तुम ईमानदार कहने लगे ऐ मूसा अलैहिस्सलाम हम तो हरगिज़ दाख़िल न होंगे इसमें क़यामत तक जब तक वह वहां हैं पस जाओ तुम और तुम्हारा रब और दोनों लड़ो उन से हम तो यहां ही बैठेंगे मूसा अलैहिस्सलाम ने अर्ज़ की ऐ मेरे रब मैं मालिक नहीं हूं सिवाए अपनी ज़ात के और अपने भाई के पस जुदाई डाल दे हमारे दर्मियान और इस नाफ़रमान कौम के दर्मियान।

बनी इस्राईल का असल आबाई वतने मालूफ़ मुल्के शाम था। यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के दौर में यह लोग मिस्र आकर मुक़ीम हुए और वहां मुख़्तलिफ़ हालात से गुज़रते रहे फ़िरऔने मिस्र की गुलामी का कठिन दौर भी उन लोगों ने मिस्र में गुज़ारा। आख़िरकार अल्लाह तआला ने हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के ज़रिए इन्हें नजात दिलाई फ़िरऔन दरिया में ग़र्क़ हुआ और बनी इस्राईल ने इत्मीनान का सांस लिया इस दौरान मुल्क पर कौम अमालक़ा क़ाबिज़ हो चुकी थी और उन्होंने वहां तसल्लुत क़ायम कर लिया था फ़िरऔन की गुलामी से नजात हासिल करने के बाद बनी इस्राईल को हुक्म हुआ कि अमालक़ा से जिहाद करके उनसे अपना असल वतन आज़ाद करायें और वहां जाकर मुक़ीम हो जायें।

हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने वहां के लोगों के हालात मालूम करने के लिए बारह नक़ीब (सरदार) रवाना किए जो चालीस रोज़ तक वहां के हालात का मुशाहिदा करते रहे जब वापस आए तो मूसा अलैहिस्सलाम ने उन्हें फ़रमाया कि क़ौम के सामने ऐसी कोई बात न कहना जिससे उनके हौसले पस्त हों लेकिन बारह में से दस ने वहां के लोगों की क़ुव्वत व जबरूत उनकी क़द व क़ामत उनके क़िलों की मज़बूती का ऐसा नक़्शा खींचा कि बनी इस्राईल चिल्ला उठे और इंतेहाई बेबाकी से अपने पैग़म्बर को कह दिया कि हम ऐसी जाबिर क़ौम से टक्कर लेकर अपने बच्चों को यतीम और अपनी बीवियों को बेवा करने के लिए हरगिज़ तैयार नहीं। आप और आपका ख़ुदा पहले जाकर उनसे लड़ें उनसे मुल्क को पाक करें तो फिर हम अपने आबाई वतन का रुख़ करेंगे उन्होंने कहा हम शाम की ज़रख़ेज़ ज़मीनों ठंडे पानी के उबलते हुए चश्मों और फलों से लदे हुए बाग़ात और वहां की इज़्ज़त की ज़िन्दगी से बाज़ आए हम तो वापस मिस्र जाते हैं।

दूसरे दो सरदारों हज़रत यूशा बिन नून और कालिब ने बहुत समझाया कि ना मर्द न बनो ज़रा हिम्मत करके दुश्मन के शहर के दरवाज़े से दाख़िल होकर हमला करके देखो। नुसरते इलाही किस तरह तुम्हारे दुश्मनों को कुचल कर रख देती है लेकिन उनपर इसका कोई असर न हुआ जब वह अमालक़ा की ताक़त का हाल सुनकर दिल छोड़ बैठे और जिहाद से मुंह मोड़ कर वापस लौटे अल्लाह तआला ने उनके इस जुर्म की सज़ा यूं दी कि वह अपने घरों तक वापस न पहुंच सके और चालीस बरस तक वादी तीह में हैरान व परेशान घूमते रहे।

तीह मिस्र और शाम के दर्मियान एक वसी और खुला मैदान था तीह के मायने ही हैरानी व परेशानी के हैं बनी इस्राईल इस मैदान में चालीस साल तक इंतेहाई हैरानी और परेशानी के आलम में सरगर्दा रहे इसलिए इसे वादी तीह कहा जाता है बनी इस्रईल अपने घरों तक जाने की फ़िक्र में दिन भर सफ़र करते रात बसर करने के बाद सुबह अपने आपको वहीं पाते जहां से गुज़श्ता सुबह उन्होंने सफ़र का आग़ाज़ किया था।

बनी इस्राईल की सरकशी के बावजूद उन पर इनामात : और हमने तुम पर बादल का साया कर दिया और मन और सलवा तुम पर उतारा खाओ हमारी दी हुई पाक चीज़ों से और उन्होंने (हमारी नाफ़रमानी) करके हम पर जुल्म नहीं किया हां वह अपनी जानों पर जुल्म करते रहे।

बनी इस्राईल की इंतेहाई सरकशी के बावजूद अल्लाह तआला ने उन पर बेशुमार इनामात फ़रमाये इस आयते करीमा में जिन नेमतों का ज़िक्र है उनका ताल्लुक़ मैदाने तीह से है जहां वह चालीस बरस तक परेशान हाली और सरगर्दानी में रहे इस वादी में न कोई साया है न कोई दरख़्त न ही कोई इमारत न पीने के लिए पानी न खाने के लिए कोई चीज़ न रौशनी थी और न ज़रूरयात ज़िन्दगी के दीगर लुवाज़मात। इस बे सरो सामानी और ग़रीबुल वतनी के आलम में मूसा अलैहिस्सलाम की दुआ से उनके सब सामान मुहय्या हो गये अल्लाह तआला ने धूप से बचाओ और साया के हुसूल के लिए बादल बतौर सायबान नाज़िल फ़रमा दिया खाने के लिए मन, सलवा भेज दिया मन सवला के बारे में मुख़्तलिफ़ अक़वाल हैं सही यही है कि मन से मुराद तुरन्जबीन है जो एक नफ़ीस शीरीं ज़ाइक़ादार माद्दा था जो शबनम की तरह सुबह के वक़्त आसमान से उतरता और कसीर मिक़दार में छोटे छोटे दरख़्तों पर जमा हो जाता था सलवा के बारे में अक़वाल हैं सही यही है कि वह बटेर था बाज़ ने कहा कि वह भुना हुआ उतरता था और बाज़ का क़ौल है कि बकसरत ज़िन्दा परिन्दे उनके पास जमा हो जाते थे वह उन्हें ज़िन्दा पकड़ लेते और ज़िबह करते। अलगर्ज़ मन और सलवा उनकी शीरीं और नमकीन ग़िज़ाएं थीं जिन्हें शिकम सैर होकर वह खाते थे तारीकी दूर करने के लिए उमूदी शक्ल में एक रौशनी ज़ाहिर हो जाती थी लिबास के बारे में अल्लह तआला ने मूसा अलैहिस्सलाम की एजाज़ी शान इस तरह ज़ाहिर फ़रमाई कि न इन लोगों के कपड़े मैले होते और न ही फटते और उनके बच्चों के जिस्म के साथ बच्चों का लिबास भी बढ़ता रहता था।

यहां लफ़्ज़ "फ़असू" महजूफ़ है यानी इतने अज़ीम व जलील एहसानात व इनामात के बावजूद उन्होंने नाफ़रमानियां कीं और अपनी नाफ़रमानियों से उन्होंने हमारा कुछ न बिगाड़ा हां वह अपने आप ही को नुक़सान पहुंचाते रहे।

पत्थर से पानी निकालना : और जब पानी तलब किया मूसा अलैहिस्सलाम ने अपनी उम्मत के लिए तो हमने फ़रमाया अपना असा इस पत्थर पर मारो तो उससे बारह चश्मे जारी हो गये बेशक हर गरोह ने पानी पीने की अपनी जगह को पहचान लिया खाओ और पियो अल्लाह तआला के रिज़्क़ से और न फिरो ज़मीन में फ़साद करते हुए।

मैदान में छः लाख की तादाद में बारह मील पर फैले हुए लश्कर को जब प्यास की शिद्दत महसूस हुई तो उन्होंने हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के सामने अपनी बेबसी का ज़िक्र किया हज़रत मूसा

अलैहिस्सलाम ने रब तआला से दुआ की तो अल्लाह तआला ने आपकी दुआ को क़बूल किया और हुक्म दिया के ऐ मूसा अलैहिस्सलाम अपना असा पत्थर पर मारो पानी जारी हो जायेगा आपने अपना असा पत्थर पर मारा तो बारह चश्मे जारी हो गये हर क़बीले ने एक एक चश्मा अपनी लिए मख़तस कर लिया पत्थर से जारी होने वाला पानी इतनी बड़ी तादाद के लोगों के लिए काफ़ी थी पत्थर "मुकअअब" (जिसकी लंबाई चौड़ाई और गहराई बराबर हो) शक्ल का था और हर तरफ़ से तीन तीन चश्मे जारी हुए। यह पत्थर कोई ख़ास मुअय्यन था या कि आम पत्थर था अगरचे इसमें मुख़्तलिफ़ अक़वाल तो हैं लेकिन सही यही है कि कुरआन पाक में किसी पत्थर को मख़तस जब नहीं किया गया तो वह पत्थर आम था।

मैदान तीह से नजात और उनकी सरकशी : और जब हमने फ़रमाया उस शहर में चले जाओ फिर उसमें जहां चाहो बा फ़राग़त खाओ और तुम दाख़िल हो दरवाज़े में सर झुकाए हुए और कहो "हित–ततुन" (हमारे गुनाहों को माफ़ कर) हम तुम्हारे गुनाहों को बख़्श देंगे और नेकी करने वालों को अनक़रीब हम ज़्यादा देंगे तो बदल दिया ज़ालिमों ने इस बात को जो उनसे कही गई थी दूसरी बात से तो हमने ज़ालिमों पर आसमान से अज़ाब उतारा क्योंकि वह नाफ़रमानी करते थे।

इसमें इख़्तेलाफ़ है कि वह बस्ती कौन सी थी और किस ज़माने में बनी इस्राईल ने इसे फ़तह कर लिया बाईबिल की तसरीह यह है ।

इस शहर को बनी इस्राईल ने हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की ज़िन्दगी के अख़ीर ज़माना में फ़तह किया और वहां बड़ी बदकारियां कीं जिनके नतीजे में ख़ुदा ने उन पर वबा भेजी और चौबीस हज़ार आदमी हलाक कर दिये।

एक चीज़ कुरआन का मुताला करते वक़्त हमेशा नज़र में रहनी चाहिए वह यह कि कुरआन जिन वाक़यात का ज़िक्र करता है इससे मक़सूद सिर्फ़ इबरत व मोएज़त होती है इससे उस वाक़िया की तारीख़ी हैसियत का ब्यान मतलूब नहीं होता इसलिए कुरआन उन वाक़ियात के सिर्फ़ उन पहलुओं को ब्यान करता है जिनमें दर्से इबरत हो उमूमन ग़ैर ज़रूरी तफ़सीलात को नज़र अंदाज़ कर दिया जाता है जो लोग कुरआन हकीम की इस ख़ुसूसियत को मलहूज़ नहीं रखते वह क़सससे कुरआनी में तारीख़ी कुतुब की तरह तफ़सीलात का तसलसुल और ज़मान व मकान का तअय्युन नहीं पाते तो वह तरह तरह के शकूक व शुबहात में मुब्तला हो जाते हैं।

जब मूसा अलैहिस्सलाम की ज़िन्दगी का वाक़िया मुराद लिया जाये तो बस्ती से मुराद रीहा होगी क्योंकि मूसा अलैहिस्सलाम बैतुल मुक़द्दस में दाख़िल नहीं हुए अगर बैतुल मुक़द्दस मुराद लिया जाये तो यह वाक़िया हज़रत हारून अलैहिस्सलाम और हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की ज़िन्दगी के बाद हज़रत यूशा अलैहिस्सलाम के ज़माने से मुताल्लिक़ होगा रब तआला ने उस क़ौम को कहा कि जब उस शहर में दाख़िल हो तो सज्दा करते हुए इज्ज़ व इंकिसारी से दाख़िल होना और ज़बान से हित ततुन कहना लेकिन क़ौम ने अपनी साबिक़ा रिवायात को बरक़रार रखते हुए सरकशी से, सज्दा करते हुए दाख़िल होने के बजाए अपनी सुरीनों के बल घसीटते हुए दाख़िल होना इख़्तेयार किया और हित ततुन कहने की जगह हिन्ततुन हमें गन्दुम चाहिये) कहा उनकी सरकशी और हुदूद से तजावुज़ की वजह से अल्लाह तआला ने ताऊन का अज़ाब भेजा जिससे वह चौबीस हज़ार की तादाद में मर गये।

मन व सलवा से एराज़ और ज़िल्लत का तसल्लुत : जब तुमने मूसा अलैहिस्सलाम से कहा ऐ मूसा हमसे एक खाने पर हरगिज़ सब्र न होगा तो हमारे लिए अपने रब से दुआ कीजिये कि वह (मन व सलवा की बजाए) हमारे लिए ज़मीन से उगने वाली चीज़ें पैदा करे ज़मीन की सब्ज़ी (तरकारी) ककड़ी, गन्दुम, मसूर और प्याज़। फ़रमाया क्या तुम अदना (घटिया) चीज़ को बेहतर के बदले मांगते हो उतरो शहर में तो बेशक (वहां) तुम्हें मिलेगा जो तुमने मांगा और डाल दी गई उन पर ज़िल्लत और मोहताजी और वह अल्लाह तआला के ग़ज़ब में आ गये यह इस वजह से कि वह अल्लाह तआला की आयतों के साथ कुफ़्र करते और नबियों को नाहक़ क़त्ल करते थे यह इसलिये भी कि वह नाफ़रमानी करते और हद से बढ़ते थे यह बात भी बनी इस्राईल ने मैदाने तीह में कही थी।

बनी इस्राईल अर्सा दराज़ तक बिला नाग़ा मन व सलवा खाते रहने की वजह से उकता कर मूसा अलैहिस्सलाम से कहने लगे कि हम अब एक ही क़िस्म के खाने पर सब्र न कर सकेंगे मन व सलवा की दो मुख़्तलिफ़ क़िस्म के खानों को एक खाना इसलिए कहा गया कि दोनों क़िस्म के खाने वह एक साथ खाते थे या इसलिए कि हर रोज़ बतौर गिज़ा उन्हें यही दो चीज़ें मिलती थीं यह नफ़ीस खाना बाक़ी खानों से बेहतर था लेकिन बनी इस्राईल के इसरार पर इरशाद हुआ तुम मिस्र में उतर जाओ जो कुछ तुमने मांगा वह तुम्हें वहां मिलेगा इस मिस्र के बारे में इख़्तेलाफ़ है कि यह फ़िरऔन का मिस्र था या कोई और शहर। राइज है कि इससे ग़ैर मुतअय्यन शहर मुराद है बज़ाहिर मालूम होता है कि वादी तीह के क़रीब कोई शहर था जिसमें आरज़ी तौर पर जाने का हुक्म उनकी ख़्वाहिश के मुताबिक़ दिया गया था बढ़ती हुई नफ़सानी ख़्वाहिशात की बिना पर ताअत और बंदगी की हदूद से बार बार यहूद का तजावुज़ और तुग़ियानी उनके हक़ में दाईमी ज़िल्लत व मसकनत (मिस्कीनी) पर मनतज हुआ।

क़ौम यहूद पर ज़िल्लत व मसकनत का मुसल्लत होना ऐसी हक़ीक़त साब्ता है जिसका इंकार वाक़ियात की रौशनी में कोई अहले इंसाफ़ नहीं कर सकता कुरआन मजीद में भी वाज़ेह शहादत से फ़रमा रहा है कि ज़िल्लत व मसकनत और दुनिया व आख़रत में अल्लाह तआला का ग़ज़ब उनके हक़ में मुक़र्रर हो चुका है दुनिया जानती है कि यहूद की तारीख़ मुसलमानों और ईसाईयों दोनों से बहुत पुरानी और क़दीम है इब्तेदा से लेकर आज तक उनकी तारीख़ को सामने रख लीजिये कोई दौर उनका ज़िल्लत व मसकनत से आपको ख़ाली नज़र नहीं आयेगा हालांकि उनमें एक तब्क़ा बहुत बड़ा सरमायादार है लेकिन इंतेहाई बख़ील और हरीस बख़ील कितना ही मालदार हो मगर बुख़्ल की वजह से वह हमेशा मिस्कीनी की हैयत पर रहता है और हरीस कमाले हिर्स के सबब हर जायज़ व नाजायज़ तरीक़ा से माल जमा करने की फ़िक्र में रंज व तअंब (मुसीबत और मशक़त) में मुब्तला रहता है फिर यह कि सब यहूदी मालदार नहीं बल्कि बहुत से यहूद फ़ेक़्र व मसकनत का शिकार हैं। हैवानियत व बरबरीयत ज़ुल्म व जोर, दुखी इंसानियत पर लरज़ा ख़ेज़ मज़ालिम उनकी तबाये में मरकूज़ हैं। अहद शिकनी वादा ख़िलाफ़ी उनका तुर्रए इम्तेयाज़ है उनके ज़ुल्म व सितम के बाइस अक़वामे आलम की नज़रों में वह लायक़ गर्दन ज़दनी (गर्दन उड़ा देने के क़ाबिल) रहे हैं इसी लिए उनकी पूरी तारीख़ में ऐसा कोई वक़्त नहीं आया कि उनके जराइम की पादाश में लोग उन्हें क़त्ल करने और सख़्त तकलीफ़ें पहुंचाने के दरपै न रहे हों कुरआन मजीद के ऐलान के मुताबिक़ यह सिलसिला क़यामत तक जारी रहेगा जैसा कि सूरः आराफ़ में फ़रमाया।

यानी आपके रब तआला ने बता दिया था कि यह उन यहूद पर क़यामत तक ऐसे लोगों को भेजता रहेगा जो उन्हें बदतरीन अज़ाब देंगे।

इस ज़माने में भी जब कि यहूद की नाम निहाद हुकूमत फ़िलिस्तीन में क़ायम है मज़लूम फ़िलिस्तीनी हर वक़्त उनकी ताक में रहते हैं गोया वह यहूदियों पर मुसल्लत रहते हैं जब भी इन्हें मौक़ा मिलता है वह यहूद को तकलीफ़ पहुंचाने क़त्ल करने और क़ैदी बनाने का मौक़ा हाथ से जाने नहीं देते और यक़ीनन यह सूरते हाल क़यामत तक जारी रहेगी अलबत्ता उनके लिए जान व माल की बेहुरमती से बचना अल्लाह तआला की रस्सी के सहारे हो सकता है या इसके अलावा ज़िल्लत व ख़्वारी से महज़ बज़ाहिर महफ़ूज़ रहना लोगों की रस्सी के ज़रिये मुमकिन है जैसा कि अल्लाह तआला ने फ़रमाया:

यानी वह जहां भी पाए जायें ज़िल्लत उन पर मुसल्लत कर दी गई बजुज़ अल्लाह की रस्सी और लोगों की रस्सी के अल्लाह तआला की रस्सी से मुराद कुरआन और इस्लाम है कुरआनी और इस्लामी हुक्म है।

यानी अगर कोई मुश्रिक तुमसे पनाह मांगे तो उसे पनाह दे दो और इरशाद फ़रमाया:

यानी (अगर पनाह तलब न करें तो) उनका माल व जान महफ़ूज़ नहीं यहां तक कि वह ज़लील होकर अपने हाथ से जिज़या अदा करें।

अगरचे पनाह मांगना और जिज़या अदा करना दोनों बातें मोजिबे ज़िल्लत हैं मगर अल्लाह तआला के दीन में मस्तामन और ज़िम्मी का जान व माल बे हुरमती से महफ़ूज़ रहता है। और लोगों की रस्सी से मुराद यह है कि ग़ैर मुस्लिम लोग इनसे मुआहिदा करके उनकी हिफ़ाज़त का ज़िम्मा उठा लें जैसा कि आज कल बाज़ ग़ैर मुस्लिम बड़ी ताक़तों ने यहूद से मुआहिदा करके उनकी हिफ़ाज़त का ज़िम्मा उठाया हुआ है जिसके बल बूते पर फ़िलिस्तीन में यहूद की बे बुनियाद हुकूमत का ढांचा खड़ा है अगर वह लोग आज अपना मुआहिदा ख़त्म कर दें तो यह नाम निहाद हुकूमत बाक़ी न रहे।

बाज़ मुफ़स्सेरीन ने लोगों की रस्सी का मफ़हूम जिज़या ब्यान किया है ऐसी सूरत में अल्लाह तआला की रस्सी और लोगों की रस्सी एक ही क़रार पाएगी हालांकि बेहतर यह है कि यह दोनों अलाहदा हों।

ग़ालिबन इसी लिए कुरआन मजीद में फ़रमाया गया है कि ऐसी हुकूमत का क़याम कुरआन की पेशगोई के ख़िलाफ़ हरगिज़ नहीं बल्कि इस मसले में कुरआनी सदाक़त का ऐलान कर रहे रहे हैं और दुनिया देख रही है कि कुरआन के मुताबिक़ महज़ लोगों के सहारे फ़िलिस्तीन में बे बुनियाद इस्राईली हुकूमत क़ायम है जो आज भी हक़ीक़ी ज़िल्लत व मसाकनत और अल्लाह तआला के ग़ज़ब में मुब्तला है और यक़ीनन आख़रत में अल्लाह तआला के ग़ज़ब में यह लोग मुब्तला होंगे।

और नबियों को नाहक़ क़त्ल करते थे।

बग़ैरिल हक़ से यह न समझा जाए कि अंबियाए किराम से कोई ऐसा काम सर ज़द हो सकता है जिसकी वजह से उसका क़त्ल हक़ क़रार पाए क्योंकि अंबियाए किराम मासूम हैं उनसे कोई ऐसा काम नहीं हो सकता यहां बग़ैरिल हक़ फ़रमाकर अंबिया के क़ातिलीन के फ़ेअल का वस्फ़ ब्यान फ़रमाया कि वह नाहक़ था।

इस आयत से साबित हुआ कि अंबिया का क़त्ल उनकी नबुव्वत के ख़िलाफ़ नहीं। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के हक़ में वादए इलाहिया यानी अल्लाह तआला आप को लोगों से बचाएगा।

हुज़ूर की खुसूसियात से है वरना नफ़्से क़त्ल का नबी पर वारिद होना, हरगिज़ उसकी नबुव्वत की नफ़ी नहीं करता जिसकी रौशन दलील अल्लाह तआला का यह फ़रमान है। अगर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर मौत तारी हो जाये या मक़्तूल हो जायें तो ऐ मुसलमानों क्या तुम पिछले पाओं फिर जाओगे। यानी रसूल के लाए हुए दीन को छोड़ दोगे।

इस आयत में बनी इस्राईल की इंतेहाई शक़ावते क़ल्बी का ब्यान फ़रमाया कि अल्लाह तआला के नबियों को क़त्ल करने वालों से बढ़कर कौन शक़ीउल क़ल्ब हो सकता है हज़रत ज़क्रिया अलैहिस्सलाम हज़रत यहया अलैहिस्सलाम और इन जैसे जलीलुल क़द्र अम्बियाए किराम को उन्होंने इंतेहाई बेदर्दी के साथ शहीद किया यह सब कुछ यहूद की नाफ़रमानी और पुरानी सरकशी का ज़हूर था।

गाय के गोश्त से मक़्तूल को ज़िन्दा करने का वाक़िया : और जब मूसा अलैहिस्सलाम ने अपनी उम्मत से फ़रमाया बेशक अल्लाह तआला तुम्हें हुक्म देता है एक गाय ज़िबह करने का वह बोले कि आप हमारा मज़ाक़ उड़ाते हैं? मूसा अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया अल्लाह तआला की पनाह कि मैं नादानों से हो जाऊं उन्होंने कहा। हमारे लिए अपने रब तआला से दुआ कीजिए वह हमें बता दे वह कैसी है? मूसा अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया बेशक वह फ़रमाता है यक़ीनन वह एक गाय है न बूढ़ी और न बछड़ी बल्कि इसके दर्मियान मुतवस्सित उम्र की, पस बजा लाओ जो तुम्हें हुक्म दिया जाता है उन्होंने कहा हमारे लिए अपने रब तआला से दुआ कीजिए वह हमें बताए उसका रंग क्या है मूसा अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया बेशक वह फ़रमाता है यक़ीनन वह ज़र्द गाय है गहरे चमकदार रंग की देखने वालों को अच्छी लगती है वह बोले अपने रब तआला से हमारे लिए दुआ कीजिये वह हमें खुलकर बताए उसका वस्फ़ क्या है? बेशक गाय हम पर मुश्तबह हो गई है और बेशक अगर अल्लाह तआला ने चाहा तो ज़रूर राह पायेंगे मूसा अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया बेशक वह फ़रमाता है यक़ीनन वह गाय है जो न मेहनतकश है कि ज़मीन में हल चलाती है और न वह खेती को पानी देती है सहीह सालिम है (यक रंग) जिसमें कोई (दाग़) धब्बा नहीं वह बोले आप ठीक बात लाए फिर उन्होंने उसे ज़िबह किया और वह यह काम करने के क़रीब न थे।

बनी इस्राईल में से एक शख़्स ने अपने एक रिश्तेदार को क़त्ल कर दिया ताकि उसका वारिस बन जाये। क़त्ल करके उसकी लाश को चौराहे में फेंक दिया फिर मूसा अलैहिस्सलाम के पास शिकायत लेकर आ गया मूसा अलैहिस्सलाम ने कोशिश की क़ातिल का पता लगाने की लेकिन पता न चल सका वह लोग कहने लगे अपने रब तआला से दुआ कीजिये ताकि वह बताये कि इसका क़ातिल कौन है आपने अपने रब तआला से दुआ की तो अल्लाह तआला ने आपको वही की आपने अपनी क़ौम को बता दिया कि अल्लाह तआला हुक्म देता है कि गाय ज़िबह करके उसका गोश्त मुर्दा को मारो वह ज़िन्दा होकर बताएगा कि मेरा क़ातिल कौन है? उन्होंने ताज्जुब किया कि ज़िबह शुदा गाय का गोश्त मुर्दा को कैसा ज़िन्दा करेगा यह तो एक मज़ाह नज़र आ रहा है आपने फ़रमाया अल्लाह तआला की पनाह मैं जाहिलों से हो जाऊं।

यानी मज़ाह उड़ाना जाहिलों और नादानों का काम है नबी की शान के लायक़ नहीं कि वह किसी से मज़ाह उड़ाए और खुसूसन दीनी मामलात में मज़ाह उड़ाना शदीद अज़ाब और वईद का सबब है कि अल्लाह तआला के नबी के मुताल्लिक़ यह तसव्वुर करना भी मुहाल है कि वह ऐसा इक़दाम कर सकता है जो अज़ाब का सबब बने हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं:

अगर वह कोई गाय भी ज़िबह करते तो उनको किफ़ायत करती लेकिन उन्होंने खुद बार बार सवाल करके अपने आप पर सख़्ती की तो अल्लाह तआला ने उन पर सख़्ती की हज़रत हसन रज़ियल्लाहु अन्हु रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से रिवायत करते हैं कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया:

क़सम है उस ज़ात की जिसके क़ब्ज़े में मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की जान है अगर वह इंशाअल्लाह तआला न कहते तो हमेशा उनके और गाय के हुसूल में सवालात हाइल रहते। यानी जब उन्होंने कहा कि अगर अल्लाह तआला ने चाहा तो हम हिदायत पायेंगे तो उसी वक़्त उनको सवालात ख़त्म करने की तौफ़ीक़ हासिल हुई।

बहुत भारी क़ीमत से गाय हासिल की : उस वक़्त आम तौर पर गाय की क़ीमत तीन दीनार तक होती थी लेकिन उन्होंने सवाल करके अपने लिए इतनी मुश्किल पैदा कर दी कि तमाम औसाफ़ किसी गाय में बयक वक़्त पाया जाना दुश्वार नज़र आया। आख़िरकार तलाश करते करते उन्हें एक बेवा और उसके यतीम बच्चे के पास ऐसी गाय नज़र आई जिसमें ब्यान करदा सभी औसाफ़ मौजूद थे बूढ़ी नहीं थी और बछड़ी नहीं थी बल्कि दर्मियान उम्र की थी ज़र्द रंग था देखने वालों को खुश करता था ज़मीन में उसने हल नहीं चलाया था और न ही खेती को सैराब किया था और इसमें कोई ऐब और दाग़ धब्बा नहीं था क्योंकि उस यतीम के बूढ़े, नेक परहेज़गार बाप ने अपनी एक बछड़ी को जंगल में छोड़कर अल्लाह तआला की हिफ़ाज़त में दे दिया था कि मेरा बच्चा कुछ बड़ा और समझदार होकर उसे ले जायेगा। वह बच्चा भी वालदैन का फ़रमां बर्दार था अपने बाप की वफ़ात के कुछ अर्सा बाद वह अपनी गाय जंगल से ले आया था उसी गाय में तमाम औसाफ़ मौजूद थे। मोटी ताज़ी थी, ख़ूबसूरत थी बनी इस्राईल को उसके चमड़े में जितनी मिक़दार में सोना आ सकता था उतनी मिक़दार में सोना बतौर क़ीमत अदा करना पड़ा।

सुबहानल्लाह! मालिकुल मुल्क ने अपने बंदे की गाय की जंगल में हिफ़ाज़त फ़रमाई और उस नेक बंदे की बेवा और उसके यतीम बच्चे को कसीर मिक़दार में माल व दौलत अता फ़रमाया।

बनी इस्राईल अगरचे गाय की भारी क़ीमत अदा करने पर ख़ुशी से रज़ामंद नहीं थे और यह भी जानते थे कि अगर हमारा मक़तूल ज़िन्दा हो गया तो हमारा अपना ही ऐब ज़ाहिर होगा लेकिन उन्हें फिर भी गाय ज़िबह करनी पड़ी क्योंकि अब उनके पास कोई उज़्र बाक़ी नहीं रह गया था अगरचे वह ज़िबह नहीं करना चाहते थे।

गाए के ज़िबह करने में हिकमत : एक वजह तो यही थी कि नेक आदमी के यतीम बच्चे और उस शख़्स की बेवा को कसीर माल अता करना था इसलिए गाय ज़िबह करने का हुक्म दिया और बनी इस्राईल के ज़ेहनों में यह बात डाल दी कि वह सवाल करते हैं इस तरह वह गाय कहीं और न मिल सकी। दूसरी वजह यह थी कि गाय की कुरबानी का तरीक़ा पहले से चला आ रहा था और वह लोग गाय की कुरबानी को अज़ीम समझते थे इसलिए उन्हें गाय ज़िबह करने का हुक्म दिया ताकि उनके ज़ेहन उसे कुबूल कर लें कि गाय की कुरबानी में यह असर होगा मक़तूल को ज़िन्दा करने का यह अजीब अंदाज़ ब्यान करके वाज़ेह किया कि अल्लाह तआला जैसे चाहे मुर्दों को ज़िन्दा करता है नीज़ यह काम उनके अपने हाथों से कराया ताकि मूसा अलैहिस्सलाम पर वह जादूगरी का इल्ज़ाम आयद न कर सकें।

क़ौमे मूसा अलैहिस्सलाम में क़ारून

इरशादे ख़ुदावंदी है:

बेशक क़ारून मूसा अलैहिस्सलाम की क़ौम से था फिर उसने उन पर ज़्यादती की और हम ने उसको इतने ख़ज़ाने दिए जिनकी चावियां एक ज़ोर आवर जमाअत पर भारी थीं जब उससे उसकी क़ौम ने कहा इतरा नहीं बेशक अल्लाह तआला इतराने वालों को दोस्त नहीं रखता और जो माल तुझे अल्लाह तआला ने दिया है इससे आख़रत का घर तलब कर और दुनिया में अपना हिस्सा न भूल और एहसान कर जैसा अल्लाह तआला ने तुझपर एहसान किया है और ज़मीन में फ़साद न चाह बेशक अल्लाह तआला फ़सादियों को दोस्त नहीं रखता बोला यह तो मुझे एक इल्म से मिला है जो मेरे पास है और क्या उसे यह नहीं मालूम कि अल्लाह तआला ने इससे पहले वह संगतें हलाक फ़रमा दीं जिनकी कुव्वतें इससे सख़्त थीं और जमाअतें इससे ज़्यादा (अल्लाह तआला ख़ुद ही जानता है) और मुजरिमों से उनके गुनाहों के बारे में नहीं पूछा जायेगा (कि तुम्हारा माल कहां है, तुम्हारी ज़्यादतियां क्या हैं?) तो अपनी क़ौम पर निकला अपनी आराईश में, बोले वह जो दुनिया की ज़िन्दगी चाहते किसी तरह हम को भी ऐसा मिलता जैसा क़ारून को मिला बेशक इसका बड़ा नसीब है और बोले जिन्हें इल्म दिया गया ख़राबी हो तुम्हारी अल्लाह तआला का सवाब बेहतर है उसके लिए जो ईमान लाए और अच्छे काम करे और यह उन्हीं को मिलता है जो सब्र वाले हैं तो हमने उसे और उसके घर को ज़मीन में धंसा दिया तो उसके पास कोई जमाअत न थी कि अल्लाह तआला से बचाने में उसकी मदद करती और न वह बदला ले सका और कल जिसने इस मर्तबा की आरज़ू की थी सुबह कहने लगे अजीब बात है अल्लाह तआला रिज़्क़ वसी करता है अपने बंदों में जिसके लिए चाहे और तंगी फ़रमाता है अगर अल्लाह तआला हम पर एहसान न फ़रमाता तो हमें भी धंसा देता ऐ अजब! काफ़िरों का भला नहीं।

क़ारून (हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम) का क़रीबी रिश्तेदार था ज़्यादा मश्हूर यह है कि आप का चचाज़ाद भाई था बाज़ हज़रात ने उसे आपका ख़ालाज़ाद भाई कहा है उसने मूसा अलैहिस्सलाम और हारून अलैहिस्सलाम की नबुव्वत पर हसद करते हुए मुनाफ़क़त इख़्तेयार कर ली थी आपकी क़ौम में सामरी मुनाफ़िक़ था। क़ारून ख़ूबसूरत होने की वजह से मुनव्वर कहलाता था और तौरात का भी बहुत बड़ा क़ारी था। लेकिन नबी का गुस्ताख़ होने की वजह से ज़लील हुआ वह बहुत बड़ा मालदार था दस आदमियों की जमाअत उसके माल को शुमार नहीं कर सकती थी या यह लोग उसके ख़ज़ानों को उठा नहीं सकते थे।

हज़रत इब्ने अब्बास और हसन रज़ियल्लाहु अन्हुम का मुख़्तार मसलक यह है कि मफ़ातेह से मुराद माल लिया जाये यानी उसके माल को दस आदमी नहीं उठा सकते थे।

असबा और असाबा बड़ी जमाअत को कहते हैं। दस की तादाद पर असबा बोला जाता है क्योंकि यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के भाईयों ने कहा था और हम एक जमाअत हैं यह कहने वाले दस की तादाद में थे।

जिस रिवायत में यह ज़िक्र है कि कारून के खज़ानों की चाबियां साठ सवारियों का बोझ था इसका ज़िक्र क़ुरआन पाक में नहीं लिहाज़ा इस रिवायत को क़बूल नहीं किया जायेगा।

क़ारून अपनी मालदारी की वजह से अपनी क़ौम के गुरबा को घटिया समझता था उनके ईमान का कुछ पास न करता अपने कसरत माल की वजह से उसके दिल में उनकी कोई अज़मत न थी मिस्र में रहने के दौरान भी फ़िरऔन का एजेंट था इसलिये वहां भी बनी इस्राईल पर मज़ालिम ढाता रहता था और अपने तकब्बुराना अंदाज़ से भी उन पर गुस्से का इज़हार करता रहता था।

उसकी क़ौम ने उसे कहा कि तुम अपने कसीर माल की वजह से इतराओ नहीं अल्लाह तआला इतराने वालों को पसंद नहीं करता अल्लाह तआला की नेमतों का शुक्रिया अदा करो अल्लाह तआला की राह में माल खर्च करो तो अल्लाह तआला अपने वादा के मुताबिक़ तुम्हें मज़ीद नेमतें अता करेगा क्योंकि उसका वादा है।

अगर तुम शुक्रिया अदा करोगे तो मैं तुम्हें मज़ीद नेमतें दूंगा।

इसलिए तुम्हें चाहिये कि तुम दुनिया में आख़िरत के लिए अमल करके अज़ाब से नजात हासिल करो इसलिए कि दुनिया में इंसान का हक़ीक़ी हिस्सा यह है कि आख़िरत के लिए अमल करे सदके कर तिला रहने करके और आमाले खैर के साथ आख़िरत का सवाब और कामयाबी हासिल करे और इसकी तफ़सीर में यह भी कहा गया है कि ग़नी, सेहत, कुव्वत व जवानी और दौलत को न भूल बल्कि इनसे ऐ इंसान आख़िरत को तलब कर।

हदीस शरीफ़ में है कि पांच से पहले पांच को ग़नीमत समझो। जवानी को बुढ़ापे से पहले तंदुरुस्ती को बीमारी से पहले, सरवत को नादारी से पहले, फ़राग़त को मशग़ूलियत से पहले, ज़िन्दगी को मौत से पहले, कारून ने किसी की नसीहत को कबूल नहीं किया बल्कि कहने लगा यह माल तो मुझे किसी ने नहीं दिया मैंने तो अपने इल्म से इसे हासिल किया।

इल्म से मुराद तौरात का इल्म या कीमिया गरी जो उसने हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम से हासिल किया था और इसके ज़रिये कलई को चांदी और तांबे को सोना बना लेता था या इल्मे तिजारत या इल्मे ज़राअत या और पेशों का इल्म।

जब वह ज़र्क बर्क लिबास ज़ेब तन किये हुए शानदार सवारी पर सवार होकर शाहाना अंदाज़ पर निकलता तो उसे देखकर दुनियादार लोगों का जी ललचाता दिल मे हसरत पैदा होती वह कहते कितना खुश नसीब है यह कारून काश हमें भी इस जैसा माल व दौलत और अमीराना ठाट बाट मयस्सर होती, लेकिन जो लोग साहबे इल्म थे दुनिया के माल की हक़ीक़त से बाख़बर थे कि यह नापायदार चीज़ है उनके दिल में किसी क़िस्म का कोई ख्याल पैदा न होता कि हमें भी ऐसा माल मिले बल्कि उन्होंने दूसरों को भी समझाया कि तुम्हारी बर्बादी हो तुम दुनिया का माल तलब कर रहे हो तुम्हें चाहिये कि अल्लाह तआला से सवाब हासिल करने के लिए अपने ईमान पर साबित रहो और अच्छे आमाल करते रहो।

कारून का ज़मीन में धंस जाना : मूसा अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया मुझे अल्लाह तआला ने हुक्म दिया है कि मैं तुम्हारे माल से ज़कात वसूल करूं कारून ने इंकार कर दिया उसने दूसरों को भी बरगश्ता

करने की कोशिश की लोगों को जमा करके कहने लगा मूसा अलैहिस्सलाम तुम्हारे पास नमाज़ अदा करने का हुक्म लाए और भी कई अहकाम लाए कि तुम उन पर अमल करो तो हम ने उन पर अमल किया अब वह हमसे हमारा माल भी छीनना चाहते हैं यह हम कैसे बर्दाश्त करें। सबने कहा हां यह तो हम कभी भी बर्दाश्त नहीं कर सकते? लेकिन इसमें तुम्हारी क्या राए है? क्या किया जाए? उसने कहा फ़ाहशा औरतों में से एक औरत की तरफ़ पैग़ाम भेजकर उसे बुलाते हैं और उसे इनाम का लालच देकर मूसा अलैहिस्सलाम पर तोहमत लगाते हैं ताकि सब लोग उसे छोड़ जायें उसने अपने मंसूबा के मुताबिक़ एक फ़ाहशा औरत को बुलाया उसे एक हज़ार दीनार या सोने से भरा हुआ तश्त देने का वादा किया कि तुम सब लोगों के सामने यह कह देना कि मूसा अलैहिस्सलाम ने मेरे साथ बुराई का इर्तकाब किया है उसने कहा ठीक है मैं कह दूंगी।

मूसा अलैहिस्सलाम ने ईद के दिन ख़ुत्बा दिया और अहकामे इलाही ब्यान किये उसी दौरान क़ारून ने भी अपने मंसूबे को अमली जामा पहनाने की मज़मूम लेकिन नाकाम कोशिश की या कि क़ारून ने मूसा अलैहिस्सलाम को कहा कि तुम बनी इस्राईल को जमा करके अल्लाह तआला के अहकाम पहुंचाओ कि मुझे रब तआला ने यह हुक्म दिया है आपने फ़रमाया ठीक है आपने सब लोगों को जमा किया मुमकिन है कि क़ारून के कहने पर ईद के दिन ही सब को जमा करके आपने ख़ुत्बा दिया हो इस तरह रिवायतों का मक़सद एक ही होगा आपने दौराने ख़ुत्बा इरशाद फ़रमाया कि मुझे मेरे रब तआला ने यह हुक्म दिया है कि मैं उसका पैग़ाम तुम्हें पहुंचाऊं कि तुम अल्लाह तआला की इबादत करो और उसके साथ कोई शरीक न ठहराओ सिला रहमी करो इस तरह आपने और भी कई अहकाम ब्यान फ़रमाए और आपने यह फ़रमाया कि रब तआला ने मुझे हुक्म दिया है कि मैं ज़ानी को संगसार कर दूं। क़ारून और उसके चमचे करछे कहने लगे यही काम अगर तुम करो? आपने फ़रमाया मुझे भी संगसार कर दिया जाये उन्होंने कहा कि तुमने तो ज़िना किया है आप अलैहिस्सलाम ने कहा मैं? उन्होंने कहा हां तुमने, अभी वह औरत मजमए आम में आकर बताएगी उस औरत को बुलाया गया सब ने कहा कि तुम बताओ जो मामला तुम्हारे साथ दरपेश आया। मूसा अलैहिस्सलाम ने उसे कहा अल्लाह ताअला पर ईमान रखते हुए सच सच बताओ कि असल वाक़िया क्या है? उस औरत ने कहा जब तुमने अल्लाह तआला का नाम लिया है तो अब मैं सच सच ब्यान करूंगी कोई झूठ की आमेज़िश नहीं होगी।

उसने कहा इन लोगों ने मुझे बुलाया और कसीर माल देने की पेशकश की है मैं तुम पर तोहमत लगाऊं कि तुमने मेरी साथ बुराई का इर्तकाब किया है मैं गवाही देती हूं कि बेशक तुम पाक दामन हो हर तरह से पाक व साफ़ हो और तुम अल्लाह तआला के रसूल हो, मूसा अलैहिस्सलाम रोते हुए सज्दे में गिर गये और रब तआला के हुजूर अर्ज़ करने लगे ऐ मौलाए कायनात जब मैं तेरा रसूल हूं तो उनको अपनी गिरफ़्त में ले ले रब तआला ने इरशाद फ़रमाया ऐ मूसा अलैहिस्सलाम ज़मीन को तुम्हारे हुक्म के ताबे कर दिया है इसे जो हुक्म देगें वह तस्लीम करेगी। मूसा अलैहिस्सलाम ने बनी इस्राईल को कहा कि मुझे रब तआला ने क़ारून की तरफ़ भी ऐसे ही भेजा जैसे कि फ़िरऔन की तरफ़। अल्लाह तआला का इरशाद गिरामी इस पर शाहिद है।

और बेशक हमने मूसा अलैहिस्सलाम को अपनी निशानियों और रौशन सनद के साथ भेजा और हामान और क़ारून की तरफ़।

इसलिए जो शख़्स उसका साथ देना चाहे वह इसका साथ दे और मेरा साथ देना चाहता है वह उसे छोड़ दे आपके इस इरशाद पर उसके साथ सिर्फ़ दो आदमी रह गये बाक़ियों ने उसका साथ छोड़ दिया आप अलैहिस्सलाम ने कहा ऐ ज़मीन इनको (क़ारून और उसके साथियों) को पकड़ ले ज़मीन ने उनको ऐड़ियों तक अपने अंदर धंसा लिया वह कह रहे थे ऐ मूसा अलैहिस्सलाम ऐ मूसा अलैहिस्सलाम लेकिन आप बदस्तूर फ़रमा रहे थे ऐ ज़मीन इनको पकड़ ले। तो ज़मीन ने इनको घुटनों तक धंसा लिया। फिर उसने कहा ऐ मूसा अलैहिस्सलाम, ऐ मूसा अलैहिस्सलाम लेकिन आपने कोई तवज्जोह न दी बल्कि ज़मीन को कहा इनको अपनी गिरफ़्त में ले ले तो ज़मीन ने उनको कमर तक धंसा लिया फिर इसी तरह गर्दनों तक वह धंस गये इस हालत में वह मूसा अलैहिस्सलाम के सामने आह व ज़ारी कर रहे थे आप पर रहम करने के वास्ते डाल रहे थे लेकिन आपने शिद्दते ग़ज़ब की वजह से उनकी बात की तरफ़ कोई ध्यान न किया बल्कि ज़मीन को आख़री हुक्म भी दे दिया कि ऐ ज़मीन इनका मुआख़ज़ा कर ले आख़िर ज़मीन ने उनको मुकम्मल तौर पर अपने अंदर समेट लिया।

रब तआला ने मूसा अलैहिस्सलाम की तरफ़ वही की और कहा ऐ मूसा अलैहिस्सलाम तुमने कितनी सख़्त दिली का मुज़ाहिरा किया है वह तुम्हें बार बार पुकार रहे थे लेकिन तुमने उन पर कुछ रहम न किया उनकी आह व ज़ारी पर कुछ तवज्जोह न दी।

और दूसरी रिवायत में है कि :

ख़बरदार मुझे अपनी इज़्ज़त व जलाल की क़सम अगर मुझसे कोई फ़रयाद तलब करता तो मैं उसकी फ़रयाद को ज़रूर पहुंचता यानी उसकी हाजत को पूरा करता कि अगर मुझे एक मर्तबा ही कोई पुकारता तो मुझे अपनी पुकार क़बूल करने वाला पाता। रब तआला के इस इरशाद का जवाब मूसा अलैहिस्सलाम ने भी क्या ख़ूब दिया मूसा अलैहिस्सलाम ने कहा:

ऐ मेरे रब मैंने तेरे लिए ही तो गुस्सा करते हुए यह किया है।

यानी ऐ अल्लाह तआला जब वह तेरे दीन की धज्जियां बिखेर रहे थे तेरे अहकाम को पामाल कर रहे थे ख़ुद गुमराह हो रहे थे और दूसरे लोगों को भी गुमराह कर रहे थे तो मैंने तेरे हुज़ूर अर्ज़ किया कि ऐ मौलाए करीम जब मैं तेरा रसूल हूं इन्हें तेरे अहकाम पहुंचा रहा हूं लेकिन यह अपने तरीक़े से बाज़ नहीं आ रहे तो तू इनको अपनी गिरफ़्त में ले ले ऐ रब्बे करीम तुझ से बढ़कर कौन जानता है कि मैंने उन पर इसलिए गुस्सा नहीं किया कि उन्होंने मुझपर तोहमत लगाई है इसमें तो वह ख़ुद ही ज़लील हो चुके थे मेरा गुस्सा तो तेरी ज़ात की वजह से था मैं उनकी आह व पुकार को कैसे सनुता।?

मूसा अलैहिस्सलाम को क़ौम की ईज़ा से बरी करना : ऐ ईमान वालो! इन जैसे न होना जिन्होंने मूसा अलैहिस्सलाम को सताया तो अल्लाह तआला ने उसे बरी फ़रमा दिया इस बात से जो उन्होंने की और मूसा अलैहिस्सलाम अल्लाह तआला के हां आबरू वाला है।

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के माल की तक़सीम पर जब एक शख़्स ने एतेराज़ किया तो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उस पर नाराज़गी का इज़हार करते हुए फ़रमाया।

अल्लाह तआला मूसा अलैहिस्सलाम पर रहम फ़रमाये उन्हें इस से भी ज़्यादा सताया गया लेकिन आपने सब्र किया।

मूसा अलैहिस्सलाम को सताने का एक वाक़िया तो अभी गुज़रा है कि आप पर तोहमत लगाने की नापाक जसारत की गई लेकिन अल्लाह तआला ने आपको इससे बरी फ़रमाया।

दूसरा वाक़िया जो मुस्नद अहमद, बुख़ारी, तिर्मिज़ी में हज़रत अबू हुरैरा से मरवी है रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि मसूा अलैहिस्सलाम बहुत हया फ़रमाते थे आप अपने जिस्म को इस तरह ढांप कर रखते थे कि आपके जिस्म की जिल्द को कोई शख़्स न देखे यह एहतेमाम आप हया की वजह से करते थे।

बनी इस्राईल में से आप को बाज़ ने ज़ेहनी अज़ीयत (तकलीफ़) पहुंचाई वह कहने लगे कि आप अपने जिस्म को किसी ऐब की वजह से ढांपते हैं तो आपको बर्स का मर्ज़ है या इदरत (ख़सीतीन में हवा भरी होना) के मर्ज़ में मुब्तला हैं जब ही आप हमारे साथ मिल कर नंगे होकर नहीं नहाते वह सब लोग मिलकर नंगे नहाते थे।

अल्लाह तआला ने इरादा फ़रमाया कि नबी को उनके लगाए हुए ऐब से बरी फ़रमाये। मूसा अलैहिस्सलाम एक दिन सब लोगों से अलाहदा होकर नहाने लगे आपने अपने कपड़े पत्थर पर रखे गुस्ल किया जब गुस्ल से फ़ारिग़ हुए तो कपड़े लेने के लिए पत्थर की तरफ़ मुतवज्जेह हुए तो पत्थर आगे भाग खड़ा हुआ मूसा अलैहिस्सलाम पत्थर के पीछे पीछे। ऐ पत्थर मेरे कपड़े, ऐ पत्थर मेरे कपड़े कह रहे हैं। लेकिन पत्थर वहां जाकर रुका जहां बनी इस्राईल के बड़े बड़े लोग महफ़िल सजाए बैठे थे उन्होंने जब मूसा अलैहिस्सलाम को नंगे देखा तो उन्हें इल्म हो गया कि हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम तो बहुत हसीन हैं आपमें कोई ऐब नहीं। (उन्होंने आप पर जो ऐब लगाए थे रब तआला ने आपको बरी कर दिया) अब पत्थर चूंकि रुक चुका था आप अलैहिस्सलाम ने अपने कपड़े पहने और पत्थर को अपने असा से मारा।

हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं क़सम है अल्लाह तआला की बेशक मूसा अलैहिस्सलाम के मारने की वजह से पत्थर पर छः या सात निशान पड़ गये थे।

तीसरा वाक़िया यह था कि उन्होंने मूसा अलैहिस्सलाम पर हज़रत हारुन अलैहिस्सलाम को क़त्ल करने का इल्ज़ाम आइद कर दिया था इब्ने मम्बअ इब्ने जुरैर इब्ने मन्ज़र इब्ने अबि हातिम इब्ने मरदुविया रज़ियल्लाहु अन्हुम और हाकिम ने ब्यान किया है इस रिवायत को सहीह क़रार दिया है कि इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा ने हज़रत अली अल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत ब्यान की कि मूसा अलैहिस्सलाम और हारुन अलैहिस्सलाम पहाड़ पर गये तो वहां हारुन अलैहिस्सलाम फ़ौत हो गये बनी इस्राईल कहने लगे कि मूसा अलैहिस्सलाम ने हज़रत हारुन अलैहिस्सलाम को क़त्ल कर दिया हालांकि वह हमें तुमसे ज़्यादा महबूब थे और वह नर्म मिज़ाज थे उनके इस बेहूदा कलाम से भी आपको बहुत तकलीफ़ हुई। अल्लाह तआला ने फ़रिश्तों को हुक्म दिया जिन्होंने हारुन अलैहिस्सलाम की लाश को उठाया और वहां से गुज़रा जहां बनी इस्राईल की महाफ़िल क़ायम थीं और फ़रिश्ते हारुन अलैहिस्सलाम की वफ़ात का ज़िक्र कर रहे थे।

अल्लाह तआला ने आपको इससे बरी फ़रमाया और फ़रिश्ते ही हारुन अलैहिस्सलाम की लाश को ले गये और उन्होंने ही दफ़न किया।

मूसा अलैहिस्सलाम को उन्होंने ही जादूगर और मजनू कहकर सताया और यह कह कर परेशान किया।

तुम और तुम्हारा खुदा जाकर लड़ाई करें हम तो यहां बैठे हैं और यह कहकर आपको तकलीफ़ पहुंचाई।

हम हरगिज़ एक खाने पर सब्र न करेंगे।

हम हरगिज़ तुम पर ईमान नहीं लायेंगे यहां तक कि अल्लाह तआला को ज़ाहिर तौर पर देख लें।

इन तमाम तकालीफ़देह अक़वला से आपको अल्लाह तआला ने नजात दी आपके दिल को तसल्ली दी।

मूसा अलैहिस्सलाम अल्लाह के यहां वजीह थे।

वजीह के मुख़्तलिफ़ मायने ब्यान किये गये हैं मर्तबा वाले, क़द्र व मंज़िलत में बुलंद मक़ाम रखने वाले, अल्लाह तआला के मक़बूल, मस्तजाबुद दावात (आपकी हर दुआ को अल्लाह तआला ने क़बूल फ़रमाया सिवाए इसके कि आपने दुनिया में रब तआला को देखने की जो दुआ की उसे कुबूल नहीं किया गया) और वजीह का मायने यह भी लिया गया है कि आपने अल्लाह तआला से बराहे रास्त कलाम किया। हज़रत मौलाना अहमद ख़ां रज़ा बरेलवी का तर्जमा इन तमाम मआनी को शामिल है कि आप अल्लाह तआला के यहां आबरू (इज्ज़त) वाले थे।

हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम और हज़रत ख़िज़्र अलैहिस्सलाम की मुलाक़ात : हज़रत सईद बिन जुबैर रज़ियल्लाहु अन्हु से मरवी है कि उन्होंने कहा कि मैंने हज़रत इब्ने अब्बास से कहा कि बेशक नूफ़ा बकाली गुमान करता है कि मूसा अलैहिस्सलाम साहबे बनी इस्राईल यह वह मूसा अलैहिस्सलाम नहीं हैं जो ख़िज़्र अलैहिस्सलाम वाले मूसा अलैहिस्सलाम हैं उन्होंने कहा वह अल्लाह तआला का दुश्मन है झूट कहता है। मैंने अबी बिन कअब रज़ियल्लाहु अन्हु को कहते हुए सुना वह कहते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को फ़रमाते हुए सुना कि एक मर्तबा बनी इस्राईल को खुत्बा देने के लिए मूसा अलैहिस्सलाम खड़े हुए आपसे पूछा गया लोगों में से ज़्यादा आलिम कौन है? आपने फ़रमाया, मैं ज़्यादा आलिम हूं, तो रब तआला ने आप पर अताब फ़रमाया क्योंकि आप अलैहिस्सलाम ने सवाल के जवाब को रब तआला की तरफ़ मंसूब नहीं किया हालांकि यह कहना चाहिये कि अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

अल्लाह तआला ने आपकी तरफ़ वही की कि मेरे बंदों में से एक बंदा मजमउल बहरैन (दो दरियाओं के मिलने की जगह) में रहता है वह तुमसे ज़यादा इल्म रखता है मूसा अलैहिस्सलाम ने अर्ज़ की ऐ मेरे रब मैं उन्हें कैसे पाऊंगा तो आपको बताया गया कि तुम अपने थैले में एक मछली बंद करके अपने साथ ले लो जहां तुम्हारी मछली गुम हो जाये वही उनका मक़ाम होगा।

और याद करो जब मूसा अलैहिस्सलाम ने अपने ख़ादिम से कहा मैं बाज़ न रहूंगा जब तक वहां न पहुंचूं जहां दो समुंद्र मिले हैं या क़रनों चला जाऊं फिर जब वह दोनों उन दरियाओं के मिलने की जगह पहुंचे अपनी मछली भूल गये उसने समुंद्र में अपनी राह ली सुरंग बनाते हुए फिर जब वहां से गुज़र गये मूसा अलैहिस्सलाम ने ख़ादिम से कहा हमारा सुबह का खाना लाओ बेशक हमें अपने सफ़र में बड़ी मशक़्क़त का सामना हुआ बोला भला देखिए तो जब हमने इस चट्टान के पास जगह ली थी तो बेशक मैं मछली को भूल गया था और मुझे शैतान ही ने भुलाया है कि मैं इस का ज़िक्र करूं इस मछली ने तो समुंद्र में अपनी राह ली है जो बाइसे ताज्जुब है।

मूसा अलैहिस्सलाम ने जिस जवान को अपने साथ लिया वह यूशा बिन नून थे जो आपकी ख़िदमत व सोहबत में रहते थे और आप से इल्म सीखा करते थे और आप के बाद आपके वली अहद हैं।

मजमऊल बहरैन से मुराद दरियाओं के मिलने की जगह यानी बहरे फ़ारस और बहर रूम जहां मिलेंगे वहां तुम्हें हज़रत ख़िज़्र अलैहिस्सलाम मिल जायेंगे उसकी निशानी यह बताई गई कि जहां तुम्हारी मछली गुम हो जाये उसी मक़ाम में उनको तलाश करना मूसा अलैहिस्सलाम ने वहां पहुंचने का पक्का इरादा कर लिया और फ़रमाया कि मैं अपनी कोशिश जारी रखूंगा यहां तक कि वहां पहुंच जाऊं बेशक वह जगह कितनी ही दूर हो मेरा सफ़र वहां पहुंचने तक जारी रहेगा फिर इन हज़रात ने रोटी और भूनी हुई नमकीन मछली अपने साथ एक थैले में ली ताकि रास्ते में काम आए फिर यह अपनी मंज़िले मक़सूद की तरफ़ रवाना हो गये। जहां एक पत्थर की चट्टान थी वहां इन हज़रात ने आराम किया और सो गये भुनी हुई मछली थैले में ज़िन्दा हो गई तड़प कर दरिया में गिर गई उस पर से पानी का बहाव रुक गया और एक मेहराब सी बन गई हज़रत यूशा बिन नून अलैहिस्सलाम बेदार हो चुक थे मच्छली के ज़िन्दा होकर दरिया में गिरने को देख रहे थे लेकिन यह वाक़िया मूसा अलैहिस्सलाम को बताना भूल गये थे दोनों हज़रात वहां से चले दूसरे दिन खाने के वक़्त तक अपना सफ़र जारी रखा जब दूसरा दिन हुआ खाने का वक़्त हुआ तो मूसा अलैहिस्सलाम ने कहा सफ़र की थकान भी है और भूख की शिद्दत भी इसलिए थैले से रोटी और मछली निकालो ताकि खाना खा लें उस वक़्त यूशा बिन नून को याद आया उन्होंने कहा मछली तो ज़िन्दा होकर दरिया में चली गई थी भुनी हुई मछली का ज़िंदा होकर दरिया में जाना हैरान कुन और ताज्जब नाक मामला है।

हज़रत यूशा अलैहिस्सलाम ने अपने भूलने को शैतान की तरफ़ मंसूब किया इसकी एक वजह यह हो सकती है कि आपके दिल में वतन से दूरी और घर के अफ़राद का ख़्याल हुआ आपने नफ़्स के ख़्यालात को शैतान की तरफ़ मंसूब कर दिया हो जो मिस्ल शैतान है दूसरी वजह यह भी हो सकती है कि आप अल्लाह तआला की कुदरतों के मुशाहिदा में डूबे हों और अल्लाह तआला की तरफ़ कामिल तवज्जोह की वजह से और कुछ ख़्याल न रहा हो इसका हक़ीक़ी फ़ाइल तो अल्लाह तआला है लेकिन आपने आजिज़ी के तौर पर यह कहा हो कि मुझे कुछ न कुछ दीगर उमूर की तरफ़ भी तवज्जोह करनी चाहिये थी यह मेरा तवज्जोह न करना मजाज़न शैतान की तरफ़ मंसूब है।

फ़ायदा : "फ़ता" से मुराद यूशा बिन नून हैं फ़ता नौजवान को कहते हैं ख़ादिम को अदब व एहतेराम के लिए ख़ादिम के बजाए फ़ता (नौजवान) के लफ्ज़ से याद फ़रमाया गया इससे हमें यह सिखाया गया

है कि फ़र्क़े मरातिब के बावजूद हमें कोई ऐसा लफ़्ज़ इस्तेमाल न करना चाहिये जिससे किसी अपने से कम दर्जा की तज़लील हो और दिल आज़ारी का पहलू निकलता हो। काश कि यह सबक़ पुलिस के अफ़राद को हासिल हो जाए जिनमें अक्सरियत शुरफ़ा से बेहूदा कलाम से पेश आती है और यह सबक़ अल्लाह तआला करे स्कूलों और दीनी मदारिस के हज़ारों मुदर्रेसीन में से किसी एक बेहूदा को भी हासिल हो जाये जो गंदी ज़बान इस्तेमाल करते हैं तल्बाए किराम को अपनी औलाद व अक़ारिब से कम समझने वाले बेहूदा बकवास करने वाले मुख़र्रब अख़लाक़ तो हो सकते हैं मोअल्लिमे अख़लाक़ नहीं हो सकते इल्म से दूर करने का ज़रिया तो हो सकते हैं इल्म अता करने का सबब नहीं बन सकते तबला को बदकलामी तो सिखा सकते हैं शीरीं सुख़नी सिखाना इनसे भला कैसे मुमकिन है।

मछली ज़िन्दा होने की जगह लौटना : (मूसा अलैहिस्सलाम ने) कहा कि यही तो हम चाहते थे तो पीछे पलटे अपने क़दमों के निशान देखते तो इन दोनों ने हमारे बंदों में से एक बंदा पाया जिसे हम ने अपने पास रहमत दी और उसे अपना इल्म लदुन्नी अता किया उससे मूसा अलैहिस्सलाम ने कहा क्या मैं तुम्हारे साथ रहूं इस शर्त पर कि तुम मुझे इल्म सिखा दोगे नेक बात जो तुम्हें तालीम हुई कहा आप मेरे साथ हरगिज़ न ठहर सकेंगे और इस बात पर क्यों कर सब्र करें जिसे आपका इल्म मुहीत नहीं मूसा अलैहिस्सलाम ने कहा अनक़रीब अल्लाह तआला चाहे तो तुम मुझे साबिर पाओगे और मैं तुम्हारे किसी हुक्म के ख़िलाफ़ न करूंगा।

हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम और हज़रत यूशा अलैहिस्सलाम वहां लौटकर आए जहां मछली ज़िन्दा होकर पानी में चली गई थी पानी का बहाव रुकने की वजह से मुख़्तलिफ़ निशानात मौजूद थे मूसा अलैहिस्सलाम ने कहा यही मक़ाम हमारा मक़सूद है दोनों ने तलाश करना शुरू किया यहां तक कि वह एक चट्टान के पास आए तो देखा कि एक शख़्स चादर ओढ़े लेट रहा है मूसा अलैहिस्सलाम ने उन्हें सलाम किया उन्होंने कहा इस ज़मीन में सलाम कहां से आ गया? (यहां तो कोई सलाम करने वाला ही नज़र नहीं आया) आपने कहा मैं मूसा हूं। हज़रत ख़िज़्र अलैहिस्सलाम ने कहा बनी इस्राईल का मूसा? आपने कहा जी हां हज़रत ख़िज़्र अलैहिस्सलाम ने कहा अल्लाह तआला ने जो इल्म तुम्हें अता फ़रमाया वह मुझे अता नहीं फ़रमाया और जो इल्म मुझे अता फ़रमाया तुम्हें नहीं अता फ़रमाया। मूसा अलैहिस्सलाम ने अर्ज़ की क्या मैं आप की ताबेदारी कर सकता हूं कि तुम मुझे वह इल्म अता कर दो ख़िज़्र अलैहिस्सलाम को मालूम था कि इन्हें ज़ाहिरी शरीअत का इल्म अता किया गया है यह बातनी उमूर पर सब्र नहीं कर सकेंगे इसलिए उन्होंने कहा तुम कैसे सब्र कर सकोगे मूसा अलैहिस्सलाम ने कहा मैं इंशाअल्लाह तआला सब्र करूंगा।

हज़रत ख़िज़्र अलैहिस्सलाम ने शर्त आइद कर दी : कहा अगर आप मेरे साथ रहते हैं तो मुझसे किसी बात को न पूछना जब तक मैं खुद उसका ज़िक्र न करूं।

मूसा अलैहिस्सलाम चूंकि पहले ही कह चुके थे कि इंशाअल्लाह तआला सब्र करूंगा और आप के हुक्म की नाफ़रमानी नहीं करूंगा इसलिए आप को ख़िज़्र अलैहिस्सलाम ने साथ रहने की इजाज़त दे दी।

ख़िज़्र अलैहिस्सलाम का कश्ती तोड़ना : अब दोनों चले यहां तक कि जब कश्ती में सवार हुए उस बंदे ने उसे चीर डाला (मूसा अलैहिस्सलाम) ने कहा तुमने इसे इसलिए चीरा कि इसके सवारों को डुबा दो बेशक तुमने बुरी बात की कहा मैं न कहता था कि आप मेरे साथ हरगिज़ न ठहर करसेंगे कहा मुझसे मेरी भूल पर गिरफ़्त न करो और मुझ पर मेरे काम में मुश्किल न डालो।

हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम और हज़रत ख़िज़्र अलैहिस्सलाम का ज़िक्र है कि दोनों चले यूशा अलैहिस्सलाम का ज़िक्र नहीं या तो इसलिए कि वह ताबे थे उनके ज़िक्र की ज़रूरत महसूस नहीं की या यह भी मुमकिन है कि मूसा अलैहिस्सलाम ने उन्हें बनी इस्राईल की तरफ़ लौटा दिया हो।

बुख़ारी व मुस्लिम में हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा से मरवी है कि वह दोनों दरिया के किनारे चल रहे थे उनके क़रीब से एक कश्ती का गुज़र हुआ कश्ती वाले लोगों ने हज़रत ख़िज़्र अलैहिस्सलाम को पहचान लिया था इसलिये उन्होंने आपस में कलाम किया कि उन्हें कश्ती में सवार कराना चाहिये लिहाज़ा उन्होंने बग़ैर उजरत लेने के इन हज़रात को सवार कर लिया यह दोनों जब सवार हुए तो एक चिड़िया आई जो कश्ती के एक किनारे पर बैठी उसने दरिया में अपनी चोंच मारी तो हज़रत ख़िज़्र अलैहिस्सलाम ने कहा:

मेरा इल्म और तुम्हारा इल्म अल्लाह तआला के इल्म के मुक़ाबिल ऐसे ही है जैसे इस चिड़िया की चोंच में आने वाले पानी को दरिया के पानी से निस्बत है।

यह बात सिर्फ़ समझाने की हद तक है वरना इन दोनों का इल्म अल्लाह तआला के इल्म के मुक़ाबिल इससे भी क़लील है ख्याल रहे कि यहां ज़ाहिरी मायने मुराद नहीं लिया जा सकता क्योंकि ज़ाहरी मायने यह है कि मेरे और तुम्हारे इल्म ने अल्लाह तआला के इल्म में कोई कमी नहीं की सिवाए इतनी मिक़दार के जितनी चिड़िया की चोंच ने दरिया में कमी की है। यह मायने किसी हद तक भी दुरुस्त नहीं क्योंकि अल्लाह तआला के इल्म में कमी का वाक़ेय होना किसी तरह भी मुमकिन नहीं पहले ब्यान कर्दा मायने को ही अल्लामा नूवी ने शरह मुस्लिम में इन अल्फ़ाज़ में पेश किया है।

हज़रत ख़िज़्र अलैहिस्सलाम ने कश्ती का एक तख़्ता उखेड़ दिया था मूसा अलैहिस्सलाम ने ताज्जुब करते हुए कहा कि इस क़ौम ने हमें बग़ैर उजरत के कश्ती पर सवार किया तुम ने इसे तोड़ दिया क्या तुम लोगों को ग़र्क़ करना चाहते हो ख़्याल रहे कि यह कश्ती का तोड़ना किनारे के क़रीब जाकर था हज़रत ख़िज़्र अलैहिस्सलाम ने वक़्ती तौर पर इस में कील भी लगा दिया था।

तुमने बहुत बुरी बात की।

यानी तुम्हारा काम अच्छा नहीं यहां मायने बहुत ख़ौफ़नाक मामला ऐसा आम तौर पर लफ़्ज़ बोला जाता है जब कि कोई अज़ीम काम वाक़ेय हो या कसीर उमूर का वक़ूअ हो।

हज़रत ख़िज़्र अलैहिस्सलाम ने कहा मैंने जो कहा था तुम ज़ाहिर देख कर सब्र नहीं कर सकोगे मूसा अलैहिस्सलाम ने कहा मुझसे भूल वाक़ेय हो गई है इसलिए इसमें मेरी कोई गिरफ़्त न करें।

ख़िज़्र अलैहिस्सलाम ने एक बच्चे को क़त्ल कर दिया : फिर दोनों चले यहां तक कि जब एक लड़का मिला उस बंदे ने उसे क़त्ल कर दिया मूसा अलैहिस्सलाम ने कहा क्या तुमने एक सुथरी जान बग़ैर

किसी जान के बदले क़त्ल कर दी बेशक तुमने बहुत बुरी बात की कहा मैंने आप से न कहा था कि आप हरगिज़ सब्र नहीं कर सकोगे। कहा मैं इसके बाद तुम से पूछूं तो फिर मेरे साथ न रहना बेशक मेरी तरफ़ से तुम्हारा उज़्र पूरा हो चुका है जब कश्ती से दोनों हज़रात निकले तो किनारे पर चल रहे थे जब उनका गुज़रा एक बस्ती से हुआ, वहां लड़के खेल रहे थे एक लड़का उनमें जिस का नाम जीसूर या जनबतूर था जो तमाम लड़कों से ज़्यादा हसीन और साफ़ सुथरा था आपने उसे सर से पकड़ा और उसका सर जुदा कर दिया। एक रिवायत में है कि आपने उसे लिटाकर छुरी से ज़िबह कर दिया।

मूसा अलैहिस्सलाम ने बड़े गुस्से में ज़ोरदार आवाज़ से कहा यह तुमने कितना बुरा काम कर दिया एक नाबालिग़ बच्चे को क़त्ल कर दिया जो साफ़ सुथरा गुनाहों से पाक था इस पर कोई क़सास लाज़िम नहीं था यह ऐसा काम तुमने किया है जो सरासर अक़्ल के ख़िलाफ़ है हज़रत ख़िज़्र अलैहिस्सलाम ने कहा मैंने जो कहा था कि तुम सब्र नहीं कर सकोगे। मूसा अलैहिस्सलाम ने कहा इसके बाद अगर मैंने कोई सवाल किया तो तुम मेरा साथ छोड़ देना क्योंकि उस वक़्त तुम्हें मेरी तरफ़ से उज़्र हासिल हो जायेगा।

ख़िज़्र अलैहिस्सलाम ने दीवार को सीधा कर दिया : फिर दोनों चले यहां तक कि जब गांव वालों के पास आए उन दहक़ानों से खाना मांगा उन्होंने इन्हें दावत देनी क़बूल न की फिर दोनों ने उस गांव में एक दीवार पाई कि गिरा चाहती है उस बंदा ने उसे सीधा कर दिया। मूसा अलैहिस्सलाम ने कहा तुम चाहते तो इस पर कुछ मज़दूरी ले लेते ख़िज़्र अलैहिस्सलाम ने कहा यह मेरी और आपकी जुदाई है अब मैं इन बातों की वजह बताऊंगा जिन पर आप से सब्र न हो सका।

यह बस्ती इंताकिया या ईला थी मूसा अलैहिस्सलाम भूख की वजह से इस हालत में थे कि किसी से तआम तलब जायज़ बल्कि जान बचाने की वजह से वाजिब हो जाता है ऐसे हाल में उन लोगों पर भी वाजिब हो जाता है कि वह तआम खिलाएं इसी वजह से मूसा अलैहिस्सलाम ने दीवार दुरुस्त करने पर एतेराज़ किया कि इन लोगों ने तो हमें शदीद भूख के हाल में खाना भी नहीं खिलाया तो उनसे उजरत लेनी ज़रूरी थी जब इन दोनों ने दीवार को देखा जो एक तरफ़ झुकी हुई थी गिरने के क़रीब पहुंच चुकी थी तो हज़रत ख़िज़्र अलैहिस्सलाम ने हाथ से उसे सीधा कर दिया था सिर्फ़ हाथ फेरा और वह दीवार सीधी हो गई यह दरहक़ीक़त उनका मोजिज़ा था मूसा अलैहिस्सलाम के इस एतेराज़ पर ख़िज़्र अलैहिस्सलाम ने कहा अब आपके वादा के मुताबिक़ मेरे और आपके दर्मियान जुदाई का वक़्त आ चुका है अलबत्ता यह तीन काम जो मैंने किये हैं जिन पर तुमने एतेराज़ किया इनमें से हर एक की वजह और हिकमत मैं ब्यान कर देता हूं ताकि तुम्हें पता चल जाये और तुम जिस ग़र्ज़ से आए थे यानी इल्म हासिल करने के लिए वह भी हासिल हो जाये अल्लामा राज़ी फ़रमाते हैं कि मैंने हिकायात की बाज़ कुतुब में देखा है कि जब यह आयाते करीमा नाज़िल हुई जिसमें है उस बस्ती वालों ने इनकी मेहमान नवाज़ी करने से इंकार कर दिया।

उस बस्ती वाले जिनके आबा अजदाद ने इंकार किया था रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में सोना लेकर हाज़िर हुए क्योंकि उन्हें इससे बड़ी शर्म आ रही थी कि उनके आबा अजदाद इतने घटिया लोग थे कि सिर्फ़ दो या तीन भूख से सताएं हुए मुसाफ़िरों को खाना नहीं खिला सकते थे उन्होंने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हम इस सोने के बदले सिर्फ़ 'बा'

के बदले 'ता' ख़रीदना चाहते हैं यानी कुछ इस तरह हो जाये जिसका मायने हो जाये वह उनके पास मेहमान नवाज़ी के लिए खाना लेकर आए इससे हमारी बस्ती वालों से मलामत और नदामत उठ जायेगी लेकिन रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने साफ़ इंकार कर दिया फ़रमाया कि यह कभी नहीं हो सकता कि अल्लाह तआला के कलाम में तग़य्युर व तबद्दुल किया जाये अगर एक नुक़्ता के बदलने से अल्लाह तआला क कलाम में तदबील लाज़िल आ रही हो तो यह रब तआला के कलाम में किज़्ब साबित करेगा इससे अहकामे इलाही पर ऐतबारी नहीं रहेगा रब तआला की रुबूबियत और अब्द की उबूदियत का बुतलान लाज़िम आयेगा।

उनका मुतालबा ही हक़ीक़त में हिमाक़त पर मबनी था यह कैसे मुमकिन था कि जिस कुरआन पाक की हिफ़ाज़त का ज़िम्मा ख़ुद रब तआला ने उठाया हो उसमें तबदीली कोई इंसान कर सके और ख़ास करके अल्लाह तआला के रसूल से उम्मीद करना और ही ज़्यादा अक़्ल से दूरी की अलामत है।

काश कि मूसा अलैहिस्सलाम सब्र करते : नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः

अल्लाह तआला हम पर और मूसा अलैहिस्सलाम पर रहम फ़रमाए अगर आप जल्दी न करते तो और अजीब वाक़यात देखते लेकिन आपने जो अपने साथी से वादा कर लिया था उसने आपको आ लिया। मूसा अलैहिस्सलाम ने कहा अगर मैं इसके बाद सवाल करूं तो तुम मेरे साथ न रहना-बेशक तुम्हें मेरी तरफ़ से उज़्र मिल गया।

उसी वादा के मुताबिक़ तीसरे सवाल के बाद दोनों के दर्मियान दूरी हो गयी।

हदीस पाक के अल्फ़ाज़े मुबारका वज़ाहत करते हुए अल्लामा नूवी फ़रमाते हैंः

इसी हदीस से उलेमा किराम ने यह मसला साबित कर दिया है कि दुआ में यानी इस क़िस्म के उख़रवी उमूर में इंसान अपना ज़िक्र पहले करे लेकिन दुनियावी मामलात में ईसार करना यानी अपने आप पर दूसरे को तरजीह देना और दूसरे को अपने आप पर मुक़द्दम रखना ही बेहतर है।

हज़रत ख़िज़्र अलैहिस्सलाम अपने कामों की वज़ाहत करते हैंः वह जो कश्ती थी वह कुछ मोहताजों की थी कि दरिया में काम करते थे तो मैंने चाहा कि उसे ऐबदार कर दूं और उनके पीछे एक बादशाह था कि हर साबित कश्ती ज़बरदस्ती छीन लेता।

आपने फ़रमाया कि कश्ती दस मिस्कीनों की है जिनमें कुछ अपाहिज भी हैं वह उसकी मज़दूरी से अपनी गुज़र औक़ात कर रहे हैं जब यह वापस लौटेंगे तो उनको एक काफ़िर बादशाह जुलन्दी का सामना करना पड़ेगा वह सही कश्तियों को पकड़ रहा है लेकिन ऐबदार को नहीं पकड़ता इसलिए मैंने इसे ऐबदार बनाने का फ़ैसला कर लिया है ताकि यह कश्ती वह न छीन सके और उनकी मेहनत मज़दूरी जारी रहे आपने कहा।

मैंने इरादा किया इसे ऐबदार बनाऊं।

यह नहीं कहा कि मैंने इसे ऐबदार कर दिया इसलिए कि ज़ाहिरन अगरचे ऐबदार हो गया था लेकिन दर हक़ीक़त उसे नफ़ा मंद बनाया गया था।

और वह लड़का था उसके मां–बाप मुसलमान थे तो हमें डर हुआ कि वह उन्हें सरकशी और कुफ़्र पर चढ़ा दे तो हमने चाहा कि इन दोनों का रब इससे बेहतर सुथरा और इससे ज़्यादा मेहरबानी में क़रीब अता करे।

हज़रत उबय इब्ने कअब कहते हैं कि रसूलुल्लाह सलल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया:
बेशक वह लड़का जिसे ख़िज़्र अलैहिस्सलाम ने क़त्ल किया उस पर काफ़िर होने की मोहर लगा दी गई थी कि अगर यह ज़िन्दा रहा तो अपने वालदैन को सरकशी और कुफ़्र की तरफ़ मजबूर कर देगा।

यानी बेशक अल्लाह तआला को मालूम था कि यह बड़ा होकर काफ़िर हो जायेगा अगरचे उसे बचपन में काफ़िर नहीं कहा जा सकता था।

रही वह दीवार, वह शहर के दो यतीम लड़कों की थी और उसके पीछे उनका ख़ज़ाना था और उसका बाप नेक आदमी था तो आपके रब ने चाहा कि वह दोनों अपनी जवानी को पहुंचे और अपना ख़ज़ाना निकाल लें आपके रब की रहमत से और यह कुछ मैंने अपने हुक्म से न किया यह वजूह हैं इन बातों की जिनपर आपसे सब्र न हो सका।

आयते करीमा में जो ज़िक्र किया गया है उनका बाप नेक आदमी था इससे पता चला कि वालदैन की नेकी से उनकी औलाद पर अल्लाह तआला की मेहरबानी होती है।

मुहम्मद बिन मुनकदिर फ़रमाते हैं बेशक अल्लाह तआला अपने नेक बंदे की नेकियों की वजह से उसकी औलाद और उसकी औलाद की औलाद और उसके क़बीला, और उसके इर्द गिर्द रहने वाले पड़ोसियों की हिफ़ाज़त करता है वह लोग जब तक उस नेक बंदे के पड़ोस में रहेंगे उस वक़्त तक अल्लाह तआला की हिफ़ाज़त में होंगे।

फ़ायदा : तीन वाक़ियात के मुताल्लिक़ हज़रत ख़िज़्र अलैहिस्सलाम ने जो तौजीहात पेश की हैं उनमें पहली तौजीह का ज़िक्र करते हुए फ़रमाया:

मैंने इरादा किया कश्ती को ऐबदार बनाऊं। दूसरी तौजीह में फ़रमाया।

हमने यह इरादा किया और तीसरी में फ़रमाया:

आपके रब ने यह इरादा फ़रमाया।

उस्लूबे ब्यान के इस फ़र्क की वजह क्या है? इसके मुताल्लिक़ मुख़्तसर गुज़ारिश यह है कि अगरचे ख़ैर व शर नफ़ा व ज़रर हर चीज़ का ख़ालिके हक़ीक़ी अल्लाह तआला है लेकिन अहले अदब व इरफ़ान का तरीक़ा यह है कि ख़ैर व नफ़ा का ज़िक्र करते हैं तो इसकी निसबत अल्लाह तआला की तरफ़ करते हैं और जब शर और ज़रर के ज़िक्र का मौक़ा आता है तो उसकी निस्बत अपनी तरफ़ करते हैं हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम का इरशाद है।

जब मैं बीमार होता हूं तो अल्लाह तआला ही मुझे शिफ़ा देता है।

बीमारी की इज़ाफ़त अपनी तरफ़ की और सेहत की अल्लाह की तरफ़ हालांकि बीमार करने वाला

भी वही है इसी तरह यहां कश्ती तोड़ने की वजह बताई तो "फ़ारदत" कह कर उसकी निस्बत अपनी तरफ़ की क्योंकि कश्ती तोड़ना बज़ाहिर मज़मूम नज़र आता था और जब दीवार दुरुस्त करने की बात आई तो उसकी निस्बत अल्लाह तआला की तरफ़ की, "फ़ा र द रब्बु क" क्योंकि वह फ़क़त ख़ैर ही है और क़त्ल गुलाम के दो पहलू थे ख़ैर इसलिए कि इसके वालदैन को नाफ़रमान बेटे के एवज़ में नेक औलाद दी जा रही थी और शर इसलिए कि बज़ाहिर एक बे गुनाह बच्चे को क़त्ल किया जा रहा था इसलिए फ़ारदना जमा का सीग़ा इस्तेमला किया ताकि ख़ैर के पहलू की निस्बत ज़ाते ख़ुदावंदी की तरफ़ हो जाये और शर का पहलू अपनी तरफ़ मंसूब कर दिया अल्लामा बदरुद्दीन ने इसी तौजीह को ज़्यादा पसंद फ़रमाया।

हज़रत ख़िज़्र अलैहिस्सलाम नबी थे या वली? : इस मसले में अहले इल्म के हर तरफ़ से दलाइल मौजूद हैं। कुछ हज़रात ने वली कहा और कुछ ने नबी कहा। मुहक़्क़ेक़ीन हज़रात इस तरफ़ हैं कि आप नबी थे इस मसले को ब्यान करते हुए मुफ़क्किरे इस्लाम मुफ़स्सिर कुरआन हज़रत पीर करम शाह साहब फ़रमाते हैं जम्हूर उलेमा का मज़हब है कि यह बंदा हज़रत ख़िज्र अलैहिस्सलाम हैं इनका नाम बलिय्या बिन मलकान है क्योंकि जहां यह तशरीफ़ फ़रमा होते वह जगह सर सब्ज़ हो जाती इसलिए ख़िज़्र अलैहिस्सलाम आपका लक़ब था और वह इसी लक़ब से मशहूर हो गये।

बाज़ उलेमा की यह राए है कि वह वली थे लेकिन अल्लामा पानी पती और दीगर उलेमा मुहक़्क़ेक़ीन की यह राए है कि वह नबी थे क्योंकि वली के इल्हाम से इल्म ज़न्नी (अक़्ली) हासिल होता है और इसमें ख़ता का एहतेमाल होता है इल्हाम की वजह से क़त्ल जैसे संगीन फ़ेअल का इर्तकाब जायज़ नहीं हो सकता इसलिए आपको नबी मानना पड़ेगा और नबी का इल्म यक़ीनी होता है।

आपको नबी मानने वालों के दलाइल : हमने उसे अपनी तरफ़ से रहमत अता की।

रहमत से मुराद इस मक़ाम में नबुव्वत ही है दूसरे मक़ाम पर रहमत बमायने नबुव्वत इस्तेमाल है जब काफ़िरों ने नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की नबुव्वत पर तब्सरा करते हुए कहा:

क्यों न उतारा गया कुरआन इन दो शहरों के किसी बड़े आदमी पर?

यानी मक्का और तायफ़ के किसी अमीर तरीन आदमी पर कुरआन उतरना चाहिये था तो उनके जवाब में रब तआला ने इरशाद फ़रमाया।

क्या तुम्हारे रब की रहमत वह बांटते हैं।

यहां रहमत से मुराद नबुव्वत है मौलाना नईमुद्दीन मुरादाबादी रहमतुल्लाह अलैहि अपनी तफ़सीर ख़ज़ाइनुल इरफ़ान में फ़रमाते हैं यानी क्या नबुव्वत की कुंजियां उनके हाथ में हैं कि जिस को चाहें दे दें। किस क़द्र जाहिलाना बात कहते हैं।

इरशादे रब्बानी है:

और उसे अपना इल्मे लदुन्नी अता किया।

इससे मालूम हुआ कि आपको अल्लाह तआला ने उस्ताज़ के वास्ते के बग़ैर और राहनुमाई करने

वाले की रहनुमाई के बग़ैर इल्म अता किया।

हर वह शख़्स जिसे अल्लाह तआला बग़ैर किसी इंसान के वास्ते से ऐसा इल्म अता फ़रमाये जो क़तई दर्जे का हो वह सिर्फ़ वही के ज़रिये ही अता होगा।

ख़्वाह वही जली हो या ख़फ़ी हो ऐसा शख़्स नबी ही हो सकता है क्योंकि वली का इल्म जो उसे इल्हाम के ज़रिये हासिल हो वह क़तई नहीं होता बल्कि ज़न्नी होता है।

मूसा अलैहिस्सलाम ने ख़िज़्र अलैहिस्सलाम की ख़िदमत में अर्ज़ कियाः

क्या मैं तुम्हारे साथ रहूं इस शर्त पर कि तुम मुझे सिखा दोगे नेक बात जो तुम्हें तालीम हुई।

नबी तालीम हासिल करने में ताबेदारी नहीं करता इससे पता चलता है कि आप नबी थे।

जब हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने हज़रत ख़िज़्र अलैहिस्सलाम को कहा कि आप मुझे अपने साथ रहने की इजाज़त दे दो उन्होंने अपनी रिफ़अत का मुज़ाहिरा करते हुए कहा।

और तुम कैसे सब्र करोगे इस बात पर जिसे आपका इल्म मुहीत नहीं। मूसा अलैहिस्सलाम ने तवाज़ो से जवाब दिया।

और मैं तुम्हारे किसी हुक्म के ख़िलाफ़ न करूंगा। इससे पता चला कि इल्मे लदुन्नी के लिहाज़ से मूसा अलैहिस्सलाम पर ख़िज़्र अलैहिस्सलाम को फ़ौक़ियत हासिल थी।

जो नबी न हो उसे नबी पर किसी क़िस्म की भी फ़ौक़ियत हासिल नहीं हो सकती।

ख़्याल रहे कि ख़िज़्र अलैहिस्सलाम को सिर्फ़ जुज़्वी फ़ज़ीलत यानी इल्मे लदुन्नी के लिहाज़ से, हासिल थी वरना मदारिज के लिहाज़ पर मूसा अलैहिस्सलाम को बरतरी हासिल है क़ाज़ी सनाउल्लाह पानी पती तहरीर फ़रमाते हैं।

यह आयत दलालत कर रही है कि कभी कम दर्जा वाले शख़्स को ज़्यादा/दर्जा वाले पर जुज़्वी फ़ज़ीलत हासिल हो जाती है और यह बत भी वाज़ेह हो रही है कि ज़्यादा मर्तबा वाले को चाहिये कि कम मर्तबा वाले से वह फ़ज़्ल व कमाल हासिल करे जो उसे हासिल है।

इल्मे लदुन्नी क्या है? इमाम राज़ी फ़रमाते हैः

सूफ़िया किराम ने उन उलूम का नाम लदुन्नी रखा जो कश्फ़ के ज़रिये हासिल होते हैं।

यानी सिर्फ़ अल्लाह तआला की अता से हासिल होते हैं इनमें इंसान के कस्ब को दख़ल नहीं।

हज़रत ख़िज़्र अलैहिस्सलाम ने अपने अफ़आल की तफ़सील ब्यान करने के बाद फ़रमाया। मैंने अपने हुक्म से कुछ न किया। यानी मैंने यह तमाम काम अपनी राए और अपने इज्तेहाद से नहीं किये।

बल्कि मैंने यह तमाम काम अल्लाह तआला के हुक्म और उसकी वही से किये हैं।

इसलिए कि लोगों के माल नुक़सान करना और किसी को क़त्ल करना बग़ैर वही और क़तई नस के कभी जायज़ नहीं हो सकता। इससे वाज़ेह हुआ कि जब आपकी तरफ़ वही आती थी तो आप नबी थे।

मूसा अलैहिस्सलाम की जब इब्तेदाई मुलक़ात आपसे हुई तो मूसा अलैहिस्सलाम ने कहा।

अस्सलामु अलैकुम। आपने जवाब दिया।

वालेकुम अस्सलाम या नबी बनी इस्राईल। ऐ बनी इस्राईल के नबी तुम पर भी सलाम हो।

मूसा अलैहिस्सलाम ने कहा "मन अरफ़का"

तुम्हें किसने बताया कि मैं बनी इस्राईल का बनी हूं आपने कहा।

उसी ज़ात ने बताया जिसने तुम्हें मेरे पास भेजा है।

इससे पता चला कि आपने मूसा अलैहिस्सलाम को वही के ज़रिये पहचाना वही सिर्फ़ नबी के पास ही आती है इस तरह आपका नबी होना वाज़ेह हुआ।

ख़्याल रहे कि अल्लामा राज़ी ने उनके जवाबात भी नक़्ल किये हैं लेकिन राक़िम चूंकि आपकी नबुव्वत का क़ायल है इसलिए इन दलाइल पर इक्तेफ़ा कर रहा है जो हज़रात आपकी विलायत के क़ायल हैं नबुव्वत के नहीं। वह कबीर और रूहुल मआनी का तफ़सीली मुताला करें।

क्या हज़रत ख़िज़्र अलैहिस्लसाम ज़िन्दा हैं? : इसके मुताल्लिक़ पीर करम शाह साहब तहरीर फ़रमाते हैं रही बात यह कि ख़िज़्र अलैहिस्सलाम अब ज़िन्दा हैं या वफ़ात पा चुके हैं इसमें उलेमा के दो गरोह हैं और इन दोनों गरोहों ने अपने अपने मौक़िफ़ को सच्चा साबित करने के लिए दलाइल के अंबार लगा दिये हैं। अल्लामा आलूसी ने अपनी तफ़सीर में इन दलाइल को बड़ी शरह व बस्त के साथ ब्यान किया है लेकिन मुतअद्दिद सफ़हात पर फैली हुई इस बहस का मुताला करने के बावजूद तसकीन नहीं हुई और इंसान किसी ऐसे नतीजे पर नहीं पहुंचता जिससे दिल मुतमईन हो। अल्लाह तआला आरिफ़ बिल्लाह क़ाज़ी सनाउल्लाह पानी पती के मज़ार को अपने अनवार का महबित बनाए। उन्होंने इस सिलसिले में ऐसी बात रक़म की है ज़िससे दलाइल का तज़ाद भी रफ़ा हो जाता है। और इंसान के दिल में एक इत्मीनान भी पैदा हो जाता है मेरे ख़्याल में यहां फ़रीक़ैन के दलाइल का नक़्ल करना तवालत का बाइस होगा सिर्फ़ तफ़सीर मज़हरी की वह इबारत लिख देना काफ़ी है। मुझे उम्मीद है कि उनकी तहक़ीक़ से जिस तरह मेरी तशवीश दूर हुई इसके मुताले से आपकी परेशानी भी ख़त्म हो जायेगी। फ़रीक़ैन के दलाइल नक़्ल करने के बाद लिखते हैं कि इस अशकाल का हल हज़रत मुजद्दिद अल्फ़े सानी के कलाम के बग़ैर ना मुमकिन है हज़रत मुजद्दिद से हज़रत ख़िज़्र अलैहिस्सलाम के मुताल्लिक़ पूछा गया कि वह ज़िन्दा हैं या वफ़ात पा गये हैं तो वह बारगाहे इलाही में हक़ीक़ते हाल के इंकिशाफ़ के लिए मुतावज्जेह हुए।

तो हज़रत मुजद्दिद अल्फ़े सानी ने देखा कि हज़रत ख़िज्र अलैहिस्सलाम उनके पास खड़े हैं आपने उनसे उनकी हक़ीक़ते हाल दर्याफ़्त की तो उन्होंने फ़रमाया कि मैं और इल्यास ज़िन्दों में से नहीं लेकिन अल्लाह ने हमारी रूहों को ऐसी कुव्वत बख़्शी है जिससे हम मुजस्सम होते हैं और ज़िन्दों के से काम करते हैं मसलन जब अल्लाह तआला चाहे तो हम गुमराह की रहनुमाई करते हैं और मुसीबत ज़दा की मदद करते हैं। इल्मे लदुन्नी की तालीम देते हैं और जिसके मुताल्लिक़ अल्लाह तआला का इरादा

हो उसे रूहानी निस्बत\मरहमत करते हैं, हमें औलिया अल्लाह में से जो कुतुबे मदार होता है उसका मुआविन व मददगार बनाया गया है अल्लाह तआला ने उसे मदारे आलम बनाया है और उसकी बर्कत व फ़ैज़ से दुनिया की बक़ा है। आज कल यमन के एक बुजुर्ग कुतुबे मदार हैं जो शाफ़ई अल मज़हब हैं हम उनके साथ शाफ़ई मज़हब के मुताबिक़ नमाज़ अदा करते हैं इस कश्फ़ सही से मुख़्तलिफ़ अक़वाल का तज़ाद और अशकाल दूर हो गया सब तारीफ़ें अल्लाह तआला के लिए जो कबीर व मतआल है।

फ़ायदा : मूसा अलैहिस्सलाम बावजूद इसके कि कसीर उलूम व आमाल के मालिक थे और आपका मनसब भी बुलंद था आपके हक़ में कामिल शराफ़त के असबाब मुजतमअ थे लेकिन फिर भी आप ख़िज़्र अलैहिस्सलाम के पास इल्म हासिल करने के लिए गये और उनके सामने तवाजो इख़्तेयार किया।

यहां से पता चला तवाजो तकब्बुर से बेहतर है यानी इंसान तवाज़ो से ही आला मक़ाम हासिल कर सकता है। मुतअल्लिम दो क़िस्म के होते हैं एक वह जो कुछ भी नहीं जानता उसको बहसें करने क़ील व क़ाल का कोई तजर्बा नहीं तक़रीर को लौटा नहीं सकता एतेराज़ करने की सलाहियत नहीं रखता। दूसरा मुतअल्लिम वह है उसे पहले ही क़सीर उलूम हासिल होते हैं। इस्तिदलाल और एतेराज़ करने का उसे तजर्बा हासिल होता है लेकिन फिर भी वह चाहता है कि किसी कामिल इंसान से मिलकर इल्म में और दर्जाए कमाल हासिल करे ऐसे शख़्स का इल्म हासिल करना बहुत मुश्किल है इसलिए कि वह जब किसी चीज़ को देखेगा कोई कलाम सुनेगा तो बसा औक़ात ज़ाहिर तौर पर उसे वह काम या बात दुरुस्त नज़र नहीं आयेगी तो वह एतेराज़ करेगा क़ील व क़ाल करेगा उसमें झगड़ करेगा क्योंकि वह हक़ीक़ते हाल से बे ख़बर होगा हालांकि हक़ीक़त में वही कलाम दुरुस्त होगा ऐसे मुतअल्लिम के मुजादिला से उस्ताज़ जो इल्म में कमाल दर्जा रखता है मुतनफ़्फ़िर हो जाता है दो तीन मर्तबा बर्दाश्त करने के बाद उसे कहता है आप चले जायें मैं तुम्हें नहीं पढ़ा सकता तुम पहले ही ज़्यादा इल्म रखते हो।

मुतअल्लिम वही बेहतर है जो उस्ताज़ पर एतेराज़ बराए एतेराज़ न करे अपनी बरतरी साबित करने की कोशिश न करे। मनसबे तदरीस पर फ़ायज़ हमने उन्हें ही देखा जो बा अदब थे, न्याज़मंद थे, मुतवाज़े थे बे अदब गुस्ताख़ और बे वफ़ाओं ने अगर दुनिया का माल व दौलत हालिस किया भी हो तो उस्ताज़ की नाराज़गी का तौक़ उनके गले में पड़कर उनकी ज़िल्लत का सबब बना। कई ऐसे थे जिन्हें हम समझते थे कि यह उस्ताज़ बनकर दीन व दुनिया में कामयाब व कामरान होंगे लेकिन ऐसा न हो सका क्योंकि उनकी बद तीनती ने उन्हें मक़ामे ज़िल्लत पर पहुंचा दिया। यही हाल मुरीद का है कि वह अपने शैख़ के अदब व एहेतराम का लिहाज़ करे। क़ाज़ी सनाउल्लाह पानी पती तफ़सीरे मज़हरी में ज़िक्र करते हैं:

इस आयत से वाज़ेह होता है कि मुरीद के लिए ज़रूरी है कि वह अपने शैख़ पर एतेराज़ करना छोड़ दे मूसा अलैहिस्सलाम ने जब ख़िज़्र अलैहिस्सलाम से इल्म हासिल करना चाहा तो अदब व एहतेराम और न्याज़मंदी का बहुत ही पास किया।

आपने अपने आप को उनका ताबे बनाते हुए यूं अर्ज़ किया क्या मैं आप का ताबे हो जाऊं इस ताबेदारी पर क़ायम रहने की इजाज़त तलब करते हैं गोया आपने यूं कहा।

क्या आप मुझे इजाज़त देते हैं कि मैं ख़ुद को आपका ताबे रखूं।

इसमें आपने बहुत बड़ी आजिज़ी का इज़हार किया आपने "मुझे इल्म सिखायें" कह कर गोया इक़रार किया कि जो इल्मे लदुन्नी आपको हासिल है वह मुझे हासिल नहीं यह भी अदब का एक तरीक़ा है।

और आपने कहा:

आपको जो इल्म दिया गया उससे कुछ बता दें।

इसमें मक़सद यह था कि मैं यह नहीं कहता कि आप मुझे तमाम उलूम अता कर दें कि मैं आपके बराबर हो जाऊं बल्कि मैं तो आपसे कुछ उलूम हासिल करना चाहता हूं, जिस तरह फ़क़ीर ग़नी से कुछ माल तलब करता है उस तरह का सवाल मूसा अलैहिस्सलाम ने करके आजिज़ी का आला मैयार क़ायम किया।

"मिम्मा अलिमतु" कहकर एतेराफ़ किया कि आपको अल्लाह तआला ने इल्मे लदुन्नी अता किया है मैं उसे तसलीम करता हूं।

कहा नेक बात यानी आपको जो नेक बात अता हुई वह मुझे सिखा दें।

इसमें ख़िज़्र अलैहिस्सलाम के नेकी के राह पर होने का एतेराफ़ है और अपना रुश्द व हिदायत तलब करने का इज़हार है।

कहा अल्लाह तआला ने जो इल्म आपको अता किया है वह मुझे आप सिखा दें।

यह कहकर गोया यह मुतालबा किया गया है कि आप मेरे साथ वह मामला फ़रमायें जो अल्लाह तआला ने आपसे मामला किया है यानी आप का मुझ पर ऐसा एहसान होगा जैसा रब तआला का आप पर एहसान है इसी लिए उस्ताज़ के एहसान का एतेराफ़ करने वाले किसी बुज़ुर्ग ने कहा है।

मैंने जिस से एक हर्फ़ भी हासिल किया मैं उस का बंदा हूं।

मुताबेअत का मतलब यह है कि कोई काम ग़ैर की तरह करना सिर्फ़ इस लिहाज़ पर कि यह काम फ़लां ने किया है मुझे भी इसकी ताबेदारी की वजह से करना है ख़ुद इंसान के पास इस काम के करने की कोई दलील न हो। हम ला इला हा इल्लल्लाह कहते हैं और यहूद भी यही कलिमा कहते हैं लेकिन हम उनके मुत्तबेअ नहीं क्योंकि हमारे पास इसकी दलील मौजूद है कि हमारे नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हमें फ़रमाया है कि अल्लाह तआला के बग़ैर कोई इबादत के लायक़ नहीं और हमारा पांच नमाज़ें अदा करना बनी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की इत्तेबा है क्योंकि आपके अफ़आल व अक़वाल के बग़ैर हमारे पास और कोई दलील नहीं। मूसा अलैहिस्सलाम ने ख़िज़्र अलैहिस्सलाम से ताबेदारी करने की इजाज़त तलब की यानी मैं आपके अफ़आल को देखकर अक़वाल को सुनकर ही आपकी ताबेदारी करूंगा। मुझे किसी और दलील की ज़रूरत पेश नहीं आयेगी इस मसले से वाज़ेह हुआ कि :

बेशक मुतअल्लिम के लिए ज़रूरी है कि इब्तेदाई तौर पर ही उस्ताज़ की बात तस्लीम करे और झगड़ा करना और एतेराज़ करना तर्क कर दे।

समझने के लिए पूछना दुरुस्त है उस्ताज़ ने तवज्जोह न देने की वजह से दुरुस्त न ब्यान किया हो तो मुस्तहसन तौर पर अलग से वह मसला दोबारा पूछ लिया जाये।

मूसा अलैहिस्सलाम ने यह कहकर कहा कि मैं तमाम उमूर में आपकी ताबेदारी करूंगा आप ने यह नहीं कहा कि मैं कुछ बातों में ताबेदारी करूंगा।

जब रिवायात से यह वाज़ेह है कि हज़रत ख़िज़्र अलैहिस्सलाम को पहले ही मालूम हो चुका था कि मूसा अलैहिस्सलाम बनी इस्राईल के नबी हैं साहबे तौरात हैं रब तआला ने आपसे बिला वास्ता कलाम करके आपको खुसूसियत से नवाज़ा है आपको अज़ीमुश्शान मोजिज़ात अता किये गये हैं फिर मूसा अलैहिस्सलाम का बुलंदबाला मनसब रखने के बावजूद और बुलंद दर्जात हासिल होते हुए इतनी बड़ी तवाज़ो करना इस बात पर दलालत कर रहा है कि आप इल्म हासिल करने में कितनी अज़ीम कोशिश फ़रमा रहे हैं और यह आपकी शान के लायक़ भी था क्योंकि जितना इल्म ज़्यादा होगा उसी क़दर चेहरे पर इल्म की नूरानियत और सआदत ज़्यादा हासिल होगी और वह शख़्स और ज़्यादा इल्म हासिल करने में शदीद कोशिश करेगा।

वह शख़्स इल्म वालों की कामिल तौर पर ज़्यादा से ज़्यादा ताज़ीम करेगा।

मूसा अलैहिस्सलाम ने कहा

क्या मैं आपकी ताबेदारी करूं इस शर्त पर कि आप मुझे इल्म सिखा दें?

आपने ताबेदारी, ख़िदमत गुज़ारी का ज़िक्र पहले किया और इल्म हासिल करने का बाद में।

इससे वाज़ेह हुआ कि मुतअल्लिम पहले उस्ताज़ की ख़िदमत को शआर बनाये फिर हुसूले तालीम को मद्दे नज़र रखे।

वह तालिबे इल्म बद बख़्त है जो उस्ताज़ की ख़िदमत को बुराई समझता हो या उस्ताज़ के बताए हुए काम न करे और टाल मटोल से काम ले।

ताहम उस्ताज़ के लिए भी ज़रूरी है कि हुस्न अख़लाक़ से तलबा को अपने क़रीब करे, आदमख़ोर के क़रीब होने वाले भी दूर हो जाते हैं इसी तरह उस्ताज़ के लिये यह भी ज़रूरी है कि वह अपने ख़िदमत गुज़ार की तालीम की तरफ़ ज़्यादा से ज़्यादा तवज्जोह दे। ऐसा उस्ताज़ जो सिर्फ़ अपने कामों को तरजीह दे, अपने ख़िदमत करने वाले की तालीम का नुक़्सान करे वह उस तालिबे इल्म का दर हक़ीक़त दुश्मन तो हो सकता है मुहसिन नहीं। ख़िदमत गुज़ार पर एहसान यही है कि उसकी तालीम में जो काम नुक़्सान का सबब बन रहे हों उन पर सख़्ती से मना करे। अच्छा सबक़ याद करने पर शफ़क़त करे, शफ़क़त से ही अपनी औलाद की तरह उससे मुहब्बत रखे।

ऐसा उस्ताज़ कभी तलबा का मोहसिन नहीं हो सकता जो लताइफ़ क़िस्से कहानियां सुनाकर वक़्त की बर्बादी का सबब बने और किताब न पढ़ाए और ऐसा उस्ताज़ भी तलबा का मोहसिन नहीं जो अपना सबक़ मुकम्मल करके किसी को काम पर लगाए और दूसरे उस्ताज़ की हक़ तलफ़ी करे, या सबक़ मुकम्मल करने के बाद किस्से कहानियां शुरू कर दे और दूसरों का हक़ ज़ाया करके जुल्म का मुरतकिब हो।

फ़ारिग़ होने के बाद यक़ीनन तलबा को एहसास होता है कि कौन सा उस्ताज़ हमारे औक़ात ज़ाया

करता रहा और किस उस्ताज़ ने हमें पढ़ाने की तरफ़ तज्जोह दी थी? काश यह बात तलबा को दौराने तालीम ही पता चल जाये।

मूसा अलैहिस्सलाम ने ख़िज़्र अलैहिस्सलाम से ताबेदारी करने के एवज़ माल व दौलत या कुछ मर्तबा नहीं तलब किया बल्कि सिर्फ़ तहसीले इल्म का मुतालबा किया।

वह तलबा दरहक़ीक़त अहमक़ हुआ करते हैं जो उस्ताज़ के क़ुर्ब की वजह से दूसरे तलबा की शिकायतें लगाते रहते हैं दूसरे तलबा को नुक़सान पहुंचाने का कोई मौक़ा हाथ से जाने नहीं देते।

ऐ दीन के मुअल्लिमीन! ख़ुदारा इंसाफ़ से बतायें कि जासूस मुक़र्रर करना कौन सी शरीअत में जायज़ है? कभी उस्ताज़ पर जासूस मुक़र्रर करना, कभी तलबा पर, यह इंसाफ़ से बईद है आज का उस्ताज़ कल अपनी तालिब इल्मी को देखे जो उस्ताद अपना माज़ी भूल जाये कमीनी हरकात का मुरतकिब वही हो सकता है।

ऐ आज के आदम ख़ोर उस्ताद! तू ज़रा अपने माज़ी को झांक कर देख तू कितना लायक़ था? कितना फ़रिश्ता सीरत था? क्या तूने कोई ग़लती नहीं की? क्या तुझसे कोई तसाहुल नही हुआ? क्या तुझसे कोई भूल नहीं हुई?

जब तू भी आज के तलबा की तरह ही था तो आज बेहूदा बकवास क्यों कर रहा है? आज तू डंडे क्यों बरसा रहा है? आज तू इंसानों को गधा क्यों समझ रहा है? क्या तेरा उस्ताद भी तेरी तरह बेहूदा था? जैसा तू है ज़रा ग़ौर तो कर! ज़रा सोच, इंसानियत क्या है?

मूसा अलैहिस्सलाम का इंतेक़ाल : हज़रत अबू हुरैरा से मरवी है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया मलकुल मौत (इज़्राईल फ़रिश्ता) को हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की तरफ़ भेजा गया जब वह आपके पास आया तो आपने थप्पड़ मारकर उसकी आंख निकाल दी।

दूसरी रिवायत में इस तरह है कि मलकुल मौत मूसा अलैहिस्सलाम के पास आया और कहा कि अपने रब तआला का हुक्म क़बूल करो तो आपने उसे थप्पड़ रसीद कर दिया जिससे उसकी आंख ज़ाया हो गई इज़्राईल वापस अल्लाह तआला के पास हाज़िर हुआ अर्ज़ की:

मुझे तूने ऐसे बंदे की तरफ़ भेजा है जो मरना ही नहीं चाहता।

अल्लाह तआला ने इज़्राईल को आंख फिर अता कर दी यानी नज़र फिर लौटा दी और फ़रमाया जाओ मेरे बंदे के पास उसे कहो कि अपना हाथ बैल की पीठ पर रखे, हाथ के नीचे जितने बाल आयेंगे उम्र उतने साल बढ़ा दूंगा। आपने अर्ज़ की कि ऐ मेरे रब फिर क्या होगा? रब तआला ने फ़रमाया फिर मौत आ जायेगी आपने अर्ज़ की कि मौत अभी आ जाये। साथ यह सवाल किया कि मेरे रब मुझे बैतुल मुक़द्दस की सर ज़मीन पर पहुंचा देना हुज़ूर नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया ऐ मेरे सहाबा अगर मैं चाहूं तो तुम्हें सुर्ख़ रेत के टीलों के पास रास्ते की एक जानिब आपकी क़ब्र अब भी दिखा सकता हूं।

फ़ायदा : हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने बैतुल मुक़द्दस में दफ़न होने की ख़्वाहिश इसलिए की कि वह मक़ामे अंबियाए किराम अलैहिमुस्सलाम के दफ़न होने की वजह से मुशर्रफ़ था आपकी दुआ से वाज़ेह हुआ कि फ़ज़ीलत वाले मक़ाम में सालेहीन के कुर्ब व जवार में दफ़न होना मुस्तहब है।

नेक लोगों के क़रीब मुतबर्रक मक़ामात में किसी को दफ़न करना अमरे मुस्तहब है।

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने सरवरे आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ रौज़ा मुतह्हरा में दफ़न होने की ख़्वाहिश की और हज़रत आइशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु अन्हा ने ईसार फ़रमाते हुए इजाज़त दी, इस पर फ़तहुल बारी शरह बुख़ारी में है कि इस हदीस पाक से मालूम हो रहा है कि नेक लोगों के क़रीब दफ़न होने की तमन्ना पाई जाए इस ख़्याल के पेशे नज़र कि इन पर जब रहमत का नुज़ूल होगा मुझे भी इससे फ़ायदा होगा नेक लोग जब उनकी ज़्यारत को आयेंगे और उनके लिए दुआ करेंगे तो इस दुआ का फ़ायदा मुझे भी होगा।

तंबीह : मुस्लिम शरीफ़ की हदीस पाक से रोज़े रौशन की तरह अयां हुआ कि इज़्राईल अलैहिस्सलाम को अंबियाए किराम अलैहिमस्सलाम पर कोई तसल्लुत नहीं बाज़ अंबियाए किराम अलैहिमस्सलाम ने हुक्म बारी को क़बूल करते हुए इब्तेदा ही में इज़्राईल अलैहिस्सलाम को ख़ुश आमदीद कहा। बाज़ अंबियाए किराम अलैहिमस्सलाम ने इज़्राईल अलैहिस्सलाम को अपने पास बिला इजाज़त आने पर तंबीह की और बताया कि इज़्राईल को इन पर कोई तसल्लुत हासिल नहीं फिर अल्लाह तआला के पास जाने को भी तरजीह दी। उम्र की मोहलत मिलने के बावजूद क़बूल नहीं फ़रमाई तो वाज़ेह हुआ कि इनका मनशा उम्र का हुसूल नहीं होता बल्कि शान अंबियाए किराम अलैहिमस्सलाम को अवामुन्नास पर वाज़ेह करना मक़सदे अज़ीम होता है।

फ़ायदा जलीला : हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा से मंकूल है कि हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की वफ़ात के दिन अल्लाह तआला ने मलकुल मौत को हुक्म फ़रमाया कि ज़मीन पर मेरे हबीब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के हुज़ूर हाज़िर हो ख़बरदार बग़ैर इजाज़त के हाज़िर न होना बग़ैर इजाज़त के रूह क़ब्ज़ न करना तो इज़्राईल ने दरवाज़े के बाहर आराबी की सूरत में खड़े होकर अर्ज़ की।

ऐ मअदिने रिसालत, मलाइका के मक़ामे आदम व रफ़्त अहले बयत नबुव्वत पर सलाम हो।

मुझे इजाज़त दीजिये ताकि मैं दाख़िल हूं तुम पर ख़ुदा की रहमत हो। उस वक़्त सय्यदा फ़ातिमा ज़हरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सरहाने मौजूद थीं उन्होंने जवाब दिया कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अपने हाल में मशगूल हैं इस वक़्त मुलाक़ात नहीं फ़रमा सकते।

दूसरी मर्तबा फिर इजाज़त तलब की यही जवाब मिला, तीसरी मर्तबा इजाज़त तलब की और बा-आवाज़ बुलंद इजाज़त तलब की। चुनांचे जितने साहेबान घर में मौजूद थे इस आवाज़ की हैबत से उन पर लरज़ा तारी हो गया। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम होश में आए और आंख मुबारक खोल कर फ़रमाया क्या बात है? सूरते हालत आपकी ख़िदमत में अर्ज़ की गई आपने फ़रमाया ऐ फ़ातिमा

तुम्हें मालूम है यह कौन हैं? यह लज़्ज़तों को तोड़ने वाला ख़्वाहिश और तमन्नाओं को कुचलने वाला। इज्तेमाई जमाअतों को तोड़ने वाला, बीवियों को बेवा करने वाला और बच्चों बच्चियों को यतीम करने वाला है।

मूसा अलैहिस्सलाम का क़ब्र में नमाज़ अदा करना : हज़रत सुलेमान तैमी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु रिवायत करते हैं कि मैंने हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु को कहते हुए सुना कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया:

मेरा गुज़र मूसा अलैहिस्सलाम की क़ब्र से हुआ तो अपनी क़ब्र में नमाज़ अदा कर रहे थे एक और रिवायत में है कि

मेराज की रात मेरा गुज़र मूसा अलैहिस्सलाम से हुआ।

और एक रिवायत में नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया मैंने मूसा अलैहिस्सलाम को नमाज़ पढ़ते हुए देखा ईसा अलैहिस्सलाम को नमाज़ पढ़ते हुए देखा इब्राहीम अलैहिस्सलाम को नमाज़ पढ़ते हुए देखा।

ख़्याल रहे कि मूसा अलैहिस्सलाम को क़ब्र में नमाज़ पढ़ते हुए भी देखा फिर बैतुल मुकद्दस में अपने साथ नमाज़ पढ़ते हुए भी देखा फिर आसमानों पर आपको मरहबा कहते हुए भी देखा। इस की दो वजह हो सकती हैं एक यह कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम बुर्राक़ की रफ़्तार से सफ़र कर रहे थे हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम बग़ैर किसी सवारी के अपनी शाने नबुव्वत से चल रहे थे इसलिए आप नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से पहले बैतुल मुक़द्दस और आसमानों पर पहुंच गये यानी रफ़्तारे नबुव्वत बुर्राक़ की रफ़्तार से बढ़कर है।

दूसरी वजह यह हो सकती है कि मूसा अलैहिस्सलाम एक वक़्त में क़ब्र में भर तशरीफ़ फ़रमा हों और बैतुल मुक़द्दस में भी और आसमानों में भी।

कुल्लो नफ़्सुन ज़ायकतुल मौत

तज़किरए अस्लाफ़े किराम

रहमतुल्लाह अलैहिम अजमाईन

आह मेरे वालिद मरहूम के चचाज़ाद भाई : मेरे परदादा क़ाज़ी गुलाम नबी रहमतुल्लाह अलैहि के चार पोतों में से तीन का पहले विसाल हो चुका था आख़िरी बुज़ुर्ग मौलाना अब्दुल ख़ालिक़ साहब भतरावली जो मेरे वालिद मुकर्रम के चचाज़ाद भाई थे आज बरोज़ १३ अगस्त १९९६ बमुताबिक़ २७ रबीउल अव्वल १४१७ हि. को विसाल फ़रमाये गये।

मरहूम बड़ी ख़ूबियों के मालिक थे, हर छोटे बड़े से शफ़क़त फ़रमाते थे अपने बेगाने में तमीज़ कम ही करते थे जब किसी से सलाम करते तो मुसाफ़ह करते वक़्त सुन्नते मुस्तफ़ा अलैहिस्सलातु वस्सलाम के मुताबिक़ आप अपना हाथ पहले नहीं छुड़ाया करते थे।

कुछ इसी तरह का हुस्ने सलूक़ आपका फ़ौत शुदा हज़रात से भी हुआ करता। नमाज़ जनाज़ा के बाद आप बड़े एहतेमाम से दुआ करते, एक मर्तबा सूरः फ़ातेहा और तीन मर्तबा सूरः इख़लास सब लोगों को पढ़ने के लिए कहते और फिर दुआ फ़रमाते जब किसी के घर फ़ातेहा ख़्वानी के लिए जाते तो उसी मुहब्बते ख़ुलूस से हाथ उठाकर दुआ करते, सब्र व तहम्मुल की तलक़ीन फ़रमाते।

एक दफ़ा अपने गांव के क़रीब जूध नामी गांव के मलिक अशरफ़ साहब के इंतेक़ाल पर मुझे भी फ़ातेहा ख़्वानी में साथ ले गये हालांकि मैं जनाज़ा पहले पढ़ आया था आप रावलपिंडी से दो तीन दिन बाद पहुंचे थे मुहम्मद अशरफ़ साहब का चूंकि जवानी में इंतेक़ाल हुआ था, पसमांदगान बहुत ज़्यादा ग़मज़दा थे आपने वहां इरशाद फ़रमाया।

मौत का वक़्त और जगह मुक़र्रर है रब का अपना निज़ाम है इसलिए यही समझा जायेगा कि जब कोई शख़्स अपनी चीज़ किसी को नफ़ा उठाने के लिए दे फिर वापस ले ले तो मांगने वाले को कुछ कहने का हक़ नहीं।

साथ यह वाक़िया भी ब्यान फ़रमायाः

इब्ने अबी शैबा ने हज़रत ख़ुसैमा से रिवायत किया कि एक मर्तबा मलकुल मौत (इज़्राईल अलैहिस्सलाम) हज़रत सुलेमान अलैहिस्सलाम की बारगाह में आए और उनके साथियों में से एक को बहुत घूरकर देखने लगे जब आप चले गये तो उस शख़्स ने सुलेमान अलैहिस्सलाम से दर्याफ़्त किया कि यह शख़्स कौन था? आपने फ़रमाया यह मलकुल मौत थे उसने अर्ज़ किया कि आप हवा को हुक्म दें कि वह मुझे सरज़मीने हिंद में पहुंचा दे आपने हवा को हुक्म दिया तो हवा उस शख़्स को सरज़मीने हिंद में छोड़ आई फिर मलेकुल मौत तश्रीफ़ लाये तो हज़रत सुलेमान अलैहिस्सलाम ने उनसे दर्याफ़्त किया कि तुम मेरे एक साथी को घूर कर क्यों देख रहे थे? उन्होंने अर्ज़ किया कि मैं इस पर ताज्जुब कर रहा था कि मुझे हुक्म दिया गया है कि इसकी रूह हिंद में क़ब्ज़ करूं और यह आपके पास बैठा है कैसे हिंद पहुचेगा।

मेरे गांव के एक दोस्त मुहम्मद हनीफ़ मरहूम के वालिद मुहम्मद हयात दरज़ी के जनाज़ा पर चचा मरहूम तश्रीफ़ ले गये जनाज़ा की नमाज़ आप ही ने पढ़ाई (यह जनाज़ा बकरा मंडी रावलपिंडी के

क़ब्रस्तान में पढ़ाया गया था) फौत होने वाले मरहूम चूंकि नमाज़ी, मुत्तक़ी और परहेज़गार थे तो आपने ब्यान फ़रमाया कि हज़रत बिलाल रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की वफ़ात का वक़्त क़रीब हुआ तो आपकी ज़ौजा ने आपको क़रीबुल मौत देख कर परेशानी के आलम में कहा कितना ही अफ़सोस है कि आप दुनिया से तशरीफ़ ले जा रहे हैं लेकिन हज़रत बिलाल रज़ियल्लाहु अन्हु ने यह सुनकर ख़ूब कहा कितनी ही खुशी का मक़ाम है कि मैं इस दुनिया से जा रहा हूं अपने मेहरबान दोस्तों से मुलाक़ात होगी यानी हबीब पाक सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और आपके सहाबा किराम से मुलाक़ात होगी। हज़रत बिलाल रज़ियल्लाहु अन्हु का भी अपनी मौत पर खुश होना सिर्फ़ इसी वजह से था कि रूहों की मुलाक़ात होती है मेरी मुलाक़ात नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और सहाबा किराम से होगी यह मेरे लिए कितनी ख़ुशी का मक़ाम होगा।

हज़रत मुहम्मद बिन मुनकदिर (मशहूर ताबई) से मरवी है

कि मैं हज़रत जाबर बिन अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हुमा के पास उनकी वफ़ात के वक़्त के क़रीब हाज़िर हुआ तो मैंने उन्हें कहा कि आप रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास मेरा सलाम पेश करना।

इस हदीस को नक़्ल करते हुए मुल्ला अली क़ारी रहमुतल्लाह अलैहि फ़रमाते हैं कि अल्लामा सियूती रहमतुल्लाह अलैहि ने फ़रमाया कि अल्लामा मुहम्मद इस्माईल बुख़ारी रहमतुल्लाह अलैहि ने हज़रत ख़ालिदा बिन अब्दुल्लाह बिन अनीस से हदीस ब्यान फ़रमाई कि उम्मे अनीस बिन्त अबी क़तादा रज़ियल्लाहु अन्हा अपने बाप की वफ़ात के पंद्रह दिन बाद हज़रत अब्दुल्लाह बिन अनीस रज़ियल्लाहु अन्हु के पास हाज़िर होती हैं जब कि वह मुर्ज़ल मौत में थे तो उन्होंने कहा कि ऐ मेरे चचा मेरा सलाम मेरे बाप की ख़िदमत में पेश करना।

(राक़िम की वज़ाहत) चचा मरहूम के जनाज़ा में हज़ारों लोग शरीक थे और जब आपके जनाज़ा को उठाया गया तो बुलंद आवाज़ से ख़ूबसूरत अंदाज़ में कलिमा शरीफ़ पढाया जा रहा था, कलिमा की गूंज में जनाज़ा गाह तक आपको पहुंचाया गया, जनाज़ा के बाद बड़े बुलंद आवाज़ से दुआ की गई मरहूम के अख़लाक़े करीमा की वजह से अपने तो अपने थे ग़ैरों को भी रोते हुए देखा गया अल्लाह तआला आपकी क़ब्र पर हज़ारों रहमतें नाज़िल फ़रमाए, जन्नतुल फ़िरदौस में आला मक़ाम अता फ़रमाये आमीन।

यह चंद अलफ़ाज़ मैंने चचा मरहूम के हुज़ूर ख़िराजे अक़ीदत पेश करते हुए तहरीर किए हैं और इसलिए भी कि मेरी औलाद और आने वाली नस्ल को मालूम हो जाए कि हमारे ख़ानदान के बुजुर्गों का तरीक़ए कार क्या था और मरहूम के बेटों को भी शायद इन अल्फ़ाज़ से सोचने समझने का मौक़ा मिल जाये कि हमारे वालिद मुकर्रम का तरीक़ए कार क्या था? आपके एक बेटे को जनाज़ा के बाद दुआ न करते हुए देखकर अफ़सोस हुआ कि यह लोग अपने अस्लाफ़ के तरीक़े से क्यों हट रहे हैं? हालांकि हमारे अस्लाफ़ कोई जाहिल नहीं इल्म के समुंद्र थे। चचा मरहूम मुहक़्क़िक़ आलिम थे मामूली इल्म नहीं रखते थे इल्म का मौजज़न दरिया थे उनके इल्म के मुक़ाबले में इनके बच्चों का इल्म एक क़तरा की हैसियत रखता है इतने अज़ीम आलिम के बेटे उनके नक़्शे क़दम से हट जायें तो कितना अफ़सोस है अलाह तआला इन्हें अपने बुजुर्ग अज़ीम बाप के नक़्शे क़दम पर चलने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाये।

हज़रत ज़क्रिया, हज़रत ईसा, हज़रत यहया अलैहिमुस्सलाम

ईसा अलैहिस्सलाम की नानी का नज़र मानना : जब इमरान की बीवी ने अर्ज़ की ऐ मेरे रब मैं तेरे लिए नज़र मानती हूं जो मेरे पेट में है ख़ालिस तेरी ख़िदमत में रहे तो तू मुझसे क़बूल कर ले बेशक तू ही है सुनने वाला जानने वाला।

ईसा अलैहिस्सलाम की वालदा का नाम मरयम नानी का नाम हन्ना, नाना का नाम इमरान है हन्ना की एक और बहन थी जिसका नाम ईशा था यह दोनों फ़ाकूज़ की बेटियां हैं हज़रत इमरान और हज़रत ज़क्रिया अलैहिस्सलाम दोनों एक ही ज़माने में हुए। हन्ना इमरान के निकाह में थीं और ईशा ज़क्रिया अलैहिस्सलाम की ज़ौजियत में थीं। ईशा हज़रत यहया अलैहिस्सलाम की वालदा हैं इस तरह ईसा अलैहिस्सलाम की वालदा हज़रत मरयम और हज़रत यहया अलैहिस्सलाम ख़ालाज़ाद हैं।

एतेराज़: बुख़ारी व मुस्लिम में वाक़िया मेराज का ज़िक्र करते हुए नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का इरशाद है।

फिर मेरी मुलाक़ात दो ख़ालाज़ाद यानी ईसा इब्ने मरयम और यहया बिन ज़क्रिया अलैहिमस्सलाम से हुई। इस हदीस से वाज़ेह हुआ कि यह दोनों हज़रात ख़ुद ख़ालाज़ाद थे।

जवाब : साहब तक़रीब ने जवाब दिया कि हदीस पाक में मजाज़ पाया गया है कसीर तौर पर ख़ाला की बेटी को इज्ज़त व तकरीम के पेशे नज़र ख़ाला कह दिया जाता है। (जैसे हमारे रिवाज में मां की ख़ाला और मामू को बच्चे ख़ाला और मामू कह देते हैं।)

मक़सद सिर्फ़ इन दोनों अंबियाए किराम की क़ुरबत को ब्यान करना है कि इन दोनों में बा एतेबार ख़ाला के रिश्ता पाया गया है।

ख़्याल रहे कि जम्हूर उलेमा का यही मज़हब है लेकिन मुहिउस्सुन्ना रहमतुल्लाह अलैहि और अल्लामा राज़ी रहमतुल्लाह अलैहि क़ाइल ही इसके हैं कि हज़रत ज़क्रिया अलैहिस्सलाम की ज़ौजा हज़रत मरयम सलामुल्लाह अलैहा की बहन थीं।

इब्ने असाकिर ने हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत की है कि इमरान की ज़ौजा हन्ना की औलाद नहीं थी यह बुढ़ापे की उम्र तक पहुंच चुकी थी एक दिन दरख़्त के साए में बैठी थी उन्होंने एक परिन्दे को देखा जो अपने बच्चों को चोग खिला रहा था तो आपके दिल में भी औलाद की ख़्वाहिश पैदा हुई तो आप ने अल्लाह तआला के हुज़ूर में अर्ज़ किया: ऐ अल्लाह तआला मुझे बच्चा अता फ़रमा, आपकी दुआ को क़बूल कर लिया गया जब आप हामिला हो गई तो आपने नज़र मानी कि मेरे पेट में जो बच्चा है इसे मैं बैतुल मुक़द्दस की ख़िदमत के लिए वक़्फ़ कर दूंगी जो तेरे घर की ख़िदमत गुज़ारी करेगा, अगरचे आपने सिर्फ़ इतना ही कहा था जो मेरे पेट में है लेकिन इस से मुराद मुज़क्कर था क्योंकि उस वक़्त बैतुल मुक़द्दस की ख़िदमत के लिए मुज़क्कर बच्चे ही वक़्फ़ किये जाते थे। मुअन्नस बच्चियां वक़्फ़ नहीं की जाती थीं जब आप ने अपनी नज़र का ज़िक्र अपने ख़ाविंद से किया तो उन्होंने कहा कि अगर तुम्हारी बच्ची पैदा हो गई तो फिर क्या करोगी? तो उन्होंने फिर रब तआला के हुज़ूर अर्ज़ की।

ऐ अल्लाह तआला मेरी नज़र क़बूल कर।

यानी मुझे बच्चा ही अता कर ताकि मैं उसे बैतुल मुक़द्दस की ख़िदमत के लिए वक़्फ़ कर सकूं।

हज़रत हसन बसरी रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि हज़रत मरयम की वालदा ने जो नज़र मानी थी वह दर हक़ीक़त अल्लाह तआल की तरफ़ से आपको इल्हाम हुआ था अगर इल्हाम न होता तो शायद आप नज़र भी न मानतीं।

यह ऐसे ही था जिस तरह इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने ख़्वाब में अपने बेटे को ज़िबह करते हुए देखा तो यक़ीन कर लिया कि यह अल्लाह तआला का हुक्म है हालांकि इसमें सराहतन वही नाज़िल नहीं हुई थी इसी तरह हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की वालदा ने भी अलहाम के ज़रिये ही आपको संदूक़ में बंद करके दरिया में डाल दिया था।

बच्ची पैदा होने पर हसरत : फिर जब उसने पेश किया बोली ऐ मेरे रब मैंने लड़की पेश की है और अल्लाह तआला को ख़ूब मालूम है जो कुछ वह पेश की और वह लड़का जो उसने मांगा उस लड़की सा नहीं और मैंने उसका नाम मरयम रखा और मैं उसे और उसकी औलाद को तेरी पनाह में देती हूं रांदे हुए शैतान से।

हज़रत मरयम अलैहिस्सलाम की वालदा ने लड़के को बैतुल मुक़द्दस की ख़िदमत में वक़्फ़ करने की नज़र मानी थी क्योंकि उस वक़्त उनकी शरीअत में लड़कों की ही नज़र मानी जाती थी लड़कियों की नहीं, मुज़क्कर ही इबादत के मक़ाम की हमेशा ख़िदमत कर सकते हैं मुअन्नस को यह मक़ाम हासिल नहीं, क्योंकि उनको हैज़ (माहवारी) का आरिज़ा लाहक़ होता है मुज़क्कर अपनी कुव्वत और ताक़त की वजह से जो ख़िदमत कर सकता है वह मुअन्नस नहीं कर सकती क्योंकि उसमें ताक़त की कमी होती है मुज़क्कर ख़िदमत के मामलात में लोगों से मेल जोल रख सकता है उसके लिये ऐब नहीं लेकिन मुअन्नस के लिए लोगों से इख़्तेलात ऐब है मुज़क्कर के लिए मर्दों से मिलने जुलने में कोई तोहमत आइद नहीं होती लेकिन मुअन्नस के लिए तोहमत है जब लड़की पैदा हो गई तो ख़ौफ़ लाहक़ हुआ कि अब मैं नज़र कैसे पूरी कर सकूंगी उज़्र पेश करते हुए और हसरत का इज़हार करते हुए रब तआला के हुज़ूर अर्ज़ किया:

ऐ मेरे रब मैंने बच्ची जनी।

अब मैं क्या करूं नज़र को कैसे पूरा करूं तो रब्बे क़ुदूस ने फ़रमाया:

और अल्लाह तआला को ख़ूब मालूम है जो कुछ उसने जना।

जो लड़का तुम्हारा मतलूब था वह इस लड़की जैसा नहीं जो अल्लाह तआला ने तुम्हें अता की है यानी तुम तो सिर्फ़ बैतुल मुक़द्दस की ख़िदमत के लिए वक़्फ़ होने के लिए लड़का जो तलब कर रही थी लेकिन अल्लाह तआला ने तुम्हें वह लड़की अता की जिसे ईसा रूहुल्लाह की मां होने का शर्फ़ हासिल होना है अर्ज़ किया ऐ अल्लाह तआला मैंने इसका नाम मरयम रखा मरयम इबरानी ज़बान में आबिदा (इबादत करने वाली) के मायने में इस्तेमाल होता है यह नाम रखकर अल्लाह तआला से दरख़्वास्त की गई इसे दीन व दुनिया की आफ़ात से महफ़ूज़ फ़रमा और साथ ही यह दुआ की ऐ अल्लाह तआला इसे और इसकी औलाद को शैतान के शर से महफ़ूज़ रख यानी नेक व मुतीअ बना।

हज़रत मरयम अलैहिस्सलाम के कफ़ील हज़रत ज़क्रिया अलैहिस्सलाम : तो उसे उसके रब ने अच्छी तरह कबूल किया उसे अच्छा परवान चढ़ाया और उसे ज़क्रिया अलैहिस्सलाम की निगहबानी में दिया जब ज़क्रिया अलैहिस्सलाम उसके पास उसकी नमाज़ पढ़ने की जगह जाते उसके पास नया रिज़्क पाते, कहा ऐ मरयम यह तेरे पास कहां से आया? बोलीं वह अल्लाह तआला की तरफ़ से है बेशक अल्लाह तआल जिसे चाहे बे गिनती दे।

अच्छी तरह कबूल करने का एक मतलब तो यह है कि हज़रत मरयम और उनके बेटे ईसा अलैहिस्सलाम को अल्लाह तआला ने शैतान से महफूज़ रखा और दूसरी वजह यह है कि हज़रत मरयम की वालदा ने अपनी नज़र को पूरा करने के लिए उन्हें एक कपड़े में लपेटा और मस्जिद में हारून अलैहिस्सलाम की औलाद में से जो उलेमा और कुरा मौजूद थे उनके हवाले कर दिया यह लोग बैतुल मुक़द्दस की ख़िदमत गुज़ारी में रहते थे।

चूंकि मरयम उनके इमाम की बेटी थी इसलिए हर एक चाहता था कि उसकी कफ़ालत का हक़ मुझे मिले हज़रत ज़क्रिया अलैहिस्सलाम ने कहा कि मैं हक़दार हूं क्योंकि इसकी ख़ाला मेरी ज़ौजियत में है लेकिन सबने कहा कि नहीं कुरआ डालते हैं यह हज़रात २७ की तादाद में थे सबने अपने अपने क़लम एक कपड़े के नीचे रखे और एक नाबालिग़ बच्चे को कहा गया कि कपड़े के नीचे हाथ डाल कर एक क़लम निकाल लो उसने जो क़लम निकाला वह हज़रत ज़क्रिया अलैहिस्सलाम का था फिर सब कहने लगे कि एक मर्तबा और कुरआ डालते हैं अब सब नहर उरदुन की तरफ़ चले कि अपने अपने क़लम नहर में डालते हैं जिसका क़लम उलटा तैरा यानी पानी के आने की तरफ़ उसका रुख़ हुआ वह कामयाब हो गया यह कुरआ भी हज़रत ज़क्रिया अलैहिस्सलाम के हक़ में निकला क्योंकि आपका क़लम ही उल्टा तैरा।

फिर सब कहने लगे कि एक मर्तबा और कुरआ डालते हैं अब जिसका क़लम सीधे रुख़ की तरफ़ चला वह कामयाब होगा तीसरी मर्तबा भी हज़रत ज़क्रिया अलैहिस्सलाम को ही कामयाबी हासिल हो गई, आपका क़लम ही पानी के बहाव के रुख़ की तरफ़ चला। कुरआ में कामयाबी पर आपने कफ़ालत की ज़िम्मेदारी संभाल ली।

और उसे अच्छा परवान चढ़ाया जवान होने तक।

एक दिन में आप इतनी बड़ी हो जातीं जितना दूसरे बच्चे एक साल में बड़े होते हैं इसी तरह आप को नेकी, पाक दामनी, सीधी राह पर चलने और इताअत में भी बुलंद व बाला मक़ाम अता किया अल्लाह तआला ने। हज़रत सुलेमान अलैहिस्सलाम की औलाद से हज़रत ज़क्रिया अलैहिस्सलाम को हज़रत मरयम का कफ़ील बना दिया और मरयम की देखभाल हर मसलेहत के काम की ज़िम्मेदारी उनके सुपुर्द कर दी।

जब ज़क्रिया उसके पास नमाज़ पढ़ने की जगह जाते उस वक़्त मेहराब का इतलाक़ मसाजिद पर होता था यहां मुराद वह कमरा है जिसमें मरयम को ठहराया गया था उसका दरवाज़ा दीवार के दर्मियान था उस कमरे में जाने के लिए सीढ़ी का इस्तेमाल किया जाता था ख़्याल रहे कि आज कल मसाजिद में जो मेहराब बनाए जाते हैं उनकी इब्तेदा नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के ज़माने से नहीं हुई बल्कि उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ के ज़माने से शुरू हुई।

उसके पास नया रिज़्क़ पाते।

हज़रत ज़क्रिया अलैहिस्सलाम जब उसके कमरे से निकल कर आते तो उसके साथ दरवाज़े बंद करके ताले लगा कर आते कोई और शख़्स वहां दाख़िल नहीं हो सकता था लेकिन आप जब भी कमरे में आते तो देखते कि मरयम अलैहस्सलाम के पास गर्मियों के फल सर्दियों में और सर्दियों के गर्मियों में मौजूद होते।

कहा ऐ मरयम यह तेरे पास कहां से आया?

यह सवाल हज़रत ज़क्रिया अलैहिस्सलाम का ताज्जुब की वजह से था ख़्याल रहे कि हज़रत मरयम के पास बे मौसम फलों का आना यह आपकी करामत है।

इस आयत से वाज़ेह होता है कि औलिया किराम की करामात बरहक़ हैं क्योंकि हज़रत मरयम को नबुव्वत हासिल नहीं हुई।

उन्होंने कहा वह अल्लाह तआला की तरफ़ से है।

हज़रत ज़क्रिया अलैहिस्सलाम के पूछने पर हज़रत मरयम ने यह जवाब दिया कि जितना रिज़्क़ है जो किसी इंसान के वास्ते के बग़ैर मुझे अल्लाह तआला की तरफ़ से हासिल है हज़रत मरयम का यह कलाम बचपन में है कि यानी इस उम्र में आम बच्चे कलाम नहीं करते या कि कुछ बड़ी उम्र में। उल्मा के मुख़्तलिफ़ अक़वाल हैं अल्लामा सियूती रहमतुल्लाह अलैहि के नज़दीक यह कलाम बचपन में है आपने एक नज़्म में ज़िक्र किया है कि ११ शख़्सों ने बचपन में कलाम किया है।

१. नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम।

२. यहया अलैहिस्सलाम।

३. इब्राहीम अलैहिस्सलाम।

४. मरयम अलैहस्सलाम।

५. जूरैह से तोहमत ज़ायल करने वाले ने बचपन में कलाम किया।

६. यूसुफ़ अलैहिस्सलाम से तोहमत ज़ायल करने वाले ने बचपन में क़लाम किया।

७. अस्हाबे अख़दूद में एक बच्चे ने मां को कहा कि तुम अपने दीन पर क़ायम रहो।

८. एक औरत पर तोहमत लगा रहे थे तो वह ख़ामोश थी एक औरत ने उसे देखकर कहा मेरे बच्चे को अल्लाह तआला ऐसा न बनाना, बच्चे ने कहा ऐ अल्लाह तआला मुझे ऐसा ही बनाना यानी यह औरत बे गुनाह है!

९. फ़िरऔन ने जब एक औरत को ईमान लाने पर अज़ाब दिया तो उसके बच्चे ने दीन पर क़ायम रहने की तलक़ीन की।

१०. मुबारक ने बचपन में कलाम किया।

बेशक अल्लाह तआला रिज़्क़ देता है जिसे चाहे बग़ैर हिसाब के।

हज़रत मरयम ने कहा कि अपने बंदों में अल्लाह तआला जिसे पसंद फ़रमाता है उन्हें किसी इंसान के वसीला के बग़ैर ही रिज़्क़ अता फ़रमाता है जो अपनी वुसअत के पेशे नज़र बे हिसाब होता है।

फ़ायदा : हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु अन्हु से मरवी है रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को चंद दिन खाने के लिए कुछ मयस्सर न हुआ यहां तक कि भूख के ग़ल्बे की वजह से आप पर मामला शाक़ हुआ (मुश्किल दरपेश आई) तो आपने तमाम अज़वाजे मुतह्हरात से पूछा कि कोई खाने की चीज़ है? तमाम से जवाब मिला कि कुछ भी नहीं। फिर आप हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा के घर तशरीफ़ लाए और उन्हें कहा। ऐ मेरी प्यारी बेटी आपके पास कोई खाने की चीज़ है? क्योंकि मुझे बहुत भूख लगी है उन्होंने अर्ज़ किया क़सम है अल्लाह तआला की कुछ भी नहीं।

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम वहां से लौटे ही थे कि एक पड़ोसी औरत ने हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा की ख़िदमत में दो रोटियां और कुछ गोश्त पेश किया आपने उसे बर्तन में रखा और ख़्याल किया कि अपने आप पर और दूसरे अपने घर के अफ़राद पर नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को ही तरजीह देनी चाहिये। हालांकि घर के सब अफ़राद भूख में मुब्तला थे। आपने हज़रत हसन और हज़रत हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हुमा को रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की तरफ़ भेजा। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तशरीफ़ लाए तो हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा ने अर्ज़ किया आप पर मैं और मेरी मां कुर्बान! अल्लाह तआला ने खाना अता फ़रमाया है जो मैंने आपके लिए छिपा कर रख लिया है। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया ऐ मेरी प्यारी बेटी वह खाने का बर्तन ले आओ जब आपने बर्तन से कपड़े वग़ैरह को हटाया तो वह रोटियों और गोश्त से भरा हुआ था, जब हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा ने देखा तो हैरान हुईं। फिर समझा कि यह अल्लाह तआला की तरफ़ से खाने में बर्कत नाज़िल हुई तो अल्लाह तआला की हम्द की और खाना नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में पेश किया। जब आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने खाना देखा तो आपने भी अल्लाह तआला की हम्द की और पूछा ऐ मेरी प्यारी बेटी यह खाना कहां से आया है तो आपने अर्ज़ किया ऐ मेरे अब्बा जान!

यह अल्लाह तआला की तरफ़ से है बेशक अल्लाह तआला रिज़्क देता है जिसे चाहे बग़ैर हिसाब के। नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फिर हम्द की और फिर कहा:

सब तारीफ़ें अल्लाह तआला की जिसने तुम्हें बनी इस्राईल की एक सरदार औरत (मरयम) की तरह बनाया।

क्योंकि उन्हें भी अल्लाह तआला ने रिज़्क़ अता फ़रमाया तो उनसे यह पूछा गया कि रिज़्क़ तुम्हारे पास कहां से आया है तो उन्होंने भी यही जवाब दिया था कि यह अल्लाह तआला की तरफ़ से आया है बेशक जिसे चाहे रिज़्क़ अता फ़रमाता है बग़ैर हिसाब के फिर आपने हज़रत हसन और हज़रत हुसैन और हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हुम और दूसरे अहले बैयत को जमा किया सबने सैर होकर खाया और खाना उसी तरह मौजूद था जैसे पहले था हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा ने वह खाना दूसरे पड़ोसी घरों में भी भेजा।

हदीस पाक से यह फ़ायदा हासिल हुआ कि नेमत के हासिल होने पर अलहम्दोलिल्लाह पढ़ा जाये।

अल्लाह तआला पर तवक्कुल रखने वाले को अल्लाह तआला अपनी नेमतों से नवाज़ता है इंसान को चाहिये कि वह अपने आप पर और अपनी औलाद पर वालदैन को तरीजह दे अपने पड़ोसियों को भी खाने वग़ैरह की अशिया बतौर हदिया दी जायें इससे मुहब्बत बढ़ती है उस खाने में बर्कत नाज़िल होना और खाने का बढ़ जाना नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का मोजिज़ा और हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा की करामत है।

औलाद के लिए हज़रत ज़क्रिया अलैहिस्सलाम की दुआ :

यहां पुकारा ज़क्रिया ने अपने रब को कहा ऐ मेरे रब मुझे अपने पास से नेक औलाद अता फ़रमा बेशक तू ही है सुनने वाला।

आपने जब देखा कि अल्लाह तआला ने मरयम को बे मौसम फल अता फ़रमाये हैं तो आपके दिल में यह ख़्याल पैदा हुआ कि अगरचे मेरी उम्र बुढ़ापे तक पहुंच चुकी है और मेरी ज़ौजा भी बांझ है लेकिन अल्लाह तआला अपनी कुदरत कामिला से मेहरबानी फ़रमा दे तो कुछ बईद नहीं तो आपने औलाद की दुआ की।

जब अल्लाह तआला ने लड़कों की जगह लड़की को क़बूल कर लिया तो उस पर भी ख़्याल आया कि बूढ़े को जवान और बांझ को ग़ैर बांझ का मक़ाम आत फ़रमा दे तो यह भी उसकी रहमत का ही एक हिस्सा होगा।

बैतुल मुक़द्दस की ख़िदमत के लिए बड़ों को क़बूल किया जाता था जब एक नन्हीं सी बच्ची को क़बूल कर लिया गया तो यह भी इस दुआ के लिए ख़्याल का सबब बना कि रब तआला जिसे चाहे क़बूल कर ले जब हज़रत मरयम को अल्लाह तआला ने कलाम करने की ताक़त अता फ़रमाई जब बच्चे नहीं बोलते तो आप को ख़्याल आया कि बे वक़्त औलाद अता करना भी उसकी इसी तरह मेहरबानी हो सकती है।

ख़्याल रहे कि यहां यह मक़सद नहीं कि हज़रत ज़क्रिया अलैहिस्सलाम को रब तआला की कुदरत में पहले यक़ीन नहीं था बल्कि:

जब आपने वली की करामात का मुशाहिदा किया तो दिल की तवज्जोह इस तरफ़ वाज़ेह तौर पर हो गई कि नबी का मोजिज़ा तो इससे बढ़कर है इन करामात के मुशाहिदा पर औलाद की तमअ बढ़ गई। तवज्जोह ज़्यादा हो गई अर्ज़ करने का ख़्याल आ गया।

पाकीज़ा औलाद।

ज़ुर्रिया का मायने नस्ल, यह एक और जमाअत और मुज़क्कर और मुअन्नस पर बोला जाता है आपकी दुआ एक मुज़क्कर बच्चे के लिए थी जिसका ज़िक्र इंशाअल्लाह तआला आगे आ रहा है ज़ुर्रिया के लफ़्ज़ का एतेबार करते हुए तैय्यबा लफ़्ज़ मुअन्नस लाया गया दुआ मुअन्नस के लिए नहीं बल्कि मुज़क्कर के लिए है।

बेशक तू ही दुआ सुनने वाला है।

अगरचे ज़ाहिरी तौर पर यही मायने है लेकिन हक़ीक़त में मुराद यह है कि तू ही दुआ क़बूल करने वाला है और किसी को तू रुस्वा नहीं करता जिंस तरह नमाज़ी हज़रात कहते हैं।

इसका हक़ीक़ी मतलब भी यह है।

मोमिनों में से जो भी अल्लाह तआला की हम्द ब्यान करता है अल्लाह तआला उसकी हम्द क़बूल करता है ज़ाहिरी मायने यहां भी हम्द का सुनना है वह मुराद नहीं।

हज़रत ज़क्रिया का मख़्फ़ी दुआ करना :

यह ज़िक्र है तेरे रब तआला की उस रहमत का जो उसने अपने बंदे ज़क्रिया पर की जब उसने अपने रब को आहिस्ता पुकारा अर्ज़ की ऐ मेरे रब मेरी हड्डी कमज़ोर हो गई और सर सफ़ेद हो गया।

बुढ़ापे की वजह से और ऐ मेरे रब मैं तुझे पुकार कर कभी नामुराद न रहा।

हज़रत ज़िक्रिया अलैहिस्सलाम सुलेमान अलैहिस्सलाम की औलाद से थे बढ़ई का काम करते थे आपके आबाव अजदाद जो नबी थे वह बैतुल मुकद्दस में वही लिखा करते थे आपकी कोई औलाद न थी इसलिए रब तआला से दुआ की, आपने दुआ रात को यानी क़बूलियत के वक़्त में की दुआ मख़्फ़ी तौर पर की ताकि रियाकारी से दूर रहे और इसमें कामिल ख़ुलूस पाया जाये और लोग यह भी न कहें कि यह बुढ़ापे की उम्र में औलाद को मांग रहा है और यह भी ख़्याल किया था कि इस दुआ पर मेरे मवाली मुत्तला न हों दुआ करते हुए पहले अपने इज्ज़ का इज़हार किया ऐ मेरे अल्लाह तआला मेरी हड्डी कमज़ोर हो गई।

आला हज़रत मौलाना अहमद रज़ा ने अल–अज़मु का तर्जमा का हड्डी किया है और दूसरे मुतरज्जिमीन ने हड्डियां आप के तर्जमा पर लोगों ने एतेराज़ भी किया है जिसका ज़िक्र मैं अपनी किताब तसकीनुल जिनान फ़ी महासिने कंज़ुल ईमान में किया है हक़ीक़त में यही तर्जमा मोतबर है अल्लामा आलूसी फ़रमाते हैं:

(ज़ुअफ़ व कमज़ोरी) की निस्बत अल–अज़मु की तरफ़ क्योंकि यह सुल्ब (रीढ़) की हड्डी ही बदन का सतून और जिस्म का सतून है जब इसे ज़ुअफ़ और नर्मी पहुंचे तो तमाम हड्डियों को कमज़ोरी पहुंचती है और उनकी कुव्वत ज़ायल हो जाती है।

अल्लामा ज़िमख़शरी और मुहक़्क़ेक़ीन ने यही पसंद किया है कि मुफ़रद यानी जिंसियत पर दलालत कर रहा है मुराद इससे जिंस है यानी वह जिसे बदन में सतून की हैसियत हासिल होती है और वह बदन का क़व्वाम है और इससे बदन को कुव्वत हासिल है इसमें कमज़ोरी आने से तमाम बदन में कमज़ोरी हासिल होती है।

मज़कूरा बहस के बाद आला हज़रत के तर्जमा की फ़ौक़ियत वाज़ेह हो गई।

जब आप अलैहिस्सलाम ने अपनी कमज़ोरी पीराना साली सर के बालों के सफ़ेद होने का ज़िक्र कर दिया तो अर्ज़ किया मैं तेरा वह बंदा हूं जिसे तूने अर्सए दराज़ से अपने लुत्फ़ व करम का ख़ूगर बना दिया है जब कभी मैं ने कोई सवाल किया तूने रद्द न किया जो भी मैंने मांगा तूने अता किया तेरे करम ने हमेशा मेरी आरज़ुओं की लाज रखी। तेरी इनायत ने आज तक मुझे कभी नाशाद व नामुराद

न किया मुझे यक़ीन है कि हस्बे साबिक़ इस ख़ूगर लुत्फ़ व इनायात की इल्तेजा भी शर्फ़े क़बूल से सरफ़राज़ होगी।

बच्चे की तमन्ना क्यों? : और मुझे अपने बाद अपने क़राबत दारों का डर है और मेरी औरत बांझ है तू मुझे अपने पास से कोई ऐसा दे दे जो मेरा काम उठा ले और वह मेरा जानशीन हो और औलादे याक़ूब का वारिस हो और ऐ मेरे रब उसे पसंदीदा कर।

मवाली जमअ है मौला की। इसके कई मायने हैं मददगार, मालिक, साहब, चचाज़ाद, गुलाम, रिश्तेदार। यहां मुराद कराबतदार रिश्तेदार हैं आप अलैहिस्सलाम ने अर्ज़ किया। ऐ अल्लाह तआला। दीन में फ़साद फैलाएंगे इसलिए तू मुझे बच्चा अता फ़रमा जिसे मनसबे नबुव्वत पर फ़ायज़ कर दे ताकि वह उमूरे दीन की हिफ़ाज़त कर सके। उसे मेरे इल्म और नबुव्वत का मेरा और औलादे याक़ूब में से अंबियाए किराम अलैहिमुस्सलाम का जाशीन बना। यहां विरासत से मुराद माल व दौलत नहीं बल्कि इल्म और नबुव्वत है क्योंकि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का इरशाद गिरामी है।

हम अंबियाए किराम अलैहिमुस्सलाम की जमाअत का कोई वारिस नहीं बनाया जाता हम जो माल भी छोड़ कर जायें वह सदक़ा होता है और आपने फ़रमायाः

उलेमा अंबियाए किराम अलैहिमुस्सलाम के वारिस होते हैं बेशक अंबियाए किराम अलैहिमुस्सलाम का कोई वारिस दराहिम व दनानीर का नहीं होता बल्कि उनके इल्म के वारिस होते हैं।

हज़रत ज़क्रिया अलैहिस्सलाम को बेटे की बशारत : फ़रिश्तों ने उसे आवाज़ दी और वह अपनी नमाज़ की जगह खड़ा नमाज़ पढ़ रहा था बेशक अल्लाल तआला आपको मुज़दा देता है यहया अलैहिस्सलाम का जो अल्लाह तआला की तरफ़ से एक कलिमा की तस्दीक़ करेगा सरदार और हमेशा के लिए औरतों से बचने वाला और नबी हमारे ख़ालिस बंदों में से।

मलाइका से मुराद जिब्राईल अलैहिस्सलाम हैं यानी यह खुशख़बरी देने वाले जिब्राईल अलैहिस्सलाम हैं ज़िक्र जमा (बहुवचन) का सीग़ा है मुराद मुफ़रिद है।

वह जिन से लोगों ने कहा कि लोगों ने तुम्हारे लिए जथ्था जोड़ा है तो इनसे डरो इनका ईमान और ज़ायद हुआ।

में पहले उन्नास से मुराद नईम बिन मसऊद अशजई और दूसरे लोगों से मुराद अबू सुफ़ियान है। यानी ज़िक्र अन्नास किया गया है जिसका मायने लोगों है लेकिन मुराद दोनों जगह एक एक शख़्स है (यहां वाक़िया ब्यान करना मक़सूद नहीं) आपको बशारत देने के लिए जब जिब्राईल अलैहिस्सलाम आए तो आप अपनी नमाज़ पढ़ने की जगह नमाज़ पढ़ रहे थे।

मेहराब से मुराद मस्जिद या इमामे मस्जिद के खड़े होने की जगह (आजकल की तरह उस वक़्त के मेहराब न होते थे) या हज़रत मरयम का रहने वाला ऊंचा कमरा।

(आला हज़रत का तर्जमा कंज़ुल ईमान इन सबको शामिल है।)

आपको ज़िस बेटे की बशारत दी गई उसके चंद औसाफ़ भी ज़िक्र किये गये कि वह अल्लाह तआला की तरफ़ से कलिमा की तस्दीक़ करने वाला होगा। यहां कलिमा से मुराद ईसा अलैहिस्सलाम हैं हज़रत

यहया अलैहिस्सलाम ईसा अलैहिस्सलाम से छः माह बड़े हैं। सबसे पहले आप ही उसे तस्लीम करने वाले और उसकी तस्दीक़ करने वाले हैं कि ईसा अलैहिस्सलाम कलिमतुल्लाह और रूहुल्लाह हैं। एक मर्तबा हज़रत मरयम ने हज़रत यहया अलैहिस्सलाम की वालदा से मुलाक़त की जो उनकी ख़ाला हैं तो उन्होंने कहा कि क्या तुम्हें मालूम है कि मैं हामिला हूं तो मरयम अलैहस्सलाम ने कहा।

और मैं भी हामिला हूं।

तो हज़रत ज़क्रिया अलैहिस्सलाम की जौज़ा ने कहा:

जो तुम्हारे पेट में बच्चा है मैंने उसे अपने पेट वाले बच्चे को सज्दा करते हुए पाया।

यानी मेरा बच्चा तुम्हारे बच्चे को सज्दा करता है यह वाकिया ख्वाब है या कश्फ़ का, इस पर दलालत कर रहा है कि हज़रत यहया अलैहिस्सलाम ने सबसे पहले हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की तस्दीक़ की।

आपको अल्लाह तआला ने सरदार बनाया सय्यद के मुख़्तलिफ़ मानी हैं हलीम यानी बुर्दबार मोमिनीन का सरदार दीनी उमूर में रईस यानी इल्म हिल्म इबादत तक़वा में उसे सरदारी हासिल हो अल्लाह तआला के यहां मुकर्रम फ़क़ीह आलिम जिस शख़्स पर ग़ज़ब ग़ालिब न आ सके लोग जिसकी तरफ़ अपनी हाजात और मसाइब व आलाम में रुजू करें और उनकी हाजात को पूरे करे हुस्ने अख़लाक़ का मालिक, शरीफ़, अल्लाह तआला की क़ज़ा पर रज़ामंदी का इज़हार करने वाला, मुतवक्किल अज़ीमुल हिम्मत वह किसी पर हसद न करे हर भलाई के काम में अपने हम ज़मान लोगों पर फ़ौक़ियत रखने वाला।

और आपको अल्लाह तआला ने हमेशा औरतों से बचने वाला एक वस्फ़ अता फ़रमाया हसूर का मायने है कि अपने नफ़्स को ज़्यादा से ज़्यादा रोकने वाला यानी ज़ुहद और तक़वा की वजह से आप को औरतों की तरफ़ रग़बत ही नहीं होती थी उस शरीअत में अल्लाह तआला की तरफ़ ज़्यादा राग़िब रहना और निकाह न करना अफ़ज़ल था हमारे नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की शरीअत में निकाह करना सुन्नत है। और आपको अल्लाह तआला ने नबी बनाया ख़्याल रहे कि आपको रब ताअला ने सयादत अता फ़रमाई इसमें दो चीज़ों की तरफ़ इशारा है कि यह आपको मख़लूक़ की बेहतरी मसलेहत और तालीमे दीन की कुदरत अता फ़रमाई और दूसरी मख़लूक़ को अदब सिखाने अमर बिल मअरूफ़ व नही अनल मुन्कर की ताक़त अता फ़रमाई और आपको हुसूर बनाया यानी आपको कामिल ज़ुहद व तक़वा अता फ़रमाया सयादत और ज़ुहद और तक़वा के इज्तेमा के बाद नबुव्वत अता फ़रमाई इन दोनों चीज़ों के बाद आला मक़ामे नबुव्वत का ही है।

हज़रत यहया अलैहिस्सलाम का नाम अल्लाह तआला ने खुद रखा :

ऐ ज़क्रिया! हम तुझे ख़ुशी सुनाते हैं एक लड़के की जिसका नाम यहया है इसके पहले हम ने इस नाम का कोई न किया।

हर बच्चे का नाम उसके वालदैन रखते हैं और वह भी पैदाईश के बाद। हज़रत यहया अलैहिस्सलाम की पैदाईश से पहले आपका नाम रब तआला ने रखा और वह भी ऐसा नाम कि आपसे पहले यह नाम किसी शख़्स का भी नहीं था।

ख़्याल रहे कि समीया का एक मायने नज़ीर मिस्ल भी है यानी हमने आपसे पहले कोई शख़्स आपकी मिस्ल नहीं बनाया आपको अज़ीम तर जुहद व तक़वा हासिल हुआ।

आपका नाम यहया अलैहिस्सलाम क्यों रखा?

हक़ीक़त तो अल्लाह तआला ही जानता है और बाज़ औक़ात नाम या अल्क़ाब में माख़ज़ अशक़ाक़ का कोई ख़ास एतेबार नहीं किया जाता लेकिन मुफ़स्सेरीन किराम ने बाज़ वजूह ब्यान की हैं असल मायने ज़िन्दा करना है इसी मुनासबत से नाम में वजूद मज़कूर हैं।

१. हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा से मरवी है कि अल्लाह तआला ने उनके ज़रिये उनकी वालदा के बांझपन को ज़िन्दगी अता फ़रमाई।

२. हज़रत क़तादा रज़ियल्लाहु अन्हु से मरवी है बेशक अल्लाह तआला ने आपके दिल को ईमान व ताअत अता करके ज़िन्दा फ़रमाया अल्लाह तआला ने मुतीअ को ज़िन्दा कहा है और आसी (नाफ़रमान) को मुर्दा। रब तआला का इरशाद गिरामी है।

और क्या मुदा था तो हमने उसे ज़िन्दा किया। यानी काफ़िर को ईमान अता किया आसी को मुतीअ बनाया।

३. आप को अल्लाह तआला ने नाफ़रमानी के इरादा से दूर रखकर ताअत की ज़िन्दगी से सरफ़राज़ किया क्योंकि आपको अल्लाह तआला ने गुनाहों इसयान के इरादे से भी दूर रखा।

४. आपको शहादत की ज़िन्दगी अता फ़रमाई क्योंकि शोहदा अल्लाह तआला के यहां ज़िन्दा होते हैं रब तआला का इरशाद गिरामी है। बल्कि वह अपने रब के यहां ज़िन्दा हैं।

५. हज़रत यहया अलैहिस्सलाम ने सब से पहले ईसा अलैहिस्सलाम को कलिमतुल्लाह और रुहुल्लाह तस्लीम किया तो इस ईमान की वजह से आप के दिल को ज़िन्दगी हासिल हुई।

६. दीन को आपके ज़िरिये ज़िन्दा रखा हज़रत ज़क्रिया अलैहिस्सलाम ने दीन के क़याम क लिए ही तो आपके लिए दुआ की थी।

हज़रत ज़क्रिया अलैहिस्सलाम को बेटे की बशारत पर ताज्जुब हुआ :

अर्ज़ की ऐ मेरे रब मेरा लड़का कहां से होगा? मुझे तो पहुंच गया बुढ़ापा और मेरी औरत बांझ है फ़रमाया अल्लाह तआला यूं ही करता है जो चाहे। अर्ज़ की ऐ मेरे रब मेरे लिए कोई निशानी कर दे। फ़रमाया तेरी निशानी यह है कि तीन दिन तू लोगों से बात न करे मगर इशारा से और अपने रब को बहुत याद कर सुबह शाम उसकी पाकीज़गी ब्यान कर।

आपको जब बशारत दी गई उस वक़्त आपकी उम्र एक सौ बीस साल और आपकी ज़ौजा की उम्र नव्वे साल की थी यही क़ौल ज़्यादा मोतबर है अगरचे और अक़वाल भी हैं। आपने बेटे के लिए दुआ भी की थी अल्लाह तआला की कुदरतों का मुशाहिदा कर चुके थे नबी को रब तआला की कुदरत में कभी कोई शक नहीं हो सकता फिर इस सवाल का क्या मतलब हो सकता है ऐ मेरे रब मेरा लड़का कहां से होगा? इस सवाल का जवाब अल्लामा आलूसी इन अलफ़ाज़ में देते हैं।

आपका यह सवाल अल्लाह तआला की कुदरत को अज़ीम समझते हुए और उस पर बतौर ताज्जुब था यह इंसानी फ़ितरत का तक़ाज़ा है कि जब उसे कोई बड़ी निशानी हासिल हो तो वह ताज्जुब करते हुए कहता है ऐसा भी हो जायेगा? इंसानी सोच से बुलंद चीज़ का हुसूल यक़ीनन मोताज्जिब करता है।

रब तआला ने जवाब दिया:

अल्लाह तआला की कुदरत से अजीब अफ़आल का वक़ूअ पज़ीर होना और आदत के ख़िलाफ़ अजीब अजीब काम हुए बईद नहीं बुढ़ापे के हाल में औलाद अता करना भी उसकी कुदरत से बाहर नहीं।

दूसरे मक़ाम पर इसी सवाल का जवाब इन अल्फ़ाज़ से दिया :

फ़रमाया ऐसा ही है तेरे रब ने फ़रमाया मुझे आसान है और मैंने तो इससे पहले तुझे उस वक़्त बनाया जब तू कुछ न था।

रब तआला जब किसी काम का इरादा फ़रमाता है तो कुन कहता है तो वह काम हो जाता है बल्कि सिर्फ़ इरादा करना भी किसी काम के मअरिज़े वजूद में आने के लिए काफ़ी है जो रब तआला तुम्हें अदम से वजूद में लाया वह तुम्हें औलाद भी अता फ़रमा देगा इसमें ताज्जुब करने हैरान होने की ज़रूरत नहीं और यह सोचने की ज़रूरत भी नहीं कि तुम्हें औलाद बुढ़ापे के हाल में ही अता करेगा या तुम्हें जवान करके औलाद अता करेगा उसकी कुदरत से कोई बईद नहीं कि तुम्हें तुम्हारे अपने हाल पर रखते हुए साहबे औलद कर दे क्योंकि वह तुम्हें नीसती से हस्ती में लाया और जहां तुम्हारी ज़ात मौजूद हुई वहां तुम्हें सिफ़ात भी अता हुई।

निशानी तलब करने की वजह : आपने अर्ज़ किया ऐ अल्लाह तआला मुझे कोई ऐसी अलामत बता कि जिनसे मुझे नुत्फ़ा के क़रार पकड़ने से ही पता चल जाए ताकि मैं तेरी इस नेमत के शुक्र बजा लाने में ताख़ीर न करूं और मुझे जल्द ही सुरूर भी हासिल हो जाये अल्लाह ताला ने फ़रमाया तुम तीन दिन तक कलाम न कर सकोगे सिवाए इशारा के अलबत्ता अल्लाह तआला का ज़िक्र और तस्बीहाते नमाज़ पढ़ सकोगे यानी ज़बान सही होगा लेकिन कुदरती तौर पर लोगों से कलाम की ताक़त न होगी इसलिए रब तआला ने फ़रमाया:

तेरी निशानी यह है कि तू तीन दिन लोगों से कलाम न करे भला चंगा होकर।

लोगों के साथ कलाम न करने का ज़िक्र करके वाज़ेह कर दिया कि आपको अल्लाह तआला के ज़िक्र करने की ताक़त रहेगी।

तुम बिल्कुल सही होगे ज़बान में कोई नुक़्स, बीमारी न होगी, चंगे भले होने के बावजूद कुदरती तौर पर लोगों से कलाम नहीं कर सकोगे, बस यही तुम्हारे लिए निशानी है तुम समझ लेना अब नुत्फ़ा क़रार पा चुका है।

तो अपनी क़ौम पर मस्जिद से बाहर आया तो उन्हें इशारा से कहा कि सुबह शाम तस्बीह करते रहो।

जब आपको लोगों से कलाम करन की ताक़त न रही तो आपने उन्हें इशारा से कहा कि अल्ला तआला की सुबह व शाम तस्बीह करते रहो इस कैफ़ियत से आपको पता चल गया कि आपकी बी हामिला हो चुकी है।

यहया अलैहिस्सलाम का मनसबे नबुव्वत पर फ़ायज़ होना :

ऐ यहया किताब मज़बूत थाम और हमने उसे बचपन में ही नबुव्वत दी।

अल्लाह तआला ने फ़रिश्ता के ज़रिये आपको यह हुक्म दिया यहां जिस किताब का हुक्म दि जा रहा है इससे मुराद तौरात है क्योंकि अलग कोई मुस्तकिल किताब नहीं अता की गई हुक्म दि गया कि तौरात पर लोगों को अमल करायें। अबू नुऐम इब्ने मरदुविया और दैलमी ने हज़रत इब्ने अब्बा रज़ियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत ब्यान की है कि हज़रत यहया अलैहिस्सलाम को अल्लाह तआला ने सात साल की उम्र में अक़्ल व फ़हम वाफ़िर मिक़दार में अता फ़रमाए और इबादत गुज़ार बनाया एक और मरफ़ू रिवायत में ज़िक्र है कि बचपन में हज़रत यहया अलैहिस्सलाम को लड़कों ने कहा हमारे साथ खेलने के लिए चलो तो आपने फ़रमाया:

क्या हमें खेलने के लिए पैदा किया गया चलो हम नमाज़ पढ़ें।

यहां अलहुक्म से मुराद क्या है इसमें मुख़्तलिफ़ अक़वाल हैं। हिकमत, अक़्ल, मारफ़त आदाब, ख़िदमत, फ़िरासत, सादिक़ा।

बाज़ ने कहा इससे मुराद नबुव्वत है यही अक्सर अहले इल्म के क़ौल हैं।

यहया अलैहिस्सलाम पर रब तआला के इनामात : नीज़ अता फ़रमाई दिल की नर्मी अपनी जानिब से और नफ़्स की पाकीज़गी और वह बड़े परहेज़गार थे और ख़िदमत गुज़ार थे अपने वालदैन के और वह जाबिर और सरकश न थे और सलामती हो उन पर जिस रोज़ वह पैदा हुए और जिस रोज़ वह इंतेक़ाल करेंगे और जिस रोज़ उन्हें उठाया जायेगा ज़िन्दा करके।

यानी अल्लाह तआला ने आपको बंदों पर मेहरबान बनाया और उन्हें अच्छा बदला देने वाला बनाया जिस तरह नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के मुताल्लिक़ रब तआला ने फ़रमाया:

अल्लाह तआला की मेहरबानी से आप इनके लिए नर्म दिल हुए।

और आपको नफ़्स की पाकीज़गी अता फ़रमाई लेकिन दीनी अहकाम में आप नर्मी नहीं फ़रमाते जैसे नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को हुक्म दिया गया और तुम्हें इन (ज़ानी व ज़ानिया) पर तर्स न आए अल्लाह तआला के दीन में।

यह मायने भी मुमकिन है कि हज़रत यहया अलैहिस्सलाम को लोगों पर मेहरबान बनाया और गुनाहों से दूर रखा न उन्होंने कोई गुनाह किया और न ही किसी गुनाह का इरादा किया और यह मायने भी मुमकिन है कि अल्लाह तआला ने आपको बचपन में नबुव्वत अता फ़रमाई यह अल्लाह तआला की आप पर रहमत थी और मज़ीद आप को नफ़्स की पाकीज़गी अता करके मुशरर्फ़ बनाया।

और वह ख़िदमतगुज़ार थे अपने वालदैन के।

और अल्लाह तआला की ताज़ीम के बाद वालदैन की ताज़ीम जैसी कोई और इबादत नहीं। इसी लिए रब तआला ने इरशाद फ़रमाया।

आपके रब ने हुक्म दिया कि उसके बग़ैर किसी और की इबादत न करो और वालदैन से एहसान करो।

और वह जाबिर और सरकश न थे।

यानी आप में तवाज़ो और नर्म दिली पाई जाती थी और यही सब से आला वस्फ़ है।

रब तआला ने हुज़ूर को ख़िताब करते हुए फ़रमायाः

अगर आप तुंद मिज़ाज और सख़्त दिल होते तो वह ज़रूर तुम्हारे गिर्द से परेशान हो जाते।

सबसे आला इबादत यह है कि इंसान अपने आप को पहचाने कि मैं घटियां हूं और ज़ाते बारी को पहचाने कि वह अज़ीम ज़ात है।

जिस शख़्स ने अपने को हक़ीर समझा और रब को अज़ीम और बा कमाल समझा वह कभी तकब्बुर नहीं कर सकता।

अल्लाह तआला ने यहया अलैहिस्सलाम को पैदाईश के दिन शैतान से महफ़ूज़ रखकर सलामती अता फ़रमाई और मौत के दिन क़ब्र के अज़ाब से बचाकर आपको सलामती से सरफ़राज़ किया जायेगा सुफ़ियान ऐनिया फ़रमाते हैं कि मख़लूक़ तीन औक़ात में निहायत वहशत में होती है यानी बहुत ही घबराहट में मुब्तला होती है पैदाईश के दिन जब शिकम मादर से ख़रूज होता है तो इंसान को बहुत परेशानी लाहक़ होती है कि पता नहीं अब मेरे लिए नया मक़ाम कैसा होगा फिर जब वह फ़ौत होता है तो ऐसी क़ौम का मुशाहिदा करता है जो इससे पहले उसने कभी नहीं देखी थी यह हालत भी उसके लिए हैबत नाक होती है फिर जब उसे क़यामत को उठाया जायेगा तो वह अपने आपको अज़ीम महशर में पायेगा तो इससे भी वह निहायत ख़ौफ़ज़दा होगा लेकिन हज़रत यहया अलैहिस्सलाम को इन तीनों मौक़ों में सलामती का मुज़दा सुना दिया गया कि तुम्हें इन मक़ामात में कोई परेशानी लाहक़ नहीं होगी।

फ़ायदा : अल्लाह तआला ने हज़रत यहया अलैहिस्सलाम की विलादत का तज़किरा फ़रमाया आपके औसाफ़ ज़िक्र फ़रमाए आप पर सलाम भेजा बफ़ज़्लेहि तआला उम्मते मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम भी आपके मीलाद को इसी तरह ब्यान करती है जो कुरआन के मुताबिक़ है सुबहानल्लाह तआला मेरे नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का मोजिज़ा कैसे साबित है? और रब तआला का इरशाद गिरामी।

और बेशक हर आने वाली घड़ी आपके लिए पहली से बेहतर है।

किस आब व ताब से जगमगा रहा है कि जो लोग पहले मिलादुन्नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के लफ़्ज़ से अलर्जिक थे अब वह भी ज़िक्रे विलादत कांफ्रेंस करने लगे। सीरत सीरत, की रट लगाने वाले शायद तिर्मिज़ी शरीफ़ में बाबे मिलादुन्नबी को नहीं देख सके थे? फिर मजीद लुत्फ़ की बात यह है कि जिन्होंने–

मैंने आपकी रहमत को सिर्फ़ इस जहां के लिए ख़ास कर दिया था वह भी रहमतुललिल आलमीन कांफ़्रेंस करके आपको सब जहानों के लिए रहमत मानने लगे। माशाअल्लाह अहले सुन्नत व जमाअत के अक़ीदा के मुताबिक़।

उन लोगों का काम करना इस बात पर क़वी दलील है कि मसलके अहले सुन्नत ही हक़ है।

हज़रत यहया अलैहिस्सलाम की शहादत :

जब हज़रत यहया अलैहिस्सलाम को नबुव्वत पर फ़ाइज़ किया गया तो उन्हें किताब पर पूरी तुंदही से अमल करने की तलक़ीन की गई। आप की ज़िन्दगी बताती है कि आपने हुक्मे ख़ुदावंदी की तालीम का हक़ अदा कर दिया मुल्क के गोशे गोशे में जाकर दूर उफ़तादा सहराओं और दुश्वार गुज़ार पहाड़ों में जा जाकर लोगों को पैग़ामे हक़ सुनाया और उन्हें गुनाहों से ताइब होने की तर्ग़ीब दी। बेशुमार लोग आपकी तबलीग़ की बर्कत से राहे हक़ पर आ गये। फ़िस्क़ व फुजूर की ज़िन्दगी को तर्क करके उन्होंने ज़ुहद व तक़वा को अपना शआर बनाया क़ौम के हर तब्क़े को आपने उनकी कोताहियों और ख़ामियों पर मुतनब्बेह किया।

उलेमाए बनी इस्राईल जो दुनिया की मुहब्बत में इस क़दर वारफ़ता हो गये थे कि अहकामे इलाही की तहरीफ़ में कोई झिझक महसूस नहीं करते थे उन्हें बड़ी सख़्ती से झिंझोड़ा और बड़े सख़्त लहजे में उन्हें फ़रमायाः

ऐ सांप के बच्चो! तुम को किसने बता दिया कि आने वाले ग़ज़ब से भागो, पस तौबा के मुवाफ़िक़ हल लाओ और अपने दिलों में यह कहने का ख़्याल न करो कि अब्राहाम हमारा बाप है क्योंकि मैं तुमसे कहता हूं कि ख़ुदा इन पत्थरों से अब्राहाम के लिए औलाद पैदा कर सकता है और अब दरख़्तों की जड़ पर कुल्हाड़ा रखा हुआ है पस जो दरख़्त अच्छा फल नहीं लाता तो वह काटा और आग में डाला जाता है।

आपकी दावत का हल्क़ा सिर्फ़ अवाम तक महदूद न था बल्कि शाही दरबार भी आपके नाराए हक़ से लरज़ा बर अंदाम था बादशाहे वक़्त हीरोदीस ने अपने भाई फ़िलिप की मनकूहा बीवी को अपने घर में डाल रखा था आपने उसको बरमला जाकर कहा अपने भाई की बीवी को रखना तुझको जायज़ नहीं।

इंजील मरक़स की चंद आयात मुलाहज़ा फ़रमायें।

पस हीरोदीस इससे दुश्मनी रखती थी और चाहती थी कि इसे क़त्ल कराए मगर न हो सका क्योंकि हीरोदीस योहाना को रास्त बाज़ और मुक़द्दस आदमी जानकर उससे डरता और उसे बचाए रखता था और उसकी बातें सुनकर बहुत हैरान हो जाता था मगर सुनता ख़ुशी से था और एक दिन जब हीरोदीस ने अपने सालगिरह में अपने अमीरों और फ़ौजी सरदारों और गलील के रईसों की ज़ियाफ़त की और इसी हीरोदीस की बेटी अंदर आई और नाच कर हीरोदीस और उसके मेहमानों को ख़ुश किया तो बादशाह ने उस लड़की से कहा जो चाहे मुझसे मांग मैं तुझे दूंगा और उससे क़सम खाई जो तू मुझसे मांगेगी अपनी आधी सलतनत तक तुझे दूंगा और उसने बाहर जाकर अपनी मां से कहा कि मैं क्या मांगू उसने कहा योहना बिपतिस्मा देने वाले का सर। वह फ़ौरन बादशाह के पास जल्दी से अंदर आई और उससे

अर्ज़ की मैं चाहती हूं कि तू योहना बिपतिस्मा देने वाले का सर एक थाल में अभी मुझे मंगवा दे बादशाह बहुत ग़मगीन हुआ और अपनी क़समों और मेहमानों के सबब से इंकार न करना चाहा पस बादशाह ने फ़ौरन एक सिपाही को हुक्म देकर भेजा कि उसका सर लाए उसने जाकर क़ैदख़ाने में उसका सर काटा और एक थाल में लाकर लड़की को दिया और लड़की ने अपनी मां को दिया।

इस तरह हज़रत यहया अलैहिस्सलाम ने अपना सर कटाकर अपने रब तआला के इस फ़रमान की तामील का हक़ अदा किया।

हज़रत ज़क्रिया अलैहिस्सलाम को भी शहीद किया गया :

जब हज़रत यहया अलैहिस्सलाम को शहीद कर दिया गया तो हज़रत ज़क्रिया अलैहिस्सलाम ने बादशाह के ज़ुल्म व सितम से बचने के लिए शहर से बाहर जाने का रुख़ किया। बादशाह ने उसी फ़ाहशा औरत के कहने पर आपको पकड़ने के लिए भी अपने सिपाहियों को भेजा आप ने अपनी जान बचाने के लिए दरख़्त के तने में छुपा लिया जो अंदर से ख़ाली था।

आपको दरख़्त के अंदर ख़ाली तने में जब पाया गया तो उन लोगों ने दरख़्त को ऊपर से नीचे आरे से काट दिया यानी इस तरह आपके जिस्म के दो टुकड़े करके आपको शहीद कर दिया। ख़्याल रहे कि जान की हिफ़ाज़त का वादा सिर्फ़ नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से रब तआला ने फ़रमाया।

और अल्लाह तआला आप को लोगों से बचाए रखेगा।

और दूसरे रसूलों से जो नुसरत का वादा फ़रमाया इससे मुराद यह है कि तुम इतने बड़े लोगों की मुख़ालफ़त के बावजूद मेरे अहकाम उन तक पहुंचा सकोगे तुम्हारे दलाइल का वह कोई जवाब नहीं दे सकेंगे। और तुम्हारे बदले में उनके कई आदमियों को क़त्ल करवा दूंगा जब दूसरे अंबियाए किराम अलैहिमुस्सलाम को लोगों से बचाए रखने का वादा न फ़रमाया तो इन दो आयतों में कोई तआर्रुज़ नहीं।

वह बनी इस्राईल अंबियाए किराम अलैहिमुस्सलाम को नाहक़ क़त्ल करते।

यानी वह ख़ुद भी समझते कि हम ज़ुल्म कर रहे हैं हमें क़त्ल करने का कोई हक़ नहीं पहुंचता।

बेशक हम अपने रसूलों की इमदाद करते हैं यानी दलाइल व हुज्जत और ज़ाहिरी ग़ल्बा में।

हज़रत मरयम की फ़ज़ीलत :

और जब फ़रिश्तों ने कहा ऐ मरयम बेशक अल्लाह तआला ने तुझे चुन लिया और ख़ूब सुथरा किया और आज सारे जहां की औरतों से तुझे पसंद किया ऐ मरयम! अपने रब के हुज़ूर अदब से खड़ी हो और उसके लिए सज्दा कर और रुकू वालों के साथ रुकू कर।

आयते करीमा में मलाइका का ज़िक्र है लेकिन मुराद सिर्फ़ जिब्राईल अलैहिस्सलाम हैं क्योंकि सूरहः मरयम में आपसे कलाम करना जिब्राईल अलैहिस्सलाम का ही साबित है।

यह जमा के सीग़ा से मुफ़रद वाला मायने लेना अगरचे ज़ाहिर से अदूल है मगर इस मायने की तरफ़ फेरना ज़रूरी है।

हज़रत मरयम के तीन वस्फ़ ब्यान किये गये हैं चुन लेना, पाक सुथरा करना और जहां की औरतों पर पसंद करना। पहली सिफ़त का मतलब यह है कि आपसे पहले किसी मुअन्नस को बैतुल मुक़द्दस की ख़िदमत के लिए इजाज़त नहीं दी गई थी। सिर्फ़ आप को ही इस मक़सद के लिए चुन लिया गया था। आपकी वालदा ने आपको दूध नहीं पिलाया था बल्कि पैदा होते ही बैतुल मुक़द्दस में हज़रत ज़क्रिया अलैहिस्सलाम के सुपुर्द कर दिया गया था अल्लाह तआला ने मरयम को जन्नत के खाने अता करके खुसूसियत अता की। अल्लाह तआला ने आपको अपनी इबादत के लिए चुन लिया और इसी वजह से आप पर मुख़्तलिफ़ क़िस्म की मेरहबानियां कीं और हिदायत से नवाज़ा, और आपकी हिफ़ाज़त का ज़िम्मा खुद उठाया। आपकी मईशत का मामला बग़ैर ज़ाहिरी अस्बाब के अपने क़ब्ज़ए क़ुदरत में लिया आपको हमेशा रिज़्क़ अल्लाह तआला की तरफ़ से हासिल रहा, कस्बे मईशत की ज़रूरत न रही। फ़रिश्ते का कलाम आप को अल्लाह तआला ने बराहे रास्त सुनने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाई जो किसी दूसरी औरत को मयस्सर न हुई।

दूसरी सिफ़त यानी आपको पाक सुथरा बनाया इसके भी चंद वजूह हैं कुफ़्र व मासीयत से आपको पाक रखा और आपको मर्दों के छूने से पाक रखा और आपको हैज़ से पाक रखा, क्योंकि ब्यान किया जाता है कि आपको हैज़ नहीं आता था और आपको बुरे अफ़आल और बुरी आदात से पाक रखा और आपको यहूदियों की तोहमत झूठ और उनकी चेमीगोईयों से बरी फ़रमाया।

बेहतर यह है कि मायने आम ही मुराद लिया जाये यानी आपको हिस्सी और मानवी और जिस्मानी तमाम उयूब से पाक बनाया।

तीसरी सिफ़त आज सारे जहां की औरतों पर तुझे पसंद किया, इस मसले में अहले इल्म के मुख़्तलिफ़ अक़वाल हैं कि हज़रत मरयम जहां की तमाम औरतों की सरदार हैं या कि आपको हज़रत ख़दीजा, हज़रत आयशा और हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हन पर फ़ज़ीलत हासिल नहीं।

आला हज़रत मौलाना अहमद रज़ा बरेलवी ने लफ़्ज़ आज बढ़ाकर अपना मुख़्तार क़ौल ब्यान कर दिया कि हज़रत मरयम को अपने ज़माने में तमाम औरतों पर अफ़ज़लियत हासिल थी हर ज़माना में हर औरत पर फ़ज़ीलत हासिल नहीं यही क़ौल इसी आयत के तहत महशई जलालैन का भी है वह फ़रमाते है कि आपको बग़ैर बाप के ईसा अलैहिस्सलाम का अता होना अगरचे आपकी खुसूसियत है लेकिन इससे यह लाज़िम नहीं आता कि इस फ़ज़ीलत की वजह उनको मुतलक़न फ़ज़ीलत हज़रत आयशा और हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हुमा पर हासिल हो जाए अगरचे ये फ़ज़ीलत इन दोनों को हासिल नहीं।

लेकिन इन दोनों के फ़ज़ाइल कसीर हैं जो अहादीस में मज़कूर हैं वह फ़ज़ाइल हज़रत मरयम को हासिल नहीं इसलिए फ़ातिमा और आयशा रज़ियल्लाहु अन्हुमा को तमाम जहान की इब्तेदाए आफ़रीनश से लेकर क़यमात तक आने वाली तमाम औरतों पर फ़ज़ीलत हासिल है यही मुहक़्क़ेक़ीन उलेमा किराम का मज़हब है।

हज़रम मरयम को नमाज़ अदा करने का हुक्म दिया ताकि आपको अल्लाह तआला का कुर्ब हासिल हो और मरातिब की बुलंदी हासिल हो सज्दा का हुक्म रुकू से पहले दिया इसलिए कि वाओ तर्तीब के

लिए नहीं आती यानी ज़िक्र करने से यह लाज़िम नहीं आता कि सज्दा अदा भी पहले किया जाए अलबत्ता पहले ज़िक्र करने की वजह यह हो सकती है कि नमाज़ के तमाम अरकान में से सज्दा अफ़ज़ल है, इसकी फ़ज़ीलत के पेशे नज़र ज़िक्र पहले कर दिया गया हो रुकू करने वालों के साथ रुकू करने का हुक्म देकर यह कहा गया है कि नमाज़ जमाअत से अदा करो और इस मसले की तरफ़ भी इशारा कर दिया गया है कि जिस शख़्स ने इमाम के साथ रुकू में नमाज़ को पा लिया उसे वह रकअत मिल गई।

एतेराज़ : हज़रत मरयम को जमाअत के साथ नमाज़ पढ़ने का हुक्म कैसे दिया गया हालांकि वह एक जवान लड़की थीं?

जवाब : यह भी मुमकिन है कि आप अपने हुजरे में नमाज़ अदा करती हों यह भी मुमकिन है कि आप बा पर्दा होकर मर्दों की सफ़ से अलग खड़ी होकर नमाज़ अदा करती हों, और यह भी हो सकता है कि बैतुल मुक़द्दस के तमाम ख़ुद्दाम आपके अक़र्बा हों यही वजह थी कि आपकी कफ़ालत का हर शख़्स तक़ाज़ा कर रहा था यह भी एहतेमाल है कि नमाज़ के वक़्त औरतें भी हाज़िर होती हों तो आप उनके साथ खड़ी होकर नमाज़ अदा करती हों।

हज़रत मरयम के पास जिब्राईल अलैहिस्सलाम का आना :

ब्यान कीजिए किताब में मरयम (का हाल) जब वह अलग हो गई अपने घर वालों से एक मकान में जो मश्रिक़ की जानिब था पस बना लिया उसने लोगों की तरफ़ से एक पर्दा फिर हमने भेजा उसकी तरफ़ अपने जिब्राईल को पस वह ज़ाहिर हुआ उसके सामने एक तंदुरुस्त इंसान की सूरत में।

हज़रत मरयम ने तमाम से अलग होकर बैतुल मुक़द्दस की शरक़ी जानिब को इख़्तेयार किया ताकि इबादत के लिए आपको ख़लवत हासिल हो सके।

इसी वजह से आपने अलाहदा पर्दा को भी इख़्तेयार किया कि कोई आपकी इबादत में ख़लल अंदाज़ न हो सके मशरक़ी जानिब को इख़्तेयार करना हो सकता है सिर्फ़ इत्तेफ़ाक़न ऐसा हुआ हो कोई ख़ास इरादा न हो।

और यह भी हो सकता है कि अल्लाह तआला ने आपके दिल में इलक़ा किया हो कि मशरक़ी जानिब को इख़्तेयार करो क्योंकि–

अल्लाह तआला ने अपने इल्मे अज़ली अबदी की वजह से मुनासिब यही समझा कि यह नूरे ईसवी के ज़हूर का वक़्त है इसलिए मुनासिब यही है कि नूरे मानवी का ज़हूर नूरे हिस्सी के ज़हूर के बिल्कुल सामने हो।

जिन हज़रात का क़ौल यह है कि हज़तर मरयम हैज़ से पाक थीं यानी उनको हैज़ नहीं आता था उनके नज़दीक आयते करीमा का मक़सद यही है कि जो ब्यान किया जा चुका है कुछ हज़रात का क़ौल यह है कि आपको हैज़ आता था आप मस्जिद की ख़िदमत के लिए वक़्फ़ थीं मस्जिद में रहती थीं लेकिन हैज़ के दिनों में अपनी ख़ाला के घर (जो हज़रत ज़क्रिया अलैहिस्सलाम की जौज़ा थीं) आ जाती थीं और जब हैज़ से पाक हो जाती थीं तो मस्जिद में लौट आती थीं आप को हैज़ के बाद गुस्ल ख़ाना में जाते हुए एक शख़्स नज़र आया जो बड़ा वजीह था चमकदार ख़ूबसूरत उसका रंग था और उसके घुंघरियाले बाल थे यह ज़िब्राईल अलैहिस्सलाम थे रब तआला ने फ़रमाया:

हमने उसकी तरफ़ रूहुल अमीन को भेजा।

चूंकि जिब्राईल अलैहिस्सलाम अंबियाए किरमा अलैहिमुस्सलाम के पास वही लाते रहे जो दीन के इहया का सबब बनती रही इसलिए आपको भी रुह कह दिया गया आप भी बज़रिये वही इहयाए दीन का ज़रिया बने जिब्राईल अलैहिस्सलाम आपके पास कामिल इंसानी शक्ल में थे।

यानी इंसानी औसाफ़ से कोई भी आपमें कमी नज़रे आती थी बल्कि कामिल इंसान नज़र आते थे ख़्याल रहे कि जिब्राईल अलैहिस्सलाम कामिल बशर नज़र आने के बावजूद भी नूर थे जिब्राईल अलैहिस्सलाम हक़ीक़त में नूर और ज़ाहिर में बशर थे नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हक़ीक़त में नूर और ज़ाहिर में बशर हों तो इसमें कौन सी मुश्किल दरपेश है बात सिर्फ़ ईमान की है।

हज़रत मरयम का ख़ौफ़ :

बोली मैं तुझसे रहमान की पनाह मांगती हूं अगर तुझे डर है।

एक अजनबी इंसान को देखकर आप पर ख़ौफ़ तारी हो गया कि मालूम नहीं कि यह इंसान मेरे पास कहां से किस इरादे से आ गया? फ़ौरन कहा ख़ुदा की पनाह अगर तू मुत्तक़ी शख़्स है रब का तुझे कोई ख़ौफ़ है तो दूर हो मेरे पर्दे में ख़लल अंदाज़ न बन।

जिब्राईल अलैहिस्सलाम का तसल्ली देना :

बोला मैं तेरे रब का भेजा हुआ हूं कि मैं तुझे एक सुथरा बेटा दूं।

(जिब्राईल अलैहिस्सलाम का यह कहना कि मैं तुम्हारे रब का भेजा हूं इसका मतलब यह था) कि हज़रत मरयम का ख़ौफ़ ज़ाइल हो जाये।

यानी मुझे अल्लाह तआला ने तुम्हारे उमूर का मालिक बनाकर और तुम्हारी मसलेहत का नाज़िर बनाकर भेजा है जो तुमने मुझ पर शर का वहम किया है वह मुझसे कभी तवक़्क़ो नहीं की जा सकती।

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा से मरवी है कि जब हज़रत मरयम ने रब की पनाह तलब की तो जिब्राईल अलैहिस्सलाम ने मुस्कुरा कर कहा मैं तुम्हारी क़मीस में फूंक मारकर तुम्हें पाकीज़ा और सुथरा बेटा देने के लिए आया हूं यानी ऐसा बेटा अता करने के लिए जो गुनाहों की आलूदगी से पाक व साफ़ होगा उसके नेक आमाल में रोज़ बरोज़ इज़ाफ़ा होता रहेगा और मक़ाम नबुव्वत पर फ़ायज़ होगा।

फ़ायदा : हक़ीक़त में फ़रज़ंद अता फ़रमाने वाला अल्लाह तआला है लेकिन जिब्राईल अलैहिस्सलाम चूंकि इस अता का सबब और ज़रिया हैं इसलिए बतौर मजाज़ फ़रज़ंद देने की निस्बत अपनी तरफ़ कर दी इससे मालूम हुआ कि अल्लाह तआला की नेमतों में से अगर किसी नेमत के मिलने को उसके ज़रिये और वास्ता की तरफ़ मंसूब किया जाए बशर्ते कि यह यक़ीन हो कि मुनइमे हक़ीक़ी अल्लाह तआला है तो ऐसी निस्बत दुरुस्त है इससे इंसान मुश्रिक नहीं हो जाता जिस तरह आज कल बाज़ मुतशद्दिद ख़्याल करते हैं।

हज़रत मरयम की हैरत और बढ़ गई:

बोली मेरा लड़का कैसे होगा मुझे तो किसी आदमी ने हाथ नहीं लगाया और न ही मैं बदकार हूं?

आपको यह सुनकर इतना ज़्यादा ताज्जुब हुआ और आप ने इसे अक़्ल से बईद समझते हुए यह कहा मेरा बेटा कैसे होगा? आपको हैरानगी की वजह से इसकी तरफ़ तवज्जोह ही नहीं रही कि मुझे एक फ़रिश्ता कह रहा है कि मैं तुम्हें एक सुथरा बेटा देने के लिए आया हूं।

आपने यही समझा कि बेटा तो आम आदत के मुताबिक़ ही पैदा हो सकता है या तो जायज़ निकाह से या बदकारी से नीज़। आप इबादत में मसरूफ़ होने की वजह से इस तरफ़ तवज्जोह ही न कर सकी कि रब की कुदरत से तो कुछ बईद नहीं।

हज़रत जिब्राईल अलैहिस्सलाम का जवाब :

कहा यूं ही है तेरे रब ने फ़रमाया है कि यह मुझे आसान है और इसलिए कि हम उसे लोगों के वास्ते निशानी करें और अपनी तरफ़ से एक रहमत और इस काम का फ़ैसला किया जा चुका है।

बग़ैर बाप के बेटे को पैदा करने में अल्लाह तआला की कुदरत का दख़ल होगा उसकी कुदरत के सामने कोई मुश्किल नहीं और उसको लोगों के लिए निशानी बनाया जा रहा है कि यह अल्लाह तआला की कामिल कुदरत को समझें और यह लोगों की रहनुमाई के लिए रब की अज़ीम रहमत है और रब के इल्म अज़ली के मुताबिक़ इस फ़ैसला को लौहे महफ़ूज़ पर लिखा जा चुका है इस फ़ैसले में किसी क़िस्म की तबदीली नहीं हो सकती।

सूरः आले इमरान में इसी सवाल का जवाब यह दिया :

फ़रमाया बात यूं ही है (जैसे तुम कहती हो लेकिन) अल्लाह तआला पैदा फ़रमाता है जो चाहता है जब फ़ैसला फ़रमाता है किसी काम (के करने) का तो बस इतना ही कहता है उसे कि हो जा तो फ़ौरन हो जाता है।

फ़ायदा : एक चीज़ यहां क़ाबिले ग़ौर है कि हज़रत ज़क्रिया अलैहिस्सलाम की हैरानी के मौक़े पर फ़रमाया।

"अल्लाह तआला पैदा फ़रमाता है" जो चाहता है जवाब में यह तफ़ावुत (फ़र्क़) क्यों? इस तफ़ावुत की वजह समझने के लिए फ़ेअल और ख़ल्क़ का मानवी फ़र्क़ मलहूज़ रखना अज़ बस ज़रूरी है।

यानी ऐसे वाक़ियात जो अपने अस्बाब के पाए जाने से वक़ूअ पज़ीर होते हैं उन्हें आम तौर पर लफ़्ज़ फ़ेअल से ताबीर किया जाता है जो वाक़ियात ज़ाहिरी अस्बाब के बग़ैर रुनुमा होते हैं उनकी ताबीर आम तौर पर लफ़्ज़ ख़ल्क़ से की जाती है।

हज़रत यहया अलैहिस्सलाम की विलादत चूंकि मां–बाप की वजह से थी और यही विलादत का सबब आदी (आदत के मुताबिक़) है इसलिए वहां फ़ेअल फ़रमाया। हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की विलादत सिर्फ़ मां से हुई और वालिद जो सबब आदी है मफ़कूद था (यानी नहीं था) इसलिए लफ़्ज़ ख़ल्क़ से ब्यान किया।

हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम शिकमे मादर में :

पस वह हामिला हो गई उस (बच्चा) से फिर वह चली गई उसे (शिकम में) लिए किसी दूर जगह।

हज़रत मरयम बनी इस्राईल में नेक ज़ाहिदा मशहूर थीं और सबको यह इल्म था कि आपकी वालदा ने नज़र मानी जो कबूल कर ली गई आपकी तर्बियत में अंबियाए किराम सुल्हा हरीस थे वह कफ़ालत हज़रत ज़क्रिया अलैहिस्सलाम को हासिल हुई आपके पास अल्लाह तआला की तरफ़ से रिज़्क़ आता रहा। इन वाक़ियात की शोहरत के पेशे नज़र आपको बहुत परेशानी लाहक़ हुई कि मैं रब की इस कुदरत से लोगों को कैसे मुतमईन करूंगी लोग मेरी बात कैसे मानेंगे इसी वजह से आपने बैतुल मुक़द्दस के हुजरे को छोड़कर अलाहदा दूर दराज़ जगह को इख़्तेयार किया ताकि वक़्ती तौर पर कोई मुत्तला न हो सके।

दर्दे ज़ेह के वक़्त परेशानी में इज़ाफ़ा :

पस ले आया इन्हें दर्दे ज़ेह (पैदाईश के वक़्त का दर्द) एक खजूर के तने के पास (बसद हसरत व यास) कहने लगीं काश मैं मर गई होती इससे पहले और बिल्कुल फ़रामोश कर दी गयी होती।

"अजा" मंकूल है "जा" से लेकिन सिर्फ़ ले आया पहुंचाना मायने मक़सूद नहीं होता इसके लिए दूसरे अल्फ़ाज़ इस्तेमाल होते हैं जब किसी को कहीं जाने के लिए मजबूर कर दिया जाए उस वक़्त लफ़्ज़ "जा" इस्तेमाल होता है यानी आपको दर्देज़ेह की तकलीफ़ की वजह से जो हसरत हासिल थी उसने एक खजूर के दरख़्त के पास के लिए मजबूर कर दिया था और इस वजह से भी आपने खजूर के दरख़्त का रुख़ किया ताकि बातें करने वालों से पर्दा पोशी रहे ज़्यादा यही फ़िक्र दामनगीर थी।

तफ़सीर कश्शाफ़ में ज़िक्र किया गया है कि खजूर का दरख़्त सिर्फ़ तना था ऊपर से काटा हुआ खुश्क और फल भी नहीं देता था अलबत्ता दरख़्त इतना मशहूर था कि सिर्फ़ "जिज़ इन नख़लति" कहने से यही मुराद होता था।

अल्लाह तआला ने जिब्राईल अलैहिस्सलाम को हज़रत मरयम के पास भेजकर उनके गिरेबान में फूंकने का हुक्म दिया हज़रत मरयम को बताया गया था कि अल्लाह तआला को तुम्हें बेटा अता करना है तुम्हें और तुम्हारे बेटे को जहान वालों के लिए निशानी बनाना है। लेकिन फिर भी आप कह रही हैं काश मैं इससे पहले मर चुकी होती। आख़िर इतनी बेक़रारी की क्या वजह थी? वजह वाज़ेह है कि यह एहसास तेज़ तर हो गया कि अब तक लोगों की नज़रों से छुपी रहीं और अब बच्चा पैदा होगा तो उसे कहां छिपाऊंगी और लोगों को क्या मुंह दिखाऊंगी शिद्दते बेचारगी और दरमांदगी में यह अल्फ़ाज़ ज़बान पर आ गये। रब पर कोई शिकवा नहीं था बल्कि लोगों की तानाज़नी की फ़िक्र थी और ज़्यादा तर ना समझ लोगों को समझाने की फ़िक्र थी नीज़ रब से ख़ौफ़ की हालत में इस तरह के अल्फ़ाज़ सालेहीन से अदा होते रहे हैं जैसा कि हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु ने एक परिन्दे को दरख़्त पर बैठे हुए देखा तो आपने फ़रमाया ऐ परिन्दे तू कितना ही खुश बख़्त है कि दरख़्त पर बैठकर इसका फल खा रहा है।

काश मैं भी कोई फल होता कि मुझे परिन्दे खा जाते आपका यह कलाम ख़ौफ़े इलाही की वजह से था। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने घास का एक तिनका हाथ में लिया और फ़रमाया।

काश मैं भी घास का एक तिनका ही होता काश मैं कुछ भी न होता।

आपका यह इरशाद भी अल्लाह तआला के ख़ौफ़ की वजह से ही था।

हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने यौमे जमल में फ़रमाया।

काश मैं आज से दस साल पहले मर चुका होता। आपका यह कहना ज़ाहिरी फ़ित्ना से परेशानी की वजह से था।

हज़रत बिलाल रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमायाः

काश बिलाल को इसकी मां ने जना ही न होता, आपने इस कलाम से अपने कमाले इज्ज़ का इज़हार किया है।

अल्लामा आलूसी रहमतुल्लाह अलैहि फ़रमाते हैं कि जिब्राईल अलैहिस्सलाम ने आपके पास अल्लाह तआला का पैग़ाम पहुंचा दिया था कि फिर भी आप इस क़िस्म के अल्फ़ाज़ अपनी ज़बान पर ला रही हैं इसकी वजह यह थी कि—

लोगों से शर्म के मारे और उनकी मलामत करने के ख़ौफ़ के पेशे नज़र आपकी यह बे क़रारी थी और दूसरी वजह यह थी।

कि आपको यह ख़ौफ़ दामन गीर था कि बच्चे की पैदाईश पर लोग मेरे मुताल्लिक़ झूठा कलाम करने और मुझ पर बोहतान लगाने की वजह से गुनाहगार होंगे।

सुब्हानल्लाह कितना अज़ीम तक़वा है कि फ़िक्र भी लाहक़ है तो उन लोगों की जिन से ख़दशा है कि वह तोहमत लगायेंगे और इस फ़ेअल की वजह से गुनाहगार हो जायेंगे। शैख़ सअदी रहमतुल्लाह अलैहि फ़रमाते हैं।

मैंने सुना है कि राहे ख़ुदा के मर्द (नेक लोग) दुश्मनों के दिल भी तंग नहीं किया करते।

इस क़िस्म की सूरत में मौत की तमन्ना जायज़ है अलबत्ता मर्ज़, फ़ाक़ा, दुश्मन के मज़ालिम, दुनिया के मसाइब व आलाम से तंग आकर मौत की तमन्ना मना है। मुस्लिम शरीफ़ में है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः

कोई शख़्स मौत की तमन्ना तकलीफ़ की वजह से न करे अगर कोई मौत की तमन्ना ज़रूर करना ही चाहता है तो यह कहे ऐ अल्लाह तआला मुझे ज़िन्दा रख अगर मेरे लिए मेरी ज़िन्दगी बेहतर है और मुझे मौत अता कर अगर मेरे लिए मेरा मरना बेहतर है।

ख़्याल रहे कि अगर किसी शख़्स ने हज़रत मरयम के मुताल्लिक़ यह गुमान किया कि उन्होंने दर्दे ज़ेह और दुनियावी तकालीफ़ के पेशे नज़र मौत की तमन्ना की थी।

खाने पीने का इंतेज़ाम और मज़ीद तसल्ली :

तो उसे इसके नीचे से पुकारा कि ग़म न खा, बेशक तेरे रब ने तेरे नीचे एक नहर बहा दी है और खजूर की जड़ पकड़ कर अपनी तरफ़ हिला, तुझ पर ताज़ी पक्की खजूरे गिरेंगी तू खा और पी और आंख ठंडी रख फिर अगर तू किसी आदमी को देखे तो कह देना मैंने आज रहमान का रोज़ा माना है तो आज हरगिज़ किसी आदमी से बात न करूंगी।

आपको वादी के नशेब से आवाज़ आई तुम ग़म न करो, हमने तुम्हारी जगह से नशे जगह की तरफ़ एक नहर बहा दी जो तुम्हारे हुक्म के मातेहत होगी (जिब्राईल अलैहिस्सलाम ने पांव की ठोकर मारी तो यह नहर जारी हुई या ईसा अलैहिस्सलाम ने पैदा होने के बाद ऐड़ी रगड़ी तो उससे जारी हुई) खजूर का ख़ुश्क तना जिसका सर कटा हुआ है मौसम भी सर्दियों का है वह इन हालात में अगरचे फल नहीं देता लेकिन तुम इसे अपनी तरफ़ हिलाओ तो वह तुम्हें पकी हुई ताज़ा खजूरें देगा खाओ और पियो यानी खजूरें खाओ जो पैदाईश के वक़्त जच्चा और बच्चा दोनों के लिए बहुत मुफ़ीद गिज़ा है और जारी शुदा चश्मा से पानी पियो, इसी से अंदाज़ा लगा लो कि अल्लाह तआला ने जिस तरह तुम्हारे खाने और पीने का इंतेज़ाम फ़रमा दिया है उसी तरह वह ख़तरात जो तुम्हारे ज़ेहन में आ रहे हैं वह भी ज़ायल कर देगा तुम्हारे नफ़्स को इत्मीनान हासिल होगा, आंखों को ठंडक हासिल होगी, इसलिए हुक्म दिया नफ़्स को मुतमईन रखो और आंखों को ठंडी रखो।

बेशक आंख जब उस चीज़ को देखती है जिससे नफ़्स को ख़ुशी हासिल होती हो तो इससे आंख को भी सकून मिलता है।

इब्ने ज़ैद से एक रिवायत यह भी मिलती है कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम ने पैदा होते ही वालदा को तसल्ली देते हुए कहा।

ग़म न खा। आपने कहा कैसे ग़म न खाऊं जब तुम मेरे साथ होगे। मेरा ख़ाविंद कोई नहीं और मैं किसी की लौंडी भी नहीं लोगों के सामने क्या उज़्र पेश करूंगी? काश मैं इससे पहले ही मर जाती तो ईसा अलैहिस्सलाम ने कहा।

मेरा कलाम ही तुम्हें किफ़ायत कर जायेगा।

रब तआला ने आपको हुक्म दिया कि जब तुम बच्चे को साथ लेकर जाओ तो कोई भी तुम्हें मिले तो तुम इशारे से उसे बताना कि मैंने नज़र मानी हुई है कि रब तआला की रज़ामंदी के लिए रोज़ा रखूंगी और किसी आदमी से कलाम नहीं करूंगी।

आपको यह हुक्म दिया गया इसकी वजह ब्यान करते हुए अहले इल्म हज़रात ने ब्यान किया कि बेवकूफ़ों से आपको कलाम करने की ज़रूरत पेश न आये बल्कि ईसा अलैहिस्सलाम ख़ुद ही कलाम करके उनके तानों का जवाब दें आप का कलाम करना और उन्हें जवाब देना तानों के ख़त्म करने में नस्से क़तई का दर्जा इसे हासिल होगा।

वापसी पर लोगों की तानाज़नी :

तो इसे गोद में लिए अपनी क़ौम के पास आई उन्होंने कहा ऐ मरयम बेशक तूने बहुत ही बुरा काम किया है ऐ हारुन की बहन तेरा बाप बुरा आदमी न था और न तेरी मां बदकार थी, आप जब चलने फिरने के क़ाबिल हो गई तो अपने फ़रज़ंद को गोद में उठाकर अपने घर लौटीं जब कुंबा वालों ने देखा कि कुंवारी मरयम बच्चा उठाए आ रही है तो उन पर सकते का आलम तारी हो गया (उन्होंने रोना शुरू कर दिया) और बहुत ज़्यादा शरमिन्दगी से वह सिर्फ़ इतना ही कह सके होंगे। या मरयम..........

वहब बिन मुनब्बेह रहमतुल्लाह अलैहि रिवायत करते हैं कि जब आप बच्चे को अपनी क़ौम के पास

ले आई तो बनी इस्राईल में यह बात मशहूर हो गई। मलामत करने के लिए मर्द व ज़न (मर्द और औरतें) दौड़े आये एक औरत ने थप्पड़ मारने के लिए हाथ उठाया तो वह सूख गया। एक मर्द ने कहा यह तो ज़िनाकार है तो वह गूंगा हो गया। यह देखकर किसी को मारने या बुरा भला कहने की हिम्मत न हुई और बड़े नर्म अंदाज़ में इतना ही कह सके।

खुद सोचिये अगर किसी शादी शुदा औरत के हां बच्चा पैदा हो तो क्या उसकी आव भगत यूं की जाती है? लफ़्ज़ "फ़राया" की तहक़ीक़ करते हुए साहबे ताजुल उरूस लिखते हैं:

यानी फ़री जो ग़नी का हम वज़न है जौहरी ने इसके दो मायने ज़िक्र किये हैं।

गढ़ा हुआ बनावटी और बहुत बड़ा। इमाम राग़िब रहमतुल्लाह अलैहि ने इसका मायने अजीब हैरान कुन किया है।

लेकिन अल्लामा इब्ने हब्बान ने इसका मायने बताया है यानी बहुत क़वीह फ़ेअल है।

अल्लामा आलूसी रहमतुल्लाह अलैहि ने इसकी वज़ाहत करते हुए लिखा है:

हर बड़े काम के लिए ख़्वाह वह बुरा हो या अच्छा क़ौल हो या फ़ेअल यह लफ़्ज़ (फ़री) इस्तेमाल होता है। क्योंकि यह वज़ाहत मज़कूरा बाला सब मायने पर हावी है और मौक़ा भी मुनासिब है हज़रत मरयम के एक भाई का नाम हारुन था इसलिए क़ौम ने आपको (ऐ हारुन की बहन) कहकर पुकारा। सहीह हदीस से भी इसकी ताइद होती है। सही मुस्लिम में है कि मुग़ीरा बिन शअबा रज़ियल्लाहु अन्हु जब नजरान गये तो वहां के ईसाईयों ने उनसे पूछा कि कुरआन में हज़रत मरयम को हारून की बहन कहा गया हालांकि हारुन अलैहिस्सलाम मरयम अलैहस्सलाम से सदहा साल पहले गुज़रे हैं वह कोई जवाब न दे सके जब वापस आए तो बारगाहे रिसालत में इस वाक़िये को ब्यान किया हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया।

कि बनी इस्राईल का दस्तूर था कि वह अपने बच्चों के नाम अंबियाए किराम अलैहिमुस्सलाम के और पहले के बुजुर्गों के नाम पर रखा करते थे इससे पता चलता है कि हज़रत मरयम के एक भाई थे जिनका नाम हस्बे दस्तूर हुसूले बरकत के लिए हज़रत हारुन अलैहिस्सलाम के नाम पर रखा गया था।

जिन अल्फ़ाज़ से लोग मरयम को आर दिला रहे हैं वह यह नहीं कि तुम्हारा बाप तो बड़ा सहीहुल अक़ीदा था तुम्हारी मां तो अपने नज़रियात में बड़ी पुख़्ता थी, तुमने यह बे दीन और बद एतेक़ाद लौंडा कैसे जना? बल्कि यह कह रहे हैं कि तेरा बाप बदकार न था और तेरी मां बदकार न थी क्या किसी शादी शुदा औरत को यूं आर दिलाई जाती थीं?

हज़रत मरयम ने इशारा बच्चे की तरफ़ कर दिया:

इस पर मरयम ने बच्चे की तरफ़ इशारा किया वह बोले हम कैसे बात करें इससे जो पालने में बच्चा है।

हज़रत मरयम को रब तआला का हुक्म था कि आपको किसी से कलाम नहीं करना बल्कि इशारा से बताना है कि मैं ने रब तआला के लिए रोज़ा की नज़र मानी हुई है किसी से बोलना नहीं इसी इरशाद

के मुताबिक आपने ईसा अलैहिस्सलाम की तरफ़ इशारा कर दिया कि इसी से कलाम करके पूछ लो।

बाज़ रिवायात में है कि आपने जब बच्चे की तरफ़ इशारा किया कि इससे कलाम करो तो वह एक दूसरे को कहने लगे कि यह तो हमारे साथ मज़ाक कर रही है इससे हमारी तौहीन हो रही है हमें घटिया समझ रही है यह तो इसका जुर्म ज़िना के जुर्म से बड़ा बुरा है।

अल–महदि के मुख़्तलिफ़ मायने ब्यान किये गये हैं। मां की गोद, गहवारा चारपाई, वह जगह जहां बच्चा क़रार पकड़े हुए है।

आला हज़रत मौलाना अहमद रज़ा ख़ां बरेलवी रहमतुल्लाह अलैहि का तर्जमा इन तमाम को शामिल है। (वह बच्चा जो पालने में है।)

उन लोगों ने बतौर इंकार और ताज्जुब के कहा हम इस बच्चे से कैसे कलाम करें? जो अभी मां की गोद में गहवारा में है।

इल्मी नुक्ता :

बज़ाहिर आयते करीमा में एतेराज़ यह वारिद होता है कि "कान" ज़माना माज़ी" दलालत करता है जिसका मायने यह होगा कि हम इससे कैसे कलाम करें जो गहवारे में होता था यह कोई ताज्जुब की बात नहीं, हर एक बच्चा पहले मां की गोद या गहवारे में होता है जब वह बड़ा हो जाता है उससे कलाम किया जाता है।

इसका जवाब यह है कि यहां मुराद ज़माना माज़ी मुबहम है ख़्वाह क़रीब हो या बईद, यहां से मुराद क़रीब लिया गया है यानी अभी चंद लम्हे पहले जिसे हम तुम्हारी गोद में देख रहे हैं इससे कैसे कलाम करें? हम ने आज तक ऐसे बच्चों से कभी कलाम नहीं किया और न ही ऐसी उम्र के बच्चों में जवाब देने की ताक़त होती है। ऐ मरयम् बच्चे की तरफ़ तुम्हारा इशारा करना सरासर मज़ाक़ ही नज़र आता है।

और जवाब यह दिया गया कि माज़ी से हाल की हिकायत ब्यान की जा रही है। मन है मौसूफ़ा अब मायने यह होगा हम कैसे कलाम करें उन बच्चों से जो मां की गोद या गहवारे में होने के वस्फ़ से मुत्तसिफ़ हैं? हमने आज तक ऐसे बच्चों से कलाम नहीं किया, तो इससे कैसे कलाम करें माज़ी से हाल की तरफ़ अदूल में तसव्वुर लाना और इस्तेमरार मक़सूद है।

और यह भी हो सकता है कि "कान" ज़ाइद हो सिर्फ़ ताकीद के लिए आया हो, ज़माने पर इसकी कोई दलालत न हो और जैसा हाल हो, अब मायने यह होगा कि हम इससे कैसे कलाम करें जो अभी पालने में है हाल होने इसके कि वह बच्चा है।

और यह सूरत भी मुमकिन है कि "मन" शर्तिया हो और मायने यह हो।

जो पालने में है उससे हम कैसे कलाम करें?

यह ऐसे ही है जैसे कहा जाता है।

मैं इसे कैसे नसीहत करूं जिसको मेरी नीसहत पर अमल नहीं करना।

इस सूरत में माज़ी का मायने मुस्तक़बिल के है लिहाज़ा कोई एतेराज़ नहीं वारिद होगा।

हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम का बचपन में कलाम करना :

बच्चे ने फ़रमाया मैं हूं अल्लाह तआला का बंदा उसने मुझे किताब दी और मुझे ग़ैब की ख़बरें बताने वाला नबी किया और उसने मुझे मुबारक किया मैं कहीं हूं और मुझे नमाज़ व ज़कात की ताकीद फ़रमाई। जब तक ज़िन्दा रहूं और अपनी मां से अच्छा सलूक करने वाला और मुझे ज़बरदस्त बदबख़्त न किया और सलामती मुझ पर जिस दिन मैं पैदा हुआ और जिस दिन में मरूं और जिस दिन ज़िंदा उठाया जाऊं।

हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम दूध पी रहे थे, जब आपने बनी इस्राईल का कलाम सुना कि वह कह रहे हैं बच्चे से कैसे कलाम करें? तो आपने दूध पीना छोड़ दिया और उनकी तरफ़ मुतावज्जेह हुए बायें हाथ पर सहारा लगाकर अपनी शहादत की उंगली से इशारा करके कलाम करना शुरू कर दिया सबसे पहले ऐलान यह फ़रमाया।

मैं अल्लाह तआला का बंदा हूं।

चूंकि सालिकीन का मक़ाम ही यह है कि वह सबसे पहले अपनी उबूदियत का इज़हार करते हैं और इस कलाम में उन लोगों का रद् भी पाया गया है जिन्हें आको रब कहना था।

सुब्हानल्लाह नबी का कितना अज़ीम मक़ाम है? कि अल्लाह तआला ने बचपन में ही यह इल्म अता फ़रमा दिया कि तुम्हें लोग ख़ुदा मानेंगे आपने अपनी उबूदियत का एतेराफ़ करके वाज़ेह तौर पर फ़रमा दिया कि मैं अल्लाह तआला का बंदा हूं मुझे कोई माबूद मानने की हिमाक़त न करे।

उसने मुझे किताब दी और मुझे नबी बनाया।

आपके इस इरशाद का मतलब यह था।

कि बेशक अल्लाह तआला मुझे मबऊस फ़रमाएगा यानी ऐलाने नबुव्वत का हुक्म देगा आपने जब यह कलाम मुकम्मल किया तो इसके बाद ख़ामोश हो गये और आम बच्चों के हाल की तरफ़ लौट कर आ गये फिर जब आपकी उम्र तीस साल की हुई तो अल्लाह तआला ने आपको नबी बनाकर मबऊस फ़रमाया इब्ने अबी हातिम ने हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत की।

आपको अल्लाह तआला ने मां के पेट में ही इंजील पढ़ा दी और नबुव्वत अता फ़रमा दी।

असल ततबीक़ की वजह यह है कि आपको नबुव्वत या किताब अता तो उसी वक़्त फ़रमा दी जब आप मां के पेट में थे अलबत्ता लोगों को तबलीग़ करने और ऐलाने नबुव्वत का हुक्म बाद में दिया गया, तमाम अंबियाए किराम की सूरते हाल यही है।

मुझे बर्कत वाला बनाया है मैं जहां कहीं भी हूं।

यानी मुझे अल्लाह तआला ने दीन पर क़रार पकड़ने वाला बनाया और मुझे लोगों को सिखाने वाला बनाया है कि मैं लोगों को दीन की तालीम दूं इनको राहे हक़ की तरफ़ बुलाऊं, यानी जब वह अपनी ख़्वाहिशाते नफ़सानिया की वजह से भटक जायें तो मैं इन्हें सीधी राह दिखाऊं।

एक रिवायत में है कि हज़रत मरयम हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम को एक कातिब के पास ले गई और कहा कि इस बच्चे को लिखना सिखाना है लेकिन शर्त यह है कि इसको मारना नहीं, मोअल्लिम ने आपको कहा कि लिखो आपने कहा मैं क्या लिखूं उसने कहा अबजद (अलीफ़, बे, ते बग़ैरह) लिखो, ईसा अलैहिस्सलाम ने सर उठाया और फ़रमाया क्या तुम जानते हो कि अबजद क्या है? मोअल्लिम ने अपना कोड़ा आपको मारने के लिए उठाया तो आपने फ़रमाया ऐ मोअद्दिब (अदब सिखाने वाले) मुझे मारें नहीं अगर आपको इल्म नहीं तो मुझसे पूछें मैं आपको बताता हूं।

अलिफ़ : अल्लाह की नेमतें से लिया हुआ है।

बे : अल्लाह की ख़ूबसूरती से।

जीम : अल्लाह का जमाल और

द: अल्लाह तआला के हुकूक़ उसके सुपुर्द करने से माख़ूज़ है।

और बर्कत वाला बनाने का मक़सद यह भी है कि मुझे अल्लाह तआला ने बुलंद मर्तबा अता फ़रमाया तमाम अहवाल में मुझे ग़ालिब बनाया जब तक मैं दुनिया में रहूंगा मुझे अल्लाह तआला दलाइल में ग़ैरों पर ग़ालिब रखेगा और जब दुनिया से जाने का मेरा वक़्त आ जायेगा तो मुझे ज़िन्दा ही आमसानों पर उठा लिया जायेगा और मेरी बर्कत के असरात का लोगों को फ़ायदा होगा कि मेरी दुआ से मुर्दे ज़िन्दा हो जायेंगे, मादर ज़ाद अंधे बीना (नज़र वाले) हो जायेंगे और बर्स के मर्ज़ वाले सेहतयाब हो जायेंगे।

मुझे नमाज़ और ज़कात की ताकीद की जब में ज़िन्दा रहूं।

यानी रब तआला ने मुझे हुक्म दिया कि मैं बालिग़ होने के बाद नमाज़ अदा करूं और लोगों को ज़कात अदा करने की नसीहत करूं।

अंबियाए किराम अलैहिमुस्सलाम पर ज़कात लाज़िम नहीं होती क्योंकि अल्लाह तआला ने इनको दुनिया के माल से पाक रखा है (अगर इनके पास कोई माल आ भी जाए तो वह तमाम अल्लाह तआला की राह में ख़र्च कर देते हैं एक साल जमा करके रखते ही नहीं कि उन पर ज़कात लाज़िम आए) इसी वजह से उनके माल को बतौर विरासत तक़सीम नहीं किया जाता क्योंकि उनके हाथ में माल दरहक़ीक़त अल्लाह तआला का माल होता है वह उसके मालिक ही नहीं होते।

और मुझे मां से अच्छा सलूक करने का हुक्म दिया।

इस कलाम से इशारा था कि मेरी मां पाक दामन है इसलिए अल्लाह तआला ने मासूम रसूल को उसकी फ़रमांबर्दारी का हुक्म दिया अगर माअज़ल्लाह इसमें कोई ऐब होता तो मासूम रसूल को उसकी ताज़ीम का कभी हुक्म न दिया जाता।

मुझे ज़बरदस्त बद बख़्त नहीं बनाया।

यानी अल्लाह तआला ने मुझे मुतकब्बिर नहीं बनाया बल्कि ख़ुज़ूअ करने वाला और अपनी मां के सामने आजिज़ी का इज़्हार करने वाला बनाया है अगर मैं मुतकब्बिर होता तो नाफ़रमान और बदबख़्त होता। एक रिवायत में आता है कि ईसा अलैहिस्लसाम ने फ़रमाया:

मेरा दिल नर्म और मैं अपने ख़्याल में अपने आपको छोटा समझता हूं।

यानी इज्ज़ का इज़हार करता हूं बाज़ उलेमा ने फ़रमायाः

मां–बाप का नाफ़रमान मुतकब्बिर और बदबख़्त ही होता है।

इन हज़रात ने अपने इस क़ौल पर यही आयते करीमा बतौर दलील पेश की।

बद खुल्क़ को तुम ज़रूर इतराने वाला, बड़ाई मारने वाला पाओगे और ऐसे लोगों से अल्लाह तआला मुहब्बत नहीं करता।

बेशक अल्लाह तआला इतराने वाले बड़ाई मारने वाले को पसंद नहीं करता।

और वही सलामती मुझ पर जिस दिन में पैदा हुआ और जिस दिन मैं मरूं और जिस दिन ज़िन्दा उठाया जाऊं।

आला हज़रत का तर्जमा इस क़ौल के मुताबिक़ है।

यानी अलिफ़ लाम अहदे ख़ारजी है और मुराद यह है कि जिस पर सलामती का यहया अलैहिस्सलाम के लिए रब तआला ने ख़ुद तीन मक़ामों के लिए ज़िक्र फ़रमाया है वही सलामती मुझ पर भी इन तीन वक़्तों में है।

साहबे कश्शाफ़ का क़ौल यह है कि यह अलिफ़ लाम तारीफ़ का एवज़ है हज़रत मरयम पर लगाई गई तोहमत का और उन पर किये गये लअन व तअन का यानी अब मतलब यह होगा कि तुमने तो मेरी वालदा पर लअन तअन किया और उन पर तोहमत लगाई लेकिन इसके बदले रब तआला ने मुझे इस अज़ीम इनाम से नवाज़ा है कि मुझे पैदाईश मौत और ज़िन्दा उठाये जाने के वक़्त सलामती अता फ़रमा दी। अल्लामा राज़ी फ़रमाते हैं:

तहक़ीक़ यह है कि लाम इस्तिग़राक़ के लिए है।

अब मतलब यह है कि इन तीन वक़्तों में मुझ पर हर क़िस्म की सलामती है यानी अल्लाह तआला ने मुझे और मेरे तुफ़ैल मेरे मानने वालों को हर क़िस्म की सलामती अता फ़रमा दी है मेरे दुश्मनों के लिए सिवाए लानत के कुछ भी नहीं ईसा अलैहिस्सलाम ने कहा।

सलामती हो उस पर जिसने ताबेदारी की इसी से ज़िमनन यह ख़ुद समझ में आ गया कि यानी जिन्होंने तकज़ीब की और राहे हक़ से फिर गये उन पर अज़ाब है।

अंबियाए किराम इस तरह तारीज़न (इशारे से काफ़िरों को अज़ाब के मुताल्लिक़ बताना) कलाम फ़रमाते रहे क्योंकि किसी को समझाने और सोचने का मौक़ा फ़राहम करने के लिए बेहतर सूरत है। सलाम से मुराद अमन हासिल होना नेमतों में सलामती और आफ़ात का ज़ायल होना, दुनियावी और उख़रवी ख़तरात से महफ़ूज़ होना।

ख़्याल रहे यहां दो एहतेमाल हैं एक यह कि ईसा अलैहिस्सलाम ने क़ौम को बताया कि रब तआला ने मुझे इन तीन औक़ात में सलामती अता फ़रमा दी और दूसरा एहतेमाल यह है कि आप ने दुआ की ऐ अल्लाह जिस तरह तूने यहया अलैहिस्सलाम के मुताल्लिक़ ख़ुद बताया है कि मैंने उन्हें सलामती अता फ़रमाई है ऐसे ही मुझे अता फ़रमा दे आपकी दुआ को क़बूल करके अल्लाह तआला ने आपको इन तीन औक़ात में सलामती अता फ़रमा दी।

अंबियाए किराम की दुआओं का क़बूल होना ज़रूरी है।

ईसा अलैहिस्सलाम के अलक़ाब : और याद करो जब फ़रिश्तों ने मरयम से कहा ऐ मरयम! अल्लाह तआला तुझे बशारत देता है अपने पास से एक कलिमा की जिसका नाम मसीह ईसा मरयम का बेटा वजीह होगा दुनिया और आख़रत में कुर्ब वाला और लोगों से बातें करेगा पालने और पक्की उम्र में और ख़ासों में होगा।

आपको कलिमा क्यों कहा गया?: इसके कई वजह हैं:

१. आप की पैदाईश बग़ैर बाप के वास्ते के अल्लाह तआला के कलिमा कुन से हुई आपकी तख़लीक़ में जब बाप का वास्ता नहीं। नुत्फ़ा का इस्तेमाल नहीं बल्कि फक़त अल्लाह तआला के कलिमा कुन से हुई तो इस वजह से आपको कलिमा कुन कहा गया यानी कलिमतुल्लाह से पैदा शुदा जैसे मख़लूक़ को ख़ल्के मक़दूर को कुदरत कह दिया जाता है।

२. आप ने बचपन में यानी शीर ख़्वारगी की हालत में कलाम फ़रमाया इसलिए आपको कलिमा कह दिया गया।

३. कलिमा मआनी और हक़ाइक़ का फ़ायदा देता है इसी तरह ईसा अलैहिस्सलाम और इसरारे इलाहिया की रहनुमाई फ़रमाते हैं लिहाज़ा आप को कलिमा कह दिया गया।

४ .आपकी बशारत आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के आने से पहले अंबियाए किराम की किताबों में आ चुकी थी जब आप तशरीफ़ लाए तो कहा गया कि यह वही कलिमा है जो पहले ज़िक्र किया गया है इस लिहाज़ से आपका नाम कलिमा रख दिया गया।

५. जिसतरह इंसान का नाम कभी फ़ज़लुल्लाह और कभी लुतफुल्लाह रख लिया जाता है उसी तरह आपका एक नाम कलिमतुल्लाह रखा गया ख़्याल रहे कि कलिमा से मुराद इस मक़ाम पर कलाम है अल्लाह तआला का कलाम क़दीम है आप कोई बिल्कुल उसी तरह अल्लाह तआला का कलाम नहीं बल्कि अल्लाह तआला के कलाम से पैदा होने की वजह से कलिमतुल्लाह हुए हैं यह तावील करनी ज़रूरी है वरना इसका मायने दुरुस्त नहीं हो सकता।

तंबीह : तमाम मख़लूक़ की तख़लीक़ और हर नुत्फ़ा का क़रार अल्लाह तआला के कलिमा कुन से ही होता है लेकिन इन में आम मशहूर सबब ही होता है कि इसकी तख़लीक़ बाप के वास्ते और नुत्फ़ा के क़रार पकड़ने से हुई लेकिन ईसा अलैहिस्सलाम में इस तरह की कोई वजह मौजूद न थी। बाप का कोई वास्ता नहीं। नुत्फ़ा आपकी पैदाईश का ज़रिया नहीं इसलिये आपकी तरफ़ अल्लाह तआला के कलिमा कुन की निस्बत ज़्यादा कामिल और मुकम्मल है।

फ़ायदा : आदिल बादशाह के मुताल्लिक़ कहा जाता है।

अल्लाह तआला का साया उसकी ज़मीन में।

इसी तरह कभी कहा जाता है बेशक वह अल्लाह का नूर है।

जब बादशाह पर अल्लाह तआला का फ़ज़्ल होता है वह मख़लूक़ पर अदल व इंसाफ़ के फ़ैसले करता है उसके अदल का साया ज़मीन पर फैलता है तो उसे "ज़िल्लुल्लाहि फ़ी अरज़िहि" कह दिया

जाता है इसी तरह जब उसके एहसानात का नूर जगमगाता है तो उसे नुरुल्लाह कह दिया जाता है इसी तरह जब ईसा अलैहिस्सलाम ने अपने कसीर ब्यानात की वजह से अल्लाह तआला के कलाम को ज़ाहिर फ़रमाया और लोगों के शुबहात को ज़ायल किया रब तआला के कलाम में लोगों की तहरीफ़ात को ज़ायल किया तो इस मुनास्बत की वजह से भी आप को कलिमतुल्लाह कहा गया।

आपको मसीह क्यों कहा गया ? इस में चंद वजहें हैं ख़्याल रहे कि मसीह फ़ईल का वज़न है फ़ईल कभी बमायने फ़ाइल के इस्तेमाल होता है और कभी मफ़ऊल के। अगर बमायने फ़ाएल के हो तो आपको मसीह कहने की यह वजहें हैं।

१. जब कोई शख़्स आफ़तज़दा होता यानी किसी भी मर्ज़ में मुब्तला होता तो आप उस पर हाथ फ़ेरते थे तो उसको शिफ़ा हासिल हो जाती।

२. मसहुल अर्ज़ लफ़्ज़ का इस्तेमाल होता है जिस का मायने होता है ज़मीन को क़तअ करना यानी सफ़र करना और सैर करना आप भी चूंकि एक जगह पर साकिन नहीं रहते थे बल्कि चलते फिरते रहते थे इसलिए आपको मसीह कहा गया।

३. आप अल्लाह तआला की रज़ा के लिए यतीमों के सर पर हाथ फ़ेरते इसलिए आप मसीह हुए।

और अगर फ़ईल बमायने मफ़ऊल के इस्तेमाल हो तो आपको मसीह कहने की यह वजहें होंगी।

१. आपसे गुनाहों और गुनाहों के बोझ, आलूदगी को मिटा दिया गया था यानी आपको रब तआला ने गुनाहों से दूर रखा हुआ था।

२. आपके क़दमों से नशेब को मिटाया हुआ था यानी आपके क़दम बिल्कुल सीधे आम आदमियों की तरह नहीं थे कि क़दमों के तलवों का कुछ हिस्सा ज़मीन पर नहीं लगता क्योंकि इसमें नशेब होता है।

३. आपको ज़ैतून का मुबारक तेल अल्लाह तआला की तरफ़ से लगाया दिया गया था जो तमाम अंबियाए किराम को लगाया जाता था जिससे फ़रिश्तों को पता चल जाता था कि इस हस्ती को नबी बनाया जायेगा।

४. जिब्राईल अलैहिस्सलाम ने आपको अपने परों से मस किया था ताकि आप शैतान के मस से महफ़ूज़ रहें।

५. आप जब वालदा के पेट से बाहर तशरीफ़ लाए तो आपको तेल लगा हुआ था आम बच्चों की तरह आपके बालों को तेल लगाने की ज़रूरत पेश नहीं आई।

तंबीह : दज्जाल को भी मसीह कहा गया है इसकी वजह यह है कि उसकी एक आंख ज़ाया हो चुकी होगी और दूसरी वजह यह है कि वह ज़मीन को क़तअ करेगा। मुख़्तलिफ़ इलाक़ों में फिरेगा इसी मक़ाम पर रूहुल मआनी में मज़कूर है कि इमाम नख़ई ने यह ब्यान किया कि यह लफ़्ज़ अल्लाह तआला के नबी ईसा अलैहिस्सलाम का जब लक़ब होगा तो उस वक़्त "मसीह" मीम के फ़तह की तख़फ़ीफ़ से पढ़ा जायेगा और जब अल्लाह तआला के दुश्मन दज्जाल का लक़ब होगा तो "मसीह" मीम के कसरा और सीन के शद से पढ़ा जायेगा।

फ़ायदा : मसीह आपका लक़ब है और ईसा नाम है और इब्ने मरयम आपकी कुन्नियत है आपका लक़ब ऐसा है जो आपकी शराफ़त और मरातिब की बुलंदीए पर दलालत कर रहा है जिस तरह सिद्दीक़ लक़ब है हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु का और फ़ारूक़ लक़ब है उमर रज़ियल्लाहु अन्हु का। इनके अलक़ाब भी उनकी शराफ़त और बुलंदी मरातिब पर दाल हैं अल्लाह तआला ने आपके लक़ब को पहले ज़िक्र किया ताकि इब्तेदाई तौर पर ही आपकी शान हर शख़्स को पता चल जाये।

ख़्याल रहे कि बशारत भी हज़रत मरयम को दी जा रही है और फिर इब्ने मरयम भी कहा जा रहा है इस की वजह यह है कि बाक़ी तमाम अंबियाए किराम को उनके आबा के नामों की तरफ़ मंसूब किया आपको मां की तरफ़ मंसूब करके हज़रत मरयम को बशारत के वक़्त ही बता दिया गया कि तुम्हारा बेटा बग़ैर बाप के पैदा होगा।

आपको वजीह कहा गया : वजीह का मायने साहबे मर्तबा साहबे शराफ़त और साहबे क़दर व मंज़िलत है।

यह उस वक़्त कहा जाता है जब किसी शख़्स का मर्तबा लोगों या बादशाह के नज़दीक ज़्यादा बुलंद व बाला हो और बाज़ अहले लुग़त ने ब्यान किया है अल–वजीह का मायने करीम है क्योंकि इंसान के तमाम आज़ा से अशरफ़ उसका चेहरा है इसलिए अलवजीह का मायने बतौर इस्तेआरा करम और कमाल लिया जाता है। आप दुनिया में वजीह थे क्योंकि आप मुस्तजाबुद दावात थे आपकी दुआ से अल्लाह तआला ने मुर्दों को ज़िन्दा किया मादरज़ाद अंधों को नज़र अता फ़रमाई बर्स वाले मरीज़ों को बर्स से नजात दी। और दुनिया में आपके वजीह होने की एक और वजह यह भी थी कि अल्लाह तआला ने आपको उन तमाम उयूब से बरी रखा जो यहूद आप पर लगाते थे यानी आपका हक़ीक़त में उयूब से बरी होना ही वजीह होने का सबब था अगरचे आप पर यहूद ऐब लगाते रहे लेकिन आपकी शान में कोई फ़र्क़ न आ सका, जैसा कि हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम को अल्लाह तआला ने वजीह बनाया अगरचे आप पर भी यहूद ऐब लगाते रहे आख़रत में भी आप वजीह होंगे क्योंकि अल्लाह तआला ने आपकी उम्मत के मोमिनीन को हक़ राह पर चलने का शफ़ीअ बनाया आपकी शफ़ाअत को दूसरे तमाम अकाबिर अंबियाए किराम अलैहिमुस्सलाम की शिफ़ाअत की तरह क़बूल किया जायेगा।

और वजह यह भी है कि आप को अल्लाह तआला अपने फ़ज़्ल व करम के ज़रिये ज़्यादा सवाब और बुलंद मर्तबा अता फ़रमायेगा।

आप मुक़र्रेबीन से हैं : अल्लाह तआला ने जब फ़रिश्तों की अज़ीम मदह करते हुए उन्हें अपना मुक़र्रेबीन कहा तो आपको भी यही सिफ़त अता फ़रमाई क्योंकि आप भी बुलंद मरातिब और रफ़ीअ दर्जात रखते हैं और फ़रिश्तों के साथ ही ज़िन्दा रहेंगे नीज़ आख़रत में जिस शख़्स को वजीह बनाया गया उसको मुक़र्रब तो होना ही है क्योंकि उसे जन्नत के आला मरातिब अता होंगे।

महद और कहूलियत में आपको मुतकल्लिम बनाना : महद से मुराद पिंघोड़ा या मां की गोद ताहम यहां मुराद यह है। कि आप इस हालत में कलाम करने वाले होंगे जब बच्चा पिंघोड़े का मोहताज होता है।

ख़्वाह वह पिंघोड़े में हो या मां की गोद में, आपने बचपन में एक मर्तबा कलाम फ़रमाया जिससे अपनी वालदा की बरअत ब्यान की और अपने औसाफ़ ब्यान किये फिर आपने ख़ामोशी इख़्तेयार की फिर आम बच्चों की तरह बोलने के वक़्त बोलना शुरू किया यह कौल हज़रत इब्ने अब्बास का है और यही मोतबर भी है अलबत्ता एक क़ौल यह भी है कि आपने जब से कलाम शुरू फ़रमाया उसी वक़्त से आपने ऐलाने नबुव्वत भी फ़रमा दिया और फिर आप मुसलसल तबलीग़ फ़रमाते रहे।

कहूलियत यानी बड़ी उम्र में भी आप कलाम फ़रमायेंगे बज़ाहिर यह समझ आता है कि बड़ी उम्र में तो हर शख़्स कलाम करता है इसमें आपकी फ़ज़ीलत कैसे? इसकी एक वजह तो यह है कि इसमें उन लोगों का रद पाया गया है जो ईसा अलैहिस्सलाम के ख़ुदा होने के क़ायल हैं कि जो शख़्स पहले छोटा हो फिर बड़ा हो उसमें तग़य्युर आता रहे वह इलाह नहीं बन सकता।

दूसरी वजह यह भी है कि आपका बचपन में कलाम करना वालदा की पाक दामनी ब्यान करने के लिए भी मोजिज़ा है और बड़ी उम्र में वही और नबुव्वत के ज़रिये कलाम करना भी मोजिज़ा है।

तीसरी वजह यह है कि इन दोनों हालतों का ज़िक्र एक साथ है कि आप बचपन में इस तरह फ़रमायेंगे जिस तरह बड़ी उम्र में यानी बचपन का कलाम बड़ी उम्र के कलाम से मुख़्तलिफ़ नहीं होगा। ख़्याल रहे कि कहूलियत से मुराद बुढ़ापा नहीं बल्कि असल में कहूलियत की उम्र वह होती है जिसमें इंसान का जिस्म कामिल हो। यह तीस साल से लेकर चालीस साल तक की उम्र है। एक कौल के मुताबिक़ हज़रत को तैंतीस साल की उम्र में ज़िन्दा आसमानों पर उठा लिया गया और फिर आप दुनिया में तश्रीफ़ लाकर लोगों से कलाम फ़रमायेंगे और दज्जाल को क़त्ल करेंगे इस उम्र में आप का आसमानों से उतरकर कलाम करना आपका एजाज़ है।

आपका सालेहीन से होना : अल्लाह तआला ने आपकी अज़ीम सिफ़ात का ज़िक्र फ़रमाने के बाद इरशाद फ़रमाया।

आप सालेहीन से होंगे क्योंकि

इससे बढ़कर कोई मर्तबा नहीं कि इंसान सालेह हो इसलिए के सालेह वही हो सकता है जिसके तमाम अफ़आल ख़्वाह इनका ताल्लुक़ अमल से हो या छोड़ने से हमेशा बेहतर तरीक़ा पर हों और कामिल तरीक़ा पर हों।

इससे मालूम हुआ कि सालेह होने का ताल्लुक़ तमाम मक़ामात से है ख़्वाह इनका ताल्लुक़ दीन से हो या दुनिया से इसी तरह ऐसे अफ़आल जो दिल से मुताल्लिक़ हों या ज़ाहिरी आज़ा से तमाम में सालहियत होगी।

हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम का लक़ब रूह : मसीह ईसा मरयम का बेटा अल्लाह तआला का रसूल ही है और उसका एक कलिमा कि मरयम की तरफ़ भेजा और उसकी तरफ़ से एक रूह।

आप अलैहिस्सलाम को रूह कहने की चंद वजहें हैं।

१. आम लोगों की आदत जारी है कि जब किसी तहारत और नज़ाफ़त के आला दर्जा की तारीफ़ करनी हो तो उसे रूह कह देते हैं जब ईसा अलैहिस्सलाम की तख़लीक़ बाप के नुत्फ़ा से नहीं हुई बल्कि नफ़ख़े (फूंक) जिब्राईल अलैहिस्सलाम से हुई तो यक़ीनन आप की सिफ़त रूह से ब्यान की गई।

२. आप मख़लूक़ के दीन के ज़िंदा रहने का सबब बने जिसकी वजह से किसी का दीन ज़िन्दा रहे उसे रूह कह लिया जाता है जैसे कुरआन पाक को रूह कहा गया।

और यूं ही हमने तुम्हें वही भेजी एक जांफ़िज़ा चीज़ कुरआन अपने हुक्म से।

३. रूह बमअनी रहमत के भी इस्तेमाल होता है जैसे यहां रूह से मुराद रहमत है हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया।

मैं रहमत और हिदायत बन कर आया।

चूंकि ईसा अलैहिस्सलाम भी अल्लाह तआला की तरफ़ से मख़लूक़ के लिए रहमत बनाकर भेजे गये आप इनको दीन व दुनिया में नेकी के रास्ते की हिदायत करते तो इसी वजह से आपको रूह कहा गया।

४. रूह कलामे अरब में (नफ़ख़) फूंक के मायने में भी इस्तेमाल है रूह और रीह मायने में क़रीब क़रीब हैं लिहाज़ा आपको रूह इसलिए कहा गया है कि आप अल्लाह तआला के हुक्म और उसके इज़्न से नफ़ख़े (फूंक) जिब्राईल से पैदा हुए।

५. रूह पर तनवीन ताज़ीम की है ज़ब यह मायने है कि शरीफ़, क़ुदसी, बुलंद मरातिब रखने वाली रूहों में से आपकी रूह भी है।

यानी आपकी रूह अज़ीम रूह है इसलिए अल्लाह तआला का कुर्ब हासिल है इसीलिए आप को रूह कह दिया गया।

रूहे क़ुदस से आपकी इमदाद की गई : और पाक रूह से उसकी मदद की।

इस पाक रूह से मुराद क्या है इसमें मुख़्तलिफ़ अक़वाल है। लेकिन इन तमाम वजहों से आपको इमदाद दी गई रईसुल मुहक़्क़ेक़ीन हज़रत मौलना अबुल हसनात मुहम्मद अशरफ़ सियालवी मद्दे ज़िल्लहु फ़रमाते हैं।

कि किसी आयते करीमा की तफ़सीर में मुफ़स्सेरीने किराम के मुख़्तलिफ़ अक़वाल हों या किसी हदीस पाक की शरह में मुहद्दिसीन किराम के मुख़्तलिफ़ अक़वाल हों और इनमें कोई तआर्रुज़ न हो तो सब को जमा कर लिया जाये। इस क़ानून व ज़ाब्ता के मुताबिक़ आप को मुख़्तलिफ़ तरीक़ों से इमदाद दी गई।

१. रूहे क़दस से मुराद हज़रत जिब्राईल अलैहिस्सलाम हैं यानी जिब्राईल अलैहिस्सलाम आपकी इमदाद फ़रमाते रहे जिब्राईल अलैहिस्सलाम को जो अल्लाह तआला के यहां शराफ़त और बुलंदीए मर्तबा हासिल है उसकी वजह से रूहे क़ुद्स कहा गया और जिस तरह बदन को रूह के ज़रिये ज़िन्दगी हासिल होती है ऐसे ही जिब्राईल अलैहिस्सलाम के ज़रिये दीन को ज़िन्दगी हासिल होती रही क्योंकि आप तमाम अंबियाए किराम के पास वही लाते रहे जिसके ज़रिये अंबियाए किराम दीन का फ़रीज़ा सर अंजाम देते रहे अगरचे तमाम फ़रिश्तों को रूहानियत हासिल है लेकिन जिब्राईल अलैहिस्सलाम को तमाम से ज़्यादा और कामिल रूहानियत हासिल है इसी वजह से आप को रूहे क़ुद्स का लक़ब अता किया गया।

२. रूहे कुद्स से मुराद इंजील भी हो सकती है जैसे कुरआन पाक के मुताल्लिक़ अल्लाह तआला ने फ़रमाया:

इसी तरह इंजील को भी रूह कह दिया गया क्योंकि आसमानी कुतुब के ज़रिये ही अंबियाए किराम तक अहकामे ख़ुदावंदी पहुंचे और अंबियाए किराम ने वही अहकाम अपनी उम्मतों को पहुंचाकर उनके दुनियावी उमूर को भी दुरुस्त फ़रमाया और उनके दीन को भी ज़िन्दा किया।

३. रूहे कुद्स से मुराद इस्मे आज़म है यानी अल्लाह तआला ने इस्मे आज़म आपको अता करके आपकी इमदाद फ़रमाई इसी इस्मे आज़म के ज़रिये आप मुर्दों को ज़िन्दा फ़रमाते।

४. रूह से मुराद वह रूह है जो अल्लाह तआला ने ईसा अलैहिस्सलाम को अता फ़रमाई कुद्स से मुराद अल्लाह तआला की ज़ाते बा–बर्कात है यानी आप में मालिकुल मुल्क ने अपनी तरफ़ से रूह बवास्ता जिब्राईल अलैहिस्सलाम फूंक कर आप को अपना मुक़र्रब बनाया और रूहुल्लाह का लक़ब अता फ़रमाया।

अगरचे तमाम मायने बयक वक़्त लेने दुरुस्त हैं ताहम ज़्यादा हज़रात ने रूहे कुद्स से मुराद ज़िब्राईल अलैहिस्सलाम ही लिए हैं कि आपकी ताइद हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम को हमेशा हासिल रही क्योंकि आप जहां जाते जिब्राईल अलैहिस्सलाम उनके साथ ही चलते और तमाम हालात में आपका साथ देते रहे और आसमानों में भी आपके साथ गये।

आपको किताब व हिकमत अता की गई : किताब से मुराद किताबत यानी आपको लिखने का इल्म अता किया गया।

आपको अल्लाह तआला ने ख़त के नौ हिस्से अता फ़रमाए और बाक़ी तमाम लोगों को एक हिस्सा अता किया गया।

हिकमत से मुराद फ़ेक़ह, हलाल व हराम का इल्म, तमाम उमूरे दीन का इल्म, तमाम अंबियाए किराम अलैहिमुस्सलाम की सुन्नतों का इल्म और उलूमे अक़लिया आपको अता किये गये।

ईसा अलैहिस्सलाम के मोजिज़ात : मैं तुम्हारे पास एक निशानी लाया हूं तुम्हारे रब की तरफ़ से कि मैं तुम्हारे लिए मिट्टी से परिन्दे की तरह मूरत बनाता हूं फिर इसमें फूंक मारता हूं तो वह फ़ौरन ज़िन्दा हो जाती है अल्लाह तआला के हुक्म से शिफ़ा देता हूं और अंधे मादरज़ाद और सफ़ेद दाग़ वाले को और मैं मुर्दे ज़िन्दा करता हूं अल्लाह तआला के हुक्म से और तुम्हें बताता हूं जो तुम खाते हो और जो तुम अपने घरों में जमा करके रखते हो बेशक इन बातों में तुम्हारे लिए बड़ी निशानी है अगर तुम ईमान रखते हो।

परिन्दे बनाना : आपको यह मोजिज़ा अता करके अल्लाह तआला ने आपकी पैदाईश पर दलील क़ायम फ़रमा दी यानी ईसा अलैहिस्सलाम ने गोया कि अपनी क़ौम को बताया ऐ मेरी क़ौम पैदाईश में शक करते हो यह दरहक़ीक़त रब तआला की कुदरत में शक है। रब तआला ने तो मुझे भी यह मोजिज़ा अता फ़रमाया है कि मैं बग़ैर मां–बाप के मिट्टी से परिन्दे की मूर्ती बनाकर इसमें अल्लाह तआला के हुक्म से फूंक मारता हूं तो वह हक़ीक़ी तौर पर परिन्दा बन जाता है। बनी इस्राईल ने आपसे भी इसी

तरह सरकशी के तौर पर चमगादड़ बनाने का मुतालबा किया जिस तरह वह अपनी आदत के मुताबिक़ पहले अंबियाए किराम से मोजिज़ात का सवाल करते चले आ रहे थे।

जब आपने उनके मुतालबे के मुताबिक़ मोजिज़ा दिखा दिया तो वह कहने लगे कि यह तो जादूगर है।

उन्होंने आप से चमगादड़ बनाने का मुतालबा ही क्यों किया था? इसलिए कि यह ऐसा परिन्दा है जिसमें परिन्दों हैवानों और इंसानों वाले औसाफ़ पाए जाते हैं इसे बनाने में इन्हें बज़ाहिर मुश्किल नज़र आई कि इसे बनाना तो बहुत बड़ी कुदरत का तक़ाज़ा है। चमगादड़ के दांत और दाढ़ें होती हैं इसे हैज़ आता है और यह बच्चे जनती है अंडे नहीं देती बग़ैर परों के यानी गोश्त के बाजुओं से उड़ती है इसके कान होते हैं इसके पिस्तान होते हैं इसके थनों से दूध आता है, इंसानों की तरह हंसती है दिन की रौशनी में और रात की तारीकी में नहीं देख सकती इसे सिर्फ़ दो वक़्तों में नज़र आता है एक सूरज के गुरूब होने के बाद जब तक रौशनी रहे और दूसरा सुबह के बाद ज़्यादा रौशनी होने से पहले पहले।

मशहूर यह है कि ईसा अलैहिस्सलाम ने चमगादड़ के बग़ैर और कोई परिन्दा नहीं बनाया। हज़रत वहब रज़ियल्लाहु अन्हु का क़ौल यह है कि आपने जिस चमगादड़ को बनाया वह लोगों के सामने उड़ी और जब नज़रों से ग़ायब हो गई तो गिरकर मर गई ताकि अल्लाह तआला की तख़लीक़ और बंदे के बनाने में फ़र्क़ रहे अलबत्ता बाज़ दूसरे अहले इल्म ने कहा कि आपने कई क़िस्म के परिन्दे बनाए थे।

आपके परिन्दे बनाने में एक क़ौल यह भी है कि आप एक मर्तबा लड़कों के साथ मकतब में थे आपने गूंधी हुई मिट्टी ली और आपने लड़कों को कहा क्या मैं तुम्हें इससे परिन्दा बना दूं? उन्होंने कहा क्या तुम बना सकते हो? आपने कहा हां, मैं अपने रब तआला के हुक्म से ऐसा कर सकता हूं फिर आपने एक परिन्दा की मूरत बनाकर उसमें फूंक मारी तो वह अल्लाह तआला के हुक्म से परिन्दा बन गया और आपके हाथ से निकल कर उड़ गया बच्चों ने यह वाक़िया अपने उस्ताज़ के सामने ब्यान किया और यह दूसरे लोगों में भी मशहूर हो गया ताहम पहला क़ौल ही ज़्यादा मशहूर है।

मादरज़ाद अंधे और बर्स वाले को शिफ़ा देना : जो पैदाईशी तौर पर अंधा हो उसे अकमह कहते हैं।

इसी तरह जिसकी आंखों का निशान न हो उसे भी अकमह कहते हैं आप अलैहिस्सलाम ऐसे अंधों के लिए दुआ फ़रमाते तो अल्लाह तआला उनको नज़र अता फ़रमा देता। इसी तरह आप बर्स के मर्ज़ वाले के लिए दुआ फ़रमाते उसे भी अल्लाह तआला शिफ़ा अता फ़रमाता। इन दो मर्ज़ो से शिफ़ा देने का ख़ुसुसी तौर पर मोजिज़ा आपको अता फ़रमाया गया था क्योंकि उस वक़्त के बड़े बड़े तबीब जो कसीर तादाद में थे और दो मर्ज़ो का इलाज करने से आजिज़ आ चुके थे इनको पेचीदा अमराज़ क़रार दे दिया गया था।

आप अलैहिस्सलाम के ज़माने में इल्मे तिब का ज़ोर था बड़े बड़े तबीब मौजूद थे तो आपको ऐसा मोजिज़ा अता फ़रमाया गया कि जिससे तमाम तबीब आजिज़ आ चुके थे। जैसे मूसा अलैहिस्सलाम के ज़माने में जादूगरी का ज़ोर था तो आपको ऐसे मोजिज़ात अता किये गये ख़ुसूसन असा से अज़दहा

बनाना जिसके सामने बड़े बड़े जादूगर आजिज़ आ गये थे। हज़रत वहब रज़ियल्लाहु अन्हु से मरवी है कि आपसे पचास हज़ार आदमियों ने इलाज करवाया जो आपके पास आने की ताक़त रखते थे वह ख़ुद हाज़िर हुए और जो आपके पास आने की ताक़त नहीं रखते थे उनके पास ईसा अलैहिस्सलाम ख़ुद तशरीफ़ ले जाते उनसे ईमान लाने की शर्त रखते फिर आप उनका इलाज अल्लाह तआला से दुआ करके फ़रमाते। आप अंधों मजनूनों चलने फिरने से आजिज़ और हर क़िस्म के मरीज़ों के लिए यह दुआ फ़रमाते।

फ़ायदा : हज़रत वहब रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि यह दुआ किसी मुसीबत ज़दा परेशान हाल और जुनून के मर्ज़ वाले पर पढ़ी जाए और लिखकर उसे पिलाई जाए तो इंशाअल्लाह फ़ायदा होगा।

मुर्दों को ज़िन्दा करना : आप अल्लाह तआला के हुक्म से मुर्दों को ज़िन्दा फ़रमाते थे। अल्लाह तआला से दुआ फ़रमाते और या हय्यु या क़य्यूम पढ़ते मुर्दा ज़िन्दा हो जाता। मुहियुस सुन्ना रज़ियल्लाहु अन्हु ने हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत ब्यान की कि आपने चार शख़्सों को ज़िन्दा किया।

१. आज़िर २. बुढ़िया का बेटा ३. आशिर की बेटी, ४. सान बिन नूह

आपका दोस्त आज़िर जब फ़ौत हो गया तो उसकी बहन ने आपकी तरफ़ पैग़ाम भेजा कि आपका भाई आज़िर फ़ौत हो गया। आज़िर के घर और आप जहां तशरीफ़ फ़रमा थे उसके दर्मियान तीन दिनों की मसाफ़त थी आप और आपके कुछ साथी जब वहां तशरीफ़ लाए तो उसकी बहन को कहा मुझे उसकी क़ब्र पर ले चलो। आपने क़ब्र पर आकर अल्लाह तआला से दुआ की तो अल्लाह तआला ने उसे ज़िन्दा कर दिया वह उसी तरह कुछ ज़माना ज़िन्दा रहा यहां तक कि ज़िन्दा होने के बाद उसकी औलाद भी हुई।

इसी तरह बुढ़िया का बेटा फ़ौत हो गया उसे चारपाई पर उठाकर ले जा रहे थे ईसा अलैहिस्सलाम के क़रीब से जनाज़ा का गुज़र हुआ तो आपने उसके लिए दुआ फ़रमाई तो वह ज़िन्दा होकर चारपाई पर बैठ गया और नीचे उतर आया उसने कफ़न उतारकर कपड़े पहन लिये और चारपाई को ख़ुद कंधों पर उठा लिया और अपने घर वापस आ गया। वह भी कुछ ज़माना ज़िन्दा रहो और उसकी औलाद भी बाद में हुई।

एक शख़्स जो लोगों से उश्र वसूल करता था यानी बादशाह की तरफ़ से उसे उश्र वसूल करने पर मुक़र्रर किया हुआ था उसकी बेटी फ़ौत हो गई दूसरे दिन ईसा अलैहिस्सलाम ने उसके लिए दुआ की वह ज़िन्दा हो गई वह भी उसके बाद कुछ वक़्त तक ज़िंदा रही उसकी भी उसके बाद औलाद हुई।

नूह अलैहिस्सलाम के बेटे साम को फ़ौत हुए कई सदियां बीत चुकी थीं ईसा अलैहिस्सलाम उसकी क़ब्र पर आए उसके लिए दुआ की उसे भी अल्लाह तआला ने ज़िन्दा कर दिया जब वह क़ब्र से निकला तो क़यामत के ख़ौफ़ से उसका सर निस्फ़ सफ़ेद हो चुका था हालांकि उस ज़माने में लोगों के बाल सफ़ेद नहीं हुआ करते थे। सबसे पहले हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम के बाल सफ़ेद हुए उसने क़ब्र से निकलते हुए पूछा क्या क़यमात आ गई ईसा अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया नहीं क़यामत तो अभी नहीं आई अलबत्ता मैंने अल्लाह तआला से दुआ करके तुम्हें ज़िन्दा किया है आप अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया अब तुम फिर मर जाओ उसने कहा ठीक है लेकिन यह शर्त है कि मुझे सकराते मौत से महफ़ूज़ रखा

जाये। आपने अल्लाह तआला से दुआ की अल्लाह तआला ने उसे सकराते मौत के बग़ैर ही दोबारा मौता अता फ़रमा दी।

साम बिन नूह को ज़िन्दा करने की वजह यह थी कि जब क़ौम ने कहा कि तुमने जो मुर्दे अभी ज़िन्दा किये हैं उनकी मौत के बाद जल्दी ही तुमने उनको ज़िन्दा किया है हो सकता है कि वह हक़ीक़त में मरे ही न हों बल्कि उनको सक्ता का मर्ज़ लाहक़ हो तो उसके कहने पर आपने साम बिन नूह को ज़िन्दा किया आपके और उसके दर्मियान चार हज़ार साल का फ़ासला था जब वह ज़िन्दा हुआ तो उसने कहा ऐ लोगो! तुम इन पर ईमान ले आओ यह अल्लाह तआला के नबी हैं कुछ लोगों ने तो ईमान क़बूल कर लिया था लेकिन कुछ बदबख़्तों ने यह अज़ीम मोजिज़ा देखने के बाद भी यह कहा कि यह जादू है वह ईमान लाने से महरूम रहे।

बाज़ रिवायात में यह भी है कि उस वक़्त के बादशाह ने अपने बेटे के ज़िन्दा करने की दरख़्वास्त की थी ताकि वह ज़िन्दा होकर मेरा ख़लीफ़ा बन सके तो आपकी दुआ से वह भी ज़िन्दा हो गया और आप ने अल्लाह तआला के हुक्म से और उससे दुआ करके कई जानवरों को भी ज़िन्दा किया।

ईसा अलैहिस्सलाम को उलूमे ग़ैबिया अता किये गये : और मैं तुम्हें बताता हूं जो तुम खाते हो और जो अपने घरों में जमा कर रखते हो।

अल्लामा राज़ी ने इस मसले का उनवान ज़िक्र किया।

हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के मोजिज़ात की पांचवी क़िस्म ग़ैबी ख़बरें देना।

आपने बचपन में ही ग़ैबी ख़बरें देनी शुरू कर दी थी जब आपके साथ बच्चे खेलते तो आप उन्हें उनके वालदैन के अफ़आल की ख़बरें देते और यह बताते तुम्हारी मां ने तुम्हारे लिए क्या चीज़ छुपा कर रखी हुई है? बच्चे घर आकर वह चीज़ मांगते, न मिलने पर रोते, जब लोगों को पता चला कि ईसा अलैहिस्सलाम हमारे बच्चों को यह बताते हैं तो उन्होंने बच्चों को कहा तुम उस जादूगर के साथ न खेला करो। उन्होंने अपने बच्चों को रोक लिया, बाहर निकल कर ईसा अलैहिस्सलाम के साथ खेलने पर पाबंदी आइद कर दी आप ख़ुद ही बच्चों को बुलाने उनके घरों में आ गये उनके वालदैन ने कहा कि वह घर नहीं हैं आपने कहा वह तो घर ही हैं अगर वह घर नहीं हैं तो कौन घरों में हैं? उन्होंने कहा खिंज़ीर हैं ईसा अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया अच्छा खिंज़ीर ही होंगे आपके कहने पर ख़िंजीर ही हो गये।

इसी तरह मायदा के उतरने पर आपने क़ौम को कहा कि ज़ख़ीरा बनाकर नहीं रखना, इतना ही लेना है जो इस वक़्त तुम खा सको, लेकिन क़ौम ने ज़ख़ीरा बनाना और दूसरे वक़्त के लिए जमा करना शुरू कर दिया तो आपने फ़रमाया कि मुझे मालूम है जो तुम खाते और जो जमा करते हो आपने हर एक को वाज़ेह तौर पर बताया तुमने कितना खाया और कितना जमा किया है।

तंबीह : अंबियाए किराम के मोजिज़ाते आलात के ताबे नहीं होते, आदात के ख़िलाफ़ काम करते हैं लेकिन इनमें फ़क़त ताइदे रब्बानी हासिल होती है आजकल साइंसी तरक़्क़ी ने बहुत से तरीक़े ईजाद किये हैं। अगरचे वह आम आदात के ख़िलाफ़ हैं लेकिन वह आलात के मोहताज हैं इसलिए इन्हें मोजिज़ात व करामात नहीं कहा जा सकता। मसलन दूर से कलाम सुनना और करना अगरचे आम आदत के

ख़िलाफ़ है लेकिन फोन का वास्ता है इसी तरह दूर से किसी की तसवीर टेलीविज़न के ज़रिये देखना भी ऐसे ही है लेकिन अंबियाए किराम के मोजिज़ात में कोई आला इस्तेमाल नहीं हुआ। नजूमी बाज़ औक़ात ग़ैबी ख़बरें देते हैं लेकिन वह उस वक़्त तक कोई ख़बर नहीं दे सकते जब तक वह पहले उस वाक़िये के मुताल्लिक़ सवाल न कर लें।

फिर वह अपने (हिसाब वग़ैरह के) आलात की इमदाद तलब करते हैं इन आलात के ज़रिये सितारों के अहवाल हासिल करते हैं। और तब जाकर आने वाले वाक़िये की ख़बरें दे सकते हैं लेकिन फिर भी सही ख़बर उन से बहुत कम ही वाक़ेय होती हैं और ग़लत ज़्यादा होती है।

फिर वह ख़ुद भी एतेराफ़ करते हैं कि हम से ज़्यादा तौर पर ग़लतियां ही वाक़ेय होती हैं हमारी ख़बरें यक़ीनी तौर पर सही नहीं होतीं।

लेकिन ग़ैबी ख़बरों में आलात से कोई इमदाद तलब नहीं की जाती और न ही पहले उस वाक़िये के मुताल्लिक़ सवाल किया जाता है यह सिर्फ़ अल्लाह तआला की तरफ़ से वही के ज़रिये हासिल होती है। (कबीर)

अल्लामा राज़ी रहमतुल्लाह अलैहि की इस तहक़ीक़ के बाद भी कोई यह कहता फिरे कि जो अल्लाह तआला की तरफ़ से वही के ज़रिये हासिल हो जाए उसे इल्म गैब नहीं कहा जाता तो वह नादान अपनी अक़्ल का इलाज करे या फिर अपनी मुर्दा अक़्ल का मातम करता फिरे अंबियाए किराम की शान को रब तआला ने बुलंद कर दिया वह किसी के कम करने से कम नहीं हो सकती अल्लामा आलूसी रहमतुल्लाह अलैहि फ़रमाते हैं:

यहां से मालूम हो गया कि इल्मे जफ़र और इल्मे फ़लकयात या इस क़िस्म के और उलूम चूंकि उसूल व ज़वाबित पर मुश्तमिल हैं लिहाज़ा इन्हें कभी इल्मे ग़ैब नहीं कहा जा सकता इल्मे ग़ैब के लिए यह शर्त है कि वह माद्दा और तकवीनी वास्तों से ख़ाली हो।

इससे भी वाज़ेह हुआ कि वही के ज़रिये हासिल होने वाले इल्म को ग़ैबी कहने से इंकार करना जहालत है।

हवारीन का ईमान लाना : और जब मैंने हवारियों के दिल में डाला कि मुझपर और मेरे रसूल पर ईमान लाओ बोले हम ईमान लाए और गवाह रह कि हम मुसलमान हैं।

इस आयते करीमा में "ओहैतु" का मायने इल्क़ा यानी दिल में डालना और इल्हाम ही करना है क्योंकि वही अंबिया किराम की तरफ़ ही फ़क़त आती है ग़ैर नबी की तरफ़ वही का मायने इल्क़ा व इल्हाम ही होता है जैसे

हमने मूसा की वालदा के दिल में इल्क़ा किया और

अल्लाह तआला ने ईसा अलैहिस्सलाम को जो इनामात अता फ़रमाए उनमें से यह भी है कि हवारीन ने आपके इर्शादात को तस्लीम किया और ईमान लाए।

इसलिए कि इंसान का क़ौल जब दूसरे लोगों के नज़दीक मक़बूल हो जाए और वह उनके दिलों में महबूब हो जायें तो यह उस इंसान पर अल्लाह तआला की नेमतों में से अज़ीम नेमत है।

ख़्याल रहे कि ईमान दिल की सिफ़त है यानी तस्दीक़े क़ल्बी और इस्लाम ज़ाहिरी इताअत का नाम है गोया कि रब तआला ने उन्हें दो चीज़ों का हुक्म दिया।

दिलों से ईमान लाओ और ज़ाहिरी तौर पर भी इताअत करो।

हवारियों ने कहा जिस तरह हमें हुक्म दिया गया है हम उसी के मुताबिक़ ईमान लाए और तू ख़ुद ही गवाह रह कि हम मुसलमान हैं यानी अपने ईमान में मुख़लिस हैं और ज़ाहिरी तौर पर भी तेरे मुतीअ हैं जैसे तूने हमारे दिलों में हुक्म इल्क़ा किया है हम उसे तस्लीम करते हैं।

हवारीईन कौन थे? : हवारीईन जमा है हवारी की आम तौर पर कहा जाता है।

फलां शख़्स फ़लां के मददगारों और दोस्तों में से ख़ास है।

ख़्याल रहे कि बज़ाहिर वहम होता है हवारी जमा है करासी की तरह लेकिन ऐसा नहीं।

बल्कि वह मुफ़रद मुनसरिफ़ है जैसा कि मुहक़्क़ेक़ीन ने वज़ाहत की है।

हवारी सफ़ेद होने के मायने में भी इस्तेमाल है घरों में बा—पर्दा रहने वाली, सूरज की गर्मी से बचने वाली औरतों को भी हवारियात कहा जाता है इसी वजह से धोबी को भी हवारी कहा जाता है कि वह कपड़ों को सफ़ेद करता है।

ईसा अलैहिस्सलाम के हवारियों को हवारीईन कहने की वजह में मुख़्तलिफ़ अक़वाल हैं।

वह सफ़ेद कपड़े पहनते थे इसलिए उन्हें हवारीईन कहा गया है या वह धोबी थे लोगों के कपड़े सफ़ेद करते थे इसलिए हवारीईन कहा गया या उनके दिल साफ़ और अख़लाक़ पाकीज़ा थे इसलिए उनका नाम यह हुआ।

वह लोग काम क्या करते थे इसमें भी मुख़्तलिफ़ अक़वाल हैं एक यह कि वह मछली का शिकार करते थे उनमें याकूब, शमऊन, और योहना आदमी थे ईसा अलैहिस्सलाम उनके क़रीब से गुज़रे तो उन्हें कहा तुम मछली का शिकार करते हो।

अगर तुम मेरी ताबेदारी करो तो तुम हमेशा लोगों का शिकार करोगे यानी मुझ पर ईमान लाओ तो तुम्हें हयाते जाविदानी हासिल होगी।

लोग ख़ुद बख़ुद तुम्हारी ताबेदारी करेंगे तुम्हारे अहकाम पर चलेंगे गोया वह तुम्हारे शिकार होंगे उन्होंने आप से पूछा तुम कौन हो? आपने फ़रमाया ईसा बिन मरयम अल्लाह तआला का बंदा और उसका रसूल हूं उन लोगों ने आपसे मोजिज़ा तलब किया आपने शमऊन को पानी में जाल डालने के लिए कहा जब उसने जाल डाला तो इतनी मछलियां निकलीं कि दो कश्तीयां भर गईं। हालांकि इससे पहले वह रात भर अपनी कोशिश कर चुका था। कई मर्तबा जाल डालने पर कोई मछली नहीं निकली थी आप अलैहिस्सलाम के इस मोजिज़ा को देखकर वह लोग ईमान ले आये। उस वक़्त वहां वह जितने लोग थे बारह या उनतीस सब ही ईमान ले आये।

यह जब भूखे होते तो क़हते ऐ रूहुल्लाह हम भूखे हैं तो ईसा अलैहिस्सलाम अपना हाथ ज़मीन पर मारते हर एक को दो दो रोटियां निकाल देते जब वह प्यासे होते तो प्यास की शिकायत करते तो

आप ज़मीन पर अपना हाथ मारकर हर एक को पानी निकाल कर देते तो वह पानी पी लेते, वह कहने लगे हम से अफ़ज़ल कौन होगा? जब हम तआम तलब करते हैं तो आप तआम खिला देते हैं और जब हम पानी तलब करते हैं तो आप हमें पानी पिला देते हैं हम आप पर ईमान ला चुके हैं ईसा अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया।

तुमसे अफ़ज़ल वह हैं जो अपने हाथों से काम करे और इससे हासिल कर्दा माल खाये।

आपके इस इरशाद के बाद उन्होंने मेहनत व मज़दूरी शुरू कर दी वह लोगों के कपड़े धोते थे और उसकी हासिल शुदा मज़दूरी को ही अपना ख़र्च बनाते।

हवारीईन के मुताल्लिक़ एक क़ौल यह भी है कि एक बादशाह ने एक मर्तबा लोगों की दावत की, तआम तैयार हो गया तक़सीम के वक़्त एक प्याले पर हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम मुक़र्रर हुए आपने तक़सीम करना शुरू किया एक ही प्याला सब लोगों से ख़त्म न हो सका बादशाह ने जब आपके मोजिज़ा को देखा तो उसने अपनी बादशाहत छोड़ दी आपकी ताबेदारी इख़्तेयार कर ली बादशाह के कुछ क़रीबी लोग भी उसके साथ ईसा अलैहिस्सलाम के ताबेअ हो गये इन ही लोगों को हवारीईन कहा जाता है।

एक और क़ौल यह है कि आपकी वालदा ने आपको एक कपड़े रंगने वाले शख़्स के पास छोड़ा कि यह भी कपड़े रंगना सीख जायें वह आपको जब भी अपने फ़न की कोई बात बताना चाहता तो वह आप पहले ही जानते होते एक दिन वह शख़्स किसी काम के लिए जाने लगा तो आपको कहा यह कपड़े हैं हर एक पर मैंने निशान लगा दिया है उसी के मुताबिक़ तुम कपड़े रंग देना वह चला गया तो आपने तमाम रंग एक बर्तन में डाल कर पका दिये और उसी एक बर्तन में तमाम कपड़े डाल दिये और कपड़ों से मुख़ातिब होकर कहा।

तुम अल्लाह के हुक्म से ऐसे ही हो जाओ जैसा मैं चाहता हूं।

जब वह शख़्स वापस आया तो उसने पूछा तुम ने कपड़े रंग दिये हैं? आपने फ़रमाया कि हां मैंने सब रंग और सब कपड़े एक बर्तन में डाल दिये हैं रंगे जा चुके हैं आप निकाल लें। उसने जब यह सुना तो कहने लगा तुम ने कपड़े बर्बाद कर दिये हैं आपने फ़रमाया उठकर देखो तो शायद सही रंगे हों। उसने जब कपड़े निकालना शुरू किये तो वह उसी तरह रंगे हुए थे जैसे उसने निशान लगाये थे कोई सुर्ख़ कोई ज़र्द कोई सर सब्ज़ रंग था यह माजरा देखकर वहां सब हाज़िरीन को हैरत हुई और सबने ईमान क़बूल कर लिया उन लोगों को ही हवारीईन कहा जाता है।

इन तमाम अक़वाल के मुताल्लिक़ हज़रत क़फ़ाल रहमतुल्लाह अलैहि की राय यह है कि इन अक़वाल में कोई इख़्तेलाफ़ नहीं बल्कि इनमें से बाज़ बादशाह और उसके क़रीबी थे और कुछ शिकारी थे कुछ कपड़े रंगने वाले और कुछ धोबी थे इन तमाम को हवारीईन कहा गया क्योंकि वह तमाम हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के मददगार थे और उनके साथ मुहब्बत करने वाले और उनकी इताअत में मुख़लिस थे।

अल्लामा आलूसी ने फ़रमाया कि यहां मजाज़ी मायने लेना ज़्यादा मुनासिब है कि आपके जितने लोग भी मुआविन और ख़ुलूस से आप के साथ मुहब्बत करने वाले थे वह तमाम हवारीईन थे।

हवारीईन का आसमानी तआम तलब करना : जब हवारियों ने कहा ऐ ईसा बिन मरयम क्या आपका रब ऐसा करेगा, कि हम पर आसमान से एक ख़्वान उतारे? कहा अल्लाह तआला से डरो अगर ईमान रखते हो, बोले हम चाहते हैं कि इसमें से खायें और हमारे दिलों को इत्मीनान हासिल हो और हम आंखों से देख लें कि आपने हम से सच फ़रमाया और हम इस पर गवाह हो जायें।

आला हज़रत बरेलवी रहमतुल्लाह अलैहि ने तर्जमा किया 'क्या आपका रब ऐसा करेगा?' क्योंकि यह सवाल करने वाले हवारीईन थे जो आप पर ईमान ला चुके थे।

हवारीईन वह लोग हैं जो सबसे पहले ईसा अलैहिस्सलाम पर ईमान लाये।

कुरआन पाक में उनके ईमान का ज़िक्र इन अल्फ़ाज़े मुबारका से किया गया है।

हवारियों ने कहा हम अल्लाह तआला के दीन के मददगार हैं हम अल्लाह तआला पर ईमान लाए और ईसा अलैहिस्सलाम हमारे ईमान लाने पर आप गवाह रहें।

हवारीईन चूंकि मुसलमान थे उन्होंने रब तआला की कुदरत में कोई शक नहीं किया, इसी वजह से जलालैन में इसका मायने ब्यान किया गया है।

क्या तुम्हारा रब करेगा?

तफ़सीर सावी में इसी की वज़ाहत इन अल्फ़ाज़ से की गई है।

यानी हल यस्ततीअ की तफ़सीर यफ़अल से मुफ़स्सिर ने इसलिए की है कि ज़िक्र इस्तेताअत का है जो लाज़िम है और मुराद मलजूम है और वह फ़ेअल है क्योंकि जहां काम करना होगा वहां इस्तेताअत लाज़िम होगी, यह मजाज़ इसलिए मुराद है कि एक सवाल को मंदफ़ा करना मक़सूद है वह सवाल यह है कि हवारीईन तो ईमान वाले थे उन्होंने रब तआला की कुदरत में कैसे शक किया है तो इसका जवाब दे दिया गया है कि यहां यह सवाल ही नहीं कि क्या तुम्हारा रब ऐसा कर सकेगा बल्कि सवाल यह है कि क्या तुम्हारा रब ऐसा करेगा।

फ़ायदा : अबू ग़ामा रहमतुल्लाह अलैहि ने ज़िक्र किया है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम एक मर्तबा अबू तालिब की अयादत के लिए तशरीफ़ ले गये क्योंकि वह मरीज़ थे उन्होंने कहा ऐ मेरे भाई के बेटे तुम अपने रब तआला से दुआ करो कि वह मुझे आफ़ियत दे दे हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने दुआ फ़रमाई।

ऐ अल्लाह तआला मेरे चचा को शिफ़ा अता फ़रमा।

उनको उसी वक़्त आराम आया वह जल्दी से इस तरह उठे जिस तरह किसी ऊंट की रस्सी खोल कर आज़ाद कर दें तो वह ख़ुशी से फुर्ती से उठता है।

अबू तालिब ने कहा ऐ मेरे भतीजे तुम जिसकी इबादत करते हो वह तुम्हारी बात मानता है नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया:

ऐ मेरे चचा अगर तुम उसकी इताअत करो तो वह तुम्हारी हाजात को भी पूरा करेगा। अबू तालिब ने लफ़्ज़ "यूतीअका" इस्तेमाल किया तो हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने भी इसके जवाब में हसीन

अंदाज़ में मुशाकेलत के तौर पर वही लफ्ज़ यूतीका इस्तेमाल किया है ज़िस का ज़ाहिरी मायने है वह तुम्हारी इताअत करेगा हालांकि यह मुराद नहीं बल्कि इसका मायने है।

वह तुम्हारे मक़ासिद को पूरा फ़रमायेगा।

माइदा हर चीज़ जिसे बिछाया जाये और फैलाया जाए लेकिन यहां मुराद दस्तरख़्वान है इसी तरह माइदा उसे भी कहते हैं जो चीज़ बुलंद हो और खाना खाने क लिए उसे तैयार किया जाये। (जैसे आजकल डाइनिंग टेबिल पर खाना खाया जाता है)

उस पर खाना अगरचे बिदअत है लेकिन तकब्बुर की नीयत न हो तो जायज़ है।

इसमें उन लोगों के लिए लम्हए फ़िक्रिया है कि जो हर बिदअत को गुमराही भी कहते हैं और फिर हज़ारहा बिदआत के मुरतकिब भी हो रहे हैं।

माइद्दा का इतलाक़ तआम पर भी किया जाता है।

आम मुहक़्क़ेक़ीन ने ऐसा ही ब्यान किया है यानी उन्होंने आसमान से तआम उतरने का मुतालबा किया ईसा अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया तुम इस क़िस्म के सवाल करने से अल्लाह तआला से डरो ज़्यादा निशानियां और मोजिज़ात का मुतालबा न करो।

हज़रत फ़ारसी रहमतुल्लाह अलैहि फ़रमाते हैं कि आपने कहा कि तक़वा रखो अल्लाह तआला खुद ही तुम्हारी उम्मीदों को पूरा करता रहेगा रब तआला का इरशादे गिरामी है।

और जो अल्लाह तआला से डरे अल्लाह तआला उसके लिए नजात की राह निकाल देगा और उसे वहां से रोज़ी देगा जहां से उसका गुमान न हो।

और आपने फ़रमाया अगर तुम्हें अल्लाह तआला की कामिल कुदरत पर ईमान है और मेरी नबुव्वत के सही होने पर यक़ीन है और तुम्हें अपने ईमान में कमाल और खुलूस हासिल है और अगर तुम अपने दावए ईमान और खुलूस में सच्चे हो तो इस क़िस्म के सवाल करने का तुम्हारा क्या मक़सद है?

क़ौम ने जवाब दिया कि हम आसमानों से खाना उतरने का सवाल करके एक मोजिज़ा की तलब नहीं कर रहे बल्कि हमारा यह सवाल दर हक़ीक़त कई चीज़ों की तलब पर मुश्तमिल है।

१. हम चाहते हैं कि आमसानों से हमारे लिए खाना उतरे क्योंकि हम भूख में मुब्तला हैं हमारे पास और कोई खाने की चीज़ नहीं है।

२. हमें अल्लाह तआला की कुदरत पर यक़ीन हो जाए लेकिन जब हम इसका मुशाहदा करेंगे कि यह खाना आसमानों से नाज़िल हुआ है तो हमारा यक़ीन और बढ़ जायगा और इत्मीनान में कुव्वत हासिल होगी।

३. हम आपके कई मोजिज़ात को देखकर आपकी सदाक़त पर यक़ीन कर चुके हैं जब यह मोजिज़ा भी देख लेंगे तो आपकी सदाक़त व नबुव्वत पर हमारा यक़ीन और ज़्यादा होगा आपकी मारफ़त और ज़्यादा हासिल होगी आपके मुताल्लिक़ और इत्मीनान होगा।

४. इससे पहले आपने अगरचे मोजिज़ात दिखाए हैं लेकिन वह तमाम ज़मीन से ताल्लुक़ रखने वाले

थे अब हम वह मोजिज़ा देखना चाहते हैं जिसका ताल्लुक़ आमसानों से है यह अज़ीम और अजीब मोजिज़ा होगा जब हम इसका मुशाहिदा कर लेंगे तो हम इस पर गवाह बन जायेंगे बनी इस्राईल के जो लोग नहीं हाज़िर हैं उन्हें भी बतायेंगे।

५. हम यह खाना बतौर तबर्रुक खायेंगे कि यह नबी के मोजिज़ा से हासिल है।

६. और हम यह खाना बतौर मुहब्ब्त खायेंगे कि हमें यह अपने नबी के ज़रिये हासिल है।

ईसा अलैहिस्सलाम की माइदा के लिए दुआ : ईसा बिन मरयम ने अर्ज़ की ऐ अल्लाह तआला! ऐ हमारे रब! हम पर आसमान से एक ख़्वान उतार कि वह हमारे लिए ईद हो हमारे अगले पिछलों की और तेरी तरफ़ से निशानी हो और हमें रिज़्क़ दे और तू सबसे बेहतर रोज़ी देने वाला है।

जब ईसा अलैहिस्सलाम ने देखा कि इन लोगों का मोजिज़ा की तलब पर इसरार है और गर्ज़ भी इनकी सही है तो आपने दुआ करने का पक्का इरादा कर लिया आपने बकरी के बालों का बना हुआ स्याह मोटा लिबास पहना, वुज़ू किया गुस्ल किया, नवाफ़िल अदा किये, क़िब्ले की तरफ़ मुतावज्जेह होकर खड़े हुए, निहायत ख़ुशूअ व ख़ुज़ू से आंखों को बंद करके सर को झुकाया आंसू बहाते हुए रब तआला के हुज़ूर इल्तेजा की। ऐ अल्लाह तआला हम पर आसमानों से दस्तरख़्वान नाज़िल फ़रमा जो हमारे लिए और हमारे अगलों और पिछलों के लिए ईद बने।

यानी जिस दिन आसमानों से ख़्वान उतरेगा हम उसे अपने लिए ईद का दिन समझेंगे हम भी उस दिन की अज़मत करेंगे और हमारे बाद आने वाले भी उसकी अज़मत करेंगे।

फ़ायदा : इससे मालूम हुआ कि जिस रोज़ अल्लाह तआला की ख़ास रहमत नाज़िल हो उस दिन को ईद बनाना और ख़ुशियां मनाना इबादतें करना, शुक्रे इलाही बजा लाना तरीक़ए सालेहीन है और कुछ शक नहीं कि सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की तशरीफ़ आवरी अल्लाह तआला की अज़ीम तरीन नेमत और बुजुर्ग तरीन रहमत है इसलिए हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की विलादतें मुबारका के दिन ईद मनाना और मिलाद शरीफ़ के मौज़ू पर नातें पढ़कर तक़ारीर करके तिलावत कुरआन करके शुक्रे इलाही बजा लाना और इज़हारे फ़रह व सुरूर करना मुस्तहसन व महमूद और अल्लाह तआला के मक़बूल बंदों का तरीक़ा है मैंने अपनी किताब शमा हिदायत में इस मौज़ू पर काफ़ी बहस की है यहां इसका एक वर्क़ बतौर ख़ुलासा ज़िक्र कर रहा हूं।

ईद को ईद इसलिए कहा जाता है कि इसमें अल्लाह तआला के एहसानात लौटकर आते हैं और उनके आने से सुरूर भी ग़ालिबन लौट आता है या नेक शगुनी की वजह से ईद कहा जाता है यानी अल्लाह तआला करे ख़ुशी लौट आए हर मुसर्रत के मौक़े पर लफ़्ज़ ईद इस्तेमाल किया जा सकता है इसी वजह से शायर ने कहा :

आज तो तीन ईदें जमा हो गई। हबीब के चेहरे का दीदार और ईद का रोज़ और जुमा का दिन।

मालूम हुआ कि हर मुसर्रत के दिन को ईद कहना फुक़हाए किराम के नज़दीक जायज़ है जब हर मुसर्रत के दिन को ईद कहा जाता है तो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की विलादत बा सआदत के दिन से बढ़कर मुसर्रत का दिन और कौन सा हो सकता है?

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा से मरवी है कि आपने अल–यौ–म अक मलतु लकुम दी नकुम" आयते करीमा तिलावत की तो आपके पास एक यहूदी था उसने कहा अगर यह आयते करीमा हम पर नाज़िल होती तो हम इस दिन को ईद बनाते तो हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा ने फ़रमाया।

कि बेशक यह आयते करीमा उस दिन नाज़िल हुई जि दन दो ईदें थीं एक जुमा का दिन और एक नवीं ज़िल हिज्जा का दिन।

वह दोनों हमारे लिए ईद के दिन हैं यानी हम हर ज़िल हिज्जा की नौ तारीख़ को ईद मानते हैं और यह आयते करीमा भी हुज्जतुल विदा के मौक़े पर उसी दिन नाज़िल हुई और जुमा का दिन भी हमारे लिए ईद का दिन होता है इस तरह यह आयते करीमा जब नाज़िल हुई उस दिन दो ईदें थीं वाज़ेह हुआ कि जुमा का दिन और अरफ़ा का दिन अल्लाह तआला की ख़ुसूसी रहमतों के नाज़िल होने की वजह से जब ईद बन गये तो यक़ीनन जिस दिन सरापा रहमत, जाने रहमत हबीबे किब्रिया सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तशरीफ़ लाए वह दिन सब ईदों के दिनों से बड़ा है अलबत्ता मुहब्बत व ईमान के बग़ैर इसे समझना दुश्वार है।

इरशादे बारी तआला व-जवाब ईसा अलैहिस्सलाम : अल्लाह तआला ने फ़रमाया मैं इसे तुम पर उतारता हूं फिर इसके बाद जो तुममें से कुफ़्र करेगा तो बेशक मैं उसे वह अज़ाब दूंगा कि सारे जहां में किसी पर न करूंगा। आपकी दुआ से सुर्ख़ रंग का माइदा दो बादलों के दर्मियान उतरा जिसे सब लोग देख रहे थे यहां तक कि वह उनके पास आ गया उस ख़्वान के आने को रब तआला ने चूंकि इससे मशरूत कर दिया था कि नाज़िल तो मैं कर रहा हूं लेकिन इसके बाद जो तुम में से कुफ़्र करेगा नाफ़रमानी करेगा उसे ऐसा अज़ाब दूंगा जो जहां में से किसी और को नहीं दूंगा।

इस शर्त की वजह से ईसा अलैहिस्सलाम ख़्वान को उतरते हुए देख कर रोने लगे और दुआ करने लगे।

ऐ अल्लाह तआलाम मुझे शुक्रगुज़ारों में रख ऐ अल्लाह तआला इस ख़्वान को हमारे लिए रहमत बना और इसे हमारे लिए तबाही और अज़ाब न बना।

फिर आपने वुज़ू फ़रमाया नवाफ़िल अदा किये रोते हुए दुआ करते हुए उससे रुमाल को हटाया जिससे वह ढांपा हुआ था और कहा:

अल्लाह तआला के नाम से शुरू जो बेहतर रिज़्क़ देने वाला है।

उस ख़्वान में आपने देखा कि भुनी हुई मछली है उस मछली में कांटे और छिलके नहीं इसके सर पर नमक, दुम पर सिरका और उसके इर्द गिर्द मुख़्तलिफ़ क़िस्म की सब्ज़ियां हैं उस पर हर क़िस्म की सब्ज़ियां थी सिवाए एक साग करास (गंदना का साग) के और इस ख़्वान में पांच रोटियां थी एक पर ज़ैतून और दूसरी पर शहद और तीसरी पर घी और चौथी पर पनीर और पांचवी पर भुना हुआ गोश्त।

शमऊन ने पूछा ऐ रूहुल्लाह अलैहिस्सलाम क्या यह दुनिया का खाना है या कि आख़रत का तो आपने फ़रमाया कि इन दोनों से नहीं बल्कि अल्लाह तआला ने अपनी कुदरते कामिला से इसे अब ही

मारिज़े वजूद में लाया है तुम्हारे सवाल के मुताबिक़ रब तआला ने नाज़िल फ़रमाया है अब तुम खाओ और अल्लाह तआला का शुक्रिया अदा करो अगर तुमने अल्लाह तआला का शुक्रिया अदा किया तो वह तुम्हारी और इमदाद फ़रमायेगा और अपना फ़ज़्ल और ज़्यादा फ़रमायेगा वह लोग कहने लगे ऐ रूहुल्लाह अलैहिस्सलाम इस मोजिज़ा में आप कोई और मोजिजा भी दिखा दें आपने फ़रमाया।

ऐ मछली अल्लाह के हुक्म से ज़िन्दा हो जा।

वह मछली तड़पी और ज़िन्दा हो गई आपने फिर फ़रमाया तू अपने पहले हाल की तरफ़ लौट जा वह फिर उसी तरह भुनी हुई मछली बन गई उन लोगों ने उसे सैर होकर खाया ईसा अलैहिस्सलाम ने उन्हें कहा इसमें ख़्यानत न करें और इसे दूसरे दिन के लिए ज़ख़ीरा न करें लेकिन उन्होंने ख़्यानत की और ज़ख़ीरा बना लिया तो वह अल्लाह तआला की शदीद गिरफ़्त में आ गये दुनिया में इन्हें शदीद अज़ाब यह दिया गया कि इन्हें ख़िंज़ीर बना दिया गया। तीन सौ तीस आदमी इस अज़ाब में मुब्तला हुए। रात उन्होंने ठीक अपने अहल व अयाल में गुज़ारी लेकिन सुबह ख़िंज़ीर बना दिये गये ईसा अलैहिस्सलाम को देखकर रोते थे। आप जब उनके नाम लेकर उन्हें बुलाते तो वह सर हिलाते लेकिन उन्हें कलाम करने की ताक़त न होती। इसी हाल में वह तीन दिन ज़िन्दा रहे फिर मर गये यह तो उनको दुनियावी अज़ाब दिया गया उख़रवी अज़ाब भी उन्हें शदीद होगा।

हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं

बेशक क़यामत के दिन सख़्त अज़ाब माइदा में ख़्यानत करने वालों और मुनाफ़िक़ीन और फ़िरऔन और उसकी क़ौम को होगा।

यहूदियों की साज़िश : और काफ़िरों ने मकर किया और अल्लाह तआला ने इनके हलाक करने की ख़ुफ़िया तदबीर बताई और अल्लाह तआला सबसे बेहतर ख़ुफ़िया तदबीर करने वाला है।

ईसा अलैहिस्सलाम को हलाक करने की साज़िश काफ़िरों ने क्यों की इसकी चंद वजहे हैं।

१. जब अल्लाह तआला ने आपको रसूल बनाकर भेजा आपने इनको अल्लाह तआला के दीन की दावत दी वह सरकश और नाफ़रमान हो गये तो आपने उनसे मख़्फ़ी रहने का फ़ैसला फ़रमाया ताकि वह कोई नुक़सान न पहुंचा सकें। आपका मामला भी ऐसा ही था जैसा कि नबी करीम का मक्का मुकर्रमा में हाल था कि आप कुफ़्फ़ार के ख़ौफ़ से इब्तेदा में मख़्फ़ी तौर पर नमाज़ें अदा फ़रमाते रहे। ईसा अलैहिस्सलाम अपनी वालदा के साथ कहीं तशरीफ़ ले गये ताकि इन लोगों से कुछ देर के लिए किनारा कश हो जायें तो आपने एक बस्ती में एक शख़्स के पास क़याम किया उसने बहुत अच्छी तरह मेहमान नवाज़ी की उस शहर का बादशाह बड़ा ज़ालिम था एक दिन वह शख़्स जो आपका मेहमान नवाज़ था ग़मगीन था आपने उससे पूछा तुम इतने परेशान ग़मगीन क्यों हो? उसने कहा इस शहर का बादशाह बड़ा ज़ालिम है और उसकी आदत है कि वह हम में से हर शख़्स पर बारी बार दावत को लाज़िम कर देता है कि उसकी और उसके लश्कर की दावत करे। उन्हें खाना खिलाए और शराब पिलाये। आज मेरी बारी है और मेरे पास इतना माल नहीं कि मैं उसकी दावत का इंतेज़ाम कर सकूं।

जब हज़रत मरयम ने सुना तो आपने ईसा अलैहिस्सलाम को कहा ऐ अल्लाह तआला के नबी इसके

लिए दुआ करो ताकि इसकी मुश्किल हल हो जाये। आप अलैहिस्सलाम ने कहा ऐ मेरी अम्मी अगर मैंने इसके लिए दुआ कर दी तो इसमें फ़ित्ना बरपा हो जायेगा लेकिन हज़रत मरयम ने कहा कि इस शख़्स ने हमारी बहुत इज़्ज़त की एहसान व इकराम किया इस पर भी एहसान होना चाहिये।

वालदा के इरशाद व इसरार पर आपने उसे कहा कि जब बादशाह और उसके लश्कर के आने का वक़्त क़रीब हो जाए तो हंडिया और मटके पानी से भर लेना और मुझे ख़बर करना जब उस शख़्स ने आपके इरशाद पर अमल कर लिया तो आपने अल्लाह तआला से दुआ की जितनी हडिंया पानी से भरी थी सबमें पका हुआ गोश्त हो गया और सब पानी से भरे हुए मटके शराब से भर गये।

जब वह बादशाह और उसके लश्करी आए तो उन्होंने खाना खाया और शराब पी तो बादशाह ने उस शराब को आम शराबों से मुख़्तलिफ़ लज्ज़त वाला पाकर सवाल किया कि शराब तुम कहां से लाए? पहले तो उस शख़्स ने काफ़ी टाल मटोल से काम लिया लेकिन बादशाह के ज़्यादा मजबूर करने पर उसने बता दिया बादशाह का एक बेटा चंद दिन पहले मर गया था उसने ख़्याल किया कि जिस शख़्स की दुआ से अल्लाह तआला पानी को शराब बना देता है उसकी दुआ से अल्लाह तआला मेरे बेटे को भी ज़िन्दा कर देगा। उसने ईसा अलैहिस्सलाम की ख़िदमत में अर्ज़ किया कि आप दुआ करें ताकि अल्लाह तआला मेरे बेटे को ज़िंदा कर दे।

ईसा अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि ऐसा नहीं करते क्योंकि अगर वह ज़िन्दा हो गया तो उस पर फ़ित्ना बरपा हो जायेगा उस बादशाह ने कहा जब मुझे मेरा बेटा नज़र आ जायेगा तो मुझे किसी चीज़ की परवाह नहीं होगी और जब तुम मेरे बेटे को ज़िन्दा कर दोगे तो मैं तुम्हें हर क़िस्म की आज़ादी दे दूंगा तुम जो चाहो वही करो तुम से कोई बाज़ पुर्स नहीं होगी। ईसा अलैहिस्सलाम ने अल्लाह तआला से दुआ की तो उसका लड़का ज़िन्दा हो गया जब उसकी बादशाही के लोगों को पता चला कि उसका लड़का ज़िन्दा हो गया तो फ़ौरन अपने अपने हथियार ले कर आ गये और उन्होंने उसे क़त्ल कर दिया ईसा अलैहिस्सलाम की जब ज़्यादा शोहरत होने लगी तो यहूद ने हसद करना शुरू कर दिया आपके नसब में तानाज़नी शुरू कर दी और आपको क़त्ल करने की साज़िशें करने लगे।

२. ईसा अलैहिस्सलाम की तशरीफ़ आवरी की बशारत तौरात में रब तआला ने दे दी थी इसलिए यहूद को मालूम था कि इन्हें तौरात के कई अहकाम मनसूख़ कर देने हैं इसलिए पहले उन्होंने आपके नसब पर तानाज़नी शुरू की फिर आप के क़त्ल के मंसूबे बनाने लगे आपने जब दीने हक़ की दावत देनी शुरू की तो यहूद का ग़ैज़ व ग़ज़ब बढ़ गया और आपको ईज़ा पहुंचानी और वहशत फैलानी शुरू की और आपको क़त्ल करने की कोशिश की।

तंबीह : व–मकरल्लाह का कई लोगों ने तर्जमा किया अल्लाह तआला ने मक्र किया जो उर्दू ज़बान में फ़रेब और धोका देने के मायने में इस्तेमाल होता है इसलिए उन्होंने यह तर्जमा करके लोगों को शकूक व शुबहात में मुब्तला कर दिया कि अल्लाह तआला भी माअज़ल्लाह मक्कार है। लेकिन आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी और दीगर उलेमाए अहले सुन्नत ने तर्जमा किया है अल्लाह तआला ने ख़ुफ़िया तदबीर की यही मायने रब तआला की शान के लायक़ है।

हज़रत पीर करम शाह साहब रहमतुल्लाह अलैहि फ़रमाते हैं कि तक़रीबन हर ज़बान में ऐसे

मुश्तरका अल्फ़ाज़ पाए जाते हैं जो मुतअद्दिद मआनी पर दलालत करते हैं लेकिन जब वही लफ़्ज़ किसी दूसरी ज़बान में इस्तेमाल होने लगता है तो वह अपने असली मुख़्तलिफ़ मायनों में से किसी एक मायने में मशहूर हो जाता है अब जब हम उसे इसकी असल ज़बान में मुस्तअमल होते हुए पाते हैं तो इसका वही मायने जो हमारे ज़ेहन नशीन हो चुका होता है चस्पां करने की कोशिश करते हैं। और जब चस्पां नहीं होता तो परेशान हो जाते हैं इसकी एक मिसाल लफ़्ज़ मक्र है इसका मायने हीला साज़ी भी है और यही लफ़्ज़ अरबी में सिर्फ़ तदबीर क़रने और किसी की पिनहां साज़िश को ख़ुफ़िया तरीक़ा से नाकाम बना देने के मायने में भी इस्तेमाल होता है लेकिन उर्दू में हम इस लफ़्ज़ मक्र को सिर्फ़ धोका दही और फ़रेब कारी को मायनो में इस्तेमाल करते हैं जब उस फ़ेअल की निस्बत ज़ाते बारी की तरफ़ होती है तो हमारा ज़ेहन बिला वजह तरह तरह के शकूक व शुबहात की आमाजगाह बन जाता है हालांकि जब इसका फ़ाअल वह ज़ात मुक़द्दस हो जो हर ऐब हर नक़्स और नाज़ेबा फ़ेअल से पाक है तो हम लफ़्ज़ मक्र का मायने सिर्फ़ ख़ुफ़िया तदबीर या ख़ुफ़िया तरीक़े जिससे दुश्मनाने हक़ के शैतानी मंसूबों को ख़ाक में मिलाना मक़सूद होता है करेंगे अब किसी क़िस्म का शक बाक़ी नहीं रहता।

मुफ़ज़्ज़िल फ़रमाते हैं व म–क–रू व म–क–रल्लाह का मायने है और यहूदियों ने भी (मसीह ईसा अलैहिस्सलाम को क़त्ल करने की) ख़ुफ़िया तदबीर की और अल्लाह तआला ने भी (मसीह अलैहिस्सलाम को बचाने की) ख़ुफिया तदबीर की, क्योंकि मक्र का मायने यहां लतीफ़ तदबीर, ख़ुफ़िया तदबीर ही लिया जा सकता है और अगर इन लुग़वी तहक़ीक़ात के लिए इंसान के पास वक़्त न हो तो कम से कम इल्मे बदीअ के क़ायदए मुशाकेलत को हमेशा पेशे नज़र रखे वह यह है कि अरबी में किसी बुरे और ना पसंदीदा फेअल पर जो सज़ा दी जाती है उसे इस लफ़्ज़ से ताबीर कर देते हैं हालांकि वह सज़ा कितनी मुनासिब और क़रीने इंसाफ़ क्यों न हो मसलन।

यानी बुराई का बदला बुराई है।

इसी तरह हालांकि बुराई की सज़ा बुराई नहीं हुआ करती बल्कि ऐन इंसाफ़ हुआ करती है या मसलन।

यानी जो तुम पर ज़्यादती करे तुम उस पर ज़्यादती करो। हालांकि ज़्यादती और तअद्दी (हद से बढ़ना की) रोकथाम करना ज़्यादती और जुल्म नहीं बल्कि दीन और अख़्लाक़ के तमाम ज़ाब्ते इसके दुरुस्त होने की ताईद करते हैं। इसी तरह यहां भी हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम के क़त्ल करने की जो मक्काराना साज़िश इन यहूदियों ने कर रखी थी अल्लाह तआला की तरफ़ से उसको नाकाम बनाने की जो तदबीर की गई उसे मक्र से ताबीर फ़रमा दिया और इसमें कोई नक़्स नहीं। लेकिन यह निकात व ज़वाबित सिर्फ़ अहले इल्म ही जानते हैं अवामुन्नास उनसे बेख़बर होते हैं उनके सामने वही तर्जमा पेश किया जाता है जिससे वह कोई फ़ायदा हासिल कर सकें ऐसे तराजिम का क्या फ़ायदा जो शकूक शुबहात तो पैदा करें लेकिन कोई नफ़ा न दे सकें।

ईमान वालों से ईसा अलैहिस्सलाम का इमदाद तलब करना : फिर जब ईसा ने उनसे कुफ़्र महसूस किया तो कहा कौन होते हैं मेरे मददगार अल्लाह तआला की तरफ़ हवारियों ने कहा हम दीने ख़ुदा के मददगार हैं हम अल्लाह तआला पर ईमान लाए और आप गवाह हो जायें कि हम मुसलमान हैं ऐ

हमारे रब हम उस पर ईमान लाए हैं जो तूने उतारा और रसूल के ताबे हुए तू हमें हक़ पर गवाही देने वालों में लिख दे।

जब ईसा अलैहिस्सलाम ने अपना हकीमाना कलाम और अपने मोजिज़ात इस कौम के सामने पेश किये तो उन्होंने बजाए इताअत के उनके क़त्ल करने की तदबीर की लिहाज़ा ईसा अलैहिस्सलाम ने उनके इस इरादे और पुख़्ता कुफ़्र का अलामात से महसूस फ़रमाया तो अपने मानने वालों से ख़िताब किया कि फ़ी सबीलिल्लाह तआला मेरा मददगार कौन है? उनके ख़ास दोस्तों ने कहा कि हम अल्लाह तआला के दीन के मददगार हैं ऐ ईसा अलैहिस्सलाम हम आपकी ज़रूर मदद करेंगे। इस मदद पर कोई दुनियावी उजरत मांगते हैं न कोई और चीज़ सिर्फ़ ख़्वाहिश यह है कि आप क़यामत के दिन हमारी इताअत और फ़रमा बर्दारी और मुसलमान होने की गवाही दें फिर रब तआला की तरफ़ मुतावज्जेह होकर अर्ज़ करने लगे कि ऐ मौला! हम तेरी उतारी हुई किताबों और अंबियाए किराम को अता करदा मोजिज़ात पर ईमान लाए और सच्चे दिल से ज़ाहिर व बातिन में तेरे इस रसूल के पैरोकार बने।

ईसा अलैहिस्सलाम के आसमान पर जाने का वाक़िया : तफ़सीर ख़ाज़िन और रूहुल मआनी में ब्यान किया गया है कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा से मरवी है कि बनी इस्राईल को जब ईसा अलैहिस्सलाम ने तबलीग़ फ़रमाई तो वह आप से मुक़ाबला तो न कर सके अलबत्ता आपकी शान में गुस्ताख़ी शुरू कर दी और आपकी वालदा मुकर्रमा पर ऐब लगाने शुरू कर दिये और आपको तरह तरह की तकालीफ़ देनी शुरू कर दीं।

एक दिन आप शहर में गश्त फ़रमा रहे थे कि शहर के लोगों ने आपको बहुत परेशान किया तब आपने अल्लाह तआला से दुआ की ऐ मौलाए कायनात! मैं कहां तक सब्र करूं अब बेहतर यही है कि तू इनको ख़िंज़ीर बना दे। आपकी ज़बान मुबारका से यह अल्फ़ाज़ निकले ही थे कि वह सब ख़िंज़ीर बन गये इस वाक़िये से लोगों पर एक ख़ौफ़ तारी हो गया किसी ने उस वक़्त के यहूदी बादशाह को ख़बर दी कि ईसा अलैहिस्सलाम की दुआ को अल्लाह तआला क़बूल फ़रमाता है आपकी दुआ से इतने लोग ख़िंज़ीर बन गये हैं तुम भी इनके मुख़ालिफ़ हो इसलिए तुम अपनी फ़िक्र रखो कहीं वह तुम्हारे ख़िलाफ़ भी दुआ न कर दें और तुम्हारा भी ऐसा हाल न हो जाये।

उसने कहा क्या हो सकता है ऐसे मक़बूलुद दुआ के मुक़ाबले में तो कोई तदबीर भी काम नहीं आ सकती अलबत्ता यह हो सकता है कि इन्हें किसी हीला से शहीद कर दिया जाए तो इनकी दुआ का ख़ौफ़ ख़त्म हो जायेगा कि कहीं वह मुख़ालिफ़ दुआ न करें। उसने एक शख़्स ततयानूस को इस काम के लिए मुन्तख़ब कर दिया वह एक मुनाफ़िक़ शख़्स था बज़ाहिर ईसा अलैहिस्सलाम से भी मिलता था लेकिन दरे पर्दा वह यहूद से भी मिला हुआ था जब यह वाक़िया पेश आने ही वाला था तो हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम ने अपने हवारियों से पहले फ़रमा दिया था कि आज सुबह से पहले ही मुझे एक शख़्स चंद दराहिम के एवज़ फ़रोख़्त कर देगा।

ख़्याल रहे कि मुनाफ़िक़ तक़रीबन हर दौर में रहे यानी जहां मुख़्लेसीन होते हैं वहां मुनाफ़क़ीन भी होते हैं नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के ज़माने में भी मुनाफ़क़ीन थे जब तक अल्लाह तआला की तरफ़ से हुक्म नहीं आया था उस वक़्त तक जानने के बावजूद आप इनसे चश्म पोशी फ़रमाते

रहे जब हुक्म आ गया तो एक एक का नाम लेकर उनको मस्जिद से निकाल दिया गया।

ईसा अलैहिस्सलाम को भी यह मालूम था लेकिन आप भी रब तआला की मशीयत पर शाकिर थे उसे कुछ नहीं कहा और न ही किसी और को कहा कि इसे क़त्ल कर दिया जाये चुनांचे ततयानूस को उस यहूदी बादशाह ने जिसका नाम भी यहूदा था तीस दिरहम देने का वादा किया कि यह ईसा अलैहिस्सलाम को ख़ुद शहीद कर दे या किसी से करा दे। तीस दिरहम के लालच में आकर ततयानूस ने यहूद के चंद आदमियों को साथ लिया और आपकी क़यामगाह पर आ गया इन लोगों को बाहर खड़ा किया और ख़ुद अंदर गया उसके सामने ही ईसा अलैहिस्सलाम को कोठरी के ज़रिये आसमानों पर ज़िन्दा उठा लिया गया वह यह माजरा देखकर बहुत मुताज्जिब हुआ और काफ़ी देर तक इस ताज्जुब में गुमसुम रहा उसके साथियों ने समझा कि शायद ततयानूस और ईसा अलैहिस्सलाम के दर्मियान लड़ाई हो रही है वह अंदर जाना ही चाहते थे लेकिन उनका साथी बाहर आ गया अल्लाह तआला ने उसे ईसा अलैहिस्सलाम का हम शक्ल बना दिया।

अब उसके बाहर निकलते ही उसके साथी यहूदियों ने यही समझा कि यह ईसा अलैहिस्सलाम हैं क्योंकि यह उनका हम शक्ल भी था इसलिए उन्होंने उसे पकड़ लिया यह चिल्ला चिल्लाकर उन्हें बता रहा था कि मैं तुम्हारा साथी हूं हज़रत मसीह को क़त्ल करने गया था लेकिन उसकी बात को किसी ने भी न सुना बल्कि वह कहने लगे ऐ ईसा अलैहिस्सलाम! तुमने हमारे साथी को क़त्ल कर दिया अब हमें धोका देना चाहते हो यह कहकर उसे सूली पर चढ़ा दिया। ख़्याल रहे कि ईसाई भी आज तक इसी वहम में मुब्तला हैं कि ईसा अलैहिस्सलाम को सूली पर चढ़ा दिया गया था अलबत्ता फिर ज़िन्दा करके उन्हें आसमानों पर उठाया गया है। इसी वजह से सारे ईसाई सलीब को पूजते हैं और उस सूली को अपने गुनाहों का कफ़्फ़ारा समझते हैं मगर हक़ीक़त यह है कि ततयानूस को क़त्ल किया गया न कि ईसा अलैहिस्सलाम को।

और इनके इस क़ौल से कि हमने क़त्ल कर दिया है मसीह ईसा अलैहिस्सलाम फ़रज़ंदे मरयम को जो कि अल्लाह तआला का रसूल है हालांकि उन्होंने न क़त्ल किया और न उसे सूली चढ़ा सके बल्कि मुश्तभा हो गई उनके लिए (हक़ीक़त) और यक़ीनन जिन्होंने इख़्तेलाफ़ किया इनके बारे में वह भी शक शुवह में हैं इनके मुताल्लिक़ नहीं इनके पास इस अम्र का कोई सही इल्म बजुज़ इसके कि वह पैरवी करते हैं गुमान की और नहीं क़त्ल किया उन्होंने उसे यक़ीनन।

यहूद ने यह दावा किया कि हमने अल्लाह तआला के रसूल मसीह को क़त्ल कर दिया है मुफ़स्सेरीन किराम ने लिखा है कि जब वह आपको रसूल मानते थे तो फिर क़त्ल का मंसूबा क्यों तैयार किया? इसके दो जवाब दिये गये हैं।

१. यह अल्फ़ाज़ उन्होंने बतौर तमसख़ुर बढ़ाए थे वह आपको रसूल मानते ही नहीं थे।

२. यह अल्फ़ाज़ यहूद ने नहीं बढ़ाए थे बल्कि अल्लाह तआला ने हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की शान में ब्यान करने के लिए बढ़ाए हैं।

अगर यहूद की गुज़श्ता तारीख़ को देखा जाए तो यह कुछ बईद मालूम नहीं होता कि आपको रसूलुल्लाह मानते हुए उन्होंने आपको क़त्ल करने की ठानी हो, हज़रत ज़क्रिया और हज़रत यहया

अलैहिस्सलाम को नबी मानते थे लेकिन जब इन बुर्जुगवारों ने इन्हें उनकी बद अख़लाकियों पर टोका तो उन्हें अपने हाथों से शहीद कर दिया बहरहाल उनका यह दावा करना कि हम ने मसीह को क़त्ल कर दिया है। कुरआन पाक में इसको मुकम्मल और वाज़ेह कर दिया गया है और फिर उनका इस पर इतराना और फख़ करना इससे बढ़कर उनके कुफ़्र की और क्या दलील हो सकती है।

अजीब बात है कि हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम के दुश्मन यहूद भी दावा करते हैं कि हमने उनको क़त्ल कर दिया और सूली दे दिया और आपके मानने वाले भी यही यक़ीन रखते हैं कि यहूद ने हज़रत मसीह को सूली दे दी, गोया बेटा सूली पर लटकते हुए ईली ईली (तुमने मुझे क्यों छोड़ दिया) फ़रयाद करता रहा और बाप ने उसकी कुछ मदद न की। इसी मुहावरे के मुताबिक़ जब दुश्मन और दोस्त इस बात पर मुत्तफ़िक़ हो चुके थे तो कुरआन ने आकर हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की अज़मत व जलालते शान से पर्दा उठाया और साफ़ अल्फ़ाज़ में ऐलान किया कि यहूदी अपनी साज़िश में कामयाब न हो सके जिस अल्लाह तआला के रसूल को अपने अल्लाह तआला का पैग़ाम सुनाने के बाइस उन्होंने क़त्ल करने की सर तोड़ कोशिश की अल्लाह तआला ने उनकी इस नापाक साज़िश को नाकाम बना दिया और अपने रसूल का बाल भी बीका न होने दिया दोनों चीज़ों की नफ़ी कर दी यानी यहूदी न आपको क़त्ल कर सके और न सूली पर चढ़ा सके जैसे मुख़्तलिफ़ इंजीलों में मज़कूर है।

मिरज़ाईयों की लाहौरी पार्टी के अमीर मौलवी मुहम्मद अली ने अपने अंग्रेज़ी तर्जमा कुरआन पाक में इस जगह एक नोट लिखा है इसमें इस बात की बड़ी ज़हमत उठाई है कि :

आयाते कुरआन को इंजीलों में ब्यान कर्दा हिकायात पर मुनतबिक़ करें चुनांचे वह इन तफ़सीलात को जो इंजीलों में मौजूद हैं बड़ी फ़राख़दिली से क़बूल करते हैं कि हज़रत मसीह को सूली दी गई चुनांचे नीम जान होकर वह दूसरे दो मुजरिमों तरह नीचे गिर पड़े आपके पहलू में ज़रबें लगा लगाकर छलनी कर दिया गया और ख़ून के फ़व्वारे बह निकले वग़ैरह फिर आख़िर में नतीजा अख़्ज़ करते हैं कि कुरआन इन चीज़ों का इंकार नहीं करता क्योंकि कुरआन ने भी सूली पर मरने की नफ़ी नहीं की है।

लेकिन अगर वह ज़रा सा ताम्मुल करते सोचते तो कुरआन का एक लफ़्ज़ ही उनको इस ज़हमते बे फ़ायदा से बचा लेता वहां दोनों चीज़ों की नफ़ी है मरने की भी और सूली पर चढ़ाए जाने की भी क्योंकि सुल्ब का मायने है। किसी इंसार को लटका देना कि वह मर जाये।

मर जाना सुल्ब के मायने मौजू में दाख़िल नहीं बल्कि इस फ़ेअ़ल का मक़सद है और मक़सद व ग़ायत मफ़हूम को मुस्तलिज़म हो तो हो लेकिन मायने में दाख़िल नहीं हुआ करता।

अगर यह तस्लीम कर लिया जाये तो फिर यह भी मानना पड़ेगा कि यहूद अपने मक़सद में बज़ाहिर कामयाब हो गये उन्होंने अपने ही साथी ततयानूस को मसीह समझकर पकड़ा भी और उसके मुंह पर थूका भी और उसे कांटों का ताज पहनाया और फिर सूली भी चढ़ाया गोया अपनी तरफ़ से उन्होंने इस मनहूस मंसूबा को अमली जामा पहना दिया अब यह और बात है कि मसीह बच गये उनको रब तआला ने आसमानों पर उठा लिया यहूद बज़ाहिर अपने मक़सद में कामयाब हो गये कि वह अपने ही साथी को मसीह समझकर तज़लील व तहक़ीर भी करते रहे और अज़ीयत रसानी के सारे अरमान पूरे करते रहे लेकिन यह सारी ज़िल्लत इनके अपने ही साथी को हासिल हुई और ईमान है कि अल्लाह

तआला ने यहूद की नापाक साज़िश को नाकाम कर दिया और अपने बरगुज़ीदा बंदे और जलीलुल क़द्र रसूल की तौहीन करने का उन्हें मौक़ा क़तअन नहीं दिया और यही कुरआन का वाज़ेह ऐलान है यहूद व नसारा को ईसा अलैहिस्सलाम के क़त्ल करने और सूली चढ़ाने में शक ही रहा वह फ़क़त अपने ज़न ही की पैरवी करते रहे यहूद कहते थे कि अगर ईसा अलैहिस्सलाम क़त्ल हुए हैं तो हमारा साथी कहां है और अगर हमारा साथी क़त्ल हुआ है तो ईसा अलैहिस्सलाम कहां हैं और इस बारे में नसारा के मुख़्तलिफ़ अक़वाल क़ी तो हद ही नहीं इमाम तिर्मिज़ी रहमतुल्लाह अलैहि ने तीन मशहूर फ़िरक़ों की राए नक़्ल की हैं।

(१) नस्तूरिया (२) मलकानिया (३) याकूबिया

नस्तूरिया फ़िरक़ा का क़ौल यह है कि हज़रत मसीह का नासूत सूली चढ़ाया गया लेकिन उनका लाहूत सूली नहीं चढ़ाया गया।

मलकानिया का ख़्याल है कि लाहूत को भी सूली चढ़ाया गया लेकिन बिज़्ज़ात नहीं बल्कि बवास्ता नासूत।

याकूबिया का नज़रिया है कि नासूत और लाहूत दोनों को सूली चढ़ाया गया।

अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि यह राए किसी दलील पर मबनी नहीं बल्कि सब कुछ ज़न व गुमान की नक़्श आराईयां हैं हज़रत मसीह के नाम से वाक़िफ़ हैं जितनी क़ौमें जहां कहीं बसती थीं इसी ग़लत फ़हमी का शिकार थीं कि आप को सूली पर चढ़ाया गया इस आलमी ग़लत फ़हमी का इज़ाला और हज़रत मसीह की अज़मत का ऐलान अगर कुरआन हकीम न करता तो और कौन करता इसलिए बार बार इस हक़ीक़त को दोहराया गया है एक मर्तबा फ़रमायाः

न उन्होंने क़त्ल किया और न उसे सूली पर चढ़ा सके।

और फिर फ़रमाया और नहीं क़त्ल किया उन्होंने उसे यक़ीनन।

यानी यह बात यक़ीनी है शक व वहम और गुमान से पाक है जिस बात को रब तआला यक़ीनी कहे इसमें फिर शक करना कुफ़्र नहीं तो और क्या है? गोया हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम को सूली चढ़ाने और आपकी मौत का क़ौल करने वाले ख़ुद ही अपनी ज़बान से बरमला तौर पर अपने कुफ़्र का ऐलान कर रहे हैं।

हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम के बारे में फैले हुए तमाम नज़रियात का बुतलान करके अब कुरआन ख़ुद बताता है कि वह कहां गये फ़रमाया?

बल्कि उठा लिया उसे अल्लाह तआला ने अपनी तरफ़।

अब कुदरतन यह सवाल पैदा होता है कि कहां उठा लिया कहीं वह ख़ुद बैठा तो है नहीं कि वहां बुला लिया हो तो इसका जवाब है कि आसमान पर। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की हदीसे मेराज में इसकी तसरीह मौजूद है क्योंकि रफ़ा का मायने बुलंद करना है अगर किसी चीज़ को नीची जगह से उठाकर बुलंद जगह रख दिया जाये या किसी का मर्तबा और शान बुलंद कर दी जाए तो वहां रफ़ा का लफ़्ज़ मुस्तअमल होता है और अगर दोनों चीज़ें इकट्ठी हो जायें यानी बुलंदीए मक़ाम और बुलंदीए

शान तो रफ़अ का इस्तेमाल क्यों दिल में खटके बात इतनी सी थी बिल्कुल मुख़्तसर और दो टूक कि यहूदियों का दावा और ईसाईयों का अक़ीदा कि हज़रत मसीह को सूली दे दिया गया दोनों ग़लत हैं बल्कि अल्लाह तआला ने उन्हें अपनी तरफ़ उठा लिया।

और हदीसे रसूल ने बता दिया कि आपको आसमान पर उठा लिया गया लेकिन इंसान की कज बख़्ती या नुदरत आफ़रीनी का क्या इलाज जब तक सीधी और साफ़ बात में अपनी पख़ न लगा ले हज़रत को क़रार नहीं आता।

जनाब मिरज़ा साहब तशरीफ़ लाए और अपने नबी और मसीह होने का दावा कर दिया और अपनी नबुव्वत के सबूत के लिये वफ़ाते मसीह को बतौर बुनियाद क़रार दिया हालांकि ख़त्मे नबुव्वत के मसले को हयाते मसीह के साथ दूर का भी वास्ता नहीं बल्कि अगर बफ़र्ज़ महाल हयाते मसीह साबित न हो सके तो ख़ातिमन नबीईन सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बाद किसी का किसी क़िस्म की नबुव्वत का दावा करना आयाते कुरआनी और अहादीसे नबवी का सरीह इंकार और कुफ़्र है।

मज़ीद बरां मिरज़ा साहब का मसीह होने का दावए इस्तिदलाल भी कुछ कम दिलचस्प नहीं आप मसीह क्यों हैं? इसलिये कि अहादीस में मौजूद है कि हज़रत मसीह आयेंगे और हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का कोई फ़रमान ग़लत नहीं हो सकता और अगर पूछा जाए कि जनाब जिन अहादीस में मसीह अलैहिस्सलाम की आमद का ज़िक्र है उनमें तो मसीह का नाम और उनकी वालदा का नाम और महले नुजूल और जो जो कारहाए नुमायां आप अंजाम देंगे उन सबका तफ़सीली ज़िक्र है और हुस्ने इत्तेफ़ाक़ कि आपमें उन तफ़सीलात में से कोई चीज़ भी नहीं पाई जाती तो फिर आप वह मसीह क्यों कर हुए? जिसकी आदम का वादा फ़रमाया गया।

जब कोई जवाब नहीं बन पड़ता तो फिर इन्ही अहादीस पर एतेराज़ात की बौछार और जब इसमें कामयाबी नज़र नहीं आती तो फिर तावीलात का सिलसिला शुरू हो जाता है अगर बनी इस्राईल के दानिश्वरों ने बछड़े को ख़ुदा मान लिया था तो आज अगर कोई मिरज़ा साहब को नबी या मसीहे मौऊद मान ले तो क्या ताज्जुब है?

और कोई ऐसा नहीं होगा अहले किताब से मगर वह ज़रूर ईमान लायेगा मसीह पर उनकी मौत से पहले और क़यामत के दिन वह होंगे उन पर गवाह।

यानी ईसा अलैहिस्सलाम वफ़ात से पहले ज़मीन पर नुजूल फ़रमायेंगे और उस ज़माने में जितने अहले किताब होंगे आप पर ईमान लाकर दीने इस्लाम में दाख़िल हो जायेंगे इब्ने हय्यान की इबारत है।

ज़ाहिर यही है कि लफ़्ज़ बिह और लफ़्ज़ मौतह में ज़मीरें ईसा अलैहिस्सलाम की तरफ़ लौट रही हैं स्याके कलाम से यही समझ में आता है और इमाम इब्ने जुरैर फ़रमाते हैं।

तमाम अक़वला से ज़्यादा सही और दुरुस्त क़ौल यह है कि बिह और मौतह की ज़मीरों का मरजअ ईसा अलैहिस्सलाम हैं यानी तमाम किताबी हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के फ़ौत होने से पहले उन पर ईमान ले आयेंगे। और अल्लामा करतबी यह क़ौल नक़्ल करने के बाद लिखते हैं:

कि हज़रत क़तादा इब्ने ज़ैद वग़ैरह का यही क़ौल है कि ज़हाक सईद बिन जुबैर और इमाम तिबरी ने इसी को तरजीह दी है ख़्याल रहे कि बाज़ हज़रात ने मौतह में ज़मीर का मरजअ अहले किताब को बनाया था और बाज़ ने ज़ाते ईसा अलैहिस्सलाम को यही क़ौल राजेह है कि बिह और मौतह की ज़मीरें ज़ाते ईसा अलैहिस्सलाम की तरफ़ लौट रही हैं और इसी क़ौल की वजहे तरजीह यह हदीस ब्यान करते हैं जो हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से मरवी है।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि इब्ने मरयम एक आदिल हाकिम की हैसियत से तुम में ज़रूर उतरेंगे वह दज्जाल और ख़िंज़ीर को क़त्ल करेंगे सलीब को तोड़ेंगे और सज्दा सिर्फ़ अल्लाह तआला को किया जायेगा जो परवर्दिगारे आलम है फिर हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया अगर दलील की ज़रूरत हो तो यह आयत पढ़ो।

और कोई किताबी ऐसा नहीं जो उसकी मौत से पहले ईमान लाये।

अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया मौतह की ज़मीर ईसा की तरफ़ लौटती है आपने यह बात तीन मर्तबा कही।

यह हदीस उन कसीरुत तादाद अहादीस में से एक है जिनमें आने वाले मसीह की वालदा का नाम ज़िक्र किया गया है और उनकी सिफ़ात और उनके कारहाए नुमायां का तज़किरा है इंसाफ़ से कहिये क्या जनाब मिरज़ा साहब में इनमें से कोई एक बात भी पाई जाती है अगर नहीं और यक़ीनन नहीं तो फिर वह मसीहे मौऊद (यानी जिस के आमद का वादा किया गया है) क्यों कर बन सकते हैं?

हयाते ईसा अलैहिस्सलामः ईसा अलैहिस्सलाम के मुताल्लिक़ यहूद का अक़ीदा यह है कि हमने उन्हें सूली दे दी और उनकी जान निकल गई और फिर उनको दफ़न कर दिया गया अगरचे आज तक वह इस शुबह में गिरफ़्तार हैं कि हमारा ततयानूस कहां गया ईसाई यह एतेक़ाद रखते हैं कि वाक़ई ईसा अलैहिस्सलाम को सूली पर चढ़ाया गया और आपकी जान भी निकल गई मगर फिर रब तआला ने आपको दोबारा ज़िन्दगी बख़्शी और आसमान पर उठा लिया इसी लिए वह सलीब को पूजते हैं और इसी सूली को सारे ईसाईयों के गुनाहों का कफ़्फ़ारा समझते हैं कफ़्फ़ारा का मसला सूली पर ही मबनी है।

मुसलमानों का अक़ीदा यह है कि न आपको सूली दी गई और न आप की वफ़ात वाक़ेय हुई बल्कि आपको उसी तरह मअ जिस्म शरीफ़ ज़िन्दा उठा लिया गया चुनांचे ईसा अलैहिस्सलाम का ज़िन्दा उठा लिया जाना क़तई यक़ीनी इजमाई मसला है इस पर सारी उम्मते मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का इत्तेफ़ाक़ है अलबत्ता वहब का क़ौल है कि अल्लाह तआला ने ईसा अलैहिस्सलाम को सिर्फ़ तीन साअतों के लिए मौत दी लेकिन आपको ज़िन्दा करके आसमानों पर उठा लिया गया बहरहाल वहब भी ईसा अलैहिस्सलाम के अब ज़िन्दा होने और आसमान पर ज़िन्दा उठाए जाने के क़ायल हैं ख़्याल रहे कि वहब का क़ौल जम्हूर मुसलमानों के मुख़ालिफ़ होने की वजह से ग़ैर मोतबर है बहरहाल इस मसले में आज तक मुसलमानों से किसी को इख़्तेलाफ़ नहीं हुआ।

मिरज़ाईयों ने चौधवीं सदी में इस क़तई और यक़ीनी मसले में इख़्तेलाफ़ किया वह सिर्फ़ मिरज़ा साहब के नबी बनाने के शौक़ में। उनका अक़ीदा यह है कि:

ईसा अलैहिस्सलाम को यहूद ने तख़्तए दार पर लटका दिया और उन्हें बहुत ज़लील भी किया मगर रब तआला ने उनकी जान सलीब पर न निकलने दी बल्कि यहूद उन्हें मुर्दा समझकर छोड़ गये आप ग़शी की हालत में बेदार होकर नसीबैन पहुंचे वहां से अफ़ग़ानिस्तान गये वहां से कोहे नोमान और वहां से पंजाब की तरफ़ आए और यहां से कश्मीर में गये आख़िर में एक सौ पच्चीस साल की उम्र में आप ने वफ़ात पाई। वहां ही आपका मज़ार है।

यह मनघड़त कहानी मिर्ज़ा साहब ने अपनी तसनीफ़ात में तहरीर की है और मिरज़ा साहब यह दास्ताने बे सर व पा नक़्ल करके अपने नबी बनने की राह हमवार करते रहे लेकिन मुसलमान भी इन की चालबाज़ियों को बख़ूबी समझ गये मिरज़ा साहब ने इस वाक़िये के सबूत में न कोई आयत पेश की है और न ही कोई हदीस और यहां तक कि कोई तारीख़ी हवाला भी नहीं पेश कर सके और बेचारे पेश भी क्या करते मनघड़त दास्तानों को कैसे दलाइल से साबित करते, हां अलबत्ता उनके चेले चमचे करछे अब मिरज़ा साहब की कहानियों पर मबनी किताबों का हवाला देकर अपने दिल को तसल्ली दे सकते हैं लेकिन बफ़ज़्लेहि तआला मुसलमानों को बरग़लाने धोके देने और मिरज़ा की नबुव्वत का क़ायल करने में उनका मक़सद पूरा नहीं हो सकेगा।

हयाते ईसा अलैहिस्सलाम पर दलाइल : और काफ़िरों ने मक्र किया और अल्लाह तआला ने ख़ुफ़िया तदबीर फ़रमाई। अल्लामा राज़ी रहमतुल्लाह अलैहि फ़रमाते हैं:

यानी अल्लाह तआला ने उनसे ख़ुफ़िया तदबीर फ़रमाई यानी बेशक अल्लाह तआला ने ईसा अलैहिस्सलाम को आसमानों पर उठा लिया। अल्लामा आलूसी रमतुल्लाह अलैहि फ़रमाते हैं:

अल्लाह तआला ने ख़ुफ़िया तदबीर फ़रमाई यानी एक और शख़्स को आपके मशाबेह कर दिया जिसे सूली दे दी गई और ईसा अलैहिस्सलाम को आसमानों पर उठा लिया गया।

अल्लाह तआला ने ख़ुफ़िया तदबीर फ़रमाई यानी उनके मक्र की उन्हें सज़ा दी कि ईसा अलैहिस्सलाम को आसमानों पर उठा लिया और उसी शख़्स को आपके मुशाबेह कर दिया जो आपको धोका से क़त्ल करना चाहता था यहां तक कि वह शख़्स ख़ुद ही क़त्ल हो गया।

अल्लाह तआला ने उनसे ख़ुफ़िया तदबीर फ़रमाई कि जो शख़्स ईसा अलैहिस्सलाम को क़त्ल कराने का इरादा रखता था उसे ईसा अलैहिस्सलाम के मशाबेह कर दिया तो उन्होंने उसे ही क़त्ल कर दिया और अल्लाह तआला ने ईसा अलैहिस्सलाम को आसमानों पर उठा लिया तमाम मुफ़स्सेरीने किराम का इस मसले पर इत्तेफ़ाक़ है कि आप को ज़िन्दा आसमानों पर उठा लिया गया।

याद करो जब अल्लाह तआला ने फ़रमाया ऐ ईसा मैं तुझे पूरी उम्र तक पहुंचाऊंगा और तुझे अपनी तरफ़ उठा लूंगा और तुझे काफ़िरों से पाक कर दूंगा और तेरे मानने वालों को क़यामत तक तेरे मुन्किरों पर ग़ल्बा दूंगा फिर तुम सब मेरी तरफ़ पलट कर आओगे मैं तुम में फ़ैसला कर दूंगा जिस बात में झगड़ते हो।

अल्लाह तआला ने ईसा अलैहिस्सलाम को आसमानों पर उठाकर काफ़िरों से नजात दी काफ़िरों की साज़िश से आपको बचा लिया। काफ़िरों से पाक करने का यही मतलब है कि आपकी ताबेदारी करने

वाले यानी मुसलमान आप पर सही अक़ीदा रखने वाले ता–क़यामत मुन्किरीन पर ग़ालिब रहेंगे और इसका मतलब यह भी है कि ईसाई हुकूमत वग़ैरह के लिहाज़ से यहूदियों पर ग़ालिब रहेंगे इस आयते क़रीमा में अल्लाह तआला ने आपको पूरी उम्र तक पहुंचाने और आसमानों पर उठाने और काफ़िरों की साज़िशों से पाक करने का ज़िक्र वाज़ेह तौर पर फ़रमाया।

"मुतवफ़ फ़ीका" का तर्जमा आला हज़रत बरेलवी कुद्देस सिर्रहु और हज़रत पीर मुहम्मद करमशाह रहमतुल्लाह अलैहि ने किया है मैं तुम्हें पूरी उम्र तक पहुंचाऊंगा यही मायने सबसे बेहतर है, पीर साहब इसकी तफ़सीर में रक़म तराज़ हैं।

इल्मे मआनी का यह मुसल्लेमा क़ायदा है कि अगर किसी लफ़्ज़ का एक हक़ीक़ी मायने हो और दूसरा मजाज़ी तो हक़ीक़ी माअनी को मजाज़ी पर तरजीह दी जायेगी हां अगर कोई ऐसा क़रीना पाया जाए जिसके होते हुए हक़ीक़ी मायने मुश्किल हो तो उस वक़्त मायने हक़ीक़ी को तर्क करके मायने मजाज़ी मुराद लिया जाए लेकिन अगर ऐसे क़वी क़राइन मौजूद हों तो जो हक़ीक़ी मायने मुराद लेने की ही मुवय्यद हों तो इस हालत में हक़ीक़ी मायने को तर्क करके मजाज़ी मायने मुराद लेने पर इसरार करना तो उल्टी गंगा बहाने के मतरादिफ़ है अब आप लफ़्ज़ "तूफ़ा" के मायने पर ग़ौर फ़रमायें ताजुल ओरूस में लफ़्ज़ वफ़ा की तहक़ीक़ करते हुए लिखते हैं:

यानी पूरे का पूरा ले लिया और इससे कोई चीज़ बाक़ी नहीं रहने दी।

इमाम अबू अब्दुल्लाह रहमतुल्लाह अलैहि "अल–अहकाम" में लिखते हैं:

यीन मैंने उससे सारा माल वापस ले लिया।

यह तो है लफ़्ज" तवफ़्फ़ा" का हक़ीक़ी मायने हां यह लफ़्ज़ मौत के मायने में भी इस्तेमाल होता है लेकिन यह इस का मजाज़ी मायने है जैसे साहबे ताजुल उरूस ने लिखा है।

इसका मजाज़ी मायने है कि इसे मौत ने पा लिया जो कोई शख़्स फ़ौत हो जाए तो तवफ़्फ़ा फ़लां कहा जाता है और जब अल्लाह तआला के हुक्म से किसी की रूह को क़ब्ज़ कर लिया जाए तो कहा जाता है। "तूफ़ाहुल्लाहि अज़ व जल्ल"

अब आप खुद फ़ैसला फ़रमा लें कि एक लफ़्ज़ का हक़ीक़ी मायने तर्क करके बग़ैर क़रीना के इससे मजाज़ी मायने अख़्ज़ करने पर इसरार करना इस लफ़्ज़ के साथ कितनी बेजा ज़्यादती है और यहां सिर्फ़ इतना ही नहीं कि मजाज़ी मायने लेने का कोई क़रीना मौजूद नहीं बल्कि ऐसे क़वी क़राइन मौजूद हैं जो इस लफ़्ज़ के हक़ीक़ी मायने लिए जाने पर दलालत करते हैं आप पूछेंगे कि वह कौन से ऐसे क़राईन हैं तो इसके मुताल्लिक़ अर्ज है कि:

एक तो इस आयत का स्याक़ व सबाक़ इस अम्र का क़वी क़रीना है यहां गुफ़्तगू नजरान के ईसाईयों से हो रही है जो हज़रत मसीह की उलूहियत के क़ायल थे मक़सद कलाम है इस्बाते तौहीदे बारी और बुतलाने उलूहियते मसीह अगर हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम मर चुके होते तो कितनी साफ़ बात थी कि नज़रान के ईसाईयों से कह दिया जाता कि जिन को तुम खुदा मानते हो वह तो मर चुके हैं और जो मर जाए क्या वह भी कहीं खुदा बन सकता है लेकिन कुरआन का इस स्लूब को इख़्तेयार न करना

बल्कि इस अंदाज़ को अपनाना इस बात की वाज़ेह दलील है कि कुरआन की इस आयत का मुद्दा हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की मौत को ब्यान करना नहीं। दूसरा वाज़ेह क़रीना हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का यह इरशादे गिरमी है:

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने यहूद को फ़रमाया ईसा अलैहिस्सलाम मरे नहीं और क़यामत से पहले वह तुम्हारी तरफ़ लौटकर आयेंगे।

इन तस्रीहात की मौजूदगी में हक़ीक़ी मायने को छोड़कर मजाज़ी मायने मुराद नहीं हो सकता इसी लिए जम्हूर मुफ़स्सेरीन इस हक़ीक़ी मायने को नज़र अंदाज़ रखे हुए हैं।

अल्लाह तआला तुम्हें अपनी मुक़र्ररा मुद्दत तक ज़िन्दा रखेगा और तुम्हें क़त्ल से बचायेगा।

अल्लाह तआला तुम्हें पूरी उम्र तक पहुंचायेगा यानी तुम्हें कुफ़्फ़ार के क़त्ल से बचायेगा। इमाम इब्ने जुरैर रहमतुल्लाह अलैहि लिखते हैं:

यानी मेरे नज़दीक सहीह तरीन क़ौल यह है कि ऐ मूसा अलैहिस्सलाम मैं तुझे ज़मीन से क़ब्ज़ करने वाला हूं और अपनी तरफ़ उठाने वाला हूं क्योंकि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की अहादीसे मुतवातिर से यही चीज़ साबित है कि आपको ज़िन्दा आसमान पर उठाया गया।

अल्लामा राज़ी फ़रमाते हैं और इसकी मिस्ल रब तआला के दूसरे इरशाद गिरामी।

फिर जब तूने मुझे उठा लिया तो तू ही उन पर निगाह रखता था।

में तफ़सीर दो तरह की जा सकती है एक यह कि आयत को अपने ज़ाहिर पर रखा जाए और किसी क़िस्म की तक़दीम व ताख़ीर न की जाए और दूसरी तफ़सीर में तक़दीम व ताख़ीर का एतेबार करना फ़र्ज़ होगा।

पहली तावील में फिर चंद वजूहात हैं:

पहली वजह : यानी इन्नी मुतवफ़्फ़ीका का मायने यह है कि मैं तुम्हें पूरी उम्र तक पहुचाऊंगा अब "अतव वफ़ाका" का मतलब यह होगा कि मैं तुम्हें ऐसे ही नहीं छोडूंगा कि यहूद तुम्हें क़त्ल कर दें बल्कि मैं आसमानों की तरफ़ तुम्हें उठा लूंगा और फ़रिश्तों का मुक़र्रब बना दूंगा और तुम्हें इनसे महफ़ूज़ रखूंगा कि यहूद तुम पर क़ादिर न हो सकें अल्लामा राज़ी ने इसी तावील को अच्छा कहा है।

दूसरी वजह : कि "मुतवफ़्फ़ीका" का मायने "ममीतिका" किया जाए यही मायने हज़रत इब्ने अबाद और मुहम्मद बिन इस्हाक़ से मरवी है कि मक़सद इसका यह है कि यहूद आपको क़त्ल नहीं कर सकेंगे बल्कि आपको अपने वक़्त पर तबई तौर पर वफ़ात होगी अगरचे इब्ने वहब ने तीन साअतें वफ़ात हासिल होने के बाद आसमानों पर उठाए जाने का क़ौल किया है और मुहम्मद बिन इस्हाक़ ने सात साअतें वफ़ात हासिल होने के बाद आसमानों पर उठाए जाने का ज़िक्र किया है।

तीसरी वजह : रबीअ बिन अनस का क़ौल है आपको आसमानों पर उठाते वक़्त वफ़ात अता की गई।

चौथी वजह : अगरचे वाव तर्तीब पर दलालत नहीं करती लेकिन तर्तीब वाला मायने एतेबार कर

ही लिया जाए तो फिर भी इतना मतलब निकल सकेगा अल्लाह तआला ने आपको फ़रमाया कि मैं तुम्हें पहले फ़ौत करने वाला हूं और फिर आसमानों पर उठाने वाला हूं लेकिन यह कैसे करेगा और कब करेगा इसका ज़िक्र नहीं यह दलील पर मौकूफ़ है और दलील से साबित है कि आप ज़िन्दा हैं क्योंकि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का इरशाद गिरामी है कि ईसा अलैहिस्सलाम उतरेंगे और दज्जाल को क़त्ल करेंगे फिर फ़ौत होंगे इससे मालूम हुआ कि आपकी वफ़ात पहले जो होगी वह यही है और आसमानों पर उठाया जाना बाद में होगा जैसा पहले था।

पांचवीं वजह : अबू बकर वास्ती रहमतुल्लाह अलैहि ने फ़रमाया कि "इन्नी मुतवफ़्फ़ीका" का मायने यह है कि मैं तुम्हारी ख़्वाहिशात और नफ़्सानी मुनाफ़े के हुसूल को मारने वाला हूं और मैं तुम्हें आसमानों पर उठाने वाला हूं और इन ख़्वाहिशात से दूर करने वाला हूं ताकि तुम्हें ख़्वाहिशात और गै़ज़ व ग़ज़ब और बुरे अख़लाक़ के ज़वाल से मलाइका का मक़ाम हासिल हो जाए क्योंकि जो शख़्स अल्लाह तआला के मा सिवा की मुहब्बत को नहीं मारता वह अल्लाह तआला की मारफ़त हासिल नहीं कर सकता।

छठी वजह : बेशक अल-तवफ़्फ़ा का मायने किसी चीज़ को मुकम्मल तौर पर लेना। अल्लाह तआला अलीम व ख़बीर ज़ात है जिसे यह मालूम था कि कुछ लोग कहेंगे कि अल्लाह तआला ने आपकी रूह को आसमानों पर उठाया है जिस्म को नहीं तो रब ने "मुतवफ़्फ़ीका" ज़िक्र करके इस वहम का इज़ाला कर दिया कि अल्लाह तआला ने आपको मुकम्मल तौर पर यानी रूह और जिस्म दोनों को आसमानों पर उठाया इस तावील के सही होने पर अल्लाह तआला का इरशादे गिरामी "वह आपका कुछ नुक़सान नहीं कर सकेंगे।" (आयत ११३ सूरह निसा) इसकी दलालत कर रहा है।

आह रहमत व शफ़क़त से महरूमी: आज कई दिनों के तअत्तुल (फ़ुरसत) के बाद फिर क़लम को हाथ में लिया क्योंकि वालदा मुकर्रमा जो पीराना सालों में भी कुरआन पाक के सतरह अट्ठारह पारे हर रोज़ तिलावत किया करती थीं और आख़री दो साल दस पारे तिलावत करने का मामूल रहा, अचानक एक दिन डेढ़ पारा तिलावत करने के बाद कमर में कुछ तकलीफ़ हुई अगरचे बज़ाहिर तकलीफ़ दफ़ा हो गई है ख़ुराक में कमी होनी शुरू हो गई ज़ुअफ़ बढ़ता गया तक़रीबन डेढ़ दो माह यही कैफ़ियत रही कुरआन पाक की तिलावत भी मामूल के मुताबिक़ जारी न रख सकीं और आख़िर इतवार की शब बाद नमाज़े ईशा १४ जमादिउल अव्वल १४१७ हि. २८ सिंतबर १९९६ ई. इस दारेफ़ानी से आपने रहलत फ़रमा ली।

मरहूमा मग़फ़ूरा ने अपने बेटे बेटियों और पोते, पोतियों और नवासे नवासियों को दुआ व रहमत और शफ़क़त व मुहब्बत भरी निगाहों से महरूम कर दिया। राक़िम उन तमाम हज़रत का शुक्रगुज़ार है जिन्होंने कसीर तादाद में जनाज़ा में शिर्कत की, ख़ुसूसन उलेमाए किराम और बिलख़ुसूस हज़रत अल्लामा सैयद हुसैनुद्दीन शाह साहब मद्दे ज़िल्लहु नाज़िमे आला जामिया रज़विया ज़ियाउल उलूम रावलपिंडी का जिन्होंने नमाज़े जनाज़ा और सोएम के ख़त्मे कुरआन पाक में शिर्कत फ़रमा कर मेरी हौसला अफ़ज़ाई की और वालदा मुकर्रमा को दुआए मग़्फ़िरत का हदिया पेश किया। अल्लाह तआला वालदा मोहतर्मा को जन्नतुल फ़िरदौस अता फ़रमाए और मदारिज बुलंद फ़रमाये। आमीन।

क़ारेईन किराम से भी दुआए मग़्फ़िरत की दरख़्वास्त करता हूं उम्मीद है कि शर्फ़े क़बूलियत अता फ़रमायेंगे।

सातवीं वजह : "इन्नी मुतवफ़्फ़ीका" का मतलब यह है कि मैं तुम्हें फ़ौत होने की तरह करने वाला हूं जिस तरह उसकी ख़बर मुनक़तेअ हो जाती है और ज़ाहिर ज़मीन पर उसके असरात ख़त्म हो जाते हैं ऐसे ही तुम से भी ज़ाहिर तौर पर लोग कोई नफ़ा हासिल नहीं कर सकेंगे तुम्हारी ज़्यारत से मुशर्रफ़ नहीं हो सकेंगे।

आठवी वजह : "अल–तवफ़्फ़ा" का मायने क़ब्ज़ करना भी आता है जैसे कहा जाता है।

यानी फ़लां शख़्स ने मेरे दिरहम मेरे क़ब्ज़े में दे दिये। और कभी कहा जाता है तो कि मैंने उससे दराहिम क़ब्ज़े में ले लिये। अब मायने यह होगा कि मैं तुम्हें ज़मीन से निकालकर अपने क़ब्ज़ए क़ुदरत में लेकर आसमानों पर उठाने वाला हूं।

एतेराज़ : इस सूरत में तो दोनों लफ़्ज़ों का एक मायने होगा क्योंकि मुतवफ़्फ़ीका का मायने होगा क़ब्ज़ करना यानी उठाना और "राफ़ेअका" का मायने भी उठाना होगा यह तकरार है इसका क्या फ़ायदा?

जवाब : मुतवफ़्फ़ीका एक उमूमी मायने पर दलालत कर रहा है यानी यह जिंस है इसके तेहत मुख़्तलिफ़ नोईयतें हैं क्योंकि क़ब्ज़ करना कभी मौत के ज़रिये होता है और कभी आसमानों पर उठाकर होता है अब वाज़ेह हुआ कि मुतवफ़्फ़ीका से पता चला कि आपको क़ब्ज़ करना है कि वह कैसे? फिर राफ़ेअ क से यह वाज़ेह हो गया कि आसमानों पर उठाकर।

नवीं वजह : मुतवफ़्फ़ीका का मायने फ़ौत करने वाला नहीं बल्कि मुकम्मल करना मुराद लिया गया है और मुज़ाफ़ यहां महज़ूफ़ है असल इबारत "मुतवफ़्फ़ी अमलेका" है यानी मैं तुम्हारे आमाल को अपने हुज़ूर मुकम्मल तौर पर क़बूल करने वाला हूं यहां तक तो पहली तावील के मुताबिक़ कलाम है जो अपने ज़ाहिर पर है कोई तक़दीम व ताख़ीर का एतेबार नहीं।

दूसरी तावील : यानी जब वाव को अपनी असली हालत में रखा जाए कि वाव में तर्तीब का कोई लिहाज़ नहीं होता तो अब मायने में तक़दीम व ताख़ीर होगी अब आयते करीमा का मतलब यह होगा।

बेशक मैं तुम्हें अपनी तरफ़ उठाने वाला हूं और काफ़िरों से तुम्हें पाक क़रने वाला हूं फिर तुम्हें दुनिया में जब उतारूंगा उसके बाद फ़ौत करने वाला हूं।

तक़दीम व ताख़ीर कुरआन पाक में कसीर जगह वाक़ेय है इत्तेक़ान में अल्लामा सियूती रहमतुल्लाह अलैहि ने इसकी कई मिसालें दी हैं चंद मुलाहज़ा हों, हज़रत मरयम को रब तआला ने हुक्म दिया।

और सज्दा करो और रुकू करो।

हालांकि उस वक़्त भी नमाज़ में रुकू पहले और सज्दा बाद में था लेकिन यहां तक़दीम व ताख़ीर के तौर पर ज़िक्र हुआ।

अल्लाह तआला ने मौत व हयात को पैदा किया।

हालांकि हयात मौत से पहले है। (वह ज़ात जिसने) तुम्हें और तुम से पहले लोगों का पैदा किया। यहां भी मख़ातबीन का ज़िक्र पहले हुआ और उनसे पहले गुज़रे हुए लोगों का ज़िक्र बाद में किया गया।

और तहक़ीक़ आपकी तरफ़ और आपसे पहले अंबियाए किराम अलैहिमुस्सलाम की तरफ़ वही की गई यहां भी नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का ज़िक्र पहले और आपसे पहले गुज़रे हुए अंबिया का ज़िक्र बाद में।

और उन्होंने न उसे क़त्ल किया और न उसे सूली दी बल्कि उनके लिए उनकी शबीह का एक बना दिया गया और वह जो उसके बारे में इख़्तेलाफ़ कर रहे हैं ज़रूर उसकी तरफ़ से शुबहा में पड़े हुए हैं इन्हें उसकी कुछ भी ख़बर नहीं मगर यही गुमान की पैरवी और यक़ीनी तौर पर उन्होंने उसको क़त्ल नहीं किया बल्कि अल्लाह तआला ने उसे अपनी तरफ़ उठा लिया।

इस आयते करीमा के मा क़ब्ल यहूद के वादे तोड़ने अल्लाह तआला की आयात से कुफ़्र करने अंबियाए किराम अलैहिमुस्सलाम को शहीद करने का ज़िक्र किया गया है कि उनके दिलों पर मोहर लगा दी गई है इसकी वजह इनका कुफ़्र करना और हज़रत मरयम पर बोहतान लगाना और यह कहना कि हमने मसीह बिन मरयम को क़त्ल कर दिया है इससे वाज़ेह हुआ कि इनका यह कहना ही कुफ़्र था कि हमने ईसा अलैहिस्सलाम को क़त्ल कर दिया है इस आयते करीमा की तफ़सीर में अल्लामा आलूसी रहमतुल्लाह अलैहि फ़रमाते हैं।

वह दूसरे आसमान में ज़िन्दा हैं यह नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सहीह हदीस मेराज से साबित है आप वहीं मुक़ीम हैं यहां तक कि ज़मीन में उतरेंगे दज्जाल को क़त्ल करेंगे और जमीन को इस अद्ल व इंसाफ़ से भर देंगे जैसे वह पहले जुल्म से भरी हुई होगी।

हज़रत पीर महर अली शाह रहमतुल्लाह अलैहि फ़रमाते हैं कलिमा बल आयते मज़कूरा में जिसका तर्जमा बल्कि होता है इबताल मा क़ब्ल के लिए है यानी अल्लाह तआला ज़अमे यहूद को जो ईसा बिन मरयम की मक़तूलियत और मसलूबियत के क़ायल थे बातिल करता है और मा क़ब्ल और म–बाद बल अज़राबिया अबतालिया के मुतज़ाद होते हैं यानी दोनों में मुतहक्क़िक़ नहीं होते।

"व मा क़तलूहु यक़ीनन बल रफ़अ हुल्लाहु अलैहि" में हस्ब मुक़तज़ा कलिमा बल मक़तूलियत (क़त्ल हो जाना) और मरफ़ूइयत (उठाया जाना) यानी मसीह के मारे जाने और उठाए जाने में मनाफ़ात और अदम इज्तेमा फ़िल तहक़ीक़ चाहिये और ज़ाहिर है कि माबैन मारे जाने और उठाए जाने रूह के आसमान की तरफ़ कुछ मनाफ़ात नहीं दोनों अम्र पाए जाते हैं मुक़र्रेबीन से जो क़त्ल किया जाता है उनकी अरवाह भी आलमे अलवी को उठाई जाती हैं अब बिल ज़रूरत रफ़ा जिस्मानी लेना पड़ेगा क्योंकि मसीह के क़त्ल जिस्मी और रफ़ा जिस्मी दोनों में तज़ाद और तनाफ़ी है अगर जिस्म मसीह यहूद के हाथ में मक़तूल हो तो वही जिस्मे आलमे बाला की तरफ़ मरफ़ूअ न हुआ (न उठाया गया) और अगर मसीह (अपने ज़ाहिर जिस्म के साथ) ब–तहफ़्फ़ुज़ व अमान उठाए गये तो यहूद के हाथ में मक़तूल नहीं हो सकते।

तौज़ीहे मक़ाम : इस मक़ाम की वज़ाहत यह है कि या तू किनाया होगा एज़ाज़ और रफ़ा मंज़िलत से जैसा कि मिर्ज़ा साहब बशहादते मुहावरा और हवाला कुतुबे लग़त लेते हैं इस सूरत में ज़ाहिर है कि क़त्ल और कुर्बे इलाही में तज़ाद नहीं बल्कि क़त्ल और शहादत मोजिब मुस्तक़िल है रफ़ा मंज़िलत इंदल्लाह तआला के लिए सिवाए नबुव्वत के और या मुराद इससे रफ़ा रूही बतरीक़े मौते तबई के होगा ब–क़रीना वादा तवफ़्फ़ा यानी।

फ़क़त लफ़्ज़ मुतवफ़्फ़ीका अगरचे मुतलक़ मौत पर दाल है आम इससे कि अपने आप हो या क़त्ल की वजह से लेकिन हिस्र जो मुस्तफ़ाद है ज़मीरे मुतकल्लिम के मुसनद इलैह और सेग़ए मुश्तक़ के मुसनद बनाने से मुफ़ीद है मौत तबई का इस तक़रीर में अगरचे तज़ाद मुतहिक़्क़क़ है मगर बलिहाज़ इसके कि माजूइयत तवफ़्फ़ा और रफ़ा के।

"बल तवफ़्फ़ाहुल्लाहु व रफ़अहुल्लाहि इलैहि" में ब–निस्बत मा क़ब्ल कलिमा बल की तरफ़ होनी चाहिये कि मौते तबई मसीह की क़ब्ल अज़ वाक़िया क़त्ल व सलीब ज़अमी मुतहक़्क़िक़ हो हालांकि कोई मोअर्रिख़ इस्लामी और ग़ैर इस्लामी इसकी शहादत नहीं देता बल्कि इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा और तमाम अहले इस्लाम आज तक इसके क़ायल हैं कि आपके जिस्म को सूली चढ़ाने से पहले ही उठा लिया गया है।

और कोई किताबी ऐसा नहीं जो उसकी मौत से पहले उस पर ईमान लाए और क़यामत के दिन वह उन पर गवाह होगा।

इस आयते करीमा की तफ़सीर में अल्लामा आलूसी रहमतुल्लाह अलैहि फ़रमाते हैं।

मतलब यह है कि ईसा अलैहिस्सलाम के आसमानों से उतरने के वक़्त जितने अहले किताब मौजूद होंगे उनमें से कोई ऐसा नहीं होगा जो आपकी वफ़ात से पहले आप पर ईमान लाए यानी सब ईमान ले आयेंगे तमाम दीन ख़त्म हो जायेंगे और सिर्फ़ एक दीन हो जायेगा।

इस आयत में भी आप के आसमानों से उतरने और आप पर अहले किताब के ईमान लाने का ज़िक्र है।

और बेशक ईसा अलैहिस्सलाम क़यामत की ख़बर है तो हरगिज़ क़यामत में शक न करना और मेरी ताबेदारी करना यह सीधी राह है।

ईसा अलैहिस्सलाम का नुजूल क़यामत के क़रीब होने की अलामत होगा ईसा अलैहिस्सलाम और इमाम महदी का इज्तेमा एक ज़माना में होगा। ईसा अलैहिस्सलाम शरीअत व इमामत के उमूर सर अंजाम देंगे और हज़रत महदी के सुपुर्द ख़िलाफ़त व जिहाद के मामलात होंगे।

बेशक ईसा अलैहिस्सलाम का उतरना क़यामत की निशानियों में से एक निशानी है आप के उतरने को इल्म कहा गया है क्योंकि आपके उतरने से क़यामत का इल्म हो जायेगा क़यामत अब आ रही है।

अल्लामा आलूसी रहमतुल्लाह अलैहि ने भी इन अल्फ़ाज़ से ही रूहुल मआनी में तफ़सीर की है जिन अल्फ़ाज़ से अबू सऊद ने की है इस आयत में भी वाज़ेह हुआ कि आप अभी तक ज़िन्दा हैं और क़यामत के क़रीब उतरेंगे।

और लोगों से कलाम करेगा पिंघोड़े और पक्की उम्र में।

यहां ईसा अलैहिस्सलाम के मोजिज़ात का ज़िक्र किया गया है बचपन की वह उम्र जिसमें आम बच्चे कलाम न करते होंगे उस वक़्त कलाम करना एक मोजिज़ा है लेकिन पक्की उम्र में तो हर इंसान कलाम करता है इस में ईसा अलैहिस्सलाम की तख़सीस कैसे? इस सवाल का जवाब देते हुए अल्लामा राज़ी रहमतुल्लाह अलैहि फ़रमाते हैं:

पक्की उम्र में कलाम करने का यह मतल्ब है कि आप आख़िर ज़माना में आसमानों से उतरेंगे उस वक़्त आपकी उम्र पक्की होगी और आप लोगों से कलाम फ़रमायेंगे और दज्जाल को क़त्ल करेंगे हुसैन बिन फ़ज़्ल ने कहा यह आयत वाज़ेह तौर पर नस है कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम ज़मीन पर उतरेंगे।

अहादीसे मुबारका : ईसा अलैहिस्सलाम का आसमानों से नाज़िल होना कई अहादीस से साबित है।

हज़रत अबू हुरैरा से मरवी है रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया क़सम है उस ज़ात की जिसके क़ब्ज़े में मेरी जान है कि ईसा अलैहिस्सलाम तुम में हाकिम और आदिल बनकर उतरेंगे सलीब तोड़ डालेंगे जिज़्या का हुक्म ख़त्म कर देंगे आप माल लोगों को अता करेंगे कोई क़बूल करने वाला नहीं होगा उस वक़्त का एक सज्दा दुनिया और दुनिया के माल व दौलत से अफ़ज़ल होगा फिर हज़रत अबू हुरैरा कहते हैं अगर तुम चाहते हो तो यह आयात पढ़ लो।

अहले किताब में से कोई भी नहीं रहेगा यहां तक कि आप पर ईमान ले आयेगा मौत से पहले।

आप हाकिम और आदिल बनकर आयेंगे यानी नसरानियत को बातिल कर देंगे और मिल्लत हनीफ़िया यानी दीने इस्लाम को क़बूल करने का हुक्म देंगे यहूदियों और ईसाईयों के बातिल गुमान को ख़त्म करने के लिए सलीब तोड़ देंगे ख़िंज़ीर को क़त्ल कर देंगे यह साबित करेंगे कि मैं मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का उम्मती होने की हैसियत से आया हूं चूंकि आपकी शरीअत में ख़िंज़ीर हराम है इसलिए ऐ ईसाईयो तुम्हारा इसे पालना और ख़रीद व फ़रोख़्त करना हराम है अहले किताब से सिर्फ़ इस्लाम को क़बूल करेंगे कोई जिज़्या उनसे नहीं लेंगे आपके ज़माने में माल की कसरत होगी यहां तक कि जिस तरह वादियों में पानी चलता है ऐसे ही माल की फ़रावानी होगी उस वक़्त इबादत में सिर्फ़ लोग इतनी लज़्ज़त महसूस करेंगे कि एक सज्दा और एक नमाज़ उन्हें दुनिया भर से बेहतर महसूस होंगे हज़रत अबू हुरैरा ने आयत को बतौर दलील पेश की कि उस वक़्त तमाम लोग दीने इस्लाम को क़बूल कर लेंगे।

हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से मरवी है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया क़सम है अल्लाह तआला की इब्ने मरयम हाकिम व आदिल बनकर ज़रूर उतरेंगे सलीब को तोड़ देंगे और ज़रूर बिल ज़रूर ख़िंज़ीर को क़त्ल करेंगे और यक़ीनी तौर पर जिज़्या को ख़त्म कर देंगे ऊंटों को छोड़ देंगे उन पर कोई अमल नहीं करेंगे अदावत बुग़्ज़ और हसद को ख़त्म कर देंगे माल की तरफ़ लोगों को बुलायेंगे कोई उसे क़बूल नहीं करेगा यह मुस्लिम शरीफ़ की रिवायत है बुख़ारी और मुस्लिम दोनों ने यह भी रिवायत किया है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया जब इब्ने मरयम तुम में उतरेंगे और तुम्हारे इमाम भी तुम में होंगे उस वक़्त तुम्हारा क्या हाल होगा?

इस हदीस शरीफ़ में तमाम ताकीद के सीग़े इस्तेमाल हुए हैं कि आपका उतरना यक़ीनी है शक व शुबह से पाक है।

ख़ुलासा : बकसरुल क़ाफ़ कुलूस की जमा (बहुवचन) है जवान ऊंटनी को कहा जाता है आप ऊंटों को काम में लाना छोड़ देंगे क्योंकि ऊंट की ज़रूरत ख़त्म हो जायेगी उस वक़्त ऊंट के बग़ैर और सवारियां

बोझ उठाने और सामान की नक़्ल व हिरकत के लिए कसीर तादाद में होंगी या इसका मायने यह है कि आप किसी एक को ऊंटों के लिए मुक़र्रर नहीं करेंगे कि ज़कात के ऊंट हासिल किये जायेंगे क्योंकि उस वक़्त ज़कात लेने वाला कोई नहीं होगा नहाया में ज़िक्र किया गया है।

आप ज़कात लेनी छोड़ देंगे और ज़कात वसूल करने के लिए कोई आमिल मुक़र्रर नहीं करेंगे।

तो इसका मतलब यह नहीं कि आप उस वक़्त नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की शरीअत के मुख़ालिफ़ कोई हुक्म देंगे ज़कात लेने वाला कोई नहीं मिलेगा इसलिए कोई आमिल मुक़र्रर नहीं किया जायेगा यह ख़बर भी तो नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने ही दी है।

कि आप किसी को ऊंट बतौर ज़कात वसूल करने के लिए आमिल नहीं बनायेंगे क्योंकि उस वक़्त तमाम लोग ग़नी होंगे कोई ज़कात वसूल करने वाला नहीं मिलेगा।

दूसरा मायने इस का यह है।

सई से मुराद अमल है।

यानी ऊंटों के ज़रिये तिजारत और ज़मीन में सफ़रे माल के तलब करने और दूसरी ज़रूरियात के हासिल करने के लिए छोड़ देंगे क्योंकि उस वक़्त उनकी ज़रूरत ख़त्म हो जायेगी।

शहना : शहना का मायने है वह अदावत जो दिलों को कीना और ग़ैज़ व ग़ज़ब से भर दे तबाग़ुज़ बुग़्ज़ रखना यह अदावत का सबब है तहासुद हसद करना यानी किसी की नेमत का ज़वाल तलब करना और इसी नेमत को अपने लिए तलब करना यह हसद बुग़्ज़ का सबब है इन तमाम बुराईयों का सबब दुनिया के माल से मुहब्बत रखना है ईसा अलैहिस्सलाम लोगों के दिलों से दुनिया की मुहब्बत ज़ाइल कर देंगे जिसकी वजह से यह बुराईयां ख़ुद बख़ुद ज़ाइल हो जायेंगी।

दूसरी वजह यह भी है कि उस वक़्त तमाम दुनिया चूंकि एक ही दीन पर क़ायम होगी यानी सबका दीन इस्लाम होगा बुग़्ज़ व हसद वग़ैरह जैसी बुराईयां मुख़्तलिफ़ दीनों और मज़ाहिब की वजह से पैदा होती हैं।

मुल्ला अली क़ारी रहमतुल्लाह अलैहि के नज़दीक पहला मायने ही ज़्यादा मोतबर है क्योंकि आप फ़रमाते हैं आज के ज़माने में बहुत से शहरों में लोग इस्लाम पर इत्तेफ़ाक़ रखते हैं और इनमें उलेमा किराम, मशाइख़ किराम भी मौजूद होते हैं बावजूद इसके उनमें बुग़्ज़ हसद अदावत जैसे उयूब पाए जाते हैं और लड़ाई झगड़े क़त्ल व ग़ारत पाए जाते हैं इनके असबाब सिर्फ़ मख़लूक़ में बुलंद मर्तबा हासिल करना और हराम माल की तरफ़ मीलान हैं ईसा अलैहिस्सलाम का जब नुज़ूल होगा उस वक़्त मुसलमानों के इमाम महदी होंगे जो कुरैश से होंगे आप उतरकर पहली नमाज़ इमाम मेहदी की इक़्तेदा में अदा करेंगे ताकि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के दीन की अज़मत वाज़ेह हो जाये कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की शरीअते मुतह्हरा के अहकाम ही लोगों पर नाफ़िज़ करेंगे उनकी अपनी शरीअत तो कब की मंसूख हो चुकी है नबी करीम का इरशाद है कि ईसा अलैहिस्सलाम जब तुम में उतरेंगे और तुम्हारे इमाम तुम में से मौजूद होंगे उस वक़्त तुम्हारा क्या हाल होगा यानी तुम्हें अपनी अज़मत व तकरीम पर ताज्जुब होना चाहिये कि ईसा अलैहिस्सलाम आते वक़्त पहली नमाज़ तुम्हारे इमाम की इक़्तेदा में अदा करेंगे।

हज़रत जाबिर से मरवी है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया हमेशा एक गरोह मेरी उम्मत में हक़ पर जिहाद करता रहेगा और क़यामत तक उनको ग़ल्बा हासिल रहेगा आपने फ़रमाया ईसा इब्ने मरयम उतरेंगे लोगों के अमीर उन्हें कहेंगे आओ हमें नमाज़ पढ़ाओ आप फ़रमायेंगे नहीं बेशक तुममें से बाज़ अमीर हैं बाज़ पर। आपका यह इरशाद उस तकरीम के पेशे नज़र होगा जो अल्लाह तआला ने इस उम्मत को अता किया है।

ईसा अलैहिस्सलाम के उतरने पर ईमाम महदी उन्हें नमाज़ पढ़ाने के मुताल्लिक़ कहेंगे क्योंकि इमामत का ज़्यादा हक़दार वह शख़्स है जो अफ़ज़ल हो चूंकि आप नबी और रसूल हैं और कामिल दर्जा रखने वाले हैं।

यहां से यह भी वाज़ेह हुआ कि ईसा अलैहिस्सलाम का मक़ामे नबुव्वत ख़त्म नहीं होगा सिर्फ़ आपकी शरीअत के अहकाम जारी नहीं होंगे बल्कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की शरीअत के अहकाम की तबलीग़ फ़रमायेंगे आप के नाज़िल होने पर पहली नमाज़ इमाम महदी पढ़ायेंगे ताकि इस उम्मत की फ़ज़ीलत वाज़ेह हो जाये उसके बाद ईसा अलैहिस्सलाम ही नमाज़ें पढ़ायेंगे इस हदीस पाक से भी ईसा बिन मरयम का नुजूल वाज़ेह तौर पर साबित हुआ।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हु से मरवी है रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया ईसा बिन मरयम ज़मीन पर उतरेंगे फिर शादी करेंगे और आपकी औलाद होगी और पैंतालीस साल ठहरेंगे फिर आप फ़ौत होंगे फिर मेरे साथ मेरे मक़बरे में दफ़न होंगे और ईसा अलैहिस्सलाम एक ही मक़बरा में उठेंगे यहां तक कि अबू बकर और उमर के बीच हों हदीस शरीफ़ में जो लफ़्ज़ क़ब्र इस्तेमाल हुआ है इसका मायने मक़बरा है यानी मेरे मक़बरे में दफ़न होंगे।

"फ़ी क़बरे वाहिद" का मतलब यह है कि एक साथ हम अपनी अपनी क़ब्रों से इस तरह उठेंगे जैसे एक क़ब्र से उठ रहे हों हज़रत उमर और हज़रत अबू बकर दोनों नबियों के दायें बायें हो जायेंगे ताकि यह दोनों हज़रात एक साथ हों दायें जानिब अबू बकर और दूसरी जानिब उमर होंगे।

बाज़ रावियों से है यानी क़ब्र मुबारक के पास जगह ख़ाली है ईसा अलैहिस्सलाम के वास्ते। मुहक़्क़िक़ इब्ने जूज़ी फ़रमाते हैं उमर के पास मदफ़ून होंगे क्योंकि हमें बहुत से लोगों ने ख़बर दी है जो हुजरा शरीफ़ के अन्दर गये हैं कि उमर के पहलू में जगह ख़ाली है।

बुख़ारी ने अपनी तारीख़ में इख़राज किया है और तिबरानी ने अब्दुल्लाह बिन सलाम से कि वह फ़रमाते हैं ईसा बिन मरयम मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और शैख़ैन के पास दफ़न किये जायेंगे और उनकी क़ब्र चौथी होगी।

तिर्मिज़ी ने हदीस का इख़राज किया है और इसे हसन कहा है कि अब्दुल्लाह बिन सलाम ने फ़रमाया मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सिफ़त तौरात में मौजूद है और यह भी तौरात में है ईसा बिन मरयम ख़ातिमुल नबीईन सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ मदफ़ून होंगे।

हज़रत आयशा ने फ़रमाया मैंने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में अर्ज़ की कि मुझे मालूम होता है कि मैं आपके बाद ज़िन्दा रहूंगी अगर इजाज़त हो तो मैं आपके पास मदफ़ून हूं

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि मेरे पास तो अबू बकर और उमर की क़ब्र के सिवा और जगह नहीं सैयदुल औलिया हज़रत पीर महर अली शाह फ़रमाते हैं।

आसारे दरबारए मरफ़ूअ होने जिस्मे मसीह के और अहादीस नुजूल ईसा अलैहिस्सलाम के सिवा उनके जो ब्यान कर चुका हूं और भी बकसरत मौजूद हैं जिसका जी चाहे तफ़सीर दुर्रे मंसूर और तफ़सीर इब्ने कसीर और तफ़सीर इब्ने जुरैर को मुलाहज़ा फ़रमाये अगर इससे भी इत्मीनान हासिल न हो तो कंज़ुल अम्माल व मुसनद अहमद वग़ैरह कुतुबे अहादीस का मुताला फ़रमाये मगर मोमिन फ़हीम के वास्ते आसार और अहादीस से जो ब्यान कर चुका हूं काफ़ी हैं यह अहादीस मुतवातिर हैं। नुजूले मसीह का जो मुस्तलज़िम है रफ़आ को सबमें इत्तेफ़ाक़ है ज़्यादा ब्यान होना अफ़आल और सिफ़ात का बाज़ हदीसों में और बाज़ों में कम, वजह इसकी यह है कि जिस क़दर औसाफ़ बज़रिये वही सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को मालूम हुए उनको ब्यान फ़रमाया सामेअ ने उनको याद रखा फिर जब और मालूम हुए उनको फिर ब्यान फ़रमाया।

यही वजह है कि बाज़ रावियों से बाज़ सिफ़ात और अहवाल मरवी हैं दूसरे से कुछ और कभी एक रावी की रिवायत में कमी बेशी हुआ करती है इसकी भी यही वजह है।

जो अहादीस ईसा अलैहिस्सलाम के नुजूल के मुताल्लिक़ मरवी हैं वह इन जलीलुल क़द्र सहाबा किराम से मरवी हैं अबू हुरैरा, अब्दुल्लाह बिन मसऊद, उसमान बिन, अबी अमामा, अबी आस, नवास इब्ने समआन, अब्दुल्लाह बिन अलआस, मजमा बिन जारया, शुरैहा हुज़ैफ़ा बिन असीयद, जाबिर समरा बिन जंदब अम्र बिन औफ़, इमरान बिन हसीन, कैसान हुज़ैफ़ा बिन यमान आयशा, अब्दुल्लाह बिन अब्बास, अनस रज़ि और इनके अलावा दीगर हज़रात से भी मरवी हैं।

अफ़सोस जहालत ऐसा मर्ज़ है कि हज़ारों उर्दू ख़्वानों सादा लौहों के लिए रोज़ बरोज़ हलाक करने वाला साबित हो रहा है न तो सहाबा किराम की तरह महारते लिसानी इन्हें हासिल है और न ही सहाबा किराम की तरह इन के दिल को रौशन व मुनव्वर किया गया है कि वह हक़ बात को समझ कर राहे रास्त पर चलें और न ही इल्मी इस्तेदाद कि फ़साहत व बलाग़त और कलाम के स्याक़ व सबाक़ से मक़सद को समझें और न ही यह सलाहियत हासिल है कि मुक़तज़ा हाल के मुताबिक़ मुराद को समझ सकें।

इन जुहला के भटकने की ज़्यादा वजह यह है कि उन्होंने गुमराह और भटके हुए शख़्स को अपना रहनुमा बना लिया है कि अल्लाह तआला ही अपने फ़ज़्ल व करम से हिदायत अता फ़रमाये।

मक़ामे तवज्जोह : ब्यान कर्दा अहादीस से वाज़ेह तौर पर साबित हुआ कि आसमानों से उतरने वाली शख़्सियत का नाम ईसा होगा वह मरयम के बेटे होंगे उनके ज़माने में माल की कसरत होगी कोई ज़कात लेने वाला नहीं मिलेगा दीन एक हो जायेगा यहूदियत व नसरानियत ख़त्म हो जायेगी मिर्ज़ा गुलाम अहमद क़ादयानी कहते हैं कि अहादीस में ईसा बिन मरयम से मैं मुराद हूं मगर ख़्याल रहे कि मिर्ज़ा जी का नाम ईसा है और न इनकी मां का नाम मरयम है बल्कि इनका नाम गुलाम अहमद और इनकी मां का नाम चिराग़ बीबी है और मिर्ज़ा जी मदीना पाक में नहीं मरे ईसा बिन मरयम अलैहिस्सलाम तो नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ दफ़न होंगे लेकिन मिर्ज़ा जैसे नापाक जिस्म को

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अपने साथ कैसे कुबूल कर सकते थे इसलिए इसे क़ादयान में ही मरना पड़ा।

नीज़ मिर्ज़ा साहब के ज़माने में माल व दौलत की कसरत भी नहीं हुई ख़ुद वह अंग्रेज़ से चंदा लेते रहे बल्कि वह अंग्रेज़ का लगाया हुआ ही पौधा था आज तक मिर्ज़ाइयों की यह हालत है कि रबूह में देखिये दो क़ब्रस्तान हैं एक में पौधे लगे हुए हैं और दूसरा पौधों और फूलों से ख़ाली है इसमें घास फूस और झाड़ियां नज़र आती हैं जो ज़्यादा पैसे दे दे उसे बाग़ीचा वाले क़ब्रस्तान में जगह दी जाती है और जो थोड़े पैसे दे उसे दूसरे में जगह दी जाती है गोया क़ब्रें बेचकर वह अब भी अपना गुज़ारा चला रहे हैं और मिर्ज़ा साहब के ज़माने में यहूदियत व नसारियत को ख़त्म करके एक दीने इस्लाम में सब लोग आ गये हैं ऐसा भी नहीं हुआ तो मिर्ज़ा साहब मसीह मौऊद कैसे?

हयाते ईसा अलैहिस्सलाम का सबूत अइम्मए किराम से : तमाम सहाबा किराम का इस पर इत्तेफ़ाक़ है कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम आसमान पर ज़िन्दा हैं और क़यामत के क़रीब तशरीफ़ लायेंगे।

हज़रत ईमाम अहमद बिन हंबल रहमतुल्लाह अलैहि ने अपनी मुसनद में बहुत सी अहादीस दर्ज फ़रमाई हैं एक रिवायत हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से ब्यान फ़रमाई कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि ईसा अलैहिस्सलाम आकर दावते इस्लाम फ़रमायेंगे उनके ज़मानए पाक में इस्लाम के सिवा तमाम दीन मिट जायेंगे और शेर ऊंट के साथ चीता गाय के साथ और भेड़ बकरी के साथ चरेंगे और बच्चे सांप से खेलेंगे और वह उन्हें नुक़्सान न देगा।

मुसनद अहमद की एक और रिवायत शम्सुल हिदाया के हवाले से ही नक़्ल की जा चुकी है कि हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हु ने हुज़ूर से आपके साथ दफ़न होने की इजाज़त तलब की तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया वहां चार क़ब्रों से ज़्यादा की कोई गुजांईश नहीं चौथी क़ब्र ईसा की होगी।

इमाम अबू हनीफ़ा रहमतुल्लाह अलैहि फ़ेक़्हे अकबर में फ़रमाते हैं दज्जाल का निकलना याजूज व माजूज का ख़रूज, आफ़ताब का मग़्रिब से तुलू होना ईसा का आसमान से उतरना और यह सारी अलामात क़यामत हक़ हैं।

इमाम मालिक ने कहा इस हाल में कि लोग खड़े हुए नमाज़ की तकबीर सुन रहे होंगे कि बादल छायेगा और अचानक ईसा अलैहिस्सलाम उतरेंगे।

अल्लामा ज़रक़ानी मालकी अपनी किताब क़स्तलानी में फ़रमाते हैं ईसा अलैहिस्सलाम उतरकर हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की शरीअत पर फ़ैसला फ़रमायेंगे वह अगरचे उम्मते मुहम्मदिया के ख़लीफ़ा होंगे लेकिन साथ नबी भी होंगे क्योंकि शरीअत के नस्ख़ से नबुव्वत ज़ायल नहीं होती।

हज़रत इमाम शाफ़ई रहमतुल्लाह अलैहि के मुत्तबईन इमाम जलालुद्दीन सियूती और इमाम राज़ी रहमतुल्लाह अलैहि ने इस मसले पर तफ़सीली तौर पर बसहें की हैं और वह भी ईसा अलैहिस्सलाम के नुज़ूल के क़ायल हैं इसी तरह इमाम बुख़ारी इमाम मुस्लिम, इमाम तिर्मिज़ी अबू दाऊद और तमाम मुहद्देसीन किराम का यही अक़ीदा था नीज़ इमाम ग़ज़ाली, इमाम राज़ी, इमाम जूज़ी और हज़रत शैख़

अब्दुल क़ादिर जीलानी रहमतुल्लाह अलैहिम अजमाईन भी इसी के क़ायल हैं। आसान लफ़्ज़ों में यूं ब्यान किया जाए कि सिवाए मिर्ज़ा क़ादियानी और उसके मुत्तबईन के अहले इल्म में से कोई भी नुज़ूले ईसा अलैहिस्सलाम का मुन्किर नज़र नहीं आता।

मोजिज़ात व हयाते ईसा अलैहिस्सलाम पर एतेराज़ात व जवाबात : ईसा अलैहिस्सलाम के जिन मोजिज़ात का ज़िक्र किया गया है उन तमाम का मिरज़ाईयों ने इंकार किया है और इस आयत में यहूदियाना तहरीफ़ात कीं, इसकी वजह सिर्फ़ यह है कि उनके घर के नबी और ख़ुद साख़्ता मसीले मसीह यानी मिर्ज़ा गुलाम अहमद क़ादयानी में कोई कमाल न था लिहाज़ा उन्होंने ईसा अलैहिस्सलाम के उन तमाम कमालात का इंकार कर दिया।

एतेराज़ : पैदा करना ख़ुदा की सिफ़त है रब तआला फ़रमाता है

फ़रमा दीजिए अल्लाह हर चीज़ का ख़ालिक़ है। उसने हर चीज़ को पैदा किया है।

नीज़ फ़रमाता है हमारा रब जिसने हर चीज़ को सूरत ख़ल्क़ अता की।

इन तमाम आयात से मालूम हुआ कि ख़ालिक़ सिर्फ़ रब तआला ही है ग़ैरे ख़ुदा में यह सिफ़त मानना शिर्क है रब तआला फ़रमाता है क्या उन्होंने अल्लाह के शरीक बना रखे हैं कि वह ऐसे पैदा करते हैं जैसे अल्लाह पैदा करता है। नीज़ बुतों के बारे में फ़रमाता है।

वह किसी चीज़ को पैदा नहीं करते बल्कि वह ख़ुद खड़े किये गये हैं।

लिहाज़ा अगर ईसा अलैहिस्सलाम मिट्टी में फूंककर परिन्दे बनाते हों तो उन्हें ख़ुदा मानना पड़ेगा, मुश्रेकीन बुतों को ख़ालिक़ मानकर ही मुश्रिक हुए और मुसलमान ईसा अलैहिस्सलाम को ख़ालिक़ मानकर मुरतद।

इस आयत के मायने सिर्फ़ यह हैं कि मैं तुम्हारे दिलों को नूर ईमानी से मुनव्वर कर देता हूं जिससे वह परिन्दा बन कर राहे इलाही तै करता है न कि कोई मिट्टी का खिलौना।

हदीस शरीफ़ में शोहदा के मुताल्लिक़ है कि शहीदों की रूह सब्ज़ चिड़िरूों के पेट में रहकर जन्नत की सैर करती है इस का भी यही मतलब है।

दूसरी जगह कहते हैं मर कर दुनिया में लौटना क़ानूने कुदरत के ख़िलाफ़ है, हदीस शरीफ़ में है कि शहीद शहादत के बाद दुनिया में आने की तमन्ना करते हैं मगर उनकी यह तमन्ना पूरी नहीं की जाती, क्योंकि क़ानून के ख़िलाफ़ नहीं हो सकता ईसा अलैहिस्सलाम भी बाक़ी मुर्दों को ज़िंदा नहीं कर सकते क्योंकि मुर्दे अगर अपनी उम्र पूरी करके मरे थे तो उन्हें दोबारा उम्र कैसे मिली और अगर उनकी उम्र बाक़ी थी तो पहले मौत क्यों आ गई?

जवाब : ख़ल्क़ का मायने है पैदा करना, यानी अदम से वजूद में लाना, हयात बख़्शना और दूसरा मायने है बनाना, गढ़ना, अंदाज़ा लगाना, अल्लाह तआला की ज़ात के साथ ख़ास जो ख़ल्क़ है वह बमायने पैदा करने के है शक्ल व सूरत बनाना यह सिफ़त बंदों को भी हासिल है ईसा अलैहिस्सलाम ने परिन्दे की सूरत बनाई और उसको हयात अल्लाह तआला ने अता फ़रमाई। अलबत्ता ईसा अलैहिस्सलाम के अर्ज़ करने पर इसलिए यह आप का मोजिज़ा हुआ मोजिज़ा होता ही वह है जो आम आदत के ख़िलाफ़ हो और मुद्दई नबुव्वत से सरज़द हो।

ईसा अलैहिस्सलाम के इस मोजिज़ा को रब तआला ने ब्यान फ़रमाया।

और जब तू मिट्टी से परिन्दे की सी मूरत मेरे हुक्म से बनाता फिर उसमें फूंक मारता तो वह मेरे हुक्म से उड़ने लगती। दूसरे मक़ाम पर फ़रमायाः

ईसा अलैहिस्सलाम ने कहा मैं इस शक्ल व सूरत में फूंक मारता हूं तो वह अल्लाह के हुक्म से परिन्दा बन जाता है।

इन आयात से बख़ूबी वाज़ेह हुआ कि ईसा अलैहिस्सलाम मिट्टी की मूर्ति बनाते थे और इसमें फूंक मारते और यह कहते अल्लाह के हुक्म से उड़, वह परिन्दा बनकर उड़ जाता था यानी अल्लाह तआला उसे हयात अता फ़रमाता था।

जो तौजीह मुहम्मद अली साहब ने ब्यान की है इसमें ईसा अलैहिस्सलाम की कोई तख़सीस नहीं और न ही आपका मोजिज़ा है क्योंकि दिलों को नूरे ईमानी से अंबियाए किराम मुनव्वर करते रहे बल्कि यह वस्फ़ औलियाए एज़ाम और उलेमए किराम को भी हासिल है।

यह कहना कि मौत के बाद ज़िन्दा होना क़ानूने कुदरत के ख़िलाफ़ है तो इसका जवाब भी वाज़ेह है कि मोजिज़ा तो है ही वह कि आदत के ख़िलाफ़ हो। यानी हलाक शुदा बस्तियों को ज़िन्दा करना क़ानून नहीं, अलबत्ता ख़ुसूसियात इसके अलावा हैं कुरआन हकीम ने हज़रत उज़ैर अलैहिस्लाम का वाक़िया ब्यान फ़रमाया।

अल्लाह तआला ने उन्हें सौ साल मुर्दा रखकर फिर ज़िन्दा किया फिर फ़रमाया।

ऐ उज़ैर अपने मरे हुए गधे की ख़ुश्क हड्डियों को देख कि हम इन्हें किस तरह जमा करके गोश्त पहनाते हैं हज़रत हिज़क़ील अलैहिस्सलाम की क़ौम का पूरा वाक़िया यूं ब्यान फ़रमाया।

यानी रब आला ने उनको पहले मौत दी फिर उन सबको ज़िन्दा फ़रमाया।

नीज़ कुरआन करीम ने बनी इस्राईल से फ़रमाया कि तुमने एक दफ़ा मूसा अलैहिस्सलाम की इताअत से मुंह मोड़ा।

यानी तुम्हें देखते हुए कड़क ने पकड़ लिया हमने तुम्हें मरने के बाद ज़िन्दा किया ग़र्ज़ कि मुर्दे ज़िन्दा करने के लिए बे शुमार वाक़ियात कुरआन करीम ने ब्यान फ़रमाये।

हदीस पाक में आता है कि क़यामत के क़रीब दज्जाल लोगों को मार के ज़िन्दा करेगा अगर इन सब आयात और अहादीस में मजाज़ी मायने मुराद लिये जायें तो फिर कुरआन व अहादीस एक तमाशा बनकर रह जायें और किसी आयत पर एतेमाद न रहे।

एतेराज़ : अंधों और कोढ़ों को अच्छा करना ईसा अलैहिस्सलाम की शान के ख़िलाफ़ है वह नबुव्वत करने आए थे न कि तबाबत, लिहाज़ा यहां से दिल के अंधे मुराद हैं रब तआला फ़रमाता हैः

ऐसे ही बर्स यानी कोढ़ी से वह बदी मुराद है जो बज़ाहिर भली मालूम हो।

और हज़रत मसीह यह फ़रमा रहे हैं कि मैं दिल के अंधों और बदकारी के कोढ़ियों को ईमान व तक़वा का रास्ता बताकर अच्छा कर सकता हूं।

जवाब : अगर बग़ैर किसी दलील के अपनी राए से तफ़सीर करनी हो तो जो चाहो कर लो लेकिन अगर दलाइल की बात करनी है तो यह बताओ कि यह मायने किस मुफ़स्सिर ने किये हैं? बेशक नबुव्वत है अहकामे तबलीग़ है मगर नबुव्वत मनवाने के लिए मोजिज़ात की ज़रूरत और मोजिज़ा में आजिज़ करना शर्त है और यह जब ही हो सकता है कि ऐसा मोजिज़ा दिखाया जाए जिससे काम के माहिर आजिज़ रह जायें ताकि यह खुदा दाद इख़्तेयारे नबुव्वत की दलील हो चूंकि आप अलैहिस्सलाम के ज़माने में तिब से बहुत ज़ोर था तो तबीबों को आजिज़ करने के लिए यह मोजिज़ात अता फ़रमाये गये जिसकी सदहा रिवायतें मिलती हैं लेकिन मिर्ज़ा साहब के चेले अपने मौक़िफ़ पर एक रिवायत भी पेश नहीं कर सकते।

एतेराज़ : ईसा अलैहिस्सलाम बग़ैर वालिद पैदा नहीं हुए बल्कि मरयम यूसूफ़ नजार के निकाह में आयीं आप उनके बेटे हैं।

जवाब : कुरआन करीम ने ईसा अलैहिस्सलाम के बग़ैर बाप पैदा होने की बे शुमार गवाहियां दी हैं।

१. इन्हें आदम अलैहिस्सलाम से मुशाबेहत दी है। ईसा अलैहिस्सलाम की मिसाल अल्लाह तआला के नज़दीक आदम अलैहिस्सलाम की तरह है।

२. इन्हें ईसा बिन मरयम कहा, हालांकि कुरआन करीम ने सिवाए मरयम के औरत का नाम न लिया अगर वह मर्द के फ़रज़ंद होते तो उसकी तरफ़ निस्बत की जाती।

३. यहूद ने हज़रत मरयम को तोहमते ज़िना लगाई थी तो ईसा अलैहिस्सलाम को बचपन में कलाम करने की ताक़त अता करके उनसे मां की पाकदामनी ब्यान कराई। अगर मरयम शादी शुदा थीं तो यहूद तोहमत क्यों लगाते? और इस तोहमत के दिफ़ा करने के लिए इतना बड़ा वाक़िया क्यों होता? सिर्फ़ यूसुफ़ नजार कह देता यह मेरा बच्चा है।

४. ईसा अलैहिस्सलाम का लक़ब रूहुल्लाह और कलिमतुल्लाह हुआ क्योंकि वह कलिमा कुन से पैदा हुए।

५. कुरआन करीम ने उनकी मां का यह क़ौल बार बार नक़्ल फ़रमाया।

मुझे किसी इंसान ने नहीं छुआ। अगर इसका निकाह हो चुका था तो यह कहने का क्या मतलब हो सकता है?

६. हज़रत मरयम जंगल में जाकर वज़्हे हमल से फ़ारिग़ हुई अगर यूसुफ़ नजार की बीवी होतीं तो इस क़दर मशक़्क़त उठाने की क्या ज़रूरत थी?

ख़्याल रहे कि मिर्ज़ाईयों ने यह अक़ीदा यहूदियों से हासिल किया है।

यहूद ईसा अलैहिस्सलाम की वालदा को यूसुफ़ नजार से तोहमत लगाते थे।

एतेराज़ : फ़ाज़िले अमरोहवी (मिर्ज़ा का चेला) साहब अलामुन्नास लिखते हैं क्योंकि बहस्बे मुक़तज़ा इस आयत के किसी ज़माने में इत्तेफ़ाक़ एक मिल्लत पर मुमकिन नहीं।

जवाब : इस फ़ेक़रा हदीस को ब–वजहे अदम क़बूल तावील के हस्बे मतलब अपने के आप काटना चाहते हैं आयत में इस्तिसना मौजूद है और इस्तिसनाए ज़मानियात का मुस्तलज़िम है इस्तिसनाए ज़मान को। लिहाज़ा मसीह के वक़्त सब का मरहूम होना और सब का मुत्तफ़िक़ होना मिल्लते वाहिदा पर मुमकिन होगा ज़रूरी अम्र बमुक़तज़ा आयत के सिर्फ़ इतना ही है कि इख़्तेलाफ़ फ़िलजुम्ला और जहन्नम का भर देना मुतहक़्क़िक़ हो।

एतेराज़: जिस हदीस से समझ में आ रहा है कि ईसा अलैहिस्सलाम के वक़्त तमाम लोग एक दीन पर क़ायम हो जायेंगे वह इस आयत के मुख़ालिफ़ है जिसमें यह ज़िक्र है कि अगर अल्लाह तआला चाहता तो सब लोगों को एक दीन पर क़ायम कर देता और लोग हमेशा इख़्तेलाफ़ पर रहेंगे जब यह हदीस आयत के मुख़ालिफ़ है तो इस पर अमल नहीं हो सकेगा।

जवाब : यह यहूदी तर्ज़े अमल है कि कुछ किताब पर ईमान लाना और कुछ पर ईमान न लाना हालांकि साथ ही यह भी आ रहा है कि मगर जिस पर तेरे रब ने रहम किया यानी वह एक दीन पर क़ायम होंगे मसीह के ज़माने में भी अल्लाह तआला की तरफ़ से तमाम लोगों पर रहम किया जायेगा। लिहाज़ा वह सब एक दिन पर क़ायम हो जायेंगे।

एतेराज़ : हदीस पाक में मसीह मौऊद की जो अलामात ब्यान की गई हैं वह मिर्ज़ा साहब में पाई गई हैं सहीह बुख़ारी में है।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया मैंने ख़्वाब में काबा के पास एक शख़्स देखा जिसका रंग गंदुमी है और बहुत ख़ूबसूरत है उसके बाल सीधे हैं और कंधों तक पहुंच रहे हैं मिर्ज़ा साहब का हुलिया भी यही है उनका रंग गंदुमी है बाल सीधे हैं यानी घुंघरु वाले नहीं कंधों के क़रीब कानों की लौ के नीचे लटके हैं।

जवाब : इसी सहीह बुख़ारी में इसके क़रीब ही मसीहे हक़ीक़ी यानी साहबे इंजील का हुलिया यह लिखा है सुर्ख़ रंग और घुंघराले बाल चौड़ा सीना।

नाज़रीन यह मुग़ालता भी क़ाबिले ग़ौर है सुर्ख़ और गंदुमी रंगत दोनों के रावी इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु हैं ऐसा ही घुंघरु वाले और ग़ैर घुंघरु वाले दोनों हदीसों का मक़सद एक ही है क्योंकि मसीह इब्ने मरयम की रंगत में सुर्ख़ी मायल सफ़ेदी थी ऐसा ही बालों में जौऊदा ग़ैर ताम्मा थोड़े घुंघरु वाले बाल थे न बहुत ज़्यादा पेचीदा और न सीधे इसलिए आपके रंग को सुर्ख़ कहना भी सही है और गंदुमी रंग कहना भी सही है इसी तरह आपके बालों को घुंघरु वाले कहना सही है और ग़ैर घुंघरु वाले भी।

तंबीह : बुख़ारी शरीफ़ में जो आया है यीन हज़रत इब्ने उमर की रिवायत है जिसमें ईसा अलैहिस्सलाम का रग सुर्ख़ और बाल घुंघराले और सीना चोड़ा ज़िक्र है यह बुख़ारी की ख़ता है हक़ीक़त में यह रिवायत हज़रत इब्ने अब्बास से ही है यानी देखो अख़राजात मुहम्मद बिन कसीर और इस्हाक़ बिन मंसूर सलूली और इब्ने अबी ज़यादत और यहया बिन आदम वग़ैरह के।

इस हदीस में इब्ने अब्बास ही ईसा अलैहिस्सलाम का रंग सुर्ख़ी सफ़ेदी से मिला हुआ ब्यान करते हैं और आप के बाल बहुत ज़्यादा पेचदार नहीं थे (बल्कि मामूली घुंघरियाले थे) यह भी इब्ने अब्बास

ब्यान कर रहे हैं और अब यह गुमान करना कि सुर्ख़ रंग वाले ईसा अलैहिस्सलाम और थे और गंदुमी रंग वाले ईसा अलैहिस्सलाम और हैं सहीह नहीं हो सकता क्योंकि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का इरशाद दोनों रिवायतों में वाक़िया मेराज के मुताल्लिक़ है जिसके पहले बरिवायत मुस्लिम।

रसूलुल्लाह अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया मुझ पर अंबियाए किराम पेश किये गये हैं इससे साफ़ साबित हो रहा है कि दोनों रिवायतों में उसी ईसा अलैहिस्सलाम का ज़िक्र है जो अंबियाए किराम की जमाअत में इसी तरह शामिल हैं जिस तरह मूसा अलैहिस्सलाम और इब्राहीम अलैहिस्सलाम दाख़िल हैं किसी हदीस पाक में भी मसीले मसीह यानी मिर्ज़ा साहब का कोई ज़िक्र नहीं अगर ईसा अलैहिस्सलाम और होते और मसीले ईसा अलैहिस्सलाम और होता तो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फ़रमाते मैंने ईसा अलैहिस्सलाम और मसीले ईसा अलैहिस्सलाम को देखा हालांकि आपने ऐसा नहीं फ़रमाया पस वाज़ेह हुआ कि हदीस पाक से मिर्ज़ा साहब का अपने आपको मसीहे मौऊद और मसीले ईसा साबित करना बातिल है।

एतेराज़ : मिर्ज़ा साहब का ज़िक्र हदीस पाक में है सही मुस्लिम में है।

अगर इल्म सुरय्या के साथ भी मुताल्लिक़ हो तो फ़ारस के लोगों में से एक शख़्स उसे पा लेगा। मिर्ज़ा साहब के एक मुरीद अमरोही ने इस हदीस से मुराद भी अपने मिर्ज़ा साहब को ही लिया है।

जवाब अव्वल : मुत्तफ़िक़ अलैह शैख़ैन बुख़ारी व मुस्लिम की हदीस में इसी तरह मज़कूर है।

यह हदीस आपने सलमान फ़ारसी के कंधे पर हाथ मुबारक रखकर ब्यान फ़रमाई जिससे सलमान फ़ारसी का मिस्दाक़ होना साबित होता है यानी स्याक़ व सबाक़ से यह हदीस मख़तस है आम है ही नहीं।

दो : अगर हदीस को आम रखा जाए और मुराद फ़ारस का कोई शख़्स भी लिया जाए तो फिर भी इससे मुराद मिर्ज़ा साहब नहीं हो सकते क्योंकि उन्होंने ख़ुद अपना समर क़ंदी होना साबित किया है हालांकि समर क़ंद ख़ुरासान से है न कि फ़ारस से। जिन लोगों को कुछ जुग़राफ़िया वग़ैरह में महारत है उन पर यह बात वाज़ेह है।

तीन : अगर हदीस पाक से मुराद ज़्यादा उमूम लिया जाये यानी अहले फ़ारस का एक बा मुहावरा मायने यह लिया जाए कि इससे मुराद अजमी लोग हैं तो फिर भी मिर्ज़ा साहब का मुद्दा साबित नहीं हो सकता क्योंकि हदीस में मअरिफ़ बिल्लाम है अलिफ़ लाम अहदे ख़ारजी है जिससे मुराद वह इल्म है जो किताब व सुन्नत के मुताबिक़ है न कि मुख़ालिफ़, मिर्ज़ा साहब का इल्म तो शैतानी इल्म था कुरआनी इल्म नहीं था वरना वह कुफ़्र इख़्तेयार करके झूटी नबुव्वत का दावा न करते।

झूठों की कहावतें : अमरोही साहब ने अपने मिर्ज़ा को मसीहे मौऊद माना है इसलिए यह दावा भी किया कि मिर्ज़ा साहब दीने नसरानियत को मिटा देंगे सैय्यदुल औलिया पीर महर अली शाह रहमतुल्लाह अलैहि फ़रमाते हैं।

आज तारीख़ १५ शाबान १३१७ तक दीन नसरानियत का मिट जाना मुतहक़्क़िक़ नहीं हुआ। हालांकि मिर्ज़ा साहब जो मसीहे मौऊद होने के दावेदार हैं वह कितने अर्से से आ चुके हैं। बल्कि मिर्ज़ा साहब अपनी मौत तक भी यह करिश्मा न दिखा सके।

ईसा अलैहिस्सलाम की सिफ़ात में यह भी ज़िक्र है कि आप लोगों को माल की तरफ़ बुलायेंगे लेकिन कोई एक भी क़बूल नहीं करेगा।

इसका मतलब अमरोही ने यह ब्यान किया है कि इससे मुराद भी मिर्ज़ा साहब हैं क्योंकि उन्होंने बज़रिये इश्तेहारात रुपया देने का वादा मुख़ालेफ़ीने इस्लाम (इनके वनावटी इस्लाम) को फ़रमाया और किसी ने क़बूल नहीं किया।

इसका जवाब हज़रत पीर साहब यूं देते हैं।

कि हदीस में मज़कूर है इसका मतलब यह है कि ईसा अलैहिस्सलाम के ज़माने में सब लोग अहले इस्लाम होंगे और सब को इबादत की वहुत रग़वत होगी और सव तारिके दुनिया और ज़ाहिद होंगे इस पर हदीस पाक के अल्फ़ाज़ शाहिद हैं।

इसलिए कि उस वक़्त मुसलमान ज़ाहिद और आबिद होंगे जो दुनिया को क़बूल नहीं करेंगे हदीस का यह मतलब नहीं कि उस वक़्त मुख़ालेफ़ीने इस्लाम भी होंगे (जैसा कि मिर्ज़ाइयों ने मआज़ल्लाह मुसलमानों को मुख़ालफ़ीने इस्लाम कहा) और इनको हक़ीक़ते इस्लाम ज़ाहिर करने के मुक़ावले में इश्तेहारात के ज़रिये रुपया देने का वादा दिया जायेगा और वह क़वूल नहीं करेंगे ख्याल रहे कि इस्लाम बज़ाते ख़ुद अमरे हक़ है। वाक़ेय के मुताविक़ है क़यामत तक कोई मुख़ालिफ़ भी यह नहीं कर सकता कि इस्लाम के हक़ होने को ज़ायल कर सके या इस्लाम का नाहक़ होना सबित कर सके।

इस्लाम अपने हक़ होने में किसी इंसान का मोहताज नहीं वल्कि रब तआला ने ख़ुद इसके ग़ल्बा का ज़िम्मा उठा रखा है हदीस पाक (इस्लाम को क़यामत तक ग़ल्बा हासिल रहेगा) इस पर शाहिद है।

एतेराज़ : आयत "व मन नुअम्मिर हु नुनक्किसहु फ़िलख़लक़ि" दाल है वफ़ाते ईसा अलैहिस्सलाम पर क्योंकि हस्बे मफ़ाद इस आयत के जो शख़्स अस्सी या नव्वे साल को पहुंचता है उसको नक़ूस और ज़ाज गोई बनिस्बत पहली हयाती के पैदा होती है कैसा हाल होगा उस शख़्स का जो दो हज़ार साल तक ज़िन्दा है।

जवाब : अस्सी या नव्वे साल की क़ैद जो आपने लगाई है यह क़ुरआन पाक के कौन से अल्फ़ाज़ मुबारका से समझ में आई ख़ुदारा यहूदियों की तरह कलामे इलाही की तहरीफ़ से बाज़ आयें क्या आपको क़ुरआन पाक में यह आयत नज़र नहीं आई।

वह अस्हाबे कहफ़ अपनी ग़ार में तीन सौ नौ साल रहे।

आपकी पेश की गयी आयत का मफ़हूम अगर तुम्हारे ख़्याल में अस्सी या नव्वे साल की उम्र तक महदूद है-तो फिर इस-आयत से अस्हावे कहफ़ का तीन सौ नौ साल ग़ार में कैसे साबित हो सकता है और नूह अलैहिस्सलाम की उम्र एक हज़ार चार सौ साल और हज़रत आदम अलैहिस्सलाम की उम्र नौ सौ तीस साल और हज़रत शीस अलैहिस्सलाम की एक सौ बीस साल और हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम की उम्र दो सौ तैईस साल कैसे हो सकती थी?

असल में यह सब ग़लत तावीलें मिर्ज़ा साहब से इस वजह से सरज़द हुई।

कि जिसे अल्लाह तआला गुमराह कर दे उसे कोई हिदायत देने वाला नहीं। इनके गुमराह कुन शैतानी इल्म ने इन्हें जहन्नम का ईंधन बना दिया।

एतेराज़: तुम में से बाज़ को फ़ौत किया जाता है और बाज़ को बड़ी उम्र तक पहुंचाया जाता है। इस आयत में दो ही सूरतें ज़िक्र हैं या घटिया उम्र से पहले फ़ौत कर देना और या उस उम्र तक पहुंचा देना जिसमें इंसान के होश व हवास क़ायम नहीं रहते इस आयत से पता चला कि ईसा अलैहिस्सलाम फ़ौत हो चुके हैं क्योंकि रज़ील उम्र तो नबी की शान के लायक़ नहीं और किसी जगह क़ुरआन में भी ज़िक्र नहीं।

और तुम में बाज़ अपने उन्सरी जिस्म के साथ आसमानों पर चढ़ जायेंगे और फिर आख़िर ज़माने में लौट आयेंगे।

आयत में सिर्फ़ दो चीज़ों का ज़िक्र है अगर और कोई तीसरी सूरत मानी जाए तो आयत में जो दो चीज़ों के अंदर एक मसला को बंद किया है उसका मक़सद फ़ौत हो जाये यानी ईसा अलैहिस्सलाम के आसमानों पर उठाए जाने को अगर माना जाए तो आयत का हिस्र बातिल होता है।

जवाब : पहली बात तो यह है कि आयत में कोई हिस्र है ही नहीं अगर बिलफ़र्ज़ हिस्र को मान भी लिया जाए तो फिर भी वाज़ेह क़ानून है किसी चीज़ के ज़िक्र न करने से उसका वजूद ख़त्म नहीं होता नीज़ तुम्हारा क़ौल कि ईसा अलैहिस्सलाम को सूली पर चढ़ाया गया इसका ज़िक्र भी तो कुरआन पाक में नहीं जब तुम्हारे नज़दीक इससे हिस्र बातिल नहीं तो आपके आसमानों पर उठाए जाने वाले क़ौल से हिस्र कैसे बातिल है।

नीज़ अहले कश्फ़ के नज़दीक अर्ज़लुल की कोई हद मुअय्यन नहीं न इस पर कोई आयत व हदीस दलालत कर रही है और न ही अक़ली तौर पर साबित है कि इससे मुतजाविज़ होना मौत का सबब हो उलेमाए ने जो हद मुक़र्रर की है उस को शैख़ अकबर अपने कश्फ़ी तरीक़े से फ़ुतूहात में रद फ़रमाते हैं उनके क़ौल का मज़मून यह है कि अगर जो कुछ इल्म तबई में हमारे ऊपर मकशूफ़ हुआ है वह उलेमा सबीईन को मालूम होता तो हरगिज़ इंसान की उम्रे तबई को वह किसी हद से मुअय्यन न करते नीज़ अगर यह मान भी लिया जाए कि इससे मुराद रज़ील उम्र है तो फिर भी इससे अहले इल्म मुस्तसना हैं उनका हुक्म ही और है।

हज़रत अकरमा फ़रमाते हैं जिस ने कुरआन पाक का इल्म हासिल किया उसे यह हालत नहीं हासिल होती कि उसकी अक़्ल में कमी आ जाये यानी यह हुक्म उन लोगों के साथ ख़ास है जिन्होने कुरआन पाक का इल्म हासिल न किया जिन्होंने कुरआन पाक पढ़ा और इल्म हासिल किया उन्हें इस हालत की तरफ़ नहीं पहुंचाया जाता बल्कि उनकी अक़्ल उम्र की ज़्यादती के साथ बढ़ती रहती है इस पर मुशाहिदात दलालत कर रहे हैं।

जब अहले इल्म का यह मक़ाम है तो अल्लाह तआला के जलीलुल क़द्र नबी का क्या मक़ाम होगा यक़ीनन ज़्यादा उम्र का दिया जाना रज़ालत की तरफ़ नहीं पहुंचायेगा नीज़ "व मन यतवफ़्फ़ा" भी दाख़िल किया जा सकता है क्योंकि आप पर वफ़ात भी यक़ीनी आनी है और आपको दुनिया की जिस उम्र में

उठाया गया है और फिर दुनिया में आपको जितनी मुद्दत रहना है आपकी वही उम्र शुमार होगी आसमानों की ज़िन्दगी पर वहां के क़वानीन ही नाफ़िज़ हैं न वहां मौत न बूढ़ा होना सब लोग जन्नत में जायेंगे तो उनको वह ज़िन्दगी हासिल होगी जो ख़त्म होने वाली नहीं होगी और उन पर कोई बुढ़ापा तारी नहीं किया जायेगा।

एतेराज़ : "इन न क मय्यितुन व इन नहुम मैय्यतून" से वाज़ेह तौर पर साबित हो रहा है कि ईसा अलैहिस्सलाम फ़ौत हो चुके हैं क्योंकि यहां नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और तमाम अंबियाए किराम की वफ़ात का ज़िक्र है।

जवाब : यह दोनों क़ज़िया मुतलक़ा आम्मा हैं दाइमा मुतलक़ा नहीं अगर दाइमा होते तो हुक्म हमेशा हर ज़माने में साबित होता मुतलक़ा आम्मा में तो हुक्म तीन ज़मानों में किसी ज़माने में भी पाया जाना काफ़ी होता है अब आयते करीमा का मतलब यह हुआ तहक़ीक़ ऐ हबीब तुम फ़ौत होने वाले हो अपने वक़्ते मुतअय्यत में और वह अंबियाए साबिक़ा भी अपने अपने औक़ात में मरने वाले हैं।

इससे वाज़ेह हुआ कि ईसा अलैहिस्सलाम को भी चूंकि अपने वक़्ते मुक़र्ररा में फ़ौत होना है लिहाज़ा वह इन नहुम मैय्यतून में दाख़िल हैं नुजूले आयत के वक़्त अगर आप का फ़ौत शुदा होना ज़रूरी होता तो इसका मतलब यह होता है कि नबी करीम सल्ललाहु अलैहि वसल्लम भी उस वक़्त अमवात में दाख़िल होते हालांकि ऐसा सोचना सरासर ग़लती पर मबनी है।

ख़्याल रहे कि इस सवाल की हैसियत उसी वक़्त होगी जब "इन नहुम" की ज़मीर का मरजअ आम लोग हों जिनमें अंबियाए किराम भी दाख़िल हों और अगर ज़मीर का मरजअ कुफ़्फ़ार हों जो हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के मुताल्लिक़ कहते थे कि यह फ़ौत हो जायेंगे और इनके बेटे भी नहीं। लिहाज़ा दीन भी खुद बख़ुद ख़त्म हो जायेगा तो उनके जवाब में कहा गया है कि आप फ़ौत हो जायेंगे तो क्या यह लोग ज़िन्दा रह जायेंगे? यह किसी की मौत पर खुशी क्यों मनाते हैं अपनी फ़िक्र करें इस सूरत में सवाल ही वारिद नहीं होगा और न जवाब की कोई ज़रूरत है।

एतेराज़ : मय्यत मुशतक़ है जिसका मबदा इश्तिक़ाक़े मौत है क़ानून यह है कि मुशतक़ को जब किसी क़ज़या में महमूल बनाया जाये तो वह मबदा के साथ क़याम को चाहता है इस ज़ाब्ता के पेशे नज़र ईसा अलैहिस्सलाम पर मौत का वाक़ेय होना भी साबित हुआ।

जवाब : कयामे मबदा का वक़्त तहक़ीक़े मज़मून क़ज़िया ज़रूरी होता है न वक़्त सिद्क़ क़ज़िया।

यानी जिस वक़्त इस हुक्म को वाक़ेय होना है उस वक़्त मुश्तक़ का क़याम मबदा से ज़रूरी होना है।

और यह बात दुरुस्त है कि ईसा अलैहिस्सलाम पर अपने वक़्त में मौत आनी है आपको मय्यत बनना है उस वक़्त मय्यत का क़याम मौत से ही होगा यह कोई ज़रूरी नहीं कि जब क़ज़िया आम्मा बोला जाये उसी वक़्त महमूल का क़याम मौजू से हो और मुशतक़ का क़याम मबदा इश्तेक़ाक़ से हो।

एतेराज़ : और अल्लाह के सिवा जिन को पूजते हैं वह कुछ भी नहीं बनाते वह ख़ुद बनाए हुए हैं मुर्दे हैं ज़िन्दा नहीं और इन्हें ख़बर नहीं लोग कब उठाए जायेंगे।

इस आयत से साबित हो रहा है कि अल्लाह के सिवा सारे माबूद मर चुके हैं ज़िन्दा नहीं चूंकि ईसा अलैहिस्सलाम को भी लोगों ने माबूद माना और वह भी अल्लाह के सिवा माबूदों में दाख़िल इसलिए वह मर चुके हैं ज़िन्दा नहीं वाज़ेह हुआ कि यह आयत वफ़ाते मसीह पर दलालत कर रही है।

जवाब : यह आयत सूरः नहल की है जिसका नुजूल मक्का में हुआ है इस लिहाज़ से "मिन दूनेल्लाह" से मुश्रेकीने मक्का के माबूद हैं हज़रत इब्ने अब्बास अमवात की तफ़सीर में असनामे अमवात तहरीर फ़रमाते हैं यानी बुत तो ख़ुद बे जान हैं।

ख़्याल रहे कि राक़िम ने अपनी किताब शमा हिदायत में इस आयत की तफ़सीर में मौदूदी साहब से जो ग़लतियां हुई हैं या दीदा दानिस्ता ग़लत तफ़सीर की उसका तफ़सीली रद्द किया है।

एतेराज़ : क़ानून यह है कि उमूम अल्फ़ाज़ का एतेबार हुआ करता है न कि ख़ुसूसी मोरिद का। इस क़ानून के पेशे नज़र तो यह चाहिये कि "मिन दूनेल्लाह" से मुतलक़ माबूदाने बातिला मुराद हों बुतों के साथ ख़ास करना दुरुस्त नहीं इस लिहाज़ से तो मसीह बिन मरयम भी इस आयत के हुक्म में दाख़िल होंगे यानी मर चुके हैं।

जवाब : अगर इस आयत में हुक्म को बुतों के साथ ख़ास न किया जाए तो मलाइका भी इसमें दाख़िल होंगे क्योंकि उनको भी लोगों ने माबूद माना तो इस तरह वह भी अल्लाह के सिवा माबूद हैं तो यह लाज़िम आयेगा कि फ़रिश्ते सब मर चुके हों इस तरह जिब्राईल भी मर चुके होंगे इससे तो ज़्यादा मुसीबत मिर्ज़ा साहब पर ही पड़ेगी कि उनका दावा शुरू से ही बातिल हो जायेगा क्योंकि वही तो तमाम अंबियाए किराम के पास जिब्राईल ही लाते रहे उनको ही मुर्दा क़रार दे दिया गया तो मिर्ज़ा साहब का दावए नबुव्वत ख़ुद बख़ुद बातिल हो गया।

अगर बिलफ़र्ज़ अल्लाह के सिवा तमाम माबूद मुराद लेने हों तो जब क़ज़िया मुतलका आम्मा माना जाए तो फिर सिर्फ़ इतना ही साबित होगा कि अपने अपने वक़्त पर उनको मौत आनी है इस तरह ईसा अलैहिस्सलाम पर भी यह आयत सादिक़ आयेगी क्योंकि उनको भी मौत अपने वक़्त पर आनी है और फ़रिश्ते इसमें दाख़िल हो सकेंगे क्योंकि नफ़ख़े सूर पर उनको भी मौत आती है लेकिन इससे मिर्ज़ा साहब का मक़सद साबित नहीं हो सकेगा ईसा अलैहिस्सलाम तो मर चुके हैं और मैं मसीहे मौऊद हूं।

एतेराज़ : रब तआला का इरशाद है ।

नबी क़रीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से पहले सारे रसूल वफ़ात पा चुके हैं।

यह तमाम रसूलों के मुताल्लिक़ है जिन में ईसा अलैहिस्सलाम भी हैं इस से पता चला कि ईसा अलैहिस्सलाम वफ़ात पा चुके हैं।

जवाब : एतेराज़ करने वाले ने "ख़लत" का मायने फ़ौत हो गये किया है जो ग़लत है क्योंकि यह मायने करने से दो आयतों में सरीह तौर पर तनाक़ुज़ लाज़िम आयेगा इसलिए कि एक आयत में फ़रमाया।

अल्लाह का दस्तूर है कि पहले से चला आता है।

और दूसरी आयत में फ़रमाया:

और हरगिज़ तुम अल्लाह का दस्तूर बदलवा न पाओगे।

अगर ख़लत का मायने मौत किया जाए तो पहली आयत का मायने यह होगा सुन्नते ख़ुदावंदी मर चुकी और मादूम हो गई हालांकि दूसरी का मफ़ाद यह है कि सुन्नते इलाहिया मुतग़य्यर नहीं होती यानी हमेशा अपने हाल पर बाक़ी रहती है इसलिए यह भी सही है कि:

उनसे पहले और रसूल हो चुके (गुज़र गये) और दूसरी आयत को तर्जमा यह है अल्लाह का दस्तूर जो उसके बंदों में गुज़र चुका।

तवज्जोह से सुनिए कि ख़लत मुशतक़ है ख़ली से जिसका मायने है तंहा होना जैसा व इज़ा ख़लौ इला शयातीनिहिम में यही मायने है और जब अपने शैतानों के पास अकेले हों।

और दूसरा मायने गुज़रना है और यह मायने ज़माना की सिफ़त बिज़्ज़ात होता है जिस तरह कहा जाता है गुज़श्ता साल (गुज़रे हुए ज़माने) और यह मायने ज़माने की सिफ़त बिल अर्ज़ होता है यानी जो अशिया ज़माने में मौजूद हाती हैं उनको भी ज़रफ़ियत व मज़रूफ़ियत के तअक़्कुल की वजह से गुज़रा हुआ कह दिया जाता है।

अब आयत का मायने यह होगा इनसे पहले रसूल गुज़र चुके हैं इस मायने के लिहाज़ से जो फ़ौत हो चुके हैं उनके मुताल्लिक़ भी कहा जाता है कि वह गुज़र चुके हैं और जो रिसालत से फ़ारिग़ हो चुके हैं और ज़मीन से आसमानों पर उठा लिये गये हैं यानी इब्ने मरयम के मुताल्लिक़ भी कहा जा सकता है वह गुज़र गये हैं जैसा कि आम मुहावरा में कहा जाता है फलां हाकिम शहर में तहसीलदार हो गुज़रा है यह मुहावरा दोनों सूरतों में सादिक़ आता है अगर वह मर गया हो फिर भी और अगर वह मुलाज़िमा से फ़ारिग़ हो चुका हो तो फिर भी।

एतेराज़ : इसके बाद ज़िक्र है।

क्या वह (नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) अगर इंतेक़ाल फ़रमायें या शहीद हों तो तुम उल्टे पांव फिर जाओगे।

यह क़रीना है कि क़द ख़लत में भी मायने मौत ही लिया जाये यानी हुज़ूर से पहले और तमाम रसूल फ़ौत हो गये।

जवाब : चूंकि बमुक़ाबला "औ कुतिल" के वाक़ेय हुआ है लिहाज़ा "मा त" से मुराद मौत होगी यानी अपने आप मरना बग़ैर किसी के क़त्ल करने के यह बात समझ कर इंसाफ़ से ख़ुद ही बताया जाये कि अगर "अ फ़ इन मा त" को क़रीना इरादा मायने मौत पर क़द ख़लत से ठहरायें तो ज़रूर "क़द ख़लत" से मुराद यानी मौत तबई होगी। इस तरह (मज़अल्लाह) "क़द ख़लत मिन क़ब लिर्रसूल" का काज़िब होना लाज़िम आयेगा क्योंकि सारे अम्बियाए किराम तबई मौत नहीं फ़ौत हुए बल्कि कोई अपनी तबई मौत फ़ौत हुए और बाज़ को शहीद किया गया। और अगर ख़लत का मायने मुतलक़ मौत ले भी लिया जाये तो दूसरी आयत के उमूम के लिए मुख़स्सस होगी यानी दूसरे अंबियाए किराम तो दुनिया से रुख़सत हो गये फ़ौत हो गये लेकिन ईसा अलैहिस्सलाम को अल्लाह ने आसमानों पर उठा लिया इसी तरह कुरआन पाक की कई आयाते मुबारका को दूसरी आयात से ख़ास किया गया है।

जैसे रब तआला ने फ़रमाया।

अलम नख़ लुक़ कुम मिम माइम महीन (क्या हमने तुम्हें एक बे क़दर पानी से पैदा न फ़रमाया) और ऐसा ख़ुल्कि मिम्माइन दाफ़िक। यख़रोजो मिन बईनिस सुलबि ब तराईब (जस्त करते उछलते हुए पानी से जो निकलता है पीठ और सीनों के बीच से यह दोनों आयतें आम मख़सूसुल बाज़ हैं यानी इन आयात में इंसान की पैदाईश का ज़िक्र किया गया है उसे मनी से पैदा किया गया है हालांकि यह हुक्म आदम अलैहिस्सलाम और हज़रत हव्वा को शामिल नहीं क्योंकि उनको मनी से पैदा नहीं किया गया इसी तरह ईसा अलैहिस्सलाम को भी नफ़ख़े जिब्राईल से पैदा किया गया है इस मिसाल से अब समझना होगा कि:

क़द ख़लत मि क़ब लिहिर रुसुल।

आयत भी मख़सूसुल बाज़ है क्योंकि ब ल र फ़ु अहुल्लाहु इलैहि और दूसरी आयात जिनसे ईसा अलैहिस्सलाम का ज़िन्दा होना साबित है इनसे वाज़ेह हो रहा है कि यह हुक्म दूसरे अंबियाए किराम के लिए है हज़रत मसीह के लिए नहीं।

एतेराज़ : अल्लाह तआला का इरशाद गिरामी है:

ज़मीन में ही तुम को ज़िन्दा रहना है और इसमें ही तुम्हारी मौत आनी है।

बहुत बड़ी दलील है कि इंसान के रहने की जगह सिर्फ़ ज़मीन ही है और कोई जगह रहने की नहीं तो ईसा अलैहिस्सलाम आसमानों पर ज़िन्दगी कैसे बसर कर रहे हैं।

जवाब : असल तो यही है कि इंसान के रहने की जगह ज़मीन ही है लेकिन आरज़ी तौर पर किसी को आसमानों पर रब तआला ख़ुद रखे तो इसमें क्या हर्ज है? जैसा कि मलाइका का असल रहने का मक़ाम आसमान है लेकिन उनकी आमद व रफ़्त ज़मीन पर भी रहती है जब फ़रिश्तों का ज़मीन पर आना जाना मना नहीं तो ईसा अलैहिस्सलाम का आसमानों पर जाना क्यों मना हो सकता है?

इससे वाज़ेह हुआ कि आयत में हिस्र इज़ाफ़ी है हक़ीक़ी नहीं यानी बनिसबत इस्तिक़रारे असली के है और दूसरी आयत व लकुम फ़िल अरज़ि मुस्तक़र से बज़ाहिर जो समझ में आ रहा है इसमें लाम तख़सीस का है और मतलब यह है कि तुम्हारा ज़मीन में रहना ख़ास है इससे मुराद यह भी है कि तुम्हारा रहने का मक़ाम ज़मीन बनाया गया है लेकिन यह भी लाज़िम नहीं क्योंकि एक चीज़ को किसी के लिए बनाया गया हो तो ज़रूरी नहीं कि वह उससे जुदा न हो।

जैसा कि :

रब तआला ने रात को लिबास बनाया और दिन को मआश।

यानी रात सोने के लिए बनाई है और दिन रोज़ी कमाने के लिए हालांकि बाज़ औक़ात इंसान रात को काम करता है और दिन को सोता है तो मक़सद यह निकला कि उमूमी तौर पर रात सोने के लिए और दिन रोज़ी कमाने के लिए है लेकिन कभी इसके ख़िलाफ़ भी हो सकता है और इसमें कोई हर्ज भी नहीं, ऐसे ही ज़मीन में रहने के लिए उमूमी तौर पर मख़तस है लेकिन किसी को रब तआला ख़ुद आसमानों में ठहरा ले तो इसमें किसी को कलाम करने की क्या मजाल हो सकती है?

अक़ीदए ख़त्मे नबुव्वत : हज़रत पीर मुहम्मद करम शाह साहब भेरवी कुद्देस सिर्रहु ने "मा का न मुहम्मद" की तफ़सीर में अक़ीदए ख़त्मे नबुव्वत पर ख़ूब बहस फ़रमाई, सहीह बात यह है कि ज़ियाउल कुरआन का मुताला करने से पता चलता है कि ईमान अफ़रोज़ तफ़सीर है, मुहब्बत व इरफ़ान का ख़ज़ीना है अल्लाह पीर साहब की इस सई जमील पर आपको अज्रे अज़ीम अता फ़रमाये।

नहीं हैं मुहम्मद फ़िदाहे रुही किसी के बाप तुम्हारे मर्दो में से बल्कि वह अल्लाह के रसूल और ख़तिमन नबीईन हैं और अल्लाह हर चीज़ को ख़ूब जानने वाला है।

बाप होने की नफ़ी की और अल्लाह के रसूल होने का ऐलान फ़रमाया बेशक बाप अपनी औलाद पर बड़ा मेहरबान और शफ़ीक़ होता है लेकिन रसूल को जो क़ल्बी ताल्लुक़ अपनी उम्मत के हर फ़र्द से होता है और जो लुत्फ़ व करम वह फ़रमाता है उसके मुक़ाबले में बाप की सारी शफ़क़तें हेच हैं बाप की मेहरबानियां औलाद की जिस्मानी और माद्दी दुनिया तक महदूद होती हैं रसूल की निगाहे करम से उम्मती का जिस्म और रूह ज़ाहिर और बातिन दिल और अक़्ल सब फ़ैज़याब होते हैं बाप की शफ़क़तें रोज़े हश्र किसी काम नहीं आयेंगी बल्कि सारे दुनियावी रिश्ते उस दिन टूट जायेंगे।

महशर के दिन इंसान अपने भाई और मां और बाप और ज़ौजा और बेटों से भागेगा।

लेकिन रसूल के लुत्फ़ व इनायत से दुनिया और आख़रत दोनों में उसका उम्मती शाद काम होता है।

हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की निहायत शफ़क़त को ब्यान फ़रमाया जा रहा है कि अगर हुजूर के बाद भी नबुव्वत का सिलसिला जारी रहता तो हुजूर इतनी तुंदही से उम्मत के सामने दीने इस्लाम के सारे गोशे आशकारा करने की शदीद ज़हमत न फ़रमाते लेकिन अब जब कि नबुव्वत का दरवाज़ा बंद कर दिया गया और हुजूर ही इस सिलसिले ज़हबिया (ख़त्मे नबुव्वत का सिलसिला) की आख़री कड़ी हैं तो आपकी मुहब्बत और उलफ़त का तक़ाज़ा यह है कि कोई चीज़ भी अधूरी न रहने दी जाए सारी बुरी रस्मों का क़िला क़मअ कर दिया जाये क्योंकि अगर बातिल का कोई पहलू इस्लाह से महरूम रहा तो फिर उसकी इस्लाह मुमकिन नहीं होगी और अगर दौरे जाहिलियत की क़बीह रस्मों को न मिटाया गया तो फिर ऐसी हस्ती पैदा ही नहीं होगी जो उनको मिटा सके इतनी महबूबियत इतनी जामियत और इतना तक़द्दुस कहां पाया जायेगा ताकि उसके इशारए अबरू पर अपना सब कुछ निसार करने के लिए तैयार हो जाये।

ख़त्मे नबुव्वत का अक़ीदा : ख़त्मे नबुव्वत का अक़ीदा इस्लाम के उन चंद बुनियादी अक़ीदों में से एक है जिन पर उम्मत का इजमा रहा है अगरचे बदक़िस्मती से उम्मते इसलामिया कई फ़िरक़ों में बट गई है बाहमी तअस्सुब ने बारहा मिल्लत के अमन व सकून को दरहम बरहम किया और फ़ित्ना फ़साद के शोलों ने बड़े अल्मनाक हादसात को जन्म दिया लेकिन इतने शदीद इख़्तेलाफ़ात के बावजूद सारे फ़िरक़े इस पर मुत्तफ़िक़ रहे कि हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम आख़री नबी हैं और हुजूर के बाद कोई नया नबी नहीं आयेगा चुनांचे गुज़श्ता तेरह सदियों में जिसने भी नबी बनने का दावा किया उसको मुरतद क़रार दे दिया गया और उसके ख़िलाफ़ अलमे जिहाद बुलंद करके इस झूटी अज़मत को ख़ाक में मिला दिया गया मुसैलिमा ने जब नबुव्वत का दावा किया तो हज़रत सिद्दीक़ अकबर ने

नताइज की परवाह किये बग़ैर उसके ख़िलाफ़ लश्कर कुशी की और तब चैन का सांस लिया जब उस झूठे नबी को मौत के घाट उतार दिया बेशक उस जिहाद में हज़ारों की तादाद में मुसलमान भी शहीद हुए जिनमें सैंकड़ों हुफ़्फ़ाज़े कुरआन और जलीलुल मर्तबत सहाबा थे लेकिन हज़रत सिद्दीक़ अकबर ने इतनी कुर्बानी दे कर भी उस फ़ित्ने को कुचलना ज़रूरी समझा आप नूरे सिद्दीक़ियत से देख रहे हैं कि अगर ज़रा तसाहुल बरता तो यह उम्मत सैंकड़ों गरोहों में नहीं सैंकड़ों उम्मतों में बट जायेगी हर उम्मत का अपना नबी होगा और वह उसकी शरीअत और सुन्नत को अपनायेगी इस तरह रहमतुललिल आलमीन के ज़ेरे साया इस्लाम के पलेट फ़ार्म पर इंसानियत के इत्तेहाद की उम्मीदें ख़त्म हो जायेंगी और "इन नी रसूलुल्लाहि इलैकुम जमीआ" बेशक मैं तुम सबकी तरफ़ अल्लाह का रसूल हूं का सुहाना मंज़र कभी भी नज़र नहीं आयेगा नाज़रीन को यह बात मद्दे नज़र रखनी चाहिये कि मुसैलिमा हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की नबुव्वत का मुन्किर नहीं था बल्कि अपने दावए नबुव्वत के साथ साथ वह हुज़ूर की रिसालत को भी तस्लीम करता था चुनांचे हुज़ूर ख़ातिमुल अंबिया की ज़ाहिरी ज़िन्दगी के आख़री अय्याम में उसने जो अरीज़ा इरसाल ख़िदमत किया था उसके अल्फ़ाज़ यह हैं:

कि यह ख़त मुसैलिमा की तरफ़ से है जो अल्लाह का रसूल है। मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की तरफ़ लिखा जा रहा है।

अल्लामा तिबरी ने इस अम्र की तसरीह की है कि उसके हां जो अज़ान मुरव्विज थी उसमें अश्हदु अन्न मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह भी कहा जाता था बईं हमा हज़रत सिद्दीक़ ने उसको मुरतद और वाजिबुल क़त्ल यक़ीन करके उस पर लश्कर कुशी की और उसको वासिले जहन्नम करके आराम का सांस लिया।

इस्लाम की तेरह सद साला तारीख़ में जब भी किसी सरफिरे ने तालेअ आज़मा, या फ़ित्ना परदाज़ ने अपने आपको नबी कहने की जुर्रत की तो उसको क़त्ल कर दिया गया अंग्रेज़ की गुलामी के दौर में मिल्लते इस्लामिया को जिस तरह दूसरे कई मसाइब से दो चार होना पड़ा उसी तरह एक एक झूठी नबुव्वत क़ायम करके उम्मत में इंतेशार पैदा किया गया वह बिदई नबुव्वत बज़ाहिर ईसाईयत का रद करता था और पादरियों से मुनाज़िरे करता था इसके बादजूद अंग्रेज़ का परले दर्जा का वफ़ादार था, मल्का इंगलिस्तान की शान में उसने ऐसे तारीफ़ी पैम्फ़लेट लिखे कि कोई बा-ग़ैरत मुसलमान उनको पढ़ना भी गवारा नहीं करता।

अंग्रेज़ की इस्लाम दुश्मनी अज़हर मिनश शम्स है जिन्होंने हिंदुस्तान में मुसलमानों की हुकूमत का तख़्ता उलटा, सलतनते उस्मानिया को पारा पारा कर दिया और ऐसी ज़ालिम और इस्लाम दुश्मन हुकूमत को अपनी वफ़ादारी का यक़ीन दिलाना इस्लाम से ग़द्दारी नहीं तो और क्या है?

अंग्रेज़ ने उसकी नबुव्वत को अपनी संगीनों के साया में परवान चढ़ने का मौक़ा दिया और उसको क़बूल करने वालों के लिए बेजा नवाज़िशात के दरवाज़े खोल दिये हर मिर्ज़ाई के लिए किसी इस्तिहक़ाक़ के बग़ैर अच्छी से अच्छी मुलाज़मतें मख़्तस कर दी गई सियासी मैदान में भी उनको आगे बढ़ाने की कोशिश की गई बेशक वह शख़्स ईसाईयत के ख़िलाफ़ लिखता और बोलता था लेकिन अंग्रेज़ ने उसके ज़रिये उम्मते मुस्लेमा में एक नई उम्मत पैदा करके और उनके मुत्तफ़ेक़ा दूर रस नताइज के एतेबार से बड़ा अहम था अगर ऐसा शख़्स ईसाईयत के ख़िलाफ़ कुछ बोलता है तो बोला करे इससे अंग्रेज़ी

सियासत को कोई नुक़सान नहीं पहुंचता बल्कि ईसाईयों की मुख़ालफ़त ही एक ऐसा ज़रिया है जिससे वह अंग्रेज़ी इस्तेमार की ख़िदमत पूरी दिलजमई से अंजाम दे सकता था अगर वह ईसाईयों के ख़िलाफ़ कुछ न करता तो उसकी बात कोई आदमी सुनने के लिए तैयार नहीं था मिर्ज़ा गुलाम अहमद की नबुव्वत का पैग़ाम लेकर जब मिर्ज़ाई मुबल्लिग़ इस्लामी ममालिक में गये वहां उनका जो हश्र हुआ वह किसी से छुपा हुआ नहीं कई ममालिक में तो उन्हें मुरतद क़रार देकर तोप से उड़ा दिया गया आलमे इस्लाम के तमाम उलेमा ने बिल इत्तेफ़ाक़ इस मुद्दईए नबुव्वत को मुरतद और ख़ारिज अज़ इस्लाम क़रार दिया।

यह अर्ज़ करने का मक़सद सिर्फ़ इस हक़ीक़त को वाज़ेह करना है कि ख़त्मे नबुव्वत का अक़ीदा उन बुनियादी अक़ीदों में से एक है जिन पर गुनागूं इख़्तेलाफ़ात के बावजूद तेरह सदियों तक उम्मत का कुल्ली और क़तई इजमा रहा है जिस तरह एक मुसलमान के लिए अल्लाह की तौहीद, क़यामत, हुज़ूर की रिसालत किसी दलील की मोहताज नहीं उसी तरह ख़त्मे नुबूवत का मसला भी कभी ज़ेरे बहस नहीं आया और इस के सबूत के लिए किसी मुसलमान को किसी दलील या बहस व तमहीस की ज़रूरत महसूस नहीं हुई लेकिन मिर्ज़ा क़ादयानी ने वह काम कर दिखाया जिसकी जुर्रत आज तक शैतान को भी नहीं हुई थी इसलिए ज़रूरी है कि इस मसले पर शरह व बस्त से लिखा जाए ताकि हुज़ूर का उम्मती किसी ग़लत फ़हमी के बाइस अपने आक़ाए करीम से कटकर न रह जाए रहे वह लोग जो शिकम को ईमान पर तरजीह देते हैं और माल व दौलत के हुसूल की ख़ातिर अपना दीन बदलने में भी कोई क़बाहत महसूस नहीं करते बल्कि उसे कामिल होशमंदी समझते हैं ऐसे लोगों का ईलाज किसी के पास नहीं, हमें उनके लिए मलूल नहीं होना चाहिये न ऐसे इब्नुल वक़्तों की ख़ुदा को ज़रूरत है और न उसकी रसूल को। हमारा दावा बल्कि हमारा ग़ैर मुतज़लज़ल अक़ीदा और ईमान यह है।

हुज़ूर सरवरे आलम मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम सबसे आख़री नबी हैं हुज़ूर की तशरीफ़ आवरी के बाद नबुव्वत का सिलसिला ख़त्म हो गया हुज़ूर के बाद कोई नया नबी नहीं आ सकता जो शख़्स अपने नबी होने का दावा करता है और जो बद बख़्त उसके दावे को सच्चा तस्लीम करता है वह दायरए इस्लाम से ख़ारिज और मुरतद है और सज़ा का मुसतहिक़ है जो इस्लाम ने मुरतद के लिए मुक़र्रर फ़रमाई है।

इस अक़ीदा को साबित करने के लिए हम ऐसे दलाइल पेश करेंगे जो क़तई और यक़ीनी हैं और जिन में शक व शुबह की कोई गुंजाईश नहीं सबसे पहले हम कुरआन करीम से इस्तिदलाल करते हैं और इरशादे ख़ुदावंदी है।

मुहम्मद तुम्हारे मर्दों में से किसी के बाप नहीं। हां अल्लाह के रसूल हैं और नबियों के पिछले और अल्लाह सब कुछ जानता है।

इस आयते करीमा में अल्लाह ने अपने महबूबे मुकर्रम का इस्मे गिरामी लेकर फ़रमाया है कि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अल्लाह के रसूल हैं और ख़ातिमन नबीईन हैं यानी अंबियाए किराम के सिलसिले को ख़त्म करने वाले हैं जब मौलाए करीम जो सब कुछ जानता है ने यह फ़रमाया मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम नबियों को ख़त्म करने वाले आख़री नबी हैं तो हुज़ूर के बाद जिसने किसी को नबी माना उसने अल्लाह के इस इरशाद की तकज़ीब कं. और जो शख़्स अल्लाह के किसी इरशाद को झुठलाता है वह मुसलमान नहीं रह सकता।

ख़ातिमन नबीईन का जो मायने यहां किया गया है अहले लुग़त ने इसका यही मायने लिखा है इस वक़्त मेरे पास लुग़त की दूसरी कुतुब के अलावा असिसिहाह, अलजौहरी और लिसानुल अरब इब्ने मंजूर मौजूद हैं जिनका शुमार लुग़त अरब की उम्माहातुल कुतुब में होता है आइये इनके मुताला से इस लफ़्ज़ की तहक़ीक़ करें।

एक चीज़ पेशे नज़र रहे कि सहाह के मुअल्लिफ़ अल्लामा हम्माद बिन इस्माईल जौहरी का सन विलादत ३३२ हि. और साल वफ़ात ३६३ हि. या ३६८ हि. है और लिसानुल अरब के मुअल्लिफ़ अल्लामा अबुल फ़ज़्ल जमालुद्दीन मुहम्मद बिन मुकर्रम बिन मंजूर का सन विलादत ६३० हि. और साल वफ़ात ७११ हि. है। यह अर्ज़ करने का मक़सद यह है कि फ़ित्ना इंकारे ख़त्मे नबुव्वत से सदहा साल पहले यह किताबें लिखी गई हैं इनके मुताल्लिक़ यह नहीं कहा जा सकता कि उन्होंने मज़हबी तअस्सुब या ज़ाती अक़ीदा के बाइस यह लिखा है कि उनका क़ौल हुज्जत न रहे बल्कि उनकी निगारिशात और उनकी तहक़ीक़ात अहले लुग़त के अक़वाल के ऐन मुताबिक़ हैं पहले सहाह की इबारत मुलाहज़ा फ़रमाइये।

खुदा उसका ख़ात्मा बिलख़ैर करे।

यानी मैंने कुरआन आख़िर तक पढ़ लिया।

इफ़्तिताह की नक़ीज़ इख़्तेताम है।

यानी ख़ातिम बिल फ़तह ख़ातिम बिल कसर खत्ताम और ख़त्ताम सबका एक ही मायने है और किसी चीज़ के आख़िर को ख़ात्मतुश शई कहते हैं।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तमाम नबियों से आख़िर में तशरीफ़ लाये।

अल्लामा इब्न मंजूर लिसानुल अरब में लिखते हैं:

वादी के आख़री कोने को ख़त्तामुलवादी कहते हैं क़ौम के आख़री फ़र्द को ख़त्ताम ख़ातिम बिल फ़तह और ख़ातिम बिल कसर कहा जाता है इसी मुनासबत से हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को ख़ातिमुल अंबिया फ़रमाया गया है।

लिसानुल अरब में अलतहज़ीब के हवाले से लिखा है।

यानी ख़ातिम और ख़ातिमे नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अस्माए गिरामी में से हैं कुरआन मजीद में है।

यानी सब नबियों के पीछे आने वाला हुज़ूर के नामों में से अल—आक़िब भी है इसका मायने आख़िरुल अंबिया है अहले लुग़त की इन तसरीहात से हम इस नतीजे पर पहुंचते हैं कि ख़ातिम की ता पर ज़ेर हो या ज़बर इसका मायने आख़री है इस मायने की ताइद के लिए अहले लुग़त ने एक दूसरी आयत से भी इस्तिदलाल किया है।

यानी अहले जन्नत को जो मशरूब पिलाया जायेगा उसके आख़िर में उन्हें कस्तूरी की ख़ुश्बू आयेगी।

ख़त्मे नबुव्वत के मुन्क़ेरीन इस मौक़े पर यह कहते हुए सुनाई देते हैं कि ख़ातिम का जो मायने

आप ने ब्यान किया है (आख़री) वह यहां मुराद नहीं बल्कि इसका दूसरा मायने (मोहर लगाना) मुराद है और यह मायने भी इन लुग़त की किताबों में मौजूद है जिनका हवाला आपने दिया है जब एक लफ़्ज़ के दो मायने हों तो वहां एक मायने मुराद लेने पर बज़िद होना और दूसरे मायने को तर्क कर देना तहक़ीके हक़ का कोई अच्छा मुज़ाहिरा नहीं वह कहते हैं हम भी इस आयत को मानते हैं और इसके मायने अपनी तरफ़ से नहीं गढ़ते ताकि हम पर तहरीफ़े कुरआन का इल्ज़ाम लगाया जाये बल्कि लुग़ते अरब के मुताबिक़ ही इसका मफ़हूम ब्यान करते हैं किसी को हम पर एतेराज़ का हक़ नहीं पहुचंता क्योंकि सहाह और लिसानुल अरब दोनों में ख़ातिम का मायने मोहर या मोहर लगाने वाला मज़कूर है आयत का यही मायने अबलग़ और शाने रिसालत के शायान है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अंबियाए किराम पर मोहर लगाते हैं जिस पर हुज़ूर ने मोहर लगा दी वह नबुव्वत के शर्फ़ से मुशर्रफ़ होगा और जिन पर मोहर न लगाई वह नबुव्वत के मनसब पर फ़ायज़ नहीं हो सकता।

इस के मुताल्लिक़ गुज़ारिश है कि बेशक लुग़त की किताबों में ख़ातिम का मायने मोहर लगाने वाला मरकूम (लिखा हुआ) है लेकिन उन्होंने तसरीह (वज़ाहत) कर दी है कि मज़कूरा आयत में ख़ातिमन नबीईन का मायने आख़िरुन नबीईन है यहां फ़क़त यही मायने मुराद है और यह लोग अगर मुसिर (इसरार करने वाले) हों कि यहां ख़ातिम का दूसरा मायने मुराद है तो इससे भी इन्हें कोई फ़ायदा नहीं पहुंचता ऐसे मालूम होता है कि उन्होंने मुताला करते हुए ग़ौर व तदब्बुर से काम नहीं लिया उन्होंने मोहर डाकख़ाने की मोहर या किसी अफ़सर की मोहर समझी है कि लिफ़ाफ़ा कार्ड पर मुहर लगया और उसे आगे भेज दिया, या किसी की दरख़्वास्त पर अपनी मुहर सब्त कर दी और उसे मुनासिब कार्यवाई के लिये मुतल्लिक़ा दफ़्तर खाना (भेज) कर दिया। हालंकि मुहर को जो मफ़हूम अहले लुग़त ने लिया है वह क़तअन इसके ख़िलाफ़ है काश इन्हें बे जा तअस्सुब इस अम्र की इजाज़त देता कि वह अइम्मा लुग़त की इबारतों में ग़ौर करते।

आइये हम आपकी ख़िदमत में यह इबारतें पेश करते हैं ताकि आप किसी सहीह फ़ैसला पर पहुंच सकें लिसानुल अरब में है।

यानी ख़त्म का मायने मोहर लगाना है और जिस पर मोहर लगा दी जाए उसको मख़तूम और मुबालग़ा के तौर पर मख़तम कहते हैं।

इसके बाद लिखते हैं:

इस इबारत का तर्जमा ज़रा ग़ौर से पढ़िये यानी ख़त्म और तबअ का लुग़त में एक ही मायने है और वह यह कि किसी चीज़ को इस तरह ढांप देना और मज़बूती से बंद कर देना कि इसमें बाहर से किसी चीज़ के दाख़ला का इमकान ही न हो।

पहले ज़माना में ख़लीफ़ा उमरा सलातीन वग़ैरह अपने ख़ुतूत को लिखने के बाद किसी काग़ज़ के लिफ़ाफ़ा और कपड़े की थैली में रखकर सर बमुहर कर देते कि जो कुछ लिखा जा चुका है अब उसको सर बमुहर कर दिया है ताकि इस मोहर की मौजूदगी में इसमें कोई रद्दो बदल न कर दे अगर कोई रद्दो बदल करेगा तो वह पहले मोहर तोड़ेगा तो पकड़ा जायेगा इस सूरत में ख़ातिमन नबीईन का मतलब यह होगा कि पहले अंबियाए किराम की आमद का सिलसिला जारी था हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि

वसल्लम की तशरीफ़ आवरी के बाद यह सिलसिला बंद हो गया और इस पर मोहर लगा दी गई ताकि कोई कज़्ज़ाब दज्जाल इसमें दाख़िल न हो सके अगर कोई शख़्स ज़बरदस्ती इस ज़ुमरा में घुसना चाहेगा तो पहले मोहर तोड़ेगा और जब मोहर तोड़ेगा पकड़ा जायेगा और उसे जहन्नम की भड़कती हुई आग में झोंक दिया जायेगा।

कुरआन करीम के अल्फ़ाज़ का मफ़हूम समझने में अरबी ज़बान की लुग़ात से भी बड़ी मदद मिलती है लेकिन इस सिलसिले में भी क़ौले फ़ैसल और हर्फ़े आख़िर हुज़ूर की ब्यान कर्दा तशरीह होती है क्योंकि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की तालीम से इरशाद फ़रमाते हैं:

आइये अब अहादीस नबविया का बग़ौर मुताला करें और यह मालूम करने की कोशिश करें कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने ख़ातिमन नबीईन के कलिमात का क्या मफ़हूम ब्यान फ़रमाया है।

ख़ातिमन नबीईन के मायने की वज़ाहत के लिए बेशुमार अहादीस कुतबे अहादीस में मौजूद हैं सबके ज़िक्र की गुंजाईश नहीं फ़क़त चंद अहादीस यहां तहरीर की जाती हैं जिनके दिलों में हिदायत की सच्ची तलब होगी, मौला करीम अपने हबीब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के तुफ़ैल, हिदायत की राहें उनके लिए खोल देगा और उसकी तौफ़ीक़ उनकी दस्तगीरी करेगी।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया मेरी और मुझसे पहले गुज़रे हुए अंबिया की मिसाल ऐसी है जैसे कि एक शख़्स ने एक इमारत बनाई और ख़ूब हसीन व जमील बनाई मगर एक कोने में एक ईंट की जगह छूटी हुई है लोग इस इमारत के इर्द गिर्द फिरते और इसकी ख़ूबसूरती पर हैरान होते मगर साथ ही यह भी कहते कि इस जगह ईंट क्यों नहीं रखी गई? तो वह ईंट मैं हूं और मैं ख़ातिमन नबीईन हूं।

अगर आप इस हदीस में ग़ौर करें तो बलाग़ते नबवी के ऐजाज़ का आपको एतेराफ़ करना पड़ेगा जब एक इमारत मुकम्मल हो जाती है और इसमें कोई ख़ाली जगह नहीं रहती तो कोई माहिर इंजीनियर भी इसमें एक ईंट का इज़ाफ़ा नहीं कर सकता हां इसकी एक ही सूरत है कि पहले ईंटों में से एक ईंट तोड़कर वहां से निकाली जाए और फिर उस ख़ाली की हुई जगह पर कोई नई ईंट लगा दी जाये।

हुज़ूर नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की तशरीफ़ आवरी से क़सरे नबुव्वत मुकम्मल हो गया अब इसमें किसी और नबी की गुंजाईश नहीं सिवाए इसके कि साबक़ा अंबियाए किराम में से किसी नबी को वहां से निकाला जाए और मिर्ज़ा गुलाम अहमद के लिए जगह बनाई जाए क्या कोई अक़्ले सलीम इसको गवारा करेगी? क़सरे नबुव्वत की इस तोड़ फोड़ को क्या अल्लाह की ग़ैरत बर्दाश्त करेगी? हरगिज़ नहीं यह एक हदीस ही इतनी जामेअ और इतनी मायनी ख़ेज़ और इतनी बसीरत अफ़रोज़ है कि ख़त्मे नबुव्वत के लिए मज़ीद किसी दलील की ज़रूरत ही नहीं रहती इस हदीस को इमाम बुख़ारी के अलावा इमाम मुस्लिम ने किताब अलफ़ज़ाइल बाब ख़त्मुन नबीईन में और इमाम तिर्मिज़ी रहमतुल्लाह अलैहि ने किताबुल मनाक़िब और अबू दाऊद ने अपनी मुसनद में मुख़्तलिफ़ उस्ताद से नक़्ल किया है।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया मुझे छः बातों में अंबिया पर फ़ज़ीलत दी गई।

१. मुझे जवमिउल किल्म से नवाज़ा गया यानी मुख़्तसर अल्फ़ाज़ और मायने बहरे नौ पैदा किनार। २. रोब के ज़रिये मेरी मदद फ़रमाई गई। ३. मेरे लिए ग़नीमत का माल हलाल किया गया। ४. मेरे लिए सारी ज़मीन मस्जिद बना दी गई और इससे तय्यमुम की इजाज़त दी गई। ५. मुझे तमाम मख़लूक़ के लिए रसूल बनाया गया। ६. मेरी ज़ात से अंबिया का सिलसिला ख़त्म कर दिया गया।

हज़रत अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हुमा से मरवी है।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि रिसालत और नबुव्वत का सिलसिला ख़त्म हो गया और मेरे बाद कोई रसूल आये न कोई नबी।

सरवरे आलम की इस तस्रीह के बाद जिस की कोई तावील मुमकिन नहीं किसी का नबुव्वत का दावा करना और किसी का इस बातिल दावा को तस्लीम करना सरासर कुफ़्र व इलहाद है।

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया बेशक अल्लाह तआला ने कोई नबी ऐसा नहीं भेजा जिसने अपनी उम्मत को दज्जाल से न डराया हो बेशक मैं आख़री नबी हूं और तुम आख़री उम्मत हो वह ला महाला तुम में ही आयेगा।

इस हदीस से जिस तरह हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का आख़िरुल अंबिया होना साबित हो रहा है उसी तरह से हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की उम्मत का आख़िरुल उमम होना भी साबित हो रहा है।

इमाम तिर्मिज़ी ने किताबुल मनाक़िब में यह हदीस रिवायत की है।

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया अगर मेरे बाद किसी का नबी होना मुमकिन होता तो उमर बिन ख़त्ताब नबी होते।

इमाम बुख़ारी और इमाम मुस्लिम ने फ़ज़ाइले सहाबा के उनवान के नीचे ये इरशादे नबवी नक़्ल किया।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने ग़ज़वह तबूक के मौक़ा पर रवाना होते वक़्त हज़रत अली कर्रमुल्लाह वज़ह को मदीना में ठहरने का हुक्म दिया आप कुछ परेशान हुए तो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया मेरे साथ तुम्हारी वही निस्बत है जो मूसा के साथ हारून अलैहिस्सलाम की थी मगर मेरे बाद कोई नबी नहीं।

आख़िर में एक और हदीस मुलाहज़ा फ़रमाइये और इसी के ज़िक्र पर अहादीस की नक़्ल का सिलसिला ख़त्म हो जाता है।

हज़रत सौबान से मरवी है रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया मेरी उम्मत में तीस कज़्ज़ाब होंगे जिनमें से हर एक यह दावा करेगा कि वह नबी है हालांकि मैं ख़ातिमन नबीईन हूं मेरे बाद कोई नबी नहीं।

अल्लामा इब्ने कसीर मुतअद्दिद अहादीस नक़्ल करने के बाद लिखते हैं:

अल्लाह तआला ने अपनी किताब में और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सुन्नत मुतावातिरा में बताया है कि हुजूर के बाद कोई नबी नहीं ताकि सारी दुनिया जान ले कि जो शख़्स भी हुजूर के बाद नबुव्वत का दावा करेगा वह कज़्ज़ाब है झूठा है दज्जाल है गुमराह है और दूसरों को गुमराह करने वाला है। अल्लामा सैयद महमूद आलूसी रूहुलम मआनी में लिखते हैं:

यानी हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का ख़ातिमन नबीईन होना ऐसा अक़ीदा है जिसकी तसरीह कुरआन व सुन्नत ने की है जिस पर उम्मत का इजमा है पस जो शख़्स नबुव्वत का दावा करेगा वह काफ़िर हो जायेगा और अगर उसने तौबा न की और इस दावा पर मुसिर रहा तो क़त्ल किया जायेगा।

अल्लामा इब्ने हब्बान अपनी तफ़सीर में रक़मतराज़ हैं।

जिस शख़्स का यह नज़रिया हो कि नबुव्वत का सिलसिला मुनक़तअ नहीं हुआ और उसे अब भी हासिल किया जा सकता है जिसका यह अक़ीदा हो कि वली नबी से अफ़ज़ल होता है वह ज़िंदीक़ है और वाजिबुल क़त्ल है आज तक जिन लोगों ने नबुव्वत का दावा किया मुसलमानों ने उनको क़त्ल कर दिया हमारे ज़माने में भी फुक़रा में से एक शख़्स ने शहर मालेक़ा में नबुव्वत का दावा किया तो उंदलुस के बादशाह ने ग़रनाता में उसका सर क़लम कर दिया और उसकी लाश को सूली पर चढ़ा दिया वह उसी हालत में लटका रहा यहां तक कि उसका गोश्त गल कर गिर पड़ा।

इन मज़कूरा बाला इक़्तेबासात से उम्मत का ख़त्मे नबुव्वत के अक़ीदा पर इजमा साबित हो गया और हर ज़माने के उलेमा ने मुद्दईए नबुव्वत को गर्दन ज़दनी क़रार दिया आख़िर में हम ख़त्मे नबुव्वत पर अक़ली दलाइल पेश करते हैं क्योंकि कुदरत के काम हिकमत से ख़ाली नहीं होते।

ख़त्मे नबुव्वत के अक़्ली दलाइल : जब हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की नबुव्वत जुमला अक़वामे आलम के लिए और क़यामत तक के लिए है जब हुजूर पर नाज़िल शुदा किताब बग़ैर किसी मामूली सी तहरीफ़ के ज्यों की त्यों हमारे पास मौजूद है जब सरवरे आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सुन्नते मुबारका अपनी सारी तफ़सीलात के साथ इस किताब की तशरीह व तौज़ीह कर रही है जब कि शरीअते इस्लामिया रोज़े अव्वल की तरह आज भी इंसानी ज़िन्दगी के तमाम शोबों में हमारी रहनुमाई करती है जब कुरआन करीम की यह आयते मुबारका आज भी ऐलान कर रही है।

आज मैंने तुम्हारे लिए तुम्हारा दीन कामिल कर दिया और तुम पर अपनी नेमत पूरी कर दी और तुम्हारे लिए इस्लाम को दीन पसंद किया।

तो फिर किसी और नबी की बेअसत का क्या फ़ायदा है और इससे किस मक़सद की तकमील मतलूब है आफ़ताबे मुहम्मदी तुलू हो चुका है आलम का गोशा गोशा इसकी किरणों से रौशन हो रहा है तो फ़िर दिन के उजाले में किसी चिराग़ को रौशन करना क़तअन क़रीन दानिशमंदी नहीं है।

मज़ीद ग़ौर फ़रमाइये नबी की आमद कोई मामूली वाक़िया नहीं होता कि नबी आया जिसने चाहा मान लिया और जिसने चाहा इंकार कर दिया और बात ख़त्म हो गई बल्कि नबी की बेअसत के बाद कुफ़्र और इस्लाम की कसौटी नबी की ज़ात बन कर रह जाती है कोई कितना ही नेक पाकबाज़ पारसा और आलिम बा अमल हो अगर वह किसी सच्चे नबी की नबुव्वत को तस्लीम नहीं करेगा तो उसका

नाम मुसलमानों की फ़ेहरिस्त से ख़ारिज कर दिया जायेगा और कुफ़्फ़ार व मुश्रेकीन के ज़ुमरा में उसका नाम दर्ज कर दिया जायेगा और यह कोई मामूली वाक़िया नहीं।

अब ज़रा अमली दुनिया में मिर्ज़ा साहब की आमद का जायज़ा लीजिये : मुसलमानों की तादाद शुमार के मुताबिक़ पचास करोड़ से ज़ायद है (अब तक़रीबन पच्चीस फ़ीसद का इज़ाफ़ा हो चुका है) यह सब अल्लाह तआला की तौहीद पर ईमान रखते हैं कुरआन करीम को ख़ुदा का कलाम यक़ीन करते हैं तमाम अंबियाए किराम जो अल्लाह तआला की तरफ़ से मबऊस हुए उनकी नबुव्वत और सदाक़त का इक़रार करते हैं क़यामत की आमद के क़ायल हैं अमली तौर पर ग़ाफ़िल व काहिल सही लेकिन अहकामे ख़ुदावंदी और इरशादाते नबवी के बर हक़ होने पर यक़ीन रखते हैं ज़रूरयाते दीन में से हर चीज़ पर इनका ईमान है और इस उम्मत में लाखों नहीं बल्कि करोड़ों की तादाद में ऐसे बंदगाने ख़ुदा हर ज़माने में मौजूद रहे हैं जो शरीअत पर पूरी तरह कारबंद, इबादात के सख़्ती से पाबंद रहे उनके इख़्लास व लिल्लाहियत पर फ़रिश्ते रश्क करते हैं और उनके कारहाए नुमायां पर ख़ुद उनके ख़ालिक़ को नाज़ है।

इस पाक उम्मत में आकर मिर्ज़ा साहब ने नबुव्वत का दावा कर दिया इनकी आमद से पहले तो यह सारे के सारे मुसलमान थे और चलो बाज़ में हम अमली कोताहियां तस्लीम करते हैं लेकिन कम से कम नेमते ईमान से तो वह बहरवर थे अब हक़ीक़ते हाल यह है कि पचास साला कोशिशों के बावजूद चंद लाख की नफ़री ने मिर्ज़ा जी को नबी माना और बाक़ी पचास करोड़ ने इनको दज्जाल और कज़्ज़ाब क़रार दिया नबी को मानना इस्लाम है और इंकार कुफ़्र है।

मिर्ज़ा साहब ने अपना सब्ज़ क़दम जब दुनियाए इस्लाम में रखा तो यह सारी बहार आई कि सारे के सारे मुरतद क़रार पाए और इस्लाम से महरूम होकर कुफ़्र में मुब्तला हो गये सिर्फ़ गिनती के चंद आदमी मुसलमान बाक़ी रहे उनमें भी ग़ालिब अक्सरियत ब्लैक मार्केट करने वालों रिश्वत लेने वालों अक़रबा नवाज़ी और मिर्ज़ाइयत परवरी की कुर्बानगाह पर लाखों हक़दारों के हुकूक़ भेंट चढ़ाने वालों की है इनमें अक्सर बे नमाज़ दाढ़ी मुंडे और आवारा मिज़ाज लोग हैं हर क़िस्म की रज़ील हरकतें करने वालों का एक लश्कर मौजूद ठाठें मारता हुआ आपको नज़र आयेगा आप ख़ुद फ़ैसला करें कि दुनियाए इस्लाम के लिए अमली तौर पर मिर्ज़ा साहब की आमद बरकत का बाइस बनी या नहूसत का।

अल्लाह तआला की हिकमत इसको पसंद नहीं करती कि मिर्ज़ा साहब को सच्चा नबी बनाकर भेजा जाए ताकि इस्लाम के सारे हरे भरे पेड़ अपने खुन्क सायों मीठे फलों रंगीन और महकते हुए फूलों समेत उखाड़कर फेंक दिये जायें और चंद ख़ारदार झाड़ियों के झुरमुट पर गुलशने इस्लाम का बोर्ड आवेज़ां कर दिया जाये मुत्तक़ियों परहेज़गारों आलिमों और आशिक़ों पर कुफ़्र का फ़तवा लगाया दिया जाये और चंद ज़ाग़ सिफ़त तालेअ आज़मा अफ़राद को मुसलमान होने का सर्टिफ़िकेट दे दिया जाये मिर्ज़ा साहब के उम्मती बड़ी डींगें मारते हैं कि हम दुनिया के गोशे गोशे में इस्लाम पहुंचा रहे हैं हमारी कोशिशों से यूरोप में इतनी मस्जिदें तामीर हुईं इतने लोगों को हम ने कलिमा पढ़ाया।

इसके मुताल्लिक़ गुज़ारिश यह है कि ईमान शर्ते अव्वल है इसके बाद आमाल का एतेबार होता है कलिमा पढ़कर जब किसी को मिर्ज़ा की नबुव्वत का क़ायल करना है तो इसका मतलब यह है कि

उसे मुरतद बनाना है और यह काम तो हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के ज़माने के यहूदियों ने भी किया है।

और किताबयों का एक गरोह बोला जो ईमान वालों पर उतरा सुबह को उस पर ईमान लाओ और शाम को मुनकिर हो जाओ।

इससे वाज़ेह हुआ कि यहूदी भी अपने दूसरे यहूदियों को ईमान लाने और मुरतद होने की तबलीग़ करते थे यही काम मिर्ज़ा साहब और इनके साथियों ने भी किया कि ग़ैर मुस्लिमों को अपने जाल में फंसाकर बज़ाहिर कलिमा पढ़ाया और दर हक़ीक़त उन्हें मुरतद किया मिर्ज़ा को नबी मानने वाला मुसलमान कब हो सकता है।

तुम तो मिर्ज़ा साहब को इसलिए नबी कहते हो कि उन्होंने चंद काफ़िरों को कलिमा पढ़ाया हम औलियाए किराम के ज़ुमरा से आपको ऐसे ऐसे मुबल्लिग़ दिखाते हैं जिन्होंने हज़ारों लाखों कुफ़्फ़ार को कुफ़्र की ज़ुल्मतों से निकालकर हिदायत की शाहराह पर गामज़न कर दिया ख़्वाजा ख़्वाजगान सुल्तानुल हिंद मोइनुल हक़ वद्दीन अजमेरी ने लाखों मुश्रिकों के जुन्नार तोड़े और उनकी पेशानियों को बारगाहे इलाही में शर्फ़ सजूद बख़्शा।

हज़रत दाता गंज बख़्श हिजवेरी ने इस कुफ़्रस्तान में रावी के किनारे पर तौहीद का जो परचम गाड़ा था आज भी लहरा रहा है और लाखों ख़फ़ता बख़्तों को ख़्वाबे ग़फ़लत से जगा रहा है मशाइख़े चिश्त और दीगर औलिया किराम ने इस्लाम की जो तबलीग़ की और फ़रिश्ता सिफ़त मुरीद बनाये उनके मुक़ाबले में सारी उम्मते मिज़ोईया की तबलीग़ी कोशिशों की निसबत समुंद्र और क़तरा की भी नहीं इन कारहाए नुमायां के बावजूद इन हज़रात ने नबुव्वत का दावा किया न महदियत का न मसीहियत का न बरूज़ी का बल्कि अपने आपको गुलामाने मुस्तफ़ा ही कहा और इसी को अपने लिए बाइस सद इफ़्तेख़ार और मोजिब सआदत समझा।

मिरज़ा क़ायदानी को अपनी नबुव्वत तक पहंचने के लिए बड़ा दूर का चक्कर काटना पड़ा, आख़िर कार आपकी कमंदे फ़िक्र यहां आकर रुकी कि यह तो अहादीस से साबित है कि ईसा बिन मरयम आयेंगे। मैं क्यों न अपने आपको मसीहे मौऊद कहना शुरू कर दूं ताकि मुझे लोग मसीह मान लें लेकिन इसमें मुश्किल यह पेश आई कि हज़रत मसीह तो ज़िन्दा हैं। उनकी ज़िन्दगी में मैं मसीह कैसे बन सकता हूं ख़्याल आया कि पहले मसीह को मुर्दा साबित करो जब वह मुर्दा क़रार पा गये तो फिर मेरे लिए मैदान साफ़ हो जायेगा चुनांचे उन्होंने अपना सारा ज़ोर वफ़ाते मसीह साबित करने पर लगा दिया।

बेशक रहमते आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने यह इरशाद फ़रमाया कि क़यामत से पहले हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम आसमान से नुजूल फ़रमायेंगे जिन अहादीस में नुज़ूले मसीह के मुताल्लिक़ तश्रीह की गई है वह इस कसरत से मरवी हैं कि मानवी तौर पर वह दर्जा तवातुर को पहुंची हुई हैं। आइये आप भी इन अहादीस की झलक मुलाहज़ा कीजिये आपको पता चल जायेगा कि नबी बरहक़ ने कोई मुबहम पेश गोई नहीं की ऐसे मसीह की आमद की इत्तेला नहीं दी जिसकी पहचान न हो सके और जिस शातिर का जी चाहे वह आने वाला मसीह बन बैठे बल्कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपनी उम्मत को उसका नाम बताया उसकी वालदा का नाम बताया उसके लक़ब से

ख़बरदार किया उस वक़्त और मक़ाम की निशानदेही की जिस वक़्त और जिस मक़ाम पर वह नुज़ूल फ़रमायेगा जो कारहाए नुमायां वह अंजाम देगा उसकी तफ़सील ब्यान फ़रमा दी और उसके मदफ़न का भी तअय्युन फ़रमा दिया और उसका हुलिया भी ब्यान फ़रमा दिया।

अब अगर वह अहादीस सहीह हैं जिनमें हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की आमद की ख़बर दी गई है तो उन तफ़सीलात को भी मिन व अन सहीह और सच तस्लीम करना पड़ेगा जो उनके मुताल्लिक़ बताई गई हैं और अगर कोई शख़्स इन तफ़सीलात को मानने से इंकार कर दे तो फिर उसे इन तमाम अहादीस को भी साक़ितुल एतेबार क़रार देना पड़ेगा जिन में उनकी आमद की पेश गोई की गई है तहक़ीक़ और इंसाफ़ का यह कैसा मैयार है कि एक रिवायत की मुफ़ीद मतलब आधी बात तो मान ली और उसी रियावत की दीगर तफ़सीलात को नज़र अंदाज़ कर दिया।

इन कसीरुल तादाद अहादीस में चंद अहादीस जिन में हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के नुज़ूल का ज़िक्र है इमाम बुख़ारी ने यह अल्फ़ाज़ नक़्ल किये हैं।

उस वक़्त तक क़यामत बरपा न होगी जब तक ईसा बिन मरयम का नुज़ूल न हो।

मिशकातुल मसाबीह में हज़रत अबू हुरैरा से मंक़ूल है।

हुज़ूर ने ख़ुरूजे दज्जाल के बाद ज़िक्र फ़रमाया इस असना में कि मुसलमान उससे लड़ने की तैयारी कर रहे होंगे, सफ़ें दुरुस्त कर रहे होंगे और नमाज़ के लिए इक़ामत कही जा चुकी होगी कि हज़रत ईसा बिन मरयम नाज़िल होंगे और मुसलमानों की इमामत करेंगे और दुश्मने ख़ुदा दज्जाल उनको देखेगा तो पिघलने लगेगा जैसे नमक पानी में पिघलता है अगर आप इसी को अपनी हालत पर ही छोड़ देंगे तो वह अज़ ख़ुद पिघल कर मर जाये, मगर अल्लाह तआला उसको इनके हाथ से क़त्ल करायेगा और आप अपने नेज़े में इसका ख़ून लगा हुआ लोगों को दिखायेंगे।

यह उतरने के बाद दूसरी नमाज़ पढ़ाने का ज़िक्र है क्योंकि उतरते ही पहली नमाज़ आप न पढ़ायेंगे बल्कि वह इमाम मेहदी पढ़ायेंगे जैसे कि दूसरी रिवायत में वज़ाहत मौजूद है।

हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि मैंने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को यह फ़रमाते हुए सुना ईसा अलैहिस्सलाम उतरेंगे मुसलमानों का अमीर उनसे अर्ज़ करेगा कि हुज़ूर तशरीफ़ लाइये और इमामत फ़रमाइये तो आप फ़रमायेंगे नहीं तुम में से बाज़ दूसरों के अमीर हैं यह उनकी तरफ़ से इस उम्मत की तकरीम के तौर पर है। (इस हदीस की वज़ाहत पहले ज़िक्र की जा चुकी है।)

हज़रत अबू हुरैरा से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि मेरे और इन (ईसा अलैहिस्सलाम) के दर्मियान कोई नबी नहीं है और यह कि वह उतरने वाले हैं यानी जब तुम उनको देखो तो पहचान लेना उनका क़द दर्मियाना उनकी रंगत सुर्ख़ व सफ़ेद व ज़र्द रंग के कपड़े पहने होंगे उनके सर के बाल ऐसे होंगे गोया उनसे अब पानी टपकने वाला है। हालांकि वह भीगे हुए न होंगे वह इस्लाम पर लोगों से जंग करेंगे सलीब को टुकड़े टुकड़े कर देंगे ख़नाज़ीर को मार डालेंगे जिज़्या ख़त्म कर देंगे और अल्लाह तआला उनके ज़माने में इस्लाम के बग़ैर तमाम मिल्लतों को ख़त्म

कर देगा और वह मसीह दज्जाल को क़त्ल कर देंगे और वह ज़मीन में चालीस साल क़याम फ़रमायेंगे और फिर वह वफ़ात पा जायेंगे और मुसलमान उनकी नमाज़े जनाज़ा पढ़ायेंगे।

हज़रत नवास बिन समआन ने दज्जाल का क़िस्सा ब्यान करते हुए फ़रमाया इस असना में अल्लाह तआला मसीह बिन मरयम को भेज देगा और वह दमिश्क़ के मश्रिक़ी हिस्सा सफ़ेद मीनार के पास ज़र्द रंग के दो कपड़े पहने हुए दो फ़रिश्तों के परों पर अपने हाथ रखे हुए उतरेंगे जब वह सर झुकायेंगे तो यूं महसूस होगा कि क़तरे टपक रहे हैं और जब सर उठायेंगे तो मोतियों की तरह क़तरे ढलकते नज़र आयेंगे उनके सांस की हवा जिस काफ़िर तक पहुंचेगी वह उनकी हद्दे नज़र तक जायेगी और वह ज़िन्दा न बचेगा फिर इब्ने मरयम दज्जाल का पीछा करेंगे और (मक़ामे लुद) के दरवाज़े पर उसे जा कपड़ेंगे और क़त्ल कर देंगे।

आख़िर में एक और हदीस मुलाहज़ा फ़रमाइये।

आपने इन हदीस का मुताला फ़रमा लिया इनमें मसीहे मौऊद का हुलिया, नाम, वालदा का नाम मक़ाम और वक़्ते नुज़ूल आपके कारहाए नुमायां सब के सब मज़कूर हैं ख़ुदा की शान मुलाहज़ा हो कि यह शख़्स जो मसीहे मौऊद होने का दावा करता है इसका नाम भी ईसा नहीं हांलाकि हज़ारों मुसलमान इस नाम के मौजूद हैं इसकी वालदा का नाम भी मरयम नहीं हालांकि हज़ारों मुसलमान औरतें इस नाम की अब भी हैं और ख़ुद क़ादयान में इस नाम की कई लड़कियां होंगी। सलीब को तोड़ना, ख़िंज़ीर को क़त्ल करके ईसाईयत को नेस्त व नाबूद करना तो कुजा मियां जी सारी उम्र ईसाई हुकूमत के झोली चक बने रहे और उसकी ख़ैरात पर पलते रहे और उसकी इस्लाम कुश सरगर्मियों पर तारीफ़ व तौसीफ़ के क़सीदे लिखते रहे। सारी दुनिया को दारे इस्लाम बनाकर जिज़्या ख़त्म करना तो बड़ी दूर की बात ख़ुदाए मुस्तफ़ा जल्लो अला, सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने यह भी पसंद न फ़रमाया कि क़ादयान का ख़ित्ता पाकिस्तान का हिस्सा बने अब भी जो लोग इन्हें मसीहे मौऊद मानते हैं उनकी नादानी क़ाबिले अफ़सोस है।

अल्लाह तआला जिसने अपने महबूब को अपना रसूल बनाया और फिर उसकी ज़ाते पाक पर नबुव्वत का सिलसिला ख़त्म कर दिया वह हर चीज़ को अच्छी तरह जानता है दुनिया के हालात हज़ारों पलटे खायें मआशी और सियासी मैदानों में कितने ही इंक़लाब क्यों न बरपा हों हर कौम के लिए हर ज़माने में फ़लाहे दारैन का रास्ता दिखाने के लिए अब किसी दूसरे नबी की ज़रूरत नहीं यूं नहीं कि सिलसिला नबविया बंद करने का फ़ैसला किसी ऐसी हस्ती ने किया हो जो आने वाले हालात से बेख़बर है मुख़्तलिफ़ क़ौमों और मुल्कों की ज़रूरतों से नावाकिफ़ है बल्कि यह फ़ैसला उस ज़ाते वाला सिफ़ात का है जो कायनात की हर चीज़ से वाकिफ़ है और उन तमाम उमूर से भी बाख़बर है जिन पर आम इंसानियत की फ़लाह व बक़ा का इंहेसार है इसलिए उसके फ़ैसले अटल हैं वह मंसूख़ नहीं हो सकते इनमें किसी क़िस्म की क़तअन कोई गुजांईश नहीं ।

इस मसले पर मज़ीद तहक़ीक़ हासिल करनी हो तो हज़रत पीर मेहर अली शाह की किताब का मुताला करें इंशाअल्लाह तआला सकून हासिल होगा और बर्कत भी हासिल होगी।

हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के मुताल्लिक़ बातिल नज़रियात : एक फ़िरक़ा ने आपको रब का जुज़ माना उन्होंने दलील यह पेश की कि रब तआला ने फ़रमाया।

ईसा अलैहिस्सलाम उसकी रूह हैं।

इससे पता चला कि आप उस का जुज़ और हिस्सा हैं क्योंकि मिन्हु का मायने ही यह है कि उसका बाज़ हिस्सा हैं यह नज़रया बातिल है आपको रूह कहने की वजह यह है।

आपको रूह इसलिए कहा गया है कि हज़रत जिब्राईल अलैहिस्सलाम की फूंक से आप पैदा हुए जो अल्लाह तआला के हुक्म से जिब्राईल ने हज़रत मरयम के गिरेबान में फूंका था।

चूंकि अरबी में रूह बमायने फूंकना के भी आता है जैसे ज़ुलरमा ने आग को फूंकें मारकर भड़काने के मुताल्लिक़ कहा अपनी फूंक से आग भड़काओ।

वाज़ेह हुआ कि रब तआला के हुक्म से नफ़ख़े जिब्राईल का वुक़ूअ हुआ सइलिए रब तआला ने अपनी तरफ़ मंसूब कर दिया।

बाज़ नसरानियों की ग़लती की वजह यह है कि उन्होंने मन तबईज़ियह माना है हालांकि यह उनकी ग़लती है।

इस मक़ाम पर मन इब्तेदा ग़ायत के लिये मजाज़ी तौर पर इस्तेमाल हुआ है तबईज़ियह नहीं जैसे नसारा ने गुमान किया है।

हारून अलरशीद के ज़माने में तबीब नसरानी जो अपने मज़हब का बहुत बड़ा आलिम था उससे अली बिन हुसैन वाक़दी मरूज़ी का मुनाज़िरा हुआ ईसाई ने कहा तुम्हारी किताब (क़ुरआन पाक) में ऐसे अल्फ़ाज़ मौजूद हैं जो हमारे मज़हब की ताईद करते हैं कि ईसा अलैहिस्सलाम अल्लाह तआला का जुज़ हैं उसने बतौर दलील यह अल्फ़ाज़ तिलावत किये।

व रूहि मिन्हु कि यहां लफ़्ज़ मिन्हु इस्तेमाल है जो बअज़ियत पर दलालत करता है।

वाक़दी ने जवाब दिया कि यहां मन इब्तेदा ग़ायत के लिए इस्तेमाल है और रब की तरफ़ निस्बत तशरीफ़ी है वरना अल्लाह तआला के इस इरशाद गिरामी में तमाम चीज़ों का अल्लाह तआला का जुज़ बनना लाज़िम आयेगा हालांकि इसके तुम भी क़ायल नहीं आपके इस जवाब पर नसरानी ला जवाब हो गया और उसने इस्लाम क़बूल कर लिया। हारून रशीद बहुत ख़ुश हुआ उसने अल्लामा वाक़दी को बहुत ज़्यादा इनाम से नवाज़ा।

फ़ायदा : हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम को रूह कहने की और भी वजहें हैं रूह बमायने रहमत है इरशादे बारी तआला है।

रब तआला ने इन को अपनी रहमत से तक़वियत पहुंचाई रूह ब मायने वही भी आता है यानी हज़रत मरयम को इल्हाम के ज़रिये बशारत दी।

जब कोई चीज़ बहुत ज़्यादा पाक साफ़ सुथरी हो तो उसे रूह कह दिया जाता है चूंकि ईसा अलैहिस्सलाम की विलादत बग़ैर नुल्फ़ा के नफ़ख़े रूह से हुई इसलिए आपको रूह से ताबीर कर दिया गया।

रूह का मायने राज़ और निशानी भी आता है जैसे कहा जाता है।

इस मसले का राज़ इस तरह है ईसा अलैहिस्सलाम भी अल्लाह तआला के राज़ों में से एक राज़ और अल्लाह तआला की निशानियों में से एक निशानी हैं इसलिए आपको रूहुल्लाह कहा गया है।

"रूहि मिन्हु" में रूह की निस्बत अल्लाह तआला की तरफ़ तशरीफ़ी है जिस तरह तौरात में मूसा अलैहिस्सलाम के मुताल्लिक़ कहा गया है।

अल्लाह तआला का मर्द आपके असा का रब तआला की तरफ़ मंसूब करते हुए कहा गया है. क़ज़ीबुल्लाह, अल्लाह तआला की टेहनी और शेलम को कहा गया है।

अल्लाह तआला का घर इन तमाम अल्फ़ाज़ में इज़ाफ़त तशरीफ़ पाई गई है।

तसलीस के कायलीनः नसारा तसलीस के क़ायल हैं रब तआला ने इरशाद फ़रमायाः

यह न कहो कि तीन ख़ुदा हैं।

बाज़ मुहक़्क़ेक़ीन ने कहा कि नसारा का इस पर इत्तेफ़ाक़ है कि अल्लाह तआला जौहर है यानी क़ायम बज़ातिही है किसी चीज़ का मोहताज नहीं किसी जेहत से ख़ास नहीं उसका कुछ अंदाज़ा नहीं लगाया जा सकता है और वह हवादिस को वजातिही क़बूल नहीं करता इस पर हदूस व अदम मुतसव्विर नहीं वह जौहरियत के लिहाज़ पर एक है और अक़नूमीयत के लिहाज़ पर तीन हैं। वह तीन अक़नूम मानते हैं।

अक़नूम अब, अक़नूम इब्न, अक़नूम रूहुल कुदस।

पहले अक़नूम अब से मुराद ज़ात या वजूद लेते हैं दूसरे अक़नूम इब्ने से मुराद इल्म यानी कलिमा है और तीसरे अक़नूम रूहुल क़दस से मुराद हयात लेते हैं।

अक़नूम क्या है?

अक़नूम का मायने शख़्स और असल है।

मलकानिया फ़िरक़ा का क़ौल : मलकानिया यह कहते हैं कि तीनों जौहर क़दीम का ग़ैर हैं और हर एक इनमें से इलाह है वह अक़नूम जिसका नाम कलिमा या इल्म है वह मसीह के जिस्म से मुत्तहिद है और इस अक़नूम ने मसीह के नासूत का लिबास पहन लिया है और उससे ऐसे मिल गया जैसे पानी शराब से मिल जाता है और कसरत वहदत से बदल गई, यानी मसीह जो इंसान हुए थे और बहैसियत इंसान होने के कसरत पाई जाती लेकिन जब अक़नूम इल्म से इख़्तिलात हुआ तो वहदत उतर गयी। मसीह का नासूत कुल्ली है जुज़ई नहीं, वह क़दीम अज़ली मरयम ने इलाह को जना। इसमें इख़्तेलाफ़ है कि मरयम इंसाने कुल्ली है या जुज़ई है इस बात पर इत्तेफ़ाक़ है कि लाहूत का इत्तेहाद मसीह से है मरयम से नहीं।

क़त्ल और सूली का ताल्लुक़ मसीह के नासूत और लाहूत दोनों से है इस फ़िरक़ा ने अब का इतलाक़ अल्लाह तआला पर और इब्न का हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम पर किया है।

नसतूर हकीम का क़ौल : नसतूर हकीम मामून के ज़माने में हुआ यह कहता है कि अल्लाह तआला

एक है लेकिन अक़ानीम सलासा (तीनों अक़्नूम) इसका ऐन भी नहीं और ग़ैर भी नहीं। अक़्नूम इल्म कलिमा का मसीह के जिस्म से इत्तेहाद नहीं और न ही ऐसा इम्तेज़ाज है जैसा कि पानी शराब से इम्तेज़ाज होता है बल्कि इसको अशराक़ी हालत हासिल है जिस तरह रौशनदान से सूरज की किरणें किसी शीशे पर पड़ें तो उनका अक्स इसमें आ जाता है ऐसे ही अल्लाह तआला की तजल्लियात ने मसीह को सिफ़ाते उलूहियत से मुत्तसिफ़ कर दिया।

बाज़ नसतूरिया का क़ौल : कुछ नसतूरिया फ़िरक़ा से इस तरह हैं कि तीनों अक़्नूमों से हर एक अल्लाह तआला की इन तीन सिफ़ात से मुत्तसिफ़ है (ज़िंदा) है नातिक़ है (सिफ़ते इदराक व कलाम जो उसकी शान के लायक़ है) मौजूद है इस फ़िरक़ा में बाज़ ने और सिफ़ात क़ुदरत इरादा वग़ैरह भी साबित की हैं लेकिन उन्होंने इन सिफ़ात को मुस्तक़िल अक़्नूम नहीं तस्लीम किया।

नसतूरिया में से एक और फ़िरक़ा : एक फ़िरक़ा का क़ौल यह है कि इब्न हमेशा अब (बाप) से मुतवल्लिद होता है जब बेटा यानी मसीह का तवल्लुद (पैदाईश) हुआ तो वह जिस्मानी लिहाज़ से इंसान हुआ और सिफ़ते उलूहियत और सिफ़ते वहदानियत भी इसे हासिल है यानी इसे दो हैसियतें हासिल हैं एक नासूती और दूसरी लाहूती।

नासूती लिहाज़ पर वह हादिस है और लाहूती लिहाज़ पर वह ख़ुदाए कामिल है एक ज़ात को मुख़्तलिफ़ दो हैसियतों से हादिस और क़दीम मानने से क़दीम के क़दम और हादिस के हदूस में कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता इन लोगों के क़ौल के मुताबिक़ सूली का ताल्लुक़ नासूती हालत से है लाहूती से नहीं ख़्याल रहे कि सिफ़ते उलूहियत को लाहूती और सिफ़ते इंसानियत को नासूती से ताबीर किया गया है।

याकूबिया फ़िरक़ा : याकूबिया फ़िरक़ा से कुछ लोग यह कहते हैं कि अक़्नूम जिसे कलिमा या इब्न कहा गया है उसने गोश्त और ख़ून की शक्ल इख़्तेयार कर ली और ख़ुदा मसीह की शक्ल में ज़ाहिर हुआ इनके नज़दीक बेशक अल्लाह तआला मसीह बिन मरयम ही है।

याकूबिया में बाज़ ने कहा : जौहरे इलाह क़दीम है और जौहरे इंसान हादिस है इनमें ऐसा इम्तिज़ाज पाया गया है जैसे नफ़्से नातिक़ा का बदन से। वह दोनों मिलकर एक चीज़ बन गये वह मसीह भी है और वही ख़ुदा भी। इस मज़हब वाले कहते हैं ख़ुदा इंसान बन सकता है लेकिन इंसान ख़ुदा नहीं बन सकता जैसे कोयला आग में डाला जाये तो वह आग बन जाता है लेकिन आग कोयला नहीं बनती। इनके नज़दीक लाहूत का इंसान से इत्तेहाद जुज़ई है कुल्ली नहीं बेशक मरयम ने ख़ुदा को जना और क़त्ल और सूली लाहूत और नासूत दोनों पर वाक़ेय हुए हैं अगर एक पर उनका वक़ूअ होता तो इत्तेहाद बातिल हो जाता हालांकि दोनों मिलकर एक जौहर बन चुके हैं।

बाज़ और ने कहा : याकूबिया से ही बाज़ इसके क़ायल हैं कि जिस तरह फ़रिश्ता इंसानी शक्ल में आता है उसी तरह ख़ुदा मसीह की शक्ल में नमूदार हुआ।

इनमें से कुछ और ने कहा : मसीह अपने जौहर से मुत्तहिद है एक लिहाज़ पर क़दीम है और एक लिहाज़ से हादिस है।

कुछ दूसरे हज़रात ने कहा : इस याकूबिया फ़िरक़ा से कुछ हज़रात ने कहा अक़्नूम कलिमा मरयम

से कुछ हासिल नहीं किया बल्कि वह मरयम के शिकम से ऐसे ही गुज़र कर आ गया जैसे परनाला पानी से गुज़र आता है।

बाज़ ने यूं कहा : इसी फ़िरक़ा से कुछ हज़रात यह कहते हैं कि अक़नूम कलिमा मसीह के जिस्म में दाख़िल हो गया वह निशानियां जो पहले अक़नूम कलिमा से ज़ाहिर होती थीं अब वह मसीह के जिस्म से ज़ाहिर होने लगीं लेकिन कभी कभी वह अक़नूम जिस्म से जुदा भी हो जाता है इसलिए इस पर आफ़ात व आलाम का नुजूल भी होता है।

अल्लाह तआला ने बातिल फ़िरक़ों का रद्द फ़रमाया : और यहूदी बोले उज़ैर अल्लाह तआला का बेटा है और नसरानी बोले मसीह अल्लाह तआला का बेटा है। यह बातें वह अपने मुंह से बकते हैं अगले काफ़िरों की तरह बात बनाते हैं अल्लाह तआला इन्हें बर्बाद करे कहां औंधे जाते हैं।

इस आयते करीमा में अल्लाह तआला ने ईसा अलैहिस्सलाम को अल्लाह तआला का बेटा कहने वालों का रद्द किया और फ़रमाया कि उज़ैर अलैहिस्सलाम और ईसा अलैहिस्सलाम को अल्लाह तआला का बेटा कहने वाले अपने मुहों से मन घड़त बातें बना बनाकर बकते हैं।

मनघड़त कहावतें बनाना पहले काफ़िरों का वतीरा चला आ रहा है यह भी उनकी तरह ही हैं ख़ुदा उनको बर्बाद करे यह किधर भटके जा रहे हैं उनको सीधी राह नज़र क्यों नहीं आती?

बेशक काफ़िर हैं वह जो कहते हैं कि अल्लाह तआला वही मसीह मरयम का बेटा है और मसीह ने तो यह कहा था कि ऐ बनी इस्राईल अल्लाह तआला की बंदगी करो जो मेरा रब और तुम्हारा रब है बेशक अल्लाह तआला का शरीक ठहराये तो अल्लाह तआला ने उस पर जन्नत हराम कर दी और उसका ठिकाना दौज़ख़ है और ज़ालिमों का कोई मददगार नहीं।

इस आयते करीमा में वाज़ेह तौर पर रब ने फ़रमाया कि ईसा अलैहिस्सलाम को अल्लाह तआला का बेटा कहने वाले काफ़िर हैं और यह इतने बे समझ लोग हैं कि इन्हें यह समझ नहीं आ रहा है कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम ख़ुद बनी इस्राईल को यह तबलीग़ फ़रमा रहे हैं कि तुम अल्लाह तआला की इबादत करो वही ज़ात एक है उसका कोई शरीक नहीं वही मेरा भी रब है और वही तुम्हारा भी रब है अगर तुम ने मुझे अल्लाह तआला का शरीक माना तो यह याद रखो कि तुम पर अल्लाह तआला जन्नत हराम कर देगा और तुम्हारा ठिकाना जहन्नम होगा और तुम इस शिर्क की वजह से ज़ालिम हो जाओगे और यह तुम्हारा अपनी जानों पर ज़ुल्म करना तुम्हें रब तआला की मदद से दूर कर देगा क्योंकि तमाम मुश्रिकों के लिए रब तआला का यही वादा है।

बेशक वह काफ़िर हैं जो कहते हैं कि अल्लाह तीन ख़ुदाओं में से तीसरा है और ख़ुदा तो नहीं मगर एक ख़ुदा और अगर अपनी बात से बाज़ न आए तो जो इनमें काफ़िर मरेंगे उनको ज़रूर दर्दनाक अज़ाब पहुंचेगा।

इस आयते करीमा में तीन ख़ुदा मानने वालों को रब तआला ने काफ़िर क़रार दिया और यह फ़रमाया कि ख़ुदा तो एक है यह तीन कैसे मान रहे हैं अगर यह तीन ख़ुदाओं की रट लगाते ही रहे और बाज़ न आए तो इनको इनके सरीह कुफ़्र की वजह से दर्दनाक अज़ाब दिया जायेगा।

ऐ किताब वालो! अपने दीन में ज़्यादती न करो और अल्लाह तआला पर न कहो मगर सच मसीह ईसा मरयम का बेटा अल्लाह तआला का रसूल ही है और उसका एक कलिमा कि मरयम की तरफ़ भेजा और उसकी तरफ़ से एक रूह है तो अल्लाह तआला और उसके रसूल पर ईमान लाओ और तीन खुदा न कहो, बाज़ रहो तीन मानने से अपने भले को चाहो अल्लाह तआला तो एक ही खुदा है वह औलाद से पाक ज़ात है सब आसमानों और ज़मीन की चीज़ें उसी की मिल्कियत हैं और अल्लाह तआला काफ़ी कारसाज़ है।

इस आयते करीमा में अहले किताब के अक़ीदा को गुलू (हद से मुताजाविज़) कहा गया है और इन्हें मुतनब्बेह किया गया है कि अल्लाह तआला की तरफ़ हक़ के बग़ैर कोई चीज़ मंसूब न करो।

बेशक मसीह ईसा बिन मरयम फ़क़त अल्लाह तआला के रसूल हैं और उसका कलिमा हैं जो हज़रत मरयम की तरफ़ उसने इलक़ा किया है और उसकी तरफ़ से एक रूह हैं।

अल्लाह तआला की वहदानियत को तस्लीम करो उसका कोई शरीक नहीं और उसके रसूलों पर ईमान लाओ यानी इन्हें अल्लाह तआला की मख़लूक़ समझो इनको खुदा न मान बैठो।

तीन खुदाओं के क़ायल न बनो तीन खुदा मानने के अक़ीदे से बाज़ आ जाओ अपनी भलाई को चाहो वह भलाई इसी में है कि ईसा अलैहिस्सलाम को अल्लाह तआला का बंदा और उसका रसूल कहो खुदा न कहो और खुदा का बेटा भी तस्लीम न करो और खुदा का शरीक भी न ठहराओ। माबूद सिर्फ़ अल्लाह तआला की ज़ात पाक है और कोई माबूद नहीं उसकी औलाद न मानो वह तो औलाद से पाक है। ज़मीन व आसमान की तमाम चीज़ें उसकी मिल्कियत हैं कोई ममलूक मालिक की औलाद नहीं होती और यह ईमान रखो कि अल्लाह तआला ही बेहतर कारसाज़ है।

हरगिज़ आर न समझेगा मसीह अलैहिस्सलाम कि वह बंदा हो अल्लाह तआला का और न ही मुक़र्रब फ़रिश्ते इसको आर समझेंगे और जिसे आर हो उसकी ज़िन्दगी से और वह तकब्बुर करे तो अल्लाह तआला जल्द ही जमा करेगा इन सबको अपने हां।

यानी जब ईसा अलैहिस्सलाम और फ़रिश्ते खुद अल्लाह तआला की इबादत को बाइस इफ़्तेख़ार और अल्लाह तआला के तक़र्रुब का ज़रिया समझते हैं जब वह खुद अल्लाह तआला की इबादत करने और अपने आपको उसका बंदा कहलाने में आर नहीं समझते तो इन लोगों की अक़्लों पर क्यों पर्दे छा गये हैं ज़ो ईसा अलैहिस्सलाम को खुदा या खुदा का बेटा या खुदा का शरीक मान रहे हैं और वह लोग भी कितने अक़्ल के अंधे है जो फ़रिश्तों को अल्लाह तआला की बेटियां कहते हैं।

अल्लाह तआला की इबादत से आर महसूस करने वाले और तकब्बुर करने वाले मैदाने महशर को याद रखें कि सब को रब तआला को अपने हां जमा करना है।

तो वह जो ईमान लाए और अच्छे काम किये उनको इनका अज्र पूरा पूरा देगा और अपने फ़ज़्ल से इन्हें और ज़्यादा देगा और वह जिन्होंने नफ़रत और तकब्बुर किया उन्हें दर्दनाक अज़ाब देगा और अल्लाह तआला के सिवा न अपना कोई हिमायती पायेंगे और न मददगार।

यानी अल्लाह तआला और उसके रसूल पर ईमान लाना उनके इरशादात को तस्लीम करना और

रब तआला की इबादत करना और अच्छे आमाल ही अच्छे अज्र के हुसूल का ज़रिया हैं और अल्लाह तआला अपने फ़ज़्ल से ज़्यादा से ज़्यादा रहमतों से उनको ही नवाज़ता है लेकिन अल्लाह तआला की इबादत से नफ़रत करना और आर महसूस करना तकब्बुर करना शदीद और दर्दनाक अज़ाब के हासिल होने के ज़राये हैं।

ऐसे लोगों की शिफ़ाअत अंबियाए किराम शोहदाए किराम औलिया सुल्हा भी नहीं करेंगे तो दूसरा कौन इनकी हिमायत करेगा और कैसे इनकी इमदाद का हक़ हासिल होगा।

तो क्यों नहीं रुजू करते अल्लाह तआला की तरफ़ और उससे बख़्शिश मांगते और अल्लाह तआला बख़्शने वाला मेहरबान है मसीह बिन मरयम नहीं मगर एक रसूल इससे पहले रसूल हो गुज़रे और इसकी मां सिद्दीक़ा है दोनों खाना खाते हैं देखो तो हम कैसे साफ़ निशानियां इनके लिए ब्यान करते हैं फिर वह देखो कैसे औंधे जाते हैं।

यानी वह लोग जो दीन में गुलू से काम ले रहे हैं ईसा अलैहिस्सलाम को अल्लाह तआला का बंदा और उसका रसूल नहीं तस्लीम करते उन्हें चाहिये कि दुनिया की ज़िन्दगी में ही तौबा करें और उससे बख़्शिश तलब कर लें तो उनके लिए बेहतर होगा अल्लाह तआला गफ़ूरुर्रहीम है वरना उख़रवी दर्दनाक अज़ाब में मुब्तला होंगे ईसा अलैहिस्सलाम तो फ़क़त अल्लाह तआला के रसूल हैं आपसे पहले भी तो अल्लाह तआला के रसूल हो गुज़रे हैं फिर भी यह लोग अक़्ल से काम नहीं ले रहे कि आपको अल्लाह तआला का बंदा और उसका रसूल क्यों तस्लीम नहीं कर रहे हालांकि आप की मां अल्लाह तआला के हर हुक्म की तसदीक़ करने वाली है फिर लुत्फ़ की बात यह है कि यह लोग देख भी रहे हैं कि ईसा अलैहिस्सलाम और उनकी मां खाना खाने के मोहताज, हादिस भी कभी ख़ुदा बन सकते हैं नहीं नहीं वह कभी ख़ुदा नहीं बन सकते।

सर सैय्यद अहमद ख़ां का बातिल नज़रिया

मुफ़स्सिरे कुरआन मुफ़क्किरे इस्लाम हज़रत पीर मुहम्मद करम शाह साहब मद्दे ज़िल्लहुल आली फ़रमाते हैं कुरआन करीम की जिन आयात में विलादते मसीह का मुफ़स्सल तज़किरा हुआ उनका आपने मुताला फ़रमा लिया आइये अब उन लोगों के मौकिफ़ का इल्मी मुहासबा करें जो इन तसरीहात के बावजूद इसके क़ायल हैं कि हज़रत मसीह की पैदाईश बग़ैर मां–बाप के नहीं हुई बल्कि वह मरयम और यूसुफ़ नजार के लड़के हैं। इस तायफ़ा के सरखील सर सैयद अहमद खां हैं जिस शरह व बस्त से उन्होंने इस पर बहस की है और अपनी तरफ़ से दलाइल के जो अंबार लगाये हैं वह (बदबख़्ती और नहूसत, इस्लाम से बग़ावत) उन ही का हिस्सा हैं बाक़ी सब उनके पैरोकार और रीज़ा चैन हैं इसलिए बेहतर है कि उन्हीं की निगारिशात को मौज़ू बसह बनाया जाये और उन्हीं की तहक़ीक़ात को कुरआन की कसौटी पर परखा जाये। वह लिखते हैं कि :

मसीह को बिन बाप पैदा करने में कोई हिकमत होनी चाहिये क्योंकि ऐसा करने की कोई माकूल हिकमत नहीं इसलिए हम यह मानने के लिए तैयार नहीं कि आपकी पैदाईश के लिए बिला वजह क़ानूने फ़ितरत को तोड़ा गया अगर कोई शख़्स यह कहे कि इसमें हिकमत यह थी कि अल्लाह तआला की कुदरते कामिला का इज़हार हो तो यह दुरुस्त नहीं क्योंकि इज़हारे कुदरत के लिए ऐसी दलील होनी चाहिये जो बैय्यन और ज़ाहिर हो, ताकि किसी को मजाले इंकार न रहे और बग़ैर बाप के पैदा होना अम्रे मख़्फ़ी है।

हम गुज़ारिश करते हैं कि इसकी हिकमत तलाश करने के लिए ज़्यादा मग्ज़मारी की ज़रूरत नहीं कुरआन करीम ने खुद ही इसे ब्यान कर दिया।

कि हम उसको अपनी कुदरते कामिला की निशानी के तौर पर लोगों के सामने पेश करें अब यह बताना है कि यह वाक़िया किस एतेबार से लोगों के लिए आयत है? जिस ज़माने में हज़रत मसीह की विलादत हुई उस वक़्त शाम व फिलिस्तीन के इलाक़ों पर यूनानियों का क़ब्ज़ा था और इस सियासी इक़्तेदार के साथ साथ वहां यूनानी फ़लसफ़ा का तूती बोल रहा था।

तख़लीक़े आलम के मुताल्लिक़ यूनानी फ़लसफ़ियों का नज़रिया था कि ख़ालिक़ से तख़लीक़े आलम का फ़ेअल यूं सादिर हुआ है जिस तरह इल्लत से मालूल का सदूर होता है यानी जिस तरह इल्लत से इख़्तेयार और इरादा के बग़ैर मालूल सादिर होता है उसी तरह ख़ालिक़ से आलम की तख़लीक़ ज़हूर पज़ीर हुई ईसा अलैहिस्सलाम को बग़ैर बाप के पैदा करके बता दिया कि वह ज़ाते पाक जो ख़ालिक़े कायनात और मम्बअे अर्ज़ व समावात है उसी का अपना इरादा है और उसकी अपनी मशीयत है वह ज़ाते बारी अस्बाब का पाबंद नहीं और न उनके सामने मजबूर व मक़हूर है बल्कि वह क़ादिर व तवाना है जो चाहता है वक़ूअ पज़ीर होता रहता है।

नीज़ वह लोग आलमे अरवाह के क़ायल न थे वह इंसान को जिस्म और रूह का मजमूआ तस्लीम नहीं करते बल्कि उनके नज़दीक इंसान सिर्फ़ उसी गोश्त पोश्त के ढांचें का नाम था यहां इंसानी नुत्फ़ा के बग़ैर नफ़ख़े रूह से आपको पैदा करके मुन्केरीने आलम अरवाह पर इस बात को आशकारा कर दिया कि रूह भी एक हक़ीक़त है और इंसान जिस्म और रूह के मजमूआ का नाम है।

इसके बाद वह लिखते हैं:

क्योंकि आपकी पैदाईश की बशारत दी गई थी इसलिए लोगों ने समझा कि आप बिन बाप के पैदा हुए और यह बात दुरुस्त नहीं क्योंकि इब्राहीम अलैहिस्सलाम और हज़रत ज़क्रिया अलैहिमस्सलाम को भी खुशख़बरी दी गई थी और उनके फ़रज़ंदों को कोई बिन बाप नहीं कहता इसलिए हज़रत मसीह की विलादत बिन बाप साबित न हुई।

सुबहानल्लाह! क्या इस्तिदलाल है सिर्फ़ बशारत से कौन उनका बिन बाप होना तस्लीम करता है बल्कि कुरआन की दूसरी आयत इस पर दलालत करती है (जिनका ज़िक्र पहले किया जा चुका है।)

फिर जनाब और इरशाद फ़रमाते हैं कि मरयम के कहने से भी यह बात साबित नहीं होती क्योंकि मरयम ने इज़हारे ताज्जुब इसलिए किया था कि उनको ग़लत फ़हमी हुई थी कि बच्चा अब ही पैदा होने वाला है हालांकि फ़क़त बच्चे की पैदाईश की बशारत थी और उसकी पैदाईश तो उनकी शादी के बाद होनी थी।

आप खुद इंसाफ़ फ़रमायें अगर मक़सूद यही था जो इन लोगों ने समझा है तो मरयम को तसल्ली देने के लिए इतना बता देना काफ़ी था मरयम घबराओ नहीं। बच्चा पैदा होगा जब तुम शादी कर लोगी। इस सीधे जवाब को छोड़कर यह जवाब देना क़तअन मुनासिब नहीं बल्कि क़वायदे फ़साहत व बलाग़त के ख़िलाफ़ है।

फिर फ़रमाते हैं आपका आयत लिन्नास होना इस एतेबार से था कि आप बड़े रहम दिल और रक़ीकुल क़ल्ब थे इसका यह मतलब नहीं कि आप बिन बाप पैदा हुए क्योंकि निशानी ऐसी होनी चाहिये जो वाज़ेह हो और जिस का इंकार न किया जा सके यह तो एक अम्र मख़्फ़ी है इस पर बीसियों शुबहात वारिद किये जा सकते हैं।

उनका यह ख़्याल भी दुरुस्त नहीं बल्कि मसीह का बिन बाप पैदा होना कुदरते ख़ुदावंदी की रौशन दलील है क्योंकि कुंवारी लड़की के हां बच्चा पैदा होने की इसके अलावा एक ही सूरत है कि वह बदकार हो हज़रत मसीह के कलाम से जब आपकी इफ़्फ़त व पाक दामनी साबित हो गई और हर सहीहुल फ़ितरत शख़्स को यक़ीन हो गया कि ऐसा नूरानी और सरापा यमन व बर्कत बच्चा ज़ानिया के शिकम से पैदा नहीं हो सकता बिला शुबह यह अल्लाह तआला की कुदरत का शाहकार है बाक़ी रहे बद फ़ितरत लोग तो उनके नज़दीक कायनात की कोई चीज़ भी अल्लाह तआला की वहदानियत और किब्रियाई की दलील नहीं।

ज़मीन व आसमान दरिया व सहरा चांद व सितारे किसी चीज़ में भी उन कोर बातिनों को कुदरते इलाही के जलवे नज़र नहीं आते तो क्या आप उनकी आयाते बैय्यनात को भी अम्रे मख़्फ़ी कहकर उन पर क़लमे तनसीख़ फेर देंगें

अपने मौक़िफ़ को साबित करने के लिए उन्होंने "कै फ़ नुकल्लिमु मन का न फ़िल मह्दे सबीया" से भी इस्तिदलाल किया है और इस आयत की अजीब व ग़रीब तशरीह करके अक़्ले सलीम को वरतए हैरत में डाल दिया है।

वह लिखते हैं कि यह कलाम हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम ने शीर ख़्वारगी में नहीं किया था बल्कि जब आपकी उम्र बारह तेहर साल की हो गई और आप यहूदी उलेमा की मजलिसों में शरीक होकर

उनसे बहस व मुबाहसा करने लगे और उनको उनकी कजरवियों पर मुतनब्बेह करने लगे तो उलेमाए यहूद एहतेजाज करने के लिए उनकी मां के पास आये और उनकी बद अक़ीदगी की शिकायत की।

मरयम अपने लाडले बच्चे की तरफ़ से ख़ुद सफ़ाई देने की बजाए उसको गोद में उठा लाई और उसकी तरफ़ इशारा करके कहा कि ख़ुद इसी से बात कर लो उन्होंने जवाब दिया।

हम इस शख़्स से बात कैसे कर सकते हैं जो आलमे शीर ख़्वारगी के पिंघोड़े में झूल रहा था।

आपने इनका तर्जमा मुलाहज़ा फ़रमाया क्या कहने इस फ़हमे कुरआन के। अगर आयत का यही मफ़हूम है तो फिर इन्हें किसी ऐसे गुलाम से गुफ़्तगू नहीं करनी चाहिये जिसे बचपन में गहवारे में लिटाया गया हो उन मुद्दइयाने इल्म व दानिश को कुरआन का ऐसा मफ़हूम ब्यान करते हुए ग़ज़बे इलाही का अंदेशा न सही क्या इन्हें जग हंसाई की भी फ़िक्र नहीं? नीज़ वह नौ ख़ेज़ जिसने महफ़िले आम में इन बड़े बड़े उलेमा का नातिक़ा बंद कर दिया और उन्हें बरसरे आम जवाब दिया उसके मुताल्लिक़ यह तो कहते हैं कि यह बड़ा तेज़ ज़बान और शोख़ मिज़ाज होगा इससे गुफ़्तगू करने का कोई फ़ायदा नहीं क्योंकि यह वह कहने की जुर्रत नहीं कर सकते कि यह कल का बच्चा है और अर्सा तक झूले में झूलता रहा है इससे बात करना हमारी शान के ख़िलाफ़ है।

अगर यह मान लिया जाए तो इससे लाज़िम आयेगा कि सर सैयद अहमद खां की कोई बात भी तस्लीम न की जाये वह भी तो कल तक झूले में झूलते रहे हैं क्योंकि वह यह तो साबित नहीं कर सकते कि अपने ज़अम में बड़े आलिम बनकर इस दुनिया में तशरीफ़ लाए इन्हें शिकमे मादर में रहने और फिर मां का मोहताज होने और झूले में झूलने की ज़रूरत ही नहीं हुई सुबहानल्लाह लोगों की नज़र में बड़ा मुहक़्क़िक़े कुरआन से कितना दूर और अक़्ल से कितना ख़ाली है कि जिसने यह भी न समझा कि कैसी दलील दे रहा हूं नीज़ यह भी ख़्याल रहे कि ईसा अलैहिस्सलाम को सबसे पहले यूसुफ़ नजार की तरफ़ यहूद ने मंसूब किया।

यहूद ने आपकी वालदा को यूसुफ़ नजार से मुत्तहिम किया।

यहूद और सर सैयद अहमद ख़ां में फ़र्क़ सिर्फ़ इतना है कि यहूद ने हज़रत मरयम को मआज़ल्लाह ज़ानिया क़रार दिया और सर सैयद ने मुसलमानों के ग़ैज़ व ग़ज़ब से बचने के लिए यूसुफ़ नजार की मनकूहा क़रार दिया असल नज़रिया दोनों का एक है।

सर सैयद अहमद ख़ां के इस्लाम के ख़िलाफ़ और नज़रियात किसी को मालूम करने हों तो तफ़सीर हक़्क़ानी के मुक़द्दमा का मुताला करे नीज़ वह यह कहते हैं।

कि न मरयम पर ज़िना की तोहमत लगाई गई और न हज़रत मसीह ने इस तोहमत की तरदीद की, अगर मरयम पर यह तोहमत लगाई जाती और मसीह को इसकी तरदीद मक़सूद होती तो यह न कहते।

इन्नी अब्दल्लाह बल्कि यह कहते कि मेरी मां बदकार नहीं तुम महज़ इफ़तरा बांध रहे हो इसके मुताल्लिक़ कुछ कहने की ज़रूरत महसूस नहीं की बल्कि सूरत मरयम आयत नं. २७ और २८ का तर्जमा देखें।

इसके बाद वह ले आई बच्चा को अपनी क़ौम के पास गोद में उठाए हुए उन्होंने कहा ऐ मरयम तुम ने बहुत बुरा काम किया है। ऐ हारून की बहन न तेरा बाप बुरा आदमी थी और न तेरी मां बद चलन थी।

यह तर्जमा देखने के बाद अपने दिल से पूछें क्या यह मोहताजे ज़िना नहीं और हज़रत मसीह का यह फ़रमाना इब्नी अब्दल्लाह। इससे बढ़कर भी इस इल्ज़ाम की तरदीद की कोई मुअस्सिर और अग़लब सूरत हो सकती है इलाही अपने महबूब मुकर्रम साहबे कुरआन सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के तुफ़ैल हमें अपनी किताबे मुबीन की सही समझ अता फ़रमा। आमीन सुम्मा आमीन।

ईसाईयों का मन घड़त अक़ीदा: अक़ीदए तसलीस की हक़ीक़त क्या है? ईसाईयों ने इसे कब और क्यों इख़्तेयार किया? क्या हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के किसी क़ौल से इसकी ताईद होती है? क्या पहली तीन इंजीलों में यह अक़ीदा मौजूद है? जब तक इन सवालात का तहक़ीक़ी जवाब न दिया जाये न हम कुरआन हकीम की इन आयात (जिन में तसलीस, इबनीयत, उलूहियते ईसा का रद्द किया गया) को पूरी तरह समझ सकते हैं और न अला वजहिल बसीरत अक़ाइद के मुताल्लिक़ गुफ़्तगू कर सकते हैं आइये निहायत सब्र व सकून के साथ और मतानत व संजीदगी के साथ इन उमूर की तहक़ीक़ करें।

इस वक़्त मेरे पेश नज़र बाईबिल के अलावा इंसाइकलोपिडिया ब्रिटैनिका (मतबूआ १९६२) है जो दुनिया भर के फ़ुज़ला और मुहक़्क़ेक़ीन की काविशों का मजमूआ है और जिसे तमाम हल्क़ों में मुस्तनद तरीन किताब तसलीम किया जाता है मसीहियत के मुताल्लिक़ मैंने इस में ईसाई उलेमा के मज़ामीन का मुताला किया है इनके मुताला से मैं जिन नताइज पर पहुंचा हूं वह हदियए नाज़रीन हैं।

मसीहियत (Christianity) के मौजू पर जार्ज विलियम नॉक्स (G.W. Knox) और सिडनी हर बर्ट मैलोन (S.H. Mellone) ने मिलकर जो मुहक़्क़ेक़ाना मक़ाला लिखा है इसमें वह रक़म तराज़ हैं।

मसीह ने ख़ुद भी यह दावा नहीं किया कि इन की असल कोई माफ़ूक़ुल फ़ितरत चीज़ है बल्कि वह इस पर मुतमईन थे कि इन्हें मरयम और जोज़फ़ के बेटे की हैसियत से पहचाना जाये।

इस ख़्याल का ताईद में उन्होंने मरक़स की इंजील बाब शशुम की आयात ३,४ का हवाला दिया है।

क्या वह बढ़ई नहीं जो मरयम का बेटा और याकूब और यूसिस और यहूदा और शमऊन का भाई है? और क्या इसकी बहनें यहां हमारे हां नहीं? पास उन्होंने इसके सबब ठोकर खाई यसूअ ने, इनसे कहा नबी अपने वतन और अपने रिश्तेदारों और अपने घर के सिवा और कहीं बे इज्ज़त नहीं होता।

यूहाना की यह आयत भी ज़ेरे नज़र रहे।

फिर इन दोनों के बाद वहां से रवाना होकर गलील को गया क्योंकि यसूअ ने ख़ुद गवाही दी कि नबी अपने वतन में इज्ज़त नहीं पाता।

लूका की यह आयत भी तवज्जोह तलब है।

मगर मुझे आज और कल परसों अपनी राह पर चलना ज़रूर है क्योंकि मुमकिन नहीं कि नबी यूरोशलम से बाहर हलाक हो।

अनाजील की इन आयात और साबिक़ा तसरीह से यह अम्र वाज़ेह हो गया कि हज़रत ईसा ने हमेशा अपने आप को मरयम का बेटा कहलवाया और अपने नबी होने का बार बार ऐलान किया और कभी भी अपने आप को ख़ुदा या ख़ुदा का बेटा नहीं कहा अब हक़ीक़त यह है तो फिर तसलीस (तीन ख़ुदा) और इबनियत (ख़ुदा का बेटा होना) का नज़रिया इस दीन में क्योंकर घुस आया इसके मुताल्लिक़ भी मज़कूरा बाला फ़ाज़िलों की यह इबारत मुलाहज़ा फ़रमाइये।

बाप बेटा और रूहुल क़ुद्स की इस्तेलाहात को यहूदी ज़राये ने मुहय्या किया यसूअ ने शाज़ व नादिर ही आख़री इस्तिलाह इस्तेमाल की है, सीनट पाल के मुताल्लिक़ यह वाज़ेह नहीं कि उसने इसे इस्तेमाल की है, सेन्ट पाल के मुतल्लिक़ यह वाज़ेह नहीं कि उसने इस्तेमाल किया तसलीस का मवाद यहूदी है जिसे यूनानी फ़लसफ़ा के असर व रसूख़ ने इस क़ालिब में ढाला है।

दीने मसीह की तारीख़ का मुताला करते वक़्त जो चीज़ बड़ी अजीब व ग़रीब और अनोखी है वह यह है कि इस दीन के बुनियादी अक़ाइद वह नहीं जो इस दीन के बानी हज़रत मसीह ने बताये हैं या जो इंजीलों में मज़कूर हैं बल्कि इसके बुनियादी अक़ाइद वह हैं जो पादरियों की कोन्सिलें मुख़्तलिफ़ हालात में मुक़र्रर करती रही हैं और यह कौंसिले इस अम्र की मजाज़ हैं कि हज़रत मसीह पर ईमान रखने वाले अगर उनके मंजूर कर्दा अक़ायद से इनहेराफ़ करें तो वह उन्हें मुरतद क़रार देकर इस दीन से ख़ारिज कर दें इनकी कोंसिलों की दास्तान बड़ी अजीब और दिलचस्प है।

मुझे अब आप से यह अर्ज़ करना है कि जब तसलीस का कोई सुराग़ हमें यसूअ मसीह के कलाम में नहीं मिलता और इंजीलों की आयात भी मसीह की इबनीयत (ख़ुदा का बेटा होना) की बजाए उनकी नबुव्वत साबित कर रही हैं तो फिर यह मुशरिकाना नज़रिया कैसे और कब नमूदार हुआ इसके मुताल्लिक़ भी इंसाइक्लोपिडिया के हवाले से हक़ीक़ते हाल पेश करता हूं।

कुस्तुनतीन के तख़्त नशीन होने से पहले ईसाईयों पर तरह तरह के मज़ालिम किये जाते थे और हुकूमते रोम की निगाहों में भी यह मातूब थे लेकिन यह मज़हब आहिस्ता आहिस्ता फैलता रहा और तक़वियत पकड़ता रहा कुस्तुनतीन जब रोमन एम्पायर का फ़रमांरवा बना तो उसने ३१३ हि. में मीलान के फ़रमाने शाही के ज़रिये मज़हबी आज़ादी का ऐलान किया अपने सियासी अग़राज़ की वजह से ईसाईयों पर इनायात खुसरवाना की बारिश शुरू कर दी ताकि उनकी कसीर आबादी की हमदर्दियां और वफ़ादारियां हासिल करके अपनी हुकूमत को मुस्तहकम करे और ३३७ हि. में जब वह बिस्तरे मर्ग पर दम तोड़ रहा था तो उसने ईसाई मज़हब क़बूल किया और उसे बिपतिस्मा दिया गया।

यह तो उनके सियासी हालात थे लेकिन इससे पहले तीन सदियों में उनके अक़ाइद में क्या क्या तबदीलियां रुनुमा हो चुकी थीं और कुस्तुनतीन की सरपरस्ती में उनमें क्या क़तअ व बरीद की गई इसके मुताल्लिक़ तारीख़े कलीसा (History of Church) के उनवान पर चार मसीही फ़ुज़ला ने जो लिखा है उसका इक़्तेबास पेशे ख़िदमत है।

तीसरी सदी के ख़त्म होने से पहले यसूअ को कलामे इलाही का मुजस्समा तस्लीम किया गया था लेकिन उसकी उलूहियत का आम तौर पर इंकार किया जाता था इसी असना में ईरीस के तनाज़ा ने चौथी सदी के कलीसा को जिस इज़्तेराब व हैरत में मुब्तला कर दिया था उसने लोगों की तरफ़ तवज्जोह को इस मसले की तरफ़ मबजूल किया नीकिया (Nicaea) की कोंसिल जो ३२३ हि. में मुनअक़िद हुई उसमें सरकारी तौर पर यसूअ की उलूहियत को तस्लीम कर लिया गया था जिसे बाज़ाब्ता तौर पर मुरत्तिब करने के (Necene creed) बाद का नाम दिया गया तनाज़ा कुछ अर्सा तक जारी रहा लेकिन आख़िरकार मश्रिक़ व मग़्रिब के ईसाईयों ने इस अक़ीदे को सहीह मसीही अक़ीदा मान लिया बेटे की उलूहियत के साथ रूहुल क़ुद्स की उलूहियत को भी तस्लीम कर ली गई।

नीक़िया के अक़ीदे की फ़तह ने तसलीस को ईसाई मज़हब के अक़ाइद का जुज़्व ला यनफ़क (न

जुदा होने वाला हिस्सा) बना दिया बेटे की उलूहियत की मज़हर यसूअ को क़रार दे देने से एक नई पेचीदगी पैदा हो गई जो चौथी सदी और इसके बाद अर्सा तक झगड़े की वजह बनी रही वह यह कि यसूअ में उलूहियत और इंसानियत का बाहमी ताल्लुक़ क्या है? कालसीडन (Chalcedon) की कोंसिल जो ४१५ हि. में मुनअक़िद हुई उसमें यह क़रार पाया कि मसीह की ज़ात में उलूहियत और इंसानियत दोनों यकसां तौर पर मुजतमेअ हैं और बाहमी इम्तेज़ाज के बावजूद दोनों की खुसूसियात ज्यूं की त्यूं क़ायम हैं कुसतुनतुनिया की तीसरी कोंसिल जो ६८० हि. में मुनअक़िद हुई उसमें इस पर मज़ीद इज़ाफ़ा किया गया कि इन दो माहयतों की अलग अलग मर्ज़ी और मशीयत है मसीह दोनों मशीयतों का मालिक है।

मग़रिबी कलीसा ने नीक़िया और कालसीडन और कुसतुनतुनिया के फ़ैसलों को क़बूल कर लिया और इस तरह तसलीस और मसीह के अंदर दो मशीयतों (खुदाई और इंसानी) के वजूद के नज़रियात को मश्रिक़ व मग़रिब के कलिसाओं ने बहैसियत पुख़्ता और सहीह अक़ीदा मान लिया।

इस तवील इक़्तेबास से यह हक़ीक़त रोज़े रौशन की तरह वाज़ेह हो गई कि तसलीस व इबनीयत के अक़ाइद ख़ुदा और उसके नबी के बताए हुए अक़ाइद नहीं हैं बल्कि सैंकड़ों साल बाद इनेक़ाद पज़ीर होने वाली कोंसिलों ने इन्हें गढ़ा और ईसाईयों के लिए उन पर ईमान लाना ज़रूरी क़रार दिया कुरआन करीम ने बारहा उलेमाए अहले किताब के मुताल्लिक़ जो यह ऐलान फ़रमाया कि अपनी तरफ़ से बातें गढ़ते हैं और फिर उसे खुदा की तरफ़ और उसके पैग़म्बरों की तरफ़ मंसूब कर देते हैं इसका इतना वाज़ेह सबूत उनकी अपनी तारीख़ ने फ़राहम कर दिया।

लेकिन यह बहस तिशनए तकमील रहेगी अगर यह न बताया जाये कि नीक़िया की कौंसिल में मसीह की उलूहियत का जो इफ़तरा बांधा गया उसके मुहर्रिकात क्या थे? और क्या इसे कौंसिल में शिर्कत करने वाले सारे बिशप (पादरी) इस अक़ीदे को दिल व जान से तस्लीम करते थे या नहीं?

यह बात समझने के लिए इसके पस मंज़र का समझना लाज़िमी है कुस्तुनतीन की हिमायत व सरपरस्ती में ईसाईयत को अमन व सकून नसीब हुआ तो उनमें नज़रियाती ख़ाना जंगी शुरू हो गई जिसके बाइस उनकी वहदत पारा पारा हो गई और उनकी सियासी कुव्वत ज़वाल पज़ीर होने लगी इस तरह कुस्तुनतीन ने जिस ख़्याल से उसकी हिमायत शुरू की थी वह ख़्वाबे परेशान होने लगा चुनांचे दाख़ली इन्तेशार को दूर करने के लिए उसने नीक़िया में तमाम ईसाई उलेमा की कौंसिल तलब की जिसके इजलास २० मई से २५ जुलाई ३२३ हि. तक जारी रहे सब से अहम मसला जो ज़ेरे बहस आया वह यह था कि यसूअ का ताल्लुक़ खुदा से किस नौइयत का है?

यह भी याद रहे कि इस कौंसिल का दाई भी कुस्तुनतीन था इसके जुमला मसारिफ़ भी उसने अपनी गिरह से अदा किये और इसके कई इजलासों में शिर्कत भी की और इसके फ़ैसलों को अपने शाही इख़्तेयारात से नाफ़िज़ किया और जिसने मानने से इंकार किया उसको सज़ाये दीं।

इस कौंसिल के इनेक़ाद के मुहर्रिकात और पस मंज़र को समझ लेने के बाद मसीह की उलूहियत के मुताल्लिक़ जो क़रारदाद पास की गई अब उसके मुताल्लिक़ मसीही फ़ाज़िलों की आरा सुनिये।

यह दुरुस्त है कि कसरते आरा से नीक़िया की कौंसिल में इस्कंदरिया के अक़ीदे को मंज़ूर किया गया लेकिन यह इत्तेफ़ाक़े क़ल्बी यक़ीन व ईमान से रू पज़ीर नहीं हुआ था बल्कि इसकी एक वजह तो यह थी कि शिर्कत करने वाले पादरियों की अक्सरियत ग़ैर जानिब दार थी उन्हें इससे कोई दिलचस्पी

नहीं थी दूसरी वजह शाही इख़्तेयारात और उनका दबाव था इसके सबूत के लिए हमारे पास तारीख़ी शहादत मौजूद है वह यह कि आइरस (Arius) के ख़िलाफ़ यह फ़ैसला पूरे ग़ौर व फ़िक्र के बाद कामिल ईमान व यक़ीन से किया गया होता तो इस अक़ीदा के हक़ में राए देने वाले आइरस से कभी नर्म बर्ताव न करते लेकिन ऐसा नहीं हुआ यह हक़ीक़त है कि अक़ीदा फ़क़त उन लोगों की तरफ़ मुसल्लत किया गया था जो इसी कौंसिल के बानी थे (यानी कुस्तुनतीनी और उसके आयाने हुकूमत) इन हालात में हम यह नतीजा अख़्ज़ करने पर मजबूर हैं कि यह कसरत आरा क़तअन इस बात का मैयार नहीं कि मसीह की उलूहियत का जो अक़ीदा इस कौंसिल में मंजूर हुआ उसमें कौंसिल के अरकान का क़ल्बी यक़ीन भी कारफ़रमा था।

फ़ाज़िल मक़ाला निगार मंदरजा ज़ैल अलफ़ाज़ के साथ नीक़िया की कौंसिल के मुताल्लिक़ अपनी निगारिशात का इख़्तेताम करता है।

इस मसनूई और बनावटी इत्तेहाद से जो अक़ीदा गढ़ा गया था वह अमन बरक़रार रखने की अहलियत नहीं रखता था बल्कि उसने ऐसे झगड़ों की राह हमवार कर दी जिनके बाइस ममलिकत की बुनियादें लरज़ गईं नीक़िया के इस अक़ीदा के ऐलान के बाद लोगों ने उस पर संजीदगी से ग़ौर करना शुरू कर दिया और यह अक़ीदए कलीसा ने फ़िक्र व तदब्बुर के बग़ैर अपने ऊपर मुसल्लत कर लिया था इसकी तशरीह व तौज़ीह करते वक़्त कलीसा को ऐसी मज़हबी बहसों में उलझना पड़ा जिनका रास्ता बड़ा दुश्वार और पुरख़ार था।

इन तारीख़ी हक़ाइक़ को मद्दे नज़र रखते हुए अब इन आयात (जिनका ज़िक्र पहले किया जा चुका है) को ग़ौर से पढ़ो आफ़ताबे हक़्क़ानियत की ताबानियां आपकी चश्म ख़िरद को रौशन कर देंगे और अल्लाह तआला ने इसी सूरः मायदा की आयत ४८ में कुरआन को साबक़ा आसमानी कुतुब के निगहबान का जो लक़ब अता फ़रमाया है इसकी सदाक़त आशकार हो जायेगी ख़ुदारा बताइये क्या इस दीन को दीने इलाही कहना बजा है जिसके बुनियादी अक़ाइद चंद आदमियों ने सियासी दबाव और सियासी अग़राज़ की ख़ातिर सदहा साल बाद ख़ुद वाज़ेह किये हों और इनमें अपने पैग़म्बर के इरशादात से वाज़ेह इनहेराफ़ किया गया हो मसीहियत को इसकी अपनी तारीख़ के आईना में आपने देख लिया इसके बाद किसी मज़ीद तब्सरा की गुंजाईश नहीं।

रब तआला के इस्तिफ़सार पर ईसा अलैहिस्सलाम का जवाब : और जब अल्लाह तआला फ़रमायेगा ऐ मरयम के बेटे ईसा क्या तूने लोगों से कह दिया था कि मुझे और मेरी मां को दो ख़ुदा बना लो अल्लाह तआला के सिवा अर्ज़ करेगा पाकी है तुझे मुझे जायज़ नहीं कि वह बात कहूं जिसका मुझे हक़ नहीं पहुंचता अगर मैंने ऐसा कहा हो तो ज़रूर तुझे मालूम होगा तू ख़ूब जानता है जो मेरे नफ़्स में है और मैं नहीं जानता जो तेरे इल्म में है बेशक तू ही है सब ग़ैबों का ख़ूब जानने वाला।

मैंने तो इनसे न कहा मगर वही जो तूने मुझे हुक्म दिया था कि अल्लाह तआला की इबादत करो जो मेरा भी रब है और तुम्हारा भी रब है और मैं इन पर मुत्तला था जब तक मैं इनमें रहा फिर जब तूने मुझे उठा लिया तो तू ही इन पर निगाह रखता था और हर चीज़ तेरे सामने हाज़िर है।

अगर तू इन्हें अज़ाब दे तो वह तेरे बंदे हैं और अगर तू इन्हें बख़्श दे तो तू ही है ग़ालिब हिकमत वाला। क़यामत के दिन अल्लाह तआला ईसा अलैहिस्सलाम से यह सवाल फ़रमायेगा और आप यह

जवाब देंगे इस सवाल व जवाब का मक़सद कुफ़्फ़ार को ख़ामोश कराना उनको ज़ज्र व तौबीख़ करना होगा कि तुम ईसा अलैहिस्सलाम को कैसे ख़ुदा मानते रहे जब यह ख़ुद अपने अब्द (बंदा) होने का इक़रार करते रहे और तुम्हें यह हुक्म देते रहे कि अल्लाह तआला एक है उसका कोई शरीक नहीं सिर्फ़ उसी की इबादत करो।

अगरचे एक एहतेमाल यह भी पेश किया गया है कि यह सवाल आपसे दुनिया में था जब आपने तीनों सवालों के जवाब दुरुस्त दे दिये यानी आपने अपनी उलूहियत की नफ़ी की वालदा की उलूहियत की नफ़ी की अल्लाह तआला की वहदानियत और उलूहियत का इक़रार किया तो इन तीनों सवालों के दुरुस्त जवाब देने पर आपने तीन रकआत नमाज़ बतौर शुक्र अदा की चूंकि यह सवाल व जवाब मग़्रिब के वक़्त थे इसलिए उसके बाद मग़्रिब की तीन रकअत शुरू हैं ताहम यह क़ौल कोई ख़ास मोतबर नहीं क्योंकि इन आयात के बाद आने वाली अयात से यही समझ में आ रहा है कि यह सवाल व जवाब क़यामत के दिन होंगे।

एतेराज़ : ईसाईयों की आम तारीख़ से यह नहीं मिलता कि उन्होंने हज़रत मरयम को भी ख़ुदा तस्लीम किया हो तो इस सवाल का क्या मक़सद हो सकता है कि ईसा बिन मरयम क्या तूने लोगों से कहा था कि मुझे और मेरी मां को दो ख़ुदा मान लो अल्लाह तआला के सिवा।

जवाब : अगरचे ईसाईयों के मशहूर मज़ाहिब वही हैं जिन का पहले ज़िक्र किया जा चुका है लेकिन इनके बहुत से मज़ाहिब थे उनमें यक़ीनन एक फ़िरक़ा वह भी होगा जो हज़रत मरयम और हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम दोनों को ख़ुदा मानता होगा।

यह क़वी एहतेमाल है कि इनमें एक फ़िरक़ा ऐसा भी था जो इसका क़ायल था नीज़ अबू जाफ़र ने बाज़ नसारा से क़ौल ज़िक्र किया है कि जो इसकी ताईद करता है कि पहले ईसाईयों में एक गरोह था।

जिनको मरयमिया कहा जाता था उनका अक़ीदा यह था कि मरयम भी ख़ुदा हैं यह फ़िरक़ा ऐसा ही था जिस तरह यहूद कहते थे।

बेशक उज़ैर अल्लाह का बेटा है और ख़ुदा भी है। अल्लामा आलूसी ने इसके कई और जवाब भी दिये हैं लेकिन इसी जवाब के मुताल्लिक़ यह कहा है जवाब की तमाम वजहों से मेरे नज़दीक यही वजह बेहतर है और हक़ भी यही है क्योंकि अल्लाह तआला ने जब ज़िक्र फ़रमाया है तो कैसे मुमकिन है कि इनमें ऐसा कोई मज़हब न हो।

बाज़ हज़रात ने ब्यान किया है कि नसारा हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम और उनकी वालदा को दो मुस्तक़िल ख़ुदा समझते हैं क्योंकि उनका अक़ीदा यह था कि जो मोजिज़ात ईसा अलैहिस्सलाम और उनकी मां के हाथों सरज़द हुए हैं वह अल्लाह तआला ने न पैदा किये और न ही उसने अता किये हैं बल्कि उन दोनों ने ख़ुद ही पैदा किये हैं।

हज़रत मरयम का ख़ुदा होना ज़्यादा मशहूर इसलिए न हो सका कि बाज़ चीज़ों में तो इनको मुस्तक़िल ख़ुदा मानते थे और बाज़ में इन्हें मुस्तक़िल ख़ुदा नहीं मानते थे बल्कि उनका यही अक़ीदा ईसा अलैहिस्सलाम के मुताल्लिक़ था लेकिन आप उलूहियत में ज़्यादा मशहूर हुए क्योंकि तसलीस और इबनीयत उलूहियत का अक़ीदा रखने वाले बहुत से गरोह थे लेकिन हज़रत मरयम को ख़ुदा मानने

वाला सिर्फ़ एक गरोह था जिन्होंने अपने अक़ीदा को हज़रत मरयम की तरफ़ ही मंसूब किया हुआ था इस वजह से वह अपने आप को मरिमिया कहलाते थे।

सही यही है कि नसारा ने बाज़ चीज़ों में तो दोनों यानी ईसा अलैहिस्सलाम और उनकी वालदा को मुस्तक़िल खुदा माना और बाज़ चीज़ों में उन्होंने हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम को भी मुस्तक़िल खुदा नहीं माना।

फ़ायदा : आला हज़रत रहमतुल्लाह अलैहि ने तर्जमा किया है तू जानता है जो मेरे जी में है और मैं नहीं जानता जो तेरे इल्म में है।

यानी लफ़्ज़ नफ़्स की निस्बत जब ईसा अलैहिस्सलाम की तरफ़ है तो इसका मायने किया है मेरे जी में और जब अल्लाह तआला की तरफ़ निस्बत किया है तो मायने क्या है जो तेरे इल्म में है।

इसलिए कि इसमें उलेमा व मुहक़्क़ेक़ीन के कई अक़वाल हैं कि नफ़्स का मायने ज़ात लेकर अल्लाह तआला की तरफ़ मंसूब हो सकता है या नहीं इसी तरह लफ़्ज़ फ़ी ज़िक्र हो तो मायने होगा कि तू जानता है जो मेरे नफ़्स (जी) दिल में मुनक़्क़श हैं लेकिन मैं नहीं जानता कि जो तेरे जी में मुनक़्क़श हैं यह मायने अल्लाह तआला की तरफ़ मंसूब करना सही नहीं बाज़ हज़रात ने इसकी तौजीह में यही ब्यान किया है।

ईसा अलैहिस्सलाम की मुराद यह है कि ऐ अल्लाह मैं तेरी मालूमात को नहीं जानता यानी मैं नहीं जानता जो तेरे इल्म में है अलबत्ता मफ़हूम को अदा करने के लिए ज़िक्र कर दिया गया है।

ईसा अलैहिस्सलाम के मुताल्लिक़ सहीह अक़ीदा : ईसा अलैहिस्सलाम का मक़ाम क्या है? आप अलैहिस्सलाम को क्या तस्लीम किया जाये? इसका जवाब वाज़ेह तौर पर ईसा अलैहिस्सलाम ने ख़ुद यहूद को दिया था, जब उन्होंने आपकी वालदा पर मआज़ल्लाह बदकार होने की तोहमत लगाई थी आपने शीर ख़्वारगी में इरशाद फ़रमाया:

बच्चा ने (शीर ख़्वारगी में) कहा मैं हूं अल्लाह तआला का बंदा उसने मुझे किताब दी और मुझे ग़ैब की ख़बरें बताने वाला (नबी) बनाया और इसी लिए मुझे मुबारक किया मैं कहीं भी हूं और मुझे नमाज़ और ज़कात की ताकीद फ़रमाई जब तक ज़िन्दा रहूं और मुझे अपनी मां से अच्छा सलूक करने वाला बनाया और मुझे ज़बरदस्त बदबख़्त नहीं बनाया और वही सलामती जो हज़रत यहया पर हुई मुझ पर जिस दिन मैं पैदा हुआ और जिस दिन मैं मरूं और जिस दिन मैं उठाया जाऊं।

हासिल कलाम यह है कि ईसा अलैहिस्सलाम अल्लाह तआला के बंदा हैं ख़ुदा नहीं ख़ुदा के शरीक नहीं, ख़ुदा का बेटा नहीं, आप अल्लाह तआला के जलीलुक़द्र नबी हैं। आम इंसान नहीं। आपको अल्लाह तआला ने किताब इंजील अता फ़रमाई आपको बरकत वाला बनाया यह बर्कत आपको रब तआला की तरफ़ से हासिल हुई है आप की वालदा का फ़रमाबर्दार बनाया जो शख़्स पैदा हो वह ख़ुदा नहीं हो सकता। आपको रूहुल कुद्स की ताईद हासिल है आप का लक़ब रूहुल्लाह कलिमतुल्लाह है।

आपको ज़िंदा आसामनों पर उठा लिया गया है। कुर्बे क़यामत में आप दुनिया में तशरीफ़ लायेंगे शादी करेंगे आपकी औलाद होगी नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की शरीअत पर अमल करायेंगे। जिज़्या ख़त्म कर देंगे लेकिन वह भी शरीअते मुस्तफ़वी का हिस्सा होगा। क्योंकि जिज़्या लेने का वक़्त वहां तक ही होगा जैसे हिस्सा ज़कात में एक वक़्त तक था फिर ख़त्म कर दिया गया।

आप दज्जाल को क़त्ल कर देंगे आपका नुज़ूल इमाम मेहदी के ज़माने में होगा। फिर आपकी वफ़ात होगी हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ रौज़ा मुनव्वरा में दफ़न होने का शर्फ़ हासिल होगा, अल्लाह तआला लोगों को हिदायत अता फ़रमाये इसी अक़ीदए हक़्क़ा पर क़ायम रखे। आमीन सुम्मा आमीन।

हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम

ख़्याल रहे कि मक़सद सिर्फ़ दूसरे अंबियाए किराम अलैहिमुस्सलाम के वाक़ियात को क़लमबंद करना था क्योंकि आम तौर पर तलबाए किराम और अवामुन्नास क़ससुल अंबिया नामी कुतुब का मुताला करते हैं जिस में कई ज़ईफ़ वाक़ियात अंबियाए किराम की तरफ़ मंसूब कर दिये गये हैं जो अंबियाए किराम की शान में बाइसे तंक़ीस भी हैं और इनके पढ़ने से ईमान में तज़लज़ुल भी आता है यहां नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का मुख़्तसर तज़किरा सिर्फ़ तबर्रुक के पेशे नज़र करना है क्योंकि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के ज़िक्र के बग़ैर किताब किसी तरह भी मुकम्मल नहीं हो सकती थी।

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ज़िन्दगी मुबारक के वाक़यात और आपके औसाफ़ का इल्म हासिल करने के लिए शैख़ अब्दुल हक़ मुहद्दिस देहलवी रहमतुल्लाह अलैहि की मदारिजुन नुबुव्वत का मुताला किया जाए जो दो ज़ख़ीम जिल्दों पर मुश्तमिल है इंशाअल्लाह तआला इस किताब के मुताला से हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की हयात तैय्यबा के बहुत से वाक़ियात का इल्म हासिल होगा और सकूने क़ल्ब होगा।

नीज़ हज़रत पीर मुहम्मद करम शाह की ज़ियाउन नबी का मुताला करें तो इंशाअल्लाह तआला हुज़ूर नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की हयाते तैय्यबा की ज़िया से आपके दिलों में नूरे मारफ़त हासिल होगा ईमान में पुख़्तगी हासिल होगी।

ख़्याल रहे कि कुछ लोगों ने सीरतुन नबी के नाम से किताबें लिख कर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के फ़ज़ाइल व कमालात को कम करने की नापाक जसारत की है उनकी किताबों को पढ़कर अपने ईमान को ज़ाया न करें।

सीरतुन नबी के नाम से लिखी हुई किताबों को भी देखें और इनके मक़ाबिल मदारिजुन नबुव्वत ज़ियाउन नबी को भी पढ़ें ख़ुद बख़ुद नुमायां फ़र्क़ नज़र आयेगा कि किन हज़रात ने इश्क़े रसूले मुहब्बते रसूल में डूबकर इल्म व इरफ़ान के समुंद्र से मोती निकाल कर पेश किये और किन लोगों ने ज़हर पर मिठाई चढ़ाकर लोगों के ईमान को क़त्ल करने की नापाक कोशिश की है।

बात सिर्फ़ क़िस्मत की है किसी कि क़िस्मत में रब तआला ने यह अज़मत अता फ़रमाई कि वह दिन रात नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के फ़ज़ाइल व कमालात को तलाश करता रहता है इसी में उसकी उम्र बीत जाती है। और कुछ कमबख़्तों की उम्र इसमें गुज़र जाती है कि वह आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के नक़्स तलाश करते रहते हैं फ़ज़ाइल पर मुश्तमिल अहादीस और अक़वाल उलेमा सुलहा उनकी अक़्लों में उन्हें ज़ईफ़ नज़र आते हैं और बुतों के हक़ में नाज़िल शुदा आयात और नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के इरशादात जो इज्ज़ व इंकिसारी पर मुश्तमिल

हैं वह इन्हें हक़ीक़त नज़र आते हैं सीधे सादे लोगों को इस तरह गुमराह करते हैं।

हम भी नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से मुहब्बत करते हैं लेकिन यह हदीस ज़ईफ़ है यह वाकि़या दुरुस्त नहीं इस तरह के गुमराह कुन हथकंडे इन का वतीरा हैं।

तख़लीके अव्वल नूरे मुहम्मदी :

अब्दुर्रज़्ज़ाक़ रहमतुल्लाह अलैहि ने अपनी सनद से जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत की है कि मैंने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह मेरे मां–बाप आप पर कुर्बान, मुझे यह ख़बर दीजिये कि तमाम चीज़ों से पहले अल्लाह तआला ने किसे पैदा किया है? आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया। ऐ जाबिर बेशक अल्लाह तआला ने तमाम अशिया से पहले अपने नूर से तेरे नबी के नूर को पैदा किया फिर वह नूर अल्लाह तआला की कुदरत से जहां भी उसे मंजूर था सैर करता रहा। उस वक़्त न लौह थी न क़लम और न जन्नत और न दौज़ख़ और न फ़रिश्ते और न आसमान और न ज़मीन और न सूरज और न चांद और न जिन्न और न इंसान थे।

ख़्याल रहे कि यह हदीस मौलवी अशरफ़ी अली थानवी साहब देवबंदी ने अपनी किताब में भी नक़्ल की है।

हज़रत अरबाज़ बिन सारया से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया बेशक मैं अल्लाह तआला के नज़दीक उस वक़्त ख़ातिमन नबीईन था जब आदम अलैहिस्सलाम अभी तक अपने ख़मीर में थे।

मौलवी अशरफ़ अली थानवी साहब देवबंदी अपनी किताब में ब्यान करते हैं कि इसे अहमद, बैहक़ी और हाकिम ने भी रिवायत किया है और मिश्कात में यह हदीस शरहुस सुन्ना से मज़कूर है।

इस हदीस पाक की वज़ाहत में हज़रत अल्लामा अबुल हसनात मुहम्मद अशरफ़ स्यालवी साहब मद्दे ज़िल्लहु फ़रमाते हैं।

इस हदीस पाक से आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का तहक़ीक़न आदम अलैहिस्सलाम से पहले नबी होना भी साबित और ख़ातिमन नबीईन के मनसब पर फ़ायज़ होना भी साबित और आप की हक़ीक़त का नूर होना भी साबित क्योंकि बशरों का बाप बाद में पैदा किया जा रहा है और आपकी हक़ीक़त पहले ही मौजूद मुतहक़्क़िक़ थी और इन सिफ़ाते कमाल के साथ मौसूफ़ व मुत्तसिफ़ थी।

इस मक़ाम पर मौलवी अशरफ़ अली थानवी साहब के ब्यान कर्दा और एक तवह्हुम का इज़ाला भी मुलाहज़ा फ़रमाते जायें।

अगर किसी को यह शुबह हो कि शायद मुराद यह है कि मेरा ख़ातिमन नबीईन होना मुक़र्रर हो चुका था। सो इसलिए आपके वजूद का तक़द्दुम आदम अलैहिस्सलाम पर साबित न हुआ। जवाब यह है कि अगर यह मुराद होती तो आपकी क्या तख़सीस तक़दीर तमाम अशियाए मख़लूक़ा की उनके वजूद से मुक़द्दम है पस यह तख़सीस ख़ुद दलील है इसका मुक़द्दर होना मुराद नहीं बल्कि इस सिफ़त का सबूत मुराद है और ज़ाहिर है कि किसी सिफ़त का सबूत फ़रअ है मुसबत "लहु" के सबूत की। पस इससे आपके वजूद का तक़द्दुम साबित हो गया और चूंकि मर्तबा बदन मुतहक़्क़िक़ नहीं था इसलिए नूर और रूह का मर्तबा मुतअय्यन हो गया।

इस सवाल व जवाब ने वाज़ेह कर दिया कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की नबुव्वत

महज़ इल्मे इलाही के लिहाज़ से नहीं थी बल्कि ख़ारिज और वाक़ेय में आपका नूरे अनवर और रूहे अक़दस और हक़ीक़त मुहम्मदिया इस कमाल के साथ मौसूफ़ व मुत्तसिफ़ थी और यही हमारा नज़रिया व अक़ीदा है कि बशीरयत के लिहाज़ से औलादे आदम भी हैं मगर हक़ीक़त के लिहाज़ से असल मौजूदात हैं और आदम अलैहिस्सलाम और तमाम अंबियाए किराम अलैहिमुस्सलाम की इस लिहाज़ से आप बुनियाद हैं।

यही थानवी साहब एक और सवाल का जवाब देते हुए फ़रमाते हैं कि यह सवाल यह है कि जब अंबिया मौजूद होते तो उनके ख़ातिम का मौजूद होना भी मुतसव्विर हो सकता था जब इनका बल्कि इनके वालिद और मअदन व असल का वजूद नहीं था तो आप ख़ातिमन नबीईन किस तरह हो गये थानवी साहब की ज़बानी सवाल व जवाब मुलाहज़ा फ़रमायें।

अगर किसी को शुबह हो कि उस वक़्त ख़त्मे नबुव्वत के सबूत बल्कि ख़ुद नुबूवत ही के सबूत के क्या मायने क्योंकि नबुव्वत आपको चालीस बरस की उम्र में अता हुई और चूंकि आप सब नबियों के बाद मबऊस हुए इसलिए ख़त्म नबुव्वत का हुक्म किया गया यह वस्फ़ तो ख़ुद ताख़ीर को मकतज़ी है जवाब यह है कि यह ताख़ीर मर्तबा ज़हूर में है मर्तबा नबुव्वत में नहीं जिसे किसी को तहसीलदारी का ओहदा मिल जाये तो तंख़्वाह भी आज ही से चढ़ने लगे मगर ज़हूर होगा किसी तहसील में भेजने के बाद।

यानी जिस तरह इस तहसीलदार के मनसब का लोगों को इल्म उस वक़्त होगा जब वह तहसील में जाकर चार्ज संभालेगा उस वक़्त मालूम करेंगे कि यह हमारे तहसीलदार साहब हैं हालांकि सरकार के नज़दीक उस वक़्त से तहसीलदार है जब से उसे नामज़द किया गया है तो नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अल्लाह तआला के नज़दीक ख़ातिमन नबीईन के मर्तबा पर उस वक़्त फ़ायज़ हो चुके थे जब आदम अलैहिस्सलाम हनूज़ आलम आब व गिल में थे अगरचे लोगों को उस वक़्त पता चला जब आपका ज़हूर हुआ अलगर्ज़ ज़हूर अगरचे बाद में हुआ लेकिन वजूद पहले था और यही हमारा अक़ीदा है कि हक़ीक़त नूरिया के लिहाज़ से आप असल मौजूदात और बुनियादे आदम अलैहिस्सलाम हैं अगरचे ज़हूर और नशअते दुनयविया के लिहाज़ से औलादे आदम हैं।

हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि सहाबा किराम ने पूछा या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम आपके लिए नबुव्वत किस वक़्त साबित हो चुकी थी आप ने फ़रमाया जिस वक़्त आदम अलैहिस्सलाम अभी रूह और जिस्म के दर्मियान थे यानी उनके जिस्म में जब जान भी नहीं आई थी मैं उस वक़्त से नबी हूं।

इसको तिर्मिज़ी ने रिवायत किया है और इस हदीस को हसन कहा है और ऐसे ही अलफ़ाज़ से मैसरा ज़बी की रिवायत है इमाम अहमद रहमतुल्लाह तआला अलैहि ने अपनी मुसनद में और इमाम बुख़ारी रहमतुल्लाह तआला अलैहि ने अपनी तारीख़ में और अबू नुऐम रहमतुल्लाह तआला अलैहि ने हुलिया में इसे रिवायत किया है और हाकिम ने इसकी तसरीह की है।

सहाबा किराम के पूछने और सवाल करने से कि आप कब से नबी बने हैं पता चल गया कि जिनके घर आप पैदा हुए और उम्र शरीफ़ के चालीस साल गुज़ारे थे और इस क़दर तवील अर्सा गुज़ारने के बाद नबुव्वत का ऐलान फ़रमाया जब वह इस तरह का सवाल करते हैं तो पूछते हैं कि आप कब से

नबी हैं? मालूम हुआ उनके ईमान ने गवाही दी कि नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अगरचे नबुव्वत का ऐलान और इज़्हार चालीस साल के बाद किया लेकिन आप नबी बने हुए पहले के थे उन्होंने यह नहीं पूछा कि आपने ऐलाने नबुव्वत व रिसालत कब फ़रमाया? बल्कि पूछा है।

आपके लिए या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम नबुव्वत किस वक़्त साबित है?

और नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का यह जवाब कि मैं उस वक़्त से नबी हूं जब तुम्हारे बाप आदम अलैहिस्सलाम की रूह अभी उनके जिस्म में फूंकी नहीं गई थी सहाबा किराम के इस नज़रिया व अक़ीदा पर मोहर तसदीक़ है कि तुमने दुरुस्त समझा वाक़ई मैं उम्र शरीफ़ के चालीस साल गुज़ारकर नबी नहीं बना बल्कि उस वक़्त से यह मनसब और एज़ाज़ मुझे हासिल है जब कि अबुल बशर हज़रत आदम अलैहिस्सलाम के तन (बदन) में जान नहीं आई थी।

इस रिवायत को तिर्मिज़ी शरीफ़ में नक़्ल किया गया है और तिर्मिज़ी शरीफ़ हदीस की वह किताब है कि जिसके मुताल्लिक़ मुहद्देसीन ने फ़रमाया जिस के घर में यह किताब मौजूद हो वह यूं समझे कि रब तआला का रसूल मेरे घर में मौजूद और तश्रीफ़ फ़रमा है। इमाम तिर्मिज़ी रहमतुल्लाह तआला अलैहि ने इस हदीस को मौजू और मन गढ़त भी नहीं कहा और ज़ईफ़ भी नहीं कहा बल्कि उन्होंने इस को हसन कहा है उसूले हदीस में वाज़ेह है कि हसन हदीस हुज्जत व दलील और सनद हो सकती है।

और फिर अशरफ़ अली थानवी साहब ने तसरीह कर दी है कि इसी तरह के अल्फ़ाज़ आते हैं गोया यह रिवायत दो सहाबियों से मरवी हुई इस तरह कुल चार सहाबियों (हज़रत जाबिर अब्दुल्लाह अंसारी, हज़रत अरबाज़ बिन सारया, हज़रत अबू हुरैरा और हज़रत मैसरा ज़बी की शहादत और गवाही अब तक आ चुकी है कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम नूर हैं और हज़रत आदम अलैहिस्सलाम की तख़्लीक़ व ईजाद से पहले नबुव्वत व रिसालत और ख़ातिमन नबीईन के मनसब पर फ़ायज़ हो चुके थे।

अलावा अज़ीं इसको इमाम अहमद रहमतुल्लाह तआला अलैहि ने अपनी मुनसद में ज़िक्र किया है जो अहले सुन्नत के चौथे इमाम हैं और इमाम अबू हनीफ़ा, इमाम अबू मालिक, और इमाम शाफ़ई के बाद उनका दर्जा है।

फिर इमाम बुख़ारी रहमतुल्लाह तआला अलैहि ने इसको अपनी तारीख़ और इमाम बुख़ारी रहमतुल्लाह तआला अलैहि के उस्ताज़ अबू नुऐम ने इसको हुल्लिया में नक़्ल किया है और हाकिम जैसे मुहद्दिस ने इसकी तस्हीह की है हाकिम रहमतुल्लाह अलैहि वह मुहद्दिस हैं जिसने बुख़ारी व मुस्लिम से रह जाने वाली सही अहादीस को जमा किया है और इस किताब का नाम मुस्तदरिक रखा है।

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का नूर व बशर होना :

क़ाज़ी अयाज़ रहमतुल्लाह अलैहि इसी मसले पर दलील क़ायम फ़रमाते हैं कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का ज़ाहिर बशरी है और बातिन नूरी है।

जिस तरह नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि मेरी आंखें सोती हैं और मेरा दिल जागता है।

आपका यह इरशादे गिरामी इस पर दलालत कर रहा है कि आपका बातिन मलकी (फ़रिश्तों की तरह नूरानी है) और आपका ज़ाहिर बशरी है क़ाज़ी शहाब ख़फ़ाजी फ़रमाते हैं:

इस तरह दूसरे तमाम अंबियाए किराम की आंखें सोती हैं और दिल बेदार रहते हैं जिस तरह बुख़ारी की हदीस में सराहतन ज़िक्र है।

यानी तमाम अंबियाए किराम को यह शर्फ़ हासिल है कि उनका ज़ाहिर बशर और बातिन नूर है अलबत्ता नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का नूर नूरूम मिन नूरिल्लाह है और तमाम कायनात के लिए असल व बुनियाद की हैसियत रखता है यानी आपका नूर तमाम अंबियाए किराम की नूरानियत की भी असल है।

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का इरशादे गिरामी है कि मेरी आंखें सोती हैं दिल बेदार होता है यह दलील है इस पर कि आपका ज़ाहिर बशरी है। और बातिन मलकी नूरानी है इसी वजह से मुहद्देसीन किराम फुक़्हाए एज़ाम ने इत्तेफ़ाक़ी तौर पर इरशाद फ़रमाया है कि बेशक आपकी नींद से आपका वुज़ू नहीं टूटता था नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की नींद पर आपके किसी उम्मती की नींद को क़यास नहीं किया जा सकता यानी सहाबा किराम औलियाए किराम और उम्मत के किसी फ़र्द को भी यह मक़ाम हासिल नहीं अगर किसी सहाबी या वली के मुताल्लिक़ कोई यह कहे कि उसकी नींद से उसका वुज़ू नहीं टूटता था यह उसका वहम होगा ग़लत सोच होगी उस शख़्स की बात को तस्लीम न किया जाये।

ख़्याल रहे कि अल्लामा शामी रहमतुल्लाह अलैहि ने वज़ाहत की है कि तमाम अंबियाए किराम की नींद से उनके वुज़ू नहीं टूटते थे मैंने नूरुल ईज़ाह के अरबी हाशिया में बिफ़ज़्लेहि तआला इसे ज़िक्र किया है कि जब कि हदाया तक तमाम फ़ेक़ही कुतुब के महशी हज़रात इसे जिक्र न कर सके या दीदा व दानिस्ता ज़िक्र नहीं किया।

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जागने के बाद वुज़ू करते थे आपका यह वुज़ू करना वजूबी तौर पर नहीं हुआ करता था बल्कि मुस्तहब समझकर आप वुज़ू करते या तालीमे उम्मत के लिए या आपको चूंकि मालूम होता था कि सोते हुए कोई चीज़ वुज़ू के ख़िलाफ़ सरज़द होती है इसलिए आप कभी कभी अपने इल्म के मुताबिक़ वुज़ू टूटने की वजह से वुज़ू करते होंगे।

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की नूरानियत का सबूत कुरआन पाक सेः

बेशक तुम्हारे पास अल्लाह तआला की तरफ़ से एक नूर आया और रौशन किताब।

इस आयते करीमा की तफ़सीर में तीन क़ौल मिलते हैं एक आम मुफ़स्सेरीन का जिन्होंने नूर से मुराद नबी करीम और किताबे मुबीन से मुराद कुरआन पाक लिया है दूसरा क़ौल मुअतज़िला का है जिन्होंने नूर और किताबे मुबीन से कुरआन पाक लिया तीसरा क़ौल मुहक़्क़ेक़ीन का है जैसे अल्लामा आलूसी और मुल्ला अली क़ारी रहमतुल्लाह तआला अलैहुमा उन्होंने नूर और किताबे मुबीन दोनों से ही मुराद नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम लिए हैं।

अल्लामा आलूसी रहमतुल्लाह अलैहि फ़रमाते हैं:

नूर से मुराद नूरे अज़ीम है जो सब नूरों का नूर है। यानी तमाम नूरों की असल है और नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हैं।

यही क़ौल क़तादा का है और ज़िजाज ने इसी क़ौल को मुख़्तार क़रार दिया है।

अबू अली जबाई ने कहा है नूर से मुराद भी कुरआन है क्योंकि कुरआन हिदायत व यक़ीन के रास्तों

को ज़ाहिर करने वाला है और मुनकशिफ़ करने वाला है इसलिए इसे नूर कहा गया है। ज़िमख़्शरी ने भी इसी कौ़ल पर इक़्तेसार किया है इस कौ़ल पर बज़ाहिर एक एतेराज़ था कि अतफ़ मुग़ाएरत के लिए आता है जब मअतूफ़ और मअतूफ़ अलैहि दोनों से मुराद कुरआन पाक है लेकिन दो नाम अलाहदा अलाहदा ज़िक्र किये गये हैं अलाहदा अलाहदा उनवान की वजह से जो मुग़ाएरत पाई गई वह मुग़ाएरत ज़ाती के दर्जे में है।

पहला कौ़ल ज़्यादा ज़ाहिर है जिसमें नूर से मुराद नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हैं और किताबे मुबीन से मुराद कुरआन पाक है।

अल्लामा तैबी रहमतुल्लाह तआला अलैहि कहते हैं नूर से मुराद नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ही लेना ज़्यादा मुनासिब है क्योंकि पहले "क़द जा अकुम रूसुलना" ज़िक्र किया गया है और फ़िर बग़ैर हर्फ़ अतफ़ के "क़द जा अ कुम मिनल्लाहि नूर" ज़िक्र किया गया है तो पता चलता है कि दोनों से मुराद एक ही ज़ात है इसलिए हर्फ़ अतफ़ ज़िक्र नहीं किया गया क्योंकि वह मुग़ाएरत पर दलालत करता है।

अल्लामा आलूसी रहमतुल्लाह तआला अलैहि फ़रमाते हैं:

मेरे नज़दीक यह कोई बईद बात नहीं कि नूर और किताबे मुबीन दोनों से मुराद नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हैं अगर कोई एतेराज़ करे कि अतफ़ मुग़ाएरत के लिए आता है मअतूफ़ और मअतूफ़ अलैहि दोनों से मुराद एक ज़ात कैसे? तो इसका हम भी वही जवाब देंगे जो जबाई ने दिया है उनवान की मुग़ाएरत को मुग़ाएरत के दर्जे में रख कर अतफ़ को सहीह क़रार दिया जा सकता है।

इसमें कोई शक नहीं कि नूर और किताबे मुबीन दोनों का इतलाक़ नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर है।

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर दोनों का इतलाक़ कैसे सही है? इसका जवाब मुल्ला अली क़ारी रहमतुल्लाह अलैहि के इरशाद से वाज़ेह हो जाता है कि आप फ़रमाते है:

नूर और किताबे मुबीन दोनों सिफ़तें रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की बनाने में कौन सा मानेअ मौजूद है? यानी कोई मानेअ नहीं क्योंकि आप नूरे अज़ीम हैं इसलिए सब नूरों से आप का नूर ज़्यादा ज़ाहिर है और आप किताब मुबीन (रौशन किताब) हैं। क्योंकि आप तमाम असरार के जामेअ होने की वजह से किताब हैं और तमाम अहकाम अहवाल और अख़बार के ज़ाहिर करने की वजह से मुबीन हैं।

तंबीह : मज़कूरा बहस से वाज़ेह हुआ कि आयते करीमा में नूर से मुराद कुरआन पाक ज़बाई और ज़िमख़शरी ने लिया है और अहले इल्म से मख़्फ़ी नहीं कि यह मुअतज़िला के रईस हैं आम अलहे इल्म का कौ़ल यह है कि नूर से मुराद नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हैं और किताबे मुबीन से मुराद कुरान पाक और मुहक़्क़ेक़ीन हज़रात ने दोनों से मुराद नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम लिया है।

एतेराज़: सबसे पहले तख़लीक़ क़लम की है न कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के नूर की क्योंकि क़लम के अव्वलुल मख़लूक़ात होने वाली हदीस सहीह है। सबसे पहले अल्लाह तआला ने क़लम को पैदा किया।

लेकिन रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के नूर की तख़लीक़ सबसे पहले होने की रिवायत ज़ईफ़ है सही के मुक़ाबिल ज़ईफ़ को कैसे क़बूल किया जा सकता है।

जवाब : सबसे पहले तो हम यह ज़ाब्ता ही तस्लीम नहीं करते कि ज़ईफ़ को मुतलक़न छोड़ दिया जाता है बल्कि क़ानून यह है कि दलील क़तई और ज़न्नी का जब तआरुज़ आ जाये तो उनमें ततबीक़ देने की कोशिश की जायेगी उनमें ततबीक़ साबित हो जाये तो बेहतर वरना ज़न्नी को छोड़ दिया जाये कुरआन पाक में।

कुरआन पाक जहां से भी आसान हो पढ़ो।

इस आयत से नमाज़ में कुरआन पाक का मुतलक़न (किसी सूरत से भी हो जहां से भी इंसान पढ़ना चाहे पढ़ ले) पढ़ना फ़र्ज़ साबित हो रहा है लेकिन हदीस पाक में है।

जिसका ज़ाहिरी मायने है सूरह फ़ातेहा पढ़ने के बग़ैर नमाज़ होती ही नहीं।

कुरआन पाक की आयत क़तई है और हदीस पाक जो ख़बरे वाहिद है ज़न्नी है लेकिन हदीस पाक को मुतलक़न छोड़ देने का क़ौल बातिल होगा अहले इल्म ने इनमें ततबीक़ इस तरह दी है कि कुरआन पाक की आयते करीमा से नमाज़ में क़िरात की फ़रज़ियत साबित हो रही है और हदीस पाक से सूरः फ़ातेहा का पढ़ना वाजिब साबित हो रहा है अब हदीस पाक का सही तर्जमा यह होगा कि सूरः फ़ातेहा पढ़ने के बग़ैर नमाज़ कामिल नहीं। नफ़ी कमाल की होगी मुतलक़न वजूद की नहीं जिस तरह दूसरी जगह तर्जमा भी यही होगा कि जो शख़्स अमानत का पास नहीं करता उसका ईमान कामिल नहीं।

इस तमहीद के बाद जवाब का ख़ुलासा यह है कि क़लम की तख़लीक़ की अव्वलियत इज़ाफ़ी है और नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के नूर की तख़लीक़ में अव्वलियत हक़ीक़ी है।

यही क़ौल अहले इल्म मुहक़्क़ेक़ीन, मुत्तक़ीन और कामिल ईमान वालों का है हां अलबत्ता जिनका ईमान ज़ईफ़ है वह नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की शान पर दलालत करने वाली अहादीस को ज़ईफ़ करके रद करते ही रहते हैं।

जिनके दिलों पर मोहर लगाकर गुमराही का तौक़ उनके गले में रब तआला डाल दे फिर उन्हें हिदायत देने की किसे मजाल हो सकती है। आइये अहले इल्म के इरशादात देखिये।

सरवरे आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया अल्लाह तआला ने आसमानों और ज़मीन की तख़लीक़ से पचास हज़ार साल पहले मख़लूक़ात की मक़ादीर लिखवा दी थीं जब कि उसका अर्श पानी पर था।

इस हदीस पाक से साफ़ ज़ाहिर है कि अर्श पहले मौजूद था अलावा अज़ीं क़लम को पैदा करके यह हुक्म दिया गया "अकतब" लिख उसने अर्ज़ किया क्या लिखूं? तो अल्लाह तआला ने फ़रमाया।

तक़दीरे ख़ुदावंद को लिख।

तो उसने जो कुछ हो चुका था वह भी लिख दिया और जो कुछ क़यामत तक होने वाला था वह भी लिख दिया जिससे साफ़ ज़ाहिर है कि क़लम से पहले मख़लूक़ात थी जिसको माकान से ताबीर किया गया जब यहां अव्वलियत ही इज़ाफ़ी है तो इस हदीस की आड़ में नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के नूरे अक़दस की अव्वलियत से इंकार करने के क्या मायने?

अल्लामा मुल्ला अली क़ारी रहमतुल्लाह अलैहि फ़रमाते हैं:

अज़्हार में है कि क़लम के अव्वलुल मख़्लूक़ात होने का मतलब यह है कि अर्श पानी और हवा के बाद यह पहली मख़्लूक़ है क्योंकि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का इरशादे गिरामी है कि अल्लाह तआला ने आसमानों और ज़मीनों की तख़्लीक़ से पचास हज़ार साल पहले मक़ादीरे ख़लाइक़ को लिखवा दिया था और उसका अर्श पानी पर था।

और हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास से दर्याफ़्त किया गया था कि अल्लाह तआला फ़रमाता है कि मेरा अर्श पानी पर था तो यह फ़रमाइये कि पानी किस पर था? उन्होने फ़रमाया हवा की पुश्त पर।

इससे वाज़ेह हुआ कि "अव्व ल म ख़लक़िल्लाहिल क़लम" में अव्वलियत हक़ीक़ी नहीं बल्कि इज़ाफ़ी है तो इस सूरत में हदीसे नूर में अव्वलियत हक़ीक़ी होने से यह हदीस क्योंकर मानेअ हो सकती है और यही तहकीक़ उलेमा एलाम और मुक़्तदायान ने ज़िक्र की है।

अल्लामा अली क़ारी ने फ़रमायाः

नूरे मुहम्मद अव्वल तख़्लीक़े हक़ीक़ी है जिस तरह कि मैंने रिसाला में इसकी तहक़ीक़ की है और क़लम में अव्वलियत इज़ाफ़ी हैं

नीज़ अल्लामा अली क़ारी रहमतुल्लाह तआला अलैहि फ़रमाते हैं:

इब्ने हजर रहमतुल्लाह तआला अलैहि ने फ़रमाया अव्वलुल मख़्लूक़ात कौन शै है? इसमें रिवायात मुख़्तलिफ़ हैं मगर ततबीक़ की सूरत वह है जो मैंने शुमाइल तिर्मिज़ी में ज़िक्र की है कि सब से अव्वल नूर वह है जिससे नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को पैदा किया गया उसके बाद पानी और उसके बाद अर्श। अल्लामा क़स्तलानी ने इस मसले यानी क़लम के अव्वल मख़्लूक़ होने की बहस करते हुए फ़रमाया।

अव्वलियत के ब्यान में रिवायात मुख़्तलिफ़ हैं इन तमाम में ततबीक़ और मुवाफ़क़त इस तरह है कि क़लम का अव्वलुल ख़ल्क़ होना नूरे मुहम्मदी पानी और अर्श के मा सिवा के एतेबार से है और यह तौजीह भी ब्यान की गई है कि हर शै की अव्वलियत अपनी अपनी जिंस के लिहाज़ से है यानी अनवार में सबसे पहले नूरे मुहम्मदी को पैदा किया गया और इक़लाम में से उस क़लम को जिसने तक़दीरें लिखीं और जिन अशिया पर अर्श का लफ़्ज़ बोला जाता है उनमें से अर्श आज़म को सब से पहले पैदा किया गया।

तंबीह : नूरे मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की अव्वलियत के ब्यान वाली हदीस को सिर्फ़ ज़ईफ़ ईमान वालों ने ज़ईफ़ कहा है वरना ईमाम क़स्तलानी अल्लामा इब्न हजर हैतमी, मुल्ला अली क़ारी, अल्लामा यूसुफ़ बिन इस्माईल नबहानी रहमतुल्लाह अलैहुम में से किसी ने भी ज़ईफ़ नहीं कहा।

अवाम हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को सिर्फ़ बशर न कहें:

जैसा कि ब्यान किया जा चुका है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ज़ाहिर तौर पर बशर हैं और बातनी तौर पर नूर हैं लेकिन अवाम जो बशर के मायनए कमाल से बे ख़बर हैं वह लफ़्ज़ बशर के साथ और अल्फ़ाज़ भी मिलायें जो ताज़ीम पर दलालत करें इस मसले को ब्यान करते हुए सय्यदुल औलिया हज़रत पीर महर अली शाह रहमतुल्लाह अलैहि फ़रमाते हैं:

इसमें शक नहीं कि अहले ईमान के लिए ज़िक्र आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम बतरीक़ तकरीम व ताज़ीम वाजिब और ज़रूरी है अब देखना है कि लफ़्ज़ बशर के मायने में बहस्बे लुग़ते अरबिया

अज़मत व कमाल पाया जाता है या हक़ारत। मेरी नाक़िस राए में लफ़्ज़ बशर मफ़हूमन व मिसदाक़न मुतज़म्मिन बेह कमाल है मगर चूंकि इस कमाल तक हर कस व नाकस सिवाए अहले तहक़ीक़ व इरफ़ान के रसाई नहीं रखता लिहाज़ा इतलाक़ लफ़्ज़ बशर में ख़्वास बल्कि अख़स्सुल ख़्वास का हुक्म अवाम से अलाहदा है ख़्वास के लिए जायज़ और अवाम के लिय बग़ैर ज़्यादत लफ़्ज़ दाल बर ताज़ीम नाजायज़।

तौज़ीह : आदम अलैहिस्सलाम को बशर किस वास्ते कहा गया? वजह इसकी यह है कि आदम अलैहिस्सलाम को शर्फ़े मुबाशरत अता फ़रमाया गया है।

किस चीज़ ने तुझे इस (आदम) को सज्दा करने से मना किया जिसे मैंने अपने हाथों से बनाया है।

चूंकि मलाइका आदम अलैहिस्सलाम से बेख़बर थे ऐसा ही इबलीस "उन्होंने वह कहा जो कहा" फ़र्क़ इतना है कि मलाइका जतलाने के बाद समझ गये और मुतरिफ़ बिलक़सूर हुए।

फ़रिश्तों ने कहा तू पाक है हमें तो सिर्फ़ इतना इल्म है जितना तूने अता किया है। और इबलीस को अलावा क़सूरे जहल के गुरूर भी था लिहाज़ा शैतान ने इंकार किया और तकब्बुर किया, का मिसदाक़ बना।

बशर ही को कमाले इस्तजला के लिए मज़हर बनाया गया है और मलाइक़ा बवजहे नक़्से मज़हरीयत इस कमाल से महरूम ठहरे और मज़ाहिर और मराया कमालाते इस्तिजल्लाइया से अज़ गरोह अंबिया अलैहिमुस्लसाम सैय्यदुना अबुल क़ासिम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ।

और मैं नबी बद्रे कमाल के नक़्श क़दम पर हूं।

सैयदना अब्दुल क़ादिर व अमसालुहू रज़ियल्लाहु अन्हुम विरासत मज़हर अकमल ठहरे बशर ही के लिए तनज़्ज़ुल अख़ीर होने के बाइस इस क़दर एहतेमाम हुआ कि हयत इज्तेमाइया से लेकर ज़हूर जसदे उन्सुरी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को मुतावज्जेह किया गया और ख़ुद्दाम बनाये गये ताकिः

जिसने मेरा दीदार किया उसने ख़ुदाए तआला का दीदार किया।

अगर तू ख़ुदा को देखना चाहता है तो मेरे चेहरे को देख मैं उसका आईना हूं वह मुझ से जुदा नहीं है।

इस तक़रीर से साबित हुआ कि आरिफ़ को बशर कहना अज क़बील ज़िक्र आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हुआ बख़िलाफ़े ग़ैर आरिफ़ के उसके लिए बग़ैर इंज़माम कलिमात सिर्फ़ लफ़्ज़ बशर ज़िक्र करना जायज़ नहीं चुनांचे आयते करीमा में बशर के बाद।

मेरी तरफ़ वही की जाती है और तशह्हुद में अबदुहु के बाद व रसूलहू का ज़िक्र है और कलाम अहले इरफ़ान में है।

हमारा निहायत इल्म यह है कि बेशक हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम बशर हैं और बेशक अल्लाह तआला की तमाम मख़लूक़ से बेहतर हैं।

ख़ुलासए कलाम :

हज़रत के कलाम का ख़ुलासा यह है कि वह अहले इल्म जो बशर का मायने और इसमें जो कमालात पाए जाते हैं उन्हें जानते हैं वह तो बशर कह सकते हैं लेकिन आम लोगों को बशर के साथ और अल्फ़ाज़ भी ज़िक्र करने चाहिये ताकि उन्हें भी आपकी अज़मत का पता हो मसलन सैयदुल कायनात अफ़ज़लुल

अंबिया हबीबे ख़ुदा वग़ैरह अल्फ़ाज़ साथ मिलाये जायें।

हक़ीक़त में बशर में वह कमाल है जो फ़रिश्तों को भी हासिल नहीं हुआ क्योंकि रब तआला ने अपनी ज़ात सिफ़ात और अस्मा का मज़हर सिर्फ़ बशर को ही बनाया है इस कमाल से फ़रिश्ते महरूम हैं फिर यह वस्फ़े कमाल तमाम अंबियाए किराम और नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को बग़ैर किसी वास्ते के अता हुआ लेकिन औलियाए किराम को आप के वास्ते से यह कमाल अता किया गया फिर औलिया किराम में जलीलुल क़द्र हस्तियों यानी शैख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी और इस क़िस्म के औलियाए किराम को बिल वास्ता यह कमाल आला दर्जा का हासिल हुआ दूसरे हज़रात को कुछ कम। अंबियाए किराम को बाज़ बाज़ सिफ़ात और बाज़ बाज़ अस्माए गिरामी का मज़हर बनाया गया लेकिन नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम रब तआला की आठ सिफ़ात के बग़ैर तमाम सिफ़ात के मज़हर हैं।

जब यह बात किसी की समझ में आ जाये कि बशर इस शान वाले अज़ीम शख़्स को कहा जाता है और इस कमाल में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का कोई सानी नहीं तो वह समझ सकता है कि बशर आप का अज़ीम वस्फ़ है लेकिन इंसान तो बशर का मायने यही समझेगा कि मआज़ल्लाह आप भी हमारी तरह थे ऐसा समझना ही दीन से दूर होने का नाम है और ऐसे शख़्स को सिर्फ़ लफ़्ज़ बशर कहने से इजतेनाब करना चाहिये।

इम्तेनाए नज़ीर :

इम्तेनाए नज़ीर का यह मतलब है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का मिस्ल पैदा करना रब तआला की कुदरत से ख़ारिज है जो चीज़ें मुहाल बिज़्ज़ात मुमतनेअ बिज़्ज़ात हैं वह अगर अल्लाह तआला की कुदरत से ख़ारिज हों तो रब तआला की शान और कुदरत में कोई नक़्स लाज़िम नहीं आता क्योंकि वह अशिया इस क़ाबिल नहीं कि रब तआला की कुदरत में आ सकें इस मसले को सैयदुल औलिया हज़रत अल्लामा पीर सैयद महर अली शाह रहमतुल्लाह अलैहि ब्यान करते हुए फ़रमाते हैं।

मुक़द्देमातः

१. मुमतनेआते ज़ातिया का इहाता कुदरत सुबहानाहु से ख़रूजे कमाले ज़ाते बारी पर धब्बा नहीं लगाता बल्कि यह क़सूर राजेअ बजानिब क़ाबिल है कि मुमतनेअ ज़ाती क़बूलियत का सालेह नहीं।

२. इंक़लाब हक़ाइक़े वाक़िया का ख़्वाह मअदूदात से हों मिस्ल इंसान फ़र्स बक़र, ग़नम के या मरातिब अददिया से हों मिस्ल एक दो तीन चार या मुख़तलत यानी मअदूद बहैसियत उरूज़ मर्तबा अददी मसलन ज़ैद जो अव्वल मौलूद है बनिसबत बाक़ी औलादे उमर के मुमतनेअ बिज़्ज़ात हैं।

३. किसी चीज़ की नज़ीर को कहा जाता है कि अलावा मुशारकत नौई औसाफ़ ममय्यज़ा कामिला में उस चीज़ की हम पल्ला हो।

४. आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अव्वल मख़लूक़ हैं।

तसरीहाते मुहक़्क़ेक़ीन अज़ अहले कश्फ़ व शहूद इस पर शाहिद हैं।

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का इरशादे गिरामी है कि सबसे पहले अल्लाह तआला ने मेरे नूर को पैदा किया है या यह इरशाद कि सब से पहले अल्लाह तआला ने अक़्ल को पैदा किया है इन दोनों का मतलब है शैख़ अकबर कुद्देस सिर्रहु ने इसकी वज़ाहत फ़रमाई है कि वही नूर जिसको सब से पहले पैदा किया गया और हक़ीक़ते मुहम्मदिया कहलाया इसी का नाम अक़्ल भी है और जो

तमाम आलम का मबदा है तमाम जहान से पहले इसी नूर का वजूद है और वह नूर नूरे इलाही से मअरिज़े वजूद में आया हैं

जिस तरह नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अव्वलियत की सिफ़त से मुत्तसिफ़ हैं इसी तरह आख़रियत की सिफ़त से भी मुत्तसिफ़ हैं कि आप आख़िरुल अंबिया हैं।

इरशादे ख़ुदावंदी है :

लेकिन आप अल्लाह तआला के रसूल और ख़ातिमन नबीईन हैं। अहले बसीरत को इन मुक़द्देमाते मज़कूरा पर गहरी नज़र डालने से साबित हो जाता है कि नज़ीर आं हज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का वजूदे मुमतनेअ बिज़्ज़ात बई मायने है कि ख़ालिक़ सुबहानाहु व तआला ने आपको ऐसा बनाया है और ऐसे कामिला मुमय्यज़ा सिफ़ात के साथ संवारा है कि जिससे यह कहा जा सकता है कि दर सूरत वजूदे नज़ीर इंक़लाबे हक़ीक़त लाज़िम आता है क्योंकि फ़र्ज़े नज़ीर का वजूद आपके बाद ही होगा तो ला महाला मादूद होगा जिसको मर्तबा सानिया व अद्दी आरिज़ हुआ और नज़ीर कहलाने का मुस्तहिक़ जब ही हो सकता है कि वस्फ़ मुमय्यज़ कामिल यानी अव्वल मुख़लूक़ियत व ख़त्मे नबुव्वत में मशारिक हो तो मअरूज़ मर्तबा सानिया का मअरूज़ मर्तबा औला का हो।

ऐसा ही बलिहाज़े ख़तमियत फ़र्ज़ किया कि आप मसलन छटे मर्तबा में तो नज़ीर आप की मअरूज़ सातवीं मर्तबा की मिस्ल होकर मअरूज़ मर्तबा सादसा की होगी। यही हक़ीक़त के ख़िलाफ़ है।

हां इसमें शक नहीं कि मुमतनेआते ज़ातिया में से दो क़िस्म अव्वलीन और क़िस्म सालिस में फ़र्क़ ज़ाहिर है क्योंकि क़िस्म सालिस का इम्तिनाअ औसाफ़े आरिज़ा के लिहाज़ से है इसलिए कि महले बहस इम्तिनाअ या इमकान नज़ीर है न इम्तिनाअ या इमकाने मिस्ल ख़ुलासा यह आइनए अहमद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम में ख़ालिक़ ने जुदा गाना कमाल दिखाया यानी ऐसा बनाया कि जिसकी नज़ीर मुमकिन नहीं।

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को इस शान से पैदा करना दर हक़ीक़त रब तआला का ही कमाल है जिस तरह यह शान और जमाल नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से मख़तस है वह भी दर हक़ीक़त अल्लाह तआला की अता से ही है वह ज़ात पाक है जिसने आपको इस जुदागाना शान से बनाया और आपको सबसे ज़्यादा हसीन और सबसे ज़्यादा जमील सबसे ज़्यादा बा कमाल बनाया।

ख़ुलासा कलाम :

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को रब तआला ने सब कायनात से अव्वल मअरिज़ वजूद में लाया और आप को ख़ातिमुल अंबिया बनाया। अगर आप की नज़ीर कोई और भी बन सके तो उसे भी यह दोनों वस्फ़ हासिल होंगे हालांकि अव्वत तो एक ही होता है उसके बाद आने वाले तो दूसरे दर्जे में हो जाते हैं और इसी तरह ख़ातिम भी एक ही होता है इसके बाद इसकी नज़ीर को अगर ख़ातिम कहा जायेगा तो पहली ज़ात का ख़ातिम होना बातिल होगा यह दोनों सूरतें मुमतनेअ बिज़्ज़ात हैं मुमतनेअ बिज़्ज़ात कुदरत बारी से ख़ारिज हैं इनमें यह सलाहियत नहीं कि यह रब तआला की कुदरत में आ सकें रब तआला की कुदरत में कोई फ़र्क़ नहीं आयेगा।

हक़ीक़ते मुहम्मदिया मौजूदाते आलम में जारी व सारी हैः

मौलाना अब्दुल हई लखनवी रहमतुल्लाह अलैहि शरह वक़ाया की शरह सआया में फ़रमाते हैंः

तशहुद में ख़िताब यानी अस्सलामु अलैकुम या अय्युहन नबी में राज़ यह है कि हक़ीक़ते मुहम्मदिया हर वजूद में जारी व सारी है और हर बंदे के बातिन में मौजूद है नमाज़ की हालत में इस हालत का कामिल इंकिशाफ़ होता है पस महले ख़िताब हासिल हो जाता है बाज़ अहले मारफ़त ने कहा है कि बंदा जब अल्लाह तआला की सना से मुशर्रफ़ होता है तो गोया उसको हरमे हरीमे इलाही में जगह मिल गई और नूरे बसीरत उसको हासिल हुआ।

हबीब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को दरबारे हबीब (अल्लाह तआला) में मौजूद पाये तो फ़ौरन आपकी तरफ़ मुतावज्जेह होकर सीग़ा ख़िताब से कहा। अस्सलामु अलैकुम या अय्युहन नबी वरहतुल्लाहि व बरकातुहू। ऐ नबी आप पर सलाम हो और अल्लाह तआला की रहमत व बरकात हों।

अश्अतुल लमआत में शैख़ अब्दुल हक़ मुहद्दिस देहलवी रहमतुल्लाह तआला फ़रमाते हैंः

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मोमिनों का नसबुल ऐन और इबादत गुज़ारों की आंखों की ठंडक हैं तमाम अहवाल व औक़ात में ख़ुसूसन हालते इबादत में और इसके आख़िर में नूरानियत का वजूद और इंकिशाफ़ इन अहवाल में ज़यादा और बहुत क़वी होता है बाज़ उरफ़ा ने कहा है तशहहुद में ख़िताब इसी वजह से है कि हक़ीक़ते मुहम्मदिया मौजूदात के तमाम ज़र्रात और मुमकिनात के तमाम अफ़राद में जारी व सारी है पस नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम नमाज़ियों की ज़ातों में मौजूद होते हैं लिहाज़ा नमाज़ी को चाहिये कि इस मायने से आगाह रहे और नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मौजूदगी से ग़ाफ़िल न रहे ताकि अनवारे कुर्ब और असरारे मारफ़त से मुनव्वर और फ़ैज़याब हो।

अल्लामा इब्ने हजर अस्क़लानी रहमतुल्लाह अलैहि फ़रमाते हैं।

अहले मारफ़ते के तरीक़े पर यूं कहा जा सकता है कि बेशक नमाज़ी जब अत्तहियात के ज़रिये मलकूत का दरवाज़ा खुलवा लेते हैं इनको हय्या ला यमूत की बारगाह में दाख़िल होने की इजाज़त मिल जाती है मनाजात से इनकी आंखों को ठंडक हासिल होती है इनको इस पर मुतनब्बेह किया जाता है कि यह सब कुछ तुम्हें नबी रहमत और उनकी ताबेदारी की बरकत के वसीला से हासिल है वह फ़ौरन तवज्जोह करते हैं तो हबीब को हरम में मौजूद पाते हैं यानी बारगाहे ज़ुल जलाल में हबीबे पाक को जलवा गर पाते हैं तो ख़िताब के सीग़े से अस्सलामु अलैकुम अय्युहन नबियु वरहमतुल्लाह व बरकातुहू कहते हैं।

हक़ीक़ते मुहम्मदिया क्या है?

जब यह साबित किया जा चुका है कि हक़ीक़ते मुहम्मदिया जमीअ मौजूदाते आलम में जारी व सारी है अब यह देखना है कि हक़ीक़ते मुहम्मदिया क्या है? इस पर अल्लामा जलालुद्दीन मुहक़्क़िक़ दवानी रहमतुल्लाह अलैहि का क़ौल उनकी मशहूर किताब अख़लाक़े जलाली में मुलाहज़ा फ़रमायें। आप फ़रमाते हैंः

इस मक़ाम में कलाम की तहक़ीक़ यह है कि अस्हाबे नज़र व बुरहान और अरबाब शहूद व अयां का इस पर इत्तेफ़ाक़ है कि बे मिस्ल ज़ात अल्लाह तआला की क़ुदरत और उसके इरादे के वसीला से सब से पहले जौहरे बसीत कुन फ़यकून के अम्र से दरयाए ग़ैब मकनून से ज़हूर के साहिल पर

आया जिसको हुक्मा के उर्फ़ में अक़्ल अव्वल कहा गया है और बाज़ अहादीस में इस को क़लमे आला से ताबीर किया गया है इसको अकाबिर अइम्मा किराम और असहाबे कशफ़ व तहक़ीक़ ने हक़ीक़ते मुहम्मदिया कहा है।

जनाब सैयदुल औलिया पीर महर अली शाह रहमतुल्लाह अलैहि मसला हाज़िर व नाज़िर ब्यान करते हुए फ़रमाते हैं मेरे ख़्याल में ज़हूर व सुरयान हक़ीक़ते अहमदिया आलम व हर मर्तबा और हर ज़र्रा ज़र्रा में इंदल मुहक़्क़ेक़ीन साबित है इसको कहते हैं और लिखते हैं।

वह आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का नूर है।

अव्वलन जो बसूरत तक़ी नक़ी और जसद शरीफ़ उन्सुरी के ज़ाहिर हुआ ज़हूर आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम बसूरत मिसालिया शरीफ़ा हर मकान व ज़मान में अहादीस सहीहा से साबित है जिस का इक़रार वाक़ई आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का इक़रार और इसका इंकार आपका इंकार माना गया है।

इससे मुराद वह हदीस है जो नकीरैन के सवाल से मुताल्लिक़ वारिद हुई हर मैयत से सवाल करते हैं। तुम इस शख़्स यानी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के मुताल्लिक़ क्या कहते थे?

चूंकि इस हदीस में लफ़्ज़ "हाज़ा" इस्तेमाल हुआ है जो महसूस मुबस्सिर पर दलालत करता है जब कि एक वक़्त में कई हज़रात को दफ़न किया जाता है तो इस तरह आप का बसूरत मिसालिया कई जगह पर तशरीफ़ फ़रमा होना यक़ीनी है इसको मानना ईमान है और इसी का इंकार कुफ़्र है।

अहले तजर्बा को ज़हूर कज़ाई मिसाली का बार बार इत्तेफ़ाक़ होता रहता है अलबत्ता आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का पता बाज़ अहले मुशाहिदा के हां से मिलता है। और बालिहाज़े वाक़िया मेराज शरीफ़ व ख़साइस व लवाज़िम से बईद नहीं।

अल्लाह तआला ने जब मख़लूक़ को मौजूद करने और इसके रिज़्क़ की तक़दीर का इरादा फ़रमाया तो सब से पहले हक़ीक़ते मुहम्मदिया को ज़ाहिर फ़रमाया।

ज़रक़ानी में इस इबारत की जो शरह ब्यान की गई है इसका मतलब यह है कि :

साहबे मवाहिब के क़ौल का मतलब यह है कि आपकी ज़ात को मअ सिफ़ते अव्वल के सबसे पहले ज़ाहिर फ़रमाया जैसे तौक़ीफ़ में ज़िक्र किया गया है और लताइफ़ काशी में इस तरह मज़कूर है कि मुहक़्क़ेक़ीन हज़रात हक़ीक़ते मुहम्मदिया से मुराद वह हक़ीक़त लेते हैं कि जिसको हक़ीक़तुल हक़ाइक़ कहते है। यह हक़ीक़त तमाम हक़ाइक़ में उसी तरह जारी व सारी है। जैसे कली अपनी जुज़यात में जारी व सारी होती है और ब्यान किया गया है कि हक़ीक़ते मुहम्मदिया हक़ीक़तुल हक़ाइक़ की सूरत है जो अल्लाह तआला और उसकी मख़लूक़ के दर्मियान बरज़ख़ व वास्ता की हैसियत रखती है उस वक़्त उस पर नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का इस्म व वस्फ़ ग़ालिब नहीं था यही वह वास्ता यानी हक़ीक़ते मुहम्मदिया ही नूरे अहमदी है जिसकी तरफ़ ख़ुद नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का इरशादे गिरामी इशारा कर रहा है वह यह है कि:

सबसे पहले अल्लाह तआला ने मेरे नूर को पैदा किया इसी वजह से मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का नाम नूरुल अनवार और अबुल अरवाह रखा गया है। मुख़्तसर यह कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के नूर को सबसे पहले पैदा किया गया है तमाम मख़लूक़ को आप के नूर से पैदा किया

गया तमाम अंबियाए किराम अपनी अपनी नबुव्वतों में असली नबी होने के बावजूद आप के ताबे हैं हक़ीक़ते मुहम्मदिया तमाम कायनात में जारी व सारी है। हक़ीक़त मुहम्मदिया को अक़्ल अव्वल क़लम आला जौहरे बसीत नूरानी नूरुल अनवार यानी रूहुल अरवाल कहा गया है ज़्यादा वज़ाहत के लिऐ मेरे रिसाला अक़ीदा हाज़िर व नाज़िर का मुताला करें।

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पाक नस्लों से तशरीफ़ लाये:

अल्लामा इमाम इब्ने जूज़ी ने किताबुल वफ़ा में कअब बिन एहबार रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत को नक़्ल किया है कि :

जब अल्लाह तआला ने मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को पैदा करने का इरादा फ़रमाया तो जिब्राईल हो हुक्म दिया तो उन्होंने नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की क़ब्र शरीफ़ की जगह से सफ़ेद मिट्टी की एक मुट्ठी ली फिर उसे जन्नत की नहर तसनीम के पानी से गूंधा गया फिर उसे जन्नत की नहरों में डुबोया गया और आसमानों में उसे फिराया गया पस फ़रिश्तों ने आदम अलैहिस्सलाम को पहचानने से पहले ही मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को पहचान लिया फिर नूरे मुहम्मदी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को आदम अलैहिस्सलाम की पेशानी में रखा गया जिस की वजह से आपकी पेशानी जगमगाती थी और आपको बताया गया ऐ आदम यह तुम्हारी औलाद से होंगे और तमाम रसूलों के सरदार होंगे पस जब हज़रत हव्वा के पेट में शीस आए तो वह नूर आदम अलैहिस्सलाम की पेशानी से मुनतक़िल होकर हव्वा के पास आ गया हालांकि हज़रत हव्वा के बतने मुबारक से दो दो बच्चे हर हमल से पैदा हो रहे थे लेकिन नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के नूर को मुनक़सिम होने से बचाने के लिए सिर्फ़ शीस अलैहिस्सलाम ही अकेले पैदा हुए इसमें हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की करामत को मद्दे नज़र रखा गया है फिर आप का नूर हमेशा से पाक हस्ती से पाक हस्ती की तरफ़ मुनतक़िल होता रहा यहां तक कि आप की वालदा आमना रज़ियल्लाहु अन्हा ने आपको अब्दुल्लाह बिन अब्दुल मुत्तलिब से जना।

ख़्याल रहे कि पाक नस्लों से मुनतक़िल होने का मतलब यह है कि आप के आबा व अजदाद बदकारी और कुफ़्र से पाक थे तहारत को सिर्फ़ बदकारी की नजासत से पाक होने के साथ ख़ास करना बातिल है बल्कि ज़्यादा मक़सूद ही कुफ़्र से पाक होना है यह तफ़सील हज़रत इब्राहीम के हालात में देखी जाये वहां मैंने वज़ाहत से ब्यान कर दिया है।

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की दुनिया में तशरीफ़ आवरी:

अक्सर अहले इल्म का क़ौल यही है कि हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उस साल दुनिया में तशरीफ़ लाए जिस साल अबरहा ने हाथियों पर सवार होकर काबा शरीफ़ को शहीद करने की मज़मूम हरकत की और वह तबाह व बर्बाद हुआ उस साल को आमुलफ़ील कहते हैं यानी आप इस वाक़िया के पचास दिन बाद तशरीफ़ लाये। यह रबीउल अव्वल का महीना था और इसकी बारह तारीख़ थी पीर का दिन था सुबह सादिक़ का वक़्त था।

पीर के दिन को नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से ताल्लुक़:

आपकी पैदाईश पीर के दिन हुई आपको नबुव्वत पीर के दिन अता हुई पीर के दिन मक्का से मदीना तैयबा की तरफ़ हिजरत की। पीर के दिन मदीना तैयबा में पहुंचे पीर के दिन क़ुरैश के नज़ाअ को मिटाने

के लिए हजरे असवद को अपनी चादर मुबारक में रखकर सब कबाइल के सरदारों को उठाने के मुताल्लिक इरशाद फ़रमाया और खुद हजरे असवद को उठाकर काबा शरीफ़ की दीवार में नस्ब कर दिया यह भी पीर का दिन था मक्का शरीफ़ फ़तह फ़रमाया पीर के दिन सूरः मायदा का आप पर नुज़ूल पीर के दिन हुआ था।

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का नूर मुन्तक़िल होने के बाद भी असर अंदाज़ रहा:

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की पैदाईश के पचास दिन पहले अबरहा का वाक़िया दरपेश आया उस वक़्त वह नूर हज़रत अब्दुल मुत्तलिब से मुनतक़िल होकर हज़रत अब्दुल्लाह की वालदा के पास और उनसे हज़रत अब्दुल्लाह के पास और उनसे हज़रत आमना के पास आ चुका था लेकिन फ़िर भी इसके असरात हज़रत अब्दुल मुत्तलिब की पेशानी में मौजूद थे।

हज़रत अब्दुल मुत्तलिब सवार होकर कुरैश की एक जमाअत को साथ लेकर अबरहा के लश्कर के हालात का जायज़ा लेने के लिए पहाड़ पर चढ़े तो आपकी पेशानी में नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का नूर गोल चांद की तरह ज़ाहिर हुआ और उसकी शाआयें चिराग़ की तरह काबा शरीफ़ पर पड़ीं। जब अब्दुल मुत्तलिब ने यह हाल देखा तो आपने कहा। ऐ कुरैश की जमाअत वापस लौट चलो यही तुम्हारे लिए काफ़ी है क़सम है अल्लाह तआला की यह नूर मेरी पेशानी में जो चमका है यह हमारी कामयाबी की दलील है।

आपके नूर से शाम के महल्लात रौशन हो गये:

हज़रत अरबाज़ बिन सारया से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: मैं अल्लाह तआला के हां उस वक़्त भी ख़ातिमन नबीईन लिखा हुआ था जब आदम अलैहिस्सलाम कीचड़ में थे यानी आपका ख़मीर तैयार किया जा रहा था तुम्हें अपने अव्वल उमूर की ख़बर दे रहा हूं कि मैं इब्राहीम की दुआ हूं और ईसा की बशारत हूं और अपनी मां की रूंया हूं जो आपने उस वक़्त देखा जब मुझे पेश फ़रमाया कि आप सें एक नूर ज़ाहिर हुआ जिससे शाम के महल्लात रौशन हो गये।

दावाए इब्राहीम से इशारा इस तरफ़ था जो इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने तामीरे काबा के बाद दुआ की।

कि ऐ हमारे रब तआला इनमें से एक रसूल मबऊस फ़रमा जो इनमें से ही हो।

बशारते ईसा से मुराद जो ईसा अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया।

आपने बशारत दी कि मेरे बाद एक रसूल तशरीफ़ लायेंगे जिनका नाम अहमद होगा।

रूया : क्या रूया से मुराद ख़्वाब है या ज़ाहिर तौर पर देखना मुराद है इस पर शैख़ अब्दुल हक़ मुहद्दिस देहलवी अलैहिर्रहमा तहरीर फ़रमाते हैं:

अगरचे ज़ाहिर तौर पर तो यह समझ में आता है कि आप का नूर को देखना जिससे शाम के महल्लात रौशन हुए ख़्वाब का वाक़िया हो लेकिन अहादीस में यही वाकिया जागते हुए भी दरपेश आने का ज़िक्र है ख़्वाब का वाक़िया इस तरह ब्यान किया गया है कि आपकी वालदा ने ख़्वाब देखा कि कोई शख़्स मेरे पास आकर मुझे कह रहा है कि तुम्हें मालूम है कि तुम इस उम्मत के सरदार और नबी से हामिला हो चुकी हो, मुनासिब यही है कि इस हदीस में रूया से आंख से जागते हुए देखना मुराद लिया जाये।

राक़िम के नज़दीक इस हदीस में ख़्वाब का मायने लेना ही हक़ीक़त से दूरी की अलामत है इसलिए

कि "हीन व ज़अतनी" ज़र्फ़ है "राअत की" (जिस वक़्त मेरी वालदा ने मुझे पेश किया उस वक़्त देखा) पैदाईश के वक़्त ख़्वाब का देखना ना मुमकिन है इस हदीस में ज़ाहिरी तौर पर देखना मुराद लिया जाए तो यह मायने ज़ाहिरी तरकीब के बिल्कुल मुताबिक़ है ख़्वाब वाला मायने लेना तकल्लुफ़ात और तावीलात से ख़ाली नहीं।

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की पीर और रबीउल अव्वल को पैदाईश में हिकमतः

अगरचे बज़ाहिर अक़्ल का तक़ाज़ा यह है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की विलादत रमज़ानुल मुबारक में होती क्योंकि इसमें कुरआन पाक नाज़िल हुआ और इसमें लैलतुल क़द्र भी है लेकिन ऐसा नहीं हुआ इन चार महीनों में आपकी पैदाईश नहीं हुई जिन्हें इज़्ज़त वाले महीने कहा गया है शाबान की पंद्रहवीं रात को आपकी पैदाईश नहीं हुई जुमा के दिन जुमा या जुमा की रात को आपकी पैदाईश नहीं हुई इसमें क्या हिकमत है?

इसमें सबसे बड़ी वजह यह है कि अल्लाह तआला ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की विलादत से उस ज़माने को मुशर्रफ़ फ़रमाया जिसमें आप पैदा हुए यानी रबीउल अव्वल और पीर को आपसे बा कमाल बनाया गया अगर दूसरे बाबर्कत औक़ात में आपकी पैदाईश होती तो वहम होता कि आप को शायद किसी महीने या किसी दिन या किसी वक़्त से कमाल मिला है।

और वजह यह है कि रबीअ मौसमे बहार को कहते हैं जो तमाम मौसमों से आदल है और अहसन है आपको रबीउल अव्वल में पैदा फ़रमाकर इशारा किया गया है कि आपकी शरीअत तमाम शरीयतों से मुअतदिल है न इसमें अफ़रात है और न तफ़रीत यानी बहुत सख़्तियां भी नहीं जैसे मूसा अलैहिस्सलाम की शरीअत में थीं और बहुत नर्मियां भी नहीं जैसे ईसा अलैहिस्सलाम की शरीअत में थीं।

पीर को आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पैदा होने में यह हिकमत है कि अल्लाह तआला ने पीर को तमाम दरख़्त पैदा किये गये गोया कि इंसानों का रिज़्क़ फल सब्जियां वग़ैरह जिन पर इंसानी ज़िन्दगी का दारो मदार है वह पीर को पैदा हुए तो आपको भी इस दिन पैदा करके इशारा फ़रमा दिया कि आपकी ज़ात भी इंसानों की रूहों को ज़िन्दगी बख़्शने का ज़रिया है जिस तरह रिज़्क़ के बग़ैर इंसान का ज़िन्दा रहना मुहाल है इसी तरह आप के बग़ैर अरवाह की बक़ा नहीं।

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की विलादत पर ख़ुशी का इज़हार :

अल्लामा सयूती रहमतुल्लाह अलैहि फ़रमाते हैं कि मेरे नज़दीक असल मिलादुन्नबी मनाने का जो तरीक़ा राइज है वह जायज़ है क्योंकि जो लोग जमा होते हैं कुरआन पाक पढ़ते हैं नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की पैदाईश के वक़्त के वाक़ियात ब्यान करते हैं और नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की विलादत और आमद बा-सआदत पर दलालत करने वाली आयात ब्यान करते हैं फिर दस्तरख़्वान बिछाते हैं और सब लोग मिलकर खाना खाते हैं और अपने अपने घरों को लौटकर चले जाते हैं कोई नाजायज़ काम नहीं करते यह तमाम काम बिदआते हस्ना हैं।

जिनके करने पर इंसान को सवाब हासिल होता है क्योंकि इसमें नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की क़द्र व मंज़िलत की ताज़ीम पाई जाती है और ख़ुशी का इज़हार है और आपकी आमद बा-सदाअत पर बशारत का हुसूल है।

महाफ़िले मिलाद में उलेमा सुलहा की शिर्कत:

मलिक मुज़फ़्फ़र के यहां नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की विलादत बा सआदत की खुशी हर साल क़ायम की गई महाफ़िल में तीन लाख दीनार ख़र्च करता था उसके दस्तरख़्वान पर पांच हज़ार बक़रियों के भुने हुए सर और दस हज़ार मुर्ग़ियां एक लाख मक्खन की टिकियां और तीन हज़ार तश्त मिठाईयों के रखे जाते।

उसके पास मिलादुन्नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की महाफ़िल में उलेमाए किराम और सूफ़िया एज़ाम हाज़िर हुआ करते थे यह भी ख़्याल रहे कि मलिक मुज़फ़्फ़रुद्दीन बिन ज़ैनुद्दीन एक नेक आदिल शख़्स था सुल्तान सलाहुद्दीन बिन अय्यूबी का बहनोई था एक दिन सलाहुद्दीन अय्यूबी की बहन और उसकी ज़ौजा ने इनको कहा तुम लिबास क़ीमती क्यों नहीं पहनते यह पांच दरहम के खद्दर के कपड़े पहन लेते हो यह सुनकर मलिक मुज़फ़्फ़र ने जवाब दिया।

मेरे लिए पांच दरहम का लिबास पहनना और बाक़ी सदक़ा कर देना बेहतर है बनिस्बत इसके कि मैं क़ीमती लिबास पहनूं और फ़क़ीरों मिस्कीनों का ख़्याल रखना छोड़ दूं।

हाफ़िज़ अबुल ख़त्ताब बिन दहिया जो मशहूर उलेमा और अज़ीम फ़ुज़ला से थे ने एक किताब नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की विलादत के ज़िक्र में लिखी इसमें मलिक मुज़फ़्फ़रुद्दीन ने उन्हें एक हज़ार दीनार इनाम दिया ६२५ हि. में बादशाह के पास मिलादुन्नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की छः मजलिसों में इस किताब को पढ़ा गया।

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने ख़ुद अपनी विलादत का तज़किरा किया:

नबी कीरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अगरचे रबीउल अव्वल में बनिसबत दूसरे महीनों के ज़्यादा इबादत नहीं की लेकिन इसकी वजह यह थी कि आप ने अपनी उम्मत पर रहमत व शफ़क़त फ़रमाते हुए ज़्यादा इबादात इस महीने में नहीं कीं कि मेरी उम्मत पर कहीं यह फ़र्ज़ न कर दी जायें आप इसी डर की वजह से कई अमल हमेशा नहीं फ़रमाते थे लेकिन इस महीने की फ़ज़ीलत की तरफ़ आपने इशारा कर दिया क्योंकि जब आपसे किसी ने सवाल किया कि आप पीर के दिन रोज़ा क्यों रखते हैं तो आपने फ़रमाया कि यह मेरी पैदाईश का दिन है।

इस दिन की फ़ज़ीलत की वजह से सारा महीना ही फ़ज़ीलत वाला है:

लिहाज़ा हमें चाहिये कि हम इस महीने का ऐसा एहतेराम करें जैसा इसका हक़ है और ऐसे ही इस माह को अफ़ज़ल समझें जैसे दूसरे महीने जिनकी फ़ज़ीलत का ज़िक्र रब तआला ने फ़रमा दिया है नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फ़रमाते हैं:

मैं औलादे आदम का सरदार हूं मुझे इस पर कोई फ़ख़्र नहीं और फ़रमाया आदम अलैहिस्सलाम और उनके मा सिवा मेरे ही झंडे के नीचे होंगे।

किसी ज़मान या मकान को ज़ाती तौर पर कोई फ़ज़ीलत हासिल नहीं बल्कि जिन इबादात और फ़ज़ीलत वाले असबाब से इन का ताल्लुक़ होता है इनकी वजह से वह ज़मान व मकान भी अफ़ज़ल हो जाते हैं जिस महीने और दिन में सैय्यदे काइनात सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तशरीफ़ लाए यक़ीनन इसे भी फ़ज़ीलत हासिल है।

क्या तुम देखते नहीं कि इस दिन पीर के दिन रोज़ा रखना बहुत अज़ीम है क्योंकि इस दिन नबी

करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पैदा हुए।

बैहक़ी ने हज़रत अनस से एक रिवायत ज़िक्र की है कि बेशक नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने ऐलाने नबुव्वत के बाद अपना अक़ीक़ा किया।

हालांकि आपके दादा अब्दुल मुत्तलिब आपकी पैदाईश के सातवें दिन अक़ीक़ा कर चुके थे और अक़ीक़ा दोबारा लौटाया भी नहीं जाता तो क्या वजह थी कि आपने अपना अक़ीक़ा फिर किया?

आपने अपना अक़ीक़ा इसलिए किया कि आप को अल्लाह तआला ने रहमतुललिल आलमीन बनाया तो आपने इससे शुक्रिया का इज़्हार फ़रमाया और इसलिए भी कि आपकी उम्मत के लिए भी आपकी विलादत की ख़ुशी मनाना मशरूअ हो जाये जैसा कि आप पर कोई ज़रूरी नहीं था कि अपने आप पर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम दुरूद पढ़ें लेकिन फिर भी आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अपनी ज़ात पर इसी वजह से दुरूद पढ़ते थे कि आपकी उम्मत के लिए सुन्नत भी बन जाये।

एतेराज़ :

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की पैदाईश बारह रबीउल अव्वल को इल्म तक़्वीम के हिसाब से दुरुस्त नहीं बनती क्योंकि आप की पैदाईश २२ अप्रैल ५७१ ई. को हुई इसका हिसाब किया जाये तो ६ रबीउल अव्वल बनती है।

दूसरी बात यह है कि अगर १२ रबीउल अव्वल पैदाईश का दिन साबित हो जाये तो वही वफ़ात का दिन भी है फिर इस दिन ख़ुशी का इज़्हार करना कैसे मुमकिन होगा वह दिन तो ग़मी का भी है।

जवाब : एतेराज़ की पहली सूरत का जवाब तो यह है कि जनाब मुहम्मद इरफ़ान रज़वी साबिक़ डारेक्टर एजूकेशन रावलपिंडी ने अपनी एक किताब में तक़्वीम की रू से ही १२ रबीउल अव्वल तारीख़ को दुरुस्त साबित कर दिया और दूसरी वजह यह भी है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की आमद से पहले इस्लामी महीनों का कलैंडर मुस्तक़िल नहीं था बल्कि कुफ़्फ़ार अपनी मर्ज़ी से इसमें तबदीली करते थे।

बेशक महीनों की तादाद अल्लाह तआला के नज़दीक १२ माह है किताबे इलाही में जिस रोज़ से उसने पैदा फ़रमाया आसमानों और ज़मीन को इनमें से चार इज़्ज़त वाले हैं यही दीने क़य्यम है पस न ज़ुल्म करो इन महीनों में अपने आप पर और जंग करो तमाम मुश्रिकों से जिस तरह वह सब तुमसे जंग करते हैं और ख़ूब जान लो कि अल्लाह तआला परहेज़गारों के साथ है।

बारह क़मरी महीनों में साल की तक़सीम किसी इंसान का फ़ेअल नहीं कि इस में रद्दो बदल की गुंजाईश हो बल्कि ख़ालिक़े अरज़ व समा ने यह महकम निज़ाम रोज़े अज़ल से क़ायम फ़रमाया है इसमें कोई अपनी ख़्वाहिश और मसलेहत के पेश नज़र तबदीली नहीं कर सकता बारह महीनों से चार माह रजब ज़ीक़ादा ज़िलहिज्जा और मुहर्रम हुरमत वाले महीने हैं इनमें हर तरह का फ़ित्ना व फ़साद और जंग व क़ताल क़ितअन ममनूअ है ज़माना जाहिलयत में भी अहले अरब इन महीनों का बड़ा एहतेराम किया करते थे और अगर अपने बाप का क़ातिल भी उन्हें मिल जाता तो उसे भी कुछ न कहते किताबुल्लाह से मुराद या तो लौहे महफ़ूज़ है या कुरआन हकीम?

"ज़ालिकद दीन क़य्यमु" का मतलब यह है कि यही महकम शरीअत है या साल की तक़सीम का यही हिसाब है इससे मालूम हुआ कि शरई अहकाम की बजा आवरी में इन्हीं क़मरी महीनों का एतेबार

होगा। क़य्यम असल में क़य्यूम था फिर सैयद की तरह इसमें भी तालील हुई अहकामे इलाही से सरताबी हर वक़्त बुरी है। लेकिन इन हुरमत वाले महीनों में नाफ़रमानी बहुत ही क़बीह है इसलिए ख़ुसूसी तौर पर इन महीनों में बाज़ रहने की ताकीद फ़रमाई। नीज़ जिस तरह मुक़द्दस और मुबारक औक़ात में नेकी का ज़्यादा सवाब मिलता है और इसकी बर्कात का नुजूल दिल पर ज़्यादा होता है उसी तरह उन मक़ामात और औक़ात में नाफ़रमानी की सज़ा भी ज़्यादा होती है और तबीयते इंसानी पर इसकी नहूसत का असर भी ज़्यादा होता है।

अगर मुश्रिक इन महीनों के एहतेराम को पस पुश्त डाल दें और तुम से जंग करने पर आमादा हो जायें तो तुम भी मुत्तफ़िक़ और मुत्तहिद होकर उनके सामने सफ़ बस्ता हो जाओ। और यहां हाल वाक़ेय हुआ है वाहिद तस्नीया और जमा मुज़क्कर व मुअन्नस सब के लिए यही आता है।

हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम के अहद से साल के यह चार महीने हुरमत और इज़्ज़त वाले शुमार होते थे और उनमें लड़ाई करने की सख़्त मुमानेअत कर दी गई थी नीज़ फ़रीज़ा हज की अदायगी के लिए माह ज़िल हिज्जा की तारीख़ें मुक़र्रर थीं कुछ अर्सा बाद अहले अरब पर इस हुक्म की पाबंदी गिरां गुज़रने लगी उनका पेशा क़ज़ाक़ी रहज़नी और मार धाड़ बन कर हर गया था तीन माह तक लगातार हाथ पर हाथ धरकर बैठे रहना उनके लिए ना क़ाबिले बर्दाश्त था इसलिए उन्होंने यह तरीक़ा इख़्तेयार कर लिया कि इन महीनों में से जिसको चाहा हलाल कर लिया और उसमें जी भरकर क़त्ल व ग़ारतगरी की और इसकी जगह साल के किसी दूसरे महीने को हराम कर दिया हुरमत वाले महीनों की तादाद भी चार ही रही और उनका काम भी बन गया। नीज़ हज एक इबादत के होने के अलावा उनके लिए एक बहुत बड़ा तिजारती मेला भी था दूर दराज़ से तिजारती क़ाफ़िले भी आते जिससे उन्हें बहुत नफ़ा होता लेकिन हज का फ़रीज़ा चूंकि क़मरी साल के ज़िल हिज्जा के महीने में अदा किया जाता था इसलिए यह ऐसे मौसम में भी आ जाता जब कि सख़्त सर्दी या गर्मी होती और मौसम की इस नासाज़ गारी की वजह से उनका कारोबार मांद पड़ जाता और उन्हें दिल ख़्वाह नफ़ा न होता इस मुश्किल का हल उन्होंने यह तजवीज़ किया कि हज हमेशा मुअतदिल मौसम में अदा किया जाये इसके लिए उन्होंने हज की मुक़र्रर तारीख़ों को बदल दिया और क़मरी साल के बारह महीनों में कबीसा का एक महीना बढ़ा दिया इस तरह ३३ साल के बाद सिर्फ़ एक बार हज अपनी सहीह तारीख़ों को अदा किया जाता, इन दोनों सूरतों में चूंकि सिर्फ़ अपनी ज़ाती सहूलतें और माली मनफ़ेअतों के लिए वह अल्लाह तआला के अटल और महकम अहकाम में रद्दो बदल कर लिया करते थे इसलिए उनके इस फ़ेअल को ज़्यादती फ़िल कुफ़्र के लफ़्ज़ से ताबीर फ़रमाया।

१० हि. में जब रहमते आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हुज्जतुल विदा के लिए मक्का तशरीफ़ ले गये तो उस साल उनके दस्तूर के मुताबिक़ भी ६ और १० ज़िल हिज्जा को अदा होना क़रार पाया था। इसलिए हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः

यानी इस साल भी हज उन्हीं तारीख़ों में अदा किया गया है जो अल्लाह तआला ने अपने इल्मे अज़ली में इसके लिए मुक़र्रर फ़रमाई थीं इसमें मुसलमानों के लिए भी इबरत का दर्स है कि वह अपनी ज़ाती मसलेहतों और दूसरे वजहों के लिए अहकामे इलाही में रद्दो बदल न करें निसा का लुग़्वी मायने है किसी चीज़ को अपने वक़्त से ताख़ीर कर देना।

मेरा मक़सद तो सिर्फ़ इतना ही था कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से पहले साल के महीनों में तबदीली की जाती थी इस पर दलील के लिए मैंने इस आयते करीमा की तफ़सीर को पेश किया अवामुन्नास के फ़ायदे के लिए आयते करीमा की पूरी तफ़सीर नक़्ल कर दी सहीह बात तो यह है कि मुफ़क्किरे इस्लाम मुफ़स्सिरे कुरआन हज़रत पीर करम शाह साहब कुद्देस सिर्रहु की तफ़सीर ज़्याउल कुरआन उलेमा किराम तलबाए एज़ाम वुकला दानिश्वरों और अवामुन्नास के लिए यकसां मुफ़ीद है। मैं अपनी किताब में इसके इक़्तबासात पेश ही इसलिए करता हूं कि किसी की नज़र में मेरी किताब आ जाये और अभी तक इसने ज़ियाउल कुरआन का मुताला न किया हो तो ज़रूर मुताला करे अल्लाह तआला उसे नूरे मारफ़त अता फ़रमायेगा।

हिसाबदान हज़रात इन चीज़ों को मद्दे नज़र रखें कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की उम्र शरीफ़ ६३ बरस है आप का विसाल बारह रबीउल अव्वल में हुआ बल्कि बुज़ुर्गान दीन २ रबीउल अव्वल की रिवायत पर ज़्यादा अमल करते हैं हुज्जतुल विदाअ के विसाल से तीन माह पहले हज अपनी ख़ास तारीख़ों पर आया था।

बहरहाल जम्हूर उलेमा किराम का इजमा इसी पर है कि आपकी विलादत १२ रबीउल अव्वल को ही है १२ पर एतेराज़ करने वाले ६ रबीउल अव्वल को ही ख़ुशी का इज़हार कर दें तो हमें इन पर क्या एतेराज़ है लेकिन इनके घर तो उस दिन भी सफ़े मातम ही बिछी रहती है।

एतेराज़ की दूसरी सूरत यह थी कि एक तारीख़ को ही अगर पैदाईश भी हो और विसाल भी हो तो ग़म क्यों नहीं किया जाता सिर्फ़ ख़ुशी का इज़हार क्यों किया जाता है इसके जवाब में अल्लामा सियूती रहमतुल्लाह अलैहि फ़रमाते हैं।

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की विलादत हमारे लिए अज़ीम नेमत है और आपकी वफ़ात अज़ीम मुसीबत है लेकिन शरीअत ने नेमतों के शुक्र का इज़हार करने का हुक्म दिया है। और मुसीबतों के वक़्त सब्र व सकून और उनको पोशीदा रखने का हुक्म दिया। क्योंकि शरीअत ने बच्चे की विलादत पर ख़ुशी का इज़हार करने के लिए अक़ीक़ा का हुक्म दिया लेकिन वफ़ात पर जानवरों के ज़िबह का हुक्म नहीं दिया और न ही ऐसे कामों का हुक्म है जो ख़ुशी के मौक़े पर किये जाते हैं बल्कि मना किया गया है क्योंकि यह बेसब्री की अलामत है।

क़वानीने शरीअत इस पर दलालत करते हैं कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की विलादत की वजह से इस महीने में ख़ुशी का इज़हार करना अच्छा है लेकिन आपकी वफ़ात पर ग़म का इज़हार करना अच्छा नहीं है। इब्ने रजब रहमतुल्लाह अलैहि ने अपनी किताब में राफ़ज़ियों के यौमे आशूरा को इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की शहादत की वजह से मातम करने पर मज़म्मत करते हुए ब्यान किया।

अल्लाह तआला और उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अंबियाए किराम पर मसाइब के दिनों और उनके विसाल के दिनों को मातम करने का हुक्म नहीं दिया तो इनसे कम दर्जा वालों पर मातम क्यों कर किया जाये?

सबसे बड़ी बात बात यह है कि हमारे नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम बरज़ख़ में दुनिया की ज़िन्दगी से आला ज़िन्दगी गुज़ार रहे हैं जब आप ज़िन्दा हैं तो ग़म करने का मक़सद ही क्या है

अल्लामा सियूती रहमतुल्लाह अलैहि फ़रमाते हैं।

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं बेशक नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया अंबियाए किराम अपनी क़ब्रों में ज़िन्दा हैं वह नमाज़ अदा करते हैं।

अल्लामा सियूती रहमतुल्लाह अलैहि इस क़िस्म की कई रिवायत नक़्ल करने के बाद फ़रमाते हैं।

इन तमाम रिवायात व अहादीस से वाज़ेह हुआ कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अपने रूह व जिस्म के साथ ज़िन्दा हैं ज़मीन के अतराफ़ और मलकूत में जहां चाहें सैर करें और तसर्रुफ़ करें आपको विसाल से पहले जो हैयत हासिल थी वही अब भी हासिल है उसमें कोई तबदीली नहीं वाक़ेय हुई सिर्फ़ आप नज़रों से ग़ायब हुए हैं जैसे फ़रिश्ते नज़रों से ग़ायब हो जाते हैं आप अपने जिस्म के साथ ज़िन्दा हैं अल्लाह तआला जिसको आपके दीदार से मुशर्रफ़ करना चाहता है आपसे हिजाब उठा देता है वह आपको उसी हाल में देखता है जैसे आप ज़ाहिरी हयात में थे इसमें भी कोई अमर मानेअ नहीं और यह कहने की ज़रूरत नहीं कि आप के जिस्म को कई मिसालें अदा कर देता है और आदमी आपकी मिसालों को देखता है बल्कि आपको ज़ाहिरी तौर पर देखा जाता है।

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का नस्ब शरीफ़:

आपका नस्ब मवाहिब लदुनिया में इस तरह ब्यान किया गया है कि:

मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम बिन अब्दुल्लाह बिन अब्दुल मुत्तलिब बिन हाशिम बिन अबदे मनाफ़ बिन कुसई बिन कुलाब बिन मर्रह बिन कअब बिन लवी बिन ग़ालिब बिन फ़हर बिन मालिक बिन नज़र बिन कनाना बिन खुज़ैमा मदरिका बिन इल्यास बिन मुज़िर बिन नज़ार बिन मअद बिन अदनान।

यहां तक सिलसिला नसब में अरबाब सियर और अस्हाबे इल्म इंसाब सबका इत्तेफ़ाक़ है इससे ऊपर में कुछ इख़्तेलाफ़ है इसमें इत्तेफ़ाक़ है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम औलादे हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम से हैं और हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम और हज़रत नूह अलैहिस्सलाम और हज़रत इदरीस अलैहिस्सलाम आपके अजदाद में हैं।

वालदा का नस्ब :

आपकी वालदा माजदा का इस्मे गिरामी हज़रत आमना रज़ियल्लाहु अन्हा है इनका नस्ब भी पांचवीं दर्जा पर आपके वालिदे गिरामी के नस्ब से मिल जाता है आमना बिन्ते वहब अब्दे मनाफ़ बित ज़हरा बिन कुलाब बिन मर्रह बिन कअब बिन लवी बिन ग़ालिब बिन फ़हर।

आमना बिन्त बर्रा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की नानी बिन्त अब्दुल उज़्ज़ा बिन उसमान बिन अब्दुल दार बिन कुसई बिन कुलाब बिन मरह बिन कअब बिन लवी बिन फ़रह।

आपकी वालदा की नानी का नसब भी आपके वालिद के नस्ब से मिलता है हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की नानी बर्रह की वालदा उम्मे हबीब का नसब यह है उम्मे हबीब बिन्त असद बिन अब्दुल उज़्ज़ा बिन कुसई बिन कुलाब बिन मर्रह बिन कअब बिन लवी बिन ग़ालिब बिन फ़रह। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की नानी का नाम बर्रह और बर्रह की नानी का नाम भी बर्रह था आमना बिन्त बर्रह बिन्त उम्मे हबीब बिन्त बर्रह उम्मे हबीब की वालदा बर्रह का नस्ब भी हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के वालिद के नस्ब से मिलता है वह इस तरह है।

बर्रह बिन्त औफ़ बिन अबदे अवीज बिन कअब बिन लवी बिन ग़ालिब वग़ैरह।

यानी नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का नस्ब वालिद और वालदा दोनों जानिब से बेहतर था और इज़्ज़त के लिहाज़ से सबसे बढ़कर था।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम इकलौते थे:

आपका कोई भाई बहन नहीं थे बल्कि अपने वालिदैन करीमैन के इकलौते बेटे थे न ही आपके बाप हज़रत अब्दुल्लाह की कोई और औलाद थी और न ही आपकी वालदा हज़रत आमना की कोई औलाद थी यानी इन दोनों का यह एक ही निकाह था हज़रत अब्दुल्लाह ने भी कोई और शादी नहीं की और हज़रत आमना ने भी।

आपके वालदैन की एक जगह क़ब्रें :

आपके वालिद हज़रत अब्दुल्लाह आपकी पैदाईश से पहले ही वफ़ात पा गये हज़रत बसिलसिला तिजारत मदीना तैय्यबा गये हुए थे वहां ही रास्ते में बीमार हो गये और बनी नज्जार के पास ठहर गये और आपकी वहां ही वफ़ात हो गयी और मक़ामे अबवा में मदफून हुए। अबवा मदीना के क़रीब एक मक़ाम का नाम है। जब नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की उम्र छः साल हुई तो आपकी वालदा ने आपको लेकर बनी अदी बिन अलनज्जार के क़बीला में आयीं ग़र्ज़ यह थी कि आपकी मुलाक़ात आपके मामूओं से करायें तो वहां से वापसी पर मक्का और मदीना के दर्मियान मक़ाम अबवा में इंतक़ाल फ़रमा गईं।

इसी तरह एक मशहूर क़ौल के मुताबिक़ आपके वालिदे गिरामी और वालदा माजदा दोनों मक़ाम अबवा में मदफून हैं एक क़ौल यह भी है कि हज़रत अब्दुल्लाह मदीना तैयबा में मक़ामे नाबग़ा में मदफून हुए लेकिन ग़ालिब ख़्याल कुछ ऐसे आता है कि कई साल पहले अख़बार में ज़िक्र था कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के वालिदे गिरामी का जिस्मे अतहर मक़ाम अबवा में सहीह सलामत है किसी खुदाई के दौरान यह पता चला।

ख़्याल रहे कि इब्ने हश्शाम ने कहा अब्दुल मुत्तलिब बिन हाशिम की वालदा सलमा बिन्त अम्र नज्जार क़बीला से थीं इसलिए असल में बनी नज्जार हज़रत अब्दुल्लाह के ननिहाल थे और नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के ननिहाल भी कह दिये जाते हैं वरना हज़रत आमना नजारिया नहीं थीं।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के चचा :

आपके बारह चचा थे और तेरहवें उनके भाई आपके वालिद हज़रत अब्दुल्लाह थे हज़रत अब्दुल मुत्तलिब के तेरह बेटों के नाम यह हैं।

अब्दुल्लाह (हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के वालिद गिरामी), हारिस, अबू तालिब इनका नाम अबदे मनाफ़, ज़ुबैर उसकी कुन्नीयत अबू हारिस हमज़ा इनकी कुन्नीयत अबू अम्मारा और अबू याला अबू लहब इसका नाम अब्दुल उज्ज़ा, ग़ीदाक़, मकूम, ज़रार, अब्बास, क़सम, अब्दुल काबा, हजल इसका नाम मुग़ीरा।

सिर्फ़ दो चचा ने इस्लाम को क़बूल किया:

हज़रत हमज़ा जिनकी कुन्नीयत अबू अम्मार और अबू यअला है उन्होंने इस्लाम क़बूल किया नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, ख़ैर आमामी हमज़ा मेरे चचाओं में से बेहतर हमज़ा हैं। बदर में भी शरीक थे और अहद में भी। अहद में ही वहशी ने आपको शहीद कर दिया था आपकी उम्र ५६ साल थी।

हज़रत अब्बास की कुन्नीयत अबुल फज़्ल थी आप नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से सिर्फ़ दो या तीन साल बड़े थे कुरैश के रईस शुमार होते थे उन्होंने इस्लाम क़बूल कर लिया था इनके इस्लाम लाने के बाद नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम इनकी बहुत ताज़ीम फ़रमाते थे आपका इरशाद गिरामी है।

अब्बास मेरे चचा हैं मेरे बाप की मिस्ल हैं जिसने इन्हें तकलीफ़ पहुंचाई उसने मुझे तकलीफ़ पहुंचाई।

३३ हि. में हज़रत उसमान की ख़िलाफ़त के दौरान ८८ साल की उम्र में विसाल हुआ बक़ीअ में दफ़न हुए हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सबसे छोटे चचा यही थे सबसे बड़ा हारिस था।

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की फूफियां:

आपकी छः फूफ़ियां थी आतिका, अमीमा, बैज़ा, इनकी कुन्नीयत उम्मे हकीम, बर्रह, सफ़िया, अरवी।

सफ़िया जो जुबैर की वालदा हैं उनका इस्लाम लाना बिंल इत्तेफ़ाक़ साबित है यह ग़ज़वए खंदक़ में शरीक थीं उन्होंने एक यहूदी को भी क़त्ल कर दिया था २० हि. में हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु के दौरे ख़िलाफ़त मे ७३ साल की उम्र में आप ने वफ़ात पाई और बक़ीअ में दफ़न हुई आतिका और अरवी के इस्लामे इख़्तेलाफ़ है बाज़ के नज़दीक उन्होंने इस्लाम क़बूल किया।

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की दादियां :

हज़रत अब्दुल्लाह की वालदा फ़ातिमा बिन्त अम्र मख़ज़ूमिया और हज़रत अब्दुल मुत्तलिब की वालदा बिन्त सल्मा अम्र नज्जारिया हज़रत हाशिम की वालदा आतिका बिन्त मर्रह सलीमिया, अब्दे मनाफ़ की वालदा आतिका बिन्त फालिज सलीमिया कुसई की वालदा फ़ातिमा बिन्त सादाज़दिया कलाब की वालिदा, नअम बिन्त सरीर कनानिया, मर्रह की वालदा वख़्शिया बिन्त शैबान फ़हमिया, कअब की वालदा सलमा बिन्त महारिब, फ़हमिया लूई की वालदा वख़्शिया बिन्त मदलज कनानिया, ग़ालिब की वालदा सलमा बिन्त सअद हज़्लिया फ़हर की वालदा जंदला बिन्त हारिस जर हमया मालिकी की वालदा हिन्द बिन्त उदवान कैसिया, नज़र की वालदा बिन्त मर्रह मरियह।

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की नानीयां:

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की वालदा आमना बिन्त वहब ज़हरया रज़ियल्लाहु अन्हा। आमना रज़ियल्लाहु अन्हा की वालदा बर्रह बिन्त अब्दुल उज़्ज़ा रज़ियल्लाहु अन्हा। हज़रत आमना रज़ियल्लाहु अन्हा के बाप वहब की वालदा आतिका बिन्त औक़स सलीमिया रज़ियल्लाहु अन्हा। हज़रत आमना रज़ियल्लाहु अन्हा की वालदा बर्रह की वालदा उम्मे हबीबा या उम्मे हबीब बिन्त असद उम्मे हबीबा रज़ियल्लाहु अन्हा की वालदा बर्रह बिन्त औफ़ रज़ियल्लाहु अन्हा यह तीनों कुरैशिया हैं इस बर्रह यानी उम्मे हबीब की वालदा की वालदा क़लाबा बिन्त अलहारिस हज़लिया क़लाबा रज़ियल्लाहु अन्हा की वालदा हिन्द बिन्त यरबूअ सक़फ़िया रज़ियल्लाहु अन्हा।

रज़ाई वालदा :

आपको हज़रत हलीमा बिन्त अबी जुऐब सअदिया हवाज़निया ने दूध पिलाया और जब रज़ाअत यानी दूध पिलाने की मुद्दत ख़त्म हुई तो आपको वापस अपनी वालदा के पास लाया गया हुनैन के दिन जब यह नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास आई।

तो उनके लिए खड़े हो गये और अपनी चादर बिछा दी जिस पर यह बैठीं।

सोबिया जो अबू लहब की गुलामा थीं ने भी आपको दूध पिलाया यह वही सोबिया है जिसने अबू लहब को इशारा से जाकर बताया कि तुम्हारे भाई अब्दुल्लाह का बेटा पैदा हुआ तो उसने खुशी से अपनी उंगली से इशारा किया कि जा तू आज़ाद है और मेरे भतीजे को दूध पिला अबू लहब को मौत के बाद ख़्वाब में देखा गया उसका हाल पूछा गया तो उसने कहा कि सख़्त अज़ाब में मुब्तला हूं अलबत्ता पीर के दिन अज़ाब से राहत होती है मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की पैदाईश पर सोबिया को आज़ाद किया था।

सुबहानल्लाह काफ़िर को अज़ाब से तख़फ़ीफ़ हासिल हो जबकि उसने नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की विलादत पर सिर्फ़ भतीजा समझकर ख़ुशी का इज़्हार किया हो तो यक़ीनन मुसलमान को बुलंद मक़ाम हासिल होगा जिसने मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को नबी मानकर सैयदुल कायनात अफ़ज़लुल अंबिया समझकर ख़ुशी का इज़हार किया।

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मदीना तैयबा से भी सोबिया की तरफ़ कपड़े भेजा करते थे।

परवरिश करने वाली :

उम्मे ऐमन ने हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की परवरिश की। आप फ़रमाया करते थे उम्मे ऐमन मेरी मां के बाद मेरी मां उम्मे ऐमन है शैमा बिन्त हलीमा सअदिया ने भी अपनी मां के साथ मिलकर नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की परवरिश की।

आपके रज़ाई बहन भाई :

हज़रत हमज़ा (जो आपके चचा हैं) और अबू सलमा बिन अब्दुल असद हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के रज़ाई भाई हैं इनको भी सोबिया ने दूध पिलाया है इन दोनों को और हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को उसने अपने बेटे मरूह के साथ दूध पिलाया है अबू सुफ़ियान बिन हारिस बिन अब्दुल मुत्तलिब जो आपके चचाज़ाद भाई हैं और रज़ाई भाई भी क्योंकि इनको भी हज़रत हलीमा सअदिया ने दूध पिलाया है।

अब्दुल्लाह भी आपके रज़ाई भाई हैं क्योंकि यह हलीमा सअदिया के बेटे हैं।

आसिया औ.र हज़ाफ़ा आपकी रज़ाई बहनें हैं क्योंकि यह हलीमा सअदिया की बेटियां हैं ख़्याल रहे कि हज़ाफ़ा का मशहूर और उरफ़ी नाम शैमा था एक मर्तबा नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के लश्कर ने हवाज़न पर हमला किया तो क़ैदियों में यह शैमा भी आ गई उन्होंने सहाबा किराम को बताया कि मैं तुम्हारे नबी करीम ससल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की रज़ाई बहन हूं सहाबा किराम उनको आपके पास लाये तो उन्होंने कहा।

ऐ मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मैं तुम्हारी बहन हूं हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उन्हें मरहबा कहा और उनके लिए एक चादर बिछाई और उन्हें चादर के ऊपर बैठाया। हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की आंखों से आंसू जारी हो गये। आपने फ़रमाया अगर तुम मेरे पास रहना चाहती हो तो तुम्हें इज़्ज़त व तकरीम से रखा जायेगा और अगर तुम अपनी क़ौम की तरफ़ वापस लौटना चाहती हो तो तुम्हें वहां पहुंचा दिया जायेगा। उन्होंने कहा, मैं अपनी क़ौम के पास लौटना चाहती हूं उन्होंने उसी वक़्त इस्लाम क़बूल किया उनको हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हदिया अता फ़रमा कर

इज़्ज़त व तकरीम से उनकी क़ौम की तरफ़ वापस लौटा दिया।

फ़ायदा : नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने २५ साल की उम्र में हज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहु अन्हा से शादी की जब उनकी उम्र ४० साल थी। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने ४० साल की उम्र में ऐलाने नबुव्वत फ़रमाया ऐलान नबुव्वत के बाद १३ साल मक्का मुकर्रमा में और १० साल मदीना तैयबा में गुज़ारे और ६३ साल की उम्र में विसाल फ़रमाया।

आपकी अज़वाजे मुतहहरात :

हज़रत ख़दीजतुल कुबरा बिन्त ख़वीलद, आयशा बिन्त अबी बक़र, हफ़्सा बिन्त उमर फ़ारूक़, उम्मे हबीबा बिन्त अबू सुफ़ियान, उम्मे सलमा बिन्त अबी उमय्या और सौदा बिन्त ज़मअ रज़ियल्लाहु अन्हन यह छः अज़वाजे मुतहहरात तमाम कुरैशिया हैं।

ज़ैनब बिन्त जहश रज़ियल्लाहु अन्हा जो असद बिन खुज़ैमा के क़बीला से थीं। मैमूना बिन्त अल–हारिस हिलालिया रज़ियल्लाहु अन्हा ज़ैनब बिन्त ख़ज़ीमा हिलालिया रज़ियल्लाहु अन्हा जिनका लकब उम्मुल मसाकीन था जुबैरिया बिन्त हारिस मुस्तलक़िया रज़ियल्लाहु अन्हा यह तमाम अरबिया हैं और एक ज़ौजा मुतह्हरा ग़ैर अरबिया हैं जो बनी नुज़ैर के सरदार की बेटी हैं यह क़बीला बनी इस्राईल से हैं जिनका नाम सफ़िया बिन्त हय्यी रज़ियल्लाहु अन्हा है।

इन तमाम अज़वाज मुतह्हरात से दो का विसाल आपकी ज़ाहिरी हयात में हो गया था एक ख़दीजा बिन्त ख़वीलद रज़ियल्लाहु अन्हा और दूसरी ज़ैनब रज़ियल्लाहु अन्हा जिनका लक़ब उम्मुल मसाकीन है।

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के विसाल के वक़्त नौ अज़वाजे मुतह्हरात हयात में मौजूद थीं अज़वाज मुतह्हरात के मुख़्तसर हालात मैंने अपनी किताब में औरत का मक़ाम में तहरीर किये हैं वहां देखे जायें या मदारिजिन नबुव्वत में देखे जायें जो शैख़ अब्दुल हक़ मुहद्दिस देहलवी रहमतुल्लाह अलैहि की तसनीफ़ है।

आपकी औलाद मुतह्हरा :

आपकी चार बेटियां हैं, ज़ैनब, रुक़य्या, उम्मे कुलसूम और फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हन मैंने अपनी किताब इस्लाम में औरत का मक़ाम में चार बेटियों का सबूत शीया की किताब से पेश किया है और तमाम के मुख़्तसर हालात भी तहरीर किये हैं।

आपके तीन बेटे थे क़ासिम, इब्राहीम, अब्दुल्लाह ख्याल रहे कि तय्यब मतीब ताहिर और मुत्तहर इन्हीं के अलक़ाब थे यह कोई अलाहदा बेटे नहीं थे क़ासिम की विलादत ऐलाने नुबूवत से पहले है यह कोई दो साल की उम्र को भी नहीं पहुंचे थे कि फ़ौत हो गये इनके नाम से ही आपकी कुन्नियत अबुल क़ासिम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम है।

हज़रत ज़ैनब रज़ियल्लाहु अन्हा आपकी बड़ी बेटी हैं इनकी विलादत जब हुई उस वक़्त आपकी उम्र शरीफ़ ३० साल थी इनका निकाह इनकी ख़ाला के बेटे अबुलआस लक़ीत बिन रबीअ से हुआ उन्होंने भी इस्लाम क़बूल कर लिया था हज़रत ज़ैनब रज़ियल्लाहु अन्हा की वफ़ात हिजरत के आठवें साल हुई। इनका एक बेटा था जिसका नाम अली था वह बचपन में फ़ौत हो गया था यह बच्चा नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पीछे एक ऊटनी पर सवार था इससे गिर कर फ़ौत हो गया।

इनकी एक बेटी थी जिसका नाम अमामा था यह हज़रत फ़ातिमा ज़हरा की वफ़ात के बाद हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु के निकाह में आई।

हज़रत रुक़य्या रज़ियल्लाहु अन्हा की जब विलादत हुई तो हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की उम्र शरीफ़ उस वक़्त ३३ साल थी यह हज़रत उसमान ग़नी रज़ियल्लाहु अन्हु के निकाह में आई उन्होंने दो हिजरतें कीं यानी पहले हबशा और फिर मीदना तैयबा की तरफ़ हिजरत की जब नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम बदर में थे तो उनका विसाल हो गया।

हज़रत रुक़य्या रज़ियल्लाहु अन्हा की वफ़ात के बाद हज़रत उसमान ग़नी रज़ियल्लाहु अन्हु ने हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु की बेटी हफ़सा रज़ियल्लाहु अन्हा से निकाह करने का इरादा किया जब नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को पता चला तो आप ने हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु से फ़रमाया क्या मैं तुम्हारी बेहतर रहनुमाई न करूं? यानी तुम अपनी बेटी हफ़सा का निकाह मेरे साथ कर लो और मैं अपनी बेटी उम्मे कुलसूम का निकाह उसमान से कर देता हूं।

इस तरह हज़रत हफ़सा बिन्त उमर को नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ज़ौजा होने का शर्फ़ हासिल हो गया और उम्मे कुलसूम बिन्त नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हज़रत उसमान रज़ियल्लाहु अन्हु के निकाह में आ गई उनका निकाह ३ हि. में हुआ और वफ़ात ६ हि. में हुई हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उनकी क़ब्र के पास बैठे हुए थे और शिद्दते ग़म की वजह से आपकी आंखों से आंसू जारी थे।

हज़रत फ़ातिमा ज़हरा की विलादत हुई जब कि हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की उम्र शरीफ़ ४१ बरस थी आपका लक़ब बतूल है इनका निकाह अल्लाह की तरफ़ से बज़रिये वही हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु से हुआ उस वक़्त हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा की उम्र १५ साल साढ़े पांच माह थी और हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हा की उम्र २१ साल पांच माह थी।

हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा के तीन बेटे हज़रत हसन, हज़रत हुसैन, हज़रत मोहसिन रज़ियल्लाहु अन्हुम हुए। मोहसिन बचपन में फ़ौत हो गये। आप की दो बेटियां थी ज़ैनब और उम्मे कुलसूम रज़ियल्लाहु अन्हुमा नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की औलाद का सिलसिला हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा से ही चल रहा है यानी इमाम हसन और इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हुमा दोनों से सिलसिलए औलाद क़ायम है क्योंकि बाक़ी किसी बेटी की औलाद का सिलसिला आगे नहीं चल सका हज़रत ज़ैनब रज़ियल्लाहु अन्हा की औलाद का ज़िक्र हो चुका है और हज़रत उम्मे कुलसूम रज़ियल्लाहु अन्हा की कोई औलाद नहीं थी या बाज़ रिवायात के मुताबिक़ दो बच्चे पैदा हुए लेकिन बचपन में फ़ौत हो गये और हज़रत रुक़य्या रज़ियल्लाहु अन्हा का एक हमल साक़ित हो गया था और एक बच्चा पैदा हुआ लेकिन वह भी दो साल की उम्र में फ़ौत हो गया।

हज़रत अब्दुल्लाह इब्नुल नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम बचपन में मक्का में फ़ौत हो गये उनकी पैदाईश ऐलाने नबुव्वत से पहले हुई या बाद में इसमें मुख़्तालिफ़ अक़वाल हैं उनके ही तय्यब व ताहिर लक़ब हैं।

तंबीह :

हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की यह तमाम औलाद हज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहु अन्हा से

है किसी और ज़ौजा मुतह्हरा से आपकी कोई औलाद नहीं है हज़रत इब्राहीम इब्नुन नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम आपकी गुलामा (लौंडी) मारिया क़बतिया से हैं उनकी पैदाईश ज़िल हिज्जा ८ हि. में हुई आपकी पैदाईश के सातवें दिन हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने दो दुंबे बतौर अक़ीक़ा ज़िबह फ़रमाये। अबू हिंद ने आप रज़ियल्लाहु अन्हु के बाल तराशे, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उसी दिन आप का नाम अपने दादा के नाम पर इब्राहीम रखा और बालों की मिक़दार चांदी सदक़ा की बाल ज़मीन में दफ़न कर दिये। इब्राहीम मदीना तय्यबा के अतराफ़ में एक लुहार की ज़ौजा के ज़ेरे परवरिश थे। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अपने बेटे को मिलने के लिए जाते थे साथ बाज़ सहाबा किराम भी मौजूद होते। आप बच्चा से प्यार व मुहब्बत करके वापस आ जाते सत्तर या इससे कुछ ज़्यादा दिन ज़िन्दा रहने बाद फ़ौत हो गये। बक़ीअ में दफ़न हुए इनकी क़ब्र पर पानी छिड़का गया और एक पत्थर बतौर निशान लगाया गया आपकी वफ़ात पर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फ़रमा रहे थे।

ऐ इब्राहीम हम तुम्हारी मौत पर ग़मज़दा हैं आंखें आंसू बहा रही हैं और दिल ग़मनाक है।

मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तमाम अंबियाए किराम से अफ़ज़लः

यह रसूल हैं कि हम ने इनमें एक को दूसरे पर अफ़ज़ल किया इनमें से किसी से कलाम फ़रमाया और कोई वह है जिसे सब पर दर्जों बुलंद किया।

इस आयते करीमा की तफ़सीर में अल्लामा राज़ी रहमतुल्लाह अलैहि फ़रमाते हैं कि इस पर उम्मत का इजमाअ है कि बाज़ अंबिया बाज़ पर अफ़ज़ल हैं और मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तमाम पर अफ़ज़ल हैं आपकी अफ़ज़लियत कई वजह से साबित है।

अल्लाह तआला ने आपकी शान में फ़रमायाः

और हमने नहीं भेजा आपको मगर सब जहानों के लिए रहमत बनाकर।

जब आप तमाम जहानों के लिए रहमत हैं तो यक़ीनी तौर पर आप तमाम जहानों से अफ़ज़ल हैं यानी आप अफ़ज़लुल मख़्लूक़ात हैं।

ख़ुदा के बाद आपका ही मक़ाम बुलंद व बाला है मुख़्तसर यही बात है।

रब तआला ने फ़रमायाः

और हमने तुम्हारे लिए तुम्हारा ज़िक्र बुलंद किया।

मालिकुल मुल्क ने अपने ज़िक्र के साथ नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के ज़िक्र को मुत्तसिल किया कलिमा शहादत में, अज़ान में और तशहहुद वग़ैरह में।

और बाक़ी तमाम अंबिया किराम का ज़िक्र इस तरह नहीं लिहाज़ा इससे साबित हुआ कि आप अफ़ज़लुल अंबिया हैं।

अल्लाह तआला ने आपकी इताअत को अपनी इताअत के साथ मिलाया और फ़रमाया।

जिसने रसूल का हुक्म माना बेशक उसने अल्लाह तआला का हुक्म माना।

आपकी बैयत को रब तआला ने अपनी बैयत क़रार दिया और फ़रमाया।

बेशक वह जो तुम्हारी बैयत करते हैं वह तो अल्लाह तआला ही से बैयत करते हैं इनके हाथों पर अल्लाह तआला का दस्ते क़ुदरत है और आपकी इज़्ज़त को अल्लाह तआला ने अपनी इज़्ज़त के साथ ज़िक्र फ़रमाया।

और इज़्ज़त तो अल्लाह तआला और उसके रसूल और मुसलमानों के लिए है। और आपकी रज़ा को रब्बे कुद्दूस ने अपनी रज़ा के साथ ज़िक्र फ़रमाया।

और अल्लाह और उसके रसूल का हक़ ज़ायद है कि इन्हें राज़ी करें। आपके बुलाने पर हाज़िर होने को अपने बुलाने पर हाज़िर होने के साथ ज़िक्र फ़रमाया।

ऐ ईमान वालो अल्लाह तआला और उसके रसूल के बुलाने पर हाज़िर हो। यह अज़मत सिर्फ़ नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को ही हासिल है। दूसरे अंबियाए किराम को हासिल नहीं।

अल्लाह तआला ने हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को हुक्म दिया कि आप कुरआन पाक की हर सूरः से चैलेंज करें, कौन शख़्स है जो कुरआन पाक की सूरः जैसी सूरः बनाकर लाये। तो इस जैसी सूरः तो ले आओ। सबसे छोटी सूरः कौसर है जिसमें तीन आयतें हैं तो गोया अल्लाह तआला ने आपके ज़रिये हर तीन आयतों से चैलेंज किया लेकिन वह लोग मुक़ाबला करने से आजिज़ आ गये तो जब कुरआन पाक में छः हज़ार छः सौ छियासट आयात हैं तो हर तीन तीन आयतें जब मोजिज़ा हैं तो सिर्फ़ कुरआन पाक ही दो हज़ार दो सौ बाईस मोजिज़ात पर मुश्तमिल है बाक़ी मोजिज़ात अलाहदा हैं और जब मूसा अलैहिस्सलाम को अल्लाह तआला ने नौ मोजिज़ात अता किये हैं तो वाज़ेह हुआ कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को कसीर मोजिज़ात की वजह से तमाम अंबियाए किराम पर अफ़ज़लियत हासिल है।

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का मोजिज़ा यानी कुरआन पाक तमाम अंबियाए किराम के मोजिज़ात से अफ़ज़ल है लिहाज़ा हमारे रसूल पाक का तमाम अंबियाए किराम से अफ़ज़ल होना भी साबित है चूंकि कुरआन पाक को तमाम कलामों में अव्वलियत हासिल है जैसा आदम अलैहिस्सलाम को तमाम इंसानों पर अव्वलियत हासिल है और यह भी वाज़ेह है कि लिबास आला हो तो लिबास वाले को शान हासिल होती है तो ऐसा क्यों न हो कि मोजिज़ा आला हो तो साहबे मोजिज़ा भी आला हो।

बाक़ी तमाम अंबियाए किराम के मोजिज़ात फ़ानी थे अंबियाए किराम अलैहिमुस्सलाम जब दुनिया से तशरीफ़ ले गये तो उनके मोजिज़ात भी साथ ही ख़त्म हो गये लेकिन हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का मोजिज़ा कुरआन पाक हमेशा के लिए बाक़ी है। यक़ीनी बात है कि बाक़ी रहने वाली चीज़ आला है फ़ना होने वाली से लिहाज़ा जिसको वह मोजिज़ा मिला जो बाक़ी रहने वाला है तो उस ज़ात को भी बुलंद मर्तबा मानना ज़रूरी है।

तमाम अंबियाए किराम को जो कमालात इनफ़रादी तौर पर हासिल थे वह तमाम के तमाम नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को हासिल थे इसलिए आप तमाम अंबियाए किराम से अफ़ज़ल हैं अल्लाह तआला ने अंबियाए किराम के अहवाल ज़िक्र करने के बाद फ़रमाया।

यह हैं जिनको अल्लाह तआला ने हिदायत की तो तुम उनकी राह पर चलो।

इस आयते क़रीमा में नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को पहले अंबियाए किराम की इक़्तिदा का हुक्म दिया गया है अब यह देखना है कि इसका मतलब क्या है? अगर यह कहा जाए कि आपको हुक्म दिया गया है कि आप पहले अंबियाए किराम की उसूले दीन में इक़्तेदा करें तो यह दुरुस्त नहीं। क्योंकि यह तलक़ीद है और उसूले दीन में तक़लीद नहीं और अगर यह कहा जाए कि आपको पहले अंबियाए किराम की फ़रूअे दीन में इक़्तेदा का हुक्म दिया गया है तो यह भी दुरुस्त नहीं क्योंकि आप

की शरीअत पहली शरीयतों की नासिख़ है तो इक़्तेदा का और कोई मतलब नहीं सिवाए इसके कि इससे मुराद अच्छे अख़लाक़ और कमालात हों। गोया कि रब तआला ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को फ़रमाया हम आपको अंबियाए किराम अलैहिमुस्सलाम के अहवाल व आदात पर मुत्तला करते हैं आप उनके अच्छे और हुस्ने अख़लाक़ व आदात को अपने लिए पसंद फ़रमा लें और उनकी उन आदात में इक़्तेदा करें।

इस बहस से वाज़ेह हुआ कि तमाम अच्छे आदात जो तमाम अंबियाए किराम को मुतफ़र्रिक़ तौर पर हासिल थीं वह आपको इज्तेमाई तौर पर हुईं लिहाज़ा आप तमाम अंबियाए किराम से अफ़ज़ल हैं।

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को तमाम मख़लूक़ की तरफ़ रसूल बनाकर भेजा गया रब तआला ने फ़रमाया।

और ऐ महबूब हम ने आपको नहीं भेजा मगर तमाम लोगों के लिए ख़ुशख़बरी देने वाला और डराने वाला रसूल बनाकर।

जितने ज़्यादा उम्मती हों उतनी ही नबी पर मशक़्क़त ज़्यादा होती है नेकियों के कामों में जितनी मशक़्क़त ज़्यादा बर्दाश्त की जाये उसी क़दर मरातिब बुलंद होते हैं और ख़ुसूसन जब इंसान को माल हासिल न हों दोस्त यार मददगार न हो और फिर तमाम लोगों को कहे।

ऐ काफ़िरो! यह सुनकर लोग दुश्मन बन जायें तो यह कितना ही ख़ौफ़ का मक़ाम है जो बहुत बड़ी मशक़्क़त का ज़रिया है और यह भी ख्याल रहे कि मूसा अलैहिस्सलाम को जब नबुव्वत अता करके भेजा गया तो आप के दुश्मन सिर्फ़ फ़िरऔन और फ़िरऔन की क़ौम के लोग थे बनी इस्राईल आपका साथ देने वाले थे लेकिन नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के तमाम लोग इब्तेदाई तौर पर मुख़ालिफ़ थे यही वजह है कि आपको अल्लाह तआला ने तमाम अंबियाए किराम पर फ़ज़ीलत दी। और ख़्याल रहे कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को हुक्म दिया गया कि आप अपनी सारी उम्र रात दिन के तवील औक़ात में इंसानों और जिन्नों को अल्लाह तआला के अहकाम पहुंचायें और ख़ुसूसन ऐसे हालात में उनकी आदत के मुताबिक़ हालात बिल्कुल वाज़ेह थे कि यह तो आपसे दुश्मनी करेंगे आपको तकलीफ़ पहुचायेंगे। मआज़ल्लाह आपको हक़ीर समझेंगे इन हालात के होते हुए भी नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अल्लाह तआला का हुक्म मानने में कोई ताख़ीर नहीं की बल्कि जल्दी ही अल्लाह तआला के अहकाम आपने पहुंचाये और अज़ीम मशक़्क़तें आपने बर्दाश्त कीं अज़ीम मशक़्क़त बर्दाश्त करना अफ़ज़लियत का सबब है क्योंकि अल्लाह तआला ने फ़तहे मक्का से पहले ईमान लाने वाले सहाबा किराम के बाद वालों से अफ़ज़लियत ब्यान की इसकी वजह यही है कि उन्होंने तकालीफ़ बर्दाश्त कीं इसी वजह से वह अफ़ज़ल हैं।

इरशाद बारी तआला है।

तुम में बराबर नहीं वह जिन्होंने फ़तहे मक्का से क़ब्ल ख़र्च किया और जिहाद किया। सहाबा किराम जिन्होंने ज़्यादा मशक़्क़तें बर्दाश्त कीं जब वह दूसरों से ज़्यादा अफ़ज़ल हैं तो यक़ीनन वह नबी जिन्होंने सब अंबियाए किराम से ज़्यादा तकालीफ़ उठाईं सब अंबियाए किराम से ज़्यादा फ़ज़ीलत के मालिक हैं।

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का दीन तमाम दीनों से अफ़ज़ल है तो आपका सब अंबिया से अफ़ज़ल होना भी ज़रूरी है चूंकि अल्लाह तआला ने आपके दीन को दूसरे तमाम दीनों के लिए मनसूख़

करने वाला बनाया तो यह बात ज़ाहिर है कि जो दीन दूसरे दीनों को मनसूख़ कर दे वह अफ़ज़ल है और आपके दीन की अफ़ज़लियत आपके इस कौल से भी साबित है।

जिस शख़्स ने इस्लाम में अच्छा तरीक़ा ईजाद किया तो उसको इस ईजाद पर अज्र हासिल होगा और क़यामत तक जितने इस पर अमल करेंगे उनके आमाल के मुताबिक़ अज्र भी उसे मिलेगा।

जब आपके दीन में अज्र व सवाब ज़्यादा हैं और ख़ुसूसन आपके दीन में अच्छा तरीक़ा ईजाद करने वाले को ज़्यादा सवाब हासिल होता है जो दूसरे दीनों में इस तरह नहीं तो इससे ज़रूरी ही हो गया कि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को तमाम अंबियाए किराम पर अफ़ज़लियत हासिल हो।

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की उम्मत तमाम उम्मतों से अफ़ज़ल है तो यक़ीनन आपको भी सब अंबियाए किराम पर अफ़ज़लियत हासिल है आपकी उम्मत की शान को रब तआला ने इन अलफ़ाज़े मुबारका से ब्यान फ़रमाया।

तुम बेहतर हो उन सब उम्मतों में जो लोगों में ज़ाहिर हुई।

आपकी उम्मत को बेहतरी और फ़ज़ीलत क्यों हासिल है? इसलिए कि यह नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के ताबेअ हैं और आपकी ताबेदारी की वजह से ही दूसरी उम्मतों से अफ़ज़ल और अल्लाह तआला की महबूब है।

रब तआला ने फ़रमाया है।

ऐ महबूब तुम फ़रमाओ कि लोगो अगर तुम अल्लाह तआला से मुहब्बत रखते हो तो मेरे फ़रमाबर्दार हो जाओ अल्लाह तआला तुम्हें दोस्त रखेगा।

जब आपकी उम्मत को आपकी ताबेदारी की वजह से अफ़ज़लियत और अल्लाह तआला की मुहब्बत और दोस्ती हासिल हो गई तो आपकी ज़ात का भी सब अंबियाए किराम से अफ़ज़ल होना साबित हो गया।

नीज़ नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तमाम जिन्नों और इंसानों के नबी बनकर तशरीफ़ लाये तो आपको अज्र व सवाब ज़्यादा हासिल हुआ इंसान के मदारिज की बुलंदी अज्र व सवाब की ज़्यादती पर है क्योंकि जितने लोग आपकी दावत को क़बूल करने वाले ज़्यादा होंगे उसी क़दर आप के मरातिब बुलंद होंगे यह शान दूसरे अंबियाए किराम को हासिल नहीं।

फ़ायदा : हज़रत इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि उन्होंने कहा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया लोगो में से क़यामत के दिन मेरे नज़दीक वह शख़्स होगा जो मुझपर ज़्यादा दुरूद शरीफ़ पढ़ने वाला होगा।

इस हदीस की शरह में मुल्ला अली क़ारी रहमतुल्लाह अलैहि फ़रमाते हैं:

ऊला का मायने है अक़रब। एक तो इसका ज़ाहिरी मायने है कि आप पर ज़्यादा दुरूद पढ़ने वाले को बनिसबत दूसरे लोगों के जन्नत में क़रीब मक़ाम हासिल होगा और दूसरा मतलब यह भी है कि वह शख़्स मेरी ख़ुसूसी शफ़ाअत का ज़्यादा मुस्तहिक़ होगा। नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर ज़्यादा दुरूद पाक वही शख़्स पढ़ेगा जिसके दिल में आप की ताज़ीम पाई जायेगी और जिस शख़्स को आपकी अज़मत का ख़्याल होगा वह आपकी ताबेदारी भी करेगा आपकी ताबेदारी वही शख़्स कामिल तौर पर करता है जिसे मुहब्बते कामिला हासिल होती है।

जिसे नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से कामिल मुहब्बत हासिल होती है वही दर हक़ीक़त अल्लाह तआला का महबूब होता है रब तआला ने फ़रमाया।

ऐ महबूब आप फ़रमा दें कि लोगो अगर तुम अल्लाह तआला से मुहब्बत रखते हो तो मेरे फ़रमाबर्दार हो जाओ अल्लाह तआला तुम्हें दोस्त रखेगा और तुम्हारे गुनाह बख़्श देगा।

सुबहानल्लाह नतीजा कितना वाज़ेह है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से मुहब्बत के बग़ैर रब तआला से मुहब्बत नहीं हो सकती और न ही रब तआला को उससे मुहब्बत होगी सिर्फ़ नाम से तौहीदी कहलाने से कुछ नहीं बनता अगर तुझे अपनी आक़िबत संवारनी है तो सैयदुल अंबिया का गुलाम बन जा। तू यह भी कहता रहे कि नबी करीम को इल्म ग़ैब नहीं था वह दीवार के पीछे का इल्म नहीं रखते थे उनका मर्तबा हमारे बड़े भाई जैसा था किसी इख़्तेयार के मालिक नहीं थे वह तो हम जैसे बशर थे इस क़िस्म के लग़ियात बेहूदा ज़बान से निकलता है और फिर यह भी कहे कि हमें भी नबी करीम से मुहब्बत है तेरी इस बात पर कौन एतेबार करे।

आज ले उनकी पनाह आज मदद मांग उनसे कल न मानेंगे क़यामत में अगर मान गया।

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ख़ातिमन नबीईन हैं जब आपके ज़रिये सिलसिला नबुव्वत ख़त्म हो गया यानी आपकी आमद से अंबियाए किराम की तशरीफ़ आवरी मनसूख़ हो गई तो यक़ीनी बात है कि वह दूसरों की आमद का नासिख़ बन सकता है जो सबसे अफ़ज़ल हो यह अक़्ल के ख़िलाफ़ है कि कम मर्तबा वाला आला की आमद को मनसूख़ कर दे।

बाज़ अंबियाए किराम को बाज़ पर मोजिज़ात की वजह से फ़ज़ीलत हासिल है कसरते मोजिज़ात उनकी सदाक़त और बुज़ुर्गी पर दलालत करते हैं जब नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को तमाम अंबियाए किराम से ज़्यादा मोजिज़ात हासिल हैं तो आपको फ़ज़ीलत भी सब पर ज़्यादा हासिल है जैसा कि पहले ब्यान किया जा चुका है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का बज़ाहिर एक मोजिज़ा कुरआन पाक ही तीन हज़ार से ज़ायद मोजिज़ात पर मुश्तमिल है।

फिर बाज़ मोजिज़ात आपको वह हासिल हैं जो आपकी कुदरत पर दलालत करते हैं जैसे थोड़े तआम से कसीर मख़लूक़ को सैर कर दिया और थोड़े पानी से कसीर लोगों को सैराब कर दिया।

और बाज़ मोजिज़ात आपके उलूम से मुताल्लिक़ हैं जैसे की ग़ैबी ख़बरें।

काश कि मेरी बिरादरी के मेरे प्यारे जुहाल को भी यह समझ में आ जाता कि ग़ैबी ख़बरें देना हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का मोजिज़ा है आपके मोजिज़ात का इंकार तो काफ़िर भी नहीं कर सकते थे।

आपके बाज़ मोजिज़ात वह हैं जो आपकी ज़ात से मुताल्लिक़ हैं तमाम अशराफ़े अरब से आप आला हस्बे व नसब के मालिक हैं शुजाअत, अख़लाक़े करीमा, बुर्दबारी, वादा की वफ़ा, फ़साहत व बलाग़त और सख़ावत इन तमाम औसाफ़ में नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का कोई सानी नहीं।

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया।

आदम अलैहिस्सलाम और उनके मा सिवा क़यामत के दिन मेरे झंडे के नीचे होंगे इससे वाज़ेह हुआ कि आप को आदम अलैहिस्सलाम और उनकी औलाद पर अफ़ज़लियत हासिल है।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया।

मैं औलादे आदम का सरदार हूं मुझे इस पर कोई फ़ख़ नहीं।

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का और इरशादे गिरामी है।

अंबियाए किराम में से कोई एक भी जन्नत में उस वक़्त तक दाख़िल नहीं होगा जब तक मैं नहीं दाख़िल हूंगा और तमाम उम्मतों में से कोई एक भी उस वक़्त तक जन्नत में दाख़िल नहीं होगी जब तक मेरी उम्मत दाख़िल नहीं होगी।

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु ने रिवायत किया रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया।

जब लोगों को क़यामत के दिन उठाया जायेगा सबसे पहले मैं ही क़ब्र से बाहर आऊंगा जब सब लोग आयेंगे तो मैं ही इनसे ख़िताब करूंगा जब लोग ना उम्मीद हो जायेंगे तो मैं ही उनको बशारत दूंगा लिवाईल हम्द (ख़ुसूसी अज़मत वाले झंडे का नाम) मेरे हाथ में होगा तमाम औलादे आदम पर रब तआला के हां मैं ही मुकर्रम हूंगा मुझे इस पर कोई फख़ नहीं।

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा से मरवी है कि सहाबा किराम में से कुछ लोग बैठ कर तज़किरा कर रहे थे कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उनका कलाम सुना बाज़ ने ताज्जुब करते हुए कहा बेशक अल्लाह तआला ने इब्राहीम अलैहिस्सलाम को ख़लील बनाया। और बाज़ ने कहा मूसा अलैहिस्सलाम के कलाम पर और ज़्यादा ताज्जुब है जिनको अल्लाह तआला ने कलीम बनाया। कुछ और ने कहा ईसा अलैहिस्सलाम कलिमतुल्लाह और रूहुल्लाह हैं बाज़ और हज़रात ने कहा आदम अलैहिस्सलाम सफ़ीउल्लाह हैं इतने में नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तशरीफ़ लाये और फ़रमाया मैंने तुम्हारा कलाम सुना और तुम्हारे दलायल सुने बेशक यह हक़ीक़त है कि इब्राहीम ख़लीलुल्लाह हैं मूसा अलैहिस्सलाम कलीमुल्लाह हैं वाक़ई ऐसा ही है और ईसा अलैहिस्सलाम रुहुल्लाह हैं यक़ीनन ऐसा ही है आदम अलैहिस्सलाम सफ़ीउल्लाह हैं हां यही बात है।

ख़बरदार मैं अल्लाह तआला का हबीब हूं मुझे इस पर कोई फ़ख़ नहीं क़यामत के दिन लिवाईल हम्द मैं ही उठाने वाला हूंगा मुझे इस पर कोई फख़ नहीं क़यामत के दिन सबसे पहले मैं ही शफ़ाअत करने वाला हूंगा और सबसे पहले मेरी ही शफ़ाअत को क़बूल किया जायेगा और मुझे इस पर कोई फख़ नहीं और क़यामत के दिन सबसे पहले जन्नत के दरवाज़े को मैं ही खटाखटाऊंगा और मेरे लिए दरवाज़ा खोला जायेगा मैं उसमें दाख़िल हूंगा और मेरे साथ ग़रीब मुसलमान होंगे मुझे इस पर कोई फख़ नहीं तमाम पहले और पिछले लोगों से मैं ज़्यादा ही मुकर्रम हूंगा मुझे इस पर कोई फ़ख़ नहीं।

यह तमाम अहादीस जिनको ज़िक्र किया गया है रोज़े रौशन की तरह नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की अफ़ज़लियत पर दलालत कर रही हैं।

बैहक़ी ने फ़ज़ायले सहाबा की बहस में ज़िक्र किया है कि एक मर्तबा हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु दूर से नज़र आए तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया यह शख़्स ग़रीबों का सरदार है तो हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा ने अर्ज़ किया क्या आप ग़रीबों के सरदार नहीं तो आपने फ़रमाया।

मैं तो तमाम जहानों का सरदार हूं वह ग़रीबों के सरदार हैं इससे वाज़ेह हुआ कि तमाम जहानों में अंबियाए किराम भी हैं लिहाज़ा आपको अंबियाए किराम पर सियादत फ़ज़ीलत और बरतरी हासिल है।

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की अफ़ज़लियत को मुहम्मद बिन ईसा हकीम तिर्मिज़ी रहमतुल्लाह अलैहि ने एक मिसाल से इस तरह ब्यान किया कि हर अमीर को अपनी रअईयत की मिक़दार पर मशक़्क़त बर्दाश्त करनी पड़ती है अगर एक शख़्स बस्ती का अमीर हो तो उसे मशक़्क़त उस बस्ती के रहने वाले लोगों की मिक़दार में उठानी पड़ेगी और उनकी ज़रूरियात का लिहाज़ रखना होगा और अगर एक शख़्स रूए ज़मीन का मश्रिक़ व मग़्रिब तक हाकिम बना दिया जाये तो उसे बनिसबत एक बस्ती या एक इलाक़े के हाकिम ज़्यादा माल और ज़ख़ायर की ज़रूरत होगी क्योंकि उसको बहुत ही ज़्यादा लोगों की ज़रूरियात को पूरा करना है और उनके इंतज़ामात करने हैं।

इसी तरह अगर एक रसूल को एक क़ौम की तरफ़ भेजा जाये तो उसे तौहीद के ख़ज़ाने और मारफ़त के जवाहर उसी मिक़दार में दिये जाते है क्योंकि जितनी मिक़दार रिसालत की है यानी जितने उम्मती होंगे उसी मिक़दार में ख़ज़ानए तौहीद और जवाहरे मारफ़त की ज़रूरत होगी और अगर किसी रसूल को एक इलाक़ा में रसूल बनाकर भेजा गया तो उस रसूल को अपने उम्मतियों के मुताबिक़ ख़ज़ानए तौहीद और जवाहरे मारफ़त की ज़रूरत होगी।

अगर किसी ज़ात को तमाम अहले मग़्रिब व मश्रिक़ और तमाम जिन्नों और इंसानों का रसूल बनाया गया हो तो यक़ीनन उसे उसकी रिसालत की वुसअत के पेशे नज़र रूहानी खज़ाने यानी मारफ़त के जवाहर और तौहीद के ख़ज़ाने भी वसीअ तर अता होंगे ताकि उनकी मिक़दार उम्मत के मुताबिक़ हो सके।

तमाम अंबियाए किराम को इतनी वसी नबुव्वत नहीं अता की गई जितनी कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को अता हुई क्योंकि हर नबी को किसी क़ौम किसी इलाक़े का नबी बनाया गया लेकिन हबीब पाक को सारी कायनात का नबी बनाया गया।

जब यह साबित हो गया कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की नबुव्वत वसी तर है यक़ीनन यह भी वाज़ेह हो गया कि आप को हिकमत और इल्म के वह ख़ज़ाने अता किये गये जो आपसे पहले किसी एक को भी अता नहीं किये गये अल्लाह तआला ने इरशाद फ़रमाया।

वही फ़रमाई अपने बंदे को जो वही फ़रमाई।

अल्लामा इस्माईल हक़्क़ी रहमतुल्लाह अलैहि साहबे रूहुल ब्यान फ़रमाते हैं हज़रत जाफ़र सादिक़ रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया कि अल्लाह तआला ने अपने बंदे को वही फ़रमाई जो वही फ़रमाई यह वही बग़ैर वास्ता के थी क्योंकि अल्लाह तआला और उसके हबीब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के दर्मियान कोई वास्ता न था उस वही का ज़िक्र है जो अल्लाह तआला और उसके रसूल के दर्मियान राज़ हैं इन असरार पर किसी और को इत्तेला नहीं। अल्लाह तआला ने यह राज़ तमाम मख़लूक़ से मख़्फ़ी रखे किसी को नहीं बताया कि वही क्या थी क्योंकि यह मुहिब्ब और महबूब के राज़ थे मुहिब्ब और महबूब अपने दर्मियान मख़्फ़ी राज़ों पर दूसरों को मुत्तला नहीं करते।

यानी अल्लाह तआला और उसके हबीब के दर्मियान वह राज़ थे जिन पर किरामान कातिबीन भी मुत्तला नहीं थे। और फ़साहत में भी नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का कोई सानी नहीं था नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अपने ख़ुसूसी इनामात का तज़किरा करते हुए फ़रमाते हैं मुझे जवामिउल किल्म अता किये गये हैं यानी मुख़्तसर कलाम जो कसीर मतालिब को हावी हो वह जवामिउल

क़िल्म कहलाते हैं यह नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का ख़ास्सा है जो किसी को अता नहीं हुआ।

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को जो किताब (कुरआन मजीद) अता की गई वह सब किताबों से अफ़ज़ल है और आपकी उम्मत तमाम उम्मतों से अफ़ज़ल है इन तमाम वजहों के पेशे नज़र हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की अफ़ज़लियत तमाम अंबियाए किराम पर ज़ाहिर व अयां हो गई।

मुहम्मद बिन हकीम तिर्मिज़ी रहमतुल्लाह अलैहि ने किताब अल–नवादिर में ज़िक्र किया कि हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से रिवायत करते हैं बेशक आप ने फ़रमाया।

बेशक अल्लाह तआला ने इब्राहीम अलैहिस्सलाम को ख़लील बनाया और मूसा अलैहिस्सलाम को नजी और मुझे हबीब बनाया फिर रब तआला ने फ़रमाया कि मुझे क़सम है अपनी इज़्ज़त की और क़सम है मुझे अपने जलाल की मैं अपने हबीब को अपने ख़लील और अपने नजी पर तरजीह दे रहा हूं।

जब रब तआला ने क़सम उठाकर अपने ख़लील और अपने नजी पर अपने हबीब की बरतरी को ब्यान फ़रमा दिया तो अब समझने में मुश्किल नहीं रही कि आप ही अफ़ज़लुल अंबिया हैं।

बुख़ारी और मुस्लिम में अमामा बिन मुनब्बह रहमतुल्लाह अलैहि से रिवायत ज़िक्र की गई उन्होंने अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत किया रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया मेरी मिसाल और मुझ से पहले अंबियाएकिराम की मिसाल ऐसी है जैसे किसी शख़्स ने कोई मकान बनाया बहुत हसीन व जमील बनाया और मुकम्मल बनाया लेकिन उसके कोनों में से एक कोने में एक ईट की जगह को छोड़ दिया लोगों ने (उस घर को देखने के लिए) इसमें चक्कर लगाना शुरू किया और वह इस की तामीर पर ताज्जुब करने लगे (कि बहुत हसीन व जमील और मुकम्मल तौर पर बनाया गया) और कहने लगे कि तुमने यहां एक ईट क्यों नहीं लगाई कि यह घर मुकम्मल हो जाता हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया वह ईट में ही था यानी अल्लाह तआला ने क़सरे नबुव्वत शानदार हसीन व जमील बनाया लेकिन एक नबी के आने की जगह को छोड़ दिया लोग उसके मुन्तज़िर थे कि वह ख़ातिमन नबीईन भी आ जायें ताकि क़सरे नबुव्वत की बाक़ी जगह मुकम्मल हो जाये इस तरह क़सरे नबुव्वत मुकम्मल होगा तो मैं ने आकर इस क़सरे नबुव्वत की तकमील की।

अब वाज़ेह हुआ कि जिस ज़ात के बग़ैर क़सरे नबुव्वत ना मुकम्मल था और उस ज़ात ने आकर इसे मुकम्मल किया वह ज़ात ही सबसे अफ़ज़ल है वह मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हैं जो सैयदुल अंबिया हैं।

अल्लाह तआला ने अंबियाए किराम अलैहिमुस्सलाम में से अगर किसी को निदा की तो ज़ाती नाम से जैसे फ़रमाया।

ऐ आदम! ठहर जाओ।

हमने उसे पुकारा यानी ऐ इब्राहीम।

ऐ मूसा अलैहिस्सलाम बेशक मैं तेरा रब हूं।

लेकिन हमारे नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को ज़ाती नाम से कहीं नहीं पुकारा यानी मुहम्मद नहीं कहा बल्कि ऐ नबी और ऐ रसूल इस क़िस्म के सिफ़ाती नामों से पुकारा जो आपकी

अफ़ज़लियत पर वाज़ेह दलील है।

ख़्याल रहे कि राक़िम बग़ैर ज़रूरते शरई वग़ैरह के या मुहम्मद का इस वजह से क़ायल नहीं क्योंकि इसमें वह अदब नहीं जो या रसूलल्लाह, या नबीअल्लाह, या हबीबल्लाह और इस क़िस्म के अल्फ़ाज़े मुबारका में है इसलिए या अल्लाह या मुहम्मद के बजाए या अल्लाह या रसूलल्लाह के क़त्बे लगाये जायें।

राक़िम के नज़दीक नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की अफ़ज़लियत की बीसवीं वजह यह है कि आप को जिस तरह के असहाब मिले।

अबू बकर सिद्दीक़, उमर फ़ारूक़, उस्मान, अली मुर्तज़ा रज़ियल्लाहु अन्हुम ऐसे असहाब किसी और नबी को नहीं मिले जैसे हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के तमाम सहाबा किराम आप पर जान निसार थे ऐसे किसी और के न थे इस लिहाज़ पर भी आप तमाम अंबियाए किराम से अफ़ज़ल हैं।

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अल्लाह तआला के ख़ज़ाने तक़सीम करते हैं:

हज़रत माविया रज़ियल्लाहु अन्हु से मरवी है रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया।

अल्लाह तआला जिस शख़्स के साथ भलाई का इरादा फ़रमाता है उसे दीन की समझ अता फ़रमा देता है बेशक मैं तक़सीम करने वाला हूं और अल्लाह तआला अता फ़रमाता है।

इस हदीस पाक की शरह शैख़ अब्दुल हक़ मुहद्दिस देहलवी रहमतुल्लाह अलैहि अशअतुल लमआत में तहरीर फ़रमाते हैं।

नहीं हूं मैं मगर तक़सीम करने वाला और ख़ुदा देता है जिस किसी को ख़ुदा देता है जो चाहे देता है ख़्वाह वह फ़िक़ह का इल्म और उलूम दीनिया की समझ हो या इसके बग़ैर जो भी रब तआला देता है मैं ही तक़सीम करता हूं।

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और तमाम अंबियाए किराम अलैहिमुस्सलाम क़ब्र की तंगी से महफ़ूज़:

क़ब्र के मामूली झिझोंड़ने से कोई शख़्स भी महफ़ूज़ नहीं ख़्वाह कितना ही मुत्तक़ी परहेज़गार न हो सिवाए अंबियाए किराम के।

यानी अंबियाए किराम अलैहिमुस्सलाम को अल्लाह तआला ने यह इम्तयाज़ी शान अता फ़रमाई है कि वह क़ब्र की तंगी से महफ़ूज़ हैं।

नबी करीम की मुहब्बत के बग़ैर ईमान नहीं:

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु से मरवी है रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया।

तुम में से कोई (हर एक) उस वक़्त तक मोमिन नहीं हो सकता यहां तक कि मैं उसके वालदैन, औलाद और सब लोगों से ज़्यादा महबूब न हूं।

हदीस पाक में वालिद का ज़िक्र है लेकिन मुराद इससे साहबे औलाद, यह मायने मां और बाप दोनों को शामिल है। वल्द से मुराद बेटा बेटी यानी मुतलक़ औलाद मायने यह है कि वालदैन और औलाद सब लोगों से मुझे महबूब समझे।

मुहब्बत मुराद तबई मुहब्बत नहीं जो बग़ैर इख़्तेयार के हासिल होती है क्योंकि अल्लाह तआला ने फ़रमाया।

अल्लाह तआला किसी नफ़्स को बग़ैर ताक़त के तकलीफ़ नहीं देता।

मुहब्बत से मुराद मुहब्बत अक़्ली है जो इंसान अपनी अक़्ल के ज़रिये इख़्तेयार करता है ख़्वाह तबीयत के मुख़ालिफ़ ही क्यों न हो जिस तरह मरीज़ कड़वी दवा को पसंद करता है हालांकि उसकी तबीयत नहीं चाहती लेकिन अक़्ल कड़वी दवा के इस्तेमाल करने को तरजीह देती है।

इसी से वाज़ेह हुआ कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अगर किसी शख़्स को हुक्म दें कि वह अपने क़ाफ़िर वालदैन या काफ़िर औलाद को क़त्ल कर दे तो उस पर लाज़िम होगा कि वह आपको तरजीह दे अगरचे बज़ाहिर उसकी तबीयत न भी चाहे इसी तरह जब आपने फ़रमा दिया कि कुफ़्फ़ार के साथ जिहाद करते हुए क़त्ल हो जाये वह शहीद होता है तो अक़्ल इसे तरजीह देगी अगरचे बज़ाहिर तबीयत न भी चाहे और आपसे मुहब्बत करने का मतलब यह है कि मुहब्बत ईमानी हो और यह मुहब्बत इजलाल, तौक़ीर, एहसान और रहमत से हासिल होती है इस मुहब्बत का तक़ाज़ा यह है कि महबूब के अग़राज़ को दूसरे तमाम की अग़राज़ पर तरजीह दे। अपने क़रीबी रिश्तेदार हों या अपनी ज़ात हो हर एक पर महबूब को राजेह समझे।

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम में तमाम असबाबे महबूबियत पाये जाते हैं हुस्ने सीरत, हुस्ने सूरत, कमाले फ़ज़्ल और कमाले एहसान समझे ख़ुसूसन जब कि आप मालिकुल मुल्क के भी महबूब तो इंसान आपको महबूब क्यों न समझे।

आला दर्जा की मुहब्बत हासिल करने वालों में हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ियल्लाहु अन्हु भी हैं आप ने जब इसी मजकूरा हदीस को सुना तो अम्रे तबई के तक़ाज़ा के मुताबिक़ अर्ज़ किया।

या रसूलल्लाह आप मुझे हर चीज़ से ज़्यादा महबूब हैं सिवाए मेरी जान के हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया।

ईमान की तकमील नहीं क़सम है उस ज़ात की जिसके क़ब्ज़ए कुदरत में मेरी जान है यहां तक कि मैं तुम्हारी जान से भी तुम्हें ज़्यादा महबूब हूं हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने अर्ज़ किया।

ऐ महबूब क़सम है अल्लाह तआला की अब आप मुझे मेरी जान से भी ज़्यादा महबूब हैं तो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया ऐ उमर अब तुम्हारा ईमान मुकम्मल हुआ।

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने पहले क्यों कहा कि मुझे अपनी जान से मुहब्बत ज़्यादा है? इसके दो एहतेमाल हो सकते हैं एक यह कि उन्होंने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के इरशाद के मुताबिक़ यह समझा हो कि आपने जिस मुहब्बत का ज़िक्र फ़रमाया है वह मुहब्बत तबई है और तबई मुहब्बत तो अपनी जान से ज़्यादा होती है बाद में यह समझा हो कि इस मुहब्ब्त से मुराद तो ईमानी और अक़ली है जो तबई के बर ख़िलाफ़ है ईमान व अ़ैल जो कहीं उसे तबई तक़ाज़ा पर तरजीह देनी है यह समझ आने के बाद ज़िक्र किया हो कि अब हुज़ूर मुझे अपनी जान की बनिसबत भी आपसे मुहब्बत ज़्यादा है।

दूसरा एहतेमाल यह है:

बेशक अल्लाह तआला ने हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु को नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की तवज्जोह मुबारक से ईमान के आला मक़ाम पर फ़ायज़ कर दिया हो कि आपके दिल में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मुहब्बत रासिख़ हो गई हो यहां तक कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मुहब्बत आपकी हयात और अक़्ल बन गई यानी ज़िन्दगी और अक़्ल का हिस्सा बन गई।

अल्लामा कुरतबी रहमतुल्लाह अलैहि ने फ़रमाया जिस शख़्स का ईमान कामिल होगा वह नबी क़रीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मुहब्बत को तरजीह देगा अगरचे वह कसीर शहवात में मुस्तग़रक़ ही क्यों न हो या अक्सर औक़ात उन पर ग़फ़लत के पर्दे ही क्यों न छाए रहें।

हम अक्सर व बेश्तर देखते हैं कि मुहब्बते रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम रखने वालों ने आपकी ज़ाहिरी हयात में भी आपके दीदार को औलाद पर तरजीह दी अपनी जान को कसीर ख़ौफ़ हलाकत का भी हो तो फिर भी मुहब्बते रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का मतवाला यही कहता है कि काश एक मर्तबा मुझे अपनी ज़िन्दगी में हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के रौज़ा मुतह्हरा की ज़ियारत नसीब हो जाये फ़िर मौत आती है तो आती रहे क्योंकि मक़सदे हयात हासिल हो गया।

यह मक़ाम नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की क़दर व मंज़िलत को जानने के बाद ही हासिल होता है।

और कोई शक नहीं कि यह मक़ाम सहाबा किराम को ज़्यादा हासिल होगा ईमान का आला दर्जा उन्हें हासिल रहा क्योंकि आप से मुहब्बत का आला मैयार आपके क़दर व मंज़िलत को जानने के बाद हासिल होता है और यह शर्फ़ सहाबा किराम रिज़वानुल्लाह अलैहि अजमाईन को सबसे ज़्यादा हासिल था क्योंकि वह हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के मरातिब क़दर व मंज़िलत को ज़्यादा जानते थे।

अल्लामा नूवी रहमतुल्लाह अलैहि ने फ़रमाया जिस शख़्स ने नफ़्से मुतमइन्ना की जानिब को तरजीह दी यानी दीने मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर ख़्वाहिशाते नफ़सानिया को तरजीह न दी उसे हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से ज़्यादा मुहब्बत है और जिस शख़्स ने नफ़्से अम्मारा की जानिब को राजेह किया यानी अपनी ख़्वाहिशाते नफ़सानिया को तरजीह दी उसकी मुहब्बत में कमी है। नफ़्से लव्वामा इन दोनों के दर्मियान है ख़्याल रहे बुराईयों का इर्तेकाब और इन पर इतराना नफ़्से अम्मारा का काम है ग़लती से बुराई का इर्तेकाब हो जाये फिर नादिम हो अपने आपको मलामत करे यह नफ़्से अम्मारा है और बुराईयों से बच कर रहना यह नफ़्से मुतममइन्ना है।

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम शैतान से महफ़ूज़ः

हज़रत इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु से मरवी है कि हुजूर सल्लल्लाहु सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः

तुम में से कोई एक शख़्स भी नहीं सिवाए इसके कि उसके साथ एक जिन्न मोअक्किल होता है और एक उसके साथ फ़रिश्ता मोअक्किल होता है सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम ने अर्ज़ किया आपके साथ भी या रसूलल्लाह? आपने फ़रमाय हां मेरे साथ भी लेकिन अल्लाह तआला ने मेरी उसके ख़िलाफ़ इमदाद फ़रमाई वह मेरा मुतीअ हो गया वह मुझे सिवाए भलाई के और कोई हुक्म नहीं करता। हदीस शरीफ़ में लफ़्ज़ फ़ा–असलमो इस्तेमाल हुआ। यह वाहिद मुज़क्कर ग़ायब माज़ी का सीग़ा है जिसका ज़ाहिरी मायने है कि मेरा क़रीन इस्लाम ले आया है अगरचे अल्लामा तूरबशी ने यही मायने लिया है कि अल्लाह तआला क़ादिर है इसलिए हो सकता है कि अल्लाह तआला ने हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़ुसूसियत व अफ़ज़लियत के पेशे नज़र आपके क़रीन शैतान को इस्लाम की दौलत से नवाज़ दिया।

लेकिन दूसरे अहले इल्म ने इसका मायने किया है कि वह मेरा मुतीअ हो गया। बाज़ हज़रात ने

इसे वाहिद मुतकल्लिम मज़ारेअ मजहूल का सीग़ा कहा है इस सूरत में मायने होगा मुझे इससे महफ़ूज़ कर दिया गया है जामेअ तिर्मिज़ी में यही ज़िक्र है कि इब्ने ईनिया ने कहा।

फ़अस्लमो में हमज़ा पर पेश है यानी मैं इससे महफ़ूज़ हूं क्योंकि शैतान मुसलमान नहीं होता। ख़्याल रहे कि बाज़ हज़रात ने इस्मे तफ़ज़ील का सीग़ा बनाया है और मुब्तदा महज़ूफ़ माना है इनके नज़दीक असल इबारत यह हुई।

मैं बनिसबत तुम्हारे शैतान से ज़्यादा महफ़ूज़ हूं। लेकिन इस मायने के लिहाज़ से हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का मुतलक़न शैतान से महफ़ूज़ होना साबित नहीं होगा बल्कि और लोगों की निसबत ज़्यादा महफ़ूज़ होना साबित होगा यह मायने दुरुस्त नहीं इसलिए मुल्ला अली क़ारी रहमतुल्लाह अलैहि ने इस मायने का रद्द किया है फ़रमाते हैं।

यह कहना कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को बाज़ औक़ात वसवसे हासिल हुए हैं तो वह शैतान की तरफ़ से हैं यह ग़लत है क्योंकि आपको कभी कोई वसवसा हासिल हुआ भी है तो वह सिर्फ़ अपने नफ़्स की वजह से यानी अदमे तवज्जोह की वजह से इसमें शैतान की कोई दख़ल अंदाज़ी ही नहीं ज़्यादा मश्हूर पहला मायने ही है मैंने भी तर्जमा में इसे इस्तेमाल किया है।

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की आंखें सोती हैं दिल जागता है:

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया मेरी आंखें सोती हैं और मेरे कान सुनते हैं और मेरा दिल समझता है।

इस हदीस से वाज़ेह हुआ कि अंबियाए किराम के दिलों पर जिस तरह नींद का कोई असर नहीं होता उसी तरह उनके कानों पर भी कोई असर नहीं होता इसकी वजह यह है कि अंबियाए किराम की नींद का ताल्लुक़ सिर्फ़ ज़ाहिरी बदन से होता है।

दूसरे लोगों की नींद का असर ज़ाहिर व बातिन पर होता है यानी उनकी आंखें, दिल और कान जैसे मुतास्सिर होते हैं।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ख़त्ना शुदा पैदा हुए:

रिवायत में आता है कि आदम अलैहिस्सलाम, शीस अलैहिस्सलाम, नूह अलैहिस्सालम, हूद अलैहिस्सलाम, सालेह अलैहिस्सलाम, लूत अलैहिस्सलाम, शोएब अलैहिस्सलाम, यूसुफ़ अलैहिस्सलाम, मूसा अलैहिस्सलाम, सुलेमान अलैहिस्सलाम, ज़क्रिया अलैहिस्सलाम, ईसा अलैहिस्सलाम, हज़रत हन्ज़ला बिन सफ़वान अलैहिस्सलाम जो असहाबे रस के नबी थे और हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ख़त्ना शुदा पैदा हुए।

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को चार हज़ार अफ़राद की ताक़त दी जायेगी:

तिर्मिज़ी ने हदीस ब्यान की जिस को सहीह ग़रीब कहा कि:

जन्नत में हर शख़्स को एक सौ आदमी की कुव्वत दी जायेगी और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को चार हज़ार आदमियों की कुव्वत अता की जायगी।

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का खाना बहुत कम मिक़दार में होता था लेकिन ताक़त दुनिया में भी कई अफ़राद की हासिल थी और क़यामत में भी कसीर अफ़राद की ताक़त हासिल होगी यह दर हक़ीक़त वजह ख़िर्क़े आदत (ख़िलाफ़े आदत) आपका एजाज़ है क्योंकि आम लोगों की कैफ़ियत

यह है कि जिसे खाना कम हासिल हो उसे ताक़त भी कम हासिल होती है।

आपके वुज़ू से गिरे हुए पानी में शिफ़ा थी:

हज़रत साइब बिन यज़ीद रज़ियल्लाहु अन्हु से मरवी है कि मुझे मेरी ख़ाला नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास ले गईं और उन्होंने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह!

बेशक मेरी बहन के बेटे को दर्द है तो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मेरे सर पर हाथ फेरा और मेरे लिए बर्कत की दुआ की फिर आपने वुज़ू किया तो मैंन आपके आज़ा से वुज़ू की वजह से गिरने वाला पानी पिया।

हज़रत इब्ने हजर रहमतुल्लाह अलैहि फ़रमाते हैं कि साइब रज़ियल्लाहु अन्हु के सर पर हाथ फेरा इसमें एहतेमाल यही है कि उनके सर में दर्द था।

इसलिए आपने अपना हाथ मुबारक उनके सर पर फेरा ताकि उनके लिए शिफ़ा का सबब बने तो ऐसा ही हुआ कि आपके हाथ मुबारक की बर्कत से उन्हें शिफ़ा हासिल हो गई।

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के हाथ मुबाकर फेरने की यह बर्कत हुई कि हज़रत साइब रज़ियल्लाहु अन्हु की उम्र एक सौ साल के क़रीब हुई लेकिन उनके सर का कोई बाल न सफ़ेद हुआ और न ही आपका कोई दांत गिरा।

हज़रत साइब रज़ियल्लाहु अन्हु के इरशाद का एक मतलब तो यह हो सकता है कि आप ने वुज़ू फ़रमाया और बर्तन में जो पानी रह गया था वह मैंने पिया लेकिन दूसरा एहतेमाल यह है कि आपके वुज़ू करने पर जो पानी मुस्तअमल हुआ यानी आपके आज़ा से मस होकर गिरा वह मैंने पिया।

यही मायने ज़्यादा मुनासिब है क्योंकि तबर्रुक के तौर पर पीने का मक़सद इसी से हासिल हो सकता है।

ख़्याल रहे कि यह नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का ख़ास्सा है आम किसी बुज़ुर्ग के वुज़ू के मुस्तअमल पानी बतौर तबर्रुक पीना जायज़ नहीं।

अल्लामा इब्ने हजर असक़लानी रहमतुल्लाह अलैहि ने फ़रमाया कि बेशक नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के आज़ाए शरीफ़ा से मस होकर गिरने वाला पानी नापाक नहीं होता था इसी वजह से हमारे कसीर अहबाब ने इसको इख़्तेयार किया कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के फ़ुज़लात (पेशाब, पाख़ाना) पाक थे।

ख़्याल रहे कि इमाम आज़म रहमतुल्लाह इलैहि के नज़दीक वुज़ू के लिए इस्तेमाल होने वाला पानी पाक होता है लेकिन पाक करता नहीं।

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की नमाज़ क़ज़ा होने में हिकमत:

हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से मरवी है बेशक रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जब ग़ज़वह ख़ैबर से लौटे तो रात को चलते रहे यहां तक कि आपको ऊंघ आने लगी तो आपने रात को पिछले हिस्से में आराम के लिए एक जगह क़याम किया हज़रत बिलाल रज़ियल्लाहु अन्हु को फ़रमाया हमारे लिए रात की हिफ़ाज़त करना (यानी सुबह की नमाज़ के लिए उठा देना) हज़रत बिलाल रज़ियल्लाहु अन्हु ने अपनी ताक़त के मुताबिक़ कुछ नवाफ़िल अदा किये हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और सहाबा किराम सो गये जब फ़ज्र का वक़्त क़रीब हुआ तो हज़रत बिलाल रज़ियल्लाहु

अन्हु ने पालान के साथ सहारा लगाया फ़ज्र की तरफ़ मुतावज्जेह रहे (यानी मश्रिक़ की जानिब मुंह कर लिया फ़ज्र का इंतेज़ार करने लगे) तो हज़रत बिलाल रज़ियल्लाहु अन्हु की आंखों पर ग़ल्बा आ गया (यानी नींद आ गई) आपने पालान के साथ सहारा लगाया हुआ था (सो गये) न नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को और न किसी और सहाबी को और न ही हज़रत बिलाल रज़ियल्लाहु अन्हु को जाग आई यहां तक कि सूरज निकल आया सबसे पहले नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ही बेदार हुए घबराहट में मुब्तला थे (क्योंकि सुबह की नमाज़ फ़ौत हो चुकी थी) आपने फ़रमाया ऐ बिलाल (तुमने हमें जगाया क्यों नहीं) तो हज़रत बिलाल रज़ियल्लाहु अन्हु ने अर्ज़ किया मुझे भी ऐसी चीज़ ने आ लिया जिसने आपको गिरफ़्त में लिया (यानी नींद का ग़ल्बा हर एक पर हो गया) आपने फ़रमाया चलो अपनी सवारियों को तैयार कर लो सबने अपनी सवारियां तैयार कीं और चल पड़े थोड़ी देर चले फिर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने वुज़ू फ़रमाया हज़रत बिलाल रज़ियल्लाहु अन्हु को हुक्म दिया (अज़ान का) फिर हज़रत बिलाल रज़ियल्लाहु अन्हु ने इक़ामत कही तो आपने सहाबा किराम को नमाज़ पढ़ाई जब आपने नमाज़ पढ़ ली तो फ़रमाया।

जो शख़्स नमाज़ अदा करना भूल जाये तो जब उसे याद आए अदा कर ले इसलिए कि बेशक रब तआला ने फ़रमाया नमाज़ क़ायम करो मेरी याद के लिए।

इस हदीस पाक में दो चीज़ें ज़ेरे ग़ौर हैं एक यह कि फिर जागने पर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने वुज़ू फ़रमाया।

और दूसरी हदीस शरीफ़ में है।

बेशक नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम लेटे तो सो गये यहां तक कि आपकी सांस फूलने लगी (यानी सोने के वक़्त जो फूंक सी निकलती है वह हालत हो गई) तो हज़रत बिलाल रज़ियल्लाहु अन्हु ने अज़ान कही तो आपने नमाज़ पढ़ी और वुज़ू नहीं फ़रमाया। फ़ुक़हा किराम शामी वग़ैरह ने भी यही तहरीर किया।

अंबियाए किराम की नींद वुज़ू को नहीं तोड़ती। इस मसले पर अहले इल्म ने यह दलील पेश की कि आपने फ़रमाया।

मेरी आंखें सोती हैं और दिल जागता है।

जो बात ज़ेर ग़ौर है वह यह है कि जब आपका वुज़ू नींद से नहीं टूटता तो यहां वुज़ू क्यों फ़रमाया? तो इसका एक जवाब यह है कि हो सकता है जब हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने आराम फ़रमाया हो उस वक़्त आपका वुज़ू न हो तो सोते वक़्त जब वुज़ू नहीं था जागते वुज़ू करना ज़रूरी था लेकिन ज़्यादा तौर पर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम बा बुज़ू सोते थे इसलिए ज़्यादा बेहतर जवाब यह है।

कि आप ने वुज़ू तजदीद के लिए फ़रमाया होगा क्योंकि वुज़ू होने के बावजूद दूसरी नमाज़ के लिए नया वुज़ू करना मुस्तहब है।

अगर कोई शख़्स यह एतेराज़ करे कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को कैसे नमाज़ का पता न चला और सो गये हालांकि आप का अपना इरशाद है कि मेरा दिल नहीं सोता यानी जब आपका दिल जागता है तो आपको सुबह सादिक़ का इल्म होना चाहिये था।

जवाब : इस एतेराज़ का जवाब यह दिया जायेगा कि आपके इरशादे गिरामी और सुबह के वक़्त का पता न चलने में कोई मनाफ़ात नहीं क्योंकि दिल का काम है उमूरे बातनिया का इदराक करना जैसे लज़्ज़त, दर्द वग़ैरह ज़ाहिरी हिस्सी चीज़ों का इल्म दिल का काम नहीं सुबह सादिक़ वग़ैरह का पता चलाना दिल का काम नहीं यह चीज़ें आंखों से देखी जाती हैं। जब आपका इरशाद ही यह है मेरी आंखें सोती हैं तो आंखें तो सो रही थीं वह सुबह के नमूदार होने को नहीं देख रही थीं और आपका दिल जाग रहा था जो रब तआला की तजल्लियात के इदराक की तरफ़ मुतावज्जेह था।

दूसरी वजह ज़ेरे ग़ौर यह है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की नमाज़ क़ज़ा क्यों हुई? इसकी वजह अल्लामा तयबी ने ब्यान फ़रमाई।

आपसे नमाज़ में ताख़ीर हुई यानी आपके सोने और नमाज़ में ताख़ीर सिर्फ़ ज़ाहिरी ताअत में थी वरना आप सोए हुए भी अल्लाह तआला की तरफ़ मुतावज्जेह होते थे लिहाज़ा बातनी ताअत आपको सोए हुए हाल में भी हासिल होती थी लेकिन इस ज़ाहिरी ताख़ीर में हिकमत यह थी कि उम्मत के लिए बा दलील सुन्नत बन जाये।

इमाम शाफ़ई रहमतुल्लाह अलैहि के नज़दीक तो दलील फ़ेअली है ही क़वी दलील कौली से लिहाज़ा उनके नज़दीक हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का फ़ेअल ही दलील है और इमाम अबू हनीफ़ा रहमतुल्लाह अलैहि के नज़दीक दलील कौली क़वी है दलील फ़ेअली से इसलिए आप फ़रमाते हैं कि हुज़ूर की नमाज़ का रह जाना और आपका अदा फ़रमाना और फिर यह इरशाद फ़रमाना कि जिस की नमाज़ में भूल हो जाये यानी बर वक़्त न अदा कर सके तो याद आने पर अदा करे यह दलील है उम्मत के लिए नमाज़ के क़ज़ा करने की इतना वाज़ेह हुआ कि आप की नमाज़ क़ज़ा न होती तो उम्मत के लिए कैसे साबित होती।

इब्ने अरबी रहमतुल्लाह अलैहि ने फ़रमाया।

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जिस हाल में भी हों ख़्वाह नींद में हों या बेदारी में हों हक़ पर होते हैं। आपका हर हाल तहक़ीक़ पर मबनी होता है आप हर वसीअ दुश्वार गुज़ार राह पर मुक़र्रब फ़रिश्तों के साथ होते हैं आप अगर भूल जाते हैं तो भुलाने वाली ज़ात की तरफ़ ही मशगूल होते हैं और अगर आप सो भी जायें तो आप अपने दिल और नफ़्स से अल्लाह तआला की तरफ़ ही मुतावज्जेह होते हैं।

यानी आप भूलते नहीं आपको भुलाया जाता है आप के भूलने में राहे हक़ से फिरना लाज़िम नहीं आता रब तआला से तवज्जोह कभी नहीं हटती।

इसी वजह से सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम फ़रमाते हैं कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जब सोते थे हम आपको जगाते नहीं थे यहां तक कि आप ख़ुद जागते इसलिए हम नहीं जानते थे कि आप किस हाल में हैं आपका नमाज़ के वक़्त सोना और नमाज़ का क़ज़ा होना या आपका भूलना किसी आफ़त की वजह से नहीं होता था आपका एक हाल से दूसरे हाल की तरफ़ तसर्रुफ़ इस वजह से होता था कि वह काम हमारे लिए सुन्नत बन जाये।

मस्जिद नबवी में नमाज़ अदा करना:

हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से मरवी है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया:

मेरी इस मस्जिद (मस्जिद नबवी) में नमाज़ अदा करना हर नमाज़ों से बेहतर है सिवाए मस्जिद हराम के। इस हदीस पाक में ज़िक्र है कि मस्जिद नबवी में नमाज़ अदा करना बनिसबत दूसरी मसाजिद के एक हज़ार नमाज़ों से बेहतर है सिवाए मस्जिद हराम के लेकिन एक हज़ार से बेहतर कहां तक है वह हद ज़िक्र नहीं दूसरी रिवायत में इस हद का ज़िक्र किया गया है हज़रत अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु से मरवी है रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया।

कोई इंसान अपने घर में नमाज़ अदा करे तो उसे एक नमाज़ का सवाब हासिल होता है और जो शख़्स क़बीला की मस्जिद में नमाज़ अदा करे उसे पच्चीस नमाज़ों का सवाब मिलता है और जो शख़्स जामेअ मस्जिद में नमाज़ अदा करे उसे पांच सौ नमाज़ों का सवाब मिलता है और जो शख़्स मस्जिद अक़्सा में नमाज़ अदा करे उसे पचास हज़ार नमाज़ों का सवाब मिलता है और जो शख़्स मेरी मस्जिद (मस्जिद नबवी) में नमाज़ अदा करता है उसे भी पचास हज़ार नमाज़ों का सवाब हासिल होता है और जो शख़्स मस्जिद हराम में नमाज़ अदा करता है उसे एक लाख नमाज़ों का सवाब हासिल होता है।

फ़ायदा : तादाद के लिहाज़ से मस्जिद हराम में नमाज़ अदा करने से एक लाख नमाज़ का सवाब हासिल होता और मस्जिद नबवी में पचास हज़ार का लेकिन दर्जा के लिहाज़ पर नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के कुर्ब की वजह से पचास हज़ार को एक लाख पर फ़ज़ीलत हासिल है।

तादाद की ज़्यादती में फ़ज़ीलत के असबाब मुनहसिर नहीं अरफ़ात में जाने के लिए मिना में पांच नमाज़ें अदा करना अफ़ज़ल है बनिसबत मस्जिद हराम में अदा करने के। हालांकि इनमें तादाद पर वह फ़ज़ीलत नहीं यानी मिना में एक नमाज़ के अदा करने से एक का सवाब हासिल होता है और वही नमाज़ मस्जिद हराम में अदा करने से एक लाख का सवाब हासिल होता है लेकिन एक लाख से ज़्यादा फ़ज़ीलत रखता है क्योंकि असल में नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की इत्तेबा ही में फ़ज़ीलत है।

इसी वजह से हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया कि मक्का शरीफ़ में मस्जिद हराम में नमाज़ अदा करने से ज़्यदा नमाज़ों का सवाब मिलता है लेकिन मदीना तैयबा में नमाज़ अदा करने से सवाब में अफ़ज़लियत हासिल होती है।

नवी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की क़ब्र अनवर का मक़ाम अर्श आला से बुलंद:

इस मसले में अहले इल्म का इख़्तेलाफ़ है कि मक्का मुकर्रमा अफ़जल है या मदीना तैयबा। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु और बाज़ सहाबा किराम और अक्सर अहले मदीना और इमाम मालिक रहमतुल्लाह अलैहि मदीना तैयबा की अफ़ज़लियत के क़ायल हैं लेकिन नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की क़ब्र अनवर के मक़ाम की अफ़ज़लियत में कोई इख़्तेलाफ़ नहीं।

क़ाज़ी अयाज़ रहमतुल्लाह अलैहि और दूसरे अहले इल्म से यह मंकूल है कि इस पर उम्मत का इजमा है कि ज़मीन का वह हिस्सा जिसे नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के आज़ा शरीफ़ा का ताल्लुक़ है वह काबा मुकर्रमा से अफ़ज़ल है इख़्तेलाफ़ इस मक़ाम के ग़ैर में है कि मक्का मुकर्रमा अफ़ज़ल है या मदीना तैयबा। फ़ाकहानी रहमतुल्लाह अलैहि ने तसरीह फ़रमाई है कि इस मक़ाम को तमाम आसमानों पर अफ़ज़लियत हासिल है और उन्होंने कहा कि ज़ाहिर बात यह है कि तमाम आसमानों पर अफ़ज़लियत हासिल है क्योंकि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ज़मीन में तशरीफ़ फ़रमा हैं अक्सर अहले इल्म ने तो ज़मीन की अफ़ज़लियत पर यही दलील क़ायम की है कुछ और हज़रात

ने यह कहा है कि तमाम अंबियाए किराम ज़मीन से पैदा हुए और ज़मीन में मदफून हैं इस लिहाज़ पर भी ज़मीन को आसमानों पर फ़ज़ीलत हासिल है।

अल्लामा नूवी रहमतुल्लाह अलैहि ने फ़रमाया कि जम्हूर उलेमाए किराम इस तरफ़ हैं कि आसमानों को ज़मीन पर फ़ज़ीलत हासिल है सिवाए उस मक़ाम के जिससे हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के आज़ाए शरीफ़ा का ताल्लुक़ है इसी तरह महल ख़िलाफ़ काबा मुकर्रमा के मा सिवा में है क्योंकि हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की क़ब्र अनवर के बग़ैर बाक़ी मदीना पर काबा शरीफ़ को फ़ज़ीलत हासिल है।

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की खूबसूरत और बुलंद आवाज़:

इब्ने असाकिर ने ब्यान किया नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि अल्लाह तआला ने कभी भी कोई नबी नहीं भेजा मगर यह कि वह हसीन चेहरा वाला और हसीन आवाज़ वाला भेजा।

यहां तक कि अल्लाह तआला ने तुम्हारे नबी को भेजा तो हसीन चेहरा और हसीन आवाज़ अता करके भेजा एक हदीस में आता है कि :

बेशक नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की आवाज़ वहां पहुंचती थी जहां किसी और की आवाज़ नहीं पहुंचती थी।

रब तआला के तमाम ख़ज़ाने नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास:

हज़रत रबीअ बिन कअब रज़ियल्लाहु अन्हु से मरवी है कि मैं रात रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास गुज़ारता था मैंने आपकी ख़िदमत में वुज़ू के लिए पानी और आपकी हाजत का सामान (मिस्वाक, मुसल्ला वग़ैरह) पेश किया तो आपने मुझसे फ़रमाया कुछ मांगो तो मैंने अर्ज़ किया कि मैं जन्नत में आपकी रिफ़ाक़त चाहता हूं आपने फ़रमाया क्या इसके बग़ैर कुछ और? आपने अर्ज़ किया सिर्फ़ यही आपने फ़रमाया कसरत सुजूद से अपने नफ़्स पर मेरी इमदाद करना।

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया तुम्हें किसी चीज़ की हाजत हो तो मुझ से तलब करो।

इब्ने हजर रहमतुल्लाह अलैहि फ़रमाते हैं आपका मक़सद यह था।

कि मैं तुम्हारी ख़िदमत के बदला तुम्हें तोहफ़ा दूं क्योंकि करीम लोगों की यही शान है और नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से बढ़कर और कोई करीम भी नहीं।

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मुतलक़न ज़िक्र फ़रमाया तलब करो यह नहीं फ़रमाया कि फ़लां चीज़ तलब और फ़लां चीज़ तलब न करो इससे पता चला कि अल्लाह तआला ने यह कुदरत अता फ़रमाई है कि आप अल्लाह तआला के ख़ज़ानों में से जो चाहे अता फ़रमा दें।

इसी वजह से हमारे आइम्मए किराम ने यह हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की खुसूसियत शुमार फ़रमाई कि आपको अल्लाह तआला ने इस पर मख़तस किया है कि जिसे चाहें जो चाहें अता फ़रमायें।

हज़रत खुज़ैमा बिन साबित रज़ियल्लाहु अन्हु की अकेले शहादत को दो के बराबर क़रार देना आपके वसीअ इख़्तेयार पर दलालत कर रहा है और अबू बर्दा रज़ियल्लाहु अन्हु को बकरी के छ: माह के बच्चे की कुर्बानी की इजाज़त फ़रमाना और साथ यह इरशाद फ़रमाना कि यह तुम्हारे लिए जायज़ है किसी

और के लिए नहीं इससे वाज़ेह हुआ कि अल्लाह तआला ने आपको वसी इख़्तेयारात अता फ़रमाए।

बेशक अल्लाह तआला ने जन्नत आपके इख़्तेयार में दे दी जिसे चाहें जितना हिस्सा दे दें।

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज़रत रबीया रज़ियल्लाहु अन्हु को फ़रमाया कि इसके बग़ैर तो कुछ तलब नहीं करोगे यह दर असल इम्तेहान था कि क्या इस आला मतलूब पर क़ायम रहते हैं या नहीं क्योंकि यह ऐसी चीज़ की तलब थी जिसके मुक़ाबिल कोई चीज़ नहीं थी।

बेशक आला मक़ामात की तलब पर साबित रहना ही कामिल कमालात से है।

हज़रत रबीया रज़ियल्लाहु अन्हु ने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम सिर्फ़ यही है कि जन्नत में आपकी रिफ़ाक़त मैयस्सर हो मुल्ला अली क़ारी रहमतुल्लाह अलैहि इस जवाब पर फ़रमाते हैं:

सुबहानल्लाह वह शख़्स कितना ही बुलंद मर्तबा रखता है जिसे नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की हसीन ख़िदमत का शर्फ़ हासिल हो और कितनी बुलंद हिम्मत हासिल हुई कि आला सवाल किया और फिर इस पर साबित क़दम रहे।

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उन्हें कसरते सुजूद का हुक्म दिया जिससे इशारा था कि जन्नत में मुराफ़ेक़त आला क़िस्म के मरातिब से है आला मर्तबा इंसान को उसी वक़्त हासिल होता है जब वह अपने नफ़्स की ख़्वाहिशात के ख़िलाफ़ नेकियों के काम करे।

इस का मतलब यह है कि तुम अपने नफ़्स की इस्लाह में मेरी इमदाद कसरते सुजूद से करना।

इसमें इशारा इस तरफ़ था कि यह बुलंद व बाला मर्तबा सिर्फ़ सज्दों से नहीं मिलेगा नफ़्स के ख़िलाफ़ ज़्यादा सज्दे भी करना लेकिन जन्नत में यह मक़ाम उसी वक़्त मिलेगा जब मेरी दुआयें भी तुम्हारी इबादत के साथ शामिल होंगी।

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम दुरूद का जवाब देते हैं:

हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से मरवी है रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया:

कोई एक शख़्स भी ऐसा नहीं कि मुझ पर वह सलाम भेजे मगर यह कि अल्लाह तआला मेरी तवज्जोह उसकी तरफ़ मबजूल कर देता है यहां तक कि उसके सलाम का जवाब देता हूं।

मैं कहता हूं और तुम पर भी सलाम हो हदीस शरीफ़ में जो ज़िक्र है इसके मुताल्लिक़ इब्नुल मलिक ने ब्यान फ़रमाया।

रूह का लौटना हक़ीक़ी मायने में इस्तेमाल नहीं बल्कि मजाज़ी तौर पर इस तरफ़ इशारा है कि अल्लाह तआला आपको मुत्तला फ़रमा देता है कि फ़लां शख़्स आप पर दुरूद पढ़ रहा है तो आप उसका जवाब देते हैं।

इसी हदीसे मज़कूर का मायने अल्लामा सियूती रहमतुल्लाह अलैहि ने कई तरह ब्यान किया इन मायने में से एक के मुताल्लिक़ फ़रमाया कि यह मायने बहुत ही क़वी है मायने आपने यह ब्यान किया।

रद्दे रूह का यह मतलब नहीं कि रूह आपके बदन से जुदा होने के बाद लौटती है बल्कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम बरज़ख़ में अहवाले मलकूत में मशगूल हैं और रब तआला की तजल्लियात के मुशाहिदा में मुस्तग़रक़ हैं जिस तरह आप दुनिया में वही की हालत में होते थे फिर वही के बग़ैर दूसरे औक़ात में दुनिया वालों की तरफ़ तवज्जोह फ़रमाते थे इसी तरह आप जब रब तआला की

तजल्लियात के मुशाहिदा में इस्तिग़राक़ के बाद सलाम भेजने वालो की तरफ़ तवज्जोह फ़रमाते हैं इस हाल को रद्दे रूह से ताबीर कर दिया गया है।

दुरूद पाक ज़िक्र ख़ुदा भी है:

हज़रत अबी बिन कअब रज़ियल्लाहु अन्हु से मरवी है कहते हैं कि मैंने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मैं आप पर ज़्यादा दुरूद शरीफ़ पढ़ना चाहता हूं (अपनी दुआओं, और औराद अज़कार में से) कितना वक़्त आपके दुरूद के लिए मुक़र्रर कर दूं आपने फ़रमाया जितना तुम चाहते हो मैंने अर्ज़ किया चौथाई वक़्त मुक़र्रर कर लूं? आपने फ़रमाया जितना तुम चाहते हो अगर तुम इससे ज़्यादा कर लो तो तुम्हारे लिए बेहतर है मैंने अर्ज़ किया निस्फ़ हिस्सा वक़्त का मुक़र्रर कर लूं? आपने फ़रमाया जो तुम चाहते हो अगर तुम इससे ज़्यादा कर लो तो तुम्हारे लिए बेहतर है मैंने अर्ज़ किया दो तिहाई मुकर्रर कर लूं? आपने फ़रमाया जो तुम चाहते हो अगर तुम इससे ज़्यादा कर लो तो तुम्हारे लिए बेहतर है मैंने अर्ज़ किया कि कुल वक़्त मुक़र्रर कर लूं? आपने फ़रमाया (अगर ऐसा कर लो) कि यह तो तुम्हारे तमाम उमूर के लिए काफ़ी है और तुम्हारे गुनाहों को मिटायेगा।

अगर तुमने अपनी दुआओं का कुल वक़्त मुझ पर दुरूद पाक पढने में सर्फ़ किया तो जो भी तुम्हारे लिए वाक़ेय होने वाले उमूर होंगे उनमें काफ़ी होगा।

यानी जो हवादिसात वग़ैरह तुम्हें दीनी या दुनियावी उमूर में ग़म डालने वाले होंगे इनमें तमाम उमूर में दुरूद पाक तुम्हारे लिए काफ़ी होगा।

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने दुआओं, विर्द, वज़ीफ़े और ज़िक्र करने के तमाम वक़्त को दुरूद पाक पढ़ने में सर्फ़ करना क्यों बेहतर क़रार दिया?

इसलिए कि हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर दुरूद पाक पढ़ना अल्लाह तआला के ज़िक्र पर मुश्तमिल है और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ताज़ीम भी पाई गई है और दुरूद पाक अपने ज़ाती हुकूक़ की अदाएगी की बनिसबत हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के हुकूक़ अदा करने पर मुश्तमिल है और दुरूद पाक पढ़ने में अपनी ज़ात के लिए दुआ करने पर एक अज़ीमुश्शान अमल को तरजीह दी गई है जो अमल ही बाइस करम ही करम है।

यानी दुआ से भी बेहतर दुरूद पाक क्योंकि इससे रब तआला भी राज़ी और रब तआला का रसूल भी। जब रब तआला उसकी हाजात को जानता है तो उसे अपनी रज़ा व रहमत से उसके अर्ज़ करने के बग़ैर ही देगा।

यहां से जाहिल क़ौम का एतेराज़ भी ख़त्म हो गया कि अहले सुन्नत व जमाअत दुरूद ही पढ़ते रहते हैं अल्लाह तआला का ज़िक्र नहीं करते काश कि अल्लाह तआला उन्हें इल्म अता फ़रमा दे और उन्हें यह समझ आ जाये कि दुरूद पाक दर असल अल्लाह तआला का ज़िक्र भी है।

यहां एक मशहूर एतेराज़ है कि आम तौर पर यह साबित है कि मुशब्बेह, मुशब्बेह बेह से कम दर्जा होता है इस दुरूद में तशबीह दी गई है रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम से क्योंकि कहा जाता है ऐ अल्लाह सलात भेज मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और आपकी आल पर जैसा कि तूने सलात भेजी इब्राहीम अलैहिस्सलाम पर और आपकी आल पर।

इससे तो यह समझ में आता है कि इब्राहीम अलैहिस्सलाम अफ़ज़ल हैं हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि

वसल्लम से हालांकि आप अफ़ज़लुल अंबिया हैं यहां तशबीह कैसे दुरुस्त है?

इस सवाल के मुल्ला अली क़ारी रहमतुल्लाह अलैहि ने कई जवाब दिये हैं उनमें से तीन जवाब नक़्ल कर रहा हूं।

यहां तशबीह असल में है मिक़दार में नहीं यानी सिर्फ़ यह मतलब है कि ऐ अल्लाह तू नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर सलात भेज जैसा कि तूने इब्राहीम अलैहिस्सलाम पर सलात भेजी है यह मतलब नहीं कि उसी तरह और उतनी मिक़दार में तू हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर भी सलात भेज जैसा कि रब तआला ने फ़रमाया ऐ ईमान वालो तुम पर रोज़े फ़र्ज़ किये गये जैसा कि तुम से पहले लोगों पर रोज़े फ़र्ज़ किये गये यहां भी सिर्फ़ फर्ज़ होने में तश्बीह दी गई है यह मतलब नहीं कि जितने रोज़े तुम पर फ़र्ज़ हुए हैं उतने ही पहली तमाम कौमों पर हुए।

इसी तरह रब तआला ने फ़रमाया बेशक हमने तुम्हारी तरफ़ वही की जैसे हमने नूह अलैहिस्सलाम की तरफ़ वही की इस में भी सिर्फ़ इतना साबित किया गया कि आपकी तरफ़ भी वही की गई और नूह अलैहिस्सलाम की तरफ़ भी यह नहीं साबित किया गया कि जितनी वही नूह अलैहिस्सलाम की तरफ़ की गई उतनी वही आपकी तरफ़ भी की गई।

और फ़रमाया एहसान करो जैसा कि अल्लाह तआला ने तुम पर एहसान फ़रमाया यहां भी यह मतलब नहीं कि जितना एहसान अल्लाह तआला ने तुम पर फ़रमाया उतना एहसान तुम दूसरों पर करो बल्कि सिर्फ़ एहसान करने का बनी इस्राईल ने क़ारून को मश्वरा दिया था।

दुरूद शरीफ़ में काफ़ तश्बीह के लिए इस्तेमाल ही नहीं बल्कि इल्लत व सबब के लिए है जैसे अल्लाह तआला के इरशाद में लफ़्ज़ "आला" सबब के लिए आया हुआ है आयत का मायने यह है कि तुम अल्लाह तआला की बड़ाई ब्यान करो क्योंकि उसने तुम्हें हिदायत दी है।

अब इस जवाब के मुताबिक़ दुरूद का मायने यह होगा ऐ अल्लाह मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और आपकी आल पर सलात भेज क्योंकि तू इब्राहीम अलैहिस्सलाम और आपकी आल पर सलात भेज चुका है।

यहां तश्बीह मजमूअ को मजमूअ से दी गई है क्योंकि इब्राहीम अलैहिस्सलाम की आल से कसीर अंबियाए किराम हैं और हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम भी उनमें से ही हैं अब दुरुद पाक का मायने यह होगा कि ऐ अल्लाह मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और आपकी आल पर उतनी कसीर मिक़दार में सलात भेज जैसे कि इब्राहीम अलैहिस्सलाम और आपकी आल में से कसीर अंबियाए किराम पर कसीर सलात तूने भेजी।

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के भूलने में हिकमतः

हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से मरवी है बेशक नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम नमाज़ की तरफ़ निकले जब आपने तकबीर कही तो फिर गये और लोगों की तरफ़ इशारा किया वह अपनी जगह ठहर जायें आप मस्जिद से निकल गये आपने गुस्ल फ़रमाया फिर तशरीफ़ लाए आप के सर से पानी के क़तरे टपक रहे थे आपने नमाज़ पढ़ी जब नमाज़ पढ़ ली तो फ़रमाया बेशक मैं हालते जनाबत में था गुस्ल करना भूल गया था।

इस हदीस पाक की शरह में मुल्ला अली क़ारी रहमतुल्लाह अलैहि तहरीर फ़रमाते हैं:

आपसे भूल वाक़ेय हुई ताकि उम्मत के लिए सुन्नत बन जाये और इस लिए कि अगर किसी इमाम को ऐसा वाक़िया पेश आ जाये तो उसे शर्म न आये।

आपके भूलने में वजह सिर्फ़ यही थी कि आप का फ़ेअल उम्मत के लिए सुन्नत बन जाये वरना आपकी उम्मत के लिए मशाइख़ दूसरों की जनाबत पर भी इत्तेला रखते थे।

हज़रत इमाम याफ़ई रहमतुल्लाह अलैहि ने एक वाक़िया नक़्ल फ़रमाया कि बेशक इमामुल हरमैन अबुल मआली इब्न इमाम अबू मुहम्मद जुवैनी एक दिन सुबह की नमाज़ के बाद बैठे दर्स दे रहे थे वहां से सूफ़िया किराम में से एक शैख़ का गुज़र हुआ उनके साथ उनके अहबाब भी थे वह किसी दावत पर जा रहे थे इमामुल हरमैन ने दिल में ख़्याल किया कि इन लोगों का कोई और काम नहीं सिवाए खाने और रक़्स करने के वह शैख़ जब दावत से वापस लौटे तो फ़रमाने लगे ऐ फ़क़ीह तुम क्या कहते हो उस शख़्स के मुताल्लिक़ जो सुबह की नमाज़ हालते जनाबत में पढ़ा देता है और मस्जिद में बैठकर उलूम का दर्स देता है और लोगों की ग़ीबत करता है इमामुल हरमैन को शैख़ की बात सुनकर याद आया कि मुझपर तो गुस्ल लाज़िम था लेकिन मैं भूल गया इसके बाद उनके दिल में मशाइख़ के मुताल्लिक़ अच्छा एतेक़ाद आ गया यानी मशाइख़ को साहबे कशफ़ समझने लगे।

इस वाक़िये से यह ब्यान करना मक़सूद है कि जब मशाइख़ दूसरों की हालते जनाबत पर मुत्तला हो सकते हैं तो हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को अपने आप पर मुत्तला होना तो ज़रूरी था लेकिन रब तआला ने आप को भुलाकर आपकी उम्मत के लिए सुन्नत बना दिया।

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को बैठकर नमाज़ पढ़ने पर सवाब मुकम्मल मिलता:

हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा से मरवी है कि जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उमर रसीदा हो गये तो आप ज़्यादा तौर पर नवाफ़िल बैठकर अदा फ़रमाते थे।

हज़रत इब्ने हजर असक़लानी रहमतुल्लाह अलैहि ने फ़रमाया कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की यह खुसूसियत है कि आप नवाफ़िल बैठकर अदा फ़रमाते लेकिन सवाब आपको खड़े होकर अदा करने की तरह ही हासिल होता था।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं मुझे हदीस ब्यान की गई है बेशक रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया बैठकर नमाज़ अदा करने से इंसान को आधा सवाब मिलता है आप कहते हैं कि हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुआ तो आप बैठकर नमाज़ अदा फ़रमा रहे थे मैंने अपना हाथ आपके सर मुबारक पर रखा तो आप ने फ़रमाया ऐ अब्दुल्लाह बिन अम्र रज़ियल्लाहु अन्हु तुम्हें क्या हुआ? मैंने अर्ज़ किया कि मुझे यह हदीस बताई गई है कि बेशक आपने फ़रमाया है कि बैठकर नमाज़ अदा करने से इंसान को आधा सवाब मिलता है और आप ख़ुद बैठकर नमाज़ अदा कर रहे थे आपने फ़रमाया हां मैंने कहा तो यही है लेकिन मैं तुम में से किसी एक की तरह नहीं।

यानी यह मेरी खुसूसियत में से एक खुसूसियत यह है कि जिस तरह भी नमाज़ अदा करूं मेरे सवाब में कोई कमी नहीं होती है जिस हाल में भी नमाज़ अदा करूं वह मेरे जलवे ही हैं यह अल्लाह तआला का फ़ज़्ल है जिसे चाहे अता फ़रमा दे अल्लाह तआला ने फ़रमाया आप पर ऐ महबूब अल्लाह तआला का फ़ज़्ल अज़ीम है।

ख़्याल रहे कि बज़ाहिर यह वहम होता है कि अब्दुल्लाह बिन अम्र रज़ियल्लाहु अन्हु का हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सर मुबारक पर हाथ रखना अदब के ख़िलाफ़ है उन्हें नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की तौक़ीर का पास रखना चाहिये था।

इसके दो जवाब मुल्ला अली क़ारी रहमतुल्लाह अलैहि ने अपनी तरफ़ से दिये एक यह कि शायद आपसे यह तरीक़ा बग़ैर इख़्तेयार के सादिर हुआ। जो काम बिला इख़्तेयार सारिद हों उसमें कोई मुवाख़ज़ा नहीं।

और दूसरा जवाब यह दिया कि उन्होंने जब ताज्जुब किया कि आप का इरशाद और है और अमल आप का और है तो इस मामले की तहक़ीक़ के लिए अपनी तरफ़ कामिल मुतवज्जेह करने के लिए ऐसा किया हो इसलिए हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उनका और उनके बाप का नाम लेकर उनके इस फ़ेअल पर इंकार फ़रमाया और कहा।

तुम्हें क्या हुआ ऐ अब्द बिन अम्र रज़ियल्लाहु अन्हु यानी तुम बहुत साहिबे इल्म हो फिर क्या कर रहे हो?

इसके बाद मुल्ला अली कारी रहमतुल्लाह अलैहि हज़रत इब्ने हजर रहमतुल्लाह अलैहि के जवाब को नक़्ल करते हैं और यही जवाब ज़्यादा मुनासिब भी है वह यह कि अहले अरब की आदत थी कि जब किसी काम पर ताज्जुब करते थे तो वह ऐसे ही करते थे उन्होंने भी इसी आदत के मुताबिक़ अमल किया इसी तरह बाज़ अरब दूसरे की दाढ़ी को छूते थे।

मुल्ला अली क़ारी रहमतुल्लाह अलैहि फ़रमाते हैं कि हमने अपने ज़माने में मुशाहिदा किया कि बाज़ लोग शरीफ़े मक्का की दाढ़ी को हाथ लगा कर कहते हैं ऐ हसन मैं तुम पर कुर्बान हालांकि जब यह लोग मक्का के शरीफ़ की दाढी को हाथ लगाते हैं उस वक़्त वह अपने हाथों में जूते भी पकड़े होते हैं।

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का ख़ुल्क़, कुरआन :

हज़रत सअद बिन हश्शाम रहमतुल्लाह अलैहि कहते हैं हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और अर्ज़ की ऐ उम्मुल मोमिनीन (मोमिनों की मां)!

मुझे आप रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अख़लाक़ के मुताल्लिक़ बतायें आपने फ़रमाया क्या तुमने कुरआन नहीं पढ़ा? मैंने कहा क्यों नहीं कुरआन पढ़ा है आपने कहा कि बनी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का ख़ुल्क़ कुरआन है।

कुरआन को ख़ुल्क़ क्यों कहा?

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा ने ख़ुल्क़ इसलिए कहा कि कुरआन पाक ने जितने मकारिमे अख़लाक़ का तज़किरा किया वह तमाम आप में पाये जाते थे अगर कुरआन ने कहा।

बेशक अल्लाह तआला अद्ल व एहसान करने का हुक्म देता है।

रब तआला के इस हुक्म के मुताबिक़ कायनाते आलम में नज़र दौड़ाकर देखिये तो आप जैसा कोई आदिल व मोहसिन नज़र नहीं आयेगा अगर रब्बे कुद्दूस ने इरशाद फ़रमाया।

जो तुम्हें मुसीबत व तकलीफ़ पहुंचे उस पर सब्र करो, मालिकुल मुल्क के इस हुक्म पर अमल

करने की दरख़्शां मिसाल भी आपने ही क़ायम फ़रमाई।

अगर ख़ालिके कायनात ने यह कहा आप इन को माफ़ करें और दरगुज़र करें तो माफ़ करने और दरगुज़र करने का अज़ीम मनसब भी जो आपको हासिल हुआ ऐसा अज़ीम मक़ाम किसी और को हासिल न हो सका ग़र्ज़ कि कुरआन पाक के हर हुक्म की जलवागरी आप में है और कुरआन पाक ने जिन चीज़ों से इज्तेनाब का हुक्म दिया उनसे कामिल इज्तेनाब किया इसलिए आपका खुल्क़ कुरआन पाक है।

दूसरी वजह यह है कि कुरआन पाक ने आपके खुल्क़ को ब्यान करते हुए फ़रमाया बेशक आप अज़ीम खुल्क़ पर हैं जिस चीज़ को कुरआन ने अज़ीम कहा है उसकी क़द्र इंसान ब्यान करे तो कैसे ब्यान करे?

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को ज़िन्दगी हासिल है:

अंबियाए किराम को अपने मज़ारात मुतह्हरा में कामिल ज़िन्दगी हासिल है उनके बदन महफ़ूज़ हैं बल्कि उन्हें नमाज़ और कुरआन पढ़ने की लज़्ज़त भी हासिल है और अंबियाए किराम के बग़ैर औलियाए एज़ाम और उलेमा किराम को भी अपने मज़ारात में ज़िन्दगी हासिल है।

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया।

बेशक अल्लाह तआला ने ज़मीन पर हराम कर दिया है कि वह अंबियाए किराम के जिस्मों को ख़राब करे।

यानी तमाम अजज़ा उनके महफ़ूज़ रहते हैं उनकी ज़ाहिरी हयात और क़ब्र की ज़िन्दगी में कोई फ़र्क़ नहीं।

इसी वजह से कहा गया है कि अल्लाह तआला के वली मरते नहीं बल्कि एक जहान से दूसरे जहन की तरफ़ मुन्तक़िल हो जाते हैं।

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया।

अल्लाह तआला के नबी ज़िन्दा हैं उन्हें रिज़्क़ दिया जाता है लफ़्ज़ नबी में किसी नबी की तख़सीस मुराद नहीं बल्कि जिन्से नबी मुराद है।

इसलिए कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मूसा अलैहिस्सलाम को उनकी क़ब्र में नमाज़ पढ़ते हुए देखा इसी तरह इब्राहीम अलैहिस्सलाम को देखा।

और सहीह हदीस शरीफ़ में है कि अंबियाए किराम अपनी क़ब्रों में ज़िन्दा हैं नमाज़ अदा करते हैं।

बैहक़ी रहमतुल्लाह अलैहि ने फ़रमाया कि अंबियाए किराम का मुख़्तलिफ़ औक़ात में मुतअद्दिद मकानात में जाना अक़लन जायज़ है जैसा कि मुतअद्दिद अहादीस में वारिद है।

अल्लाह तआला के नबी हमेशा ज़िन्दा रहते हैं उनको रिज़्क़ दिया जाता है इस रिज़्क़ से मुराद मानवी रिज़्क़ भी हो सकता है और रिज़्क़ हिस्सी भी बल्कि ज़ाहिर तौर पर ज़ेहन में फ़ौरन आने वाला यही रिज़्क़ है रिज़्क़ मानवी दिया जाता है क्योंकि अल्लाह तआला ने नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की उम्मत के शोहदा के मुताल्लिक़ फ़रमाया।

बल्कि वह ज़िन्दा हैं उनको अपने रब तआला के हां रिज़्क़ दिया जाता है।

जब नबी की उम्मत के शोहदा ज़िन्दा हों और उन को रिज़्क़ दिया जाता हो तो उनके सरदार रईस का क्या हुक्म होगा जबकि यक़ीनन उस सरदार को मर्तबए शहादत भी हासिल हुआ हो यह एक मज़ीद

सआदत है (वरना नबी का बग़ैर शहादत के विसाल भी नबी की ज़िन्दगी का सबब है) क्योंकि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को ख़ैबर में बकरी का ज़हर आलूद गोश्त एक यहूदिया ने दिया था जिसका कुछ मामूली हिस्सा आपने तनावुल फ़रमाया बाद में उस गोश्त ने ख़ुद ही बताया कि मुझे ज़हर आलूदा किया गया है तो आपने तनावुल फ़रमाना छोड़ दिया लेकिन आपके विसाल के वक़्त उसी ज़हर का असर लौट आया था तो आप को शहादत नसीब हुई।

अलबत्ता ज़ाहिरी शहादत से आपको महफ़ूज़ रखा उसकी एक वजह यह थी कि आपकी सूरते मुबारका की शान व शौकत जाह व जलाल को बरक़रार रखना मक़सूद था और दूसरी वजह यह थी कि क़ुदरते कामिला का इज़्हार करना मक़सूद था कि अल्लाह तआला ने एक फ़र्द को शरीर मख़्लूक़ के लिए कसीर दुश्मनों से कैसे महफ़ूज़ फ़रमाया। और तीसरी वजह यह थी कि अल्लाह तआला ने आप से जो वादा फ़रमाया था उसे पूरा करना मक़सूद था वह वादा यह था।

और अल्लाह तआला आपको लोगों से बचायेगा।

रिज़्क़ देने का एक मक़सद यह है कि जिस तरह रिज़्क़ से इंसान की ज़िन्दगी बरक़रार रहती है उसी तरह बग़ैर खाने पीने की चीज़ें अता करने के अंबियाए किराम और शोहदाए किराम को रब तआला ने यह ताक़त अता करता हो कि वह ज़िन्दा हैं यह रिज़्क़ मानवी है जब कोई पुकारता है वह सुनते हैं और जवाब देते हैं।

दूसरा मतलब यह हो सकता है कि हक़ीक़त में उनको खाने पीने की चीज़ें अता की जाती हैं। ज़्यादा ज़ाहिरी मायने है। तिर्मिज़ी में कअब बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत आती है।

कि बेशक शोहदा की रूहें सब्ज़ रंग के परिन्दों में रखी जाती हैं जो जन्नत के फलों के साथ मुताल्लिक़ होती हैं और एक रिवायत में आता है।

शोहदा की रूहें सब्ज़ रंग के परिन्दों के पटयों में रखी जाती हैं जन्नत में जहां चाहें सैर करती हैं और जन्नत के फल खाती हैं फिर अर्श के नीचे क़िंदीलों के साथ मुअल्लक़ हो जाती हैं।

मसलए हयातुल अंबिया व शुहदा व औलिया को तफ़सीलन देखना हो तो हावियुल फ़तावा शरहुस सुदूर बैहक़ी फ़तहुल बारी और उस्ताज़े मुकर्रम हज़रत अल्लामा अबुल हसनात मुहम्मद अशरफ़ सयालवी मद्दे ज़िल्लहु सुदूर की जिलाऊस का मुताला करें इस रिसाले में तो सिर्फ़ बतौर तबर्रुक नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का ज़िक्र किया जा रहा है जो निहायत इख़्तेसार पर मबनी है।

तंबीह : बेशक तमाम फ़ौत होने वाले लोग सलाम व कलाम को सुनते हैं और बाज़ दिनों में उनके क़रीबी रिश्तेदारों के आमाल उन पर पेश किये जाते हैं।

अलबत्ता अंबियाए किराम की ज़िन्दगी अरफ़अ व आला है इसी तरह शोहदाए किराम की ज़िन्दगी बनिसबत आम शख़्स के आला है।

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और आपकी आल पर सदक़ा का हुक्मः

हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से मरवी है कि हज़रत हसन इब्ने अली ने सदक़ा की खजूरों में एक खजूर लेकर अपने मुंह में डाल ली नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने बतौर ज़जर कख़ कख़ कहा ताकि यह मुंह से निकाल कर फेंक दे फिर आपने फ़रमाया कि तुम्हें मालूम है कि हम सदक़ा नहीं खाते।

कख़ कख़ यह कलिमा अरबी हज़रात किसी को डांटने और झिड़कने पर बोलते थे जब किसी ना पसंदीदा चीज़ से रोकना होता था जिस तरह हमारी ज़बान में ज़ोर देकर कहा जाता है हूं हूं यह कलिमा मक़सद पर ज़्यादा दलालत करता है बनिसबत यह कहने के "ला तफ़अल" ज़्यादा तौर पर यह कलिमा बच्चों के लिए बोला जाता है जिन को तमीज़ नहीं होती हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का आप को इस तरह ज़जर करना इसमें ज़्यादा मक़सद यह था कि हाज़िरीन को पता चल जाये कि आले रसूल के लिए सदक़ा का क्या हुक्म है?,

इससे वाज़ेह हो रहा है कि आबा व अजदाद पर वाजिब होता है कि वह अपनी औलाद को ग़ैर शरअ कामों से रोकें।

इसी वजह से हमारे उलेमाए किराम ने कहा है कि मां बाप पर हराम है बच्चों को रेशमी लिबास पहनाना और सोने चांदी का ज़ेवर पहनाना।

अल्लामा इब्ने हजर असक़लानी रहमतुल्लाह अलैहि ने फ़रमाया कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर तो सद्क़ात फ़रज़िया और नफ़लिया हराम थे लेकिन आपकी आल पर सिर्फ़ फ़र्ज़ी सदक़ात हराम हैं नफ़ली हराम नहीं।

इब्ने मलिक ने कहा है सदक़ा नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के लिए मुतलक़न हराम है ख़्वाह फ़र्ज़ हो या नफ़्ल अलबत्ता आपकी आल यानी अक़रबा के लिए सिर्फ़ फ़र्ज़ सदक़ा हराम है नफ़ली जायज़ है।

नहाया में ज़िक्र किया गया है कि नफ़्ली सदक़ा आले रसूल के लिए मुतलक़न जायज़ है।

फ़र्ज़ और नफ़ली सदक़ा में फ़र्क क्यों?

नफ़ली सदक़ात और वक़्फ़ से आले रसूल पर माल ख़र्च करना जायज़ है फ़र्ज़ जायज़ नहीं क्योंकि फ़र्ज़ सदक़ा करने वाला अपने ज़िम्मे लाज़िम हक़ को अदा करके अपने आपको पाकीज़ा करता है और जो माल बतौर सदक़ा अदा करता है वह मुस्तअमल पानी की तरह हो जाता है जिसमें पाक करने की सलाहियत ख़त्म हो जाती है लेकिन नफ़ली सदक़ा करने वाला अपनी खुशी से वह माल देता है जो उसके ज़िम्मे लाज़िम नहीं होता लिहाज़ा वह मैल कुचैल की हैसियत नहीं रखता जिस तरह एक बा वुज़ू शख़्स पानी को ठंडक हासिल करने के लिए इस्तेमाल करे उसके जिस्म पर ज़ाहिर नापाकी भी न हो वह पानी अपनी असली हालत पर बरक़रार रहता है पाक करने की इसमें सहालियत होती है इसी तरह यह माल भी पाक व साफ़ होता है मैल कुचैल से पाक होता है आले रसूल की शान के लायक़ होता है।

इसी तरह नफ़ली सदक़ा ग़नी को खाना भी जायज़ है फ़तावा अनाइया में इसी तरह ज़िक्र किया गया है। साहवे हदाया ने ब्यान किया।

सदक़ा देकर लौटाना दुरुस्त नहीं क्योंकि मक़सद सवाब हासिल करना था वह हासिल हो चुका था इसी तहर जब ग़नी को सदक़ा का माल अता करे तो माल लौटाए नहीं क्योंकि कभी ग़नी को भी माल सवाब की ग़र्ज़ से दिया जाता है।

साहवे अनाया उसी की वज़ाहत करते हुए ब्यान करते हैं।

जब ग़नी को सदक़ा करे तो इस्तिहसानन रुजू बातिल है अगरचे क़यास यह चाहता है कि रुजू

जायज़ हो क्योंकि ग़नी को सदक़ा देने में बदला हासिल करने की ग़र्ज़ होती है लेकिन वजहे इस्तिहसानन यह है कि बेशक ग़नी को कभी सदक़ा सवाब हासिल करने की ग़र्ज़ से दिया जाता है।

ग़नी को सदक़ा देना क़ुरबत हासिल करने के कोई मनाफ़ी नहीं।

ग़नी को सदक़ा देना क़ुरबत का काम है इससे सवाब हासिल होता है कभी ग़नी होता है क्योंकि निसाब का मालिक होता है लेकिन उसके अहल व अयाल कसीर होते हैं और लोग उस पर सदक़ करते हैं ताकि सवाब हासिल हो जाये क्या तुम इस मसले की तरफ़ नहीं देखते कि एक शख़्स वजूबी सदक़ा यानी ज़कात का माल ऐसे शख़्स को देता है जिसका हाल मुशतभा होता है बाद में पता चलता है कि वह ग़नी था तो माल वापस लौटाने की ज़रूरत नहीं बिल इत्तेफ़ाक़ उसका सदक़ा वाजिबा अदा हो गया इसी तरह नफ़ली सदक़ा में भी इल्म के बाद लौटाने की ज़रूरत नहीं क्योंकि मक़सद देने वाले का सवाब हासिल करना था वह उसे हासिल हो गया।

फ़ायदा : इस ब्यान कर्दा बहस से यह वाज़ेह हुआ कि आम तौर पर ईसाले सवाब की महाफ़िल में सदक़ात व ख़ैरात में फ़ुक़रा व अग़निया शरीक होते हैं वह सवाब से ख़ाली नहीं यह कहना कि जिस महफ़िल में ग़नी शरीक हों उसमें खाना खिलाना सवाब से ख़ाली होता है यह ग़लत है फ़ुक़हाए किराम की तसरीहात से बेख़बरी है।

मिल्क बदलने से सदक़ा हदिया बन जाता है:

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम एक दिन घर तशरीफ़ लाए तो आपने पूछा कि घर में कोई खाने की चीज़ है? आप की ख़िदमत में कुछ खजूरें पेश की गईं आपने फ़रमाया कि हंडिया में जो गोश्त पक रहा है उसमें हमारे लिए कोई हिस्सा नहीं तो बरीरा रज़ियल्लाहु अन्हा ने जो हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा की लौंडी थीं उन्होंने अर्ज़ किया कि यह गोश्त मुझे बतौर सदक़ा दिया गया आप चूंकि सदक़ा का माल नहीं खाते इसलिए आपकी ख़िदमत में पेश नहीं किया जा रहा है।

तुम्हारे लिए सदक़ा और हमारे लिए हदिया है।

यानी अगर किसी मुस्तहिक़ को सदक़ा का माल दिया जाये वह अपनी तरफ़ से ग़ैर मुस्तहिक़ यानी आले रसूल या ग़नी को दे तो जायज़ है क्योंकि मिल्क बदलने से हुक्म बदल जाता है।

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सख़ावत की एक झलक:

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा से मरवी है रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जब रमज़ान शरीफ़ दाख़िल होता तो क़ैदियों को आज़ाद कर देते और हर सवाल करने वाले को अता करते।

यानी रमज़ान शरीफ़ में हर साइल को आम आदत से ज़ायद अता करते वरना आपने किसी मौक़े पर भी यह नहीं फ़रमाया।

मुस्लिम शरीफ़ में है।

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से किसी चीज़ का सवाल नहीं किया गया यह कि आपने वह अता की। आपके पास एक शख़्स आया (उसने इस्लाम क़बूल किया उसके तालीफ़े क़ल्ब के लिए) आपने दो पहाड़ों के दर्मियान चरने वाली तमाम बकरियां अता फ़रमा दीं वह अपनी क़ौम के पास लौटकर गया तो कहने लगा ऐ मेरी क़ौम इस्लाम ले आओ बेशक मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तो इतना माल देते हैं कि फ़िक़्र का कोई ख़ौफ़ नहीं रहता।

बुख़ारी शरीफ़ में हज़रत ज़ाबिर रज़ियल्लाहु अन्हु से मरवी है।

कोई ऐसी चीज़ नहीं जिसका सवाल हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से किया गया हो तो आपने उसके जवाब में फ़रमाया हो नहीं यानी आप ने कभी इंकार नहीं फ़रमाया।

ख़्याल रहे कि अगर आपके पास कुछ देने के लिए नहीं होता तो आप उज़्र पेश फ़रमा देते वह दर हक़ीक़त इंकार नहीं होता था बल्कि इज़हारे हक़ीक़त हुआ करता था।

तुम में से मेरी मिस्ल कौन हो सकता है?

हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से मरवी है रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सौमे विसाल (दिन रात का लगातार रोज़ा, दर्मियान में इफ़तार न पाया जाये) से मना फ़रमाया एक शख़्स ने अर्ज़ किया।

या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम आप तो सौमे विसाल (दिन रात का लगातार रोज़ा दर्मियान में इफ़तार न पाया जाये) के रोज़े रखते हैं आपने फ़रमाया तुम में से मेरी मिस्ल कौन हो सकता है मैं तो रात ऐसे हाल में गुज़ारता हूं कि मेरा रब तआला मुझे खिलाता और पिलाता है।

हदीस पाक ज़ाहिर पर महमूल नहीं हक़ीक़ी तौर पर खिलाना और पिलाना मुराद नहीं क्योंकि अगर हक़ीक़ी तौर पर खाना पीना मैयस्सर हो तो सौमे विसाल नहीं।

तुम दिन रात का लगातार रोज़ा रखने की ताक़त नहीं रख सकते हो क्योंकि मुझे तो अल्लाह तआला की तरफ़ से रूहानी कुव्वत हासिल है, मुझे तो उसकी तरफ़ से मुहब्बत का खाना खिलाया जाता है और मुहब्बत का मशरूब पिलाया जाता है। यानी रब तआला की तजल्लियात के अनवार का दीदार करने से मुझे तो खाने पीने की ज़रूरत नहीं रहती।

अंबियाए किराम अलैहिमुस्सलाम एहतेलाम से महफ़ूज़:

बेशक अंबियाए किराम अलैहिमुस्सलाम एहतेलाम से महफ़ूज़ रहते हैं क्योंकि नींद की हालत में यह शैतान के आने की अलामत है।

अल्लामा इब्ने हजर असक़लानी रहमतुल्लाह अलैहि फ़रमाते हैं कि जब हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा ने फ़रमाया कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम रमज़ान की फ़ज्र में बग़ैर एहतेलाम के हालते जनाबत में होते तो गुस्ल फ़रमाते और रोज़ा रखते।

तो इस हदीस से यह मक़सद वाज़ेह हो गया कि अंबियाए किराम अलैहिमुस्सलाम को एहतेलाम की सूरत में तो नहीं होता था कि वह ख़्वाब में जिमाअ करें क्योंकि यह उस शख़्स को कैफ़ियत हासिल होती है जिससे शैतान नींद की हालत में खेले और अंबियाए किराम अलैहिमुस्सलाम इससे महफ़ूज़ हैं।

लेकिन एहतेलाम से अगर सिर्फ़ मनी का निकलना मुराद लिया जाये बग़ैर जिमाअ देखने के नींद की हालत में तो यह अंबियाए किराम अलैहिमुस्सलाम से महाल नहीं।

क्योंकि यह उमूर ख़लक़िया और आदिया से है इसमें अंबियाए किराम अलैहिमुस्सलाम और दूसरे हज़रात बराबर हैं चूंकि इसमें शैतान की दख़ल अंदाज़ी नहीं होती।

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के इस्तिग़फ़ार करने की वजह:

हज़रत अग़र मज़नी रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम

ने फ़रमाया बेशक जब मेरे दिल पर पर्दा आ जाता है बेशक मैं अल्लाह तआला से एक दिन में एक सौ मर्तबा इस्तिग़फ़ार करता हूं।

इस हदीस पाक में लफ़्ज़ इस्तेमाल हुआ है लीग़ान जिसकी वज़ाहत इस तरह की गई है।

"या" पर पेश है मायने इसका यह है कि छा जाना, ढांप लेना और पर्दा छा जाना अलबत्ता इस पर्दा से मुराद कौन सा पर्दा है वह यह है।

यानी जब मैं रब तआला की तरफ़ मुतावज्जेह होने का इरादा करूं तो जो चीज़ रुकावट बने उसके ज़वाल के लिए मैं इस्तिगफ़ार करता हूं इस तवज्जोह से मुराद भी खुसूसी तवज्जोह है जिसका ज़िक्र दूसरी रिवायत में आता है।

मुझे अल्लाह तआला से एक ऐसा वक़्त हासिल होता है इसमें कोई मुक़र्रब फ़रिश्ता और कोई नबी मुरसिल मेरे साथ वुसअत नहीं रखता।

वह क्या चीज़ें हैं,जो इस हालत में हायल होती थीं जिनको आपने पर्दा से ताबीर फ़रमाया? एक तो यह कि जो बशरी,तक़ाज़ा के मुताबिक़ ज़रूरियात हैं खाना पीना, निकाह वग़ैर।

जब आपके और मलाए आला के दर्मियान यह इंसानी लुवाज़मात हायल होते तो आप तसफ़ियए क़ल्ब (दिल को रौशन करने) के लिए और रुकावट को दूर करने के लिए इस्तिग़फ़ार करते हालांकि यह कोई गुनाह नहीं होता था सिर्फ़ अल्लाह तआला की तजल्लियात की तरफ़ मुतावज्जेह होने की बनिसबत यह हालत कुछ कम होती तो आप बुलंदी हासिल करने के लिए इस्तिगफ़ार करते। क़ाज़ी अयाज़ रहमतुल्लाह अलैहि ने फ़रमाया कि इससे मुराद हर वह चीज़ है जो भी अल्लाह तआला के ज़िक्र में रुकावट बने, क्योंकि आप चाहते थे कि तमाम वक़्त अल्लाह तआला का ज़िक्र ही करते रहें लेकिन दूसरी ज़िम्मेदारियां दर्मियान में कभी हिजाब बन जातीं।

बाज़ हज़रात ने कहा कि आप जब उम्मत के हालात पर मुत्तला होते तो आप पर एक ग़म की कैफ़ियत तारी होती उसके ज़वाल के लिए आप इस्तिग़फ़ार करते।

बाज़ हज़रात ने कहा कि आप अपनी उम्मत की बेहतरी के लिए उनकी तरफ़ मुतावज्जेह होते और दुश्मनों से और नये नये इस्लाम क़बूल करने वालों की तालीफ़े क़लूब में (उनके दिल में इस्लाम की मुहब्बत रासिख़ करने के लिए उनसे मुहब्बत और उनकी दिलजोई में) मश्गूलियत की वजह से बाज़ औक़ात यह समझते थे कि मेरे यह लमहात अल्लाह तआला के साथ खुसूसी मशगूलियत से दूर रहे इसलिए आप इस्तिग़फ़ार करते थे।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के हिजरत से पहले कई हज और हिजरत के बाद एक:

इब्ने असीर ने ब्यान किया है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हिजरत से पहले हर साल हज किया है और इब्ने जूज़ी का क़ौल भी इसी के मवाफ़िक़ है क्योंकि उन्होंने ज़िक्र किया है कि आपने कई हज किये हैं उनकी तादाद मालूम नहीं हाकिम ने सूरी से सनदे सही के साथ एक रिवायत नक़्ल की है कि आपने हिजरत से पहले कई हज किये हैं लेकिन तिर्मिज़ी ने हज़रत जाबिर से जो रिवायत ज़िक्र की है नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हिजरत से पहले दो हज किये औरा इब्ने माजा और हाकिम की एक रिवायत में तीन का ज़िक्र किया गया है यह रावियों ने अपने अपने इल्म के मुताबिक़ ज़िक्र किया है और जिन हज़रात ने ज़्यादा ज़िक्र किया है उन्होंने अपने इल्म के मुताबिक़ ज़िक्र किया

है इसलिए इनमें कोई मनाफ़ात नहीं।

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का इज़हार इज्ज़:

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु से मरवी है एक शख़्स नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुआ उसने कहा।

ऐ तमाम मख़लूक़ से बेहतर ज़ात! तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया यह तो इब्राहीम हैं।

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का फ़रमाना यह तो इब्राहीम हैं यह सिर्फ़ इज्ज़ व इंकिसारी के पेशे नज़र था और इब्राहीम अलैहिस्सलाम का ख़लीलुल्लाह होने और अपना जद्दे अमजद होने की वजह से एहतेराम के लिए था वरना हमारे नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तो मख़लूक़ से बेहतर व अफ़ज़ल हैं आपका अपना इरशादे गिरामी है मैं औलादे आदम का सरदार हूं मुझे इस पर कोई फ़ख़्र नहीं।

यानी आपका कलाम बाज़ औक़ात इज्ज़ व इंकिसारी पर दलालत करने वाला होता और बाज़ औक़ात हक़ीक़त का ब्यान होता।

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु से मरवी है रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि मेरी मदह सराई में मुबालग़ा न करो जैसे नसारा ने इब्ने मरयम की मदह में मुबालग़ा किया है बेशक मैं उस का अब्द हूं तुम (मेरे मुताल्लिक़) कहो अल्लाह तआला का बंदा और अल्लाह तआला का रसूल।

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने तश्बीह से मसला को वाज़ेह फ़रमा दिया कि मदह में नसारा की तरह मुबालग़ा न करो इसी हदीस की शरह में मुल्ला अली क़ारी रहमतुल्लाह अलैहि फ़रमाते हैं।

बेशक नसारा ने ईसा अलैहिस्सलाम की मदह में बहुत मुबालग़ा से काम लिया और वह भी बातिल तौर पर मदह में ज़्यादती की और ईसा अलैहिस्सलाम को अल्लाह तआला का बेटा कहा और ऐसी बातिल मदह सराई से हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सहाबा किराम को पहले ही मना फ़रमा दिया।

ख़्याल रहे कि यहूद ने ईसा अलैहिस्सलाम की मआज़ल्लाह मज़म्मत में मुबालग़ा किया और नसारा ने मदह में।

रब तआला ने दोनों फ़रीक़ों को ख़िताब करते हुए फ़रमाया।

ऐ अहले किताब अपने दीन में नाहक़ ग़ुलू न करो।

यानी हक़ बात करो और हक़ अद्ल है इतनी मदह न करो कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम को ख़ुदा या ख़ुदा का बेटा बना दो और इतनी मज़म्मत न करो कि मआज़ल्लाह आप को वल्दुज़्ज़िना कह दो।

आपने अपने मुताल्लिक़ जब यह ब्यान किया कि मुझे अल्लाह तआला का बंदा और रसूल कहा जाये ज़िमनन ख़ुद समझ में आ गया कि ईसा अलैहिस्सलाम भी अल्लाह तआला के बंदे और रसूल हैं न ख़ुदा और न ख़ुदा के बेटे हैं।

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को माबूद न कहा जाये बाक़ी जितनी तारीफ़ की जाये वह कम है हक़ यह है कि आप की तारीफ़ का हक़ अदा करना इंसानी ताक़त से बालातर है अल्लामा

बौसिरी रहमतुल्लाह अलैहि फ़रमाते हैंः नसारा ने जो अपने नबी के मुताल्लिक़ (ख़ुदा का बेटा होने का) दावा किया वह तू छोड़ दे और अपने नबी की जितनी मदह भी तो करना चाहता है ख़ुद भी कर और दूसरों को भी इसका हुक्म दे।

नबी की उबूदियत रिसालत व नबुव्वत से अफ़ज़ल हैः

आपके इरशाद का मतलब है कि मैं मक़ामे ख़ास में अल्लाह तआला का बंदा हूं। हक़ीक़त में नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को अब्द कहना आपकी कामिल मदह है जैसे किसी फ़ाज़िल व कामिल ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के क़ौल को शेअर की सूरत में पेश करते हुए कहाः

मुझे सिर्फ़ अल्लाह तआला का अब्द कह कर पुकारा जाये बेशक यह मेरे नामों से अफ़ज़ल नाम है।

अल्लाह तआला ने भी अपनी किताब में इसी बुलंद वस्फ़ और आला फ़ज़ीलत वाले लफ़्ज़ से वाक़िया मेराज में आपका ज़िक्र करते हुए फ़रमाया।

वह पाक ज़ात है जिसने अपने ख़ास बंदे को सैर कराई। नुज़ूले कुरआन का ज़िक्र करते हुए भी रब तआला ने आपके इसी वस्फ़ को ज़िक्र फ़रमाया।

बर्कत वाली है वह ज़ात जिस ने कुरआन जो हक़ व बातिल के दर्मियान फ़र्क़ करने वाला है नाज़िल किया अपने ख़ास बंदे पर।

सब तारीफ़ें अल्लाह तआला की जिसने किताब उतारी अपने ख़ास बंदे पर।

और इन आयात में आपके वस्फ़ अब्द का ज़िक्र करने में लतीफ़ इशारा और आला क़िस्म की बशारत पाई गई है कि आप पर अल्लाह तआला की आला इनायत और अज़ीम मेहरबानी इसी वजह से पाई गई है कि आप में आला दर्जा की उबूदियत पाई जाती है।

बेशक उबूदियत रिसालत से अफ़ज़ल है इसलिए कि उबूदियत में मख़लूक़ से हटकर रब तआला की तरफ़ तवज्जोह होती है इससे रब तआला से वेस्ल हासिल होता है लेकिन रिसालत में मख़लूक़ की तरफ़ तवज्जोह होती है क्योंकि मख़लूक़ तक अहकामे इलाहिया पहुंचाने ज़रूरी होते हैं इसलिए इस हालत में रब तआला की जानिब कामिल तवज्जोह नहीं रहती जो बज़ाहिर मक़ामे फ़स्ल (जुदाई, दूरी) हासिल होता है।

तंबीह : यह सिर्फ़ अंबियाए किराम अलैहिमुस्सलाम की उबूदियत की बात हो रही है कि उनकी उबूदियत उनकी नबुव्वत व रिसालत से अफ़ज़ल होती है किसी आम इंसान की उबूदियत को नबी की नबुव्वत से अफ़ज़ल कहना हरगिज़ जायज़ नहीं बल्कि अपने क़स्द व इरादा से ऐसा कहने से कुफ़्र लाज़िम आयेगा।

गुनाहगारों के लिए हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की शफ़ाअतः

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु से मरवी है रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया मैं सबसे पहले जन्नत में शफ़ाअत करने वाला हूंगा। अंबियाए किराम अलैहिमुस्सलाम में से किसी नबी के इतने तसदीक़ करने वाले नहीं हुए जितने मेरे हैं। बाज़ अंबियाए किराम अलैहिमुस्सलाम की तसदीक़ करने वाला सिर्फ़ एक शख़्स हुआ है।

अपनी उम्मत के गुनाहगारों के लिए जन्नत में दाख़िल होने के लिए सबसे पहले मैं ही शफ़ाअत करूंगा।

बाज़ हज़रात ने इसका मायने यह भी किया है कि जन्नत में लोगों के मदारिज बुलंद करने के लिए सबसे पहले मैं ही शफ़ाअत करूंगा।

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु से मरवी है रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया। क़यामत के दिन तमाम अंबियाए किराम से मेरे मुत्तबईन ज़्यादा होंगें

तमाम जन्नतियों में से दो तिहाई आपकी उम्मत के लोग होंगे और बाक़ी तमाम अंबियाए किराम अलैहिमुस्सलाम की उम्मतों के लोग सिर्फ़ एक तिहाई होंगे।

इससे यह वाज़ेह हुआ कि जितने ताबेदारी करने वाले लोग ज़्यादा होंगे उसी मिक़दार में मतबूअ (जिसकी ताबेदारी की जाये) में फ़ज़ीलत पाई जायेगी।

यहां से यह भी वाज़ेह हुआ कि तमाम आइम्मए किराम में से इमाम आज़म अबू हनीफ़ा रहमतुल्लाह अलैहि का मक़ाम बहुत बुलंद व बाला है और आपको यह मक़ाम नसीब हुआ है कि अहले इस्लाम की अक्सरियत आपके ही ताबेअ है।

तमाम ख़ज़ानों की चाबियां आप अलैहिस्सलाम को दी गई:

हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से मरवी है रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया मुझे जवामेउल किल्म अता करके मबऊस फ़रमाया गया और मुझे रोअब अता किया गया और मैंने सोए हुए देखा कि मुझे ज़मीन के ख़ज़ानों की चाबियां अता की गई जिनको मैंने अपने हाथ में रखा।

किल्म अता करने का मतलब यह है कि मुझे यह कुव्वत अता की गई है कि मैं बहुत मुख़्तसर कलाम करता हूं जिसके मायने कसीर होते हैं और वह बात भी वाज़ेह होती है ऐसा भी नहीं कि किसी को समझ में न आये।

आपने फ़रमाया जिससे मश्वरा तलब किया जाये वह अमीन होता है। यह कलाम सिर्फ़ दो कलिमों पर मुश्तमिल है लेकिन इससे मायने कसीर समझ में आ गये कि किसी से मश्वरा तलब किया जाये कि मैं क्या करूं ख़्वाह वह मश्वरा कारोबार का हो, किसी जगह तालीम हासिल करने का हो, किसी चीज़ को बेचने का हो या ख़रीदने का, ख़्वाह रिश्ता क़रने का वग़ैरह (इसकी हज़ारों मिसालें बन सकती हैं) तो मश्वरा देने वाले को चाहिये कि वह अपनी समझ के मुताबिक़ सही मश्वरा दे जिसमें उस शख़्स को फ़ायदा हो अगर यह समझता हो कि इसमें उस शख़्स का भला है लेकिन यह मश्वरा उसके ख़िलाफ़ दे तो ऐसा ही होगा जैसा कि अमीन शख़्स अमानत में ख़्यानत कर दे और आप का इरशाद कि मुझे रोअब अता किया गया दूसरी हदीस पाक में है।

मुझे एक महीने की मसाफ़त से रोअब अता किया गया है।

यानी अल्लाह तआला ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को यह मनसब अता फ़रमाया कि आप का दुश्मनों के दिलों में रोअब डाल दिया गया है।

जब कि आपके और आपके दुश्मनों के दर्मियान एक माह की मसाफ़त पाई जाती हो तो उन पर रोअब तारी हो जाता है और वह डरना शुरू हो जाते हैं।

और आपने फ़रमाया कि मुझे ख़्वाब में ज़मीन के ख़ज़ानों की कुंजियां अता की गई तो यह हक़ीक़त है क्योंकि नबी का ख़्वाब हक़ीक़त होता है यहां यह ब्यान किया गया कि आपके लिए और आपकी उम्मत के लिए अल्लाह तआला ने मुख़्तलिफ़ शहरों को फ़तह करना आसान कर दिया और उनके ख़ज़ाने

आपको अता कर दिये गये।

ज़मीन के मशारिक़ व मग़ारिब आपको दिखाये गये:

हज़रत सूबान रज़ियल्लाहु अन्हु से मरवी है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया।

बेशक अल्लाह तआला ने मेरे लिए ज़मीन को समेट दिया मैंने इसके मशारिक़ व मग़ारिब को देख लिया मेरी उम्मत वहां तक पहुंचेगी जहां तक मेरे लिए ज़मीन को समेटा गया।

ज़वी का मायने है जमा करना क़ब्ज़ करना जो चीज़ बईद से क़रीब नज़र आये यानी तमाम ज़मीन को समेट कर मेरे सामने कर दिया गया।

यानी तमाम ज़मीन को आपके सामने ऐसे कर दिया कि इंसान अपनी हथेली को अपनी नज़र के सामने देखे।

इसी वजह से आप ने फ़रमाया कि मैंने इसके मशारिक़ व मग़ारिब को देखा।

इसकी तफ़सीर में शैख़ अब्दुल हक़ मुहद्दिस देहलवी रहमतुल्लाह अलैहि ने ज़िक्र फ़रमाया।

यानी मेरी उम्मत तमाम ममालिक में आहिस्ता आहिस्ता पहुंच जायेगी यानी तमाम ममालिक में इस्लाम पहुंच जायेगा।

मेरे हबीब पाक सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का इरशाद गिरामी कैसा जगमगा रहा है आज दुनिया में कोई मुल्क ऐसा नहीं जहां मेरे आक़ा व मौला सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का नाम लेवा कोई न हो।

आप मुतम्मिमे अख़लाक़ हैं:

हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु अन्हु से मरवी है बेशक नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया।

बेशक अल्लाह तआला ने मुझे अच्छे अख़लाक़ की तकमील और अच्छे अफ़आल की तकमील के लिए भेजा।

मकारिम से मुराद ऐसे आदात जिनकी वजह से इंसान करीम कहलाए, अख़लाक़ से मुराद अहवाल यानी तमाम ऐसे अहवाल जिनकी वजह से इसांन करीम होता है उनकी तकमील रब तआला ने मेरे ही जरिये फ़रमाई और तमाम ज़ाहिरी अफ़आल और अक़वाल की तकमील के लिए मुझे भेजा गया यानी आपकी शरीअत तमाम अच्छे अफ़आल पर मुश्तमिल है और आपकी तरीक़त तमाम क़ामिल अहवाल को हावी है अगरचे हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के मकारिमे अखलाक़ अनगिनत हैं बेशुमार हैं लेकिन आपके वसीला जलीला से आपकी उम्मत को भी जो अच्छे अख़लाक़ अता किये गये हैं वह दस हैं और यह वह अख़लाक़ हैं जो बाज़ औक़ात बेटे को हासिल होते हैं बाप को नहीं बाज़ औक़ात बाप को हासिल होते हैं बेटे को नहीं वह यह हैं:

१. सच बोलना २. सच्ची उम्मीद रखना ३. साइल को अता करना ४. किसी के अमल का अच्छा बदला देना ५. अमानत की हिफ़ाज़त करना ६. सिला रहमी यानी क़राबत दारों से अच्छा सलूक रखना ७. अपनी ज़ौजा और अपने अहबाब से अच्छा सलूक रखना ८. मेहमान नवाज़ी करना ६. पड़ोसियों से अच्छा सलूक रखना १०. इन तमाम से बढ़कर हया है यानी हया रखना।

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम में यह तमाम उमूर पाये जाते थे और भी हर क़िस्म के अच्छे अफ़आल व अक़वाल के आप जिस तरह मालिक थे किसी दूसरे को वह हैसियत हासिल न हो सकी।

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के हाथ रेशम से नर्म और इत्र से ज़्यादा खुश्बूदारः

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु से मरवी है कि मैनें किसी रेशमी कपड़े को भी हाथ नहीं लगाया जो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के हाथ मुबारक से ज़्यादा नर्म हो।

यानी आपके हाथ मुबारक रेशम से भी ज़्यादा नर्म थे।

हज़रत जाबिर बिन समरा रज़ियल्लाहु अन्हु से मरवी है वह कहते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ जुहर की नमाज़ अदा की फिर आप अपने घर की तरफ़ तशरीफ़ ले चले और मैं भी आपके साथ ही निकला छोटे छोटे बच्चे हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का इस्तिक़बाल कर रहे थे आपने हर एक एक के दोनों रुख़सारों को मस फ़रमाया और मेरे रुख़सारों को भी मस फ़रमाया मैंने आपके हाथ मुबारक ठंडे और ख़ुश्बूदार महसूस किये ऐसा महसूस हो रहा था कि आपने अपने हाथ अभी अत्तार की डिबिया से निकाले हों।

सुबहानल्लाह मेरे हबीब कितने ज़्यादा शफ़ीक़ व मेहरबान थे बच्चों से शफ़क़त भरा प्यार करते कि एक एक के रुख़सारों को अपने करीम हाथों से थपकी दे रहे थे बच्चे भी आपसे तबर्रुक हासिल करने के लिए आपकी मुहब्बत व प्यार हासिल करने के लिए दीवानावार और आपकी तरफ़ दौड़ कर आते आपसे हाथ मिलाते।

काश कि यह अहादीस इन मुख़र्रेबीने अख़लाक़ को भी समझ में आयें जो बज़ाहिर मोअल्लेमीने अख़लाक़ बनकर जुल्म व सितम का बाज़ार गर्म किये हुए हैं ख़ूंख़्वार दरिन्दे बन कर क़ौम के बच्चों का ख़ून चूस रहे हैं लेकिन नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अफ़आल व अक़वाल तो ग़ुलामाने मुस्तफ़ा को ही समझ में आ सकते हैं ज़ालिम सरदारों चौधरियों को क्या समझ आयें जिनके दिलों पर जुल्म व सितम की मोहर लग रही है।

ज़ालिम सरदारों का हरगिज़ बेहतर किरदार नहीं हो सकता ऐ ख़ुदा! ज़ालिमों का सर सूली पर ही बेहतर है।

आपका पसीना खुश्बूदार और बाइसे बर्कतः

हज़रत उम्मे सलेम रज़ियल्लाहु अन्हा से मरवी है कि बेशक नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उनके घर आम तौर पर तश्रीफ़ लाते और क़ैलूला फ़रमाते वह आपके लिए चमड़े का बिछौना बिछातीं जिस पर आप क़ैलूला फ़रमाते हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को पसीना बहुत आता था वह आप के पसीने को जमा करके अपनी ख़ूश्बू में मिला रही थीं नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया ऐ उम्मे सलेम यह क्या? उन्होंने कहा यह आपका पसीना है जिसको हम अपनी ख़ुश्बू में मिला रहे हैं क्योंकि यह सब ख़ुश्बुओं से आला ख़ुश्बू है।

और एक रिवायत में है कि उन्होने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह इससे हम अपने बच्चों के लिए बर्कत हासिल करने की उम्मीद रखते हैं तो हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया ठीक है इससे बर्कत हासिल होगी।

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को पसीना ज़्यादा आता था:

क्योंकि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को हया ज़्यादा आती थी।

और जिसे हया ज़्यादा आए उसे पसीना ज़्यादा आता है।

किसी क़िस्म का इत्र, कस्तूरी हर क़िस्म की ख़ुश्बू वाली अशिया में ऐसी ख़ुश्बू नहीं पाई गई जो मेरे हबीब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पसीना मुबारक में थी मेरे आक़ा व मौला को एक आम इंसान समझने वालों ने कभी इस पर ग़ौर नहीं किया कि उनके पसीना से बदबू आती है कोई क़रीब बैठना पसंद नहीं करता, लेकिन हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का पसीना ख़ुश्बूदार चीज़ों की ख़ुश्बू बढ़ाने के लिए इस्तेमाल होता था और आप के पसीना से बर्कत हासिल होती थी हज़रत उम्मे सलीम के यह अर्ज़ करने पर कि हम आप के पसीना को बच्चों के लिए बर्कत हासिल करने के लिए इस्तेमाल करेंगे आप ने मना नहीं फ़रमाया बल्कि इरशाद फ़रमाया।

तुमने दुरुस्त काम किया है यक़ीनन मेरे पसीने में बर्कत है।

इस हदीस पाक से यह समझ आया कि नेक लोगों के आसार से तबर्रुक हासिल करना और उनका तक़र्रुब हासिल करना मुस्तहब है।

जब हज़रत उम्मे सलीम रज़ियल्लाहु अन्हा के बेटे हज़रत अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु की वफ़ात का वक़्त क़रीब आया तो आपने वसीयत फ़रमाई कि वफ़ात के बाद मुझे ख़ुश्बू लगाई जायेगी इसमें वह ख़ुश्बू भी मिलाना जो मेरी मां ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का पसीना मिलाकर तैयार की थी।

सुबहानल्लाह सहाबी रसूल का कैसा पुख़्ता ईमान है कि आपका पसीना क़ब्र में भी बर्कत का बाइस बनेगा।

ख़्याल रहे कि उम्मे सलीम और उम्मे हराम दोनों बहनें हैं मलहान की बेटियां हैं उम्मे सलीम हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की दस साल ख़िदमत करने वाले ख़ुश नसीब सहाबी हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु की वालदा हैं उनका निकाह पहले मालिक से हुआ था हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु उसी के बेटे हैं बाद में उनका निकाह तलहा रज़ियल्लाहु अन्हु से हुआ।

और यह भी ख़्याल रहे कि अल्लामा नूवी रहमतुल्लाह अलैहि ने ब्यान फ़रमाया कि उम्मे सलीम और हराम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़ाला थीं रिज़ाअ की वजह से थीं या नस्ब की वजह से इस लिहाज़ पर आप उनके घर आम तौर पर तशरीफ़ ले जाते आप उनके महरम थे महरम से ख़लवत जायज़ है किसी अजनबी ग़ैर महरमा औरत से आप ने कभी ख़लवत नहीं की।

यह दोनों बनी नज्जार से थीं और हज़रत अब्दुल मुत्तलिब की शादी भी बनी नज्जार से थी कि यह अपने बाप हाशिम से जुदा होकर मदीना चले गये थे और वहां बनी नज्जार से शादी कर ली थी।

पसीना की ख़ुश्बू से पता चलता कि आप यहां से गुज़रे हैं:

हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु अन्हु से मरवी है कि बेशक नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जब भी किसी रास्ते पर चले तो आपके बाद जब कोई उस रास्ते पर चला तो उसे आपके पसीना की ख़ुश्बू से पता चल गया कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का यहां से गुज़र हुआ है।

यहां जिस ख़ुश्बू का ज़िक्र किया जा रहा है वह :

आपके पसीना मुबारक में जो ख़ुश्बू कुदरती तौर पर पाई जाती थी वह मुराद है आम तौर पर पसीना की बदबू ज़ायल करने के लिए लोग जिस ख़ुश्बू का इस्तेमाल करते हैं वह मुराद नहीं।

पसीना में कुदरती तौर पर ख़ुश्बू का पाया जाना हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़ुसूसियत है बाक़ी अंबियाए किराम को भी यह शर्फ़ हासिल न हुआ।

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के हाथ मुबारक से बर्कत और शिफ़ा हासिल करना:

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु से मरवी है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जब सुबह की नमाज़ अदा फ़रमा लेते तो मदीना तैयबा के तमाम ख़ुद्दाम यानी बच्चे और बच्चियां आपके पास पानी के बर्तन लाते। जो भी बर्तन लाता आप उसमें अपना हाथ मुबारक डालते बसा औक़ात वह बहुत ठंडा पानी लाते आप अपने हाथ को इस में भी डालते।

वह अपने बर्तन आप के पास क्यों लाते?

वह आपसे बर्कत तलब करते, रिज़्क़ की ज़्यादती तलब करते आफ़ियत तलब करते और शिफ़ा तलब करते।

अल्लामा तैबी रहमतुल्लाह अलैहि फ़रमाते हैं कि हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ठंडे पानी में हाथ डालते थे क्योंकि आप चाहते थे कि मुझे बेशक तकलीफ़ हो लेकिन लोगों के दिल ख़ुश रहें उन्हें तसल्ली हासिल हो। ख़ास करके आप ख़ुद्दाम और ज़ईफ़ लोगों का ज़्यादा ख़्याल करते क्योंकि वह अपने बर्तन लाते ही इसलिए थे कि आप के हाथ मुबारक से बर्कत हासिल करें इससे वाज़ेह हुआ कि आपने गुरबा से अपने इज्ज़ की आला मिसाल क़ायम की है।

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तमाम लोगों से ज़्यादा बच्चों पर रहम करने वाले थे और अयाल पर भी ज़्यादा रहम फ़रमाते थे।

आपको अगर कोई ख़ादिम मिलता (यानी दूसरे लोगों के ख़ुद्दाम होते) तो आप उससे पूछा करते थे क्या तुम्हें कोई हाजत है?

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की इज्ज़ व इंकिसारी:

हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम न फ़ाहिश थे और न मुतफ़हहिश और न ही बाज़ारों में चिल्लाने वाले और न ही बुराई का बदला बुराई से देने वाले बल्कि आप माफ़ फ़रमा देते थे और दर गुज़र फ़रमाते थे।

हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम न फ़ुहश कलाम फ़रमाते और न ही आप का कोई फ़ेअल ऐसा होता जो फ़ुहश पर मबनी होता। आप मुतफ़हिहश नहीं थे यानी तकल्लुफ़ से क़ौल व फ़ेअल को फ़ुहश तरीक़ा से अदा करना, बेहूदा क़हक़हा लगाना राहगीर से मज़ाह उड़ाना शुरफ़ा को तंग करना यह सब फ़ुहश की अलामात हैं आप इस क़िस्म की हरकात से मुकम्मल तौर पर दूर थे।

बाज़ारों में चिल्ला चिल्ला कर बातें करना बिला ज़रूरत ज़ोर ज़ोर से किसी को आवाज़ देना किसी पर आवाज़ कसना आपका शेवा नहीं था यह हरकात बेहूदा इंसानों में पाई जाती हैं।

रब तआला के इरशाद के मुताबिक़ (इनको माफ़ करें और दरगुज़र करें बेशक अल्लाह तआला एहसान करने वालों से मुहब्बत करता है) कामिल तौर पर अमल था किसी को उसकी बद अख़लाक़ियों का बदला बद अख़लाक़ी से नहीं देते थे। बल्कि अगर कोई शख़्स आपसे बुराई से पेश आता तो आप

उससे अच्छाई से पेश आते। ज़ाती तौर पर अपने आप पर होने वाली ज़्यादतियों को आप माफ़ फ़रमा देते थे और दरगुज़र फ़रमा देते।

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के मुताल्लिक़ ब्यान फ़रमाते हैं।

कि बेशक आप मरीज़ों की अयादत फ़रमाते थे और जनाज़े के पीछे चलते थे ममलूक की दावत को क़बूल फ़रमाते थे और दराज़गोश (गधे) पर सवार होते, मैंने आपको ख़ैबर के दिन देखा कि आप एक दराज़गोश पर सवार हैं और उसकी रस्सी बान की है (यानी खजूर के पत्तों से बटी हुई रस्सी थी)

यह सब चीज़ें आपकी कामिल तवाज़ोअ पर दलालत कर रही हैं क्योंकि आप में मआज़ल्लाह तकब्बुर का कोई नाम व निशान नहीं था इब्ने मलिक ने कहा कि दराज़गोश (गधे) पर सवार होना सुन्नत है। हज़रत मुल्ला अली क़ारी रहमतुल्लाह अलैहि फ़रमाते हैं।

मैं कहता हूं जिस शख़्स ने दराज़गोश (गधे) पर सवार होने में शर्म महसूस की जैसा कि मुतकब्बिर लोग करते हैं और हिंदुस्तान के जाहिल लोग करते हैं वह गधे से भी ज़्यादा ज़लील हैं यानी नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सुन्नत पर अमल करने से शर्म करना दरहक़ीक़त गधे से भी ज़्यादा ज़िल्लत का सबब है।

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु से मरवी है बेशक रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जब भी किसी शख़्स से मुसाफ़ह करते तो आपने कभी हाथ मुबारक उसके हाथ से नहीं हटाया जब तक वह अपना हाथ खींच न लेता और आप ने कभी अपना चेहरा उससे नहीं फेरा यहां तक कि वह अपना मुंह फेर ले और आप को अपने बैठने वाले से घुटने आगे बढ़ाए हुए कभी नहीं देखा गया।

इस हदीस पाक में भी आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की तवाज़ोअ का ज़िक्र किया गया कि आपने कभी मुतकब्बरीन का तरीक़ा इख़्तेयार नहीं किया बल्कि हुस्ने अख़लाक़ का आला मैयार क़ायम फ़रमाया।

जिस तरह जाबिर और मुतकब्बिर लोग यह नहीं चाहते कि कोई उनके बराबर बैठे बल्कि वह अपने घुटने पास बैठने वाले से आगे बढ़ा कर बैठते हैं ताकि उनका तक़द्दुम ज़ाहिर हो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने ऐसा कभी नहीं फ़रमाया। आपने किसी के सामने कभी अपने घुटने खड़े भी नहीं किये।

बल्कि आप अपने घुटने पस्त रखते क्योंकि आप अपने पास बैठे हुए शख़्स की ताज़ीम का लिहाज़ करते।

आपने अपने हम नशीन की ताज़ीम का ख़्याल करते हुए कभी पांव फैलाए भी नहीं। यह सब कुछ तालीमे उम्मत की ख़ातिर था कि कोई शख़्स मुसाफ़ह करते वक़्त जल्द बाज़ी से अपना हाथ खींच न ले किसी से बात करते वक़्त अपना रुख़ उससे न फेरे, किसी को अपने आप से हक़ीर समझ कर आगे बढ़कर न बैठे और पांव न फैलाये।

दीनी मदारिस के तलबा बाज़ औक़ात अज़ ख़ुद अदब का लिहाज़ करते हुए उस्ताज़ के बराबर नहीं बैठते इसमें उस्ताज़ का तकब्बुर साबित नहीं होता और दीनी मदारिस में पांच घंटे तदरीस का सिलसिला जारी रहता है जिसकी मिसाल किसी स्कूल या कालेज से नहीं मिल सकती ऐसी सूरत में अगर उस्ताज़ को थकावट की वजह से कभी पांव फैलाने पड़ जायें या घुटने खड़े करने पड़ें तो इसमें

उस्ताज़ का तकब्बुर नहीं होता और न ही तलबा को हक़ीर समझना मतलूब होता है बल्कि उस्ताज़ का उज़्र होता है।

अगर हज़ार उस्ताज़ में से कोई एक कमीना, बदतरीन घटिया ज़ेहन रखने वाला, नालायक़ बेहूदा कमीना ख़ानदान का फ़र्द दीनी मदारिस में बदनुमा दाग़ अपने आपको आला समझे और तलबा को हक़ीर समझे और यह ख़्याल करे कि इनको घर से खाना नहीं मिलता तो यहां आ गये तो यह उसी एक कमीने की सोच है वरना हज़ार में से नौ सौ निन्नानवें अपने आपको तलबा का बाप या बड़ा भाई समझ कर शफ़क़त करते हैं।

आपने उबूदियत को पसंद फ़रमाया मलूकियत को नहीं:

हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा से मरवी है रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: ऐ आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा अगर मैं चाहता तो मेरे साथ सोने के पहाड़ चलें, मेरे पास एक फ़रिश्ता आया जिसके अज़ार बंद (यानी कमर) की जगह काबा शरीफ़ तक है उसने कहा बेशक आपका रब तआला आप पर सलाम भेजता है और कहता है कि अगर तुम चाहते हो तो नबी अब्द बन जाओ और अगर तुम चाहते हो तो नबी बादशाह बन जाओ। तो मैंने जिब्राईल अलैहिस्सलाम की तरफ़ नज़र की तो उन्होंने इशारा मेरी तरफ़ किया कि मैं अपने आप को आजिज़ रखूं।

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा की एक रिवायत में है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने जिब्राईल अलैहिस्सलाम की तरफ़ तवज्जोह की गोया आप उनसे मश्वरा तलब करने लगे तो जिब्राईल अलैहिस्सलाम ने अपने हाथ से इशारा किया कि आप आजिज़ी को पसंद करें तो मैंने कहा कि मैं नबी अब्द बनूंगा।

हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इसके बाद कभी तकिया लगाकर खाना नहीं खाया आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फ़रमाते थे मैं ऐसे खाना खाता हूं जैसे अब्द खाते हैं और मैं ऐसे बैठता हूं जैसा कि अब्द बैठते हैं।

फ़रिश्ते को इतना लंबा क़द अता करके भेजा गया कि काबा शरीफ़ की छत तक उसकी कमर थी और बाक़ी ऊपर वाला हिस्सा उससे बुलंद था उस फ़रिश्ते को इतना लंबा क़द देने की क्या वजह थी?

शायद उसे यह अज़मत देने की वजह यह थी कि उसे इतना अज़ीम पैग़ाम देकर भेजा गया था कि इस अम्र की अज़मत को ज़ाहिर करना मक़सूद था।

फ़रिश्ते ने कहा अल्लाह तआला आपको सलाम कहता है साहबे नहाया ने इसी को दलील बनाते हुए कहा है कि अगर कोई शख़्स दूसरों को कहे कि मेरा सलाम फ़लां को पहुंचाना तो उसे चाहिये कि वह सलाम पहुचाये और वह दूसरा शख़्स सुनकर उसका जवाब दे।

अल्लाह तआला ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को इख़्तेयार दिया कि आप नबुव्वत के साथ साथ चाहते हैं तो उबूदियत को पसंद कर लें और अगर चाहते हैं तो मलूकियत (बादशाहत) को पसंद कर लें आपने जिब्राईल अलैहिस्सलाम से मश्वरा किया तो उन्होंने आपको उबूदियत पसंद करने का मश्वरा दिया।

इसमें इशारा है इस तरफ़ कि बादशाहत और कामिल उबूदियत एक जगह जमा नहीं हो सकतीं।

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम चूंकि अफ़ज़लुल अंबिया हैं इसलिए आप को आला क़िस्म की उबूदियत हासिल है अगरचे मुतलक़न बादशाहत का हासिल होना कोई उबूदियत के मनाफ़ी भी नहीं।

इसलिए कि बाज़ अंबियाए किराम अलैहिमुस्सलाम को दोनों चीज़ें यानी बादशाहत और उबूदियत हासिल थीं।

बाज़ औक़ात माल को नेकी के कामों में ख़र्च करना कमाल भी नज़र आता है जैसा कि बाज़ हज़रात ने ज़िक्र किया है।

नेक शख़्स का माल ही बेहतर माल होता है और वह शहरों के फ़तह करने का ज़रिया बनता है और अल्लाह तआला के बंदों को उस माल के ज़रिये वुसअत हासिल होती है और भी इस तरह नेकी के कामों में वह माल सर्फ़ होता है।

इतना वाज़ेह हुआ कि जब सैयदुल अंबिया ने उबूदियत को पसंद किया तो उबूदियत का अंजाम भी आला है और उसका मर्तबा सब मरातिब से बुलंद है और रब तआला की रज़ा हासिल करने वालों को इसी में आला क़िस्म का ज़ौक़ हासिल होता है इसलिए कि :

असल बादशाही अल्लाह तआला ही को हासिल है जो वाहिद व क़ह्हार है और रब तआला ने फ़रमाया।

और मैंने नहीं पैदा किया जिन्नो और इंसानों को सिवाए इसके कि वह मेरी इबादत करें।

यानी वह यह ज़ाहिर करें कि वह मेरे बंदे हैं और मैं इनका माबूद और इनका रब तआला हूं जैसा कि हदीस कुदसी में आता है कि रब तआला ने फ़रमाया।

मैं एक मख़्फ़ी ख़ज़ाना था तो मैंने चाहा कि मुझे पहचाना जाये तो मैंने मख़लूक़ को पैदा किया कि मुझे पहचाना जाये।

इस में वाज़ेह दलील है इस पर कि सब्र करने वाला फ़क़ीर शुक्र करने वाला ग़नी से अफ़ज़ल है।

बाज़ औक़ात माल व दौलत की कसरत इंसान को सरकश बना देती है और वह ख़ुदा को भूल जाता है जो तकब्बुर का ज़रिया है और रब तआला की नेमतों का ना शुक्रा हो जाता है जिसकी वजह से वह रब तआला की नज़रे रहमत से महरूम हो जाता है ग़ालिब अहवाल में यही सूरत है रब तआला का इरशाद गिरामी है।

अगर अल्लाह तआला अपने तमाम बंदों पर रिज़्क़ कुशादा कर देता तो वह ज़मीन में सरकशी करने लगते लेकिन वह अंदाज़े के मुताबिक़ जितना चाहता है उतारता हैं बेशक वह अपने बंदों की ख़बर रखने वाला और देखने वाला है।

तफ़सीर इब्ने कसीर में हज़रत क़तादा का क़ौल ज़िक्र किया गया है कि आप फ़रमाते हैं:

बेहतर ज़िन्दगी वह है जो तुम्हें ग़ाफ़िल भी न करे और सरकश भी न बनाये।

इसी वजह से अल्लाह तआला ने अक्सर अंबियाए किराम अलैहिमुस्सलाम औलिया किराम उल्माए किराम और सुलहा किराम को माल कम ही अता किया है ताकि यह मुझे याद करते रहें। अंबियाए किराम अलैहिमुस्सलाम तो कसीर माल जिन को मिला, उनकी मासूमियत के पेशे नज़र उनसे मआज़ल्लाह सरकशी नाफ़रमानी मुमकिन नहीं थी लेकिन दूसरे लोगों से यह मुमकिन है जिन उलेमा को कसीर माल मिला उनमें से अक्सर अय्याश हो गये।

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तकिया लगाकर नहीं खाते थे यानी इस तरह कि एक तरफ़ मीलान हो या चौकड़ी मार कर तकिया पर सहारा लगा कर नहीं खाते थे। टेढ़ा होकर तकिया लगाकर खाना सेहत के लिए नुक़्सानदेह है और नीचे गद्दा हो और चौकड़ी मारकर खाना खाने से खाना ज़्यादा खाया जाता है इसलिए कि यह दोनों सूरतें हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को नापसंद थीं नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ऐसे बैठते थे जिस तरह गुलाम बैठते हैं।

यानी आप दो ज़ानो होकर बैठते जैसे खाने के वक़्त बैठा जाता है या इसके बग़ैर भी उस सूरत में बैठा जा सकता है या दोनों घुटने खड़े करके मक़अद को ज़मीन पर लगाकर आप बैठते इस हाल में भी आप नमाज़ के बग़ैर अक्सर औक़ात बैठते थे हां अलबत्ता अपने पास बैठे हुए शख़्स को हक़ीर समझकर तकब्बुर के तौर ऐसा बैठना आपको पसंद नहीं था इस्तिराहत के लिए ऐसा बैठना आपसे अक्सर औक़ात में साबित है।

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम गुलामों की तरह खाना खाते और गुलामों की तरह पानी पीते यानी आप तीन उंगलियों से खाना खाते और हाथ साफ़ करने से पहले उंगलियों को चाटते।

पानी पीते वक़्त दर्मियान में तीन सांस निकालते और हर सांस में बिस्मिल्लाह शरीफ़ पढ़ते और आख़िर में रब तआला का शुक्र अदा करते।

हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की आजिज़ी का ज़िक्र तबरानी की हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु की इस रिवायत में बहुत वाज़ेह है।

बेशक नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ज़मीन पर (बग़ैर चटाई वग़ैरह के) बैठ जाते थे और ज़मीन पर बैठकर ही खाना तनावुल फ़रमा लेते थे और बकरी को रस्सी ख़ुद बांधते और किसी गुलाम की जौ की रोटी के लिए दी हुई दावत भी क़बूल फ़रमा लेते थे।

इब्तेदाए वही :

हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा कहती हैं कि हुजूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ वही का आग़ाज़ सच्चे ख़्वाबों से हुआ आप जो भी ख़्वाब देखते वह सुबह की सफ़ेदी की तरह (सच्चा होकर) नमूदार होता फिर आपको तख़लिया गोशा नशीनी अलाहदगी पसंदगी आ गई तो आप ग़ारे हिरा में ख़लवत गुज़ीनी (अलाहदगी) फ़रमाने लगे और वहां मुतअद्दिद रातें इबादत फ़रमाते बग़ैर इसके कि अपने अहल व अयाल की तरफ़ जायें और आप अपने हमराह तोशा ले जाते जब वह ख़त्म होता तो आप हज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहु अन्हा के पास आते और मज़ीद तोशा ले आते यहां तक कि हक़ आपके सामने आ गया ऐसे हाल में आप ग़ारे हिरा में थे।

हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ वही की इब्तेदा सच्चे ख़्वाबों से हुई हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं कि आपके ख़्वाब सुबह की रौशनी की तरह ज़ाहिर होते थे यानी आप जो भी ख़्वाब देखते वही उसी तरह पेश आते थे यह सच्चे ख़्वाब देखने पर आपको अलाहदगी पसंद आने लगी इसी वजह से आप ग़ारे हिरा में कई कई दिन जाकर क़याम करते अपना ख़र्च साथ ले जाते थे जब वह ख़त्म हो जाता फिर आप घर तशरीफ़ ले आते और हज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहु अन्हा से और ख़र्च यानी खाने पीने की चीज़ें ले जाते और फिर ग़ारे हिरा में जाकर इबादत शुरू फ़रमा लेते वह आपकी इबादत क्या थी? अल्लामा ऐनी रहमतुल्लाह अलैहि लिखते हैं कि सवाल किया गया कि आप

की इबादत क्या थी?

जवाब दिया गया कि आपकी इबादत ग़ौर व फ़िक्र और इबरत पज़ीरी थी।

ख़्याल रहे कि आप की इबादत दिन को भी होती और रात को भी लेकिन यहां सिर्फ़ रात का ज़िक्र किया गया या तो क़ायदा तग़लीब के पेशे नज़र और या गोशा नशीनी के लिए रातों का इस्तेमाल अहम है इसलिए रातों का ज़िक्र किया गया।

फ़यतहन्नस की तफ़सीर हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा या इब्ने शहाब ज़हरा ने तअबद (इबादत करना) से की है असल में तीन लफ़्ज़ ऐसे हैं जो बाब तफ़अल पर आयें तो इनमें मायनी सुल्ब का होता है वह यह हैं।

पहले दोनों लफ़्ज़ों का मायने है गुनाहों से दूर रहना और तहन्नस का भी तक़रीबन यही मायने है यानी ख़िलाफ़े शान कामों से इज्तेनाब करना और जब ख़िलाफ़े शान कामों से इज्तेनाब अच्छे कामों से है तो यक़ीनन तअबद ही है।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का ग़ारे हिरा में क़याम कितनी देर के लिए होता? इसकी तादाद मोअय्यन ज़िक्र नहीं इसीलिए बाज़ हज़रात ने कसरत मायने लिया है और बाज़ ने क़िल्लत यानी कसीर रातें आप वहां क़यान फ़रमाते थे और कुछ हज़रात ने कहा कि कुछ रातें वहां क़याम फ़रमाते और फिर वापस आ जाते और एक एहतेमाल यह ज़िक्र किया गया है।

और यह हर साल में एक महीना का क़याम होता और वह महीना रमज़ान का होता।

अल्लामा सियूती रहमतुल्लाह अलैहि फ़रमाते हैं:

मैं कहता हूं मुनकिन है कि यह मुद्दत चालीस दिनों की हो क्योंकि मूसा अलैहिस्सलाम का तूर पर क़याम चालीस दिन ही था जब आप तौरात लाए चालीस दिन रात की मुद्दत में कुछ ख़ुसूसियात और ऐसे राज़ रखे हुए हैं जिनके आसार व अनवार सूफ़िया किराम पर ही ज़ाहिर होते हैं और यही वजह है कि वह कभी कभी चालीस दिन रात इबादत के लिए वक़्फ़ करते हैं नवाफ़िल अदा करते हैं। रोज़े रखते हैं मुख़्तसर से खाने से रोज़ा इफ़्तार करते हैं उनकी इस इबादत को चिल्लाकशी का नाम दिया जाता है।

लुत्फ़ की बात यह है कि तबलीग़ी जमाअत वाले भी अपने चालीस दिन के सैर व सयाहत पिकनिक मनाने के दौरे को चिल्ला काटना कहते हैं और इसकी बड़ी तारीफ़ करते हैं मालूम हुआ कि चालीस का हिंदसा इन्हें भी पसंद है।

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया जिस शख़्स ने अल्लाह तआला के लिए ख़ुलूस दिल से चालीस सुबह इबादत की उसका ज़िक्र किया उसके दिल से उसकी ज़बान पर हिकमत के चश्मे फूट पड़ते हैं।

आपके पास फ़रिश्ते की आमद:

पस फ़रिश्ता आपके पास आया उसने कहा पढ़ो मैंने कहा मैं नहीं पढ़ता हूं यहां तक कि फ़रिश्ते ने मुझे पकड़ा और इतना दबा दिया कि वह थक गया फिर छोड़ दिया और कहा पढ़ो मैंने फिर कहा मैं नहीं पढ़ता फ़रिश्ते ने फिर दूसरी बार मुझे पकड़ा और इतना दबा दिया कि वह थक गया फिर मुझे छोड़ दिया और कहा पढ़ो मैंने फिर वही जवाब दिया मैं नहीं पढ़ता फ़रिश्ते ने तीसरी बार फिर दबाया

और कहा पढ़िये अपने रब तआला के नाम से जो सबका पैदा करने वाला है।

यह थी ग़ारे हिरा में हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर सबसे पहली वही और एक पैग़ाम लाने वाले की हैसियत से जिब्राईल अलैहिस्सलाम की पहली हाज़िरी इस पर सब का इत्तेफ़ाक है कि इस फ़रिश्ते से मुराद हज़रत जिब्राईल अलैहिस्सलाम ही हैं और कुरआन करीम जिब्राईल अलैहिस्सलाम ही लेकर नाज़िल हुए कुरआन पाक में भी इसे वाज़ेह तौर पर ब्यान किया गया।

आपके दिल पर रूह अमीन (जिब्राईल) ने कुरआन पाक नाज़िल किया। रूयाए सालेहा और ख़लवत इख़्तेयार करने के बाद यह कैफ़ियत पैदा हुई कि जिब्राईल अलैहिस्सलाम सामने आ गये और उन्होंने सूरः इकरा की पांच आयतें सुनाई यह रमज़ान का महीना और पीर का दिन था उस वक़्त हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की उम्र मुबारक चालीस साल थी।

हज़रत जिब्राईल अमीन ने अर्ज़ किया इकरा पढ़िये जिब्राईल अलैहिस्सलाम ने तीन मर्तबा "इकरा" कहा और हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने तीनों मर्तबा मैं तो नहीं पढ़ता फ़रमाया।

तीन बार इकरा कहने में इस तरफ़ इशारा था कि जिस वही का आग़ाज़ हो रहा है वह तीन चीज़ों पर मुश्तमिल होगी तौहीद, अहकाम, कसस।

जिब्राईल अलैहिस्सलाम ने कहा पढ़िये तो हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया मैं नहीं पढ़ता सवाल यह पैदा होता है कि आपने इंकार क्यों फ़रमाया? जवाबन अर्ज़ यह है कि हक तो यह है कि हज़रत जिब्राईल अलैहिस्सलाम का तीन मर्तबा कहना "इकरा" और हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का हर बार वही जवाब देना कि मैं नहीं पढ़ता अल्लाह तआला ही जाने कि इसमें क्या हिकमतें थीं? इसके मुताल्लिक कोई फ़ैसला कुन बात कहने की तो गुंजाईश नहीं है।

अलबत्ता बज़ाहिर इंकार की वजह यह मालूम होती है कि हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ग़ारे हिरा में ज़िक्र इलाही से लुत्फ़ अंदोज़ थे कल्बे अक्दस पर कैफ़ का आलम तारी था कि अचानक हज़रत जिब्राईल अमीन ने हाज़िर होकर इस्तदआ की कि पढ़िये तो ज़ाहिर है कि जब आप का कल्बे मुबारक महबूबे हकीकी की याद में सरशार था और एक इस्तग़राक की कैफ़ियत तारी थी तो ऐसी सूरत में आपने दूसरी जानिब तवज्जोह मबजूल फ़रमाना गवारा न फ़रमाया।

हज़रत जिब्राईल अलैहिस्सलाम ने तीन बार अपनी तरफ़ मुतावज्जेह करने के लिए मुआनका भी फ़रमाया मगर हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का कल्बी इरादा यही रहा कि ज़िक्रे हबीब से लुत्फ़ अंदोज़ होता रहूं यहां तक कि जब जिब्राईल अमीन ने उसी महबूबे हकीकी के नाम की बर्कत से पढ़ने की इब्तिदा की जिसके मुशाहिदा जमाल में हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मुस्तग़रक थे तो आप उधर मुतावज्जेह हुए और सूरः इकरा की पांच आयतें नाज़िल हुई।

यह भी ख़्याल रहे कि अक्सर हज़रात ने तो "मा अना बकारी" में "मा" नाफ़िया बनाया है जिसका मायने है मैं नहीं पढ़ता लेकिन अल्लामा ऐनी रहमतुल्लाह अलैहि ने अपनी राए में इस तरह ब्यान फ़रमाई कि "मा" इस्तिफ़हामिया है जैसे "मा तिल्का बैमि न का या मूसा" में है और इसकी ताईद रिवायत "अबिल अस्वद फ़ि मनाज़िया" भी करती है जिसमें "मा अना बकारी" की जगह "कैफ़ा इकरा" या "मा ज़ा इकरा" आया है। और मुमकिन है कि पहला नाफ़िया हो दूसरा इस्तफ़हामिया और तीसरा मौसूला हो यानी पहली मर्तबा फ़रमाया हो कि मैं नहीं पढ़ता क्योंकि आप अल्लाह तआला की याद में मुस्तग़रक थे और दूसरी

मर्तबा जिब्राईल अमीन के मुआनक़ा के बाद उसकी तरफ़ मुतावज्जेह होकर फ़रमाया हो कि मैं क्या पढ़ूं और तीसरी मर्तबा फ़रमाया हो कि अच्छा जो मैं पढ़ने वाला हूं वह क्या है? तुम क्या चाहते हो?

घर आकर कंबल ओढ़ने का मुतालबा :

फिर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम नाज़िल शुदा आयात लेकर वापस घर तशरीफ़ लाये क़ल्बे मुबारक मुज़तरिब था फ़रमाया मुझे कंबल ओढ़ाओ मुझे कंबल ओढ़ाओ आपको कंबल ओढ़ाया गया यहां तक कि वह कैफ़ियते इज़तेराब जाती रही फिर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम नें हज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहु अन्हा को (ग़ारे हिरा) का तमाम माजरा ब्यान करके फ़रमाया मुझे तो अपनी जान का ख़तरा हो गया था।

ग़ारे हिरा में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर जब वही नाज़िल हुई और अनवारे बर्काते समदियत मुतावज्जेह हुए और आपने जनाब ख़दीजा रज़ियल्लाहु अन्हा से फ़रमाया कि वही की सक़ालत और कलामे इलाही की हैबत का यह आलम था कि ऐसा मालूम होने लगा कि अब जान चली, चुनांचे वही को ख़ुद क़ुरआन ने क़ौले सक़ील कहा है और यह तसरीह की है कि अगर वही किसी पहाड़ पर उतारी जाती तो वह जलाले इलाही से पाश पाश हो जाता मगर यह तो ज़ाते नबवी थी जिसने बतौफ़ीक़े इलाही पहाड़ को रेज़ा रेज़ा करने वाली चीज़ को बर्दाश्त कर लिया।

अलग़र्ज़ : इस जुमले से हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने वही की इस तकलीफ़ और शिद्दत को ब्यान फ़रमाया है जो ग़ारे हिरा में आपको पहुंची और जिसके असरात घर तशरीफ़ लाने और चादर ओढ़ा देने तक रहे और जब चादर ओढ़ा दी गयी तो वह इज़्तिराबी कैफ़ियत ख़त्म हो गई और इसके बाद हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहु अन्हा को ग़ारे हिरा का वाक़िया सुनाया चुनांचे बाद का जुमला इस अम्र की तसरीह कर रहा है कि खौफ़ दूर हो जाने के बाद आपने क़िस्सा सुनाया यह नहीं कि क़िस्सा सुनाते वक़्त भी आप अपनी जान के ख़ौफ़ में मुब्तला थे।

नबी को नबुव्वत के इब्तेदाई मरहला में फ़रायज़े नबुव्वत को निभाने का आरज़ी फ़िक्र हो जाना शाने नबुव्वत के ख़िलाफ़ नहीं है मुन्केरीने सुन्नत का इस मासूम जुमला को ग़लत रंग देकर यह कहना कि बुख़ारी से तो यह भी साबित है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को अपनी नबुव्वत ही में शक था निहायत बे ईमानी के साथ हदीस के मज़कूरा बाला जुमला की तहरीफ़े मानवी करना है क्योंकि पूरी हदीस में कोई लफ़्ज़ तो दर किनार इशारा तक नहीं कि मआज़ल्लाह आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम नबुव्वत के मामले में ज़रा भर भी रैब व शक में मुबतला थे।

सैयदना मूसा अलैहिस्सलाम को जब नबुव्वत मिली तो हुक्म हुआ कि तुम दोनों फ़िरऔन के पास जाओ।

बेशक उसने सर उठाया है यानी सरकश हो गया है तो सैयदना मूसा अलैहिस्सलाम ने अर्ज़ किया दोनों (मूसा अलैहिस्सलाम व हारुन अलैहिस्सलाम) ने अर्ज़ किया ऐ हमारे रब बे शक डरते हैं कि वह हम पर ज़्यादती करे या शरारत से पेश आये।

देखिये सैयदना मूसा अलैहिस्सलाम को भी ख़ौफ़ हो रहा है ज़ाहिर है कि ख़ौफ़ की इल्लत यह नहीं थी कि जनाब कलीम अलैहिस्सलाम को अपनी नबुव्वत में शक था बल्कि यह ख़ौफ़ फ़र्ज़े नबुव्वत की अदाएगी के सिलसिला में था कि मुझे फ़िरऔन जैसी अज़ीम ताक़त के मुक़ाबले के लिए भेजा जा

रहा है तो मैं तन्हा फराइज़े नुबुव्वत से क्योंकर ओहदा बरा हूंगा यही फिक्र थी कि जिसने सैयदना मूसा अलैहिस्सलाम को ख़ौफ में मुब्तला कर दिया और उन्हें अर्ज़ करना पड़ा कि इलाही मैं डरता हूं कि कहीं फ़िरऔन ज़्यादती न करे। इससे यह बात वाज़ेह होती है कि नबी का नबुव्वत के बिल्कुल इब्तेदाई मरहला में फ़र्ज़े नबुव्वत की अदाएगी और रिसालत की ज़िम्मेदारियों के मुताल्लिक आरज़ी तौर पर ज़रा देर के लिए ब-इक़्तेज़ाए बशरियत ख़ौफ व इज़्तेराब में मुब्तला हो जाना शाने नबुव्वत के मनाफी नहीं।

इसी तरह इसका यह मतलब लेना भी बातिल है कि आप पर फरिश्ता को देखकर रोअब पैदा हो गया तो आपने कहा कि मुझे तो जान का ख़तरा हो रहा था।

अव्वलन तो यह इसलिए बातिल है कि यह उस वक़्त किसी हद तक मुमकिन हो सकता था जब कि जिब्राईल अलैहिस्सलाम अपनी मलकी (फरिश्तों वाली) सूरत में आते हालांकि हदीस पाक में मलकी सूरत में आने का कोई ज़िक्र नहीं अलबत्ता आपके बशरी सूरत में आने के वाज़ेह इशारात मौजूद हैं। तो इसमें इतना रोअब तारी होने का सवाल ही पैदा नहीं होता।

सानियन अगर इस रोअब का सबब जिब्राईल होते तो यह रोअब शुरू में देखते ही तारी होना चाहिये था हालांकि आप बड़े सकून व इत्मीनान से जवाब दे रहे हैं। वह तीन मर्तबा इक़रा कह रहे हैं और आप हर मर्तबा "मैं नहीं पढ़ता" कह कर जवाब दे रहे हैं अगर डर होता तो मआज़ल्लाह आपकी ज़बान मुबारक से कोई लफ़्ज़ भी अदा न हो सकता।

लिहाज़ा वाज़ेह हुआ कि रोअब व इज़्तेराब का सबब हज़रत जिब्राईल अलैहिस्सलाम को फकत देखना न था बल्कि कलामे इलाही का नुज़ूल और वही की सक़ालत व शिद्दत ही थी।

यहां ख़ौफ तारी होने का यह मतलब नहीं कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को अल्लाह तआला ने जो अता किया है आपको उसमें शक था बल्कि इतने अज़ीम अम्र नबुव्वत को उठाने की ताक़त मुझे कैसे हासिल होगी, इसका ख़ौफ दामनगीर था। यह वही का बोझ जो मेरे ऊपर एक चादर की तरह तान दिया गया है मैं इसको उठाने की कुदरत कैसे रखूंगा? यही सबब था जिसे आप ने ख़ौफ व ख़तरा से ताबीर किया और फरमाया कि मेरी तो जान जा रही थी।

हज़रत ख़दीजा का जवाबन अर्ज़ करना:

हज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहु अन्हा कहने लगीं हरगिज़ नहीं बख़ुदा (अल्लाह की कसम) अल्लाह तआला आपको कभी परेशान व शर्मिंदा नहीं करेगा आप कराबत दारों का ख़ूब हक अदा करते हैं सच्ची गुफ़्तगू फरमाते हैं बे सहारों का बोझ उठाते हैं ज़रूरतमंदों की ज़रूरत पूरी करते हैं मुसाफिरों की मेज़बानी करते हैं और लोगों को राहे हक़ में पेश आने वाले हवादिस पर मदद देते हैं।

हज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहु अन्हा के तसल्ली आमेज़ अलफ़ाज़ को बार बार ग़ौर से पढ़ें तो वाज़ेह होगा कि फरिश्ते का रोअब नहीं था वरना आप पूछतीं कि वह कैसा शख़्स था? वह कैसे आया आपसे कैसे पेश आया, नहीं आप यह नहीं पूछ रही थीं बल्कि कह रही थी हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जिस ज़ाते बारी ने आपको यह बारे गिरां उठाने का हुक्म फरमाया है वही आपका मुआविन होगा उसने आपको औसाफे हमीदा पहले ही अता कर रखे हैं आपसे अगरचे कोई कतअ ताल्लुकी करे लेकिन आप फिर भी उससे सिला रहमी करते हैं। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम सच्चा कलाम फरमाते हैं लोग

बेशक आपकी तकज़ीब भी करते रहे हैं आपकी सदाकत में कोई फर्क नहीं आता आप ज़ईफ़ लोगों यतीमों बेवाओं अयाल दार नादार औरतों और ग़रीब मर्दों के बोझ उठाते हैं उनकी इमदाद फ़रमाते हैं आप भलाई के कामों के लिए माल हासिल करते हैं और वह लोग जिन के पास माल नहीं होता उन्हें अता फ़रमाते हैं और जो मुसाफ़िर लोग आपके पास आते हैं आप उनकी इमदाद फ़रमाते है और जो मसाइब हक़ की राह में लोगों पर आते हैं आप उनकी इमदाद फ़रमाते हैं।

इन औसाफ़ के होते हुए अल्लाह तआला आपको कभी परेशान नहीं करेगा सुबहानल्लाह उम्मुल मोमिनीन हज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहु अन्हा को अल्लाह तआला ने कितना अज़ीम मर्तबा अता फ़रमाया है आपने जिन अल्फ़ाज़ से तसल्ली दी रब तआला ने भी वही अल्फ़ाज़ ज़िक्र फ़रमाये।

हदीस पाक से भी समझ में आया कि बाज़ औक़ात किसी इंसान की उसके सामने तारीफ़ करनी जायज़ होती है जब कि मालूम हो कि वह शख़्स उस पर मुतकब्बिर नहीं हो जायेगा और उस तारीफ़ करने में लोगों को भी उस नेकी की तरफ़ मायल करना है और यह भी वाज़ेह हुआ कि आपका फ़ेक़्र इख़्तेयारी था इज़्तेरारी नहीं था हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने ख़ुद फ़ेक़्र को पसंद फ़रमाते हुए इरशाद फ़रमाया।

फ़ेक़्र मेरा फ़ख़्र है।

हज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहु अन्हा ने दलील यह पेश फ़रमाई।

बेशक आप को कोई परेशानी नहीं होगी क्योंकि आपको अल्लाह तआला ने तमाम आला अख़लाक़ और अच्छे आदात से नवाज़ा है।

इसमें दलील पाई जाती है इस पर कि अच्छे अख़लाक़ और भलाई के काम बुराई की वजह से हलाकतों से बचाने के ज़राया व असबाब हैं।

हज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहु अन्हा का आपको वरक़ा बिन नौफ़िल के पास ले जानाः

फिर हज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहु अन्हा आपको अपने चचाज़ाद भाई वरक़ा बिन नौफ़िल बिन असद बिन अब्दुल उज़्ज़ा के पास ले गईं वरक़ा बिन नौफ़िल ज़माना जाहिलयत में ईसाई हो गये थे और वह इबरानी ज़बान में लिखना जानते थे और इंजील को इबरानी में लिखते थे जो अल्लाह तआला चाहता और बहुत बूढ़े थे और आंखों की रौशनी भी जाती रही थी हज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहु अन्हा ने वरक़ा से फ़रमाया ऐ चचा के बेटे अपने भतीजा का माजरा सुनिये वरक़ा ने (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) से कहा ऐ मेरे भतीजे! बताओ तुम क्या देखते हो? हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने जो कुछ देखा था ब्यान फ़रमाया। वरक़ा ने कहा यही वह नामूस (महरम असरार यानी जिब्राईल) है जिसे ख़ुदा ने मूसा अलैहिस्सलाम पर उतारा था ऐ काश मैं उस वक़्त तक ज़िन्दा रह सकता जब कि आपकी क़ौम आपको मक्का से हिजरत करने पर मजबूर कर देगी हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया। क्या मेरी क़ौम मुझे निकाल देगी? वरक़ा बिन नौफ़िल ने जवाब दिया हां! जो कुछ आप लेकर आये हैं इसको ले कर कोई आदमी नहीं आया जिससे लोगों ने दुश्मनी न की हो अगर मैं उस ज़माने में ज़िन्दा रहा तो आपकी हर तरह मदद करूंगा इस वाक़िया के थोड़े दिनों बाद ही वरक़ा ने वफ़ात पाई। और इसके बाद वही रुकी रही। ख़्याल रहे कि सूरः इक़रा की पांच आयतों के नुज़ूल के बाद जिब्राईल अलैहिस्सलाम की आमद रुकी रही उलेमा का इस पर इत्तेफ़ाक़ है कि सिलसिला वही रुक जाने के

बाद सबसे पहले सूरः मुदस्सिर की इब्तेदाई आयात नाज़िल हुई।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ग़ारे हिरा से वापस तशरीफ़ ला रहे थे कि फ़रिश्ता नज़र आया जिसका ज़िक्र हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह अंसारी की रिवायत में है वह वही के रुक जाने के मुताल्लिक़ हदीस ब्यान करते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया मैं (ग़ारे हिरा से) आ रहा था कि मैंने आसमान से एक आवाज़ सुनी मैंने निगाह उठाकर देखा तो वही फ़रिश्ता जो ग़ारे हिरा में आया था आसमान और ज़मीन के दर्मियान कुर्सी पर बैठा हुआ नज़र आया तो मुझे उससे ख़ौफ़ आया मैं घर वापस हुआ और मैंने कहा मुझे चादर ओढ़ा दो मुझे चादर ओढ़ा दो फिर अल्लाह तआला ने यह आयात नाज़िल फ़रमाई।

सूरः इक़रा की पांच आयतों के नुज़ूल के बाद वही आना बंद हो गई थी जिसकी मुद्दत तीन साल बताई जाती है इसके बाद जिब्राईल अमीन हाज़िर हुए तो सबसे पहले सूरः मुदस्सिर की आयतें नाज़िल हुई जिन का ज़िक्र इस हदीस पाक में है जिसका तर्जमा ज़िक्र किया गया है इसके बाद वही आना शुरू हो गई जिसका सिलसिला जारी रहा ताहम हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम दुनिया से तशरीफ़ ले गये।

आप पर जब आरज़ी तौर पर वही आना बंद हो गई तो आप बहुमत मलूल रहते थे ता—आंकि रहमते इलाही मुतावज्जेह हो गई और वही का सिलसिला जारी हो गया वही क्यों रुकी रही? इसकी असल हिकमत तो अल्लाह तआला ही जानता है अलबत्ता बाज़ शारहीन ने यह हिकमत ब्यान की है कि कुछ अर्सा के लिए वही आना इसलिए बंद हुई ताकि पहली बार जो आप पर वही की शिद्दत और सक़ालत के असरात मुरत्तिब हुए थे वह दूर हो जायें और आपका शौक़ और बढ़ जाये।

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सर झुकाने पर सहाबा किराम ने अपने सर झुका लिये:

हज़रत अबादा बिन सामत रज़ियल्लाहु अन्हु से मरवी है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर जब वही नाज़िल होती तो आप पर शिद्दत की कैफ़ियत तारी होती और आपके चेहरे का रंग मुतग़य्यर हो जाता एक रिवायत में है कि आपने अपना सर झुका लिया और सहाबा किराम ने भी अपने सर झुका लिये जब आपसे यह कैफ़ियत जाती रही तो आपने सर उठा लिया।

वही के नुज़ूल के वक़्त सर झुकाने की वजह तफ़क्कुर करना और अमर वही का शदीद एहतेमाम करना और हुक़ूक़े उबूदियत के मुतालबा पर डर रखना और मुनइम की नेमतों का शुक्रिया बजा लाना अपनी उम्मत के नाफ़रमानों को अज़ाब पहुंचने से परेशान होना और डरना वग़ैरह उमूर थे। और हो सकता है कि फ़िलवाक़ेअ वही के नुज़ूल की वजह से ज़ाहिरी शिद्दत तारी हो जाती हो और चेहरे का रंग मुतग़य्यर हो जाता नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सर झुकाने की तो यह वजहें थीं लेकिन सहाबा किराम के सर झुकाने की वजह फ़क़त यह थी कि उन्होंने आपकी ताबेदारी करते हुए अदब के तौर पर सर झुका लिये थे।

हुज़ूर के सर उठाने पर सहाबा किराम ने भी सर उठा लिये। सुबहानल्लाह! कितनी ताबेदारी कैसा अदब व एहतेराम था? कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया भी नहीं कि मेरे सर झुकाने पर तुम भी झुकाना और मेरे सर उठाने पर तुम भी उठाना फ़क़त देखकर अमल करना सहाबा किराम की ही शान थी।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के हाथों क़त्ल होने वाला बद बख़्त:

हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से मरवी है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया।

कि अल्लाह तआला का उस कौम पर शदीद ग़ज़ब है जिसने अपने नबी से यह सलूक किया आपने अपने सामने वाले दांत मुबारक की तरफ़ इशारा करते हुए यह इरशाद फ़रमाया। (जिस दांत मुबारक को ग़ज़वए उहद में शहीद किया गया था) और उस शख़्स पर भी अल्लाह तआला का शदीद ग़ज़ब है जिसको अल्लाह तआला की राह में ख़ुद उसके रसूल ने क़त्ल किया हो।

जिस शख़्स को क़त्ल उस हस्ती ने किया हो जो रहमतुललिल आलमीन हैं तो यक़ीनन वह शख़्स तमाम लोगों से बदबख़्त होगा।

जिस शख़्स को रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने ख़ुद अपने हाथ मुबारक से क़त्ल किया वह अबी बिन ख़ल्फ़ था।

आपकी उंगलियों से निकला हुआ पानी ज़मज़म और कौसर से अफ़ज़ल है:

हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु अन्हु से मरवी है कि हदैबिया के दिन लोग प्यासे हुए और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास एक बर्तन में पानी था जिस से आप वुज़ू फ़रमा रहे थे फिर लोगों ने आपकी तरफ़ तवज्जोह की और अर्ज़ किया कि हमारे पास पानी नहीं कि हम उससे वुज़ू करें या पियें सिवाए इसके जो आप के बर्तन में पानी है। नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपना हाथ मुबारक अपने बर्तन में रखा तो आप की उंगलियों से पानी के फव्वारे चल पड़े जिस तरह चश्मों से पानी निकलता है रावी कहते हैं कि हमने उससे पिया और वुज़ू किया हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु अन्हु से पूछा गया कि उस वक़्त आपकी तादाद कितनी थी? आप ने फ़रमाया अगर हम एक लाख की तादाद में होते तो फिर भी हमें किफ़ायत कर जाता अलबत्ता हम उस वक़्त पंद्रह सौ की तादाद में थे एक दूसरी हदीस देरों जिसके तहत उनवान के मुताबिक़ बहस की गई है।

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु से मरवी है कि बेशक रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास जिब्राईल आए जब कि आप बच्चों के साथ खेल रहे थे उन्होंने आपको पकड़कर लिटाया फिर आप के दिल की जगह (से सीना) को चाक किया और उससे एक मुनजमिद ख़ून का लोथड़ा निकाला और कहा कि आप के जिस्म में शैतान का हिस्सा था फिर एक सोने के तश्त में दिल को रख कर ज़मज़म के पानी से धो दिया फिर सीने को दुरुस्त किया (यानी उसे टांके लगाये) दिल को अपनी जगह पर लौटा दिया (साथ खेलने वाले) बच्चे डरते हुए आपकी रज़ाई मां (हलीमा सअदिया) के पास आये तो कहने लगे कि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को क़त्ल कर दिया गया है जब हलीमा के घर के अफ़राद आए तो देखा कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का रंग मुतग़य्यर है हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि मैं हुज़ूर के सीना मुबारक पर सूई से लगे हुए टांकों के निशान देखता था।

ख़्याल रहे कि सोने के बर्तन इस्तेमाल करना नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की शरीअत में हराम है लेकिन जिब्राईल अलैहिस्सलाम ने सोने के तश्त को इस्तेमाल किया, इसकी एक वजह यह थी कि अभी आपको ऐलाने नबुव्वत का हुक्म नहीं दिया गया था और न ही आपको शरीअत अता हुई थी और दूसरी वजह यह थी कि यह इस्तेमाल करने वाले जिब्राईल थे और फ़रिश्ते हमारे अफ़आल के मुकल्लफ़ नहीं।

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के दिल मुबारक को आबे ज़मज़म से धोया गयाः

इसी को इस मसले पर दलील बनाया गया है कि आबे ज़मज़म यहां के तमाम पानियों से अफ़ज़ल है यहां तक कि हौज़े कौसर और नहरे कौसर के पानी से भी अफ़ज़ल है।

क्योंकि आप के दिल को धोने के लिए जिस पानी का इंतेख़ाब किया गया वह यक़ीनन तमाम पानियों से अफ़ज़ल होना चाहिये।

लेकिन वह पानी जो हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की उंगलियों से जारी हुआ था वह बिला शक तमाम पानियों से मुतलक़न अफ़ज़ल है। यानी आबे कौसर से भी और आबे ज़मज़म से भी चूंकि आबे कौसर से तो आबे ज़मज़म आला है और आबे ज़मज़म से वह पानी अफज़ल है जो मेरे हबीब की उंगलियों से जारी हुआ वह क्यों अफ़ज़ल है?

इसलिए कि इस पानी को ताल्लुक़ है सैयदुल अंबिया के हाथ मुबारक से है कि आप की उंगलियों से जारी हुआ और आबे ज़मज़म को हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम के क़दमों से ताल्लुक़ है कि वह ऐड़ी की हरकत से निकला है तो इन दोनों में बहुत बड़ा फ़र्क़ है।

क्योंकि जब नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तमाम नबियों से अफज़ल हैं तो आपके हाथ मुबारक से ज़ाहिर होने वाला मोजिज़ा भी अफ़ज़ल है इस कमाल से जो इस्माईल अलैहिस्सलाम की ऐड़ी की रगड़ से ज़ाहिर हुआ।

यह शक़्क़े सदर वाली हदीस से हो या इस क़िस्म की और अहादीस हों उनको तसलीम करना वाजिब है और तावील करके मजाज़ी मायने न लिया जाये क्योंकि इसकी कोई ज़रूरत नहीं इसलिए कि ख़बर देने वाले ख़ुद नबी करीम सल्लल्ललाहु अलैहि वसल्लम हैं जिनसे बढ़कर कोई सच्चा नहीं हो सकता इसलिए ख़बर सच्ची है और रब तआला की कुदरत से भी यह कोई बईद नहीं।

फ़ायदा : नबी करीम सल्लल्ललाहु अलैहि वसल्लम के जिस्मे अतहर से वह ख़ून का मुनजमिद टुकड़ा निकाला गया? इसलिए कि उसमें यह तासीर रखी हुई है कि वह शैतान के असर को क़बूल कर लेता है उसको निकाल दिया गया ताकि उसकी वजह से दिल मुक़द्दस और मुनव्वर हो जाये और वही को क़बूल करने की कामिल सलाहियत उसमें पैदा हो जाये और नबी करीम सल्लल्ललाहु अलैहि वसल्लम को ग़ाफ़िल करने की तमाम उम्मीदें मुनक़तअ हो जायें।

वह टुकड़ा आपके जिस्म में रखा ही क्यों था इसके बग़ैर ही आपको पैदा फ़रमा लिया जाता इसकी क्या वजह है? असल वजह यह है कि हर इंसान के जिस्म में वह टुकड़ा होता है अगर आपके जिस्म में वह हिस्सा शुरू ही में न रखा जाता तो जिस्म में एक हिस्सा के न होने की वजह से नक़्स पैदा होता आपको चूंकि हर ऐब से पाक फ़रमाना था इस हिस्से को जिस्म में रखा गया ताकि जिस्मानी कोई नक़्स न हो फिर उसे निकाल दिया गया क्योंकि अब आपके जिस्म मुबारक में वह रहने के क़ाबिल नहीं था मेरे उस्ताज़ मुकर्रम हज़रत अल्लामा अबुल हसनात मुहम्मद अशरफ़ सयालवी मद्दे ज़िल्लहुल आली ने यही तक़रीर फ़रमाई थी जब आप यह हदीस मुबारक पढ़ा रहे थे उस वक़्त मेरे साथ पढ़ने वाले और हज़रात के अलावा यह चार हज़रात क़ाबिले ज़िक्र थे मौलाना अबुल फ़ज़लुल्लाह सयालवी, मौलाना अब्दुल लतीफ़ सयालवी, मौलाना शाह मुहम्मद क़सूरी और क़ारी मुहम्मद यूसुफ़ जेहलमी।

ख़्याल रहे कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का शक़्क़े सदर (सीना चाक करना) कई

मर्तबा हुआ एक मर्तबा बचपन में जब आप हज़रत हलीमा सअदिया के पास थे और दूसरी मर्तबा जब आपसे ग़ारे हिरा में जिब्राईल अलैहिस्सलाम की मुलाक़ात हुई और तीसरी मर्तबा मेराज की रात को।

आपने चांद के दो टुकड़े फ़रमाये:

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु से मरवी है कि बेशक मक्का वालों ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से सवाल किया कि आप हमें मोजिज़ा दिखायें आप ने चांद के दो टुकड़े करके दिखाये वह देख रहे थे कि जबले हिरा चांद के दोनों टुकड़ों के दर्मियान आ गया।

हज़रत इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु से मरवी है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के ज़माने में चांद के दो टुकड़े हुए एक पहाड़ के ऊपर था और एक नीचे तो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया गवाह रहो।

दोनों हदीसों का मक़सद एक ही है यानी चांद के दो टुकड़े हो गये और इन दोनों टुकड़ों का वक़ूअ ऐसा था कि जबले हिरा इन के दर्मियान ऐसा नज़र आ रहा था एक टुकड़ा पहाड़ के ऊपर था एक नीचे।

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया इसका मतलब यह है कि मेरी नबुव्वत पर गवाह बन जाओ और दूसरा मतलब यह है कि मेरे मोजिज़ा पर गवाह बन जाओ और तीसरा मतलब यह है कि मुझसे मोजिज़ा तलब करने आओ जाओ हाज़िर आओ ज़ाहिर में मेरे मोजिज़ा को देखो इस मोजिज़ा का इंकार और तावील हक़ से कजरवी है।

ज़िजाज ने कहा कि अहले इल्म के रास्ते से हट जाने वालों और सीधी रहा से अदल करने वालों ने यह कहा है कि चांद का फटना क़यामत को वाक़ेय होगा।

हालांकि इन कज रवी करने वालों का यह क़ौल सरासर बातिल है कुरआन पाक के अल्फ़ाज़ इसी पर दलालत कर रहे हैं कि यह वाक़ेय हो चुका है क्योंकि रब तआला ने वन शक़्क़ल क़मर के बाद ज़िक्र फ़रमाया है।

और अगर वह कोई निशानी देखें तो मुंह फेरते और कहते हैं यह तो जादू है चला आता।

क़यामत के दिन यह कैसे होगा यानी क़यामत के दिन किसी निशानी को कोई शख़्स भी जादू नहीं कह सकेगा वहां तो इनको अपनी जान की पड़ी होगी यह तो दुनिया में ही वह आयात व मोजिज़ात को जादू कहते रहे।

इमाम फ़ख़रुद्दीन राज़ी ने फ़रमाया कि कुछ लोगों को यह वहम हुआ कि चांद के दो टुकड़े फ़रमाने का मोजिज़ा एक हौलनाक अमर था अगर यह वाक़ेय होता तो तमाम रुए ज़मीन के लोग देखते और हदीस के रावी कसीर तादाद में होते इसी तरह हदीस मुतावातिर होती हालांकि यह ख़बर वाहिद है तो इसका जवाब दिया गया है कि जो इस हदीस और मोजिज़ा को मानते हैं उनके नज़दीक कसीर मिक़दार में उसे लोगों ने नक़्ल किया है इसलिए यह मुतावातिर है लेकिन मुख़ालफ़ीन को हो सकता है कि गफ़लत तारी हो गई हो जिस तरह सूरज को ग्रहण लगता है तो कोई तवज्जोह करता है और कोई नहीं करता।

कुरआन पाक सबसे आला दलील है और सबसे बड़ी क़वी शहादत है अक़ली तौर पर इस में शक करने की कोई गुंजाईश नहीं और जब हुज़ूर नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने ख़ुद ख़बर दी

है और आप से बढ़कर कोई सच्चा भी नहीं तो ज़रूरी हो चुका है कि उस मोजिज़ा के वकूअ का यक़ीन किया जाये।

अल्लामा नूवी रहमतुल्लाह अलैहि ने शरह मुस्लिम में इसकी वजह ब्यान की है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के ज़माने में कसीर लोग इस मोजिज़ा को क्यों नहीं देख सके थे आप फ़रमाते हैं कि यह मोजिज़ा चांद के दो टुकड़े होना रात को वाक़ेअ हुआ और बड़े बड़े लोग ग़ाफ़िल हो कर सोए हुए थे और दरवाज़े बंद थे और वह चादर ओढ़ कर सोए हुए थे ऐसे हालात में इंसान कम ही आसमान की तरफ़ देखता है और आसमान में कम ही तफ़क्कुर करता है और शरहसु सुन्ना में यह भी ज़िक्र है कि मुतालबा भी एक ख़ास कौम ने किया था और उन्होंने ही देखा था दूसरे लोग ग़ाफ़िल होकर सो रहे थे।

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को दरख़्त और पत्थर सलाम कहते:

हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु अन्हु से मरवी है रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया।

बेशक मैं उस पत्थर को पहचानता हूं जो मक्का में मुझे बेअसत से पहले सलाम कहता था बेशक मैं उसे अब भी पहचानता हूं ।

एक रिवायत में सराहतन ज़िक्र है कि वह कहता था कि अस्सलामु अलैकुम या नबीअल्लाह वह पत्थर कौन सा था? हक़ीक़त तो अल्लाह और उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ही जानते हैं अलबत्ता बाज़ हज़रात ने कहा है कि हो सकता है कि वह हज्रे असवद हो या काबा शरीफ़ और हज़रत ख़दीजा के मकान के दर्मियान एक पत्थर था जो नाम ज़क़ाकुल हज्र से मशहूर था आपको सलाम कहता हो। हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा से मरवी है रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया।

कि जिब्राईल अमीन जब मेरे पास रिसालत का हुक्म लेकर आये तो मुझे जो भी पत्थर या दरख़्त मिलता वही कहता अस्सलामु अलैकुम या रसुलल्लाह ।

इसमें इशारा है कि आप तमाम मख़लूक़ की तरफ़ मबऊस हुए।

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का मोजिज़ा और अबू जहल की ज़िल्लत:

हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से मरवी है कि अबू जहल ने कहा (मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) तुम्हारे सामने पेशानी रगड़ते हैं (नमाज़ पढ़ते और सज्दा करते हैं) तो लोगों ने कहा हां अबू जहल कहने लगा क़सम है लात और उज़्ज़ा की अगर मेरे सामने उसने ऐसा किया तो मैं उसकी गर्दन दबोच दूंगा मआज़ल्लाह इतने में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तशरीफ़ फ़रमा हुए और नमाज़ पढ़ने लगे उसने इरादा किया कि आपकी गर्दन दबोच दे वह अचानक आपके पास आया ही था लेकिन ऐड़ियों के बल पीछे की तरफ़ भागा और बचाओ के लिए हाथ मार रहा था लोगों ने पूछा क्या हो गया? कहने लगा मेरे और मुहम्मद के दर्मियान आग की एक ख़ंदक़ हायल हो गई और बहुत बड़ा हौलनाक मंज़र था और परिन्दों के पर ही पर नज़र आ रहे थे हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया अगर मेरे क़रीब आता तो फ़रिश्ते उस के आज़ा को अलाहदा अलाहदा कर देते यानी टुकड़े टुकड़े कर देते।

अबू जहल को जो पर नज़र आ रहे थे वह दर हक़ीक़त फ़रिश्ते थे जो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की हिफ़ाज़त कर रहे थे।

मेराज की रात जिब्राईल आप को अंबियाए किराम का तार्रुफ़ क्यों करा रहे थे?

हमारे नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अल्लाह तआला की मुलाक़ात की तमन्ना में कामिल तौर पर इस्तिरग़राक़ में थे सिर्फ़ मक़सद अज़ीम रब का मुशाहिदा करना था आप मख़लूक़ की तरफ़ तवज्जोह करने से ग़ाफ़िल थे जैसे कि रब तआला ने फ़रमाया आंख न किसी की तरफ़ फिरी और न हद से बढ़ी यह आपके इस्तिरग़राक़ ताम की तरफ़ कामिल इशारा है इसी वजह से हर मक़ाम पर जिब्राईल अलैहिस्सलाम आपको मुतावज्जेह करते रहे कि यह फलां नबी हैं आप इनको सलाम करें। अंबियाए किराम अलैहिमुस्सलाम से आपकी मुलाक़ात आसमानों में कैसे हुई? जब कि उनके जिस्म अपनी अपनी क़ब्रों में मौजूद हैं इसकी एक वजह यह हो सकती है।

कि उनकी रूहों को अल्लाह तआला ने जिस्मों की शक्ल दे दी हो।

यानी क़ब्रों में जिस्म मौजूद होने के बावजूद आसमानों में अरवाह भी जिस्मों की सूरत में मौजूद हो गईं।

दूसरी वजह यह हो सकती है।

अंबियाए किराम अलैहिमुस्सलाम के जिस्मों को ही हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मुलाक़ात के लिए आसमानों में उस रात को हाज़िर कर लिया गया हो। ताकि हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की अज़मत वाज़ेह हो जाये और आपकी इज़्ज़त अफ़ज़ाई हो।

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की आसमानों में जिस नबी से भी मुलाक़ात हुई, आप फ़रमाते हैं मैंने उसे सलाम कहा और उसने सलाम का जवाब दिया। और इस में दलील है कि अंबियाए किराम अलैहिमुस्सलाम को हक़ीक़ी ज़िन्दगी हासिल है।

बेशक अंबियाए किराम अलैहिमुस्सलाम बाक़ी ज़िन्दा लोगों की तरह ज़िन्दा हैं मुर्दा नहीं, बल्कि सिर्फ़ दारे फ़ना यानी इस दुनिया से दारे बक़ा यानी आख़रत की तरफ़ मुन्तक़िल होते हैं अंबियाए किराम अलैहिमुस्सलाम की ज़िन्दगी पर दलालत करने वाली कई अहादीस और अख़बार वारिद हैं बेशक वह अपनी क़ब्रों में ज़िन्दा हैं वह शोहदा से अफ़ज़ल हैं वह अपने रब के हां ज़िन्दा हैं।

ख़्याल रहे कि हर नबी ने आपको सलाम का जवाब देते हुए "अन नबीयुस सालेह" के लक़ब से पुकारा ऐ सालेह नबी लफ़्ज़ सालेह के इंतेख़ाब में क्या हिकमत थी?

बेशक सलाह एक ऐसा वस्फ़ है जो भलाई क़ी तमाम ख़सलतों और अच्छी आदात को शामिल है इसी वजह से यह कहा जाता है।

सालेह वह है जो उसके ज़िम्मे हुकूकुल इबाद और हुकूकुल्लाह लाज़िम हों उनको मुकम्मल तौर पर अदा करे। इसी वजह से अंबियाए किराम अलैहिमुस्सलाम ने इस दुआ को इख़्तेयार किया मुझे हालते इस्लाम पर वफ़ात आए और मुझे सालेहीन (अपने ख़ास क़रीबी बंदों) से मिला दे और यह भी मुमकिन है यहां यह मायने मुराद लिया जाये।

कि अंबियाए किराम अलैहिमुस्सलाम ने आपके इस बुलंद व बाला मक़ाम को देखकर आपको सालेह कहा हो कि यह अज़ीम मर्तबा और इस बुलंद मक़ाम पर सैर कराना यानी शर्फ़े मेराज आपको ही हासिल हो रहा है इसलिए सालेह होने का बुलंद मक़ाम भी आपको हासिल है।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का मेराज जागते हुए था:

अल्लामा तैयबी रहमतुल्लाह अलैहि ने फ़रमाया कि हम ने बुख़ारी और तिर्मिज़ी की रिवायत जो इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा से मरवी है उसे ज़िक्र किया कि अल्लाह तआला के इस इरशाद में कि और हमने न किया वह दिखाना जो तुम्हें दिखाया था मगर लोगों की आज़माईश यानी आपको हालते बेदारी में मेराज कराके लोगों के लिए आज़माईश बनाया कि कौन ईमान लाता है और कौन नहीं।

रुया से मुराद आंख है (ख़्वाब देखना मुराद नहीं) जो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को दिखाया गया है यह वह सैर की रात है जिसका ज़िक्र कुरआन पाक में हुआ कि आप को मस्जिद हराम से अक़्सा (बैतुल मुक़द्दस) तक सैर कराई गई।

इमाम अहमद बिन हम्बल रहमतुल्लाह अलैहि ने मुस्नद में हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत की है।

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को जो चीज़ दिखाई गई वह बेदारी में यानी जागते में जिसे आपने अपनी आंखों से देखा और यह बात भी वाज़ेह है कि वाक़िया मेराज को सुनकर कुरैश ने इंकार किया था और कुछ लोग यह सुनकर मुरतद भी हो गये थे।

इंकार की ज़रूरत ही उस वक़्त दरपेश आई जबकि वाक़िया बेदारी का था अगर ख़्वाब का मामला होता तो किसी को इंकार की क्या ज़रूरत थी?

बेशक रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया जब कुरैश ने मेरी तकज़ीब की तो मैं हतीम में खड़ा हो गया तो अल्लाह तआला ने मुझ पर बैतुल मुक़द्दस ज़ाहिर कर दिया तो मैंने उसकी निशानियां बतानी शुरू कर दीं और मैं बैतुल मुक़द्दस को देख रहा था।

इस हदीस से भी वाज़ेह हुआ कि मेराज जागते हुए जिस्मानी तौर पर था इसी लिए कुरैश ने इंकार किया था।

रब तआला ने हुज़ूर की मेराज का ज़िक्र करते हुए फ़रमाया "इसरा बिअब्दिही" जो इस पर दलालत कर रहा है कि यह वाक़िया बेदारी का था और आपको जिस्मानी तौर पर हुई क्योंकि अब्द रूह और जिस्म दोनों के मजमूआ पर बोला जाता है अगर ख़्वाब का वाक़िया होता तो "इसरा बिरूहि अब्दिही" कहा जाता। और कबीर में अल्लामा राज़ी ने भी ज़िक्र किया है।

ग़लती की वजह :

ख़्वाब का वाक़िया ब्यान करने वाले एक रिवायत हज़रत माविया रज़ियल्लाहु अन्हु की पेश करते हैं।

हज़रत अमीर माविया रज़ियल्लाहु अन्हु से सवाल किया गया कि मेराज कैसे था तो उन्होंने कहा वह रुयाए सालेहा था।

पहले ब्यान किया जा चुका है कि रुया से मुराद रूया बिल ऐन है यानी आंख से देखना। बुनियादी ग़लती की वजह यह है कि रुया ख़्वाब के मायने में भी इस्तेमाल होता है और आंख से देखने के मायने में भी। जब दूसरी रिवायात से वाज़ेह है कि रुया के मायने आंख से देखने के यहां मुराद है तो ख़्वाब वाला मायने लेना किसी तरह भी दुरुस्त नहीं।

दूसरी रिवायत हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा से है।

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का जिस्म मेराज की रात को गुम नहीं पाया गया।

अगर हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा ने इस से मुराद यह लिया है कि मैंने आप के जिस्म को गुम नहीं पाया तो यह वाक़िया ख़्वाब का है लेकिन ख़्वाब में हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को कई मर्तबा मेराज हुई यह ख़्वाब वाले मेराज का ज़िक्र होगा क्योंकि जागते हुए मेराज मक्का मुकर्रमा में हुआ और हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा आप की ज़ौजियत में मदीना तैयबा में आई।

और अगर आपने मुतलक़न वाक़िया को ज़िक्र किया है तो मतलब यह होगा कि आपका जिस्म रूह से गुम नहीं था और रूह से जुदा नहीं था बल्कि रूह और जिस्म के साथ मेराज हुई यही मायने लिया जाये तो दूसरी रिवायात के साथ ततबीक़ हो सकती है।

अरवाह का ताल्लुक़ बदनों से ऐसा है जैसा कि सूरज का ताल्लुक़ आलमे दुनिया से। जिस जिस्म पर भी सूरज की शुआयें पड़ती हैं वह चीज़ रौशन हो जाती है इसी तरह जिस्म के हर उज़्व में से जिस रूह की नूरानियत पड़ती है वह ज़िन्दा होता है और उसमें अनवारे कमाल व जलाल असर अंदाज़ होते हैं।

रूह की चार क़िस्में हैं:

पहली क़िस्म : वह अरवाह हैं जिनमें सिफ़ात बशरिया की कदूरत पाई जतीी है यह अवाम की रूहे हैं इन पर हैवानी कुव्वतें ग़ालिब होती हैं जो उरूज को क़बूल नहीं करतीं।

दूसरी क़िस्म : वह अरवाह हैं जिनमें उलूम के हासिल करने की वजह से कुव्वते नज़रिया में कमाल हासिल होता है यह उलेमा की रूहें हैं।

तीसरी क़िस्म : वह रूहें हैं जिनको बदन की कुव्वत मुदब्बिरह की वजह से कमाल हासिल होता है इसी कुव्वते मुदब्बिरह के हुसूल की वजह से वह अच्छे अख़लाक़ अच्छी सिफ़ात को क़बूल करती हैं यह ज़ियारत करने वाले की रूहें हैं जिस तरह कुव्वत में फ़ौक़ियत आती है उसी तरह उनके बदन में रियाज़त व मुजाहिदा बढ़ता चला जाता है।

चौथी क़िस्म : वह रूहें हैं जिन्हें कुव्वते नज़रिया और कुव्वते मुदब्बिरह दोनों में कमाल हासिल होता है यह बशरी रूहों का सब से आला दर्जा है यह अंबियाए किराम अलैहिमुस्सलाम सिद्दीक़ीन की रूहें हैं जब इन कुव्वतों में फ़ौक़ियत आती है तो बदनों को ज़मीन से बुलंद होने का दर्जा हासिल हो जाता है बाक़ी जलीलुल क़द्र अंबियाए किराम अलैहिमुस्सलाम की रूहों को सिर्फ़ इतनी कुव्वत हासिल हुई कि वह आसमानों तक पहुंच सके वह हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के इस्तिक़बाल के लिए यह मक़ाम हासिल कर सके।

तमाम अंबियाए किराम अलैहिमुस्सलाम से हमारे नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को कुव्वत नज़रिया और कुव्वत मुदब्बिरह ज़्यादा आला हासिल हैं इसी वजह से आपकी मेराज के दर्जा की थी यानी रब का दीदार हासिल हुआ दोनों के दर्मियान दो कमान का फ़ासला रहा या इससे भी कम फ़ासला रहा।

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का दीदारे इलाही से मुशर्रफ़ होना:

इस प्यारे चमकते तारे मुहम्मद की क़सम जब मेराज से उतरे तुम्हारे साहब न बहके न बे राह चले और वह कोई बात अपनी ख़्वाहिश से नहीं करते। वह तो नहीं मगर वही जो इन्हें की जाती है इन्हें

सिखाया अल्लाह तआला सख़्त कुव्वतों वाले ताक़तवर ने फिर उस जलवा ने क़स्द फ़रमाया और वह आसमान बरीं के सबसे बुलंद किनारा पर था फिर वह जल्वा नज़दीक़ हुआ फिर ख़ूब इतराया तो इस जलवे और इस महबूब में दो हाथ का फ़ासला रहा बल्कि इससे भी कम अब वही फ़रमाई अपने बंदे को जो वही फ़रमाई दिल ने झूठ न कहा जो देखा तो क्या तुम इनसे इनके देखे हुए पर झगड़ते हो और उन्होंने तो वह जल्वा दो बार देखा सिदरतुल मुन्तहा के पास जन्नतुल मावा है जब सिदरह पर छा रहा था जो छा रहा था आंख न किसी की तरफ़ फिरी न हद से बढ़ी बेशक अपने रब की बहुत बड़ी निशानियां देखीं।

इस प्यारे चमकते तारे मुहम्मद की क़सम जब मेराज से उतरे आला हज़रत बरेलवी रहमतुल्लाह अलैहि ने यह तर्जमा हज़रत इमाम जाफ़र सादिक़ के इस क़ौल के मुताबिक़ किया है आप कहते हैं।

अल–नज्म से मुराद नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हैं और हुवा से मुराद आपका मेराज की रात आसमानों से उतरना हैं ख़्याल रहे कि हुवा का मायने उतरना भी चढ़ना भी इसलिए अल्लामा आलूसी फ़रमाते हैं।

इस मायने के लिहाज़ से यह कहना भी जायज़ है कि आप वहां तक बुलंद हुए ज़हां मकान की हदें ख़त्म हो जाती हैं अब मायने यह होगा कि क़सम है इस प्यारे चमकते तारे मुहम्मद की जो ला मकान तक बुलंदियों पर फायज़ हुए।

और तुम्हारे साहब न बहके और न बे राह चले।

क़ुरैश को ख़िताब फ़रमाया और हुज़ूर को उनका साहब कहा क्योंकि वह आपकी शरीअत के तमाम अहवाल से बाख़बर थे और यह जानते थे कि आप हर क़िस्म की बुराई से कामिल तौर पर इज्तेनाब करते हैं और रुश्द व हिदायत का आला दर्जा आपको हासिल है नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपनी ज़िन्दगी का तवील हिस्सा उनमें गुज़ारा था इसलिए वह आपके हालात से मुकम्मल तौर पर बाख़बर थे।

वह कोई बात अपनी ख़्वाहिश से नहीं करते हां मगर वही जो आपकी तरफ़ वही की जाती है नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अगर किसी मसले में इज्तेहाद भी फ़रमायें तो वह दूसरे मुजतहेदीन से मुख़्तलिफ़ होता है।

बेशक नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की तरफ़ वही की जाती है कि आप इज्तेहाद करें बेशक वह वही मख़्फ़ी क्यों न हो लेकिन दूसरे मुजतहेदीन को यह हालत हासिल नहीं हुई। क़ाज़ी बैज़ावी रहमतुल्लाह अलैहि फ़रमाते हैं।

आपका इज्तेहाद वही से होता है अगरचे उस पर वही के अहकाम जारी नहीं होते यानी इजतेहाद से हासिल कर्दा मसला और वही से नाफ़िज़ होने वाले हुक्म में फ़र्क़ होता है। बाज़ औक़ात इज्तेहाद को भी वही का दर्जा हासिल होगा जब कि यह मक़ाम हासिल हो।

जब रब तआला की तरफ़ से आपको यह कहा जाये कि जो चीज़ मैंने आपके दिल में डाली है वही मेरी मुराद है।

इसके बाद आने वाली आयात में इख़्तेलाफ़ है जो जलवा हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने देखा वह जिब्राईल का देखा या अल्लाह तआला का। सहीह यही है कि आपने रब तआला को देखने

का शर्फ़ हासिल किया।

तिमिर्ज़ी शरीफ़ में है कि हज़रत इब्ने अब्बास ने ज़िक्र फ़रमाया।

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपने रब को देखा है अकरमा रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं मैंने कहा कि अल्लाह तआला ने नहीं फ़रमाया नज़रें उसका इदराक नहीं कर सकतीं तो आपने फ़रमाया अल्लाह तआला तुम पर रहम करे यह उस वक़्त है जब कि वह अपने उस नूर से तजल्ली फ़रमाये जो ज़ात के दर्जे में है हुज़ूर ने दो मर्तबा अपने रब को देखा।

यानी अल्लाह तआला के ज़ाती नूर का किसी ने इहाता नहीं किया उसकी हक़ीक़त तक कोई नहीं पहुंच सका नफ़ी इस मायने के लिहाज़ से है यह नहीं कि मुतलक़न किसी को भी ताक़त नहीं मिल सकी कि उसके नूर को देखा हो।

जब यह फ़र्क़ किया जाये तो हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा की रिवायत जिसमें नफ़ी पाई गई है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने रब तआला को नहीं देखा और हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा से रिवयात कर्दा हदीस जिसमें ज़िक्र है कि आपने अल्लाह तआला को देखा है इनमें ततबीक़ हो सकेगी कि एक रिवायत का मतलब है कि आपने रब के नूर का इहाता नहीं किया और दूसरी का मतलब है कि आपने रब तआला के नूर को देखा है।

हज़रत क़तादा हज़रत अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत करते हैं मैंने अबू ज़र रज़ियल्लाहु अन्हु को कहा कि काश मैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को देखता और आप से एक सवाल करता तो उन्होंने कहा किस चीज़ के मुताल्लिक़ तुम सवाल करने की तमन्ना रखते हो उन्होंने कहा कि मैं यह पूछना चाहता हूं कि क्या आपने अपने रब को देखा है? तो हज़रत अबू ज़र ने कहा।

कि हां मैंने सवाल किया था तो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया मैंने नूर को देखा है।

दूसरी रिवायत में हज़रत अबू ज़र रज़ियल्लाहु अन्हु से मरवी है।

मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से सवाल किया कि आपने अपने रब को देखा है? तो आपने फ़रमाया हां वह ज़ात नूरानी है मैंने उसे देखा है।

नूरानी में "या" निसबत की बनाई जाए तो दोनों रिवायतों का मतलब एक होगा इसलिए तो बेहतर यह है कि इस लफ़्ज़ को इसी तरह पढ़ा जाये। बाज़ हज़रात ने "नूरानी" पढ़ा है यानी एक लफ़्ज़ नूर और दूसरा "अनी" है अब मायने यह होगा कि वह ज़ात नूर है मैंने उसे कहां देखा है।

इस मायने के लिहाज़ पर फिर ततबीक़ इस तरह दी जायेगी कि मैंने उसके नूर का इहाता नहीं किया है ताकि दूसरी रिवायत का मायने भी दुरुस्त हो सके कि मैंने नूर को देखा है यानी देखा तो है उसका कामिल इहाता नहीं किया हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत किया है।

बेशक मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपने रब को दो मर्तबा देखा है एक मर्तबा दिल की आंखों से और दूसरी मर्तबा अपनी आंखों से अल्लामा आलूसी रहमतुल्लाह तआला अलैहि अपना मुख़्तार ब्यान करते हैं।

मैं कहता हूं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने रब तआला को देखा है कि आपको रब का क़ुर्बे ख़ास हासिल हुआ है जैसा भी मुनासिब था इस क़ुर्ब व रूईत की कैफ़ियत ब्यान नहीं हो सकती

अलबत्ता तसलीम करना ज़रूरी है।

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को मा काना व मा यकून का इल्म दिया गया:

रहमान ने अपने महबूब को कुरआन सिखाया इंसानियत की जान मुहम्मद को पैदा किया मा—कान व मा—यकून का ब्यान उन्हें सिखाया।

जब नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तमाम आलम की जान हैं तो इंसानियत की जान होना भी वाज़ेह हुआ अल्लामा आलूसी रहमतुल्लाह अलैहि फ़रमाते हैं।

तमाम जहां जिस्म है और नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उसकी रूह हैं और जिस्म का क़याम बग़ैर रूह के नहीं इसी लिए जहां का क़याम हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बग़ैर मुमकिन नहीं।

क़ाज़ी सनाउल्लाह तफ़सीर मज़हरी में फ़रमाते हैं।

जायज़ है कि यह कहा जाये कि "ख़लक़िल इंसान" इंसान से मुराद नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हैं "इल्महुल ब्यान" से मुराद कुरआन पाक है जिसमें मा काना व मा यकूना (जो हो गया और जो होना है) का इल्म अज़ल से अबद तक मौजूद है जो पहले अंबियाए किराम अलैहिमुस्सलाम के ज़िक्र व ब्यान के मुताबिक़ उनके अहवाल पर मुश्तमिल है लोगों के लिए हिदायत और आपकी नबुव्वत पर निशानी है।

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा और इब्ने कैसान रज़ियल्लाहु अन्हुमा से मरवी है कि इंसान से मुराद मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हैं और "इल्महुल ब्यान" में ब्यान से मुराद तो हलाल व हराम का इल्म और गुमराही से हिदायत देना और यह भी ब्यान किया गया है कि ब्यान से मुराद मा काना व मा यकून का इल्म है क्योंकि हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अव्वलीन व आख़रीन और क़यामत का ज़िक्र फ़रमाया जब आपने सभी गुज़रे और आने वाले और वाक़ियाते क़यामत से मुत्तला फ़रमाया तो आपको मा काना व मा यकान का इल्म यक़ीनन हासिल है।

इन मज़कूरा तफ़ासीर के मुताबिक़ ही तफ़सीर सिराजे मुनीर, जुमल, हुसैनी में भी ज़िक्र किया गया है।

इल्मे ग़ैब नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का अज़ीम मोजिज़ा है:

तफ़सीर जुमल में ज़िक्र किया गया है।

और कोई एतेराज़ करे कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने तो बहुत ग़ैबी ख़बरें दी हैं और सही अहादीस में इसका ज़िक्र है हालांकि इल्म ग़ैब नबी करीम का अज़ीम मोजिज़ा है तो इन अहादीस और कुरआन पाक की इस आयते करीमा में मुताबक़त कैसे होगी इसका जवाब यह दिया जाये कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इज्ज़ व इंकिसारी के तौर पर यह कहा है और बज़रुए अदब कि मैं खुद ग़ैब नहीं जानता जब तक कि मुझे अल्लाह तआला उस पर मुत्तला न फ़रमाये और कुदरत ने दे।

तुम फ़रमा दो तुम से नहीं कहता कि मेरे पास अल्लाह तआला के ख़ज़ाने हैं और न यह कहो कि मैं आप ग़ैब जानता हूं।

इस आयत में नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के इल्मे ग़ैब की नफ़ी नहीं हो रही है बल्कि

आपकी ज़बाने मुबारक से यह कहलाया गया है कि मैं कहता नहीं मैं दावा नहीं करता कि मैं अल्लाह तआला के बताए बग़ैर ख़ुद ही ग़ैब जानता हूं।

अताई ग़ैब कुरआन पाक से साबित है:

और अल्लाह तआला की शान यह नहीं कि ऐ आम लोगो तुम्हें ग़ैब का इल्म दे दे हां अल्लाह तआला चुन लेता है अपने रसूलों से जिसे चाहे।

इस आयत करीमा में सराहतन ज़िक्र किया गया है कि आम लोगों को अल्लाह तआला इल्मे ग़ैब अता नहीं करता अलबत्ता रसूलों में से जिसे चाहे उसे इल्म ग़ैब अता करता है लुत्फ़ की बात यह है कि "यजतबी" से पता चलता है। मुजतबा बनाए और मेरे हबीब का इस्मे गिरामी मुजतबा भी है जब आप को अल्लाह तआला ने मुजतबा बना लिया है चुन लिया है इल्मे ग़ैब अता कर दिया है तो अगर बदबख़्त इंसान न पसंद करे तो मेरे हबीब की शान में क्या फ़र्क़ वह मुन्किर अपनी बदबख़्ती का मातम करे।

रब का इरशादे गिरामी यह है:

जानने वाला तो अपने ग़ैब पर किसी को मुत्तला नहीं करता सिवाए अपने पसंदीदा रसूलों के। इस आयत में ज़िक्र किया गया है कि अल्लाह तआला ग़ैब को जानने वाला है अपना ग़ैब किसी पर ज़ाहिर नहीं फ़रमाता सिवाए अपने पसंदीदा रसूलों के यानी रसूलों को ग़ैब अता फ़रमाता है क्योंकि रसूल उसके पसंदीदा हैं हां अलबत्ता कोई ज़्यादा पसंदीदा होगा जिसका नाम ही मुर्तज़ा होगा यक़ीनन जितना ग़ैब उसे अता होगा उतना किसी दूसरे रसूल को नहीं होगा।

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को लौहे महफ़ूज़ का इल्म अता किया गया और दूसरे अंबियाए किराम अलैहिमुस्सलाम को लौहे महफ़ूज़ की बाज़ मालूमात पर मुत्तला किया गया है।

लौहे महफ़ूज़ की बाज़ मालूमात पर अल्लाह तआला फ़रिश्तों अंबियाए किराम अलैहिमुस्सलाम और अरबाबे कश्फ़ औलियाए किराम में से जिसे चाहता है मुत्तला फ़रमा देता है ख़ुसूसन इस्राफ़ील लौहे महफ़ूज़ पर मोअक्किल हैं वह लौहे महफ़ूज़ से ही इल्म हासिल करके जिब्राईल मिकाईल और इज़्राईल के उनके कामों के मुताल्लिक़ मुत्तला करते हैं।

बेशक नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम दुनिया से तशरीफ़ नहीं ले गये यहां तक कि आपको अल्लाह तआला ने तमाम दुनिया और आख़रत के ग़ैबी उमूर पर मुत्तला फ़रमा दिया हां अलबत्ता बाज़ चीज़ों के छिपाने का हुक्म था जैसा कि क़यामत को ज़ाहिर न करने का हुक्म दिया था वरना आपको क़यामत का भी इल्म था।

अल्लाह तआला ने क़यामत का इल्म किसी को नहीं दिया सिवाए अपने पसंदीदा रसूलों के जिन रसूलों को आपने पसंद फ़रमाया उन्हें क़यामत का इल्म अता फ़रमाया।

एतेराज़: पांच चीज़ों के मुताल्लिक़ तो नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया इनको अल्लाह तआला के बग़ैर कोई नहीं जानता पांच चीज़ें यह हैं क़यामत का इल्म, बारिश होने का इल्म, मां के पेट में क्या है, कल इंसान को क्या करना है, कहां मरना है फिर नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपने क़ौल पर बतौर दलील यह आयत तिलावत फ़रमाई।

बेशक अल्लाह तआला के पास है क़यामत का इल्म और उतारता है बारिश और जानता है जो

कुछ मां के पेट में है और कोई जान नहीं जानती कि कल क्या कमाएगी और कोई जान नहीं जानती कि किस ज़मीन मरेगी बेशक अल्लाह तआला जानने वाला और बताने वाला है।

जवाब : इल्मे ग़ैब की नफ़ी जिन आयात या अहादीस में है इससे मुराद ज़ाती तौर पर ग़ैब का जानना है और जिनमें सबूत है उनमें अताई तौर पर ग़ैब के जानने का ज़िक्र है।

यानी मसला वाज़ेह है कि हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को ज़ाती तौर पर ग़ैब का इल्म नहीं, अताई तौर पर ग़ैब का इल्म है यही हदीस जो पेश की है जो मिश्कात शरीफ़ की इब्तेदा में है यानी दूसरी हदीस है इसकी शरह में शैख़ अब्दुल हक़ मुहद्दिस देहलवी रहमतुल्लाह अलैहि फ़रमाते हैं।

इससे मुराद यह है कि अल्लाह तआला ने इल्म अता करने के बग़ैर कोई शख़्स भी अपनी अक़्ल से हिसाब नहीं लगा सकता क्योंकि यह उमूरे ग़ैबिया हैं जिन को सिर्फ़ अल्लाह तआला ही जानता है हां अलबत्ता अल्लाह तआला किसी को वही या इल्हाम के ज़रिये इल्म अता कर दे तो वह यक़ीनन जानता है।

एतेराज़ : नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जब मदीना तैयबा तशरीफ़ लाए तो देखा कि वह लोग खजूरों के दरख़्तों की पेवंदकारी कर रहे हैं मुज़क्कर दरख़्त के शगूफ़े मुअन्नस में लगा रहे हैं। आपने उनसे पूछा कि तुम क्या कर रहे हो उन्होंने कहा कि हम पेवंदकारी कर रहे हैं ताकि फल ज़्यादा हो तो आपने इरशाद फ़रमाया।

अगर तुम यह न करो तो शायद तुम्हारे लिए बेहतर हो।

सहाबा किराम ने छोड़ दिया लेकिन फल कम पैदा हुआ तो सहाबा किराम ने अर्ज़ किया तो आपने फ़रमाया।

मैं एक बशर हूं जब तुम्हें किसी चीज़ का हुक्म दूं जिंसका ताल्लुक़ दीन से हो तो उस पर अमल करो और अगर मैं अपनी राए से (दुनिया का कोई काम) कहूं तो मैं एक बशर हूं एक और रिवायत में है।

दुनिया के मामलात को तुम ज़्यादा जानते हो।

और एक दूसरी रिवायत में ज़िक्र है मैं जो बात ज़न से करूं उसमें मुझ से मुआख़्ज़ा न करो इससे तो वाज़ेह हुआ कि आपको दुनिया के मामलात का कुछ पता नहीं था अगर होता तो आप न रोकते।

जवाब : मुल्ला अली क़ारी रहमतुल्लाह अलैहि फ़रमाते हैं:

मेरे नज़दीक बेशक नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की राए बिल्कुल दुरुस्त थी अगर सहाबा किराम आपके इरशाद पर क़ायम रहते अलबत्ता फ़न में फ़ौक़ियत हासिल कर लेते और उनसे इस इलाज यानी पेवंदकारी की तकलीफ़ हमेशा के लिए उठा ली जाती यह पहले साल फल कम होने वाल तग़य्युर आम आदत के मुताबिक़ था क्या तुम नहीं देखते कि अगर कोई शख़्स किसी चीज़ के खाने या पीने की आदत बना ले तो उसे वह चीज़ उस वक़्त न मिले तो वह तकलीफ़ महसूस करता है लेकिन अगर उस पर सब्र करे तो हमेशा के लिए उसे कुव्वते बर्दाश्त हासिल हो जाती है इसी तरह सहाबा किराम भी एक दो साल फलों की कमी को बर्दाश्त कर लेते तो खजूर के दरख़्त अपना फल देने में पहले हाल की तरह लौट आते बल्कि यक़ीनन पहले से उनका फल ज़्यादा होता।

इस हदीस पाक में अल्लाह तआला पर कामिल तौर पर तवक्कुल करने और ज़ाहिरी असबाब पर

ही कामिल भरोसा न करने का ज़िक्र है लेकिन खजूरों की पेवंद करने वाले इससे ग़ाफ़िल रहे।

इल्मे ग़ैब ज़ाती सिर्फ़ अल्लाह तआला को हासिल है:

इल्मे ग़ैब पर बहस करते हुए मुफ़क्किरे इस्लाम हज़रत पीर मुहम्मद करम शाह भैरवी मद्दे ज़िल्लहुल आली इस आयत की तफ़सीर में फ़रमाते हैं:

आप फ़रमाइये (ख़ुद बख़ुद) नहीं जान सकते जो आसमानों और ज़मीन में हैं ग़ैब को सिवाए अल्लाह तआला के और वह समझते हैं कि इन्हें कब उठाया जायेगा?

अल्लाह तआला की तौहीद पर दलाइले वाज़ेहा और बराहीने सातेआ का ज़िक्र करने के बाद अब अल्लाह तआला के इल्म मुहीत का ब्यान हो रहा है और बताया जा रहा है कि तख़लीके़ कायनात में जिस तरह उसका कोई शरीक नहीं इसी तरह उसकी सिफ़ते इल्म में भी उसका कोई शरीक नहीं ग़ैब किसे कहते हैं इसका क्या मफ़हूम है इसकी वज़ाहत करते हुए अल्लामा राग़िब असफ़हानी लिखते हैं।

यानी वह इल्म जो उसकी रसाई से बालातर हो और जो कुव्वते अक़्ल से भी हासिल न किया जा सके उसे ग़ैब कहते हैं। आयते करीमा का मफ़हूम यह होगा कि ज़मीन व आसमान में जो भी मौजूद हैं फ़रिश्ते, जिन्नात, इंसान, जिन में उलेमा औलिया अंबियाए किराम अलैहिमुस्सलाम और रुसल भी दाख़िल हैं और दीगर लोग भी ग़ैब को नहीं जान सकते।

सिर्फ़ अल्लाह तआला की यह शान है कि वह आलिमुल ग़ैब है जिस तरह उसकी ज़ात की उसकी दीगर सिफ़ात में कोई हमसरी का दम नहीं मार सकता इसी तरह उस की सिफ़ते इल्म में भी उसका कोई शरीक नहीं हो सकता अगर कोई शख़्स उसकी सिफ़ते इल्म में किसी को शरीक बनायेगा तो वह भी उसी तरह मुश्रिक होगा और दायरए इस्लाम से ख़ारिज होगा जिस तरह उसकी दूसरी सिफ़ात में किसी दूसरे को शरीक बनाने वाला या उसकी ज़ात की तरह किसी दूसरे को वाजिबुल वजूद मानने वाला मुश्रिक है और दायरए इस्लाम से ख़ारिज है।

तंबीह : कुरआन करीम की आयात का मफ़हूम ब्यान करते हुए ज़रूरी है कि इंसान इस बात का ख़्याल रखे कि आयात का ऐसा मफ़हूम और तश्रीह न ब्यान किया जाये जो कुरआन की दूसरी आयात के सरासर ख़िलाफ़ हो वरना कुरआन हकीम की हक़्क़ानियत साबित करने के बजाए अपने सामेईन के दिल में यह ग़लत फ़हमी पैदा करने का सबब बन जायेगा कि कुरआन पाक की बाज़ आयतें दूसरी आयतों से टकराती हैं और तकज़ीब करती हैं मआज़ल्लाह और वह किताब जिसका एक हिस्सा बुतलान कर रहा हो उसे किसी अक़्लमंद इंसान का कलाम भी नहीं कहा जा सकता चे–जाए कि उसे ख़ुदावंद अलीम व हकीम का कलाम माना जाये जो हमा बीन है और हमा दान भी (यानी सब चीज़ों को देखने वाला और सब कुछ जानने वाला है।)

कुरआन पाक में कोई इख़्तेलाफ़ नहीं:

कुरआन करीम ने अपने कलामे इलाही होने पर दीगर दलाइल के अलावा एक यह दलील भी पेश की है कि इसमें इख़्तेलाफ़ नहीं पाया जाता इरशाद है।

यह अगर अल्लाह तआला का कलाम न होता तो तुम इसमें जगह जगह पर इख़्तेलाफ़ और तज़ाद पाते गोया कुरआन में इख़्तेलाफ़ का न पाया जाना इस बात की महकम दलील है कि यह अल्लाह तआला का कलाम है।

आयते मज़कूरा की तफ़सीर ग़ौर व फ़िक्र से की जाये:

अगर ग़ौर व फ़िक्र का दामन हाथ से छोड़कर इस आयते करीमा का तर्जमा किया जाये तो इसका मतलब यह होगा कि ज़मीन व आसमान में जो मख़लूक़ भी है वह ग़ैब को नहीं जानती हालांकि कुरआन की बे शुमार आयतों से हमें फ़रिश्तों का, नुजूल वही का क़यामत जन्नत व दौज़ख़ का इल्म है और इन पर हमारा ईमान है हालांकि यह तमाम आलमे ग़ैब की चीज़ें हैं नीज़ कसीर आयात और हज़ारों सही अहादीस से हुजूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का उमूरे ग़ैबिया पर मुत्तला होना साबित है इसलिए हमें इस आयात में ग़ौर करना चाहिये कि इसका मतलब क्या है।

ज़ाती ग़ैब की नफ़ी है:

उलेमाए किराम ने तसरीह की है कि इस आयत से मुराद यह है कि अल्लाह तआला के जताए और बतलाए बग़ैर कोई भी ग़ैब पर आगाह नहीं हो सकता ख़ुद कुरआन करीम ने भी इस क़ौल की तसदीक़ फ़रमा दी।

अल्लाह तआला ग़ैब जानने वाला है और वह अपने ग़ैब पर किसी को आगाह नहीं करता सिवाए अपने पसंदीदा रसूलों के।

अल्लाह तआला का इल्मे ग़ैब क़दीम और ग़ैर महदूद है:

इस आयत ने बता दिया है कि अल्लाह तआला की दूसरी तमाम सिफ़ात की तरह उसकी यह सिफ़त भी क़दीम है ज़ाती और ग़ैर मुतनाही है यानी ऐसा नहीं कि वह पहले किसी चीज़ को नहीं जानता था और अब जानने लगा है बल्कि वह हमेशा हमेशा से हर चीज़ को उसके पैदा होने से पहले भी उसकी हीन हयात में भी और उसके मरने के बाद भी अपने इल्मे तफ़सीली से जानता है नीज़ उस का यह इल्म उसका अपना है किसी ने उसको सिखाया नहीं है नीज़ उसके इल्म की न कोई हद है और न निहायत अगर कोई शख़्स मिक़दार और कैफ़ियत के एतेबार से अल्लाह तआला की किसी सिफ़त का किसी के लिए इस्बात करे तो वह हमारे नज़दीक शिर्क का मुरतकिब होगा।

हुजूर का इल्मे ग़ैब हादिस महदूद और अताई है:

इसलिए हुजूर पुर नूर इमामुल अव्वलीन व आख़रीन सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का इल्मे मुबारक ख़ुदावंदे करीम के इल्म की तरह क़दीम नहीं बल्कि हादिस है यानी पहले नहीं था बाद में अल्लाह तआला के तालीम करने से हासिल हुआ। ख़ुदावंदे करीम के इल्म की तरह ज़ाती नहीं बल्कि अताई है यानी अल्लाह तआला के सिखाने से हासिल हुआ नीज़ हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का इल्म ख़ुदावंदे करीम के इल्म की तरह ग़ैर मुतनाही ग़ैर महदूद नहीं बल्कि मुतनाही और महदूद है और अल्लाह तआला के इल्मे मुहीत के साथ हुजूर फ़ख़्रे मौजूदात सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के इल्म की निसबत इतनी भी नहीं जितनी पानी के एक क़तरा को दुनिया भर के समुंद्रों से है (क्योंकि दुनिया भर के समुंद्रों का पानी भी महदूद और क़तरा भी महदूद है लेकिन अल्लाह तआला का इल्म ग़ैर महदूद और ज़ाती है लेकिन हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का इल्म हादिस और महदूद और अताई यानी रब के देने से हासिल हुआ)

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के इल्म की वुसअत सिर्फ़ रब जानता है:

हां इतना फ़र्क़ ज़रूर है कि हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का यह हादिस, अताई और महदूद

इल्म इतना भी महदूद नहीं जितना बाज़ हज़रात ने समझ रखा है इसकी वुसअतों को देने वाला जानता है या सिखाने वाले को पता है या सीखने वाले को। हम तुम किस गिनती में हैं जिब्राईल अमीन भी वहां दम मारने की मजाल नहीं रखते।

उसने वही फ़रमाई अपने बंदे की तरफ़ जो वही फ़रमाई।

इल्म व मारफ़त की वह वुसअतें और बे करानियां (जिनका कोई किनारा नहीं) जिन पर ब्यान का हर जामा तंग है उनकी हद बर आरी हम करने लगें तो ठोकरें नहीं खायेंगे तो और क्या होगा?

उस तलमीज़ रहमान ने अपनी ज़बाने हक़ तर्जमान से हमें ख़ुद जो कुछ बताया है उसके हक़ होने को तसलीम करते हैं और उसी पर हमारा ईमान है उसी की ज़बाने पाक से निकला हुआ यह कौ़ले तय्यब हमने सुना है।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया आज मैंने अपने बुज़ुर्ग व बरतर परवर्दिगार की ज़ियारत की है बड़ी हसीन और प्यारी सूरत में, फ़रमाया। मलाए आला के फ़रिश्ते किस बात में झगड़ा कर रहे हैं? मैंने अर्ज़ की इलाही तू ख़ुद ही बेहतर जानता है। अल्लाह तआला ने अपनी कुदरत की हथेली मेरे दोनों कंधों के दर्मियान रखी जिसकी ठंडक मैंने अपने सीने में महसूस की फिर मैंने जान लिया जो कुछ आसमानों में था और ज़मीन में था।

इस हदीस पाक की शरह करते हुए शेख़ अब्दुल हक़ मुहद्दिस देहलवी तहरीर फ़रमाते हैं।

पस जो चीज़ आसमानों में थी उसे भी मैंने जान लिया और जो चीज़ ज़मीनों में थी उसे भी मैंने जान लिया (फिर फ़रमाते हैं) इस इरशाद का मक़सद यह है कि तमाम उलूम जुज़्वी और कुल्ली मुझे हासिल हो गये और मैंने उनका इहाता कर लिया।

अल्लामा अलीउल कारी रहमतुल्लाह अलैहि अपनी किताब में पहले इस हदीस का मफ़हूम ब्यान करते हैं इसके बाद शारेह बुख़ारी अल्लामा इब्न हजर रहमतुल्लाह अलैहि का कौ़ल नक़्ल करते हैं मैं यहां इख़्तेसार मलहूज़ रखते हुए फ़क़त अल्लामा इब्न हजर रहमतुल्लाह अलैहि के कौ़ल पर इक्तेफ़ा करता हूं।

अल्लामा इब्ने हजर रहमतुल्लाह अलैहि ने फ़रमाया कि यह हदीस इस तरह है कि तमाम कायनात जो आसमानों में थी बल्कि उनके ऊपर भी जो कुछ था और जो कायनात सात ज़मीनों में थी बल्कि उनके नीचे भी जो कुछ था मैंने जान लिया अल्लाह तआला ने इब्राहीम अलैहिस्सलाम को तो आसमानों और ज़मीन की बादशाही दिखाई थी और उसे आप पर मुनकशिफ़ किया था और मुझ पर अल्लाह तआला ने ग़ैब के दरवाज़े खोल दिये हैं।

इस हदीस पर कोई एतेराज़ नहीं कर सकता:

मुमकिन है कि इस हदीस की सनद के बारे में किसी को शक हो इसलिए इसके मुताल्लिक़ मिशकात के मुसन्निफ़ की राए ग़ौर से सुन लीजिये उन्होंने यह हदीस मुतअद्दिद तरीक़े से नक़्ल करने के बाद तहरीर की है अगर दिल में हक़ पज़ीरी का जज़्बा हो तो बफ़ज़्लेहि तआला यक़ीनन तसल्ली हो जायेगी।

इस हदीस को इमाम अहमद रहमतुल्लाह अलैहि और इमाम तिर्मिज़ी रहमतुल्लाह अलैहि ने रिवायत किया है और तिर्मिज़ी रहमतुल्लाह अलैहि ने कहा है कि यह हदीस हसन सहीह है इमाम तिर्मिज़ी रहमतुल्लाह अलैहि कहते हैं कि मैंने इस हदीस के मुताल्लिक़ इमाम बुख़ारी रहमतुल्लाह अलैहि से

दर्याफ़्त किया उन्होंने फ़रमाया यह हदीस सहीह है इमाम मुस्लिम अपनी सहीह में हज़रत हुज़ैफ़ा रज़ियल्लाहु अन्हु से यह हदीस रिवायत करते हैं।

आप रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया:

एक रोज़ हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम एक जगह तशरीफ़ फ़रमा हुए और क़यामत तक होने वाली कोई चीज़ ऐसी न थी जिसका ज़िक्र हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने न फ़रमाया हो याद रखा इसको जिस ने याद रखा, भुला दिया इसे जिसने भुला दिया। मेरे यह सारे सहाबा इसको जानते हैं और ऐसा होता है कि कोई शै वक़ूअ पज़ीर होती है जिसे मैं भूल चुका होता हूं उसे देखते ही मुझे याद आ जाता है (कि हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने यूं ही फ़रमाया था) बिल्कुल उसी तरह जैसे तेरा कोई वाक़िफ़ आदमी काफ़ी अर्सा तुझ से ग़ायब रहा हो और जब तू उसे देखे तो तू उसे पहचान लेता है।

इमाम बुख़ारी रहमतुल्लाह अलैहि ने अपनी सहीह में हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ियल्लाहु अन्हु से एक हदीस रिवायत की है वह भी मुलाहज़ा फ़रमायें।

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु से मरवी है कि आप ने फ़रमाया एक दिन रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम कयाम फ़रमा हुए (यानी हम सहाबा के पास तशरीफ़ फ़रमा हुए) और तख़लीक़े कायनात की इब्तेदा से लेकर अहले जन्नत के अपनी मनाज़िल और अहले दौज़ख़ के अपने ठिकानों में दाख़िल होने तक के तमाम हालात से हमें ख़बर दी याद रखा इसको जिस ने याद रखा भुला दिया इसे जिसने भुला दिया।

अल्लामा तैयबी रहमतुल्लाह अलैहि फ़रमाते हैं कि हदीस शरीफ़ में "हत्ता" का लफ़्ज़ ब्यान ग़ायत के लिए है यानी हुजूर ने अपने इस जामेअ ख़ुत्बा में कायनात की आफ़रीनश से लेकर उस वक़्त तक के तमाम हालात ब्यान फ़रमाये जब कि जन्नती अपने महल्लात में क़याम पज़ीर हो जायेंगे फिर फ़रमाते हैं कि जन्नतियों का जन्नत में दख़ूल तो ज़माना मुस्तक़बिल में होगा इसलिए "हत्ता यद ख़लो" यानी मज़ारेअ का सीग़ा इस्तेमाल होना चाहिये था हदीस में माज़ी का सीग़ा क्यों इस्तेमाल हुआ है उसका जवाब देते हैं कि क्योंकि सादिक़ (सच्चा) और अमीन (अमानतदार) रसूल हैं। इसलिए आइंदा के मुताल्लिक़ जो फ़रमा दिया कि ऐसा होगा उसका होना उतना ही यक़ीनी है जितना इस बात का जो पहले वाक़ेय हो चुकी है।

नूर व ईमान के बग़ैर इंसान भटकता ही रहता है:

अल्लाह तआला अस्लाफ़े किराम का नूरे ईमान अता फ़रमाये तब ही किताब व सुन्नत के आइना में हक़ का रुख़े ज़ेबा नज़र आता है वरना सारी उम्र शक व शुबह की झाड़ियों में दामन उलझा रहता है और क़ील व क़ाल से फ़ुरसत नहीं मिलती। कुरआन करीम की आयाते तय्यबात और इन अहादीसे सहीहा के बाद हम किसी से अपने मोमिन होने का सर्टिफ़िकेट लेने के लिए यह मानने या ज़बान पर लाने या इसका तसव्वुर करने के लिए भी तैयार नहीं कि शैतान का इल्म फ़ख़्रे आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के इल्म से ज़्यादा है या ऐसा इल्म तो हर गाव ख़र और हर सफ़ीया को भी हासिल है।

मुफ़स्सेरीन ने इस आयत का मफ़हूम यही ब्यान किया:

इस आयत का जो मफ़हूम ब्यान किया उलेमाए किराम की तसरीहात भी इसकी ताइद करती हैं

चुनांचे अल्लामा सैयद महमूद आलूसी बग़दादी इस पर सैर हासिल बहस करने के बाद तहरीर फ़रमाते हैं।

यानी हक़ बात यह है कि जिस इल्मे ग़ैब की नफ़ी की गई है कि अल्लाह तआला के सिवा उसे कोई नहीं जानता इससे मुराद यह है कि कोई शख़्स उसे ख़ुद बख़ुद जान नहीं सकता और ख़ास बंदों को जो इल्म हासिल है वह यह इल्म नहीं जिसकी आयत में नफ़ी की गई है बल्कि वह अल्लाह तआला की फ़ैज़ रसानी से इन्हें हासिल हुआ जो अल्लाह तआला ने अपने फ़ैज़ रसानी की मुतअद्दिद वजहों में से किसी एक से इन्हें मरहमत फ़रमाया है।

अल्लामा मौसूफ़ रहमतुल्लाह अलैहि इससे आगे चल कर लिखते हैं:

यानी सारी बहस का हासिल यह है कि इल्मुल ग़ैब बिला वास्ता का कुल्लन और बाज़न अल्लाह तआला की ज़ात के साथ ख़ास है न सारा इल्मे ग़ैब बग़ैर उसके बताए कोई जान सकता है और न ही बाज़ कोई जान सकता है।

हज़रत अल्लामा सनाउल्लाह पानी पती नक़्शबंदी अपनी तफ़सीर में इस आयत की तफ़सीर करते हुए लिखते हैं:

यानी अल्लाह तआला के सिवा कोई ग़ैब नहीं जान सकता मगर उसके बताने और सिखाने से। आख़िर में अपनी राए ज़िक्र करते हुए लिखते हैं:

यानी जो मैं कहता हूं कि तक़दीर इबारत यूं है कि ज़मीन व आसमान की कोई चीज़ अल्लाह तआला की तालीम और सिखाने के बग़ैर ग़ैब को नहीं जान सकती।

फ़साद फैलाने वालों को खुदा के हुजूर जवाबदेह होना पड़ेगा:

इस तहक़ीक़ के बाद अगर कोई साहब हम अहले सुन्नत पर शिर्क का इल्ज़ाम लगायें तो उसकी मर्ज़ी इस आज़ादी के दौर में हम उसके लिए दुआए हिदायत के बग़ैर क्या कह सकते हैं अलबत्ता उसे याद रखना चाहिये कि इस बोहतान के मुताल्लिक़ उससे बाज़ पुर्स होगी और इस पुर आशोब दौर में उम्मत मुस्तफ़विया में फ़ित्ना व फ़साद का दरवाज़ा खोलने पर उसे रोज़े हश्र जवाबदेह होना होगा।

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का मक़ामे अदब :

हज़रत अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु (जो हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के चचा हैं) उम्र के लिहाज़ पर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से दो साल बड़े हैं जब उनसे सवाल किया गया कि:

तुम बड़े हो या नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम बड़े हैं?

तो इस सवाल का बड़ा प्यारा जवाब हज़रत अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु ने दिया।

बड़े तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हैं अलबत्ता उम्र मेरी ज़्यादा है।

सुबहानल्लाह कितना अज़ीम और हसीन व जमील जवाब दिया कि मैं कैसे तसव्वुर कर सकता हूं कि मैं बड़ा हूं बड़ाई तो हर लिहाज़ से आपको ही हासिल है अलबत्ता उम्र मेरी ज़्यादा है लेकिन उम्र के ज़्यादा होने के बावजूद मैं आपसे छोटा हूं।

आपका यह जवाब आपकी तबीयत की लताफ़त पर दलालत कर रहा है कि आप लतीफ़ तबीयत के मालिक थे और हुजूर नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अदब व एहतेराम का आप को आला मक़ाम हासिल था।

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के शेअर ए शेओर कहना कुफ़्र है:

उलेमाए किराम ने कहा कि अगर किसी शख़्स ने नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के शेअर (बाल) को तसग़ीर के सीग़े से शेओर कहा तो कुफ़्र है यानी आप के बाल मुबारक को मआज़ल्लाह कालड़ा कहना कुफ़्र है।

अल्लाह तआला ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को ईज़ा पहुंचाना हराम और बाइसे लानत क़रार दिया रब का इरशाद है।

बेशक जो ईज़ा देते हैं अल्लाह तआला और उसके रसूल को उनपर अल्लाह तआला की लानत है दुनिया और आख़रत में और अल्लाह तआला ने उनके लिए ज़िल्लत का अज़ाब तैयार कर रखा है।

उम्मत का इस पर इजमाअ है कि अगर कोई मुसलमान नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की शान में तंक़ीस करता है तो वह वाजिबुलक़त्ल है किसी क़िस्म का भी तहक़ीर का पहलू निकलता हो तो इसका यही हुक्म है इसी तरह आपको गाली देने वाला बतरीक़ औला वाजिबुल क़त्ल होगा।

फ़तावा क़ाज़ी ख़ान में है कि अगर किसी शख़्स ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर किसी क़िस्म का ऐब भी निकाला तो वह काफ़िर होगा।

मबसूत में ज़िक्र किया गया है कि अगर किसी मुसलमान ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को गाली दी तो वह काफ़िर हो जायेगा।

अबू हफ़्स कबीर का क़ौल है कि जिस शख़्स ने नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बालों मुबारका में से किसी एक बाल के ज़रिये भी हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर ऐब लगाया वह यक़ीनन काफ़िर हो गया।

अगर किसी शख़्स ने किसी नबी के मुताल्लिक़ यह कहा कि वह मजनून थे यानी पागल थे तो वह काफ़िर होगा।

हां ख़्याल रहे कि:

यह कहना जायज़ है कि अल्लाह तआला के नबी पर वे होशी तारी हो गई।

वजह इसकी असल में यह है कि जुनून ऐब है और उयूब से अंबियाए किराम अलैहिमुस्सलाम पाक हैं इसलिए जुनून की निसबत अंबियाए किराम अलैहिमुस्सलाम की तरफ़ करना कुफ़्र है लेकिन बेहोशी बीमारी है और बीमारी हर शख़्स के लिए रहमत है इसलिए बीमारी की निसबत अंबियाए किराम अलैहिमुस्सलाम की तरफ़ करना जायज़ है।

यह बात भी ज़ेहन में रहे कि यह हुक्म मुसलमान का था अगर काफ़िर हुज़ूर की शान में गुस्ताख़ी करे ऐब लगाये तो बाज़ अहले इल्म ने कहा कि उसे क़त्ल कर दिया जाये और बाज़ ने कहा कि उससे मुआहिदा तोड़ दिया जाये और उसे अपने मुल्क से निकाल दिया जाये ताकि वह काफ़िरों के मुल्क में पहुंच जाये।

कुफ़्फ़ार डरते हुए आप पर ऐब लगाते:

अल्लाह तआला का इरशादे गिरामी है।

और इनमें से कोई वह हैं कि (ग़ैब की ख़बरें देने वाले) नबी को सताते हैं और कहते हैं वह तो कान हैं तुम फ़रमाओ तुम्हारे भले के लिए कान हैं अल्लाह तआला पर ईमान लाते हैं और मुसलमानों की

बात पर यक़ीन रखते हैं और जो तुम में मुसलमान हैं उनके वास्ते रहमत है और जो रसूलुल्लाह को ईज़ा देते हैं उनके लिए दर्दनाक अज़ाब है।

शाने नुजूलः

मुनाफ़िक़ीन अपनी मजलिसों में सैयदे सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की शान में ना–शाईसता बातें बका करते थे उनमें से बाज़ों ने कहा कि अगर हुजूर को ख़बर हो गई तो हमारे हक़ में अच्छा न होगा तो जलास बिन सुवैद मुनाफ़िक़ ने कहा हम जो चाहें कहें हुजूर के सामने इंकार कर देंगे और क़सम उठायेंगे वह तो कान हैं उनसे जो कहा जाये वह मान लेते हैं इस पर अल्लाह तआला ने यह आयत नाज़िल फ़रमाई और यह फ़रमाया कि अगर वह सुनने वाले भी हैं तो ख़ैर और सलाह के सुनने और मानने वाले हैं शर और फ़साद के नहीं।

तुम्हारे सामने अल्लाह तआला की क़समें उठाते हैं कि तुम्हें राज़ी कर लें और अल्लाह तआला का और रसूल का हक़ ज़ायद था कि उसे राज़ी करते अगर ईमान रखते थे क्या इन्हें ख़बर नहीं कि जो ख़िलाफ़ करे अल्लाह तआला और उसके रसूल का तो उसके लिए जहन्नम की आग है कि हमेशा उसमें रहेगा यही बड़ी रुसवाई है।

मुनाफ़िक़ीन अपनी मजलिसों में सैयदे आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर तअन किया करते थे फिर मुसलमान के पास अपनी बातों का इंकार करते और क़समें उठा उठाकर अपनी सफ़ाई साबित करते मुसलमानों को ख़ुश करते इस पर यह आयत करीमा नाज़िल हुई कि मुसलमानों को ख़ुश करने के बजाए अल्लाह तआला के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को ख़ुश करो उन पर ईमान लाओ अगर तुम्हारा ईमान होता तो तुम इस क़िस्म की हरकतें न करते।

यह ख़ूब समझ लो कि अगर तुमने अल्लाह तआला और उसके रसूल की मुख़ालफ़त को ही जारी रखा तो तुम्हें जहन्नम की आग में हमेशा रहना पड़ेगा यह तुम्हारे लिए बहुत बड़ी रुसवाई होगी।

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की शान में वह लफ़्ज़ इस्तेमाल करना मना है जिस से काफ़िर ग़लत मायने ले सकते होंः

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जब कलाम फ़रमाते तो सहाबा किराम को अगर ज़रूरत पेश आती कि आप ज़रा हमारी रियायत फ़रमायें बात आहिस्ता करें तो वह अर्ज़ करते।

या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हमारी रियायत फ़रमायें लेकिन मुनाफ़िक़ीन यही लफ़्ज़ बोलते थे और रऊनता से मुराद लेते जिस का मायने होता हिमाक़त यानी मआज़ल्लाह आपको अहमक़ से ताबीर करते या रआना को खींच कर ऐसे पढ़ते कि लफ़्ज़ राईना बन जाता जिसका मायने चरवाहा होता।

जब हज़रत सअद बिन मअज़ रज़ियल्लाहु अन्हु ने उनसे यह सुना कि यह क्या मतलब लेते हैं तो आपने फ़रमाया आइंदा अगर किसी ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास ऐसा लफ़्ज़ इस्तेमाल किया तो मैं उसकी गर्दन उड़ा दूंगा यहूद ने कहा यह लफ़्ज़ तुम भी इस्तेमाल करते हो तो इस वाक़िये के बाद रब ने मोमिनों को भी इस लफ़्ज़ के इस्तेमाल से मना फ़रमा दिया और इरशाद फ़रमाया।

ऐ ईमान वालो राऐना न कहो और यूं अर्ज़ करो कि हुजूर हम पर नज़र रखें और पहले ही से बग़ौर

सुनो (ताकि कलाम को फिर से करने की अर्ज़ न करनी पड़े) और काफ़िरों के लिए दर्दनाक अज़ाब है।

अगरचे मुसलमान राऐना का लफ़्ज़ अदब व एहतेराम से इस्तेमाल करते और रियायत से लेते यानी हुज़ूर आप हमारी रियायत फ़रमायें यानी मुनाफ़िक़ीन व कुफ़्फ़ार को यह लफ़्ज़ ग़लत इस्तेमाल करने का मौक़ा मिलता इसलिए मुसलमानों को भी मना फ़रमा दिया इससे यह वाज़ेह हुआ कि अंबियाए किराम अलैहिमुस्सलाम की ताज़ीम व तौक़ीर और उनकी जनाब में कलिमाते अदब अर्ज़ करना फ़र्ज़ है और जिस कलिमा में तर्के अदब का मामूली ख़दशा भी हो वह ज़बान पर लाना मना है।

वाज़ेह हुआ कि ऐसा कोई लफ़्ज़ भी इस्तेमाल करना हुज़ूर की शान में मना होगा जिससे कुफ़्फ़ार आपकी शान को मआज़ल्लाह घटिया समझें यह कहना कि आपको इल्मे ग़ैब नहीं था आप को कोई इख़्तेयार नहीं था आप फ़ौत हो गये आपको ज़िन्दगी हासिल नहीं वग़ैरह वग़ैरह यह आपकी शान में तमाम गुस्ताख़ाना अल्फ़ाज़ हैं।

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के मनसब के ख़िलाफ़ लफ़्ज़ का इस्तेमाल करना बतौर मज़म्मत या मज़ाह के तौर पर बहुत बुरा कलाम होगा। निहायत फ़हश गुफ़्तगू होगी शरीअत में उसके क़ौल को बहुत बुरा और झूठा समझा जायेगा।

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की तौक़ीरः

रब ने इरशाद फ़रमाया और रसूल की ताज़ीम व तौक़ीर करो।

अल्लाह तआला ने मख़लूक़ पर वाजिब कर दिया कि वह नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ताज़ीम व तकरीम करें।

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा ने "तुअज़्ज़िरूहु" का मायने ब्यान किया है "तजल्लहु" जो अजलाल से मुशतक़ है यानी आपकी बुज़ुर्गी ब्यान करो और मुबर्रद ने कहा है कि "तुअज़्जिरूहु" का मायने है नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ताज़ीम में मुबालग़ा करो इस मायने के लिहाज़ से लायानी लोगों का बेहूदा क़ौल मुनदफ़ेअ हो जायेगा कि अहले सुन्नत नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ताज़ीम में मुबालग़ा करते हैं जब रब आप की ताज़ीम में मुबालग़ा करने का हुक्म दे रहा है तो किसी को क्या हक़ पहुंचता है जो यह कहे कि थोड़ी थोड़ी ताज़ीम करो, और अख़फ़श ने इस लफ़्ज़ का मायने ब्यान किया है आपकी और आपके दीन की इमदाद करो, मायने के तौर पर जो तीनों लफ़्ज़ ज़िक्र किये गये हैं उन तमाम का मक़सद तक़रीबन एक ही है यानी आप की बुज़ुर्गी ब्यान करो और आपकी ताज़ीम में मुबालग़ा करो और आप के दीन और आपकी इमदाद करो।

और रब ने इरशाद फ़रमायाः

रसूल के पुकारने को ऐसा न ठहराओ जैसा तुम में एक दूसरे को पुकारता है। इस आयत के तीन मायने हैं एक यह कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जब तुम्हें बुलायें ऐसा न समझो कि किसी आम आदमी ने बुलाया है जी चाहे तो मान लें न जी चाहें तो न मानें बल्कि उसके हुक्म को फ़ौरन क़बूल करो दूसरे मक़ाम पर फ़रमाया।

ऐ ईमान वालो अल्लाह तआला और उसके रसूल के बुलाने पर हाज़िर हो जाओ जब वह तुम्हें बुलायें।

दूसरा मायने है कि हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की दुआ को अपनी दुआओं की तरह न समझो आपकी दुआ में कबूलियत का अंदाज़ा सिर्फ़ इस से लगा लिया जाये कि हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि मैं अपनी मां को इस्लाम की दावत देता था क्योंकि वह मुश्रिका थीं एक दिन मैंने जब उसे ईमान की दावत दी तो उसने मुझे नबी करीम के मुताल्लिक ऐसा कलाम सुनाया जिसे मैं नापसंद करता था मेरी मां ने हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की शान में गुस्ताखाना कलाम किया मैं नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में रोते हुए हाज़िर हुआ मैंने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह आप अल्लाह से दुआ करें कि वह अबू हुरैरा की मां को हिदायत दे तो हुजूर ने रब के दरबार में अर्ज़ किया।

ऐ अल्लाह अबू हुरैरा (रज़ियल्लाहु अन्हु) की मां को हिदायत अता फ़रमा। अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि मैं नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की दुआ पर खुश होकर निकला (घर लौट आया इसी उम्मीद पर कि आपकी दुआ कभी रद्द नहीं होगी) जब मैं अपने दरवाज़ा पर पहुंचा तो दरवाज़े को बंद पाया मेरी मां ने मेरे क़दमों की आवाज़ को सुनकर कहा ऐ अबू हुरैरा ठहर जाओ यह कहते ही मैंने पानी गिरने की आवाज़ सुनी मां ने गुस्ल किया कमीस पहनी जल्दी से अपना दुपट्टा न ओढ़ सकीं और दरवाज़ा खोल कर कहने लगीं ऐ अबू हुरैरा "अशहदु अल्ला इलाहा इल्लल्लाह व अशहदु अन न मुहम्मदन अब्दुहु व रसूलुहू" यानी मां ने ईमान कबूल कर लिया फिर मैं खुशी के आंसू बहाता हुआ हुजूर की खिदमत में हाज़िर हुआ तो आप ने अल्लाह तआला की हम्द ब्यान की और फ़रमाया बहुत बेहतर हुआ।

इस आयते करीमा का तीसरा मायने यह है कि जब तुम हुजूर को पुकारो तो ऐसे न पुकारो जैसा कि एक दूसरे को पुकारते हो।

यानी आपको बुलंद आवाज़ से न पुकारो बल्कि अदब व एहतेराम से आहिस्ता आवाज़ से आपकी ख़िदमत में जो बात अर्ज़ करनी हो वह अर्ज़ करो।

हुजूर नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को आपके ज़ाती अस्माए गिरामी से यानी या मुहम्मद और या अहमद कह कर न पुकारो बल्कि या नबीअल्लाह और या रसूलल्लाह कह कर पुकारो जैसा कि अल्लाह तआला ने आपको सिफ़ाती नामों से पुकारा है।

या रसूलल्लाह और या बनी अल्लाह की तरह या हबीबल्लाह और या ख़लीलुल्लाह कहकर आपको पुकारे यह हुक्म आप की ज़ाहिरी हयात में भी था और आप के दुनिया से तशरीफ़ ले जाने के बाद भी आपसे ख़िताब में यही अदब व एहतेराम मद्दे नज़र रखा जाये।

सहाबा किराम का अदब व एहतेराम :

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का अदब व एहतेराम सहाबा किराम कैसे करते थे और उनके दिलों में कितनी मुहब्बत थी इन अहादीस से अंदाज़ा करें और अपने दिलों में मुहब्बत पैदा करें।

हज़रत इब्ने शमासा मिस्री रहमतुल्लाह अलैहि कहते हैं कि हम हज़रत अम्र बिन आस रज़ियल्लाहु अन्हु के पास हाज़िर हुए तो आपने एक तवील हदीस ज़िक्र की इसमें यह भी फ़रमायाः

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से बढ़कर कोई महबूब नहीं था और न ही मेरी आंखों में आपसे बढ़कर कोई बुजुर्ग नज़र आया और आप की अज़मत के पेशे नज़र मैंने आप को आंख भरकर

कभी नहीं देखा और अगर मुझसे आपके जिस्मे अतहर के औसाफ़ पूछे जायें तो मैं नहीं बता सकता क्योंकि मैंने आपको आंख भरकर कभी देखा ही नहीं।

अरवा बिन मसूद रज़ियल्लाहु अन्हु से मरवी है कि जब कुरैश ने उन्हें हदैबिया में नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ गुफ़्त व शुनीद के लिए भेजा तो मैंने सहाबा किराम को हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ऐसे ताज़ीम करते हुए पाया कि ऐसा मैंने कभी किसी की ताज़ीम करते हुए किसी को नहीं देखा आप वुजू करते थे तो सहाबा जल्दी से आपके आज़ा से गिरने वाले पानी को बतौर तबर्रुक हासिल करने की कोशिश करते हैं हर शख़्स एक दूसरे पर सबक़त ले जाने की कोशिश करता है यूं मालूम होता कि शायद यह एक दूसरे से इस सबक़त हासिल करने में लड़ पड़ेंगे आप अपना लुआब या खंकार ज़मीन पर डालते तो सहाबा किराम उसे पहले ही हासिल कर लेते हैं अपने चेहरों और जिस्मों पर मलते हैं आपके बाल को ज़मीन पर नहीं गिरने देते बल्कि पहले ही उठा लेते हैं आप कोई हुक्म फ़रमाते हैं तो उसे जल्दी क़बूल कर लेते हैं आपकी ताज़ीम के पेशे नज़र आपको निगाहें उठाकर देखते नहीं।

अरवह ने वापस आकर कुरैश को बताया कि ऐ कुरैश मैंने फ़ारस के बादशाहों (किसरा) रोम के बादशाहों (क़ैसर) और हब्शा के बादशाहों (नजाशी) को भी देखा है लेकिन किसी के अहबाब को ऐसी ताज़ीम करते हुए नहीं देखा जैसा कि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के असहाब आपकी ताज़ीम करते हैं।

अबू यअला रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं:

मैं हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से कोई सवाल करना चाहता था लेकिन आपके कमाल व जमाल की वजह से ताज़ीमन वह सवाल मैं दो साल तक मुअख़्ख़र करता रहा।

ख़्याल रहे कि यह रोअब व हैबत कुदरती तौर पर आपको हासिल थी वरना आपसे बढ़कर कोई रहम करने वाला न था अल्लाह तआला के फ़ज़्ल व करम से किसी को मक़ाम हासिल होता है कि वह शफ़ीक़ भी हो और बा–रोअब भी हो गालियों और डंडे से रोअब जमाना कोई मुस्तहसन काम नहीं।

जान लो बेशक नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की हुरमत आप की ताज़ीम व तकरीम आपके इस दुनिया से तशरीफ़ ले जाने के बाद भी हर मुसलमान पर ऐसे ही लाज़िम है जैसे कि आपकी ज़ाहिरी हयात में थी क्योंकि आप को आप के दरजात की बुलंदी और हालात की रिफ़अत के पेशे नज़र ज़िन्दगी हासिल है और आप को रिज़्क़ भी दिया जाता है।

सहाबा किराम और अहले बैयत की ताज़ीम नबी कीरम की ताज़ीम है:

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ताज़ीम करने का हक़ यह है कि जब आपकी ज़ात का ज़िक्र हो तो आपके कलाम यानी अहादीस को अदब व एहतेराम से ज़िक्र किया जाये आपकी सुन्नतों यानी आपके तरीक़े जब भी ज़िक्र किये जायें तो उनमें आपकी अज़मत का पास हो आपके इस्मे गिरामी और आपके औसाफ़ को सुनकर ताज़ीम बजा लाये आपकी सीरत यानी आपकी तमाम हरकात व सकनात में ताज़ीम का लिहाज़ रखे आप की आल औलाद और क़राबत दारों से ताज़ीम व तकरीम के मामलात रखे आपकी अज़वाज खुद्दाम और गुलामों की अज़मत का ख़्याल रखे उनकी शान में गुस्ताख़ी न करे और आपके सहाबा किराम की अज़मत का पास रखे इनका नाम अदब व एहतेराम से ले उनकी शान

ब्यान करे जिससे उनकी ताज़ीम व तकरीम समझ में आये उनकी शान में ना–ज़ेबा अलफ़ाज़ इस्तेमाल करके अपना ठिकाना जहन्नम में न बनाये।

शोमीए क़िसमत आज हमारे मुल्क में फ़साद, दहशतगर्दी क़त्ल व ग़ारत का बाज़ार क्यों गर्म है। शिया सुन्नी फ़साद क्यों बरपा हैं? इसकी वजह सिर्फ़ यह है कि एक गरोह सहाबा किराम की शान में गुस्ताख़ी का मुर्तकिब हो रहा है मआज़ल्लाह हज़रत अबू बक्र सिदीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु, हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ियल्लाहु अन्हु और हज़रत उसमान ग़नी रज़ियल्लाहु अन्हु को ज़ालिम क़रार दे रहा है बल्कि मआज़ल्लाह सिवाए तीन सहाबा किराम के सब को मुरतद कह रहा है।

और दूसरा गरोह बज़ाहिर सहाबा किराम की अज़मतों का पासदार बन कर यज़ीद का मग़फ़ूर और जन्नती होना साबित कर रहा है मआज़ल्लाह हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु का ग़लती पर होना क़रार दे रहा है।

इन दो नापाक फ़िरक़ों ने मुल्क को दहशतगर्दी का अड्डा बना रख है दरहक़ीक़त यह लोग अमरीकी एजेंट हैं जो ईरान और पाकिस्तान को लड़ाना चाहते हैं।

अमरीकी और इसके हमनवा दूसरे कुफ़्फ़ार के वही नापाक इरादे ईरान और पाकिस्तान के मुताल्लिक़ हैं जो वह ख़लीज में अपने इरादों को अमली जामा पहना चुके हैं। न वह कुवैत के हमदर्द थे और न सऊदिया के, बल्कि वह तमाम मुसलमानों को मिटाने के दरपै हमा वक़्त रहते हैं। ईराक़ की अस्करी ताक़त को तबाह किया और सऊदिया और कुवैत को माली लिहाज़ पर तबाह व बर्बाद कर दिया।

खुदा चाहता है रज़ाए मुहम्मदः

हज़रत अब्दुल्लाह अम्र बिन आस रज़ियल्लाहु अन्हु से मरवी है कि बेशक नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम के मुताल्लिक़ नाज़िल शुदा आयते करीमा तिलावत की।

ऐ मेरे रब बेशक बुतों ने बहुत लोग बहका दिये तो जिसने मेरा साथ दिया वह तो मेरा है जिस ने मेरा कहना न माना तो बेशक तू बख़्शने वाला मेहरबान है।

रब के हुज़ूर यह अर्ज़ कियाः

अगर तू उन्हें अज़ाब करे तो वह तेरे बंदे हैं और अगर तू उन्हें बख़्श दे तो बेशक तू ही ग़ालिब हिकमत वाला है।

इसके बाद हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने रोते हुए अपने दोनों हाथों को उठाकर अर्ज़ किया ऐ अल्लाह मेरी उम्मत मेरी उम्मत। अल्लाह तआला ने फ़रमाया ऐ जिब्राईल जाओ तुम मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास तुम्हारा रब ख़ूब जानता है फिर भी इनसे पूछो तुम्हें किस चीज़ ने रुलाया है।

जिब्राईल हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुए आप से पूछा (कि आप क्यों रो रहे थे?)

तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने जो (रब के हुज़ूर) अर्ज़ क़िया था उसकी ख़बर दी हालांकि अल्लाह तआला ख़ुद ही बेहतर जानता है।

तो अल्लाह तआला ने फ़रमाया ऐ जिब्राईल मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास जाओ और कहो कि हम आपको उम्मत के बारे में राज़ी करेंगे और आपको ग़मज़दा नहीं करेंगे।

इस हदीस से हासिल होने वाले फ़वायद :

१. इस हदीसे पाक में नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की उम्मत के हक़ में कामिल शफ़क़त का ज़िक्र किया गया है कि आप अपनी उम्मत की मसलेहतों का कितना ख़्याल रखते थे और उनके मामलात की कितनी रियायत रखते थे।

२. आपने चूंकि दोनों हाथ उठाकर दुआ की इससे पता चला कि दुआ में हाथों का उठाना मुस्तहब है।

३. रब ने हुज़ूर को तसल्ली देते हुए जो यह फ़रमाया

हम तुम्हें तुम्हारी उम्मत के बारे में राज़ी करेंगे और ग़मज़दा नहीं करेंगे इसमें हुज़ूर की उम्मत को कामिल बशारत दी गई है और उम्मत के उम्मीद दिलाने वाली तमाम अहादीस से बढ़कर इस हदीस में उन्हें बख़्शिश की उम्मीद दिलाई गई है।

४. नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का अल्लाह तआला के नज़दीक जो अज़ीम मर्तबा है उसका ज़िक्र इस हदीस में पाया गया है और अल्लाह तआला की आप पर अज़ीम मेहरबानियों का ज़िक्र किया गया है।

जिब्राईल को आपके पास भेजकर सवाल करने में यह हिकमत थी कि आपके बुलंद मरातिब का इज़हार किया जाये कि आप उस बुलंद मर्तबा पर फ़ायज़ हैं कि अल्लाह तआला आपको ऐसे इनामात से राज़ी करेगा कि आप राज़ी हो जायेंगे और आपको अल्लाह तआला किराम अता फ़रमायेगा।

यह हदीस अल्लाह तआला के इस इरशाद के मुताबिक़ है अल्लाह तआला आपको इतना अज़ीम मर्तबा अता फ़रमायेगा कि आप राज़ी हो जायेंगे।

और हदीस में फ़रमाया गया हम तुम्हें ग़मज़दा नहीं करेंगे इसमें ताकीद पाई गई है और इस वहम का इज़ाला पाया गया है कि कोई यह ख्याल न करे कि हो सकता है कि आपकी बाज़ उम्मत को अल्लाह तआला बख़्शेगा बल्कि मायने यह है।

हम आपको राज़ी कर देंगे और आपको ग़म में मुब्तला नहीं करेंगे बल्कि आप की तमाम उम्मत को बख़्श देंगे यानी अगर किसी को गुनाहों का अज़ाब दिया जाये तो वह दाइमी नहीं बल्कि फ़क़त उनको जन्नत में दाख़िल करने के लिए गुनाहों की आलूदगी से साफ़ करने के लिए वह अताब होगा यानी ज़िल्लत के तौर पर मामूली सज़ा के तौर पर होगा।

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की जाए नमाज़ से तबर्रुक हासिल करना:

महमूद बिन रबीअ अंसारी रज़ियल्लाहु अन्हु ने हदीस ब्यान की कि बेशक उतबान बिन मालिक अंसारी रज़ियल्लाहु अन्हु जो बदर में भी शरीक हुए बेशक यह नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुए और अर्ज़ किया या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम बेशक मेरी नज़र कुछ कम हो गई मैं एक क़ौम को नमाज़ पढ़ाता हूं लेकिन जब बारिश बरसती है तो मेरे और इस क़ौम के दर्मियान एक बरसाती नाला हालय हो जाता है अब मैं उनकी मस्जिद में जाकर उन्हें नमाज़ नहीं पढ़ा सकता।

इसलिए मैं यह पसंद करता हूं कि बेशक रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम आप आयें एक जगह नमाज़ (मेरे घर में अदा करें ताकि मैं उसी जगह को नमाज़ के लिए मुन्तख़ब कर लूं तो हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया मैं इंशाअल्लाह जल्दी ही ऐसा करूंगा उतबान कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु दिन के बुलंद होने पर तशरीफ़ लाये रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इजाज़त तलब की मैंने इजाज़त दी आप बैठे भी नहीं थे कि घर में दाख़िल होकर पूछा कि तुम कहां पसंद करते हो कि मैं तुम्हारे घर में (इस जगह) नमाज़ अदा करूं मैंने अपने घर के एक कोने की तरफ़ इशारा किया।

तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम खड़े हुए हम भी आपके पीछे खड़े हुए आपने दो रकअत नमाज़ अदा फ़रमाई फिर सलाम फेरा।

हदीस से हासिल होने वाले फ़वायद :

१. जब भी कोई काम करना मक़सूद हो तो इंशाअल्लाह तआला का लफ़्ज़ ज़िक्र करे। कुरआन पाक और हदीस पाक से इस का सबूत पाया जाता है।

२. नेक लोगों और उनके आसार से तबर्रुक हासिल करना मुस्तहब है और जहां नेक लोग नमाज़ अदा करें वहां नमाज़ अदा करना और उनसे तबर्रुक हासिल करना मुस्तहब है।

३. किसी बुजुर्ग शख़्स का अपने से कम दर्जे वाले की ज़ियारत के लिए जाना और उसकी मेहमान नवाज़ी करना बेहतर है।

४. उज़्र की वजह से जमाअत को साक़ित करना जायज़ है।

५. इमाम, आलिम या उसके बड़े लोगों को अपने साथ अपने बाज़ को ले जाना जायज़ है। आजकल मशाइख़ या मोहतमिम हज़रात जैसा कि अपने साथ ख़ुद्दाम को रखते हैं यह जायज़ है लेकिन दावत करने वाले को यह बताना चाहिये कि मेरे साथे इतने आदमी होंगे अगर इसकी ताक़त हो तो वह दावत करे वरना छोड़ दे।

६. किसी के घर जाकर उससे इजाज़त तलब करके उसके घर में दाख़िल हो बेशक उस शख़्स ने पहले ख़ुद ही दावत क्यों न दी हो। साहबे ख़ाना के घर न होने की सूरत में वापस लौट आयें।

७. सबसे पहले मक़सूदी का काम किया जाये क्योंकि हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम नमाज़ अदा करने की ग़र्ज़ से गये थे तो वही काम आपने सर अंजाम दिया।

ख़्याल रहे कि इस हदीस पाक में यह भी ज़िक्र है हमने आपके लिए हज़ीर खाना तैयार किया और आप को खाना तनावुल करने के लिए ठहरा लिया। हज़ीर या हज़ीरा उस खाने को कहा जाता है कि गोश्त को उबाल कर उसके ऊपर आटा डाला जाता है।

उतबान कहते हैं कि इर्द गिर्द से हमारे मुहल्ला के कई आदमी मेरे घर में जमा हो गये।

८. और फ़ायदा यह हासिल हुआ कि जब किसी के घर कोई नेक बुजुर्ग शख़्स तशरीफ़ ले आयें तो अहले मुहल्ला उसके घर आकर उस बुजुर्ग की ज़ियारत करें उसकी इज़्ज़त व तकरीम बजा लायें और उससे फ़ायदा हासिल करें।

९. घर में नमाज़ के लिए किसी जगह को मुअय्यन करना जायज़ है अलबत्ता एक हदीस में घर में कोई जगह नमाज़ के लिए मोअय्यन करने की मुमानेअत भी पाई गई है लेकिन इससे मुराद यह

है कि जब रियाकारी की नीयत से घर में कोई जगह नमाज़ के लिए मुअय्यन की जाए तो यह नाजायज़ है।

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के आसार से तबर्रुक हासिल करना:

हज़रत अबू हाज़िम रहमतुल्लाह अलैहि कहते हैं कि हज़रत सहल रज़ियल्लाहु अन्हु ने हमें एक प्याला दिखाया और फ़रमाया कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तशरीफ़ लाए और सकीफ़ा बिन साअदा में बैठे और आपने फ़रमाया।

ऐ सहल हमें पानी पिलाओ।

हज़रत सहल रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं।

कि मैंने यह प्याला निकाला और उससे आपको और आपके सहाबा को पानी पिलाया।

अबू हाज़िम रहमतुल्लाह अलैहि कहते हैं।

सहल ने हमें उस प्याला से पानी पिलाया।

फिर वही प्याला हज़रत उमर बिन अब्दुल अजीज़ ने बतौर हेबा तलब किया। तो वह उनको हेबा कर दिया गया।

इस हदीस के मातेहत अल्लामा नूवी रहमतुल्लाह अलैहि तहरीर फ़रमाते हैं।

इस हदीस पाक से साबित हुआ कि सहाबा किराम और ताबेईन ने नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के आसार से तबर्रुक हासिल किया। नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने जिस चीज़ को हाथ लगाया हो या जिसको पहना हो उससे तबर्रुक हासिल किया जाये ग़र्ज़ कि किसी चीज़ को किसी तरह भी हुजूर से निसबत हो वह बाइसे तबर्रुक होगी। इस पर उम्मत का इजमाअ है और सल्फ़ सालेहीन और बाद में आने वाले तमाम अहले इल्म का इस पर इत्तेफ़ाक़ है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के रौज़ा मुबारक में आपके नमाज़ अदा करने की जगह नमाज़ अदा करके तबर्रुक हासिल किया जाये और जिस ग़ार में हुजूर दाख़िल हुए उसमें दाख़िल होकर तबर्रुक हासिल करे यानी ग़ारे हिरा और ग़ारे सूर में हुसूले तबर्रुक के लिए हाज़िरी दे (सऊदी नजदियों को भी यह बात समझ आती तो वह इन दोनों ग़ारों को पहाड़ियों के नीचे तबर्रुक हासिल करना हराम है के बोर्ड आवेज़ां न करते।)

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने ख़ुद तबर्रुक हासिल करने के लिए ही अपने बाल मुबारक हज़रत तलहा को दिये कि यह लोगों में तक़सीम कर दो और अपनी चादर उन्हें अता की इसमें अपनी बेटी को कफ़न दो। तबर्रुक के लिए आपने अपने हाथ मुबारक से दरख़्त की दो सब्ज़ शाख़ें दो क़ब्रों पर रखीं, तबर्रुक हासिल करने के लिए ही बिन्त मलहान ने आपके पसीना को जमा करके अपने पास रखा और तबर्रुक के लिए ही आपके वुजू के लिए इस्तेमाल होने वाला पानी और आपके खंकार और लुआब को चेहरों पर मला गया। इस क़िस्म की कसीर मिसालें सहीह अहादीस में मज़कूर हैं जिनमें कोई शक व शुबह नहीं।

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का मरीज़ की अयादत करना:

हज़रत आमिर बन सअद रज़ियल्लाहु अन्हु अपने बाप सअद रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत करते हैं कि मेरे बाप ने बताया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हुज्जतुल विदाअ में मेरी अयादत

की जब कि मैं एक ऐसे दर्द में मुब्तला था कि बज़ाहिर यह महसूस हो रहा था कि मैं मौत के किनारे पर हूं।

मैंने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मुझे तकलीफ़ पहुंच चुकी है वह तो आप देख ही रहे हैं मैं कसीर माल का मालिक हूं सिवाए मेरी एक बेटी के मेरा कोई वारिस नहीं। क्या मैं अपने माल का दो तिहाई सदक़ा कर दूं आपने फ़रमाया नहीं मैंने अर्ज़ किया क्या मैं अपने माल का आधा हिस्सा सदक़ा कर दूं तो हुजूर ने इरशाद फ़रमाया नहीं। अलबत्ता तुम अपने तिहाई हिस्सा की वसीयत कर सकते हो तिहाई हिस्सा की वसीयत काफ़ी है इसलिए कि अगर तुम अपने वुरसा को मोहताज छोड़ कर जाओ कि वह लोगों के सामने अपने हाथ फैला रहे हों। (तो यह अच्छा नहीं।)

तुम अल्लाह तआला की रज़ा के लिए जो माल भी ख़र्च करोगे यक़ीनन तुम्हें इसका अज्र मिलेगा यहां तक कि लुक़मा तुम अपनी ज़ौजा के मुंह में डालो। (तो तुम्हें इसका भी अज्र मिलेगा।)

फ़वायद : मरीज़ की अयादत करना मुस्तहब है जिस तरह आम लोग एक दूसरे की अयादत करते हैं या इमाम की अयादत करते हैं ऐसे ही इमाम के लिए भी मुस्तहब यह है कि वह अवाम की अयादत करे। मरीज़ के लिए जायज़ है कि वह अपने मर्ज़ के दौरान किसी से दवा पूछे या नेक आदमी को दुआ करने के मुताल्लिक़ कहे या किसी को अपने तिहाई माल में वसीयत करे या कोई अपने हाल के मुताबिक़ मसला पूछे लेकिन मर्ज़ से तंग होकर किसी के सामने शिकायत के तौर पर ज़िक्र करना, परेशानी का इज़्हार करना मना है क्योंकि इससे वह सवाब ज़ाया हो जाता है जो मर्ज़ की वजह से हासिल होता है।

हदीस पाक में सिला रहमी करने, क़रीबी रिश्तेदोरों पर एहसान करने और वुरसा पर शफ़क़त करने पर बर–अंगेख़ता किया गया है। जितना ज़्यादा क़रीबी रिश्ता होगा उसी के मुताबिक़ उस पर एहसान करना अच्छा होगा। बनिसबत दूर वाले रिश्ते के और मसला यह समझ में आया कि आमाल का दारो मदार नीयत पर होता है अगर नीयत नेक अमल की हो ता सवाब हासिल होता है।

बेशक औलाद पर माल ख़र्च करने से भी सवाब हासिल होता है जब इंसान का इरादा उससे अल्लाह तआला की रज़ा हासिल करना हो यानी चूंकि अल्लाह तआला ने मुझ पर यह ज़िम्मेदारी आइद की है इसलिए उसका हुक्म मान कर इस ज़िम्मेदारी को पूरा कर रहा हूं।

बेशक मुबाह में जब अल्लाह तआला की रज़ामंदी का लिहाज़ कर लिया जाये तो वह काम ताअत बन जाता है इसलिए नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने ज़ौजा के मुंह में लुक़मा डालने को नेकी काम कहा है और इसमें भी आपने यह क़ैद ज़िक्र फ़रमाई कि इसमें तुम अल्लाह तआला की रज़ामंदी हासिल कर रहे हो।

नतीज़ा यह वाज़ेह हुआ कि जब इंसान कोई मुबाह काम अल्लाह तआला की रज़ा के लिए करे तो वह ताअत हो जाता है और इससे सवाब हासिल होता है यहां तक कि अल्लाह की इबादत की ग़र्ज़ से खाना तनावुल करना और आराम करने के लिए सोना भी इबादत है जब कि उसकी नीयत यह हो कि मुझे इस खाने और सोने से तवानाई और चुस्ती हासिल होगी जिससे मैं इबादत अच्छी अदा कर सकूंगा इसी तरह हराम से अपने आपको बचाने और अपनी नज़र को बचाने की ग़र्ज़ से अपनी ज़ौजा से जिमाअ करना मुस्तहब है।

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सामने तकब्बुर की सज़ा:

अयास बिन सलमा बिन अकूअ रज़ियल्लाहु अन्हुमा अपने बाप से रिवायात करते हैं:

एक शख़्स ने बनी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सामने बायें हाथ से खाना तनावुल क़रना शुरू किया तो आपने फ़रमाया कि दायें हाथ से खाओ। उसने कहा मैं दायें हाथ से खाने की ताक़त नहीं रखता। आप ने फ़रमाया कि तुम्हें ताक़त ही न हो। उस शख़्स के लिए मानेअ सिर्फ़ तकब्बुर ही था इसलिए उसे हाथ मुंह तक उठाने की ताक़त भी न हासिल हो सकी।

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उसके तकब्बुराना जवाब पर उसके ख़िलाफ़ दुआ की और फ़रमाया तुम्हें न ही ताक़त हो, इससे फ़ायदा हासिल हुआ।

इस हदीस में हुक्म शरई की बिला उज़्र मुख़ालफ़त करने वाले के ख़िलाफ़ दुआ करने का सबूत मौजूद है।

और यह फ़ायदा हासिल हुआ कि तकब्बुर इंसान को ज़लील करता है और फ़ायदा यह हासिल हुआ कि हर हाल में अच्छे काम का हुक्म देना और बुरे काम से रोकना ज़रूरी है ख़्वाह वह खाने पीने की हालत ही क्यों न हो? खाने पीने के आदाब सिखाना भी मुस्तहब है।

दायें हाथ से कोई चीज़ खाना और बायें से इज्तेनाब करना भी अम्र मुस्तहसन है बल्कि हज़रत नाफ़ेअ ने किसी को कोई चीज़ दायें हाथ से देना और दायें हाथ से ही लेना भी मुस्तहब क़रार दिया है।

ख़्याल रहे कि उस शख़्स के मुताल्लिक़ क़ाज़ी अयाज़ रहतुल्लाह अलैहि ने तो मुनाफ़िक़ होना लिखा है वह हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के हुक्म से उदूली करने वाला मुनाफ़िक़ था ताहम नूवी रहमतुल्लाह अलैहि ने कहा कि यह दुरुस्त नहीं है सिर्फ़ तकब्बुर और हुक्म के इंकार से मुनाफ़क़त साबित नहीं होती।

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से बच्चों को घुट्टी डलवाना:

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि मैं अब्दुल्लाह बिन तलहा अंसारी को उनकी पैदाईश पर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास ले गया आपने चादर ओढ़ रखी थी और आप ऊंटों को तेल लगा रहे थे आपने फ़रमााय।

क्या तुम्हारे पास खजूरें हैं मैंने अर्ज़ किया जी हां! मैंने वह खजूरें आपकी ख़िदमत में पेश कीं आपने पहले वह अपने मुंह मुबारक में डालीं और उनको चबाया फिर बच्चे के मुंह को खोल कर उसमें वह खजूरें डालीं, बच्चे ने ख़जूर को चूसना शुरू किया तो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने बतौर ताज्जुब फ़रमाया। अंसार को खजूरों से कितनी मुहब्बत है और आपने बच्चे का नाम अब्दुल्लाह रखा।

हदीस पाक से हासिल होने वाले फ़वायद :

१. मुस्तहब यह है कि बच्चों के नाम ऐसे रखे जायें जिनमें अल्लाह तआला के अस्माए गिरामी आयें या अंबियाए किराम यानी अब्दुल्लाह, इब्राहीम वग़ैरह नाम रखे जायें।

२. बच्चे के पैदा होने पर खजूर से घुट्टी डालना मुस्तहब है अगर खजूर न मिल सके तो कोई और मीठी चीज़ उसके मुंह में डाली जाये।

३. घुट्टी डालने वाला खजूर को चबाकर मुकम्मल तौर पर नर्म कर दे ताकि बच्चे को चूसने में

मुश्किल दरपेश न आये।

४. मुस्तहब है कि घुट्टी डालने वाला नेक शख़्स हो ख़्वाह मर्द या औरत अगर नेक शख़्स वहां न हो तो बच्चे को उसके पास ले जायें ताकि वह घुट्टी डाले।

५. नेक लोगों के आसार यानी इनसे मुताल्लिक़ अशिया से तबर्रुक हासिल करना मुस्तहब है उनके लुआब से तबर्रुक हासिल करना और उनसे ताल्लुक़ रखने वाली हर चीज़ से तबर्रुक हासिल किया जाये।

६. मुस्तहब यह है बच्चों के नाम नेक लोगों से रखवाये जायें ताकि वह इस्लामी तर्ज़ के नाम रखें। सिर्फ़ फ़िल्मी लोगों के और ख़िलाड़ियों के नाम रखने पर इक्तेफ़ा न किया जाये।

७. नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम में कामिल तौर पर इज्ज़ पाया जाता था कि आप अपना काम अपने हाथों से ख़ुद सर अंजाम देते थे।

८. बड़े शख़्स का अज़ ख़ुद अपने काम में मशगूल होने से उनकी मुरव्वत में कोई फ़र्क़ लाज़िम नहीं आता है।

हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा के हार का गुम होनाः

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को सफ़र में अगर औरतों को साथ ले जाने की ज़रूरत दरपेश आती तो औरतों के इत्मीनाने क़ल्ब के लिए कुरआ डालते जिसका नाम निकलता उसे साथ ले जाते। ग़ज़वह बनी मुस्तलक़ में जाते हुए कुरआ हज़रत आयशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु अन्हा के नाम निकला तो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उन्हें अपने साथ ले गये यह वाक़िया पर्दे का हुक्म नाफ़िज़ हो जाने के बाद का है जब पर्दा की आयात नाज़िल हो गई तो उसके बाद औरतों के कजावे पर भी पर्दा होता था इसी तरह पर्दा में ही कजावों को उठाकर ऊंटों पर रख दिया जाता था।

ग़जवह से वापसी पर रास्ते में क़ाफ़िला रुका चलने से पहले आप क़ज़ाए हाजत के लिए चली गई जब क़ज़ाए हाजत से फ़ारिग़ होकर क़ाफ़िला के क़रीब पहुंची तो देखा कि आपके गले का हार टूट कर गिर गया है आप उसकी तलाश में वापस चली गई जब वापस आई तो क़ाफ़िला कूच कर चुका था कजावा पर पर्दा डाला हुआ था इसी तरह क़ाफ़िले वालों ने उसे ऊंट पर रख दिया उन्होंने समझा आप अपने कजावे में ही हैं चूंकि आपका वज़न भी बहुत कम था इसलिए क़ाफ़िले वालों को इल्म न हो सका।

आप वापस लौट कर वहीं बैठ गई कि मुझे तलाश करने के लिए यक़ीनन क़ाफ़िला वाले वापस आयेंगे आप उसी हाल में सो गई। सफ़वान बिन मअतल रज़ियल्लाहु अन्हु जिनको क़ाफ़िला के पीछे रहने और कोई चीज़ गिर जाये तो उसे उठाने पर मामूर किया हुआ था। जब वहां से गुज़रे तो उन्होंने हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा को पहचान कर "इन्ना लिल्लाहि व इन न इलैहि राजिऊन" पढ़ा। हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा ने अपने आपको चादर से ढांप लिया। सफ़वान ने और कोई कलाम न फ़रमाया बस अपने ऊंट को बिठाकर उसकी टांगों पर अपना पांव रखा ताकि यह न उठे और हरकत न करे। हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा उस पर सवार हो गई। इस तरह आप क़ाफ़िला में पहुंच गई जहां क़ाफ़िला ठहरा हुआ था।

आपके पहुंचने पर रईसुल मुनाफ़क़ीन अब्दुल्लाह बिन अबी मुनाफ़िक़ ने सबसे पहले बोहतान तराशी

की और उसके बाद और मुनाफ़िक़ भी उसके हमनवा बन गये।

ज़्यादा मक़ामे अफ़सोस यह था कि मुनाफ़क़ीन की साज़िश के जाल में कई मुख़लिस सहाबा किराम भी आ गये यानी हज़रत हस्सान रज़ियल्लाहु अन्हु और मुसत्तह रज़ियल्लाहु अन्हु जो हज़रत सिद्दीक़ अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु की ख़ाला के या ख़ाला की बेटी के बेटे थे और हज़रत हमना बिन्त जहश रज़ियल्लाहु अन्हा जो नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ज़ौजा मुतह्हरा हज़रत ज़ैनब बिन्त जहश रज़ियल्लाहु अन्हा की बहन थीं उन लोगों में शामिल हो गये।

इस वाक़िये के बाद एक माह तक नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा से कोई कलाम न फ़रमाया। एक माह के बाद फ़रमाया जो फ़ैसला अल्लाह तआला फ़रमायेगा वही होगा।

हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं कि मैं इस पर बहुत ख़ुश हुई क्योंकि मुझे मालूम था कि मैं पाक दामन हूं अल्लाह तआला ज़रूर मेरे हक़ में फ़ैसला फ़रमायेगा।

जब सूरः नूर की १८वीं आयत हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा की पाक दामनी ब्यान करने के लिए और मुनाफ़क़ीन की मज़म्मत के लिए नाज़िल हुई तो हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मिम्बर पर इन आयात को सुनाया।

तंबीह : अल्लामा राज़ी रहमतुल्लाह अलैहि फ़रमाते हैं अगर कोई शख़्स कहे कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को इल्म नहीं था अगर आपको इस वाक़िये का इल्म होता तो आप परेशन क्यों थे?

इसका जवाब यह है बेशक कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम कसीर तौर पर काफ़िरों की बातों से परेशान हो जाते थे हालांकि आपको मालूम होता था कि उनकी यह बातें ग़लत हैं अल्लाह तआला ने इरशाद फ़रमाया।

तहक़ीक़ हमें मालूम है कि बेशक आपके दिल को उनकी बातों से तंगी हासिल होती है यह मसला भी इसी क़बील से है।

अल्लामा राज़ी रहमतुल्लाह अलैहि के इस इरशाद के बाद वाज़ेह हो गया कि आपको परेशानी सिर्फ़ काफ़िरों, मुनाफ़िक़ों की बातें से हो रही थी आपको मालूम था कि यह ग़लत कह रहे हैं और ख़ुसूसन जब अपने भी साज़िश का शिकार हो चुके थे तो परेशानी की ज़्यादती का यह सबब बन गया अल्लाह तआला के इरशाद से पहले अगर आप ख़ुद ही मुनाफ़िक़ों की बातों का रद्द फ़रमाते तो उनके मुंह बंद करने मुश्किल थे लेकिन कुरआन पाक की आयात के नुजूल के बाद उनको ज़ाहिरन कुछ कहने की जुर्रत न हो सकी क्योंकि कुरआन पाक ने तो उनको वाज़ेह तौर पर चैलेंज कर दिया था कुरआन पाक की एक छोटी सी सूरः तुम भी बनाकर पेश करो लेकिन वह कोशिश के बावजूद आजिज़ आ चुके थे।

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का बदर में कुफ़्फ़ार के क़त्ल होकर गिरने की जगह निशान लगानाः

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि हमें हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने बदर के मुताल्लिक़ बताया।

आपने फ़रमाया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम बदर में काफ़िरों के दूसरे दिन क़त्ल होकर गिरने के मक़ामात दिखा रहे थे और आप ने फ़रमाया कि यह मक़ाम इंशाअल्लाह कल फ़लां शख़्स के मरने का है। रावी कहते हैं कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने क़सम खाकर कहा। क़सम है उस ज़ात की जिसने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को हक़ के साथ मबऊस फ़रमाया उन हुदूद से कोई भी उन काफ़िरों से ज़र्रा भर भी अपनी जगह से नहीं हटा यानी हर एक इन निशानियों पर ही क़त्ल होकर गिरा जहां नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने निशानात लगाये थे।

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का बदर के मक़तूलों से कलाम करनाः

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु से मरवी है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने बद्र में क़त्ल होने वालों को तीन दिन तक इसी तरह छोड़ दिया फिर इनके पास आये और उनके क़रीब खड़े होकर उनको निदा दी ऐ अबू जहल ऐ उमय्या बिन ख़लफ़ ऐ उतबा बिन रबीआ ऐ शैबा बिन रबीआ क्या ऐसा नहीं कि तुम ने वह पा लिया जिसका तुम्हारे साथ तुम्हारे रब ने सच्चा वादा फ़रमाया और मैंने वह पा लिया जो मेरे साथ मेरे रब ने सच्चा वादा फ़रमाया। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के कलाम को सुनकर अर्ज़ किया।

या रसूलल्लाह यह कैसे सुनेंगे और कैसे जवाब देंगे? यह तो मुरदार हैं? आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया क़सम है उस ज़ात की जिसके क़ब्ज़े में मेरी जान है जो इनसे कह रहा हूं तुम इनसे ज़यादा सुनने वाले नहीं हो अलबत्ता यह जवाब देने पर क़ादिर नहीं फिर आपने हुक्म दिया कि इनको घसीट कर बद्र के कुंए में डाल दिया जाये।

इस हदीस पाक की शरह में अल्लामा नूवी रहमतुल्लाह अलैहि क़ाज़ी अयाज़ रहमतुल्लाह अलैहि का क़ौल नक़्ल करते हैं कि उन्होंने कहा कि उनके सुनने का यही मतलब लिया जायेगा जैसा कि आम फ़ौत होने वाले लोगों के सुनने का ज़िक्र अज़ाबे क़ब्र वाली अहादीस में मौजूद है अलबत्ता वह कैसे सुन सकते हैं इसके मुताल्लिक़ यह है कि हो सकता है कि उन्हें मुकम्मल ज़िन्दगी अता कर दी गई हो और हो सकता है कि सिर्फ़ समझने वाले आज़ा को ज़िन्दगी दे दी गई और उन्हें सुनने और समझने की ताक़त दे दी गई हो।

यही क़ौल ज़ाहिर और मुख़्तार भी यही है कि वह अहादीस जिनमें यह ज़िक्र है कि क़ब्र पर जाकर सलाम किया जाये यानी अस्सलामु अलैकुम या अहलिल कुबूर कहा जाये इनसे वाज़ेह हो रहा है कि मुर्दे सुनते हैं अगर न सुनते तो सलाम देने का क्या मक़सद होगा?

मुख़्तसर हालात अज़ मदारिजिन नबुव्वत

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर सबसे पहले फ़र्ज़:

इमाम नूवी रहमतुल्लाह अलैहि फ़रमाते हैं कि आप पर सबसे पहले लोगों को डराना और तौहीद की दावत वाजिब हुई इसके बाद रात का क़याम, फिर यह मनसूख़ फ़रमा दिया। फिर मेराज में पांच नमाज़ों के फ़र्ज़ होने पर तमाम रात का क़याम मुकम्मल तौर पर मनसूख़ कर दिया।

आपकी दावत पर पहले इस्लाम लाने वाले:

आज़ाद मर्दों में अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु, बच्चों में अली मुर्तज़ा रज़ियल्लाहु अन्हु, औरतों में हज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहु अन्हा, और आज़ाद शुदा गुलामों में हज़रत ज़ैद रज़ियल्लाहु अन्हु और गुलामों में हज़रत बिलाल रज़ियल्लाहु अन्हु हैं।

इनके बाद उस्मान बिन अफ़्फ़ान, जुबैर बिन अव्वाम, अब्दुर्रहमान बिन औफ़, सअद बिन अबी वक़ास, तलहा बिन अब्दुल्लाह इनके बाद अबू उबैद आमिर बिन अब्दुल्लाह बिन जर्राह, अबू मुसलमा बिन अब्दुल्लाह बिन अब्दुल अहद इनके बाद अरक़म, उस्मान बिन मज़ऊन, अब्दुल्लाह बिन मसऊद, सईद बिन ज़ैद रज़ियल्लाहु अन्हुम और फ़ातिमा बिन्त ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हा। औरतों में से हज़रत ख़दीजा के बाद उम्मुल फ़ज़्ल ज़ौजा सैयदना अब्बास और अस्मा बिन्त अबी बकर रज़ियल्लाहु अन्हन ने ईमान क़बूल किया।

दावत व तबलीग़:

तीन साल तक आपको मख़फ़ी तौर पर फ़रदन फ़रदन लोगों को दावते ईमान देने का हुक्म था फिर आपको ज़ाहिर तौर पर दावत व तबलीग़ का हुक्म हुआ आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने जब फ़रमाया कि बुत और इनके पूजने वाले सब जहन्नम में जायेंगे तो कुरैश आपके मुख़ालिफ़ हो गये आपको ईज़ा पहुंचानी शुरू की, आप पर कूड़ा करकट फेंकते, रास्ते में कांटे बिछाते, आप पर पत्थर फेंकते, एक बद बख़्त ने नमाज़ की हालत में आपकी गर्दन को ऊपर से दबाया। एक बद बख़्त ने आपका गला घोंटा, साथ साथ इन लोगों ने मुसलमानों को भी तकालीफ़ पहुंचानी शुरू कीं, नबुव्वत का चौथा साल इन ईज़ा व तकालीफ़ को बर्दाश्त करते गुज़र गया और नबुव्वत के पांचवें साल हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने बाज़ सहाबा किराम को हब्शा की तरफ़ हिजरत का हुक्म दिया।

हज़रत हमज़ा और हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा का ईमान लाना:

नबुव्वत के पांचवे या छटे साल हमज़ा रज़ियल्लाहु अन्हु ने ईमान क़बूल किया क्योंकि जब आपको पता चला कि अबू जहल ने आज हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को बहुत ईज़ा पहुंचाई और गालियां दीं तो आपने अबू जहल के पास आकर कमान से उसके सर को फोड़ दिया और ख़ुद ईमान क़बूल कर लिया उनके तीन दिन बाद हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु ने इस्लाम क़बूल कर लिया, उस वक़्त मुसलमानों की तादाद चालीस से कुछ ज़ायद मर्द थे और ग्यारह औरतें थीं।

इन दोनों हज़रात के ईमान लाने से मुसलमानों को बहुत तक़वियत ह्रासिल हुई, ख़ुसूसन हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के ईमान लाने के बाद इस्लामी शआर पर ज़ाहिर तौर पर अमल शुरू हो गया।

कुरैश का अहद नामा और हुज़ूर का शअब अबू तालिब में मक़्य्यद होना:

नबुव्वत के सातवें साल कुरैश ने अबू तालिब को (जो हुज़ूर की मुआवनत कर रहे थे) कहा कि या तुम अपने भतीजे की इमदाद छोड़ दो या इन्हें हमारे हवाले करो या इन्हें कहो हमारे बुतों को बुरा कहना छोड़ दो या फिर हमारे साथ जंग के लिये तैयार हो जाओ। अबू तालिब ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को सझाने की कोशिश की कि तुम बुतों को बुरा कहना छोड़ दो तो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उनकी इस बात को मानने से इंकार कर दिया और दो टूक अल्फ़ाज़ में कहा कि अगर तुम मेरी इस दावते हक़ पर मेरा साथ छोड़ना चाहते हो तो छोड़ दो।

कुरैश ने अहद बाधा कि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और उसका साथ देने वालों से मुकम्मल बायकाट कर दिया जाये उनसे बोल चाल ख़रीद व फ़रोख़्त हर क़िस्म के ताल्लुक़ात ख़त्म कर लिये जायें तीन साल तक यह सिलसिला जारी रहा आख़िरकार उनके दिलों में कुछ नर्मी रब तआला ने पैदा कर दी। वह इस अहद को ख़त्म करना चाहते थे वह अहद नामा काबा शरीफ़ की एक दीवार पर लटकाया हुआ था जब उन्होंने अहद नामा खोल कर देखने का इरादा किया तो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इससे पहले ही बता दिया कि अहद नामा को चाटने के लिए रब तआला ने दीमक को मुक़र्रर कर दिया है इसने सिवाए रब तआला और उसके रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के नामों के तमाम अहद नामा को चाट लिया है जब अहद नामा खोल कर देखा तो ऐसा ही हो चुका था।

अबू तालिक की वफ़ात:

नबुव्वत के दसवें साल अबू तालिब फ़ौत हो गये उस वक़्त अबू तालिब की उमर ८७ साल थी और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की उम्र ४६ साल ८ महीने और ११ दिन थी।

हज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहु अन्हा की वफ़ात:

अबू तालिब की वफ़ात के तीन या पांच दिन के बाद हज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहु अन्हा ने वफ़ात पाई वह हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास २५ साल रहीं हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उनकी वफ़ात (के साल) को आमुल हिज़्न कहते हैं यानी ग़म का साल और घर से बाहर बहुत कम निकलते लेकिन कुफ़्फ़ार ने बहुत ज़्यादा जुल्म व जफ़ा की बुनियाद रख दी।

ताईफ़ में तबलीग़:

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया बिला शुबह मुझे इन लोगों की तरफ़ से कसीर मसाइब व आलाम का सामना करना पड़ा लेकिन सबसे बड़ा रंज मुझे उस वक़्त हासिल हुआ जब कि मैंने ताइफ़ के सफ़र में ताइफ़ के सरदारों में से अब्द या लैल बिन कलाम को अपना मनसबे जलील बताकर दावते इस्लाम दी लेकिन उसने इंकार कर दिया बल्कि यह भी ख़्याल रहे कि उन लोगों ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर शदीद पथराव करके आपको ज़ख़्मी कर दिया था।

जिन्नात की बैयत :

जब आप ताइफ़ से वापस लौटे तो रास्ते में मक्का से एक मंज़िल की मसाफ़त पर वादी नख़ला में पहुंचे तो आपने एक रात क़याम फ़रमाया जब आपने नमाज़ में कुरआन पाक की तिलावत की तो सात या नौ जिन्नों ने आपकी तिलावत को सुना। आयत का इसी तरफ़ इशारा है नमाज़ से फ़ारिग़ होने

पर वह जिन्न हाज़िर हुए और ईमान क़बूल किया और उन्होंने वापस जाकर अपनी क़ौम के जिन्नों को दावते ईमान दी और कहां।

ऐ हमारी क़ौम! हमने एक किताब सुनी कि मूसा के बाद उतारी गयी अगली किताबों की तस्दीक़ फ़रमाती हक़ और सीधी राह दिखाती।

मदीना मुनव्वरा से अंसार की आमदः

नबुव्वत के ग्यारहवें साल हज के ज़माने में मिना में उक़बा के क़रीब हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तशरीफ़ फ़रमा थ कि मदीना मुनव्वरा के क़रीब खज़रज का एक गरोह जो छः आदमियों पर मुश्तमिल था हाज़िर हुआ और आपने उन्हें बताया कि मैं अल्लाह तआला का नबी हूं। वह लोग पहले भी यहूद के उलेमा से नबी आख़िरुज़्ज़मा के औसाफ़ सुनते थे इसलिए उन्होंने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के इरशाद को सुनते ही इस्लाम क़बूल कर लिया इसी को बैयते उक़बा ऊला कहा जाता है।

मेराज और नमाज़ः

हिजरत से एक साल पहले यानी नबुव्वत के बारहवें साल आपको मेराज का शर्फ़ हासिल हुआ। मक्का मोअज़्ज़मा से बैतुल मुक़द्दस तशरीफ़ ले गये वहां अंबियाए किराम की इमामत फ़रमाई फिर आसमानों और जन्नत की सैर की दौज़ख़ को देखा रब तआला से कलाम किया पांच नमाज़ें फ़र्ज़ हुई।

ख़्याल रहे कि इब्तेदा वही में ही दिन के अव्वल और आख़िर में नमाज़ फ़र्ज़ कर दी गई थी लेकिन पांच नमाज़ें मेराज की रात को फ़र्ज़ हुई।

दूसरे साल मदीना से और हज़रात का आनाः

जब छः हज़रात ईमान क़बूल करके मदीना तैयबा पहुंचे तो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का मदीना तैयबा में ख़ूब चर्चा हुआ। दूसरे साल हज के मौक़े पर इन छः हज़रात के साथ बारह हज़रात और भी आये और मिना में ही उक़बा के पास आपकी ख़िदमत में हाज़िर होकर ईमान क़बूल किया यह बैयते उक़बा सानिया से मशहूर है।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को मदीना की दावत और आपका जवाबः

अंसारे मदीना ने वापसी पर आपकी ख़िदमत में अर्ज़ किया कि आप हमारे साथ चलें और हमारे शहरों को अपने मुबारक क़दमों से सरफ़राज़ फ़रमायें और हम आपके हर हुक्म की तामील करेंगे आपने फ़रमाया मुझे अभी मक्का से निकलने का हुक्म नहीं दिया गया और न ही मेरी हिजरत का कोई मक़ाम अभी मुतअय्यन किया गया रब तआला का जो हुक्म होगा उस पर ही अमल होगा।

सहाबा किराम की मदीना तैयबा की तरफ़ हिजरतः

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया मुझे दिखाया गया है कि तुम्हारा मक़ामे हिजरत दो पहाड़ों के दर्मियान नख़लिस्तान यानी मदीना मुनव्वरा है आपको अभी तक हुक्म नहीं हुआ था। लेकिन बाज़ सहाबा किराम को आपने मदीना तैयबा की तरफ़ हिजरत की इजाज़त दे दी, हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु अपने भाई ज़ैद बिन ख़त्ताब के साथ और अयाश बिन रबीया बीस अकाबिर सहाबा के साथ हमज़ा बिन अब्दुल मुत्तलिब, अब्दुर्रहमान बिन औफ़, तलहा बिन उबैदुल्लाह, उस्मान बिन हारसा, अम्मार बिन यासर, अब्दुल्लाह बिन मसऊद और बिलाल वग़ैरह ने हिजरत फ़रमा ली बाक़ी हज़रात ने हिजरत पोशीदा तौर पर की, लेकिन हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने अलल ऐलान हिजरत की।

अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु को इंतेज़ार करने का हुक्म

हज़रत सय्यदना अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु ने भी इरादा किया कि आपके साथ हिजरत करके मदीना तैयबा हिजरत कर जायें हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया ठहरो मुझे भी उम्मीद है कि अल्लाह तआला मुझे हिजरत की इजाज़त फ़रमायेगा तो तुम मेरे साथ होगा।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के मुताल्लिक़ कुफ़्फ़ार का मशवरा

जब सारा इस्लाम फैलता देखा मदीना तैयबा हिजरत कर गये तो कुफ़्फ़ार ने मशवरा किया कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम भी तशरीफ़ ले जायेंगे इसके जाने से पहले हमें (मआज़अल्लाह) किसी तरह न ख़त्म कर दिया जाये जब पता चला तौर अबू जहल का मशवरा था, "दारुन्नदवा की मजलिस में तमाम मुशरिकीन और इब्लीस भी आया था किसी ने मशवरा दिया हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को मकान में ज़ंजीरों से जकड़ कर बन्द किया जाये किसी ने कहा आपको क़ैद कर दिया जाये, किसी ने कहा आपको जलावतन करके बाहर किया जाये किसी ने कहा आप का मआज़अल्लाह क़त्ल किया जाये कोई कहता आपको शहर से बाहर कर दिया जाये सब पर इब्लीस "शैख़ नज्दी" ने रद्द कर दिये अबू जहल ने यह मशवरा दिया कि हर क़बीले से एक जवान लिया जाये और सब एक साथ मिलकर हमला करें और मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को क़त्ल कर दें तो बनी हाशिम इन मुख़्तलिफ़ क़बीलों से क़िसास न ले सकेंगे और दियत पर राज़ी हो जायेंगे। शैख़ नज्दी (इब्लीस लईन) ने इस राय पसन्द की और इसी पर सब मुत्तफ़िक़ हो गये।

सैयदुल औलिया की हिफ़ाज़त, कुफ़्फ़ार की ज़िल्लत:

जब कुफ़्फ़ार ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को शहीद करने की ग़र्ज़ से तलवारें लेकर आपके घर का मुहासिरा कर लिया तब हुज़ूर को हिजरत करने का हुक्म दिया गया ताकि कुफ़्फ़ार यह न कह सकें कि अगर हमें पता चलता कि वह जा रहे हैं तो हम उन्हें क़त्ल कर देते बल्कि जब तलवारें लेकर आपके घर का मुहासिरा किये हुए थे आप सूरः यासीन की तिलावत करते हुए घर से बाहर तशरीफ़ ले आये मिट्टी की एक मुट्ठी लेकर कुफ़्फ़ार की तरफ़ फेंकी तब आपको निकलते हुए न देख सके।

अबू नईम की रिवायत में है जिसे हाकिम ने सहीह क़रार दिया कि जिस जिस काफ़िर के सर पर ख़ाक पड़ी थी वह सब बद्र के दिन हलाक हो गये थे।

शाने सिद्दीक़ व हैदर रज़ियल्लाहु अन्हुमा:

जब हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हिजरत करने का इरादा फ़रमाया तो हज़रत अली मुर्तज़ा रज़ियल्लाहु अन्हु को अपने बिस्तर पर लेटने का हुक्म दिया कि तुम लोगों की अमानतें लौटाकर आ जाना चूँकि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास कुफ़्फ़ार भी अमानतें रखा करते थे और आप को सादिक़ व अमीन के लक़ब से याद करते थे। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु को फ़रमाया ऐ अली दिल को मज़बूत रखना यह कुफ़्फ़ार तुम्हें कुछ तकलीफ़ नहीं पहुँचा सकेंगे।

हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु को हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपने साथ लिया और सफ़रे हिजरत का आग़ाज़ फ़रमा लिया।

हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु की ख़ुसूसियात यह है कि बिला ख़ौफ़ अपनी जान को क़ुर्बान किया

और फ़िदया बनाया और हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु की शुजाअत व जुर्रत यह है कि हुज़ूर के रफ़ीक़े सफ़र बन कर ख़ुद को मुहलिका अज़ीमा में डाल दिया क्योंकि उस वक़्त हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ सफ़र में शरीक सिर्फ़ अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु थे और कुफ़्फ़ार दुश्मन भी हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के ही थे।

हज़रत सिद्दीक़ अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु की इम्तेहान में कामयाबीः

जब नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु जा रहे थे तो किसी शख़्स ने हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु को पहचाना और पूछा कि तुम्हारे साथ कौन है? यह अजीब इम्तेहान था कि अगर आप सहीह बताते तो कुफ़्फ़ार हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को तकलीफ़ पहुंचायेंगे अगर झूठ बोलते हैं तो आपकी शान के लायक़ नहीं। आपने शानदार हकीमाना जवाब दिया कि मेरे साथ हादी हैं सुनने वाले हक़ीक़त को न समझ सका उसने समझा कि आप कहीं सफ़र पर जा रहे हैं तो किसी शख़्स को आपने साथ लिया हुआ है जो राह को जानता है उस वक़्त अहले अरब का यही दस्तूर था।

सुराक़ा का ज़मीन में धंस जानाः

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को सुराक़ा नामी शख़्स ने पहचान लिया उसने इरादा किया कि दूसरे काफ़िरों को बताये तो वह ज़मीन में धंस गया। फिर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से कहा कि आप मेरे लिए दुआ करें कि मैं ज़मीन से निकल जाऊं तो किसी को नहीं बताऊंगा इसी तरह वह हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की दुआ से ज़मीन से निकला।

हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु का जज़्बए मुहब्बतः

रास्ते में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पांव मुबारक सफ़री मुश्किलात की वजह से ज़ख़्मी हो गये तो हज़रत सिद्दीक़ अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु ने आपको कंधे पर उठा लिया और ग़ारे सूर के दहाने पर ले आये।

ग़ारे सूर में हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु पहले ख़ुद दाख़िल हुए ताकि ग़ार में कोई मूज़ी जानवर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को तकलीफ़ न पहुंचाये आपने ग़ार के अंदर तमाम सुराख़ अपनी ओढ़ने वाली चादर के टुकड़े करके बंद कर दिये एक सुराख़ बाक़ी रह गया लेकिन कपड़ा बाक़ी न था उसमें आपने अपनी ऐड़ी रखी और हुज़ूर को अंदर तशरीफ़ लाने के मुताल्लिक़ अर्ज़ किया हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अंदर तशरीफ़ ले गये अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु के ज़ानू (या रान) पर सर रखकर आराम फ़रमा हो गये लेकिन अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु को उस सुराख़ के अंदर मौजूद सांप ने डंस लिया आपको तकलीफ़ हुई आंसू बिला इख़्तेयार जारी हो गये हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के चेहरे पर पड़े, आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम बेदार हुए आपने वजह पूछी हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु ने बताया हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने लुआब दहन लगाया सिद्दीक़ अकबर ठीक हो गये।

कुदरते बारी तआलाः

जब हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ग़ारे सूर में दाख़िल हुए तो अल्लाह तआला ने बबूल का एक दरख़्त ग़ारे सूर के दहाने पर लगाया और एक जंगली कबूतर के जोड़े को भेजा कि वह अपना

आशियाना उस दरख़्त पर बनाये और उसी रात उसने अंडे दे दिये और मकड़ी को हुक्म फ़रमाया कि वह अपना जाला तने। हरम मक्का में रहने वाले कबूतर उसी जोड़े की नस्ल से हैं क्योंकि हुजूर की ख़िदमत गुज़ारी और आपकी दुआए बर्कत से वह क़यामत तक शिकार और हलाक होने से महफ़ूज़ रहेंगे।

ग़ारे सूर पर कुफ़्फ़ार की आमद और मायूसीः

कुफ़्फ़ार हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को तलाश करते करते ग़ारे सूर के दहाने पर पहुंच गये। अगर वह नीचे अपने पांव की जानिब ही देख लेते तो हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को देख लेते लेकिन वह ग़ार को देखकर लौट आये और कहने लगे कि अगर मुहम्मद इसमें दाख़िल होते तो कबूतर के अंडे टूट जाते और मकड़ी का जाला दरहम बरहम हो जाता और यह दरख़्त इस जगह उनकी मुद्दते उम्र से पहले का उगा हुआ है।

कलामुल मलूक मलूकुल कलामः

जब कुफ़्फ़ार ग़ारे सूर पर पहुंचे तो हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु ने अर्ज़ किया कि या रसूलल्लाह कुफ़्फ़ार ने हमारा खोज लगा लिया है अगर वह अपने पांव की तरफ़ हमें देखते हैं तो हमें देख लेंगे तो हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया ग़म न करो बेशक अल्लाह हमारे साथ है। मूसा अलैहिस्सलाम की क़ौम ने जब फ़िरऔनियों को देखा तो कहने लगे हम तो पा लिये गये यानी अब तो वह हमें पकड़ लेंगे तो उनके जवाब में मूसा अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया ऐसा हरगिज़ नहीं होगा बेशक मेरे साथ मेरा रब है जो मुझे हिदायत देगा।

सैयदुल अंबिया अलैहिस्सलाम और मूसा अलैहिस्सलाम के कलाम में फ़र्क़ः

मूसा अलैहिस्सलाम ने अपना ज़िक्र पहले किया और रब तआला का बाद में और नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने रब का ज़िक्र पहले किया और अपना बाद में। मूसा अलैहिस्सलाम ने सिर्फ़ अपना ज़िक्र किया कि मेरे साथ मेरा रब है लेकिन हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज़रत सिद्दीक़ अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु को भी अपने साथ मिलाया और फ़रमाया बेशक अल्लाह तआला हमारे साथ है।

गोया कि मूसा अलैहिस्सलाम ने अपनी क़ौम को इस क़ाबिल नहीं समझा कि जो मुझे रब की मअईयत हासिल है वह मेरी क़ौम को भी हासिल है लेकिन नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु को अपने साथ मिलाकर कहा बेशक अल्लाह तआला हमारे साथ है।

नुक्ता :नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु को कहा कुछ ग़म न करो इससे यह मक़सद वाज़ेह हो रहा है कि हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को मालूम था कि अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु को अपनी जान का ख़तरा नहीं बल्कि इन्हें मेरी फ़िक्र लाहक़ है अगर अबू बकर ख़ुद डरते और इन्हें अपनी जान की फ़िक्र होती तो हुजूर फ़रमाते डरो नहीं।

अल्लामा बैज़ावी पहले पारा की तफ़सीर में लिखते हैं:

इन पर कोई ख़ौफ़ नहीं कि इन पर कोई नापसंदीदा चीज़ का वक़ूअ हो और न ही इनसे कोई महबूब चीज़ फ़ौत हो गई कि इन्हें इस पर कोई ग़म लाहक़ हो।

वाज़ेह हुआ कि हिज़्न का ताल्लुक़ महबूब चीज़ पर कोई ख़तरा लाहक़ होने की वजह से ग़म के आने से है यह भी ख़्याल रहे कि मूसा अलैहिस्सलाम की कौम ने अपनी फ़िक्र की थी और हज़रत सिद्दीक़ अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु ने नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की। वाज़ेह हुआ कि जिस तरह नबी करम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम सैयदुल अंबिया हैं ऐसे ही हज़रत अबू बकर सैयदुल उमम हैं।

ग़ारे सूर से मदीना तैयबा की तरफ़ कूच फ़रमानाः

ग़ारे सूर में तीन रात क़याम करने के बाद आप मदीना तैयबा की तरफ़ रवाना हुए अब्दुल्लाह बिन अरीक़ज़ से पहले तै किया हुआ था उसने उजरत पर दो ऊंट लाया एक पर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम सवार हुए और अपने साथ पीछे अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु को सवार किया और दूसरे पर आपका गुलाम आमिर बिन फ़हीरा सवार हो गये उनके साथ ऊंटों का मालिक अब्दुल्लाह भी सवार हो गया।

रास्ते में एक चरवाहे ने आपको बकरियों का दूध पेश किया अगरचे वह गुलाम था लेकिन उस वक़्त के रिवाज के मुताबिक़ गुलामों को इजाज़त होती थी कि राहगीर को दूध पिला दिया करें।

दौराने सफ़र आपका मक़ाम कदीद में उम्मे मअबद के ख़ेमे के क़रीब से गुज़र हुआ उम्मे मअबद हालांकि मुसाफ़िरों की मेहमान नवाज़ी में मशहूर थी लेकिन उस वक़्त उसके पास कोई चीज़ पेश करने को न थी।

उसके ख़ेमे में एक बकरी निहायत लाग़र, कमज़ोर थी जो क़मज़ोरी की वजह से रेवड़ के साथ न जा सकी थी हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि अगर तुम्हारी इजाज़त हो तो हम इसका दूध दूह लें उसने कहा मेरी तरफ़ से तो इजाज़त है लेकिन इसके दूध का तो तसव्वुर भी नहीं किया जा सकता है।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने बकरी पर हाथ फेरा बिस्मिल्लाह शरीफ़ पढ़कर दुआ की (ऐ अल्लाह इस बकरी को बर्कत अता फ़रमा) तो बकरी के थन दूध से भर गये हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने बकरी का दूध दूहा तो सब ख़ेमा वालों ने और आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथियों ने सैर होकर दूध पिया और ख़ेमा में मौजूद तमाम बर्तन दूध से भर गये।

उम्मे मअबद के ख़ाविंद को जब हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के इस मोजिज़ा की इत्तेला हुई तो उसने कहा कि मुझे उम्मीद है मैं इनका साथी बनूंगा इस तरह कुछ देर के बाद इन दोनों खाविंद और बीवी ने इस्लाम क़बूल किया।

मदीना मुनव्वरा आमदः

पीर के दिन रबीउल अव्वल में आप मदीना तैयबा में पहुंचे आप की आमद की ख़बर सुनकर लोग आप को बुलंद जगह से देखते रहते थे कि आप कब पहुंचेंगे।

बनू नजार की लड़कियां हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की आमद पर ख़ुशी से दफ़ बजाती हुई यह शेअर पढ़ रही थीं।

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की आमद पर मैं आठ नौ साल का था। मुझे ख़ूब मालूम है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के आने पर मदीना

तैयबा की दरो दीवार ऐसे रौशन हो गये थे जैसे सूरज के तुलू होने पर रौशनी होती है।

क़याम के लिए अंसार की ख़्वाहिश और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का इरशादः

अंसार में से हर शख़्स की तमन्ना थी कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मेरे घर क़याम फ़रमायें हर एक यही अर्ज़ कर रहा था लेकिन हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि मेरी ऊंटनी अल्लाह तआला की तरफ़ से मामूर (इसे हुक्म दिया गया है) है वह जहां ख़ुद बैठ जायेगी वही मक़ाम मेरे क़याम का होगा। ऊंटनी (जहां मस्जिद नबवी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम है) वहां हज़रत अय्यूब अंसारी रज़ियल्लाहु अन्हु के घर के सामने खुद ही बैठ गई।

हज़रत अय्यूब अंसारी रज़ियल्लाहु अन्हु के घर क़यामः

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने ऊंटनी के बैठने पर हज़रत अय्यूब अंसारी रज़ियल्लाहु अन्हु के घर क़याम फ़रमाया। पहले आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उनके घर के नीचे हिस्से (घर दो मंज़िला था) में क़याम किया, लेकिन एक रात हज़रत अय्यूब रज़ियल्लाहु अन्हु को ख़्याल आया कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम नीचे और मैं ऊपर रहूं। यह अदब के ख़िलाफ़ है तमाम रात एक कोना में गुज़ार दी। सुबह अर्ज़ किया कि आप ऊपर तशरीफ़ ले जायें। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि मैं नीचे बेहतर हूं कि लोगों को मिलने में आसानी है। लेकिन हज़रत अय्यूब रज़ियल्लाहु अन्हु ने बार बार जब अर्ज़ किया कि मैं यह बर्दाश्त नहीं कर सकता कि आप नीचे रहें तो उनकी तमन्ना पर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ऊपर वाले हिस्से में तशरीफ़ ले गये।

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की अलालत और विसाल

विसाल की ख़बरः

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने जो आख़री हज फ़रमाया उसमें फ़रमा दिया था कि शायद आइंदा साल में तुम लोगों में न रहूं। इसी लिए इस को हुज्जतुल विदाअ कहा गया है।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया अल्लाह तआला ने अपने बंदों में से एक को इख़्तेयार दिया है कि वह दुनिया में रहना चाहे तो रहे और अगर अपने रब तआला से मिलना चाहे तो रब से मिले। अल्लाह तआला के बंदे ने रब तआला को मिलना पसंद कर लिया है। यह इशारा भी अपने विसाल की तरफ़ था इसलिए हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु ने इस इशारा को वाज़ेह तौर पर समझते हुए रोना शुरू कर दिया था और कह रहे थे कि मेरे मां बाप आप पर कुर्बान।

हुज्जतुल विदाअ में मिना के दिनों में सूरः "इज़ा जा नस्रुल्लाहि" नाज़िल हुई तो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने जिब्राईल अलैहिस्सलाम से फ़रमाया कि तुम मुझे ख़बर दे रहे हो कि मुझे इस जहान से जाना चाहिये जिब्राईल अलैहिस्सलाम ने अर्ज़ किया ग़म न कीजिये।

यक़ीनन आप के लिए आख़री (वक़्त) पहले से बेहतर है।

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम इस सूरः के नाज़िल होने के बाद अक्सर तौर पर पढ़ते थे।

सहाबा किराम ने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम क्या वजह है कि यह कलिमाते मुबारका आपकी ज़बाने अक़दस पर बहुत जारी रहते हैं।

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया जान लो मुझे आलमे बक़ा की तरफ़ बुलाया गया है और तस्बीह और इस्तिगफ़ार का हुक्म दिया गया है।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपनी वफ़ात से एक महीना पहले हमें अपने विसाल की ख़बर दे दी थीं।

हिजरत के ग्यारहवें साल के माह सफ़र में नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम बकीअ क़ब्रस्तान वालों के लिए इस्तिगफ़ार फ़रमाने के लिए तशरीफ़ ले गये इसी तरह शोहदा के लिए भी इस्तिग़फ़ार की और उनकी क़ुबूर की ज़ियारत की इसमें हिकमत यही थी कि आप दुनिया में रहकर जो उनकी ज़ियारत करते थे उसे अलविदाअ फ़रमा रहे थे और बरज़ख़ी ताल्लुक़ की ख़बर दे रहे थे कि अब मेरा तुम्हारा साथ बाद अज़ विसाल ताल्लुक़ क़ायम होगा।

हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम बक़ीअ से वापस तशरीफ़ लाए तो मेरे सर को दर्द लाहक़ था मैंने अपने सर दर्द की शिकायत आपसे की। आपने बतौर मज़ाह फ़रमाया कि ऐ आयशा क्या यह अच्छा नहीं कि तुम्हारी मौत आ जाये तो मैं ख़ुद तुम्हारी तजहीज़ व तकफ़ीन के इंतज़ामात करूं और तुम पर नमाज़ पढ़ू दफ़न करूं और तुम्हारे लिए दुआए इस्तिग़फ़ार करूं। हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा ने भी बतौर मज़ाह कहा हां आप चाहते हैं कि मैं फ़ौत हो जाऊं और आप मेरी जगह किसी और औरत को ज़ौजा बनाकर ले आयें।

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इसके बाद हक़ीक़ते हाल की तरफ़ इशारा फ़रमाया कि ऐ आयशा तुम्हारे सर को जो दर्द लाहक़ है वह तो ठीक हो जायेगा लेकिन मेरे सर का दर्द ठीक होने वाला नहीं। गोया इस तरफ़ इशारा था कि मैं इस मर्ज़ में दुनिया से रुख़सत हो जाऊंगा।

मर्ज़ की इब्तेदाः

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के मर्ज़ की इब्तेदा हज़रत मैमूना रज़ियल्लाहु अन्हा के घर उनकी बारी के दिन में हुई थी मर्ज़ में भी आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अपनी अज़वाजे मुतहहरात की बारियों को ख़्याल फ़रमाते रहे लेकिन जब बीमारी शदीद हो गई तो आपने फ़रमाया आज मैं कहा हूंगा कल कहां, इशारा था कि अब इस हाल में मुझे एक जगह रहना चाहिये।

हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा ने भी अज़वाजे मुतहहरात से फ़रमाया कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम यह शाक़ होगा कि आप हर एक घर का दौरा फ़रमायें इस पर तमाम अज़वाजे मुतहहरात ने बख़ुशी इजाज़त दे दी कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा के घर इक़ामत फ़रमायें और हम वहां आपकी तीमारदारी करेंगे।

शिद्दत मर्ज़ः

मर्ज़ की शिद्दत भी हज़रत मैमूना रज़ियल्लाहु अन्हा की बारी में ही हुई और आप दो आदमियों के कंधे पर हाथ रखकर इस तरह तशरीफ़ ला रहे थे कि आप के क़दम मुबारक ज़मीन पर ख़त खींच रहे थे।

आपके मर्ज़ में शिद्दत यहां तक आ गई कि आप अपने बिस्तरे मुबारक पर एक पहलू से दूसरे पहलू पर बार बार मुज़तरिबाना तौर पर करवट बदलते। हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा ने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अगर ऐसी हालत में हम में से कोई और रूनुमा होती तो

आप बुरा महसूस फ़रमाते और गुस्सा में आ जाते। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया। ऐ आयशा मैं इंतेहाई सख़्त मर्ज़ में मुब्तला हूं और फ़रमाया कि अल्लाह तआला अंबियाए पर इब्तेला इंतेहाई सख़्त व शदीद भेजता है कोई मुसीबत व ईज़ा पहुंचे यहां तक कि पांव में कांटा चुभे तो अल्लाह तआला इसके सबब इसके दर्जात बुलंद फ़रमाता है उसके गुनाहों को माफ़ फ़रमा देता है।

और फ़रमाया रुए ज़मीन पर कोई ऐसा नहीं जिसे मर्ज़ वग़ैरह की तकलीफ़ न पहुंचे मगर यह कि वह उसके गुनाहों को ऐसा झाड़ दे जैसे ख़िज़ां के मौसम में पत्ते झड़ते हैं।

हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि मैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुआ। तो मैंने आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के ऊपर ओढ़ी हुई चादर के ऊपर से भी बुख़ार की शदीद हरारत को पाया। और मैं बर्दाश्त नहीं कर सकता था कि आपके बदन को हाथ लगाऊं क्योंकि आप शदीद बुख़ार में मुब्तला थे।

ख़्याल रहे कि बला में तवालत और इम्तिहान व आज़माईश में मुब्तला होना बारगाहे इलाही के मुक़र्रब बंदों के साथ ख़ास है अल्लाह तआला के मुक़र्रब बंदों में से जब अज़ीम अंबियाए किराम हैं और सब अंबियाए किराम से अज़ीम मर्तबा रखने वाले हमारे नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हैं तो आज़माईश भी सबसे ज़्यादा ही होनी थी।

अंबियाए किराम को मौत व ज़िन्दगी का इख़्तेयार दिया गया था:

अंबियाए किराम को अल्लाह तआला की तरफ़ से ज़िन्दा रहने या दुनिया से रुख़सत होने का इख़्तेयार दिया गया था चाहें तो दुनिया को पसंद करें चाहें तो रब तआला के हुजूर जाने को पसंद कर लें। अंबियाए किराम ने रब की मुलाक़ात और इसके दरबार में हाज़िरी को तरजीह दी।

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का रब तआला से मिलने की दुआ करना:

एक रिवायत में है कि जब भी नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम बीमार हुए तो अपने लिए इन कलिमात से ही अपने आप पर भी दम फ़रमाया और अपना हाथ मुबारक तमाम बदन पर फेरा। और जब नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम इस मर्ज़ में मुब्तला हुए जिसके बाद आपका विसाल हो गया तो हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं कि मैंने चाहा कि आप पर यही दुआ पढ़ूं और आपके जिस्मे अक़दस पर हाथ फेरूं लेकिन नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मुझसे अपना हाथ खींच लिया और यह दुआ पढ़ने लगे।

ऐ रब अपनी रहमत में लेकर मुझे रफ़ीक़े आला से मिला दे यानी ऐ अल्लाह मुझे अपने पास बुला ले। आपको इख़्तेयार तो दिया गया था कि आप दुनिया में रहना चाहते हैं या कि रब तआला से मिलना चाहते हैं आपने रब तआला से मिलना पसंद फ़रमाया।

हदीसे सहीह में आया है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि जिब्राईल अलैहिस्सलाम इस मर्ज़ के ज़माने में अल्लाह तआला की तरफ़ से आए और पैग़ाम पहुंचाया कि मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) अल्लाह तआला आप पर सलाम भेजता है और फ़रमाता है कि आपको इस मर्ज़ में वफ़ात दे दूं और मुस्तग़रक़ दरियाए रहमत फ़रमा दूं? (तो आपकी क्या राय है?) तो मैंने यही चाहा कि रफ़ीक़े आला से मिलूं और उनमें हो जाऊं जिनके लिए अल्लाह तआला ने फ़रमाया है।

जिन पर अल्लाह ने फ़ज़्ल किया यानी अम्बिया और सिद्दीक़ और शहीद और नेक लोग यह क्या ही अच्छे साथी हैं।

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के मर्ज़ का इब्तेदाई वक़्तः

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की अलालत इब्तेदाए सफ़र के आख़िर में हुई जब कि सफ़र की दो रातें बाक़ी थीं वह बुध चिहार शंबा का दिन था लेकिन यह मर्ज़ की शिद्दत है मामूली मरीज़ पहले से थे जैसा कि बक़ीअ से वापसी पर हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा को फ़रमाय कि मेरा दर्द सर ख़त्म नहीं होगा। मर्ज़ की इब्तेदा हज़रत मैमूना रज़ियल्लाहु अन्हा के घर से हुई लेकिन आप फिर भी अज़वाजे मुतह्हरात की बारियों का लिहाज़ करते रहे। फिर मर्ज़ की शिद्दत भी हज़रत मैमूना रज़ियल्लाहु अन्हा के घर से हुई।

हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु को इमामत का हुक्म फ़रमानाः

हज़रत बिलाल रज़ियल्लाहु अन्हु ने नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के ज़मानए अलालत में नमाज़ के लिए अज़ान दी तो नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज़रत अब्दुल्लाह बिन रबीया से फ़रमाया। बाहर जाओ और अबू बक्र को कहो कि लोगों को नमाज़ पढ़ायें अब्दुल्लाह बिन रबीया बाहर आये तो उन्हें हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु के बग़ैर कोई आदमी न मिला उन्होंने उनसे ही कहा कि आप नमाज़ पढ़ायें हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने नमाज़ शुरू कराई आप चूंकि बुलंद आवाज़ वाले थे नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया क्या यह उमर नमाज़ पढ़ा रहे हैं तो बताया गया कि हां वहीं हैं तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि अल्लाह तआला मना फ़रमाता है बल्कि अबू बक्र को कहो कि नमाज़ पढ़ायें।

मख़्फ़ी नहीं रहना चाहिये कि हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु को इमामत के लिए ख़ास फ़रमाने और उसमें मुबालग़ा व इसरार फ़रमाने में अहले सुन्नत व जमाअत के लिये आपकी तक़दीमे ख़िलाफ़त पर वाज़ेह दलील है बावजूदे कि सहाबा किराम और हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु भी मौजूद थे मगर उनको ख़ास किया और आगे बढ़ाया इसी वजह से हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु से कहा।

अल्लाह तआला के रसूल ने आपको आगे बढ़ाया है तो कौन है जो आप को मुअख़्ख़र करे।

असदुल ग़ाबा में बरिवायत हसन बसरी हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु से मरवी है कि उन्होंने फ़रमाया अल्लाह तआलाा के रसूल ने हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु को मुक़द्दम किया और उन्होंने लोगों को नमाज़ पढ़ाई मैं मौजूद था ग़ायब न था, तंदरुस्त था बीमार न था, अगर आप चाहते तो मुझे आगे कर सकते थे इसी वजह से हम अपनी दुनिया के लिए (ख़िलाफ़त के लिए) उस शख़्स पर राज़ी हो गये जिस पर अल्लाह तआला और उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हमारे दीन के लिए राज़ी हुए।

क़ब्र के सामने सज्दा करने की मुमानेअत :

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने वफ़ात से पांच दिन पहले फ़रमाया जान लो और आगाह हो जाओ कि तुम से पहले ऐसे लोग गुज़रे हैं जिन्होंने अंबिया व सुलहा की क़ब्रों को मसाजिद यानी सज्दा गाह बना लिया था तुम्हें लाज़िम है कि ऐसा न करना। एक रिवायत में आया है कि आप ने फ़रमाया।

अल्लाह तआला की लानत हो यहूद व नसारा पर कि उन्होंने अपने अंबिया किराम की कुबूर को सज्दागाह बना लिया। एक रिवायत में आया है कि आपने फ़रमाया ऐ अल्लाह मेरी क़ब्र को मेरे बाद बुत न बनाना खुदा का ग़ज़ब और उसका क़हर उन लोगों पर ज़्यादा है जिन्होंने अपने नबियों की क़ब्रों को सज्दागाह बना लिया, बिला शुब्ह ऐ मुसलमानों मैं तुम्हें इस से मना करता हूं और फ़रमाया।

ख़बरदार मैंने तुम्हें ख़बरदार कर दिया ऐ अल्लाह गवाह रह, ऐ अल्लाह गवाह रह।

ख़्याल रहे कि क़ब्र को सज्दा किया जाये और साहबे क़ब्र को माबूद समझा जाये तो यह शिर्क है। अगर माबूद तो अल्लाह तआला को ही माना जाये लेकिन फिर भी क़ब्र के सामने सज्दा करना हराम है अगरचे यह शिर्क नहीं।

रहलत की रात चिराग़ में तेल नहीं था:

जब दो शंबा (पीर) की शाम हुई तो हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा ने किसी अंसारी औरत के घर को चिराग़ दे कर भेजा कि अगर तुम्हारे घर तेल हो तो इसमें चंद क़तरे डाल दें नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम नज़अ के आलम में हैं यानी इस हालत में घर में चिराग़ मौजूद नहीं।

यह भी ख़्याल रहे कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास सात दीनार कहीं से आये थे जिनको आप ख़र्च नहीं कर सके थे बीमार हो गये शदीद बीमारी की हालत में हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा को फ़रमाया इन सोने के टुकड़ों को कहीं भेज दो कि वह ख़र्च हो जायें। लेकिन आपने यह इरशाद फ़रमाया कि बीमारी की और शिद्दत हो गई हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा आपकी ख़िदमत में लग गईं आप को जब होश आया तो पूछा कि वह दीनार ख़र्च हो गये।

हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा ने अर्ज़ किया अभी नहीं यही हालत और यही सवाल व जवाब तीन मर्तबा दरपेश आया इसके बाद कुछ इफ़ाक़ा हुआ तो वह हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु के पास भेज दिये गये ताकि यह मुस्तहक़ीन में ख़र्च कर दें।

सुबहानल्लाह! माल सारा अल्लाह तआला की राह में ख़र्च कर दिया और ख़ुद जब दुनिया से तशरीफ़ ले जा रहे हैं तो घर के चिराग़ में तेल नहीं।

आला हज़रत अज़ीमुल बर्कत मौलाना शाह अहमद रज़ा ख़ां बरेलवी रहमतुल्लाह अलैहि ने क्या ख़ूब फ़रमाया।

मालिके कौनैन हैं गो पास कुछ रखते नहीं।
दो जहां की नेमतें हैं उनके ख़ाली हाथ में।।

अंसार के हक़ में वसीयत:

ज़मानए अलालत में एक दिन नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को कुछ इफ़ाक़ा हुआ। बाहर तशरीफ़ लाए और जमाअत के साथ नमाज़ पढ़ी और ख़ुत्बा दिया फ़रमाया बेशक अंसार उतबा हैं यानी बुग़चे व संदूक़ की तरह हैं जिसमें क़ीमती सामान रखा जाता है।

एक रिवायत में "कुर्श व ऐबी" के अल्फ़ाज़ हैं कुर्श मेअदा को कहा जाता है। (बकसर ऐन) ज़ेवर की डिबिया को कहते हैं और क़ीमती कपड़े रखने वाले संदूक़ को भी कहते हैं मक़सदे ब्यान यह था कि यह लोग मेरे ख़ास और मेरे महल्ले असरार हैं और फ़रमाया मैंने इनकी तरफ़ हिजरत की और मुझे जगह दी और मेरे साथ मुहब्बत इख़लास और दोस्ती व मुरव्वत का बर्ताव किया और तुम्हारे (ऐ

मुहाजरीन) साथ भी इसी तरह पेश आए क़सम है उस अल्लाह अज़्ज़ व जल्ल की जिसके क़ब्ज़ए क़ुदरत में मेरी जान है मैं इनसे मुहब्बत रखता हूं।

ख़्याल रहे अंसार की मुहब्बत का भी यह आलम था कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम रोज़ बरोज़ जब ज़्यादा अलील हो रहे थे तो वह अपने घरों में सब्र व क़रार से न रह सके और हैरान व परेशान मस्जिद के घूमने लगे और कहते कि हमें अंदेशा है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम दुनिया से तशरीफ़ न ले जायें ओर हम नहीं जानते कि आपके तशरीफ़ ले जाने के बाद हमारा क्या हाल होगा?

मिस्वाक करना:

हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मेरी आग़ोश और सीना से टेक लगाये हुए थे अचानक हज़रत अब्दुर्रहमान बिन अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हुमा दाख़िल हुए इनके हाथ में सब्ज़ मिस्वाक थी तो नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपनी नज़र मिस्वाक की तरफ़ दराज़ (लंबी) फ़रमाई मैंने जान लिया कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मिस्वाक को पसंद फ़रमा रहे हैं मैंने अर्ज़ किया कि यह मिस्वाक आपके लिए ले लूं। आपने सरे मुबारक के इशारा से फ़रमाया हां ले लो। फिर मैंने नर्म करके वह मिस्वाक आपको दे दी आपने अपनी आदते करीमा से ज़ायद ही मिस्वाक फ़रमाई फिर आपने वह मिस्वाक मुझे वापस दी। आप फ़रमाती हैं कि अल्लाह तआला ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के आख़री दिन मेरे और आपके लुआब को जमा फ़रमा दिया।

नमाज़े फ़ज्र में मुलाहज़ा फ़रमाना:

जिस दिन नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने रहलत फ़रमाई उस दिन का वाक़िया यह है कि हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु से मरवी है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने दरवाज़े के पर्दे हटाकर मस्जिद में लोगों की जानिब नज़र मुबारक डाली और मुलाहज़ा फ़रमाया कि फ़ज्र की नमाज़ है और हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु नमाज़ पढ़ा रहे हैं फिर दरवाज़े पर इस तरह खड़े हुए कि आपकी नज़र मुबारक उनकी तरफ़ जमी रही गोया कि आप का रुए अनवर क़ुरआन पाक का वर्क़ है।

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु ने नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के चेहरा मुबारक को क़ुरआन पाक के औराक़ से तश्बीह दी यह कितनी हसीन तश्बीह है। इसके बाद नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने तबस्सुम फ़रमाया जब हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम खड़े हुए थे तो सहाबा किराम ने ख़्याल किया कि शायद हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम बाहर तशरीफ़ ला रहे हैं इस पर वह सब बहुत ख़ुश हुए और उन्होंने चाहा कि आप नमाज़ के लिए तशरीफ़ ले आयें।

शायर ने क्या ख़ूब कहा है।

नमाज़ को हम छोड़ रहे हैं और तुझे सलाम कर रहे हैं।

हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु ने चाहा कि अपनी जगह से पीछे आ जायें मगर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सहाबा किराम की तरफ़ इशारा किया कि अपनी जगह पर रहें और अपनी नमाज़ पूरी करें फिर दरवाज़े का पर्दा छोड़ दिया और उसी दिन रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम

का विसाल हो गया गोया कि आप के याराने मुहब्बत का यह आख़री अल–विदाई सलाम था और अपने दीदार से सहाबा को मुशर्रफ़ करना था।

ख़्याल रहे कि सब सहाबा किराम नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को देख रहे थे उल्टे हाथों पर हाथ मारकर खुशी का इज़हार कर रहे थे तमाम सबाहा का रुख़ क़िब्ला से फिर गया था मदीना तैयबा में क़िब्ला जुनूबी जानिब है और नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का हुजरा मश्रक़ी जानिब है बावजूद इसके कि सहाबा किराम ने अपने मुंह क़िब्ला से फेर कर नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की तरफ़ कर लिये थे लेकिन किसी की नमाज़ नहीं टूटी बल्कि नमाज़ को वहीं से जारी रखा गया था हालांकि क़िब्ला की तरफ़ से मुंह फेर लेने से नमाज़ फ़ासिद हो जाती है जब सीना भी फिर जाये सहाबा को यह कैफ़ियत हासिल हो चुकी थी हाथों पर हाथ मारने का अमल कसीर भी हो रहा था लेकिन कोई आरिज़ा भी नमाज़ को फ़ासिद न कर सका क्योंकि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की अज़मत का पास करना रूहे नमाज़ है।

आला हज़रत मौलाना अहमद रज़ा रहमतुल्लाह अलैहि ने क्या ख़ूब फ़रमाया:

हाजियो आओ शहंशाह का रौज़ा देखो।
काबा तो देख चुके काबा का काबा देखो।।

मलकुल मौत का इजाज़त तलब करना:

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा से मरवी है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की वफ़ात के दिन अल्लाह तआला ने मलकुल मौत को हुक्म फ़रमाया कि ज़मीन पर मेरे हबीब मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास हाज़िर हो ख़बरदार बग़ैर इजाज़त के अदंर दाख़िल न होना और बग़ैर इजाज़त के रूह क़ब्ज़ न करना तो रूहों को क़ब्ज़ करने वाले (हज़रत इज़्राईल अलैहिस्सलाम) ने दरवाज़े के बाहर आराबी (देहाती) सूरत में खड़े होकर अर्ज़ किया।

ऐ अहले बैयत नबुव्वत मअदिने रिसालत और फ़रिशतों के आने जाने के मक़ामात तुम पर सलाम हो।

मुझे इजाज़त दीजिये ताकि मैं दाख़िल हूं तुम पर खुदा की रहमत हो और उस वक़्त सैयदा फ़ातिमा ज़हरा रज़ियल्लाहु अन्हा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सरहाने मौजूद थीं उन्होंने जवाब दिया नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अपने हाल में मश्गूल हैं (यानी आप पर मर्ज़ का शदीद हमला है) इस वक़्त मुलाक़ात नहीं कर सकते दूसरी मर्तबा फिर हज़रत इज़्राईल अलैहिस्सलाम ने इसी तरह इजाज़त तलब की (लेकिन फिर भी जवाब इसी तरह सुना) घर में मौजूद हज़रात पर ख़ौफ़ तारी हो गया नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम कुछ होश में आए और आंखें खोल कर फ़रमाया क्या बात है सूरते हाल आपको बताई गई आपने फ़रमाया। फ़ातिमा तुम्हें मालूम है यह कौन है यह लज़्ज़तों को तोड़ने वाला, ख़्वाहिशों और तमन्नाओं को कुचलने वाला, इज्तेमाई बंधनों को खोलने वाला, बीवियों को बेवा करने वाला, और बच्चों और बच्चियों को यतीम करने वाला है।

मतलब यह वाज़ेह था कि यह अल्लाह तआला का फ़रिश्ता रूह क़ब्ज़ करने वाला इज़्राईल अलैहिस्सलाम है। इसे अंदर आने दीजिये यह तो किसी से पूछता ही नहीं यह तो सिर्फ़ ख़ानदाने नबुव्वत की हुरमत का पास करते हुए बिअम्रे इलाही इजाज़त तलब कर रहा है वरना इसने तो कभी (किसी

की) फ़िक्र नहीं कि घर में कौन है कौन नहीं यह तो बिला इजाज़त ही हर घर में जाता है।

हज़रत फ़ातिमा को ख़बर देनाः

इसी मौक़ा पर या कि अय्यामे मर्ज़ में इससे पहले फ़ातिमा ज़हरा रज़ियल्लाहु अन्हा को अपने विसाल की ख़बर दी ज़्यादा सहीह यही है कि यह ख़बर पहले की है।

हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा से मरवी है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की बीवियां आपके पास मौजूद थीं हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा आपकी ख़िदमत में हाज़िर हुईं उनकी चाल नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की चाल मुबारक से कोई मुख़्तलिफ़ न थी (यानी आपके चलने का अंदाज़ नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के चलने के अंदाज़ से बिल्कुल मिलता था) जब नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उन्हें देखा तो फ़रमाया ऐ मेरी बेटी मरहबा फिर उनको अपने पास बैठाया फिर उनसे कोई सरगोशी की जिसकी वजह से हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा शदीद रोने लगीं हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने जब उनके ग़म को देखा तो दोबारा फिर उनसे कोई और सरगोशी की अब उन्होंने मुस्कुराना शुरू कर दिया जब नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम खड़े हुए तो मैंने हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा से पूछा तुम्हारे साथ नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मख़्फ़ी तौर पर क्या बातें कीं आपने फरमाया यह नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का राज़ है जिसे मैं ज़ाहिर नहीं कर सकती नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के विसाल के बाद मैंने कहा मैं तुम्हें अपने इस हक़ का वास्ता दे कर पूछती हूं जो मेरा हक़ तुम पर है (यानी मुझे तुम्हारी मां होने का हक़ है) कि तुम मुझे बताओ कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने तुम्हें क्या ख़बर दी थी उन्होंने कहा हां अब ठीक है यानी अब मैं बता सकती हूं उसकी तफ़सील यह है कि जब आपने मेरे साथ पहली मर्तबा सरगोशी की तो बेशक आपने मुझे ख़बर दी कि तहक़ीक़ जिब्राईल मेरे साथ हर साल कुरआन पाक का एक मर्तबा दौर किया करते थे लेकिन इस मर्तबा उन्होंने मेरे साथ दो मर्तबा दौर किया है लिहाज़ मैं अपने विसाल को बहुत क़रीब देख रहा हूं (पस तुम अल्लाह तआला से डरना और सब्र करना, बेशक मेरा पहले जाना तुम्हारे लिए बेहतर है तो मैं रो पड़ी। जब आपने मेरी परेशानी को देखा तो दूसरी मर्तबा फिर सरगोशी की और फ़रमाया ऐ फ़ातिमा तुम पसंद नहीं करतीं कि तुम जन्नत की औरतों की सरदार हो या तुम मोमिनों की औरतों की सरदार हो (यहां रावी को शक है कि दोनों लफ़्ज़ों में से कौन सा लफ़्ज़ ज़िक्र किया गया)

एक रिवायत में है कि पहली मर्तबा मेरे साथ सरगोशी करके आपने मुझे ख़बर दी कि मैं इसी मर्ज़ में दुनिया से रुख़सत हो रहा हूं (तो मैं यह सुनकर) रोने लगी आपने फिर मेरे साथ सरगोशी की और मुझे ख़बर दी कि तमाम अहले बैयत में से सबसे पहले मैं आपको मिलूंगी तो मैं मुस्कुराने लगी।

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़बर के मुताबिक़ आप ख़ुद भी दुनिया से इसी मर्ज़ में तशरीफ़ ले गये आपके विसाल के छः माह बाद हज़रत फ़ातिमा ज़हरा भी दुनिया से रुख़सत हुईं तमाम अहले बैयत से पहले दुनिया से रुख़सत होकर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से मुलाक़ात करने वाली आप ही थीं।

जिब्राईल अलैहिस्सलाम की मिज़ाज पुरसीः

एक रिवायत में जिब्राईल का नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मिज़ाज पुरसी के लिए

आना और इज़्राईल अलैहिस्सलाम का उनके साथ आकर इजाज़त तलब करने का ज़िक्र है।

बैहक़ी ने दलाइलुल नबुव्वत में हज़रत जाफ़र बिन मुहम्मद से रिवायत ब्यान की है जो अपने बाप से रिवायत करते हैं कि एक शख़्स कुरैश में से अपने बाप अली बिन हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हुमा के पास आया और कहा क्या मैं तुम्हें रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की हदीस न बताऊं? उन्होंने कहा ज़रूर बतायें तो यह बताने लगे कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जब मरीज़ थे तो आपके पास जिब्राईल अलैहिस्सलाम हाज़िर हुए और कहा ऐ मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम बेशक अल्लाह तआला ने मुझे आपकी ख़ुसूसी तकरीम व तशरीफ़ के लिए भेजा है, वह आपसे पूछता है, हालांकि वह आपसे ज़्यादा जानता है वह यह पूछता है कि तुम अपने आपको कैसे पाते हो? आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया ऐ जिब्राईल मैं अपने आपको ग़मज़दा और मुसीबत ज़दा पाता हूं। दूसरे दिन जिब्राईल अलैहिसलाम फिर हाज़िर हुए उनका वही सवाल था और नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का वही जवाब था। तीसरे दिन भी जिब्राईल अलैहिस्सलाम ने आपकी ख़िदमत में हाज़िरी दी फिर वही सवाल किया और आपने वही जवाब दिया। और जिब्राईल के साथ एक फ़रिश्ता भी था जिसे इस्माईल कहा जाता है जो एक लाख फ़रिश्तों का सरदार था हर फ़रिश्ते को एक लाख पर सरदारी हासिल थी। जिब्राईल अलैहिस्सलाम ने नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से उसके लिए भी इजाज़त तलब की कि वह भी मुलाक़ात के लिए हाज़िर हुआ हुजूर ने उसके मुताल्लिक़ पूछा ज़िब्राईल ने उसका तार्रुफ़ कराया।

फिर जिब्राईल ने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मलकुल मौत (इज़्राईल) भी आपकी ख़िदमत में हाज़िर होने की इजाज़त तलब कर रहा है। आपसे पहले किसी आदमी से इसने इजाज़त तलब नहीं की और आपके बाद भी किसी से इजाज़त तलब नहीं करेगा। जिब्राईल ने अर्ज़ किया कि आप उसे इजाज़त दें आपने उसे इजाज़त दे दी। इज़्राईल ने हाज़िर होकर सलाम पेश किया फिर अर्ज़ किया ऐ मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम बेशक अल्लाह तआला ने मुझे आपके पास भेजा है अगर आप अपनी रूह क़ब्ज़ करने की मुझे इजाज़त फ़रमाते हैं तो मैं आपकी रूह को क़ब्ज़ करूंगा और अगर आप यह हुक्म फ़रमाते हैं कि मैं आपको छोड़ दूं तो छोड़कर चला जाऊंगा। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया ऐ मलकुल मौत तुम अपना काम करो (यानी रूह क़ब्ज़ करने की तुम्हें इजाज़त है) इज़्राईल ने कहा हां मुझे उसी चीज़ का हुक्म दिया गया है लेकिन यह हुक्म दिया गया है कि मैं आपकी इताअत भी करूं।

रावी कहते हैं हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने जिब्राईल की तरफ़ देखा जिब्राईल ने अर्ज़ किया ऐ मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम बेशक अल्लाह तआला आपको मिलने का बहुत मुश्ताक़ है। नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मलकुल मौत को कहा जिस चीज़ का तुम्हें हुक्म दिया गया है वह काम करो तो इज़्राईल ने आपकी रूह को क़ब्ज़ कर लिया।

हज़रत फ़ातिमा ज़हरा का इज़हारे ग़म:

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के विसाल के बाद हज़रत फ़ातिमा ज़हरा रज़ियल्लाहु अन्हा ग़मज़दा हो गई आपको किसी ने कभी हंसता हुआ नहीं देखा आप अक्सर तौर पर रोती रहती थीं और यह कहती रहती थीं।

ऐ अब्बा जान ऐ अब्बा जान!

और कहती ऐ अब्बा जान आपने अल्लाह तआला के बुलावे को क़बूल कर लिया है ऐ अब्बा जान आपने जन्नतुल फ़िरदौस में इक़ामत इख़्तेयार कर ली, ऐ अब्बा जान अब जिब्राईल वही किसके पास लायेंगे।

ऐ अल्लाह! फ़ातिमा की रूह को नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की रूह से मिला दे ऐ अल्लाह मुझे अपने रसूल का दीदार अता फ़रमा।

ख़्याल रहे कि रोने में कोई जज़अ, फ़ज़अ नहीं था, पीटना, वावैला करना नहीं था कपड़े फाड़ना, गिरेबान चाक करना नहीं था फ़क़त आंसू बहाना और इज़हारे ग़म के तौर पर मज़कूरा बाला अल्फ़ाज़ का ज़िक्र था।

हज़रत आयशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु अन्हा की बे क़रारीः

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के विसाल के बाद हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा ग़म से निढाल, बहुत ज़्यादा परेशान हाल थीं, आंसू रवां थे। साथ साथ नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के औसाफ़ का ज़िक्र करते हुए इस तरह सब्र का दामन थामते हुए इज़हारे ग़म का रही थीं अफ़सोस है इस नबी मुहतरम पर जिन्होंने फ़िक्र को तवनगरी पर और दरवेशी को मालदारी पर इख़्तेयार फ़रमाया। अफ़सोस है उस ज़ात पर जिन्होंने उम्मत के मआसी के ग़म व फ़िक्र से बे नियाज़ होकर कभी बिस्तरे राहत पर आराम नहीं फ़रमाया इसी तरहर रोते हुए कई और औसाफ़ का भी तज़किरा कर रही थीं।

ग़ैबी आवाज़ से अहले बैयत को मज़ीद सब्र की तलक़ीनः

आपके घर के एक कोना से आवाज़ आ रही थी अगरचे कहने वाला कोई नज़र नहीं आ रहा था आवाज़ देने वाला यह आवाज़ दे रहा था।

अहले बैयत तुम पर सलाम हो और अल्लाह तआला की रहमतें और अल्लाह तआला की बर्कतें तुम पर हों हर जानदार को मौत का मज़ा चखना है बिला शुबह कयामत के दिन तुम्हारी नेकियों का पूरा पूरा अज्र दिया जायेगा। बिलाशुबह हर मुसीबत के लिए अल्लाह अज़्ज़ व जल्ल के नज़दीक दर्जा और ख़ुशी है और ज़्यादा सब्र करो।

सहाबा किराम का ग़म में मुब्तला होनाः

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के विसाल के बाद सहाबा किराम बहुत परेशान हो गये यूं महसूस हो रहा था कि उनकी अक़्लें सल्ब कर ली गईं और उनके हवास मोअत्तल हो गये।

बाज़ हज़रात की ज़बान बंद हो गई उनके होश व हवास और बोलने की कुव्वत जाती रही हज़रत उसमान रज़ियल्लाहु अन्हु भी उन ही लोगों में से थे जैसा कि हदीस पाक में है कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु उनके क़रीब से गुज़रे और उन्हें सलाम किया लेकिन वह सलाम का जवाब न दे सके।

बाज़ हज़रात अपनी जगह जमे बैठे रहे जुंबिश की ताक़त तक न रही। हज़रत अली मुर्तज़ा रज़ियल्लाहु अन्हु का यही हाल था, कुछ हज़रात कह रहे थे कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर वक़्ती तौर पर बेहोशी तारी है सकता का आलम है आप पर वफ़ात तारी नहीं हुई हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु मस्जिद के दरवाज़े पर तलवार लेकर खड़े हो गये और कहने लगे जो कोई यह कहेगा नबी करीम ने वफ़ात पाई मैं उसके दो टुकड़े कर दूंगा।

हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु की शदीद ग़म में साबित क़दमीः

हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु भी ज़्यादा परेशान थे आंसू बहा रहे थे ग़म में निढाल थे लेकिन आप ने इस नाजुक मरहला में साबित क़दमी से काम लिया होश व हवास को बरक़रार रखते हुए ख़ुत्बा दिया जो हम्द व सनाए इलाही और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर दुरूद व सलाम पर मुश्तमिल था इसके बाद इरशाद फ़रमाया जो कोई नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की परसतिश करता था तो वह जान ले कि आप का विसाल हो चुका है और जो कोई अल्लाह तआला की परसतिश करता है वह अब भी मौजूद व ज़िन्दा है उस पर कभी मौत नहीं आयेगी।

और यह आयते करीमा तिलावत की।

और नहीं हैं मुहम्मद मगर अल्लाह तआला के रसूल बेशक आपसे पहले रसूल गुज़रे तो क्या अगर वह फ़ौत हो जायें या शहीद हो जायें तो तुम अपनी ऐड़ियों के बल पलट जाओगे।

और इस आयत की तिलावत की।

ऐ हबीब आप को भी मौत आनी है और इनको भी मरना है।

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के विसाल की वजह से सहाबा किराम पर कुछ ऐसा असर हो चुका था कि यह आयत सुनकर सहाबा किराम यूं महसूस कर रहे थे जैसा कि यह नाज़िल ही अब हुई हैं। इसके बाद हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने भी ख़ुत्बा दिया जिसका लब्बे लबाब यह था कि ऐ लोगो मैंने जो पहले कहा था कि हुजूर नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर वफ़ात तारी नहीं हुई वह कोई किताबुल्लाह या सुन्नते रसूलुल्लाह से साबित नहीं बल्कि मेरी यह ख़्वाहिश थी कि आप हम में ज़िन्दा रहते यानी ज़ाहिरी हयात में जिस तरह आप हम में पहले जलवागर होते हमेशा ऐसे ही रहते लेकिन अल्लाह तआला की मर्ज़ी पर हम शाकिर व साबिर हैं।

तंबीह : नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के विसाल के वक़्त आपके पास पानी का एक प्याला था उसमें हाथ मारकर चेहरा पर मार रहे थे आपको बार बार पसीना आ रहा था बज़ाहिर यह शिद्दत की कैफ़ियत नज़र आती है आपको सकराते मौत में शिद्दत क्यों हासिल हुई?

शैख़ अब्दुल हक़ मुहद्दिस देहलवी रहमतुल्लाह अलैहि ने फ़रमाया कि यह कोई तकलीफ़ नहीं बज़ाहिर बे क़रारी नज़र आती थी इसकी कई वजहें आपने ब्यान फ़रमाई हैं इनमें से दो को मैं ज़िक्र कर रहा हूं।

बज़ाहिर जो बे क़रारी नज़र आती थी उसकी एक वजह यह थी कि यह वक़्त अल्लाह तआला से ख़ास मुलाक़ात का था और वह ख़शीयत व हैबत व इजलाल था जो मारफ़त व उबूदियत और कुर्बे हुजूर जुल जलाल में उस हाल और उस वक़्त के मुनासिब थी और यह तमाम ख़ुसूसियात किसी और हालत व वक़्त में न थीं।

और वजह यह थी कि बेक़रारी दर हक़ीक़त रब से मुलाक़ात के लिए रूह की बेताबी थी गोया आप चाहते थे कि जल्दी ही इस दुनिया से निकल कर बारगाहे ईयज़दी में हाज़िर हो जायें।

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के गुस्ल का ज़िक्रः

आपके गुस्ल के लिए आपके अहले बैयत में से हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु, हज़रत अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु और उनके दो बेटे फ़ज़ल बिन अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु और क़सम बिन अब्बास

रज़ियल्लाहु अन्हु, अबू सुफ़यान बिन हारिस बिन अब्दुल मुत्तलिब और नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के महबूब उसामा बिन ज़ैद और हुजूर के ग़ुलाम हज़रत सालेह हब्शी शरीक हुए। आपके जिस्मे अतहर के इर्द गिर्द चादरें तान दी गई थीं

हज़रत अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु ने आपको अपने सीना पर लिया और हाथों में दस्ताने पहनकर हाथों को पैरहन मुबारक के अंदर दाख़िल किया उसामा क़मीस के ऊपर पानी डालते थे हज़रत फ़ज़ल बिन अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु और हज़रत क़सम रज़ियल्लाहु अन्हु एक पहलू से दूसरे पहलू तक पानी पहुंचाने में हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु की मदद कर रहे थे और ग़ैब से भी गुस्ल में इआनत वाक़ेय हुई चुनांचे इन्हें ऐसा मालूम होता था कि कोई और हाथ इनके हाथ से मस हो रहा है उन सबकी आंखों पर पट्टियां बंधी हुई थीं ग़ैब से और पर्दे के पीछे से आवाज़ आई कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ नर्मी बरतो।

हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु की वसीयत थी कि तुम्हारे बग़ैर कोई सतर देखे अगर कोई ख़िलाफ़वर्ज़ी हुई तो उसकी बीनाई जाती रहेगी। नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के जिस्मे अतहर से कोई चीज़ बर आमद न हुई जिस तरह दूसरे लोगों के पेट बग़ैरह से ख़ारिज होती है। हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा या रसूलल्लाह मेरे मां बाप आप पर कुरबान हों कितनी सफ़ाई और कितनी ख़ुश्बू है हयात में भी और ममात में भी। नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की वसीयत के मुताबिक़ आप को बीरे ग़रस (मदीना तैयबा के शुमाली जानिब एक कुंए का नाम है) के पानी से तीन मर्तबा गुस्ल दिया गया जिसमें बेरी के पत्ते डाले गये थे।

गुस्ल के वक़्त नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की पलकों के नीचे और नाफ़ के गोशे में पानी जमा हो गया था हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने उस पानी को अपनी ज़बान से चूसा और उठाया हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं इसी वजह से मुझ में इल्म की कसरत और हाफ़िज़ा की कुव्वत ज़्यादा है।

जब गुस्ल मुकम्मल हो गया तो मक़ामे सज्दा और मफ़ासिल शरीफ़ (आज़ा के जोड़) को ख़ुश्बू से मोअत्तर किया गया और तीन मर्तबा ओद (अगर) की धूनी दी गई यानी ख़ुश्बूदार लकड़ी सुलगाई गई इसके बाद उठाकर सर पर लिटा दिया गया।

आपके जिस्मे अतहर पर इस्तेमाल करते हुए जो ख़ुश्बू बच गई थी उसके मुताल्लिक़ हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने अपने बेटों को वसीयत की थी कि मेरे कफ़न में यह ख़ुश्बू लगाना क्योंकि यह ख़ुश्बू हुजूर से बचाई हुई है।

कफ़न देने की वसीयतः

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को तीन कपड़ों में कफ़न दिया गया। वह यमनी चादरें चूंकि यमन के इलाक़े में एक बस्ती का नाम सहूल है जहां वह कपड़ा तैयार होता था जिससे आपके कफ़न मुबारक में चादरें इस्तेमाल की गई इसलिए आप के कफ़न के कपड़े को सहूली भी कहा गया है।

एक हदीस में आपके कफ़न के कपड़े का "मन करसफ़" (करसफ़ से बुना हुआ) भी कहा गया है करसफ़ पनबा यानी रूई को कहते हैं।

बैहकी ने हाकिम से नक़्ल करके कहा कि हज़रत अली मुर्तज़ा हज़रत इब्ने अब्बास हज़रत आयशा हज़रत इब्ने उमर हज़रत जाबिर हज़रत अब्दुल्लाह बिन मग़फ़िल रज़ियल्लाहु अन्हुम से हदीसें हद्दे तवातुर तक पहुंच गई हैं कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के कफ़न में तीन कपड़े थे।

ख़्याल रहे कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के जिस्मे अक़दस पर एक कमीस थी और उसमें ही गुस्ल दिया गया था वह कफ़न में दाख़िल नहीं लिहाज़ा वह हदीस जो सुनन अबू दाऊद में हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा से मरवी है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को तीन कपड़ों में कफ़न दिया गया दो कपड़े और एक वह कमीस मुबारक जो वक़्ते विसाल आपके जिस्म पर थी इस रिवायत में ज़ुअफ़ है। सहीह नहीं, रिवायात वह हैं जिन में तीन कपड़ों का ज़िक्र है लेकिन कमीस और पगड़ी का ज़िक्र नहीं।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की नमाज़ जनाज़ा:

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की नमाज़ जनाज़ा जमाअत के साथ अदा नहीं की गई बल्कि एक जमाअत आपके क़रीब आती और बग़ैर जमाअत के नमाज़ पढ़ती और निकल जाती फिर दूसरी जमाअत आती और पढ़ती थी आपका जस्दे अक़दस उसी हुजरा मुबारक में था जहां आपको गुस्ल दिया गया सब से पहले मर्द दाख़िल हुए जब मर्द फ़ारिग़ हो गये तो औरतें दाख़िल हुई और औरतों के बाद बच्चे।

जमाअत में सफ़ों की तर्तीब होती है लेकिन यहां न कोई सफ़ों की तर्तीब थी और न कोई इमाम था इसलिए किसी ने न कोई इमामत की और न जमाअत से नमाज़ की अदाएगी हुई।

अमीरुल मोमिनीन सैयदना अली मुर्तज़ा रज़ियल्लाहु अन्हु से मंकूल है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के जनाज़ा शरीफ़ पर किसी ने इमामत नहीं की क्योंकि आप अय्यामे हयात और ममात में सबके इमाम हैं।

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की यह खुसूसियत है कि आप पर मुतअद्दिद नमाज़ें पढ़ी गईं। और तंहा लोगों ने पढ़ीं वरना आम लोगों की एक ही नमाज़ जनाज़ा है और वह भी जमाअत से। यह भी ख़्याल रहे कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की खुसूसियात पर दूसरों को क़यास नहीं किया जा सकता। सबसे पहले नमाज़ जनाज़ा अहले बैयत नबुव्वत ने अदा की यानी हज़रत अली मुर्तज़ा हज़रत अब्बास और दूसरे बनू हाशिम रज़ियल्लाहु अन्हुम सबसे पहले नमाज़ जनाज़ा अदा करने वाले थे इसके बाद मुहाजरीन सहाबा किराम उसके बाद अंसार सहाबा किराम ने नमाज़ जनाज़ा अदा की फिर दूसरे लोग आते रहे और नमाज़ जनाज़ा अदा करके लौटते रहे।

जब अहले बैयते नबुव्वत ने नमाज़ जनाज़ा अदा कर ली तो लोगों को मालूम नहीं था कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर कौन सी दुआ पढ़ें तो हज़रत इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने मश्वरा दिया कि तुम हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु से पूछो जब लोगों ने आपसे पूछा तो आपने फ़रमाया कि तुम यह दुआ पढ़ो।

इन नल्ला ह व मलाइकतुह युसल्लू न अलन नबीई या अय्युहल लज़ी न आ मनू सल्लू अलैहि व सल्लिमू तस्लीमा अल्ला हुम म रब्बना लब्बैक व सअ दी क सलवातिल्लाहिल बर्रिरहीमि वल मलाइ कतिल मुकर्रबीनन नबीईन वस सिद्दीका न वश शुहदा–अ–वस्सालिही न वस बिह ल क मिन शैइन या रब्बिल आलमीन अला मुहम्मदिब नि अब्दिल्लाहि ख़ातिमन नबीई नि व सय्यदिल मुरसलिनि व इमामुल मुत्तक़ीनि व रसूलु रब्बुल आलिमीनि अश शाहिदुल बशीरुद दाई बि इज़ निक़स सिराजुल मुनीरि व अलैहिस्सलाम।

इस दुआ को शैख़ ज़ैनुद्दीन मराअी ने अपनी किताब में तहक़ीकुन नज़रा में ब्यान किया है।

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की तदफ़ीन में ताख़ीर:

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का विसला दो शंबा (पीर) को हुआ और सेह शंबा (मंगल) पूरा गुज़र गया और आपका तख़्त शरीफ़ आपके घर में रहा आपको चहार शंबा (बुध) की रात को दफ़न कर दिया गया वजह इसकी यह थी कि तमाम लोग आपकी नमाज़ जनाज़ा अदा कर लें यहां तक कि सब लोग जब नमाज़ अदा कर चुके तो फिर आपको दफ़नाया गया।

शिया का एतेराज़ बातिल है:

अहले तशीअ का यह कहना है कि सहाबा किराम ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की नमाज़ जनाज़ा अदा नहीं की यह बिल्कुल ग़लत कौ़ल है बातिल है किज़्ब बयानी है हक़ाइक़ से दूर बात है।

आइये अहले तशीअ की किताब उसूल काफ़ी और उसकी शहर साफ़ी को देखिये इसमें ज़िक्र किया गया है कि तमाम लोगों ने नमाज़ जनाज़ा में शिर्कत की मदीना के लोग भी इसमें शामिल थे और बाहर देहातों के भी उसूल काफ़ी की इबारत यह है।

हज़रत जाफ़र रज़ियल्लाहु अन्हु से मरवी है कि मैंने पूछा कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की नमाज़ जनाज़ा कैसे अदा की गई थी तो उन्हें बताया गया कि जब अमीरुल मोमिनीन रज़ियल्लाहु अन्हु ने आपको गुस्ल दिया और कफ़न पहना दिया और ढांप दिया गया तो दस आदमी आपके जस्दे मुबारक के पास आये और इर्द गिर्द फिरे फिर अमीरुल मोमिनीन अलैहिस्सलाम के दर्मियान खड़े हुए और पढ़ा। इन नल्लाह व मलाइ क तहु यूसल्लून न अलन नबीई या अय्युहल लज़ी न आ मनू सल्लू अलैहि व सल्लिमू तस्लीमा। क़ौम ने भी यही पढ़ा जो अमीरुल मोमिनीन पढ़ रहे थे यहां तक कि तमाम अहले मदीना ने पढ़ा और इर्द गिर्द देहात वालों ने पढ़ा।

अहले तशीअ की अपनी ही हदीस ने वाज़ेह कर दिया कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की नमाज़ जनाज़ा तमाम सहाबा किराम ने अदा की।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को दफ़न करने के लिए जगह का इंतेख़ाब:

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को कहां दफ़न किया जाये इस में सहाबा किराम ने अपनी अपनी राए पेश की किसी ने कहा आपको उसी हुजरे में दफ़न किया जाये जहां आपकी रूह को क़ब्ज़ किया गया और किसी ने कहा आप को मस्जिद शरीफ़ में दफ़न किया जाये किसी ने कहा आपको बक़ीअ क़ब्रस्तान में दफ़न किया जाये और किसी ने कहा क़ुदस में बहुत से अंबियाए किराम अलैहिमुस्सलाम

की क़बूर हैं वहां दफ़न किया जाये।

हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से सुना है कि फ़रमाया कोई नबी नहीं दफ़न किया गया मगर उसी जगह उसकी रूह क़ब्ज़ की गई।

इसके बाद तमाम सहाबा किराम का इत्तेफ़ाक़ इस पर हुआ कि आपको उसी हुजूरे में दफ़न किया जाये तो आपकी चारपाई को उठाकर एक तरफ़ किया गया और वहां ही क़ब्र खोदने का आग़ाज़ हुआ।

क़ब्र को लहद बनाया गया:

मदीना तैयबा में दो शख़्स क़ब्र खोदने वाले थे एक हज़रत अबू उबैदा बिन जर्राह जो बतरीक़े शक़ (दर्मियान में खुदाई वाली) क़ब्र खोदते थे। दूसरे सहाबा अबू तलहा अंसारी थे जो लहद (बग़ली यानी एक तरफ़ से खुदाई वाली) क़ब्र खोदते थे।

हज़रत अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु ने रब तआला के हुज़ूर दुआ की ऐ अल्लाह अपने हबीब के लिए वह चीज़ इख़्तेयार फ़रमा जो महबूब व मुख़्तार हो। इस दुआ के बाद आपने दोनों सहाबियों की तरफ़ आदमी भेज दिये कि जो पहले आ जाये उसी से क़ब्र बनवा ली जाये। अबू उबैदा रज़ियल्लाहु अन्हु उस शख़्स को न मिल सके जो उन्हें बुलाने गया था इसलिए वह बरवक़्त न पहुंच सके लेकिन अबू तलहा रज़ियल्लाहु अन्हु बरवक़्त आ गये। उन्होंने लहद क़ब्र बनाई।

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को लहद क़ब्र पसंद थी आपने फ़रमाया (लहद हमारे लिए है और शक़ हमारे ग़ैरों के लिए है) ख़्याल रहे कि अगर ज़मीन सख़्त हो जहां लहद बन सके वहां अफ़ज़ल है और जहां ज़मीन नर्म हो लहद न बन सके। वहां शक़ बनाई जाये।

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को जब लहद पसंद थी तो रब तआला ने भी हज़रत अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु की दुआ को क़बूल करते हुए आपके लिए लहद का इंतज़ाम ही फ़रमाया कि लहद खोदने वाले सहाबी ही बरवक़्त पहुंच सके।

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की तदफ़ीन:

बुध की रात सहरी के वक़्त नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को क़ब्र अनवर में दाख़िल किया गया, हज़रत अली मुर्तज़ा, हज़रत अब्बास, हज़रत फ़ज़्ल बिन अब्बास, हज़रत क़सम बिन अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुम क़ब्र में दाख़िल करने वाले थे।

क़ब्र में उम्मत को याद करना:

हज़रत क़सम रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि क़ब्र अनवर से सबसे आख़िर में निकलने वाला मैं ही था और सबसे आख़िर में आपके चेहरए अनवर की ज़ियारत करने वाला मैं ही था। मैंने क़ब्र मुबारक में आपको देखा कि आपके लबे मुबारक हरकत कर रहे हैं मैंने अपने कान हुजूर के मुंह मुबारक के क़रीब किये तो मैने सुना कि आप फ़रमा रहे हैं ऐ मेरे रब मेरी उम्मत मेरी उम्मत मेरी उम्मत यानी उम्मत की मग़्फ़िरत फ़रमा।

नेक लोगों के क़रीब दफ़्न करना बेहतर है :

मूसा अलैहिस्सलाम बैतुल मुक़द्दस के क़रीब अपनी वफ़ात व दफ़्न की रब तआला से दरख़्वास्त की इस पर अल्लामा नूवी रहमतुल्लाह अलैहि ने फ़रमाया:

आपने बैतुल मुक़द्दस की ज़मीन के क़रीब वफ़ात व दफ़्न का सवाल इसलिए किया था कि उस ज़मीन को शर्फ़ हासिल था और ख़ुसूसन अंबियाए किराम अलैहिमुस्सलाम और नेक हस्तियों के वहां दफ़्न होने की वजह से इस ज़मीन में फ़ज़ीलत हासिल थी।

दुआ है अल्लाह तआला हर शख़्स को नेकी की तौफ़ीक़ अता फ़रमाये नेक लोगों का कुर्ब ज़िन्दगी में और वफ़ात के बाद भी हासिल हो।

अल्लाह तआला अंबियाए किराम अलैहिमुस्सलाम की मुहब्बत अता फ़रमाये।

या अल्लाह! अपने हबीब पाक मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के तुफ़ैल मेरी औलाद को सही अक़ीदा पर क़ायम दायम रखना, बुरे अक़ाइद से महफ़ूज़ रखना। आमीन सुम्मा आमीन।

या अल्लाह मेरी इस कोशिश को क़बूल फ़रमा और अवाम को इससे फ़ायदा हासिल करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमा।

आमीन बिजाहि सय्यदिल मुरसलीन सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम।

★★★